



# हिन्दी-शब्दार्थ-पारिजात ।

अर्थात्

हिन्दी के क्लिष्ट, अप्रचलित तथा संस्कृत के हिन्दी भाषा में प्रचलित शब्दों  
का तात्पर्ययोधक, तथा प्रसिद्ध कवियों तथा स्थानों का  
संक्षिप्त विवरणयुक्त कोश विशेष ।

सम्पादक,

चतुर्वेदी द्वारका प्रसाद शर्मा ।

“बालकोपयोगी” पुस्तकमाला, “स्त्रीशिक्षा पुस्तक” माला, “विवेकानन्द” ग्रन्थावली आदि  
के संप्रहकर्ता, “श्रीराववेन्द्र” तथा “श्रीयादवेन्द्र” मासिकपत्रों के सम्पादक,  
“संस्कृत-हिन्दी-अक्षरेज़ी” कोश, “अक्षरेज़ी-संस्कृत-हिन्दी” कोश,  
“संस्कृत-हिन्दी” कोश, “अक्षरेज़ी-हिन्दी” कोश, “चरिता-  
म्युषि” कोश के सम्पादक । ]

—10 X 0:—

प्रकाशक,

रामनारायण लाल, पब्लिशर ऐंड बुकसेलर,

इलाहाबाद

सन १९१४



# भूमिका ।

—101—



य

यदि हिन्दी साहित्यमें अब से पहिले गणना मात्र के लिये इनेगिने एक दो कोश थे जिनमें हिन्दी के कतिपय शब्दों का अर्थ मिल जाता था तथापि हिन्दी-शब्दार्थ-पारिजात जैसा एक भी कोश नहीं था। इससे यह आशा करना अनुचित नहीं है कि इस कोश द्वारा हिन्दी साहित्य के अंग की आंशिक पुष्टि अवश्य ही होगी। इस कोश में हिन्दी साहित्य में व्यवहृत तथा हिन्दी के वर्तमान समाचार पत्रों में प्रचलित शब्दों के अर्थ संगृहीत कर दिये गये हैं।

हिन्दी जैसे वर्तमान साहित्य के इस कोश को सर्वाङ्गपूर्ण बतलाना तो! धृष्टता है; तब ही इतना अवश्य कहा जा सकता है कि संग्रहकर्त्ता ने इस कोशमें यथासम्भव इस बात का प्रयत्न अवश्य किया है कि हिन्दी के प्रायः सभी शब्दों के अर्थ आजायें। सर्वाङ्ग सुन्दर कोश बनाने के कार्य में समय और धन दोनों ही की आवश्यकता होती है, पर कोश अपवा कोई भी पुस्तक क्यों न हो-जिसके बनाने या बनवाने का मुख्य उद्देश्य मूल्य की सुलभता ही है वह ग्रन्थ कदा तक सर्वाङ्गपूर्ण हो सकता है इसे हमारे पाठक स्वयं विचार लें।

अन्त में हम इस ग्रन्थ को पाठकों की यह बतला देना अपना पवित्र कर्त्तव्य समझते हैं कि इस कोश के शब्द-संग्रह-कार्य में हमें अपने मित्र साहित्याचार्य पण्डित चन्द्रशेखर जी भोक्सा से पूर्ण साहाय्य मिला है।

जिन दिनों यह पुस्तक छप रही थी उन दिनों हमें इसके क्रम में कई एक नयी बातें सूझीं। यदि उनके अनुसार इस कोश का काम रखा जाता तो अवश्य ही यह पुस्तक और भी अधिक उपयोगी हो सकती थी, पर इस बार तो नहीं—आशा है दूसरे संस्करण में इसकी धह कमी भी पूरी की जा सकेगी।

दारागञ्ज,  
ता० १०-७-१४.

}

चतुर्वेदी द्वारका प्रसाद शर्मा ।



# सङ्केताक्षरों का विवरण ।

---

अ०	=	अव्यय ।
क्रि०	=	क्रिया ।
गु०	=	गुणवाचक ।
तत्०	=	तत्सम ।
तद्ग०	=	तद्भव ।
देश०	=	देश विशेष में प्रचलित
पु०	=	पुल्लिङ्ग ।
प्रा०	=	प्राकृत ।
वा०	=	वाग्धारा या Idiom
वि०	=	विशेषण ।
सर्व०	=	सर्वनाम ।
स्त्री०	=	स्त्रीलिङ्ग ।

ओं तत्सत् ।

हिन्दी

# शब्दार्थ-पारिजात ।

अ

अ

अंहस्

अ नागरी वर्णमाला का प्रथम अक्षर है कथस्थान से उच्चारित होने के कारण यह कण्ठ्य कहा जाता है । जिस शब्द के पूर्व यह अक्षर जोड़ा जाता है, वह शब्द विपरीत अर्थवाचक हो जाता है । यथा अनाचार, अर्थात् आचार रहित, अकर्मण्य अर्थात् जो कर्म के उपयुक्त न हो । खरादि शब्द के पूर्व अ होने से अह हो जाता है । यथा अनधिकार अर्थात् अधिकार का अभाव ।

अ० (प्र०) विष्णु, निषेध, अल्प, अभाव, अनुकम्पा । सादृश्य, (यथा अत्राक्षण) भेद (यथा अपट) अप्रा-गस्त्य (यथा अकाल) अल्पता (यथा अनुदरा) गणित में अ १ संख्या वाची है ।

अऊत तद्० } (प्र०) [अ=नहीं, ऊत=पुत्र] पुत्रहीन,  
अपुत्र तद्० } जिसके चत्तान न हो, निषेध, कारा,  
सूर्य, जाहिल ।

अंश तद्० (प्र०) भाग, घाँट, प्रयत्न, स्कन्ध, दिन, भूपरिधि का ३६०वाँ भाग । —क तद्० [अंश + क] (प्र०) घाँटने वाला, साफ़ी, भाग । —शंश तद्० (प्र०) [अंश + अंश] भाग का भाग; —ी तद्० [अंश + ई] (प्र०) बटाक, घाँटने वाला, बटैया, भागी ।

अंशु तद्० (प्र०) [अंश + उ] किरन, रश्मि, तेज, मशूल, आभा, दीप्ति, ज्योति । —जाल तद्० प्र० [अंशु + जाल] रश्मि समुदाय । —धर तद्०

(प्र०) [अंशु + धर] रश्मिधारी अर्थात् सूर्य, अग्नि, चन्द्रमा, दीप, देवता, ब्रह्मा, प्रतापी । —मान तद्० प्र० [अंशु + मान] सूर्य, चन्द्रमा । एक राजा का नाम ।

[अंशुमान सूर्यवंश में एक राजा हो गये हैं । वे राजा सगर के पौत्र और राजा अक्षमज्जस के पुत्र थे । जब राजा सगर के साठ हजार पुत्र यज्ञीय अश्व को खोजते हुए पातल में जा महर्षि कपिल के क्रोध से भस्म होगये; तब राजा सगर ने अपने पुत्रों के अग्नि में विलम्ब देकर अपने पौत्र अंशुमान को भेजा । ये जाकर सुनि को सन्तुष्ट कर यज्ञीय अश्व से आये और पितामह का यज्ञ पूरा कराया । माय ही अपने पितृव्यों के उद्धार का उपाय भीगवड़ जी से अवगत किया । —हरिवंश-वनपर्व देखो ।]

—माली तद्० (प्र०) [अंशु + माली] जो अंशुओं की माला धारण किये हुए हैं, अर्थात् सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि, दीप आदि ।

अंशुक तद्० (प्र०) [अंशु + क] वक्त्र, रेगमी वक्त्र, टसर, रश्मि समुदाय ।

अंसल, या अंसनी तद्० } (प्र०) घाँटने वाला, भाग  
अंशल तद्० } करने वाला ।

अंहति या अंहती तद्० (स्त्री०) [अंह + ति] दान, त्याग, पीड़ा ।

अंहस् तद्० (प्र०) [अंह + अस्] पाप, स्वधर्म त्याग, अधराध, पातक, दुष्कृति, कर्मण, अघ ।

अकच्छ तद्० (गु०) [अ + कच्छ] नङ्गा, मेहरा, वृषभित्तरी, लम्पट । जैन सम्प्रदाय विशेष के साधु, ये निर्ग्रन्थ भी कहे जाते हैं ।

अकड़ तद्० (स्त्री०) टेढ़ापन, फूलाहट, घेंठ, घाँकापन, येँजी, नटखटो जैसे—

“घड़ी भर में मध अकड़ निकाल दूँगा ।”

—याज्ञ अकड़ैत, छैला, घाँका, छैलचिकनियाँ ।

—मकड़ घेंठ कर चलना, घमण्ड, अभिमान । —ना (क्रि०) (आकुञ्चन) घेंठना,

टेढ़ा होना, दुखना, पीड़ा करना, कड़ा पड़ना ।

—त (गु०) घाँका, छैला, अभिमानी । —चाई

(स्त्री०) अंगग्रह, वातरोग ।

अकण्टक तद्० (गु०) [अ + कण्टक] काँटा रहित,

अविरोधो, यत्रुहोन, निरुपाधि, चैन से ।

अकथ तद्० (गु०) [अ + कथ] न कहने योग्य,

कहने की शक्ति के बाहिर । —नीय तद्० या

अकथ्य तद्० (गु०) जो कहने योग्य न हो ।

—यितव्य तद्० अवक्तव्य । —त तद्० (स्त्री०)

कुक्या, मन्दक्या, अपभाषा ।

अकनी तद्० (आकर्ण्य का अप०) मुनकर ।

अकम्पन तद्० (गु०) [अ + कम्पन] नहीं काँपना,

दृढ़, कठोर, मजबूत ।

[अकम्पन रावण के एक सेनापति का नाम भी

था । हनुमान ने उसे मारा था । यह रावण का मामा,

सुमारो का बेटा था और इसकी माता का नाम

केतुमालिनी था । रावण की माता कैकसी इसकी

बहिन थी । इसकी दूसरी बहिन का नाम

कुम्भीनसी था ।]

अकपट तद्० (गु०) [अ + कपट] कपटहीन, सरल,

सीधा, झलरहित । —ता तद्० उदारता, सरलता ।

अकरण तद्० (गु०) [अ + करण] निष्कारण, हेतु-

शून्य, कारण-रहित, न करने योग्य ।

अकरा तद्० (अनर्घ तद्०) (गु०) मँहगा, बहुमूल्य,

बदिया ।

अकर्णी तद्० (गु०) अक्षरगत, अनुचित, अकर्मठ्य ।

अकरुण तद्० (गु०) [अ + करुण] करुण रहित,

निर्दय, निष्ठुर ।

अकर्ण तद्० (गु०) [अ + कर्ण] कर्ण रहित, बहरा,

बूटा । (गु०) साँप ।

अकर्म तद्० (गु०) [अ + कर्म] कुकर्म, अपराध,

पाप, बुरा काम, अघर्म, बुराई । —त तद्० काम-

हीन, बेकार बैठा । —र्षी तद्० निगोड़ा, चपटाल,

अवराधी ।

अकर्मक तद्० (गु०) [अ + कर्मक] वह क्रिया

जिसमें कर्म न हो, जैसे—“आना, रहना,”

कर्म रहित ।

अकर्मण्य (गु०) तद्० आलसी, कार्याचम, काम करने

के अयोग्य ।

अकल तद्० (गु०) [अ + कला] अज्ञहीन, अशय-

रहित, निराकार, परमात्मा । सिद्ध सम्प्रदाय के

परमात्मा का नाम ।

अकल्पन तद्० (गु०) [अ + कल्पन] सचाहट, प्रकृत,

सत्य, यथार्थ, वास्तविक ।

अकल्पित (गु०) सच्चा, कल्पना-रहित ।

अकल्याण तद्० (गु०) [अ + कल्याण] अनङ्गल,

अशुभ, अशुभ, मन्द, बुरा ।

अकवार तद्० (गु०) कुच काँच, गोदी । दोनों

हाथों के बचका स्थान ।

अकसर तद्० (गु०) अकेला, एकाकी, बहुधा (यह

अक्षर का अपभ्रंश है) ।

अकस्मात् तद्० (अ०) हठात्, यत्नात्, दैव्यात्,

अज्ञानक, अज्ञानचक, सहसा ।

अका तद्० (गु०) नियोध, जड़, भूढ़, पागल ।

अकाण्ड तद्० (गु०) अकस्मात्, हठात् ।

अकाज तद्० (गु०) विगाड़, हिंसा, धर्म्य ।

अकाम (गु०) अकारण, धर्म्य, निष्फल ।

अकारण (अ०) कारणरहित, अनर्थक, धर्म्य ।

अकाल (गु०) दुर्भिक्ष, असमय । —पुरुष तद्०

सिक्खों के ग्रन्थों में ईश्वर का नाम है । —पुष्प

(गु०) अनश्वर का फूल । —जलद् (गु०)

असमय के मेघ । —वृष्टि (स्त्री०) कुसमय की

वर्षा—मृत्यु (संस्कृत में यह पुल्लिङ्ग है, पर हिन्दी

में यह स्त्रीलिङ्ग है) कुसमय की मृत्यु, अपकृत मृत्यु ।

अकास तद्० (गु०) आकाश, शून्य, आममान, गगन,

नभ, पोल, अन्तरिक्ष ।

अभिज्ञान तन्० (गु०) दरिद्र, क्लान्त, दीन, दुखी ।  
—ता,—त्व दरिद्रता । —कर तुच्छ ।

अकीर्ति तद्० } (ख०) अकीर्ति, अपकीर्ति, अपय,  
अकीर्ति तद्० } अप्रतिष्ठा, दुर्नाम, कलङ्क,—कर (गु०)  
दुर्नाम करने वाला, अपयस्कर ।

अकुतोभय तद्० (गु०) निहत्, निःशङ्क, निर्भय,  
साहसी ।

अकुताना (क्रि०) ऊधना, चषडाना । अकुताही-  
क्यै, चषड्यै ।

अकुल तन्० (गु०) [अ+कुल] कुलरहित, नीच,  
निगोड़ा ।

अकुलाना (क्रि०) उपाकुल होता, चषडाना ।

अकुलीन तन्० (गु०) कुलशून्य, षङ्कर, कुजाति ।

अकुशल तन्० (गु०) अमङ्गल, अगुण, बुरा ।

अकूपार तन्० (गु०) समुद्र, सागर ।

अकेला तद्० (गु०) एकता, एक ही, दुःखी ।

अकीर तद्० (ख०) घूम, मुझभरी, ताँवा ।

अक्रूर तन्० (गु०) दयाघु, सख, अक्रोधी, कोमल  
स्वभाव ।

अक्रूर (गु०) श्री कृष्ण के चाचा थे। ये स्वयम्भुव के  
पुत्र थे । माता का नाम गान्धिनो था । इनकी  
ही सम्मति से सत्यभामा के पिता यतधन्वा ने  
सत्राजित को मार कर उसको स्वयम्भुवकमणि  
लेली थी । जब कृष्ण ने उसे डराया, तब यह  
स्वयम्भुवकमणि अक्रूर को देकर भागा ; किन्तु  
पकड़ कर मार डाला गया ।

अक्त तन्० (गु०) भोज, गोला, लिया, सींचा हुआ ।

अक्त त् (गु०) पहिया, घुटे या कोल, चौंहर का  
पौंसा, गाड़ी का जुहाँ, गाड़ी, रथ, शौंल,  
इन्द्राक्ष, मेने की तेल का एक घाट विशेष,  
आत्मा, ज्ञान, मरहटा, सर्प ।

[—पाद विद्ययात्, हिन्दू दार्शनिक ऋषि, इनका  
दूसरा नाम गौतम है । इन्होंने न्याय-  
दर्शन प्रणयन किया है । इसीसे न्याय का  
दूसरा नाम अक्षपाद दर्शन भी है । इनका  
होना ख्रीष्टाब्द से ६०० वर्ष पूर्व से २००

वर्ष पूर्व के भीतर माना जाता है । इनके बनावे  
दर्शन में ५२८ सूत्र हैं । इन्होंने न्याय में ईश्वर  
और परलोक को माना है । दुःख से श्रयन्त  
निवृत्ति को यह मुक्ति मानते हैं । न्याय का  
दूसरा नाम आन्वीक्षिकी विद्या भी है । जिसका  
अर्थ है सुनकर बान्धेपण करना ।]

अक्षत तद्० } [अ+क्षत] (गु०) बिना टूटे वाँचल  
अच्छत तद्० } जो पूजा के काम में आते हैं ।  
बिना टूटे, साजा । — यौनि (ख०) वह स्त्री जिसे  
पतिव्रत-ग्रन्थ न हुआ हो ।

अक्षय [अ+क्षय] (गु०) अयिनायी, जिसका कमी  
नाश न हो, अमर, विरजोवी, स्थिर ।

[—कुमार रावण के उस पुत्र का नाम जो  
हनुमान द्वारा मारा गया । यह मन्दोदरी के गर्भ  
से उत्पन्न हुआ था । इसको लोग अक्षयवृत्त  
भी कहते हैं ।]

[—घट वरगढ़ का पूज्य वृक्ष, इसको अक्षयवट  
भी कहते हैं यह प्रयागराज के किले में वर्तमान था ।]

अक्षम तन्० (गु०) [अ+क्षम] क्षमता-रहित, अशक्त ।

अक्षर तन्० [प्रा० अक्षर] (गु०) अकारादिवर्ष,  
विष्णु, ब्रह्मा, ब्रह्म, शिव, मोक्ष, गगन, धर्म,  
तपस्या, अपामार्ग (चिबेरी) तल । (गु०) नाश-  
रहित, निर्विकार, सत्य । —विन्यास लेख,  
लिपि । —माला वर्षामाला, अक्षर श्रेणी ।

अक्षांश तद्० (गु०) [अक्ष + अंश] कल्पित भूगोल  
की ऊपर की रेखा विशेष । पृथिवी की पुरी,  
पृथिवी के उत्तर या दक्षिण केन्द्र तक ९०° (नब्बे  
अंश) पर रेखा । (Latitude.)

अक्षि तद्० (गु०) शौंल, नेत्र, नयन । —गत शौंल  
अक्षि तद्० (ख०) } पर चढ़ा हुआ (गु०) । —विभ्रम  
शौंल घुमाना । —विलोप कटाक्षपात ।

अक्षुण्ण तद्० (गु०) अक्षुण्णित, मनस्ताप-रहित ।  
अक्षुण्ण, समस्त, अक्षिण ।

अक्षौहिणी तद्० (ख०) एक बड़ी सेना जिसमें  
२९८७० रथ, इतने ही हाथी, ६५६९० घोड़े और  
१०८३५० पैदल होते हैं ।

अखण्ड तद्० (गु०) गँधरा, जहूली, अगासित, अन-  
सिखा, अनगढ़, अखाड़ा ।

अखण्ड तत्० (गु०) संपूर्ण, समस्त, सय, खण्ड-  
रहित ।

अखरना तद्० (स्त्री०) अनुचित मातृम होना ।

अखरोट तद्० (पु०) वृक्ष एवं फल विशेष ।

अखाड़ा तद्० (पु०) मरुतगुह स्थान, आङ्गन, साधु  
या गुसाद्यों का दल । रामायण में अररा का  
प्रयोग अखाड़े के स्थान में हुआ है ।

अखाद्य तद्० (गु०) खाने के अयोग्य, अभक्ष्य ।

अखिल तद्० (गु०) समस्त, सारा, सय ।

अख्याति तद्० (स्त्री०) अकीर्ति, अपयश, दुर्नाम ।

अग्र तद्० (पु०) अचल, पर्वत, वृक्ष आदि ।

अग्रद्वगड तद् (गु०) पचमेल, घालमेल, असंलग्न  
वाक्य ।

अग्रणित तद्० (गु०) बहुत, असंख्यात, अपार,  
अनगिनत ।

अग्रण्य (गु०) गिनने योग्य नहीं, अपार, तुच्छ ।

अगति तद्० (स्त्री०) नरक, अकालमृत्यु, (गु०) गति-  
हीन, आश्रयहीन । —क-गति अनन्य उपाय  
होकर स्वीकार करना ।

अगद तद्० (पु०) दवाई (गु०) निरोग, आरोग्य,  
सुख्य ।

अगम तद्० (गु०) अगम्य, दुर्गम, अपहुँच, अघट ।  
बिकट, गहरा, अयाह ।

अगर तद्० (पु०) सुगन्धित काष्ठ विशेष । —घाला  
वैश्य वर्ष के अन्तर्गत एक शाखा, जो अपने को  
अग्रोहा ग्राम (यह दिल्ली के पश्चिम की ओर है) के  
रहने वाले होने के कारण अग्रवाल कहते हैं ।

अग्र तद्० (गु०) आगे, अग्रुआ, आगा, मुख्य, एक  
मुख्य राजा का नाम ।

अगला तद्० (गु०) पहला, पूर्व, प्रधान ।

अगवा तद्० (पु०) दूत, अगधानी ।

अगवाड़ा तद्० (पु०) आगा, अग्र भाग ।

अगवाही तद्० (स्त्री०) अग्नि दाह ।

अगस्ति तद्० } (पु०) वृक्ष विशेष, तारा । यह तारा  
अगस्त्य तद्० } भाद्र मास के अन्त में उदय होता है ।

[१ अगस्त्य तारा के उदय होते ही जल निर्मल हो  
जाता है । इसके उदय होने पर ही राजा गण विजय  
यात्रा करते थे और पितृ तर्पण आदि धार्मिक  
किया जाता है । २ अगस्त्य एक ऋषि का नाम  
है जो मित्रावरुण के पुत्र थे । इनका पहला नाम  
मान है । पीछे से विन्ध्य पर्वत का गर्भ खर्च  
करने के कारण इनका नाम अगस्त्य पड़ा । इनका  
दूसरा नाम कुम्भज भी है । इनका नामोत्पत्त  
वेद में भी पाया जाता है और इनके नाम की  
अगस्त्य संहिता भी प्रचलित है ।]

अग्रहण या अग्रहन तद्० } मार्गशीर्ष मास । यह  
अग्रहायण तद्० } मास बड़ा पवित्र माना  
गया है, हिन्दुओं का यह नयाँ मास है । प्रायः  
लोग इसे मगसिर भी कहते हैं ।

अग्रहुड तद्० (गु०) पहिले पहल, अगला, आगे  
की ओर, सामने ।

अग्राऊ तद्० (गु०) अग्राड़ी, आगे, पहिले ।

अग्राड़ी तद्० (क्रि० वि०) आगे, सामने । (स्त्री०)  
घोड़े के बाँधने की आगे की रस्ती । —मारना  
मोहरा मारना, बैठी की अगली सेना को हटाना ।

अग्राघ तद्० (गु०) अयाह, जिसकी याह न मिले,  
बहुत गहरा ।

अग्रासी तद्० (स्त्री०) पगड़ी, बरान्दा ।

अगुचा तद्० (पु०) एक पत्नी या कीड़ा विशेष,  
देवता विशेष ।

अग्नि तद्० } (पु०) आग, आँच, बन्दि ।  
अग्नि तद्० }

अगुण तद्० (गु०) निर्गुण, जिसमें गुण न हों,  
गुणहीन ।

अगुचा तद्० (पु०) मार्ग दिखाने वाला ।

अग्रेन्द्र तद्० (पु०) पहाड़ों का राजा, अग्रेन्द्र,  
हिमालय ।

अगोचर तद्० (गु०) इन्द्रियों की गति के  
अदृश्य ।

अगोरना तद्० (क्रि०) रखावना, चौकी देना ।

अगोरा तद्० (पु०) देखनेवाला, रखावना ।

अग्नी तद्ग० (सी०) मंत्र के लिये आगे जाना ।

अग्नि तद्ग० (गु०) आग, बन्धि, चित्रक वृक्ष । —द्वेष वैदिक देवता । अग्निर्कोणाधिपति । —कोण पूर्व दक्षिण का कोना । —संस्कार या—क्रिया सुर्दा जलाना । —कुण्ड अग्नि जलाने के लिये गड़ा । —कुमार वृधा बहक ओषध विशेष । —क्रीड़ा आतिशयात्री । —होत्री जो अग्नि में नित्य नियमित रूप से हवन करता हो । —ज्वाला अग्नि शिला, आँवले का पेड़ । —परीक्षा अग्नि को हाथ पर रख कर कूट मद्य को परीक्षा लेना । यह विधान साक्षियों से शपथ लेने का स्मृतियों में निरूपण किया गया है । —वाण अन्यास्य अर्थात् जिसे चलाने से आग बरसे । —मान्य अजीर्ण, भूल न लगना या भूल की कमी । —यन्त्र बन्दूक, तोप, तमझा । —ष्टोम यज्ञ विशेष, अग्नि सम्बन्धी वेदोक्त अग्निस्तव । —प्लाता पितृ विशेष, मरीचिपुत्र, देवताओं के पुर्यज । अन्याधान अति-विहित, अग्निस्कार, अग्निर्लण, अग्निहोत्र । —उत्पात आग लगना, आकाश से अग्नि यत्सना, भूषकेतु दर्शन, उल्कापात ।

अग्र तद्ग० (गु०) आगे, पहले, किसी काम का मुखिया, आदि, प्रथम, ऊपर का भाग, गिर, गिरलर । (गु०) अग्र, उत्तम, अधिक । —गामी (गु०) आगे चलने वाला, अगुवा, उन्हाही । —सर (गु०) अगुवा, सन्देशी, दूत । —ज (गु०) जेठ, बड़ा भाई । —जन्मा (गु०) ब्राह्मण, सुरोहित, जेठा भाई, देवताओं में सर्वप्रथम उत्पन्न अर्थात् ब्रह्मा । —पञ्चात् (अ०) आगे पीछे, आगा पीछा । —शी (गु०) आगे चलने वाला, समाज का मुखिया । —भाग (गु०) पहला भाग, पहिला हिस्सा ।

अग्रहण तद्ग० (गु०) अग्रहण मद्य, [दिलो अग्रहण] । अग्रहार तद्ग० (गु०) देवस्य, ब्रह्मस्य, देवता को अर्पित सम्पत्ति । धान्यपूर्ण रेत ।

अग्रहा, तद्ग० (गु०) ग्रहण करने योग्य नहीं, सुष्ठ, निस्सार, शिवनिर्मात्य ।

अघ तद्ग० (गु०) पाप, अधर्म, अपराध, दोष । [—असुर (गु०) कंस के सेनापति का नाम है, यथा-सुर इमका जेठ भाई था, और पूतना इसकी जेठी बहिन थी, भगवात् श्रीकृष्णचन्द्र जी को मारने के लिये इसीको कंस ने वृन्दावन भेजा था] । —नाशक (गु०) पाप हट करने वाले प्रयोग, मन्त्र जप करना आदि ।

अघखानि तद्ग० (गु०) पापों का समुदाय, पापी अधर्मों ।

अघटित तद्ग० (गु०) घटना-रहित, अतन्मय, अन-होनी, अयोग्य ।

अघमर्षण तद्ग० (गु०) मद्य पापों का नाशक, पाप हटाने वाले वैदिक मन्त्र, एक प्रयोग जो मन्धोपासन में किया जाता है ।

अघार्इ तद्ग० (सी०) छकार्इ, अकरार्इ, पेटभराय, तृप्ति । अघाना तद्ग० पेटभरना, अफराना, तृप्त होना, इकना, भरपूर होना ।

अघोर तद्ग० (गु०) महादेव का दूसरा नाम, मूत्र में भयङ्कर, उपासना विशेष । —पन्थ (गु०) शैव सम्प्रदाय की एक शाखा का नाम है, इस सम्प्रदाय के लोग अपने को अघोरी या अघोर-पन्थी कहते हैं । ये बहुत ही मलीन होते हैं, घृणा का ये नाम तक नहीं जानते हैं, इनके लिये अमहय वदार्थ ही नहीं । सर्वतोभाय से घृणा की जीत लेना ही इनके धर्म का मूल है ।

अङ्क तद्ग० (गु०) आँक, चिन्ह, सङ्केत, दाग, रेखा, संख्या । अङ्कना तद्ग० लिखना, छापना, सङ्केत करना, चिन्ह करना, मोल भाव करना ।

अङ्कवार तद्ग० (गु०) कौब, कोय, गोदी ।

अङ्काना तद्ग० परबना, आँचना, मोल ठहराना ।

अङ्काय तद्ग० (गु०) निरख, भाव मोल ठहराना ।

अङ्कित तद्ग० (गु०) चिन्ह किया हुआ, सुद्वित, चिन्कित, परखा हुआ, जाँच किया हुआ, छपा हुआ ।

अङ्कुर तद्ग० (गु०) अङ्कुर, फुनगी, नया उगा हुआ तृण आदि, बीज से उत्पन्न कौबल, गौही ।

अङ्कुरित नर० (३०) अङ्कुरपुत्र जितने अङ्कुर उत्पन्न हुए हैं, । — यौवन (५०) यौवन का आरम्भ, युवा अवस्था की पहली दशा ।

अङ्कुश तत्० (५०) आँकड़ी, लोहे का एक हथियार जिससे हाथी चलाये जाते हैं । मुडा हुआ फोटा ।

— अन्न (५०) आकृष्य की पकड़, महावत, हस्तिकपक, हाथी चलाने वाला । — धारी हस्तिकपक ।

अङ्कुरना तद्० भूँजना, गरम करना घूस लेना ।

अङ्ग तत्० (५०) शरीर का एक हिस्सा, अश्रय, शरीर, मित्र का सम्बोधन, शास्त्र विशेष, वेदाङ्ग, जैन शास्त्र विशेष । वलि राजा का क्षेत्रज पुत्र, इस राजा के शक्ति देश का भी नाम अङ्ग देश है । जन्मान्ध महर्षि दीर्घतमा से वलि राजा की पत्नी सुदेव्या के गर्भ से इसको उत्पत्ति हुई था ।

गङ्गा और सरस्वती के मङ्गल के मध्य देश को अङ्ग देश कहते हैं । — जन्मा (५०) सन्तान, कैथ, काम, पीडा, मद, मोह । — राज (५०) कर्ण का नाम है, राजा दुर्योधन ने अर्जुन को प्रतियोगिता करने के लिये कर्ण को अङ्ग देश का अधिपति बनाया था । कर्ण का पहला नाम वसुधेय था । — ग्रह (५०) अकड-वाई, घात रोग ।

अङ्गड़ाई तद्० (स्त्री०) जम्हाई, मरोड़ना ।

अङ्गन तद्० (५०) अँगनाई, आँगन, चौक, मकान के बीच की भूमि ।

अङ्गद तत्० (५०) बडूँटा, बानूयन्द, कविराज घालि का पुत्र ।

अङ्गना तद्० (स्त्री०) सुन्दरी, फामिनी, स्त्री, लुगाई ।

अङ्गन्यास तत्० (५०) वैदिक या तान्त्रिक उपासना, आँ में मर्कों के द्वारा अङ्गस्पर्श करना ।

अङ्गरखा तद्० (५०) पहिने का सिना हुआ कपडा, चपकन ।

अङ्गराम तत्० (५०) शरीर को सुन्दर और सुगन्धित बनाने वाला लेप, चन्दन लगाना, सुगन्धित पदार्थों से शरीर पर बेन बूटे निकालना ।

अङ्गरी तद्० (स्त्री०) पुष्ट के समय पहना जाने वाला परिच्छद, कवच, धातुर ।

अङ्गार तत्० (५०) जलता हुआ कोयला । — क मङ्गल ग्रह ।

अङ्गारा तद्० (५०) कोयला, जली लकड़ी ।

अङ्गारी तद्० (स्त्री०) अंगीठी, बोरसी, या बरोसी आग रखने का यंत्रन ।

अङ्गिया तद्० (स्त्री०) चोली, काँचुली, कञ्चुली, तीसरा कपड़ा, स्त्रियों के पहिने का कुत्ता ।

अङ्गिरा तत्० (५०) तारा, ब्रह्मा का मानसपुत्र, वे धर्मशास्त्र प्रवर्तक ऋषियों में से हैं, इनके यनाये हुए ग्रन्थ का नाम अङ्गिरा-संहिता है । देवगुण वृहस्पति इन्हे के पुत्र हैं ।

अङ्गी तत्० (५०) शरीर वाला, शरीर धारी, प्रधान, किसी समुदाय का मुखिया ।

अङ्गीकार तत्० (५०) स्वीकार, मानना, सहना, अंगेजना, प्रतिज्ञा, मम्मति ।

अङ्गीठी तद्० (स्त्री०) आग रखने का पात्र, बरोसी ।

अङ्गुल तत्० (५०) आठ जी के बराबर परिमाण, एक गिरह का तीसरा हिस्सा ।

अङ्गुली तद्० (स्त्री०) अंगुरी, हाथ का या पैर का अङ्ग । — आण्य अंगुरियों की रक्षा करने वाला, यह पुष्ट में अस्त्र शस्त्रों से अङ्गुलियों की रक्षा करने के लिये बनाया जाता था, दस्ताना ।

अङ्गुठा तद्० (५०) अङ्गुष्ठ, मोटी अंगुरी ।

अङ्गुठी तद्० (स्त्री०) मुंदरी, छल्ला, अङ्गुलीय, अङ्गुलियों में पहिने का गहना ।

अङ्गूर तद्० (५०) दाख, द्राक्षा, फल विशेष, मेवा ।

अङ्गुष्ट (स्त्री०) अङ्गुष्ट, डील, आकार, आकृति ।

अङ्गुठी तद्० (स्त्री०) (देखो अङ्गुठी) ।

अङ्गुष्ठा तद्० (५०) शरीर पोछने का वस्त्र, अगवस्त्रा, गमछा, अँगपूछा, तोलिया ।

अङ्गुरा तद्० (५०) मच्छर, मशक, मसा ।

अङ्गुप्रि तत्० (५०) चरण, चौथा हिस्सा, वृत्तों की जड । — प (५०) वृष्ट ।

अञ्च तत्० (५०) स्वरवर्ण, सहा विशेष, द्विपाकर करना ।

अचक तद्० (श्र०) अचानचक, हठात्, अकस्मात्, बिना जाने बूझे ।

अचकरी तद्० (खी०) लम्पटता, जिलाइपन, अनु-  
चित काम, धींगाधीगी, अत्याचार ।

अचण्ड तद्० (गु०) धीर, शान्त, सुशील, मृदु, मरल  
स्वभाव वाला ।

अचम्भः तद्० (गु०) चमत्कार, विस्मय, —करना  
(कि०) विस्मित होना, आश्चर्यित होना ।

अचञ्चल तद्० (गु०) स्थिर, बिना चञ्चलाया हुआ,  
दृढ़प्रकृति वाला ।

अचर तद्० (गु०) जड़ पदार्थ, जो चलन मके, अचल,  
अटल, स्थावर, दृढ़ ।

अचरज तद्० (गु०) अचम्भा, आश्चर्य ।

अचल, तद्० (गु०) अटल, स्थिर, धीर, पर्यंत, धृत्व,  
जो चलायमान न हो, शिव, जैतियों का पहला  
तीर्थंकर ।

अचला तद्० (खी०) पृथिवी, धरती, धरणी, सातवीं  
लंका, माघ शुक्ल सप्तमी, इस दिन के किये शुभ-  
कर्म अचल होते हैं, इसीसे इस सप्तमी को अचला  
कहते हैं ।

अचानक तद्० (अ०) अकस्मात्, हठात्, एकएक, एका  
एकी, बिना कारण, दीवयोग से ।

अचाना, अचयाना, (कि०) मुंह धोना, कुल्लः करना,  
गाने के पीछे मुंह साफ करना, आचमन करना ।

अचार तद्० (गु०) आचार, उपहार, चलचलन,  
शास्त्र कवित, नित्य करने योग्य क्रिया, जो उपव-  
हार धर्म सेवा का सहायक हो ।

अचिन्त तद्० (गु०) जिसको चिन्ता न हो, बेसुध,  
निर्युद्धि, चिन्ता हीन ।

अचिर तद्० (अ०) देर नहीं, शीघ्र, सुस्त, वेग ।

अचूक तद्० (गु०) बिना त्रुटा हुआ, ठीक ।

अचेत तद्० (गु०) अज्ञान, सुषिर्ण, सुप्त हीना, इन्द्रियों  
के ज्ञान तट्ट हो जाना ।

अचेतन्य तद्० (गु०) अज्ञानता, निर्जीव, जड़पदार्थ,  
मूर्खता ।

अचैन तद्० चैन न रहना, दुःखी, उपासुत, असुख,  
अस्वस्थ ।

अच्युत तद्० (गु०) जो कभी च्युत न हो, जिसका  
कभी नाश न हो, स्थिर, अमर, सर्वदा वर्तमान  
रहने वाला, ठहरा हुआ, अचल, विष्णु का एक  
नाम ।

अच्छत तद्० जीते रहना, वर्तमान रहना, स्थिति,  
होता रहना, जैसे:—

“सुमहीं अच्छत अस हाल हमारी” —रामायण ।

अच्छत्र तद्० (गु०) जिसको छत्र नहीं, राज्य से  
च्युत, असहाय ।

अछताना-पछताना तद्० पद्यात्ताप करना, किये हुए  
घुरे कर्मों से दुःखी होना ।

अच्छा तद्० भला, उत्तम, सुन्दर, मनोहर, चंगा,  
(स्त्रीकारार्थक अठम्य) ।

अछरा तद्० (खी०) देवाङ्गना, स्वर्ग की वेरया,  
अपतरा का यह अपभ्रंश है, इसका यह अक्षर,  
अछरन होता है । यथा:—

“मोहहिं सय अछरन के रूप” —पद्मावत ।

अछवानी तद्० (खी०) वत्ती, बानी ।

अछूता तद्० नहीं हुआ हुआ, जूटा नहीं, नवीन,  
पवित्र ।

अछेह तद्० (गु०) बहुत अधिक, यथा:—

“धरे रूप गुण कोगरव जिरे अछेह उहाह”  
—विहारी सत्सई ।

अज तद्० आज, वर्तमान दिन ।

अज तद्० (गु०) नहीं उत्पन्न होने वाला, विष्णु से  
उत्पन्न यज्ञ शिव ।

[सूर्यवंशीय अयोध्या का राजा, जिसके पुत्र  
महाराज दशरथ थे । अज राजा बड़े धीर थे,  
गन्धर्वराज के पुत्र से सम्मोहनाक्ष उनको मिला था।]  
बकरा, मेघ राशि, —। तद्० बकरी, माया,  
अविद्या, प्रकृति ।

अजगर तद्० (मं०) बकरे को निगलने वाला बहुत  
सोटा माँय, आलसी, निकम्मा ।

अजगच तद्० (गु०) शिव का अनुच ।

अजगुत तद्० अज्ञत, आश्चर्य, बिना देखी सुनी वस्तु ।



अजय तत्० (गु०) जिसकी जीत नहीं हुई हो, जो अजेय हो, जिसे कोई नहीं जीत सके, वीरभूमि जिले की एक नदी का नाम ।

अजसी तद्० (गु०) निन्दित, यशरहित ।

अजर तद्० (गु०) जवान, यौवन, युवा, अमर, जो कभी बूढ़ा न हो ।

अजहूँ तद्० (अ०) आत्र भी, अभी, यद्यत्, अद्यतक, आजतक ।

अजस्र तद्० (अ०) निरन्तर, नित्य, सर्वदा, प्रतिक्षण ।

अजाड तद्० (गु०) सनिया टाट ।

अजाति तद्० (गु०) बिना जाति का, घिटला हुआ, विजाति, त्याज्य ।

अजान तद्० (गु०) अज्ञान, मूर्ख, निर्बोध, अविद्येकी ।

अजामिल तद्० (गु०) एक ब्राह्मण का नाम, यह ब्राह्मण प्रथम अथव्या में सञ्चरित था, परन्तु पीछे से कुसुम में पड़ कर आचारभ्रष्ट हुआ, दासी के गर्भ से उत्पन्न इसके दश पुत्र थे, जिनमें से एक का नारायण नाम था, मरने के समय अजामिल ने अपने नारायण पुत्र को पुकारा, इसी कारण विष्णु दूत इसकी विष्णुलोक ले गये। — श्री मद्भागवत ।

अजातशत्रु तद्० (गु०) राजा युधिष्ठिर का दूसरा नाम, युधिष्ठिर किसीको अपना शत्रु नहीं समझते थे, इसी कारण उनका यह नाम पड़ा ।

२ इस नाम के एक राजा का वर्णन उपनिषदों में भी आता है, यह राजा ब्रह्मज्ञानी था । महर्षि गार्ग्य इसके यहाँ गये थे और राजा से कुछ विषयों में उपदेश लेकर लौट आये । ३ मगध के एक प्राचीन राजा का भी नाम अजातशत्रु था, उसके पिता का नाम विन्धिसार था । ४८५ ख्रीष्टाब्द के पूर्व यह मगध का राज्य करता था ।

अजित तद्० (गु०) नहीं जीता हुआ, देहा धली जो सबको जीत ले ।

अजिन तद्० (गु०) मृगछाला, हरिण की छाल जिस पर ब्रह्मचारी संन्यासी आदि धार्मिक व्यक्ति बैठकर उपासना करते हैं ।

अजिर तद्० (गु०) आँगन, आँगना, चौक, चबूतरा । अजीर्ण तद्० पुराना नहीं, अपच, नहीं पचना, अजीर्ण होना ।

अजीव तद्० (गु०) बिना जीव का, अचेतन, मरा हुआ, मृत, जड़ पदार्थ ।

अजुगत तद्० (स्त्री०) अन्धेर, उत्पात, आत्याचार, उत्पातीकार्य ।

अजौँ तद्० (अ०) आजतक, अद्यतक, अद्यही तक ।

अज्ञ तद्० (गु०) [अ + ज्ञ] नहीं जानने वाला, मूर्ख, बेसमझ, अहूँ, अनजान, अज्ञान, अनसमझ, अयोध ।

अज्ञात तद्० (गु०) [अ + ज्ञात] नहीं जाना हुआ, अनजाना ।

अज्ञान तद्० (गु०) [अ + ज्ञान] मूर्ख, निबुद्धि, अज्ञ, बुद्धिहीन — तः (अ) अज्ञान से, बेसमझी से, अनजाने ।

अज्ञेय तद्० (गु०) नहीं जानने योग्य, कष्ट में जानने योग्य, दुष्कह ।

अञ्जल तद्० (गु०) अञ्जला, फण्डे का शेष भाग, किनारा, दिक्प्रदेश ।

अञ्जन तद्० (गु०) सुरमा, काजल, आँख में लगाने का द्रव्य, अञ्जना, शोभना, काजल लगाना, धान्य-विशेष, अञ्जना या अञ्जनी तद्० दिग्गज की हथिनी, धानरी विशेष, हनुमान की माता का नाम, अञ्जना नाम्नी धानरी के गर्भ से मन्मथीर हनुमान की उत्पत्ति हुई थी ।

अञ्जलि तद्० (स्त्री०) जोड़ हस्त, हाथ का सम्पुट, अञ्जुरि, दोनों हाथों को ऐसा जोड़ना जिसमें बीच में अवकाश रहे । परिमाण विशेष । — कर्म सुशीलता, प्रणाम, नमस्कार, विनय करना । — चन्द्रपन हाथ जोड़ना, कर्मसम्पुट नमस्कार, नम्रताप्रदर्शित करने की मुद्रा ।

अञ्जसा तद्० (अ०) शीघ्रता, शीघ्रता से, वेगी ।

अञ्ज्वा तद्० अनध्याय, झुटी, अवकाश ।

अञ्जीर तद्० अञ्जीर नामक वृक्ष, फल विशेष, प्रियाल ।

अटक तद्० (खी०) रोक, बाराण, रुकावट डालना, अटकाना, भारत वर्षान्तर्गत उड़ीसा प्रान्त के एक नगर का नाम, सिन्धु नदी का दूसरा नाम है। कहते हैं सिन्धु नदी के प्रथम वेग के कारण उसका अटक नाम पड़ा। क्योंकि वहाँ जाकर लोग अटक जाते हैं। —ल (खी०) अनुमान, विचार। —ना रोकना, रोकना, बाराण करना, किसी कार्य में विघ्न डालना। —अ (यु०) रुकावट, प्रतिबन्ध। —लपच्छू बिना प्रमाण, बिना ठौर ठिकाने, अनिश्चित।

अटका तद्० (यु०) मिट्टी का पात्र विशेष, श्रीजगन्नाथ जी का प्रसाद।

अटखेल तद्० (यु०) बहुत खेलने वाला, खिलाड़ी, चञ्चल। —ी (खी०) चञ्चलता, खिलाड़पन, दिठाई, चञ्चलत्व।

अट्ट तद्० (यु०) मोटा, पोड़ा, दूढ़।

अटन तत्० (यु०) फिरना, चलना, घूमना, भ्रमण, यात्रा।

अटना तद्० (क्रि०) सभाना, भर जाना, घूमना, फिरना।

अटपट तद्० (यु०) अनियमित, टेढ़ा, बाँका, टर्नी।

—ी (खी०) तिरछी, पड़ीटेड़ी, बेईंगी, कठिन।

अटम तद्० (यु०) रागि, डेर, बटाटा।

अटल तत्० (यु०) दूढ़, पोड़ा, अचल, नहीं टलने वाला। गुहाद्वयों के एक अलाड़े का नाम।

अटवी तत्० (खी०) घन, जंगल, गहन, कानन, भयानक जङ्गल, हिंस्र जन्तुओं का वास-स्थान।

अटा तद्० वा अटारी (खी०) कोठा, ऊपर की कोठरी, सब से ऊपर का कमरा।

अटाला तद्० (यु०) लटला, डेर, सामग्री, सामान, अथवा।

अटिया तद्० (खी०) छोटी मड़ैया, भौपड़ी, छोटा मकान, पर्णकुटी।

अट्ट तद्० (यु०) बहुत, पोड़ा, नहीं टूटने वाला, नहीं घटने वाला, अट्ट, अट्टक, अट्टक, जल, सम्पूर्ण, पूरा, कुल।

अट्टक तद्० (यु०) टुक नहीं, निराश्रय, उद्देश्य-हीन, अट्ट-प्रतिष्ठा।

अट्टेर तद्० (यु०) एक ग्राम का नाम। —न (यु०) फेटी, चरखी, छोड़े की एक चाल। —नी (क्रि०) फेटा बनाना, गोसाकार बनाना, मोड़ना।

अट्टोल तद्० (यु०) अचिकन, अक्षय, अनाड़ी, जङ्गली, चर्बर।

अट्टहास तत्० (यु०) बहुत हँसना, खिलखिला कर हँसना, कहकहा मारना।

अट्टालिका तत्० (खी०) अट्टाल, अट्टारी, राजगृह, प्रासाद, भवलागार, बड़ा मकान, हर्ष।

अट्टालीस तद्० संख्या-विशेष, आठ और चालीस।

अट्टीस तद्० संख्या विशेष, अड़तीस, आठ और तीस।

अट्टल तद्० (यु०) संस्कार विशेष।

अट्टारा तद्० (यु०) आठवाँ दिन, मप्ताह, आठ दिन का समुदाय।

अट्टेल तद्० (यु०) जो ठेला न जाय, अविचलनीय, अपरिहार्य, जो न हट सके, पथेष्ट, प्रसुर, दूढ़, स्थिर।

अट्ट तद्० (खी०) भगड़ा, विरोध, हट, गमन, चेष्टा।

अट्टड़ तद्० मण्डी, हाट, बाजार, विदेशीय वा प्रांतीय वस्तुओं के उतारने की जगह, उतार, थिय, रुकावट। —ा (यु०) पेटपाल, रोकना, रुकावट, प्रतिबन्ध।

अट्टला तद्० (यु०) शरण, आश्रय, आड़, बचाने वाला, रक्षा करने वाला।

अट्टना तद्० (क्रि०) घमना, रुकना, द्विविधा करना, निश्चय में च्युत होना।

अडवंगा तद्० (पु०) बाँका, तिछाँ, आसमान, वेदङ्गा ।

—१ अडवंग (पु०) वायलापन, अविचार ।

अडवड तद्० (पु०) प्रलाप, निरर्थक बकता, गाल देना, ऊँचा नीचा ।

अडवन्ध तद्० (पु०) कठिनबन्ध, फोपीन ।

अडवल तद्० (पु०) अडजाने वाला, रुकनेवाला, अडुआ, हठी, मगरा ।

अडाडा तद्० (पु०) कड़ाड़ा, ढोंग ।

अडानी तद्० (खी०) छाता रोकने वाला, बड़ा पंखा ।

अडसा तद्० (पु०) एक वृक्ष का नाम, रुसावसा, खाँसी में इसका प्रयोग होता है ।

अडेयाना तद्० (क्रि०) आश्रय देना, रक्षा करना, आरवासित करना ।

अडेच तद्० (खी०) वैरभाव, अश्रुता, द्वेष ।

अडोल तद्० (पु०) नहीं डोलने वाला, स्थिर, अचल, अटल, दृढ़, नहीं हिलने वाला ।

अडोस-पडोस तद्० (पु०) पडोस, पास पास बसना, प्रतिवेश, पास पास का मकान ।

अड्हा तद्० (पु०) ठहरने की जगह, मेना रहने का स्थान, छावनी ।

अडाई तद्० (पु०) सँपया विशेष, दो और आधा ।

—गुना दो और आधे से अधिक, एक हिस्ते में और अडाई हिस्सा बढ़ाना ।

अडुकि तद्० (अ०) उड़क कर, सहारा लेकर ।

अडैया तद्० (खी०) तोल, माप, घटखटा ।

अणि तद्० (खी०) अज्ञात कीलक, पहिये के अग्र-भाग का काँटा, तीखीधार, नोक धाड़, कण मोनी, धार, सीमा ।

अणिमा तद्० (पु०) या अनिमा तद्० (खी०) (हिन्दी में खी०) आठ सिद्धियों में की एक सिद्धि, अत्यन्त छोटा बन जाने की शक्ति, बहुत सूक्ष्म, योग का एक ऐश्वर्य विशेष ।

अणु तद्० (पु०) कणिका, अत्यन्त सूक्ष्म, धान्य विशेष, भूख यस्तु, सघ से छोटा हिस्सा । छप्पर के छेद में घर में आये हुए सूर्य के प्रकाश में उड़ते हुए जो छोटे कण दीख पड़ते हैं, उनमें से एक कण के साठवें भाग को अणु या परमाणु कहते हैं । यह नैयामिकों का प्रधान तत्त्व है । नैयामिक इसीके द्वारा सौंसारिक पदार्थों की उत्पत्ति मानते हैं । यह शक्तिमान है । मिलने और बिछुड़ने की शक्ति इसमें वर्तमान है । —मात्र (पु०) छोटासा ।

—चीक्षण (पु०) छोटे छोटे पदार्थों को देखने के लिये काँच का बना हुआ एक प्रकार का यन्त्र, दूर्ध्वीन ।

अण्टा तद्० (पु०) गेंद, गोली, एक प्रकार का खेल ।

—चित तद्० (पु०) अभागी, उतान पड़ा हुआ, बेलाग गिरा हुआ ।

अण्टलाना तद्० (क्रि०) बाकैती करना, सँठना, बाँकापन दिखाना, अभिमान करना, अहंता की स्वयं मरोड़ना ।

अण्ड तद्० (पु०) सँकथुच, चक्का, बीज, पेगीकोप, अण्डकोप, कस्तूरी । —१ (पु०) पत्नी आदि के उत्पन्न होने का स्थान, गोलाकार । —कटाह (पु०) जगत् विश्व, सँसार, गोल । —कोप (पु०) मुष्क, घैली, आँठ —ज (पु०) अण्डे से पैदा होने वाले जन्तु, यथा पत्नी-साँव-मङ्गली-गोह-गिरगिट-बिसलपरा ।

अण्डी तद्० (खी०) रेशमी वस्त्र विशेष, ज्यादातर यह ओढ़ने के काम में आता है, आसाम की अच्छी बहुत अच्छी होती है ।

अतः तद्० (अ०) इससे, इस कारण, इस हेतु, इसलिये ।

अतप्य तद्० (अ०) इसी कारण, इसी हेतु, इसीलिये ।

अतनु तद्० (पु०) या अतन (तद्०) देर रहित, बिना शरीर का, कामदेव ।

कामदेव का शरीर महादेव के क्रोध ने भस्म हो गया था, इन्द्र ने इसे महादेव पर विजय पाने की आशा से भेजा था, परन्तु अभिमन्युवश दग्ध हो गया । पुनः पार्यती की प्रार्थना से महादेव ने इसको उन्नी-वित किया अतप्य कामदेव का नाम अतनु है ।

अतन्द्रित तत्० (गु०) आलस्य रहित, कर्मठ, चतल, चालाक, जाग्रत ।

अतल तत्० (गु०) बिना तल का, बिना घँदे का घुँसल, गोल, सात पातालों में का पहला पाताल ।  
—रूपर्श (गु०) अगाध, अति गंभीर, जिसके तल का स्पर्श न हो सके ।

अतसी तत्० (खी०) तीसी, अहसी, शय, पाट ।

अताई तद्० (गु०) गधैया, जंत्रा, बजाने वाला, बजधैया ।

अति तत्० (गु०) अधिक, बहुत, विस्तर, अत्यन्त बड़ा, बीता हुआ, हो चुका, उन्नाँचना, पार ।  
—काय (गु०) बड़ा शरीर, भयानक शरीर वाला ।  
[रावण का एक पुत्र, इसने तपस्या के द्वारा ब्रह्मा को मनुमुद्र करके एक अभेद्य कवच पाया था, जिससे यह अजेय हो उठा था । लक्ष्मण के नाथ युद्ध में यह मारा गया ।—काल (गु०) अवेर, विलम्ब, देरी ।  
—क्रम (गु०) नाँचना, पार होना, अपराध, अपमान करना, अन्यथा चरण, क्रमभङ्ग करना ।  
—क्रान्त (गु०) पार गया हुआ, जिन शब्दों के पहले अति शब्द आता है वे शब्द अपने अधिक्त कर्म के वाचक ही जाते हैं ।—कृच्छ्र तत्० (गु०) घृत विशेष, पाप दूर करने के लिये यह घृत किया जाता है, यह घृत प्राजापत्य घृत का भेद है, उससे इसमें विशेषता यही है कि जितने दिन भोजन करने का नियम है उतने दिन अतिकृच्छ्र में दाहिने हाथ में जितना अन्न खावे उतनाही आहार करना चाहिये ।

अतिथि तत्० (गु०) साधु, यात्री, पाहुन, जिनक आने की तिथि नियत न हो । श्री रामचन्द्र जी के पौत्र और कुश के पुत्र का नाम ।—भक्त (गु०) अतिथियों की सेवा करने वाला, अतिथि पूजक ।

अतिपन्था तत्० (गु०) बड़ा मार्ग, राजपथ, सड़क ।

अतिपट तत्० (गु०) अति शत्रु, महा घेरी, उदासीन, असंबन्ध ।

अतिपराक्रम तत्० (गु०) बड़ा प्रताप, तेज ।

अतिपात तत्० (गु०) अन्याय, उत्पात, उपद्रव ।

अतिपातक तत्० (गु०) भारी पाप, तब प्रकार के पापों में सब से बड़े तीन पाप, माता, कन्या, और पुत्र को खी का संसर्ग करना, पुत्रों के लिये अतिपातक है । और पुत्र पिता तथा शत्रु का संसर्ग करना, स्त्रियों के लिये अतिपातक है ।

अतिपान तत्० (गु०) बहुत पीना, मत्तता, पीने का हयसन ।

अतिपार्ष्व तत्० (गु०) सन्निकट, समीप, अति निकट, पास, दूर नहीं ।

अतिप्रसंग तद्० (गु०) अत्यन्त मेरु, पुनरुक्ति, अति विस्तार, उपमिषार, क्रम का नाश करना ।

अतिवला तत्० (खी०) वृक्ष विशेष, पीतवला, दरिया का पेड़ ।

अतिरथी तत्० [अति + रथिन्] (गु०) अतिशय योद्धा, रणकुशल, महा योद्धा, बहुत मनुष्यों का एक साथ लड़ाने वाला ।

अतिरिक्त तत्० [अति + रिच् + क्त] (गु०) बहुत, भिन्न, अधि, अतिशय, अत्यन्त, अनेक ।

अतिरेक तत्० [अति + रिच् + चञ्] (गु०) आधिक्य, अतिशय ।

अतिरोग तत्० [अति + रज्ज + चञ्] चयरोग, छयो, महाव्याधि ।

अतिशय तत्० [अति + शी + अञ्] (गु०) अत्यन्त, विस्तार, यश, बाहुल्य, अतिरिक्त ।—पान (गु०) अत्यन्त मद्यप ।—ी श्रेष्ठ, अधिक, अत्यन्त ।  
—उक्ति (खी०) अतिशय उक्ति, सम्मानित करने के लिये अमम्भव प्रशंसा । काठय का अलङ्कार विशेष ।

अतिस्तार वा अतीस्तार तत्० [अति-श्च + चञ्] संग्रहणी रोग, जठर की व्याधि, घँटे की पीड़ा ।

अतीत तत्० [अति + ई + क्त] (गु०) भूत, गत, अतिक्रान्त, बीता हुआ, सङ्गीत शास्त्रानुसार परिमाण विशेष ।—काल (गु०) बीता हुआ समय ।

अतीव तत्० [अति + इव] अतिशय, अत्यन्त, यद्येष्ट, बहुत अधिक ।

अतीस तद्० (पु०) औपधि विशेष ।

अतुल तत्० [अ + तुल] (पु०) या अतुल्य, अनुपम, असदृश, तुलना रहित ।—ति अनुपम, असमाननीय, उपमारहित, सर्वश्रेष्ठ ।

अतेजा तद्० चीनता, हतश्री, हतप्रभ ।

अतोल तद्० या अतौल, अप्रमाण, इयत्ता रहित, तोलने का नहीं ।

अत्ता, अत्तिका तद्० (स्त्री०) माता, ज्येष्ठा बहिन, बही मौसी, सास । इसका प्रयोग पुराने नाटकों में आता है । नाटकों में जेठी बहिन के सरोधन में अत्तिका आता है ।

अत्यन्त तत्० [अति + अन्त] (पु०) अतीव अतिशय, अत्यधिक ।—कोपन (पु०) चण्ड, अतिशय क्रोधी ।—गामी शीघ्र गामी, अधिक चलने वाला ।—वासी, एकान्त वासी योगी, नैष्ठिक प्रह्लाचारी ।—अभाव (पु०) न्यायमतसे सब प्रकार से अभाव, त्रिकाल में जिसकी स्थिति न हो, अभाव पदार्थ ।

अत्यय तत्० [अति + ई + अल्] (पु०) विनाश, अतिक्रम, मृत्यु, दोष, राजाचा कालह्वन, अपराधा ।

अत्यर्थ तत्० (पु०) विस्तार, अतिशय, अधिक ।

अत्यष्टि तत्० छन्दो विशेष, यह छन्द जिसमें अष्टादश वर्ण और चार पाद होते हैं ।

अत्याचार तत्० (पु०) कुश्रवहार, अन्याय, दौरात्म्य, निषिद्धाचरण ।—ी (पु०) दुष्कर्म, दुरात्मा, कुकर्म ।

अत्यावश्यक तत्० (पु०) अति प्रयोजनीय, बहुत आवश्यक ।

अत्युक्ति तत्० (स्त्री०) असम्भव कथन, आरोपित कथन, काठर का अलङ्कार विशेष ।

अत्युक्था तत्० (स्त्री०) छन्दोविशेष, चार पाद और चारह अक्षर वाला ।

अत्युक्कट तत्० (पु०) अतिशय कठिन, अति तीव्र ।

अत्युत्कण्ठा तत्० (स्त्री०) अतिशय मनस्ताप, अत्यन्त चिन्ता ।

अत्युत्कृष्ट तत्० (पु०) अत्युत्तम, बहुत अच्छा ।

अत्युत्तम तत्० (पु०) अति रमणीय, अतिशय उत्कृष्ट, बहुत अच्छा ।

अत्युत्तर तत्० (पु०) सिद्धान्त, मीमांसा निर्धारण, निश्चय धरना, पाश्चात्य ।

अत्र तत्० (अ०) यही, यहा, इस ठौर ।—त्य (अ०) यहीं का, इसी स्थान का, इस ठौर का ।

अत्रप तत्० निर्लज्ज, लज्जाहीन ।

अत्रभवान् तत्० पूज्य, ह्याच्य । नाटकों में इस शब्द का प्रायः व्यवहार होता है ।

अत्रस्थ तत्० इसी स्थान का वासी, यही रहने वाला ।

अत्रि तत्० (पु०) सपरिषी में से एक ऋषि का नाम, यह ब्रह्मा के मानस पुत्र थे, कर्दम प्रजापति की कन्या अननूया इन्हें ब्याही थी, इनके पुत्रों का नाम महर्षि दुर्वासा और चन्द्र है । मनु संहिता में लिखा है कि मनु के दश प्रजापति पुत्रों में से एक अत्रि भी थे ।—जात (पु०) चन्द्र, दिग्गज, नेत्रज, नेत्रप्रसृत, नेत्रभू, निशाकर, सुधौसु, चन्द्रमा ।

अथ तत्० (अ०) अनन्तर, मङ्गल आरम्भार्थ, प्रश्न, अधिकार, संशय, विकल्प, समुच्चय, तदनन्तर, तदपरि, पश्चात् ।—च वाक्य योजनार्थ अथय शब्द, और ।—चा पदान्तर, या, वा, प्रकारान्तर, किन्वा ।

अथक तद्० अथकित अशान्त, अज्ञान ।

अथर्व तत्० (अथर्वस्) अतिवृद्ध, चतुर्वेद । यह वेद ब्रह्मा के उत्तर वाले मुख से निकला है । इसमें नौ शाखा पंच कल्प हैं और बीस काण्डों में समाप्त होता है । इसका प्रधान ब्राह्मण गोपथ है, इससे सम्बन्ध रखने वाली उपनिषदों की संख्या कोई १८ और कोई ३१ बताते हैं । इसमें अधिकता से अभिचार प्रयोग पाये जाते हैं ।—ए (पु०) शिव महादेव ।—एी (पु०) अथर्व वेदक ब्राह्मण, पुरोहित ।—शिख उपनिषद्-भेद,—शिखामणि उपनिषद्-भेद ।—शिरः अथर्व वेद की सातवीं उपनिषद्—श ब्रह्मा के ज्येष्ठपुत्र का नाम जिसे ब्रह्मा

ने ब्रह्म विद्या सिखलायी थी, और इसीने सर्वप्रथम अग्नि की प्रकट कर आर्यजाति में यज्ञक्रिया का प्रचार किया ।

अथयउ तद् ( गु० ) बूध गया, बूढ़ गया, अस्त हो गया, अस्तमित, रामायण में इस शब्द का प्रयोग किया गया है, संस्कृत के अस्तमित शब्द से यह निकला है ।

अथाई तद् ( स्त्री० ) मित्रों के एकट्टे होने का स्थान, सभा, घोषार, बैठक ।

अथान या अथाना, तद् ( पु० ) अचार, खटाई, ( गु० ) बिना स्थान, बे ठिकाने ।

अथाह तद् ( गु० ) गहिरा, गंभीर, अगाध, बहुत गहरा, बेयाह ।

अदक्या तद् ( पु० ) बैठन, लपेटन, घेदन, लपेटने का वस्त्र ।

अदग्ध तद् ( गु० ) अमत्रालित, अपक्व, नहीं जमा हुआ, कचवा ।

अदण्डनीय तद् ( गु० ) या अदण्ड्य ( गु० ) दण्ड के अनुपयुक्त, अदण्ड है, जिसकी दण्ड न दिया जा सके, जो दण्डित न हो सके, स्वधर्मनिष्ठ, सदाचारी, महात्मा ।

अदत्त तद् ( गु० ) अदाय, नहीं दिया, अक्षमर्षित धर्मनिपादित।—( स्त्री० ) अविवाहित, कुमारी, अशुद्धा ।

अदन्न तद् ( पु० ) भक्षण, भोजन, जेवतार, आहार, खाना,—नीय ( गु० ) भक्षणिय, खाया वस्तु, भोजन, भोजन योग्य ।

अदध्र तद् ( गु० ) यथैष्ट, प्रसुत, अधिक, पूरा, डेर का, सम्पूर्ण । ( पु० ) मनेच्छोत्पादक पुरुष ।

अद्भुत तद् ( गु० ) विचक्षण, आश्चर्यजनक, दिव्य, अनीला ।

अद्वय तद् ( पु० ) दमन करने के अयोग्य, दुर्दान्त, जो नहीं दयाया जा सके ।

अद्वस्ता तद् ( पु० ) मिठारई विशेष ।

अदर्शन तद् ( गु० ) छिपा, टका, चुका, गुप्त ।  
—नीय अद्वय, नहीं देखने योग्य ।

अदलचदल तद् ( अ० ) परिवर्तन ।

अदद्यायत तद् ( स्त्री० ) खाट की रस्सी ।

अदहन तद् ( पु० ) भाग बनाने के लिये गर्म पानी ।

अदाता तद् ( पु० ) अदानो, सुम, कृपण, लीचड़, दान शक्ति हीन ।

अदाया तद् ( स्त्री० ) दया, न्यूनता, कठोरता, निर्दयता, निष्पुरुता ।

अदिति तद् ( स्त्री० ) देवमाता, देवताओं की माँ, महर्षि कश्यप की स्त्री, दत्त प्रजापति की कन्या, धामनाथतार में भगवाद् विष्णु इन्होंने गर्भ से उत्पन्न हुए थे, १२ देवताओं की ये माता थीं । नरकासुर को मारने पर भगवाद् कृष्ण जों को जो दो कुण्डल मिले थे, वे कुण्डल इन्हीं को समर्पित हुए थे ।—नन्दन ( पु० ) देवता, सुर ।

अदिन तद् ( पु० ) अभाय दिन, कुदिन, बुरी दशा, खोटे ग्रह ।

अदिष्ट तद् ( पु० ) भाग्य, प्रारब्ध, विपत्ति ।

अद्वय तद् ( गु० ) अगोचर, अशक्ति, गुप्त, छिपा हुआ, जो न देख पड़े ।

अद्वष्ट तद् ( गु० ) अगोचर, अज्ञ, अनदेखा, भाग्य, दुर्भाग्य, प्राकृतिक, प्रकृति से उत्पन्न, अग्नि जलादि प्राप्त भय ।—पुरुष ( पु० ) किसी कार्य में स्वयं कूद पड़ने वाला, बिना बनाये चलने वाला ।—पूर्व ( गु० ) पहले का नहीं देखा, बिना जाना हुआ । नैर्वायिक मन से धर्माधर्म की संज्ञा, नैर्वायिक और वैशेषिक के मत ने अद्वष्ट आत्मा का धर्म है । सांख्य और पातञ्जल अद्वष्ट को बुद्धिधर्म कहते हैं ।—फल, ( पु० ) पुर्वकर्म के फल, सुख दुःख ।

अद्वैत तद् ( गु० ) दान के योग्य नहीं, अक्षमर्षणीय, किसी का न्यास, चाहे उठे स्वामी ने रखा हो या स्वयं मँगवाया हो, पुत्र, स्त्री, और मन्तान के रहने अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति आदि अद्वैत वस्तु हैं ।—दान ( पु० ) अयोग्य को दान, अपात्र को दान ।

अद्वैती तद् ( स्त्री० ) बड़ी भयौढ़ी ।

अद्धी तद् ( स्त्री० ) आधा, घटावर भाग, आधी दमड़ी, महीन सुती कपड़ा ।

अधर तत्० (गु०) घेठार्यो, लोमी लालची, पेट्ट ।

अद्य तत्० (अ०) आज, अद्य, अधभी, वर्तमान दिन ।

—तन (गु०) अधजात, आजका उत्पन्न, अधजात, काल विशेष ।—पि (अ०) अद्य पर्यन्त, आज तक,

—वधि (अ०) अद्यारभ्य, आजसे लेकर, (समय परिच्छेदार्थक अधवय)

अद्रक तत्० (स्त्री०) आर्द्रक, आदी, आदा, कच्ची सोंठ ।

अद्रि तत्० (गु०) पर्वत, पहाड़, अचल, वृत्त, शैल, सूर्य, परिमाण विशेष ।—कीला (स्त्री०) भूमि, पृथिवी

—ज (गु०) शिलाजीत, गेरू, पर्वतजात वस्तु ।

—जा (स्त्री०) अद्रितनया, पार्यती, सैहली, वृत्त, पहाड़ पर उत्पन्न होने वाली लता ।—तनया

(स्त्री०) पार्यती, दुर्गा, अद्रि नन्दनी ।—पति (गु०) पर्वतराज हिमालय पर्वत ।—बहि (गु०) पर्वत

में उत्पन्न अद्रि ।—भिद्रु (गु०) पर्वतभेदक, यज्ञ, इन्द्र ।—राज (गु०) हिमालय पर्वत, प्रधान

पर्वत ।—शुद्ध पर्वत के ऊपर का भाग, पर्वत शिखर ।

अद्वितीय, तत्० (गु०) अनुपम, अगुण्य, एकही, अमूल, द्वितीय रहित ।

अद्वैत तत्० (गु०) द्वैत रहित, एक, भेद रहित, जिसके समान दूसरा नहीं, शङ्कराचार्य का मत, जिसमें

उन्होंने जीव और ईश्वर को एक माना है । जगत् को मिथ्या सिद्ध किया है ।—वादी जो केषल

एक ही ईश्वर पदार्थ मानते हैं । एकैश्वर वादी, अद्वय वादी, बौद्ध विशेष ।

अध तत्० (अ०) नीचा, तल, अधीन, अधा ।—स्त तत्० (अ०) नीचे, निम्न, तल, पाताल,—कृत, (गु०)

नीचे किया हुआ, अवलोकण ।—पात (गु०) नीचे पतन, धर्म, नष्ट, नरक—पात, सौभाग्य सम्पत्ति से

वञ्चित होना ।—प्रस्तरण (गु०) कुशासन, तृण-गव्या ।—शिरा (गु०) अधोमुख सूर्य यंभीय त्रिशंकुजा । (त्रिशंकु शब्द में विस्तार से देखो)

—क्षिप्त (गु०) अधस्त्यक्त, निन्दित, ययातिराजा, निशङ्क ।

अधकथा तत्० (गु०) अधकथा, कचीला फल, अधपक्षा ।

अधकपाली तत्० (गु०) अधासीसी, आधे सिर की पीड़ा, रोग विशेष, सूर्यावर्त ।

अधगो तत्० (स्त्री०) नीचे की इन्द्रियों, गुदा आदि । अधन तत्० (गु०) कंगाल, दरिद्र, धन हीन, दीन ।

अधवर, तद्० (गु०) आधी दूर, बीच में, मध्य में । अधम तत्० (गु०) नीच, निकृष्ट, अपफुट, निन्दित ।

(गु०) जर, उपपत्ति, भेद ।—मृतक (गु०) छोटा भृत्य, नीचभृत्य, पहले वाला, मोटिया, कुली ।

—अष्टण (अधमर्ण) ऋणी, धर्ता, खधुक, देनदार, —र (स्त्री०) स्त्रीया आदि नायिकाओं में से एक

नायिका ।—अद्भु (गु०) पद, चरण, निकृष्ट अवयव । —अधम (गु०) अति नीच, अति निकृष्ट, नीचाति

नीच । अधमाई तद्० पापिष्ठता, नीचता, दुष्टता, अधमता । अधर तत्० (गु०) नीचे का होंठ, मध्य, शून्य, मुल का

अवयव विशेष, अक्षुण्ड, नीच, अधः, तल, स्मर-गार, योनि, ।—मधु (गु०) वदनामृत, अधरामृत,

अधररस, —र (स्त्री०) अधोदिक, नीचा, अधीर । —कृत, अपथादित, पराहत, तिरस्कृत, निन्दित ।

—भूत (गु०) विप्रकृत, अधरी कृत । अधर्म तत्० [अ + धर्म] (गु०) पाप, अन्धेर, अन्याय,

अनीति, धर्म नहीं, विधर्म, धर्म विरोधी, अधर्म की उत्पत्ति के विषय में पौराणिक कथा यह है, ब्रह्मा

के पुत्र देश से इसकी उत्पत्ति हुई है, इसके धाम भाग से अलक्ष्मी (दरिद्रता) उत्पन्न हुई जो अधर्म से बचाही

गई ।—आत्मा (गु०) पापिष्ठ, अन्यायी ।—आचारी (गु०) नीचआचार वाला, दुर्मयी, परीह्वेजक ।—ष्टि

(गु०) अति दुराचारी ।—ी (गु०) पापी, दुराचारी, दोषी । अधयन तद्० (गु०) अधा, अर्द्ध, बराबर का

हिस्सा । अधचाड़ तद्० (स्त्री०) अधा धान, अधाई, आधे घर के लोग । अधान तद्० (गु०) तेल आदि ।

अधार तद्० (अधार) (गु०) आधय, अधलम्ब, आहार, सहाय, कलेया, खाना ।

अधार्मिक तत्त्वं [अ-धर्म + इक] (पु०) धर्महीन, अन्यायी ।

अधि तत्त्वं (श०) आधिक्य बोधक, प्राधान्य बोधक, अधिक, ऊपर का भाग, ईश्वर, उपसर्ग, सामने, वश में ।

अधिक तत्त्वं (गु०) अतिरिक्त, बहुत, विस्तर, बहुत ढेर विशेष।—तर (गु०) दूसरे की अपेक्षा अधिक।—ता (स्त्री०) आधिपत्य, अतिरिक्तता, बहुतायत, बढ़ती।—न्तु (भा०) और, दूसरा, अपर, विशेषतः।—आधिक (पु०) बढ़ती से बढ़ती।—आङ्ग (गु०) बीस अंगुलियों से अधिक अंगुली वाला, या और किसी अधिक अवयव से युक्त ।

अधिकरण तत्त्वं (पु०) आधार, आधा पात्र, अधिकार करण, आधिपत्य, सातवाँ कारक ।

अधिकार्थ तत्त्वं (स्त्री०) बहुतायत, अधिकता, बढ़ती, आधिपत्य, सरसार्थ ।

अधिकाना तत्त्वं (क्रि०) बढ़ाना, उभारना ।

अधिकार तत्त्वं [अधि + कृ + घञ्] स्वामित्व, प्रभुत्व, स्वत्व, यपौती ।—स्थ (गु०) वश में रहने वाला, जमींदारी में बसने वाला ।—ी (पु०) प्रभु, स्वामी, अधिपति, अधिकार विशिष्ट, स्वत्ववात्, उजारी, पट्टा, स्थान या मठाधीशों के मन्त्री ।

अधिकृत तत्त्वं (पु०) देखभाल, जाँचहार, लगाया गया, नियोजित, कार्य में लगा हुआ, आयुष्य देखने वाला, अध्यक्ष ।

अधिगत तत्त्वं [अधि + गम् + क्त] (गु०) अयगत, ज्ञात, प्राप्त, पठित, ज्ञानकार, ऊपर गये हुए, स्वर्गीय, मुक्त ।

अधिज्य तत्त्वं (गु०) धनुर्गण नियोजित, धनुष चढ़ाये हुए, युद्धार्थी, यीर ।

अधित्यका तत्त्वं (स्त्री०) पर्यन्त के ऊपर का स्थान अथवा भूमि, समस्थल, टीला, तराई, क्रीढ़ ।

अधिदेवता तत्त्वं (पु०) रथ देव, जतिहामा, अधिष्ठात्री, देवता, अधिदेव ।

अधिदैवत तत्त्वं (पु०) मुख्य देवता, पुर्यं मन्थलम्ब, चिन्ता करने योग्य पुरुष, प्रद्विद्या, देव बल ।

आधिप तत्त्वं (पु०) राजा, प्रभु, स्वामी ।

अधिपति तत्त्वं (पु०) देखो अधिप ।

अधिर्मांस तत्त्वं (पु०) आँस में का फोड़ा ।

अधिमांस तत्त्वं (पु०) लौंढ, मलमास, दो अमावस्या युक्त मास ।

अधियाना तत्त्वं (क्रि०) आधा करना, बराबर हिस्सा करना ।

अधिरथ तत्त्वं (पु०) सारथि, रथ हाँकने वाला, कर्ण का पिता ।

अधिराज तत्त्वं (पु०) नरपति, महाराज ।

अधिवास तत्त्वं (पु०) गुप्त की पहिली क्रिया, वासस्थान, निवास, नित्यता, सुगन्धिद्रव्य, प्रतिवासी ।

अधिचेदन तत्त्वं (पु०) संस्कार विशेष, विवाह ।

अधिवेशन तत्त्वं (पु०) बैठक, विचारार्थ किसी स्थान पर जमाव, सभा का अधिवेशन ।

अधिष्ठाता तत्त्वं [अधि + स्था + त्] रक्षक, पालने वाला, अध्यक्ष, प्रधान । (स्त्री०) अधिष्ठात्री अधिदेवता, स्थितिकारिणी ।

अधिष्ठान तत्त्वं [अधि + स्था + ञनट] (पु०) ठाँव, व्यवहार चक्र, प्रभाव चक्र, अध्ययन, अथस्थान, स्थायी । अधिष्ठित (पु०) स्थापित, निपुक्त ।

अधीत तत्त्वं (पु०) पढ़ा हुआ, पठित, गितित ।—ि अध्ययन, पठन ।—ी अध्ययन विगिष्ट, कृताध्ययन । (पु०) छात्र, विद्यार्थी ।

अधीन तत्त्वं (गु०) यथीभूत, शाहाकारी, सेवक, आश्रित, यशतापन्न -ता (स्त्री०) दासत्व, धारतन्त्र्य, यथीभूत, अधीनत्व ।

अधीर तत्त्वं (पु०) चञ्चल, कातर, अस्थिर, अपरिक्लत, उतावला हड़बड़िया ।—ी (स्त्री०) विद्रुप्, चञ्चला, मध्यानायिका का एक भेद ।

दोहा "यक्युक्ति पति मों कहे मध्या धीरा नारि । मध्या देह उराहने वचन अधीरा गाहि ॥"

चञ्चला स्त्री ।—ता (स्त्री०) चर्राहट, चञ्चलाहट, उतावली, हड़बड़ी, चटपटी ।



अधीरज तद्० ( पु० ) चबराहट, अधोरता, अधैर्य, चञ्चलता ।

अधीश तद्० ( पु० ) या अधीस तद्० स्वामी, प्रभु, मालिक, ईश्वर ।—यूर मण्डनेश्वर, चक्रवर्ती ।

अधुना तद्० ( अ० ) इस वेर, अब, अभी, इदानीं सम्प्रति, —तन ( गु० ) इदानीन्तन, साम्प्रतिक, वर्तमान समय में रहने वाला ।

अधूरा तद्० ( गु० ) अधयना, अधूर्ण, असमस्त, असमाप्त ।

अधेडु तद्० ( गु० ) अधधैसा, अधदूड़ा, इसका प्रयोग प्रायः अधिकता से खियों के लिये होता है ।

अधेन तद्० ( पु० ) पढ़ना, अध्वयन ।

अधेला तद्० ( पु० ) आधा पैसा, अधवार्द, पैसे का आधा ।—अधेली दे० आधा रुपया, अठन्नी, आठ आना ।

अधैर्य तद्० ( पु० ) उतायला, अस्थिर, डबाफुल ।

अधोगत तद्० ( स्त्री० ) अधनत, नीचगामी—अधोगमन, नरक प्राप्ति, अधःपतन ।

अधोतर तद्० ( स्त्री० ) घस घिरोव, एक प्रकार का कपड़ा ।

अधोधम तद्० ( पु० ) अति नीच, पाली ।

अधोमुख तद्० ( पु० ) अधनत मुख, नीचे मुख, आँधा मुख ।

अधोवायु तद्० ( पु० ) अधानवायु, मस्त्रिक्रिया, ।

अधोभुवन तद्० ( पु० ) पाताल, भलि के रहने का स्थान ।

अधोमस्तक तद्० ( पु० ) सूर्यवंश का तिर्यंकु राजा ।

अधोमुखा तद्० ( स्त्री० ) गोजिहू वृक्ष ।

अधोक्षज, तद्० ( पु० ) अ कृष्ण, नारायण, इन्द्रिय जन्य, ज्ञान को बस करने वाला, योगीराज, वासुदेव ।

अध्यक्ष तद्० ( पु० ) स्वामी, प्रभु, मुख्य, प्रधान । —ता कर्तृत्व, तत्त्वावधारकता ।

अध्ययन तद्० ( पु० ) पाठ, पठन, पढ़ना ।

अध्यक्षर तद्० ( पु० ) प्रणय शौं, आँकार ।

अध्यवसाय तद्० ( पु० ) उद्यम, उपाय, यत्न, आम्ना, उन्साह, कर्म, उत्तम काम करने की उत्कण्ठा ।

कर्मदृढता ।—ी ( पु० ) उत्साही, काम को उत्तमता पूर्वक करने की उत्सुकता ।

अध्यशन तद्० ( पु० ) बारबार भोजन करना, अधिक परिमाण में खाना ।

अध्यात्म तद्० ( गु० ) आत्मज्ञान, आत्म संबन्धी, आत्म विषयका—दृष्टा ( पु० ) ज्ञापि, मुनि, आत्म दर्शक ।—विद्या ( स्त्री० ) ब्रह्मविद्या, आत्मतत्त्व विषयक शास्त्र ।—रति ( स्त्री० ) जो सर्वदा भगवाह को आराधना करते हैं ।—ा ( पु० ) अध्यात्मनिहा, परमार्थिकता, जीवात्मा, परमात्मा ।

अध्यापक तद्० ( पु० ) पाठक, गुरु, उपाध्याय, शिक्षक, वेद शास्त्र पढ़ाने वाला ।

अध्यापन तद्० ( पु० ) पाठ पढ़ाना, विद्यादान, सिखाना, शिक्षा देना ।

अध्याय तद्० ( पु० ) प्रकरण, पर्व, पाठ, सर्ग, परिच्छेद, पुस्तक के भाग ।

अध्यारोप तद्० ( पु० ) मिथ्या आग्रह, मिथ्याकलङ्क, अधिज्ञेप ।

अध्यारोहण तद्० ( पु० ) आरोहण, चढ़ना ।

अध्यारोही तद्० ( पु० ) आरोहणकर्ता, चढ़ने वाला ।

अध्यास तद्० ( पु० ) आरोप, धन, भूल, एक वस्तु में दूसरी वस्तु की कल्पना निवास ।—ी—ि—त

—त्ति ( गु० ) कृत निवास ।—ीन आसनमय, कृताधिवेशन, उपविष्ट, बैठा हुआ ।

अध्याहरण तद्० ( पु० ) कल्पना करना, वितर्क करना ।

अध्याहार तद्० ( पु० ) आकाङ्क्षा पूर्ति के लिये शब्द दूढ़ना, वाक्य का अर्थ पूरा करने के लिये श्रुत शब्द का अनुसन्धान करके अर्थसुगम करना । वाक्य पूर्ति के लिये पदयोजना करना ।

अध्युपित तद्० ( गु० ) बसवास, बसाहुद्या ।

अध्युदा तद्० ( स्त्री० ) विद्याहिता स्त्री, परिपोता ।

अध्वेता तद्० ( पु० ) छात्र, शिष्य, पाठक ।

अध्वेषणा तद्० ( स्त्री० ) याचना, माँगना, आदर पूर्वक प्रार्थना, प्ररन ।

अध्वेच तद्० ( गु० ) अनिश्चित, सणमद्भुर ।

अध्वेच तद्० ( पु० ) बाट, मार्ग, पन्था ।—ग ( पु० ) पथिक, पान्य, बटोही, उद्ग, सूर्य, खेचर, वृक्षविशेष ।

—गा (खो) भातीरवी, गङ्गा, जाङ्गी ।—गामी (पु) पथिक पान्थ, —जा (खो) वृद्ध विशेष ।  
 —नीन (पु) पथिक, पर्यटक, भ्रमणकर्ता ।  
 —न्य (पु) पथिक ।  
 अध्वर तत् (पु) याग, पत्र, वसुभेद, सावधान ।  
 अध्वर्यु तत् (पु) यजुर्वेदके होमकर्ता विशेष, अध्वर्यु का कार्य यह है कि यज्ञमण्डप में भूमि को नाप कर कुरङ्क बनाने, पशोयवात्र तैयार करे, जाकर समिध और पानी लावे, अग्नि प्रदीप्त करे, और यज्ञपथु लाकर धलि दे और उस समय उस यज्ञपथु के कल्पगार्थं यजुर्वेद के मन्त्र पढ़ता जाय ।  
 अध्वान्त तत् (पु) ईश्वर अन्वकार, सन्ध्याकाल, तमोरहित ।  
 अन् तत् (अ) निषेधार्थक अठपय । ना, नहीं, विना, रहित ।  
 अनः तत् (पु) एकद, अश्र, जननी, जन्म, जन्मी, अत्यल्प काल ।  
 अनंश तत् (पु) अंशरहित, घटघारे में हिस्सा पाने का अन्तधिकारी । जैसे—जन्मान्ध, भूक, नर्तक, कुटी, मूर्ख, इत्यादि भाग पाने के अपयोग हैं ।  
 अन-अहिधात तद् (पु) वैधस्य, रंहापा, विधया-पन, सौभाग्य रहित ।  
 अन-इच्छा तद् (खो) विना चाह, चाह नहीं, विना प्रयोजन ।  
 अन-इच्छित तद् (पु) विना चाह का, विना प्रयोजन का, अमीठ नहीं ।  
 अन-इत् तद् (पु) घुरा, निकम्मा, शपथ, निष्प्रयोजन ।  
 अनक तद् (पु) तगात्, मुदङ्क, नीच, छोटा ।  
 अनख तद् (पु) ईर्ष्या, डाह, अकस, जलाप, कुड़न, क्रोध, धैर, ह्येप, द्रोह ।  
 अनखगार तद् (पु) क्रोधयुक्त गाली, क्रोध की गाली ।  
 अनखाना (क्रिया) क्रोध करना, चिड़ना ।  
 अन-नाट तद् (पु) अनयना, अश्रद्ध, अशिक्षित, प्राकृतिक, विना बनाया हुआ ।— (पु) डेढ़ा,

बाँका, अतसीवा ।— (खो) बे ठिकाने, बे-मेल, बे सिर पैर का, बेइद्गा, जैसे अतगढ़ी बात ।  
 अन-गणित तद् (पु) बहुत, असंख्यात, अपार, अनगणित या अनगिनती (पु) अधिक संख्याक ।  
 अन गार तत् (पु) आगारगुण्य, गृहरहित, अग्नि, मुनि, तपस्वी, वनवासी ।  
 अनग्नि तत् (पु) अग्नि स्मृति विहित, अग्नि-होत्र कर्महीन, निरग्नि, अग्नि का अभाव, अग्नि खपन रहित पत्र ।  
 अनघ तत् [अन + अघ] (पु) निष्पाप, निर्मल, पाप रहित, सुकृती, पुण्यवान्, पवित्र, युद्ध ।— (खो) सुन्दर, अच्छा, गान का एक परिमाण ।  
 अनङ्ग तत् (पु) कामदेव, मदन, मन्मथ । ब्रह्मा के आदेश से, तारकासुर पर विजय प्राप्त करने के लिये महादेव के पुत्र का सेनापति होना आवश्यक था, परन्तु योगिराज महादेव का विवाह तो हुआ ही नहीं था, और वे विवाह करना भी नहीं चाहते थे, अतएव कामदेव पर यह भार सौंपा गया, उसने अपना काम प्रारम्भ कर दिया । जब महादेव को यह-बात मालुम हुई, तब उन्होंने अपने क्रोध से कामदेव को जला डाला, तभी से कामदेव का नाम अनङ्ग पड़ा । कामदेव दूसरे जन्म में भगवान् कृष्ण का पुत्र हुआ, नाम था प्रद्युम्न, और उसकी स्त्री मायावती हुई । (पु) शरीर रहित, अङ्गहीन । (पु) आकाश, मन ।  
 —भीम (पु) उड़ीसा का अत्यन्त प्रसिद्ध राजा, कहते हैं जगन्नाथ जी का मन्दिर इसी राजा ने बनवाया था । ११७४ ईश्वर्य में यह वहाँ राज्य करता था । यह अत्यन्तपुण्यात्मा तथा यशस्वी था ।  
 अन-चाहत तद् (पु) नहीं चाहा हुआ, इच्छा-रहित, अनिच्छित ।  
 अन-चित तद् (पु) अज्ञानक, एकाएक, अचोत, अकस्मात्, दैवात् ।  
 अन-छीला तद् (पु) या अन-छिला तद् (पु) विना झिजा हुआ, झिझका समेत, अनाङ्गी ।

अन-जान तद्ग० (गु०) अनपहिचान, अनधीन्हा, अपरिचित, अज्ञातकुलगोल, निर्मुद्दि।—ने (क्रि० वि०) दिन जाने, विना जाने बूझे, विना जाने, नहीं जान के।

अन-जामा तद्ग० (गु०) मरु, बौक, अफला, विना उगा, उत्पत्तिशक्ति रहित।

अनजीवत तद्ग० (गु०) प्राण रहित, मृतक, मुर्दा, शव। रामायण में इसका प्रयोग आया है। यथा:—  
“अन-जीवत सम चैदह प्राणी।”

अनट तद्ग० (खो०) गाँठ, गिरह, सँठ, विरुद्धा-चरण, विपरीताचरण।

अनड्वान तद्ग० (गु०) बैल, साँड़, बलद, वृष।

अनत तद्ग० (अन्त) (गु०) अन्यत्र, और ठाँव, दूसरी ठौर, अन्य स्थान, सीमा।

अन-देखा तद्ग० (गु०) अदृष्ट, नहीं देखा हुआ, अदृश्य, अलक्ष, गुप्त।

अनन्त तद्ग० (गु०) विष्णु, बलदेव, शेषनाग, अनन्तजित् नामक जैनाचार्य, वासुकि, सिन्दुवार वृक्ष, आकाश, अश्रक, अशरत्त, (गु०) अन्त रहित, अनवधि, अशेष, असीम, अपर्याप्त, अपार। काशमीर का राजा, यह राजा संप्रामराज का पुत्र था या याख्यावस्था ही से इसकी खोरता स्फुटित होने लग गई थी। अनेक युद्धों में इसने विजय प्राप्त किया था। अन्तमें वह स्त्री के प्रेम से राज्यकार्य से उदासीन हो गया था। यद्यपि मुचसुर मंत्री राज्य की उत्तम व्यवस्था करते थे, तथापि स्त्री के कहने से इसने अपने पुत्र कलश को काशमीर का राजा बनाया, राज्य पाकर वह उच्चैर्हल हो गया, और पिता के साथ अनुचित व्यवहार करने लगा। मंत्रियों को यह बात खटकने लगी, अतएव पुनः उन लोगोंके कैशाल से वृद्ध अनन्त को राज पाट अपने हाथ में लेने को कहा। राजा ने शैषा ही किया।

—गौर (गु०) सङ्गीत शास्त्र, स्वर भेद।—चतुर्दशी (खो०) भाद्र मास की गुरु चतुर्दशी, अनन्त देव का व्रत विशेष।—विजय (गु०) राजा युधिष्ठिर का शङ्ख।—वीर्य (गु०) अपरिसीम पराक्रम, जिन विशेष।—व्रत (गु०) भाद्र शुक्ल चतुर्दशी के दिन

जो किया जाता है, अनन्त देव का व्रत।—मूल (गु०) मूला विशेष, स्वनामस्थानत लता।

अनन्तर तद्ग० (गु०) अनन्तर, अठथयहित, अनवकाश, अत्यन्त समीप, पास। (गु०) पीछे, पास, पश्चात्।—ज (गु०) क्षत्रिय के गर्भ में ब्राह्मण से उत्पन्न, अथवा क्षत्रिय के वीर्य से शैश्या स्त्री के गर्भ से उत्पन्न सन्तान।

अनन्य तद्ग० (गु०) एक ही जिसको दूसरे का भरोसा नहीं, अभिन्न, अन्य नहीं।—गति (गु०) अत्यन्त गतिक, गत्यन्तर-भून्व, एकान्त्य।—क्षैता (गु०) एकनिष्ठ, अनन्यमना, एकचित्त, एकतान।

अन-पढ़ा तद्ग० (गु०) मूर्ख, अज्ञ, विद्याहीन, अशिक्षित।

अनपत्य तद्ग० (गु०) निःसन्तान, निर्वंश, पुमहीन, अपुत्र।

अन-पत्रप तद्ग० (गु०) निर्लक्ष्ज, फूहड़, लक्ष्जाहीन। अनपराध तद्ग० (गु०) निर्दोष, निरपराध, दोषभून्व, गुह्य, सञ्चरित।

अनपाय तद्ग० (गु०) अनश्वर, अक्षय, अनाश्रय, चिर-स्थायी (गु०) मलङ्कृत।—नी (गु०) स्थिर, निश्चल, अविनश्वर अपाय रहित।—निनी (खो०) नाश-रहित, अचला, दृढ, नित्य।

अनपेक्ष तद्ग० (गु०) स्वाधीन, निरपेक्ष।—नि (गु०) अननुष्ठ, अमान्य कृत, वर्जित, अनिच्छित।

अन-चनाव तद्ग० (गु०) अतरस, विगाड़, फूट, सँडा-सँटी।

अन-बुभु तद्ग० (गु०) असमक, अनजान, बुद्धिहीन, निर्वोध।

अन-वेधा तद्ग० (गु०) अनवेदा, अवेधा, अशिक्षित। अन-बोला तद्ग० (गु०) चुपचाप, अवाक्, अश्रोल, अन-बोला, चुपका, भूँगा, साफ नहीं बोलने वाला, अस्पष्टवादी, पशु।

अन-भल तद्ग० (गु०) बुराई, खुटाई, बुरा, खोटा, अ-मङ्गल।—आई बुराई।

अनभिगमन तद्ग० (गु०) अस्थान गमन, भयङ्कर स्थान में गमन।

अनभिन्न तद्ग० (गु०) अनजान, अज्ञान, मूर्ख, निर्वोध।

अनभिव्यक्त तत्त्वं (गु०) अस्पष्ट, अत्यक्त, अप्रकाश ।  
अनभिमत तत्त्वं (गु०) अस्पष्ट, मत विरुद्ध, अनिष्ट ।  
अनभ्यस्त तत्त्वं (गु०) अनभ्यासित, अपठित, अन-  
धीत ।

अनभ्यास तत्त्वं (गु०) अशिखा, अतध्ययन, अ-  
ध्यहार ।

अन-मता तद्गु० (गु०) घाबरा, मोदी, भावित ।

अ-नम्र तत्त्वं (गु०) अचिन्त, अचिन्तयी, उदण्ड ।

अन-मिल तद्गु० (गु०) बेमेल, बेजोड़, हूटेहूटे,  
अदृष्ट ।

अन-मोल तद्गु० (गु०) अमोल, उत्तम, अगुण्य, यद्विया ।

अनय तत्त्वं (गु०) अयन, विपद, भाग्य, अयुग, दुर्नीति,  
पार ।

अन-रस तद्गु० (गु०) विरस, मिर्बोंमें अनधनाय, फूट,  
बिगाड़, पेंटापेंटी ।

अन-रीति तद्गु० (स्त्री०) कुचाल, कुदङ्ग, अटरीति,  
कुर्तीति ।

अनर्गल तत्त्वं (गु०) निरर्गल, अबाध, अप्रतिहत, प्रति-  
बन्धक रहित, ओटक, स्वेच्छक ।

अनर्थ्य तत्त्वं (गु०) अतुल्य, अक्रोय, अत्युत्कृष्ट ।

अनर्जित तत्त्वं (गु०) अनुवाजित, विना परिश्रम लब्ध,  
विना क्लमाया हुआ ।

अनर्थ्य तत्त्वं (गु०) वृथा, निष्फल, अर्थहीन, अनुचित ।

—क (गु०) वृथा, निष्फल, अप्रयोजन, निरर्थक ।

अनर्ह तत्त्वं (गु०) अनुपयुक्त, अपयोग्य ।

अनल तत्त्वं (गु०) दूर्यता रहित, अग्नि, आग, वसुभेद,  
मेजा विन्न ।—पद (गु०) पक्षि वियेव, यह पक्षी  
सर्वदा आकाश ही में उड़ा करता है, जमीन पर  
कभी नहीं रहता, अग्ने अग्ने को यह आकाश से  
गिरा देता है, यह अग्नि पृथ्वी पर पहुँचने से  
पहले ही फूट जाता है, और उसमें से धूँध निकल  
आता है । जो उमी समय से उड़ने लग जाता है ।  
मथा:—

दोहा

“अनलपद का चेदुआ, गिरेउ धरणि अरराय ।  
वहु अलीन यह लीन है, मिल्यो तासु को धाय ॥”

—विचारमाला ।

प्रमा (स्त्री०) ज्योतिष्प्रती नामक कता वियेव,  
अग्नि की शिखा, दीप्ति ।—प्रिया (स्त्री०) अग्नि  
भार्या, स्वाहा ।

अनलस तत्त्वं (गु०) आलस्य विहीन, उद्युक्त, परि-  
श्रमी उद्योगी ।

अनल्प तत्त्वं (गु०) अधिक, बहुविस्तर ।

अनवद्य तत्त्वं (गु०) अनिन्दित, सुन्दर, स्वच्छ,  
मान्यमान, सधान्त ।—ह्र (गु०) सुन्दर अङ्ग,  
सुदीन ।

अनवकाश तत्त्वं (गु०) अवकाश रहित, निरयसर ।

अनवधान तत्त्वं (गु०) अमनोयोग, चित्त की एकाग्रता  
का अभाव, अप्रशिधान चित्त का अनादेश, अमनो  
योगी, अनादिष्ट ।—ता (स्त्री०) मनोयोग वृन्धता,  
प्रमाद, अनवहितता, असावधानता ।

अनवरत तत्त्वं (गु०) निरन्तर, अशब्द, सर्वदा, अचिरत,  
नित्य, लगातार, प्रतिदिन ।

अनवर तद्गु० (गु०) अज्ञा, विद्विया, मुदरी, भूषण  
वियेव ।

अनवस्था तत्त्वं (स्त्री०) दुर्दशा, अयाथा, अवस्था-  
रहित, स्थित्यभाव, दरिद्रता, अस्थिर, दुरवस्था,  
तर्क वियेव । नैयायिकों के मत से एक प्रकार का  
दोष, यथा—मनुष्य किससे उत्पन्न हुए, इस प्रश्न का  
उत्तर दिया गया कि मनु से, मनु कहों से उत्पन्न हुए,  
ब्रह्मा से, ब्रह्मा कहों से उत्पन्न हुए, विष्णु ने, इसी  
प्रकार लगातार प्रश्न करते जाने से कुछ निर्णय  
नहीं होसकता । निर्णय होना तो टूट रहा, प्रश्नों का  
उत्तर देना ही कठिन हो जायगा, इसीको अनवस्था-  
दोष कहते हैं ।—न (गु०) वायु, अस्थायित्व,  
कुस्थायित्व, कुउपबहार, अस्थिति, शून्य, अस्थिर ।  
—स्थित (गु०) अस्थिर, चञ्चल ।—स्थिति  
(स्त्री०) आसुरहित, अवस्थानाभाव, अस्थिरता ।  
—स्थितचित्त (गु०) उन्माद, पागल, चातुल्य,  
अनभिनिविष्ट ।

अनशन तत्त्वं (गु०) अनाहार, उपवास, अमोजन ।

—प्रत (गु०) उपवास करते करते शरीर छोड़ देना ।

अनश्वर तत्त्वं (गु०) अविनाशी, नित्य, सनातन ।

अनसिखा तद्० (गु०) अनपदा, मूर्ख, अज्ञान, अशिक्षित ।

अनसुत तद्० (गु०) अनाकानी, अमानित ।

अनसूया तद्० (स्त्री०) अनूया रहित, अपि कन्या । महर्षि अश्वि से यह ठपही गई थी, दत्त प्रजापति की कन्या थी और इसकी माता का नाम प्रसूति था । महाकवि कालिदास कृत शकुन्तला नाटक में भी एक अनसूया का नाम आता है, जो उसी नाटक की नायिका शकुन्तला की सखी का नाम है ।

अन्हवाए (क्रि०) नहवाए, स्नान कराए, नहवाए, स्नान ।

अन-हित तद्० (गु०) स्नेहरहित, पैरी, हूँपो, अन्नु, बुरा करने वाला, बुरा, बुराई ।

अन-होना तद्० (क्रि०) असम्भव, अवरज, अनहोनी, सम्भव पर नहीं ।

अनाकारण तद्० (गु०) व्यर्थ, योही, निष्कारण, कारणभाव, निर्निमित्त ।

अनागत तद्० (गु०) अनुपस्थित, अनागत, अज्ञात, भविष्यत्, आगे होने वाला ।

अनागत तद्० (गु०) बिना सूँघा, अप्राप्त नहीं किया, असृष्ट अभिनय ।

अनाचार तद्० (गु०) कुबाल, कुरीति, अगुचि, कदाचार, शुद्धाचार हीन, अनुस्मृति विरुद्ध कर्माचार ।—नी कदाचारी, अगुडुआले ।

अनाज तद्० (गु०) धान्य, अश्व, नाज, गज्रा ।

अनाडो तद्० (गु०) मूर्ख, अवेतन, निर्बोध ।

—पन तद्० (गु०) मूर्खता, निर्बुद्धि, अनभिज्ञता ।

अनाढ्य तद्० (गु०) दरिद्र, दुःखी ।

अनातप तद्० (गु०) छाया, घर्माभाव ।—त्र (गु०) छत्ररहित ।

अनात्मवान् तद्० (गु०) अवशीभूतमना, जो अपने मन को दश नहीं कर सकता ।

अनात्म्य तद्० (गु०) आत्म निश्च, पर ।

अनाथ तद्० (गु०) दशमी हीन, दीन, दुःखी, अस्वामिक, सहाय हीन ।—ः (स्त्री०) पतिहीना,

विधवा, अवहाया, रत्नक रहिता ।—ः (स्त्री०) अनाश्रिता, विधवा, पतिहीना, दुःखिनी ।

अनादर तद्० (गु०) अवमान, असन्मान, अवहा, अव-हेलन, अपयत् ।

अनादि तद्० (गु०) आदि रहित, उत्पत्ति हीन, स्वयम्भू, नित्य ब्रह्म, बहुत दिनों से जो शिष्ट परम्परा से चला आता हो, बहुत दिनों से सज्जनों में जिसका परस्पर व्यवहार होता चला आता हो ।

अनादिष्ट तद्० (गु०) अननुज्ञात, विज्ञा आज्ञा का ।

अनाद्यन्त, [अन + आदि + अन्त] तद्० (गु०) नित्य, अतन्त, सनातन, सर्व कालीन, शाश्वत, ब्रह्म, अनादि, अनन्त ।

अनन्नास तद्० (गु०) अननास, आतारस, फल विशेष ।

अनाप्त तद्० (गु०) अनिपुण, अघाटक, अविश्वामी ।

अनाचल तद्० (गु०) निर्मल, परिष्कार, स्वच्छ, साफ, सुवरा ।

अनावृष्टि तद्० (स्त्री०) अवर्षण, वर्षामाव, जलकट, मूला ।

अनामक तद्० (गु०) रोगविशेष, अरोग, बवासीर ।

अनामय तद्० (गु०) आरोग्य, नीरोग, पुष्ट, अरोग, स्वस्थता ।

अनामा तद्० (गु०) कनिष्ठा, अँगुली के ऊपर वाली अँगुली, अनामिकांगुलि, अनामिका ।

अनायक तद्० (गु०) स्वामि-रहित, रत्नाहीन ।

अनायत तद्० (गु०) अविस्तृत, अपरास्त ।

अनायत्त तद्० (गु०) अनधीन, अवशीभूत, उच्छृङ्खल ।

अनायास तद्० (गु०) अल्प परिश्रम, अकूश, अप्रयत्न, सहज, शौकर्य, सुकरतय ।

अनार तद्० (गु०) वृक्ष विशेष, अनारफल, दाढ़िम ।

अनारम्भ तद्० (गु०) आरम्भाभाव, बिना आरम्भ किया हुआ ।

अनारोग्य तद्० (गु०) अस्वस्थता, अरोग्यत्वा ।

अनार्य तद्० (गु०) अवशेष, अप्रधान, अनाड़ी, नीच, अमान्य, जातिविशेष, आर्यजाति के अतिरिक्त अनार्य जातियाँ अनार्य या आर्यतर शब्द से

विषयात है। शायीं से जिनका आचार व्यवहार नीति धर्म आदि में विरोध था, वे अनार्य कहे जाते थे। अग्येद आदि मान्यतम ग्रन्थों में देस्य या दास शब्द अनार्य के पर्याय में आते हैं।—**कर्मा** ( पु० ) शायीं से बिरुद्ध कर्म करने वाले, निन्दिताचार, गहित।—**जुष्ट** ( पु० ) अनार्यों के कर्म, अनार्य सेवित क्रिया।—**देश** ( पु० ) अनार्यों का वास-स्थान, जहाँ चातुर्वर्ण्य की व्यवस्था न हो।

**अनाहार** तत्० ( पु० ) भूखा, उपवास, लंघन।—**नी** ( पु० ) अशुभ, उपयासो, अमोजन।

**अनाहृत** तत्० ( पु० ) अनिमज्जित, अकृताह्वान, नहीं बुलाया हुआ।

**अनिकेता** तत्० ( पु० ) अनिकेतन, निरालय, गृह-भून्ध, निर्वास, विना घर का।

**अनिगीर्ण** तत्० ( पु० ) अतृप्त, अकथित।

**अनित्य** तत्० ( पु० ) विनाशी, झूठा, चणिक, अस्थायी, नश्वर, ध्वंशशाली।—**ता** ( स्त्री० ) अचिरस्थायिता, क्षणविध्वंसिता।—**तावादी** ( पु० ) जो किसी पदार्थ को अस्थायी नहीं मानते, बौद्ध विशेष।—**सम** ( पु० ) न्यायशास्त्र कथित तर्क न करके, केवल उदाहरणों के द्वारा तर्क करना।

**अनिन्दित** तत्० ( पु० ) अगहित, उत्तम।

**अनिमित्तक** तत्० ( पु० ) निष्कारण, अशुभ, विना कारण।

**अनिमित्तक** तत्० ( पु० ) देवता, मतस्य। ( पु० ) निमित्त-भून्ध।—**आचार्य** ( पु० ) देवगुरु वृहस्पति।

**अनियत** तत्० ( पु० ) अस्थायी, अनित्य, अचिर-स्थायी।

**अनियन्त्रित** तत्० ( पु० ) अनियारित, अशासित, स्वच्छ. चरती।

**अनियम** तत्० ( पु० ) नियमाभाव, अनिश्चय।—**ति** ( पु० ) अनिर्द्धारित, अनियम बद्ध।

**अनिर्णय** तत्० ( पु० ) द्विविधा, अन्वेह, संशय, दो बातों में से किसी का ठीक नहीं होना, अनिश्चय, अनवधारण।

**अनिर्णीत** तत्० ( पु० ) अनिर्द्धारित, अनिश्चित।

**अनिर्दिष्ट** तत्० ( पु० ) अनिश्चित, अनुद्दिष्ट।

**अनिर्वचनीय** तत्० ( पु० ) अशर्णनीय, अशक्य, वचन के अगम्य, वर्णनारहित, असाध्य वर्णन, उत्तम, अत्युत्तम।

**अनिवारित** तत्० ( पु० ) अप्रतिषेधित, अशासित, बाधा रहित, वारण भून्ध।

**अनिवार्य** तत्० ( पु० ) अशरणीय, दुरत्यय, वारण करने के अयोग्य, अबाध्य, कठिन, दुर्लभ।

**अनिल** तत्० ( पु० ) वायु, पवन, वसुविशेष, वृतास, देवता विशेष, यह अदिति के गर्भ से उत्पन्न हुए हैं, इन्द्र के छोटे भाई हैं, इनके पिता का नाम करवण है, भीम और हनुमान इनके पुत्रों का नाम है। वायु ४८ उगच स हैं, इनका रथ १०० हों और कभी कभी हज़ार घोड़ों से खींचा जाता है। अन्त्यान्व देवताओं के समान वायु का भी यज्ञ में भाग दिया जाता है। दमयन्ती के सतीत्व का साक्ष्य इन्होंने दिया था, तृष्टा के ये जामाता हैं। शरीर में पौच वायु होते हैं जिनके नाम ये हैं प्राण, अपान, समान, उदान और ध्यान।—**द्रक** ( पु० ) विभीतक वृक्ष, बहरे का वृक्ष।—**सत** ( पु० ) अग्नि, अरुण, चाण।—**रामज** ( पु० ) वायुपुत्र, हनुमान, भामसेन, दूषण पण्डित, —**राम्य** ( पु० ) वातरोग, अजीर्ण, —**शी** ( पु० ) वायु भक्षण के द्वारा जीवन धारण करने वाला, तपस्वी, सत्य, व्रत विशेष।

**अनिलोचित** तत्० ( पु० ) अपरिपक्व बुद्धि, अनालोचित, अविधेयित, अविचारित, अक्षयिह शान-भून्ध।

**अनिश** तत्० ( अ० ) निरन्तर, सतत, सर्वदा। ( पु० ) रात्रि का अभाव।

**अनिष्ट** तत्० ( पु० ) अनभिमत, अशाशित, हानि, अशक्य, पुण।—**कर** ( पु० ) अशक्य, अहितकर।

**अनिष्टुर** तत्० ( पु० ) अनिर्दय, सत्त्वचित्त।  
**अनिष्ठात** तत्० ( पु० ) अशर्णीय, अकृती, अशक्य।  
**अनी** तत्० ( पु० ) तीखा, पैना, नोक, तीक्ष्णधार, अनी।

अनीक तत्० ( स्त्री० ) सेना, भीड़, फटक, सैन्य, योद्धा, युद्ध ।—स्थ ( पु० ) सेना रक्षक, हस्तिक, राजरक्षक, चिन्ह ।

अनीति तत्० ( स्त्री० ) कुवाण, अन्याय, दुर्नीति, अत्याचार ।

अनीदृश तत्० ( पु० ) अनुपपन्न, असमान, बराबर नहीं, बेजोड़ ।

अनीश तत्० या अनीस तत्० ( पु० ) अनधिकार, अस्वामी, ईश्वर नहीं, जीव, स्वामी रहित, जो किसी को भी ईश्वर न माने ।

अनीश्वर तत्० ( पु० ) ईश्वर भिन्न, नास्तिक ।  
—वाद ( पु० ) नास्तिक, जिस मत में ईश्वर न माना गया हो, चार्वाक ।—वादी ( पु० ) देव-निन्दक, नास्तिक, अमक्त ।

अनीह तत्० ( पु० ) आलसी, ढीला, योदा, निप्रवेष्ट निर्लक्ष्म ।—ता ( स्त्री० ) अनिच्छा, उदासीनता ।

अनु—तत्० ( उपसर्ग ) पीछे, पश्चात्, सह, सादृश्य, लक्षण, वीप्सा, इत्यम्भाय, भाग, हीन, आयाम, समीप, अपरिपाटी, अनुसार, अधीन, कणा, आत्यन्त छोटा, महीन, लघुतम, कम, योद्धा ।  
—कथन ( पु० ) कहने के बाद कथन, पश्चात् कथन, वारंवार कथन, आपस की बात चीत, किसी के अनुसार वा अनुकूल कहना, कही हुई बात को फिर से कहना ।—कम्पा ( स्त्री० ) दया, कृपा, कृपा, स्नेह, अनुग्रह ।—कम्पित ( पु० ) अनुग्रहीत, काव्यिक, वेगवान् ।—कम्प्य ( पु० ) अनुग्रह्य, कृपावात्र ।—करण ( पु० ) अनुकूप, उतार, मद्दय, कारण, प्रतिरूप कारण ।

अनुकर्षण तत्० ( पु० ) खींच, टान, घसीट, आकर्षण ।

अनुकूल तत्० ( पु० ) सहाय, सहकारी, अनुग्राहक । ( पु० ) पतिभेद, काष्ठ के नायकों में से एक नायक । यथा :—

दोहा “निज नारी सन्मुख सदा दिग्मुख विरानी या  
नायक मो अनुकूल है ज्यों सीता को राम कविदेव ।

—ता ( स्त्री० ) साहाय्य, “

अनुक्त तत्० ( पु० ) अकथित, दृष्टान्त ।

अनुक्रम तत्० ( पु० ) परिणामी, रीतिभौति, यथाक्रम, आनुपूर्वी ।

अनुक्रमणिका तत्० ( स्त्री० ) क्रमानुसार, प्रथम, सूचीपत्र, निघण्टु, भूमिका, ग्रन्थों का मुख्यस्थ, आभास ।

अनुक्रोश तत्० ( पु० ) कृपा, दया, अनुकम्पा, स्नेह ।

अनुक्षण तत्० ( पु० ) सर्वदा, सदा, नित्य, सर्व-क्षण, सब समय, घड़ी घड़ी ।

अनुखाल तत्० ( पु० ) खाई, खाड़ी, नाला ।

अनुग तत्० ( पु० ) पश्चात्गामी, सेवक, दास, भृत्य, अनुचर, पीछे चलने वाला, आज्ञाकारी, अनुसार चलने वाला ।

अनुगत तत्० ( पु० ) आश्रित, शरणागत, पीछे चलने वाला ।

अनुगमन तत्० ( पु० ) पीछे जाना, पश्चात्गमन, सहगमन ।

अनुगामी तत्० ( पु० ) साथी, अनुकारी, अनुयती, सहचर, सेवक ।

अनुगृहीत तत्० ( पु० ) उपकृत, प्रतिपालित, आस्वाहित ।

अनुग्रह तत्० ( पु० ) प्रसन्नता, दया, कृपा, दुःख दूर करने की इच्छा ।

अनुग्राहक तत्० ( पु० ) दयावान्, कृपान्वित ।

अनुचर तत्० ( पु० ) सहो, दास, सहचर, साथी ।

अनुचित तत्० ( पु० ) अपयोग्य, अनुपयुक्त, अनर्थात् ।

अनुच्छिन्न तत्० ( पु० ) उन्नति रहित, बहुत ऊँचा नहीं ।

अनुज तत्० ( पु० ) कनिष्ठ, बहुरा भाई, छोटा भाई, लघुभ्राता, कनिष्ठ, अग्रज, यवीयान् ।

अनुजीवी तत्० ( पु० ) परार्थीन, आश्रित, परतन्त्र ( पु० ) दास ।

अविद्यत, अत्यक्त, नहीं छोड़ा

अनुमति,

अनुशात तत्० (५०) आज्ञा प्राप्त ।  
 अनुतप्त तत्० (५०) अनुशोधी, पद्यान्ताप विशिष्ट ।  
 अनुताप तत्० (५०) खेद, पद्यान्ताप, अनुशोचन ।  
 — नित (५०) दुःखित, अनुशोचक ।  
 अनुतारा तत्० (छो०) उपग्रह, उपतारा ।  
 अनुत्कण्ठा तत्० (छो०) निकटग, उत्कण्ठा रहित ।  
 अनुत्तर तत्० (५०) प्रत्युत्तरहीन, उत्तर नहीं, मोनो,  
 ध्रुवका, अक्ष, स्थिर, अधः, दक्षिण दिशा, स्वामी ।  
 अनुदय तत्० (५०) उदय के पूर्वकाल, उदय रहित,  
 मोर, सवेरा, विहान ।  
 अनुदात्त तत्० (५०) स्वर विशेष, नीच स्वर, उत्तम  
 नहीं, अनुदार ।  
 अनुदार तत्० (५०) अतिशय, दाता नहीं, अदाता,  
 कृपण, अमहात्, स्त्री के यशवर्ती ।  
 अनुदिन तत्० (अ०) प्रतिदिन, प्रायह, नित्य, दिन  
 दिन, सदा ।  
 अनुद्वाह तत्० (५०) अविद्याह, अनुद्वाहस्था, कुमार-  
 पन, कुम्हारपन ।  
 अनुद्विस तत्० (५०) निश्चित, उद्देश रहित, स्वस्थ,  
 स्थिर ।  
 अनुद्देश तत्० (५०) उद्देश रहित, व्याकुल नहीं,  
 निश्चित ।  
 अनुनय तत्० (५०) नय, क्रमल, विनय, स्तव, स्तुति ।  
 अनुनाद तत्० (५०) प्रतिध्वनि, प्रतिसञ्च ।  
 अनुनासिक तत्० (५०) नासिका संबन्धी । (५०)  
 सानुनासिक, अनुनासिक, वर्ण, यथा :— इ ङ्  
 ए ङ् ।  
 अनुप तत्० (५०) अनुपम, अनुपम्य, अपूर्व ।  
 अनुपकारी तत्० (५०) अहितकारी, अनुपकारक ।  
 अनुपम तत्० (५०) अनुप, उत्तम, उपमा-रहित ।  
 अनुपमैय तत्० (५०) अनुपम, असम, विपम ।  
 अनुपयुक्त तत्० (५०) अनुप, अयोग्य, अनुचित,  
 अन्याय ।  
 अनुपल तत्० (५०) पल का साठवाँ हिस्सा, काल  
 विशेष, सेकेण्ड ।

अनुपस्थित तत्० (५०) उपस्थिति रहित, उपस्थित  
 नहीं ।  
 अनुपात तत्० (५०) सम, समान भाव, समान रूप से  
 गिरना, वैरागिक, बराबर सम्बन्ध ।  
 अनुपातक तत्० (५०) महापातक के समान पाप,  
 ब्रह्महत्या आदि बड़े पापों के समान पाप ।  
 अनुपान तत्० (५०) पठ्य, अधीष का संयम, अधीष  
 के अर्थ सेवन करने योग्य पदार्थ ।  
 अनुपाय तत्० (५०) उपाय हीन, निरवलम्ब,  
 निराश्रय ।  
 अनुप्रास तत्० (५०) यमक पद विन्यास, काव्य का  
 अलङ्कार विशेष, समान वर्ण विन्यास, मित्राक्षर  
 योजना, केवल वर्ण की सदृशता होने से अनुप्रास  
 अलङ्कार माना जाता है । यह शब्दालङ्कार है । इसके  
 पाँच भेद हैं, हेकानुप्रास, वृत्तानुप्रास, अनुप्रास,  
 लाटानुप्रास और अन्त्यानुप्रास । विषय की कीमलता  
 तथा कठोरता के अनुप्रास से तत्सम वर्णों के प्रयोग  
 होने के कारण इस अलङ्कार का नाम अनुप्रास  
 पड़ा है ।  
 अनुपयन्ध तत्० (५०) मित्र, सुहृद, सम्बन्ध, विनय, र,  
 सुखानुपायी, शिशु प्रकृति का अनुपयत्न, यन्ध,  
 धारम्भ, लेस ।  
 अनुभव तत्० (५०) ज्ञान, बोध, अनुमान, यथार्थ  
 ज्ञान, विचार, सोचना, समझना, उपलब्धि ।  
 अनुभाव तत्० (५०) दृढ़, अनुमान, निश्चय, महिमा,  
 बह्मार्द, भाव का सूचक, प्रभाव, सज्जन के ज्ञान का  
 निश्चय ।  
 अनुभूत तत्० (५०) बीती, मन से जाना गया, अनु-  
 भव किया हुआ, विचार किया हुआ, प्रतीति  
 किया हुआ, निश्चित ।  
 अनुमत तत्० (५०) सम्मत, स्वीकृत, अनुकूल,  
 आगेजा, सहमत, एक मत ।  
 अनुमति तत्० (छो०) अनुका, आज्ञा, सम्मति, कला-  
 हीन चन्द्रपुष्प इति ।  
 अनुमरण तत्० (५०) एक सङ्गमरण, सहमरण, पद्यात्  
 मरण, सती ।



अनुमान तत्० (पु०) अटकल, विचार, हेतु के द्वारा निर्णय करना, तर्क, अनुभव, बोध ।

अनुमापक तत्० (पु०) निर्णायक, अनुमान का हेतु, निश्चय का कारण ।

अनुमता तत्० (स्त्री०) सहमता, अनुगामिनी ।

अनुमेय तत्० (पु०) अनुमान करने योग्य ।

अनुमोदन तत्० (पु०) आमोद कण, सन्तोष प्रकाश, दूसरे के सुख से सुख, आनन्द युक्त, सम्मति, प्रवृत्ति, प्रदान, प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार ।

अनुमोदित तत्० (पु०) अनुमत, आह्लादित, आनन्दित ।

अनुयायी तत्० (पु०) सद्गुरु, अनुवर्ती, अनुगामी, पश्चात्गामी, अनुसारी ।

अनुयोग तत्० (पु०) ताड़ना, धमकी, चुड़की, तिरस्कार, आक्षेप, प्ररन, जिज्ञासा, निन्दा, शिंशा, उपदेश, प्रबोध, ब्रह्मासन ।—कारी (पु०) तिरस्कारक, आक्षेपक, प्ररन कारक।—ी (पु०) निन्दित, तिरस्कृत ।

अनुयोजक तत्० (पु०) अनुयोग कारी, उपदेशक ।

अनुयोजन तत्० (पु०) प्ररन, जिज्ञासा, पूँछ पौँछ ।

अनुयोज्य तत्० (पु०) अनुयोगार्ह, आन्नाप्य, निन्दायोग्य ।

अनुरक्त तत्० (पु०) प्रेमी, अत्यन्त लीन, आसक्त, रत ।

अनुराग तत्० (पु०) प्रीति, स्नेह, ममता, आसक्ति, रति, प्रशंसा, घोड़ी लाली ।—ी (पु०) अनुराग-युक्त, अनुरक्त ।

अनुराधा तत्० (स्त्री०) नक्षत्र विशेष, यह सप्तारहवाँ नक्षत्र है, इसकी तीन ताराएँ हैं, इसका स्थान वृश्चिकराशि का सुख है ।

अनुरूप तत्० (पु०) सद्गुरु, मुख्य, एकसा, अनुहार ।

अनुरोध तत्० (पु०) अपेक्षा, उपरोध, अनुवर्तन, पक्षपात ।

अनुलोम तत्० (पु०) सीधा, क्रम से, यथाक्रम, अविलोम, जातिविशेष ।—ज (पु०) ब्राह्मण के औरस और क्षत्रियाणी के गर्भ से उत्पन्न सन्तान ।

अनुवर्तन तत्० (पु०) अनुसार चलन ।

अनुवृत्ति तत्० (स्त्री०) उपजीविका, सेवा मार्ग ।

अनुवाद तत्० (पु०) भाषान्तर करना, निन्दा, अपवाद, धार धार कहना ।—क (पु०) भाषान्तर करने वाला ।

अनुवेदना तत्० (स्त्री०) सद्गुरुप्रति, समवेदना ।

अनुशय तत्० (पु०) पश्चात्ताप, अनुताप, जिघाँसा, द्वेष ।—ी (पु०) पश्चात्तापी, रोगविशेष ।

अनुशासन तत्० (पु०) आदेश, आज्ञा, या अनु-सासन तद्० ।

अनुशास्ता तत्० (पु०) शिक्षक, उपदेश, अनुशामक ।

अनुशीलन तत्० (पु०) आन्दोलन, पुनः पुनः अभ्यास, मनन ।

अनुशीक तत्० (पु०) पश्चात्ताप, खेद ।

अनुशीचन तत्० (पु०) पश्चात्ताप करना ।

अनुपङ्ग तत्० (पु०) मिलन, दया, संबन्ध, प्रणय ।

अनुपुप् [ अन् + पुप् ] तत्० (पु०) छन्द विशेष, चार पाद का यह छन्द होता है। एक पाद में ८ आठ अक्षर होते हैं, सरस्वती ।

अनुष्ठान [अनु + स्था + अन्ट] तत्० (पु०) आरम्भ, उपक्रम, सूचना, कार्य, आचरण ।—शरीर (पु०) लिङ्ग देह, आद्यदेह ।

अनुष्ठित [अ + स्था + क्त] तत्० (पु०) आरब्ध आचरित ।

अनु + स्था + य ] तत्० (पु०) उपमान्त, करने योग्य ।

५. ] तत्० (पु०)

अनुसरना (क्रि०) संग चलना, पीछे जाना ।  
 अनुसरहिं (क्रि०) अनुगमन करते हैं, पीछे चलते हैं, अनुसार चलते हैं ।  
 अनुसार [अनु + स + घञ्] तत्० (पु०) अनुरूप, अनुवर्तन ।  
 अनुसूचन [अनु + सूच् + अनट्] तत्० (पु०) विचार, ध्यान । — १ (स्त्री०) आन्दोलन, सुचिन्ता, अनुष्ठान ।  
 अनुस्वार [अनु + स्वं + घञ्] तत्० (पु०) एक विन्दु वाष्प । (०)  
 अनुहार [अनु + ह + घञ्] तत्० (पु०) सादृश्य अनुकरण ।  
 अनुहार्य [अनु + ह + घ्यप्] तत्० (पु०) मासिक ग्राह्य ।  
 अनूठा तद्० (यु०) अपूर्व, नया, निराला ।  
 अनूढा [अनु + ऊडा] तद्० (स्त्री०) कुर्बानी, अवि-  
 याहिता । — गामी (पु०) व्यवहारी, गणिका सेवा, संपट ।  
 अनूप तत्० (पु०) जलप्रापित देय, सजल देय, उपमा रहित । — ज (पु०) आर्द्रक, आदी, अर्द्रक ।  
 अनृत तत्० (यु०) भूटा, मिथ्या, असत्य, वितथ ।  
 — घादी (पु०) मिथ्यावादी ।  
 अनेक [न — एक] (यु०) अधिक, विस्तर, बहु, भ्रष्ट, डेर । — ज (पु०) द्विज, पक्षी-बहु जात । — ता (स्त्री०) भेद, विरोध, अ.धिक्य । — धा वारंवार । — शः (अ०) अनेक प्रकार, बहु प्रकार ।  
 अनैक्य [न — ऐक्य] तत्० (पु०) परस्पर असम्मिलन, एकताभाव, विरोध, असंयोग ।  
 अनैसे तद्० (क्रि०चि०) कुट्टि मे ।  
 अनोखा तद्० (यु०) अपूर्व, अद्भुत, दुर्लभ ।  
 अनेना तद्० (यु०) अलौना, नीन-रहित ।  
 अन्त तत्० (पु०) नाग स्वरूप, प्रान्त, शेष, समाप्ति, सोमा, निक्षय, अवयव । (यु०) समीप, निकट, अतिमनोहर । — :करण (यु०) हृदय, मनः, चित्त, स्वान्त । — :पाती (पु०) अन्तर्गत, बीच वाला, मध्यवर्ती, अनुष्ठान । — पुर (पु०) अवरोध, रणवास, कोठरी । — शय्या (स्त्री०) भूमिशय्या । — शरीर

(पु०) आत्मा, चिदात्मा, सच्चिदंश । — संज्ञा (स्त्री०) अनुभव, चेतना, चैतन्य । — सत्या (स्त्री०) गर्भवती । — खलिल (पु०) अन्तर्जल, पुष्पिकी-  
 म्बजल, सरस्वती नदी । — श्वेत (पु०) हाथी ।  
 अन्तक तत्० (पु०) नाशकर्ता, यम, काल ।  
 अन्तकर तत्० (पु०) नाशकर, विनाशक ।  
 अन्तकाल तत्० (पु०) मरने का समय ।  
 अन्तज तद्० (पु०) अन्त्यज तत्० शुद्र नीच जाति ।  
 अन्तड़ी तद्० (स्त्री०) अंतड़ी, आँतें, नाड़ी ।  
 अन्ततः तत्० (अ०) शेषतः, निकृष्टपक्ष ।  
 अन्तर तत्० (अ०) भीतर, अभ्यन्तर, मध्य, माँक, प्रान्त, स्वीकार, (पु०) मध्यवर्ती स्थान, सोमा, अवसर, परिधान, अन्तर्दान, विभिन्न, सहाय, द्विज, स्वीय, आत्मीय, भेद विना, यहि, अन्तरात्मा, सुयोग, अवकाश, तुल्य, अनुरूप, अन्य, दूरता ।  
 अन्तरङ्ग [अन्तर + अङ्ग] तत्० (पु०) आत्मीय, स्वजन, स्वसम्पर्क, सुदृढ । — ता (स्त्री०) आत्मीयता, सौहार्द ।  
 अन्तरा तत्० (पु०) चरण, मध्य का पद, निकट, मध्य, बीच, विना ।  
 अन्तरातप तत्० (स्त्री०) अन्तरिया, तिजारी ।  
 अन्तरात्मा तत्० (पु०) जीवात्मा, प्राण ।  
 अन्तरापत्य तत्० (पु०) गर्भवती, गर्भिणी, पुर्विणी, द्विजीवा ।  
 अन्तराय तत्० (पु०) बाधा, विघ्न, इकावट ।  
 अन्तराल तत्० (पु०) फाँक, अन्तर, भेद ।  
 अन्तरिच्छ तद्० (पु०) आकाश, गगन ।  
 अन्तरित तत्० (यु०) भीतरी, आन्तरिक ।  
 अन्तरीया तत्० (स्त्री०) तिजारी, तीसरे दिन चाने वाला ज्वर ।  
 अन्तरीक्ष तत्० (पु०) आकाश, गगन, शून्य, नभ ।  
 अन्तरीप तत्० (पु०) समुद्र का टुक, द्वीप ।  
 अन्तरीय [अन्तर + ईय] तत्० (पु०) भीतर का, बीचला, मध्यका, परिधान वस्त्र ।

अन्तर्गत तत्० (स्त्री०) मन की बात, पैठा, मध्यस्थ ।  
 अन्तर्गति तत्० (स्त्री०) मन के तरङ्ग, विस्मरण ।  
 अन्तर्दाह तत्० (पु०) छाती की जलन, शरीर की ज्वाला ।  
 अन्तर्द्वानं तत्० (पु०) अदर्शन, लुकाय, छिप जाना ।  
 अन्तर्ध्यान तत्० (पु०) मानसिक ध्यान, मनः संयन्धी वान ।  
 अन्तर्पट (पु०) छोट, झाड़, टट्टी, पर्दा ।  
 अन्तर्भूत तत्० (पु०) मध्य में स्थापित, मध्यङ्गत ।  
 अन्तर्मनस तत्० (गु०) उदास, घबरा, क्लेश ।  
 अन्तर्यामी, तत्० अन्तर्जामी तद्ग० मनकी बात पूकने हारा ।  
 अन्तर्वत्नी तत्० (स्त्री०) गर्भिणी, द्विजीवा ।  
 अन्तर्वेद तत्० (पु०) गङ्गा यमुना के बीच का देग, ब्रह्मापार्य देश ।  
 अन्तर्हित तत्० (गु०) छिपाव, लुकाय, अदृश्य, अन्तर्हान ।  
 अन्तिक तत्० (पु०) समीप, पास, निकट, सन्निधान ।  
 अन्तिम [अन्त + इम्] तत्० (पु०) शेष, चरम, अवसान, अन्त वाला ।  
 अन्तेयासी [अन्ते + यस् + गिञ्] तत्० (पु०) विद्यार्थी, ब्रह्मचारी, प्रान्तस्वामी ।  
 अन्त्य तत्० (गु०) शेष का, अन्त्य का, नीच, अधम जाति, अन्तिम, शेषोत्पन्न, जघन्य ।—कर्म (पु०) प्रेतकर्म, शयदाहादि कर्म ।—ज (पु०) शूद्र, रजकादि क्षम जाति, यथा—रजक, चर्मकार, चमार, बरुड़, शैवर्त, मेद, भोल, (गु०) जघन्यज जाति, अथरज ।—जन्मा (पु०) शूद्र, अथवर्यण, जघन्य जाति ।—स्थ (पु०) यथरल वे वर्ण ।  
 अन्त्येष्टि [अन्त्य + इष्टि] (पु०) प्रेत कर्म, शयदाहादि कर्म, मृत देह का अन्तिम संस्कार ।—क्रिया (स्त्री०) शयदाहा ।  
 अन्त्र तत्० (स्त्री०) अँत, अँतड़ी, नाबी ।—वृद्धि (स्त्री०) कोश वृद्धि रोग ।

अन्दर तद्ग० अभ्यन्तर, भीतर ।

अन्दाजून ( दे० ) अनुमान से, लग भग ।

अन्देश सन्देह, संशय ।

अन्ध तत्० (गु०) नेत्रहीन, अक्षु, अन्धा, मूरादास, मुनि विशेष । वैश्य जातीय मुनि, अयोध्या में सरयु तीर पर यह रहते थे । शूद्रा कन्या के साथ इन्हींमें अपना कथाह किया था, और आश्रम में रहते थे । अयोध्याधिपति राजा दशरथ ने हाथी के धम से अन्ध मुनि के पुत्र को शब्दवेधी बाण से निहत किया । बाणविद्ध पुत्र को पिता-माता ने देख के अपने प्राण छोड़ दिये और राजा को शाप दिया कि तुम भी पुत्रवियोग ही में मरोगे ।

अन्धस तत्० (पु०) अन्न, भात ।

अन्धक तत्० (पु०) देग विशेष, मुनि विशेष, अष्टु विशेष । यह दैत्य करयप के औरस और दिति के गर्भ से उत्पन्न हुआ था । देवताओं के द्वारा जब दैत्य मारे गये, तब दिति ने करयप से घर माँगा कि मेरे पुत्र को अथध्य बनाइये, करयप ने कहा 'तथास्तु' वही पुत्र अन्धक था, इसके तंजारवाहु तंजार मस्तक, दो तंजार नेत्र, और दो तंजार चरण थे । यह संसार का अति उत्पीडन करता था । अन्त में मत्पादेय के द्वारा निहत हुआ ।

अन्धकार तत्० (पु०) अन्धे, अधियारा, प्रकाश-भाव, अशान्त, तिमिर, तमिस्र ।

अन्धकूप तत्० (पु०) अन्धकार मय कूप, जलरहित कूप, अन्धा कुंवा ।

अन्धगोलाङ्गूल तत्० (पु०) अन्धे द्वारागौ की पूर पकड़ कर चलने की क्रिया । जो दया अन्धे का सहारा अन्धे द्वारा धकड़े जाने पर होती है अर्थात् दोनों गड़ड़े में गिर पड़ते हैं, वही दया अन्धगोलाङ्गूल की भी है ।

अन्धड़ तद्ग० (पु०) अँधी, भड़, यतान, प्रवरड-वात ।

अन्धतमस तत्० (पु०) अत्यन्त अन्धकार, -निशिड अन्धकार, नरक विशेष ।



अन्यादृश तत्० (गु०) अन्य प्रकार, भिन्न रूप, विसदृश ।  
 अन्यान्य तत्० (गु०) अपरापर, भिन्न भिन्न, दूसरे दूसरे, और और ।  
 अन्याय तत्० (गु०) उपद्रव, अविचार, न्याय बहिर्भूत, अनुचित ।—ी (गु०) अन्यायकारी, अत्याचारी, दुर्भूत, अधर्मी, न्यायशून्य, न्याय-रहित, दुष्ट ।  
 अन्योन्य तत्० (गु०) परस्पर, उभयतः, मिलाप ।  
 —भेद (गु०) परस्पर का भेद, आपस का भेद, विरोध ।—अथय (गु०) एक वस्तु के ज्ञान के अधीन दूसरी वस्तु का ज्ञान, परस्पर ज्ञान, मापेस, जानाअप, अपने ज्ञान के अधीन दूसरी वस्तु का ज्ञान और उस वस्तु के ज्ञान में अपनी ज्ञान ।  
 अन्यय (गु०) वंश, कुल, पदच्येद, सन्तति ।—ह्य (गु०) वंशावलि जानने वाला, बन्दी, भाट ।—ी (गु०) संबन्ध विशिष्ट, सम्पर्क, पसाह्वती ।  
 अन्वित तत्० (गु०) युक्त, संबन्धित, पूरा, मिला हुआ ।  
 अन्येषण तत्० (गु०) खोजना, पता लगाना, अनुसन्धान करना ।  
 अन्वह तत्० (गु०) नित्य, प्रत्यह, प्रतिदिन ।  
 अन्वाचय तत्० (गु०) संयोजित, संयुक्त, द्वन्द्व, समास का एक भेद ।  
 अन्हयाना तद्० (क्रि०) खान कराना, खुलाना ।  
 अन्हान तद्० (गु०) खान, धोवन ।  
 अन्होना तद्० (गु०) असाध्य, असम्भव ।  
 अप् तत्० (उपसर्ग) नीच, अधम, बुरा, संस, असम्पूर्णता विकृत, त्याग, वर्जनार्थ, अपकृष्टार्थ, वियोग, विपर्यय, चौर्य निर्दोश, हर्ष, यत्र कर्म, अनिर्देश्य प्रज्ञा ।—कर्म (गु०) दुष्कर्म, अनिष्टकर्म, कुकर्म, कुचलन ।—कर्ष (गु०) जघन्यता, छुटार्ई, मुख्य काल के रहते अमुल्य काल में कर्म करना ।—कर्षण स्वीचना, टानना ।—कलङ्क (गु०) अपपश, कलङ्क, मिथ्यापवाद, दुर्नाम ।—कार (गु०) अनिष्ट, हानि, क्षति, अनुपकार ।—कारक (गु०) बुरा करने वाला, अनिष्टकारी ।—कीर्ति (स्त्री०)

अपश, अपत्याति, दुर्नाम, अकीर्ति ।—कृत (गु०) अपकार प्राप्त ।—कृति (स्त्री०) अपकार, अनुपकार ।  
 —कृष्ट (गु०) अधम, नून, नीचा, बुरा, निकृष्ट ।  
 —कृष्टता (स्त्री०) जघन्यता, निकृष्टत्व, नीचता ।  
 —क्रम (गु०) भागना, कृटना, क्रमविपर्यय, पलायन ।  
 —क्रोश (गु०) निन्दन, भर्त्सन ।—गत (गु०) दूर गया, मुझा, मरा, मृत, गत, दूरीभूत ।—घात (गु०) हत्या, बध, मारना ।—चय (गु०) टोटा, घाटा क्षति, क्षीणता ।—चार (गु०) उवाक, अजीर्ण ।—छाया (स्त्री०) प्रेत, उपदेवता ।  
 अपञ्चीकृत तत्० (गु०) मूलभूत, आकाश आदि पाँच भूतों के पृथक् पृथक् भाव ।  
 अपटक (गु०) अर्हामी, पक्षघाती ।  
 अपटी तत्० (स्त्री०) वस्त्रप्रावरण, कनता ।  
 अपट्ट तत्० (गु०) अवगुट, निर्दृष्टि, अकुशल, अनिपुण, व्याधित, रोगी ।  
 अपठ तद्० (गु०) अनभ्यास, अनपटा, सूख ।  
 अपठित तत्० (गु०) अशिक्षित, अध्वयन रहित ।  
 अपड तद्० (गु०) स्वायी, अटल, पोड़ा, दृढ़ ।  
 अपडर तद्० (गु०) मिथ्याभय, निष्कारण डर ।  
 अपत तद्० (गु०) पापी, अप्रतिष्ठित ।  
 अपति तद्० (स्त्री०) अनादर, अपमान ।  
 अपतियारा तद्० (गु०) विज्ञासघातक, कपटी ।  
 अपत्य तत्० (गु०) सन्तान, बेटा, लड़का, जिसकी स्थिति से पितर गिरने न पावें, पुत्र, कन्या ।  
 —शत्रु (गु०) कर्कट, कंकड़ा ।—स्नेह (गु०) पुत्र और कन्या के प्रति स्वाभाविक मोह ।  
 अपत्रप तत्० (गु०) लज्जाहीन, निर्लज्जा, नहीं लजाने वाला ।  
 अपथ तत्० (गु०) कुमार्ग, मार्ग रहित ।  
 अपथ्य तत्० (गु०) अहितकारक भोजन, रोग बढ़ाने वाले पदार्थ ।—शी (गु०) कुपथ्य भोजन, कुपथ्या-भिलायी ।  
 अपद तत्० (गु०) पदरहित, वंगु, कर्मच्युत, (गु०) सर्प, क्रिमि ।—स्थ (गु०) स्थान भिन्न, कर्मच्युत, पदच्युत, अपने पद से हटाया गया ।

अपदार्थ तत्० (गु०) अपयोग्य वस्तु, अयस्तु,  
पदार्थ भिन्न, अनुत्तम ।

अपदेष्टता, तत्० (गु०) प्रेत, पिशाच आदि,  
निकृष्ट देष्टता ।

अपदेश तत्० (गु०) छल, कपट ।

अपध्वंसक तत्० (गु०) चिनीना, खण्डनकारी ।

अपनयन तत्० [अप + नी + अतट्], (गु०) अपनय,  
खण्डन, दूरी करण, मरण, निष्कृति ।

अपना तद्ग० (सर्व०) स्वकीय, निजका, स्व ।

अपनाना (क्रि० स०) अपनायना, अपना संबन्ध  
जोड़ना ।

अपनायत तद्ग० (स्त्री०) नातः, गोता, घराना,  
संबन्ध, भाई चारा ।

अपनीत तत्० (गु०) हटाया गया, दूरीकृत,  
अपसारित ।

अपवश तद्ग० (गु०) स्वाधीन, स्वतन्त्र, अपने  
वश में, मन्मुखी ।

अपभय तत्० (गु०) भय, डर, अपना डर, निर्भय,  
विगत भय ।

अपभाषा तत्० (स्त्री०) गँवारी बोली, कुवाब्ज,  
असाधु शब्द ।

अपभ्रंश तत्० (गु०) अपशब्द, प्राकृत, व्याकरण  
विकृत शब्द, अशुद्ध शब्द, ग्राम्य भाषा ।

अपमान तत्० (गु०) अमर्यादा, तिरस्कार, अनादर,  
असम्मान।—तित् (गु०) अयमान प्राप्त, मान-  
हीन ।

अपमृत्यु तत्० (गु० स्त्री०) रोग के बिना मरण,  
अपघात मरण, अस्वाभाविक कारणों से मृत्यु,  
अकाल मृत्यु, अनमौत मरण ।

अपयश तत्० अपजस तद्ग० (गु०) अपकीर्ति,  
दुर्नाम, अछयाति ।

अपर तत्० (गु०) इतर, अन्य, पर, भिन्न, दूसरा ।

अपर-ग तद्ग० (गु०) अन्यगामी, व्यभिचारी ।

अपरना तद्ग० अपर्णा तत्० (स्त्री०) बिना पत्ने  
वाली, उमा, पार्वती, भयानी ।

अपरम्पार तद्ग० (गु०) अपार, अनन्त, असीमा,  
अशेष ।

अपराजय तत्० (गु०) अपरामव, अजीत, जीत,  
परामव हीनता ।

अपराजित तत्० (गु०) जो जीता न जाय, अजेय,  
अनिर्जित । (गु०) विष्णु, ऋषियिशेष, शिव,  
—I (स्त्री०) दुर्गा, जयन्ती वृक्ष, अयनपर्णी,  
स्वल्पफला, विष्णुकान्ता, शेकासी, यमी भेद,  
सह्निनी, खनाम उपातस्तता विशेष ।

अपराध तत्० (गु०) दोष, अधर्म, पाप, अन्याय,  
—I (गु०) पापी, दोषी, अन्यायी ।

अपराधीन तत्० (गु०) स्वाधीन, जो परतन्त्र  
नहीं है ।

अपराह तत्० (गु०) दिनका शेष भाग, तीमरा  
पहर ।

अपरिगृहीता तत्० (स्त्री०) कुलस्त्री, विवाहिता  
स्त्री, जो परिगृहीत न हो ।

अपरिग्रह तत्० (गु०) अमतिग्रह, अस्वीकार ।

अपरिचय तत्० (गु०) अज्ञात, अज्ञात ।

अपरिचित तत्० (गु०) अज्ञान, अदृष्ट, जिनके  
साथ सम्भाषण न हुआ हो ।

अपरिच्छद् तत्० (गु०) होनखण्ड, मगिन वसन,  
अनुपयुक्त वेश ।

अपरिणीत तत्० (गु०) अविवाहित, कुमार, क्लारा,  
—I (स्त्री०) अविवाहिता, कन्या, अनूहा ।

अपरिणुष्ट तत्० (गु०) असन्गुष्ट, निरानन्द, तृप्ति-  
रहित ।

अपरिपक्व तत्० (गु०) अपक्व, परिपक्व हीन,  
अपक्व ।

अपरिपाटी तत्० (स्त्री०) अनतीति, कुदङ्ग ।

अपरिमित तत्० (गु०) परिमाण हीन, अधिक,  
प्रचुर ।

अपरिम्लान तत्० (गु०) म्लानि रहित, गिना  
हुआ ।

अपरिष्कार तत्० (गु०) ममीन, मीना कुवैला,  
अनिर्मल, अगुष्ट, अस्पष्ट ।

अप्रिय तत्० (गु०) अनभीष्ट, (पु०) शत्रु ।—वचन  
(पु०) निन्दुर वाक्य, कुशाक्य ।—वक्ता (पु०)  
निन्दुर भाषी, उग्रवक्ता ।  
अप्रीति तत्० (स्त्री०) अप्रणय, असद्भाव, अप्रेम,  
अरुचि, वैर ।—कर (पु०) अरुचिकर, निन्दुर,  
कठोर ।  
अप्सरा तत्० (स्त्री०) स्वर्ग की नर्तकी, स्वर्गवेष्ट्या,  
तिलोत्तमा, घृताची, रम्भा आदि । तद्० अपहरा ।  
अफराई तद्० (स्त्री०) अचाना, अचर्ना, परितृप्त ।  
अफरना तद्० (स्त्री०) अचाना, तृप्त्योना, भोजन  
जन्य सन्तुष्टि ।  
अफल तत्० (गु०) वृषा, निष्फल, फलरहित,  
बन्ध्या, भाव का वृक्ष ।—। (स्त्री०) आमलकी  
वृक्ष, घृतकुमारी, घीकुवार ।  
अफीम तद्० आकृ, औषध विशेष, अहिकेन ।  
अफुल्ल तत्० (गु०) उदास, पुष्प रहित, विना फूल,  
कली ।  
अफेण्डा तद्० (पु०) मनमौजी, आपमानी,  
मनस्वी ।  
अफेन तत्० (गु०) फेन रहित, भाग रहित, विना  
फेन, कफ रहित ।  
अफेलावट तद्० (पु०) मङ्कीर्ण, विस्तार नहीं ।  
अव तद्० (क्रि० वि०) इस समय, अवही अभी,  
विशेष निश्चय ।—तर्क (अ०) अत्राग, अष्टतक,  
अवलो ।—तक (अ०) अत्रान्त, अभी, मृतप्राय ।—ते  
(अ०) अभीते, आजते, अभू ।—सौडी (अ०) इस  
घड़ी तक, इस समय तक ।  
अवकर्तन तत्० (पु०) सूत्र यन्त्र, चरखा ।  
अवज तत्० (पु०) कमल, पद्म, शङ्ख, चक्र, ध्वज्यन्तरी,  
वैद्य ।  
अवधूत तत्० (पु०) योगी, संन्यासी, पाव रहित,  
जीवन्मुक्त, महात्मा ।  
अवध्य तत्० (गु०) मारने के योग्य नहीं, अपराधी  
होने पर भी जिसे प्राणदण्ड नहीं दिया जा सके ।  
ब्राह्मण, गुरु, इनातक आदि अवध्य हैं ।  
अवन्धित तत्० (गु०) बन्धनरहित, स्वच्छन्द  
स्वेच्छाचारी ।

अवनी तत्० (स्त्री०) पृथ्वी, धरणी, धरती ।  
अवल तत्० (पु०) निर्बल, दुजला, कृश, बल रहित ।  
—। (स्त्री०) बलहीना, नारी, स्त्री ।  
अवलोकन तत्० (पु०) निरीक्षण, देखना ।  
अवुद्धि तत्० (स्त्री०) बुद्धिहीन, निर्बोध, असमक ।  
अवुध्य तत्० (गु०) अवृक्त, सूर्य, असमक ।  
अवृक्त तद्० (गु०) सूर्य, असमक, अनसमक, अज्ञानी ।  
अवैर तद्० (स्त्री०) विलम्ब देरी, देर, कुलमय,  
असमय ।  
अवोध तत्० (पु०) अज्ञान, सूर्य ।  
अव्योल तद्० (गु०) सुपचाप, अवाक्य, मौन ।  
अव्यु तत्० (पु०) वर्ष, साल, संवत्सर ।  
अव्यि तत्० (पु०) समुद्र, सागर, अर्थव्य, मित्यु ।  
अभक्त तत्० (पु०) शठ, भक्ति हीन ।  
अभय तत्० (पु०) निर्भय, निहत्, त्राम रहित ।—।  
(स्त्री०) दुर्गा, भगवती, हरीतकी विशेष ।—दान  
(पु०) दुःख से उद्धार, शरण ग्रहण, “ मा मैः ”  
कह कर अवनाना ।  
अभरण तद्० (पु०) आभूषण, अलङ्कार, गहना ।  
अभरम तद्० (गु०) पतही, अमर्याद ।  
अभाग तद्० (पु०) विपत्ति, दुर्दशा, विपद ।  
अभागा तद्० (गु०) मन्दभागी, भाग्यहीन ।  
अभाग्य तत्० (गु०) दुष्टभाग्य, दुर्दृष्ट, मन्दभाग्य ।  
अभाजन तत्० (गु०) पात्ररहित, कुपात्र, अविश्वामी  
अपात्र, अयोग्य ।  
अभार तद्० (गु०) हलका, लघु, अगुह ।  
अभाव तत्० (पु०) अविद्यमान, नास्तिक, अमत्ता,  
ध्वंस ।  
अभाषनीय तत्० (गु०) अचिन्तनीय, अतर्क्य ।  
अभि तत्० (उपसर्ग) चौकरी, आगे, समन्ताएँ,  
उभयार्थ, शीघ्रता इत्यम्भाव, धर्मण, अभिलाष,  
आमिषुष्य, चिन्ह, औत्सुक्य ।  
अभिक तत्० (पु०) कामुक, लम्पट, छुट्टा ।  
अभिख्या तत्० (स्त्री०) नाम, शोभा, उपाधि ।  
अभिगमन तत्० (पु०) निकटगमन, सहवास-  
करण ।

अभिग्रह तत्० ( ५० ) अभिक्रमण, अभियोग, आक्रम, गौरव, सुकीर्ति, अग्रहार, सुपठन, चोरी, लड़ाई के लिये आह्वान, उत्साह बढ़ाने वाला, योधार्थों का परस्पर कथन ।

अभिघात तत्० ( ५० ) डण्डा आदि के द्वारा मारना, - आघात, दौत से काटना ।

अभिवार तत्० ( ५० ) मारण मन्त्र विशेष, हिंसा-कर्म, मारण उच्चाटन आदि उदपातक विशेष ।

—ी ( ५० ) हिंसाजनक-कर्म-कर्ता, अनिष्ट-कारक ।

अभिजन तत्० ( ५० ) पंथ, गोष्ठी, परिवार, पालक, पोषी, रत्नक, पूर्वजों का निवासस्थान ।

अभिजात तत्० ( ५० ) सद्गुणजात, कुलीन, सुन्दर, रूपवान् ।

अभिजित तत्० ( ५० ) मुहूर्त विशेष, दिवस का अष्टम मुहूर्त, नक्षत्र विशेष, इसमें चलने वाले तीन नक्षत्र होते हैं ।

अभिज्ञ तत्० ( ५० ) ज्ञाता, विद्व, पण्डित ।—ता ( स्त्री ) विद्वता, पाण्डित्य, नैपुण्य ।—तन ( ५० ) सम्यक स्मरणार्थ विन्द् विशेष ।

अभिधा तत्० ( स्त्री ) नाम, संज्ञा शब्द की शक्ति विशेष, शब्द की वह शक्ति जिसके द्वारा शब्द अपने ठीक ठीक अर्थों का बोधन करते हैं ।

अभिधान तत्० ( ५० ) नाम, संज्ञा, शब्दों के अर्थ बतलाने वाले ग्रन्थ, फोय ।

अभिधेय तत्० ( ५० ) अभिधान, नाम । ( ५० ) अभिधागम्य, प्रतिपाद्य, अर्थ ।

अभिन्दन तत्० ( ५० ) बुद्धिविषय । ( ५० ) आनन्दन, हर्षण ।—पत्र सम्मान सूचक पत्र, बहूष ।

अभिनय तत्० ( ५० ) नृतन, नवीन, नभय ।—गुप्त ( ५० ) संस्कृत के एक प्रसिद्ध अलङ्कारवेत्ता, इनका धार्मिक मत शैव था, इनके बनाये संस्कृत के ८ ग्रन्थ हैं, ये ८८३ ई० से १०१५ ई० के बीच में हुए थे ।

अभिनय तत्० ( ५० ) शारीरिक चेष्टा के द्वारा हृदय का भाव-प्रकाशित करना, नाट्य क्रिया, नर्तन, भाँड़, स्थांग, नाटक का खेल ।

अभिनिविष्ट तत्० ( ५० ) मनोयोगी, प्रणिहित, आविष्ट, अधिक लग जाना ।

अभिनिवेश तत्० ( ५० ) मनोयोग, मनोनिवेश, प्रणिधान, प्रवेश, पैठना, विचार ।

अभिन्न तत्० ( ५० ) अपृथक्, संयुक्त, मिलित, मिश्रित, मिला ।

अभिप्राय तत्० ( ५० ) आशय, मनोरथ, तात्पर्य ।

अभिप्रेत तत्० ( ५० ) अभिप्राय का विषय, धाञ्छित, अभीष्ट, ईप्सित ।

अभिभव तत्० ( ५० ) पराजय, हार, पराभव, नीचे दिखाना ।

अभिभावक तत्० ( ५० ) तत्त्वावधायक, रत्नक, सहायक, आश्रय ।—ता या त्वं ( स्त्री ) तत्त्वावधायकता, सहायता ।

अभिभूत तत्० ( ५० ) अज्ञान, अचैतन्य, विह्वल, पराभूत, पराजित ।

अभिमत तत्० ( ५० ) मम्मत, इष्ट, अनुमत, मनोनीत ।

अभिमन्यु तत्० ( ५० ) अर्जुन का पुत्र और श्रीकृष्ण का भानजा, सुभद्रा के गर्भ से यह उत्पन्न हुआ था । कुहल्लव के युद्ध में कौरव सेना के सभी प्रधान प्रधान और इस पौंड्रशर्षण्य यौर दानक के पराक्रम से निरस्त हो चुके थे, तब कौरवदल के सात महारथियों ने अन्वय से इसका वध किया था । इसका स्त्री का नाम उत्तरा था, विराटराज की यह कन्या थी । इसी अभिमन्यु-पत्नी उत्तरा के पुत्र महाराज परीक्षित थे । और अभिमन्यु के साथ पैशाचिक दाहण इस अत्याचार के कारण ही कौरव सेना का नाम निर्मूल हुआ है ।

( २ ) कारमीर के राजा, यह राजा खूष्टाब्द के दो हजार वर्ष पहिले कारमीर का अधिपति था, इसके समय में कारमीर राज्य में बौद्ध धर्म की अत्यन्त प्रचलता थी । कारमीर राज्य में अभिमन्यु-पुर नामक एक नगर इस राजा ने अपने नाम से बसाया था ।—(महाभारत) ।



अभिमर्षण तत्० (गु०) मनन चिन्तन, पर-स्त्रीगमन ।  
 अभिमान तत्० (गु०) अहङ्कार, मद, गर्व, आक्षेप ।  
 - नी (गु०) चमस्त्री, अकड़वाज़, अहङ्कारी, अभि-  
 मानयुक्त, आक्षेपान्वित, अनादर से खिन्न ।  
 -जनक (गु०) अहङ्कारयुक्त, गर्वजनक ।  
 अभिमुख तत्० (गु०) सम्मुख, समक्ष, आगे, सामने ।  
 अभियोक्ता तत्० (गु०) अभियोगकर्ता, वादी,  
 अर्धी ।  
 अभियोग तत्० (गु०) अपराधादि योजन, आवेदन,  
 किसी का अपराध धर्माधिकरण में उपस्थित  
 करन ।  
 अभिराम तत्० (गु०) सुन्दर, प्यारा, मनोहर, रम-  
 णीय ।  
 अभिरुचि तत्० (स्त्री०) रुष्टि, भलाई, चाह, मन का  
 अभिलाष, रसज्ञान, आस्वाद ।  
 अभिरूप तत्० (गु०) योग्य, उपयुक्त । (गु०) विद्वान्,  
 कामदेव, चन्द्रमा, शिव, विष्णु, सूर्य ।  
 अभिलषणीय तत्० (गु०) वाञ्छनीय, मनोहर,  
 सुन्दर ।  
 अभिलषित तत्० (गु०) इष्ट, वाञ्छित, इच्छित ।  
 अभिलाष तत्० (गु०) आकाँक्ष, स्पृहा, कामना,  
 आशा ।—नी (गु०) अभिलाषयुक्त, सस्पृह, इच्छुक,  
 वाञ्छान्वित ।  
 अभिलाषुक तत्० (गु०) इच्छान्वित, सस्पृह ।  
 अभिव द तत्० (गु०) दुर्वचन, गाली  
 अभिवादन तत्० (गु०) नमस्कार, वन्दना, पादग्रहण  
 पूर्वक प्रणाम ।—नीय (गु०) प्रणम्य, प्रणाम के  
 योग्य ।  
 अभिव्यक्त तत्० (गु०) प्रकाशित, विज्ञापित ।—  
 (स्त्री०) विज्ञापन, प्रकाश, व्यक्तकरण, घोषणा ।  
 अभिशप तत्० (गु०) शाप, दुरा मानना, दूषण-  
 वाक्य, क्रोध, अतिद्वेषार्थना ।  
 अभिपङ्क तत्० (गु०) आलिङ्गन, मव प्रकार से सङ्ग,  
 आश्रय, परामर्श ।  
 अभिपथ तत्० (गु०) यज्ञज्ञान, मयासन्धान, चिर-  
 स्थापित मयास्पादक दृश्य. समासतापान ।

अभिप्रेक्त तत्० (गु०) कृताभिवेक, कर्म में नियुक्ति,  
 पदस्य, जिसका अभिवेक हुआ ।  
 अभिवेक तत्० (गु०) मंत्र पूर्वक ज्ञान, कर्म में  
 नियोग करना, पदस्य कारण, शान्ति ज्ञान,  
 चिञ्चन ।  
 अभिसम्पात तत्० (गु०) अभिवाय, संग्राम, क्रोध,  
 मन्यु, रीस ।  
 अभिसर तत्० (गु०) सागी, संगी, सहचर, अनुचर,  
 सहाय, मित्र ।  
 अभिसार तत्० (गु०) नायक श्रयदा नायिका  
 का सङ्केत (पूर्व निर्दिष्ट) स्थान में गमन, बल, युद्ध,  
 सहाय ।  
 अभिसारिका तत्० (स्त्री०) नायिका विशेष, नायक  
 के सहवासार्थ सङ्केत स्थान में जाने वाली  
 नायिका । यथा :—

दोहा

“जो चेरी मद मदन करि, आयहि पति पर जाइ ।  
 वेप अङ्ग अभिसारिका, सजै समान बनाइ ॥”  
 —कवि देवजी ।

अभिसारिका दो प्रकार की होती है । एक कृष्णा-  
 भिसारिका, और दूसरी शुक्लाभिसारिका । इनके ये  
 भेद वेप के अनुसार है अर्थात् काले वस्त्रवाली  
 कृष्णा और श्वेत वस्त्रवाली शुक्ला । कृष्णवस्त्र में अभि-  
 सार करने वाली कृष्णाभिसारिका, और शुक्लवस्त्र में  
 अभिसार करने वाली शुक्लाभिसारिका के नाम से  
 परिचित होती है ।

अभिहित तत्० (गु०) उक्त, कथित, उक्त,  
 प्रकाशित ।

अभी तद्गु० (अ०) इसी समय, शीघ्र, वेगी ।

अभीत तत्० (गु०) निडर, निर्भय, साहसी ।

अभीक्ष्ण तत्० (गु०) पुनः पुनः, बार बार, भ्रूयोः  
 भ्रूयः ।

अभीप्सित तत्० (गु०) अभीष्ट, वाञ्छित, प्रिय, मनो-  
 मिलित ।

अभीरु तत्० (गु०) निर्दोष, निर्भय । (गु०) महादेव,  
 शिव अस्वामि ।

अमीष्ट तत्त्वं (५०) इच्छित्त, प्राञ्जित्त, अमित्तवित्त ।  
 अमूर्त् तद्दृ० (अ०) अमो, अत्र, अत्र हो, अत्र ।  
 अभूत्पूर्व तत्त्वं (५०) अद्भुत, विलक्षण, आश्चर्य,  
 जैसा कि न हुआ हो ।  
 अभूत्स्त्रिषु तत्त्वं (५०) अज्ञान शत्रु, यक्ष-हीन, रिपु-  
 हीन, जिसका कोई वैर न हो ।  
 अभेद तत्त्वं (५०) भेद रहित, अविशेष, ऐश्वर्य, अभेद,  
 परस्पर ।—य (५०) अभेदनीय । (५०) हीरा ।  
 अभोजन तत्त्वं (५०) भोजनाभाव, अनाहार, उपवास,  
 अतश्न ।  
 अभोजी तत्त्वं (५०) अखादक, अमोगी ।  
 अभ्यङ्ग तत्त्वं (५०) आषाद-मस्तक-तैल-तेपन,  
 तैलमहून ।  
 अभ्यञ्जन तत्त्वं (५०) तैलतेपन, तैल, उपठन ।  
 अभ्यन्तर तत्त्वं (५०) अन्तर्गत, मध्य, धीव, अन्तर,  
 भीतर ।—वर्ती (५०) मध्यवर्ती ।  
 अभ्यर्चना तत्त्वं (स्त्री०) आर्द्र, सम्मान, सम्भाषण ।  
 अभ्यागत तत्त्वं (५०) पाहुन, अतिथि ।  
 अभ्यास तत्त्वं (५०) साधन, चिन्तन, शिक्षा, आवृत्ति  
 से उत्पन्न संस्कार ।  
 अभ्युदय तत्त्वं (५०) ऐश्वर्य, वृद्धि ।  
 अभ्रं तत्त्वं (५०) आकाश, मेघ, बादल ।  
 अभ्रक तत्त्वं (५०) अशक, धातु विशेष, भौंडल,  
 भौंडर ।  
 अभ्रं तत्त्वं (अ०) शीघ्रता, अल्प । (५०) शीघ्र,  
 रोग विशेष ।  
 अभ्रका-दमका (द्वे० वा०) फलाना, अमुक, अज्ञात  
 अथवा गोपनीय नाम के पुरुष का बोधक ।  
 अभ्रङ्गल तत्त्वं (५०) अगुम, अकल्याण, दुर्लक्षण ।  
 —जनक (५०) अगुम-जनक, दुर्लक्षण-युक्त ।  
 अभ्रङ्गल्य तत्त्वं (५०) अगुम जनक, अमिष्ट सुवक ।  
 अभ्रचूर तत्त्वं (५०) अमि को फकिया, अम का  
 तूण, खटाई ।  
 अभ्रत तत्त्वं (५०) अचम्पत, अन्भिप्रेत । (५०)  
 रोग, मृत्पु, काल ।  
 अभ्रत्सर तत्त्वं (५०) द्वेषाभाव, मत्सर-रहित ।

अमनोयोग तत्त्वं (५०) अन्वधानता ।  
 अमनोऽज्ञ तत्त्वं (५०) अनुन्दर, कुक्ष्य, चिन्ता ।  
 अमर तत्त्वं (५०) देवता, नित्य, विरह्यामी, मरण-  
 रहित, कुनिश वृत्त, अस्त्यि संहारक वृत्त, आपद,  
 पारा ।—ज (५०) देवजात, देव से उत्पन्न, देव-  
 प्रभव ।—त्व (५०) देवभाव, देवत्व, देव मायुज्य ।  
 —दाह (५०) वृत्त विशेष, देवदाह ।—द्विज (५०)  
 देवलप्रादण, पुजारी ।—पति (५०) इन्द्र, देवों का  
 राजा ।—पुर (५०) देवों का नगर ।—लोक (५०)  
 स्वर्ग, देवलोक ।—सिंह (५०) उज्जयिनी-पति ।  
 (५०) विक्रमादित्य की समा के नीरत्नों में से एक  
 रत्न, अमर को धनामक संस्कृत कोष इन्होंने बनाया  
 था । यही एक ग्रन्थ इनकी कीर्ति को अमर रखने  
 के लिये यथेष्ट साधन है । (२) प्रसिद्ध गोरखा सेना-  
 पति, १८१४-१५ ख्रिष्टाब्द में नैपाल के युद्ध में  
 अंग्रेज सेनापति आर्दूर लोनी को इन्होंने खूब  
 उजाया था । जब विशासपुर के राजा ने अंग्रेज  
 सेनापति की सहायता की, तब अमरसिंह नैपाल  
 की राजधानी काठमाण्डू चले गये, और युद्ध का भी  
 अन्त हुआ । (३) राजपुताना के अन्तर्गत मेवाड़  
 के राजपूत कुत गौरव प्रतापसिंह का पुत्र, यह  
 बाल्यकाल ही से अपने पिता के समीप रहने के  
 कारण उनके गृहीत चरित्रों के अनुकरण करने  
 में समर्थ हो सका था । यह अपनी युवावस्था  
 में मेवाड़ का राजा हुआ । यह अपने पिता के ममान  
 तेजस्वी तथा न्यायी था, घोड़े ही समय में यह एक  
 आश्चर्य राजा हो गया ।  
 अमराई तद्दृ० (स्त्री०) ग्राम का घन, बाग ।  
 अमरावती तत्त्वं (स्त्री०) इन्द्रपुरी, स्वर्ग, एक नगरी  
 का नाम ।  
 अमरु तत्त्वं (५०) एक राजा और कवि का नाम,  
 कहते हैं—मण्डन मिश्र की स्त्री के प्रसंग का उत्तर  
 देने के लिये शङ्कराचार्य जी इसी राजा के मृत  
 शरीर में प्रविष्ट हुए थे, और “अमरुतक,” नाम  
 का एक शृङ्गार रस का काव्य बनाया था ।  
 अमरुत् तत्त्वं (५०) सुस्विर, अन्त, अचञ्चल, निर्वात,  
 (५०) फल विशेष ।

अमरेश तद्० (पु०) देवताओं का राजा इन्द्र ।  
 अमर्यादा तद्० (स्त्री०) अनीति, असम्मान, मान-  
 हानि । तद्० अमर्याद (स्त्री०) ।  
 अमर्य तद्० (पु०) क्रोध, कोप, रोस, अक्षमा ।  
 अमर्यण तद्० (गु०) क्रोधी, रागी, कोपान्वित ।  
 अमल तद्० (पु०) निर्मल, राज्य, काम, प्रयोग,  
 मादक वस्तु ।  
 अमलातास तद्० (पु०) औषध विशेष ।  
 अमाल्य तद्० (पु०) प्रधान मन्त्री, दीवान, राज-  
 मन्त्री ।  
 अमान तद्० (गु०) मान रहित, निरहङ्कार ।  
 अमाना तद्० (क्रि०) समान भरना, खपना ।  
 अमान्य तद्० (गु०) मान रहित, त्याज्य, अनाहत,  
 अस्वीकार ।  
 अमानुष तद्० (गु०) जो मनुष्य ने न हो सक, मनुष्य  
 की शक्ति से बाहर ।  
 अमाय तद्० (गु०) कपट-रहित, वास्तव, वयार्थ,  
 माया-रहित ।  
 अमावस तद्० (स्त्री०) तिथि विशेष, जिस तिथि में  
 चन्द्रमा सूर्य एक ही राशि पर वर्तमान हैं, चान्द्र-  
 मास का अन्तिम दिन ।  
 अमावस्या तद्० } (देखो अमावस)  
 अमावास्या तद्० }  
 अमिउ तद्० (पु०) अमृत, सुधा ।  
 “कीन्हेसि अमिउ जिथे जेहि पाई ” —(पद्मावत)  
 अमिउ तद्० (गु०) नित्य, दृढ़, अटल ।  
 अमित तद्० (गु०) बहुत, अधिक, प्रचुर, असंख्यता ।  
 अमिउ तत० (पु०) गन्तु, वैरी, अति ।—भूत (गु०)  
 विपच, वैरी, अहितकारी ।  
 अमितौजा तद्० (पु०) सर्वशक्तिमान् ।  
 अमिय तद्० (पु०) अमृत, सुधा, पीयूष ।  
 अमी तद्० (स्त्री०) अमृत, सुधा, आसव । (तद्०)  
 (गु०) [अम् + इत्] रोगी, रोगार्त, पीड़ित ।  
 अमुक तद्० (गु०) वह, कोई, अमका दमका, बुद्धिस्व-  
 ० शक्ति, सम्मुखागत ।  
 अमुत्र तद्० (अ०) परकाल, परलोक ।  
 अमूर्त तद्० (गु०) निराकार, मूर्तिहीन ।—र् (गु०)  
 मूर्तिहीन, आकृति रहित ।

अमूल तद्० (गु०) मूल रहित, निर्मल, जड़युक्त ।  
 अमूलक तद्० (गु०) मूल रहित, निर्मल, अप्रामा-  
 णिक, मिथ्या ।  
 अमृत्य तद्० (पु०) उत्तम, बढ़िया, श्रेष्ठ ।  
 अमृत तद्० (पु०) समुद्रोत्पन्न द्रव्यविशेष, पीयूष,  
 सुधा, जल, घृत, मुक्ति, इष्ट, औषध, विष, य-  
 ज्ञेय द्रव्य, अयावित वस्तु, वत्सनाम, भक्तणीय द्रव्य,  
 सुखाद द्रव्य, पारद, अन्नधन, स्वर्ण, इष्ट । (गु०)  
 मरण रहित (पु०) धन्वन्तरि, वराहो कन्द, वनमूँग,  
 देवता, सुन्दर ।—कर (गु०) चन्द्रमा, निशाका ।  
 —कुण्ड (गु०) अमृत का पात्र ।—जरा (स्त्री०)  
 जटामौसी ।—तरङ्गिणी (स्त्री०) ज्योत्स्ना,  
 प्रकाशमयी रात्रि ।—दीधिति (गु०) चन्द्रमा,  
 शशङ्क, शशधर ।—फल (गु०) पटोल, परधर ।  
 —फला (स्त्री०) दास्य, अंगूर, आमलकी ।—वह्नी  
 (स्त्री०) गुड़बी-लता ।—विन्दु (गु०) एक उपनि-  
 पद् का नाम ।—रस (गु०) सुधा, अमृत ।—रसा  
 (स्त्री०) अंगूर ।—सम्भवा (स्त्री०) गुड़व ।  
 —स्ववा (स्त्री०) कदली वृक्ष, लता विशेष ।  
 अमृता तद्० (स्त्री०) गुड़ची, दूर्वा, गुणवी, मदिरा,  
 आमलकी, हरीतकी, पिप्पली ।  
 अमृती तद्० (स्त्री०) चुटिया, मिठाई विशेष ।  
 अमृत्य तद्० (गु०) अक्षय, अचलन्तव्य ।  
 अमेधा तद्० (गु०) मूर्ख, मूढ़, अज्ञेय ।  
 अमेध्य तद्० (गु०) अपवित्र, अयुद्ध, दुष्ट ।  
 अमोघ तद्० (गु०) अक्षय्य, मफल ।—वीर्य (गु०)  
 अक्षय्य वीर्य, अक्षय तेज, अक्षय्य प्रताप ।  
 अम्वक (गु०) चक्र, नयन, नेत्र, तौषा ।  
 अम्वत तद्० (गु०) पट्टा, अम्बल, ब्रक, खटाई ।  
 अम्वर तद्० (पु०) आकाश, वस्त्र, कार्पास, स्वनाम-  
 लयात, सुगन्धद्रव्य विशेष ।  
 अम्वरीप तद्० (पु०) भर्जनपात्र, युद्ध, विष्णु,  
 शिव, शारक, भास्कर, सूर्यवंशीय राजा विशेष ।  
 अयोध्यानगरी इनकी राजधानी थी, इनके  
 पिता का नाम नाभाग था, इस अग्रप्रतिम वल-  
 शाली राजा ने दसलाख राजाओं के साथ एक  
 समय युद्ध किया था, सम्पूर्ण पृथिवी पर अयना

राज्य स्थापित करके यथाविधि कई सौ यज्ञ इन्होंने सम्पादित किये थे, इसीके प्रताप से इन्होंने दुर्लभ स्वर्ग प्राप्त किया था। नरक भेद, आत्मातक वृद्ध, अनुताप, पश्चात्ताप।

अभ्यल तद्० (स्त्री०) मादक वस्तु, खटारस।

अभ्यष्ट तत्० (पु०) [अभ्य + ष्ट + ट] जाति विशेष, निषाद पिता के श्वोरस से शूद्रा स्त्री के गर्भ में उत्पन्न, इस जाति को बङ्गाल में वैश्य जाति कहते हैं। मुनि विशेष, देश विशेष, हस्तिक, महायत।

अभ्या तत्० (स्त्री०) [अभ्या + ष्टा] माता, जननी, दुर्गा, काशी राज की उषेष्टा कन्या, इसीने हमारे जन्म में शिशुवही रूप धारण करके भीष्म पितामह को मारा था।

अभ्यारी तद्० (स्त्री०) हौदा, चन्दवा।

अभ्यालिका तत्० (स्त्री०) [अभ्याला + इङ् + ष्टा] मा, माता, जननी, काशीराज की छोटी लड़की, प्रसिद्ध राजापाण्डु के पिता विचित्र वीर्य से यह ब्याही गयी थी, पाण्डु के मरने के अनन्तर यह अपनी सास सत्यवती के साथ वन चली गई थी।

अभ्यिका तत्० (स्त्री०) [अभ्या + इक् + ष्टा] दुर्गा भगवती, माता, काशीराज की मध्यमा कन्या, यह विचित्र वीर्य से ब्याही गई थी, इसके पुत्र का नाम भृतराष्ट्र था, यह पाण्डु के मरने के बाद सत्यवती के साथ वन चली गई थी, और यहीं उसने तपस्या के द्वारा इस शरीर को छोड़ा।

अभ्यिया तद्० (पु०) टीकोरा, छोटा आम।

अभ्यु तत्० (पु०) [अभ् + उ] जल, सलिल, पानी, पानो, नीर।—कण (पु०) आंस, शीत, गुहार।—ज (पु०) कमल, पद्म, बद्ध।—जन्म (पु०) पद्म, कमल, पद्मज।—द् (पु०) मेघ, घटा, वर्षा, धारिद।—धर (पु०) धारिद, मेघ, धारिधर।—धि (पु०) समुद्र, सागर, सिन्धु, जलधि।—निधि (पु०) जलधि, समुद्र।—वाह (पु०) मेघ, धारिद, बादल।

अभ्यम् तत्० (पु०) अभ्यु, जल, पानी।—ोज (पु०) [अभ्यम् + जान + इ] पद्म, कमल, अभ्युज, चन्द्र, सारसपत्नी।—ोद (पु०) जलद, अन्न, मेघ।—ोधर

(पु०) जलधर, मेघ, समुद्र।—ोधि (पु०) समुद्र, सागर।—निधि (पु०) समुद्र, सागर, जलधि। अभ्या तद्० (स्त्री०) माता, मा, महतारी। आम्ना तद्० (पु०) अँवला, फल विशेष, धाम्नी-फल।

अम्ल तत्० (स्त्री०) खट्टा, जूफ, अम्लत।

अम्लपित्त तत्० (पु०) रोग विशेष।

अम्लान तत्० (पु०) म्लान रहित, हृष्ट, ताजा।

—ता (स्त्री०) हृष्टभाव, प्रसन्नता।

अम्ली तद्० (स्त्री०) अमिनी, तितिली, दमली।

अयःपिण्ड तत्० (पु०) [अयम् + पिण्ड] सोह पिण्ड, लोहे का गोला।

अयत्न तत्० (पु०) औदास्य, अयतन, अस्तकार।

अयथार्थ तत्० (पु०) मिथ्या, अन्याय, अन्धेर।

अयन तत्० (पु०) वर्ष का आधा, सूर्य का उत्तर और दक्षिण दिशा का गमन, गमन, आश्रय, मार्ग।

अयश तत्० (पु०) अकीर्ति, कलङ्क, नेन्दा, अशयति।

—कर (पु०) [अ + यश् + कृ + कर्त्] दुर्नाम जनक, अशयति कर।—वी (पु०) [अ + यश् + वित्] अशयति युक्त, प्रतिष्ठा रहित।

अयस्कान्त तत्० (पु०) [अयम् + कान्त] मणि विशेष, शुभ्यक पत्थर।

अयचक तत्० (पु०) याज्ञा रहित, अमिच्छुक।

अयाचित तत्० (पु०) याज्ञा विना प्राप्त, अप्रायित।

—ग्रत (पु०) विना मँगै प्राप्त हुए पदार्थों से जीविका निर्वाह करने वाला।

अयं तत्० (पु०) यह, ऐसा, इसका प्रयोग रामायण में आया है।

अयान तद्० (पु०) लड़काई, सूर्यता, अनजानपन।

—प (पु०) लड़कवन, मूर्खता, बेसमझी।

अयाना तत्० (पु०) भोला, अशुभ, मूर्ख।

अयुक्त तत्० (पु०) अमिश्रित, अनुचित, अपद्रुत।

अयुत तत्० (पु०) अयुक्त, अमिश्रित, अमिश्रित।

(पु०) दय सहस्र संख्या, दय हजार।

अये तत्० (स्त्री०) सम्बोधनार्थ, विनाकार्यं

कीर्णार्थ।

अयोग तत्० ( पु० ) विनयेष, विच्छेदं, अनैस्य ।  
 अयोगव तत्० ( पु० ) शूद्र के औरस से वैश्य कन्या के गर्भ से जात सन्तान, जाति विशेष ।  
 अयोग्य तत्० ( पु० ) [अयस् + घञ] एकत्रीभूत सौह पुत्र, निहाली, हथोडा, निहाई ।  
 अयोध्या तत्० ( स्त्री० ) [अ + युच् + प्रा] कौशला, अश्वपुरी, सर्वबंधो राजाओं को राजधानी ।  
 —नाथ ( पु० ) ग्रयोध्याधिपति । ( २ ) पण्डित केदारनाथ के पुत्र, ये काशमीरी ब्राह्मण थे, इनके पिता एक धनाढ्य वाणिज्य व्यवसायी थे । १८४० ख्रिष्टाब्द में पण्डित अयोध्यानाथ का आगरे में जन्म हुआ था । फारसी, अरबी, और अंग्रेजी के यह विद्वान् थे । आगरे में उनकी थकालत खूब चली थी, जब सद्द अदालत आगरे से इलाहाबाद आयी तभी पं० अयोध्यानाथ भी इलाहाबाद आये । बहुत से लोकोपकारी कार्य इन्होंने किये थे । इन्होंने द्रव्योपार्जन भी खूब किया और उसका सदुपयोग भी, पुस्तकप्रदेश के सभी लोकोपकारी कार्यों में यह शामिल होते थे, अतएव ये यहाँ के नेता समझे जाते थे, “इण्डियन हेरल्ड” नामक दैनिक पत्र का कुछ दिन तक सम्पादन करते रहे । पुनः उसके बन्द होने पर “इण्डियन मुनियन” नाम की पत्रिका निकालते थे । इलाहाबाद यूनिवर्सिटी के कमिश्नर और इलाहाबाद यूनिवर्सिटी के फेलो थे, पुस्तकप्रदेशवासी हिन्दुस्तानियों में सर्वप्रथम छोटे साठ के कौमिल में यही बैठे थे ।  
 अयोनि तत्० ( पु० ) योनिभिन्न, अनुत्पन्न ।—ज ( पु० ) जोय विशेष, योनिजात भिन्न, वृत्त आदि ।  
 अरई तत्० ( पु० ) मयानी, मई ।  
 अर्गजा तत्० ( पु० ) तत्० अरगजा, एक सुगन्धित द्रव्य विशेष, प्रसिद्ध ।  
 अरभना तत्० ( क्रि० ) उलझना, फँसना, बझना ।  
 अरणा तत्० ( स्त्री० ) जङ्गली भैंस ।  
 अरणि तत्० ( स्त्री० ) काष्ठ विशेष, जिसे घिस कर आग निकालते हैं । अग्नि धारक काष्ठ विशेष ।  
 अरण्ड तत्० ( पु० ) रेंडी, अण्डी वृक्ष ।  
 अरण्य तत्० ( पु० ) वन, फानन, द्विपिन, जङ्गल ।  
 —धासी ( पु० ) यनस्य, यनवासी, तपस्वी, मुनि ।

अरवराना तत्० ( क्रि० ) हड़बड़ाना, घमड़ाना ।  
 अरविन्द तत्० ( पु० ) कमल, उत्पत्ता, पङ्कज ।  
 अरवी तत्० ( स्त्री० ) घुड़ियाँ, कचबु, बन्हा ।  
 अरसष्टा तत्० ( पु० ) अर्शाक, निरल, परल ।  
 अरसिक तत्० ( पु० ) अरसञ्ज, अविदग्ध ।  
 अरहट तत्० ( पु० ) तत्० अरघट्ट, रेटा, मानी का चरखा, पानी निकालने का एक प्रकार का यन्त्र ।  
 अरहर तत्० ( स्त्री० ) दाल, अन्नविशेष, तूर ।  
 अराजक तत्० ( पु० ) [ अ + राज + बुञ् ] राज-यून्य देश ।  
 अराति तत्० ( पु० ) शत्रु, रिपु, वैरी ।  
 अराधना तत्० ( क्रि० ) पूजना, सेवा करना, मन्त्र जपना ।  
 अरारा तत्० ( पु० ) ददोड़ा, दरदरा ।  
 अरि तत्० ( पु० ) शत्रु, वैरी, रिपु ।—मण्डल ( पु० ) शत्रु सङ्घ, शत्रु राज्य ।—पङ्कज ( पु० ) ह शत्रुओं का समुदाय, ह शत्रु ये हैं—काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह और मत्सर ।  
 अरिन्दम तत्० ( पु० ) [ अरि + दम + अल् ] शत्रुजयी, योधा, बली, शत्रुओं को दमन करने वाला ।  
 अरिष्ट तत्० ( पु० ) घृतिकान्ध, तक्र, विपाक, दुःख, मरण चिन्ह, उत्पत्ता, उपद्रव, वृषभासुर, इसी असुर को कंस ने श्रीकृष्णवन्द्य जी को मारने के लिये ब्रज में भेजा था । इसका विशाल शरीर तथा भयङ्कर शब्द सुनकर ब्रजवासी भयभीत हो गये । भगवान् कृष्ण ने इसका अन्तिम सत्कार किया ।  
 अरी तत्० स्त्री का सम्बोधन ।  
 अरु तत्० ( अ० ) फिर, पुनः, और, श्री ।  
 अरई तत्० ( स्त्री० ) गर्भवती स्त्री का चिन्ह ।  
 अरुचि तत्० ( स्त्री० ) रोगविशेष, भोजन के प्रति अभिलाषामाय, अनिच्छा, वितृष्णा, अश्रद्धा, जी मचलाना ।  
 अरभाना तत्० ( क्रि० ) फासना, फसाना, उलझाना ।  
 अरुण तत्० ( पु० ) अर्ध वृत्त, सूर्य, अथयत्त राग, ईष्यक्त यर्ष, सन्ध्या राग, शब्द रहित, कुम्भेद, सूर्य के सारथि का नाम, यह गरुड के ज्येष्ठ भ्राता थे, महर्षि करवप के औरस तथा चिन्ता के गर्भ

ने इनकी उत्पत्ति हुई थी, इनके पैर नहीं हैं, क्योंकि जब इनका शरीर गठित नहीं हुआ था, तभी इनको माता विनता ने अण्डे फोड़ दिये। इनकी स्त्री का नाम श्वेती था, सम्पाति और जटायु इनके दो पुत्र थे।—**शुभ्र** (५०) प्रातःकाल, विहान, प्रभात।—**कमल** (५०) रक्त कमल।—**लोचन** (५०) लालनेत्र, कपोल, कङ्कट, कोकिल।—**स्तारधि** (५०) सूर्य, मनु, दिवाकर।

**अरुणाई तद्गं** (स्त्री०) मोर, लाल रङ्ग।  
**अरुणतुण्ड तत्त्वं** (पुं०) [अरु + तुण्ड + त्वं] मर्मस्वदुः, मर्म पीड़क, पीड़ाकारो, नाशक, अघट्य।  
**अरुणधती तत्त्वं** (स्त्री०) वसिष्ठ मुनि की पत्नी, अति सूक्ष्म नक्षत्र विशेष, कई मं मुनि की कन्या, वसिष्ठ के समान इनको भी नक्षत्र मण्डल में स्थान मिला है, कहते हैं, मरने के छ महीने पहले वह नारा नहीं दीवता।

**अरूप तत्त्वं** (पुं०) कुरूप, कुस्मित रूप, कुम्भी।  
**अरे तद्गं** (शु०) नीच संशोधन, संकोच आह्वान।  
**अरेव तद्गं** (पुं०) पाप, अपराध, दोष।  
**अरोग तत्त्वं** (पुं०) रोग रहित, भया, चढ़ा।  
**अरौन्धक तत्त्वं** (पुं०) रोग विशेष, अघटि रोग।  
**अर्क तत्त्वं** (पुं०) सूर्य, आदित्य, इन्द्र, ताम्र, सूर्यकि, प्रहित, ज्येष्ठ धाता, रवियार, आकवृत्त।—**तनय** (पुं०) कर्णराज, मार्गर्षि, मनु, शनि, यम।—**वृत्त** (पुं०) आरोग्य, सुप्रमो का घन, सूर्य के जल ग्रहण के समान राजाओं का प्रजा के निकट कर ग्रहण।  
**अर्कट तद्गं** (स्त्री०) सूर्य, सावधानता।  
**अर्गनी तद्गं** (पुं०) कपड़ा फैलाने की तानी हुई रस्सी।

**अर्गजा तद्गं** ( देवी अर्गजा )  
**अर्गल तद्गं** (पुं०) खील, चागल, हुड़का, किषाई बन्द करने की लकड़ी।—**र** (स्त्री०) खोल, पुड़का, दुर्गा सप्तशती के पाठ के पहले पाठ किया जाने वाला एक स्तोत्र।

**अर्घ तद्गं** (पुं०) पूजा का द्रव्य, पूजा का उपहार, पूजा में जल देना, मोल।

**अर्घ्य तद्गं** (पुं०) दर्यानी, मेट, उपहार, उत्तम गृह में धावे हुए को जलादिदान।

**अर्घा तद्गं** (स्त्री०) अर्घ देने का पात्र, तर्पण का पा विशेष, जलहरी, जिसमें शिवलिङ्ग रहता है।

**अर्चक तद्गं** (पुं०) पूजक, धाजक, अर्चनाकारो।

**अर्चा या अर्चना तद्गं** (स्त्री०) पूजा, सेवा, आराधना, प्रतिमा, देवप्रति।

**अर्चिः तद्गं** (स्त्री०) अग्नि शिवा, चमक, शौच ज्योति।

**अर्चित तद्गं** (पुं०) पूजित, आराधित।

**अर्चिष्मान् तद्गं** (पुं०) [अर्चिष् + मन्] अग्नि, सूर्य (पुं०) दीप्तिमान, देदीप्यमान।

**अर्च्य तद्गं** (पुं०) पूजनीय, पूज्य।

**अर्जक तद्गं** (पुं०) उपार्जनकर्ता, अर्जयिता, कमाने वाला।

**अर्जन तद्गं** (पुं०) उपाजन कर्मादं, प्राप्ति, लाभ, प्रतिपत्ति, सञ्चय करण, लाभ करण।

**अर्जित तद्गं** (पुं०) अर्जित किया हुआ, सञ्चित, लब्ध।

**अर्जुन तद्गं** (पुं०) वृक्ष विशेष, तीसरा पाण्डव, देवराज इन्द्र के शोरस तथा कुन्ती के गर्भ में इनका जन्म हुआ था, यह पाण्डु के श्वेत पुत्र थे, उतदिनों इनके समान धनुर्विद्या विशारद दूसरा नहीं था, साक्षात् भगवान् इनके शारथी थे, महादेव की आराधन करने से इन्हें पाण्डुपतात्र प्रप्त हुआ था, अस्त्रविद्या सीखने के लिये यह स्वर्ग में इन्द्र के निकट गये थे, अघना मनोरथ भङ्ग होने के कारण उर्वशी ने इन्हें नपुंसक होजाने का शाप दिया था, जिसका उपयोग अज्ञात याव के समय विराट राजधानी में इन्होंने किया था, अर्जुन की तीन स्त्रियाँ थीं, द्रौपदी, सुमद्रा, और चित्राङ्गदा, इनके अतिरिक्त कौरव्य नाम की कन्या उष्यी को भी इन्होंने ध्याहा था।

**अर्थांच तद्गं** (पुं०) समुद्र, सागर, अग्नि।—**पीत** (पुं०) जहाज, पृहत् नौका, समुद्रयान।—**थान** (पुं०) जहाज।



अर्थ तत्० (पु०) अभिप्राय, तात्पर्य, धन, शब्द का बोध्य ।—झ (पु०) भाय ३, मर्मव ।—झान (पु०) तात्पर्य, बोध ।—तः (अ०) फलतः अर्थात् वस्तुतः ।—दूषण (पु०) अपरिमित ढग्य ।—नाश (पु०) धननाश, निराश ।—पति (पु०) राजा कुवेर, अतिधनी ।—पर (पु०) कृपण, शय, गङ्कित ।—प्रयोग (पु०) वृद्धि निमित्त धन दान ।—प्राप्ति (स्त्री०) धनलाभ, लाभ ।—वत्त्व (पु०) प्रयोजनार्हता, प्रयोजनीयता ।—चाद (पु०) काष्णनिक, फलश्रुति, स्तुति, प्रशंसा, प्ररोचक वाक्य ।—विज्ञान (पु०) शब्दार्थज्ञान ।—वृद्धि (स्त्री०) धन वर्धन ।—शाली (पु०) धनशाली, धनवाद् ।—शास्त्र (पु०) नीति शास्त्र, दण्ड, नीति, धन उपाजक, शास्त्र ।

अर्थान् तत्० (अ०) वस्तुतः, अर्थतः, फलतः ।

अर्थान्तर तत्० (पु०) अन्यार्थ, दूसरा अर्थ।—न्यास (पु०) अर्थोत्तर विधेय, यथा—

“हृद्द मामान्यते विधेय होय,  
भूयन अर्थान्तर न्यास तोय”

अर्थो तत्० (पु०) धनी, याचक, धारी, मुरदे की छाट, रथो ।

अर्थाया तत्० (पु०) मोटा आटा, दलिया ।

अर्द्धित तत्० (पु०) [अर्द्ध + ण] पीड़ित, यन्त्रणा-युक्त, हिंसित, याचित, यत ।

अर्द्ध तत्० (पु०) मुख्य विभाग, सम विभाग, आधा मध्य ।—चन्द्र (पु०) चन्द्रलक्षण, चहुँन्दु, नल-जत, गलहस्त, महर पुच्छस्थ चन्द्रमा ।—नारीश (पु०) सिध, महादेव, हरमोदि, मुक्ति विधेय ।

—निमेष (पु०) आधा छण ।—रथ (पु०) एक रथी में नभून योद्धा, चहुँरथी ।—रात्र (पु०) महानिशा, रात्रि का चहुँभाग, आधीरात ।

—रिश (पु०) चहुँभाग ।—रङ्ग (पु०) रंग, फलत्र, —भार्या, शोताङ्ग, रोग विधेय, पक्षाघात ।

अर्पण तत्० (पु०) दान, समर्पण, भेंट ।

अर्प तत्० (पु०) दणकोदि, सगया विधेय ।—रथ चगलगात् ।

अर्थात् तत्० (पु०) मात्र, पूर्व, आदि, अय, अवर, निरुद्ध पद्यात् ।

अर्वाचोन तत्० (पु०) वृत्तन, अज्ञान, विरुद्ध ।

अर्दुद तत्० (पु०) दय करोड़ संख्या विधेय, रोग विशेष, पर्वत विधेय, आहू पर्वत ।

अर्मक तत्० (पु०) बालक, शिशु, शायक, मूर्ख, कृप कुशतृण, म्बल्प, मद्दश ।

अर्ममा तत्० (पु०) आदित्य, सूर्य, अर्मवृक्ष, नित्य, चितर विधेय ।

अर्मरा तत्० (पु०) एकही समय गिरना, अकस्मात् गिरना ।

अर्मराना तत्० (स्त्री०) एक बेर आ पड़ना ।

अर्मश तत्० (पु०) पीड़ा, बयासीर, रोग विशेष ।

अर्मशर्श तत्० (पु०) बुधा वृत्त, अगुह ।

अर्ह तत्० (पु०) योग्य, उत्तम वात्र, श्रेष्ठ, उद्युक्त ।

अर्हन्त तत्० (पु०) जैन विशेष, जैनियों के एक तीर्थ-ङ्कर का नाम ।

अल तत्० (अ०) भ्रूषण, पर्याप्ति, वारण, निरर्थक, घृषा, शक्ति, निरर्थक ।

अलक तत्० (पु०) चूंगुर, चुटिया, केय, घूघराले बाल ।

अलका तत्० (स्त्री०) कुवेरपुत्री ।—धिप (पु०) कुवेर, धनेरवर ।

अलकावलीतत्० (स्त्री०) देशों, चूंगुराले बाल ।

अलक्षण तत्० (पु०) बुरे चिन्ह, कुलक्षण ।

अलख तत्० (पु०) अगोचर, अन्देखा ।

अलग तत्० (अ०) भिन्न, न्यारा, पृथक् ।

अलगनी तत्० (स्त्री०) ( देखो अगनी )

अलङ्कार तत्० (पु०) भ्रूषण, आभरण ।—हीन (पु०) भ्रूषण रहित, अशोभित ।

अलङ्कृत तत्० (पु०) भूषित, शोभित, सजाया ।

अलङ्ग तत्० (पु०) पार, खोर, छोर, एक तरफ ।

अलडबलड तत्० (स्त्री०) गड, चक्रक, निर्मुक्ति, अडबलडियन ।

अलतनी तत्० (स्त्री०) हाथी का चागहोर ।

अलता तत्० (पु०) आलता, लाय का रंग ।

अलथेला तत्० (पु०) शैना निरुद्ध, शैल खड्गता ।

अलम् तत्० (अ०) पूर्णता, सामर्थ्य, निवेध, निर-र्थक, बहुत, बम, मनुष्य, मीढ़ ।

अलस तत्० ( पु० ) आलसी, मन्द, ढोला, आलस्य-  
युक्त, कर्मों में अतृप्ताही ।—ता ( स्त्री० ) आलस्य,  
शैथिल्य ।

अलसाना ( क्रि० ) ऊँघना, झूमना, हिलना ।

अलसी तद्० ( स्त्री० ) तीसी, प्रसीना ।

अलान तद्० ( पु० ) हस्तियन्धन, हाथीयौधने की  
रस्सी, सिक्कड़ ।

अलाप तद्० ( पु० ) आलाप, स्वर, राग ।

अलाय तद्० धूनी, जूषीरा ।

अलि तद्० ( पु० ) भँवरा, धमर, मदिरा, सखी ।  
—नि ( स्त्री० ) धमरी ।

अलीक तद्० ( पु० ) झूठ, मिथ्या, असार ।

अलीन तद्० ( पु० ) अयोग्य, अनन्ययोगी ।

अलेख तद्० ( पु० ) लिखने के अयोग्य ।

अलैक-पलया ( पु० ) आशुिक प्रलाय, झूठ बोलना,  
मनमाना, बकवाद ।

अलैया-बलैया तद्० ( स्त्री० ) निहाय, शैश ।

अलोकन तद्० ( पु० ) ग्रम होना, अदृश्यता, चम्पत  
होना ।

अलोणा तद्० ( पु० ) अमुना, बिना नोन, स्वाद-  
रहित ।

अलोप तद्० ( पु० ) द्विपा, चिगाड़, प्रकट ।

अलोल तद्० ( स्त्री० ) चञ्चल नहीं, अटल, खेल  
झूद ।

अलौकिक तद्० ( पु० ) अनोखा, अद्भुत, सर्वमुन्दर,  
सर्वश्रेष्ठ ।

अल्प तद्० ( पु० ) थोड़ा, कुछ, छोटा, किञ्चित्,  
लघु ।—बुद्धि ( पु० ) मन्द बुद्धि असमक ।—।यु  
( पु० ) अल्पजीवी, शीघ्र मरने वाला ।—।हार  
( पु० ) थोड़ा खाना, अल्प अहार ।

अल्हड तद्० ( पु० ) अनाड़ी, अनसीखा, अनुभव-  
रहित ।

अव तद्० ( उप० ) विरोध, निवृत्त, अमाकल्प, अना-  
दर, आलम्बन, विज्ञान, व्यायन, बुद्धि, अल्प,  
परिभव, नियोग, पामन, यह जिस शब्द के पहले  
आता है उस शब्द का अर्थ कभी प्रकरण के अनु-  
सार, भेद, व्यापकता, अभाव और अनादर होता है ।

अवकथन तद्० ( पु० ) [ अव + कथ् + अन्ट ] स्तुति,  
उपासना, प्रसादकथाव्य ।

अवकर्तन तद्० ( पु० ) [ अव + कृत + अन्ट ] घृत  
बनाने का यन्त्र, चरखा ।

अवकर्षण तद्० ( पु० ) [ अव + कृप् + अन्ट ] उहार,  
निष्कर्षण, बाहर खींचना ।

अवकाश तद्० ( पु० ) [ अव + काश + अल् ] अवसर,  
समय, विश्रामकाल, सुधीहता, छुट्टी का समय ।

अवकीर्ण तद्० ( पु० ) [ अव + कृ + ण् ] विचित्र,  
अनादून, अंधर उधर फैलाया हुआ, बिखेरा गया ।

अवकीर्णी तद्० ( पु० ) [ अव + कृ + ण् + इत् ] अत-  
व्रत, नियमभ्रष्ट व्रत, निषिद्ध वस्तुओं के संघर्ष से  
निष्का व्रत भङ्ग हो गया हो, अयोग्य वस्तुसेवी  
मनुष्य ।

अवकुञ्चन तद्० ( पु० ) [ अव + कुच् + अन्ट ] धक्की-  
करण, टेढ़ा करना, मोड़ना ।

अवकुण्ठन तद्० ( पु० ) [ अव + कुठ + अन्ट ] सांभन  
परित्याग, भौक होना, असाहसी होना ।

अवकुण्ठल तद्० ( पु० ) [ अव + कुठ + इत् ] असा-  
हसी, भौक ।

अवक्तव्य तद्० ( पु० ) [ अव + वच् + तव्य ] अवक्तव्य,  
कथन के अवयोग्य ।

अवकेशी तद्० ( पु० ) बाँक, बन्ध्या, निष्पुत्र, पुत्र-  
हीन, सन्तान रहित ।

अवक्रन्दन तद्० ( पु० ) [ अव + क्रन्द + अन्ट ] घूष  
जोर से क्रन्दन, विज्ञा विज्ञा कर रोना ।

अवक्रुष्ट तद्० ( पु० ) [ अव + क्रुश् + ण् ] भर्त्सित,  
निन्दित, मत्प्रवर्णित, कुयब्ध युक्त, गाली दिया  
हुआ ।

अवखण्डन तद्० ( पु० ) [ अव + खण्ड + अन्ट ] खनन,  
खोदना ।

अवगत तद्० ( पु० ) [ अव + गम् + ण् ] ज्ञान, परि-  
चित, विदित ।

अवगति तद्० ( स्त्री० ) [ अव + गम् + ति ] ज्ञान  
बोध, विज्ञता, गमन ।

अवगाढ तद्० ( पु० ) [ अव + गाह + ण् ] निमज्जित,  
कृतस्नान ।



अवगाहन तत्० (गु०) [अध + गाह + अनट्] स्नान-  
करण, निमज्जन, डुबकी, गोता, अयाह, अति गहरा,  
जितका नीचे का तल मालूम न हो सके, अनन्त ।

अवगीत तत्० (गु०) निन्दा, दोषदुष्ट, अति निन्दित,  
विशेष लाञ्छित ।

अवगुण तद्० (गु०) अवगुण, दोष, खोट, औगुण,  
निन्दित गुण, दुर्गुण ।

अवगूहन तत्० (गु०) [अध + गूह + अनट्] आलिङ्गन,  
आस्तेय, प्रेम से परस्पर अङ्ग संस्पर्श ।

अवग्रह तत्० (गु०) अनावृष्टि, बहुकाल अवर्षण,  
ग्रहण, अवहरण, प्रतिबन्धक, हाथी का मस्तक,  
हाथियों का भुशुह, स्वभाव, ज्ञानविशेष, शाय ।

अवघट तद्० औचट (गु०) कुघाट, अड़बड़, ऊँचा  
खाला, टूटा फूटा ।

अवघात तत्० (गु०) [अध + हत् + चञ्] अघघात  
अपमृत्यु ।

अवचर तद्० अचेर (गु०) एक दृष्टि, औषक, अघान-  
चक, एकशरणी, चपकुलश ।

अवचेष्टा तत्० (स्त्री०) [अध + चेष्टा] मन्दचेष्टा,  
अनाड़ीपना ।

अवच्छिन्न तत्० (गु०) सीमाबद्ध, अधधि सहित,  
युक्त ।

अवज्ञा तत्० (स्त्री०) अनादर, अपमान, उपेक्षा,  
अमान्यकरण, अधहेला ।

अवज्ञात तत्० (गु०) उपेक्षित, अनादृत, अपमानित ।

अव्यंज तद्० (अ०) औंटा कर, खोलाकर, गर्त, गहर,  
खिन्न, नटवृत्ति से जीवन करने वाला ।

अवडेरि तद्० (अ०) बहकाय, धोखा देकर, यथा  
चोपाई "पञ्च कड़े शिखरि सती विवाही ।  
पुनि अवडेरि मरादनि ताही" ॥—रामायण ।

अवदर तद्० (गु०) नीच पर भी टलने वा दया  
करने वाला, बिना विचारे दया करने वाला ।

अवदंस तत्० (गु०) कर्णभूषण, कर्णालङ्कार, बूझा-  
मणि, मुकुट ।

अवतरण तत्० (गु०) [अध + तृ + अनट्] नमना  
अवरोहण, अवतार, उतरना, भाषान्तर, अनुवाद

करना (स्त्री०) अवतरणिका, आभास, सुमिका,  
वक्त्रव्य विषय की सूचना ।

अवतरना (क्रि०) नीचे उतरना, प्रकट होना, प्रकाश  
पाना ।

अवतार तत्० (गु०) [अध + तृ + चञ्] देहान्तर  
धारण, मनुष्य रूप में देवता का प्रकाशित होना ।  
भगवान् का लीलार्थ प्राकृत्य । भगवान् के चौबीस  
अवतार हैं, जिनमें प्रधान दश गिने जाते हैं । दस  
अवतार ये हैं । मन्थव, कल्हव, वाराह, नरसिंह,  
वामन, परशुराम, श्रीरामचन्द्र, श्रीकृष्ण, बौद्ध  
और कल्की ।

अवतीर्ण तत्० (गु०) [अध + तृ + क्त] अवगुह, आ-  
विभूत, उपस्थित, उत्तीर्ण, जन्मा हुआ, उत्पन्न,  
अवतार लिया हुआ, अवतीर्ण ।

अवदात तत्० (गु०) [अध + दा + क्त] युध, श्वेत,  
गौर, स्वच्छ ।

अवदान तत्० (गु०) [अध + दा + अनट्] त्याग,  
उत्सर्ग, निवेदन, कुत्सित दान, यध, मार डालना,  
पराक्रम उल्लङ्घन ।

अवदोच तद्० (गु०) गुजराती ब्राह्मणों की एक  
शाखा विशेष, उत्तर भारत के रहने वाले ब्राह्मण  
जो गुजरात में रहने लगे वे ओदीच्य या अवदीच  
कहे जाते हैं ।

अवद्व तत्० (गु०) [अध + वध + क्त] बन्धन शून्य,  
अनियन्त्रित ।—मुख (गु०) अप्रियवादी, दुर्मुख,  
मुखर ।

अवद्य तत्० (गु०) [अध + यद + य] अधम, निन्द-  
नीय, अकट्य, अनिष्ट ।

अवद्योत तत्० (गु०) [अध + व्युत् + चञ्] ईषदुश्चल,  
किञ्चिद्दीप्त, अल्प प्रकाश, संस्कृत धराकरण का एक  
ग्रन्थविशेष ।

अवध तद्० (स्त्री०) वचन, मोमा, सीध, समय, अयो-  
ध्यापुरी, अधध प्रदेश ।

अवधान तत्० (गु०) [अध + धा + अनट्] मनोयोग,  
मनःसंयोजन, चौकसाई, सावधानी ।

अवधारण तत्० (गु०) [अध + धृ + गिह् + अनट्]  
निष्पद्य, निर्णय, स्थिर करना ।

अवधारी तत्० ( क्रि० वि० ) निश्चय किया गया, सोचा गया ।

अवधि तत्० (पु०) [अव + धी + क्रि] पर्यन्त, सीमा, छेद, मे, तक, तौ ।

अवधीर्य तत्० (अ०) [अव + धृ + र्यप्] विचार कर, सोच कर, अपमानित कर ।

अवधूत तत्० [अव + धू + क्त] कम्पित, कम्पायमान, परिवर्जित, परिष्कृत । (पु०) उदामीन, योगी, संन्यासी, गुरु दत्तात्रेय के समान साधु विशेष, वर्ष और आश्रमोचित धर्मों को छोड़ कर केवल आत्मा को देखने वाले योगी अवधूत कहे जाते हैं । (स्त्री०) अवधूतानी ।

अवध्य तत्० (गु०) [अ + यध् + य] वध के अपोव्य, जिसको प्राणदण्ड नहीं दिया जासके ।

अवधत तत्० (गु०) [अव + धी + क्त] नम, विनीत, अधःपतित, दुर्दशा ग्रस्त ।

अवधति तत्० (स्त्री०) [अव + धी + क्त] विनय, नमता, अधःपात, दुर्दशा ।

अवधि तत्० (स्त्री०) पृथिवी, रक्षण, पालन ।—भू (पु०) [अवधि + ध + क्तिप्] मङ्गल ग्रह, भीम ।

अवधी तत्० (स्त्री०) पृथिवी, मेदिनी, भूमि ।  
—कुमारी (स्त्री०) सोता, मिथिलेश राजा जनक यज्ञ करने के अर्थ हल से पृथिवी जोतते थे । वही एक घड़ा निकला, उसी घड़े से जानकी जी उत्पन्न हुईं हैं ।—पति (पु०) भूपति, राजा ।—पृथ्वी तद्० (स्त्री०) रानी, राजा को पत्नी, राजा को स्त्री । अवधिप तद्० रमणी ।

अवधेज्ज तत्० (पु०) धीतकरण, मार्जन ।

अवधन्ति तत्० (स्त्री०) देश विशेष का नाम, यह नर्मदा की उत्तर ओर बसा हुआ है, इसकी राजधानी उज्जयिनी थी, जिसे अवन्तीपुरी भी कहते थे, इसका दूसरा नाम विशाला है, यह सिन्धु नदी के तौर पर है । यह देश मालवा का पश्चिमी हिस्सा है । महाभारत के समय यह देश दक्षिण की ओर नर्मदा तक, और पश्चिम की ओर माही नदी तक विस्तृत था । यही प्रसिद्ध महाराजा विक्रमादित्य की राजधानी थी ।

अवधन्त तत्० (गु०) अप्रुज्य, अवन्दनीय, प्रणाम के अयोग्य ।

अवधन्त्य तत्० (गु०) सकल, फलवाह ।

अवभास तत्० (पु०) [अव + भास + क्त] प्रकाश करण, प्रकाशन, माया, प्रयत्न ।

अवभृथ तत्० (पु०) व्रत वज्र आदि की उमाग्नि का स्नान, यज्ञ वेद, श्रोत्र आदि से लिप्त होकर कुटुम्ब परिवर्जन सहित स्नान को अवभृथ स्नान कहते हैं ।

अवम तत्० (पु०) तिथि का त्रय, नीच, तीन तिथि जिस दिन में हों ।

अवमत तत्० (गु०) [अव + मत् + क्त] अवज्ञात, अपमानित, तिरस्कृत ।

अवमर्षण तत्० (पु०) [अव + मृष् + अनट्] अवमर्ष, अपहय, परिहय, लोप ।

अवमान तत्० (पु०) [अव + मा + चनट्] अपमान, अवमानना, अवयश, दुर्नाम ।

अवमानना तत्० (स्त्री०) अनादर, अपमान ।

अवमानित तत्० (गु०) [अव + मत् + क्त] अपमान ग्रस्त, असम्मानित ।

अवमूर्ख तत्० (पु०) [अव + मूर्ह् + क्त] अधःगिर, अधोमस्तक ।

अवयव तत्० (पु०) [अव + व + क्त] अङ्ग, देह, शरीर, हस्त, पाद आदि भाग, एक देश—पी (गु०) [अव + व + ईत्] अङ्गी, अङ्ग सहित, हस्तपाद, विगिह, समस्त ।

अवर तत्० (गु०) कनिष्ठ, अग्र्येष्ठ, मन्द, चुद्र, वरम ।

—ज (पु०) कनिष्ठ भ्राता, चुद्र, युद्र ।—जा (स्त्री०) कनिष्ठ, भगिनी, छोटी बहिन ।

अवराधक तत्० (पु०) उपासक, सेवक, ध्यानी, सेवा करने वाला, दास ।

अवराधना तद्० (क्रि०) सेवना, सेवा, सेवा करना ।

अवराधे तद्० सेवा की, उपासना की, चाराधना की, सेवा किये, उपासना किये ।

अवयव तत्० (गु०) [अव + वृष् + क्त] अटकाया गया, रोका हुआ ।

अवरेख तद्० (खी०) लेख, लकीर, प्रतिज्ञा ।  
 अवरोध तद्० (पु०) रोक, अटक, रणवास, अन्तःपुर  
 राजस्त्रीगृह, राजगृह, राजदारा ।  
 अवर्ण तद्० (पु०) अ अक्षर, अकार, निन्दा,  
 परिवाद ।  
 अवर्त तद्० (पु०) पानी का चक्कर, भ्रमर ।  
 अवर्तमान् तद्० (गु०) अभाव, अनुपस्थित, मृत ।  
 अवल तद्० (गु०) दुर्बल, क्षीण, अवका, (पु०) धरुण  
 वृत्त ।  
 अवलम्ब तद्० (पु०) [अव + लम्ब् + अल्] आश्रय,  
 शरण, आसरा, आधार ।  
 अवलम्बन तद्० (पु०) [अव + लभ् + अनट्] आश्रय,  
 ठेस ।—नीय (गु०) आश्रयणीय, अवलम्बन करने के  
 योग्य ।  
 अवलम्बित तद्० (गु०) आश्रित, लटकता, निर्भर ।  
 अवली तद्० (खी०) पौंति, पंक्ति, लकीर ।  
 अवलेह तद्० (पु०) चटनी, चाटने वाली कोई चीज़,  
 चाटने वाली कोई औषधी, भोज्य विशेष ।—न  
 (गु०) जिह्वा से आस्वादन, चीखना ।  
 अवलोकन तद्० (पु०) दर्शन, दृष्टि, ईक्षण, दृष्टि  
 देना ।  
 अवलोक्य तद्० देख, देखे, देखिये, दृष्टि कीजिये,  
 यह शब्द यद्यपि संस्कृत की क्रिया है तथापि इसका  
 बहुतायत से प्रयोग रामायण में मिलता है ।  
 अवश तद्० (गु०) अवाध्य, अनायत, अनधीन, परा-  
 धीन, बलहीन, असमर्थ ।  
 अवशिष्ट तद्० (गु०) अवशेष, शेष, उद्भूत, बाकी  
 उच्छिष्ट ।  
 अवशेष तद्० (पु०) अन्त, शेष, बाकी ।—न्ति (गु०)  
 बाकी बचा हुआ, जो बच रहा ।  
 अवश्य तद्० (अ०) निश्चय करके, निस्सन्देह, निश्चित,  
 उचित, कर्तव्य, सर्वथा कर्तव्य, नितान्त निश्चित ।  
 —म्मावी (गु०) [अवश्य + भू + णिनि] निस्सन्देह,  
 होने के योग्य, एकान्त भावी ।  
 अवसर तद्० (पु०) अवकाश, समय, विराम, निश्राम,  
 प्रस्ताव, मन्त्रविशेष, वर्षण, वत्सर, क्षण ।

अवसन्न तद्० (गु०) अन्त, क्लान्त, जड़ोद्भूत, गिरा  
 हुआ, यका हुआ, उदास ।  
 अवसान तद्० (पु०) अन्त, शेष, ममामि, मृत्यु,  
 सीमा ।  
 अवसि तद्० (अ०) (देखो अवश्य)  
 "अवसि देखिये, देखन योग्य ।"  
 अवसेरि तद्० देर, विलम्ब, उत्कण्ठा, चाह,  
 आशा ।  
 अवस्था तद्० (खी०) [अव + स्था + अ] दशा,  
 गति, समय, दुर्दशा ।—त्रय (पु०) जाग्रत, स्वप्न  
 और सुषुप्ति ये तीन अवस्था हैं ।  
 अवस्थाता तद्० (पु०) अवस्थानकारी, अधिष्ठाता ।  
 अवस्थान तद्० (पु०) [अवस्था + अनट्] स्थिति,  
 यास ।  
 अवस्थान्तर तद्० (पु०) [अवस्था + अन्तर] दूसरी  
 अवस्था, अन्य दशा ।  
 अवस्थापन तद्० (पु०) [अव + स्था + णिच् + अ-  
 नट्] स्थापित करना ।  
 अवस्थित तद्० (गु०) [अव + स्था + क्त] स्थिरी-  
 भूत, कृतावस्थान ।  
 अवहित तद्० (गु०) [अव + धा + क्त] विज्ञात,  
 अवधान, गत ।  
 अवहित्या तद्० (खी०) [अ + वहिच् + स्था +  
 क्तिप्] अज्ञान, चालाकी से अपने को छिपाना ।  
 अवहेला तद्० (खी०) अनादर, अश्रद्धा, अयत्ना ।  
 अवाई तद्० (खी०) नगवाई, नगीच, पास ।  
 अवाक् तद्० (गु०) [अ + वक् + णिच्] स्तब्ध,  
 वाक्यरहित ।  
 अवाङ्मुख तद्० (गु०) [अवाक् + मुख] अधोमुख  
 नत, लज्जित ।  
 अवाच्य तद्० (गु०) अकथ्य, मौनी, गुपचुप, कहने के  
 अयोग्य ।  
 अवची तद्० (खी०) [अवाच् + ई] दक्षिण दिशा ।  
 अवाध्य तद्० (गु०) अतर्क्य, विनाविधा (देखो  
 अवाधी) ।

अघाधी तद्० (गु०) बाधाहीन, दुःख रहित, सुख-  
रूप, सुखदाई ।  
अघां तद्० (गु०) औंवा, पजावा, जिसमें कुम्हार मिट्टी  
के बर्तन पकाते हैं ।  
अघोर तद्० (स्रो०) विलम्ब, अत्याचार ।  
अचिकल तद्० (गु०) ज्यों का त्यों, वैसाही, समस्त,  
घुटि रहित, यथार्थ ।  
अचिकल्प तद्० (गु०) असंशय, निस्सन्देह।—त  
(गु०) सन्देह रहित, असंशय ।  
अचिकार तद्० (गु०) विकृति शून्य, अचिकल, जन्म  
मरणादि विकार शून्य, अज, अविनाशी, ईश्वर,  
अचिकारी ।  
अचिचल तद्० (गु०) अचल, स्थावर, स्थिर, भय  
शून्य, विघ्नरूप, निरर।—त (गु०) स्थिर,  
दृढ़, निश्चित ।  
अचिचर तद्० (गु०) अत्याचार, अन्याय, भूल,  
अधर्म।—त (गु०) अविधेयित, अकृत-  
विचार।—ती (गु०) विचार-रहित, अन्यायकारक,  
अविचक्षण ।  
अचिच्छन्न तद्० (गु०) अभिन्न, संलग्न, युक्त, भेद-  
रहित ।  
अचिञ्ज तद्० (गु०) अप्रयोग, अनभिज्ञ।—ता (स्रो०)  
अनैतुष्य, अप्रयोगता ।  
अचित्त तद्० (गु०) विस्तार-रहित, अविस्तृत,  
संकुचित ।  
अचित्तथ तद्० (गु०) सत्य, यथार्थ (गु०) सत्यवान्,  
यथार्थ विशिष्ट ।  
अचिदग्ध तद्० (गु०) [ अ + वि + दृ + क ] अप-  
विदित, अचतुर, अनभिज्ञ।—ता (स्रो०) अया-  
विदित्य, अनियुणता ।  
अचिद्वित तद्० (गु०) अज्ञात, अनवगत, बेमाश्रुम ।  
अचिद्य तद्० (गु०) [ अ + विद्य ] मूर्ख, अनभिज्ञ, विद्या-  
रहित ।  
अचिद्यमान् तद्० (गु०) अत्रर्नमान, अभाय, अघता ।  
अचिद्या तद्० (स्रो०) अज्ञान, माया, अज्ञानता,  
। मूर्खता, मोह ।  
अचिनय तद्० (गु०) नश्वता-रहित, पृथता, दिडाई ।

अचिनाली तद्० (गु०) नित्य, सर्वदा रहने वाला,  
जिसका कभी नाश न हो, नाश रहित, परमात्मा,  
तद्० अचिनाली ।  
अचिनीति तद्० (गु०) अन्यायी, ढीठ, चञ्चल,  
उच्छ्रूल ।  
अचिमुक्त तद्० (गु०) अठपक, मोक्ष मुक्ति (गु०)  
काशी ।  
अचिरल तद्० (गु०) निरन्तर, सघन, अविच्छन्न,  
निघट् ।  
अचिरोध तद्० (गु०) सुख, चैन, मिलाप, प्रीति,  
द्वेष का अभाय, एकता।—ती (गु०) मित्रापी,  
धीर, शान्त (स्रो०)।—ती नी ।  
अचिलम्ब तद्० (गु०) शीघ्र, गुरन्त, फट पट ।  
अचिवादी तद्० (गु०) मेली, सहज स्वभाव का, शान्त,  
भगडा न करने वाला ।  
अचिविक तद्० (गु०) विचार हीन, सुखपन, विवेक  
शून्यता।—ती (गु०) अज्ञानी, मूर्ख, नहीं विचारने  
वाला ।  
अचिशेष तद्० (गु०) सामान्य, मुख्य, सदृश, विशेषता-  
रहित ।  
अचिश्वास तद्० (गु०) विश्वास शून्य, अप्रतीति,  
प्रतीति हीन ।  
अचिर तद्० (स्रो०) विलम्ब, अघार, देरी, अधिक  
समय ।  
अच्युक्त तद्० (गु०) [ अवि + च्यु + क ] अस्फुट,  
अप्रकाशित। (गु०) विष्णु, शिव, कन्दर्प, मूर्ख, प्रकृति  
आत्मा महदादि, परमात्मा, क्रिया रहित।—राग  
(गु०) ईषत् लोहित वर्ण ।  
अच्युप्र तद्० (गु०) घयड़ाहट रहित, चनाकुल ।  
अच्यय तद्० (गु०) शब्द विशेष, जो सर्वदा एक समान  
रहते हैं यथा—शौर, अथवा, कि, पुनः आदि,  
विष्णु, परमेश्वर (गु०) नाश रहित, कृपण ।  
अध्यवस्था तद्० (स्रो०) अव्यमति, अनरीति,  
अविधि, शास्त्र विरुद्ध व्यवस्था ।  
अध्यवस्थित तद्० (गु०) नीति आदि श.स्रो की  
। व्यवस्था से अनभिज्ञ, अस्थिर चित्त, सिद्धान्त  
रहित ।

अव्ययवहार्य तत्० (गु०) व्यवहार के अयोग्य, जाति-  
भ्रष्ट ।

अव्ययवहित तत्० (गु०) व्यवधान रहित, संसक्त,  
सन्निकट, अव्यन्त समीप ।

अव्याप्ति तत्० (स्त्री०) अप्राप्ति, अकैवला, न्याय के  
मत से लक्षण सम्बन्धी एक प्रकार का दोष, लक्ष्य  
के एक देश में लक्षण का नहीं जाना अव्याप्ति है ।  
यथा—शिला सूत्र विशिष्ट ब्राह्मण है, शिला सूत्र  
का रहना ब्राह्मण का लक्षण है, सन्यासी ब्राह्मण  
है, पान्थु यह शिला सूत्र रहित है, अतएव पूर्वोक्त  
ब्राह्मण का लक्षण संन्यासी में अव्याप्त हुआ,  
अथवा अग्नि का लक्षण किया गया कि उष्णस्पर्श-  
वाङ् धूम विशिष्ट अग्नि है, तोड़े के मोले में अग्नि  
है परन्तु उसमें धूम नहीं है अतएव पूर्वोक्त अग्नि  
का लक्षण अव्याप्त हुआ, इसीको अव्याप्ति  
कहते हैं ।

अव्याहृत तत्० (पु०) बेरोक, अथरोध रहित, आशा-  
यात् ।

अशकुन तत्० (पु०) बुरे सगुन, अपसगुन, अशगुन,  
भावी के लिये बुरे चिन्ह ।

अशक्त तत्० (गु०) शक्ति रहित, अममय, निर्बल ।  
—ता (स्त्री०) [अशक्त + ता] अक्षमता, अपार-  
गता, शक्ति हीनता ।— (स्त्री०) शक्ति-हीनता  
चीनता ।

अशक्त तत्० (गु०) असाध्य, शक्ति के अगम्य,  
शब्द रहित, असम्भव ।—ता (स्त्री०) असाध्य,  
साध्यातिरिक्त ।

अशङ्क तत्० (गु०) शङ्का रहित, निश्चिन्त, निर्भय,  
निडर, निर्विघ्न ।

अशान तत्० (पु०) [अशु + अशन्] भोजन, भक्षण, अभ्य-  
वहार, अन्न, आहार ।—आच्छादन (पु०) [अशान  
+ आच्छादन] अन्न बख, रोटी कपड़ा ।

अशानि तत्० (पु०) [अशान + ई] विद्युत् यज्ञ, इन्द्र  
का शब्द ।

अशाम तत्० (पु०) लुब्ध, विकृष्य, अशान्ति ।  
अशाम्बल तत्० (गु०) अर्धहीन, मार्ग व्यय शून्य,  
पापेय हीन ।

अशाम्य तत्० (गु०) विराम योग्य, अविश्रान्ति,  
विश्रामाभाव ।

अशरण तत्० (गु०) निराश्रय, रक्षाहीन, निरालम्ब ।

अशरीर तत्० (पु०) कन्दर्प, काम, मदन, (गु०)  
शरीर रहित ।

अशान्त तत्० (गु०) अशिष्ट, दुरन्त, अधीर, अव्यगुह,  
भावित ।—ता (स्त्री०) अशिष्टता, दोषालम्ब्य, घ-  
टाहट ।— (स्त्री०) उत्पन्न, दोषालम्ब्य, असुखी ।  
अशासित तत्० (गु०) अकृत शासन, शासन रहित ।  
अशावरी या असावरी तत्० (स्त्री०) रागिनी विशेष ।  
अशास्त्र तत्० (गु०) शास्त्र विकृत, अवैध, विधिहीन ।  
—ीय (गु०) वेद विकृत, अवैध ।

अशिक्षित तत्० (गु०) अनसीखा, मूर्ख, शिला  
वर्जित, असभ्य, अप्राप्त शिक्षा, अपण्डित, अनभिज्ञ ।

अशित तत्० (गु०) [अश् + क्त] भुक्त, खादित,  
वृत्त ।

अशिव तत्० (गु०) अमङ्गल, अशुभ ।

अशिर तत्० (पु०) [अश् + इर] हीरक, हीरा,  
(पु०) अग्नि, राक्षस, सूर्य ।

अशिरस्क तत्० (गु०) मन्तक हीन, कथन्ध ।

अशिशिर तत्० (गु०) अशीतल, शीघ्र, उष्ण ।

अशिश्विका तत्० (स्त्री०) [अशिशु + इक् + आ]  
अनपत्या, पुत्र कन्याहीना स्त्री ।

अशिष्ट तत्० (गु०) दुरन्त, प्रगल्भ, असभ्य, दमंग,  
मूर्ख ।—ता (स्त्री०) दुरन्तता, असभ्यता ।

अशुचि तत्० (गु०) अशुद्ध, अपवित्र, अशौच ।

अशुद्ध तत्० (गु०) ठीक नहीं, अपवित्र, अकृत  
शोधन, अशरिष्कृत, अशुचि, भ्रूतवृत्त, त्रुटि सहित,  
अशौच युक्त ।— (स्त्री०) अशुद्ध, अशोधन,  
भ्रूत, अशौच ।

अशुभ तत्० (गु०) [अ + शुभ] अमङ्गल, पाप, बुरा ।

—चिन्ता (स्त्री०) अनिष्ट सोचना, बुरा चिन्तन ।

—दर्शन (पु०) अमङ्गल दर्शन, मन्द लक्षण ।

अशून्य-शयनयुत तत्० (गु०) युत विशेष, आषण  
कृष्ण द्वितीया को यह युत किया जाता है ।

अशेष तत्० (पु०) शेषहीन, नि.शेष, समग्र, सर्व ।

—ज्ञ (गु०) [अशेष + ज्ञा + ङ] सर्वज्ञ, सर्ववित्,

सब जाननेवाला ।—तः (अ०) [अशेष+तन्] सत्र प्रकार से, अनेक रूप से ।—चिरोप (ग०) अनेक प्रकार, बहुत तरह ।  
**अशोक तत्० (ग०)** [अ+शोक] शोक रहित, पुष्प वृक्ष विशेष, राज विशेष, विषयात मौर्य मन्वाद् विन्दुसार के पुत्र तथा चन्द्र गुप्त के पौत्र का नाम, महाराज अशोक अपने शत्रुओं को परास्त करके २५ वर्ष की अवस्था में सिंहासनारूढ़ हुए थे, प्राचीन शिला लेखों में इनका दूसरा नाम विषदग्नी, या त्रिषदग्नी भी जाना जाता है । अपने अभियेक के ८४ वर्ष में इन्होंने कालिङ्ग देश को जीता था । राज्याभियेक के समय महाराजा अशोक हिन्दू मनातन धर्म के अनुयायी थे, समय समय पर इन्होंने बौद्धों के सिद्धाचरण भी किया था । बुद्ध तथा के "सोधि द्रुम" को इन्होंने कटवा दिया था । कपिला वस्तु के निकट बुद्ध भगवात् के स्मारक ८ स्तूपों में से ७ को तोड़ देने के लिये इन्होंने आज्ञा प्रचारित की थी । अशोक २५७ ख्रिष्टाब्द के पूर्व राज्यसन पर आसीन हुए थे, राजा होने के ७ वें वर्ष अर्थात् २६४ ख्रिष्टाब्द के पूर्व यह बौद्ध धर्म में दीक्षित हुए । राज्य पाने के १४ चौदह वर्ष के मध्य में भारत के आधे से अधिक भाग पर अपना अधिकार इन्होंने स्थापित किया था । यह बौद्ध धर्म के प्रचार करने के लिये अत्यन्त रुचेष्ट थे । इन्होंने समय में बौद्ध महासभा का दूसरा अधिवेशन हुआ था, ख्रि० २३३ इन्होंने राज्य किया था, (देखो आदर्शमहात्म्य) ।  
**अशोच्य तद्० (ग०)** शान्ति, अविचार, अपवित्रता, अयुद्धता ।  
**अशोच्य तद्० (ग०)** अशोचनीय, शोक के अयोग्य ।  
**अशोभन तद्० (ग०)** मन्द, कुदृश्य । दुर्दर्शन, अशो ।  
 —ीय (ग०) कुत्सित प्रकार, बुरा ।  
**अशोभा तद्० (ग०)** अमगद, ऊर्ध्व, बुरा ।  
**अशोच्य तद्० (ग०)** शुचित्वाभाव, अशुद्धि ।—ान्त (ग०) [अशौच+अन्] अशौच का अन्तिम दिन, देहशुद्धि का अन्ततम दिन ।  
**अशौच्य तद्० (ग०)** भीकता, अतिक्रम, अशूरत्व ।

**अशम तद्० (ग०)** [अशु+मन्] पत्यर, पर्यत, मेघ ।  
 —ज (ग०) [अशम+जङ्+ङ] शिलाजीत, लोह, पत्यर से उत्पन्न वस्तु ।—दारण (ग०) [अशमत्+दारण] पत्यर काटने वाला अक्ष ।  
**अशमरी तद्० (खी०)** [अशमर+इ] सूत्रकृच्छ्र रोग, पयरी रोगी ।  
**अश्रद्धा तद्० (खी०)** अभक्ति, घृणा, अविश्वास, धिन ।  
**अश्रद्धेय तद्० (ग०)** घृण्य, घृणा के योग्य, अट्टानर्ह, अनादरणीय ।  
**अश्रप तद्० (ग०)** [अश+पा+ङ] राक्षस, निशाचर ।  
**अश्राद्ध तद्० (ग०)** प्रेतकर्म रहित ।  
**अश्रान्त तद्० (ग०)** अनवरत, विश्राम रहित, आन्ति हीन ।—ि(खी०) अविश्राम, अनवरत ।  
**अश्राध्य तद्० (ग०)** अवगानर्ह, सुनने के अयोग्य, अश्रोतव्य ।  
**अश्रि तद्० (खी०)** [अ+श्रि+क्विप्] धार, पैता, तीखा, तीक्ष्ण ।  
**अश्रू तद्० (ग०)** [अ+श्रु+क्विप्] आँसु, नेत्रजल, नयनाम्बु ।  
**अश्रुत तद्० (ग०)** नहीं सुना, अनाकर्षित ।—पूर्व (ग०) पहले का नहीं सुना गया, अश्रुत, विलक्षण ।  
**अश्र्येयस् तद्० (ग०)** निर्गुण, अधम, अमङ्गल ।  
**अश्र्येष्ट तद्० (ग०)** बुरा, साधारण, उत्तम नहीं ।  
**अश्रुती तद्० (ग०)** नीच, अधम, प्राभ्यभाषा, (ग०) घृणा अथवा लज्जा सूचक वात, काठगत दोष, काष्ठ में घेने शब्दों का प्रयोग करना जो अयथा-नन्तरघृणा लज्जा अथवा अमङ्गल सूचक हों । यह शब्द दोष है, घृणा वृणुक्, लज्जावृणुक् और अमङ्गल वृणुक् में इसके भेद हैं ।  
**अश्रुतेय तद्० (ग०)** होषरहित, अग्रण्य, अमंल्य, अमीति, होषभिल, अपरिहास ।  
**अश्रुतेषा तद्० (खी०)** नवीं नक्षत्र, दम नक्षत्र में ख तारे हैं ।—भय (ग०) कौतूहल ।  
**अश्व तद्० (ग०)** [अश्व+य] चोटक, सरङ्ग, घोड़ा, यात्रि, हय ।—गन्धा (खी०) [अश्वगन्ध+घ्रा]

श्रीपञ्चविशेष।—तर (५०) [अश्व + तर] गर्दभी के गर्भ और अश्व के औरस से उत्पन्न पशु, खच्चर, नागराजविशेष, अश्वविशेष। ( स्त्री० ) अश्वतरि।  
—पति (५०) घोड़े का स्वामी।—मेघ (५०) यज्ञ विशेष, जिसमें घोड़े का हवन किया जाता है। इस यज्ञ में विशेष लक्षणयुक्त अश्व को धोकर उसके सिर में जयपत्र बान्धकर स्वेच्छा में घूमने के लिये छोड़ देते थे, पुनः एक वर्ष के बाद वह घोड़ा घूम कर जय आता था तब उसका बलिदान और हवन किया जाता था।—वार (५०) अश्वारोही, सारी, घुड़-सवार।—शाला (स्त्री०) अश्वगृह, अश्वयज्ञ, घुड़-साल।—वैद्य (५०) अश्वचिकित्सक।—शिद्वक (५०) चायुक सवार।—सेवक (५०) सार्ईस।  
—रुढ़ (५०) [अश्व + आरुढ़] अश्ववार, घुड़घड़ा।

अश्वत्थ तत्० (५०) [अश्व + स्या + ङ] वृक्षविशेष, चलद्रुम, पीपल।—(स्त्री०) पूर्णिमा तिथि।

अश्वत्थामा तत्० (५०) [अश्व + स्या + मत्] द्रोणाचार्य का पुत्र, भूमिपतित होते ही इसने उच्चैःश्रवा घोड़े के समान शब्द किया था, उसके बाद ही आकाश धापी हुई कि इस पुत्र ने जन्म के समकाल ही मैं गंभीर धरनि के द्वारा दिग्गन्त को प्रतिध्वनित किया है अतएव इसका नाम अश्वत्थामा होगा"। २ पाण्डव पत्नीय मालवराज इन्द्र वर्मा का हाथी।

अश्वसेन तत्० (५०) तच्चक का पुत्र, नाग विशेष, सनत्कुमार।

अश्विनी तत्० (स्त्री०) सत्तार्ईस नक्षत्रों में का पहला नक्षत्र, इसमें तीन तारे रहते हैं और मेघराशि के सिर पर इसका स्थान है। दत्तप्रजापति की कन्या और चन्द्रमा की स्त्री, इस नक्षत्र का आकार घोड़े के मुँह के समान है।—कुमार (५०) स्वर्ग का वैद्य, देवता विशेष, अश्वरूपी सूर्य के औरस तथा अश्वारूप धारिणी संज्ञा के गर्भ से इस युगल देव-वैद्य की उत्पत्ति हुई थी।—(हरिवंश या ऋग्वेद द्रष्टव्य)।

अश्विनी या अस्वी तद्० संख्या विशेष।

अपाह तत्० (५०) अथाद भास, व्रतपलाशदण्ड, अथादानक्षत्र इन महीने की पूर्णिमा को होता

है, और उस दिन चन्द्रमा भी उसके साथ रहता है।

अष्ट तत्० (५०) संख्या विशेष।—क (५०) [अष्ट + क] अष्ट संख्या, आठ की पूर्ति।—कर्ण (५०) ब्रह्मा, प्रजापति, विधि।—का (स्त्री०) आहु विशेष, तिथिविशेष, अष्टका आहु।—घातु (५०) सुवर्ण, छपा, जस्ता, कौसा, तांबा, रांगा, शीशा, सोहा।—घाती (५०) अष्टघातु का व्रत हुआ।—प्रहर (५०) आठ पहर, आठ याम।—वसु (५०) देव विशेष, वायु, भ्रुव, सोम, धव, अनिल अनल, प्रत्यूष, प्रभास।—मी (स्त्री०) [अष्टम + ई] तिथिविशेष, जिसदिन चन्द्रमा की आठवीं कला की क्रिया हो।—मूर्ति (५०) शिव की अष्टविध मूर्ति विशेष, यथा चिन्तिमूर्ति शर्व, जलमूर्ति भव, अग्नि मूर्ति रुद्र, वायुमूर्ति उग्र, आकाशमूर्ति भोम, यजमानमूर्ति पशुपति, चन्द्रमूर्ति महादेव, सूर्यमूर्ति ईशान।—सिद्धि (स्त्री०) योग की आठ सिद्धियाँ यथा—अग्निमा, सचिमा, महिमा, गरिमा, प्राग्नि, प्राकाम्य, ईशित्य, वशित्य।

अष्टाङ्ग तत्० (५०) [अष्ट + अङ्ग] (५०) आठ अङ्ग, आठ अथर्व।—अर्च्य (५०) [अष्ट + अङ्ग + अर्च्य] आठ ब्रह्मों से संयुक्त पूजा की सामग्री विशेष।—प्रणाम (५०) [अष्ट + अङ्ग + प्रणाम] आठ अङ्गों से प्रणाम करना।

अष्टादश तत्० (५०) संख्या विशेष अठारह—अङ्ग (५०) [अष्टादश + अङ्ग] अठारह श्रौचधियों के मिलाने से बनी हुई पावन की गोलियाँ।—उपचार (५०) [अष्टादश + उपचार] पूजा की अठारह सामग्रियाँ, यथा—आसन, स्वागत, पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान, वस्त्र, उपवीत, भूषण, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, अन्न, तर्पण, माष्य, अतुनेपन, नमस्कार, विसर्जन।—उपपुराण (५०) [अष्ट-दश + उपपुराण] पुराणविशेष, गौण पुराण, यथा—सनत्कुमारोक्त, नारदसिंह, नारद, कौमार, शिवधर्म, दुर्वासा कथित, नारद प्रोक्त, कापिल, मानव, औरस-नक्ष, ब्रह्माष्ट, वारुण, कालिका, माहेश्वर, सांव, सौर, पराशर कथित और दो भागवत के अष्टादश

उपपुराण हैं।—धान्य ( ५० ) अठारह प्रकार के अन्न, यथा—घव, गोधूम, धान्य, तिल, गंधु, कुलित्य, माय, हृद्ग, मसूर, तिष्पाय, यवाम, सर्पय, गवेषुक्र, नीवार, अरहर, तीना, घना, चीना ।

—पुराण ( ५० ) अठारह पुराण, यथा—ब्राह्म, पाद्म, वैश्व, शैव, भागवत, नारदीय, मार्कण्डेय, आग्नेय, भविष्य, ब्रह्मवैवर्त, लिङ्ग, वाराह, स्कन्द, यामन, कीर्म, मात्स्य, गारुड और ब्रह्मावह ।

—विद्या ( छी० ) अठारह विद्या । यथा—छद्म, चार वेद, मीमांसा, न्याय, पुराण, धर्म शास्त्र, आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्व, और अर्थशास्त्र ये अष्टादश विद्या हैं।—स्मृतिकार ( ५० ) अष्टादश स्मृतियों के बनाने वाले, आर्यों के धर्म शास्त्रकार, यथा—विष्णु, पराशर, दत्त, संघर्त, कृपास, हारीत, शातातप, वसिष्ठ, यम, चापमन्त्र, गौतम, देवल, यज्ञ, लिखित, भरद्वाज, उशाना, अत्रि, योनक, याज्ञवल्क्य, ये अष्टादश स्मृतिकार हैं ।

अष्टास्र तत्० ( ५० ) अठकोष ।

अष्टि तत्० ( छी० ) गुडुली, बीज, अदुली ।

असंख्य तत्० ( ५० ) अनगिनती, बहुत, अगणनीय, संख्या रहित, अपरिमित ।

असंख्यात तत्० ( ५० ) असंख्या, अगणित, अपरिमित ।

असंख्येय तत्० ( ५० ) अगणनीय, जितकी संख्या न गिनी जा सके ।

असङ्गत तत्० ( ५० ) अनुचित, अयोग्य, मिथ्या ।

असंग्रह तत्० ( ५० ) सङ्घ-हीन, एकत्रित नहीं ।

असंयुक्त तत्० ( ५० ) [ असं + युज् + क्त ] अलग, अमिलित, पृथक् ।

असंयोग तत्० ( ५० ) अनमेल, भिन्न ।

असंलग्न तत्० ( ५० ) अमिल, असङ्गत ।

असंशय तत्० ( ५० ) निश्चय, निःसन्देह, संशय रहित ।

अस तद्० ऐसा, ऐसी, इस प्रकार से, इस प्रकार का, इस वाला का ।

असकृत तत्० ( अ० ) पुनः पुनः, बारबार ।

असकल दे० ( छी० ) आलस्य, उर्ध्व ।—ती ( ५० ) आलसी, डीनरला ।

असज्जन तत्० ( ५० ) [ असत् + जन ] कुपात्र, दुष्ट, द्वेषी ।

असत् तत्० [ अस + क्त ] अवाप्त, अन्यायी, अधर्मी ।

असत्य तत्० ( ५० ) झूठ, मिथ्या, अन्याय ।

असन्तुष्ट तत्० ( ५० ) असमन्न, अतृप्त, दुखी, सम्यक् वृष्टि रहित ।

असन्तोष तत्० ( ५० ) अनाह्लाद, अपरितोष ।

असम्मान तत्० ( ५० ) अपमान, असत्कार ।

असम्य तत्० ( ५० ) अवात्र, सभा के योग्य नहीं, अशामाजिक, अभक्ष्य, खल, नीच ।—ता ( छी० )

[ असम्य + ता ] असम्यता, मूर्खत्व, उजड़पन ।

असम तत्० ( ५० ) विषम, अशुभ्य ।

असमग्र तत्० अर्द्ध, अनिलित, अरूप, अधूरा ।

असमञ्जस तत्० ( ५० ) असङ्गत, अनुपयुक्त, अशुभ्य, असदृश ।

असमय तत्० ( ५० ) अकाल, विपत्ति, दुर्मित ।

असमर्थ तत्० ( ५० ) असक्त, दुर्बल, क्षीण ।

असमवायी-कारण ( ५० ) समवायीकारण का अमान्य कारण, समवायीकारण के साथ रहनेवाला कारण । जैसे घट के प्रति दो कपारों का संयोग ।

असम-साहस तत्० ( ५० ) दुःसाहस, असमान साहस, अशुभ्य उत्साह, सामर्थ्य से बाहर उत्साह ।

असमदा तत्० ( ५० ) पटोचा, अगोचर ।

असमाधि तत्० ( छी० ) अचिन्ता, अविवेचन, अधि-मर्ष ।

असमान तत्० ( ५० ) छोटा बड़ा, समान नहीं, विषम, अशुभ्य, विभिन्न ।

असमापिकाक्रिया तत्० ( छी० ) जिस क्रिया से वाक्य पूर्ण न हो, सकल कृदन्त क्रिया, काल बोधक कृदन्त ।

असमाप्त तत्० ( ५० ) अधवैना, अधूरा, अपूर्ण, समाप्ति-रहित ।

असंचद तत्० ( ५० ) अनमेल, अन्तर्ग, अन्याय ।

असम्भय तत्० ( ५० ) अतहीना, अचरज ।

असम्मत् तत्० ( ५० ) अमेल, अस्वीकार, अतमिमत्, सम्मति रहित ।



असहन तत्० (प्र०) [अ + सह + अन्ट] यमु, बैठी, अतल, अजोर, उग्र, भयङ्कर ।

असह्य तत्० (प्र०) असहनीय, कठिन, सहन करने के अयोग्य ।

अलाधु तत्० (प्र०) अधर्मों, यापी, अवन्नन ।

असाध्य तत्० (प्र०) कठिन, अगम्य, दुष्प्राप्य ।

असामर्थ तद्० (प्र०) अधारण, सामर्थ्य हीन ।

असर तत्० (प्र०) छूँछ, पोला, मूला, घोदला, मार रहित ।

अस.वध.न तत्० (प्र०) निश्चिन्त, अचेत, बेविक-  
मार्द ।

असि तत्० (प्र०) खड्ग, तलवार, खौड ।

असिद्ध तत्० (प्र०) अधयना, अगुरा ।

असोमा तत्० [स्रो०] अधार, अन्त, बहुत, सोमा-  
रहित, निरवधिक ।

असु तत्० (प्र०) [अस् + उ] प्राण, जोयन ।

असुर तत्० (प्र०) सुर विरोधी, दैत्य, दानव ।

असूक्त दे० (प्र०) अदूरय, नीरूप, भूल ।

असुस्थ तत्० (प्र०) सुप्रस्थिति रहित, रोगी ।  
—ता (स्रो०) अस्वास्थ्य, अस्वच्छता ।

अस्या तत्० (स्रो०) निन्दा, द्वेष, गुणों में दोषारोपण  
करना, परिवाद, क्रोध ।

असृक् तत्० (स्रो०) रक्त, रुधिर, लोहू ।

असौ तद्० (प्र०) यह माल, यह वर्ष, वर्तमान  
मन्वन्तर ।

असोच तद्० (प्र०) अचेत, अविचरित—ी (प्र०)  
निर्मोही, प्रमादी, सुस्थिर ।

असोज तद्० (प्र०) आश्विन, कुर्बान का महीना ।

अस्त तत्० (प्र०) [अस् + क] अस्ताचल, पश्चिमाचल ।  
(प्र०) विप्र, अज्ञान, अन्तर्दान, प्राप्त, निश्चिप्र,  
प्रेरित, त्यक्त (प्र०) मृत्यु ।—गत (प्र०) अस्तप्राप्त,  
अन्तर्हित ।—गिरि (प्र०) अस्ताचल, चरम  
पर्वत ।—ज्यस्त (प्र०) सङ्कीर्ण, विविप्र, आफुल ।  
—ाचल (प्र०) पर्वत विशेष ।

अस्र तत्० (प्र०) [अस् + ञ] अग्रयुध, प्रहरण, शस्त्र,  
खड्ग, हथियार, धनुष ।—चिकित्सक (प्र०)  
[अस् + कित् + सद् + क] अग्रधैर्य, अस्र के द्वारा

रोग दूर करने वाला, जरीह ।—विद्या (स्रो०)  
अस्र चलाने की विद्या, धनुर्वेद ।

अस्याय तत्० (प्र०) [अ + स्या + य] अस्यायी,  
स्थिति रहित, अगाध, अतलस्वर्ग ।

अन्य तत्० (प्र०) दाढ़, शरीर का पंजड़, शरीरस्थ  
धातु विशेष ।

अस्थिर तत्० (प्र०) चञ्चल प्रकृति, अस्यायी, अलि-  
क्षित,—ता (स्रो०) अस्थैर्य, अनिश्चय ।—मना  
(प्र०) अस्थिर मति, अस्थिरान्तःकरण ।

अस्थैर्य तत्० (प्र०) अनिश्चय, स्थिरताभाव, अधीरता,  
चञ्चलता ।

अस्मरण तत्० (प्र०) भूल, विस्मृति ।

अस्र तत्० (प्र०) कोण, एक देग, नोक ।

अस्य तत्० (प्र०) निर्धनो, फङ्गल, दरिद्री ।

अस्तर तत्० (प्र०) हल् उपद्रव, कुल्हर, निन्दित  
गद्य ।

अहङ्कार तत्० (प्र०) अभिमान, दम्भ, अहङ्कृति ।

अहम्भति तत्० (स्रो०) मनमौजी, गर्वी ।

अहर तद्० (प्र०) ढोवा, मोखरा, अहरा ।

अहरह तत्० (प्र०) प्रतिदिन, दिन दिन ।

अहर्निश तत्० (अ०) [अहः + निशि] दिवा रात्रि,  
नरकन्दिन, अष्टग्रहर ।

अहमुख तत्० (प्र०) प्रातःकाल, सबेरा, भोर, प्रत्यूष ।

अहपित तत्० (प्र०) अग्रमन्न, मशीन ।

अहत्या तत्० (स्रो०) गौतम मुनि की स्त्री, अम्तरा  
विशेष, जोती वृत्ति ।

अहह तत्० (अ०) अद्भुत या खेद प्रकाशक गद्य ।

अहहिं (क्रिया०) अस्ति, है, विद्यमान है ।

अहार तद्० (प्र०) आहार, भोजन, ताना, बेई,  
माँडी ।

अहिंसा तत्० (स्रो०) अनिष्ट करने की अनिच्छा,  
प्राणिवध न करने की अभिलाषा ।

अहितक तत्० (प्र०) अहित, अहिंसाकारक ।

अहि तत्० (प्र०) मँय, सर्प, नाग, कर्णी ।—गति  
(स्रो०) सर्प की चाल, टेढ़ी चाल ।

अहिच्छ.र तद्० (प्र०) सर्प का विष ।

अहित तद्० (१०) शत्रु, वैतो, विरुद्ध, अपव्य, अनु-  
कार, अमङ्गल ।—कारो (५०) अप्रिय करने  
वाला, शत्रु ।

अहिनी तद्० (खी०) सर्पिणी, सर्प की स्त्री ।

अहिपति तद्० (५०) सर्पों का राजा, वासुकी ।

अहिफेन तद्० (५०) नागफेन, अकीम ।

अहिवात तद्० (५०) सुहाग, मौभाव्य, सधवा होने  
के चिन्ह ।

अहीर तद्० (५०) ग्वाल, आभीर । अहीरिनी  
(खः०) या अहीरिनि ।

अही तद्० (अ०) संबोधन द्योतक, अही !

अहेतुक तद्० (५०) अकारण, अनर्थक ।

अहेर तद्० (खी०) आखेट, मृगया, शिकार ।

अहेरिया तद्० (५०) बडे़लिया, ब्राधा ।

अहेरो तद्० (५०) खेडको, बडे़लिया, विडोमार ।

अहो तद्० (अ०) आश्चर्य, अवस्था, शोक, कण्ठा,  
विवाद बोधक, संबोधन, प्रशंसा, विस्मय, अपय,  
आश्चर्य प्रकाशक शब्द ।

अहोरात्र तद्० (५०) [अहन् + रात्रि + च्] दिवा-  
निशी, दिन आर रात्रि ।

आ तद्० आकार दूतरो स्वरवर्ण है, शब्दों के  
आदि में इसका योग होने से यह अक्षरि का  
वाचक होता है, नून अथवा विपरीत भी इसका  
अर्थ होता है ।

आ तद्० विनामह, वाक्य, महेश्वर । (अ०) स्मृति,  
इंपदर्थ, अभिधाय, सीमा, वाक्य, अनुकम्पा, समुच्चय,  
निषिद्ध, सन्निधवर्ण, स्वीकार, कौप, पीड़ा, स्पष्टी,  
तर्कन ।

आः तद्० कष्ट सूचक शब्द, खेदोक्ति ।

आई तद्० आ फर, आनकर, आयु, वय, अयस्या ।

आँक तद्० (५०) अङ्क, विन्ह, संख्या, अङ्कित  
करना ।

आँकड़ी तद्० (खी०) आँकुर्यां, कौटा, जङ्गीर ।

आँकना तद्० (खि०) निरखना, परखन, परीक्षा  
करना ।

आँकरी तद्० (खी०) वाण का कण, अङ्कुर ।

आँकुरा तद्० (५०) अङ्कुर, अङ्कुरी ।

आँक तद्० (५०) अर्क, मन्दार, अमौज, अकवन ।

आकम्पन तद्० (५०) [आ + कम्प् + अतट्] काँवना,  
पर धराहट, ईपत्कम्पन ।

आकर तद्० ( ५० ) [ आ + कृ + अत् ] धामु चोर  
रत्नों का उत्पत्ति स्थान, रत्नि आदि, मूल, मद्रुह,  
श्रेष्ठ । जिस स्थान से जो वस्तु बहुतायत में निकलने  
वह स्थान आकर है ।

आकर्ष्य तद्० (५०) कर्षणवाचि, कान तक ।

—चक्षु (५०) कर्ण पर्यन्त विस्तृत वस्तु, दीर्घ  
नयन, विशाल नेत्र ।

आकर्ष्य तद्० (५०) खींच, टान, रोक, पायक, पागा,  
अवकीड़ा, चौपड़ खेलना, आकर्षण, आँकुरी ।

—क (५०) [आ + कृप् + णक्] शिवा विशेष,  
सुन्दर पक्षर, आकर्षण कर्ता ।—ण (५०) [आ  
+ कृप् + अतट्] दलप्रयोग पूर्वक खींचना,  
टानना ।

आकलन तद्० (५०) [आ + कल् + अतट्] एकत्र  
करण, संख्या करण, बन्धन ।

आकलित तद्० ( ५० ) [ आ + कल् + इत् ] गड़,  
परिसंख्यात ।

आकला तद्० (५०) गट खटिया, उगावला, उच्छ-  
द्वल ।

आक.ङ्क्षा तद्० (खी०) इच्छा, चाहना, अभिलाष,  
याञ्छा ।

आक.र तद्० (५०) सरूप, डील डील, सुनि, आकृति,  
वेहरा, सङ्केत, इङ्कित ।—गुप्ति (खी०) भय हर्ष  
आदि से उत्पन्न अङ्क विकार को छिपाता ।

—गोपन (५०) इत्यादि सूचक चिन्हों को  
छिपाता ।—अन्त (५०) [आकार + अन्त] जिसके  
अन्त में आकार ही ऐसे शब्द, रमा आदि ।

आकारतः तद्० (अ०) [ आकार + तत् ] स्व-  
पत्तः, सद्गुण सुनिताः, आकृति से ।

आकारादि तद्० (५०) [आकार + आदि] जिस  
शब्द का आधापर आकार हो ।

आकाल तद्० (५०) अकाल, दुर्मिष्ट, दुःसमय, महँगी ।

—निक (५०) [आ + काल + इक्] अकाल समय,  
अकालविक, अकाल निमित्त, अकाल में उत्पन्न ।

आकाश तत्० (५०) गगन, शून्य, अम्बर, पञ्चभूतों में से एक भूत विशेष, ठपोम, अन्तरिच ।—ग (५०) आकाशगामी, आकाशचर ।—गङ्गा (खो०) मन्दाकिनी, स्वर्गगङ्गा, नक्षत्र पथ विशेष ।—गामी (५०) [आकाश + गम् + गिनि] खेचर, आकाशचर, आकाश में चलनेवाला ।—दीप (५०) घाँस के सहारे टाँगा हुआ दीपक, अन्तरीक्षस्य प्रदीप, कार्तिक मास में जो दीपदान होता है ।—वाणी (खो०) अशरीरिणी वाक, देववाणी, —विद्या (खो०) वायु निरूपण करने की विद्या ।—वृत्ति (खो०) निराश्रय, अनियमित वृत्ति, दरिद्र ।—वेल (खो०) लता विशेष ।

आकिञ्चन तत्० (५०) दरिद्रता, प्रयाम, यत्न, अकिञ्चनता ।

आकीर्ण तत्० (५०) व्याप्त, विस्तारित, सुत, सङ्कीर्ण, सङ्कुल, समाकुल ।

आकुञ्चन तत्० (५०) [आ + कुञ् + अन्ट्] सङ्कोच, यक्रता, न्यायमत से पञ्च प्रकार के कर्मों में से एक कर्म ।

आकुञ्चित तत्० (५०) तिरछा, टेढा, घाँका ।

आकुण्ठित (५०) ललित, अयत्न ।

आकुल तत्० (५०) [आ + कुल + अल्] व्याकुलित, व्यस्त, कातर, आर्त, उद्विग्न, पूर्ण, आकीर्ण, अत्र-राया ।—ति (५०) [आ + कुल + क्] व्याकुल, कातर, व्यस्तचित्त ।

आकृति तत्० (खो०) [आ + कृ + क्ति] रूप, मर्त्ति, शरीर, आकार, अवयव, दौल ।

आकृष्ट तत्० (५०) आकर्षित, खींचा गया, कृत आकर्षण ।

आक्रन्द तत्० (५०) [आ + क्रन्द + अल्] रोदन, आह्वान, भयङ्कर युद्ध, मित्र, धाता, नाथ, पार्ष्वस्य, राजा के आगे का राजा, मित्र राजा ।

आक्रम तत्० (५०) [आ + क्रम + अल्] आक्रमण, चढाई, अतिक्रम, क्रान्ति ।—ए (५०) [आ + क्रम + अन्ट्] आक्रम, यत्नाकार, चढाई करना, ऊपर गिरना, आक्रमण ।

आक्रान्त तत्० (५०) [आ + क्रम् + क्] वलवाह के द्वारा गृहीत, कृत आक्रमण, जिसके ऊपर आक्रमण किया जाय, प्रस्त ।

आक्रीड तत्० (५०) राजा का उपवन, राजमहल के समीप का बाग, राजार्थों का साधारण वन ।—न (५०) [आ + क्रीड + अन्ट्] मृगया, शिकार, आखेट ।

आक्रोश तत्० (५०) [आ + क्रुश् + अल्] क्रोधयश कर्तव्याकर्तव्य विचार की भूल जाना, अभिपन्न, आलेय, शय, राग, क्रोध, क्रोध ।—न (५०) [आ + क्रुश् + अन्ट्] अभिशाप, अभिपन्न, कटूक्ति, भर्त्सना, अभिसम्प्रात ।

आक्रान्त तत्० (५०) [आ + क्रम् + क्] आन्त, अतिशय क्रान्ति युक्त, अवसन्न, विघ्न, आन्तिपुक्त ।

आँख तद्० (खो०) नेत्र, नयन, चक्षु (यह वचन-आँखें, आँखियाँ) ।—चढ़ाना (क्रि०) क्रोध करना, कुपित होना ।—चुराना (क्रि०) लज्जित होना (छिपाना) ।—ठढी करना (क्रि०) दृढ़ मित्रों के मिलने से चित्त की प्रसन्नता ।—दिराना (क्रि०) धमकाना, कुपित होना (वा०) ।—फूटी, पीर गयी" विवादप्रस्त पदार्थ के विनष्ट होने पर यह लोकोक्ति कही जाती है ।—फेरना (क्रि०) मित्रताभङ्ग, प्रेम तोड़ना ।—फोडा (५०) मथा, दौंस ।—मूँदना मृत्यु, मतवाली, मस्ती ।—यचाना द्विपना, अपने दुष्टकर्मों से लज्जित होना ।—मारना (खो०) आँख मटकाना, सैनकरना, इशारे से यात करना, इङ्गित करना ।—मिचीली (खो०) खेप विशेष ।—मिलाना प्रेम करना, मित्रता करना ।—रखना अनुसन्धान करना, निरोक्षण करना, खोज परतल करना ।—लगान किसी की प्रीति में फँसना या फँसाना ।

आखण्ड तद्० (५०) समुदय, अखण्ड रहित, सम्पूर्ण । आखण्डल तद्० (५०) [आ + खण्ड + ल्] इन्द्र, सहस्राब्द, शचीपति ।

आखा तद्० (५०) चलनी, घोरा, गठिया । आखात तद्० (५०) [आ + खट् + क्] अखात,

आखु तत्० (पु०) [आ + ख् + इ] सुयिक; युकर, चौर, चोर ।

आखेट तत्० (पु०) मृगया, शिकार, शिकार ।—क (पु०) व्याध (पु०) अन्वेषित, भयानक ।

आख्या तत्० (स्त्री०) नाम, संज्ञा, अभिधान, नाँव ।  
—त (पु०) कथित, उक्त, प्रसिद्ध, व्याकरण का धातुप्रकरण ।—न (पु०) नाम, संज्ञा, इतिहास, उपन्यास, कथन ।

आख्यायिका तत्० (स्त्री०) [आ + ष्या + इक् + आ] उपलब्धार्थ कथा, इतिहास, उपन्यास, उपकथा ।

आंग तद्० (पु०) अङ्ग, देह, शरीर ।

आंगन तद्० (पु०) चौक, अङ्गनाई, प्राङ्गण ।

आग तद्० आगि (स्त्री०) अग्नि, धनल, आगी ।  
—देना (क्रि०) शय संस्कार करना ।

आगत तत्० (पु०) [आ + ग् + क्त] पहुँचा, उपस्थित, सम्मुख, आयात ।

आगन्तुक तत्० (पु०) अतिथ्य स्थायी, आहार्य, अचानक आया हुआ, अतिथि ।—उत्तर (पु०) पीड़ा विशेष, आकस्मिक ज्वर, धातु प्रकोप के बिना ज्वर ।

आगम तत्० (पु०) [आ + ग् + अल्] आगमन, सर्वविध शास्त्र, साहित्य आदि, व्याकरण के मत में प्रकृति प्रत्यय के मध्य में होने वाले कार्य, तन्त्र शास्त्र, लिखन पत्नी, वेद, तन्त्र, भविष्यत् । कहते हैं शिव दुर्गा, और विष्णु के द्वारा प्रस्तुत शास्त्र आगम कहे जाते हैं ।—ह (पु०) वेदज्ञ, तन्त्रवेत्ता ।  
—न (पु०) [आ + ग् + अनट्] पहुँचना, उपस्थित होना ।—ीक (पु०) [आगम + उक्त] तन्त्र शास्त्र विहित कर्म, तान्त्रिक उपासना, शास्त्रोक्त ।  
—वक्ता (पु०) आगमज्ञानी ।—वैधना भावी का ठीक करना, भावी के लिये सोचना, आगम कहना, भावी कहना ।

आगलन्त तद्० (पु०) तल्लग, कपटपर्यन्त ।  
आग होना तद्० (क्रि०) गरमाना, क्रोधित होना ।  
आगा तद्० (पु०) आग्र, आमना, आयाड़ा ।—पीछा करना संशयित, दुविधा में पड़ना ।

आगामी तत्० (पु०) [आ + ग् + ई] आने वाला, आगे आनेवाला, भावी ।

आगाड़ी तद्० (स्त्री०) घोड़े के पाँव की रस्मी ।

आगर तद्० (पु०) चतुर, जानकार, जानने वाला, नागर, सयाना, पूर्ण । (स्त्री०) आगरी ।

आगार तद्० (पु०) घर, गृह, मकान ।

आगिल तद्० (पु०) अगिला, होतहार, भविष्यत्, अग्रसर, अग्रगामी ।

आगी तद्० (देखो आग)

आगुण्य तत्० (पु०) [आ + गुण्] गुण्य पर्यन्त, टिहुना तक ।

आगू तद्० (क्रि० वि०) मामने, मन्मुख, आगे, अगाऊ ।

आगे (क्रि० वि०) पहिले, सामने, सम्मुख, तब, फिर, बढ़ कर ।—पीछे अग्रपश्चात्, आगे पीछे, पूर्वापर, एक आगे एक पीछे, क्रमशः ।

आग्नीध तत्० (पु०) [आग्नि + इन्ध + र्] धन, अग्नि रखने का स्थान, होता का गृह, धन के द्वारा वरण किया जाने वाला अन्विष्ट ।

आग्नेय तत्० (पु०) स्वर्ण, देश विशेष, रक्त, घृत, अगस्त्य मुनि, पावक, अग्नि संबन्धीय, अग्नि मुख्य ।  
—स्त्र (पु०) [आग्नेय + अस्त्र] अग्निवाण, आग्नेयस्त्र, बन्दूक, कमान् ।—ी (स्त्री०) अग्निशोण, अग्नि की स्त्री स्वाहा ।—गिरि (पु०) धधकने वाले पर्वत, ज्वालामुखी ।

आग्रह तत्० (पु०) [आ + ग्रह + अल्] अतिगण्य, प्रयास, अनुग्रह, आसक्ति, आक्रमण, ग्रहण, उपकार, साहस ।

आग्रहायण तत्० (पु०) [आ + ग्रह + अय् + अनट्] मार्गशीर्षमास, अग्रहन मास, किर्मा के मत में वर्ष का पहला मास ।—ष्टि (स्त्री०) [आग्रहायण + इष्टि] नवाक्ष भक्षण, नूतन अन्न का प्रारम्भ ।

आघात तत्० (पु०) [आ + ह् + क् + क्त] हनन, घष, चोट, क्षीय, अवचय, प्रहार, वषस्यान ।  
आघार तद्० (पु०) धूप, घृत, छिद्रकाय, टवि ।

आधूर्णन तत्० (पु०) [ आ + घूर्ण + अतद् ] चक्र के समान घूमना, किरना, घुमना जाना ।

आधूर्णित तत्० (पु०) [ आ + घूर्ण + क्त ] घूमना हुआ, घुमाया हुआ ।

आधोपण तत्० (पु०) [ आ + घुप् + अतद् ] प्रचारण, प्रकाश करण, धोपणा करना ।

आघ्राण तत्० (पु०) [ आ + घ्रा + अतद् ] गन्ध-ग्रहण, सूँघना, तृप्ति ।—हर्ह (पु०) [ आघ्राण + अर्ह ] गन्ध ग्रहण के योग्य, सुगन्ध लेने के उपयुक्त ।

आघ्रात तत्० (पु०) [ आ + घ्रा + क्त ] गृहीत गन्ध, सूँघा हुआ ।

आघ्रेय तत्० (पु०) [ आ + घ्रा + य ] आघ्राण करने के योग्य, सूँघने के उपयोगी ।

आङ्गिक तत्० (पु०) अङ्ग निष्पन्न भाव, नाद्य विशेष, अङ्गों के द्वारा हृदय का भाव प्रकाशित करना, शारीरिक, शरीर संबन्धी ।

आङ्गिरस तत्० (पु०) देव गुरु, वृहस्पति ।

आँच तद्० (स्त्री०) गरम, ताप, ज्वाला ।

आँचल तद्० (पु०) अशुभा, किनारा, कपड़े का अगला हिस्सा ।

आचका तद्० अगणित, अकस्मात्, हठात् ।

आचानुर्य तत्० (पु०) अघाटव, अकृतिरव, अनाही-पना, अनिवृणवा ।

आचमन तत्० (पु०) आचवना, सुखारी, भोजन के अन्त में मुँह धोना, नित्य किये जाने वाले कर्मों के पहले नलद्वारा कपठ धोना ।

आचम्भित तद्० (पु०) हठात्, अशुभ, अचरज, अकस्मात्, देवात् ।

आचरण तत्० (पु०) चवन, व्यवहार, रीति, चाल, आचार लौकिक कर्म ।—ीय (पु०) [ आ + चर + अनीय ] आचर के योग्य, व्यवहार्य ।

आचरित तत्० (पु०) [ आ + चर + णिच् + क्त ] कृताचरण, व्यवहृत ।

आचर्य तत्० (पु०) [ आ + चर + य ] आचरणोप, कर्तव्य, करणीय ।

आचर तत्० (पु०) [ आ + चर + घञ् ] व्यवहार, चरित्र, वृत्त, शील, रीति, स्नान, आचमन आदि ।—घर्जित (पु०) आचार रहित, अनाचारी ।—चिरुद्ध (पु०) व्यवहार विरुद्ध, क्रुरीति ।

आचरी तत्० (पु०) शास्त्रीय आचार रखने वाला, यात्र के अनुसार चलने वाला, साम्प्रदायिक विशेष, आचार विशिष्ट, आचाराश्रित ।

आचर्य तत्० (पु०) [ आ + चर + ष्यप् ] वेदाध्यायक, वेदोपदेष्टा शिक्षादाता, पाठ गुरु, गिता आचार और धर्म की शिक्षा देने वाले ।—मिश्र (पु०) आर्य, पूजनीय, गुरु ।—(स्त्री०) मन्त्रों की व्याख्या करने वाली, उपदेश दात्री ।—पपी (स्त्री०) आचार्य स्त्री, गुरु पत्नी ।

आचोट तद्० (स्त्री०) आघात, क्षत विक्षत, पाव, अनाकृष्ट, विना जोती धूमि ।

आच्छन्न तत्० (पु०) [ आ + छद् + क्त ] आच्छादित, आवृत, अगम, अज्ञान, रक्षित, द्विषाव, दाका ।

आच्छा तद्० (अ०) स्वीकारार्थक, उत्तम, अङ्गीकार ।

आनञ्जादक तत्० (पु०) [ आ + ञ्ज + ष्यत् ] आवरणकर्ता, गोपनकारी, ढँकनेवाला ।

आच्छादन तत्० (पु०) दत्त, परिधान, आवरण, ढकना ।

आच्छादित तत्० (पु०) कृताच्छादन, आवृत, दाका हुआ ।

आच्छाद्य तत्० (पु०) [ आ + छद् + ष्यप् ] आच्छादनीय, आवृत करने के योग्य ।

आच्छिन्न तत्० (पु०) [ आ + छिद् + क्त ] छेदना, काटना, कर्तन ।

आच्छी तद्० (स्त्री०) अच्छी, उत्तमा, सुघर, अविद्या, नीकी, भली ।

आञ्जन तद्० (पु०) काञ्जल, सुरमा, आँख में लगाने की चीज़ ।

आञ्जला तद्० पत्तर, दो हाथ भर, अशुभ ।

आज तद्० (अ०) अद्य, अद्य, अभी, वर्तमान दिन ।—कल (अ०) इन दिनों में, कुछ दिनों में ।—कल करना टालना, हाँ हूँ करना ।

भाजन्म तत्० (गु०) [आ + जन्म] जन्मावधि, जन्म से लेकर ।

भाजा तद्० (गु०) पितामह, दादा, पिता का पिता ।

भाजाना तद्० (गु०) अरुमात् आना, घटना, अज्ञात, अपरिचित ।

भाजानु तत्० ठगुना तक, जानुपर्यन्त, जानु अवधि ।—चाहू (गु०) जहापर्यन्त लम्बित बाहु, विशाल बाहु, मायुद्रिक शास्त्र में भाजानु बाहु होना एक शुभ लक्षण समझा जाता है ।

भाजि तत्० (स्त्री०) पुद्ग, समान भूमि, लड़ाई, संग्राम, रण, स्रण, आक्षेप, आक्रोश, गमन, गति ।

भाजीय तत्० (गु०) जीविका, जीवनीपाय, वृत्ति, वन्धान ।—फा (स्त्री०) वृत्ति, वन्धान, रोजी ।

भाजीवी तत्० (गु०) उपजीवी, उपजीवक ।

भाजू तद्० (स्त्री०) विना वेतन के काम करने वाला, बेगार, अधीतनिक, अवेतन ।

भाझस तत्० (गु०) [आ + जप् + क] अनुमति प्राप्त, आदेशित, निदेशित ।

भाझसि तत्० (स्त्री०) [आ + जप् + क्ति] आदेश, निदेश, विधि, आज्ञा ।

भाज्ञा तत्० (स्त्री०) आदेश, निदेश, अनुमति, शासन ।

—करी (गु०) आज्ञा के अनुसार काम करने वाला, आज्ञावद, आज्ञानुवर्ती, अनुमति पालक ।

—चक्र (गु०) पद चक्रों में से छठवाँ चक्र ।

—तिक्रम (गु०) [आज्ञा + अतिक्रम] आदेशातिक्रम, आज्ञालङ्घन ।—दायक (गु०) अनुमतिकारी, आदेशकर्ता ।—नुवर्तन (गु०) [आज्ञा + अनुवर्तन] आज्ञा के अनुसार चलना ।—पत्र (गु०) पत्री, मन्देशपत्र, आदेशलिपि, निदेश लिखन, हुकुमनामा ।—प्रतिघात (गु०) स्वामि-द्रोह, राजशासन त्याग ।—घर्ती (गु०) आज्ञा के

पय, आज्ञापह, आज्ञाधीन ।

भाज्ञापक तत्० (गु०) [आ + ज्ञा + णिच्] आदेश-कारक, आज्ञाकर्ता, स्वामी ।

भाज्ञापन तत्० (गु०) [आ + ज्ञा + णिच् + अनट्] अनुमतिकरण, आदेश करना ।

भाज्य तत्० (गु०) [आ + अन् + य] धो, घृत, हवि ।—प (गु०) पितृलोक विशेष, घृतभोजी ।

भाजू तत्० (गु०) शौच, अशु ।

भाञ्जनेय तत्० (गु०) अञ्जना वानरी का पुत्र, हनुमान ।

भांठ तद्० (स्त्री०) गंठ, विरोध, बाड़ी ।

भांठना तद्० समाना, भरना, पैठना ।

भांठ सांठ तद्० (स्त्री०) सभा, जगना, सट्टा ।

भांठी तद्० (स्त्री०) फेंटी चूड़िया, गोली ।

भांठी तद्० (स्त्री०) गुठली, शूली, बीज ।

भांटा तद्० (स्त्री०) मिसान, चीस, सुजी ।

भांटोप तत्० (गु०) [आ + ट् + अल्] दर्प, गर्व, अहङ्कार, वायुजन्म उदर शब्द ।

भांठ तद्०, (गु०) संस्था विशेष, अष्ट, चार का दूना ।

—पहर (गु०) आठपाम, दिनरात ।

भांठ तद्० (गु०) वृषण, अष्ट, पोता, अष्टकोश ।

भांठ तद्० (स्त्री०) परदा, रोक, छोट ।

भांठभ्यर तद्० (गु०) खटला, उद्योग, पटह, सूर्यरथ, हाथी का शब्द, आरम्भ, पक्ष, दर्प, हर्ष, समारोह, घटा, अङ्गमार्जन, क्रोध ।—ी (गु०) दाम्बिक, ममारोह, घटा, हर्ष, अहङ्कार ।

भांड़ा तद्० (गु०) टेढ़ा, तिरछा, यौका ।

भांड़ी तद्० (गु०) रत्नक, स्वरविशेष ।

भांड़ेभानी तद्० अचायना, बीच में पड़ना, बाधक होना ।

भांठक तद्० (गु०) परिमाण विशेष, चार सेर ।

भांठ्य तत्० (गु०) धनवान्, धनी, धनयुक्त, विशिष्ट, अन्नित, धनाढ्य, गुणाढ्य, सम्पन्न ।

भांठत तद्० (स्त्री०) अह्वा, माल का चलान, चलान करने का स्थान ।

भांठतिया तद्० (गु०) ठ्यापारती, महाजन, शहर चलान करने वाला ।

भांठि तत्० (गु०) [आण् + इं] कोन, चन्ति, सीमा ।

भांठ तद्० (स्त्री०) चैतड़ी, अन्त्र, नाड़ी ।

भांठत तद्० (गु०) आतङ्ग, भय, पीड़ा ।

भांठत तद्० (गु०) आरोपित, विस्तारित ।

आततायी तत्० (गु०) [ आतत + अय् + णिच् ]  
 यधोद्यत, अनिष्टकारी । (पु०) महापापी,  
 आग लगाने वाला, विष देने वाला, शास्त्रो-  
 न्मादी, धनापहारी, भूमि और परदार अपहारक  
 ये छ आततायी कहे जाते हैं—( मुकु० नी० )  
 हत्यारा, डाँकू ।

आतप तत्० (गु०) धूप, सूर्य का किरण, सूर्य का  
 प्रकाश ।—आत्यय (पु०) [ आतप + आत्यय ] सूर्य  
 की किरणों का नाश, धूप का अभाव ।—आभाव  
 (पु०) [ आतप + आभाव ] छाया, धूप का अभाव ।  
 —उदक (पु०) [ आतप + उदक ] मृगतृष्णा,  
 मरोचिका, सूर्य की किरणों में जलदान ।—अ,  
 अक (पु०) [ आतप + अ + ड + आतप + अ  
 + ड + क ] अत्र, छाता, ।—लेङ्गुन (पु०) धूप  
 लगना ।

आतपन तत्० (पु०) [ आ + तप + अनट् ] शिव  
 का नाम ।

आतर तत्० (पु०) [ आ + तृ + अल् ] अन्तर,  
 बीच, उतराई ।

आतर्पण तत्० (पु०) [ आ + तृप् + अनट् ] प्रीणन,  
 तृप्ति, मङ्गलालेपन ।

आता तद्० (पु०) फल विशेष, सीताफल, सरीफा ।

आतायीपन तद्० (पु०) धूर्तता, खलता, शठता ।

आतायी तद्० (गु०) धूर्त, शठ, (पु०) पक्ष विशेष,  
 चील ।

आतिथेय तत्० (गु०) अतिथि सेवा कारक, अतिथि-  
 पूजक, अतिथि सेवा को सामग्री, आभ्यागत का  
 सम्मान करने वाला ।

आतिथ्य तत्० (पु०) अतिथि के भोजन आदि के  
 पदार्थ, अतिथि सेवा ।

आतिदेशिक तत्० (गु०) अतिदेश्य प्राप्त, इससे  
 प्रकार से उपस्थित ।

आतिशय्य तत्० (पु०) आधिक्य, अतिरेक ।

आतुर तत्० (गु०) रोगी, पीड़ित, गति शक्ति  
 रहित, आतुर, व्याकुल, अस्थिर ।

आत् तद्० (स्त्री०) युक्वायन, पच्छिदायन ।

आतोद्य तद्० (पु०) [ आ + तुद् + य् ] वाद्य,  
 योणा, सुज, बंशी का शब्द, चतुर्विध वाद्य ।

आत्त तत्० (गु०) [ आ + दा + क् ] गृहीत, प्राप्त,  
 पकड़ लिया गया ।—गन्ध (गु०) गृहीत गन्ध,  
 हतदर्प, अभिभूत, पराजित ।—गव (गु०) खचित  
 गर्व, अहङ्कार पूर्ण, भद्रदर्प ।

आत्म तद्० (पु०) निज, अपना, स्वीय, जीव ।  
 —फलह (पु०) [ आत्मन् + फलह ] मित्रों के  
 साथ विवाद, गृह कलह ।—कार्य (पु०)  
 [ आत्मन् + कार्य ] अपना काम, गोपनीय कार्य ।  
 —गरिमा (स्त्री०) [ आत्मन् + गरिमा ] आत्म-  
 ह्याचा, दर्प, अहङ्कार ।—ग्राही (गु०) [ आत्मन् +  
 ग्रह + णिच् ] आत्मभरी, स्वार्थ पर, स्वार्थी ।  
 —घात (पु०) [ आत्मन् + घात ] आत्म हत्या,  
 स्वयंमरण, अपने किये उपायमे मरण ।—ज (पु०)  
 [ आत्मन् + ज् + ड ] पुत्र, सन्तान, बेटा । (गु०)  
 स्वोत्पन्न ।—जन्मा (पु०) [ आत्मन् + जन्  
 + मन् ] पुत्र, तनय, सन्तान ।—जा (स्त्री०)  
 [ आत्मन् + जन् + ड + आ ] कन्या, पुत्री,  
 दुहिता, बुद्धि ।—ज्ञान (पु०) [ आत्मन् + ज्ञा +  
 अनट् ] ब्रह्म विषयक ज्ञान, स्वानुभव ।—स्तव  
 (पु०) [ आत्मन् + तव ] ब्रह्म तत्व,  
 आत्म याधार्य्य ।—ता (स्त्री०) [ आत्मन् +  
 ता ] वन्द्यता, रणय, सद्भाव, प्रेम, प्रीति ।  
 —नैपद् (पु०) क्रिया का चिन्ह विशेष ।—घञ्चक  
 (पु०) [ आत्मन् + वञ्च + गञ् ] कृपण, पापी,  
 नास्तिक ।—घत् (गु०) [ आत्मन् + घत् ], अपने  
 समान ।—वश (गु०) [ आत्मन् + वश ] स्वा-  
 चीन, स्वयय, स्वप्रधान ।—म्भरि (गु०) अपना  
 पेट पालने वाला, स्वार्थी ।—योनि (पु०)  
 आत्मन् + योनि ] ब्रह्मा, विष्णु, शिव, काम-  
 देव ।—रक्षा (स्त्री०) [ आत्मन् + रक्षा ] अपना  
 रक्षण, आत्म रक्षण ।—लाभ (पु०) [ आत्मन्  
 + लाभ ] उत्पत्ति, स्वलाभ स्वार्थ ।—श्लाघा  
 (स्त्री०) [ आत्मन् + श्लाघा ] आत्म गर्व, अपनी  
 प्रशंसा ।—सम्भव (पु० स्त्री०) [ आत्मन् +  
 + सम्भव ] पुत्र, कन्या ।—सात् (गु०)

[ आत्मन् + सत् ] अपने अधीन, स्वहस्तगत ।  
—हृत्वा ( स्त्री० ) [ आत्मन् + हृ + क् + क् ]  
आत्मघात, स्ववध ।—ह्रा ( पु० ) [ आत्मन् +  
हृ + क् + क् ] अपनेको नारने वाला, आत्मघाती,  
अपने प्रयत्न से मृत ।

आत्मा तत्० ( पु० ) [ आ + अत् + म् ] यत्न,  
पुति, बुद्धि, स्वभाव, ब्रह्म, देह, मन, परलयावर्तन,  
पुत्र, जीव, अर्क, हुताशन, वायु ।—भिमत ( पु० )  
[ आत्मन् + भि + मत् ] आत्मसम्मत, अपनी  
मतानुयायी ।

आत्मिक तद्० ( पु० ) मन का, अपनी, पिवारा ।  
आत्मिय तद्० ( पु० ) [ आत्मन् + ईय ] स्वकीय,  
अन्तरङ्ग, स्वजन, आत्मजन ।—ता द्रव्यात्, बन्धुता,  
अन्तरङ्गता, सद्भाव, प्रणय ।

आत्मोत्कर्ष तद्० ( पु० ) [ आत्मन् + उत्कर्ष ]  
अपनी अहंता, अपनी प्रभुता ।

आत्मोद्भवा तद्० ( स्त्री० ) [ आत्मन् + उद्भवा ]  
कन्या, पुत्री, आत्मजा ।

आत्यन्तिक तद्० ( पु० ) [ अत्यन्त + इक् ]  
अतिशय, विन्तार, प्रचुर, अधिक ।

आत्रेय तद्० ( पु० ) अत्रि मुनि का पुत्र, दुर्वासा,  
चन्द्र, शरीरस्थ रत्न धातु ।—ी ( स्त्री० ) नदी  
विशेष, अर्पिपत्नी विशेष ।

आथर्वण तद्० ( पु० ) अथर्व वेदज्ञ ब्राह्मण, अथर्व  
मन्त्र ।

आदम्बन्त तद्० ( पु० ) आरम्भ से समाप्ति पर्यन्त ।  
आदर तद्० ( पु० ) [ आ + दृ + अल् ] आस्था,  
सम्मान, मर्यादा, प्रतिष्ठा ।—णीय ( पु० ) सम्मानार्ह,  
मान्य ।

आदर्श तद्० ( पु० ) [ आ + दृश् + अल् ] दर्शन, सुकुर,  
आदर्शन, निदर्शन, प्रतिपुस्तक, मूल पुस्तक, टीका,  
चिन्ह ।

आदा तद्० ( पु० ) मूल विशेष, आदर, आदरक ।  
आदान तद्० ( पु० ) [ आ + दा + अन्ट् ] ग्रहण,  
लेना, स्वीकार, आश्रयभरण विशेष, रोगलक्षण ।

—प्रदान ( पु० ) [ आदान + प्रदान ] लेन देन,  
त्याग, ग्रहण ।

अदालत तद्० विचारस्थान, धर्माधिकरण ।

आदि तद्० ( पु० ) पूर्व, प्रथम, मूल, अग्र, पहिला  
आकार, उत्पत्तिस्थान ।—क ( अ० ) पहिले से,  
इत्यादि, शेर मध ।—कवि ( पु० ) बाल्मीकि  
मुनि, रामायणकर्ता, कहते हैं सर्वप्रथम हन्दोबद्ध  
कविता इन्होंने ही की थी, कौस्तुभ पुत्र को देव  
अकस्मात् इनकी छन्दोमयी वाणी प्रकाशित हुई,  
अतएव यह आदि कवि कहे जाते हैं ।—कारण  
( पु० ) पहला कारण, पूर्व निमित्त, आद्य हेतु, मूल  
हेतु, निदान ।—देव ( पु० ) नाटयण, विष्णु ।  
वराह ( पु० ) विष्णु का वराह अवतार ।—राज  
( पु० ) सर्वप्रथम राजा, पृथुराज ।—शूर ( पु० )  
राजा विशेष, बङ्गाल के सेनवंशीय राजाओं का  
पहिला राजा, इस राजा का नाम वीरसेन था,  
परन्तु सेनवंश का यह प्रथम राजा था इसीसे  
इसे आदिशूर भी कहते हैं । पुत्रेष्टि यज्ञ करने के  
लिये इसी राजा ने कन्नौज में पाँच वेदज्ञ ब्राह्मण  
युक्तवाये थे, उस समय यौद्धर्म्म की प्रबलता के  
कारण बङ्गाल में वेदज्ञ ब्राह्मणों का अत्यन्त आभाव  
हो गया था ।

आदित्य तद्० ( पु० ) देवता, सूर्य, दियाकर, अर्क वृक्ष,  
रवि, भातु ।—वार ( पु० ) सूर्यवार, सूर्य का दिन,  
सप्ताह का अन्तिम दिन ।—मण्डल ( पु० ) सूर्य  
मण्डल, सूर्य लोक ।—सन्तु ( पु० ) सुग्रीव खान्तर,  
यम, शनैश्चर, सार्वर्षिक मनु, वैशखत मनु, कर्ण ।

आदित्य तद्० ( पु० ) अदिति के पुत्र, देवगण ।

आदिम तद्० ( पु० ) [ आदि + मत् ] आद्य, प्रथम  
उत्पन्न वस्तु ।

आदिष्ट तद्० ( पु० ) [ आ + दिश् + क् ] आदेशित,  
आज्ञप्त, अनुमत, कथित, प्राप्तीपदेय, गृहीत, आज्ञा ।

आहृत तद्० ( पु० ) [ आ + हृ + क् ] आदरान्वित,  
सादर सम्मानित, पूजित, अर्चित ।

आदेश तद्० ( पु० ) [ आ + दिश् + अल् ] आज्ञा,  
अनुमति, व्याकरण में एक वर्ण के स्थान में दूसरे  
वर्ण की उत्पत्ति, प्रकृति और प्रत्यय को मिलाने  
वाले कार्य, ज्योतिष शास्त्र का फल, कलादेश ।—ी  
( पु० ) आज्ञापक, आज्ञाकारक, गणक, देवज्ञ ।



—ध्य ( पु० ) [ आ + दिश् + तृष् ] पुरोहित, याजक, अनुमतिप्रद, आज्ञाकारक, आदेशकर्ता ।

आद्योपान्त तत्० ( गु० ) [ आद्य + उपान्त ] प्रारम्भ से अन्त तक, समस्त, सम्पूर्ण ।

आदौ तत्० ( अ० ) प्रथम, आगे, आदि ।

आद्य तत्० ( अ० ) प्रथम, आगला, पहिला, भोजनीय द्रव्य ।—कवि ( पु० ) ब्राह्मीक मुनि, ब्रह्मा ।

आद्यन्त तत्० ( गु० ) [ आदि + अन् + क्त ] प्रथम और अन्त, आद्य, और प्रान्त, प्रथम से लेकर शेष पर्यन्त, आद्योपान्त, आदि अन्त ।

आधा तद्० ( पु० ) आधा, अर्द्धक, अर्द्ध, द्वायद्वय भाग ।—कपाली शिरोरोग विशेष, अर्द्धशिरो वेदना ।

आधान तत्० ( पु० ) धारण, गर्भधारण, म्यापित द्रव्य, अग्न्याधान, गर्भाधान ।—कि ( पु० ) [ आ + धान + इक् ] गर्भाधान संस्कार ।

आधार तत्० ( पु० ) आश्रय, आहार, अधिकरण, पात्र, अम्बुधारण, वृक्ष का आल यात्र, सेतु ।

आधाशिखी तद्० ( स्त्री० ) अधकपाली, आधे शिर में पीड़ा, रोग विशेष ।

आधि तत्० ( पु० ) [ आ + ध्वै + कि ] मन पीडा व्यसन, बन्धक, प्रत्याशा, आधार ।

आधिक्य तत्० ( पु० ) बहुतायत, अधिक, अधिकत्व, अतिशय ।

आधिदैविक तत्० ( गु० ) देवप्रयुक्त, दैवाधीन, बौद्धपदार्थ, बुद्धि सम्बन्धी ।

आधिपत्य तत्० ( पु० ) स्वामित्व, प्रभुत्व, रेश्वर्य, अधिकार ।

आधिभेदनिक तत्० ( गु० ) द्वितीय विवाह के लिये, प्रथम स्त्री को दिया हुआ धन ।

आधिभौतिक तत्० ( गु० ) जो भूतों के सम्बन्ध में उत्पन्न हो ।

आधीन तत्० ( गु० ) आज्ञाकारी, यश, नम्र, स्वाधिकार युक्त, यशवर्ती ।

आधुनिक तत्० ( गु० ) इदान न्तन, साम्प्रतिक, अधुनातन, नवीन, नव्य, टटक शमीका, नया ।

आधूत तत्० ( गु० ) [ आ + धू + क्त ] ईषत्कम्पित, कषाकुल, कम्पित, चालित ।

आधेआध तद्० आधी, आध, अर्द्धार्द्ध ।

आधिक तद्० अर्द्धभाग, गुण्य दो भागों का एक भाग ।

आधेय तत्० ( गु० ) [ आ + धा + य ] जो आधा का पूरक हो ।

आधोरण तत्० ( पु० ) [ आ + धोर + अन्ट ] हस्तिपक, महायत, हाथीघान् ।

आध्मात तत्० ( गु० ) [ आ + ध्मा + क्त ] यच्चित्त, दग्ध, अग्नि समीगान्वित, ( पु० ) ज्ञात रोग विशेष, बुद्ध, सयत ।

आध्मान् तत्० ( पु० ) [ आ + ध्मा + अन्ट ] वायुरोग, वायु में पेट फूलना ।

आध्यात्मिक तत्० ( गु० ) आत्माश्रित, दुःख विशेष, आन्तरिक ।

आध्यान तत्० ( पु० ) [ आ + ध्या + अन्ट ] ध्यान, चिन्ता, स्मरण, दुर्भायना, अनुशीचना, उत्कण्ठानुपूर्वक स्मरण ।

आध्यापक तत्० ( पु० ) [ अधि + इह् + णिष् + अक् ] पाठगुरु, शिक्षक, उपाध्याय ।

आध्वनीन तत्० ( पु० ) [ अध्वन + ईन ] पथिक, पान्थ, पाथेय, मार्गलवय ।

आन तद्० ( स्त्री० ) और, अन्य, प्रतिष्ठा, उद्धवास, बहिर्मुख श्वास, मित्र ।

आनक तत्० ( पु० ) [ आन् + णक् ] पटह, भेरी, मृदङ्ग, शब्द युक्त मेघ ।

आनक—दुन्दुभि तत्० ( पु० ) [ आनक + दुन्दुभि ] श्री कृष्ण का पिता वासुदेव, वृहत, भेरी ।

आनत तद्० साता है, से आता है, जाते हो ।

आनत तत्० ( गु० ) [ आ + नत् + क्त ] अवनत, प्रह्वीभूत ।

आनन्द तत्० ( पु० ) [ आ + नन् + क्त ] चर्मावृतमुख बाल, नगरा आदि, कल्पमात्र, वैशरचना आदि, यह, मिलित, जोड़ा हुआ ।

ज्ञानन तत्० ( पु० ) [ अह + अद् ] सुह, सुख, आस्य, घटन, चेहरा ।

ज्ञानन्तर्यं तत्० ( पु० ) पद्माद्भाय, रोष, अनन्तरार्थ, नैक्य, सन्निकर्ष ।

ज्ञानन्त्य तत्० ( पु० ) अपरिसीमता, अघं-  
ष्यता, अत्यधिकता ।

ज्ञानन्द तत्० ( पु० ) [ आ + नन्द + अल् ] द्वाद,  
हर्ष, सुख । ( पु० ) हर्षयुक्त सुखी ।—कर  
( पु० ) आह्लादकर, सुखजनक ।—ज्ञानन  
( पु० ) ज्ञानन्द दायक वन, काशी पुरी का नाम ।

—चित्त ( पु० ) हर्ष से प्रफुल्लित ।—पट्ट  
( पु० ) मयी विवाहिता स्त्री का वस्त्र, नयोद्वा  
का कपड़ा ।—पूर्ण ( पु० ) अधिक ज्ञानन्द,  
समस्त ज्ञानन्द ।—प्रभव ( पु० ) रेत, वीर्य,  
शुक्र ।—शब्दा ( स्त्री० ) नयोद्वा शयन ।—शर्ष  
( पु० ) [ ज्ञानन्द + अर्ष ] आह्लाद सागर, सुख  
समुद्र ।—घर्जन ( पु० ) यह कवि कश्मीर

निवासी और प्रसिद्ध अलङ्कार शास्त्री थे, अवनति  
धर्मा के राज्य काल में यह कश्मीर में वर्तमान  
थे, काठ्यालोक, ध्वन्यालोक, महदपालोक  
नाम के ग्रन्थ संस्कृत में उन्होंने बनाये हैं ।  
अवनति धर्मा च ८५५ से ८८० के बीच तक  
रहे, ज्ञानन्दयर्जन का भी वही समय है ।—गिरि

तत्० ( पु० ) प्रसिद्ध दार्शनिक पण्डित, यह  
शङ्कराचार्य के शिष्य थे, जूटोम नवम शताब्दी  
में यह उत्पन्न हुए थे, शङ्कर दिव्यजय नामक  
ग्रन्थ इन्होंने बनाया था, इसके अतिरिक्त उप  
निषदों का माध्य, और श्री भद्रभगवद्गीता की  
टीका इन्होंने बनायी थी ।—थु तत्० ( पु० )

[ ज्ञानन्द + थु ] आह्लाद, हर्ष ।—अयकोष तत्०  
( पु० ) पशुकोष के अन्तर्गत, कोष विशेष, सत्य,  
प्रधान, ज्ञान, कारण शरीर, सुपुत्रि ।

ज्ञानन्दि तत्० ( पु० ) [ अ + नन्द + इ ] हर्ष,  
आह्लाद, सुख ।

ज्ञानन्दिता तत्० ( पु० ) [ आ + नन्द + क ]  
ज्ञानन्द युक्त, हर्षान्वित, हृष्ट ।

ज्ञानयन तत्० ( पु० ) [ आ + नी + अन्ट ] स्वा-  
नाम्न नयन, से ज्ञान, जाना ।

ज्ञानर्त तत्० ( पु० ) [ आ + नृत + अर् ] देश  
विशेष, द्वारका पुरी, नृत्यस्थान, युद्ध, ज्ञानर्त  
देशवासी मनुष्य ।

ज्ञानर्तित तत्० ( पु० ) [ आ + नृत + क ] कम्पित,  
नृत्यविशिष्ट ।

ज्ञानवी तत्० ( क्रि० ) सादये, ले जाना, लेते  
आदये ।

ज्ञानहु तत्० ( क्रि० ) साधो, ले आधो, उपस्थित  
करो ।

ज्ञाना तत्० ( पु० ) चार पैसा, ज्ञाना, पाम  
ज्ञाना, सोलह हिस्सा का एक हिस्सा ।

ज्ञानाकानी तत्० ( स्त्री० ) टालमटोल ।

ज्ञानाङ्गी तत्० ( क्रि० ) अनभिज्ञ, निर्दोष, अक-  
र्मरथ ।—पना मूर्खता, अनभिज्ञता ।

ज्ञानाजाना तत्० ( क्रि० ) आवागमन, याता-  
यात ।

ज्ञानिहो तत्० ( क्रि० ) लाकैगा, ले आकैगा ।

ज्ञानित तत्० ( पु० ) [ आ + नी + क ] ज्ञान-  
यन करण, ले जाना ।

ज्ञानुकूल्य तत्० ( पु० ) अनुकूलता, सहायता ।

ज्ञानुपूर्व तत्० ( पु० स्त्री० ) क्रयिक, अनुक्रम,  
क्रमगत, पर्याय, दय ।—( स्त्री० ) परिपाटी,  
अनुक्रम, क्रमानुगत ।

ज्ञानुमानिक तत्० ( पु० ) अनुमान सिद्ध,  
गम्य ।

ज्ञानुपङ्क्ति तत्० ( पु० ) प्रवृत्ताधीन, प्रस्ताव क्रम  
से युक्तसिद्ध, सम्बन्धी, अग्रधान फल, गौणफल ।

ज्ञानर्शास्य तत्० ( पु० ) अनिन्दुरता, दया,  
स्नेह ।

ज्ञानेता तत्० ( पु० ) [ आ + नी + तृण ] ज्ञान-  
यन कर्ता, आहरण कर्ता ।

ज्ञान्तरिक तत्० ( पु० ) अन्तःकरण संधन्धी,  
अन्तरस्थ, मनोगत, मानसिक ।

आन्दू तत्० ( पु० ) हाथी बाँधने की मूक ।

आन्दोलन तद्० ( पु० ) [ आन्दोल + अनट्. ]  
 झूलन, अनुशीलन, कम्पन, उधर उधर जाना,  
 चलन, बार बार कथन, ध्यान, पुनः पुनः ।  
 आन्वीक्षिकी तद्० ( स्त्री० ) न्यायशास्त्र ।  
 आन्न तद्० ( क्रि० ) आनन करना, ले आना ।  
 आप तद्० अपना, अपने, स्व ।  
 आप तद्० ( पु० ) [ आप् + अस् ] अष्ट वस्तुओं  
 में एक, जल, पाप ।  
 आपकाज तद्० ( पु० ) आपकाजी, स्वर्णी ।  
 आपण तद्० ( पु० ) [ आप् + ण् + अल् ] पय  
 विक्रयशाला, दुकान, हाट, बाजार ।—कि ( पु० )  
 यणिक, व्यवसायी, दुकानदार ।  
 आपगा तद्० ( स्त्री० ) [ आप् + गस् + ड + आ ]  
 नदी, स्रोतस्वनी ।  
 आपञ्जनक तद्० ( पु० ) [ आपद् + जनक ] वि-  
 पदजनक, अनिष्टकारी ।  
 आपत्ति तद्० ( स्त्री० ) विपत्ति, दुःख, क्लेश ।  
 आपद् तद्० ( स्त्री० ) आपदा, विपद, विपत्ति ।  
 —ग्रस्त ( पु० ) विपन्न, आपत्ति में फसा  
 हुआ ।  
 आपनिक तद्० ( पु० ) पन्नग, पन्ना, मरकत, इन्द्र  
 नीलमणि, देश विशेष ।  
 आपन्न तद्० ( पु० ) प्राप्त शक्य, अभाग, आपद-  
 ग्रस्त, आपदप्राप्त ।—सत्या ( स्त्री० )  
 [ आपन्न + सत्य + आ ] गर्भवती, सुविणी, अन्तः  
 मत्या ।—नाश ( पु० ) [ आप + नश् + घञ् ]  
 आपद नाश, विपत्ति नाश ।  
 आपमित्यक तद्० ( पु० ) [ आपमित + अक् ]  
 विनिमयप्राप्त, बदला किया हुआ, गृहीत  
 द्रव्य ।  
 आपरूप तद्० ( पु० ) आये, आप, ईश्वर,  
 साक्षात् ।  
 आपस तद्० ( पु० ) परस्पर, आप सब, निज,  
 स्वयं ।  
 आपसा तद्० ( स्त्री० ) आप समान, अपने जैसा ।  
 आपा तद्० ( स्त्री० ) बड़ी बहिन, ज्येष्ठा  
 भगिनी, आपली ।

आपाक् तद्० ( पु० ) अयापजाय, कुम्हारों के  
 मिट्टी के घर्तन पकाने का स्थान, थाँदा । ।  
 आपाततः तद्० ( अ० ) सम्प्रति, इस समय के  
 समान ।  
 आपाद्-पर्यन्त तद्० ( अ० ) चरणावधि मस्तक  
 पर्यन्त, पैर से ले कर सिर तक ।  
 आपाद्मस्तक तद्० ( ० ) चरणावधि—सिर  
 पर्यन्त ।  
 आपान तद्० ( पु० ) [ आप् + पा + अनट्. ]  
 मद्यपानार्थ गोष्ठी, मतवालों का झुण्ड, मद्यप,  
 मतवाला ।  
 आपामर-साधारण तद्० ( अ० ) [ आप् + पामर +  
 साधारण ] अन्य मनुष्यों से लेकर सभी  
 मनुष्य, सर्वसाधारण ।  
 आपिञ्चर तद्० ( पु० ) स्वर्ण, हेम, फनक,  
 काञ्चन ।  
 आपीड तद्० ( पु० ) शिखास्थित माला, शोषर,  
 शिरोमाला, शिरोभूषण, मुकुट कलगी ।  
 आपीन तद्० ( पु० ) [ आप् + पा + क्त ] गोस्तन,  
 ईपत् झूल, गौका घन, कठोर, मोटा, बडा ।  
 आपूर्ति तद्० ( स्त्री० ) [ आप् + पूर + क्त ]  
 ईपत् पूरण, सम्यक्, पूरण ।  
 आपुच्छा तद्० ( स्त्री० ) [ आप् + पूच्छ + ड + आ ]  
 आभाषण, आलाप, जिज्ञासा, प्रश्न ।  
 आप्त तद्० ( पु० ) [ आप् + क्त ] प्रत्ययित,  
 विश्वस्त, लक्ष्य, सत्य, बन्धु, अज्ञान, सत्वा,  
 विश्वसित, किसी भी कारण से कभी झूठ न  
 धोलने वाला ।—कारी ( पु० ) [ आप् + कृ +  
 णिन् - ] विश्वासी, विश्वस्त व्यक्ति ।—गर्व  
 ( पु० ) आपाहङ्कार, दम्भ विशिष्ट, दाम्भिक ।  
 —आही ( पु० ) स्वार्थ पर आत्ममर्दि,  
 लोभी ।—धर्म ( पु० ) आत्मीय स्वजन, बन्धु  
 बान्धव, माननीय मित्र ।—सार ( पु० )  
 [ आप् + सृ + घञ् ] आत्मरक्षण, स्वशरीर  
 गोपन, स्वायत्त ।  
 आप्तोक्ति तद्० ( स्त्री० ) [ आप् + क्त ] सिद्धान्त-  
 वाक्य, आप्तवचन, विश्वस्त व्यक्ति का कथन ।

आप्यायित तत्० (गु०) [आ + प्याय + क्त]   
 मूम, प्रीत, सन्मुष्ट, धानन्दित ।

आमच्छन तत्० (गु०) [आ + च्छ + चनट्]   
 धाने या जाने के समय, मित्रों में परस्पर कुशल   
 प्रदान कर्तित धानन्द ।

आभूय तत्० (गु०) [आ + भू + षत्] स्नान,   
 अन्नगाहन, जलमय, सर्वत्र दुहाय ।—घृती (गु०)   
 [आमय + घृती] स्नातक ब्राह्मण धामुत घृती ।

आभूत तत्० (गु०) [आ + भू + क्त] स्नान ।   
 (गु०) कृतस्नान, विहितावगाहन । (गु०)   
 स्नातक, निष्क, भौगा ।—घृती (गु०) [आ +   
 भूत + घृत् + इति] ब्रह्मघर्षं त्यागानन्तर   
 जो गृहस्थ चाणम अन्नलम्बन करते हैं, स्नातक   
 ब्राह्मण, ममाय वेदाध्ययन स्नान शोभ ।

आभू तद्० (स्त्री०) आमल, अफीम ।

आवाधा तत्० (स्त्री०) लम्ब, रेखा विशेष ।

आमरण तत्० (गु०) [आ + मृ + चनट्]   
 मृषण, अलङ्कार गहना ।

आभा तत्० (स्त्री०) प्रभा, शोभा, दीप्ति, द्युति,   
 ज्योति, धानोक, उज्वलता, चमक, शोभा, भङ्क ।

आभाय तत्० (गु०) [आ + भा + अल्]   
 भूमिका, अनुष्ठान, उपक्रमणिका, प्रवन्ध, सम्भाष ।

आभाषण तत्० (गु०) [आ + भा + चनट्]   
 आभाषण, कथन, सम्भाषण ।

आभास तत्० (गु०) [आ + भा + अल्]   
 चद्रक, प्रतिबिम्ब, दीप्तिदोष, अग्निप्राय, अय-   
 तरणिका ।

आभास्वर तत्० (गु०) घोसठ संत्यक, गण देवता   
 विशेष ।

आभिचारक तत्० (गु०) [अभि + चर् + ञक्]   
 अभिचारकर्ता, हिंसा कर्म का प्रयोग करने   
 वाला ।

आभिजात्य तत्० (गु०) वंश संबन्धी, कौलीन्य,   
 कुलीनता, सर्वश, पापिडत्य ।

आभिधानिक तत्० (गु०) जोशवेत्ता, अभि   
 धानोक, अभिधान में प्रविष्ट ।

आभिमुख्य तत्० (गु०) संबोधन, अभिमुख   
 करण, संमुखीनत्व, समक्ष वर्तिता, सम्मुखता,   
 सामना ।

आभीर तत्० (गु०) गोप, अहीर, ग्वाला, ब्राह्मण   
 के ओरसे से अन्वष्टा जाति की स्त्री के गर्भ से   
 उत्पन्न जाति विशेष ।—पल्लि, पल्ली (स्त्री०)   
 गोपग्राम, गोहृद्योप, वधान । (स्त्री०) आभीरी ।

आभूषण तत्० (गु०) अलङ्कार, गहना, मृषण ।

आभ्यासिक तत्० (गु०) श्रुतिधर, अभ्यास-   
 कर्ता ।

आभ्युदयिक तत्० (गु०) आहृ विशेष, आभ्युदय   
 संपन्न, सौभाग्यवात्, शुभान्वित ।

आम तत्० (गु०) [अम + अश्] पाक-   
 रहित, अण्डक, कच्चा, अमिष्ट, (गु०) आमा-   
 शय रोग, आन्तक ।—गन्धि (गु०) गन्ध-   
 युक्त, चित्त का भूम प्रभृति, कच्चे मौस के   
 गन्धयुक्त पदार्थ, दुर्गन्ध ।—चूर आम का   
 सुखा पूर्ण, आम की खटाई ।

आमड़ा तद्० (गु०) फल विशेष ।

आमन्त्रण तत्० (गु०) [आ + मन्त्र + चनट्]   
 संबोधन, आह्वान, निमन्त्रण ।

आमन्त्रित तत्० (गु०) [आ + मन्त्र + क्त]   
 निमन्त्रित, आहूत ।

आमय तत्० (गु०) [आ + मय + अल्] रोग,   
 पीडा, व्याधि ।

आमयायी तत्० (गु०) [आमय + यत् + इत्]   
 रोगी, पीडित ।

आमरक्त तत्० (गु०) उदर रोग विशेष, लाल   
 मल निकलने की पीडा, अतिसार, उदर रोग ।

आमर्श तत्० (गु०) [आ + मृ + अल्] परा-   
 मर्श, विवेचन, सुचिन्ता ।

आमर्ष तत्० (गु०) [आ + मृ + अल्] क्रोध,   
 रोष, राग ।

आमला तद्० (गु०) आमलक, फल विशेष, धात्री-   
 फल, कार्मिक नाम में इस वृक्ष की पूजा होती है ।

आमवात् तत्० (गु०) पित्त से उत्पन्न चर्म   
 रोग ।

आमशूल तत्० ( पु० ) रोग विशेष, अर्जोर्ष होने के कारण उदर को पीड़ा विशेष, वायु गोला, वायु शूल ।

आमात्य तत्० ( पु० ) [ आमा + त्यप् ] प्रधान, मन्त्री, पात्र ।

आमात्र तत्० ( पु० ) [ आम + अद् + क्त ] अक्काच, तरङ्गल, कच्चा अन्न, सीधा, कोरा अन्न ।

आमाशय तत्० ( पु० ) [ आम् + आ + शि + अन् ] अपक्व स्थान, आमस्थली, उदरस्थ एक प्रकार को थैली, अतिसार, आमरोग ।

आमिष तत्० ( पु० ) मौस मत्स्य आदि भोजन को वस्तु, सम्भोग, पूँस, रिसवत, लोभ, सञ्चय, लाभ, काम के गुण, रूप, भोजन ।—मिष ( पु० ) कद्दू पत्ती, बाज पत्ती । ( पु० ) मत्स्य मौस से सन्तुष्ट मनुष्य ।—भुक् ( पु० ) मौस भोक्ता, मौसाशो ।—शरी ( पु० ) मत्स्यमौस भोजन शील, मौस-भक्षक ।

आमूल तत्० ( पु० ) मूल पर्यन्त, कारण, मूला-वधि, पहिले से ।

आमृष्ट तत्० ( पु० ) [ आ + मृप् + क्त ] मर्दित, उच्छेदित, अपमानित ।

आमोद तत्० ( पु० ) [ आ + मुद् + अल् ] अति दूरगामी गन्ध, सौन्दभ, हर्ष, आनन्द, कीमुक ।

आमोदित तत्० ( पु० ) [ आ + मुद् + क्त ] आनन्दित, जात हर्ष, सुगन्धोक्त, सुरभित ।

आमोदी तत्० ( पु० ) [ आ + मुद् + णिष् ] मुख वाचन, मुख को सुगन्धित करने वाली वास्तु, हर्ष विशिष्ट, सुगन्धयुक्त, सौरभान्वित, आह्ला-दित ।

आम्नाय तत्० ( पु० ) [ आ + म्ना + य ] वेद निगम, उपदेश, प्राचीन परिपाटी, सम्प्रदाय ।

आम्बर तद्० ( स्त्री० ) कहकड़ा, बनायटी घुँगा ।

आम्र तत्० ( पु० ) फल विशेष, आम, रसात सहकार ।

आम्राई तद्० ( स्त्री० ) आम का दान, ( सं० ) आम-राजि ।

आम्नेडन तत्० ( पु० ) एक ही बात को पुनः पुनः कथन, पुनरुक्ति, द्विधार या त्रिधार कथित ।

आय तत्० ( पु० ) लाभ, धनागम, उपाज्जन, आमदनी ।

आयत तत्० ( पु० ) [ आ + यत् + क्त ] दीर्घ, लम्बा, विस्तृत, सधवात्प, सधवा का, साधारण धर्म, धूप ।

आयतन तत्० ( पु० ) [ आ + यत् + अनद् ] यह स्थान, देव स्थान, परिसर, प्रस्थ, प्रशस्त, चौड़ा, बड़ा, विशाल, फैला हुआ ।

आयति तत्० ( स्त्री० ) [ आ + यत् + क्त ] उत्तरकाल, भविष्यत्काल ।

आयत्त तत्० ( पु० ) [ आ + यत् + क्त ] अधीन, वशीभूत, वशतापन्न, वरुप ।

आयत्तु तद्० ( पु० ) आजा, आदेश, प्रेरण, यथा "पहुनाई कहँ आयत्तु दोजे" ।—पद्मावत ।

आया तद्० ( स्त्री० ) राइकों को खिलाने वाली, उपमाता, धात्री, धाय ।

आयात तत्० ( पु० ) [ आ + या + क्त ] आगत, उपस्थित ।

आयाम तत्० ( पु० ) [ आ + यम + चञ् ] दैर्घ्य, लम्बा, स्थिति, विस्तार, चौड़ा ।

आयास तत्० ( पु० ) [ आ + यस् + चञ् ] आन्ति, अम, क्लेश, परिश्रम, ठयायाम, प्रयास, यत्न ।

आयुः तत्० ( पु० ) [ आ + अय् + उच् ] जीवित-काल, जीवन समय, उच्च ।

आयुध तत्० ( पु० ) [ आ + युष् + क्त ] हथियार, अस्त्र, शस्त्र, धनुष आदि ।—आगर ( पु० ) [ आयुध + आगर ] अस्त्रगृह ।

आयुधिक तत्० ( पु० ) अस्त्रजीवी, शस्त्राजीव, अस्त्रधारी ।

आयुधीय तत्० ( पु० ) अस्त्रधारी, शस्त्राजीव ।

आयुर्वेद तत्० ( पु० ) [ आयुस् + विद् + अल् ] अष्टादश विद्यान्तर्गत धन्वन्तरि प्रणीत विद्या विशेष, अथर्ववेद का उपाद्ग, चिकित्सा शास्त्र, वैद्यक शास्त्र, निदान शास्त्र ।—१ ( पु० ) आयुर्वेदज्ञ, चिकित्सा व्यवसायी, वैद्य ।

आयुष्कर तत्० ( गु० ) [ आयुस् + कृ + षण् ]  
परमायुजनक, आयु वृद्धि कारक, आयुष्य, आयु-  
वर्द्धक ।

आयुष्काम तत्० ( गु० ) दीर्घजीवी, आयु-  
प्रार्थी ।

आयुष्टोम तत्० ( गु० ) [ आयुस् + स्तोम + अल् ]  
यज्ञ विशेष, आयु वृद्धिकर यज्ञ ।

आयुष्मान् तत्० ( गु० ) [ आयुस् + मत् ] चिर-  
जीवी, दीर्घजीवी, दीर्घायु, ( गु० ) सप्त-  
विंशतियोगों में एक योग विशेष ।

आयुष्य तत्० ( गु० ) पय्य, आयु का हित कारक,  
आयुवर्द्धक ।

आयोगव तत्० ( गु० ) यूद्ध के शौर्य से वैश्या  
के गर्भ में उत्पन्न, जाति विशेष ।

आयोजन तत्० ( गु० ) [ आ + युज् + षनट् ]  
आहरण, तयारी, उद्योग ।

आयोधन तत्० ( गु० ) [ आ + युध् + षनट् ]  
युद्ध, रण, संग्राम, वध ।

आर तद्० ( गु० ) काँटा, पैना, अंकुश, मङ्गल,  
शनिश्चर, झुहार, चमार, तौबा, पीतल ।

आरत्वा तत्० ( स्त्री० ) मूर्ति, प्रतिमा, अर्चा, पूजा ।

आरज तद्० ( गु० ) बड़ा, अष्ट, पूज्य, महाराज ।

आरत तद्० ( गु० ) अर्त, पीड़ित, दुःखित,  
व्याकुल, अत्यन्त दुःखी, दुःख का दयोच्य हुआ,  
अति पीड़ित, दुःखान्वित ।

आरता तद्० ( गु० ) दुल्हे को आरती, विवाह  
की एक रीति विशेष ।

आरति तद्० ( स्त्री० ) ( स्त्री० ) देवता को दीप  
दिवाना, दीपदर्शयन, निवृत्ति ।

आरन तद्० ( गु० ) आरण्य, वन, कानन, यथा—  
“कीन्देहि मायज्ञ आरन रहे” — पाद्मपुराण ।

आरध तत्० ( गु० ) उपकान्त, आरम्भ किया  
गया ।

आरम्भ तत्० ( गु० ) आरम्भ, उपक्रम ।

आरा तद्० ( गु० ) चर्मभेदक अस्त्र, काष्ठ-  
भेदक, अस्त्र, कर्पात, दरांत, ऋकव ।—कस्त  
ककचव्यवहारकारो, लकड़ी चीरने वाला ।

आराति तत्० ( गु० ) शत्रु, विपक्ष, पैरी, अति,  
रिपु ।

आरात् तत्० ( अ० ) दूर, निकट, समीप ।

आरात्रिक तत्० ( गु० ) आरति नीराजन, नीरा-  
जन पात्र, आरति पदीप ।

आराधक तत्० ( गु० ) [ आ + राध् + षक् ]  
पूजक, सेवक, अर्चक, पुजारी ।

आराधन तत्० ( गु० ) [ आ + राध् + षनट् ]  
साधना, उपासना, तोषण ।—( स्त्री० ) [ आ +  
राध् + षण् + था ] उपासना, सेवा, परिचर्या,  
पुष्पा ।

आराधित तत्० ( गु० ) [ आ + राध् + क ] उपा-  
सित, साधित, पूजित ।

आराध्य तत्० ( गु० ) [ आ + राध् + य ] आरा-  
धना के योग्य, उपास्य, नेवनीय ।

आराम तद्० ( गु० ) [ आ + रम् + षण् ] उपवन,  
बाग, विश्राम, उपशम, पीड़ा को शान्ति, सुख ।

आरी तद्० ( स्त्री० ) करौंती, तुरपण ।

आरुधना तद्० ( स्त्री० ) गला दबाना, खाम  
रोक ।

आरुद्ध तत्० [ आ + रुह् + क ] कृत आरोहण,  
वृक्ष आदि पर चढ़ा हुआ, आरोहित, चढ़ा ।

आरोग तद्० ( गु० ) नीरोग, आराम, सुखी, सुख्य,  
रोग रहित ।

आरोग्य तत्० ( गु० ) [ आ + रूज् + रयण् ] रोग  
हीनता, रोगाभाव, अनामय, आराम, स्वास्थ्य ।

आरोप तत्० ( गु० ) [ आ + रूप + षण् ] मिथ्या  
रचना, कल्पना, धनायत ।

आरोपण तत्० ( गु० ) [ आ + रूप + षनट् ]  
चढ़ाव, स्थापन, चढ़ाना ।

आरोपित तत्० ( गु० ) [ आ + रूप + क ]  
कृतारोपण, निहित, काल्पनिक, सोँपा हुआ,  
न्याम रत्ना हुआ ।

आरोहण तत्० ( गु० ) [ आ + रुह् + षनट् ]  
उपधान, चढ़ाव, सीढ़ी, धोपान, नीचे से ऊपर  
जाना ।

आर्जव तत्० ( पु० ) [ ऋजु + ञ ] सारल्य, सरलता, नम्रता, विनय ।

आर्त तत्० ( गु० ) पीडित, भयुक्त, क्लेशित ।  
—नाद ( पु० ) [ आ + नद + घञ् ] पीडित ध्वनि, क्लेश जन्य चोत्कार, कातर स्वर ।

—स्वर ( पु० ) आर्तनाद ।

आर्तव तत्० ( पु० ) खीरज, स्त्रियों का अमु-फाल, मासिक, पुष्प अमु में उत्पन्न ।

आर्त्विज्य तत्० ( पु० ) अतिज का कर्म, पौरो-हित्य, पुरोहित का कर्म ।

आर्थिक तत्० ( गु० ) अर्थज्ञ, विद्वान्, पण्डित, धनी ।—ता ( स्त्री० ) अर्थविषयक ज्ञान ।

आर्द्र तत्० ( गु० ) सजल वस्तु, भीजा, गीला, मरस, मीला ।

आर्द्रक तत्० ( पु० ) ( देखो आदा ) ।

आर्द्रा तत्० ( स्त्री० ) नक्षत्र विशेष, अठारस नक्षत्रों में छठवाँ नक्षत्र ।

आर्य तत्० ( गु० ) सत्कुलोद्भव, अष्ट, पूज्य, वृद्ध, मङ्गल ।—पुत्र ( पु० ) भर्ता, स्वामी, गुरु-पुत्र ।—भट्ट ( पु० ) विख्यात, भारतीय, ज्योतिर्विज्ञान विद्वान्, इनके बनाये ग्रन्थ का नाम आर्यसिद्धान्त है, कुमुदपुर नामक स्थान में ४७५ ई० में यह उत्पन्न हुए थे । इन्होंने ही भारतवर्ष में सौरकेन्द्रिक मत का प्रचार किया है । इन्होंने प्रमाणित किया है कि पृथिवी तथा अन्यान्य ग्रह, सौर जगत में अवस्थित होकर सूर्य को प्रदक्षिणा करते हैं । इन्होंने एक बीज-गणित भी बनाया है ।—मिश्र ( गु० ) गौर-यान्वित, मान्य, पूज्य ।—ज्ञेमीश्वर ( पु० ) सस्कृत का एक कवि, चरहकौशिक नामक नाटक इन्होंने बनाया है । यज्ञाल के पाल यशोधर राजा महीपाल की आज्ञा से इन्होंने अपना नाटक लिखा था, इनका समय, १०२६—१०४० के लगभग समझना चाहिये ।

आर्यावर्त तत्० ( पु० ) [ आर्य + आवर्त ] विन्ध्य और हिमालय पर्वत का मध्यवर्ती देश, उप-भूमि, आर्यों का निवासस्थान ।

आर्शि तद्० ( स्त्री० ) मुकुट, दर्पण, आचना, अल-ङ्कार विशेष ।

आर्ष तत्० ( पु० ) [ ऋषि + ञ ] विवाह विशेष, अष्टविध विवाह में एक विवाह । जिस विवाह में घर से एक या दो गोमिथुन लेकर कन्या दी जाती है वह आर्ष है । ऋषि-प्रणीत, ऋषि-कथित, ऋषि प्रोक्त ।

आर्हत तत्० ( पु० ) जैन तीर्थङ्कर ।

आरल तत्० ( पु० ) पीतवर्ण, हरिद्रावर्ण, हरनाल, वृक्ष विशेष ।

आरलन तद्० ( पु० ) पाक विशेष, अलवण, लवण-रहित ।

आरलयाल तत्० ( पु० ) [ आल + बल + घञ् ] कियारी, धायला, घेरा, जो वृक्षों के नीचे प्रायः जल ठहरने के लिये बनाया जाता है । जलाधार, याला ।

आरलभ्य तत्० ( पु० ) [ आ + लभ् + ञल् ] अलभ्य, आश्रय, उपजीव्य ।

आरलभ्यन तत्० ( पु० ) [ आ + लभ् + ञनट् ] अक्षलभ्यन, आश्रय, गृहकारादि रसों का क्षिभत विशेष, जिसके आश्रय से रस का आधिर्भाव होता है, नायक नायिका प्रतिनामक आदि ।

आरलय तत्० ( पु० ) [ आ + लो + ञल् ] गृह, वासस्थान, घर, गेह, मकान ।

आरलस तद्० ( गु० ) [ आ + लस् + ञल् ] अलस, आलस्ययुक्त, कर्मानुत्साही, सुस्ती, ढोल ।

आरलस्य तत्० ( गु० ) [ आ + लस् + य ] अल-मता, तन्द्रा, मन्दता, कार्यानुत्साहिता ।  
—स्याग जम्भक, जैभाई, गात्रभङ्ग ।

आरला तद्० ( पु० ) दीया का ताल, छोटा गेह ।  
आरलाय-बलाय ( या अरलाय-बलाय ) तद्० आर्य, अशुभ, दुर्निमित्त, अशुभ सूचक चिह्न ।

आरलान तत्० ( पु० ) गजबन्धनस्तम्भ, गजबन्धन रज्जु, हाथी का खूँटा, बेटी, बन्धन, रस्ती, निगड ।

आरलाप तत्० ( पु० ) [ आ + लप् + घञ् ] कयोपकथन, सम्भाषण, कुगल, जिज्ञासा, बात चीत, स्वर मिथान ।

भालापना तद्० ( क्रि० ) स्वर मिलाना, गाना, तान ।

भालापिनी तद्० ( स्त्री० ) [ भालाप + इत् + ईं ]  
घोषा विशेष, यन्त्र विशेष ।

भालापि तद्० ( पु० ) [ भालाप + इत् ] परि-  
चित, कपक, यक्षा ।

भालवू तद्० ( स्त्री० ) लौकी, गुम्बी, फटू ।

भालि तद्० ( स्त्री० ) सत्नी, सपत्न्या, सजनी,  
सहचारिणी, मली, सहेली, सेतु, पंक्ति, ( पु० )  
वृष्टिक, धमर । ( पु० ) विशदागय, निर्मलान्त-  
करण, धनर्ष ।

भालिखित तद्० ( पु० ) [ भा + लिख + क्त ]  
चित्रित, लिखित ।

भालिङ्गन तद्० ( पु० ) [ भा + लिङ्ग + घनट् ]  
अङ्गमिलन, प्रीति पूर्वक परस्पर आश्लेष, अकवौट  
भेट, फोला, मोदी ।

भाली तद्० ( स्त्री० ) [ भाश् + ईं ] सती,  
पंक्ति, वृष्टिक ।

भालीद् तद्० ( पु० ) [ भा + लिह + क्त ] वःण  
छोड़ने के समय का आसन विशेष, बायों पैर  
पीछे की ओर ओर दाहिना पैर सामने रख कर  
बैठना ( पु० ) भक्ति, स्वादिष्ट, अश्रित, भुक्त,  
सेहित ।

भालू तद्० ( पु० ) कन्द विशेष, स्वनाम लयात  
मूल विशेष ।

भालूलायित तद्० ( पु० ) बन्धन रहित, जो  
बौधा हुआ न हो ।

भालेख्य तद्० ( पु० ) [ भा + लिख् + य ]  
चित्रपट, लिखन, लिपि ।

भालेय तद्० ( पु० ) [ भा + लिप् + यञ् ] मलहम,  
लेप, लेपनीय द्रव्य ।

भालोक तद्० ( पु० ) दर्शन, दीप्ति, ज्योति,  
भटई, प्रकार्य ।

भालोकन तद्० ( पु० ) [ भा + लोक् + घनट् ]  
दर्शन, दृष्टन, देखना ।

भालोचन तद्० ( पु० ) [ भा + लच् + घनट् ]  
आन्दोलन, विवेचन, चर्चा दर्शन, ( स्त्री० )  
अनुशीलन, विवेचना, चर्चा, आन्दोलन ।

भालोचित तद्० ( पु० ) [ भा + लुच् + क्त ]  
अनुशीलित, आन्दोलित, विवेचित ।

भालोच्य तद्० ( पु० ) [ भा + लुच् + य ]  
भालोचनीय, विवेचनीय, विचारणीय ।

भालोडना तद्० ( क्रि० ) मन्यना, विमोना,  
घातन ।

भालोल तद्० ( पु० ) चञ्चल, अति चञ्चल ।

भाल्हा तद्० ( पु० ) एक हिन्दू धीर का नाम,  
कवि विशेष, कविता विशेष, ग्रन्थ विशेष ।

भायक तद्० ( पु० ) योमा, भौकी सहना, उत्तर-  
दायित्व ।

भायनी तद्० ( स्त्री० ) भावाई, निकट आना,  
आगामी ।

भायना तद्० ( क्रि० ) पहुँचना, भ्रमना, आना ।

भायनेहारा दे० ( पु० ) अथैया, आसनहार ।

भायदार दे० ( पु० ) मुशोभन, मनोहरता युक्त,  
चमकीला, स्वच्छ ।

भायरण तद्० ( पु० ) [ भा + वृ + घनट् ] 'दाल,  
आच्छादन, दकने को यस्तु ।

भायनी दे० ( पु० ) आना, गुमना, उपस्थित ।

भायभगत दे० ( स्त्री० ) आदर, मान, सत्कार ।

भायभाव दे० ( स्त्री० ) आदर नाम्य ।

भायर्जन तद्० ( पु० ) [ भा + वृज् + घनट् ]  
फँकना, मना करना, रोकना ।

भायर्त तद्० ( पु० ) भँवर, चक्र, केर, घुमाव ।

भायलि तद्० ( स्त्री० ) पंक्ति, श्रेणि, पौति ।

भायश्यक तद्० ( पु० ) अवर्यकर्तव्य, प्रयोजनीय,  
निश्चय, उचित ।—ता ( स्त्री० ) प्रयोजन, दर,  
कार, अयेला ।

भायसथ तद्० ( पु० ) गृह, भयन, नेह, प्रत  
विशेष ।

भायह तद्० ( पु० ) [ भा + वह + अच् ] सप्त  
वायु के घनतम वायु विशेष, ध्रुवायु ।—मान  
( पु० ) क्रमागत, पूर्वापर, क्रमिक ।

भाया दे० ( पु० ) कुम्हा की भट्टी, मूल्याच  
पकाने की प्रक्रिया विशेष ।

भायाई दे० ( पु० ) चर्चा, ममाचार ।



आवागमन तद्० ( पु० ) आना जाना, जन्म-  
मरण ।

आवाजाई दे० ( स्त्री० ) नित्य गमनागमन, सतत  
आनाजाना, " क्या आवाजाई करते हो ?" ।

आवास तत्० ( पु० ) [ आ + वस् + घञ् ] गृह,  
घर, धाम ।

आवाहन तत्० ( पु० ) आहर से बुलाना, ओबशो-  
पचार पूजा का अङ्ग ।

आविर्भाव तत्० ( पु० ) प्रकटता, प्रत्यक्षता, प्रकाश,  
उत्पत्ति ।

आविर्भूत तत्० ( पु० ) [ आविस् + भू + क्त ]  
प्रकाशित, अधिष्ठित, अवतरोर्ण, प्रादुर्भूत, प्रत्यक्ष,  
प्रकट, प्रकाश ।

आविष्कार तत्० ( पु० ) [ आविस् + कृ + घञ् ]  
प्रकाश, आच्छेप, खेद, परिनाय ।

आविष्कृत तत्० ( पु० ) [ अ विस् + कृ + क्त ]  
प्रकाशित, प्रकटित ।

आविष्ट तत्० ( पु० ) [ आ + विष् + क्त ] आवेश-  
युक्त, निविष्ट, अभिरत, अवहित, मनोयोगो,  
लोन, किसी की धुन लग जाना ।

आवृत्त तत्० ( पु० ) [ आ + वृ + क्त ] वेष्टित,  
घेरा, कृतावरण, ढाका, आच्छादित ।

आवृत्ति तत्० ( स्त्री० ) [ आ + वृत् + क्त ]  
उहुरणी, पर्याय, पुन पुन पाठ करके कपठ करना,  
आ-यसन ।

आवेदन तत्० ( पु० ) [ आ + विद् + अन्ट ]  
निवेदन, प्रापन, अभियोग, मनोगत भाव का  
प्रकाश करण ।

आवेद्य-संग्रह तत्० ( पु० ) निवेदन पत्र विशेष,  
जिसके द्वारा जमीदार अपना स्वत्व मन्दाट की सेवा  
में उपस्थित करते हैं ।

आवेश तत्० ( पु० ) [ आ + विष् + घञ् ]  
प्रवेश, प्रसन्नता, सञ्चार, उदय, आसक्ति, अभिनियोग,  
मनोयोग, अटङ्कार विशेष, अवस्मार रोग ।

आवेशन तत्० ( पु० ) [ आ + विष् + अन्ट ]  
प्रवेश, शिरप याना, कारखाना ।

आवी दे० आगे बुलाना ।

आश दे० ( स्त्री० ) रेश, घृत ।

आशिक तत्० [ पु० ] विभागी, हिस्सादार,  
प्रतापी, तेजस्वी ।

आशसा तत्० ( स्त्री० ) [ आ + गस् + ट + आ ]  
प्रार्थना, आकांक्षा, अनुमान, सह, सगम, इच्छा,  
अभिलाष, चाह ।

आशसित तत्० ( पु० ) [ आ + शस् + क्त ]  
प्रार्थित, आकाङ्क्षित, अभिलषित, कथित ।

आशक तत्० ( पु० ) [ आ + शक् + क्त ] सम्पन्न  
शक्ति विशिष्ट, सक्षम, मोहित, लोन ।

आशङ्कनीय तत्० ( पु० ) [ आ + शङ्क + शनीय,  
आशङ्का का स्थान, भयावह, भयस्थान ]

आशङ्का तत्० ( स्त्री० ) [ आ + शङ्क + ङ + आ ]  
भय, डर, सन्देह, घ्रास, साधन, घ्रातङ्क, सशय ।

आशापास ( या आसपास ) तद्० ( स्त्री० ) अवगम,  
चारोभोर, इतस्तत ।

आशय तत्० ( पु० ) [ आ + शी + यञ् ] अभि-  
प्राय, तात्पर्य, आधार, आश्रय, मन, कठहर का  
घृत, धिमध, धर्माधर्म, अट्ट ।

आशा तत्० ( स्त्री० ) [ आश् + ङ + आ ]  
दोर्घाकाङ्क्षा, भरोसा, आसरा, तृष्णा पच्छि विशेष  
दिग् ।—वज्र ( पु० ) आश्वास, प्रत्याशा,  
भरोसा रखना ।—भङ्ग ( पु० ) निराश्वास,  
नैराश्रय, भरोसा टूटना ।

आशातीत तत्० ( पु० ) [ आशा + अतीत ]  
आशा से अधिक, चाह से अधिक ।

आशीस् तद्० ( स्त्री० ) आशीर्वाद, धर, गुण  
शसा, मङ्गल प्रार्थना ।

आशीषि तत्० ( पु० ) [ आशी + विप् + अट् ]  
सर्प, अहि, भुजङ्ग, सौंय ।

आशीर्वचन तत्० ( पु० ) [ आशीस् + वच् + अन्ट ]  
गुमजनक वाक्य, कल्याण वाक्य ।

आशीर्वाद तत्० ( पु० ) आशीस् + यद् + अट् ]  
आशीर्वचन, मङ्गल प्रार्थना ।—क ( पु० ) आशी  
र्वाद कर्ता, कल्याण प्रार्थक ।

आशु तत्० ( पु० ) शीघ्र, द्रुत, सुरन्त शक्ति, अट  
पट, वर्षा काल में उत्पन्न होने वाले धान्य ।

—ग (पु०) शीघ्रगामी, वाण, शर, वायु, मन ।

—तोष (पु०) शीघ्र युद्ध, महादेव, शीघ्र प्रसन्न होने वाला ।

आश्रयं तत्० (पु०) [ आश् + चर + य ] अश्रुव, विस्मय, अद्भुत, चमत्कार, विचित्र, अलौकिक ।

—ान्वित (पु०) [ आश्रयं + अन्वित ] चमत्कृत चिह्नित ।

आश्रम तत्० (पु०) [ आश्रम + अल् ] शास्त्रोक्त धर्म विशेष, ब्रह्मचारी, गृही, यानप्रस्थ, भिक्षु, ब्रह्मचर्यं गार्हस्थ्य यानप्रस्थ शैव्य ये चार प्रकार की अवस्था, जपि मुनि के रहने का स्थान, वन, मठ, स्थान । —गुरु (पु०) कुलाचार्य, कुलपति । —धर्म (पु०) आश्रम के लिये शास्त्र कथित आचार और नियम । —द्वैष्ट (पु०) आश्रम विरुद्ध चलने वाला ।

आश्रय तत्० (पु०) [ आ + श्रि + अल् ] शरण, अवलम्बन, राजनीति, सन्धि आदि पदगुणों के अन्तर्गत गुण विशेष, सामीप्य, रक्षा का स्थान, उपजीव्य, आहार, कारण, विषय, प्रतारणा ।

—भूत (पु०) अवलम्बन, शरण्य, भरोसा-गीर । —स्थान (पु०) आश्रय का स्थान ।

आश्रयण तत्० (पु०) [ आ + श्रि + अणट् ] आश्रय, शरण, अवस्थान ।

आश्रयणीय तत्० (पु०) [ आ + श्रि + णीय ] आश्रय के योग्य, आश्रयोपयुक्त ।

आश्रित तत्० (पु०) [ आ + श्रि + क्त ] कृताश्रय, शरणगत, अधीन । —स्वत्व (पु०) भृत्य का अधिकार, अधीन का अधिकार ।

आश्रित्त तत्० (पु०) [ आ + श्रि + क्त ] आश्रित, अश्रय, कृताश्रित्त ।

आश्रयेण तत्० (पु०) [ आ + श्रि + ण ] आश्रित्त, मिलन, जुड़ना ।

आश्रवसित तत्० (पु०) [ आ + श्रवस् + क्त ] आश्रवस्त, आश्रवसं युक्त, प्रयासान्वित ।

आश्रवस्त तत्० (पु०) [ आ + श्रवस् + क्त ] आश्रवम प्राप्त, आश्रायुक्त ।

आश्रवस्त तत्० (पु०) [ आ + श्रवस् + क्त ] अनुभव, निर्वृति, भविष्यत् शुभाभा, प्रत्याशा, आशाप्रदान, भरोसा, प्रबंध ।

आश्रवसित तत्० (पु०) [ आ + श्रवस् + क्त ] अनुभव, आश्रवस्त, प्रत्याशा-विशिष्ट ।

आश्रिन तत्० (पु०) मास विशेष, शरद ऋतु का दूसरा मास, कुषार, असीज ।

आपाद् तत्० (पु०) वर्षा ऋतु प्रथम मास, सूर्य का मियुन राशिपर स्थिति काल, व्रतधारियों का पलाशपद, मलय पर्वत । —फ (पु०) आपाद् महीना । —भय (पु०) महान् ग्रह, उत्तराषाढा नक्षत्र ।

आपाद्वा तत्० (स्त्री०) [ आ + वह + क्त + आ ] नक्षत्र विशेष, पूर्वाषाढा और उत्तराषाढा नक्षत्र ।

आपाद्दी तत्० (स्त्री०) [ आपाद् + ई ] आपाद् मास की पूर्णिमा ।

आस्त तत्० (स्त्री०) आसा, भरोसा, आसरा ।

आस्तक तत्० (पु०) [ आ + सक्त + क्त ] आस्तिक विशिष्ट, निविष्ट, अनुक्त, मग्न, तन्पर, प्रतिष्ठ ।

—ि (स्त्री०) अनुक्त, आस्तक, प्रणय ।

आस्तङ्ग तत्० (पु०) [ आ + सक्त + अल् ] संसर्ग, संसृष्टि, अनुराग ।

आसत्ति तत्० (स्त्री०) [ आ + सद् + क्त ] सङ्गम, मिलन, लाभ, न्याय मत से पदों का अत्यन्त सन्निधान, अणुबिहित पदोच्चारण, यह शब्दबोध का एक हेतु है, समीपता ।

आसन तत्० (पु०) [ आस् + अणट् ] बैठने का स्थान, पीठ, पीड़ा, बोकी, हाथी का काम्य, गुरु और जीमीष का अवसर प्रतीकार्य अवस्थान, कुश या जल का घना हुआ, जिस पर पूजा के समय बैठा जाता है । योगियों के बैठने का प्रकार, पद्यासन स्वस्तिकासन आदि, सुरत की रीति ।

आसन-तले-भाना दे० (स्त्री०) अधीन, होना, अनुगत होना ।

आसन्दी तत्० (स्त्री०) तटोती, कुम्भी ।

आसन्न तत्० ( गु० ) [ आ + सद् + ऋ ] उप-  
स्थित, निकट, निकटवर्ती, समीप, पास, रोप,  
शवसान ।—काल ( पु० ) अन्तिम काल, मृत्यु  
का समय ।

आसन्न तत्० ( पु० ) [ आ + सू + अल् ] मद्य,  
मदिरा, मधु, मद ।—वृक्ष ( पु० ) ताल वृक्ष ।

आसादन तत्० ( पु० ) [ आ + सद् + णिच् +  
अनट् ] प्रायण, लाभ करण, मिलन ।

आसादित तत्० ( गु० ) [ आ + सद् + णिच्  
+ ऋ ] प्राप्त, लब्ध, मिलित ।

आसावरी तत्० ( स्त्री० ) रागिणी विशेष ।

आसिख तद्० ( स्त्री० ) आशोक, आशीर्वाद ।

आसिद्ध तत्० ( गु० ) [ आ + सिध् + ऋ ] अव-  
रुद्ध, बन्दोर्ध्वत, यथुआ, बन्दी ।

आसिधार तत्० ( पु० ) [ आसि + धृ + घञ् ] युवा  
और युवता का एक स्थान में अविकृत चित्त से  
अवस्थान रूप युत ।

आसीन तत्० ( गु० ) [ आस् + ईन ] उपविष्ट,  
कुतासन, बैठा हुआ मनुष्य ।

आसुर तत्० ( पु० ) दैत्य, विवाह विशेष, असुर  
सम्बन्धी ।

आसुरी तत्० ( स्त्री० ) राई, सर्प, असुर  
सम्बन्धिनी, अस्त्रचिकित्सा ।—चिकित्सा  
( स्त्री० ) आनुमानिक, अस्त्रचिकित्सा ।

आसेचनक तत्० ( गु० ) [ आ + सिच् + अनट् +  
क ] प्रिय दर्शन, जिसकी देखने से तृप्ति नहीं  
होती ।

आस्कन्दित तत्० ( गु० ) [ आ + स्कन्द + ऋ ]  
घोड़ों की गति विशेष, घोड़ों की पाचवीं  
गति, तिरस्कृत ।

आस्कत दे० ( स्त्री० ) आलस्य, ढीलापन, शिथि-  
लता ।—ती ( गु० ) आलसी, ढीला, ठण्डा ।

आस्तरण तत्० ( पु० ) [ आ + स्तृ + अनट् ]  
हाथी की भ्रूण, उत्तम आसन, शय्या ।

आस्तिक तत्० ( पु० ) [ आस्ति + कण् ] मुनि  
विशेष, जरत्कार मुनि, का पुत्र, इनकी माता

का भी जरत्कार नाम था, इनकी माता सर्प-  
राज वासुकी की बहिन थी, महर्षि आस्तिक ने  
पितृकुल और मातृकुल का ब्राह्मण दूर किया था,  
पाण्डववंशीय राजा जनमेजय के सर्पसत्र नामक  
यज्ञ में महातपा आस्तिक ने अपने भाई तथा  
मातुल प्रभृति को भस्म होने से बचाया । ( गु० )  
नास्तिक भिन्न, ईश्वर परायण, ईश्वर और  
परलोक के प्रति विश्वासी, ईश्वरवादी,  
महात्मा ।

आस्था तत्० ( स्त्री० ) यज्ञ, टेक, विश्वास, अव-  
लम्बन, आश्रय, अट्टा, मनोवीर्य, सभा, आदर ।

आस्थान तत्० ( पु० ) [ आ + स्था + अनट् ]  
सभा, समाज, यज्ञ, आश्रम ।

आस्पद तत्० ( पु० ) पद, स्थान, समता ।

आस्फालन तत्० ( पु० ) [ आ + स्फाल + अनट् ]  
आटोप, प्रणामता, महामिका ।

आस्फालित तत्० ( गु० ) [ आ + स्फाल् + ऋ ]  
ताड़ित, गर्वित, कमिपत ।

आस्फोटन तत्० ( पु० ) [ आ + स्फुट + अनट् ]  
प्रफुल्ल होना, विकास, प्रकाश, धार शब्द, ताल  
ठोकना ।

आस्माकीन तत्० ( गु० ) [ आस्मक + ईन ]  
हमारे पक्ष का ।

आस्प तत्० ( पु० ) [ आस् + घ्यण् ] सुख, वदन,  
आनन ।—देश ( पु० ) सुख का स्थान ।

आस्वाद तत्० ( पु० ) [ आ + स्वद + घञ् ]  
रसानुभव, स्वाद ग्रहण, रुचि, चस्का, रस ।

आस्वादन तत्० ( पु० ) [ आ + स्वद + अनट् ]  
रसानुभव, स्वाद ग्रहण, स्वादु ।

आस्वादक तत्० ( पु० ) [ आ + स्वद + कण् ]  
स्वाद ग्रहणकर्ता, स्वाद लेने वाला ।

आस्वादु तत्० ( पु० ) सुख, मिष्ट, स्वादिष्ट,  
स्वादी ।

आहट दे० ( स्त्री० ) शब्द, गरारटा, खर ।

आहर-जाहर दे० ( स्त्री० ) थाना जाना ।

आहरण तत्० ( पु० ) [ आ + ह + अनट् ] स्त्रीनना,  
बूटना, अमोटना ।

साहच तत्० ( पु० ) [ सा + ह + चत् ] रण, युद्ध, पक्ष, याग।

साहचनीय तत्० ( पु० ) [ सा + ह + चनीय ] यद्यपि विशेष।

साहर्तव्य तत्० ( पु० ) [ सा + ह + तव्य ] ग्रहण करने के योग्य, ले खाने के योग्य, संगृहीतव्य।

साहर्ता तत्० ( पु० ) [ सा + ह + त् ] चानेता, चानयन वा उपाजन कर्ता।

साहा तत्० ( अ० ) वेद वा साक्षेप बोधक शब्द।

साहाय्य तत्० ( पु० ) [ सा + ह्ये + चत् ] सुदृ जलाशय, बहवशा, युद्ध साहान, सामन्त्र।

साहार तत्० ( पु० ) [ सा + ह + चत् ] धारण, भोजन, भक्षण।

साहार्य तत्० ( पु० ) [ सा + ह + च्यत् ] साग-न्युक, साहणीय, भोजनार्ह, ( पु० ) नेपथ्य, ध्रुवण आदि के द्वारा निर्मित, नाटकीय में व्यञ्जक विशेष, अङ्ग संस्कार।—शोभा ( स्त्री० ) कृत्रिम शोभा, चित्र अथवा ध्रुवण आदि के द्वारा बनायी शोभा।

साहि तद्० ( क्रि० ) है, ( अ० ) वेद सूचक शब्द।

साहित तत्० ( पु० ) [ सा + धा + क् ] त्वन्त, अर्पित, स्थापित, कृत।—शिशि ( पु० ) [ साहित + शिशि ] साग्निक, अग्निहोत्री।

साहितुण्डिक तत्० ( पु० ) [ साहि + तुण्ड + णिक ] वयाल प्राही, घोंघ पकड़ने वाला, काज बेलिया।

साहुक तत्० ( पु० ) राज विशेष, प्राचीन समय में मृत्तिकायुक्त नगरी के राजा भोज नाम से प्रसिद्ध थे, उसी भोजवंश में अमिजित् नामक एक राजा उत्पन्न हुए, उनकी युग वृत्तति

हुई, पुत्र का नाम साहुक रखा गया, इनकी स्त्री का नाम कारया था, इसीके गर्भ से महाराजा साहुक को देवक और उग्रसेन नामक दो पुत्र हुए थे, देवक श्री कृष्णचन्द्र के मातामह थे, और उग्रसेन कंस का पिता।

साहुति तत्० ( स्त्री० ) [ सा + हु + क्ति ] शाकाल्य, होम की वस्तु, देवता के उद्देश्य में अग्नि से हवि देना, देवयज्ञ, होम।

साहृत तत्० ( पु० ) [ सा + हृ + क् ] निमन्त्रित, आमन्त्रित, कृताह्वान, न्योता हुआ, प्रकार।

साहृत तत्० ( पु० ) [ सा + ह + क् ] अर्जित, धानीत्त, सन्वित, युक्त, गृहीत।

साहो तत्० ( अ० ) विकल्प, प्रयत्न, सन्देश, विचार। साहो/तत्० युक्तिका, ( स्त्री० ) अहमिका, आत्म-व्यापा, आत्मगर्धिता।

साहोभित् तत्० ( अ० ) विकल्प, प्रयत्न, जिज्ञासा।

साह्निक तत्० ( पु० ) दैनिक, दिन साध्य, दिन संयन्त्री, दिवाकृत्य, ( पु० ) भोजन प्रकरण समूह, ग्रन्थ भाग, नित्यक्रिया, इष्टदेवता की नित्य आराधना।

साह्नाद तत्० ( पु० ) [ सा + हृ + द + चत् ] आनन्द, हर्ष, मुष्टि।—जनक ( पु० ) हर्षजनक, आनन्द-वर्द्धक, मुष्टि कर।

साह्नादित तत्० ( पु० ) [ सा + हृ + द + णिच् + क् ] आनन्दित, इष्ट, हर्ष युक्त।

साह्य तत्० ( पु० ) [ सा + ह्ये + चत् ] नाम, संज्ञा, आख्या।

साहान तत्० ( पु० ) [ सा + ह्ये + चतद् ] आवा-हन, निमन्त्रण।

इ

इ, स्वर का तीसरा वर्ण।

इ तत्० ( पु० ) कामदेव, गोप्य।

ई तत्० ( अ० ) भेद, स्त्रीधोक्ति, अगकरण, अनु-कम्पा, वेद, कोय, धन्नाय, दुःख, भावना।

इक तद्० ( पु० ) एक, एक का दूसरा रूप।—अङ्क एक और का गरीर, आधा अङ्क, एक

शरीर, एक अङ्क, एकपक्ष।—छतराज ( पु० ) चक्रवर्ती राज्य, समस्त संसार का एक राज्य, प्रतिहृन्दो रहित राज्य।—ठक ( पु० ) एक ताक, एकटकी, निरुपन्द नेत्र से देखना।—ट्टा ( पु० ) एकठौरा, एकत्र, जमात।—ठौर-रा ( पु० ) एकट्टा, मद्रह।—लौता ( पु० ) एक ही, केवल,

- एक होने से अधिक प्रति पात्र ।—सार ( गु० ) बराबर, सरोखा, समान, समूह ।—सङ्ग ( गु० ) एक साथ ।
- इका तद् ( गु० ) एका, अकेला, अद्वितीय, अनूठा, अनुपम, उत्तम, ( गु० ) एक छोटे या बेल की गाड़ी, इलाहाबादी इका, पटनाहा इका ।
- इक्षु तत् ( गु० ) [ यज् + सु ] ऊष, ईख, केतारी, गन्ना, गांढा ।—काण्ड ( गु० ) इक्षुवृक्ष, शर-मुष्ण, काशतृण ।—रस ( गु० ) ईख का रस, राव । रसोद् ( गु० ) इक्षु रस का समुद्र ।—सार ( गु० ) गुड, पाँड़ ।
- इक्ष्वाकु तत् ( गु० ) धैवश्वंत मनु का पुत्र, सूर्य वश का पत्नी राजा, इन्होंने सर्वप्रथम आयोध्या को अपनी राजधानी बनाया, यह रामचन्द्र के पूर्व पुरुष थे, इनके पुत्र का नाम कुन्ति था । २ काशी का राजा, इस के पिता का नाम सुवन्धु था, यह इक्षुवृक्ष फोड़ कर उत्पन्न हुआ था, इसी कारण इक्ष्वाकु इनका नाम पड़ा था ।
- इङ्ग्लेण्डीय तत् ( गु० ) इङ्ग्लैण्ड देश सन्वन्धी ।
- इङ्गित तत् ( गु० ) [ इङ्ग + क्त ] अभिप्राय वे अनुरूप वेष्टा, सङ्केत, इगारा, गमन, वेदित, भन्वे-पण, इङ्गित भाव ।
- इङ्गुदी तत् ( खो० ) [ इङ्गद + ई ] वृक्षविशेष, इसके फल तैलमय होते हैं, इसका दूसरा नाम वृणविरोषण भी है, क्योंकि इसके तेल से वृण बहुत शीघ्र अच्छे होते हैं ।
- इच्छन तद् ( गु० ) श्रौंख, नेत्र, नयन, दृष्टि, देखना ।
- इच्छा तत् ( खी० ) वाञ्छा, मनोरथ, आकांक्षा वा स्पृहा, अभिलाष ।—अन्यत ( गु० ) इच्छुक, सस्पृह, अभिलाषी, स्वेच्छक, यामना विशिष्ट ।—घती ( खी० ) इच्छा युक्त खी, अभिलाषिणी रमणी ।—चारी ( गु० ) मनमोजी, अपने मन का, मन के अनुसार भ्रमने वाला, स्वतन्त्र ।
- इच्छिन तत् ।—( गु० ) ईप्सित, मनवाञ्छित के अनुसार, चाहा हुआ ।
- इच्छुक तत् ( गु० ) इच्छान्वित, अभिलाषी, आकांक्षी ।
- इज्य तत् ( गु० ) [ यज् + य ] वृहस्पति, देवाचार्य, गुह, ( गु० ) शिक्तक पूज्य ।
- इज्या तत् ( खो० ) [ यज् + य + आ ] दान, याग, यज्ञ, पूजा, अर्वा, सेवा, अष्टविध धर्म का प्रथम धर्म ।—शील ( गु० ) बार बार यज्ञ करने वाला, याजक, यज्ञकारी ।
- इडा तत् ( खो० ) शरीर, के दक्षिण भागस्थित नाडो, सरस्वती, गौ, वचन, पृथिवी, स्वर्ग, आमु गमन, वैश्वन्त मनु की पुत्री, चन्द्रमा के पुत्र, बुध के साथ इसका विवाह हुआ था, इसीके गर्भ से प्रसिद्ध राजा सुकरवा की उत्पत्ति हुई थी ।
- इठलाना दे० ( क्रि० ) इतराना, मोहना, धा-करना ।
- इत तद् ( ख० ) इधर, इस ओर, इस तरफ, यहाँ, इसठोर ।
- इत तत् ( ख० ) नियम, पशुमी विभक्ति का अर्थ, विभाग, यहाँ से, इस हेतु ।—पर ( गु० ) इसके बाद, इसके अनन्तर ।
- इतना तद् ( ख० ) अथवि का बोधक, इयत्तावाची, परिच्छेदक, एतना ।
- इतर तत् ( ख० ) अन्य, भिन्न, नीच, सामान्य ।—विशेष ( गु० ) अन्य, से भिन्न, विभिन्नता, प्रभेद ।—लोक छोटी जाति, दूसरा लोक ।
- इतरेतर तत् ( गु० ) [ इतर + इतर ] अन्यान्य, परन्पर ।
- इतरेद्यु तत् ( ख० ) दूसरे दिन, अन्यदिन ।
- इतराना दे० ( क्रि० ) घब चलना, अभिमान करना ।
- इतराया दे० ( क्रि० ) चौकलाई, भगलिया ।
- इतवार दे० ( गु० ) रविवार, आदित्य वार ।
- इतस्ततः तत् ( ख० ) [ इतम् + तद + तत् ] अत्र तत्र, इधर उधर, चारो ओर ।
- इति तत् ( ख० ) समाप्ति बोधक, अतएव, हेतु परिशेष, प्रकरण प्रकाश, समाप्ति, निदर्शन, प्रकार ।—कथा ( खो० ) अर्थ नून्य वाक्य, अनुप-युक्त वात ।—कर्तव्य ( गु० ) कर्म का अङ्ग, उचित कर्तव्य ।

इतिहास तत् ० ( ५० ) [ इति + इ + चाम ]

पूर्व वृत्तान्त, अतीत काल की घटनाओं का विवरण, प्राचीन कथा, पुरावृत्त, उपाख्यान ।

इतेक दे० ( ५० ) इतनाही एतनाही, इतना ।

इती दे० ( ५० ) इतना नियम, अवधि ।

इत्याम् तत् ० ( ५० ) इस प्रकार, इस तरह ।

इत्यादि तत् ० ( ५० ) प्रभृति, आदि, इससे लेकर और मय ।

इदम् तत् ० ( ५० ) पुत्रोपार्थ, सम्मुखान्वयस्तु, यही ।

इदमित्यम् तत् ० ( ५० ) यह, इस प्रकार, निश्चय ।

इदानीं तत् ० ( ५० ) इस काल में, इस समय में, सम्प्रति, अद्युता ।

इदानीन्तन तत् ० ( ५० ) आधुनिक, सम्प्रति ज्ञात, इस समय का नवीन ।

इधर दे० ( ५० ) यहाँ, इस ठौर, इस म्यान ।

इन तत् ० ( ५० ) पूर्व, समर्थ, राजा पति, ईश्वर, इतन् मन्त्र, १२ की संख्या ।

इन्दारा (या इनारा) तत् ० ( ५० ) कृप, पक्षाक्षुर्षी ।

इन्दिरा तत् ० ( ५० ) [ इन्द्रि + आ ] लक्ष्मी, कम्ला, रत्न ।—चर ( ५० ) विष्णु, नारायण ।

—मन्दिर ( ५० ) नीलोत्पल, नील कमल ।

—यव ( ५० ) [ इन्दिरा + आलय ] यवा, पड़न ।

इन्दीचर तत् ० ( ५० ) [ इन्दी + चर + चण् ] नीलोत्पल, नील कमल ।

इन्दु तत् ० ( ५० ) [ इन्द + इ ] शशी, चन्द्र, कर्पूर ।—फला ( ५० ) इन्दुमेधा, चन्द्र-मेधा ।—कान्त ( ५० ) मणि विशेष, चन्द्र-कान्त मणि, कान्ता ( ५० ) रात्रि, निशा,

यामिनी ।—युत ( ५० ) चन्द्रायण वृत्त ।—भूर्त् ( ५० ) महादेव, शिव ।—मती चन्द्र युक्ता रात्रि, चौकमासी, अयोध्या के राजा अज की खाँ, इसीके गर्भ में महाराज दशरथ उत्पन्न हुए थे, यह विदर्भराज की कन्या थी ।

इन्दुर तत् ० ( ५० ) युव, ब्रह्मा, प्रियक ।

इन्द्र तत् ( ५० ) वैदिक देवता, भारतीय प्राचीन

चार्य ऋषियण, जिन देवताओं की आराधना करते थे, उनमें एक इन्द्र भी हैं । ऋग्वेद में लिखा है, इन्द्र की माता ने बहुत वर्षों तक इन्हें अपने गर्भ में धारण कर रखा था, अतएव होने के अनन्तर इन्द्र ने अपने पिता की पैर पकड़ के मार डाला । २ पौराणिक देवता, अन्यान्य देवता इनके अधीन हैं, अतएव यह देवराज कहे जाते हैं । पुत्रोमा दानव की कन्या शची से इनका

दियाह हुआ था, इनके पुत्र का नाम जयन्त था ।—फोल ( ५० ) मन्दर पर्वत, मन्दरासल ।

—कुञ्जर ( ५० ) इन्द्र का हाथी, ऐरावत, हस्ति ।—गोप ( ५० ) रक्त वर्ण, कीट विशेष, खद्योत ।—जाल ( ५० ) मायाकर्म, हल,

कपट, माया ।—जालिक ( ५० ) मायावी, मायिक, धागीर ।—जित् ( ५० ) लक्ष्मण रावण का पुत्र, मेघनाद ।—तुल्य ( ५० ) इन्द्र के समान सर्वश्रेष्ठ, अधिपति, सर्वोत्तम ।

—त्व ( ५० ) स्वर्ग का आधिपत्य, इन्द्र का अवाधारण धर्म, राजहठ, प्राधान्य ।—धनुष ( ५० ) शरधनु, शूर्प की किरण, मेघों पर पड़ने से आकाश में जो धनुष के आकार का दीर्घ पड़ता है ।—नील ( ५० ) नीलम, नील-मणि ।—नीलक ( ५० ) पन्नग, मरकत, पन्ना ।

—प्रस्य ( ५० ) राजा युधिष्ठिर का बनाया हुआ नगर विशेष, हस्तिनापुर, हरिप्रस्य, गरुप्रस्य, इत्यादि जिसके नाम हैं । इस समय दिल्ली के नाम से वह प्रसिद्ध है, यद्यपि दिल्ली यमुना के

बाएं किनारे पर स्थित है, तथापि इन्द्रप्रस्य यमुना के दक्षिण तट पर स्थित था ।—धधू ( ५० ) भृङ्गकीट विशेष ।—यव औषधि विशेष ।

इन्द्राणी तत् ० ( ५० ) [ इन्द्र + आनी ] यची, इन्द्र पत्नी, मातृका विशेष ।

इन्द्रानुज तत् ० ( ५० ) [ इन्द्र + अनुज ] विष्णु, नारायण, श्रीकृष्ण ।

इन्द्रायरज तत् ० ( ५० ) [ इन्द्र + अवर + अन् + इ ] नारायण, विष्णु ।

इन्द्रायण तद्० ( स्त्री० ) श्रोत्रधि विशेष ।  
इन्द्रायुध तद्० ( पु० ) [ इन्द्र + आयुध ] इन्द्र  
धनु, शक्र धनु, ।

इन्द्रासन तद्० ( पु० ) [ इन्द्र + आसन ] इन्द्र का  
आसन, ऐरावत हस्ति ।

इन्द्रिय तद्० ( पु० ) [ इन्द्र + इय ] इन्द्रो, ज्ञाने-  
न्द्रिय, कर्मेन्द्रिय, अन्तरिन्द्रिय, नेत्र, श्रोत्र, घ्राण,  
जिह्वा, त्वक् और मन ये छ. ज्ञान साधन, वाक्  
पाणि गुदा और उपस्थ ये पाँच कर्मेन्द्रिय, और  
मन बुद्धि चित्त और ब्रह्मकार ये अन्तरेन्द्रिय ।  
—गण ( पु० ) इन्द्रिय सग्रह, एकादश इन्द्रिय ।  
—गोचर ( पु० ) इन्द्रियों का विषय, ज्ञानगम्य,  
ज्ञानव्यवर्ती ।—ग्राह्य ( पु० ) ज्ञानगम्य विषय  
शब्द स्पर्श रूप रसगन्ध आदि ।—दोष ( पु० )  
कामादि दोष, कामुकता, सम्पटता ।—निग्रह  
( पु० ) कामादि इन्द्रिय दमन, चक्षु आदि इन्द्रियों को  
अपने वश में करना ।—विषय ( पु० ) इन्द्रियग्राह्य,  
इन्द्रिय, गोचर, नेत्र आदि के पर्यन्त ।  
—गोचर ( पु० ) [ इन्द्रिय + आगोचर ]  
इन्द्रियों के आगोचर, जो इन्द्रियों से नहीं जाना  
जाय ।—ार्थ ( पु० ) इन्द्रिय जन्य ज्ञान का  
विषय रूप रस गन्ध स्पर्श शब्द ।

इन्द्रो तद्० ( स्त्री० ) देखो इन्द्रिय ।

इन्द्रधन तद्० ( पु० ) [ इन्द्र + धन ] ईंधन, जला-  
वन, सक्की ।

इन्द्रु तद्० ( पु० ) इप्सित, इच्छुक, लोभी ।

इभ तद्० ( पु० ) गज, कुम्भर, हस्ति, हाथी ।—पालक  
( पु० ) महावत, हाथीवान ।

इभ्य तद्० ( पु० ) [ इभ् + य ] धनवाह,  
धनशाली, धनी ।

इमन दे० स्वर का मिलन, रागिनी विशेष ।

—कल्याण रागिनी विशेष ।

इम्ली दे० ( पु० ) वृक्ष विशेष, फल विशेष,  
तिमिन्दी, कुचिया, आम्रफो ।

इमि तद्० ( स्त्री० ) सेवे, इस प्रकार से, यों, इस  
तरह ।

इम्रती दे० ( स्त्री० ) एक प्रकार की मिठाई ।

इरा तद्० ( स्त्री० ) वाणी, भाषा, मद्य, भूमि, जल,  
सरस्वती, करपपत्नी ।—वान् ( पु० ) [ इरा +  
यत् ] समुद्र, मेघ, राजा, अर्जुनपुत्र, अर्जुन के  
आरस तथा ऐरावत का विधवा कन्या के गर्भ से  
यह उत्पन्न हुआ था, कुुरुक्षेत्र के युद्ध में दुर्योधन  
पत्नीय आर्यशृङ्ग नामक राक्षस के द्वारा यह  
निहत हुआ ।

इलशा दे० ( पु० ) इलशि मत्स्य विशेष ।

इलविला तद्० ( स्त्री० ) कुवेर की माता, विश्व-  
श्रवा मुनि की पत्नी ।

इला तद्० ( स्त्री० ) धैर्यवत मनु की कन्या, यह  
विष्णु के प्रसाद में यद्यपि पुरुष हो गयी थी,  
तथापि कुमार वन में जाने के कारण पुन स्त्री  
हो गयी, यह लुप से ठगही गयी थी, इसीके  
गर्भ से पुच्छश उत्पन्न हुए थे ।—वृत ( पु० )  
जम्बूद्वीप के तत्र उर्ध्वान्तर्गत वर्ष विशेष ।

इलायची दे० ( स्त्री० ) एलाची, एला ।

इल्ला दे० ( पु० ) मस्सा, माँस वृद्धि ।

इच तद्० ( स्त्री० ) सदृश, समान, उपमा, सरीला,  
रंसा ।

इष्टु तद्० ( पु० ) [ इष्ट + इ ] घाण, शर, तीर  
काष्ठ ।—धि ( पु० ) तूण, घाणाधार, तत्कस ।

इष्ट तद्० ( पु० ) [ इष्ट + क्त ] यज्ञादि कर्म, यथे-  
प्सित, काम, वस्कार, यज्ञ स्वामी, ( पु० ) आर्य-  
चित्त, वाञ्छित, पूजित, प्रिय ।—गन्ध ( पु० )  
श्रीरभ, सुगन्धि द्रव्य ।—द्वेष ( पु० ) मन्त्रदाता,  
दोषागुह, अभीष्ट देवता, उपास्य देवता ।  
—द्वेषता ( पु० ) उपास्य देवता सब से बड़ा  
देवता, अचना देवता, अथर्व पूजनीय देवता ।

इष्टापूर्व तद्० ( पु० ) यज्ञत्वातादि कर्म, सोमो-  
पकारार्थ यज्ञ रूप यजन आदि ।

इष्टालाप तद्० ( पु० ) अभिलषित, कर्मोप-  
कथन ।

इष्टि तद्० ( स्त्री० ) याग यज्ञ, अभिलाष, इच्छा ।

इष्ट्यास्त तद्० ( पु० ) धनुष, कार्मुक, शरान्न ।

इस्त तद्० यह, आर्षुय या विस्मय बोधक ।

इसचगोल दे० ( पु० ) श्रोत्रधि विशेष ।

इत्थि या इत्थी दे० ( पु० ) कपड़ा चिकनाने का पत्र, जिससे छोटी कपड़े कड़ा बनाते हैं ।

इत्थिर तद्० ( गु० ) स्थिर, निश्चल, अचञ्चल ।

इत्थात दे० ( पु० ) पंजा लोहा, खेड़ी, परिष्कृत लोह ।

इह तद्० ( अ० ) यह ।—लोक, यहाँ का लोक ।

—काल ( पु० ) यह काल, यह समय ।—लोक ( पु० ) यह काल, यह जन्म, यह संसार ।

इहाँ तद्० इस स्थान पर, इस जगह ।

इहि तत्० ( क्रि०वि० ) इहाँ इस में, इस जगह ।

### इ

ई दीर्घ इंकार, चौथा स्वर वर्ण ।

ई तत्० ( अ० ) विषाद, अनुकम्पा, क्रोध, दुःख भावना, प्रत्यक्ष सन्निधि, ( पु० ) कन्दर्प, कामदेव ( स्त्री ) लक्ष्मी ।

ईकार ( पु० ) अक्षर विशेष, ईवर्ण ।

ईज्ञ तत्० ( स्त्री० ) दर्शन, ईक्षण, देखना ।

ईज्ञक तत्० ( पु० ) [ ईञ् + अञ् ] अयलोकनकर्ता, दर्शक, दिक्किया ।

ईक्षुण तत्० ( पु० ) दृष्टि दर्शन, चक्षु ।—श्रवा ( पु० ) सर्प, चक्षुश्रवा ।

ईक्षित तत्० ( गु० ) [ ईञ् + क्त ] दृष्ट, अवलोकित, देखा हुआ ।

ईश तद्० ( पु० ) ऊपर, गम्भा ।

ईश तद्० ( पु० ) ईटा, दण्डका ।

ईश्या तद्० ( पु० ) पुत्र विशेष ।

ईश तत्० ( गु० ) दण्ड, वाञ्छित, चाहा हुआ ।

ईशा तत्० ( स्त्री० ) स्तुति, स्तव, प्रशंसा, नाड़ो विशेष, गुण कथन, प्रतिष्ठा ।

ईशित तत्० ( गु० ) [ ईश + क्त ] स्तुत, प्रशंसित, नुत, कृतस्तव ।

ईश्या तद्० ( पु० ) विन्दा, उदकन, टेकन ।

ईशुरी तत्० ( स्त्री० ) इशुरी, शिरपर भार रखने की जो मन या कपड़े को बनती है ।

ईति तत्० ( स्त्री० ) अष्ट, प्रथास, उपद्रव, आपदा छः प्रकार की ईति, ( अतिवृष्टि, अनावृष्टि, टिहरी पड़ना, मूसों से खेली का नाश, पत्थियों से खेली नाश, राज विद्रोह से क्लेश ) ।

ईद दे० ( पु० ) मुसलमानों का एक पर्व ।

ईदृक तत्० ( गु० ) ईदृग, एतत् सदृश, इसके समान, इस प्रकार ।

ईदृक्ष तत्० ( गु० ) एतत् सदृश, इस प्रकार ।

ईदृश तत्० ( गु० ) ईदृक्, ऐसा, यह, इस रीत ।

ईप्सा तत्० ( स्त्री० ) चाह, वाञ्छा, अभिलाषा ।

ईप्सित तत्० ( गु० ) वाञ्छित, अभिलषित, अभीष्ट ।

ईर्षा तत्० ( स्त्री० ) अक्षमा, परभ्रीकातरता, द्वेष, हिंसा ।—लु ( गु० ) ईर्षा विशिष्ट, परभ्रीकातर, द्वेषयुक्त ।

ईर्ष्या तत्० ( स्त्री० ) हिंसा परभ्रीकातर्य, द्वेष, हिंसका, प्रीह ।—न्यत ( गु० ) हिंसक, ईर्ष्याकारी ।—द्यान् ( गु० ) ईर्ष्याकारी, ईर्ष्यान्यत, हिंसक ।—लु ( गु० ) हिंसा विशिष्ट, अक्षान्ति-युक्त ।

ईर्षो तत्० ( पु० ) प्रोही, द्वेषी, दूसरे को अभिवृद्धि से जनने वाला ।

ईश तत्० ( पु० ) प्रभु स्वामी ईश्वर, ऐश्वर्यशाली, महादेव, स्थान कोण के अधिपति ।—सखा ( पु० ) कुबेर, धनपति ।

ईशा तत्० ( पु० ) हलेश, साङ्गनदख, दुर्गा भगवती ईश्वरी ।

ईशान तत्० ( पु० ) महादेव, रुद्र विशेष, शिव की अष्ट विध मूर्तियों के अन्तर्गत सूर्य मूर्ति, शमी वृक्ष, पूर्व और उत्तर के बीच की दिशा ।—कीर्ण ( पु० ) उत्तर पूर्व के मध्य का कोन ।—ी ( स्त्री० ) दुर्गा भगवती, ईश्वरी, शमी वृक्ष ।

ईशिता तत्० ( गु० ) ईश्वर, प्रभु, अधिपति, प्रधानता महत्त्व ।





उखड़ाना दे० ( क्रि० ) उखाड़ना, उजाड़ना ।  
 उखल उखली तद् ( पु० स्त्री० ) उखली, खोखली,  
 जिसमें चावल आदि फूटते हैं ।  
 उखल पुखल दे० ( पु० ) ओला उठा ।  
 उगत तद् ( पु० ) उपजना, उद्भव, जन्म, उत्पत्ति ।  
 उगना तद् ( क्रि० ) उत्पन्न होना, बढ़ना ।  
 उगते ही जलना प्रारम्भ समय में ही कार्य का नाश  
 होता ।  
 उगलना तद् ( क्रि० ) दमन करना, झूफना, उलटी  
 करना, कै करना ।  
 उगाल तद् ( पु० ) पाहर, सीढी, झूक ।  
 उगाहना तद् ( क्रि० ) हफटा करना, एकत्र करना,  
 बटोरना, समेटना ।  
 उग्र तद् ( पु० ) उत्कट, रौद्र, तीक्ष्ण, कटु क्रोधी,  
 कठिन, वत्सनाम नामक विष, महाद्विष, शिव की  
 यायु मूर्ति, सवित्र की औरत तथा यूद्ध स्त्रीके गर्भ  
 से उत्पन्न जाति विशेष ।—गन्ध ( पु० ) उत्कट  
 गन्धद्रव्य, तीक्ष्णगन्ध ।—चण्डा ( स्त्री० ) भग-  
 वती की मूर्ति विशेष, इनके अठारह भुजा हैं ।  
 आश्रितन कृष्णा भवमी को कौटि योगिनी परि-  
 वेष्टित, अष्टादशभुजासमन्वित इसी उग्र चण्डी की  
 पूजा होती है ।—ता ( स्त्री० ) कठोरता कठि-  
 नता ।—तारा ( स्त्री ) भगवती की मूर्ति विशेष,  
 इनका दूसरा नाम मातङ्गिनी है ।—स्वभाव ( पु० )  
 कठोर-चित्त, कठिन हृदय ।—सेन ( पु० ) यदु-  
 संघी राजा आहुक का पुत्र और कंस का पिता,  
 मथुरा का राजा ।  
 उघड़ना दे० ( क्रि० ) नङ्गा होना, व्यक्त होना,  
 प्रकाशित होना ।  
 उघरहिं दे० छुलते हैं, छुल जाते हैं, स्पष्ट हो जाते  
 हैं, मंगे हो जाते हैं ।  
 उघरे दे० खुले, प्रकट हुए, प्रकाशित हुए, छुले हुए ।  
 उखाड़ना दे० ( क्रि० ) नङ्गा करना, खोलना, व्यक्त  
 करना ।  
 उखाड़ दे० ( पु० ) उखाड़नेहारा, प्रकाशक ।  
 उच्च तद् ( श्र ) उच्च, उन्नत, बड़ा ।  
 उच्चनीच तद् उच्चनीच, असमान, निम्नोन्नत,  
 उच्चावच ।

उच्चकना दे० ( क्रि० ) कूद के उठना, उबलना, कूदना ।  
 उच्चवा दे० ( पु० ) ठग गांठकटा, चोर, छुली, पापपत्नी ।  
 उच्चटना दे० ( क्रि० ) उखड़ना, बिखलना, बिखरना,  
 उदास होना, मन नहीं लगना, नींद का टूटना ।  
 उचरङ्क तद् ( पु० ) पतङ्क, मुनगा ।  
 उचरना तद् ( क्रि० ) उच्चार करना, कहना, धीरे  
 धीरे चलना, शकुन विशेष, काक की गति विशेष  
 से भावी आगमन का अनुमान "उचरङ्ककाक पिया  
 भोर दायत" ।  
 उचलना तद् ( क्रि० ) बिलगाना, अलग करना ।  
 उचा दे० ( क्रि० वि० ) उठाय, उचांकर, उभार,  
 उभारकर ।  
 उचाटना तद् ( क्रि० ) पृथक् करना, अलग करना,  
 उघाट होना, उदास होना, जी नहीं लगना, उचाटी  
 लगना ।  
 उचाटु तद् ( पु० ) उखड़ा हुआ, व्यग्रचित्त, उचटा  
 हुआ, उचटा, उखड़ा, हटा ।  
 उचित तद् ( पु० ) [उच + त] न्यस्त, विदित, परि-  
 चित, योग्य, पदार्थ, न्याय ।  
 उचेलना दे० ( क्रि० ) उधेरना, अलग करना ।  
 उचोट दे० ( पु० ) टोकर, ठेक, चोट ।  
 उच्च तद् ( पु० ) ऊर्ध्व, उन्नत, प्रांग, ऊंचा, बड़ा,  
 युक्त उच्चुक्त, उच्चिद्धत ।—तरु ( पु० ) नारिकेल वृक्ष,  
 ( पु० ) ऊंचावृक्ष ।—ता ( स्त्री० ) ऊर्ध्व, परिमाण,  
 उच्च ।—नीच ( पु० ) निम्नोन्नत, असमान ।  
 —भावी ( पु० ) कद्रवका, उग्रवका ।—मना  
 ( पु० ) सदन्तःकरण, महाशय ।—शिला, ( स्त्री० )  
 अधिक शिवा उन्नतशिवा ।—स्वर ( पु० ) बड़ा  
 शब्द, दूर गायी स्वर ।  
 उघाट तद् ( पु० ) उचाटी, उदास, अकवि ।  
 उच्चार तद् ( पु० ) [उच् + चर् + धञ्] विद्या, मूल मूल  
 पुरीय, ( बहुत लोग उच्चारण के अर्थ में उच्चार शब्द  
 का प्रयोग करते हैं, परन्तु वह प्रयोग अत्यन्त  
 अशुद्ध है ) ।  
 उच्चारण तद् ( पु० ) [उच् + चर + णि + षनट्]  
 कथन, कहना, निकलना, उल्लेख, शब्द प्रयोग ।

उच्चारणीय तत्० (गु०) [उत् + चर + णिच् + ष-  
नीय] ऊच्चारितश्च कथनीय, उच्चारण करने के  
योग्य ।

उच्चारित तत्० (गु०) [उत् + चर + णिच् + क्त]  
कथित, उक्त, अभिहित ।

उच्चैः तत्० (श्र०) ऊर्ध्व, ऊपर, ऊंचा, बड़ा ।  
—शब्द ( गु० ) उच्चस्वर, चीत्कार, चिचियाना,  
चिल्लाना ।—श्रवा (गु०) इन्द्र का घोड़ा, देवराज  
इन्द्र को यह समुद्रमन्थन के समय मिला है ।

उच्छ्वास तत्० (गु०) [उत् + श्वस् + धञ्] श्वास,  
श्वाशा प्रकरण ।

उच्छिन्न तत्० (गु०) [उत् + छिद् + क्त] उच्छन्न,  
उखड़ा, निर्मूल, विनष्ट, व्यथित, छिन्न भिन्न ।  
—ता (स्त्री०) नाग, जण्डन ।

उच्छिष्ट तत्० (गु०) [उत् + शिप् + क्त] भोजन का  
शेषविष्ट भूटा, त्यक्त ।—भोजन (गु०) भुक्ताविष्ट  
आहार, शेषविष्ट भोजन, बूटा खाना ।

उच्छृङ्खल तत्० (गु०) [उत् + शृङ्खल्] शृङ्खला रहित  
श्रवाध, अनियन्त्रित निरङ्कुश, अनर्गल, विशृङ्खल ।

उच्छेद तत्० (गु०) [उत् + छिद् + श्ल] उन्मूलन,  
उत्पादन, विनाश ।

उच्छ्राप तत्० (गु०) [उत् + श्रा + क्त] पर्यंत वृत्त  
आदि की उच्चता, उच्च परिमाण ।

उच्छ्रित तत्० (गु०) [ उत् + क्ति + उक्त ] उन्नत,  
उच्च, प्रवृद्ध ।

उच्छ्रुत तत्० (स्त्री०) गोदी, गोद, उत्सृष्ट, कनिया  
श्रुत ।

उच्छलना तद्० (क्रि०) फुदकना, फुदना, उछाल  
भारना ।

उच्छाड दे० (गु०) धमन, श्रोक, रद्द ।  
उच्छालना (क्रि०) ऊपर फेंक के लोकेना ।

उच्छाह तद्० (गु०) उत्साह, आनन्द, हर्ष ।  
उजड़ दे० (गु०) उतावला, अप्रवीण, उच्छृङ्खल,  
चौगाना, शून्य, पटपर, जनशून्यस्थान ।

उजड़ना दे० (क्रि०) उखड़ना, विनशाना, ( वि० )  
उजरे पुजरे, नष्ट हुए, धीरान ।

उजल तद्० (गु०) निर्मल, चमक, भटक, उज्यल,  
स्वच्छ, रवेत ।

उजयाना दे० (क्रि०) बलायाना, उभायाना ।

उजयार दे० (गु०) उजैला, प्रकाश, चाँदनी, रोशनी ।

उजागर दे० (गु०) चमकीला, यशस्वी, प्रसिद्ध  
विख्यात, प्रतापी ।

उजाड़ दे० (गु०) उच्छिन्न, सूना, पटपर, ( क्रि० ) ।  
—ना नाश करना, चौपट करना, नष्ट विनष्ट  
करना ।

उजान दे० (गु०) नदी का चढ़ाव, ऊंचापन ।

उजारि दे० उजाड़कर, नाशकर के, नष्टकरके, मिटा  
करके ।

उजाला तद्० (गु०) चमक, प्रकाश, तेज ।

उजल तद्० (गु०) स्वच्छ, निर्मल, चमकीला, प्रका-  
शित, दीप्तिगुण ।

उज्ज्वल तत्० (गु०) देखो उज्जल ।

उज्ज्वलन तत्० (गु०) [उत् + ज्वल् + शानट्] उद्दी-  
पन, प्रकाश करना, चमकना, ऊपर की ओर ज्वाला  
जाना ।

उज्ज्वित तत्० (गु०) [उत् + जटम्भ + क्त] प्रफुल्ल,  
विकसित, प्रस्फुटित, (गु०) चेष्टा, श्रवण ।

उज्जेन तद्० (गु०) उज्जयिनी नगरी, विशालापुरी,  
(देखो श्रवन्ती) ।

उभकना दे० (क्रि०) ताकना, भाकना ।

उभलना दे० (क्रि०) उँडेलना, रिक्त करना, खाली  
करना, एक पात्र की यस्तु दूसरे पात्र में रखना ।

उभलित तद्० (गु०) खोबा हुआ, डाला हुआ ।

उन्धित तत्० (गु०) [उञ्ज + क्त] उत्सृष्ट, त्यक्त,  
वर्जित ।

उच्छ तत्० (गु०) [उत् + श्रल्] हेय, चुद्र ।—वृत्ति  
(स्त्री०) सामान्य जीविका, जघन्य, आजीव्य, मुनि  
वृत्ति, कटे हुए खेत में गिरे हुए अन्न से वृत्ति  
निर्वाह ।—शिल (गु०) जपेचित अन्न का संग्रह ।

उच्छशील तत्० (गु०) उच्छजीवी, अति सामान्य  
कर्म से जीविका निर्वाह करने वाले, मुनि क्षयि ।

उट तत्० (गु०) तृण, तिनका, ऊर्ण, पन्ना ।—ज  
(गु०) पर्यशाला, पत्रचित गृह, पत्तों से बना घर ।

उटकरलस दे० (गु०) श्रविषेचक, उतावला ।

उट्टङ्गन तत्० (गु०) उद्धेत, इङ्गित, प्रमङ्ग, प्रस्ताय ।

उट्टङ्कित तत्० (गु०) संकेतित, चिन्हित, उल्लेखित, उत्थापित ।  
 उट्टङ्गन दे० (पु०) टुक, आधार, आधार्य, आड़ ।  
 उठना तद्० (क्रि०) उगना, चढ़ना, खड़ा होना ।  
 उठवैठ तद्० (स्त्री०) बिलबिली, चञ्चलपन, असुख, अधिक क्लेश, "उठवैठ के मँने रात बिताई" ।  
 उठवैया तद्० (पु०) उठरू, उठाने हारा ।  
 उठल्लू तद्० अस्थिर, चलबल, चपल, चञ्चल ।  
 उठाईगीरा तद्० (गु०) चोटा, हयगपक, ठग, उचका ।  
 उठान तद्० (पु०) उदय, दिगार्द्र, आंगन ।  
 उठाना तद्० (क्रि०) खड़ा करना, उधार लेना, दूरी करना, खर्च करना ।  
 उठा देना तद्० दूर करना, उभारना, भड़काना ।  
 उडगण तद्० (पु०) तादे, नक्षत्रगण, नक्षत्रसवुह ।  
 उडचलना तद्० (क्रि०) झकड़ना, इतराना ।  
 उडती तद्० (पु०) अस्थिर अनिश्चित, अमूलक, जनश्रुति ।  
 उडना तद्० (क्रि०) पक्षी का आकाश में चलना, आकाशगमन ।  
 उड्का तद्० (पु०) अपठ्यमी, सुटाक, कृषा धन नाश शीघ्र, अधिक खर्चीला ।  
 उड्का तद्० (पु०) उडैया, लेभागा, अपहरणकर्ता ।  
 उडान तद्० (स्त्री०) शूदना, पविर्षी की चाल ।  
 उडाना तद्० (क्रि०) उड़ा देना, भगाना, सुटाना ।  
 —पुडाना सुटाना, गवाना, अपठ्यय करना, नाश करना ।  
 उड्वाहि तद्० उड़ते हैं, भगते हैं, नाश करते हैं ।  
 उड्वाही तद्० उड़ते हैं, उड़ जाते हैं ।  
 उड्हीन तद्० (पु०) उड़ना, परवाज होना ।  
 उड्हीयमान तद्० (पु०) उड़नेवाला, आकाशगामी, नभधर ।  
 उडू तद्० (पु०) नक्षत्र, राशि, तारा ।—पय (पु०) आकाश, गगन, नभस्थल ।  
 उडुप तद्० (पु०) चन्द्र, नाभ, घनई, होंगी ।  
 उडुस दे० (पु०) लटमल, खटकीरा ।  
 उडकना दे० (क्रि०) उलटाना, चौंधाना ।

उडङ्गना दे० (क्रि०) कपेट लेना, सेटना, पार्थ पारवर्तन करना ।  
 उडना दे० खोड़ना, कपड़ा पहिनना ।  
 उडाना दे० आन्धादन करना, टकना, कपड़ा पहिनना ;  
 उडैया दे० (पु०) खोड़नेवाला, पहिननेवाला ।  
 उडेलना दे० डालना, उकलना ।  
 उडत तद्० (स्त्री०) उधर, उम ओर, उस तरफ ।  
 उडध्य तद्० (पु०) [उत् + य] मुनि विधेय, अङ्गिरा का पुत्र, बृहस्पति का ज्येष्ठ सहोदर ।—गुज (पु०) [उत् + गु] बृहस्पति ।  
 उडतना तद्० (स्त्री०) उता ही, उतना ही, उता, परिमाण विधेय ।  
 उडरण तद्० (स्त्री०) उतार, उटार, मुक्ति ।  
 उडरना तद्० (क्रि०) नीचे खाना, घट जाना, टिकना, घास लेना, विधाम करना, किनारे पहुँचना, पार होना, लाँघना, घटना, कम होना, उदास होना, फीका पड़ना, यथा "आजकल उसका रङ्ग उतर गया" ।  
 उडली तद्० (पु०) उतावला, चबरा, व्यस्त, उवाकुल व्यय ।  
 उडार तद्० (पु०) नीचे खाना, घटी ।  
 उडारण तद्० (स्त्री०) टुकड़ा, टुक, गपड ।  
 उडारा तद्० (पु०) डाल, अपमान, दण्ड ।  
 उडावल दे० (स्त्री०) शीघ्रता, वेग, गुताई, कहीं कहीं उताहल भी कहा जाता है ।  
 उडावली दे० (पु०) वेगो, शीघ्र, गुतीला ।  
 उड्तीर्ण तद्० (पु०) [उत् + तृ + ण] वज्रहून, पारगता, पार पहुँचा, सफल ।  
 उड्क तद्० (पु०) उन्मना, अन्वयमत्सक, उड्दिग्र, दम्ब, उत्करितत ।  
 उड्कट तद्० (पु०) [उत् + कट + ण] तीव्र, मज, विषम, सङ्घ, कठिन, दुस्सह, उड्दाम, कठोर, उग्र, अधिक, दुःसाध्य ।  
 उड्कण्ठा तत्० (स्त्री०) अमिताया, घेड, उत्कनिका, इष्ट प्राप्ति के लिये विलम्ब का अमान, प्रियप्राप्ति

जन्य उदासो, अन्यमनस्कता, ध्याकुलता, ध्यस्ताता, भायना, चिन्ता, श्रोत्रमुक्च उद्देग ।

उत्कण्ठित तत्० (गु०) उत्कण्ठायुक्त, उत्सुक, उन्मना, उद्विग्न, भायित, चिन्तित ।—ता तत्० (स्त्री०) चिन्तान्विता, उद्विग्ना, नायिका विशेष, सङ्केत स्थान में नायक के न आने से अनुत्पन्ना, इमे उतकामी कहते हैं ।

यथा—“आप जाय सङ्केत में पीय न आयो होय, ताकी मन चिन्ता करे उत्तका कहिये सोय” ।

मतिराम  
उत्कर्ष तत्० (गु०) [उत् + कृष् + अल्] प्रधानत्व, श्रेष्ठता, आधिपत्य, उत्तमता, श्रेष्ठपन ।—ता (स्त्री०) श्रेष्ठता, प्रवृत्ता ।

उत्कल तत् (गु०) देग विशेष, इसका दूसरा नाम श्रोह भी था, इस समय उडीसा देश के नाम से प्रसिद्ध है । ताम्रचिप्री नदी के दक्षिण किनारे पर बसा है और कपिशा नदी तक चला गया है । इसके प्रसिद्ध नगर पुरी और कटक हैं । पुरी ही में जगन्नाथ जी का मन्दिर है ।

उत्कीर्ण तद्० (गु०) क्षत, खोदित, उत्क्षिप्त, पेयित, रोदा हुआ ।

उत्कृष्ट तत्० (गु०) [उत् + कृष्ट + क्] उत्कर्ष विशिष्ट, अतिशय, प्रकृष्ट, प्रशस्त, सर्वोत्तम, श्रेष्ठ ।—ता (स्त्री) उत्तमता, उत्कर्ष ।

उत्क्रान्त तत्० (गु०) [उत् + क्रम + क्] निर्गत, ऊपर गया हुआ, उन्नतित ।

उत्क्रान्ति तत्० (स्त्री०) मृत्यु, मरण ।

उत्क्रोश तत्० (गु०) पत्रि विशेष, कुररी, टिट्टिम, राजपक्षी, चिह्नाना ।

उत्स्रात तत्० (गु०) उत् + स्रात् + क्, उन्मूलित, उत्पाटित, विदारित ।

उत्त स तत्० (गु०) कर्षण, कर्षण, श्रेष्ठ, शिरोमूषण, कनकूपा ।

उत्तम तत्० (गु०) [उत् + तप् + क्] तम, सन्तम, उष्ण, दग्ध, परिष्कृत, तापित, चिन्तित, भायित ।

—ता (स्त्री०) उष्णता, सन्ताप ।

उत्तम तत्० (गु०) [उत् + तम + अल्] भद्र, उत्कृष्ट, प्रधान, सुख्य, श्रेष्ठ, नायक, भेद, राजा उत्तानपाद

का पुत्र, उत्तानपाद की प्रिया सुमति के गर्भ से यह उत्पन्न हुआ था, आविद्यात् अस्तथा ही में उत्तम अक्षर खेलने किसी घन में गया, और यहाँ एक यज्ञ ने उसे मार डाला ।—ता (स्त्री०) उत्कर्ष, सौन्दर्य ।—पद् (गु०) श्रेष्ठपद, उन्नतपद ।—न (गु०) [उत्तम + ञण] शणदाता, महाजन ।—संग्रह (गु०) सम्यक संग्रह, एकान्त में परबी के साथ परस्पर आलिङ्गन ।—साहस (गु०) दण्ड विशेष, अस्ती हजार पण परिमित दण्ड, अतिशय साहस, दुःसाहस ।—ता (स्त्री०) उत्कृष्टा नारी, श्रेष्ठा ।—ता (गु०) [उत्तम + अङ्ग] मस्तक, गिर, मुण्ड ।—उत्तम (गु०) [उत्तम + उत्तम] अतिशय, उत्कृष्ट, श्रेष्ठ से भी श्रेष्ठ, परमोत्कृष्ट ।

उत्तर तत्० [उत् + त् + अल्] प्रतिवचन, प्रतिवाक्य, समाधान, (गु०) उत्तर, अनन्तर, दिक् विशेष, (गु०) पद्मत्, (गु०) विराट राजपुत्र ।—काल (गु०) भविष्यत् काल, आगामी समय ।—कुरु (गु०) जम्बु द्वीप के नववर्षों के अन्तर्गत एकवर्ष ।—कोशला (स्त्री०) अयोध्या नगरी, मूर्ध्व वशी राजाओं की प्राचीन राजधानी ।—क्रिया (स्त्री०) प्रतिवचनदान, अन्येष्टि क्रिया, सायत्सरिक श्राद्ध आदि पितृकर्म ।—च्छद् (गु०) प्रच्छदपद, आच्छादन वस्त्र, परांग पोश ।—पद्म (गु०) सिद्धान्त, समाधान, विचार विशेष ।—प्रत्युत्तर (गु०) वादानुवाद, तर्क ।—ता (स्त्री०) मत्स्य देश के राजा विराट की कन्या, यह अर्जुन पुत्र अभिमन्यु से ध्याही गई थी, इसीके गर्भ से राजा परीक्षित उत्पन्न हुए थे ।—अधिकारी (गु०) मृत्यु के बाद अधिकारी, दामाद, धनग्राही, वारिस ।

उत्तराफाल्गुनी तत्० (स्त्री०) नक्षत्र विशेष, सत्ताईस नक्षत्रों के अन्तर्गत वारहवा नक्षत्र ।

उत्तरभाद्रपद तत्० (गु०) हृषीसर्वा नक्षत्र ।

उत्तरायण तत्० (गु०) सूर्य का उत्तर दिशा में गमन, विषयत् रेखा के उत्तर भाग में सूर्य का स्थिति काल उत्तरायण, भाग से लेकर छ महीना, देवताओं का दिन ।

उत्तरार्द्ध तत्० (गु०) उत्तर का आधा हिस्सा, विह्वल भाग ।

उत्तरापाङ्ग तत्० (स्त्री०) एङ्गीमयां नञश्च ।  
 उत्तराहा तद्० उत्तर दिशा का ।  
 उत्तरीय तत्० (गु०) उत्तर देशवासी, ऊपर रखने का  
 कपड़ा, दुपट्टा ।  
 उत्तरोत्तर तत्० (गु०) [उत्तर + उत्तर,] परस्पर  
 क्रम से, एक के अनन्तर एक, आगे आगे ।  
 उत्तान तत्० (गु०) [उत् + तन + धञ,] उन्मुख,  
 ऊर्ध्वमुख, चित्त, उद्यत्ता ।—पात्र (गु०) ताया, रोटी  
 सेकने का घर्तन ।—पाद् (गु०) राजा विशेष,  
 स्वायम्भुव मनु का पुत्र, नञश्च विशेष ।—शय  
 (गु०) बहुत छोटा लड़का, विस मोने वाला ।  
 उत्साप तत्० (गु०) [उत् + तप् + धञ,] तैज, गरमी,  
 सन्नाप, उष्णता ।  
 उत्सापन तत्० (गु०) [उत् + तप् + णिप् + धनट्,]  
 सन्नापन, उष्णकरण ।  
 उत्साल तद्० (गु०) उत्कट, महत् श्रेष्ठ, भवानक  
 त्वरित ।  
 उत्तिष्ठमान् तत्० (गु०) उत्थानशील, वर्द्धनशील,  
 वर्द्धमान ।  
 उत्तीर्ण तत्० (गु०) पारमाप्त, पारङ्गत, मुक्त, उद्गत,  
 उपनति ।  
 उत्तुङ्ग तत्० (गु०) उच्च, ऊर्ध्व, उन्नत, ऊँचा ।  
 उत्तु दे० (गु०) शुनत, कुम्भाव, पतं, तह, घरी  
 ।—करना (क्रि०) तह जमाना, चुनना, पतं  
 लगाना, विधिपूर्वक करना ।  
 उत्पक तद्० (गु०) वर्जित, परित्यक्त, छोड़ा ।  
 उत्पजना तत्० (स्त्री०) ह्यकुल कल्पे, भ्रष्टार्थं,  
 किञ्चि कार्यं मे पुनः पुनः प्रवर्तनं, प्रेरणा, मार्जना ।  
 उत्पजित तत्० (गु०) [उत् + क,] प्रेरित, पुनः  
 पुनः आदेशित, तर्जित धिक्क, भ्रष्टार्थं, शापित ।  
 उत्पीलन तत्० (गु०) [उत् + तुल् + प्रवट्] ऊर्ध्व  
 नयन, नीलना, उत्पाटन, उत्पाड़ना, ऊपर खींचना ।  
 उत्पथान तत्० (गु०) [उत् + प्थ + धनट्] सैन्य,  
 युद्ध, पौरुष, पुत्रक, उद्यम, उद्गम, हर्ष, आंगन,  
 वैश्य, मनोवर्षा, तन्त्र, त्यमण्डल, सैन्य, चिन्ता,  
 सङ्घिषट्, उर्ध्विष्ट, उठाव ।—कादशी (स्त्री०)  
 कार्तिक मास के शुक्लपक्ष की एकादशी, उमी दिन  
 मेवशापी जायत होते हैं ।

उत्थापन तत्० (गु०) [उत् + स्था + णिप्  
 + धनट्] उठावना, उचालना ।  
 उत्थित तत्० (गु०) [उत् + स्था + क] उत्पन्न,  
 उत्थित, वृद्धि विधिष्ट, उठा हुआ ।—उत्थुलि  
 (स्त्री०) विस्तृत आङ्गुलि, कटाल, शरपड़ ।  
 उत्पतन तत्० (गु०) [उत् + पत् + धनट्] ऊर्ध्व  
 गमन, उत्पत्ति, पक्षी का उड़ना, ऊपर उठना ।  
 उत्पत्ति (गु०) [उत् + पत् + क] ऊपर गया,  
 ऊर्ध्व गमन ।  
 उत्पत्ति तत्० (स्त्री०) [उत् + पत् + क्ति] जनन,  
 जन्म, उद्भव, आदि ।—शाली (गु०) जन्म  
 विधिष्ट, जो उत्पन्न होता है ।  
 उत्पथ तत्० (गु०) कुमार्ग, कुमार्गगमन, मत्थ-  
 च्युत ।  
 उत्पन्न तत्० (गु०) [उत् + पद् + क] उत्पत्ति  
 विधिष्ट, जात, जन्मा हुआ, जन्मित ।  
 उत्पल तत्० (गु०) नीलकमल, नीलपद्म, पद्ममल  
 मे उत्पन्न होने वाले पुष्प मात्र ।—पत्र (गु०)  
 पञ्चपत्र, खोनलक्षत ।  
 उत्पाटन तत्० (गु०) मूल सहित उखाड़ना,  
 उन्मूलन ।  
 उत्पत्ति तत् (गु०) [उत् + पत् + घञ्] उपद्रव,  
 दौरास्य, दुष्टता, विगाह, हानि, अन्धेर ।—घात  
 (गु०) बयण्डल, अन्धइ ।—ग्रस्त (गु०)  
 उपद्रव युक्त, उपद्रुत ।  
 उत्पादक तत्० (गु०) [उत् + पद् + कृ] जनक,  
 उत्पत्ति कर्ता ।  
 उत्पादन तत्० (गु०) [उत् + पद् + णिप् + धनट्]  
 जनन, उत्पन्न करना, जन्माना, जन्मवाना,  
 उपजाना ।  
 उत्पादिका तत्० (स्त्री०) [उत् + पद् + इक्  
 + धा] जन्मी, उत्पादन कारिणी, माता,  
 प्रति पदार्थ में एक प्रकार की शक्ति, उत्पा-  
 दिका शक्ति ।  
 उत्पीडन तत्० (गु०) धाधा, क्रोध पहुँचाना,  
 खेदित करने का उपाय ।

उत्प्रेक्षा तत्० ( स्त्री० ) [ उत् + प्र + इत् + खा ]  
अन्यधान, सादृश्य अनुमान, उपेक्षा, उपमा, दोष,  
अर्थालङ्कार विशेष, अतिशय, सादृश्य होने के कारण  
उपमान गत गुण क्रिया आदि की उपमेय में  
सम्भावना ।

उत्प्लव्यन त्० ( पु० ) [ उत् + प्लु + अनट् ] कूटना,  
लाचना, साक मारना ।

उत्फाल तत्० ( पु० ) लाचना, कूटना, साक  
मारना ।

उत्फुल्ल तत्० ( यु० ) [ उत् + फुल् + क् ] प्रफुल्ल,  
विकसित, आनन्दित ।

उत्सङ्ग तत्० ( पु० ) उत् + सङ्ग + ञन् ] झोड़  
अङ्ग, कोला, गोदी, कुच, कोल ।—ी ( यु० )  
सश्रयो, सङ्गी ।

उत्सन्न तत्० ( यु० ) [ उत् + सन् + क् ] हत, नष्ट  
उत्थित, उत्पत्तित ।

उत्सर्ग तत्० ( पु० ) [ उत् + सर्ज् + ञत् ] त्याग,  
दान, विसर्जन ।—पत्र ( पु० ) दान पत्र, कार्य  
त्याग पत्र ।

उत्सर्जन तत्० ( पु० ) [ उत् + सर्ज् + अनट् ]  
उत्सर्ग, त्याग, दान, वितरण ।

उत्सव तत्० ( पु० ) [ उत् + सु + ञल् ] आनन्द,  
नियत, आत्माद जन व्यापार, यज्ञ पूजा, अर्चा आदि  
।—जनक ( यु० ) आरुहाट जनक, प्रमोद  
जनक ।

उत्सादन तत्० ( पु० ) [ उत् + सद् + णिच्  
+ अनट् ] उच्छेद करण, विनाशन, छिन्न भिन्न  
करना ।

उत्सादित तत्० ( यु० ) [ उत् + सद् + णिच्  
+ क् ] विनाशित, छिन्न भिन्न कृत, निर्मलो  
कृत शरीर ।

उत्सारण तत्० ( पु० ) [ उत् + स + अनट् ] दूरी  
करण, दूरसे स्थान भेजना ।

उत्साह तत्० ( पु० ) [ उत् + सह + धञ् ] आध्य  
यसाय, उद्योग, उद्यम, धीर रसका स्थायी भाव ।  
—वर्द्धन ( पु० ) उद्यमवृद्धि, उद्यमाधिक्य

।—शील उद्योगी, उद्यमो ।—न्वित ( यु० )  
उत्साह युक्त, उद्यमी ।

उत्साहित तत्० ( यु० ) उत्साह शाली, प्रामोत्साह ।  
उत्साही तत्० ( यु० ) [ उत् + सह + णिच् ] उद्यमयुक्त,  
उद्योगी ।

उत्सुक तत्० ( यु० ) [ उत्—सु + क्त् ] मनोरथ विष्टि  
के लिये उद्यत ।

उथलना दे० ( क्ति० ) उलट देना, अँधना, तले ऊपर  
करना ।

उथल पुथल दे० उलट पुलट, विपरीत, इधर का  
उधर, नीचे ऊपर ।

उथला दे० ( यु० ) छिन्नला, हलका, उठा ।

उदक तत्० ( पु० ) जल, सलिल, धारि, पय, ( ष० )  
उत्तर दिशा, देश वा काल ।—क्रिया ( स्त्री० ) मृत  
मनुष्य को सख्य करके जल देना ।

उद्धि तत्० ( पु० ) जलधि, सागर ।—मेखला  
( स्त्री० ) पृष्ठी, भूमि ।

उदन्त तत्० ( पु० ) समाचार, वार्ता, वृत्तान्त ।

उदन्वान् तत्० ( पु० ) समुद्र, पयोधि, वारिनिधि ।

उदयान तत्० ( पु० ) रूप, भील, तालाव ।

उदय तत्० ( पु० ) उदयावत, समुन्नति, दीप्ति, मङ्गल,  
प्राची, धनलाम ।—काल ( पु० ) प्रभातकाल,  
सर्प विशेष ।—गिरि ( पु० ) उदयाचल, पूर्वपर्वत ।

उदयन तत्० ( पु० ) प्रकाश होना उर्द्ध गमन, अगल  
मुनि, वत्सराज, शतानीक के पुत्र, इनकी राजधानी  
कौशाम्ब्यो थी, वासव दत्ता इनकी रानी का नाम  
था, वत्सराज और उदयन दोनों नाम से यह  
प्रसिद्ध है । विरुपात दार्यानिक, पण्डित, उदयना-  
चार्य, द्वादश शताब्दी के मध्यभाग में मिथिला  
में उत्पन्न हुए थे । कहते हैं कि षोडहों का नाश  
करने के लिये भगवान् मिथिला में उदयनाचार्य  
रूप से प्रकट हुए थे, प्रसिद्ध दार्यानिक ग्रन्थ कुसुमा-  
ञ्जलि इन्दीका बनाया है इसके अतिरिक्त याच-  
दपति मिश्र के बनाये न्यायशास्त्र के कितने ग्रन्थों  
को टीका भी इन्होंने की है । इनकी कन्या सीता-  
वती, उस समय विख्यात विदुशी थी ।

उदयाचल तत्० (यु०) उदयगिरि, पूर्व पर्वत ।  
 उदयास्त तत्० (यु०) प्रभात से सन्ध्या पर्यन्त,  
 उदय से अस्त लौं, पूर्व दिशा से पश्चिम तक ।  
 उदर तत्० (यु०) पेट, जठर ।—भङ्ग (यु०)  
 अतिवार, पेट की छुटाई ।—स्मेरि (यु०) पेटार्यौं,  
 पेहू, भोजनप्रिय ।—रस (यु०) उदरस्थित पाचक  
 रस ।—रोग (यु०) जठरव्याधि विशेष, पेट की  
 पीड़ा ।—सर्वस्व (यु०) उदरपरायण, पेहू ।—शि  
 (यु०) जठरानल, घचाने की शक्ति ।—वर्त (यु०)  
 नाभौं ।—मय (यु०) उदररोग, पेट की पीड़ा,  
 उदरभङ्ग, अतिवार ।  
 उदरिणी तद्० (स्त्री०) गर्मिणो, द्विजीवा ।  
 उदरो तत्० (यु०) उदरिण, उदरिल, तौंदासा, थोंद  
 वाला ।  
 उदर्क तत्० (यु०) भायीं, भविष्यत्काल ।  
 उदर्चि तत्० (यु०) अग्नि, अग्नि की शिखा, शिव,  
 कन्दर्प (यु०) उद्गत ज्वालाला, उज्ज्वल, प्रकाशमय ।  
 उदात्त तत्० (यु०) स्वरविशेष, वेदगान में उच्चस्वार,  
 दान, वाद्यविशेष, काव्यालङ्कार विशेष, नायक  
 विशेष, (यु०) स्वरित, दयां त्याग आदि गुण  
 सम्पन्न, मनोहर, महान् ।  
 उदाता तत्० (यु०) दाता, दानशील, उदार ।  
 उदान तत्० (यु०) कण्ठस्ववायु, प्राणवायु, उदारायत,  
 नाभि, सर्प विशेष ।  
 उदार तत्० (यु०) [ उत् + आ + क् + घृ ] दाता,  
 महत्, सरल, महात्मा ।—ता (स्त्री०) सरलता,  
 यदान्यता ।—त्वं (यु०) दातृत्व, दानशीलता ।  
 उदास तत्० (यु०) [ उत् + आ + क् + क्त ] एकान्ती,  
 मलिन, उद्दिग्धिरा ।  
 उदान्ती तत्० (स्त्री०) वैरागी, एकान्तवासी, विदेशी,  
 एक सम्प्रदाय के साधु ।  
 उदासीन तत्० (यु०) निःसङ्ग, योगी, अतिथि,  
 वनवासी, तपसी, शत्रु मित्र को समान देखने  
 वाला, सम्प्रदाय विशेष ।  
 उदाहृत तद्० (स्त्री०) पुंजला रङ्ग, घृता ।  
 उदाहरण तत्० (यु०) दृष्टान्त, निर्देशन, लक्ष्य,  
 उपमा ।

उदाहृत तत्० (यु०) [ उत् + आ + हृ + क्त ]  
 दृष्टान्त दिया हुआ, उत्प्रेक्षित, उक्त, कथित ।  
 उदित तत्० (यु०) [ उद् + र + क्त ] उद्गत,  
 प्रकाशित, आविर्भूत ।  
 उदीची तत्० (स्त्री०) [ उत् + अच् + ई ] उत्तर-  
 दिक् ।  
 उदीच्य तत्० (यु०) शरावती नदी के पश्चिमोत्तर  
 देश, भावी कर्तव्य ।  
 उदीरण तत्० (यु०) [ उत् + ईर् + णन् ] कथन,  
 उच्चारण, वाक्य ।  
 उदीरित तत्० (यु०) उद्धारित, उक्त, कथित ।  
 उदुम्बर तत्० (यु०) गूलर, डूमर ।  
 उदुखल तत्० (यु०) उदुखल, गूलल ।  
 उद्गत तत्० (यु०) ऊर्ध्वगत, उदित, उत्थित,  
 वर्धित ।  
 उद्गमन तत्० (यु०) ऊर्ध्वगमन, ऊपर जाना ।  
 उद्गमाता तत्० (यु०) सामवेदज्ञ, सामवेदवेत्ता  
 ब्राह्मण, सामवेद गायक ।  
 उद्गार तत्० (यु०) हकार, वमन, शोकार्द, फरट,  
 उफान, गर्जन ।  
 उद्गीत तत्० (यु०) ऊँचे स्वर से गाया हुआ ।  
 उद्गीथ तत्० (यु०) सामवेद का अंश विशेष,  
 मणय श्रोहार ।  
 उद्घाटन तत्० (यु०) कूप का चरसा, खाल, कूँ  
 से जल निकालने के निम्ने रज्जुसहित घट ।  
 उद्घात तत्० (यु०) आरम्भ, शास्त्र, ग्रन्थ,  
 परिच्छेद, अध्याय, पादस्वसन, उत्तंग, मुद्गार,  
 उपक्रम, प्रतिघात, चक्र विशेष, वाधा ।  
 उद्देश तत्० (यु०) मसा, मशक, डंसा ।  
 उद्दन्त तद्० (यु०) बृहद्दन्त, दंतुला, आगे निकला  
 हुआ दाँत ।  
 उद्दालक तत्० (यु०) प्राचीन चार्य अथि, इनका  
 प्रकृत नाम आरुणि है, इनके गुरु द्वायोदधौम्य  
 ने इनका उद्दालक नाम रक्खा । रवेतकेगु इन्हीं  
 के पुत्र थे ।  
 उद्दिष्ट तद्० (यु०) उद्यम, उद्योग ।  
 उद्दिष्ट तत्० (यु०) कृत उद्देश, लक्षित, मम्मत्,  
 अभिप्रेत, मनन्य ।



- उद्दीपक तत्० ( गु० ) प्रकाशकर्ता, द्यस्तकारी ।  
 उद्दीपन तत्० ( पु० ) प्रकाशन, तापन, रसों का विभाव विशेष ।  
 उद्देश तत्० ( पु० ) अनुसन्धान, अन्वेषण, अभि-  
 प्राय नाम निर्देशपूर्वक वस्तु निरूपण ।  
 उद्देश्य तत्० ( गु० ) उद्देश्य, लक्ष्य, प्रयोजन ।  
 उद्भूत तत्० ( गु० ) धृष्ट, अविनीत, दुरन्त, हृष्ट, कुचाल  
 अभिमानों, मद्भ ।  
 उद्भव तत्० ( पु० ) श्री कृष्ण का मित्र और भक्त,  
 उत्सव, आनन्द, प्रमोद ।  
 उद्हरण तत्० ( पु० ) उद्धार, मुक्ति, त्राण, फले हुए  
 को निकालना ।  
 उद्धार तत्० ( पु० ) बचाव, छुटकारा, मुक्ति, रक्षण  
 त्राण, मोचन ।  
 उद्भूत तत्० ( गु० ) उद्धार, रक्षित, मुक्ति, त्राण ।  
 उद्बन्धन तत्० ( पु० ) [उत् + बन्ध + धनट्] ऊपर  
 बाँधना, गले में रस्सी लगाना, फाँसी देना,  
 दौंगना ।—मृत ( गु० ) गले में रस्सी डाल कर मरा  
 हुआ, फाँसी पाया हुआ ।  
 उद्वाह तत्० ( पु० ) [ उत् + वह् + घञ् ] विवाह,  
 परिणय, दारक्रिया ।—ोपयुक्त ( गु० ) विवाह के  
 उपयुक्त, परिणय योग्य, यथस्क ।  
 उद्बोधन तत्० ( पु० ) [ उत् + बुध् + धनट् ] स्मरण  
 चिन्ह, ज्ञापन, ज्ञान, अनुमान ।  
 उद्भूत तत्० ( गु० ) अज्ञात नाम कवि के बनाये हुए  
 श्लोक, प्रवर, उदार, महात्मा, बेजोड़, असमान,  
 महाशय, अनुपम वीर ।  
 उद्भव तत्० ( पु० ) [ उत् + भू + ञञ् ] उत्पत्ति, जन्म,  
 प्रादुर्भाव ।  
 उद्भावन तत्० ( पु० ) [ उत् + भू + धनट् ] कल्पना,  
 प्रकाश ।  
 • उद्भासित तत्० ( गु० ) [ उत् + भास् + क्त ] उद्दीपित,  
 प्रदीप्त, जो प्रकाशित हो ।  
 उद्भिज्ज तत्० ( गु० ) वृत्तलता आदि, जो भूमि फोड़  
 कर निकलते हैं ।—ज् ( गु० ) भूमिभेदन पूर्वक  
 उत्पत्ति शील ।

- उद्भिद् तत्० ( गु० ) [ उत् + भिद् + क्तिप् ] अद्भुत  
 या प्रफुल्लित होना, वृत्तलता आदि ।—विद्या  
 ( स्त्री० ) वृत्त आदि रोपने की विद्या, माली का  
 काम ।  
 उद्भिन्न तत्० ( गु० ) [ उत् + भिद + क्त ] भेदित, विद्,  
 प्रकाशित ।  
 उद्भूत तत्० ( गु० ) [ उत् + भू + क्त ] उत्पन्न, ज्ञात ।  
 —रूप ( पु० ) दृष्टिगोचर होने योग्य रूप ।  
 उद्यत तत्० ( गु० ) [ उत् + यत् + क्त ] सम्युक्त, पवत्  
 उत्थित, परिश्रमी, ( पु० ) अध्याय ।  
 उद्यम तत्० ( पु० ) [ उत् + यम + ञञ् ] उद्योग  
 उत्साह, अध्ययसाय, चेष्टा, यत्न ।—ी ( गु० )  
 उद्योगी, उत्साही, सतर्क ।  
 उद्यान तत्० ( पु० ) [ उत् + या + धनट् ] क्रीडावन  
 उपवन, बगीचा, आराम ।—पाल ( पु० ) उद्या  
 रक्षक, माली, यागवान ।  
 उद्यापन तत्० ( पु० ) [ उत् + या + णिच् + धनट् ]  
 ज्ञत समामि, विसर्जन, समापन ।  
 उद्युक्त तत्० ( गु० ) [ उत् + युच् + क्त ] उद्यम  
 उद्योगविशिष्ट, उत्साहान्वित, यत्नवास्, लगा हुआ  
 परिश्रमी ।  
 उद्योग तत्० ( पु० ) [ उत् + युच् + घञ् ] यत्न, वे  
 उत्साह, अध्ययसाय, उद्यम, प्रयास, आयोजन  
 उपाय ।—ी ( गु० ) उद्योग विशिष्ट, यत्नवास्, उद्यु  
 उत्साही ।  
 उद्योत तत्० ( पु० ) प्रकाश, चमक, आलोक, उज  
 वाली ।  
 उद्ग तत्० ( पु० ) उदविलास, जल की बिल्ली ।  
 उद्भिक तत्० ( गु० ) स्फुट, स्पष्ट, द्यस्त परिवृद्ध, ब  
 हुआ ।  
 उद्भेक तत्० ( पु० ) उपक्रम, आरम्भ, वृद्धि, उत्था  
 उत्तेज, प्रकाश ।  
 उद्भिन्न तत्० ( गु० ) [ उत् + विच् + क्त ] उद्भेग  
 उत्कण्ठित, भावित, भावनान्वित ।—चित्त ( पु  
 सचिन्त अन्त करण, भावनायुक्तचित्त ।—म  
 ( गु० ) उद्भिन्न चित्त ।

उद्बुद्ध तत्० (गु०) [उत् + बुद् + क] विकसित,  
प्रकाशित ।

उद्बृत्त तत्० (गु०) [उत् + वृत् + क] उत्थित,  
उद्गमन्, अतिरिक्त, अधिक, अच्युत, दुर्वृत्त, चुभित  
अवाध्य ।

उद्देश तत्० (गु०) ध्याकुलता, भावना, चिन्ता,  
विरहजन्य दुःख ।—कर (गु०) चिन्ताजनक,  
ध्याकुलता यद्भक्त ।—नी (गु०) उद्दिष्ट, उत्कण्ठित,  
भावनायुक्त, चिन्तान्वित ।

उधर तद्० (श्र०) वहाँ, उस ठाँव, उस डोर ।

उधरा तद्० (गु०) छला, मुक्त, छुटा ।

उधार तद्० (गु०) धार, देना, ऋण ।

उधारना तद्० (क्रि०) मुक्ति देना, छुटकारा करना,  
धार करना, षचाना, तारना ।

उधेड़ना तद्० (क्रि०) मुलझाना, खोलना ।

उधेड़युक्त तद्० (गु०) परिश्रम, भ्रंश, कामधंधा ।

उद्यत तत्० (गु०) [उत् + नम् + क] यद्धित उद्य,  
उत्तुङ्ग ।—नाभि (गु०) उच्च नाभियुक्त, ।—गत  
(गु०) उच्चनीचस्थान आदि, ऊभङ्ग्याभङ्ग, वन्द्युर ।

उद्यति तद्० (श्र०) [उत् + नम् + क्ति] समृद्धि,  
वृद्धि, उद्यता, उद्य, गड़ भायी ।

उद्यमित तत्० (गु०) [उत् + नम् + क] उत्तोलित,  
ऊपर उठाया गया, ऊर्ध्वोक्त ।

उद्ययन तद्० (गु०) वितर्क, ऊर्ध्वप्रापण, उत्तोलन,  
ऊपर से जाना ।

उद्यमन तद्० (गु०) [उत् + नम् + यत्] ऊपर से  
नीचे की ओर झुकाया गया ।

उद्भिन्न तद्० (गु०) प्रकुञ्ज, विकसित, प्रकाशित  
निद्रा रहित ।

उन्मत्त तद्० (गु०) [उत् + मद् + क] उन्मादयुक्त,  
वायु के द्वारा चित्त विभ्रमी, योरहा, पागल, मत्-  
वाला ।

उन्मद् तद्० (गु०) [उत् + मद् + क्त्] उन्मादयुक्त,  
प्रमादी, सिद्धी, उन्मत्त ।

उन्मना तद्० (गु०) [उत् + मन् + क] उत्कण्ठित चित्त,  
चिन्तित, ध्याकुल, चञ्चल ।

उन्माद तद्० (गु०) घातरोग विशेष, चित्तविभ्रम,  
(गु०) उन्मादरोगयुक्त, चिन्म ।—क्षेत्र (गु०) वायु-  
ग्रस्त, पागल ।

उन्मान तद्० परिमाण, तौलना, मापना, परिमाण-  
करण ।

उन्मिषित तद्० (गु०) [उत् + मिष् + क] प्रकुञ्ज,  
विकसित ।

उन्मीलन तद्० (गु०) उन्मेष, विकास, प्रकाश, चाँल  
खोलना ।

उन्मीलित तद्० (गु०) विकसित, प्रफुटित, विकास  
प्राप्त ।

उन्मुख तद्० (गु०) ऊर्ध्वमुख, अभिमुख, अच्युत,  
चेष्टा, उत्कण्ठित ।

उन्मूलक तद्० (गु०) उन्मूलनकारी, मूल उखाड़  
देने वाला ।

उन्मूलन तद्० (गु०) [उत् + मूल + यन] उत्पादन,  
उखाड़ना, ऊपर खींचना ।

उन्मेष तद्० (गु०) नयन उन्मीलन, चाँल खोलना,  
विकास, प्रकाश, जान, वृद्धि, पतक ।

उन्मोचन तद्० (गु०) परिश्रम करना, मुक्त करण ।

उन्हारा तद्० (गु०) डाल, डोल, रूप ।

उप तद्० (उपसर्ग) समीप, पास, घराघर, न्यून, कम,  
छोटा, होन, प्रतिनिधि, सद्ग्य, अनुगति, परवा-  
ह्य, अनुकम्पा, आधिक्य, भ्रूषण, दोषोद्घाटन,  
निदर्शन, आश्चर्यकरण, मारणदान, ध्यापकता,  
लिप्ता, पूजा, उद्योग ।—कण्ठ (गु०) नखट,  
समीप, (गु०) ग्राम के समीप, अर्थों की गति

विशेष ।—कथा (स्त्री०) आख्यायिका, इतिहास,  
पुराण, लहर सवर, कहानी, कल्पित कथा  
।—करण (गु०) सामग्री, परिवेष्ट, राजाओं का  
छत्र चामर आदि, भोजन के लिये उपभूत, आदि,  
नैवेद्य पुष्प धूप आदि पूजा के लिये सामग्री,  
अप्रधान द्रव्य ।

उपकार तद्० (गु०) [उत् + कृ + क्त] उपकृति,  
आनुकूल्य, कृपा सहायता ।—नी (गु०) उपकारविशिष्ट  
उपकारक ।—क (गु०) उपकारी, आनुकूल्यकारी,  
सहाय, कृपावन्त ।

उपकारिका तत्० (स्त्री०) [उप्—कृ + इक्—च्]।

उपकारकर्त्ता; राजगृह, कुशल, निपुण ।।

उपकारेच्छु तत्० (गु०) उपकारकरणाभिलाषी,  
दाता ।

उपकार्य तत्० (गु०) [उप्—कृ + च्यञ्] उपकारो-  
चित, जिसका उपकार किया जाय ।—२ (स्त्री०)

राज सदन, राजगृह, अन्न रखने का स्थान, भोला ।

उपकुर्वाण, तत्० (गु०) कुछ दिन के लिये ब्रह्मचारी,  
विद्याध्ययनार्थ ब्रह्मचारी, ब्रह्मचर्य समाप्त करने के  
अनन्तर जो गृहस्थ होते हैं ।

उपकूप तत्० (गु०) कूप के समीप का जलाशय,  
पशुओं के जल पीने के लिये जो बनाया जाता है ।

उपकूल तत्० (गु०) नदी, तालाब आदि का तीर ।

उपकृत तत्० (गु०) कृतोपकार, जिसकी सहायता  
की गयी है ।—१ (स्त्री०) उपकार, साहाय्य, कृतोप-  
कार, आनुकूल्य ।

उपक्रम तत्० (गु०) [उप् + क्रम + ञल्] आरम्भ,  
उद्योग, धोखा, आद्यकृति, प्रथम आरम्भ,  
चिकित्सा, पलायन, प्रक्रम, सूचना, अनुष्ठान ।

उपक्रान्त तत्० (गु०) समारब्ध, अनुष्ठित, कृतप्रारम्भ,  
प्रस्तुत ।

उपक्रोश तत्० (गु०) [उप् + क्रुश—ञल्] निन्दा,  
कुत्सा, भर्त्सना, गहर्ण ।

उपखान तद्० (गु०) कथा, इतिहास, (स०) उपा-  
ख्यान ।

उपगत तद्० (गु०) [उप् + गम् + क्त] प्राप्त, अङ्गीकृत  
स्वीकृत, कृतमेयुत, आसक्त, अभिरत ।

उपगम तद्० (गु०) आगमन, योग, प्रीति, अङ्गीकार,  
निकट गमन ।

उपगुरु तद्० (गु०) छोटा अध्यापक, अधधान गुरु,  
उपदेशक, शिक्षागुरु ।

उपगूहन तद्० (गु०) [उप् + गृह + अनट्] आलिङ्गन,  
श्रृङ्खार भेंट ।

उपग्रह तद्० (गु०) वैभुषा, दया, सहायता, उपयोग,  
(अनुकूल, ग्रह विशेष, अधधान ग्रह) ।

उपघात तद्० (गु०) [उप् + हृश् + चञ्] रोग, पीड़ा,  
आघात ।

उपङ्ग तद्० (गु०) वामा, बायापिरोव ।

उपचय तद्० (गु०) [उप् + चि + ञल्] सुद्धि, उन्नति,  
आधिष्य, बढ़ती ।

उपचरित तद्० (गु०) [उप् + चर् + क्त] उपासित,  
सेवित, आराधित ।

उपचर्या तद्० (स्त्री०) [उप् + चर् + क्त्वं] चिकित्सा,  
रोगों का उपशम, प्रतीकार, युष्मत् पा ।

उपचार तद्० (गु०) [उप् + चर् + धञ्] उपाय,  
आकार, पूजन की सामग्री, प्रकार, नेमा, रोगों का  
प्रतिकार, चिकित्सा, उपकरण, युष्मत् पा, उपक्रम,  
व्यवहार, उरकोय, पूँच, आरोप ।

उपचित तद्० (गु०) [उप् + चि + क्त, दुग्ध, समृद्ध,  
यद्भिग, सञ्चित, रचित, समाहित ।

उपज तद्० (गु०) गाना, घन्तरा, अनुज, कनिष्ठ,  
मूक, स्फूर्ति, फुरन, पैदावार, उत्पत्ति ।

उपजना तद्० (क्रि०) उगना, यदना, अङ्कुर होना  
।—उपजहिं, उपजते हैं, उत्पन्न होते हैं ।

उपजाऊ तद्० (गु०) उपजनेहारा ।

उपजत तद्० (गु०) उपार्जित, घटित, उत्पन्न ।

उपजाना तद्० (क्रि०) उत्पन्न करना, चिरजता ।

उपजाय तद्० (गु०) भेद, विवहेद, विसम्भेद, पार्थक्य,  
गुह्येदन, कूटले भेद करण ।

उपजायें तद्० उत्पन्न किये, पैदा किये, निकाले ।

उपजित तद्० (गु०) उत्पन्न हुआ, उपजा ।

उपजिहा तद्० (स्त्री०) बुद्ध जिह्वा, छोटी जीभ ।

उपजीविका तद्० (स्त्री०) जीविका, वृत्ति, जीवनी,  
पाय, अथलम्ब ।

उपजीवी तद्० (गु०) अधलम्बी, आश्रयी, अनुगत ।

उपज्ञा तद्० (स्त्री०) आद्यज्ञान, प्रथमज्ञान, उपदेश के  
विना ईश्वर दत्त प्रथमज्ञान ।

उपठना तद्० (गु०) उपरना, बाँटना ।

उपठना तद्० (क्रि०) पकना, उचाट होना ।

उपठना तद्० (क्रि०) उखाड़ना, उत्पाटन करना ।

उपदोंकन तद्० (गु०) [उप् + दोंक + अनट्]। पारि-  
तोषिक द्रव्य, उपहार, भेंट ।

उपतन्त्र तत्० ( पु० ) [ उप + तन्त्र ] यामल, चादि  
तन्त्र शास्त्र, सूक्ष्मसूत्र ।

उपतप्त तत्० ( पु० ) [ उप + तप् + क्त ] सन्नापित,  
दुःखित, खेदित ।

उपताप तत्० ( पु० ) रोग, बीड़ा, वेगावेगी, उपाय,  
स्वरा, अशुभ, शोक, विपद ।

उपतारा तत्० ( स्त्री० ) छुद्र नक्षत्र, नेत्र तारका  
मण्डल, नेत्रगोलक ।

उपत्यका तत्० ( स्त्री० ) पर्वतों के समीप की  
भूमि ।

उपदेश तत्० ( पु० ) मुद्राक, रोग विशेष, मेढ़  
रोग, मद्यपान, सर्पदेश ।

उपद्रव तत्० ( पु० ) मुकुल, पत्ता, पान, पुष्प दल,  
फूलों की पत्ती ।

उपद्रवक तत्० ( पु० ) द्वारपाल, प्रहरी ।

उपद्रा तत्० ( स्त्री० ) उपदौकन, भेंट, उपायन,  
दर्यान ।

उपदिष्ट तत्० ( पु० ) [ उप + दिष्ट + क्त ] उप-  
देश प्राप्त, कृतोपदेश ।

उपदेशता तत्० ( पु० ) भूत, प्रेम, देवता विशेष ।

उपदेश तत्० ( पु० ) [ उप + दिश + क्त ] शिक्षा,  
मन्त्र ज्ञान, दोषा, क्लिप्त कथन । — कारी ( पु० )

उपदेशकर्ता, उपदेशकारी, उपदेश, शिक्षक । —  
( पु० ) गुरु आचार्य, उपाध्याय ।

उपदेश्य तत्० ( पु० ) [ उप + दिश्य + क्त ] उप-  
देश्य, उपदेश योग्य, उपदेश के अधिकारी ।

उपदेशा तत्० ( पु० ) [ उप + दिश् + क्त ]  
उपदेशकर्ता, आचार्य, शिक्षक, शिक्षा गुरु ।

उपदेश तत्० ( पु० ) विलेपन, लेप ।

उपद्रव तत्० ( पु० ) उन्माद, अन्माय, खेड़ा,  
उपाधि, उधम, अन्धेर, विद्रोह ।

उपद्रुत तत्० ( पु० ) [ उप + द्रु + क्त ] विह्वलित,  
अपकृत आकुलित ।

उपद्वीप तत्० ( पु० ) टापू, बड़ा, छोटा द्वीप, जल-  
स्थल स्थान, जलमध्य वर्ती स्थान ।

उपधर्म तत्० ( पु० ) धातुपद, पापी, नास्तिक ।

उपधान तत्० ( पु० ) [ उप + धा + धनट् ]  
वालीय, तकिया, उसीसा, सिरहाना, गिराफ ।

उपधायक तत्० ( पु० ) [ उप + धा + क्त ]  
जन्मदाता, स्थापनकर्ता ।

उपधि तत्० ( पु० ) [ उप + धा + कि ] कपट,  
छल, रथ चक्र ।

उपनत तत्० ( पु० ) [ उप + नत् + क्त ] उप-  
स्थित, प्राप्त, समीप, आनीत ।

उपनय तत्० ( पु० ) [ उप + नी + क्त ] उपनयन,  
गृह्योक्त विधान के अनुसार, वेदाभ्यास के लिये  
ब्राह्मण का गुरु समीप गमन, न्याय का एक  
पारिभाषिक शब्द, ( व्यभि विविष्ट हेतु में पक्षगत  
धर्मों का प्रतिपादक वाक्य ) ।

उपनयन तत्० ( पु० ) [ उप + नी + क्त ] विशेष  
का यज्ञसूत्र धारण संस्कार, उपनीत संस्कार ।

उपनाम तत्० ( पु० ) पदवी, पहूति, उपाधि, अक्ष,  
शटक ।

उपनिधि तत्० ( पु० ) याती, धरोहर, न्यस्तवस्तु,  
स्थापित द्रव्य ।

उपनिषत् तत्० ( स्त्री० ) [ उप + नि + षत् + क्तिप् ]  
धर्म वेदान्त शास्त्र, निर्जन स्थान, तपश्चालन,  
वेद का गिरोभाग, ब्रह्मविद्या, वेदरहस्य ।

उपनीत तत्० ( पु० ) कृतोपनयन ( पु० ) निकट प्राप्त  
उपस्थित, सम पागत, उपवीती ।

उपनेता तत्० ( पु० ) [ उप + नी + क्त ] आनयन-  
कारी, उपस्थापक ।

उपनेत्र तत्० ( पु० ) चरमा, नेत्रों का सहायक ।

उपन्यस्त तत्० ( पु० ) निष्ठित न्यासीकृत, दत्त ।

उपन्यास तत्० ( पु० ) [ उप + नी + क्त + षत् ]  
याज्ञोपक्रम, प्रस्तावना, उपकथा, कहानी, गद्य  
काव्य विशेष ।

उपपत्ति तत्० ( पु० ) आर, गुप्त पति, लयना, नायक  
विशेष यय —

"नो परनारी के रक्षक उपपत्ति ताहि 'इवान'"

उपकारिका तत्० (स्त्री०) [उप्—कृ + इक्—आ]

उपकारकर्ता; राजगृह, कुशल, निगुण ।

उपकारेच्छु तत्० (पु०) उपकारकरणाभिलाषी,  
दाता ।

उपकार्य तत्० (पु०) [उप्—कृ + छवण्] उपकारो-  
चित, जिसका उपकार किया जाय ।—१ (स्त्री०)  
राज सदन, राजगृह, अन्न रखने का स्थान, गोला ।

उपकुर्वाण, तत्० (पु०) कुछ दिन के लिये ब्रह्मचारी,  
विद्याध्ययनार्थ ब्रह्मचारी, ब्रह्मचर्य समाप्त करने के  
अनन्तर जो गृहस्थ होते हैं ।

उपकूप तत्० (पु०) कूप के समीप का जलाशय,  
पशुओं के जल पीने के लिये जो बनाया जाता है ।

उपकूल तत्० (पु०) नदी, तालाब आदि का तीर ।

उपकृत तत्० (पु०) कृतोपकार, जिसकी सहायता  
की गयी है ।—१ (स्त्री०) उपकार, साहाय्य, कृतोप-  
कार, आनुकूल्य ।

उपक्रम तत्० (पु०) [उप् + क्रम + ङल्] आरम्भ,  
उद्योग, धोखा, आराधना, प्रथम आरम्भ,  
चिकित्सा, पलायन, प्रक्रम, सूचना, अनुष्ठान ।

उपक्रान्त तत्० (पु०) समारब्ध, अनुष्ठित, कृतप्रारम्भ,  
प्रस्तुत ।

उपमोक्ष तत्० (पु०) [उप् + क्रुश—ङल्] निन्दा,  
कुत्सा, भर्त्सना, गर्हण ।

उपखान तत्० (पु०) कथा, इतिहास, (स०) उपा-  
ख्यान ।

उपगत तत्० (पु०) [उप् + गम् + ञक्] प्राप्त, अङ्गीकृत  
स्वीकृत, कृतमेयुन, आसक्त, अतिरत ।

उपगम तत्० (पु०) आगमन, योग, प्रीति, अङ्गीकार,  
निकट गमन ।

उपगुरु तत्० (पु०) छोटा अध्यापक, अप्रधान गुरु,  
उपदेशक, शिक्षागुरु ।

उपगृहण तत्० (पु०) [उप् + गृह + ञनट्] आलिङ्गन,  
अंकुशार भेंट ।

उपग्रह तत्० (पु०) बंधुभा, दया, सहायता, उपयोग,  
अनुकूल, ग्रह विशेष, अप्रधान ग्रह ।

उपघात तत्० (पु०) [उप् + हृद् + ङञ्] रोग, पीड़ा,  
आघात ।

उपङ्ग तत्० (पु०) यात्रा, यात्राविशेष ।

उपचय तत्० (पु०) [उप् + चि + ङल्] युद्धि, उन्नति  
आधिक्य, बढ़ती ।

उपचरित तत्० (पु०) [उप् + चर् + ञ्] उपासित,  
सेवित, आराधित ।

उपचर्या तत्० (स्त्री०) [उप् + चर + ङ्यप्] चिकित्सा,  
रोगों का उपगम, प्रतीकार, गुरुणा ।

उपचार तत्० (पु०) [उप् + चर + धञ्] उपाय,  
आकार, पुजन की सामग्री, प्रकार, सेवा, रोगों का  
प्रतिकार, चिकित्सा, उपकरण, गुरुणा, उपक्रम,  
व्यवहार, उत्कोच, पूँस, आरोग्य ।

उपचित तत्० (पु०) [उप् + चि + ञक्, दुग्ध, समृद्ध,  
वर्द्धित, सञ्चित, रचित, समाहित] ।

उपज तत्० (पु०) गाना, अन्तरा, अनुज, कनिष्ठ,  
सूक्त, स्फूर्ति, फुलन, पैदावार, उत्पत्ति ।

उपजना तत्० (क्रि०) उगना, बढ़ना, अङ्कुर होना  
।—उपजहिं, उपजते हैं, उत्पन्न होते हैं ।

उपजाऊ तत्० (पु०) उपजनेहारा ।

उपजत तत्० (पु०) उपार्जित, घटित, उत्पन्न ।

उपजाना तत्० (क्रि०) उत्पन्न करना, चिरजाना ।

उपजाय तत्० (पु०) भेट, विश्लेष, विसम्बाद, पार्यक,  
सुदृढ़ देन, कूटले भेट करण ।

उपजायें तत्० उत्पन्न किये, पैदा किये, निकाले ।

उपजित तत्० (पु०) उत्पन्न हुआ, उपजा ।

उपजिह्वा तत्० (स्त्री०) सुन्न जिह्वा, छोटी जीभ ।

उपजीविका तत्० (स्त्री०) जीविका, वृत्ति, जीवने-  
पाय, व्यवसाय ।

उपजीवी तत्० (पु०) शकलम्बी, आश्रयी, अनुगत ।

उपज्ञा तत्० (स्त्री०) आद्याज्ञान, प्रथमज्ञान, उपदेश के  
विना ईश्वर दत्त प्रथमज्ञान ।

उपटना तत्० (पु०) उपरना, बाटना ।

उपटनां तत्० (क्रि०) धकना, उचाट होना ।

उपडना तत्० (क्रि०) उखडना, उत्पाटन करना ।

उपदोषकन तत्० (पु०) [उप् + दोष + ङनट्] पारि-  
तोषिक द्रव्य, उपहार, भेंट ।

उपरोहित तद्० (पु०) उपतोषा, कुल युक्त, उपतोषा, उपरोहित ।

उपरौचा तद्० (पु०) चट्टोचा, उपरौचा ।

उपरौ तद्० (पु०) देखो उपरता ।

उपस्युपरि तद्० (घ०) ऊर्ध्व ऊर्ध्व, उपर उपर, पर पर ।

उपरौ तद्० (०पु) उपरीक्षा, सहित ।

उपर्याई तर्प्याई, तद्० (पु०) श्रोता उठी ।

उपल तद्० (पु०) पाषाण, फल्यर, पायर, शिना, रत्न ।

उपलक्ष तद्० (पु०) सहाय, ताक, अनुमान, अवलम्बन, जल ।

उपलक्षणा तद्० (पु०) दृष्टान्त, वानगी, अन्यार्थ-सोधक, अवलम्बन, अधिक ।

उपलक्ष्य तद्० (पु०) आशय, अवलम्बन, सहाय, अनुमान ।

उपला तद्० (पु०) कपडा, घूँटा, छाना ।

उपलब्ध तद्० (पु०) [उप + लभ् + क्त] प्राप्त, लाभ, अनुभवयुक्त, अनुभूत, प्रकीर्त ।—आर्था (स्त्री०) आउपायिका, उपकथा ।

उपलब्धि तद्० (स्त्री०) [उप + लभ् + क्त] ज्ञान, अनुभव, मति, प्राप्ति ।

उपवन तद्० (पु०) उद्यान, आराम, कृत्रिमवन, मकान के निकट छोटा बाग ।

उपवस्य तद्० (पु०) ग्राम, निवासस्थल, निवस्य ।

उपवास तद्० (पु०) [उप + वस् + भञ्ज] लह्न, अनाहार, दिनरात भोजनभाय ।

उपवासी तद्० (पु०) [उप + वस् + णिच्] उपवास युक्त, अहीरात्र भोजनभायविशिष्ट, उपोषी, व्रती ।

उपविद्य तद्० (पु०) [उप + विद् + क्त्वाप्] ताडक बेटक आदि, शिल्पकारादि, शिल्पी ।—[स्त्री०] शिल्प आदि विज्ञान शास्त्र ।

उपविष तद्० (पु०) कृत्रिम विष, मूत्र विष, आफीम आदि ।

उपविष्ट तद्० (पु०) [उप + विष् + क्त] आसीन पृथीतासत, कृतोपवेशन, आसनस्थ ।

उपवीत तद्० (पु०) यज्ञसूत्र, जनेक ।

उपवेद तद्० (पु०) प्रधान चार वेदों से अतिरिक्त वेद, आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्ववेद, स्वात्म्य वेद, येही चार उपवेद हैं। आयुर्वेद के आदि आचार्य ब्रह्मा रथ धन्वन्तरि आदि हैं गान्धर्व वेद के प्रचारक भरत मुनि, विश्वामित्र ने धनुर्विद्या का उपदेश किया, स्वात्म्य वेद का विश्वकर्मा ने प्रचार किया, स्वात्म्य वेद बहुत बृहत् था ।

उपवेष्टन तद्० (पु०) [उप + विष् + क्त] लपेटना, घसना, जाना ।

उपवेशन तद्० (पु०) स्थिति, उपविष्ट होना, बैठना ।

उपशम तद्० (पु०) [उप + शम् + शल्] यान्ति, समतार, समार, शमता, हास ।

उपशय तद्० (पु०) [उप + शी + शल्] निदान पञ्चक के अन्तर्गत, रोगनाशक ।

उपशान्य तद्० (पु०) [उप + शन् + य] ग्रामान्त, ग्राम की सीमा ।

उपशायी तद्० (पु०) [उप + शी + णिच्] स्वप्न करने वाला, प्रशान्त ।

उपश्रुत तद्० (पु०) [उप + श्रु + क्त] प्रतिश्रुत, अज्ञोभूत, स्वीकृत वागदत्त ।

उपशास्त्र तद्० (पु०) शास्त्रानुपायी, शास्त्रानुवर्ती ।

उपसंहार तद्० (पु०) [उप + सं + ह + षत्] श्रेय नाश, निष्कर्ष, मीमांसा, आक्रम, संग्राह, संसृष्ट स्थीत ।

उपस तद्० (पु०) दुर्गन्धि, हृत्तिगन्ध ।

उपसस्ति तद्० (स्त्री०) [उप + सं + क्त + णिच्] मङ्गमात्र प्रतिपादन, उपासना, सेवा, विनय पूर्वक युक्त धर्म्य गमन ।

उपसना तद्० (स्त्री०) उपसना, भजना, धरना ।

उपसर्ग तद्० (पु०) [उप + सर् + षत्] रोगभेद, उपद्रव, पीडा, प्रपरा प्रभृति वीम संशय शब्द ।

उपपत्ति तत्० (स्त्री०) [ उप + पद् + क्ति ] सङ्गति, निर्वृत्ति, समाधान, सिद्धान्त, जन्म, योग्यता, हेतु कारण, अभिप्राय, मूल, अन्त, प्रमाण, निर्दयन, घटना, दैव विषय ।

उपपत्नी तत्० (स्त्री०) वेरया, परस्त्री, रखनी ।

उपपद तत्० (पु०) लेश, पद के समीपवर्ती पद, जैसे प्रति दिन नाम में शर्मा, चर्मा ।

उपपन्न तत्० ( पु० ) [ उप + पद + क्त ] साधित, समाप्त, सम्पूर्ण, सिद्ध ।

उपपातक तत्० पाप विशेष, गोवधादि पाप ।

उपपादन तत्० (पु०) [ उप + पद + णिब + अनद् ] साधन, समाधान, युक्ति, सिद्धकरण सम्पादन, सग्रह, सञ्चय ।

उपबर्ह तत्० (पु०) तक्तिया, वालिय, उपधान ।

उपभुक्त तत्० (पु०) [ उप + भुज् + क्त ] भोग किया हुआ, भक्षित, भोगकृत, अधिकृत ।

उपभोक्ता तत्० (पु०) [ उप + भुज् + तृण ] भोगकारी सत्वाधिकारी ।

उपभोग तत्० (पु०) [ उप + भुज् + भञ्ज् ] भोजनातिरिक्त भोग, निर्वेश, विज्ञान, विषयों का सुखादादन ।

उपमा तत्० ( स्त्री० ) सादृश्य, दृष्टान्त, तुल्यता, समानता, अर्थात् सादृश्य विशेष जो सादृश्य होने से होता है ।

उपमाता तत्० (स्त्री०) दूध पिनायेवाली, धाय, धात्री, माता के समान ( पु० ) उपमाकरनेवाला नित्रकार ।

उपमान तत्० (पु०) दृष्टान्त, सादृश्य, तुल्यता, प्रतिमूर्ति, जिस पदार्थ से उपमा दी जाये, चन्द्रमुख में चन्द्र उपमान है, प्रमाण विशेष ।

उपमित तत्० (पु०) उत्प्रेक्षित, तुल्यकृत, सम्भावित । उपमितित तत्० (स्त्री०) उपमा सादृश्यज्ञान से उत्पन्न ज्ञान ।

उपमेय तत्० (पु०) समतुल्य, दृष्टान्त योग्य, उपमान के समान गुणयुक्त ।

उपयम तत्० (पु०) विषाह, उद्वाह, व्याह, परिणय ।

उपयुक्त तत्० (पु०) योग्य, सप्रय, उचित, उत्कृष्ट, हृदय ।

उपयोग तत्० (पु०) आचरण, दृष्ट सिद्धि के उपाय, सामर्थ्य, अनुकूलता ।

उपयोगिता तत्० (स्त्री०) फलसाधनता, प्रयोजन, अनुकूल्य ।

उपयोगी तत्० (पु०) उपयुक्त, द्रव्य आदि, क्रिया साधन, अनुकूल, सहाय ।

उपर तत्० (पु०), ऊर्ध्व, ऊँचा, पर उन्नतदेश ।

उपरक्त तत्० (पु०) विषय, पीड़ा ग्रस्त, (पु०) राह-ग्रस्त चन्द्र या सूर्य ।

उपरत तत्० (पु०) विरत शान्त, निवृत्त मत, विगत त्यक्त ।

विरति तत्० (स्त्री०) विरति, निवृत्ति, मृत्यु, परित्याग ।

उपरना तत्० (पु०) दुपष्टा, एक पट्टा, ओढ़नी, आना उत्तरीय घस्त्र ।

उपराग तत्० (पु०) सूर्य वा चन्द्र ग्रहण, राहुग्रहण, परिव्याद, व्यसन ।

उपराजा तत्० (पु०) छोटे राजा, पुयराज ।

उपरान्त तत्० (अ०) पीछे, परे, पश्चात्, इसके अनन्तर ।

उपराम तत्० (पु०) परिणाम, वैराग्य, निवृत्ति, आरति, विरति, विराम, आराम ।

उपराला तत्० (पु०) सहायक, साथी ।

उपरि तत्० (अ०) ऊर्ध्व, उपर ।—दृष्टि (स्त्री०) युक्त् देवता की दृष्टि, वायु का प्रकोप ।

उपरिष्ठात् तत्० (अ०) ऊपर, ऊर्ध्व ।

उपरिस्थ तत्० (पु०) ऊर्ध्वस्थित, उपरस्थित, उपर का ।

उपरी तत्० (पु०) ऊपर का, उपसंक्षम्भी, जोते खेत के उपर की मिट्टी, भूमि से उजाड़ी हुई माटी ।

उपरुद्ध तत्० (पु०) रक्षित, प्रति रुद्ध ।

उपरोक्त (पु०) उपरकथित, प्रथम उक्त, पहले कहा हुआ ।

उपरोध तत्० (पु०) अनुरोध, गीरेय, वाक्चक्षुष, साहाय्य, महापता ।

उपरोहित तत्० (पु०) उपरोधा, कुल गुरु, उपरोधा, उपरोहित ।

उपरोचा तद्० (पु०) अज्ञोचा, उपरोचा ।

उपना तद्० (पु०) देखो उपरना ।

उपत्युपरि तत्० (घ०) ऊर्ध्व ऊर्ध्व, उपर उपर, पर पर ।

उपर्ला तद्० (०३) उपरोक्षा, वक्षि ।

उपर्वाई तर्वाई, तद्० (पु०) ओला उठी ।

उपल तत्० (पु०) पायाण, पत्थर, पाथर, शिला, रत्न ।

उपलक्ष तत्० (पु०) सहाय, ताक, अनुमान, अवलम्बन, दक्ष ।

उपलक्षण तत्० (पु०) दृष्टान्त, धारणा, अन्वयार्थ-बोधक, अवलम्बन, अधिक ।

उपलक्ष्य तत्० (पु०) धारण्य, अवलम्बन, महाय, अनुमान ।

उपला तद्० (पु०) कण्ठा, घूर्णता, छाना ।

उपलब्ध तत्० (पु०) [उप + लभ् + क्त] प्राप्त, लाभ, अनुभवयुक्त, अनुभूत, प्रणीत ।—प्रा (स्त्री) आशयविका, उपकथा ।

उपलब्धि तत्० (स्त्री) [उप + लभ् + क्त] ज्ञान, अनुभव, मति, प्राप्ति ।

उपवन तत्० (पु०) उद्यान, आराम, कृत्रिमवन, मकान के निकट छोटा बाग ।

उपवसथ तत्० (पु०) ग्राम, निवासस्थल, निवसथ ।

उपवास तत्० (पु०) [उप + वस् + धञ्] लहान, अनाहार, दिनरात भोजनभाव ।

उपवासी तत्० (पु०) [उप + वस् + क्ति] उपवास युक्त, अहोरात्र भोजनाभावविशिष्ट, उपोषी, प्रती ।

उपविद्य तत्० (पु०) [उप + विद् + क्त्वाप्] नाटक चेटक आदि, शिक्षकारादि, शिक्षयी ।— (स्त्री) शिक्ष्य आदि विज्ञान शास्त्र ।

उपविद्य तत्० (पु०) कृत्रिम विद्य, न्यून विद्य, अफीम आदि ।

उपविष्ट तत्० (पु०) [उप + विश् + क्त] आसीन गृहीतामन, कृतोपवेशन, आमनस्य ।

उपवीत तत्० (पु०) पचसुख, जनेक ।

उपवेद तत्० (पु०) प्रधान चार वेदों से अतिरिक्त वेद, आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्ववेद, स्यापत्य वेद, वेही चार उपवेद हैं। आयुर्वेद के आदि आचार्य ब्रह्मा इन्द्र धन्वन्तरि आदि हैं गान्धर्व वेद के प्रचारक भरत मुनि, विरयामित्र ने धनुर्विद्या का उपदेश किया, स्यापत्य वेद का विरयकर्मा ने प्रचार किया, स्यापत्य वेद बहुत बृहत् था ।

उपवेष्टन तत्० (पु०) [उप + विश् + क्त] लपेटना, घसना, जामा ।

उपवेशन तत्० (पु०) स्थिति, उपविष्ट होना, बैठना ।

उपशम तत्० (पु०) [उप + शम् + क्त] गान्ति, समतार, समार, शमता, हास ।

उपशय तत्० (पु०) [उप + शी + क्त] निदान पशुक के अन्तर्गत, रोगनापक ।

उपशय्य तत्० (पु०) [उप + शल् + य] ग्रामान्त, ग्राम की सीमा ।

उपशायी तत्० (पु०) [उप + शी + क्त] स्वप्न करने वाला, प्रशान्त ।

उपश्रुत तत्० (पु०) [उप + श्रु + क्त] प्रतिश्रुत, अङ्गीकृत, स्वीकृत वाग्दत्त ।

उपशास्त्र तत्० (पु०) शास्त्रासुपायी, शास्त्रानुवर्ती ।

उपसंहार तत्० (पु०) [उप + सं + ह् + क्त] शेष नाश, निष्कर्ष, भीमांश, आक्रम, संग्राह, संशेष व्यतीत ।

उपस तद्० (पु०) दुर्गन्धि, द्विगन्ध ।

उपसक्ति तत्० (स्त्री) [उप + सङ् + क्त] बहुमात्र प्रतिपादन, उपासना, सेवा, धिनय पूर्वक गुरु स्वीय ममन ।

उपसना तत्० (क्ति) उपसना, महुना, प्रचना ।

उपसर्ग तत्० (पु०) [उप + सृज् + क्त] रोगभेद, उपद्रव, पीडा, प्रपरा प्रभृति बीस अठ्ठय शब्द ।



उपसर्जन तत् ( पु० ) [ उप + सृज् + घनट् ]  
प्रधान भिन्न, उपप्रधान, उपस्थित ।

उपसर्पण तत् ( पु० ) [ उप + सर्प् + अनट् ]  
उपासना, अवगमन, अनुवृत्ति ।

उपस्त्री तत् ( स्त्री० ) रदेली, उपपत्नी, देवनी ।

उपस्य तत् ( पु० ) [ उप + स्या + ड ] लिङ्ग, स्त्री  
पुरुष चिह्न विशेष ।—निग्रह ( पु० ) जितेन्द्रि-  
यत्न, कामदमन ।

उपस्थाता तत् ( पु० ) [ उप + स्या + तृष् ]  
भृत्य, सेवक ।

उपस्थान तत् ( पु० ) [ उप + स्या + अनट् ] नैकद्य,  
समीप्य, उपामना ।

उपस्थापन तत् ( पु० ) [ उप + स्या + णिच + अमट् ]  
उपस्थिति कारण, निकट आनयन ।

उपस्थित तत् ( पु० ) [ उप + स्या + क्त ] समीपस्थित,  
आगत, आनीत, उपनीत, उपसृज्, वर्तमान ।  
—चका ( पु० ) सद्गता, वचन पद ।—कवि  
( पु० ) शीघ्रकवि, आशुकवि ।

उपस्थिति तत् ( स्त्री० ) [ उप + स्या + क्ति ] उपस्थान,  
निकट होना, प्राप्ति निष्पत्ति ।

उपहत तत् ( पु० ) [ उप + हत् + क्त ] नष्ट, उत्पात  
ग्रस्त, आघात प्राप्त, घत अनुद्वन्द्व ।

उपहसित तत् ( पु० ) [ उप + हस् + क्त ] उपहास  
प्राप्त, विद्रूप ।

उपहार तत् ( पु० ) [ उप + ह् + घञ् ] उपदोहन द्रव्य,  
भेंट, उपायन, सत्कार ।

उपहास तत् ( पु० ) [ उप + हस् + घञ् ] परिहास,  
निन्दार्थ वाक्य, विद्रूप, हसि ठट्टा ।

उपहास्य तत् ( पु० ) [ उप + हस् + ध्यञ् ] हसनीय,  
निन्दनीय ।—ता ( स्त्री० ) निन्दा, गर्हा, फुत्सा,  
दुष्कीर्ति ।

उपहित तत् ( पु० ) [ उप + धा + क्त ] स्थापित ।  
उपहत तत् ( पु० ) [ उप + ह् + क्त ] आनीत, दत्त ।

उपाशु तत् ( पु० ) जपविशेष, निर्जनस्य, अशुद्ध ।  
उपाकर्म तत् ( पु० ) आरम्भ, वर्षाकाल के बाद  
वेद आरम्भ करने का समय, सत्कार विशेष ।

उपाख्यान तत् ( पु० ) [ उप + खा + ख्या +  
घनट् ] पूर्व वृत्तान्त कथन, आख्यायन, इतिहास ।

उपाङ्ग तत् ( पु० ) अग्रप्रधान भाग, तीक्ष्ण, पत्रलेखा  
सुद्रभाग ।

उपाङ्गना तत् ( क्रि० ) उखाडना, उखेलना ।

उपात तत् ( पु० ) गृहीत, प्रनिगृहीत, प्राप्त ।

उपादान तत् ( पु० ) [ उप + धा + दा + अमट् ]  
अपने अपने विषयों को और इन्द्रियों का ज्ञान,  
प्रत्याहार, प्रवृत्तिजनक ज्ञान, न्यायमत में समवायी  
करण ।

उपादेय तत् ( पु० ) [ उप + धा + दा + य ] ग्राह्य,  
उत्तम, ग्रहण योग्य, उत्कृष्ट, विशेषकर्म ।—ता  
( स्त्री० ) उत्तमता, उत्कर्ष ।

उपाध तद् ( पु० ) उपद्रव, अन्वय ।

उपाधि तत् ( पु० ) धर्मध्यान, छल, पदवी, नाम  
चिह्न, कुटुम्ब व्यापृत, उपनाम ।

उपाधी तद् ( पु० ) अन्वयायी, उपद्रवी, अधर्म ।

उपाध्याय तत् ( पु० ) [ उप + अधि + इह् + घञ् ]  
अध्यापक, पवित्र, उपदेशक ।

उपाध्यायी तत् ( स्त्री० ) अध्यापकभार्या, उपदेशनी ।

उपानत तत् ( स्त्री० ) उपानह, पादुका, जूती ।

उपाना तद् ( क्रि० ) उपार्जन करना सिरजना ।

उपान्त तत् ( पु० ) निकट, समीप, अन्तिक, पास ।

उपाय तत् ( पु० ) [ उप + धा + इ + अल् ] साधन,  
चेष्टा, प्रतीकार, उपार्जन ।

उपायन तत् ( पु० ) [ उप + अय् + अमट् ] उपहार  
उपदोहन, भेंट, मत की प्रतिष्ठा, समीप गमन ।

उपायी तत् ( पु० ) उपाय कारक, उपार्जक, छोड़ी,  
सन्धानी, यज्ञी ।

उपार्जित तत् ( पु० ) [ उप + अर्ज्ज् + अमट् ] अर्जन,  
धनादि सञ्चय, धनाहरण, सामकरण, एकत्रित  
करण ।

उपार्जित तत् ( पु० ) [ उप + अर्ज्ज् + क्त ] सञ्चित,  
आर्जित, गोदा हुआ ।

उपालम्भ तत् ( पु० ) [ उप + धा + लभ् + अल् ]  
दुर्वाक्य, निरस्कार, विलम्ब, कालक्षेप, उलहना,  
टाक टोल ।

उपास तद्० (गु०) उपवास, अनाहार, भोजना-  
भाव ।  
उपासक तद्० (गु०) [उप् + चास् + क्तृ] उपासक-  
कर्ता, आराधक, साधक, भक्त ।  
उपासन तद्० (गु०) [उप + चास् + अनट्] शुभ्रूपा,  
शेषा, आनुगत्य, आराधना, धनुर्विद्या ।  
उपासना तद्० (गु०) [उप + चास् + अन + आ]   
सेवा, शुभ्रूपा, परिचर्या, आराधना ।  
उपासित तद्० (गु०) [उप + चास् + क्तृ] आराधित,  
मेवित, पूजित ।  
उपासी तद्० (गु०) उपमा, भूषा, उपवासी ।  
उपास्य तद्० (गु०) [उप + चास् + य] आराध्य,  
सेव्य, पूजे योग्य ।  
उपेक्षा तद्० (लो०) [उप + ईच् + ह्] अस्वीकार,  
त्याग, अनादर, धोखा ।  
उपेक्षित तद्० (गु०) [उप + ईच् + क्तृ] अस्मान्,  
तिरस्कृत, निन्दित, परित्यक्त ।  
उपेत तद्० (गु०) [उप + ई + क्तृ] युक्त, मिलित,  
एकत्रित, समागत, आसन्न ।  
उपेन्द्र तद्० (गु०) यामन, इन्द्र का छोटा भाई,  
विष्णु का यामन अन्तार, जो अदिति के गर्भ से  
हुआ था ।  
उपोद्घात तद्० (गु०) [उप् + उत् + हल् + घञ्]  
उदाहरण, आरम्भ, समाप्ति विशेष ।  
उपोषण तद्० (गु०) [उप + षम् + अनट्] अनाहार,  
कटाका, उपवास ।  
उफला दे० (क्रि०) उजलता, उजलता, उकलता ।  
उफान दे० (गु०) उफाल, उकाल ।  
उफकना दे० (क्रि०) बमन होना, भोकाना, फूँ होना,  
उलठी होना, रडू करना ।  
उफकाई दे० (लो०) उछट, उछाल ।  
उघरन दे० (गु०) उपन, मञ्जुन, बांटना, अभ्यङ्ग ।  
उघटन दे० (गु०) उपटन, मञ्जुन, उघटना, अभ्यङ्ग ।  
उघरण तद्० (गु०) उद्वर्तन, बचाव, आड़ ।  
उघरा तद्० (गु०) अधिक, बहुत, बढ़ती, रक्षित ।  
उवलना दे० (क्रि०) सीजना, खलपलाना, पकना ।  
उवसना दे० (क्रि०) महना, गलना, पचना ।  
उवाना तद्० (क्रि०) बीना, रोपना, लगाना ।

उवारना तद्० (क्रि०) छोड़ना, बचाना, राखना ।  
उवालना दे० (क्रि०) उसीजना, उधेवना, रांधना ।  
उम (गु०) ऊर्ध्व, उप, द्वि, दो ।  
उमक तद्० (गु०) रोड, भाद, मञ्जूक ।  
उमय तद्० (गु०) युगल, युग्म, दो, दोनों, द्वि,  
परस्पर ।  
उमयतः तद्० (अ०) पार्यतः, पार्यवृत्त, दोनों  
ओर से ।  
उमयत्र तद्० (अ०) दोनों स्थानों में, दोनों  
तरफ़ ।  
उमयथा तद्० (अ०) द्विधा, दो प्रकार, दोनों  
तरह ।  
उमरना तद्० (क्रि०) उठना, बढ़ना, उतारना,  
निकलना, निकल जाना ।  
उमराई तद्० (गु०) रतराई, कुशाहट ।  
उमराना तद्० (क्रि०) बहुत भराना, छकाना ।  
उभाड़ना तद्० (क्रि०) लेजाना, ठगना, काड़ना ।  
उभाना तद्० (क्रि०) उठाना, खड़ा करना, उतिया  
करना ।  
उमार तद्० (गु०) घूमड़ा, कुशावट ।  
उमारना तद्० (क्रि०) जुगाना, उस्काना, उच्चे-  
जित करना ।  
उमङ्ग तद्० (गु०) मग्नता, धुन, तृष्णा, उत्साह,  
आनन्दाधिक्य, हृष्टता ।  
उमङ्गना तद्० (क्रि०) आनन्द ने आने जाना,  
उत्साह पूर्वक आने बढ़ना ।  
उमङ्गी तद्० (गु०) उच्चवदाभिलाषी, धुनी,  
अभिलाषी ।  
उमण्डना उमडना तद्० (क्रि०) उमडना, उभरना,  
परिवृद्ध होना, बढ़कर बहना, वेग से बहना ।  
उमरी तद्० (स्त्री०) घुलत वृक्ष ।  
उमहाना तद्० (क्रि०) उमडना ।  
उमा तद्० (स्त्री०) [ उ + मा + आ ] दुर्गा,  
पार्वती, कीर्ति, हरिद्रा, ज्ञानि शान्ति । भगवती,  
पार्वती, महादेव की स्त्री पार्वती, यह हिमालय  
की कन्या थी, मेना के गर्भ से इक्ष्वाकु जन्म  
हुआ था, पूर्व जन्म में यह दत्त प्रजापति की

कन्या थी, दक्ष से महादेव की निन्दा सुन इसने  
 अपना देह त्याग किया, तदनन्तर हिमालय के  
 यहाँ उत्पन्न हुई। शिव को पति पाने के लिये  
 इसने कठोर तपस्या की, इसकी कठोर तपस्या  
 देख, माता ने “उमा” तपस्या मत करो,  
 वारण किया, इसी कारण इसका नाम उमा हुआ।  
 —पति ( पु० ) शिव, महादेव ।—सुत ( पु० )  
 कार्तिकेय, और गणेश ।—श ( पु० ) [ उमा  
 + श ] महादेव, शिव ।

उर तत्० ( पु० ) बबलून, छाती, गोदी, हृदय ।  
 —क्षत ( पु० ) [ उर + क्षत ] कुफुस ( पी पीड़ा,  
 हृदय व्याधि ।

उरुषा तत्० ( पु० ) [ उर + गम् + इ ] अहि, सर्प,  
 नाग, भुजङ्ग ।

उरुगना तत्० ( क्रि० ) सहना, सहन करना, जोग-  
 यना । यथा—

“आदि भरत्यू कहांधौ करे जिय, भाय गुनौ,  
 जो दुख देय, तो से उरगो यातसुनौ”

रामचन्द्रिका

उरग्र तद्० ( स्त्री० ) भेड़ी ।

उरगाद तत्० ( पु० ) सर्वभक्षक, गरुड, विष्णु का  
 वाहन ।

उरगारि तत्० ( पु० ) [ उर + गारि ] गरुड, नागरिपु,  
 वैजय, सर्पों को खाने वाला, सर्वशत्रु ।

उरभना तद्० ( क्रि० ) अटकना, लगना, सक्त होना,  
 आसक्त होना ।

उरवसी तद्० ( स्त्री० ) सं० उर्वशी, अतिप्रिय, हृदय  
 में वास करने वाली, देवाङ्गना विशेष, एक अप्सरा  
 का नाम, नारायण की अङ्गा से यह उत्पन्न हुई थी,  
 श्वेतद्वीप में नर नारायण की तपस्या भङ्ग करने के  
 शर्म, इन्द्र की अप्सरायें वहाँ गयीं, तब नारायण  
 ने उर्वशी की सृष्टि की, उर्वशी का सौन्दर्य देख  
 कर और अप्सरायें लज्जित हो गयीं, और फिर  
 गयीं ।

उरमिला तद्० ( स्त्री० ) लक्ष्मणजी की स्त्री का नाम,  
 राजा सीरध्वज जनक की कन्या ।

उरविजा तद्० ( स्त्री० ) भूमिसुता, पृथ्वी से उत्पन्न,  
 जानकी, पृथ्वी की कन्या, सीता, रामप्रिया ।

उररी तत्० ( अ० ) स्वीकार, अङ्गीकार ।—कार  
 ( पु० ) स्वीकार ।—कृत ( पु० ) अङ्गीकृत, स्वीकृत ।

उरस्त्राण तत्० ( पु० ) [ उर + त्रै + अण + वृ ] वृ  
 क्षाण, कवच, घातक ।

उरु तत्० ( पु० ) [ उर + उ ] विशाल, अछ, बड़ा ।  
 —पथ ( पु० ) महापथ, राजमार्ग ।—व्युत्था ( पु० )

राक्षस, निशाचर ।

उरुगाय तत्० ( पु० ) [ उर + ग + इ + यञ् ] श्लोक,  
 विष्णु ।

उरुज तत्० ( पु० ) [ उर + ज + इ ] वैश्य, बनिर्वा,  
 तीक्ष्ण वर्ण ।

उरेव दे० ( स्त्री० ) उलभाय, बसुना ।

उरोज तत्० ( पु० ) [ उर + ज + इ ] स्तन, कुं,  
 पयोधर ।

उर्जित तत्० ( पु० ) [ उर्ज + क्त ] वर्द्धित, उन्नत,  
 उत्पृष्ट ।

उर्ण तत्० ( स्त्री० ) भेड़, भेड़ आदि का रोम, ऊन ।

उर्द तद्० ( पु० ) उर्द, उरद, माय, कलाई ।

उर्दविगनौ तद्० ( स्त्री० ) अन्तःपुर रत्निका, रत्नश्रवण  
 की पहरे हैं ।

उर्वर तत्० ( पु० ) [ उर + व + ऋ ] शम्भु  
 स्थान, शश्यान्वित देश ।

उर्वरा तत्० ( स्त्री० ) उपजाऊ भूमि ।

उर्वशी तत्० ( स्त्री० ) देखो उरवसी ।

उर्वी तत्० ( स्त्री० ) [ उर + ई ] पृथ्वी, पृथिवी,  
 धरणा, धरती ।—धर ( पु० ) धरत, श्रेयनाग ।

उलङ्ग तद्० ( पु० ) नग, विश्व, दिगम्बर, बलरहित ।

उलचना तद्० ( क्रि० ) छानना, सुखाना, पसाना ।

उलभन तद्० ( स्त्री० ) फँसाय, उटकाय, असमाधेय ।

उलभना तद्० ( क्रि० ) फँसना, लिपटना, अगहना ।

उलझेड़ा तद्० ( पु० ) उलभन, उलभाय ।

उलटना तद्० ( क्रि० ) पलटना, झँधाना, विपरीत  
 करना, दोहराना, मोड़ना, नीचे ऊपर करना ।

उलट पुलट तद्० ( क्रि० वि० ) गटपट, तल ऊपर,  
 इधर का उधर विपर्यय ।

उलटा तद्० (यु०) झौंथा, पलटा, विपरीत ।  
 उलथना तद्० (क्रि०) लहराना, बुलना ।  
 उलथा दे० (यु०) अनुवाद, भाषान्तर करण, अनुकरण,  
 रागिनी विशेष ।  
 उलथना दे० (क्रि०) लेटना, शयन करना ।  
 उललना दे० (क्रि०) लोटाना, गिराना, सुलाना ।  
 उलहना तद्० (यु०) निन्दा, दोष, उपालम्भ, गिझा,  
 उगना ।—देना (क्रि०) उपालम्भ करना, पुका-  
 रना ।  
 उलाहना तद्० (यु०) उलहना, उपालम्भ ।  
 उलीचना दे० (क्रि०) उँडेलना, जल सींचना ।  
 उलीचा दे० (क्रि०) उलचा, थोड़ा थोड़ा करके जल  
 निकालना, जलनिस्वारण, उछालकर जल निका-  
 लना ।  
 उलूक तद्० (यु०) उलू, पेचा, उलूधा, कौरव पचीय  
 थोड़ा विशेष, महाभारत युद्ध के पहले दुर्वोधन का  
 दूत होकर यह युधिष्ठिर के पास गया था, शकुनि  
 की अनुमति से दुर्वोधन ने पाण्डवों को युद्धार्थ  
 आह्वान किया था, युद्ध के आठारहवें दिन यह  
 सहदेव के द्वारा मारा गया था ।  
 २—वैशेषिक दर्शन प्रणेता, इनका दूसरा नाम  
 कणाद था, इसो कारण वैशेषिक दर्शन को उलूक्य  
 और कणाद दर्शन कहते हैं । यह ख्रिष्टाब्द के ५००  
 वर्ष पूर्व उत्पन्न हुए थे ।  
 उलूखल तद्० (यु०) ओखली, उलूखल, ओखरी ।  
 उलूपी तद्० (स्त्री०) नागकन्या, अर्जुन की पत्नी  
 और कौरव नामक नाग की कन्या ।  
 उलेपड़ना दे० (क्रि०) उलभना, खालो करना ।  
 उलका तद्० (यु०) लूका, तारे का गिरना, आकाश  
 में जो एक प्रकार का आकाश का गिरता है, अग्नि-  
 विष्ट ।—पात (यु०) तारा छूटना, लूका गिरना,  
 अशुभप्रथम चिन्ह, आश्चर्य ।—मुखी (स्त्री०)  
 गृगली, गीड़ड़ी, सिवारिन ।  
 उलमुख तद्० (यु०) (सं० में उलमुख) लूका, कोयला,  
 अङ्गारा ।  
 उल्लङ्घन तद्० (यु०) अन्वया, नौचना, न मानना ।  
 उल्लास तद्० (यु०) [उत् + लस् + श्] धानन्द,  
 हुलास, प्रसन्नता, हर्ष ।

उल्लू तद्० (यु०) देखो उल्लूक ।—पन (यु०) मूर्खता  
 गथाँपन ।  
 उल्लेख तद्० (यु०) [उत् + लिख + श्] उच्चारण,  
 कथन, प्रसङ्ग ।  
 उल्लेखन तद्० (यु०) [उत् + लिख + अनट्] समन,  
 खनन, कथन, उच्चारण ।  
 उल्लेखित तद्० (यु०) [उत् + लिख् + क्त] प्रस्तावित,  
 कथित, उक्त ।  
 उल्लोच तद्० (यु०) [उत् + लुच् + श्] चन्द्रा-  
 तप, चाँदनी ।  
 उल्लोल तद्० (यु०) महातरङ्ग, कड़ौल, यड़ीभारी  
 लहर ।  
 उल्लूण तद्० (यु०) गमाँवेष्टन, गाली, जरायु,  
 (यु०) व्यवस्था, पित्तादि विकार ।  
 उशना तद्० (यु०) शुक्राचार्य, भार्गव, दैत्यगुह ।  
 उशीर तद्० (यु०) देवविशेष, चन्द्रवंशीय राजा  
 विशेष ।  
 उशीर तद्० (स्त्री०) खसखस, मुगन्धि-तृण ।  
 उशना तद्० (क्रि०) उचलना, सोजना ।  
 उपा तद्० (स्त्री०) वाणराज की कन्या, अतिरुद्ध  
 की स्त्री, मोर, पोद्द, तड़का, प्रभात ।—काल (यु०)  
 प्रत्युप समय, प्रभात काल ।—पति (यु०) अति-  
 रुद्ध, कामदेव का पुत्र ।  
 उपित तद्० (यु०) [वप् + क्त] पर्युपित, दग्ध,  
 स्मरित, स्थित, आश्रित ।  
 उप्र तद्० (यु०) ऊँट, पशु विशेष ।  
 उप्र तद्० (यु०) तम्र, गन्ध, घाम, उग्र आलय,  
 ग्रीष्मकाल, तिद, घकाल ।—नदी (यु०)  
 वैतरणी नदी, यमराज के द्वारपर तपी हुई नदी ।  
 —घाटप (यु०) स्वेद, पसीना ।—घोर्य (यु०)  
 तोर्य, तेज युक्त द्रव्य, रुत, उग्र ।—रश्मि (यु०)  
 दिवाकर, सूर्य ।  
 उप्या तद्० (स्त्री०) अथवाधि, यस्मारीक, सन्ताप,  
 पित्त, (तद्) उदात्ता, उकात्ता, सिजाया, सिद्ध  
 धान्य ।—इन्नु (यु०) [उत् + श् + इन्नु] सूर्य, रश्मि,  
 मानु ।—गम (यु०) निदाघ काल का आगमन ।  
 उत्पिण्क् तद्० (यु०) सप्ताह अष्टौ विशेष ।

उष्णीप तत्० ( पु० ) शिरोवेष्टन वस्त्र, पगड़ी, पाग, मुकुट ।

उष्मा तत्० ( स्त्री० ) ताप, धूप, गरमी, क्रोध ।

उसता दे० ( पु० ) नाई, नापित, उस्ता ।

उसरना तद्० ( क्रि० ) टलना, पीठदेना, हटना, उपसर्ण करना ।

उसलपसल दे० ( पु० ) घबराया, हडबडा ।

उसरा दे० ( पु० ) उसारा, यारान्दा ।

उसास तद्० ( पु० ) श्याम, सांस, पवन, प्राण वायु, दीर्घ निश्वास, ठरठी सांस ।

उसीजना दे० ( क्रि० ) पक जाना, फुलस जाना ।

उसीसा दे० ( पु० ) सिरहाना, तकिया ।

उसेचना दे० गारना, खानना, पसाना ।

उस्काना दे० उकसना, उभारना ।

उस्तरा दे० सेंतमेंत, यिन मोल ।

उस्ताना दे० जलाना, सुलगाना ।

उस्तुरा दे० ( पु० ) आस्तुरा, चुरा, चुर ।

उस्त्र तत्० ( पु० ) वृष, सौंड, किरण ।

उस्त्रा तत्० ( स्त्री० ) धेनु, गी, गाय ।

उस्त्रधन्वा तत्० ( पु० ) इन्द्र, देवराज ।

उहरना दे० ( पु० ) बैठना, दयाना, घिराना ।

उहाड़ दे० ( पु० ) आश्चर्य, बैठन, जोहार ।

उहार दे० ( पु० ) उचार, जोल, पट, परदा ।

उहिया दे० कनकटा, योगियों के पहनने का धातु का कड़ा, यथा—“कर उहिया कांथे मृग साला”

( पद्मावत )

## ऊ

ऊ तत्० ( श्र० ) वाक्पारम्भ, रक्षा, महादेव, ब्रह्मा, प्रथमवाक्य, बन्धन, मोक्ष, प्रधान, चन्द्र ।

ऊख तद्० ( पु० ) ईख, ईसुदण्ड, गन्ना, गौंदा ।

ऊखली तद्० ( स्त्री० ) उलूखल ।

ऊगर तद्० ( पु० ) उदुम्बर, गूलर, ऊमर ।

ऊंघ दे० ( स्त्री० ) ऊंघाई, नींद, निदास ।

ऊंघना दे० ( क्रि० ) झपकी में होना, नींद आना ।

ऊंघाई दे० ( स्त्री० ) ऊंघास, नींद, ऊंघ ।

ऊंचा तद्० ( पु० ) उच्च, उन्नत, बड़ा, लम्बा ।

ऊंचाई तद्० ( स्त्री० ) उचान, उन्नति, लम्बाई ।

ऊंचा धोलने वाला, ( पु० ) घमण्डी, अभिमानी, अहङ्कार से धोलने वाला ।

ऊंचासुनना, ( क्रि० ) कम सुनना, बाधियं, बहरापन ।  
ऊंचकानी, ( सं० ) बहरापन ।

ऊंचे धोल का धोल नीचा, अहङ्कारियों का अन्तिम पराजय, बुरा परिणाम ।

ऊट तद्० ( पु० ) जन्तु विशेष, उट्ट, ( स्त्री० ) ऊटनी ।

ऊटकटारा दे० ( पु० ) औषधि विशेष, ऊट का भोजन विशेष, भरभाड़, उटकटाई ।

ऊटपटाङ्ग दे० ( पु० ) अनर्धक, फकोड़ियात ।

ऊन दे० ( पु० ) मूर्ख, निर्वैश, मृत, पुत्र रहित, मृत मनुष्य ।

ऊद, ऊदधिलाघ तद्० ( पु० ) जलजन्तु विशेष, जिमका आकार घिड़ी से कुछ मिलता है ।

ऊदा दे० ( पु० ) भूरा, धुंधला रङ्ग, बैरा ।

ऊधम दे० ( पु० ) उत्पात, उपद्रव, बलवा ।

ऊधो तद्० ( पु० ) ( सं० उद्धय ) सं उद्धय, श्री कृष्ण का चाना मित्र और भक्त ।

ऊन तद्० ( पु० ) उर्षा, नृत्न, कम, घोड़ा, घटा, उदास, सुस्त ।—नी ( पु० ) ऊन से बनी हुई वस्तु, ऊन रचित ।

ऊपर तत्० ( श्र० ) उपर, ऊर्ध्व, ऊपरि, अधिक, ऊंचा ।

ऊपरो तद्० ( पु० ) विदेशी, परदेशी, ऊपर का ।

ऊपर दे० ( पु० ) उदुम्बर, गूलर ।

ऊघट दे० ( पु० ) औघट, विकट रास्ता, बुरा रास्ता ।

ऊघट दे० ( पु० ) औघट, अगम्य ।

ऊम दे० ( पु० ) ग्रीष्मता, दुर्बलता ।

ऊयी दे० ( स्त्री० ) धांसी, वरमीक, फीट ।

ऊस तत्० ( पु० ) जहा, जांच ।

ऊर्ज तत्० (पु०) [ऊर्ज + अम्] कार्तिक मास, यत्र, चेटा, यल, निश्वास, उत्साह ।  
ऊर्जस्वल् तत्० (पु०) [ऊर्जम् + वल्] अतिशय बलवान्, उग्र, अन्धिर, चञ्चल ।  
ऊर्जस्वी तत्० (पु०) [ऊर्जस् + विद्] अधिक बलशाली, तेजस्वी, (पु०) रसालङ्कार विशेष ।  
ऊर्णानाम तत्० (पु०) मकरी, कीट विशेष, रेशम का कीड़ा ।  
ऊर्णा तत्० (पु०) मेड़ी के रोम, रोंवा ।  
ऊर्ध्व तत्० (पु०) ऊपर, ऊँचा, उच्च, उन्नत, उच्छिन्न, उल्लू, लम्बा ।—गामी (पु०) ऊर्ध्वगमनकर्ता, पुराणात्मा ।—जातु (पु०) ऊपरस्थ जट्टा ।—तिक (पु०) चिरायता ।—देव (पु०) विष्णु, नारायण ।—पाद (पु०) जीव विशेष, शरभ ।—पुण्ड्र (पु०) वैष्णवी तिलक ।—घातु (पु०) उन्नत हस्त, प्रतविशेष, साधुविशेष ।—रेखा (स्त्री०) हस्तरेखा विशेष, गुम्बूचक हस्तरेखा ।—रेता (पु०) श्रस्त्रलक्षित योयं, कामत्यागी, आजन्म ब्रह्मचारी,

भीष्म, महादेव, मुनिविशेष ।—लोक (पु०) स्वर्ग, सुरलोक, देवलोक ।—श्वास (पु०) रोगविशेष, दमा, ऊर्ध्व वायु, शीघ्र गमन से उच्चश्वास ।—म्ह (पु०) उपरिस्थित, उच्चस्थ ।

ऊर्ध्वशी तत्० देखो उरवसी ।

ऊर्मि तत्० (पु०) तरङ्ग बीचि, प्रकाश, वेग, भङ्ग, वेदना, पीड़ा, उत्प्रेषण, लहरी, हल्का डेऊ —माला (स्त्री०) तरङ्ग समूह, अधिकतरङ्ग —माली (पु०) समुद्र, जलधि ।

उलूवा तत्० (पु०) तृण विशेष ।

ऊपण तत्० (पु०) कानोमिर्च, गोलमिर्च ।

ऊपर तत्० (पु०) चारभूमि, चारी भूमि, नोना भूमि ।

ऊपा तत्० (स्त्री०) देखो उपा ।

ऊसर तत्० (पु०) चारभूमि, विना उपज की भूमि ।

ऊह तत्० (पु०) तर्क वितर्क, ऊहापोह, अनुसन्धान विचार ।—पोह (पु०) विचारपरम्परा ।

ऊह्य तत्० (पु०) श्रवणाहार, वाक्य में आधरयक किन्तु अनुक्त शब्द को किरण द्वारा जानना ।

## ऋ

ऋ, सातवां स्वरवर्ण ।

ऋ तत्० (अ०) गहणशास्त्र, निन्दावचन, (स्त्री०) गदिति, देवप्रान्त, परिहास वाक्य, विकार, (पु०) सूर्य, गणेश ।

ऋक् तत्० (पु०) वेद विशेष, ऋग्वेद, मन्त्र विशेष ।

ऋक्थ तत्० (पु०) धन सम्पत्ति, सुवर्ण, पितृधन ।

ऋत् तत्० (पु०) रीछ, भाङ्ग, नक्षत्र ।

ऋग्वेद तत्० (पु०) वेद विशेष ।

ऋचा तत्० (स्त्री०) वेदमन्त्र, वेद, काण्ठी, कण्ठिका ।

ऋजु तत्० (पु०) श्वक्र, सरल, सीधा, सुधा, सोभा

—काय (पु०) करव्ययमुनि, (पु०) सांधा शरीर ।

—भुज (पु०) सीधी रेखा वा भुज ।—भुजक्षेत्र

(पु०) यह क्षेत्र जो कई सीधी रेखाओं से घिरा हो

।—स्वभाव (पु०) सरलान्तःकरण, सदान्तःकरण

विशिष्ट ।

ऋण तत्० (पु०) उधार, देना, कर्ज ।—ग्रहण (पु०)

उधार लेना, कर्जा करना ।—दाता (पु०) महाजन,

ज्ञान देने वाला ।—पत्र (पु०) त्रयग्रहण सूचक

पत्र, तमस्वुक ।—मुक्त (पु०) ऋण परिशोध, धार रहित ।—मुक्तपत्र (पु०) ऋण परिशोध सूचकपत्र, फारिगृह्णी ।—माट (पु०) जो कर्जा नहीं चुकाता ।—पनयन (पु०) ऋण शोधन, धार चुकाना, कर्जा दे देना ।

ऋणिया तत्० (पु०) ऋणो, धारता ।

ऋत तत्० (पु०) सत्य, यथार्थ, वृत्ति विशेष, उच्च-शील वृत्ति के द्वारा निर्यारह, (पु०) दीप्त, वृजित ।—ध्रमा (पु०) विष्णु, नारायण ।

ऋतु तत्० (पु०) वसन्त आदि द्वाः प्रकार का काण, स्त्री कुसुम, रजोदग्गं, दीप्ति ।—मती (स्त्री०) रजस्वला, स्त्री धर्मिणी, पुरवती ।—राज (पु०) वसन्तकाल ।—स्नाता (स्त्री०) रजोदग्गं के अनन्तर चतुर्थ दिन स्नाता स्त्री ।—स्नान (पु०) चतुर्थ दिन का स्नान ।

ऋते तत्० (पु०) विना, भिन्न, अलग ।

ऋत्विक् तत्० (पु०) यज्ञ कराने वाला पुरोहित, याजक ।

ऋद्ध तत्० (गु०) सम्पन्न, धनाढ्य, समृद्ध ।  
 ऋद्धि तत्० (खे०) समृद्धि, धन सम्पत्ति, एक श्रौषध  
 का नाम, पार्यती, निरजा ।  
 ऋभुजा तत्० (खी०) इन्द्राणी, शची ।  
 ऋपभ तत्० (गु०) ऋषि, ऋषिश्रेष्ठ, वैश ।  
 ऋपि तत्० (गु०) सुनि, तपस्वी, तपसी, तापस  
 ।—राज (गु०) प्रधान ऋषे ।—मित्र (गु०)  
 शान्ति प्रिय, राम चन्द्रिका में विश्वामित्र के लिये  
 इसका प्रयोग किया गया है ।  
 ऋपीश तत्० (गु०) ऋषियों में प्रधान, ऋषिश्रेष्ठ ।  
 ऋप्यकेतु तत्० (गु०) अनिष्ट, ऊषापति ।

ऋप्यमूक तत्० (गु०) पर्यत विशेष, जो किष्किन्धा  
 के पास है ।  
 ऋप्यशुद्ध तत्० (गु०) तयःप्रभाव सम्पन्न महर्षि,  
 महाराज दशरथ की कन्या शान्ता इनसे ठगरी  
 गयी थी, इन्हींके द्वारा पुत्रोत्ति यज्ञ करा। ऋ राजा  
 दशरथ ने चार पुत्र प्राप्त किये थे । ये महर्षि  
 विभाण्डक के पुत्र थे । स्वर्गीय अश्वरा उर्वशी को  
 देखने में विभाण्डक महर्षि का रेतस्थलन हुआ ।  
 संयोगवश यह जल में गिरा, जिसे एक हरिणी ने  
 जल के साथ पी लिया । उसी गर्भ में ऊष्यशुद्ध  
 उत्पन्न हुए थे ।

## ऋ, लृ, लृ

ऋ तत्० (खी०) देवमाता ।

लृ-लृ स्वर का नवम और दशम वर्ण ।

## ए

ए तत्० (अ०) अन्नसूया, आमन्त्रण, अनुकम्पा,  
 आह्वान, सम्बोधनार्थक, (गु०) विष्णु ।  
 एक तत्० (गु०) अद्वितीय, प्रथम, मुख्य, अन्य,  
 केवल, प्रथम संख्या ।  
 एक आध तत्० कुछ घोड़ा, एक या आधा ।  
 एकई तद्० अन्नप, वही, अभिन्न, मुख्य, समान ।  
 एकएक तत्० पृथक पृथक, भिन्न भिन्न, प्रत्येक ।  
 एकक तत्० एकाकी, अकेला, निराला, अमहाय ।  
 एक काल तत्० (गु०) समान समय, एक समय,  
 पुण्यत् ।  
 एककालीन तत्० (गु०) समकाल उत्पन्न, एक समय,  
 एक काल, एक ही वार ।  
 एक की दस सुनाना दे० (खी०) इन्द्रायवराह का  
 अधिक दण्ड, एक गाली देनेवाले को दस गाली  
 सुनाना ।  
 एकचित्त तत्० (गु०) एकान्ता, एक मन, अन्नन्य-  
 मनाः ।  
 एकजाई तद्० (खी०) सकृत् प्रसूता, पहिलौठी ।  
 एकटक दे० (गु०) एकताक से देखना, सन्तुष्टा दृष्टि ।  
 एकट्टा दे० एक स्थान में संग्रह किया गया ।

एकतन्त्री तत्० (गु०) एक प्रभु के वशवर्ती, एक  
 तन्त्रयुक्त, एक मत्ताघनम्बी ।  
 एकतरा तद्० (गु०) अंतरिमा ज्वर, तिजारी ।  
 एकतही तद्० (गु०) एक जगह, (खी०) मिरज़ई ।  
 एकता (खी०) एकाई, समानता, मेम, एकत्व, ऐश,  
 मिलान, अन्नन्यता, बहुत लोग एकता के स्थान में  
 एकता कहा करते हैं जो अगुद्ध है ।  
 एकतान तत्० (गु०) एकाग्र, एक विषयासक्त-चित्त ।  
 एकताल तत्० (गु०) समन्वित ताल, समताल,  
 मुख्यलय, मेलताल, एकस्वर ।  
 एकतीर्थी तत्० (गु०) [एक + तीर्थ + इञ्] सतीर्थ,  
 गुफभाई ।  
 एकतुम्बी तत्० (खी०) तानभूरा, तम्भूरा, वाद्ययन्त्र  
 विशेष ।  
 एकत्र तत्० (अ०) एक स्थान में, एक ठौर, एक सङ्घ  
 में मिलित ।  
 एकदा तत्० (अ०) एक समय, एक वार, किसी  
 समय ।  
 एकदिक् तत्० (गु०) एकदेश, एक भाग, समदेश ।  
 एकदेशस्थ तत्० (गु०) एक देशी, समदेशीय ।

एकदेह तद् (५०) बुधग्रह, एक शरीर, अभिन्न,  
एक आत्मा ।

एकधा दे० (अ०) केवल, एक वार, एक प्रकार ।

एकन, एकन्ह तद् एकने, किसी ने, एक को, किसी  
को ।

एक न एक (सा०) एक नहीं तो दूसरा, एक या दूसरा ।

एकपट्टा दे० (५०) ओड़नी, चिछोरी ।

एकपत्नी तद् (स्त्री०) पतिव्रता, सती, साध्वी ।

एकपरामर्श तद् (५०) एकतन्त्र, एकमत ।

एकपाश तद् (५०) एकपार्ष्व, एक तर्फ ।

एकप्रभुत्व तद् (५०) एक राजत्व, एकाधिपत्य ।

एकयोनि तद् (५०) सहोदर, एक माँके ।

एकरूप तद् (५०) समभाव, एकता ।

एकलब्ध तद् (५०) निपाद, राज हरधनु का पुत्र

और द्रोणाचार्य का शिष्य, यह अपनी युगभक्ति के

कारण विरथात है । द्रोणाचार्य ने इसे नीच जाति

समझ कर अश्वविद्या सिखलाना अस्वीकार किया,

तब यह मिट्टी के द्रोणाचार्य बनाकर और उसीको

अपना अध्यापक समझ, स्वयं अश्वविद्या सीखने

लगा, कुछ दिन में यह ऐसा अश्वविद्या में चतुर

निकला कि इसकी लक्ष्यधनचतुरी देख, अर्जुन

को भी चकित होना पड़ा ।

एकला तद् अकेला, एकाकी, निराला, एकल,

सहायहीन ।

एकलाई तद् (५०) ओड़नी, एकपट्टा, उचालीय

वसन, प्राकार, चादर ।

एकला दुकेला तद् एकाकी, द्वितीयरहित, एन या

दो ।

एकलौटा { तद् (५०) एकौंका, अद्वितीय, एक

एकलौता } मात्र पुत्र ।

एकवार तद् एकदा, एकजाल, युगपत् ।

एकशफ तद् (५०) घोड़ा, एक धुर के जन्मुमात्र ।

एकसङ्ग तद् (५०) [एक + सङ्ग + अच्] विष्णु,

एक साथ, महयास ।

एकसङ्गी तद् (५०) मायी, महयासो, मार्थ, सम-

मिथ्याहारी, सङ्गी ।

एकसर तद् (५०) एकमति, दुविधा रहित,

एक साथ ।

एकसा तद् (५०) समान, बराबर, एकरस,  
एक सार ।

एकसार तद् (५०) समान, एकरस, एकमा ।

एकहरा दे० (५०) पतला, झीना, एक सार ।

एकहायन तद् (५०) एक वर्ष का, जिनको

उत्पन्न हुए एक वर्ष हुए ।

एकहारा दे० (५०) दुर्बल शरीर, कृश, क्षीण ।

एका तद् (स्त्री०) दुर्गा भगवती, एकाकी, तद्

(५०) मेल मिलाप, ऐक्य, एकता, एकोद्देश्य,

सम्मति, सहमति ।

एकई तद् (स्त्री०) एकता, सब का मेल ।

एकाएकी तद् (अ०) अकस्मात्, सहसा, अचा-

नक, एकबार में ।

एकाकार तद् (५०) [ एक + आकार ] एक

समान, तुल्य आकृति, एक रूप, सदृश, एक धर्म,

भेद रहित, एकमय, एकाचार, पशु समान

आचार ।

एकाकिन्ह तद् (५०) अकेले को, असहाय को ।

एकाकी तद् (५०) अकेला, एकही, मात्र, केवल,

एक, आपही साथ, सहाय रहित ।

एकादा तद् (५०) एक आँखवाला, काना,

कीधा ।

एकाक्षर तद् (५०) मन्त्र विशेष ।

एकाग्र तद् (५०) [ एक + आ + र् ] अग्र-  
चिंत, एकमत्रा, अभिनिविष्ट, मनोयोगी, एकचिंत,

आविष्ट ।—ता (स्त्री०) एकाग्र चिन्ता, अभि-

नियेश प्रणिधान, विशेष साधधानी से ध्यान ।

एकातपत्र तद् (५०) [ एक + आतपत्र ] मार्थ-

भौम, महाराजा, चक्रवर्ती, एकच्छत्र ।

एकात्मता तद् (स्त्री०) [ एकात्मत् + ता ]

अभेद, एक स्वरूपता ।

एकात्मा तद् (५०) [ एक + आत्मत् ] एक प्राण,

एक देह, अभिन्न ।

एकादश तद् (५०) [ एक + दश + इट् ]

संख्या विशेष ११ ग्यारह ।—ती (स्त्री०)

तिथि विशेष, पक्ष का ग्यारहवाँ दिन, अशुभ

दिन, अशुभ



की एकादश कला की क्रिया विशेष, हरि वासर, वृत्त विशेष ।  
 एकादिक्रम तत्त्वं ( गु० ) [ एक + आदि + क्रम + अर्ध ] आनुवृत्तिक, अनुक्रम, क्रमानुक्रम, क्रमिक ।  
 एकाधिपति तत्त्वं ( गु० ) [ एक + अधिपति ] चक्रवर्ती राजा, सत्वाट् ।  
 एकान्त तत्त्वं ( गु० ) [ एक + अन्त ] निभृत, निर्जन, निराला, अलग, भिन्न ।  
 एकान्तर तत्त्वं ( गु० ) एकश्लोक, अंगठ ।  
 एकान्तर कोण तत्त्वं ( गु० ) एक श्लोक का कोना ।  
 एकायन तत्त्वं ( गु० ) एकमति, एकमार्ग, एक विषयासक्त चित्त, एक स्थान ।  
 एकार तत्त्वं ( गु० ) [ ए + कार ] ए अक्षर, एकादश स्वर वर्ण । -न्त ( गु० ) जिसके अन्त में ए हो ।  
 एकार्णव, तत्त्वं ( गु० ) [ एक + अर्णव ] एकाकार, एक समुद्र ।  
 एकार्थ तत्त्वं ( गु० ) [ एक + अर्थ ] समार्थ, सुर्यतात्पर्य ।  
 एकाश्रित तत्त्वं ( गु० ) [ एक + आश्रित ] अनन्य-गतिक, एक के ही आश्रित ।  
 एकाह तत्त्वं ( गु० ) एक दिन, केवल एकही दिन जीनेवाला कोट ।  
 एकाहिक तत्त्वं ( गु० ) [ एक + अह + इच् ] एक दिन साध्य, एकदिन में हो उत्पन्न होनेवाला, प्रति-दिन उत्पत्ति शील ।  
 एकेला तद्गु ( गु० ) एकाकी, अकेला ।  
 एकैक तद्गु ( गु० ) प्रत्येक, प्रति ।  
 एकोद्दिष्ट तत्त्वं ( गु० ) आहु विशेष ।  
 एकौ तद्गु ( गु० ) एक भी, कोई भी, अनिर्धारित, वचक ।

एड दे० ( स्त्री० ) घोड़े को चलाने का काँटा, चरण का पक्षाद्भाग,—ी ( पु० ) पाव का पिछला भाग ।  
 एड़ा टेड़ा दे० बाँका, तिरदापन, टेडापन ।  
 एण तत्त्वं ( पु० ) हरिण, मृग, हिरन,—ी ( स्त्री० ) हरिनी, मृगी,—ीन ( स्त्री० ) हिरन का वधुवधन,—मद् ( पु० ) कम्बुरी ।  
 एतत्त्वं ( सर्व० ) यह, पुरोवर्ती, सम्मुखस्थित,—काल ( पु० ) उपस्थित काल, इस समय, सम्प्रति,—कालीन ( पु० ) [ एतत् + काल + ईत् ] एकाव-वर्ती, आधुनिक ।  
 एतदर्थ तत्त्वं ( अ० ) इसलिये, इसकारण ।  
 एतना तद्गु ( गु० ) इतना, इत्ना, यत्ना ।  
 एतादृक् तद्गु ( गु० ) एतादृश, ऐसा ।  
 एतावत् तत्त्वं ( अ० ) इतनाही, एतन्त, यहा तक ।  
 एत.वत्ता तत्त्वं ( अ० ) इसकरके, इस कारण, इस हेतु ।  
 एत.वन्मात्र तद्गु ( अ० ) इतना ही, यही, केवल ।  
 एरण्ड तत्त्वं ( पु० ) अरण्ड, रेंही ।  
 एगफेर दे० ( पु० ) एगफेरी, सट्टा घट्टा ।  
 एरी दे० स्त्री सम्बोधन ।  
 एलवा दे० ( पु० ) श्लेष विशेष, मुसबसर ।  
 एला तत्त्वं ( स्त्री० ) इलायची, एलाची ।  
 एलोई दे० ( पु० ) हे हमारे ईश्वर !  
 एलोक तद्गु ( पु० ) यह लोक, यह ससार ।  
 एहेतुक तद्गु ( गु० ) इस लिये, इस कारण ।  
 एवम् तत्त्वं ( अ० ) इस प्रकार और, अस्वीकार,—अस्तु ( अ० ) ऐसाही हो ।  
 एहा तद्गु ( गु० ) यह, ऐसा, यही ।  
 एहि तद्गु ( गु० ) इस, इसकी ।  
 एह तत्त्वं यह भी, और भी, यह । (

ऐ

ऐ द्वादश स्वरवर्ण, है, सम्बोधन, आह्वान, समरचार्य, आमन्त्रण, ( पु० ) महेश्वर, शिव ।  
 ऐक तद्गु ( पु० ) सं० मेकप, एकता, एकमत, एक सम्मति, सहमति ।

ऐकमत्य तत्त्वं ( पु० ) न-मति, एकता, एकमत ।  
 ऐकान्तिक तत्त्वं ( गु० ) नितान्त, अत्यन्त निर्जन, एकान्त, गड, अत्यन्त दृढ, एकान्तवासी, बहम सम्प्रदाय के वैष्णव विशेष ।

पेकाहिक तद्० (गु०) एक दिन का, एकाहनिष्पन्न,  
 एक दिन के अन्तर से उत्पन्न, अन्तरिया ।  
 पेक्ष तद्० (पु०) समानता, एकता, मेल ।  
 पेगुण तद्० (पु०) श्रीगुण, अनाहीयन, दोष ।  
 पेंच दे० (पु०) सङ्कोच, ईंच, पेंच, टान ।  
 पेंचना दे० (क्रि०) ईंचना, खींचना, टानना ।  
 पेच्छिक तद्० (गु०) दृष्टा पूर्वक, दृष्टेच्छाधोन ।  
 पेंड दे० (स्त्री०) बल, मड़ोड़, गांठ, थकड़ ।  
 पेंडना दे० (क्रि०) मरोड़ना, बल देना, बलवाना,  
 मड़ु जाना ।  
 ऐतिहा तद्० (पु०) परम्परा प्राप्त उपदेश, पौराणिक,  
 प्रमाण विशेष, इतिहास प्रसिद्ध प्रवाद कथा ।  
 पेन तद्० (पु०) सं० अयन, घर, मकान, स्थान, टीक,  
 ज्यों का त्यों, खाँस, "ऐन समय पर पहुँचूंगा" ।  
 ऐन्द्रजालिक तद्० (पु०) इन्द्रजालकारक, मायावी,  
 मायावाचु, यात्रीग ।

पेराचण तद्० (गु०) पेरावत हस्ति, राघव के एक  
 पुत्र का नाम ।  
 पेरावत तद्० (पु०) इन्द्र का हाथी, जो समुद्र से  
 निकला था, इन्द्र का सीधा धनु ।—ी (स्त्री०)  
 पेरावत की हथिनी, एक पैंधे का नाम, एक नदी  
 का नाम, राघो, जो पंजाब में है ।  
 पेरेय तद्० (पु०) मद्यविशेष ।  
 पेश्यं तद्० (पु०) विभय, सम्पदा, गौरव, ईश्वरधर्म,  
 महिमा, महत्य ।—शाली (पु०) भाग्यवाचु  
 प्राच्छवी ।  
 पेयमः तद्० (अ०) वर्तमान संवत्सर, समों, इस  
 साल ।  
 पेसा तद्० (गु०) इस प्रकार, इसके समान ।  
 पेसातीसा तद्० कुछ योंही, न भलः न घुरा, न वाह  
 वाह, न छोड़ी ।  
 पेहिक तद्० (पु०) इस लोक के भोग, यहाँ होने  
 वाला, यहाँ उत्पन्न ।  
 पेंहे दे० (क्रि०) आवेंगे ।

## श्री

श्री त्रयोदश स्वरवर्ण, (अ०) कथना, स्मृति, सम्बोधन,  
 प्रज्ञा, विष्णु, आह, आहा ।  
 श्रौंठ तद्० (पु०) श्रोठ, अघर, होंठ,  
 श्रौंड़ा दे० (पु०) गहरा, गम्भीर, श्रंड़ा ।  
 श्रौंधा तद्० (पु०) श्रौंधा, उलटा, तलउपर ।  
 श्रोक तद्० (पु०) घर, मकान, गृह, स्थान, आश्रय ।  
 श्रोखली तद्० (स्त्री०) ऊलल, उखलल ।  
 श्रोगरा तद्० (पु०) खिचड़ी, पटयविशेष ।  
 श्रोघ तद्० (पु०) सप्रह जल का वेग, डेरी, थोक, राशि ।  
 श्रोङ्कार तद्० (पु०) [श्रोग् + कार] प्रणव, आद्य  
 धोजमन्त्र ।  
 श्रोछा तद्० (पु०) छिड़ोरा, हलका, उतावला,  
 नींच ।  
 श्रोज तद्० (पु०) बल, दीप्ति, तेज, पराक्रम प्रताप ।  
 श्रोजस्वी तद्० (पु०) श्रतापी, बली, तीक्ष्णचित्त,  
 तेजस्वी ।  
 श्रोक्त तद्० (पु०) पत्नी, भोक्ता, भुण्डी, घट ।

श्रोभुड तद्० (पु०) भौंक, पछा, टोकर, पत्थनी,  
 श्रांत ।  
 श्रोभल तद्० (स्त्री०) भाड़, श्रोठ, छिपाव, परदा,  
 टटो, एकान्त ।—करना (क्रि०) छिपाना, परदा  
 करना ।  
 श्रोभ्ना तद्० (पु०) भोक्क, टोनहा, यन्त्री, मान्त्रिक,  
 उवाध्याय, उवाध्याय शब्द का ही यह अपभ्रंश है,  
 इसका प्राकृत रूप उवञ्काश्री है, उवञ्काश्री ही से  
 श्रोभ्ना निकला है ।  
 श्रोष्ट तद्० (स्त्री०) झाड़, पच, टटो, छिपाव ।—करना  
 (क्रि०) छिपाना ।—होना (क्र०) छिपना ।  
 श्रोडना तद्० (क्रि०) झाड़ करना, रेतना, छई से  
 विनोला निकालना ।  
 श्रोटा तद्० (पु०) ठपवधान, झाड़, लुकाव, बैठन ।  
 श्रोठ तद्० (पु०) श्रोठ, श्रौंठ, होंठ, अघर ।  
 श्रोडन तद्० (पु०) डाल, फरी, शतचन्द्र ।  
 श्रोडा तद्० (पु०) खाँवा, टोकरा, दौरा ।

ओढ़ना तद्० (क्रि०) पहनना, पहिरना, (पु०) रज़ार्द,  
ओढ़ने की वस्तु, पट्टा, लोई ।  
ओढ़नी तद्० (पु०) एकलार्द, चूँघट, खिपों के ओढ़ने  
का कपड़ा ।  
ओत तद्० (पु०) बढ़नी, बढ़ोतरी, हीनता ।  
ओतप्रोत तद्० (पु०) आड़ा देड़ा, ताना याना,  
लम्बाई में ग्रथित, चौड़ाई ।  
ओतु तद्० (पु०) धिलाव, धिलो, धिनाई, (स्त्री०)  
ओतु ।  
ओथल पोथल दे० उलटा चित्त ।  
ओदन तद्० (पु०) भात, रीधे हुए चावल, अन्न ।  
ओदा तद्० (पु०) गीला, भोंगा, भोजा, आद्र ।  
ओधे तद्० (पु०) अधिकारी, भीतरिया, वल्लभ  
सम्प्रदाय में ठाकुर जी की रखोई बनाने वाले को  
भी कहते हैं ।  
ओप तद्० (स्त्री०) सुन्दरता, चमचमाहट, घोंट ।  
ओपची तद्० (पु०) अस्त्रधारी, क्लिप्तनी ।  
ओपतर तद्० (क्रि०) घोटना, साफ़ करना ।  
ओपार तद्० नदी के उस पार ।  
ओम् तद्० (अ०) प्रणव, ओङ्कार योज ।  
ओर तद्० (स्त्री०) कगर, मार्ग, सीमा, पार्श्व,  
अलंग ।  
ओरमा दे० (पु०) एकहरी सिलार्द ।

ओरी दे० (पु०) पक्षपाती, श्रीलती ।  
ओरीहा दे० (पु०) निर्माण, सृष्टि, रचना ।  
ओल दे० (पु०) मृरण, मनीती ।  
ओलती दे० (स्त्री०) ओरोनी, ओरी ।  
ओला दे० (पु०) शिलासृष्टि, मिठाई ।—होजाना  
(क्रि०) मूष ठण्डा होना ।  
ओप तद्० (स्त्री०) शीत, शिथिर, पाला ।  
ओपधि तद्० (स्त्री०) फलपाक स्वार्थी वृच, तृण,  
चास, पौधा ।  
ओपधीश तद्० (पु०) चन्द्र, शशाधर, चन्द्रमा,  
कपूर ।  
ओष्ठ तद्० (पु०) होंठ, आँठ, अधर, रदनच्छद,  
दन्तच्छद—रोग (पु०) मुखरोग विशेष, ओष्ठ  
पुण ।  
ओष्ठ्य तद्० (पु०) ओष्ठ द्वारा उच्चारित वर्ण ।  
ओसर दे० (स्त्री०) कशोर, जवान गौ, कबीर  
गाय या भेंच ।  
ओसरा दे० (पु०) बारी, पालो, दावा, पाला पाली,  
क्रम से ।  
ओसरी दे० (पु०) देखो ओसरा ।  
ओसीसा दे० (पु०) सिंहाना, तकिया ।  
ओट तद्० (अ०) सम्बोधनवाचक, याह याह,  
हाः, आहा ।

औ

औ चतुर्दश स्वरवर्ण (अ०) आह्वान, सम्बो-  
धन, विरोध, निर्णय, (पु०) अगन्त, निःस्वन ।  
औ तद्० (अ०) गूड़ों का प्रणव ।  
औगी दे० (पु०) बुध, सौन, गुंतापन ।  
औघांना दे० (क्रि०) भुपकी आना ।  
औंड दे० (पु०) शैलदार, माली ।  
औंडा दे० (पु०) आयाह, गहिरा, गम्भीर ।  
औंधना दे० (क्रि०) उभंडना, घटा उठना ।  
औंधा तद्० (पु०) उलटा, तलऊपर ।  
औला तद्० (पु०) धात्रीफल, आमलकी, आर्यता ।

औकारान्त तद्० (पु०) जिनके अन्त में औका  
हो, ऐसे शब्द ।  
औपध तद्० (पु०) ओपधि, दया ।  
औगी दे० (स्त्री०) कथा, जोड़ा, चायुक्त ।  
औगुण तद्० (पु०) दोष, ओट, कलङ्क,—(पु०)  
गुणहीन, निर्गुण, मूर्ख ।  
औघट तद्० (पु०) अगम्य, दुर्गम, दुस्तर, डाट ।  
औवक तद्० (अ०) औवट, हठात्, अकस्मात्, अच-  
नक, सहसा ।  
औळ तद्० (पु०) जड़ विशेष ।

श्रीटन तद्० (पु०) जलाव, उवाहन, हुते ।  
 श्रीटना तद्० (क्रि०) जलाना, सुखाना, उवाहन ।  
 श्रीतार तद्० (पु०) अथतार, प्रकट, जन्म, अथतीर्ण  
 होना (देखो अथतार) ।  
 श्रीत्तानपादी तद्० (पु०) भ्रुव, प्रसिद्ध भक्त देखो  
 भ्रुव ।  
 श्रीत्कर्ष्य तद्० (पु०) भ्रष्टता, उत्तमता ।  
 श्रीत्सुक्य तद्० (पु०) उत्सुकता, आभिलाषा,  
 भावना ।  
 श्रीदैनिक तद्० (पु०) सूचकार पाचक, रन्धनकर्ता  
 रसोईया ।  
 श्रीदिरिक तद्० (पु०) उदरमात्र पोषक, पेटपोष,  
 पेटार्थी, पेट्र ।  
 श्रीदात तद्० (पु०) धवदात, श्वेत, गोर, गुह्य, मुफेद,  
 चौला ।  
 श्रीदान दे० (पु०) धलुया, संतका, संत मंत का ।  
 श्रीदार्य तद्० (पु०) महत्त्व, अहत्त्व, सरलता, अका-  
 पय, दानृत्व ।  
 श्रीदास्य तद्० (पु०) उदासीनता, वैराग्य, अनिच्छा,  
 मनोमालिन्य ।—भाच (पु०) वैराग्य भाव,  
 उदासीनता ।  
 श्रीद्वत्य तद्० (पु०) परगुणासहिष्णुत्व, पृष्टता,  
 गुरुभता, दौरात्न्य ।

श्रीद्वाहिक तद्० (पु०) विवाह सम्बन्धी धन, विवाह  
 में प्राप्त धन ।  
 श्रीने पीने तद्० (पु०) अपुर्ण, नूनाधिक, घटो बड़ी ।  
 श्रीपचारिक तद्० (पु०) धारोपित, जिम में जो गुण  
 न हो उसमें उमगुण को कहना ।  
 श्रीपयिक तद्० (पु०) न्याय्य, उपयुक्त, योग्य ।  
 श्रीपट तद्० (पु०) अथवाट, गुरा या कठिन मार्ग,  
 ओभट, ओघट, दुर्गम ।  
 श्रीर दे० (अ०) श्री, फिर, अधिक, विशेष, वाशान्तर-  
 चङ्केदक ।—एक दूमरा, कोई, श्रीर कोई, श्रीर  
 एक ।—ही विलकुल दूसरा, अत्यन्त भिन्न ।  
 श्रीरस तद्० (पु०) पुत्रविशेष, स्वउत्पादित पुत्र,  
 सर्वा छो के गर्भ ने स्वयं गनित पुत्र, स्वपुत्र ।  
 श्रीर्ध्वदेहिक तद्० (पु०) प्रेत क्रिया, अग्निस्फंकारादि,  
 अन्वेष्टिक्रिया, आद ।  
 श्रीपध तद्० (पु०) अगद, भेषज, दया ।—लय  
 (पु०) वैद्यगृह, दवागणना ।  
 श्रीसना तद्० (क्रि०) उद्यधना, सङ्गना, पचना ।  
 श्रीसर तद्० (पु०) अयसर, अयकाय, हुट्टी ।  
 श्रीसान तद्० (पु०) चेतना, बोध, साहस, समामि,  
 अयसान ।  
 श्रीसेर तद्० (पु०) चिन्ता, भभर, खटका ।

क

क उपपन्न का प्रथम वर्ण ।  
 क तद्० (पु०) शिर, जल, मुख, केश, अग्नि, आत्मा,  
 कामदेव, काम, अग्नि, दक्ष, धन, प्रकाश, ब्रह्मा,  
 धातु, सिष्णु, मसूर, मन, यम, राजा, शब्द, शरीर,  
 सूर्य ।  
 कइकई तद्० (स्त्री०) राजा दगरय को एक रानी,  
 भरत की माता, केकय देश के राजा की कन्या ।  
 कई तद्० (अ०) कितेक, कितने, कै एक, कति,  
 कियत् ।  
 कएक तद्० कुंइ थोड़ा, एकाध, अल्प, कतिपय ।  
 कंस तद्० (पु०) तांबा और रांगा मिश्रित धातु  
 विशेष, कंस, मयुरा का स्वनामएवात राजा,

कंसराज, भोजयंश्रीय राजा उग्रसेन का छत्रज  
 पुत्र, जरासन्ध का दामाद, दानवराज दुर्मिल के  
 औरस और उग्रसेन की पत्नी के गर्भ ने यह उत्पन्न  
 हुआ था, भगवान् श्रीकृष्ण के द्वारा यह मयुरा में  
 मारा गया ।  
 कंसकार तद्० (पु०) ब्राह्मण के औरस तथा वैरया  
 के गर्भ से उत्पन्न जातिविशेष, कंसारे, वर्सान  
 ब्रह्मेत वाला ।  
 ककड़ी तद्० (स्त्री०) सीरा, एक प्रकार का फल,  
 ककरी ।  
 ककनी तद्० (स्त्री०) पहुंचो, कङ्कण, कँगना, खियों  
 के हाथ में पहिने का गहना ।

ककरेजा तद्० (पु०) वैगनी रङ्ग, वैजनी ।  
 ककरोन्दा तत्० (पु०) फलविशेष ।  
 ककहरा तद्० (पु०) कसे लेकर ह तक वर्ष, वाराखड़ी,  
 वर्षमाला ।  
 ककुत्स्थ तत्० (पु०) इक्ष्वाकु राजा का पौत्र, इसका  
 दूसरा नाम पुरञ्जय था, देवासुर संग्राम में युद्ध के  
 लिये देवताओं की प्रार्थना इसने स्वीकार की  
 और इन्द्र को याहन बनाकर, समर-क्षेत्र में  
 अवतीर्ण होना स्थिर किया, इन्द्र ने वृषभ रूप  
 धारण किया । उस पर चढ़ कर पुरञ्जय ने युद्ध  
 किया, तभी से इसका नाम ककुत्स्थ पड़ा, और  
 इसीसे इसके वंशधर काकुत्स्थ कहे जाते हैं ।  
 ककुद् तत्० (पु०) राजचिन्ह, पर्वत विशेष, शिखा,  
 डील (डप) ।  
 ककुम् तत्० (स्रो०) दिशा, दिक्, और, हृन्दिशेष ।  
 ककौरना दे० (क्रि०) खरोचना, खौदना, उखाड़ना ।  
 कखरी तद्० (पु०) कांख, कोख, यगल ।  
 कखौरी तद्० (स्रो०) कांख का फोड़ा ।  
 कगर तद्० (पु०) छोर, अन्त, शेष, किनारा पार्श्व ।  
 कगारा तद्० (स्रो०) कगार, पहाड़ी ।  
 कङ्क तत्० (पु०) [कङ्क + अच्] मांसभजी पत्नी, यक,  
 बगला, यमराज, ज्ञाहण वेपथारी युधिष्ठिर का  
 नाम, क्योंकि घिराट् के यहां युधिष्ठिर ने ब्राह्मण  
 वेप बनाया था, अत्रिय ।  
 कङ्कण तत्० (पु०) [कं + कण् + अल्] कगना, हाथ  
 का आभरण विशेष, बाला, कड़ा, वलय ।  
 कङ्कपत्र तत्० (पु०) पाण विशेष, एक प्रकार का  
 बाण, जो उड़ता है ।  
 कङ्कर तद्० (पु०) कांकर, रोड़ा, पत्थर के छोटे छोटे  
 टुकड़े ।  
 कङ्काल तत्० (पु०) [कङ्क + आल्] अस्थि, हाड,  
 अस्थिवर्म रहित शरीर ।—माला (स्रो०) हाडों  
 की माला ।—माली (पु०) अस्थिमय माला पहिनने  
 वाला, महादेव, भैरव ।  
 कङ्कालिन तद्० (स्रो०) डाकिनि, डायन ।  
 कङ्कला तद्० (पु०) यथरेल, यथरीला, किरकिरा,  
 वसुधा ।

कङ्कोल तद्० (पु०) कट्ट विशेष ।  
 कङ्कन तद्० (पु०) खियों के पहंचे में पहनने का  
 गहना, कड़ा ।  
 कङ्कनी इद्० (स्रो०) बूड़ो, कङ्कन, काँगना, ककनी,  
 छन्द, कांगनी, अत्रविशेष ।  
 कङ्करोड तद्० (पु०) रोड़, पत्ति विशेष ।  
 कङ्कार तद्० (पु०) भार वह न करने वाला ।  
 कङ्काल तद्० (पु०) दीन, दरिद्र, दुःखी ।—लीं  
 (स्रो०) दरिद्रता, दीनता ।  
 कङ्काल वांका दे० दरिद्र और अमिमानी ।  
 कङ्करा दे० (पु०) शिखर उच्चप्रदेश, पर्वत, अथवा  
 ऊंचे मकान, ऊपरी भाग ।  
 कङ्कडी दे० (स्रो०) कानका निचला भाग ।  
 कङ्कवा दे० (पु०) कट्टा, कट्टी, ककही ।  
 कङ्का दे० (पु०) कट्टी, कङ्कवा, कैशमार्जनी ।  
 कच तत्० (पु०) कैय, बाल, रोम, लोम, मेघ, वृह-  
 स्पति का पुत्र, यह देवताओं के आदेश से मूल-  
 सन्जीवनी नामक यिद्या सीखने के लिये शुक्राचार्य  
 के समीप गया था, वहाँ अनेकानेक, यहाँ तक कि  
 तीन तीन बार प्राण संहार तक का कष्ट उठाकर  
 इसने यिद्या सीखी, पुत्रः स्वर्ग में उस यिद्या का  
 इसने प्रचार किया ।  
 कचक दे० (स्रो०) कसकस, किरकिर, बिना स्वाद  
 का ।  
 कचकच दे० (स्रो०) विवाद, भगड़ा, व्यर्थ कोलाहल  
 करना ।  
 कचकना दे० (क्रि०) मुकना, फिरना, विकसित  
 होना, विल जाना ।  
 कचकचाना दे० (स्रो०) मिलाना, किरकिराना,  
 विना समझे बोलना ।  
 कचका दे० (पु०) ककुथा का छिल्का ।  
 कचकेला दे० (पु०) कचः केला, अथवा कट्टी  
 फल ।  
 कचकैयां दे० (पु०) चक्र, ठोकर, ठेस,  
 कचनार दे० (पु०) वृच विशेष ।  
 कचपच दे० (स्रो०) मचामच, सघन, घना,  
 निविड ।

कचपचिया दे० ( पु० ) गुब्बा, सपूह, कृतिका  
नक्षत्र ।

कचपन दे० ( पु० ) कचाहट, फंवाई ।

कचवच दे० ( पु० ) लड़के वाले, अचिक सन्तान ।

कचमच दे० ( खो० ) धड़बड़, द्रकवक ।

कचवना दे० ( क्रि० ) स्वतन्त्रता पूर्वक खाना,  
निश्चिन्त भाव से भोजन करना ।

कचरी दे० ( पु० ) गुर्क फल विशेष, फल महित  
चने की टहनियां ।

कचला दे० ( पु० ) चिकनो मट्टो, चहला, पिच्छल  
भूमि

कचलोन दे० ( पु० ) विट लवण ।

कचलोहिया दे० ( खो० ) मट्टिया सोहा, कचवा  
सोहा ।

कचहरी दे० ( खो० ) विचारस्थान, सभा, समाज ।

कचाई दे० ( खो० ) अजोषं, अपच, कवाई ।

कचाल दे० ( पु० ) भगड़ा, बिबाद, कलह ।

कचालू दे० ( पु० ) कचू बपटा, घुंयां, मसाला  
ढालकर एक प्रकार से बनाये हुए आन्न, कन्द  
विशेष ।

कचिया दे० ( पु० ) हंसुवा, दरांती ।

कचियाहट दे० ( खो० ) चित्रचिनाहट, घृणा ।

कचियाना दे० हिबकना, भड़कना, महमना, हतो-  
न्साह होना ।

कचुमर दे० ( पु० ) अँवार विशेष ।

कचूर दे० ( पु० ) सुगन्धित कन्द विशेष ।

कचरा दे० ( पु० ) जाति विशेष ।

कचौरी दे० ( खो० ) भूरी पीठी वा थोईं भरी हुई,  
बेड़हि ।

कचा दे० ( पु० ) अणक, काचा, कचिया ।

कचू दे० ( पु० ) घुंयां, चढवी, कन्द विशेष ।

कच्छ दे० ( पु० ) देग विशेष, जो गुजरात के  
पास है ।

कच्छप तत्० ( पु० ) कछुआ, कूर्म, कमठ ।

कच्छ दे० ( पु० ) कच्छप, नितम्ब, काँइ ।

कच्छना दे० ( पु० ) काँइ धोना, पोड़ना ।

कच्छनी दे० ( खो० ) जँपई, घोलाई ।

कछलम्पट दे० ( पु० ) अजितेन्द्रिय, मुग्धा ।

कहवाहा दे० ( पु० ) राजपूतों को जाति विशेष,  
कहते हैं श्री रागचन्द्र जी के पुत्र कुश के ये वंश-  
धर हैं ।

कछार दे० ( पु० ) नदी या तालाब का तट,  
किनारा, पहाड़ का किनारा ।

कछारना दे० ( क्रि० ) झटना, धोना, अँवासना ।

कछु दे० ( पु० ) कुक्ष, घोड़ा, एकाध, किञ्चित् ।

कछुक दे० ( पु० ) कुक्ष, घोड़ा सा, कुछ एक,  
इसका प्रयोग रामायण में बहुत आया है ।

कछुआ दे० ( पु० ) कूर्म, कच्छप, कमठ ।

कछौटी तद्० ( खो० ) लंगोटी, कीपीन ।

कज तद्० ( पु० ) कज्ज, कमल ।

कजर तद्० ( पु० ) काजल, आँव में लगाने की  
वस्तु ।

कजणे तद्० ( पु० ) काजल लगाये हुए ।

कजला तद्० ( पु० ) काला, काजल लगाये ।

कजलौटी तद्० ( खो० ) काजल पारने का पात्र ।

कजल तत्० ( पु० ) काजल, अन्न, सुरमा

।—गिरि ( पु० ) काला पहाड़, काजल का

पर्वत, सुरमे का पहाड़ ।

कञ्चन तत्० ( पु० ) सुवर्ण, मोना, जाति विशेष ।

कञ्चनक तत्० ( पु० ) कचनार, मैनफल ।

कञ्चनी दे० ( खो० ) वेप्रया, पतुरिया, नीची,

कञ्चन जाति की खी, सुवर्ण की पुतली ।

कञ्चु तत्० ( पु० ) चोली, अँगिया, फांचली ।—की

( खो० ) चीनी ।

कञ्ज तत्० ( पु० ) पद्म, कमल, कैवल ।

कञ्जार दे० ( पु० ) डोरी बँवने वाली जाति ।

कञ्जा दे० ( पु० ) भूरी आँव वाला ।

कञ्जियां दे० ( खो० ) आँवों की अञ्जनी ।

कञ्जूस दे० ( पु० ) सूम, कृपण, लालची ।—ी

( खो० ) कृपणता ।

कट तत्० ( पु० ) कटि, कड़ियाव, कमर ।

कटक तत्० ( पु० ) बलय, पर्वत का मध्य भाग,

नितम्ब, मेघना चक्र, सेना रहने का स्थान, देग  
विशेष, पर्वत की समभूमि ।

कटकी तद्द० ( गु० ) कटक नगर के बनी हुई यस्तु,  
पर्वत, शैल, पहाड़ ।

कटकना तद्द० ( क्रि० ) बांधवु, दांचा, उपाय ।

कटकई दे० ( पु० ) दल, सेना, भुएड ।

कटकटहिं दे० ( क्रि० ) कटकते हैं, किचकिचाते  
हैं, क्रोध का शब्द ।

कट्टहिं दे० ( क्रि० ) काटते हैं, काट लेते हैं ।

कटखना तद्द० ( गु० ) कटहा, हर्किया, कटौवा ।

कटघरा तद्द० ( पु० ) कटहरा, कठरा ।

कटना दे० ( पु० ) कट जाना, द्योतना ।

कटनी दे० ( स्त्री० ) कटाई, लौनाकाल, खेत का  
कटना ।

कटफल दे० ( पु० ) कायफल, कैफल ।

कटरा दे० ( पु० ) चोक, हाट, निकास, शहर का बीच ।

कटहर दे० ( पु० ) कटहल 'रुल' विशेष ।

कटहरा दे० ( पु० ) काठ का बड़ा बिंजड़ा ।

कटहा दे० ( पु० ) कटौवा, कटखना, हर्किया ।

कटा दे० ( पु० ) हन्या, यध, काटाकाटी ।

कटाक्ष दे० ( पु० ) तिरछी चितवन, भावयुक्त दृष्टि,  
शौच का सङ्केत ।

कटान दे० घट जाना, पैना ।

कटार दे० ( पु० ) कटारी, चञ्चुर ।

कटाल दे० ( पु० ) शुभार, समुद्र का चट्टना ।

कटाघ दे० ( पु० ) नदी का किनारा, नदी के वेग से  
दहता भूभाग ।

कटाह तत् ( पु० ) कडाही, कड़ाह, हण्डा ।

कटि तत् ( पु० ) कमर, कड़ियाव, लङ्ग, शरीर का मध्य  
भाग।—तट ( पु० ) कटिदेश, नितम्ब।—देश ( पु० )  
शरीर का मध्यावयव ।

कटित तद्द० ( पु० ) खपत, विक्रय, बिक्राय, उपयोग  
में खाना ।

कटिवन्ध तद्द० ( पु० ) कमरबन्धा, पृथिवी का टपड़ा  
गर्म आदि भाग ।

कटिवन्द तद्द० ( गु० ) कमर बाधे हुए, तैयार, उद्यत ।

कटिया तद्द० ( स्त्री० ) बंसी, बड़िस, वस्त्र विशेष, सन  
का बना हुआ ।

कटिसूत्र तद्द० ( पु० ) कटिभूषण विशेष, कटधनी ।

कटीला दे० ( गु० ) पोधा विशेष, कटकगुफ, काटों  
वाला, साधन्त, कटार ।

कटु तत् ( गु० ) अप्रिय, दुर्गन्ध, कटुरत युक्त, मस्य,  
तीक्ष्ण सुगन्धि ।

कटुक तत् ( गु० ) कड़ुया, तिक्त, तीला ।

कटुकी तत् ( स्त्री० ) कटुकी शीपधि ।

कटुग्रन्थ तत् ( स्त्री० ) शीपधि विशेष, पिपरागुफ ।

कटुत्कट तत् ( पु० ) या, कटुभद्र, ( स्त्री० ) सोंठों ।

कटुभी तद्द० ( स्त्री० ) मालकांगुनी ।

कटुरोहिणी तत् ( स्त्री० ) कटुकी शीपधि ।

कटूसी तत् ( स्त्री० ) फूहड़ाई, दुर्बचन ।

कटौरा दे० ( पु० ) वेला, पान पात्र विशेष ।

कटौल दे० ( पु० ) चपडाल, फल विशेष ।

कटकट दे० ( पु० ) भगड़ा, लड़ाई, यानकों की बोली ।

कटकना दे० ( क्रि० ) काल यापन करना, दुःख से  
काल बिताना, काल काटना ।

कट्टर दे० ( गु० ) काटनेवाला, कटौवल, हठी,  
दुताग्रही ।

कट्टा दे० ( पु० ) मापने की यस्तु, विसद्या, जिससे खेत  
मापे जाते हैं ।

कठ तत् ( पु० ) [ कट् + षत् ] मुनि विशेष, वेद की  
कठ नामक शास्त्रा, ज्ञानवेद, स्वर ब्राह्मण।—  
शाखा ( स्त्री० ) ज्ञानवेद का एक भाग।—उपनिषत्  
( स्त्री० ) पुस्तक विशेष, वेदान्त शास्त्र, दसोपनिषत्  
में का एक उपनिषत् ।

कठघरा तद् ( पु० ) कटहरा, घेरा, बेड़ा, काठ की  
बनी हुई चारदियारी ।

कठड़ा दे० ( पु० ) लठरा, कटौवा, कठौती, ( स्त्री० )  
कठड़ी ।

कठन्दर दे० ( पु० ) काष्ठोदर, रोग विशेष, घेठ का  
कड़ापन ।

कठियरुकी दे० ( स्त्री० ) भेक, ऊपर, सांझ ।

कठरा दे० ( पु० ) काठ का बना पात्र विशेष, ( स्त्री० )  
कठरी ।

कठवता दे० ( स्त्री० ) काठ का यत्न विशेष, कठौता,  
कठवत ।

कठहंसी तद्द० ( स्त्री० ) सुषकहास्य, काष्ठहास्य, बिना  
कारण हास्य ।

कठारा दे० (गु०) काठ का बना कमण्डलु ।  
 कठिन तत्० (गु०) [ कठ् + इन् ] कर्कश, कठोर,  
 निन्दुर, कड़ा, दृढ़, स्तब्ध ।—ता (स्त्री०) कठोरता,  
 निदुरता, दुच्छता ।—त्य (गु०) कड़ापन, कठि-  
 नता ।—पृष्ठक (गु०) कूर्म, कच्छप, कछुआ ।—ान्तः  
 करण (गु०) निन्दुर, दृढ़ अन्तःकरण, निर्दय ।  
 कठिनिका तत्० (स्त्री०) [ कठ् + इक् + आ ] खड़ी,  
 कठिनी ।  
 कठिनी तत्० (स्त्री०) खड़ी, मिट्टी, हूर्द ।  
 कठिया दे० (गु०) कठौती, फाँदा, जाला, काठ की  
 माला, काठ का छोटा पात्र ।  
 कठिह दे० (गु०) करेला, तरफरी ।  
 कठोठी दे० (स्त्री०) कड़ी, कठिना, धन । -  
 कठोर तत्० (गु०) कठिन, कठोर, दृढ़, निन्दुर ।—ता  
 (स्त्री०) निदुरता, निदुराई ।  
 कठोलिया दे० (स्त्री०) काष्ठनिर्मित पात्र, काठ का  
 छोटा पात्र ।  
 कठौता } (गु०) देखो कठव्यता ।  
 कठौती } (स्त्री०)  
 कड़क दे० (गु०) धड़ाका, चटक, गर्जन्, अड़कड़ाहट,  
 कड़ाका ।  
 कड़कना दे० (क्रि०) चटकना, धड़कना, गरजना ।  
 कड़क कर दे० गर्जन के साथ, साभिमान ।  
 कड़कच दे० (गु०) लोन, लयण, खार, सुमद्र का  
 लयण विशेष ।  
 कड़का दे० (गु०) विजली, तड़ित, गर्जन, भयङ्कर  
 शब्द ।  
 कड़खा दे० (गु०) गृह में बड़ाया देना, उन्माहित  
 करना, गान विशेष, जिसमें शूरवीरों का यश  
 वर्णित हो ।  
 कड़खैत दे० (गु०) भट, यड़ाया देने यासा, चारण,  
 इस जाति के लोग राजपुत्राने में अधिक पाये  
 जाते हैं, यहां इनकी जागीरें मिली हुई हैं । ये  
 लड़ाई में वीर राजाओं को अपनी शोचस्विनी  
 कविता से उन्माहित किया करते हैं ।  
 कड़वी दे० (स्त्री०) तीखी, कट्ट, जुधार बाजरे की  
 शंठी ।

कड़ा दे० (गु०) कठोर, दृढ़ सङ्ग, उत्कट, हाथ का  
 चागुपण, बल्य, दुषार अथवा कड़ाह कड़ाहों को  
 पकड़ने के लिये हत्या रेंट ।  
 कड़ाका दे० (गु०) उपवास, भनका, निर्मल,  
 उपवास ।  
 कड़ाड़ा दे० (गु०) नदी का ऊँचा तीर, किनारा,  
 करार ।  
 कड़ाह तद्० (गु०) लोहे का पात्र, जिसमें दूध आदि  
 थोड़ा जाता है ।  
 कड़ाहो तद्० (स्त्री०) छोटा कड़ाह ।  
 कड़िहार दे० (गु०) कर्णधार, मल्लाह, कैबट, मंकी ।  
 कड़ी दे० (स्त्री०) काण्ठी, धरन, वेहो, धरनि ।  
 कड़ुवा तद्० (गु०) कट्ट, तोता, सायन्त ।  
 कड़ोर दे० (गु०) कड़ोह, संख्याविशेष, सोलाख ।  
 कड़मड़ दे० (गु०) कड़ाकड़, चर्मर ।  
 कड़ना दे० (क्रि०) निकलना, उठना, चिताना ।  
 कड़ी दे० (स्त्री०) भोजन विशेष, बेसन और दही से  
 बनी हुई वस्तु ।  
 कड़ुआ दे० (गु०) उधार, ऋण, निकाला हुआ,  
 नातिच्युत )  
 कण तत्० (गु०) [ कण् + अच् ] अतिपूव्य, कणा,  
 अणुकणिका, धूर्ण ।—जीर (गु०) श्वेत जीरा ।  
 —भक्षक (गु०) कणभोजी, करमदमुनि, पक्षि  
 विशेष ।  
 कणा तत्० (स्त्री०) चिन्दू, छोटा भाग, अल्प ।  
 कणाद् तत्० (गु०) [ कण् + अद् + अच् ] सुषर्ण-  
 कार, मुनि विशेष, वैशेषिकदर्शनकर्ता, यह  
 तपदुलकणा व्याकर अपनी जीविका करते थे,  
 इसी कारण इनका कणाद् नाम हुआ है । इनका  
 दूसरा नाम उद्दक था, अतएव वैशेषिक दर्शन को  
 शौशुक्ल दर्शन भी कहते हैं । यह परमाणुशास्त्रियों  
 में थे । इनका बनाया दर्शन चद्दर्शन के पनागत  
 समझा जाता है ।  
 कणामात्र तत्० एक चिन्दू, किञ्चिन्मात्र, बहुत छोटा ।  
 कणिका तत्० (स्त्री०) [ कणिक + आ ] लेख, चिन्दू,  
 कणा, छोटा भाग, अणु अणु, आशय के टुकड़े ।  
 कणी तत्० (स्त्री०) डिडक, टुकड़ा, भाग, बहुत  
 पतला ।



कण्ठक तत्० (पु०) [ कण्ठ + णक् ] कांटा, कृपण, उद्वृ शब्द, रोमाञ्च, रोमहर्ष, दोष,—हुम (पु०) कांटा युक्त वृक्ष, शास्त्रमलोवृक्ष ।—प्रावृता (स्त्री०) धृतकुमारी, धीकुशारी ।—फल (पु०) पनस कटहर, —मुक् (पु०) जंठ, उद्र ।—मय (पु०) कांटे से भरा, बहुत काटे वाला ।—लता (स्त्री०) खीरा, फलविशेष ।—रि छोटी कटाई, रवेत घो-कुमार ।

कण्ठार दे० (पु०) कटोला, खरदरा, कण्ठकमय ।

—रिका (स्त्री०) छोटी रवेत कटाई ।

कण्ठिया दे० (स्त्री०) झांकड़ी, बंशी ।

कण्ठ तत्० (पु०) गला, घांटा, उपस्थित ।—ला (स्त्री०) माना, कण्ठी, गण्डा, गले का आभूषण ।

—स्य (पु०) मुखस्य, मुखाग्र ।

कण्ठपाशक तत्० (पु०) हाथि के गले में बाधने की रस्सी ।

कण्ठभूषा तत्० (स्त्री०) कण्ठाभरण, ग्रंथेयक, हार ।

कण्ठमाला तत्० (स्त्री०) कण्ठ में पहनने की माला, रोग विशेष ।

कण्ठा दे० (पु०) कण्ठभूषण विशेष, बड़े दाने की माला ।—गत (पु०) [ कण्ठ + आगत ] शरीर त्याग के उद्योगी, मरणोद्यत ।—ग्र (पु०) [ कण्ठ + अग्र ] मुलाग्र, कण्ठस्थ, मुखस्य ।

कण्ठधारी तद्० (पु०) बैरागी, भगत, कण्ठी पहनने वाला ।

कण्ठी तत्० (स्त्री०) कण्ठाभरण, कण्ठमाला, तुलसी की माला ।

कण्ठीरव तत्० (पु०) सिंह, वृष प्र, शेर ।

कण्ठ्य तत्० (पु०) कण्ठ से उच्चारित होने वाले अक्षर, कण्ठोच्चारित ।

कण्डा दे० (पु०) उपला, उपरी, गोहरी ।

कण्डी दे० (स्त्री०) छोटी उपला ।

कण्डुपुष्पी तत्० (स्त्री०) शंखाह्वली, शीषध विशेष ।

कण्डू तत्० (पु०) रोग विशेष, खुजलाहट, खुजली, खाज ।—प्र (पु०) पवांर शोषधि, कण्डू रोग दूर करने की शोषधि ।

कण्डूति तत्० (स्त्री०) कण्डूयन, खुजलाहट, खाज होना ।

कण्डेरा तद्० (पु०) काण्डकार, बाण बनाने वाला जाति, धुनियां ।

कण्डोल दे० (पु०) बांग का बना अन्न रखने का पात्र ।

कण्व तत्० (पु०) मुनि विशेष, एक तपस्वी प्राचीन ऋषि का नाम, यह गकुन्तला के पालक पिता थे । मालिना नदी के तीरे पर इनका आश्रम था, कुलपति की उपाधि इन्हें मिली थी, क्योंकि इनके आश्रम में अनेक महत्त्व वालक शिक्षा पाते थे ।

कत तद्० (अ०) कहां, क्योंकि, क्या, कैसा, किस वास्ते, किसलिये ।

कतनई तद्० (स्त्री०) नृत फातने की मजूरी ।

कतना तद्० (क्रि०) कता जाना, कितना, किस परिमाण में ।

कतम तद्० कतम (पु०) [ किम् + तम ] अनेक व्यक्तियों में से एक व्यक्ति, अनिर्दिष्ट मनुष्य, कौन, कौनसा ।

कतरण तद्० (स्त्री०) काटन, छांटन, कतरा ।

कतरना (क्रि०) काटना, छांट करना, छांट डूट करना ।

कतरनी तद्० (स्त्री०) कुँची, अस्त्र विशेष, कटनी ।

कतरा तद्० (पु०) भिन्न भिन्न, टुकड़ा ।

कतराना तत्० (क्रि०) कटवाना, अलग होना, पृथक् पृथक् होना ।

कतहूँ दे० (अ०) कहाँ भी, किसी जगह भी, किसी ठौर भी ।

कतलाई तद्० (स्त्री०) कातने की कौड़ी ।

कतारा दे० (पु०) पांत का पांत, धारी, क्रमिक, क्रमान्वय ।

कति तत्० (पु०) केतिक, कितने, कितने एक ।—पय (पु०) योड़े, कम ।

कतीरा दे० (पु०) निर्यास, गोंद विशेष ।

कतुवा दे० (पु०) तफ्फा, तकुवा, सूवा ।

कतेक दे० (पु०) कति, कितने, दो एक ।

कत्त दे० (अ०) कहां, क्योंकि ।

कत्तान दे० (पु०) झुरा, कटार, यमधार ।

कत्था दे० (पु०) खैर, खदिर, जो पान के साथ खाया जाता है ।

कथक तद् ( पु० ) गानेवालो एक जाति, गाने नाचने वाला ।

कथक तद् ( पु० ) [ कथ् + क्त ] वक्ता, पुराण को कथा बर्चने वाला, पुराण वक्ता ।

कथञ्जन तद् ( अ० ) किम प्रकार, किसी प्रकार ।

कथञ्चित् तद् ( अ० ) किसी प्रकार, अधिक कष्ट से ।

कथन तद् ( पु० ) बोल, कहन, उच्चारण, उक्ति, विवरण करण ।

कथनीय तद् ( पु० ) वर्णनीय, कहनेयोग्य, वक्तव्य, कथन योग्य, निन्दा ।

कथम् तद् ( अ० ) हर्ष, गर्हा, प्रकारार्थ, सम्पन्न मदन, सम्भावना ।

कथहिं तद् ( क्त० ) कहते हैं, वर्णन करते हैं, गान करते हैं ।

कथा तद् ( स्त्री० ) बात, इतिहास, पञ्चांग, वृत्तान्त ।

—प्रबन्ध ( पु० ) आख्यायिका, कहानी, किस्सा, गल्प ।—प्रसङ्ग ( पु० ) कथोपकथन, बातचीत, वाचन, विषय ।—प्राण ( पु० ) नाटक वक्ता, कथक ।—घाता ( स्त्री० ) कथोपकथन, बातचीत, सम्भाषण, आलाप ।—सचिव ( पु० ) सम्मति दाता, मन्त्री, बात चीत करने में सहायक ।

कथित तद् ( पु० ) [ कथ् + क्त ] उक्त, कहा हुआ ।

कथितव्य तद् ( पु० ) [ कथ् + तव्य ] वक्तव्य, कथनीय, कथनाहं, कहने के योग्य ।

कथोपकथन तद् ( पु० ) [ कथ् + उप् + कथन ] आलाप, बातचीत ।

कथ्य तद् ( पु० ) [ कथ् + य ] वक्तव्य, कथितव्य, कथनाहं ।

कद् तद् ( अ० ) कद, कहिया, किस समय, कदा ।

कद्क्षर तद् ( पु० ) कुत्सित वर्ण, खराब शहर ।

कद्ध्वा तद् ( पु० ) [ कद् + अध्वात् ] निन्दित पथ, कुत्सित मार्ग, कुपय ।

कदन तद् ( पु० ) [ कद् + दान् ] पाप, पुद्ग, मारण, मर्दन, अधिक, नाशक ।

कद्म तद् ( पु० ) [ कद् + म् + क्त ] कुत्सित अन्न, अपवित्र अन्न ।

कद्म तद् ( पु० ) कद्म वृत्, वृत् विशेष, चरण, पाद ।

कद्म्य तद् ( पु० ) [ कद् + म्य ] वृत् विशेष, नीप, कद्म वृत् ।—क ( पु० ) मूह ।—कुसुमाकार ( पु० ) गोलाकार, वर्तुलाकार ।

कद्मरई तद् ( स्त्री० ) कादस्ता, कादरपन, भीक्षता ।

कद्मर्थ तद् ( पु० ) [ कद् + अर्थ ] निरर्थक, फुकया ।

कद्मर्थ तद् ( पु० ) कुत्सित, निन्दित, अपकृष्ट, मन्द, बुद्ध, कद्मरई ।

कद्मली तद् ( स्त्री० ) कदलक, केले का वृत् ।

कदा तद् ( अ० ) [ क्तिन् + दा ] कब, किस समय, कद ।

कदाकार तद् ( पु० ) [ कद् + आ + कृ + क्त ] कुत्सित, आकृत, फुरूप ।

कदाकृति तद् ( स्त्री० ) कुत्सित आकृति, फुरूप ।

कदाच तद् ( अ० ) कदाचित्, कदाचन, कभी, किसी समय ।

कदाचन तद् ( अ० ) कब, किसी समय, कभी ।

कदाचार तद् ( पु० ) बुरा व्यवहार, कुबलन, निन्दित कर्म, असदाचार, दुराचार ।

कदाचित् तद् ( अ० ) कधी, कभी, कभू । किसी समय ।

कदापि तद् ( अ० ) [ कदा + अपि ] कधीभी, कब कब, कभू ।

कद्दीमा दे० ( पु० ) शवल, लोहांगी ।

कद्दु दे० ( पु० ) बलाह, लौका, लोकी, लौई ।

कद्द्रु तद् ( पु० ) धूलवर्ष, ( स्त्री० ) नागमाता का नाम, कश्यपमुनि की स्त्री । दत्त प्रजापति को कन्या, इन्हींके गर्भ में सर्पों की उत्पत्ति हुई है ।

—पुत्र ( पु० ) सर्प, भुजङ्ग ।—सुत ( पु० ) नाग, सर्प, भुजङ्ग, कद्द्रुपुत्र ।

कधी दे० ( अ० ) कधू, कब, कदाचित् ।

कन तद्० (पु०) कण, धुण, आटा, अणु ।  
 कनक तत्० (पु०) स्वर्ण, सुवर्ण धतूरा, पलाशवृक्ष,  
 नागकेसरवृक्ष ।—चम्पक (पु०) वृक्षविशेष,  
 कनकचया ।—रस (पु०) हरिताल ।—लोचन  
 (पु०) हिरण्यवत्, एक राक्षस का नाम ।—चल  
 (पु०) सुमेरु पर्यन्त, अस्त गिरि, दान विशेष ।  
 कनकटा दे० (पु०) बूचा, कर्ण रहित, वधिर ।  
 कनखजूरा दे० (पु०) गोजर, कनखलार्द, फीट  
 विशेष ।  
 कनखी दे० (स्त्री०) सैन, सङ्केत, इशारा, कटाक्ष ।  
 कनपटी दे० (स्त्री०) परपटो, गण्डस्थल, कान के  
 समीप का भाग ।  
 कनफटा दे० (पु०) योगी विशेष, नक्षत्रप्रदायी ।  
 कनरसिया दे० (पु०) कर्ण रसिक, गीतज्ञ, यात  
 चीत सुनने के दृष्टिकु ।  
 कनल तद्० (पु०) मिलाया ।  
 कनवाई दे० (स्त्री०) कर्णवेध, कान छेदना ।  
 कनखलार्द दे० (स्त्री०) कनखजूरा, गोजर ।  
 कनहर दे० (पु०) पतवार, कर्ण ।  
 कनहा दे० (पु०) अन्न की जाव करने वाला ।  
 कनागत तत्० (पु०) पितृपक्ष, अपरपक्ष, कन्यागत ।  
 कनात दे० (पु०) तम्बू, डेरा, रायटी ।  
 कनिक दे० (पु०) पिसान, आटा, जूर्ण ।  
 कनियाना तद्० (स्त्री०) दलना, कतराना ।  
 कनियाहट तद्० (स्त्री०) भटक, सङ्कोच, खीच ।  
 कनिष्ठ तद्० (पु०) छोटा, लहुरा, अनुज, अतिपुत्रा,  
 पश्चात् उत्पन्न ।  
 कनिष्ठा तद्० (स्त्री०) छोटी अंगुली ।  
 कनिहा दे० (पु०) सुना, प्रति हिसक ।  
 कनीनिका तद्० (स्त्री०) आँखों की तारा, छोटी  
 अंगुली ।  
 कनीयान् तद्० (पु०) कनिष्ठ, अनुज, छोटा, अतिपुत्रा  
 अत्यल्प ।  
 कने दे० (पु०) पास, समीप, साथ, सङ्ग ।  
 कनेटी दे० (स्त्री०) कान मरोटना, घण्टह मारना ।  
 कनेर दे० (पु०) कनेल, करवीर, इस्तिशेरवा, पहले  
 जिसको प्राण दण्डकी राजाचा होती थी, उसे कनेर

के फूलों की माला पहनाई जाती थी  
 “अंतेन विधत् करवीर मालाम्” । (मृच्छकटिक)  
 कनीया तत्० (पु०) कर्णवेधन, कंठेदीनी ।  
 कनीज तद्० (पु०) नगर विशेष, एक नगर का  
 नाम, कान्यकुब्ज ।  
 कनीजिया तद्० (पु०) कनीज के वासी, ब्राह्मण  
 विशेष, कान्यकुब्ज ब्राह्मण ।  
 कनीड़ा दे० (पु०) सङ्कोची, सुखचोर ।  
 कन्त तद्० (पु०) स्वामी, प्रियतम, भतार, प्रिय ।  
 कन्था तद्० (स्त्री०) गुदड़ी, कयड़ी, पुराने बक्के से  
 बना ओढ़ना ।—घारी (पु०) मिट्टी, संन्यासी,  
 संसार त्यागी, गृहह याथा ।  
 कन्द तत्० (पु०) [कन्द + अल्] मूल जड़, मूल,  
 शोल, गाजर, लसुन ।—खर्द (पु०) मूल, मूल,  
 शोल —मूल (पु०) जड़ मूल, मुनिमोजन  
 विशेष ।  
 कन्दरा तत्० (स्त्री०) [कन्दर + रा] लोह, गुफा,  
 गुहा, पर्यन्त की सुरङ्ग ।—ल (पु०) पकटो वृक्ष,  
 अलोट वृक्ष ।  
 कन्दर्प तत्० (पु०) [कं—दृप् + अच्] काम, मदन,  
 कामदेव, अन्नङ्ग ।  
 कन्दल तत्० (पु०) [कन्द + ला + ड] उपरान्त,  
 नवीन अङ्कुर, विवाद, कलह, भगड़ा, झगड़ा,  
 युद्ध, संग्राम ।—कन्द (पु०) ज्जिमिकन्द, ज्जिमी  
 कन्द, मूल विशेष ।  
 कन्दला तद्० (पु०) कन्दरा, गुफा, खोह, कोंचवीर ।  
 कन्दलित तत्० (पु०) प्रस्फुटित, अङ्कुरित, अङ्कुर  
 प्राप्त ।  
 कन्दसार तद्० (पु०) मृग, हरिण, कुरङ्ग, नन्दन वन ।  
 कन्दासी तद्० (पु०) पुष्प और शीतवि विशेष,  
 प्रियवासा ।  
 कन्दु तत्० (पु०) [कन्द + ड] लोहमय पाकपात्र  
 कड़ा, तार्या, साकल, यही, वेड़ी ।  
 कन्दुक तत्० (पु०) गेंद, खिलौना विशेष ।  
 कन्ध तद्० (पु०) काध, कांधा, कन्धा, एकन्ध ।  
 कन्धर तत्० (पु०) शीघ्र, छेदुवा, गला, गर्दन, शेष  
 तृण विशेष ।

कन्धा तद्० (५०) कन्धा, स्कन्ध, शीवा ।  
 कन्धि तद्० (५०) समुद्र, मेघ, (स्रो०) शीवा,  
 गला ।  
 कन्धियाना तद्० (क्रि०) कान्धवर रजना, कन्धे  
 का बल देना, कन्धे का सहारा देना ।  
 कन्धेली तद्० (स्रो०) ज्ञान, शोभीर, गङ्गी, यह  
 वस्तु जो धीनों को पीठ पर रखी जाती है, शीर वृष  
 पर बन्धिये चन्न लादते हैं ।  
 कन्धिका तद्० (स्रो०) अविवाहिता कन्या, पुत्री, दश  
 वर्ष की लड़की ।  
 कन्ध्या तद्० (स्रो०) कुमारी, लड़की, बेटो, दुहिता,  
 बाराह राशियों में से छठी राशि, शोपधि विशेष ।  
 —काल (५०) कन्या की दश वर्ष की अश्रया,  
 रजोदर्शन की पहिली अवस्था ।—गत (५०) कन्या  
 निष्ठ, कन्या राशिस्थित ।—दाता (५०) विवाह  
 में कन्यादान करने का अधिकारी ।—दान (५०)  
 विवाह, वर को कन्या समर्पण ।—पति (५०)  
 जामाता, उपपति, व्यवहारी ।—भाव (५०)  
 कुमारीकावन, कुमारीत्व ।—राशि (५०) षष्ठ  
 राशि, निकम्मी वस्तु, सन्नित, सलन्न ।  
 कन्दरीया दे० (५०) कण्ठारी, मांको, कर्णधार,  
 मल्लाह ।  
 कन्दार्ई दे० (स्रो०) कनहाई, खेतकृतना, (५०)  
 श्रीकृष्ण ।  
 कन्दैया दे० (५०) श्रीकृष्ण का नाम, शयन्त प्रिय ।  
 कपकपी तद्० (स्रो०) घरघरी, फुरफुरी ।  
 कपट तद्० (५०) [ क + पट् + अल् ] अथघार्य  
 व्यवहार, छल, प्रतारणा, धातुरी ।—ता (स्रो०)  
 धूर्तता, शठता,—वेश (५०) छल वेश, मिथ्या,  
 कल्पितवेष ।—वेशधारी (५०) छल वेशधारी,  
 प्रतारक, धोखा देने वाला, ठग ।—भू (स्रो०)  
 माया भूमि ।  
 कपटी तद्० (५०) छली, बहुकथिया, खोटा, कपट  
 कारी, छद्मवैद्यी ।  
 कपड़ा दे० (५०) वस्त्र, लुगा, लत्ता ।  
 कपड़े से होना दे० रजस्वाला होना ।  
 कपना तद्० कांयना, धरयताना ।

कपर्द तद्० (५०) महादेव की जटा, यराटिका,  
 कौड़ी ।  
 कपर्दी तद्० (५०) शिव, महादेव, जटाधारी ।  
 कपर्द्दि का तद्० (स्रो०) यराटिका, कौड़ी ।  
 कपाट तद्० (५) किवार, किवारी, द्वार, देहली, घर,  
 आवरण ।  
 कपार तद्० (५०) देखो कपाल ।  
 कपाल तद्० (५०) [ क + पाल + अल् ] ललाट,  
 भाल, कपार, अट्ट, भाग्य ।—क्रिया (स्रो०)  
 संस्कार विशेष, अथजसे सुई के शिर में हथन  
 करना ।—भूत् (५०) शिव, महादेव, महेश्वर ।  
 कपालिका तद्० (स्रो०) [ कपाल + इक् + का ]  
 दन्तरोग विशेष, शोपड़ी ।  
 कपालिनी तद्० (स्रो०) दुर्गा, भगवती, कपाल  
 धारिणी ।  
 कपाली तद्० (५०) शिव, महादेव, स्वनामण्यात  
 जति विशेष, द्वार के उपर का काट, छदर ।  
 कपालीय तद्० (५०) भाग्यवाद्, कपार के बली ।  
 कपास तद्० (५०) पांग, रुई, कपास ।  
 कपि तद्० (५०) [ कप् + इ ] बानर, मर्कट, यन्त्र  
 विशेष, शाक विशेष—कच्छु (स्रो०) वृच विशेष ।  
 —कुञ्जर (५०) बानरों का राजा, प्रधान, राजा,  
 हनुमाद् ।  
 कपिञ्जल तद्० (५०) चातक पत्ती, तित्तिर पत्ती,  
 कादम्बरी कप: के उपनायक का एक मित्र, मुनि  
 विशेष ।  
 कपित्थ तद्० (५०) कैथ, कैथा, फल विशेष ।  
 कपिध्वज तद्० (५०) अर्जुन, तीसरा पाण्डव ।  
 कपिचक्र तद्० (५०) बानर के समान मुखवाला ।  
 कहते हैं नारद जी ने विवाह करने की इच्छा से  
 सुन्दर बनने के लिये—श्री भी भगवाद् के समान—  
 भगवान् से प्रार्थना की, भगवान् ने उनके आध्या-  
 त्मिक कल्याण की शीर ध्यान देकर सुन्दर बनाना  
 तो हूर रहा, उनका मुंह बन्दरों का सा बना दिया  
 और नारद जी से कह दिया कि श्राप अब बड़े  
 सुन्दर हो गये । नारद जी भी स्वयम्बर स्थान में  
 पहुँचे और कन्या के सामने दस अमिलाष से

खड़े हुए कि यह मुझे देखे और वरण करे। परन्तु घैसा होना नहीं था; किन्तु उनको सामने खड़ा देख, कन्या उधर से अग्रपना मुंह फेर लेती थी, परन्तु नारद जी कय मानने वाले थे, जिधर यह मुंह फेरती थी उधर ही आप खड़े हो जाते थे। इनकी लीला देख वहा के लोगों ने कहा, यह बनरमुंहा इधर उधर क्यों दोड़ता है, अब नारद जी को सन्देह हुआ; और जल के समीप जाकर, अग्रपना मुंह उन्हींने देखा, तब तो उनको निर्णय होगया।

कपिल तत्० (पु०) पीला रंग, पीले रंग का, नील पील वर्ण, गन्धद्रव्य, मुनि विशेष। विष्णुवात साङ्ख्य शास्त्र प्रणेता कपिल मुनि, यह कर्दम प्रजापति के औरस से और देवदूति के गर्भ से उत्पन्न हुए थे, यह भगवान् के पांचवें अवतार हैं। उनका प्रनाया हुआ साङ्ख्यदर्शन यह दर्शन की श्रेणी में समझा जाता है। साङ्ख्य दर्शन को लोग निरीश्वर दर्शन कहते हैं। इस दर्शन में प्रकृति और पुरुष का निरूपण बहुत ही अच्छी रीति से किया गया है।  
—धारा (खी०) गङ्गा, तीर्थ विशेष, काशी का एक स्थान विशेष।

कपिला तत्० (खी०) पीली गाय, धेनु, दक्ष राजा की एक कन्या का नाम।

कपिश तत्० (पु०) खैरा, भूरारंग, बदामी, कृष्ण चोत मिश्रित वर्ण।

कपीश तत्० (पु०) कपि स्वामी, घानर राज, सुग्रीव, हनुमान्, बानरों का राजा।

कपीश्वर तत्० (पु०) सुग्रीव, हनुमान्, बानरों का राजा।

कपुत्र तद् (पु०) कपूत, कुपूत, कुमुदि पुत्र।

कपूत तद्० (पु०) निन्दित पुत्र, दुःखारी पुत्र।

कपूर तद्० (पु०) कपूर, सुगन्धिद्रव्य विशेष।

—तिलक (पु०) एक हाथी का नाम जो ब्रह्मावर्त-बिह्वर में था।

कपूरी तद्० (खी०) पान, पत्र विशेष, रङ्ग विशेष।

कपोत तत्० (पु०) कबूतर, परेवा, पारावत।

—पालिका (खी०) घर के बाहर की थोर

काठ का बना हुआ पक्षियों के रहने का स्थान।

—चर्पा (खी०) छोटी श्लायची।—तद् (पु०) नद विशेष।

कपोतिका तत्० (खी०) कबूतरी, मूली, तरकारी।

कपोल तत्० (पु०) गाल, गण्डस्थल।

कपिन्द तद्० (पु०) कपीन्द्र, कपिराज।

कफ तत्० (पु०) श्लेष्मा, प्लवार, वल्लभ, शरीरस्थ धातु विशेष।—प्र (पु०) कफ नाशक, श्लेष्मा नाशक।—चूर्णक (पु०) कफ यद्गने वाला, तगर वृक्ष।—विरोधी (पु०) मरिच।  
—रि (पु०) गुपटी, सोंठ।

कफोष्णी तत्० (पु०) यांह के बीच की गाँठ, केहुनी।

कय दे० (अ०) कदा, कदिया, किस समय।—तक (अ०) अवधि वास्तव अवयव, किस समय तक।—लौं कितनी देरतक।

कयकय दे० (अ०) किस किस समय।

कयहुी दे० (खी०) भारतीय एक खेल।

कयन्ध तत्० (पु०) मस्तकहीन देह, बिना गिर का धड़, एक राक्षस का नाम।

कयरा तद्० (पु०) कर्पूर, चितकथरा, चितला।

कयहूँ तद्० (अ०) कभी भी, किसी समय भी, कयनिक जून।

कयाड़ दे० (खी०) कयार, कियाड़।

कयारू दे० (पु०) काम, उदाम, गुण, भ्रंशक।

कय्य तत्० (पु०) पितृश्राद्ध, पितृदान।

कमी दे० (अ०) कदापि, कधी, कभी।

कभू दे० (अ०) कय, कमी, कधू, कदापि।

कमठ तत्० (पु०) कूर्म, कच्छप, कहुवा, दैत्य विशेष, मुनि भाजन।

कमठा दे० (पु०) बंस का धनुष, कमाल।

कमठी तत्० (खी०) कच्छपी, कहुई, धनुही।

कमण्डल तद्० (पु०) कठया, कठारी, साधु का जलपात्र, साधु, संन्यासियों का मिट्टी का कट से बनाया जलपात्र।

कामदा दे० ( पु० ) पेठा, कुईंटा, कौहडा ।  
 कामनीय तत्० ( गु० ) सुन्दर, सुवरा, सुचंद्र, मनो-  
 हर, रम्य ।  
 कामरत्न तद्० ( पु० ) एक प्रकार का फल और  
 वृक्ष ।  
 कामल तत्० ( पु० ) पद्म, जलज, अम्बुज ।—ज  
 ( पु० ) ब्रह्मा ।—नाम ( पु० ) पद्मनाभ, भग-  
 धान्, विष्णु ।—घाय ( पु० ) कामला रोग, पांवर,  
 एक रोग विशेष, जिमें शरीर और आँखें पीली  
 हो जाती हैं ।  
 कामला तत्० ( स्त्री० ) लक्ष्मी, वरुणी, विष्णुपत्नी  
 ।—कर ( पु० ) तालाब, जिस तालाब में कमल  
 पुष्प अधिकता से पाये जाते हैं ।—पति ( पु० )  
 विष्णु भगवान्, नारायण ।—सन ( पु० )  
 [कमल + घासन] ब्रह्मा ।—सना ( स्त्री० ) लक्ष्मी,  
 मरुस्वनी ।  
 कामलाक्ष तत्० ( पु० ) कमल नयन, पद्मनेत्र, पद्म-  
 पत के समान आँखों वाला ।  
 कामलिनी तत्० ( स्त्री० ) कुमोदिनी, कमलों का  
 समूह ।  
 कामाई दे० ( स्त्री० ) उपार्जन, प्राप्ति, लाभ ।  
 कामाऊ दे० ( गु० ) कामानेवाला, उद्यमी, परि-  
 श्रमी, यत्नी, भारत का एक प्रान्त विशेष ।  
 कामाना दे० ( क्रि० ) प्राप्ति करना, निर्मल करना,  
 साफ करना ।  
 कामासुत दे० ( पु० ) कामेरा, भ्रमी, कामाने वाला,  
 उद्यमी, साहसी ।  
 कामेरा दे० ( पु० ) मजूर, सहायक, कामकर ।  
 कामोदनी दे० ( स्त्री० ) कुमुद, कमल विशेष, यह  
 रात को विकसित होता है ।  
 कामोरी दे० ( स्त्री० ) मटकी, मगरी, बड़ा घड़ा ।  
 काम्प तत्० ( पु० ) कपकपी, घट्यराहट, गात्रादि  
 सङ्कुलन ।—उचर ( पु० ) काम्प सहित उचर,  
 जिस में शरीर कांपता है ।  
 काम्पन तत्० ( पु० ) घट्यर, डगडग, स्पन्दन,  
 कांपन, चलन ।  
 काम्पना तद्० ( क्रि० ) घट्यराना, कांपना ।

काम्पवायु तत्० ( पु० ) रोग विशेष, शरीर की  
 अवशता ।  
 काम्पमान् तत्० ( पु० ) काम्पन युक्त, सकम्प ।  
 काम्पाहा दे० ( गु० ) घट्यराहा, काम्पित ।  
 काम्पित तत्० ( गु० ) काम्पायमान, डगमगा ।  
 काम्प तत्० ( पु० ) काम्प युक्त, काम्प सहित ।  
 काम्बल तत्० ( पु० ) कामरी, लोई, कनी कपडा,  
 दोगाला ।  
 काम्यु तत्० ( पु० ) शङ्ख, कण्ठ, गला ।—प्रीव  
 ( गु० ) शङ्ख के समान कण्ठ वाला ।  
 कायरी दे० ( स्त्री० ) टिकोरा, शंभिया, बहुत छोटा  
 चाँम ।  
 कर तत्० ( पु० ) हाथ, राजस्व, महसूल, हस्तियुद्ध,  
 किरण, राजधन, हस्तनक्षत्र ।  
 करई दे० ( क्रि० ) कण्ठ, काम्पन, करे, कर्दें,  
 करते हैं ।  
 करई दे० ( क्रि० ) देखो करई ।  
 करउ दे० ( क्रि० ) करो, करी, करिये, कीजिये ।  
 करक दे० ( स्त्री० ) पीड़ा, दर्द, कड़क, रह रह  
 कर उठने वाली पीड़ा ।  
 करकच दे० ( पु० ) लौन, लयण, निमक ।  
 करकचि दे० ( पु० ) किककिचाहट, हडा गुला,  
 अयुष्ट, कोमल ।  
 करकरा दे० ( पु० ) छोटा, झूठा, कठोर, कठिन ।  
 करका तत्० ( स्त्री० ) गिला, घोला, पत्थर  
 पहना, शिलावृष्टि ।  
 करकाना दे० ( क्रि० ) लवकाना, मुकाना ।  
 करख तद्० ( पु० ) खैब, मित्रवाय, हठ, अधिक  
 द्रव्य, माप विशेष ।  
 करखी तद्० ( क्रि० ) खींची, आकर्षित की, अपनी  
 ओर खींचली ।  
 करगत तत्० ( पु० ) हस्तगत, हाथ लगा हुआ,  
 प्राप्त, लब्ध, हाथ में आया हुआ, हस्तनक्षत्र  
 स्थित चन्द्रमा ।  
 करगदा तद्० ( पु० ) करधनी, कटि चन्द्रन ।  
 करग्रह तत्० ( पु० ) विवाह, पाणि-ग्रहण, परि-  
 णय,—तद्० कर गहना ।

करङ्ग दे० ( पु० ) पञ्जर, पांशुरी, हड्डी ।  
 करज तत्० ( पु० ) हाथ से उतरा हुआ लिये ।  
 करज तत्० ( पु० ) करिञ्जा, वृक्ष विशेष ।  
 करट तत्० ( पु० ) कृकचास, गिरगिट, काक,  
 कौआ, हाथी का गाल, कुम्हिल जीवी ।  
 करटी तत्० ( पु० ) रांगा, काकपत्नी ।  
 करण तत्० ( पु० ) [ कृ + अणच् ] साधन,  
 निर्माण, इन्द्रिय, योगियों का सासन भेद । व्याकरण  
 का तोसरा कारक, ज्योतिष में एक प्रकार के  
 समय विभाग को कारण कहते हैं, वे करण ११ हैं,  
 इनमें ७ सात चल और ४ स्थिर हैं, दो करण एक  
 चन्द्र दिन के बराबर होता है ।  
 करणी तत्० ( स्त्री० ) [ कृ + अणच् + ई ] कार्य,  
 करणीय, यथई का अर्थ विशेष, गणित शास्त्र में  
 यह राशि जिसका मूल निश्चित न हो ।  
 करणीय तत्० ( पु० ) अथर्व कर्तव्य, कर्तव्य कर्म ।  
 करनेच्छा तत्० ( स्त्री० ) [ करण + इच्छा ]  
 निर्माणेच्छा, करने की इच्छा ।  
 करण्ड तत्० ( पु० ) काक पत्नी, कौआ, दिव्या,  
 द्विविया, पेटिका ।  
 करत् करत ( क्रि० ) करता है, करती ।  
 करतय तद्० ( पु० ) काम, कर्तव्य, करने योग्य काम,  
 चाल, गुण, परस्व ।  
 करतल तद्० ( पु० ) हस्ततल, हथेली, हाथ का  
 तल ।  
 करताल तद्० ( पु० ) एक बाने का नाम, कठ-  
 ताल ।  
 करताली तद्० ( स्त्री० ) हाथ बनाना, हाथ बनाने  
 का शब्द ।  
 करतूती दे० ( स्त्री० ) काम, धन्धा, कर्तव्य,  
 यथा—  
 “करतूती कहि देत, चाप कहिये नहिं सारै” ।  
 —उद्भट  
 करतोया तद्० ( स्त्री० ) नदी विशेष, यह नदी  
 बङ्गाल में है ।  
 करदपत्र तद्० ( पु० ) पट्टा, राजस्व मुचक पत्र ।

करदा तद्० ( पु० ) बदलाई, बट्टा ।  
 करदायी तत्० ( पु० ) [ कर + दा + णिच् ] मा-  
 गुजार, बरकप्रद ।  
 करधृत तत्० ( पु० ) करनिहित, हस्त धृत ।  
 करना दे० ( क्रि० ) बनाना, रचना, सुधारना ।  
 करपत्र तत्० ( पु० ) करान्त, चारा, ऋकच ।  
 करपुट तत्० ( पु० ) कृताञ्जलि, बह्माञ्जलि ।  
 करवाल तत्० ( पु० ) अधि, अङ्ग, खंडा, तलवार ।  
 करवालिका तत्० ( स्त्री० ) छुरी, कटारो ।  
 करवी दे० ( स्त्री० ) नारी, डांडी, सुधार या भारी  
 को डांडी, पशु भरण ।  
 करभ तत्० ( पु० ) ऊँट, हाथी का बच्चा ।  
 करभूषण तत्० ( पु० ) कङ्कड़, बलम, कड़ा, बिना-  
 यठ ।  
 करम तत्० ( पु० ) कर्म, काम धन्धा, भाग, भाग्य ।  
 करमाला तत्० ( स्त्री० ) जपमाला, जप करने की  
 छोटी माला, स्मरणी ।  
 करलगुवा दे० ( पु० ) खीबश, खोजित ।  
 करवट दे० ( स्त्री० ) पंचपाड़ा, पांजर, पार्ष्वपी  
 यतन ।  
 करवीर तत्० ( पु० ) गंडोर का फूल या पेड़, कौरे  
 का वृक्ष, पुष्प ।  
 करशाला तत्० ( स्त्री० ) चुंगीघर, महसूल घर ।  
 करस्म्युट तत्० ( पु० ) हाथ जोड़न, बह्माञ्जलि ।  
 करसो दे० ( पु० ) जंगली गोईटा, गोयरी ।  
 करहा दे० ( पु० ) कड़हा, कटि, कमर ।  
 करहार तत्० ( पु० ) शिफाकन्द, मैनफल ।  
 करहाटक तत्० ( पु० ) शिफाकन्द, मैनफल,  
 शोधधि विशेष ।  
 करान्त दे० ( पु० ) ऋकच, चारा, करपत्र ।  
 करान्ती दे० ( पु० ) चारे से चीरने वाला, लकड़ी  
 काटने वाला ।  
 करा दे० ( पु० ) कड़ा, कठिन, खोटा, झूठा ।  
 कराना दे० ( क्रि० ) बनवाना, करवाना, निर्माण  
 कराना ।  
 करायल दे० ( पु० ) कड़ी, उपजून विशेष, सुगन्ध,  
 द्रव्य विशेष ।

कराइहिं तद् ( क्रि० ) करावेगा, कपावेगा, ।  
 करार दे० ( पु० ) करार, कितार, ठहराय, कोल,  
 यत् ।  
 करारा दे० ( पु० ) कड़ारा, कठिन ।  
 कराल तत् ( पु० ) भयङ्कर, डेढ़ा, भयानक,  
 डरावन ।—कृति ( स्त्री० ) भयङ्कर स्वरूप,  
 डरावनी कृति ।  
 कराली तत् ( स्त्री० ) भयङ्कर, कठिन, अग्नि के  
 सप्रजिह्वाओं के अन्तर्गत जिह्वा विशेष ।  
 करावली तत् ( स्त्री० ) किरणों का समूह ।  
 कहारना दे० ( क्रि० ) खांस भरना, दुःख करना,  
 उसास लेना ।  
 करि तद् ( पु० ) हाथी, हस्ति, रामायण में इसका  
 प्रयोग आया है ।—कुम्भ ( पु० ) गजकुम्भ,  
 हाथी का मस्तक ।—गर्जित ( पु० ) हाथी  
 का गर्जन, हाथी का शब्द ।—ज ( पु० ) हस्ति  
 शायक, करभ, हाथी का यष्टा ।  
 करिण तद् ( पु० ) हाथी, शुण्डयाला ।  
 करणी तत् ( स्त्री० ) हथिनी, करेणु ।  
 करिया दे० ( पु० ) कैंबट, कर्णधार, मल्लाह, काला,  
 रयान, काला रंग ।  
 करियादः तत् ( पु० ) सूक्ष्म, जलहस्ति, जलजन्तु  
 विशेष ।  
 करिल तद् ( पु० ) नयीन पत्ते, पल्लव, अङ्कुर, कैन ।  
 करिण्यु तत् ( पु० ) कर्तव्य, कर्णीय, कर्ण  
 शील ।  
 करिष्यमाण तत् ( पु० ) करिष्यत्, उद्यत,  
 यत्नवात् ।  
 करी तद् ( पु० ) हाथी, गज, मातङ्ग ।—न्द्र  
 ( पु० ) [ करी + ऋ ] प्रधान हस्ति, रेवायत  
 हस्ति ।  
 करीजे दे० ( क्रि० ) करिये, कोजिये, करे, करना  
 योग्य है, करनाही चाहिये ।  
 करीर तत् ( पु० ) बंशाङ्कुर, खांसका कोवड़,  
 रेतीली भूमि में उत्पन्न होने वाला वृक्ष विशेष,  
 जिसे कंठ खाते हैं । टेंटी का पेड़ ।  
 करील तद् ( पु० ) देखो करीर ।

करीप तत् ( पु० ) सूखा गोमय, कड़ा ।  
 कइआई दे० ( स्त्री० ) कहुआपन, गितार्द, तिक्तता ।  
 कइण तत् ( पु० ) वृक्ष विशेष, कइणा, उचितदया,  
 युहुविशेष, रसविशेष ।—विप्रलम्भ ( पु० )  
 गृह्णार रस का भेद विशेष, नयिका और नयक  
 में से कोई एक लोकान्तर चलनाय, परन्तु पुनः  
 मम्मिलन की आशा हो, ऐसी अवस्था का नाम  
 कइणविप्रलम्भ है ।  
 कइणा तत् ( स्त्री० ) दया, कृपा, अनुग्रह अनुकम्पा,  
 रामायण में इस के स्थान में कहना का प्रयोग  
 प्रायः किया गया है ।—कर ( पु० ) दयालु,  
 कृपावान्, दयाकर, दया की राशि ।—निधान  
 ( पु० ) दयाधार, दया का आधार, सानुकम्प,  
 अतिसमदयालु ।—रहित ( पु० ) कइणा  
 शून्य, दयाशून्य ।—मय ( पु० ) दया के रूप,  
 दयामय, दया करने वाला, कृपालु, दयालु ।  
 —पत्तन ( पु० ) दया के स्थान ।—दं ( पु० )  
 कइणानिधान, दयालु, कइणामय ।  
 कइवा तद् ( पु० ) कमण्डल, कइवा, कठारी,  
 मिट्टी का कोरा बर्तन, कइवा चौय, एक पर्ष या  
 स्थोहार, जो कालिक के महोत्सव में होता है ।  
 करेकर दे० ( स्त्री० ) एकत्र, उरावर, सँग सँग ।  
 करेत दे० ( पु० ) सर्व विशेष ।  
 करेणु तत् ( पु० ) हाथी, गज, कर्षिकार वृक्ष ।  
 करेरा दे० ( पु० ) दृढ़, सक्त, कठोर, कड़ा ।  
 करेला तत् ( पु० ) तरकारी विशेष ।  
 करैत तद् ( पु० ) देखो करेत ।  
 करोड़ दे० ( पु० ) कइरोड़, कोटि, सौ लाख  
 १००००००० ।  
 करोड़ा दे० ( पु० ) उगाहने वाला, प्रधान ।  
 करोनी दे० ( स्त्री० ) शुचन, दूध का जलन ।  
 करोरा दे० करोरी, देखो करोड़ ।  
 करो दे० ( क्रि० ) काला हूँ, बनता हूँ, कर्क, रचूँ ।  
 करौदा तद् ( पु० ) कर्मदक, एक खट्टे फल  
 का नाम ।  
 कर्क तत् ( पु० ) गेंगरा, कांकड़ा, कर्कराशि,  
 चतुर्थ राशि ।



कर्कट तन् ( पु० ) कुशोर, केंकड़, चोथो राशि, नाम विशेष, पत्ति विशेष, कमल मूल, हुम्बो ।  
 कर्कश तन् ( पु० ) कठोर, कठिन, कड़ा, निर्दय, ( स्त्री० ) कर्मशा ।—चान्य ( पु० ) निष्पुत्र वचन, पुत्र्य वाक्य ।  
 कर्कन्धु तन् ( पु० ) बदरी वृक्ष, घेर का पेड़ ।  
 कर्कसूर तन् ( पु० ) वृक्ष विशेष, सुगन्ध द्रव्य का भेद, सुवर्ण, कर्पूर ।  
 कर्कनी दे० ( स्त्री० ) कर्पूचनो, कुर्वनी, पाक बनाने का एक वस्तु ।  
 कर्का दे० ( पु० ) डबुआ, डबू, कलुल ।  
 कर्काल दे० ( स्त्री० ) कुलांच, कूद, चोकडी ।  
 कर्का दे० ( स्त्री० ) कर्कली, फेटी, झांटी ।  
 कर्कल दे० ( पु० ) कर्षी ।  
 कर्ण तन् ( पु० ) कान, अग्न, पतवार, अङ्गनाज, राधेय, युधिष्ठिर का बड़ा भाई, सूर्य के शीश से कुन्तो के गर्भ में यह उत्पन्न हुआ, अग्नी क्षीरता के कारण यह प्रसिद्ध था, इसने पर्युराम से अस्त्र विद्या सीखी थी । त्रिभुज खेत में भुज घोर कोटि को रेखा के अतिरिक्त तीसरी रेखा का नाम, चतुष्कोण खेत में उस कोने का नाम जो सामने के कोनों से खींची हुई होती है ।—कण्डू ( पु० ) कर्ण रोगविशेष, कान की खजुनाहट ।—कुहर ( पु० ) कान की गोलार्ध, अग्नेन्द्रिय, गोलक ।—गोचर ( पु० ) अक्षयज्ञान, किसी बात को सुन लेना ।—धार ( पु० ) मांको, नाविक, नाव, चलाने वाला, चढ़नदार ।—फूल ( पु० ) कान का भ्रूषण विशेष, कर्णालङ्कार, कनकूल ।—मल ( पु० ) कर्ण-पूय, कान का मैल ।—वेधन ( पु० ) संस्कार विशेष, कान छेदन ।—वेष्टन ( पु० ) कुण्डल, कान में पहने का गहना ।  
 कर्णाकर्णी तन् ( स्त्री० ) काना कानी, शोहरन,  
 कर्णाट तन् ( पु० ) देशविशेष, स्वनाम प्रसिद्ध देश ।—क ( पु० ) कर्णाट देश में उत्पन्न मनुष्य ।  
 कर्णाटी तन् ( स्त्री० ) रागिनी विशेष, कर्णाट देश में उत्पन्न मनुष्य या वस्तु ।  
 कर्णानुज तन् ( पु० ) कर्ण का छोटा भाई, राजा युधिष्ठिर ।

कर्णभरण तन् ( पु० ) कर्णालङ्कार, कर्णभ्रूषण, कर्ण-फूल ।  
 कर्णिका तन् ( स्त्री० ) कान का एक प्रकार का गहना, हाथों के गुण्ड का अतिशय पतला भाग, हाथ को मध्यमा अङ्गुली ।  
 कर्णिकाचल तन् ( पु० ) सुमेरु पर्यंत ।  
 कर्णिकार तन् ( पु० ) वृक्ष और पुष्प विशेष ।  
 कर्णोरथ तन् ( पु० ) झोड़ार्थ छोटी गाड़ी, खियों के आने जाने के लिये पहाँदार रथ, रक्ता,  
 कर्णिसुत तन् ( पु० ) कंसराज ।  
 कर्णोजप तन् ( पु० ) विष्णु, दुर्जन, ठग, इधर को यात उधर कहने वाला ।  
 कर्त्तन तन् ( पु० ) कतरन, काटन, हाटन ।  
 कर्त्तनी तन् ( स्त्री० ) कर्त्तरी, कतरनी, कैंची ।  
 कर्त्तव्य तन् ( पु० ) कर्णोय, कर्णार्ध, कर्ने योग्य, उपयुक्त, उचित ।—ता ( स्त्री० ) उपयुक्तता, उपयुक्त ।  
 कर्त्तरिका तन् ( स्त्री० ) कैंची, काटने के लिये अस्त्र विशेष, छुरी ।  
 कर्त्तरी तन् ( स्त्री० ) काटने का अस्त्र, कैंची ।  
 कर्ता तन् ( पु० ) प्रभु, स्वामी, अधिकारी, कर्ता वाला, अधिपति, यथम कारक ।  
 कर्तार तद् ( पु० ) ईश्वर, सृष्टि करने वाला, सिरजन-हार ।  
 कर्त्तित तन् ( पु० ) काटा हुआ, क्षिप्त, खण्डित, काटा हुआ मृत ।  
 कर्तृकर्मभाव ( पु० ) कर्ता और कर्म का संबन्ध ।  
 कर्तृक तन् ( पु० ) कारक, साधक, कार्य, साधन, बनाया हुआ ।  
 कर्तृत्व ( पु० ) कर्ता का धर्म, प्रभुता, स्वामित्व, अधिकार ।  
 कर्तृप्रधान तद् ( पु० ) जिस वाक्य में कर्ता की प्रधानता हो, जिस वाक्य में कर्ता क्रिया के अन्त-सार हो ।  
 कर्तृवाचक तन् ( पु० ) कर्ता, कारक को कहने वाली क्रिया ।  
 कर्म तन् ( पु० ) कांदो, कौंचड़, चहला, पांक ।

कर्धनी दे० ( स्त्री० ) कटिबन्धन, सूत या चान्दी सोने का बना हुआ कर्म में पहनने का गहना ।  
 कर्पास तत्० ( पु० ) कपास, रुई, बांग।  
 कर्पासी तद्० ( स्त्री० ) कपड़ा, सूत, वस्त्र, सूती कपड़ा ।  
 कर्पूर तत्० ( पु० ) कपूर, रवेत धूप, सुगन्ध द्रव विशेष, चन्द्र ।  
 कर्पुरा तद्० ( पु० ) चितकयरा चित्रविचित्र, नाना रङ्गयुक्त ।  
 कर्म तत्० ( पु० ) क्रिया, भाग्य, दूसरा कारक, कार्य, प्रयोजन, व्यापार, लग्न से दशवां लग्न ।  
 —कर ( पु० ) जो मजूरी लेकर काम करता है । भूत्व, नौकर, समस्त काम करने वाला ।  
 ( स्त्री० )—करी।—काण्ड ( पु० ) संस्कार विशेष, जप यज्ञ होम आदि, वेद का एक ऋक् जिसमें कर्म करने की विधि लिखी है ।  
 —कार ( पु० ) जाति विशेष, शूद्रा के गर्भ और विश्वकर्मा के श्रोत्र से उत्पन्न एक जाति, लोहार, कर्मचारी, बेगार ।—कारक ( पु० ) दूसरा कारक, कर्ता के व्यापार से जिसको लाभ पहुंचे ।—च्युत ( पु० ) काम से बाहर किया हुआ, कर्मभ्रष्ट, पदच्युत ।  
 कर्मनाशा तत्० ( स्त्री० ) नदी विशेष, जो चीसा के पास है, कहते हैं कि उसके जलस्पर्श से मनुष्य के धर्म नष्ट हो जाते हैं ।  
 कर्म निपुणार्थे तद्० ( स्त्री० ) कर्मकुशलता, कर्म करने की चतुराई ।  
 कर्मपथ तत्० ( पु० ) कर्म मार्ग, वेद की रीति, अपना उद्देश्य ।  
 कर्मप्रधान तत्० ( पु० ) जहां कर्म की प्रधानता हो, कर्मोच्चेय क्रिया ।  
 कर्मफल तत्० ( पु० ) कर्मों का फल, कर्मविपाक, सुख दुःख ।  
 कर्मभूमि तत्० ( स्त्री० ) आर्यावर्त, भारतवर्ष, जहां कर्म करने से विशेष फल हो ।  
 कर्मभोग तत्० ( पु० ) प्रारब्ध का भोग, कर्म से उत्पन्न सुखों का भोग, तपस्या, दुःख, पत्नी-विशेष ।

कर्ममूल तत्० ( पु० ) कर्मों की जड़, कुश, कर्म को पहिली अवस्था ।  
 कर्मयुग तत्० ( पु० ) कलियुग, चीयायुग, शेषयुग ।  
 कर्मरङ्ग तत्० ( पु० ) कर्मरत्न, फल विशेष ।  
 कर्मोच्चेयक तत्० ( पु० ) कर्म की प्रधानता सूचक क्रिया विशेष ।  
 कर्मविपाक तत्० ( पु० ) कर्म का फल, दुःख सुख, कर्मफल यताने वाले एक ग्रन्थ का नाम ।  
 कर्मशील तत्० ( पु० ) स्वभाव ही से कर्मकरने वाला, उत्साही, उद्यमी, परिश्रमी ।  
 कर्मशूर तत्० ( पु० ) कर्मठ, कर्मनिपुण, कर्मदक्ष ।  
 कर्मसचिव तत्० ( पु० ) काम करने के उपयोगी, मन्त्री, अमात्य, दीवान ।  
 कर्मसंन्यास तत्० ( पु० ) कर्मों का फल त्याग, निष्काम कर्म ।  
 कर्मसमाधि तत्० ( पु० ) कर्मों से विरक्त, किमी काम को नहीं करना ।  
 कर्मसाक्षी ( पु० ) स्वयं, दुष्कर्म सुकर्म के प्रष्टा ।  
 कर्मसाधन तत्० ( पु० ) कार्य सम्पादन, कर्मनिष्ठ करने का उद्योग ।  
 कर्मोद्धार तद्० ( पु० ) जपतपिया, भाग्यवात्, स्वधर्मनिष्ठ, स्वकर्मनिरत ।  
 कर्मोत्तर तत्० ( पु० ) कर्मकार, लोहकार, बंग, बांच, कर्मरत्न, फल विशेष ।  
 कर्मिष्ठ तत्० ( पु० ) कर्मप्रयोग, वैदिक कर्म करने वाला, कर्मकाण्डी ।  
 कर्मो तत्० ( पु० ) कर्मसंज्ञक, कर्म करनेवाला, कामक.जु, शुभ कर्म युक्त, भाग्यवात्, कर्मनिष्ठ ।  
 कर्मिन्द्रिय तत्० ( पु० ) कर्मसम्पादन करनेवाली पांच इन्द्रियां, यथा—बाहु, पाणि, वायु, पाद, और उचस्य ।  
 कर्म तत्० ( पु० ) सोलह मासे की तौल, अर्धमा रत्नी, खींचना, लेती, विरोध, ईर्ष्या, यथा, “थातहि थात कर्म वद्विधावा” ।  
 —(रामायण)

कर्पक तत्० ( पु० ) किसान, हरजोता, खेत करने वाला, कृषिजीवी, खीचने वाला ।

कर्पण तत्० ( पु० ) [ कृष् + अणट् ] खेंच, टान, जोतना, कृषिकर्म, चास ।

कर्पणी तत्० ( स्त्री० ) वृक्ष विशेष, अंकुशी, यंशी, आकर्पणी ।

कर्पणीय तत्० ( पु० ) [ कृष् + ञनीय ] कर्षण करने योग्य, जोतने योग्य खेत, खीचने योग्य ।

कर्पफला तत्० ( स्त्री० ) [ कर्प + फल् + इ ] आमलकी वृक्ष, बहेडा ।

कर्पा दे० ( पु० ) ईर्ष्या, उत्साह, विरोध, क्रोध ।

कर्हिचित् तत्० ( अ० ) किसी 1 ल, किसी समय, कदाचित्, अनियमित काल में, अनिर्दिष्ट काल में ।

कल तत्० ( पु० ) गम्भीर और मधुर शब्द, श्रव्यक ध्वनि, प्रिय, सुन्दर । दे० व्यतीत या आगामी दिन, सुस्थता, आराम, सुखवान । अद्भुत, यन्त्र ।

कलकण्ठ तत्० ( पु० ) हस, कल्लतर, कोकिल, कोइल, मधुरस्वर युक्त ।

कलकल तत्० ( पु० ) [ कल + कल + अल् ] अस्फुट शब्द, कोलाहल ।

कलकौ तद्० ( पु० ) भगवान के अवतारों में से दशवां अवतार, भायी भगवान् का अवतार ।

कलगी दे० ( पु० ) कलङ्गी, बूटा, शेवर, पगड़ी या मुकुट में लगाने का एक आभूषण विशेष ।

कलङ्क तत्० ( पु० ) अपवाद, अपवश, दुष्कीर्ति, दाग, चिन्ह, दोष, मिथ्या अपराध ।

कलङ्की तत्० ( पु० ) दोषी, पापी, अपराधी, ( स्त्री० ) कलङ्किनी ।

कलजहंघा दे० ( पु० ) कल्लटा, कलझाट ।

कलजिन तत्० ( पु० ) द्वेषी, हिंसक, दुर्जन, पापी, पापात्मा, कालजिह्वा ।

कलञ्ज तत्० ( पु० ) [ कर्त् + जन् + इ ] विषग्रन्त वाण से हत पशु पक्षी आदि, मूल विशेष ।

कलत्र तत्० ( पु० ) [ कल + त्र ] भार्या, स्त्री, निमन्त्र, किला, दुर्ग ।—लाभ ( पु० ) पत्नी लाभ, भार्याप्राप्ति, विवाह ।

कलधौत तत्० ( पु० ) सोना, चांदी, सुवर्ण, रत्न मधुर शब्द ।

कलध्वनि तत्० ( पु० ) कल्लतर, कोइल, बसल मधुर शब्द ।

कलन्दर तत्० ( पु० ) वर्णसङ्कर जाति विशेष ।

कलप तद्० ( पु० ) कल्प, प्रज्ञा का दिन, कल्पना रचना, सामर्थ्य, युगान्त, बाल काल करने का मसाला ।

कलपना दे० ( क्रि० ) अनुताप करना, पश्चात्ता करना, दुःखित होना, कुठना ।

कलपाना दे० ( क्रि० ) दुःखित करना, कुठाना ।

कलपित तद्० ( पु० ) कल्पित, मिथ्या रचित कृत्रिम, मूल शून्य विचार ।

कलपतरु तद्० ( पु० ) कल्प वृक्ष, द्वैवताद्यों व वृक्ष, मनोरथ सिद्ध करने वाला वृक्ष ।

कलपांत तद्० ( पु० ) कल्पान्त, कल्प की समाप्ति, युगान्त ।

कलभ तत्० ( पु० ) करभ, हस्तिशावक, हाथी का ऊंट का बच्चा ।

कलम तत्० ( पु० ) स्वनाम स्यात् लिखने की वस्तु, लेखनी, धान्य विशेष, साठी धान ।

—तराश कलम बनाने की छुरी ।—दान मनी और कलम रखने की पेटिका ।

कलमकल दे० ( स्त्री० ) चयराहट, दुःख ।

कलमलाना दे० ( क्रि० ) छटपटाना, कुलकुलाना, चञ्चलता प्रकाश करना ।

कलमले दे० ( क्रि० ) चञ्चल हुए, छटपटाये ।

कलमी दे० ( स्त्री० ) फूलों का चारा, ये कल जो दो वृत्तों के संयोग से उत्पन्न किये जाते हैं ।

कलरव तत्० ( पु० ) मधुर और अस्फुट शब्द, जनसमूह का शब्द ।

कलल तत्० ( पु० ) गर्भ को आच्छादन करने वाला चर्म, जरायु ।

कलवल दे० ( स्त्री० ) विषद, आपद, भ्रकोर ।

कलवीर दे० ( पु० ) जातिविशेष, मनु कहने वाली जाति, गुंडी, कपाल, कलार ।

कलविद्क तत्० ( पु० ) पक्ष विशेष, मुँला, पाक ।

कलश तत्० (५०) घट, घड़ा, गगरी, मिट्टी का जलपात्र ।

कलशी तत्० (खो०) छोटा जलपात्र, गगरी, घैली ।

कलस तद्० (५०) घट, घड़ा, परिमाण विशेष, मन्दिर आदि का मुकुट ।

कलसा तद्० (५०) शिवर, गृह, झड़ा ।

कलशिरा दे० (५०) कृष्ण मस्तक विशेष, काले मिर वाला ।

कलहंस तत्० (५०) हंस विशेष, राजहंस ।

कलह तत्० (५०) [ कल् + हन् + ट् ] विरोध, विवाद, भगड़ा, द्वन्द्व ।—कारो (५०) विवाद करने वाला, भगड़ाहू ।—प्रिय (५०) विवाद प्रिय, विवादसन्तोषी ।

कलहान्तरिता तत्० (खो०) [ कल्ह + अन्तरित + ञ् ] नायिका विशेष, जो स्त्री पहले अपने पति का अपमान करती है, और पीछे उसके चले जाने पर दुःखित होती है, यथा ।

“कह्यो न माने कंत को, पुनि पीछे पछताय”

कलहान्तरिता नायिका ताहि कहत कविराय”

—मतिराम

कलहारा तत्० (५०) लड़ाका, भगड़ासु, कलह-प्रिय ।

कलही तत्० (५०) कलिप्रिय, विरोध करने वाला, (खो०) नष्ट करने वाली स्त्री ।

कला तत्० (खो०) चन्द्रमा का मोलहयः भाग, अंश, भाग, हिस्सा, राशिचक्र का अत्यन्त सूक्ष्मभाग, एक राशि के तीस भाग होते हैं, उनमें एक भाग का साठवां भाग, समय का परिमाण । शिष्य आदि विद्या, इसके चौसठ भेद होते हैं । वे ये हैं । (१) —

शौत (५०) गाना, यह चार प्रकार का होता है, स्वराग, पदग, लयग और अयधानग । (२)

—घाद्य धाजन, इसके अनेक भेद हैं । (३)

कलम—नृत्य नाच, प्रधानतः इसके दो भेद हैं । नाट्य नहार अन्त्य, किसी के कार्यों का अनुकरण कर्मभोग नाट्य है और केवल भाव धराना तथा उत्पन्न करने अनाट्य है । (४) —अलोक्य विशेष । और, इसके छः भङ्ग होते हैं :—रूप भेद,

प्रमाण, भाव और सुन्दरता की योजना, जिसका चित्र हो उसमें मिलान, लिखने की विशेषता, और रङ्गों का यथास्थान सञ्चिष्येय । यह अन्य और अपने वित्त विनोद के लिये बनाया जाता है । (५) —विशेषकच्छेद्य मस्तक में तिलक लगाने के लिये भ्रूजंपत्र आदि का विविध प्रकार के संचि बनाना । (६) —तण्डुल कुसुमवलि धिकार बिना टूटे हुए चायलों से अनेक प्रकार की देयमन्दिर में संची काटना, और फूलों के सञ्चिष्येयविशेष से विविध यन्त्र बनाना ।

(७) —पुष्पास्तरण जो अनेक प्रकार के पुष्पों से यस्तु बनायी जाती है, जिसे पुष्पश्या भी कहते हैं । (८) —दशनवसनाङ्गराग दांत, कपड़े, और शरीर रंगने की विधि । (९)

—मणिभूमिकाकर्म श्रीमकाल में सोने रहने के लिये स्थान बनाना । (१०) —शयन-रचन श्या विछाना, इसमें यह ध्यान रखना पड़ता है कि जिस पर सोने से अन्न पच जाय ।

(११) —उदकायाद्य जलमें मृदङ्ग आदि के समान ध्वनि निकालना, जलतरङ्ग यजाना ।

(१२) —उदकाघात हाथ या यन्त्र-कल से जल केंद्र कर मारना । (१३) —चित्रयोग प्राकृतिक बातों में विशेषता उत्पन्न करना, काले बाल को सफेद, या सफेद को काला करना, आदि ।

(१४) —माल्यप्रन्थनचिकल्प माला धुयने के अनेक प्रकार की रीति । (१५) —शेखरका-

पीडयोजन शिर के भाग की ओर लटकने वाले फूलों से घने हुए एक प्रकार के गहने को शेखरक कहते हैं । चौटी के चारों ओर गोलाकार फूलों की माला का आपीड कहते हैं । इन दोनों को विविध वर्ण के पुष्पों से बनाना, और यथा-

स्थान पहिनना । (१६) —नेपथ्यप्रयोग देश काल के अनुसार वस्त्र, आभूषण आदि में अपने शरीर को यजाना । (१७) —कर्णपत्रभङ्ग हाथीदाँत और शङ्ख आदि के गहने बनाना ।

(१८) —गन्धयुक्ति सुगन्ध पदार्थ बनाने की रीति । (१९) —अलङ्कारयोग संयोग्य और असंयोग्य दो प्रकार के अलङ्कार होते हैं । जिनका

संयोग किया जाय—कण्ठी, कण्ठा, चंपाकली आदि संयोज्य हैं। कड़ा, कुण्डल आदि असंयोज्य हैं। इनके बनाने की प्रक्रिया । ( २० )—ऐन्द्रजाल इन्द्रजाल आदि शास्त्रों के बताये हुए कर्म, अद्भुत कर्म दिखाना । ( २१ )—कौचुमारयोग, सुन्दर बनने और बनाने की रीति । ( २२ )—हस्तलाघव सभी कामों में शीघ्रता । ( २३ )—विचित्रशाक्यूपभक्ष्यविकारक्रिया अनेक प्रकार के शाक, दूध-पेय भक्ष्य बनाने की प्रक्रिया । आहार बनाना । ( २४ )—पानकरसरगा स्वयोजन विविध प्रकार के शर्बत, आसव, अर्क, आदि बनाना । ( २५ )—सूचीवानकर्म इस के सोवन, जलन, और बिरचन ये तीन भेद हैं। अंगरखा, कोट, कमीज़, कुर्ता, आदि का सीना सीवन है। फटे कपड़ों का सीना जलन और कैयड़ी आदि सोना बिरचन है । ( २६ )—सूत्र-कोड़ा एक ही वस्तु को अनेक प्रकार का दिखाना । ( २७ )—घीणाडमरुकवाद्य योणा और डमरुक यजाना, यद्यपि ये भी बाद्य हैं, तथापि इनमें अधिक कठिनता होने के कारण ये अलग कहे गये हैं । ( २८ )—प्रहेलिका विनोद के लिये पहलियां, ये प्रसिद्ध हैं । ( २९ )—प्रतिमाला इसे अन्त्याचरिका भी कहते हैं। एक प्रकार का शास्त्रार्थ, क्रम से एक के कहे हुए श्लोक के अन्ति-माक्षर जिस श्लोक के आदि में हो उसको कहना । ( ३० )—दुर्वाचकयोग उच्चारण और अर्थ में कठिन शब्दों का प्रयोग करना, जिसे कूट कहते हैं । ( ३१ )—पुस्तकवाचन महा-भारत आदि को स्वर लय के साथ गाना । ( ३२ )—नाटकाख्यायिकादर्शन नाटक और अप्पयिका का ज्ञान प्राप्त करना । ( ३३ )—काव्यसमस्यापूरण सामान्य अभिप्राय जान कर कविता बनाना, या कठिन अभिप्राय समझ कर श्लोक बना देना । त्रिपद समस्या पूँक समस्या आदि इसके अनेक भेद हैं । ( ३४ )—पट्टिकावान-विकल्प पलङ्क, कुर्सी आदि की बेल या और किसी वस्तु में अनेक प्रकार का बुनना । ( ३५ )—तक्षकर्म चिगड़ी हुई चीजों को सुधारना ।

( ३६ )—तक्षण बर्दई के काम । ( ३७ )—वास्तुविद्या गृह बनाने और सजाने की रीति । ( ३८ )—रूप्यरत्नपरीक्षा सोना, चांदी, हीरा, आदि का परखना । ( ३९ )—धानुवाद मिट्टी, पत्थर, रत्न तथा अन्य धातुओं को पृथक् करने, शोधन करने और मिलाने आदि की विद्या । ( ४० )—मणिपगा-करज्ञान हीरा, आदि रत्नों को रँगने की विद्या, इन मणियों के उत्पत्तिस्थान का ज्ञान करना । ( ४० )—वृक्षायुर्वेदयोग वृक्षों का रोपना, बढ़ाना, उनके दोषों को हटाना और कर्म आदि करने की विधि । ( ४२ )—मेघलायक कुक्कुटयुद्धविधि मेड़ा, नाया, और कुक्कुट—सुर—के युद्ध की प्रक्रिया, इसे सजीवयूत कहते हैं, यह किसी प्रकार के ठहराव से किया जाता है । ( ४३ )—शुकसारिकाप्रलापन शुक, सारिका को पढ़ाना, ये पढ़ाने पर मनुष्य भाषा में बोलते हैं । ( ४४ )—उत्सादन शरीर दधाना और तेल लगाना । ( ४५ )—अक्षरमुष्टिकाकथन गुमयात को कहने के लिये, संक्षेप में कहना । ( ४६ )—म्लेच्छित्तविकल्प शुद्ध शब्दों में लिखी हुई भी बात को अक्षरों के उलटने पलटने से अर्थ समझना, या साङ्केतिक शब्दों का अर्थ समझना । ( ४७ )—देशभाषाविज्ञान अन्य देशियों के साथ व्यवहार करने के लिये उनकी भाषा जानना । ( ४८ )—पुष्पशक-टिका पुष्पों से निर्मित छोटी गाड़ी । ( ४८ )—निमित्तज्ञान प्राकृतिक लक्षणों से, अथवा पशुओं की चेष्टा बोलने आदि से भावों गुणा-गुम फल जानना । ( ५० )—यन्त्रमन्त्रिका यन्त्र वृष्टि लड़ाई आदि के लिये सजीव या निज्जीव यन्त्रों के लक्षण बताने वाला शास्त्र, जिसे विश्वकर्मा ने बनाया है । ( ५१ )—धारण-मात्रिका पढ़े हुए शब्दों को स्मरण रखने के शास्त्र । ( ५२ )—संपाद्य विना सुनी हुई बात को उसके जाननेवाले के साथ पढ़ना । ( ५३ )—मानसी मन की बातें जानने की विद्या । ( ५४ )—फाव्यक्रिया संस्कृत, प्राकृत,

अपभ्रंस आदि भाषाओं में कविता करना ।  
 ( ५५ )—अभिधानकोष शब्दों का अर्थ  
 निरूपण करना । ( ५६ )—छन्दोज्ञान छन्द  
 बताने वाले शास्त्रों का ज्ञान । ( ५७ )—क्रिया-  
 कल्प काव्य बनाने की विधि । ( ५८ )—छलित  
 दूसरों को ठगने के उपाय । ( ५९ )—घस्त्र-  
 गोपन अच्छे प्रकार से घस्त्र पहिनना, फटे हुए  
 कपड़े को भी ऐसा पहनना जिससे उसका फटना  
 मायुम न पड़े, बड़े घस्त्र को भी पहन कर छोटा  
 बना लेना । ( ६० )—छूतविशेष निर्जीव बूत  
 खेलना । ( ६१ )—आकर्षकोड़ा पासे का  
 खेल, चौपड़ । ( ६२ )—वालकीडनक गुड़िया  
 आदि के द्वारा लड़कों को प्रसन्न रखना । ( ६३ )  
 —वैजयिकी स्वयं नष्ट होना और दूसरे को नष्ट  
 होने की शिवादेना, धोड़े और हथियों को चाल  
 मिलाना । ( ६४ )—वैजयिकी व्यायामिकी  
 विजय प्राप्त करने और व्यायाम करने की विद्या ।  
 येही चौबठ कलायें हैं ।

कलाई दे० ( स्त्री० ) पहुँचा ।

कलाकन्द दे० ( पु० ) मिथ्यात्र विशेष, बरफ़ी ।

कलाकर तत्० ( पु० ) चन्द्रमा ।

कलाधर तत्० ( पु० ) चन्द्रमा, सूर्य ।

कलाना दे० ( स्त्री० ) ध्वनना, अकाराना ।

कलानिधि तत्० ( पु० ) चन्द्रमा ।

कलाप तत्० ( पु० ) [ कल + पा + इ ] सप्रह,  
 देर, राशि, प्रचलित संस्कृत व्याकरणों में से एक  
 व्याकरण ।—क ( पु० ) कविताओं के अर्थ करने  
 की रीति, चार होंकों का एक साथ अन्वय ।  
 मोर, मयूर ।

कलापो तत्० ( पु० ) मयूर पत्नी ।

कलापूर्ण तत्० ( पु० ) पूर्णिमा का चन्द्रमा, प्रसिद्ध  
 शिल्पी ।

कलायसू दे० ( पु० ) सोना चांदी का पतला तार ।

कलार दे० ( पु० ) जाति विशेष, कलत्रार, गुप्ही ।

कालाल दे० देखो कलार ।

कलारिन दे० ( स्त्री० ) कलवारी, कलवार की  
 स्त्री ।

कलावन्त तद्० ( पु० ) कथक, गायक, गानेवाला,  
 गीत नृत्य से जीविका करने वाली जाति ।

कलालाप तत्० ( पु० ) [ कला + आलाप ] धम्मर,  
 अथयक्त मधुर ध्वनि ।

कलि तत्० ( पु० ) [ कल् + इ ] चौथा युग, कलह,  
 बिना खिन्ने फूल ।—काल ( पु० ) कलिपुग ।

कलिका तत्० ( स्त्री० ) [ कलिक + आ ] कौटो,  
 अयिकसित पुष्प, कौंपल, दूसी, कुनगी ।

कलिङ्ग तत्० ( पु० ) देश विशेष, यह देश उड़ोसा  
 से दक्षिण की ओर गोदावरी नदी के मुहाने पर  
 है । इस देश की राजधानी का नाम कलिङ्ग नगर  
 है ।

कलिञ्जर तद्० ( पु० ) एक पर्वत का नाम, यह  
 पर्वत पुराण प्रसिद्ध है, आज भी, यह अपने पुराने  
 नाम से विख्यात है, यह बुन्देलखण्ड के अन्तर्गत  
 करवा के पास है ।

कलियाना ( स्त्री० ) कुसमित होना, पुष्पिधारा  
 होना, फूलना, खिलना ।

कलियुग तत्० ( पु० ) कर्मयुग, चौथायुग ।

कली तद्० ( स्त्री० ) कलिका, कौटो, अर्द्धविकसित  
 पुष्प, यथा—

“अलि कलीहिं पै लगे आगे कौन हयाल”

( विहारो मन्त्र )

कलुप तत्० ( पु० ) समल, आविल, मलसहित,  
 पाप, गँदना ।

कलुपित तत्० ( पु० ) मलदूषित, पापग्रस्त, मन-  
 पूर्ण, पातकी, दुष्कृती ।

कल्टूटा दे० ( पु० ) काला, कुरूप, कटांहा ।

कलेऊ तद्० ( पु० ) बासी भात, प्रातःकाल का  
 भोजन, जलपान, बासी खाना ।

कलेजा दे० ( पु० ) अंत विशेष, यकृत, उन्साह,  
 साहस, हृदय की दृढ़ता, —उलाटना अधिक  
 कै करना ।—फटना अधिक दुःख से व्याकुल  
 होना ।—ठण्डाकरना मनोरथ सिद्धि, अस्ति-  
 लाप की पूर्ति ।—जलना दुःखी होना, दूसरे  
 की उन्नति न सहना, अनुत्साह करना ।—कांपना  
 भयभीत होना ।—पर सांप लोटना अनुत्सह

होना।—से लगा रखना अत्यन्त प्रेम करना।

—में डाल रखना बहुत चाहना, अधिक प्रेम।

कलेवर तत्० ( पु० ) देह, शरीर, काय, अङ्ग।

कलेवा तद्० ( पु० ) प्रातःकाल का जलपान, विवाह की एक रीति।

कलेश तद्० ( अ० ) ( पु० ) क्रोध, दुःख, कष्ट, आपत्ति, विपद।

कलोर दे० ( पु० ) नयी गाय, ओसर।

कलोल तद्० ( पु० ) खेलकूद, क्रीड़ा, फ़ज़ोल, रिनोद।

कलोलिनी तद्० ( स्त्री० ) प्रवाह से बहने वाली नदिया, तरङ्गिणी, खेलने वाली नदी।

कलौंजी दे० ओषधि विशेष, मँडारेला।

कल्क तत्० ( पु० ) विद्या, मल, कोट, तलछट।

कल्की तत्० ( पु० ) विष्णु का दसवां अवतार, कलियुग में होने वाला अवतार, ( गु० ) पापी, अपराधी।

कल्प तत्० ( पु० ) [ क्लिप् + अल् ] उपाय, अभिप्राय, विधि, प्रलय, ब्रह्मा का दिन, शास्त्र विशेष, कर्मकाण्ड।—क ( पु० ) काटने वाला, कल्पना करने वाला।—तरु ( पु० ) देव वृक्ष, कल्पवृक्ष, दाता।—द्रुम ( पु० ) अभिलषित फल देने वाला, मुर द्रुम।—पादप ( पु० ) कल्पवृक्ष।—सूत्र ( पु० ) वैदिक कर्म काण्ड, सृष्टि के आरम्भ का समय।—न्त ( पु० ) [ कल्प + अन्त ]

ब्रह्मा का दिनायसान, युगान्त, प्रलय काल, महार काल।—न्तस्थायी ( गु० ) नित्य स्थायी, अक्षय।

कल्पित तत्० ( गु० ) [ क्लिप् + क्त ] रचित, आरोपित, कृत्रिम, मिथ्या प्रकाशित, कल्पना सम्भूत।—अर्थ ( गु० ) [ कल्पित + अर्थ ] अर्पित, प्रतिपादित।

कल्मलाना दे० ( क्रि० ) कुल्लुलाना, फड़कना।

कल्मप तत्० ( पु० ) पाप, अधर्म, अपराध, नरक विशेष।

कल्माय तत्० ( पु० ) [ कल् + मय् + घर् ] कर्तुरवर्ण, रङ्ग विरङ्गा।

कल्प तत्० ( पु० ) [ कल् + प ] प्रातःकाल, प्रत्युप, आने वाला दिन या व्यतीत दिन।

कल्याण तत्० ( पु० ) कुशल, मङ्गल, शुभ।

कल्याणवर्मन् तत्० ( पु० ) यह एक प्रसिद्ध ज्योतिषी थे और देवघाम के रहने वाले वधेल उचि थे, इनका घनाया सारायली नामक एक ज्योतिष का ग्रन्थ विद्यमान है। यह प्रसिद्ध ज्योतिषी ब्राह्मिहर के समकालीन थे, ऐसा विद्वानों का अनुमान है। म-म-सुधाकर द्विवेदी जी के मतानुसार इनका समय सन् ५७८ ई० अनुमान होता है।

कल्लु तद्० ( गु० ) बधिर, अव्योन्द्रिय रहित, बहरा।

कल्लुर दे० ( पु० ) ऊसर, चारभूमि, खार।

कल्लु दे० ( पु० ) घेदुवा, गला, छलकारी, मायावी, प्रतारक, दुष्ट, ठग, जवड़ा।

कल्लाना दे० ( क्रि० ) जलन, दहन, तपाना, जलन पड़ना, पीड़ा होना।

कल्लपरवर दे० ( पु० ) मुंजा, मिठार्द, चब्रेता।

कल्लोल तत्० ( पु० ) महातरङ्ग यड़ी लहर, गर्जन।

कल्लोलिनी तत्० ( स्त्री० ) तरङ्ग वाली नदी, धारा के साथ बहने वाली नदी।

कल्लह तद्० ( अ० ) कल्प, आगामी या अतीत दिन। यह शब्द अतीत या अगले आने वाले दिन के अर्थ में प्रयोग किया गया है, यह बात प्रसङ्ग में जानी जाती है।

कल्लहण तत्० ( पु० ) एक संस्कृत कवि का नाम, यह काश्मीर निवासी थे, और महाराजा जयसिंह के समय में विद्यमान थे, इन्होंने काश्मीर के राजाओं का इतिहास लिखा है, जिसका नाम राजतरङ्गिणी है। राजतरङ्गिणी से ११४८ ई० कल्लहण का समय निश्चित किया जाता है।

कचच तत्० ( पु० ) सन्नाह, बखतर, धर्म, क्लिप्त।

कचयी दे० ( स्त्री० ) मत्स्य विशेष।

कचर्ग तत्० ( पु० ) ककारादि पांच अक्षर, क, ख, ग, घ, ङ।

कथल तत्० ( पु० ) घ्रास, कौर ।  
 कथलित तत्० ( गु० ) [ कथल + क्त ] प्रसित  
 भुक्त, खादित ।  
 कथलीकृत तत्० ( गु० ) अधीनी कृत, प्रसित, भुक्त ।  
 कथि तत्० ( पु० ) [ कथ् + इत् ] कविता करने  
 वाला, काश्यकर्ता, ब्रह्मा व्यास वाल्मीकि आदि,  
 परिहृत ।—ता कविता, पद्य, श्लोक, छन्द, हृदय के  
 भावोंको लौकिक पदार्थों के साथ मिलान करके  
 नियमित छन्द में प्रकाशित करना, गुणाचार्य ।  
 कथिका तत्० ( स्त्री० ) [ कथिका + क् ] खसोना,  
 लगाम, घोड़े की राम ।  
 कथित तद्० ( पु० ) कविता, कवित्व, काव्य,  
 छन्दो विशेष ।  
 कथिताई दे० ( स्त्री० ) पद्य, पद्य रचना, काव्य ।  
 कथिनासा तद्० ( स्त्री० ) कर्मनासा नदी, इसका  
 प्रयोग रामायण में किया गया है ।  
 कथिमाता तद्० ( स्त्री० ) गुणाचार्य की माता,  
 काश्मीर की भूमि ।  
 कथिराज तत्० ( पु० ) प्रधान कवि, एक संस्कृत  
 कवि का नाम । बङ्गाल के सेनवंशी राजा लक्ष्मण  
 सेन की सभा में ये सभा परिहृत थे । अतएव  
 इनका समय भी लक्ष्मण सेन का ही समय मानना  
 उचित है, लक्ष्मण सेन का समय १११६ ई०  
 निश्चित हुआ है । इनके बनाये ग्रन्थ का नाम  
 राघवपाण्डवीय है । इसमें रामायण और  
 महाभारत की कथा साथ ही साथ लिखी गयी है ।  
 कथर दे० ( पु० ) वृक्ष विशेष, कचनार ।  
 कथा तत्० ( स्त्री० ) [ कथ् + इत् ] घोड़ा आदि  
 को मारने का चाबुक, कोड़ा, शौंगी ।—घात  
 ( पु० ) कथा प्रहार, कोड़ा मारना ।—हँ ( गु० )  
 [ कथा + अहँ ] कथाघात योग्य, कोड़ा मारने के  
 उपयुक्त, अघराधी, दोषी ।  
 कथेरू तत्० ( पु० ) कन्द विशेष, जल में उत्पन्न  
 होने वाला एक प्रकार का कन्द, वृष कन्द ।  
 कथित्व तत्० ( स्त्री० ) कोई, अनिर्दिष्ट मनुष्य ।  
 कथमल तत्० ( पु० ) झुब्झा, अचैतन्य, पाप ।  
 कथमीर तत्० ( पु० ) देश विशेष, काश्मीर ।

कश्य तत्० ( गु० ) कोड़ा मारने योग्य, दमन करने  
 योग्य, घोड़े का तङ्ग ।  
 कश्यप तत्० ( पु० ) एक मुनि का नाम, यह  
 महर्षि मरीच के पुत्र थे, देवता दानव मनुष्य  
 आदि इन्हीं से उत्पन्न हुए हैं । आदिति और  
 दिति दो इनकी स्त्रियां थीं ।  
 कश्यपमेरु तत् ( पु० ) एक पर्वत और देश का नाम,  
 उसी पर्वत पर वसने के कारण काश्मीर को  
 कश्यपमेरु भी कहते हैं ।  
 कथ तत्० ( पु० ) [ कथ् + अत् ] सोने चांदी की  
 परीक्षा करने का पत्थर, कथीटी, शान, निकप,  
 परचने वाली यस्तु ।  
 कथण तत्० ( पु० ) परचनता, परीक्षा, जांच,  
 खीचना, आकर्षण, तर्जन ।  
 कथा तत्० ( स्त्री० ) चाबुक, कोड़ा, फसाँव,  
 कपाय ।  
 कथाय तत्० ( पु० ) कथैला, कसाव, कास, काड़ा ।  
 कथीटी दे० ( स्त्री० ) धातु परीक्षा करने का पत्थर ।  
 कथ तत्० ( पु० ) [ कथ् + क्त ] पीड़ा, क्रोध, कृच्छ्र,  
 विषय ।—कर ( गु० ) कष्टदायक, पीड़ा  
 देने वाला ।—कल्पना ( स्त्री० ) मिथ्या रचना,  
 निष्प्रयोजन कल्पना ।—साध्य ( गु० ) दुःसाध्य,  
 कष्ट से साधन करने योग्य ।  
 कथित तत्० ( गु० ) [ कथ् + इत् ] दुःसित,  
 पीड़ित, कष्ट युक्त ।  
 कस दे० ( स्त्री० ) कैसा, क्या, प्रश्नार्थक अशय ।  
 कसक दे० ( पु० ) पीड़ा, दुःख, धीरे धीरे पीड़ा  
 होना, फटना, ( क्रि० ) कमकता, दरकना,  
 फटना, पीड़ा होना ।  
 कसकसा दे० ( गु० ) किरकिरापन, ककलीापन  
 स्वाद रहित ।  
 कसन्न दे० ( पु० ) झाड़ी वान्धना, यन्त्रणा, वेदना,  
 दुःख ।  
 कसना दे० ( क्रि० ) बाँधना, जँचना, परचन,  
 जांचना, तलना, धूनना, परीक्षा करना ।  
 कसमसना दे० ( क्रि० ) कसमस करना, शरीर मरो-  
 डना, जंभाई लेना ।



होना ।—से लगा रखना श्रत्यन्त प्रेम करना ।

—में डाल रखना बहुत चाहना, अधिक प्रेम ।

कलेवर तत्० ( पु० ) देह, शरीर, काय, अङ्ग ।

कलेवा तद्० ( पु० ) प्रातःकाल का जलपान, विवाह की एक रीति ।

कलेश तद्० ( अ० ) ( पु० ) क्लेश, दुःख, कष्ट, आपत्ति, विपद ।

कलोर दे० ( पु० ) नयी गाय, ओसर ।

कलोल तद्० ( पु० ) खेलकूद, क्रीड़ा, कल्लोल, तिनोद ।

कलोलिनी तद्० ( स्त्री० ) प्रवाह से बहने वाली नदियां, तरङ्गिणी, खेलने वाली नदी ।

कलौजी दे० शोषधि विशेष, मँठारेल।

कल्क तत्० ( पु० ) विष्ठा, मल, कोट, तलछट ।

कल्की तत्० ( पु० ) विष्णु का दसवां अवतार, कलिपुत्र में होने वाला अवतार, ( गु० ) पापी, अपराधी ।

कल्प तत्० ( पु० ) [ क्लिप् + अल् ] उपाय, अभि- प्राय, विधि, प्रलय, ब्रह्मा का दिन, शास्त्र विशेष, जर्मकाण्ड ।—क ( पु० ) कांटने वाला, कल्पना करने वाला ।—तरु ( पु० ) देव वृक्ष, कल्प- वृक्ष, दाता ।—द्रुम ( पु० ) अभिलषित फल देने वाला, सुर द्रुम ।—पादप ( पु० ) कल्पवृक्ष ।

—सूत्र ( पु० ) वैदिक कर्म काण्ड, सृष्टि के आर- म्भ का समय ।—न्त ( पु० ) [ कल्प + अन्त ]

ब्रह्मा का दिनावसान, युगान्त, प्रलय काल, संहार काल ।—ान्तस्थायी ( गु० ) नित्य स्थायी, अक्षय ।

कल्पित तत्० ( गु० ) [ क्लिप् + क्त ] रचित, आरोपित, कृत्रिम, मिथ्या प्रकाशित, कल्पना सम्भूत ।—ार्थ ( गु० ) [ कल्पित + अर्थ ]

अर्पित, प्रतिपादित ।

कल्मलाना दे० ( स्त्री० ) कुल्लुलाना, फड़कना ।

कल्मप तत्० ( पु० ) पाप, अधर्म, अपराध, नरक विशेष ।

कल्माप तत्० ( पु० ) [ कल् + मप् + घर् ] कर्तुर- वर्ण, रङ्ग विरङ्गा ।

कल्प तत्० ( पु० ) [ कल् + प ] प्रातःकाल, प्रत्युप, आने वाला दिन या व्यतीत दिन ।

कल्याण तत्० ( पु० ) कुशल, मङ्गल, शुभ ।

कल्याणवर्मन् तत्० ( पु० ) यह एक प्रसिद्ध ज्योतिषी थे और देवग्राम के रहने वाले वघेल क्षत्रिय थे, इनका बनाया सारावली नामक एक ज्योतिष का ग्रन्थ विद्यमान है । यह प्रसिद्ध ज्योतिषी

बराहमिहिर के समकालीन थे, ऐसा विद्वानों का अनुमान है । म-म- बुधाकर द्विधेदी जी के मतानुसार इनका समय सन् ५०८ ई० अनुमान होता है ।

कल्ल तद्० ( गु० ) यधिर, अवशेन्द्रिय रहित, बहरा ।

कल्लर दे० ( पु० ) जसर, चारभूमि, खार ।

कल्ला दे० ( पु० ) घेदुवा, गला, छलकारी, मायावी, प्रतारक, धुष्ट, ठग, जयड़ा ।

कल्लाना दे० ( स्त्री० ) जलन, दहन, तपाना, जनन पड़ना, पीड़ा होना ।

कल्लापरवर दे० ( पु० ) भुंजा, मिठाई, चबेना ।

कल्लोल तत्० ( पु० ) महातरङ्ग बड़ी लहर, गर्जन ।

कल्लोलिनी तत्० ( स्त्री० ) तरङ्ग वाली नदी, धारा के साथ बहने वाली नदी ।

कल्लह तद्० ( अ० ) कल्प, आगामी या अतीत दिन । यह शब्द अतीत या भ्रगले आने वाले दिन के अर्थ में प्रयोग किया गया है, यह बात प्रसङ्ग से जानी जाती है ।

कल्लहण तत्० ( पु० ) एक संस्कृत कवि का नाम, पर कारमीर निवासी थे, और महाराजा जयसिंह के समय में विद्यमान थे, इन्होंने कारमीर के राजाश्री का इतिहास लिखा है, जिसका नाम राजतरङ्गिणी है । राजतरङ्गिणी से ११४८ ई०

कल्लहण का समय निश्चित किया जाता है ।

कवच तत्० ( पु० ) सन्नाह, घवतर, बर्म, किलम ।

कवयी दे० ( स्त्री० ) मत्स्य विशेष ।

कवर्ग तत्० ( पु० ) फकारादि पांच अक्षर, क, ख, ग, घ, ङ ।

कथल तत्० ( पु० ) घास, कीर ।  
 कथलित तत्० ( गु० ) [ कथल + क्त ] घसित  
 भुक्त, खादित ।  
 कथलीकृत तत्० ( गु० ) अधोनी कृत, घसित, भुक्त ।  
 कवि तत्० ( पु० ) [ कप् + इत् ] कविता करने  
 वाला, काव्यकर्ता, ब्रह्मा व्यास वाल्मीकि आदि,  
 पण्डित ।—ता कविच, पद्य, श्लोक, छन्द, हृदय के  
 भावोंको लौकिक पदार्थों के साथ मिलान करके  
 नियमित छन्द में प्रकाशित करना, गुक्ताचार्य ।  
 कविका तत्० ( स्त्री० ) [ कविका + क्त ] खलीन,  
 लगाम, घोड़े की राम ।  
 कविच तत्० ( पु० ) कविता, कवित्व, काव्य,  
 छन्दो विशेष ।  
 कवितार्थ दे० ( स्त्री० ) पद्य, पद्य रचना, काव्य ।  
 कविनासा तत्० ( स्त्री० ) कर्मनासा नदी, इसका  
 प्रयोग रामायण में किया गया है ।  
 कविमाता तत्० ( स्त्री० ) गुक्ताचार्य की माता,  
 काश्मीर की भूमि ।  
 कविराज तत्० ( पु० ) प्रधान कवि, एक संस्कृत  
 कवि का नाम । बङ्गाल के सेनवंशी राजा लक्ष्मण  
 सेन की सभा में ये सभा परिहृत थे । अतएव  
 इनका समय भी लक्ष्मण सेन का ही समय मानना  
 उचित है, लक्ष्मण सेन का समय १११६ ई०  
 निश्चित हुआ है । इनके वनाये ग्रन्थ का नाम  
 राघवपाण्डवीय है । इसमें रामायण और  
 महाभारत की कथा साथ ही साथ लीयी गयी है ।  
 कशर दे० ( पु० ) वृक्ष विशेष, कचनार ।  
 कशा तत्० ( स्त्री० ) [ कश् + इ ] चोड़ा आदि  
 को मारने का चाबुक, कोड़ा, चाँगी ।—घात  
 ( पु० ) कशा प्रहार, कोड़ा मारना ।—हँ ( गु० )  
 [ कशा + षट् ] कशाघात योग्य, कोड़ा मारने के  
 उपयुक्त, अघराधी, दोषी ।  
 कशेरू तत्० ( पु० ) कन्द विशेष, जल में उत्पन्न  
 होने वाला एक प्रकार का कन्द, वृण कन्द ।  
 कश्चित् तत्० ( अ० ) कोई, अनिर्दिष्ट मनुष्य ।  
 कश्मल तत्० ( पु० ) मूर्च्छा, अचेतन्य, पाप ।  
 कश्मीर तत्० ( पु० ) देश विशेष, काश्मीर ।

कश्य तत्० ( गु० ) कोड़ा मारने योग्य, दमन करने  
 योग्य, चोड़े का तङ्ग ।  
 कश्यप तत्० ( पु० ) एक मुनि का नाम, यह  
 महर्षि मरीच के पुत्र थे, देवता दानव मनुष्य  
 आदि इन्हीं में उत्पन्न हुए हैं । आदिति और  
 दिति दो इनकी स्त्रियां थी ।  
 कश्यपमेरु तत् ( पु० ) एक पर्वत और देश का नाम,  
 उमी पर्वत पर बसने के कारण काश्मीर को  
 कश्यपमेरु भी कहते हैं ।  
 कप तत्० ( पु० ) [ कप् + अल् ] मोने चांदी को  
 परीक्षा करने का पत्थर, कपौटी, शान, निकप,  
 परपने वाली वस्तु ।  
 कपण तत्० ( पु० ) परखना, परीक्षा, जांच,  
 खीचना, आकर्षण, तर्जान ।  
 कपा तत्० ( स्त्री० ) चाबुक, कोड़ा, कसौय,  
 कपाय ।  
 कपाय तत्० ( पु० ) कपैला, कसाव, काय, काड़ा ।  
 कपौटी दे० ( स्त्री० ) धातु परीक्षा करने का पत्थर ।  
 कष्ट तत्० ( पु० ) [ कष्ट + क्त ] पीड़ा, क्लेश, कृच्छ्र,  
 विपद् ।—कर ( गु० ) कष्टदायक, पीड़ा  
 देने वाला ।—कल्पना ( स्त्री० ) मिथ्या रचना,  
 निष्प्रयोजन कल्पना ।—साध्य ( गु० ) दुःसाध्य,  
 कष्ट से साधन करने योग्य ।  
 कष्टित तत्० ( गु० ) [ कष्ट + इत् ] दुःखित  
 पीड़ित, कष्ट युक्त ।  
 कस दे० ( अ० ) कैसा, क्या, प्रश्नार्थक अडभय ।  
 कसक दे० ( पु० ) पीड़ा, दुःख, धीरे धीरे पीड़ा  
 होना, फटना, ( कि० ) कसकना, दरफना,  
 फटना, पीड़ा होना ।  
 कसकसा दे० ( पु० ) किरकिरापन, ककरीलापन  
 खाद रहित ।  
 कसन दे० ( पु० ) झाँकी वान्धना, यन्त्रणा, वेदना,  
 दुःख ।  
 कसना दे० ( कि० ) यौधना, खँचना, परखना,  
 जांचना, तर्जना, भ्रूना, परीक्षा करना ।  
 कसमसना दे० ( कि० ) कसमस करना, शरीर मरो-  
 डना, जंभाई लेना ।

काकडा दे० ( पु० ) चर्मविशेष, एक प्रकार का चमड़ा ।—सिंघी ( पु० ) ओषधि विशेष ।

काकण दे० ( पु० ) कुष्ठ रोग ।

काकभुशुण्डि तद्० ( पु० ) एक मुनि का नाम, जिस का मुंह काक के समान था, रामायण का प्रसिद्ध यन्त्रा ।

काका दे० ( पु० ) पितृव्य, चाचा, पिता का छोटा भाई ।—तूआ ( पु० ) पक्षी विशेष ।

काकिणी तत्० ( स्त्री० ) बीस कड़ो, याच गयडा कौड़ी, छदाम ।

काकी दे० ( स्त्री० ) काका की स्त्री, चाची, पितृव्य-पत्नी ।

काकु तत्० ( पु० ) व्यङ्ग्य बचन, यक्रोक्ति, टेढ़ी बोली, स्वर विशेष के द्वारा निषेध वाक्य से विधि, और विधि वाक्य से निषेध का अर्थ निकालना ।

—क्ति ( स्त्री० ) [ काकु + उक्ति ] कातरौक्ति, व्यङ्ग्य कथन ।

काकोदर तत्० ( पु० ) [ काक + उदर ] भुजङ्ग सर्प फणी, साँप, कौशा का पेट ।

काकोल तत्० ( पु० ) नरक विशेष, काली, एक प्रकार की विषैली धातु ।

काकोली तत्० ( स्त्री० ) ओषधि विशेष, ज्वर-नाशक ओषधि ।

काकोलूकिका तत्० ( स्त्री० ) काक और उरु के समान शत्रुता, अधिक शत्रुता ।

काख तद्० ( स्त्री० ) काँख, कच, पायर्ग्य ।—अलाई ( स्त्री० ) कछोरी, पायर्ग्य, काँख का घाव ।  
—सोती काँख से कन्धे तक ।

काया दे० ( पु० ) काक, कौशा ।—सुर ( पु० ) एक देश का नाम, जिसे श्री कृष्ण चन्द्र ने मारा था । उस की प्रेरणा से यह काक का रूप धारण कर के श्री कृष्ण को मारने के लिये गोकुल में गया था, वहाँ इने श्री कृष्ण ने मारा ।

कागद दे० ( पु० ) कागज़, पत्र ।

काच तद्० ( पु० ) खच्छमृत्तिका विशेष, मणि, स्फटिक, शीशा, आईना ।—मणि ( पु० ) स्फटिक मणि ।

काचक तद्० ( पु० ) पाषाण विशेष, स्फटिक, काँच, वाँस ।

काचा दे० ( पु० ) कच्चा, अउनी, अपूरा ।

काछ तद्० ( पु० ) निकट, समीप, नदी का किनारा, कछ, कच्छ, लाँग, धोती का अन्तिम छोर ।

काछन दे० ( स्त्री० ) काँची की स्त्री, मालिन ।

काछना दे० ( स्त्री० ) काछ मारना, बटोरना ।

काछनी दे० ( स्त्री० ) काछ विशेष, लँगोटे, कोपीन, जाँघिया ।

काछिये दे० काछना चाहिये, पहनना उचित है, पहने, परिधान करो, काछिये, पहनिये । यथा:—  
“नस काछिये तस नाचिये नाचा” ( रामायण ) ।

काछी दे० ( पु० ) जाति विशेष, मुराई, कुंजड़ा, मालो ।

काछे दे० ( स्त्री० ) पहने हुए, बनाये हुए, बनाने से, काछने से ।

काज तद्० ( पु० ) काज कर्म, काम धन्धा, क्रिया, कारज ।—कर्म क्रियाकर्म, क्रिया और दूबों तथापार ।

काजल तद्० ( पु० ) कज्जल, अज्जन, सुरमा, आँस में लगाने की एन चीज़ ।

काजलि तद्० ( पु० ) द्रव्य विशेष, मत्स्य विशेष ।

काजी दे० ( पु० ) कार्यकर्ता, काम करने वाला, विचारक, विचारकर्ता, उद्योगी, परिश्रमी, सुसंमान जाति के विचारक या, व्यवस्थापक ।

काजे दे० लिये, निमित्त, हेतु ।

काञ्चन तत्० ( पु० ) सुवर्ण, स्वर्ण, हेम, सोना, पद्म, केशर, स्वनामधेयता पुष्प, वृक्षविशेष ।  
—क ( पु० ) धातुविशेष, हरिताल ।—कदली ( पु० ) सुवर्णकदली, चम्पा, केला ।—गिरि ( पु० ) सुमेरु पर्वत, सुवर्ण पर्वत ।—द्यु ( पु० ) सुवर्ण पर्वत, सुमेरु ।—पुष्पिका ( स्त्री० ) सुवर्ण ओषधिविशेष ।—मय ( पु० ) [ काञ्चन + मय ] कनकमय, सुवर्ण का ।—चल ( पु० ) सुवर्ण का पर्वत सुमेरु पर्वत ।

काञ्चनार तत्० ( पु० ) कचनार का वृक्ष ।

काञ्चनी तत्त्वं ( स्त्री० ) हरिद्रा, हरदी ।  
 काञ्चि तत्त्वं ( पु० ) मेखला, चन्द्रहार, करधनो,  
 मध्य भाग ।  
 काञ्ची तत्त्वं ( स्त्री० ) [ कञ्चि + ई ] मेखला,  
 खियों के कटि देश में पहनने का गहना । सप्त  
 पुरियों में से एक पुरी, तीर्थ विशेष, इसके दो  
 भाग हैं, एक का नाम विष्णुकाञ्ची और दूसरे  
 का नाम शिवकाञ्ची है ।—पद ( पु० ) जघन,  
 नितम्ब ।  
 काञ्चिक तत्त्वं ( पु० ) बाघी भात से निकाला  
 हुआ जल, माण्ड, पसाया जल ।  
 काट दे० ( पु० ) चीरा, काटा हुआ, मैल, मलिनता,  
 खरब खरब करण ।  
 काटकूट दे० ( स्त्री० ) डाँट बूट, कतर व्योत, छेदन  
 भेदन ।—करना कतरना, काटना, काट डालना ।  
 काटखाना दे० काटना, दर्शन करना, आक्रमण  
 करना ।  
 काटना दे० ( क्रि० ) छेदन करना, तोड़ना, टुकड़े  
 टुकड़े करना, कतरना, चीरना, कारखाना,  
 खा जाना, खालना, फुलवाड़ी या आरे आदि से  
 काटना ।  
 काटमण्डु दे० ( पु० ) नेपाल के एक नगर का नाम,  
 यह नेपाल देश की राजधानी है । यहीं नेपाल के  
 राजा रहते हैं ।  
 काटि दे० ( पु० ) कमर, कटि, मध्यभाग, रामा-  
 यण में कटि का काटि प्रयोग किया गया है ।  
 काट्ट दे० ( पु० ) काटने वाला, छेदक, लकड़ीहार  
 या लकड़हार ।  
 काठ तद्द० ( पु० ) काष्ठ, लकड़ी, दारु, काठी ।  
 —कयाड़ ( या० ) काष्ठ की यस्तु ।—का उल्लू  
 ( या० ) मूर्ख, नासमझ, चनाड़ी ।—चवाना  
 ( या० ) दुःख से निर्वाह करना, काल काटना, समय  
 बिताना ।—में पाँच देना स्वर्घ दुःख भोगने के  
 लिये उच्यत होना ।—पुतली ( या० ) लकड़ी  
 की मूर्ति के समान दूसरों की इच्छा से चपना,  
 नितान्त अतभिन्न, मूर्ख ।

काठ कीड़ा दे० ( स्त्री० ) खटमल उड़ीस, खाट का  
 कीरा ।  
 काठड़ा दे० ( पु० ) काठ का बना हुआ बर्तन ।  
 काठिन्य तत्त्वं ( पु० ) कठिनता, दृढ़ता, निष्ठुरता,  
 कठोरपन ।  
 काठियावाड़ ( पु० ) देश विशेष, गुजरात का एक  
 भाग विशेष ।  
 काठी दे० ( स्त्री० ) गोल, शरीर का गठन, काट, डौल  
 घोड़े पर रखने की चीज़, काठियावाड़ में रहने वाले  
 क्षत्रियों की एक जाति ।  
 काड़ा दे० ( पु० ) लुवा, भैंसा ।  
 काढ़न ( क्रि० ) निरालता है, निकालते ही ।  
 काढ़ना दे० ( क्रि० ) निकालना, उधेड़ना, बाहर  
 करना, निर्माण करना, बेल बूटे निकालना, घोड़े  
 को चाल सिखाना ।  
 काढ़ा दे० ( पु० ) काय, कयाय, कय ।  
 काण तत्त्वं ( पु० ) एक आँसू वाला, एकावा ।  
 ( स्त्री ) काणी ।  
 काण्ड तत्त्वं ( पु० ) खरब, प्रकरण, खेल, वाण, शर  
 व्यापार, दण्ड, वर्ग, परिच्छेद अक्षर, प्रस्ताव ।  
 —कार ( पु० ) वाण बनाने वाला ।—ग्रह ( पु० )  
 प्रकरण ज्ञान,—पट्ट जवनिका, पर्दा,—पृष्ठ शस्त्र  
 से जोने वाला, व्याध ।—रुहा ( स्त्री० ) कटुकी  
 वृक्ष ।  
 काण्डर्पि तत्त्वं ( पु० ) वेद को पकशासत्र का अध्यापक,  
 मुनि विशेष ।  
 कातना तद्द० ( क्रि० ) सूत कातना, रुई से सूत  
 बनाना, चरले में सूत बनाना ।  
 कातर तत्त्वं ( पु० ) भयभीत, व्याकुल, डरपोक, किमी  
 वस्तु में आसक्ति के कारण घबड़ाहट, अधीर ।  
 —ता ( स्त्री० ) व्याकुलता, उद्वेग ।  
 कातिक तद्द० ( पु० ) चाठवाँ महीना, देवताओं के  
 उठने का मास ।  
 कातिकी तद्द० ( स्त्री० ) कातिक की यस्तु, कार्तिक  
 की पूर्णिमा ।  
 काती दे० ( स्त्री० ) छोटी तलवार । ( पु० ) सूत  
 कातनेवाला ।

कात्यायन तत्० ( पु० ) विद्यात धर्मशास्त्रकार, विश्वामित्र कुल में इनका जन्म हुआ था, कात्यायन श्रौतसूत्र और कात्यायन गृह्यसूत्र नामक दो ग्रन्थ इनके बनाये सर्वमान्य हैं । ( २ ) प्रसिद्ध स्मृति-कर्ता, यह महर्षि गोभिल के पुत्र थे, “कर्मप्रदीप” नामक इनका बनाया एक स्मृति ग्रन्थ है । ( ३ ) प्रसिद्ध वैयाकरण, पाणिनि के सूत्रों पर इन्होंने धार्मिक बनाया है । इनके पिता का नाम सोमदत्त था, वे यत्सवंशियों की राजधानी कोशाम्बरी में रहते थे । इनका दूसरा नाम वररुचि था ।

कात्यायनी ( स्त्री० ) देवीविशेष, स्मृतिविशेष, कात्यायन षंशी भगवतो की एक मूर्ति, महर्षि कात्यायन ने सद्य में पहले इसकी पूजा की थी इसी कारण इसको कात्यायनी कहते हैं । इसकी कथा मार्कण्डेयपुराण में विस्तार से लिखी है ।

कादम्ब तत्० ( पु० ) कलहस, राजहस, सुन्दर हस । कादम्बरी तत्० ( स्त्री० ) मदिरा, मद्य, सुरा, सरस्वती, ग्रन्थविशेष, वाणभट्ट के द्वारा निर्मित कादम्बरी नामक ग्रन्थ की नायिका ।

कादम्बिनी तत्० ( स्त्री० ) मेघमाला, मेघश्रेणि, मेघसमूह ।

कादर दे० ( पु० ) कातर, डरपोक, भीरु ।—ता ( स्त्री० ) भय, डर, व्याकुलता ।

कादराई दे० ( स्त्री० ) भय, व्याकुलता, डर ।

कादा दे० ( पु० ) कादो, कीचड़, पड़ ।

कान ( पु० ) कर्ण, श्रवण, श्रवणेन्द्रिय ।—बैठना या—अमेठना कान खींचना, तर्जने करना, भर्त्सन करना ।—भरना ( या० ) विरोध डालना, किसी के विरुद्ध झड़काना ।—पर जूँ न चलना, असावधानता, प्रमाद ।—पर रखना ( या० ) स्मरण रखना, उत्सुक रहना ।—पर हाथ धरना, अस्वीकार करना, नहीं मानना ।—पकड़ना ( या ) अपने धूल समझ लेना, अच्छे उपदेश मानना ।

—फूटना बहना होना, किसी का मन सुनना । कानों को दुःख पहुंचना ।—फोड़ना ( या० ) बड़ा शब्द, भयानक ध्वनि ।—फूंकना अपने अधीन करना, यश में करना ।—भुंकाना ( या० ) सुनने की

अभिलाषा ।—दया कर चला जाना ( या० ) भाग जाना, किसी बात का निपटारा किये बिना, या उत्तर सुने बिना चले जाना ।—धरना ( या० ) सावधानी से सुनना ।—दे सुनना ( या० ) उत्सुकता से सुनना ।—देना सुनने की ओर सावधानी, —काटना ( या० ) पराजित करना, छकाना ।—खड़े होना ( या० ) सावधान होना, धन्य हो जाना ।—खोल देना ( या० ) सावधान करना, सजग करना ।—लगाना ( या० ) विश्वासो, उत्सुक होना ।—मलना ( या० ) ताड़ना करना, धरा देना ।—में उंगली देकर रहना ( या० ) उदासीन होना ।—में तेल डालना नहीं सुनना, उपेक्षा करना ।—में तेल डालकर सो रहना ( या० ) बिलकुल उदासीनता दिखाना, असावधानी ।—न हिलाना ( या० ) कुछ उत्तर न देना, उपेक्षा की दृष्टि से देखना ।—फूँसी मन्त्रणा करना ।—कानी करना ( या० ) चर्चा करना, अक्षय उड़ाना ।—कौकान कहना ( या० ) अति गुण्य से कहना ।

कान दे० ( स्त्री० ) लज, सङ्कोच ।

कानन तत्० ( पु० ) वन, अरण्य, कान का बहु वचन, दो कान, ब्रह्मा का मुँह ।

कानि दे० ( पु० ) लज्जा, मान, सङ्कोच ।

कानी दे० ( स्त्री० ) सङ्कोच, मर्यादा, एक आंगव यान्त्री ।

कानीन तत्० ( पु० ) कर्ण और व्यास, अविवाहित स्त्री से उत्पन्न पुत्र, कन्यका जान, अतृप्ता पुत्र अविवाहिता गर्भज ।

कान्त तत्० ( पु० ) [ कम् + क्त ] सुदुर्लभ, लौह विशेष, श्रीकृष्णचन्द्र, पति, स्वामी, शिव विशेष, प्रिय ।—ता ( स्त्री० ) मनोहर, प्रिय ।—लौह ( पु० ) अयस्कान्त, गुह्य लौह, कान्ति धार लौह । ( स्त्री० ) ।

कान्ता नारी, सर्वाङ्ग सुन्दरी स्त्री ।

कान्तार तत्० ( पु० ) महावन, कुपय, दुर्गम पथ ।

कान्ताह्न तत्० ( स्त्री० ) श्लोषधिविशेष प्रियङ्गु ।

कान्ति तत्० ( स्त्री० ) शोभा, दीप्ति, चन्द्रमा को एक कला ।—दायक ( पु० ) शोभा दायक, दीप्ति कारक ।—पापाण ( पु० ) सुखक पत्थर ।

फान्दा तत्० ( पु० ) मूल विशेष, जल का कन्द, कल कंदरा ।

कान्यकुब्ज तत्० ( पु० ) [ कन्या + कुब्ज ] देश और ब्राह्मण विशेष, इस का नाम और प्रचलित अपभ्रंश कन्नोज है, यह नगर कुछ दिनों तक भारत की राजधानी रह चुका है ।

कान्ह } दे० ( पु० ) भगवाद् श्री कृष्णचन्द्र जी  
कान्हेर } दे० ( पु० ) का एक नाम ।

कान्हड़ा दे० ( पु० ) एक रागिनी का नाम ।

कापट्य तत्० ( पु० ) कपटता, शठता, धूर्तता, झल, प्रतारणा

कापथ तत्० ( पु० ) कुवथ, कुत्सित मार्ग, दुर्गम रास्ता ।

कापालिक तत्० ( पु० ) वर्षसङ्कर जातिविशेष, काममार्गी, अघोर सम्प्रदाय के मनुष्य ।

कापिल तत्० ( पु० ) साहज्य शास्त्र, सांख्यशास्त्र वेत्ता ।

कापुरुष तत्० ( पु० ) कुत्सित पुरुष, निन्दित पुरुष, अकर्मण्य ।—त्व ( पु० ) अधमत्व, नीचता ।

काम तत्० ( पु० ) [ क + क्श् ] मदन, कन्दर्प, इच्छा, वासना, अभिलाष, ब्रह्मा के हृदय से उत्पन्न, बलदेव, रमणेच्छा, कार्य, काज ।—आना ( वा० ) काम में आना, व्यवहार में आना, रण में हत होना ।—पूरा करना ( वा० ) समाप्त करना, समाप्ति ।—चलाना किसी प्रकार काम निकालना ।—में लाना ( वा० ) उपयोग करना ।—निकालना ( वा० ) इच्छा पूर्ण करना ।—काज कार वाद, काम धन्दा ।—कला ( स्त्री० ) कामदेव पत्नी, चन्द्रमा की सोलह कला, कामशास्त्र ।

—कामी ( पु० ) कामासक्त, सम्भोगी ।—कार ( पु० ) कामेच्छा, सम्भोगी ।—कैलि ( पु० ) सुरत, रमणक्रिया ।—चारी ( पु० ) कामुक, स्वतन्त्र, उच्छृङ्खल ।—द् ( पु० ) कामदाता,

मनोरथपूरक ।—द् गाई ( स्त्री० ) कामधेनु ।—दा ( स्त्री० ) कामधेनु, भगवती ।—दुधा ( स्त्री० ) कामधेनु, अभिलाषा पूर्ण करने वाली गौ ।—देव ( पु० ) मदन, कन्दर्प ।—धेनु ( स्त्री० ) देवताओं की गौ ।—रूप ( पु० ) इच्छानुसार रूपधारण करने वाला ।—तरु तत्० ( पु० ) कल्पवृक्ष, देववृक्ष, स्वेच्छानुसार चलने वाला, अप्रतिहतमनोरथ ।

कामन्दक तत्० ( पु० ) भारतीय एक नैतिक विद्वान् का नाम, इनके धनाये ग्रन्थ का नाम कामन्दकीयनीति है, वे चाणक्य के पीछे उत्पन्न हुए थे ।

कामना तत्० ( स्त्री० ) इच्छा, वासना, वाञ्छा ।

कामपत्नी तत्० ( स्त्री० ) रति, कामदेव की स्त्री ।

कामपाल तत्० ( पु० ) बलदेव, बलराम, श्री कृष्ण का बड़ा भाई ।

कामपीडित तत्० ( पु० ) कामासक्त, काम से दुःखी ।

कामभक्ष तत्० ( पु० ) इच्छानुसार भोजन करने वाला, भव्याभक्ष विचार रहित ।

कामरी दे० ( स्त्री० ) कम्बल, सोई ।

“ज्यों ज्यों भीजे कामरी त्यों त्यों भारी होय”

कामरूपी तत्० ( पु० ) विद्याधर, बहुविधिया

कामला तत्० ( स्त्री० ) पारु रोग ।

कामलील तत्० ( पु० ) चञ्चल, चलचित्त ।

कामशर तत्० ( पु० ) कन्दर्प बाण ।

कामाश्या तत्० ( स्त्री० ) देवीविशेष, इन देवी का स्थान विष्णुकाण्ड-वासाम में है ।

कामातुर तत्० ( पु० ) कामार्त, काम पीडित, कामुक ।

कामात्मा तत्० ( पु० ) कामुक, सम्पद, व्यवभिचारी ।

कामाधिकार तत्० ( पु० ) प्रेम स्त्री उत्पत्ति, स्वेच्छाधीन ।

कामाधिष्ठित तत्० ( पु० ) कामाभिष्टित, काम-व्यग ।

कामान्ध तत्० ( गु० ) [ काम + अन्ध ] काम के यथोद्भूत, काम के द्वारा हिताहित ज्ञानशून्य, विवेक भ्रष्ट ।

कामायुध तत्० ( पु० ) [ काम + आयुध ] काम-देव के बाण, कामदेव का आयुध ।

कामारण्य तत्० ( पु० ) [ काम + अरण्य ] मनो-हर धन, उत्तम धनोच्चा ।

कामारि तत्० ( पु० ) [ काम + अरि ] काम के शत्रु, शिव, महादेव ।

कामार्त तत्० ( गु० ) [ काम + अर्त ] काम पीड़ित, कामातुर, काम के यथोद्भूत ।

कामार्थी दे० ( पु० ) कामरिया, गङ्गाजलिमा ।

कामासक्त तत्० ( गु० ) [ काम + आसक्त ] कामा-तुर, काम पीड़ित ।

कामिनी तत्० ( स्त्री० ) [ कामिन् + ई ] अति-शय कामपुक्ता स्त्री, भीष स्त्री, स्त्री, सर्व साधारण स्त्री, युवती ।

कामी तत्० ( पु० ) [ काम + णिन् ] काम करने वाला, कामातुर, अभिलाषी, चक्रवाक पत्नी, सोने का टुकड़ा ।

कामुक तत्० ( पु० ) [ कम् + उक्त् ] कामो, कामातुर, लम्पट, कामासक्त ।

कामोदा तद्० ( स्त्री० ) रागिणी विशेष ।

काम्योज तत्० ( पु० ) देश विशेष, मलेच्छ जाति विशेष, काम्योज देश के घोड़े, वङ्ग के दक्षिण पूर्व का देश ।

काम्य तत्० ( गु० ) [ कम् + यण् ] काम्योय, सुन्दर, कामनायुक्त, अभिलाषा का विषय ।  
—कर्म ( पु० ) दृष्टित फलसिद्धि के लिये धर्म कार्य ।—त्व ( पु० ) आकांक्षा, अभिलाष ।  
—दान ( पु० ) कामना सहित दान, नैमित्तिक दान, किसी पर्व विशेष में दान ।

काय तत्० ( पु० ) मनुष्य तीर्थ, पाजापत्य तीर्थ, कनिष्ठा और अनामिका अंगुली के नीचे का भाग, भ्रूति, देह, शरीर, तनु, वपु तन, डील ।—स्थित ( गु० ) शरीरस्थ, मस्मा, ईला ।

कायक तद्० ( गु० ) शरीर संबन्धी, देहो, शरीर, जीव ।

कायक्लेश तत्० ( पु० ) [ काय + क्लेश ] शरीर संबन्धी दुःख, देह का कष्ट ।

कायथ तद्० देखो कायस्थ ।

कायफल दे० ( पु० ) एक श्रौचि का नाम, यह सुवारी जैसे रूपरङ्ग का होता है ।

कायमनोवाक्य तत्० ( गु० ) [ काय + मनस् + वच् + घ्यण् ] शरीर मन और वचन ।

कायर दे० ( गु० ) कातर, हर्षोक्ता, घामती, कादर ।

कायस्थ तत्० ( पु० ) जाति विशेष, कायथ जाति, कायस्थ नाम से प्रसिद्ध जाति ।

कायस्था तत्० ( स्त्री० ) हरोतको धात्रीवृच, थांवला, आमलको, छोटी बड़ी इलायचो ।

काया दे० ( पु० ) शरीर, देह, तनु, काय ।—कल्प ( पु० ) शरीर को बदलना, श्रौचि आदि के द्वारा शरीर का संशोधन करना ।

कायिक तत्० ( गु० ) शारीरक, दैहिक, शरीर संबन्धी ।

कार ( पु० ) [ कृ + कर्त् ] ब्यापार करने वाला, कर्ता, यत्न, काज, ब्यापार, उपाय, काम काज ।

कारक तत्० ( पु० ) [ कृ + कर्त् ] कर्ता, हेतु, करने वाला, ब्याकरणों के मत से क्रिया से संबन्ध रखने वाले विभक्ति के अर्थ, क्रिया, निमित्त ।

कारचोवी दे० ( गु० ) वस्त्र विशेष, चांदी सोने के ताँ से द्वारा जिस वस्त्र पर बेल बूटे बनाये हों ।

कारखाना तद्० दे० ( पु० ) कार्यालय, कार्यालय ।

कारज दे० ( पु० ) कार्य, कर्ता, काम, काम धन्धा, कारवार ।

कारण तत्० ( पु० ) [ कृ + णिच् + ऋणच् ] जिसके बिना जिस कार्य का सिद्धि नहीं वह उस कार्य का कारण है । हेतु, योज, निमित्त, प्रयोजन, निदान, वास्ते, लिये ।—कारण ( पु० ) कारण का कारण, परमेश्वर, संसार सृष्टि करने वाला ।

—गुण ( पु० ) हेतु के गुण, कारण के धर्म ।

—ता ( स्त्री० ) हेतुता निमित्तता ।—यादी

( ५० ) अर्धास करने वाला, निवेदक, अभियोग उपस्थित करने वाला, कृपादी।—वारि ( ५० ) सृष्टि उत्पन्न करने वाला जल, सृष्टि के प्रथम का जल—विशिष्ट ( ५० ) बुद्धिसिद्ध, उचित ।  
—माता ( स्त्री० ) कारणसमूह, घटनापर-स्परः।—शरीर ( ५० ) सत्वप्रधान, अज्ञान, आनन्दमय कोष, सुषुप्ति शरीर ।—भूत ( ५० ) मूल कारण, हेतुभूत ।

कारण्य तत्त्वं ( ५० ) पक्षि विशेष, षंड विशेष ।

कारचल्ली तत्त्वं ( स्त्री० ) कटुफल, करेला, तट्कार्ती विशेष ।

कारवार दे० ( ५० ) व्यवसाय, वाणिज्य, व्यापार कर्म, काम ।

कारवी तत्त्वं ( स्त्री० ) [ करव + ई ] मयूर शिखा, रुद्रजटा, अजमोद, कलोजी, श्लोषध विशेष ।

कारा तत्त्वं ( स्त्री० ) [ कार + आ ] बन्धनालय, बन्दीखाना, बन्धन, पीड़ा, स्त्राधीनता नाश ।

—गार ( ५० ) [ कारा + आगार ] जेलखाना, बन्धनगृह, अशरीरधन स्थान।—गृह ( ५० ) बन्धन गृह, कारागार ।

कारिख दे० ( ५० ) करिखा, फालख, स्याही, श्यामता ।

कारो तत्त्वं ( ५० ) मृच्चविशेष, कार्यकर्ता, करने वाला, ( स्त्री० ) काली, श्यामा, कानेरंग की, यमार्थ, भरपूर, ठोक ठोक, सुच्छा, अचेत होना, वेसुध होना ।

कारीगर दे० ( ५० ) शिल्पी, शिल्पकार, काम करने वाला ।

कारु, कारुकर तत्त्वं ( ५० ) विश्वकर्मा, शिल्पी, शिल्पकार, निर्माता, सुवर्णकार, यकई ।

कारुणिक तत्त्वं ( ५० ) दयालु, कृपालु, कर्णा युक्त, कृपायात् ।

कारुण्य तत्त्वं ( ५० ) दया, कृपा ।

कार्कश्य तत्त्वं ( ५० ) कठोरता, कठिनता, कर्म-यत्ता, परयत्ता, नीरयत्ता, क्रूरता ।

कार्तवीर्य तत्त्वं ( ५० ) कृतवीर्य राज का पुत्र, सहस्रबाहु अर्जुन, ये नर्मदा तीरस्थ हैहयराज्य

के अधिपति थे, कार्तवीर्य का दूसरा नाम हैहय भी था, इन्होंने नामानुसार इनके राज्य का भी नाम पड़ा है । इनकी राजधानी का नाम माहिष्मती नगरी है, त्रिलोक विजयीरावण को भी इनके पराक्रम के सामने नीचा देखना पड़ा था, रावण इनके यहां बन्दी हुआ था । परशुराम ने कार्तवीर्य को मारा था ।

कार्तस्वर तत्त्वं ( ५० ) सुवर्ण, हेम, सोना, पुष्प विशेष ।

कार्तान्तिक तत्त्वं ( ५० ) ज्योतिर्विला, ज्योतिः शास्त्रज्ञ, दैवज्ञ ।

कार्तिक तत्त्वं ( ५० ) यरद चतु का दूसरा महोत्सव, आतिक मास, इस मास की पूर्णिमा को चन्द्रमा कृतिका नक्षत्र के ममीय रहता है ।

कार्तिकेय तत्त्वं ( ५० ) महादेव का ज्येष्ठ पुत्र, चन्द्रमा की स्त्री कृतिका के दूध से यह पाला गया था, इसी कारण देवताओं ने इसका कार्तिकेय नाम रखा । यह देवताओं का सेनापति था, तारकासुर के बंध के लिये यह उत्पन्न किया गया था । इसने देवसेना का परिचालन किया और तारकासुर को मारा । तारकासुर के मारने के बाद इसका नाम तारकारि पड़ा था, इसकी स्त्री का नाम देवसेना था, जो ब्रह्मा की पुत्री थी । देवसेना का दूसरा नाम पद्मिदेवी है ।  
( ब्रह्मवैवर्त )

कार्पण्य तत्त्वं ( ५० ) कृपणता, दीनता, अत्यन्त धनलोभ, कम उत्सव करने, अशुभकाम, इस शब्द के प्रयोग के स्थान में । “कार्पण्यता” का प्रयोग करना अशुचित और अशुद्ध है ।

कार्पाण्य तत्त्वं ( ५० ) कृपा का पेड़, कपास, रुई, सूती कपड़े ।

कार्मण्य तत्त्वं ( ५० ) कर्मदण्ड, कर्मठ, मूलकर्म, श्लेष मन्त्र आदि के द्वारा मोहन वशीकरण उच्चाटन आदि कर्म, शत्रुपराजय आदि के लिये मन्त्र तन्त्र की योजना ।

कार्मिक तत्त्वं ( ५० ) विचित्र वस्त्र, जड़ाऊ वस्त्र, कारचोरी के कपड़े ।



कार्मुक तत्त्वं ( पु० ) धनुष, चाप, कर्म सम्पादन करने वाला ।—भृत् ( पु० ) धनुर्हारी, धानुष्क, पीर, घोड़ा ।

कार्य तत्त्वं ( पु० ) [ कृ + च्यप् ] कर्म काम, काज, हेतु, प्रयोजन ।—कार ( पु० ) कर्मचारी, उपकारक, सहायक ।—कारक ( पु० ) कार्य कर्ता, कर्म सम्पादन करने वाला ।—कलप ( पु० ) कार्य सप्ताह, अनेक कार्य, कार्याधिका ।—कुशल ( पु० ) कर्मठ, कार्यदक्ष, चतुरता से काम करने वाला ।—क्षम ( पु० ) कार्य करने के योग्य, कृतो, क्षमतावान् ।—तः ( अ० ) यथार्थ रूप से, निश्चित रूप से, क्रिया के रूप से ।—दक्ष ( पु० ) कर्म में निपुण, कर्मठ, कर्म-कुशल ।—निष्ठ ( पु० ) काम में लगावृत्ता, कार्यासक्त, काम काजी ।—पटु ( पु० ) कर्मदक्ष, कर्मकुशल ।—प्रद्वेष ( पु० ) आराध्य, अपसता ।—चाही ( स्त्री० ) कारखाने ।—विवरण ( पु० ) कार्यों का वर्णन, कार्यों के लिये विवृत्त करना ।—हन्ता ( पु० ) प्रतिबन्धक, बाधक, कार्य नाशक ।—अधिकारी ( पु० ) काम करने वाला, प्रतिनिधि, कर्मचारी ।—अधिष्ठाता ( पु० ) श्रेष्ठ, सेठ, कार्यासक्त, ठगपारवर्त ।—अधीश ( पु० ) कार्याध्यक्ष, स्वामी, प्रभु ।

कार्य तत्त्वं ( पु० ) जीणता, कुशला, दुर्बलता ।

कार्याक तत्त्वं ( पु० ) [ कृ + णक् ] कृषक, किमान, कर्षणकारी ।

कार्यापण तत्त्वं ( पु० ) मान विशेष ।

काल तत्त्वं ( पु० ) [ कल् + घञ् ] समय, चण, मुहूर्त, अयसर, ठेला, मृत्यु, मरण, शिव, अग्नि, यम, ऋतु, महँगी, दुष्काल, अकाल, सर्प, मृत्यु कारक जन्तु या द्रव्य, आगामा या व्यतीत दिन ।

—काटना ( वा० ) व्यर्थ समय नष्ट करना, निरर्थक बैठे रहना ।—गचौना ( वा० ) उचित समय पर काम न करना ।—विताना ( वा० )

काल काटना ।—कूट ( पु० ) हलाहल, विष ।

—क्षेप ( पु० ) समय विताना, दिन काटना ।

कालक तत्त्वं ( पु० ) कालिमा, कृष्णत्व सदा विशेष ।

कालकील तत्त्वं ( पु० ) घबडाहट, कोणाह, हडयही ।

कालकेय तत्त्वं ( पु० ) राक्षस विशेष, इस नाम का राक्षसों का एक सप्ताह, जो घृयानुर का साथ था ।

कालकम तत्त्वं ( पु० ) समयानुसार ।

कालख दे० ( पु० ) लहसन, तिल, मस्ता ।

कालज्ञ तत्त्वं ( पु० ) समय जानता, समयानुसार काम करने वाला ।

कालक्षर तत्त्वं ( पु० ) शिव का एक नाम, याम-मार्गियों का यज्ञ महन्त्य ।

कालधर्म तत्त्वं ( पु० ) समय के धर्म, मृत्यु, मरण, जन्म ।

कालनिर्यास तत्त्वं ( पु० ) सुगन्धि द्रवा विशेष ।

कालनिशा तत्त्वं ( स्त्री० ) ग्रन्थ की रात्रि, देशियों की रात्रि, मरण समय ।

कालनेमि तत्त्वं ( पु० ) दैत्य विशेष, कण्ठी मुनि यह दैत्य देवानुर संग्राम में कुबेर आदि को जीत कर अन्त में भगवान् के द्वारा मारा गया । (२) राक्षस विशेष, यह विष्णु के तेज से डर कर रावण के नाना सुमाली के साथ वाताल में भग गया था । (३) रावण का मामा, सञ्जीवनी ढूँढी जाने के समय हनुमान् को रोकने का प्रयास करने के लिये रावण ने इसीको भेजा था । यह कथा रामायण में है ।

कालपालक तत्त्वं ( पु० ) समय की अपेक्षा करने वाला, गूढ़ नीतिज्ञ ।

कालपाश तत्त्वं ( पु० ) यमवाय, मृत्युपाश, मरण रज्जु ।

कालपुरुष तत्त्वं ( पु० ) यमराज के अशुभ, ज्योतिष् शास्त्र, शुभाशुभ जानने के लिये कल्पित द्वादश राशियों का पुरुषाकार, यमराज, ये द्वादश राशियों का सूर्य के पुत्र हैं । इनका स्वरूप अत्यन्त भयङ्कर है । इन के ६ मुख, १६ हाथ, २४ आँखें, और ६ पैर हैं । इनका रङ्ग काला है और ये ताल रङ्ग के वस्त्र पहनते हैं ।

कालपर्णी तत्० ( स्त्री० ) श्रौषधिविशेष, काला निक्षोत ।

कालप्रभात तत्० ( पु० ) शरद् ऋतु । शरत्काल ।

कालघेला तत्० ( स्त्री० ) श्रौषधकाल, किसी काम करने के लिये निन्दित समय ।

कालभैरव तत्० ( पु० ) शिव के अंश में उत्पन्न, उनका अनुचर, ब्रह्मज्ञान-गून्य, ब्रह्मा का पाचवाँ मस्तक काटने के लिये इनकी उत्पत्ति हुई थी ।

कालमा दे० ( पु० ) संशय, सन्देह, दुविधा, खटका ।

कालमूल तत्० ( पु० ) लाल चित्रक, श्रौषध विशेष ।

कालमेषिका तत्० ( स्त्री० ) मज्जीठ, बाकुची, श्रौषधि विशेष ।

कालमेषी तत्० ( स्त्री० ) मज्जीठ, काला निक्षोत ।

कालयवन तत्० ( पु० ) प्रसिद्ध यली यवनराजा, यह महर्षि गर्ग के श्रोत्र से गोपाली नामक किसी अक्षरा के गर्भ से उत्पन्न हुआ था । महर्षि गर्ग ने पुत्र पाने के लिये लोहचूर्ण खाकर बारह वर्ष तक तपस्या की थी, उमो का कलस्वरूप कालयवन हुआ । घटनावश कालयवन को पुत्रहीन यवनराज ने पाला और अपने बाद उसे ही अपना उत्तराधिकारी भी बनाया । मगधराज जरसन्ध तथा उसके पत्नियों ने कालयवन को कृष्ण से लड़ने की भेजा था ।

कालरात्रि तत्० ( स्त्री० ) प्रलय काल को रात, युगान्त रात्रि, भगवती का नाम, मृत्यु समय, अर्धेरीरात ।

कालशाक तत्० ( पु० ) श्रौषधि विशेष, सरकौका ।

कालसार तत्० ( पु० ) नेंदुआ का पेड़ ।

कालसूत्र तत्० ( पु० ) मरक विशेष ।

कालस्कन्ध तत्० ( पु० ) तमाल वृक्ष, तिन्युक वृक्ष ।

कालस्वरूप तत्० ( पु० ) मृत्यु का आकार, मृत्यु के ममान भयङ्कर, घातुक, हिंसक ।

काला दे० ( पु० ) कामारङ्ग, कृष्णवर्ण, कलौटा, अयोजेन्द्रपरहित, अधिर,—गुरु ( पु० ) [ काल + अगुरु ] सुगन्धि-द्रव्य-विशेष, कृष्णवर्ण सुगन्धि-काष्ठ ।—श्री ( पु० ) प्रलय काल की आग, कामानल, सृष्टि ।

संहारकारी अग्नि ।—चौर ( या ) अपरिचित मनुष्य, अनजान, बेजान ।—त्यथ ( पु० ) समयान्त, समय का दुर्हयोग ।—न्तक ( पु० ) यमराज, धर्म-राज—न्तर ( पु० ) समयान्तर, दूसरे समय, ।—मुँह करना ( या ) अप्रमोदित करना, अप्रतिष्ठा करना, डांटना, लज्जित होना या करना ।

कालाप तत्० ( पु० ) कलाप उवाकण जानने वाला ।

कालापानी दे० ( स्त्री० ) नीका गाहना, इन आदि के द्वारा नीका के नीचे के छिद्र रोकना ( पु० ) देश विशेष, जहाँ का जल अत्यन्त खराब होता है । एकद्वीप, जिसे अरुमन टापू कहते हैं । इनके चारों ओर का जल अत्यन्त खारा है और काला है, अतएव इसे कालापानी कहते हैं । जिन्हें देग निकाले का दण्ड दिया जाता है, वे वहाँ भेजे जाते हैं ।

कालायस तत्० ( पु० ) [ काल + आयस ] लोह विशेष, ईस्पात लोहा ।

कालिक तत्० ( पु० ) कालमन्वन्तो, सामयिक, गयेदिन का, काला, कलङ्क, खामा ।

कालिका तत्० ( स्त्री० ) कालोदेवी, महाकाली देवी ।

कालिक्या तत्० ( स्त्री० ) वृक्षविशेष, किन्दवाली नामक एक वृक्ष ।

कालिङ्ग तत्० ( पु० ) फलविशेष, तपूङ्ग ।

कालिदास तत्० ( पु० ) खनाम प्रसिद्ध संस्कृत के महाकवि, विक्रमादित्य की ममा के नथ रत्नों में का प्रधान रत्न । इनका समय १८८ ई० में पूर्व का बताया जाता है । सीलोन का राजा और महाकवि कुमारदास इनका मित्र ही गया था, कालिदास विक्रमादित्य की ममा को छोड़ कर, कुमारदास के पास सीलोन गये थे, और वहाँ इनकी समाधि हुई । ( २ ) दूसरे कालिदास को याज्ञवल्क्य लोग महाकवि भवभूति के समय का मानते हैं । इनका समय ६४८ ई० निश्चित हुआ है । ( ३ ) तीसरे कालिदास प्रसिद्ध विद्वात् और ग्रन्थकार राजा भोज के समय में थे । इनके विषय में

बहुत सी क्रियदन्तियां भी प्रचलित हैं। राजा भोज ११वीं शताब्दी में हुए थे, अतएव उनके सम-कावीन कालिदास का भी यही समय बताया जाता है। इनके अतिरिक्त और भी कई कालिदास हुए हैं।

कालिन्दी तत्० ( स्त्री० ) कलिन्द पर्यंत में उत्पन्न, यमुना, यह सूर्य की कन्या है। यमराज और शनिेश्वर ये दोनों इसके भाई हैं।—भेदन ( पु० ) यलराम।

कालिमा तत्० ( स्त्री० ) [ काल् + इमम् ] कृष्णता, मलिनता, मालिन्य, कण्डू, कालापन।

कालियङ्ग तत्० ( पु० ) माय चन्दन।

कालिया तत्० ( पु० ) सर्पराज, कालीनाग, गरुड़ के भय से समुद्र में रहना छोड़ ब्रज में यह रहने लगा था, यहा कृष्ण के द्वारा पराजित हुआ और उन्हीं के आह्वानुसार पुनः समुद्र में जाकर रहने लगा।

काली तत्० ( स्त्री० ) श्यामवर्ण, काले रङ्ग वाली, आद्या प्रकृति, शान्तनु राजा की पत्नी, कालिका-भगवती, पूर्व या परदिन।

कालीदह तत्० ( पु० ) ब्रज के एक सरोवर का नाम, जहां कालीनाग रहता था।

कालीन तत्० ( पु० ) सामयिक, समयगत, निर्दिष्ट समय का, चिरकालिक, बहुत पुराना ( दे० ) गणीचा।

कालेश्वर तत्० ( पु० ) महादेव, गिय, मृत्यु को जीत लेने वाला योगी।

कालपनिक तत्० ( पु० ) कल्पना से उत्पन्न, कल्पित, मिथ्या, आरोपित, कृत्रिम, अस्वाभाविक।—ता ( स्त्री० ) कृत्रिमता।

कावर दे० ( स्त्री० ) काँवर, यहाँगी।

कावादेना दे० ( स्त्री० ) घोड़े को चाल मिलावना, चक्कर देना।

कावेरी तत्० ( स्त्री० ) नदी विशेष।

काव्य तत्० ( पु० ) रसयुक्त वाक्य, जिनसे चित्त चमत्कृत हो, शुक्लाचार्य, पितृपुरुष, परिहास, कोयुक्त, कविता।—चौर ( पु० ) दूसरे की कविता का भाग या सब को ब्रह्म करने वाले।

—त्व ( पु० ) काठ्य का धर्म, काठ्य का विशेष लक्षण।

काश तत्० ( पु० ) तृणविशेष, ग्रांथी, पोली, श्वास का रोग। तद्० काश।—झी ( स्त्री० ) भारङ्गी औषधि।

काशि तत्० ( पु० ) सूर्य, रवि।

काशिका तत्० ( स्त्री० ) वाराणसीके काशी-धाम, व्याकरण के एक ग्रन्थ का नाम।—प्रि ( पु० ) विश्वनाथ।—राज ( पु० ) वाराणसी का राजा, दिशोदाम, धन्वन्तरि आदि।

काशी तत्० ( स्त्री० ) गियपुर, वाराणसी। ( पु० ) काशीरोगी, दीप्तिमान्, तेजोमय।—नाथ ( पु० ) गिय, विश्वेश्वर।—राज ( पु० ) काशी का राजा, दिश दास।

काशीश तत्० ( पु० ) उपधातु विशेष, कर्षण, हीराकच।

काश्मीरी तत्० ( स्त्री० ) वृक्षविशेष, गँभार का वृक्ष।

काश्मीर तत्० ( पु० ) खनाम स्यात देश, कश्मीर, पुष्करभूल।—ज ( पु० ) औषधविशेष, कूट, काश्मीर में उत्पन्न होने वाला पदार्थ, फुड्फुम।

काश्मीरा दे० ( पु० ) मोंटा जनी वस्त्र विशेष।

काश्यप तत्० ( पु० ) कणाद मुनि, मृगविशेष, गोत्र विशेष, कश्यप मुनि का वंश।

काश्यपमेरु तत्० ( पु० ) कश्यप मुनि का दास-स्थान, पर्यंत विशेष, जिस पर कश्यप मुनि रहते थे। प्रसिद्ध काश्मीर देश।

काश्यपी तत्० पृथिवी, धरणी, धरित्री।—फि ( पु० ) अरुण, सूर्य का सारथी।

काष्ठ तत्० ( पु० ) रन्धन, दाढ़, लकड़ी, काठ।—क्रेता ( पु० ) बड़ई।

काष्ठी तत्० ( स्त्री० ) फटकरी।

कासवी दे० ( पु० ) तांती, कपड़ा बनाने वाला तन्तुवाय।

कासार तत्० ( पु० ) सरोवर, तलाव, कमलपुष्प

कासी तद्० ( पु० ) काव, रोग विशेष, कासका रोगी ।

कासु दे० ( स्ये० ) किमको ।

काह दे० ( पु० ) किसको, किनको, क्या, कौन वस्तु, कौन काम ।

काहानी दे० ( स्त्री० ) आख्यायिका, कथा ।

काहण तद्० ( पु० ) कार्पापण, मोलह पण, मान विशेष ।

काहार दे० ( पु० ) भृत्य, कर्मकर, धीवर ।

काह दे० किसी, कोई, किमी को ।

काहे दे० क्यों, किस लिये, किम प्रयोजन से ।

कि दे० ( घ० ) दो वाक्यों का परस्पर सम्बन्ध सूचक अर्थय ।

किंवदन्ती तत्० ( स्त्री० ) उड़ती खबर, अमिद्धित समाचार, जनश्रुति ।

किंशुक तत्० ( पु० ) पलाय वृक्ष, टेण्डु, छिउल, ढौंर ।

किपह दे० किये से भी, करने से भी ।

किकियाना दे० चिह्नाना, रोना, पुकारना, दुहाई देना ।

किङ्कर तत्० ( पु० ) [ किं + कृ + ख ] दास, भृत्य, नौकर, नकर, सेवक, चाकर ।—त्य ( पु० ) दामत्य, अधीनता, ( स्त्री० ) किङ्करी ।

किङ्कियाी तत्० ( स्त्री० ) कटि का आभरण, खुद्र-घण्टिका, करधनी विशेष ।

किचकिच दे० ( पु० ) कब पय, सँ सँ, व्यर्थ कोला-हल, अठपत्त शब्द विशेष, एक पत्रो का शब्द । किचकिच करना ।

किचकिचाना दे० ( क्रि० ) क्रोध के बस होना, दौता पोसना, अधीर होना ।

किचड़ या किचर दे० ( पु० ) पद्म, कद्दम, कौंदा आँख का मल ।

किचड़ाना या किचराना दे० ( क्रि० ) आँख का रोग विशेष, आँख आना ।

किचपिच दे० ( पु० ) कौंदा, कीचड़, घोंक, स्पष्ट उत्तर न देना, अठपत्त अग्नि, बानर आदि का शब्द ।

किचपिचाना दे० ( क्रि० ) गडुवहाना, किमी प्रकार का कर्तव्य स्थिर नहीं करना । दोषाय-मान चित्त, मन की दुविधा ।

किचिरमिचिर दे० बानर आदि का शब्द, अठपत्त अग्नि ।

किचर दे० ( पु० ) कीचर, आँख का मल ।

किञ्च तत्० ( घ० ) घौर भी, हुमरा भी, आरम्भ, आकल्प, वाक्यान्तर शोतक ।

किञ्चित् तत्० ( घ० ) अल्प, ईपत्, कुछ थोड़ा ।

किञ्चिन्मात्र तत्० ( घ० ) कुछ, स्वल्प, अल्पस्व, बहुत थोड़ा, यत्किञ्चित् ।

किञ्जल्क तत्० ( पु० ) तिकाकन्द, फूल की पांखड़ी, फूल का रज, केशर, पटाग, कमल के बीच की जटा ।

किटि तत्० ( पु० ) शूकर, सूअर, बटाह ।

किट्ट तत्० ( पु० ) मल, विष्टा, घिट, गेला ।  
—वर्जित ( पु० ) मल रहित, सुद्ध, स्वच्छ ।

किङ्किड़ दे० ( पु० ) दाँतों की रगड़ से उत्पन्न शब्द ।

किङ्किड़ाना दे० ( क्रि० ) अतिशय क्रोध पुक्त होना, क्रोध से अन्धा होना, क्रोध के आयेन से दाँत फिङ्किड़ाना ।

किण्व तत्० ( पु० ) मदिरा पीज, जिससे मद्य में मःदकता उत्पन्न होती है ।

कित तद्० ( घ० ) कितनी, कहाँ, किधर, क, कुन ।

कितई दे० ( घ० ) सों, तरु, तलक, पर्यन्त ।

कितना दे० ( पु० ) परिमाण विषयक प्रत्ययार्थक ।  
—हो ( या० ) बहुत अधिक, प्रचुर परिमाण ।

कितव तत्० ( पु० ) धूर्त, शत्रुक, प्रतारक, जुधा खेलने वाला, जुझारी ।

कितैक दे० ( पु० ) बहुत अधिक, प्रचुर ।

कितै दे० ( घ० ) कहाँ, किधर ।

कित्ति तद्० ( स्त्री० ) यश, कीर्ति यथा :—  
“शखण्ड कित्ति लेय, दंयमान लेगिये”  
—रामचन्द्रिका ।

किदारा दे० ( स्त्री० ) रागिनी विशेष, यह गरमी के दिनों में आधोरात को गायी जाती है ।

किधर दे० ( अ० ) कहां, किस ओर ।  
 किन दे० ( अ० ) क्यों नहीं, किसने, कौन, किसको ।  
 किनचैया दे० ( गु० ) ग्राहक, खरीदने वाला,  
 ग्राहक, लेनेवाला ।  
 किनना दे० ( जि० ) मुख्य देकर लेना, क्रयण  
 करना, लेना ।  
 किनारा दे० ( पु० ) नदी का तीर, तट, समीप,  
 पार्श्व, धोती आदि का प्रान्त, कोर ।—खींचना  
 ( या० ) अलग होना, धोटा देना ।  
 किनारी दे० ( खी० ) गोटा, गोट, मगज़ी, कोर,  
 सख का प्रान्त, अन्त ।  
 किन्तु तत्० ( अ० ) तोश्वा, पहले कही हुई यात  
 के विरुद्ध यात, परन्तु, अथवा ।—वादी ( पु० )  
 दूसरों के कही हुई यात को काटने वाला, श्रौं  
 की न मानने वाले ।  
 किन्नर तत्० ( पु० ) [ किं + नर ] स्वनाम एयात-  
 देशयोनि विशेष, किम्पुरुष, जैन विशेष, गन्धर्व,  
 देशताम्रों के कवैया, किन्नर दो तरह के होते हैं,  
 एक का शरीर तो आदिमियों कासा, परन्तु मुंह  
 घोड़े के समान होता है, दूसरे का मुंह आदमी  
 का सा और धड़ घोड़े का सा होता है ।  
 किन्नरी तत्० ( खी० ) विद्याधरी, स्वर्गोप-वेरया,  
 अरुसा ।  
 किन्नरेश्वर तत्० ( पु० ) [ किन्नर + ईश्व + वरच् ]  
 कुवेर, यक्षपति, देवताओं के कोवाध्यक्ष ।  
 किम् तत्० ( सर्व० ) क्या, क्यों, कैसा, क्योंकर,  
 किस प्रकार ।  
 किमपि तत्० ( अ० ) कुछ भी, जो कुछ, यत्कि-  
 च्छित् ।  
 किमर्थ तत्० ( अ० ) किस लिये, क्यों, काहे को,  
 किस निमित्त से, किस प्रयोजन से ।  
 किमाञ्च दे० ( पु० ) खलुहां, बौंच वृत्त और फल  
 विशेष ।  
 किमि तद्० ( सर्व० ) क्योंकर, किस भांति, किम  
 उपाय से ।  
 किमुत्त तत्० ( अ० ) प्रश्न, वितर्क, विकल्प, अति-  
 गय, सम्भायना ।

किम्पच तत्० ( गु० ) किम्पचान, अदाता, कृपण ।  
 किम्पुरुष तत्० ( पु० ) किन्नर, विद्याधर, स्वर्गोप  
 गायक । ( गु० ) कुत्सित पुरुष, निन्दित मनुष्य,  
 दुराचारी ।  
 किम्वा तत्० ( अ० ) अथवा, या, विकल्प, यदि,  
 वा, समुच्चय ।  
 किम्भूत तत्० ( गु० ) [ किं + भू + क्त ] क्रिप  
 प्रकार, कैसा, कीदृश ।—किमाकार ( या० )  
 कुत्सित आकृति विशिष्ट, अनभिज्ञता ।  
 कियत् तत्० ( गु० ) कितना, कितना परिमाण ।  
 कियारी दे० ( खी० ) मेंड, लकोर, पेंचला, ब्यारी,  
 खेत, तग्नता, चमन ।  
 किये दे० करने से, करे ।  
 किरकिटी दे० ( खी० ) श्राँल में की कणिका,  
 छोटी लकड़ी ।  
 किरकिरा दे० ( गु० ) रंगोला, बलुआ ।  
 किरण तत्० ( खी० ) दीप्ति, रश्मि, मयूख, सूर्य का  
 तेज, प्रकाशमात् पदार्थों का तेज ।—माली ( पु० )  
 सूर्य, चन्द्रमा ।—हस्त ( पु० ) चन्द्रमा सूर्य ।  
 किरवान तद् ( पु० ) कृपाण, तलवार, खड्ग ।  
 किरात तत्० ( पु० ) म्लेच्छ जाति विशेष, मील,  
 निपाट, देश विशेष, एक प्रकार की जङ्गली  
 जाति । चिरायता, श्रोगधि विशेष ।  
 किरातक तत्० ( पु० ) चिरायता, श्रोगधि विशेष ।  
 किराना दे० यस्तुविशेष, मसाला आदि ।  
 किरिच दे० ( पु० ) टुकड़ा, खपट, एक प्रकार का  
 शस्त्र विशेष ।  
 किरिया दे० ( खी० ) शपथ, सौंह, क्रिया, सौगन्द ।  
 किरिट तत्० ( पु० ) शिरोवृषण विशेष, मुकुट,  
 राजाओं की पगड़ी या टोपी ।  
 किरिटी तत्० ( पु० ) अर्जुन का एकनाम, श्रोगधि  
 विशेष ।  
 किरौ दे० ( पु० ) किड़हा दौंत, दूटा दौंत ।  
 किर्च दे० ( खी० ) कांस, किरिच, खड्ग, लयाच,  
 अस्त्र विशेष, छोटी तलवार के आकार का एक  
 शस्त्र ।

किर्मीर तत्० ( पु० ) राक्षसविशेष, एक नामक राक्षस का भाई, द्यूत में पराजित होकर जब पाषण्ड वन में गये, तब वहाँ इमी राक्षस ने उनका रास्ता रोका था। भीम आगे बढ़े और इसके साथ युद्ध करने लगे, अन्त में भीम ने इसे मार डाला।

किल तत्० ( अ० ) निश्चय, दृढ़।

किलक दे० ( स्त्री० ) चटक, चमक, प्रभा, दीप्ति, प्रकाश।

किलकिञ्चित् तत्० ( पु० ) क्रियों का हाथ विशेष, गुद्गार की एक क्रिया विशेष, यथा—  
“हरप गरथ अभिलाय भ्रम, हासरोप भ्रम भीत  
होत एकही मंग हैं, किलकिञ्चित् यह रीत”

मतिराम

किलकिलाना दे० ( क्रि० ) किलकिल शब्द करना, गर्जन करना, गुर्गना।

किलकिला दे० ( पु० ) वानरों का एक प्रकार का शब्द, गर्जन।

किलानी दे० ( स्त्री० ) शूद्रजन्तु विशेष। कुत्ते का लुंवा।

किला दे० ( पु० ) कोट गड़, राजाओं के महल, दुर्ग।

किलाना दे० ( क्रि० ) पड़ोइना, टोंकदेना, बीनना, धराना।

किल्कारी दे० खोलमारना, बहुत ज़ोर से गर्जन करना।—मारना प्रसन्नता के साथ हँसना, प्रसन्नता जनाने की उद्दृष्ट चेष्टाएँ।

किल्ही दे० ( स्त्री० ) धर्गल, कीली, बँहा।

किल्द्विप तत्० ( पु० ) पाप, दोष, अपराध, अशुभ, अनिष्ट रोग।— ( पु० ) अपराधी, अधर्मी, पापी, रोगी।

किशलय तत्० ( पु० ) नयीन पत्ते, कोमल पत्ते, फूलों की पंखुड़ियाँ।

किशोर तत्० ( पु० ) अश्वत्था विशेष, शाल्या-श्वत्था के बाद की अश्वत्था। १४-वर्ष के नीचे की अश्वत्था वाला।

किशोरी तत्० ( स्त्री० ) कुमारी, अविवाहिता युवती, युवती स्त्री।

किष्किन्धा तत्० ( पु० ) पर्यंत विशेष, यानर-राज बालि की राजधानी का नाम, यह पर्यंत दक्षिण भारत में है।

किसलय तत्० ( पु० ) देवो किशलय।

किस दे० ( सर्व० ) कौन।

किसनई दे० ( स्त्री० ) किसान का काम, खेती धारी।

किसान दे० ( पु० ) खेती करने वाला, कृषक, हरवाहा।

किस दे० ( सर्व० ) किसको, किसका, किसी को।

किसे दे० देखो किस।

किस्ती दे० ( स्त्री० ) नौका, छोटी परन्तु मुन्दर नाव।

की दे० ( क्रि० ) करी, करदी, काटाली।

कीकट तत्० ( पु० ) देश विशेष, मगध देश, कृपण, दरिद्र, पापी।

कीकड़ दे० ( पु० ) बहूत, कटीला पेड़।

कीकस तत्० ( पु० ) हाड़, अस्थि।

कीचक तत्० ( पु० ) वायु के संयोग से बोलने वाला वांस, फटाहुँघा वांस, कैकय राजा का पुत्र, राक्षस विशेष, दैत्य विशेष, मत्स्यदेश के राजा विराट का साला। यह बड़ा पराक्रमी था, इसके भय से उस समय के प्रायः सभी दलशत्रु डरते थे। यहां तक कि दुर्योधन भी इसके भय से मत्स्य देश पर छड़ाई नहीं करता था। यह द्रौपदी को घुरी दृष्टि से देखने लगा, इसका समाचार सुन कर भीम ने इसे मार डाला।

कीच दे० ( पु० ) पट्ट, कौंदा।

कीचड़ दे० देवो कीच।

कीजिय दे० ( क्रि० ) करे, कीजिये, करना चाहिये।

कीजै दे० ( क्रि० ) करिये, कीजिये, करना उचित है।

कीट तत्० ( पु० ) कृमि, कीड़ा, कीरा, पतङ्ग।

—प्र ( पु० ) गन्धक, ओषध विशेष।



किर तत्० ( पु० ) राजम  
 लस का भार, धूत, ब्रेटा, राजकुमार,  
 लक्ष्य वन में गये, २  
 नका रास्ता रोका य प्रुकी, राजकन्या ।  
 मके साथ युद्ध करते रा ।  
 र हाल । दुराचारी ।  
 [ तत्० ( अ० ) ] [ कु + कृ + मन्, ] दुरा कर्म  
 क दे०, दुराचार, अन्याय, पाप, अनुचित,  
 राश । ( पु० ) कुत्सित कर्मकारी, पापात्रा,  
 दुराचारी ।  
 कौशिकी ( पु० ) भक्ष्य शिल्प, ताम्बड़ह, मुर्गा,  
 शरक  
 हय २० ( पु० ) कृकर, कुता, खान ।  
 गत एक० ( स्त्री० ) दुष्कर्म, निन्दितकर्म,  
 ष ।  
 किलाना ( पु० ) कौल, पेट ।  
 र्जन करना ( स्त्री० ) अपयय, दुर्नाम, निन्दा ।  
 किला ( पु० ) मन्दप्रह, खोटे ग्रह, दुष्यद्रायी ग्रह,  
 ब, गर्ज ।  
 नी दे० ( पु० ) निन्दित गांव, जिष गांव में  
 नीच लोग रहते हैं ।  
 वा ० बेटौल, कुत्प ।  
 दे० कुत्समय में मारना । मर्मस्थान में मारना ।  
 तत्० ( पु० ) कियत, सुगन्ध द्रव्यविशेष, रोटी ।  
 दे० ( पु० ) गुलाल रखने के लिये शीसा का  
 हुआ पात्र ।  
 कुञ्जि ( पु० ) [ कुञ्ज + अन् ] स्तन, धन, चूँची,  
 छानो ।  
 तन्व ( पु० ) कुचिभ्राना, तह करना कुच का बहु  
 र्त्त, त्० ( पु० ) साम चन्दन, रक्त चन्दन, त्रिना  
 का चन्दन ।  
 मल तत्० ( पु० ) स्तन के ऊपर का भाग,  
 र्त्तका मुँह ।  
 द० ( पु० ) निन्दक, दोषानुबन्धिन्सु, दोष  
 धाला ।  
 II दे० ( कि० ) दूर करना, मसलना, पीस देना,  
 दुकड़े कर देना ।  
 दे० ( पु० ) श्रीरुध विशेष, विषविशेष ।

कुचाप्र तत्० ( पु० ) स्तन का अग्रभाग, चूनी का  
 घोंटा, मिटनी, भेदुला ।  
 कुचाल दे० ( पु० ) कुरीति, दुरा चलन, कुदेव, कुदयव-  
 हार ।  
 कुचाली दे० ( पु० ) उपद्रवी, खोटे चाल चलन वाला ।  
 कुचाह दे० ( पु० ) अनिरुद्ध, अशुभ इच्छा, प्रेम  
 रहित, कपट स्नेह ।  
 कुचि दे० ( पु० ) बुहारो, बड़नी, मार्जनी, शोधनी,  
 भाङ्ग ।  
 कुचिया दे० ( पु० ) लोलकी, कान के नीचे का  
 कोमल भाग ।  
 कुचिला तद्० ( पु० ) मलान, मलीन वस्त्रधारो, शुद्धी,  
 कन्याधारो ।  
 कुचैना दे० ( पु० ) दुःख, विवाद, खेद, अपसन्नता ।  
 कुचकी दे० ( स्त्री० ) जांघ का फोड़ा ।  
 कुच्छ दे० ( पु० ) अरप, घोड़ा, एक प्राण ।—श्रीर  
 गाना ( वा० ) झूठी बात करना, दूसरे के म्यान में  
 दूसरी बात कहना ।—क ( वा० ) घोड़ा बहुत,  
 कुञ्ज कुञ्ज ।—से कुच्छ होता—का कुच्छ होना  
 ( वा० ) उलटा पलटो, विपरीतता ।—कुच्छ ( वा० )  
 घोड़ा सा, स्वल्प ।—नकुच्छ ( वा० ) घोड़ा बहुत,  
 यत्किञ्चित् ।—नहीं ही ( वा० ) निष्प्रयोजन,  
 व्यर्थ, अस्त्रीकार ।—हो ( वा० ) जो कुछ हो,  
 इसका प्रयोग उस वस्तु के लिये किया जाता है,  
 जो जानो हुई न हो, और उसके जानने का  
 आवश्यकता भी न हो ।  
 कुञ्ज तत्० ( पु० ) मङ्गलग्रह, नरकामुद, मङ्गल-  
 वार ।  
 कुञ्जलीघन तद्० ( पु० ) कुञ्जघन, हाथियों का वन,  
 जिम वन में अधिक हाथी हैं ।  
 कुजाति तत्० ( पु० ) नीच जाति, अधम जाति,  
 जातिव्युत्त, जाति भ्रष्ट, दुराचारी ।  
 कुजोग तद्० ( पु० ) अनमेल संयन्ध, खोटा योग,  
 अशुभ योग ।  
 कुञ्जित तत्० ( पु० ) बल्लेदार, चूँघर वाले ।  
 कुञ्जिका तत्० ( स्त्री० ) कुंजी, ताली ।  
 कुञ्जी तत्० ( स्त्री० ) कलौजी ।



कुञ्ज तत्० ( पु० ) लता आदि से ढका हुआ स्थान,  
लता के द्वारा बना हुआ अकृत्रिम गृह ।

कुञ्जर तत्० ( पु० ) हाथी, यह शब्द जिस जाति  
याचक शब्द के आगे जोड़ा जाता है, उसकी  
प्रधानता घटताता है । जैसे—नरकुञ्जर, प्रधान  
मनुष्य । यथा—

“कपिकुञ्जरहिं बोलि लै आये” ।

—रामायण ।

कुञ्जिका तत्० ( स्त्री० ) ।

कुञ्जी दे० देखो कुञ्जिका ।

कूट तत्० ( पु० ) सख, शिखर, साङ्केतिक शब्द,  
व्यथा, शूल, पत्थर तोड़ने वाली हथोड़ी ।

कूटकी दे० ( स्त्री० ) एक श्रौषध का नाम,  
मसाला ।

कूटज तत्० ( पु० ) कुरैया का नाम, इन्द्रप्रथ,  
आगस्त्य मुनि, द्रोणाचार्य, पुष्प विशेष ।

कूटना दे० ( क्रि० ) खण्ड करना, तोड़ना, चूर्ण  
करना । ( पु० ) भण्ड, भंडवा ।

कूटनाई दे० ( स्त्री० ) कूटनापन, कूटना के गुण ।

कूटनाना दे० ( क्रि० ) फुसलाना, वष में करने व  
आज्ञाकारी बनाने का उद्योग करना ।

कूटनी तत्० ( स्त्री० ) कूटनी, दूती, सन्देश ले जाने  
वाली ।—पना दूती कर्म ।

कूटिया तद्० ( स्त्री० ) परंप्रगृह, तृण निर्मित गृह,  
घाम फूस का बना घर ।

कुटिल तत्० ( पु० ) [ कुट + इल् ] यक्र, बांका,  
टेडा, क्रूर, दुष्ट ।—ता ( स्त्री० ) कुटिलत्व,  
यक्रता, शठता, क्रूरता, शठता, यक्रता ।—न्तः-  
करण ( पु० ) कपटी, खल, अन्तः अन्तः करण ।  
क्रूर ।

कुटिलाई तद्० ( स्त्री० ) डल, कपट, यक्रता, टेड़ा-  
पन ।

कुटी तत्० ( स्त्री० ) भोंपड़ी, मड़ी, छोटा घर ।

—चक ( पु० ) पुत्र के अन्न से जीने वाला ।

—चर ( पु० ) पति विशेष । संन्यास की  
प्रथम अवस्था ।

कुटीर तत्० ( पु० ) बुद्रगृह, कुटी ।

कुटुम तद्० ( पु० ) जाति वान्धव, सन्तान, यत्ति  
परिजन, परिवार ।

कुटुमी तद्० ( पु० ) कुटुम्ब विशिष्ट ।

कुटुम्ब तत्० ( पु० ) देखो कुटुम ।

कुटुम्बी तत्० ( पु० ) देखो कुटुमी ।

कुट्टेव दे० ( पु० ) कु व्यग्रहार, छोटी नास ।

कुट्टनी तत्० ( स्त्री० ) कुट्टनी, दूती ।

कुट्टमित तत्० ( पु० ) [ कुट्ट + मा + क्त ] क्विं

को एक प्रकार की शृङ्गार चेष्टा । यथा—

“जहां सुक्ख अरु दुःख की, प्रगट करे जो वाम,  
परन ललित यह हाव है, होत कुट्टमित नाम”

—सरसा

कुठार तत्० ( पु० ) फरमा, कुल्हाड़ी, कुल्हाड़ा ।

कुठारी तत्० ( स्त्री० ) कुल्हाड़ी, छोटी कुल्हाड़ी ।

कुठाहर दे० ( स्त्री० ) अक्षमय, ब्रेठिकाने, मं  
स्थान, नीच स्थान ।

कुडकना दे० ( क्रि० ) कुडकुड़ करना, धूल  
गुराना ।

कुडमा दे० ( पु० ) कुटुम्ब, परिवार, कुनवा ।

कुडव तत्० ( पु० ) सेर का चौथा भाग, चार पन ।

कुडङ्ग दे० ( पु० ) अग्निष्ट व्यग्रहार, हानिकर्ति  
आचरण ।

कुड़ना दे० ( क्रि० ) क्रोध करना, दूसरों की उसी  
देष मन ही मन दुःखित होना, ईर्ष्या करना ।

कुडव दे० ( पु० ) कुरूप, असुन्दर, अनाड़ी ।

कुड़ाना दे० ( क्रि० ) दुःखित करना, छेड़ना ।

कुड़ानी दे० ( स्त्री० ) छेड़ना, सन्तापित करना ।

कुणवा या कुनवा दे० ( पु० ) परिवार, कुटुम्ब ।

कुण्डित तत्० ( पु० ) [ कुण्ड + क्त ] सद्कुर्वि  
भीत, लज्जित ।

कुण्ड तत्० ( पु० ) [ कुण्ड + अल् ] परिना  
विशेष, जलाशय, खड्डा, कूप, जलाधार विशेष  
चौधवा । वारह प्रकार के पुत्रों में से एक प्रक  
का पुत्र । पति के रहते उपपति से उत्पन्न सन्त  
को कुण्ड कहते हैं । हवन करने का स्थान, य  
गर्त ।

कुण्डल तत्० ( पु० ) कर्णभूषण विशेष, बाला, बाली ।

कुण्डलिया दे० ( पु० ) एक भाषा के बन्द का नाम, इस बन्द में १४४ मात्रा होती है, जिस शब्द से प्रारम्भ किया जाय, उसी शब्द से इसे समाप्त करना चाहिये । इस बन्द में एक याक्य कुण्डल-द्वारा पढ़ा जाता है, इसीसे इसका नाम कुण्डलिया है ।

कुण्डली तत्० ( स्त्री० ) वृक्षविशेष, कचनार, गुड़ब, जलेझो, घेरा, केटा, कुण्डलाकार होना, —कृत ( पु० ) गोल बना हुआ ।

कुण्डिन तत्० ( पु० ) एक मुनि का नाम, नगर विशेष, विदर्भ नगर, बरार प्रदेश के मध्य-वर्ती एक नगर का नाम, इधका दूसरा नाम विदर्भ भी है । बरदा नदी के किनारे पर यह बसा हुआ था । यह दो भागों में विभक्त था, उत्तरीय कुण्डिन की राजधानी अमरावती थी, और दक्षिण कुण्डिन की राजधानी प्रतिष्ठान नगर था ।

कुण्डी दे० ( स्त्री० ) कियाड़ बन्द करने की सांकल, जड़ी ।

कुतः तत्० ( अ० ) प्रसारक, कहीं से, कहीं ।

कुतनु तत्० ( पु० ) कुत्सित शरीर । ( पु० ) कुवेर, यज्ञ-राज ।

कुतप तत्० ( पु० ) दिन का आठवाँ भाग, दिन का आठवाँ मुहूर्त्त, एकोद्दिष्ट नामक आठ प्रारम्भ करने का समय, मध्याह्न, अतिथि, भाङ्गा । —काल ( पु० ) गरमी का समय, मध्याह्न समय ।

कुतरना तद्० ( क्रि० ) काटना, छोटे छोटे टुकड़े करना ।

कुतरु तद्० ( पु० ) काटने वाला, पिढा, कुत्ते का बच्चा ।

कुतक तत्० ( पु० ) कुत्सित तर्क, निन्दित तर्क, दुर्बल युक्तियों के सहारे का तर्क, विरुद्ध विचार । — ( पु० ) कुतर्क करने वाला ।

कुत्तल तद्० ( पु० ) घृष्टनीतल, भूतल ।

कुतिया दे० ( स्त्री० ) कुत्ती, कुत्ती ।

कुतूहल तत्० ( पु० ) अर्पयवस्तु देखने की लालसा, आसक्ति, कौतुक, परिहास, उन्मुक्तता । ( पु० ) अर्पय, अर्पुत, प्रयस्त । — ( पु० ) आसक्ति, कौतुकी, उद्योगी ।

कुतूष्ण तत्० ( पु० ) निन्दित वृत्त, बुरी घास ।

कुत्ता दे० ( पु० ) कुकुर, ग्राम मृग । ( स्त्री० ) कुत्ती ।

कुत्र तत्० ( अ० ) कहां, किस स्थान पर । — ( पु० ) ( अ० ) कहीं भी, किसी ठिकाने ।

कुत्सन तत्० ( पु० ) [ कुत्स + अन्त ] निन्दन, भर्त्सन, ग्लानिकरण ।

कुत्सा तत्० ( स्त्री० ) निन्दन, कुत्सा, गर्हा, बुराई, शय्या, अपमान । — जनक ( पु० ) निन्दा कराने वाला, ग्लानिकर ।

कुत्सित तत्० ( पु० ) [ कुत्स + क्त ] निन्दित, मलीन, नीच ।

कुत्र तत्० ( पु० ) [ कुत्र + अण् ] हाथी पर का विज्ञापन, आस्तरण, हाथी की झूल ।

कुथली दे० ( स्त्री० ) भोली, कोथनी ।

कुदकना तद्० ( क्रि० ) कूदना, फांदना, उछलना ।

कुदरना तद्० ( क्रि० ) फांदना, कूदना, उछलना ।

कुदरा तद्० ( पु० ) छोटा कुदार, जिसमें मिट्टी खोदी जाती है ।

कुदान तत्० ( पु० ) बुरा दान, खोटा दान, अनुचित दान, ( दे० ) उछलने का स्थान ।

कुदाना तद्० ( क्रि० ) कुदयाना, लौंचना, उछालना ।

कुदार तद्० ( पु० ) भूमि खोदने का साधन, बेल, बेलचा, कुदारी ।

कुदाल तद्० ( पु० ) देवो कुदार ।

कुदिन तत्० ( पु० ) दुर्दिन, मेघाच्छादित दिन, एते दिन, दुःख के दिन ।

कुदृश्य तत्० ( पु० ) अभय, कुरूप, कदम्य ।

कुदृष्टि तत्० ( स्त्री० ) अल्पदृष्टि, विरुद्धाचरण, अनिष्ट कारण, बुरे आयु में देखना ।

कुदेश तत्० अमुस्यकर देश, कुत्सित देश, गङ्गा-रहित देश ।

कुद्दाल तत्० (पु०) देखो कुदर ।

कुधर तत्० (पु०) शैल, पर्वत, पहाड़ ।

कुधातु तत्० (पु०) लोहा, लोह—यथा—

“पारस परमि कुधातु लोहाई ।” —रामायण

कुधारा तत्० (स्त्री०) दुर्गसदृश, कुटीरि, असम्पा-  
चरण ।

कुध्र तत्० (पु०) देखो कुधर ।

कुनख तत्० (पु०) रोग विशेष, कुन्मित नख युक्त ।

—ी (पु०) नख रोगी, छिपटे नख वाला ।

कुनटी तत्० (स्त्री०) उपधातु विशेष, मनसिल, दुष्ट,  
नर्तकी ।

कुनचा दे० (पु०) कुटुम्ब, परिवार, कुल ।

कुनारी तत्० (स्त्री०) दुष्ट स्त्री, भ्रष्टचरित्र स्त्री, दुष्ट-  
चरित्रा रमणी ।

कुनाल तत्० (पु०) प्रसिद्ध महाराजा अशोक के एक पुत्र का नाम, पटरानी पद्मावती के गर्भ से यह उत्पन्न हुआ था, यह अतिशय सुन्दर था, अतएव इसकी सौतेली मा तिष्यरत्ना इस पर आसक्त हुई और अपना दुष्ट अभिप्राय उससे प्रकाशित किया । परन्तु कुनाल ने उसे माफ जयाय दे दिया । इस कारण क्रुद्ध होकर उसने प्रतिज्ञा की कि कुनाल की आँखें मैं निकलवा लूंगी । एक समय महाराजा अशोक विद्रोह शान्त करने के लिये तत्रगिला गये और तब तक के लिये राज्य की देख रेख तिष्यरत्ना, ( उनकी दूसरी स्त्री ) को सौंप गये । तिष्यरत्ना ने इसे सुयोग समझ कर, अपने प्रधान कर्मचारी को कुनाल की आँखें निकालने के लिये आदेश दिया । इसे राजाशा समझ कर, कुनाल ने अपनी आँखें स्वयं निकाल दी, इसकी खबर जय अशोक को लगी, तब उन्होंने तिष्यरत्ना के संध को आज्ञा दी, परन्तु कुनाल ने बड़ी प्रार्थना करके अपनी विपैली सौतेली माँ की रक्षा की ।

कुनीति तत्० (स्त्री०) अन्याय, कुविचार, अनुचित व्यवहार ।

कुन्त तत्० (पु०) भाला, बरखी, पानी, पवन, राजा विशेष, कुन्ती का पिता ।

कुन्तल तत्० (पु०) केय, बाल, शिवा, देशविशेष का नाम, जो बोलदेश के उतार की ओर है । कुरुगड़ के दक्षिणस्थ कल्यानदुर्ग नामक न कुन्तल देश की राजधानी थी । इस समय के हैदराबाद राज्य के दक्षिण पश्चिम का भाग है किसी समय कुन्तल देश था ।—वर्द्धन ( पु० ) भृङ्गराज वृत्त, भंगरिया ।

कुन्तिभोज तत्० ( पु० ) एक राजा का नाम, राजा गूरतेन के पिता की बहिन के लड़के से ये निस्सन्तान थे, इसीसे इन्होंने गूरतेन की कन्या पृथा को गोद लिया था । इसी कारण पृथा क कुन्ती नाम हुआ था, महाभारत के युद्ध में य सम्मिलित हुए थे ।

कुन्ती तत्० (स्त्री०) राजा गूरतेन या वसु की कन्या पाण्डु के साथ इसका विवाह हुआ था । नार मुनि ने इसे यथोक्त मन्त्र बतताया था जिस के प्रसाद से कुन्ती देवताओं को बला सिद्ध करती थी ।

कुन्द तत्० ( पु० ) पुष्पवृक्ष विशेष, कुन्द का फूल, एक प्रकार का रसैत पुष्प ।

कुन्दन दे० ( पु० ) अञ्जा सोना, उत्तम सुवर्ण ।

कुपति तत्० ( पु० ) दुष्ट पति, दुष्ट स्वामी ।

कुपथ तत्० ( पु० ) कुपंथ, कुमार्ग, विषय, कुन्मित मार्ग, दुर्गसहार, दुराचरण ।—गामी ( पु० ) दुराचारी, पापात्मा, पापी ।

कुपथ्य तत्० ( पु० ) अपथ्य, अनुचित भोजन, समय और प्रकृति के विरुद्ध भोजन ।

कुपरामर्श तत्० ( पु० ) कुन्मित मन्त्रणा । श्लोका सिखायन ।

कुपात्र तत्० ( पु० ) अयोग्य, अपात्र, अनुपयुक्त ।

कुपित तत्० ( पु० ) क्रोधित, कोपित, कोपयुक्त ।

कुपुत्र तत्० ( पु० ) कुसन्तान, दुराचारी पुत्र ।

कुपुरुष तत्० ( पु० ) निकृष्ट मनुष्य, अधम मनुष्य, समाज-बहिष्कृत पुरुष ।

कुपूत तत्० ( पु० ) कुपुत्र, कपूत ।

कुप्य तत्० ( पु० ) सोना और चादी से मिले धातु, कम सूर्यवाली धातु ।

कुप्पा दे० ( पु० ) चर्मभाण्ड, चाम का बना हुआ चीया तेल रखने का यंत्र, ( स्त्री० ) कुप्पी ।

कुय या कूय दे० ( पु० ) कूयड़, कुञ्ज, पीठ पर का डील ।

कुयजा तद्० ( पु० ) कूयड़ मनुष्य ।

कुयड़ कुयड़ा दे० ( पु० ) टेटा, कुञ्ज ।

कुञ्ज तत्० ( पु० ) टिट्टी पीठ, कुञ्ज ।

कुञ्जा तत्० ( स्त्री० ) कूयड़ स्त्री, राजा कंस की परचारिका का नाम ।

कुयत तत्० ( स्त्री० ) निन्दित वार्ता, निकृष्ट वार्ता ।

कुमार्या तत्० ( स्त्री० ) कलही स्त्री, भगड़ने वाली स्त्री, कुचटा भार्या ।

कुभाय तत्० ( पु० ) निन्दित अभिप्राय, कुट्टष्टि, कुस्वभाव ।

कुमण्डल तत्० ( पु० ) कुम्भित मनुष्यों का मसूह, धरामण्डल, पृथिवीमण्डल ।

कुमति तत्० ( स्त्री० ) अल्प बुद्धि, दुर्बुद्धि, दुर्मति ।

कुमद तद्० ( पु० ) कुम्भितमद, दुरभिमान, कमल विशेष ।

कुमदिन तद्० ( स्त्री० ) कमल विशेष, रात को विकसित होने वाला कमल ।

कुमन्त्रणा तत्० ( स्त्री० ) असत्वरामर्ग, अधम सम्प्रति ।

कुमन्त्री तत्० ( पु० ) असत्वरामर्ग देने वाला ।

कुमाच दे० ( पु० ) एक प्रकार की रोटी ।

कुमार तत्० ( पु० ) कार्तिकेय, नाटकोक्ति में युवराज, पांच वर्ष का लड़का । जैन विशेष, कुम्भार, अधिवाहित बालक, राजपुत्र ।—पाल ( पु० ) शालिवाहन राजा, देवी शालिवाहन ।

कुमारिका तत्० ( स्त्री० ) कुमारी कन्या, अधिवाहिता, भारतवर्ष का एक भाग विशेष, उपद्वीप विशेष, जो भारत के दक्षिण की ओर है, जो भारत का एक खण्ड समझा जाता है । सिंहल राज की कन्या का नाम, सिंहलेश्वर शतगृह की कन्या, और भरतराजा की कन्या । इसका

शरीर साधारण स्त्रियों का सा था, परन्तु मूंह यज्ञी का । इसने अपने प्रयत्न में पुनः मनुष्य का मुल प्राप्त किया । ( स्कन्द पुराण देखो ) ।

कुमारिल तत्० ( पु० ) विष्णुवात, दार्शनिक पण्डित और वैदों का भाष्यकार, ये आदि शङ्कराचार्य के समय में उत्पन्न हुए थे । इन्होंने श्रीमंता वार्तिक और तन्त्रवार्तिक नाम के ग्रन्थ लिखे हैं । जिस समय यह उत्पन्न हुए थे, उस समय भारत की स्थिति, विविध थी । बौद्ध धर्म का बोलबाला था । कुमारिल ने बौद्ध शास्त्र का अध्ययन, बौद्ध साधुओं से किया, पुनः उनका खण्डन किया । गुप्तद्रोह के पाप से सुटकारा पाने के लिये प्रयाग में तुवानल में उन्होंने अपने शरीर को भस्म कर डाला । यह दक्षिण देश में उत्पन्न हुए थे, इनका समय सन् ६५० से—७०० ई० के बीच निश्चित किया गया है ।

कुमारी तत्० ( स्त्री० ) दर्श वर्ष की कन्या बिन व्याही, अधिवाहिता । जम्बूद्वीप ।—पूजा ( स्त्री० ) तन्त्रशास्त्रोक्त आराधना ।

कुमार्ग तत्० ( पु० ) कुपय, कुचार, दुराचरण, दुर्गम पथ ।

कुमद तत्० ( पु० ) रवेत कमल, रक्त कमल, कुमो-दिनी, कोई ।—चन्द्र ( पु० ) चन्द्रमा, कुमुद का मित्र ।

कुमुदिनी तत्० ( स्त्री० ) कुमद युक्त सरोवर, कम-लिनी, पद्मिनी ।

कुम्भ तत्० ( पु० ) घड़ा, कलश, घट, हाथी का मस्तक, एक राजा का नाम, यह मेवाड़ के राजा मुकुल के पुत्र थे । महाराणा मुकुल के छल से मारे जाने पर १४१६ ई० में कुम्भ मेवाड़ के महाराणा हुए । यह विष्णुवात पूर और पण्डित थे । जयदेव के गीतगोविन्द की एक टीका इन्होंने लिखी है । मालवा का राजा, महम्मद अपनी और गुजरात के राजा की सेना लेकर बितोर पर चढ़ आया । कुम्भ ने बड़ी योग्यता के साथ अपनी वीरता प्रकाशित की । शत्रु सेना को हराकर, महम्मद को इन्होंने कैद कर लिया । पुनः

उमके साथ राणा कुम्भ का व्यवहार दयापूर्ण ही रहा । महसूद ई महीने तक चित्तोरगढ़ में कैद रहा । दिल्ली के ग/दयाह ने जब दिल्ली पर चढ़ाई की उस समय महसूद ने अपनी जाति के विरुद्ध तलवार उठाई थी ।—कर्ण ( पु० ) राजस विशेष, रायण का छोटा भाई ।—कार ( पु० ) शूद्रा के गर्भ से और विश्वकर्मा के औरस से उत्पन्न जाति विशेष । कुम्हार ।—ज ( पु० ) कुम्भ से उत्पन्न, यशिस और अगस्त्य मुनि ।—सम्भव ( पु० ) कुम्भ से उत्पन्न, महर्षि यशिस, अगस्त्य मुनि, द्रोणाचार्य ।—वीर्य ( पु० ) रीठा ।

कुम्भा तत्० ( पु० ) छोटा चड़ा, एक राजा का नाम ।

कुम्भिका तत्० ( स्त्री० ) जल का एक प्रकार का तृण, वृक्ष विशेष ।

कुम्भिनी दे० ( स्त्री० ) पृथिवी, भूमि ।

कुम्भी तत्० ( स्त्री० ) तृणविशेष, जो पानी पर जमा हुआ होता है ।

कुम्भीनस तत्० ( पु० ) ऋणघर, सपें, माँप ।

कुम्भीपाक तत्० ( पु० ) नरक विशेष ।

कुम्भीर तत्० ( पु० ) जलजन्तु विशेष, नक्र, मकर, मगर ।

कुम्भीरुणा तत्० ( स्त्री० ) औषध विशेष, निर्घोत ।

कुम्हलाना दे० ( क्रि० ) सुरफाना, मूलना, रङ्ग बदल जाना ।

कुम्हार तत्० ( पु० ) कुलाल, कुम्भकार, चड़ा आदि मीट्री का बर्तन बनाने वाला । ( स्त्री० ) कुम्हारी, जन्तु विशेष, कुम्हार जाति की स्त्री ।

कुयशः तत्० ( पु० ) दुर्नाम, अययश, दुष्कीर्ति ।

कुयोग तत्० ( पु० ) दुष्टयोग, दुःखदायक ग्रह ।

कुयोगी तत्० ( पु० ) विषयानुरक्त, शिष्य भोगी । यथा—

“पुरुष कुयोगी र्जो उरगारि,  
मोह धिष्टय नहि सकत उत्तारि”

—रामायण ।

कुरुत्त तत्० ( पु० ) हरिण, मृग, एग ।—नयन ( स्त्री० ) मृगनयना, मृगलोचना ।—नाभि ( स्त्री० ) कस्तूरी, मृगनाभि ।

कुरुपटक तत्० ( पु० ) औषध विशेष, विषवासा ।

कुरमा दे० ( पु० ) कुनवा, घराना ।

कुरुवक तत्० ( पु० ) औषधि का नाम, श्रियवर्, विषवासा ।

कुरुर तत्० ( पु० ) कुत्सपत्नी, उरुश्रोय, क वगला ।

कुराई दे० पाय फसने योग्य, विलम्ब, राशी करना, देर लगाना ।

कुररी तत्० ( स्त्री० ) पक्षिविशेष, चीरह, मेथी ।

कुरी दे० ( स्त्री० ) जाति, कुल, घराना ।

कुरोति तत्० ( स्त्री० ) निषिद्धाचरण, कदवाना कुव्यवहार ।

कुरीर तत्० ( पु० ) मठो, मढ़ो, रतक्रिया, मैथुन ।

कुरु तत्० ( पु० ) चन्द्रवंशी राजकुल, देश विशेष उत्तर भारत में है । पृथिवी के नव खण्ड में एक खण्ड ।—केतु ( पु० ) दुर्गजन्, युधिष्ठिर पतञ्जलि ।—क्षेत्र ( पु० ) दिल्ली के एक मैदान, जहां कौरव और पाण्डव लड़ाई हुई थी, यहां इसी नाम का एक भी है जो यानेश्वर के दक्षिण की ओर है ।

मरखती नदी के दक्षिण, ओर दूधद्वती नदी उचार है ।—पति-राय ( पु० ) कुरुजन्, धन, युधिष्ठिर ।—वंश ( पु० ) राजाकुल सन्तति ।

कुरुचि तत्० ( स्त्री० ) नोच धासना, अजीर्ण ।

कुरुचक तत्० ( पु० ) औषध विशेष ।

कुरुल दे० ( पु० ) चूंगर, चिकुर ।

कुरुप तत्० ( पु० ) कुत्सित आकृति, कदाक कुडौल, भदसा ।

कुरेलना तत्० ( क्रि० ) टटोलना, कुतरना ।

कुर्कुट दे० ( पु० ) कड़ा, झाड़न, सुहारन ।

कुर्कुटी तत् ( पु० ) नेमर वृक्ष ।  
 कुर्कुल दे० ( स्त्री० ) कूद, कुलांच, चौकड़ी ।  
 कुर्कुवा दे० ( पु० ) कुज, कुवड़ ।  
 कुर्म्मी दे० ( पु० ) एक जाति का नाम, जो खेती का काम करती है ।  
 कुर्याल दे० ( स्त्री० ) मुज, आराम, चिन्ता-रहित ।  
 —में गुलेल लगाना ( वा० ) निराग होना, मुज के समय दुःख ।  
 कुरी तत् ( स्त्री० ) कोमल, अम्यि, उप अस्थि ।  
 कुल तत् ( पु० ) गोत्र, वंश, जाति, वर्ण, स्वजा-  
 तोय गण, जन समूह ।—कण्टक ( पु० ) कुज ।  
 —कन्या ( स्त्री० ) कुलीना कन्या ।—कर्म ( पु० ) परम्परा का व्यवहार, कुलाचार, कुल-  
 क्रिया ।—घाती ( पु० ) कुलनाशक ।—ज ( पु० ) कुलीन, मत्कुलोद्भव, सद्दंशीय ।—तारण ( पु० ) सुपुत्र ।—द्रोही ( पु० ) कुमार्ग, वंशदूषक ।  
 —धर्म ( पु० ) कुल व्यवहार, कुलाचार ।  
 —नाश ( पु० ) सन्तानहीनता, कुलघटना ।  
 —पूजक ( पु० ) पुरोहित, कुलदेव ।—वधू ( स्त्री० ) पतिव्रता, कुलस्त्री ।—वोड ( पु० ) कुलनाशक, घरघातू ।  
 कुकुला दे० ( पु० ) कुला, कुलकुची, गरदूष ।  
 कुन्धवा दे० ( पु० ) मूल धन, पूंजी ।  
 कुलजन दे० ( पु० ) शोषधि विशेष, पान की जड़, मूल विशेष ।  
 कुलज तत् ( पु० ) राय, भाट, कुलाचार्य ।  
 कुलटा तत् ( स्त्री० ) अक्षती, ट्यभिवारिणी ।  
 कुलथी तत् ( स्त्री० ) अन्नविशेष, कलाई विशेष ।  
 कुलबुलाना दे० ( क्रि० ) धुजलाना, कलमलाना ।  
 कुलबुलाना ।  
 कुलबुलाहट दे० ( स्त्री० ) कीड़े का बल फेर, पुत्रबुलाहट ।  
 कुलमा दे० ( पु० ) लड्डूचा, भोजन विशेष ।  
 कुलघन्त तद् ( पु० ) कुलवान्, कुलीन, अष्ट ।  
 कुलघन्ती तद् ( स्त्री० ) अछड़े घराने की स्त्री ।  
 पतिव्रता, घड़े घर की बेटी ।

कुलवान् तत् ( पु० ) कुलीन, सद्दंशज ।  
 कुला तत् ( स्त्री० ) मनमिल, शौचध विशेष ।  
 कुलांच दे० ( पु० ) कूदना, फाँदना ।—मारना बलांग, फाँदना ।  
 कुलाङ्गना तत् ( स्त्री० ) कुलीन स्त्री ।  
 कुलाचार तत् ( पु० ) वंशधर्म, कुलरीति, तान्त्रिक रीति ।  
 कुलाचार्य तत् ( पु० ) वंशगुरु, पुरोहित ।  
 कुलाल तत् ( पु० ) कुम्हार, कुम्भकार ।  
 कुलाहल तद् ( पु० ) नीलाहल, कुलहल, शेर ।  
 कुल्हिया दे० ( स्त्री० ) कुलदा, सारा, पुरया ।  
 —में गुड़ फोड़ना ( व ) गुप्त काम करना ।  
 कुलीन तत् ( पु० ) अष्टवंशोद्भूत, सद्दंशजात ।  
 कुलीनाई तद् ( स्त्री० ) कुलीना, उत्तम कुल ।  
 कुलकुली दे० ( पु० ) सुखारो, कुलाची ।  
 कुलहाड़ी दे० ( स्त्री० ) कुटार, कुहाड़ी ।  
 कुलिश तत् ( पु० ) यज्ञ, इन्द्र का यज्ञ ।  
 कुवलय तत् ( पु० ) रवेत कमल, नीलोत्तर ।  
 —श्व ( पु० ) एक राजा का नाम, यह महा-  
 राजा श्रावस्त का पौत्र और बृहदश्व का पुत्र था, इसके पितामह श्रावस्त ने श्रावस्ती नाम की नगरी बसायी थी । महाराज कुवलयश्व ने उत्तकू महर्षि की आज्ञा से धुन्धु नामक राज्य को मार डाला, तब से इनका धुन्धुमार नाम पड़ा । ( २ ) शकु-  
 जिन् नामक राजा का पुत्र, इनका नाम शकु-  
 चरज था । कुवलय नामक एक तेज घोड़ा इनके पास था, इसी कारण इनको कुवलयश्व कहते थे । गन्धर्व राज की कन्या मदालसा इनसे ब्याही गयी थी ।  
 कुवलयपीड तत् ( पु० ) [ कुवलय + पा + पीड ] हस्ति रूपी एक दैत्य, अक्षराजा का एक हाथी ।  
 कुचात्र तत् ( पु० ) परब वाक्य, कठोर बात, गाली ।  
 कुचादी तत् ( पु० ) दुष्ट, कुचन वक्ता, मुंहफट ।  
 कुविक्रम तत् ( पु० ) आत्याचार, उपद्रव, गठना ।—१ ( पु० ) उपद्रवी, दुर्जन, दुरात्मा, शठ ।

कुविचार तत्० ( पु० ) अन्याय विचार, अवयवार्थ विचार, नीच विचार ।

कुविन्द तत्० ( पु० ) तन्तुघाय, कपड़ा बनाने वाला, मूत्र के गर्भ और विश्वकर्मा के औरस से उत्पन्न जाति विशेष, जुलाहा ।

कुचिन्दु तत्० ( गु० ) नीचवीर्य, अधमपुत्र, दुष्ट का पुत्र ।

कुचिहङ्ग तत्० ( पु० ) अधम पत्नी, वाज पत्नी ।

कुबुद्धि तत्० ( स्त्री० ) मन्दबुद्धि, भ्रान्तबुद्धि मति-धम ।

कुवृत्ति तत्० ( पु० ) अधमव्यपार, नीचकर्म, निन्दित वासना ।

कुचेर तत्० ( पु० ) यचराज, धनेश, किन्नरेश, धन का देवता, देवताओं का कोषाध्यक्ष, महर्षि पुण्ड्रिक का पोता, और विश्रवा के ये पुत्र थे । यक्ष नामक भूतयोनि विशेष के ये राजा और चौथे लोकपाल हैं । इनकी राजधानी का नाम अलका है । इनका नाम वैश्रवण है, परन्तु इनके अतिशय क्रूरप होने के कारण इनका नाम कुचेर पड़ा, इनके तीस पैर और आठ दाँत हैं, और देखने में भी अत्यन्त क्रूर हैं । महर्षि भरद्वाज की कन्या देववर्णिनी के गर्भ से यह उत्पन्न हुए थे ।

कुश तत्० ( पु० ) [ कुम् + अल् ] स्वनाम प्रसिद्ध तृण विशेष, दर्भ, कुशा, द्वीप विशेष, महाराजा श्री रामचन्द्र का पुत्र, यह महर्षि वाल्मीकि के तपो-बल से सीता के गर्भ से उत्पन्न हुए थे । इनकी राजधानी का नाम कुशावती है ।—ध्वज ( पु० ) मिथिला के राजा का नाम, राजा इन्द्र रोमपाद के यह पुत्र थे, सीतादेवी के यह चाचा और सीरध्वज जनक के छोटे भाई थे । मरुहवी और श्रुतकीर्ति नाम की इनकी दो कन्याएँ थी, जो ययाक्रम भरत और शुभ्र से कथाही गई थीं ।

—नाभ ( पु० ) महाराजा कुश का पुत्र, प्रजा-पति ब्रह्मा का एक पराक्रमी पुत्र, कुश नामक था, उसके चार पुत्र थे, उनमें

नाभ था । कुशनाभ ने महोदय नाम का नगर बसाया था ।

कुशकण्डिका तत्० ( स्त्री० ) सद्य प्रकार के होमों के लिये अग्नि का संस्कार करने की विधि ।

कुशमुद्रिका तत्० ( स्त्री० ) कुश की पत्नी, कुश की मुन्दरी ।

कुशल तत्० ( पु० ) भलाई, कल्याण, मङ्गल, पुण्य, ( गु० ) शिक्षित, निपुण, दक्ष ।—ता कुशलसंम, कल्याण, निपुणता, दक्षता ।—क्षेम ( पु० ) मङ्गल, कल्याण ।

कुशलाई तद्० ( स्त्री० ) मङ्गलमय, चतुरार्द, निपुणता ।

कुशलात तद्० ( स्त्री० ) कुशलसंम, मङ्गल । कुशास्यली तत्० ( स्त्री० ) द्वारका, श्रीकृष्ण की पुरी ।

कुशासन तत्० ( पु० ) कुशनिर्मित आसन, कुन्धित आसन, अत्याचार सहित आसन ।

कुशिक तत्० ( पु० ) मुनि विशेष, एक राजा का नाम, ये राजा महर्षि विश्वामित्र के पितामह, और गाधिराजा के पिता थे ।

कुशिचा तत्० ( स्त्री० ) असदुपदेश, हानिकारी सिपायन ।

कुशील तत्० ( गु० ) दुरात्मा, दुष्ट स्वभाव ।

कुशीलय तत्० ( पु० ) नटविशेष, कथक, देश विदेशों में कोर्तंगान करने वाले ।

कुशूला तत्० ( स्त्री० ) देहरी, कुठिनो, अन्न रखने के लिये मिट्टी का बना एक प्रकार का बड़ा भाण्ड ।

कुशेशय तत्० ( पु० ) कमल, पद्म, सारसपत्नी । —कर ( पु० ) सूर्य ।

कुशोदक तत्० ( पु० ) [ कुश + उदक ] कुश सहित जल, तर्पण ।

कुपीद तत्० ( पु० ) वृत्ति, जोषिका, मूद लेकर ऋण देना, ब्याज रूपैया, धार्डू पिक, ( गु० ) जड़, चेष्टा रहित, निर्दय ।

कुष्ट तत्० ( पु० ) कुम् + क्त, कोड़, रोगविशेष, महा-व्याधि, इस रोग के अठारह भेद हैं । जिनमें सात

महा दुःख और कष्ट साध्य अथवा असाध्य हैं ।  
 ये ग्यारह उतने भयङ्कर नहीं हैं तीसरी कष्टदायी अवस्था  
 है । एक प्रकार की लता ।—कृन्तन ( ५० ) पंचार-  
 नाशिनो ( खो० ) एक प्रकार की बेल, जिससे कुछ  
 रोग छूटता है । सोमराजी, सोमराज यल्ली ।—  
 सूक्ष्म ( ५० ) श्रीयधि विशेष, किरवाला ।  
 कुष्ठी तत्० ( ५० ) कौडी, कुष्ठरोगी ।  
 कुष्माण्ड तत्० ( ५० ) फल विशेष, कौहड़ा,  
 कुम्हड़ा, भनुषा ।  
 कुसङ्क तत्० ( ५० ) दुर्जन सहवास ।  
 कुसङ्गत तद्० ( ५० ) बुरा साथ, दुर्जन सह ।  
 कुसमङ्ग तद्० ( ५० ) अनावसर में भी, बुरे दिनों में  
 भी, आर्पण का समय ।  
 कुसमय तत्० ( ५० ) कठिन समय, छोटे दिन ।  
 कुशारात तद्० ( खो० ) कुशलार्थ ।  
 कुसीद तत्० ( ५० ) देखो कुषीद ।  
 कुसुम तत्० ( ५० ) पुष्प, फूल, एक प्रकार का लाल  
 फूल, जो कपड़े रँगने के काम में आता है ।—पुर  
 ( ५० ) नगर विशेष, पाटलीपुत्र, पटना ।  
 —वाण ( ५० ) कामदेव ।—शर ( ५० )  
 कामदेव, मदन ।—स्तचक ( ५० ) पुष्पगुच्छा,  
 फूलों का गुच्छा ।—कर ( ५० ) अगुविशेष,  
 सन्नतकगु ।—अञ्जलि ( ५० ) पुष्पाञ्जलि, ग्रन्थ  
 विशेष, न्याय शास्त्र का एक ग्रन्थ ।—युध ( ५० )  
 कन्दर्प, मदन ।  
 कुसुमित तत्० ( ५० ) उष्णित, प्रफुल्ल, प्रफुल्लित ।  
 कुसुम्भ तत्० ( ५० ) पुष्पविशेष, कुसुम फूल ।  
 —र ( ५० ) रङ्ग विशेष ।  
 कुस्वप्न तत्० ( ५० ) दुःस्वप्न, अरिष्ट दर्शन ।  
 कुहक तत्० ( ५० ) माया, दन्द्रजाल, जाल,  
 मायावी, कुटिल, करवी, छली ।  
 कुहड़, कुम्हड़ तद्० ( ५० ) कुष्माण्ड, कौहड़ा ।  
 कुहवर, कौहसर दे० ( ५० ) स्यान विशेष, विवाह  
 के अनन्तर घर दुलहिन के बैठने के लिये सजा  
 हुआ घर ।  
 कुहर तत्० ( ५० ) गहर, झिड़, गुहा, कान के बीच  
 का भाग, कण्ठ थब्द ।

कुहरा दे० ( ५० ) कोहरा, कुहेमा, कुहासा ।  
 कुहराम दे० ( ५० ) बिलखिलाना, बिलाप, रोना,  
 रोदन ।  
 कुही दे० ( ५० ) पक्षिविशेष, बाज पक्षी ।  
 कुहासा दे० ( ५० ) कुडेलिका, कुहरा ।  
 कुहु तत्० ( खो० ) कामायस्या, जिस अमायस्या को  
 चन्द्रमा नहीं देख पड़ते । कोकिल ध्वनि, कोइल  
 का शब्द ।  
 कुहुक तद्० ( ५० ) कोकिल का शब्द ।  
 कुहुकना दे० ( क्रि० ) आर्तस्वर करना, चिधा-  
 इना, चिन्ताना ।  
 कुहू तत्० देखो कुहु ।  
 कूभा दे० ( ५० ) कूप, ईनारा ।  
 कूभार दे० ( ५० ) आश्रित मास, मातयां महीना ।  
 कूच दे० ( ५० ) रत्नी, व्रीज विशेष ।  
 कूचो दे० ( खो० ) बुहारी, उचारण, यदनी ।  
 कूतना दे० ( क्रि० ) माल ठहराना, मुष्पनिर्द्धार-  
 ण करना ।  
 कूक दे० ( खो० ) शब्द, ध्वनि, आर्त प्वनि, दुःखित  
 शब्द ।  
 कूकना दे० ( क्रि० ) चिन्ताना, योलना, बाहुकुह  
 करना, आह मानना, बिलाप करना ।  
 कूकर तद्० ( ५० ) कुत्ता, कुकुर ।  
 कूकरी दे० ( खो० ) सूत की गट्टी ।  
 कूकू दे० ( ५० ) कर्कश का शब्द ।  
 कूचिका दे० ( खो० ) तूनिका, तूली, कूचो,  
 सलाई ।  
 कूचिया दे० ( खो० ) इम्ली, कतपट्टी ।  
 कूची दे० ( खो० ) तृणनिर्मित तुलिका, जिससे  
 दीवार में जूना लगाया जाता है ।  
 कूजन तत्० ( ५० ) शब्द स्वर, ध्वनि, पत्ती का  
 शब्द ।  
 कूजना तद्० ( क्रि० ) शब्द करना, घोसना ।  
 कूजित तत्० ( ५० ) पत्ती की ध्वनि, बिहङ्ग-  
 ध्वनि ।  
 कूजहिं तद्० ( क्रि० ) कूजने हैं, गुंजारते हैं ।



कूट तत्० ( पु० ) पर्वत, पहाड़, पहाड़ की चोटी, शिखर, कपट, सवुह, राशि, बल, सड़ा हुआ, कागज़, ध्यङ्ग्योक्ति, श्लेषयुक्त बात ।  
 कूटना दे० ( क्रि० ) बीसना, खाड़ना, कुचलना, पीटना, मारना ।  
 कूटार्थ तत्० ( पु० ) गुह्यार्थ ।  
 कूटसाक्षी तत्० ( पु० ) मिथ्यासाक्षी, कृत्रिम साक्षी, एच पेच दार साक्षी ।  
 कूडा दे० ( पु० ) भाडना, बृहानर, कतवार, घास पात, अगड बगड ।  
 कूण्डा दे० ( पु० ) मिट्टी का बड़ा पात्र, कठोरा, कठरा ।  
 कूड़ दे० ( पु० ) सूख, असमक, अनभिन्न ।  
 कूत दे० ( पु० ) अटकल, अज्ञात, परख ।  
 कूतना दे० देखो कूतना ।  
 कूथना दे० ( क्रि० ) कहरना ।  
 कूदना दे० ( क्रि० ) फादना, उछलना ।  
 कूप तत्० ( पु० ) खननम एयात जलाशय, कुँआ, इनारा, नदी के मध्यस्थ पर्वत या घूत ।—मण्डुक ( पु० ) कूप का मेटक, मरुपत्र ।  
 कूपार तत्० ( पु० ) समुद्र, जलधि ।  
 कुयरी दे० ( स्त्री० ) कंस क दामो, काठ की या बौस की मुड़ी हुई लकड़ी ।  
 कूर तद्० ( पु० ) कपटी, कठोर, टेढ़ा । अन्न, भक्त, भात ।  
 कूर्च तत्० ( पु० ) भौंहा के मध्य का स्थान, मयूर पुच्छ ।  
 कूर्हन तत्० ( पु० ) कूदना, खेलना ।  
 कूर्नी तत्० ( स्त्री० ) हथा, कच्छी, कच्छुल ।  
 कूर्म तत्० ( पु० ) कच्छप, कलुआ, बाह्य वायुविशेष ।  
 —चक्र ( पु० ) कृषि सम्बन्धी एक चक्र विशेष, पूजा के लिये यन्त्र विशेष ।—पृष्ठ ( पु० ) कलुवे की पीठ ।—राज ( पु० ) कच्छपराज, भगवान् का अवतार विशेष ।  
 कूल तत्० ( पु० ) तीर, किनारा, तट, नदी आदि के जल का समीप ।—क ( पु० ) कृत्रिम पर्वत ।  
 --द्रुम ( पु० ) तीरस्थित वृक्ष ।

कूडा दे० ( पु० ) जूतड़, नितम्ब ।  
 कूली दे० ( पु० ) मोटिया, मजूरा ।  
 कूप्माण्ड तत्० ( पु० ) गणदेवता विशेष, कँहड़ा ।  
 कूप्माण्डा तत्० ( स्त्री० ) देवी विशेष, भगवती ।  
 कृकवाक तत्० ( पु० ) मयूर, मोर ।—ध्वज ( पु० ) कार्तिकेय, पदानन ।  
 कृकलाश तत्० ( स० ) ( पु० ) गिरगिट, सरट ।  
 कृच्छ्र तत्० ( पु० ) तपस्या, कष्ट, पीडा, पापनिवारणार्थ सन्तापनादि व्रत, रोग विशेष ।—गत ( पु० ) यन्त्रणायुक्त, दुःखी, पापी, रोगी ।  
 कृच्छ्रातिकृच्छ्र तत्० ( पु० ) प्रायश्चित्तान्न व्रत विशेष ।  
 कृत तत्० ( पु० ) किया, बनाया, रचित, सत्युग ।  
 —क ( पु० ) कार्पनिक, कृत्रिम ।—कर्मा ( पु० ) कार्यक्षम, प्रवीण, शिक्षित, निपुण, दक्ष ।—कार्य ( पु० ) सम्पादित कार्य, चरितार्थ ।—काल ( पु० ) निश्चित समय ।—कृत्य पूर्ण काम, कृतकार्य, प्राप्त मनोरथ ।—झ ( पु० ) उपकार न मानने वाला ।  
 —झता ( स्त्री० ) अकृतज्ञता ।—झताई ( स्त्री० ) हितैषी के प्रति अहिताचरण, अकृतज्ञता ।—ई ( पु० ) उपकार मानने वाला ।  
 कृतयुग तत्० ( पु० ) सत्ययुग, उत्कृति का समय आदि, युग १७२००० वर्ष का यह युग होता है ।  
 कृतवर्मा तत्० ( पु० ) यदुवंशी राजा कनक क पुत्र, यह कृतवर्मा महाभारत के युद्ध के कृतवर्मा से भिन्न है ।  
 कृतविद्य तत्० ( पु० ) शास्त्रज्ञ, शास्त्रदत्त ।  
 कृतवीर्य तत्० ( पु० ) नृपविशेष, यदुवंशी ए राजा का नाम ।  
 कृतान्त तत्० ( पु० ) यमराज, मृत्यु, काल सिद्धान्त, गुभासुम ।  
 कृतार्थ तत्० ( पु० ) सम्पादित कार्य, सिद्ध मनोरथ निहाल ।  
 कृति तत्० ( स्त्री० ) कार्य, काम, आचरण, उपकारण ।  
 कृति तत्० ( स्त्री० ) चमड़े का रस्सी, कृति नलत्र ।

कृपनाई तद्ग० ( ख० ) कृपणता, सुमङ्गायन ।  
 कृमि तद्ग० ( पु० ) कीट, कीड़ा, किरवा ।—प्र  
 ( पु० ) बायविद्वङ्ग ।—जग्धा ( पु० ) काला,  
 अगक ।  
 मिल तद्ग० ( गु० ) कीड़ों से भरा, कीटयुक्त ।  
 रा तद्ग० ( गु० ) दुर्बल, दुबला, चीप, पतला,  
 सूख ।—ता ( ख० ) दुर्बलता, चीपता ।—त्त  
 ( गु० ) मन्ददृष्टि ।  
 राङ्गी तद्ग० ( ख० ) पतली खो, दुर्बलाङ्गी,  
 चीणाङ्गी ।  
 रातु तद्ग० ( पु० ) अग्नि, अतल, आरा ।  
 राश्व तद्ग० ( पु० ) मुनिविशेष, राजाविशेष ।  
 शोद्दर तद्ग० ( गु० ) चीणमध्य, चीणोदर,  
 दुर्बलशरीर ।  
 पक तद्ग० ( पु० ) किसान, हरवाह, कर्षक ।  
 पाण दे० ( पु० ) किसान ।  
 पि तद्ग० ( ख० ) खेती, चास, वैश्यवृत्तिविशेष ।  
 —कर्म ( पु० ) हलचलाना, खेती करना ।  
 —जीवी ( गु० ) कृषक, किसान ।  
 पी तद्ग० ( ख० ) खेती ।—चल ( पु० ) किसान,  
 कृषिजीवी ।  
 प्ण तद्ग० ( पु० ) विष्णु का पूर्णावतार, यह  
 माता देवकी और पिता यमुदेव से उत्पन्न हुए थे,  
 इन्होंने अनेक प्रजापौत्रक राज्यप्रकृति, दानयों  
 को मार कर धर्म स्थापित किया था ।—हैपायन  
 ( पु० ) महर्षिपराशर के औरस और दासराज की  
 पालित कन्या सत्यवती के गर्भ से यह उत्पन्न  
 हुए थे । इनकी माता ने अपना गर्भ होय में  
 फेंक दिया था, इस कारण इनका नाम हैपायन  
 पड़ा था, इन्होंने वेदों का विभाग किया था,  
 इस कारण इनको व्यास नाम से लोगों ने  
 प्रसिद्ध किया । इन्होंने महर्षि ने अष्टादश पुराण  
 बनाये हैं । कोई कोई कहते हैं कि व्यास नाम  
 के अनेक महर्षि हुए हैं । अतएव अष्टादश पुराणों  
 के कर्ता व्यास नाम धारी मिश्र मिश्र श्रुति हैं ।  
 मिश्र ( पु० ) प्रबोध-चन्द्रोदय नाटक के कर्ता

ये ही कृष्ण मिश्र थे । ये राजा कीर्तिवर्मा के  
 सभासद थे । यह कीर्तिवर्मा चन्देल राजा था ।  
 इसने वेदि के राजा कर्णदेव का पराजय किया  
 था । इसका समय सन् १०५० ई० से १११६  
 ई० के बीच में निश्चित होता है, अतः कृष्ण-  
 मिश्र का भी यही समय मानना पड़ता है ।  
 कृष्णकर्म तद्ग० ( पु० ) निन्दितकर्मकारी, पापा-  
 चारयुक्त, पापविशिष्ट, अपराधी, पापी, दुष्कृती ।  
 कृष्णगन्धा तद्ग० ( ख० ) शोभाञ्जनवृक्ष, सहिजन  
 का वृक्ष ।  
 कृष्णचतुर्दशी तद्ग० ( ख० ) कृष्णपक्ष की चतु-  
 र्दशी, धृतचतुर्दशी ।  
 कृष्णजीरा तद्ग० ( पु० ) काला जीरा, कर्लीजी ।  
 कृष्णता तद्ग० ( ख० ) कृष्णवर्ण, कालापन,  
 घुघुची, खामता ।  
 कृष्णतुलसी तद्ग० ( ख० ) काली तुलसी ।  
 कृष्णपत्त तद्ग० ( पु० ) अंधेरा पाल, यदि, चन्द्रमा  
 के हास का काल ।  
 कृष्णफला तद्ग० ( ख० ) धाकुची, करीदा, कर-  
 मद्क ।  
 कृष्णभद्रा तद्ग० ( ख० ) शीघ्र विशेष, कुटकी ।  
 कृष्णभूमि तद्ग० ( ख० ) काले वर्ण की मृत्तिका  
 युक्त देश ।  
 कृष्णमय तद्ग० ( पु० ) कृष्ण में लीन, अधिका  
 कृष्ण ।  
 कृष्णलीह तद्ग० ( पु० ) शयस्कान्त भणि, बुन्धक  
 पत्थर ।  
 कृष्णवक्त्र तद्ग० ( पु० ) काले मुँह यथा बानर, सङ्गूर ।  
 कृष्णवर्तमा तद्ग० ( पु० ) अग्नि, हुतायन,  
 विश्वक वृक्ष ।  
 कृष्णवानर तद्ग० ( पु० ) काला वानर, कृष्णवर्ण  
 कवि ।  
 कृष्णवीज तद्ग० ( पु० ) तरपूज, काले बीज वाला  
 तरपूज ।  
 कृष्णवृत्तिका तद्ग० ( ख० ) कम्मारी शोषधि  
 का नाम ।

कृष्णाश्रित तत्० (गु०) कृष्ण के भक्त, वैष्णव,  
श्री कृष्ण के आश्रित ।

कृष्णसार तत्० (गु०) कृष्ण का मिन, अर्जुन ।

कृष्णसर्प तत्० (गु०) कालासर्प, करदृष्ट सर्प ।

कृष्णसार तत्० (गु०) हरिण विशेष, यज्ञीय  
मृग, काला हरिण ।

कृष्णसारङ्ग तत्० (गु०) कृष्णवर्ण मृग,  
हरिण ।

कृष्णा तत्० (स्त्री०) काले रङ्ग की स्त्री, द्रौपदी,  
यह जन्म के समय काली थी, इसी कारण इसका  
नाम भी कृष्णा पड़ा था । यमुना, एक नदी का  
नाम, यह नदी दक्षिण भारत में इसी नाम से  
प्रसिद्ध है । काली मरसो ।

कृष्णाग्रज तत्० (गु०) श्री कृष्ण का बड़ा भाई,  
बलदेव, बलराम ।

कृष्णामर तत्० (गु०) काला अमर ।

कृष्णाचल तत्० (गु०) काला पहाड़, शैतक  
पर्वत, यह गिरनार के नाम से इस समय प्रसिद्ध  
है, काठियावाड़ में जूनागढ़ के पास है ।

कृष्णाजिन तत्० (गु०) कृष्णसार मृग का चर्म,  
कालामृग चर्म ।

कृष्णाफल तत्० (गु०) काली मिर्च ।

कृष्णार्पण तत्० (गु०) निष्काम कर्म, अपने कर्म फल  
श्री कृष्ण भगवान् को निवेदन करण, फलाकाङ्क्षा  
से रहित कर्म सम्पादन ।

कृष्णोपकुल्या तत्० (स्त्री०) ओषध विशेष, पीपती ।  
कृसर तत्० (गु०) चित्रान्न, खीचड़ी ।

कृप्त तत्० (गु०) रचित, स्थिरीकृत, निर्मित ।—केश  
(गु०) जटाधारी ।

के दे० (शु०) सम्बन्धबोधक, प्रनार्थक, कौनका  
छोटा रूप, सम्बन्धबोधक विभक्ति का बहुवचन ।

कैत्रोड़ा दे० (गु०) केतकी, पुष्प विशेष ।

कैचुवा दे० (गु०) कीट विशेष ।

कैकड़ा दे० (गु०) कर्कट, गोंगाटा ।

कैकय तत्० (गु०) सूर्य दशम्य राजा विशेष, देय  
विशेष, जो सिन्धु देय की धीमा पर स्थित है ।

कैकयी तत्० (स्त्री०) अयोध्या के अधिपतिमहाराज  
दशरथ की स्त्री और भरत की माता । कैकय  
कैकेय राज्य के राजा की यह कन्या थी । कैकय  
देश पञ्जाब में त्रिपाशा और शतद्रु के बीच में  
प्राचीन वाह्यीक प्रदेश के दक्षिण को और है ।

कैकर तत्० (गु०) डरा, भँगा, चक्र, देड़ा ।

कैका तत्० (स्त्री०) मधुच्छनि, मोर की बोली ।

कैकी तत्० (गु०) मोर, मधुर, शिखी, कैकावल ।

कैचित्तु तत्० (शु०) कौन से, कौन, कोई ।

कैतन तत्० (गु०) गृह, ध्वजा, निमन्त्रण, श्री  
कौंडा, काम, चिन्ह ।

कैतिक दे० (गु०) घोड़े, दो चार, अप्प परिमाण

कैतकी तत्० (स्त्री०) कैवड़ा का वृक्ष, कैवड़े के फूल  
कैता दे० (शु०) कितना ।

केतु तत्० ध्वजा, पताका, नवमग्रह, राहु का शर्  
पापग्रह, उत्पात चिन्ह, दानवविशेष, ८  
मन्वन्त के अनन्तर देवतागण पंक्ति से बैठ  
अमृत पान करते थे, केतु दानव भी देवरूप धा  
कर यहाँ बैठ गया, चन्द्रमा और सूर्य ने यह  
प्रकाशित कर दी । उसी समय भगवान्  
यद्यपि उनका सिर फाड़ डाला, तथापि अमृत  
करने के कारण वे मरे नहीं, किन्तु एक के दो  
गये, मस्तक भरण का नाम राहु और शरीर  
नाम केतु हुआ । ये दोनों ग्रह माने जाते हैं ।  
की दशा सात वर्ष तक रहती है । ये दोनों वाप  
हैं ।

केतुतारा तत्० (स्त्री०) धूमकेतु, अशुभ  
तारा, पुच्छल तारा ।

केतुमाल तत्० (गु०) जम्बु दीप के नव खरबों  
का एक एखद ।

केते दे० (गु०) कितने, के ।

कैदली तद्० (स्त्री०) रम्भा, कदली, कैला, एक  
फलने वाला पेड़ ।

केदार तत्० (गु०) खारी, क्षेत्र, क्षेत्र, पर्वतवि  
जो बदरीनारायण के पास है, तीर्थस्थान, १  
भूमिविशेष ।—राण्ड (गु०) खरब विशेष एक  
पुराण के अन्तर्गत एक भाग या खरब ।

केन्द्र तत्० (५०) लग्न, लग्न का चौथा, पांचवां और दशवां स्थान, गोलाकार वस्तु का मध्यस्थान, गोलाकार वा वृत्तचक्र का यह स्थान, जहां से परिधि तक खींची गयी रेखाएँ आपस में घटावर हैं।

केन्द्रीभूत तत्० (५०) राशिकृत, एकत्रित, सङ्घुचित मङ्गीर्ष, अक्षम्भुषं।

केमदुम्भ तत्० (५०) जन्मकाल का ग्रह, योग विशेष, दरिद्रयोग।

केयूर तत्० (५०) अलङ्कारविशेष, अङ्गद, याज्ञ बन्द।

केर तद्० (४०) सम्बन्धाद्यं, का, जो, के।— (५०) केलावृत्त, सम्बन्ध व्योतक का खोलिङ्ग।

केरल तत्० (५०) देश विशेष, मालाबार देश, पश्चिमी घाट नामक पर्वत और मसुद्र के बीच का एक भाग, जो कावेरी नदी के उत्तर की ओर है। इस देश की मुख्य नदियाँ तेत्रयती, गटाप्रती और काली नाम की हैं। सम्भव है इसी काली नदी का पहने सुरत्त नाम रहा हो। आज केरल कनाड़ा का एक भाग समझा जाता है।

केला तद्० (५०) वृक्ष और फल विशेष, कदली।

केलि तत्० (खी०) परिहाम, खेल, विहार, मोड़ा।  
—कला (खी०) रतिक्रिया, स्रस्वती की घोषा।

केलिगृह तत्० (५०) नाटकशाला, रङ्गशाला, नाटक खेलने का स्थान।

केली तत्० (खी०) सुलभायन, आनन्द, सुख, क्रीड़ा, खेल।

केचट तद्० (५०) कैयर्त, दास, धीयर, मनुवर, मङ्गल।

केचड़ा दे० (५०) वृक्षविशेष, फूलविशेष, एक प्रकार का जल।

केवल तत्० (५०) मात्र, असहाय, अन्यहीन, एकाकी, एक प्रकार का ज्ञान, निर्णीत।

केचली तत्० (५०) एकाकी, शून्यविशेष, जैनिषों की मुक्ति, जन्मपत्री।

केवाड़ दे० (५०) द्वार, कपाट।

केवान दे० (५०) कॅवल, कमल।

केश तत्० (५०) दुःख, पीड़ा, वेदना, यन्त्रणा।

केश तत्० (५०) धान, रोम, लोम, सिर के बाल, कच।—कलाप (५०) केशसमूह, चोटी, लूड़ा।

—ग्रह (५०) केयाकर्षण, केय पकड़ कर खींचना।—पाश (५०) केश समूह।—विन्यास (५०) छोटी बनाना, कप्ररीबन्धन।—मा-जिर्जनी (खी०) कङ्कतिका, कंगही।

केशर तत्० (५०) नागकेशर वृक्ष, फूलों की पंखुड़ियों, खनाम प्रसिद्ध, सुगन्धद्रव्य विशेष। विंह और घोड़ों के गरदन पर के बाल।

केशरञ्जन तत्० (५०) भगरा पौधा, वृक्ष विशेष।

केशरिया तद्० (५०) पोलाक विशेष, केशर का रङ्ग, एक प्रकार का पहनावा, जिसे राजपूत युद्ध के समय पहनते थे, यह पहनावा एक प्रकार का शपथ समझा जाता था, अर्थात् केशरिया पहन कर युद्ध से हट नहीं सकते, मर भले ही जाय।

केशरी तत्० (५०) विंह, भृगराज, एक दानर का नाम, हनुमान जो का पिता।

केशव तत्० (५०) श्रीकृष्ण, विष्णु, भगवान् के केशव नाम पड़ने का कारण भगवान् ने स्वयं कहा है कि सूर्य चन्द्रमा आदि प्रकाश शील पदार्थों को केश कहते हैं, वे हमारे हैं, अतएव हमारा नाम केशव है। यथा :—

“अंशको ये प्रकाशन्ते मम ते केशचञ्जिताः।

सर्वज्ञाः केशव तस्मान्मनुर्मा द्विजमत्तमाः” ॥

—महाभारत।

केशाकेशी तत्० (५०) परस्पर बाल पकड़ के लड़ना।

केशी तत्० (५०) उत्तम केश युक्त, एक दानव, यह राजा कंस का अनुचर था। कंस की आज्ञा से घोड़े का रूप बन कर बुन्दावन गया और अनेक गोपाल तथा गीर्षों को इसमें मार डाला, पुनः भगवान् कृष्ण ने इसकी शास्ती की और मार डाला।

कृष्णाश्रित तत्० ( ५० ) कृष्ण के भक्त, वैष्णव, श्री कृष्ण के आश्रित ।

कृष्णासुर तत्० ( ५० ) कृष्ण का मित्र, अर्जुन ।

कृष्णासर्प तत्० ( ५० ) काणासर्प, करदृष्ट सर्प ।

कृष्णासार तत्० ( ५० ) हरिण विशेष, यज्ञीय मृग, काला हरिण ।

कृष्णासारङ्ग तत्० ( ५० ) कृष्णवर्ण मृग, हरिण ।

कृष्णा तत्० ( स्त्री० ) कातो रङ्ग की स्त्री, द्रौपदी, यह जन्म के समय काली थी, इसी कारण इसका नाम भी कृष्णा पड़ा था । यमुना, एक नदी का नाम, यह नदी दक्षिण भारत में इसी नाम से प्रसिद्ध है । काली सरसो ।

कृष्णाप्रज तत्० ( ५० ) श्री कृष्ण का बड़ा भाई, यशदेव, बलराम ।

कृष्णामरु तत्० ( ५० ) काला अमर ।

कृष्णाचल तत्० ( ५० ) काला पहाड़, रैवतक पर्वत, यह गिरनार के नाम से इस समय प्रसिद्ध है, काठियावाड़ में जूनागढ़ के पास है ।

कृष्णाजिन तत्० ( ५० ) कृष्णसार मृग का चर्म, कालामृग चर्म ।

कृष्णाफल तत्० ( ५० ) काली मिर्च ।

कृष्णार्पण तत्० ( ५० ) निष्काम कर्म, अर्पण कर्म फल श्री कृष्ण भगवान् को निवेदन करण, फलाकाङ्क्षा से रहित कर्म सम्पादन ।

कृष्णोपकुल्या तत्० ( स्त्री० ) ओषध विशेष, पीपरी ।

कृसर तत्० ( ५० ) चित्रान्न, खीचड़ी ।

कृप्त तत्० ( ५० ) रचित, स्थिरीकृत, निर्मित ।—केश ( ५० ) जटाघाटी ।

के दे० ( अ० ) सन्धधोषक, प्रदनायक, कौनका छोटा रूप, सन्धधोषक विभक्ति का बहुवचन ।

कैओड़ा दे० ( ५० ) केतकी, पुष्प विशेष ।

कैचुवा दे० ( ५० ) कीट विशेष ।

कैकड़ा दे० ( ५० ) ककट, गेंगा ।

केकय तत्० ( ५० ) सूर्य यज्ञीय राजा विशेष, देश विशेष, जो सिन्धु देश की सीमा पर स्थित है ।

केकयी तत्० ( स्त्री० ) अयोध्या के अधिपति महाराज दशरथ की स्त्री और भरत की माता । केकय केकेय राज्य के राजा की यह कन्या थी । केकय देश पञ्जाब में विपाशा और शतद्रु के बीच में है, प्राचीन याज्ञीक प्रदेश के दक्षिण को ओर है ।

केकर तत्० ( ५० ) डरा, भेंगा, यक्र, देहा ।

केका तत्० ( स्त्री० ) मधुच्छयनि, मोर की घोली ।

केकी तत्० ( ५० ) मोर, मयूर, गिण्टी, केकावत ।

केचित् तत्० ( अ० ) कौन से, कौन, कोई ।

केतन तत्० ( ५० ) गृह, ध्वजा, निमन्त्रण, क्रीड़ा, काँड़ा, काम, चिन्ह ।

केतिक दे० ( ५० ) घोड़े, दो चार, अल्प परिमाण ।

केतकी तत्० ( स्त्री० ) केवड़ा का वृक्ष, केवड़े के फूल ।

केता दे० ( अ० ) कितना ।

केतु तत्० ध्वजा, पताका, नवमग्रह, राहु का शरीर, पापग्रह, उत्पात चिन्ह, दानवविशेष, सन्धु मन्थन के अनन्तर देवतागण पंक्ति से बैठ कर अमृत पान करते थे, केतु दानव भी देवरूप धारण कर वहाँ बैठ गया, चन्द्रमा और सूर्य ने यह बात प्रकाशित कर दी । उसी समय भगवान् ने यद्यपि उनका सिर काट डाला, तथापि अमृत पान करने के कारण वे मरे नहीं, किन्तु एक के दो हो गये, मस्तक भाग का नाम राहु और शरीर का नाम केतु हुआ । ये दोनों ग्रह माने जाते हैं । केतु की दशा सात वर्ष तक रहती है । ये दोनों पापग्रह हैं ।

केतुतारा तत्० ( स्त्री० ) धूमकेतु, अशुभ सुख तारा, पुच्छल तारा ।

केतुमाल तत्० ( ५० ) जम्बु दीप के नव खरबों में का एक खरब ।

केते दे० ( ५० ) कितने, के ।

केदली तद्० ( स्त्री० ) रम्भा, कदली, केना, एक व फलने वाला पेड़ ।

केदार तत्० ( ५० ) खारी, खेत, क्षेत्र, पर्वतशिखर जो बदरीनारायण के पास है, तोर्यस्थान, शि भूमिविशेष ।—खण्ड ( ५० ) खण्ड विशेष स्कं पुराण के अन्तर्गत एक भाग या खण्ड ।

कोका दे० ( पु० ) धायभाई, फरिया, कंयल, वख्तियेव ।

कोकिल तत्० ( पु० ) कोयल, पिक ।—वास ( पु० ) आगवृक्ष ।

कोकिला तद्० ( ख० ) देखो कोकिल ।

कोकी तत्० ( स्त्री० ) चक्रवाकी, चकरई ।

कोङ्कण तत्० ( पु० ) शख्तियेव, देशविशेष, यह देश दक्षिण भारत में है ।

कोख तद्० ( पु० ) कुचि, गर्भ, जठर, पेट, पार्श्व ।  
—वन्ध ( पु० ) बन्ध्या, सन्तानहीन ।

कोजागर तत्० ( पु० ) आश्विन मास की पूर्णिमा, शरद का पर्व, महोत्सव ।

कोका, कोखी दे० ( स्त्री० ) गोदी, लहकों को डुलाने की कोली ।

कोछे दे० ( पु० ) कोय, कुचि ।

कोट, कोट्ट तत्० ( पु० ) गढ़, किला, दुर्ग ।  
—वारण ( पु० ) वार दीवारी ।

कोटर तत्० ( पु० ) घृष का खोंखला, खोंडरा, खोहड़ ।

कोटयी तत्० ( पु० ) नग्न स्त्री, विवस्त्र नारी ।

कोटा दे० ( पु० ) एक नगर का नाम, राजपूताने का एक राज्य ।

कोटि तत्० ( पु० ) करोड़, सौलाख, १०००००००, प्रश्न, एक और का भुज, शर्कों का अग्रभाग, पतला भाग ।—कल्प ( पु० ) सर्वदा, सर्वक्षण ।  
—वर्ष ( पु० ) करोड़ वर्ष, धाणापुर के नगर का नाम ।

कोट्टिर तत्० ( पु० ) जंटा, किरोटि, मुकुट ।

कोटीश तत्० ( पु० ) कोटि रूपे का धनी, महा-धनी, करोड़पती ।

कोटर तद्० ( पु० ) देखो ।—कोटर ।

कोटरी तद्० ( स्त्री० ) छोटा गृह ।

कोटा तद्० ( पु० ) घर, गृह ।

कोठी तद्० ( स्त्री० ) महाजनी घर, जहां देन लेन होता है ।

कोड़ना दे० ( क्रि० ) खोदना, खखोरना, खखो-लना, गढ़ा खोदना ।

कोड़ा दे० ( पु० ) चाबुक, कशा ।—करना ( व ) वश में करना, अधीन करना ।

कोड़ी दे० ( स्त्री० ) बीस संख्या से परिमित कोई वस्तु ।

कोढ़ दे० ( पु० ) कुष्ठ रोग ।—में ब्वाज निका-लना ( वा० ) एक दुःख में दूसरा दुःख, दुःख-पर दुःख पड़ना ।

कोड़ी दे० ( पु० ) कुष्ठरोगी, कुष्टी ।

कोण तत्० ( पु० ) गृह का एक देश, अर्धों का अग्रभाग, सीमा आदि बजाने का साधन, वाद्य विशेष, मङ्गलग्रह, दो रेखाओं का सन्धि-स्थान ।

कोतल दे० ( पु० ) अश्वमेद, बिना मवारी का सजा हुआ घोड़ा ।

कोथमीर दे० ( पु० ) कच्ची धनिया, धनियां की हरी पत्तियां ।

कोद दे० ( स्त्री० ) पक्ष, और ।

कोदण्ड तत्० ( पु० ) धनुष, धन्वा, धनुही ।

कोदो तद्० ( पु० ) अन्न विशेष, कोद्वय ।

कोद्वय } तद्० ( पु० ) ।  
कोद्वय } तत्० देखो कोदो ।

कोन तद्० ( पु० ) छूट, कोण ।

कोना कुथरा दे० ( वा० ) अनिश्चित कोण, किमो स्थान पर ।

कोन्त तद्० ( पु० ) कुन्त, माता, बर्ही, बह्वम ।

कोप तत्० ( पु० ) क्रोध, राग, तामस, रिप्त, विष ।—बन्ध ( पु० ) आत्यन्त क्रुद्ध ।

कोपना तद्० ( क्रि० ) क्रोधित होना, कुपित होना, कोप करना ।

कोपर, कोपल तद्० ( पु० ) कटोरा, कटोरी, तर्पण करने का पात्र, तर्ही ।

कोपान्वित तत्० ( पु० ) क्रुद्ध, क्रोधित ।

कोपित तद्० ( पु० ) क्रोधयोग्य ।

कोपी तत्० ( पु० ) कोपी, कुपित हुआ ।

केशर तत्० ( पु० ) कुंकुम, नागकेशर, केशर, घोड़े के गरदन पर के धाल, श्यामल ।

केहरि तद्० ( पु० ) सिंह, एक यानर का नाम ।

केहरी तद्० ( पु० ) देखो केहरि ।

केह दे० ( अ० ) कौन मनुष्य, कोई, कोई व्यक्ति, अनिर्दिष्ट व्यक्ति ।

केहि दे० किसे, किसको ।

कै दे० ( सर्व० ) कितना, कितने, बहुत, कौन ।

कैंचली दे० ( स्त्री० ) चाप का खोल, सर्पचर्म, कैगुल, किचुली ।

कैंची दे० ( स्त्री० ) कतरनी, अस्त्र विशेष ।

कैंकयी तत्० ( स्त्री० ) देखो कैकयी ।

कैंकर्य तत्० ( पु० ) किङ्करत्व, भृत्यता, दास्य, नवधा भक्ति का एक अङ्ग ।

कैंकसी तत्० ( स्त्री० ) लङ्केश्वर रावण और कुम्भकर्ण आदि की माता का नाम, यह सुमारी राक्षस की कन्या और विश्रया मुनि की पत्नी थी ।

कैंटम तत्० ( पु० ) एक राक्षस का नाम, शेष-शायी भगवान् के कर्णमल से इसकी उत्पत्ति बतलायी जाती है, यह बहुत बड़ा वीर था, भगवान् ही ने इसे मारा था ।—रि ( पु० ) नारायण, भगवान्, विष्णु ।—श्वरी ( स्त्री० ) दुर्गा, भगवती ।

कैंत दे० ( पु० ) फल विशेष, कैथा, कैय ।

कैंतक तत्० ( पु० ) केवड़े के फूल, केतकी पुष्प ।

कैंतय तत्० ( पु० ) छल, कपट, जुआ, मूँगा ।

—चाद ( पु० ) छलना, ठगना, प्रयत्नना औपध विशेष, चिरायता ।

कैंथ, कैंथा दे० ( पु० ) वृक्षविशेष, केत ।

कैंथी दे० ( स्त्री० ) मुडियाअक्षर, कायस्थों के द्वारा कल्पित एक प्रकार की नागरी लिपि ।

कैंमुतिक तत्० ( पु० ) न्यायविशेष, अनायास-सिद्धि, एक की सिद्धि से दूसरे की अनायास सिद्धि ।

कैंयट तत्० ( पु० ) ठयाकरणमहामाष्य के टीकाकार, ये काश्मीर के रहने वाले थे, ये अपने समय के ठयाकरण के विद्वानों में प्रधान

समझे जाते थे । इनका समय ग्यारहवीं शताब्दी के मत से निश्चित है । ( २ ) वे जो काश्मीरनियासी थे । २७७ ई० में इन्होंने अानन्दवर्द्धन के देयीशतक की टीका लिखी है । इनके पिता का नाम चन्द्रादित्य और पितामह का नाम वल्लभदेव था ।

कैंरव तत्० ( पु० ) कुमुद, रवेत कमल, कोई ।

कैंरी दे० ( स्त्री० ) छोटा आम, कच्चा आम ।

कैंल दे० ( पु० ) अङ्कुर, कोपल, गामा, एक प्रकार का बैलों का यर्ण, मटमैला रङ्ग ।

कैंलास तत्० ( पु० ) पर्वतविशेष, शिव और कुवेर का वासस्थान ।—निकेतन ( पु० ) महादेव, कुवेर ।

कैंचर्त तत्० ( पु० ) मल्लाह, मल्लुया, कर्णधार ।

कैंवल्य तत्० ( पु० ) मुक्ति, मोक्ष, निर्वाण, धर्म ज्ञान, परम धाम प्राप्ति ।

कैंशिक तत्० ( स्त्री० ) बालों की लट ।

कैंसा दे० ( अ० ) किस प्रकार, किस भांति । ( वा० ) किसी प्रकार का ।

कैंसे दे० ( अ० ) किस प्रकार से, क्योंकर ।

कैंसों दे० भावी, भविष्यत्, आगामी ।

कैंहों दे० कलङ्गा, कलङ्गा ।

को दे० ( अ० ) कर्मदाचक, द्वितीयावधि, सम्प्रदान का चिन्ह ।

कोई दे० ( अ० ) अनिश्चय, अनिर्दिष्ट ।—सी ( वा० ) कोई आदमी ।—न कोई ( वा० ) यह शयथा वह ।

कोऊ दे० ( स० ) कोई मनुष्य, अनिश्चित व्यक्ति ।

कोपरी दे० ( पु० ) जाति विशेष, काठी, करने वाली जाति ।

कोंचना दे० ( क्रि० ) बीधना, गोदना, पुमाना ।

कोण्डा दे० ( पु० ) कुम्भाण्ड, कोहडा ।

कोपल दे० ( पु० ) अङ्कुर, मञ्जरी, फली ।

कोक तत्० ( पु० ) चक्रवाक पक्षी, चक्रवा, बघेर, इस नाम का एक शृङ्गारी कवि जिसका बनाया ग्रन्थ कोकशास्त्र के नाम से प्रसिद्ध है ।—नद ( पु० ) लालकमल ।

कौला दे० (५०) संतरा, नीहूविशेष, नारङ्गी ।  
 कौड़ा दे० (५०) बड़ी कौड़ी, गडूविशेष ।  
 कौड़ियाला दे० (५०) सर्पविशेष, पैनेवाला, धनी,  
 नदी विशेष, सरसुनदी ।  
 कौड़ी दे० (छी०) घराटक, घराटिका, छोटा गडू,  
 धन, कमाई ।  
 कौण्य तत्त्वं (५०) राक्षस, रात में चलने वालों की  
 एक जाति ।  
 कौण्डिन्य तत्त्वं (५०) कुपिहन मुनि का पुत्र, विष्णु-  
 ग्राम, घाणक्य ।  
 कौतुक तत्त्वं (५०) कुतूहल, अभिलाष, उत्सव, हर्ष,  
 परिहास, विवाहादि उत्सव, परम्परागत महोत्सव,  
 गीत वाद्य आदि ।—(५०) हर्षाभिलाषी, परि-  
 हास करनेवाला, रसिक ।  
 कौतुकिया तद्द० (५०) कौतुक करने वाला, खेल  
 करने वाला, गिलवाड़ी, नट ।  
 कौतूहल तत्त्वं (५०) अद्भूत वस्तु देखने का अभि-  
 लाष, हर्ष, कौतुक ।  
 कौन दे० (सत्र) प्रनार्यक ।—स्त्रा (वा०) कौन,  
 किम प्रकार का ।  
 कौन्ता तद्द० (छी०) कुन्ती, पाण्डव माता ।  
 कौन्ती तद्द० (स्त्री०) कुन्तघाते, भाला धारण  
 करने वाला ।  
 कौन्तेय तत्त्वं (५०) कुन्ती के पुत्र, पाण्डव, अर्जुन ।  
 कौप तत्त्वं (५०) कृप मन्त्रन्त्री जल, कूपोदक ।  
 कौपीन तत्त्वं (५०) कौपीन, लँगोटी ।  
 कौमार तत्त्वं (५०) कौमारवस्था, बाल्यकाल, जन्म  
 से लेकर पाँच वर्ष की अवधि तक ।—(छी०)  
 मातृकाविशेष, कार्तिक की शक्ति, बराही कन्द,  
 कन्यावस्था ।  
 कौमुदी तत्त्वं (छी०) चन्द्रिका, ज्योत्स्ना, चन्द्रमा  
 का प्रकाश, कार्तिकोत्सव, कार्तिकी पूर्णिमा,  
 आश्विन की पूर्णिमा, व्रजाकरण का एक ग्रन्थ ।  
 कौमोदकी तत्त्वं (छी०) विष्णु की गदा का नाम,  
 श्री कृष्ण की गदा ।  
 कौर तद्द० (५०) कवल, ग्राम ।

कौरव तत्त्वं (५०) कुरुराज का वंश, कुरुदेश में  
 रहने वाले ।  
 कौरव्य तत्त्वं (५०) कुरुराज का वंश, मुनिविशेष ।  
 कौल तत्त्वं (५०) सत्कुलोद्भव, कुलीन, तान्त्रिकों के  
 अनुसार कुलाचारनामक धाममार्ग के उपासक,  
 चन्द्रशंख, ब्रह्मशानी, कवल ।  
 कौला दे० (५०) कोना, गोदी, आलिङ्गन ।  
 कौलव तत्त्वं (५०) द्वादश करणों में का तोसरा  
 करण ।  
 कौलिक तत्त्वं (५०) कुलपरम्पराप्राप्त, कुल पर-  
 म्परानुसार कार्यकारी । (५०) वाममार्गी, तन्मू-  
 वाय, तांती, पाण्डव ।  
 कौली दे० (छी०) शंखशर, गोदी ।  
 कौल्येय तत्त्वं (५०) कुकुर, कुत्ता ।  
 कौलेली दे० (५०) गन्धक ।  
 कौषा दे० (५०) काग, कौशा, कडवा ।  
 कौशेर तत्त्वं (५०) कुवेर सम्बन्धी, कुवेर का, कूट  
 नाम की औषधि, उत्तरदिशा ।  
 कौशेरी तत्त्वं (छी०) उत्तरदिशा, कुवेर की शक्ति ।  
 कौशल तत्त्वं (५०) ब्रह्मपुरवासी, निपुणता,  
 दक्षता ।  
 कौशली तद्द० (छी०) कुशलात, जुहार, कुशल  
 प्रश्न ।  
 कौशल्य तत्त्वं (छी०) राजा दशरथ की पटरानी,  
 श्रीरामचन्द्र जी की ये माता थीं, ये दक्षिण  
 कोशल के राजा की कन्या थीं और रामचन्द्र जी  
 के अश्वमेध यज्ञ समाप्त होने पर इन्होंने परलोक  
 यात्रा की ।  
 कौशाम्बी तत्त्वं (छी०) वत्सदेश की राजधानी का  
 नाम, प्रयाग से ३० मील उत्तर की ओर है ।  
 कौशिक तत्त्वं (५०) महर्षि विरवामित्र का दूसरा  
 नाम, ये महाराज कुशिक के वंश में उत्पन्न हुए  
 थे, गांधिराज इनके पिता का नाम है । इन्द्र,  
 उरु ।  
 कौशिकी तत्त्वं (छी०) एक नदी का नाम जो दर-  
 भङ्गा के पूरव की ओर बहती है, भागलपुर के



कोपीन तद्० ( खी० ) लगोट, लगोटी ।

कोवी दे० ( खी० ) एक तरकारी का नाम, खजाक, गोमी ।

कोमल तद्० ( गु० ) नरम, मृदु, सुकुमार, मनोम, मनोहर ।—ता मृदुता ।

कोमलताई तद्० ( खी० ) मृदुता, कोमलता, नरमाहट ।

कोयल तद्० ( पु० ) कोकिल, कोइल पक्षी ।

कोयला दे० ( प० ) अद्धार, खोरा, कोला ।

कोये दे० आँख के डेले, आँखों के बीच का श्वेत डेला या टेंडर ।

कोटक तद्० ( पु० ) कली, मुकुल, अविकसित द्रव्य, मुकुल ।

कोटङ्गी दे० ( खी० ) छोटी इलायची ।

कोर दे० ( पु० ) किनारा, छोर, कगर, प्रान्तभाग ।

कोरा दे० ( गु० ) नया, नवीन, विनायर्ता, विना उपयोग में आया हुआ, ( इसका प्रयोग वर्तन कपड़ा कागज आदि के लिये होता है ) ।

कोरे रहना दे० ( वा० ) निराश होना, मनोरथ सिद्ध न होना ।

कोरि दे० ( अ० ) खुरच कर, खोद कर, कोह कर ।

कोरी दे० ( खी० ) सादी, विनवर्ती, हिन्दू जुलाहा, कपड़ा धिने वाला ।

कोल दे० ( पु० ) खाली, खाल, सकड़ी गली, पहाडियाँ, भूकर, भूघर, एक जङ्गली जाति ।

कोला दे० ( पु० ) गोदी, बगल, उत्सङ्ग ।

कोलाहल तद्० ( पु० ) रोला, कलमल, शोरगुल, बहुत दूर तक जाने वाला अनेक प्रकार का अस्फुट शब्द ।

कोलियाना दे० गोद में लेना, कोरा लेना ।

कोली दे० ( पु० ) तन्मुवाय, ताती, कपड़े धनाने वाली एक जाति, छोटी गली, साफ़ गली ।

कोल्ह दे० ( पु० ) चरखी, तेल निकालने वा ऊख से रस निकालने की कल ।

कोविद तद्० ( पु० ) परिहत, बुध, निपुण, ज्ञानी ।

कोश तद्० ( पु० ) कमल का मध्यभाग, तलवार की म्यान, अस्त्रों को रखने का घर, अश्वकोश, भण्डार, खजाना, गद्दसग्रह, अभिधान ।

कोशला तद्० ( खी० ) अयोध्या नगरी, देशविश का नाम, इसका वर्णन रामायण में आया है । य सरसु नदी के किनारे है । पहले इसके दो भाग थे, उत्तरकोशला और दक्षिणकोशला । यह सुपुत्रम राजाओं की राजधानी थी ।—पुरी, कोशलपुरी ( खी० ) अयोध्या ।—धीश ( पु० ) श्रोतामन्त्र कोशल के राजा ।

कोप तद्० ( पु० ) देखो कोय ।

कोपाध्यक्ष तद्० ( पु० ) कोपाधीश, कोपाधिपति, भण्डारी, खजाची ।

कोष्ठ तद्० ( पु० ) गृहमध्य, कोष्ठमध्य, पाकाग, खाना, खात ।—खट्ट ( पु० ) मलासरोध, मन्त्र क्कावट, रोगविशेष ।

कोष्ठगार तद्० ( पु० ) भण्डार, कोप, खजाना ।

कोस तद्० ( पु० ) मार्ग की सन्ध्याई का परिमाण, आठ हजार या चार हजार हाथ को सन्ध्याई, दो मील ।

कोसना या कोशना दे० ( क्रि० ) शापदेना, धार्तां से दु खी करते रहना ।

कोसा दे० ( पु० ) क्षीमी, फली, ऊन विशेष ।

कोह तद्० ( पु० ) क्रोध, रोप, कोप, इस अर्थ में क्रु और कोह इन शब्दों का भी प्रयोग रामायण में किया गया है ।

कोहिनी तद्० ( खी० ) यौह के बीच की गाँठ ।

कोहवर दे० ( पु० ) कौतुक गृह, देवगृह ।

कोहाना दे० ( क्रि० ) कोपकरना, क्रोधकना विवियाना ।

कोहाय दे० ( पु० ) क्रोध, कोप रूठना, कोहाना ।

कोही दे० ( पु० ) क्रोधी, कोपी, यथा—

“कर कुटार मैं अकरण कोही

आगे अपराधी गुह द्रोही”

—रामायण ।

को दे० ( अ० ) का, को ।

कोआ दे० ( पु० ) काग, काक ।

कोँध दे० ( खी० ) प्रकाश, प्रताप, दीप्ति, चमक ।

कोँधना दे० ( क्रि० ) चमकना, प्रकाशित होना ।

कोँधा दे० ( प० ) विजली विद्युत चमक ।

कूर तत्० ( पु० ) परद्रोही, निर्द्वेष, नृशंस, कठिन, प्रथम तृतीयपञ्चमसप्तमनवम चौर एकादश राशि।  
 —कर्मा ( पु० ) भयङ्कर कर्म करने वाला, दुरात्मा,  
 निष्कुरकर्मकारी।—गन्ध ( पु० ) उद्यमगन्ध,  
 तीखा गन्ध।—ता ( स्त्री० ) खलता, निष्कुरता,  
 निर्द्वेषता।—लोचन ( पु० ) शनिग्रह, यनैक्षर।  
 —स्वरा ( पु० ) कर्कश ध्वनियुक्त, भयङ्कर शब्द।  
 —आकार ( पु० ) रावण, भयङ्कर आकार।—चर ( पु० ) भयानक, नृशंस, निहुर।

कृतव्य तत्० ( पु० ) क्रयवस्तु, क्रयणीय, खरीदने योग्य।

कृता तत्० ( पु० ) क्रयकर्ता, खरीददार।  
 क्रिय तत्० ( पु० ) क्रयणीय, खरीदने योग्य।

कुड तत्० ( पु० ) दोनों हाथों के बीच का भाग, अङ्गुली, वक्षस्थल।—पत्र ( पु० ) अतिरिक्त पत्र, प्रधान पत्र के साथ दूसरा पत्र।

कोप तत्० ( पु० ) कोप, रोष, अमर्ष, ब्रह्मा के भौंह से उत्पन्न, शरीर धारियों के स्वाभाविक छ शब्दों के अन्तर्गत एक शब्द।—मूर्च्छित ( पु० ) सुगन्ध द्रव्यविशेष, ( पु० ) अतिकोपी।—तुर ( पु० ) क्रोधी।—गन्ध ( पु० ) क्रोध से अन्धा।

कोधन तत्० ( पु० ) क्रोधी, क्रोधयुक्त, क्रोधान्वित।

कोधित तत्० ( पु० ) प्रकुपित, क्रोधदीप्त।  
 कोपी तत्० ( पु० ) क्रोधयुक्त, रागी, रिसवा।

कोश तत्० ( पु० ) चार हज़ार या आठ हज़ार हाथ के मार्ग की लम्बाई।

कोष्ठा तत्० ( पु० ) शृगाल, शियाल, मोड़ड़।

कोष्ठी तत्० ( पु० ) वक्षपत्नी, पर्वतविशेष, जिम्बेके लिये परशुराम और कार्तिकेय दोनों लहे थे।  
 कोपमेद।—क्षीप ( पु० ) मात महाक्षीपों के अन्तर्गत एक क्षीप।

कौर्य तत्० ( पु० ) कूरता, निष्कुरता।

कान्त तत्० ( पु० ) अन्त, यका हुआ, यका मोंदा, अकित।—मना ( पु० ) अन्तमन, अद्विग्रहित, विषादयुक्त।

कान्ति तत्० ( स्त्री० ) अन्ति, अम, परिश्रम, यकावट, शरीर की ग्लानि।—फर ( पु० ) अमजनक, अन्तिकर।—च्छिद ( पु० ) विग्राम, स्वास्थ्य।

क्लिन्न तत्० ( पु० ) आर्द्र, भीगा, सजल, गीला।  
 क्लिशित तत्० ( पु० ) क्लेशयुक्त, दुःखी, पीड़ित।

क्लिष्टमान तत्० ( पु० ) सन्तापित, पीड़ित।

क्लिष्ट तत्० ( पु० ) क्षीण, दुर्बल, रोगी, पूर्वापर विरुद्ध वाक्य।—कर्मा ( पु० ) नृशंस कर्म करने वाला, पीड़ित।

क्लीय तत्० ( पु० ) नपुंसक, पुत्रवार्थहीन, निर्बल, हिजड़ा।

क्लेद तत्० ( पु० ) आर्द्रता, स्वेद, पसीना, ओदा, भीगा।

क्लेदन तत्० ( पु० ) क्षिणता, आर्द्रकरना, पाँच प्रकार के कफ के अन्तर्गत कफ विशेष।

क्लेदित तत्० ( पु० ) भीगा हुआ, आर्द्र, स्वेदित।

क्लेश तत्० ( पु० ) दुःख, अन्वणा, उपताप, पीड़ा, कष्ट, व्यापार, भय।—कर ( पु० ) दुःखदायक, कष्टदायक।—द ( पु० ) दुःखकर, व्यथा देने वाला।—प्रहाण ( पु० ) विपत्ति का नाश, साँसारिक वासना जन्म दुःखों का नाश।—दान ( पु० ) आपत्तिग्रस्त, आपन्न, दुर्गत।—पह ( पु० ) क्लेशनाशकारी।

क्लेशित तत्० ( पु० ) क्लेश विशिष्ट, दुःखयुक्त।

क्लेश्य तत्० ( पु० ) दुर्बलता, मानसिक निर्बलता, अतृप्साह।

कचित् तत्० ( अ० ) कहीं, किसी स्थान पर।

काण तत्० ( पु० ) ध्वनि, बीणा आदि का शब्द।

काथ तत्० ( पु० ) काड़ा, निर्वास।

काई तत्० ( स्त्री० ) क्षयरोग, कफ और रक्त का निकलना, सूखी छाँगी।

क्षय तत्० ( पु० ) कालविशेष, तीस कला परिमित समय, दशपलपरिमित समय, उत्सव, पर्व, शयसर।—दा ( स्त्री० ) रात्रि, निया।—दान्ध ( पु० ) रात के अन्धे, प्राणिविशेष, उल्हू।—द्युति ( स्त्री० ) विद्युत्, चपला,

उत्तरीय भाग में झोर जो पुरनिया के पश्चिम की झोर है। आज कल इसको कुंगी कहते हैं। इसी नदी के तीरे पर महर्षि ऋष्यगृह्य का आश्रम था।

कौशेय तत्० ( पु० ) पटवस्त्र, पीताम्बर, रेशमी धोती आदि।

कौस्तुभ तत्० ( पु० ) विष्णु वक्षःस्थित मणि, मुद्रा विशेष।

कमा दे० ( अ० ) प्रनार्थक, किं।

कमारो दे० ( स्त्री० ) चेंबरा, मेंड़, उपवन, चमन।

कर्मो दे० ( अ० ) किसलिये, काहे को, कैसा।

कर्मोकर दे० ( अ० ) किस प्रकार, कैसा, क्यों।

कर्मोकि दे० ( अ० ) इसलिये, इस कारण, किन्तु।

ककच तत्० ( पु० ) करपत्र, आर, करांती।

कक्रु तत्० ( पु० ) यज्ञ याग, पूजा, वैदिककर्म विशेष।

—द्वेषी ( पु० ) अमुर, दानव, दैत्य, नास्तिक।

—ध्वंसी ( पु० ) शिव, महादेव, इन्होंने दत्त-प्रजापति का यज्ञध्वंस किया था।—पुरुष ( पु० ) नारायण, विष्णु।—भुज ( पु० ) देवता, अमर देव।

कतीमाली दे० ( स्त्री० ) ओषधि विशेष, किरवाली।

क्रन्दन तत्० ( पु० ) अशुभात्, रोदन, काँदना, रोना।—कारी ( पु० ) विलाप करनेवाला, रोदन करने वाला।

क्रन्दित तत्० ( पु० ) अनुयोचित, विलपित, रोदित।

क्रम तत्० ( पु० ) परिपाटी, रीति, वैदिक ग्येधान, करपविधि, अनुक्रम, भांति, शक्ति, आक्रमण, चलन।—क्रम ( पु० ) गनैः २।—भङ्ग ( पु० ) अनियम, विधिहीनता, साहित्य का एक दोष।—योग ( पु० ) विधि नियोग।—शः ( अ० ) क्रम क्रम से, गनैः २।—गत ( पु० ) क्रमप्राप्त, क्रमान्वय, परम्परागत।—ानुयायी ( पु० ) विहित व्यवस्थित, नियमानुसूल।—ानुसार ( अ० ) क्रम क्रम से, नियमानुसार।—न्वय ( पु० ) क्रमानुयायी, यथाक्रम, क्रमागत।

क्रमुक तत्० ( पु० ) सुपारी, कसैली।

क्रमेलक तत्० ( पु० ) ऊँट, उष्ट्र।

क्रय तत्० ( पु० ) द्रव्य देकर वस्तु लेना, मूल्य द्वारा पदार्थ ग्रहण, मोल लेना, खरीदना।—क्रोत खरीदा हुआ।—विक्रय ( पु० ) लेने दे, व्यापार।

क्रयणीय तत्० ( पु० ) क्रय, क्रोतव्य, लेने योग्य।

क्रयिक तत्० ( पु० ) क्रोता, लेने वाला, खरीदता

क्रयी तत्० ( पु० ) क्रयकर्ता, मोल लेने वाला।

क्रय्य तत्० ( पु० ) बेंचने के लिये बाजार में हुँद यस्तु।

क्रान्त तत्० ( पु० ) आक्रमित, पददलित, दशाया।

क्रान्ति तत्० ( स्त्री० ) आक्रमण, उपद्रव, अत्याचार गति, खगोल के बीच में किञ्चित् वक्र रेखा, पूर्ण पथ, दीप्ति प्रकाश।—वृत्ति ( स्त्री० ) मण्डल।—मण्डल ( पु० ) राशिवक्र।

क्रियमाण तत्० ( पु० ) व्यवहारान्वित, प्रारब्धकर्म तीन प्रकार के कर्मों का एक भेद।

क्रिया तत्० ( स्त्री० ) व्यवहार, कृत्य, कार्य कर्म, शपथ, व्यापार, आहु।—न्वित ( पु० ) कर्मान्वित।—पट्ट ( पु० ) चतुर, प्राज्ञ, दक्ष विदवा।—पर ( पु० ) कर्मठ, सुकर्म, पटु।—पाद् ( पु० ) चतुष्पाद, व्यवहार का तीसरा पाद, शपथ करना।—चसन्त ( पु० ) परान्वित।—चान् ( पु० ) कर्मोद्यत, कर्मउद्योगी, कर्म में नियुक्त।—विशेषण ( पु० ) अठपथशब्द।—रूप ( पु० ) धातुरूप, आद्ययात।—लोप ( पु० ) कर्म में विरक्ति, कर्मनिवृत्ति।

क्रीडनक तत्० ( पु० ) खेल, खेलने की वस्तु।

क्रीडां तत्० ( स्त्री० ) खेल, केलि, कौमुक, कर्म परिहास।—वन ( पु० ) प्रमदवन, केलिकानन।—मृग ( पु० ) खेल के पशु, घानर आदि।

क्रीत तत्० ( पु० ) मूल्य द्वारा गृहीत, खरीदा हुआ।—पुत्र ( पु० ) धारह प्रकार के पुत्रों में से एक पुत्र।

क्रुद्ध तत्० ( पु० ) क्रोधित, कोपान्वित।

राजा, शासक, रक्षक ।— पाल ( पु० ) राजा, नृपति ।—मण्डन ( पु० ) ब्रह्मा, आदर्श पुरुष ।  
 क्षेतीश तत्० ( पु० ) राजा, नरेश, पृथ्वीपाल ।  
 क्षेतीश्वर तत्० ( पु० ) प्रभु, स्वामी, महीश ।  
 क्षेस तत्० ( पु० ) रथी हुई वस्तु, कैलायी गयी ।  
 क्षेप्र तत्० ( पु० ) शीघ्र, उतावल, अचिरन्तर ।  
 क्षीण तत्० ( पु० ) निर्बल, दुर्बल, कृप, दुबला पतला ।  
 —झ ( पु० ) दुर्बलाङ्ग ।  
 क्षीर तत्० ( पु० ) दूध, दुग्ध, पय, ।—कण्ठ ( पु० )  
 यक्षा, दूधमुहां वालक ।—नीर ( य० ) अमेद-  
 भाय, गाढ़मैत्री ।—समुद्र ( पु० ) दूध का समुद्र ।  
 क्षीरस्वामी तत्० ( पु० ) प्रसिद्ध संस्कृत कवि, ये  
 करमीर के महाराज जयापीड़ के राज्यकाल में  
 विद्यमान थे, राजतरङ्गिणी में जयापीड़ का  
 समय ७०० याके वर्षात् ७७६ ई० से लेकर  
 सन् ८१३ ई० तक दिया गया है और यह भी  
 लिखा है कि क्षीरस्वामी जयापीड़ के पुत्र थे। क्षीर-  
 स्वामी ने अमरकोश की टीका लिखी है तथा और  
 भी व्याकरण सम्बन्धी ग्रन्थ लिखे हैं ।  
 क्षीरी तद्० ( स्त्री० ) वृक्ष और फल विशेष, शीरी,  
 यन ।  
 क्षीरोद तद्० ( पु० ) क्षीर समुद्र ।—तनया ( स्त्री० )  
 लक्ष्मी ।  
 क्षुण्ण तद्० ( पु० ) घूर्णीकृत, दुःखित, सन्तापयुक्त  
 चित्त ।  
 क्षुत्पिपासा तद्० ( स्त्री० ) भूख प्यास ।  
 क्षुद्र तत्० ( पु० ) चावल के छोटे टुकड़े, अल्प, छोड़ा,  
 नीच, अधम ।—घण्टिका ( स्त्री० ) कटिघ्नपण,  
 करधनी ।—ता ( स्त्री० ) अल्पता, नीचता,  
 अधमता ।  
 क्षुधा तत्० ( स्त्री० ) बुभुक्षा, खाने की इच्छा, भूख ।  
 —तुर ( पु० ) क्षुधा से व्याकुल, क्षुधापीडित ।  
 —( पु० ) क्षुधापीडित, भूखा ।—घन्त ( पु० )  
 भूखा, अत्यन्त भूखा ।  
 क्षुधित तत्० ( पु० ) क्षुधान्वित, बुभुक्षित ।  
 क्षुर तत्० ( पु० ) अस्तुरा, क्षुरा, खूर, मूँज ।—फ  
 ( पु० ) गोखरू, वृक्ष विशेष ।

क्षुल्लक तत्० ( पु० ) कौड़ी, नीच, छुद्र ।  
 क्षेत्र तत्० ( पु० ) खेत, पुर्यभूमि, शरीर, तीर्थ,  
 सिद्धस्थान, इष्य, प्रकृति, गृह, नगर ।—ज ( पु० )  
 अपनी स्त्री से दूसरे के द्वारा उत्पादित पुत्र ।—झ  
 ( पु० ) आत्मा, जीव, शरीर का देवता ।—देवता  
 ( पु० ) खेतों के अधिष्ठाता देवता ।—फल ( पु० )  
 खेत की लम्बाई चौड़ाई ।—पाल ( पु० ) देवता विशेष,  
 खेत रक्षक, किसान ।—चित् ( पु० ) कृपिशाख  
 वेत्ता ।—जीव ( पु० ) कृषक, कर्मक ।—धिप  
 ( पु० ) खेत के अधिष्ठाता देवता, मेघ आदि, बारह  
 राशियों के स्वामी, खेत का स्वामी जमींदार ।  
 क्षेप तत्० ( पु० ) त्याग, फेंकना, छोड़ना, शीतना ।  
 क्षेपक तत्० छेपकर्ता, त्यागी, छेपकारक, ग्रन्थों में  
 मिला हुआ भाग, ग्रन्थों का अतिरिक्त या अगुह  
 अंग ।  
 क्षेपण तत्० ( पु० ) प्रेरण, भेजना, पठाना, पठान ।  
 क्षेम तत्० ( स्त्री० ) कुशल, मङ्गल, भलाई, धर्मशासन  
 के द्वारा उत्पन्न किया पुत्र ।—कृत् ( पु० ) कर्षण  
 कारक मङ्गलकर्ता ।—कर ( पु० ) शुभकर मङ्गल  
 कर ।—कुशल ( पु० ) आरोग्य मङ्गल ।  
 क्षेमेन्द्र तत्० ( पु० ) ये करमीर निवासी एक प्रसिद्ध  
 कवि हैं, करमीर के राजा अनन्त देव के समय में  
 ये करमीर में वर्तमान् थे । इनका समय ११ ग्यारहवीं  
 शताब्दी निश्चित हुआ है । कम से कम इनके बनाये  
 २८—३० ग्रन्थ इस समय प्रसिद्ध हैं । इनकी  
 कविताशक्ति और लौकिकज्ञान विलक्षण था । इनके  
 ग्रन्थों में एक का नाम “अयदानकल्पलता” है ।  
 उसमें बौद्धमहात्माओं का हाल दिया गया है ।  
 क्षीणि तत्० ( स्त्री० ) पृथिवी, मेदिनी, अयनी,—ग  
 ( पु० ) चित्तित, ( पु० ) मङ्गल ।—प ( पु० ) राजा,  
 नरपति ।—देव ( पु० ) ब्राह्मण ।  
 क्षीणी तत्० ( स्त्री० ) पृथिवी, भूमि ।  
 क्षीम तत्० ( पु० ) क्षोभ, पक्षात्पण, उन्माह-भङ्ग ।  
 क्षीणी तत्० ( स्त्री० ) देवी क्षोणी ।  
 क्षीद्र ( पु० ) मधु, यहद ।—ग ( पु० ) मधु से उत्पन्न  
 पदार्थ ।

धिजली ।—ध्वंसी ( गु० ) अतिशय अस्थिर, क्षणमात्र ही में नष्ट होने वाला ।—भङ्गुर ( गु० ) क्षण ही में नष्ट होने वाला, विनाशी ।

क्षणक तत्० ( पु० ) क्षण, रात ।

क्षणप्रति तत्० ( अ० ) मतत, अनवरत, बराबर ।

क्षणरुचि तत्० ( स्त्री० ) धिजली, चमक, प्रकाश ।

क्षणिक तत्० ( गु० ) क्षणमात्र स्थायी, अल्पकाल, स्थितिशील ।

क्षत तत्० ( पु० ) घाव, चोट, दुःख, जोड़ा ।

—कास ( पु० ) कास, रोगविशेष ।—ज

( पु० ) रक्त, शोणित, रुधिर, लोहू ।—व्रत

( गु० ) नष्ट व्रत ।

क्षति तत्० ( स्त्री० ) अपकार, अनिष्ट, हानि, अपचय, क्षय ।

क्षत्ता तत्० ( पु० ) मारधि, दरवान, ब्राह्मण के श्रोत्र से श्रौर क्षत्रिया के गर्भ से उत्पन्न जाति विशेष, दासी पुत्र, नियोग से उत्पन्न सन्तान ।

क्षत्र तत्० ( पु० ) सुकुट, क्षाता, क्षतरी, शरीर,

द्वितीय वर्ण ।—वन्धु ( पु० ) निन्दित क्षत्रिय ।

—धारी ( पु० ) राजा, भूपाल ।

क्षत्रिय तत्० ( पु० ) ब्रह्मा के दाह से उत्पन्न वर्ण

विशेष, क्षत्री, राजन्य, दूसरा वर्ण ।—१ ( स्त्री० )

क्षत्रिय जाति की स्त्री ।—णी ( स्त्री० )

क्षत्रिय स्त्री जाति, क्षत्रिय पत्नी ।

क्षत्री तत्० ( पु० ) देखो क्षत्रिय ।

क्षत्रिन दे० ( स्त्री० ) क्षत्रिय जाति की स्त्री ।

क्षतरानी दे० ( स्त्री० ) क्षत्रिया ।

क्षपणक तत्० ( पु० ) बहुविशेष, संन्यासी, उन्मत्त, राजा विक्रामादित्य की सभा के नवरत्नों का दूसरा रत्न, इसका बनाया कोई ग्रन्थ अद्यतक न तो देखा गया है और न सुना ही गया है । अभी तक इसका भी पता नहीं लगा है, कि इस नाम का ग्रन्थ इसने बनाया था । परन्तु फुटकल श्लोक इसके नाम से पाये जाते हैं । यह विक्रम के समकालीन था, इसका भी समय खूबीय छठी शताब्दी माना जाता है ।

क्षपा तत्० ( स्त्री० ) रजनी, रात्रि, निशा ।—क्ष ( पु० ) चन्द्रमा, यशाङ्क, विधु ।—नाथ ( पु० ) चन्द्रमा ।

क्षम तत्० ( गु० ) सक्त, योग्य, ममर्थ, पाता ।—ता ( स्त्री० ) सामर्थ्य, शक्ति, योग्यता ।

क्षमना तद्० ( क्रि० ) सहना, क्षमा करना ।

क्षमा तत्० ( स्त्री० ) सहिष्णुता, सहन करने की शक्ति, पृथ्वी, अपराध-मार्जन, रात्रि, दुर्गा, कृपा, मोक्ष अपराधमुक्ति ।—दान् ( गु० ) दयालु, क्षमा वाला, धैर्यशील, सहिष्णु ।

क्षमापन तत्० ( पु० ) क्षमा कराना अपराध करना ।

क्षमिय दे० ( गु० ) क्षमा कीजिये ।

क्षमिता तत्० ( गु० ) क्षमाशील, सहिष्णु ।

क्षमी तत्० ( गु० ) क्षमिता, दयालु, सहनशील ।

क्षय तत्० ( पु० ) रोगविशेष यक्ष्मारोग, चर्द, विनाश, प्रलय, अपचय ।—काल ( पु० ) प्रलयकाल ।—कास ( पु० ) यक्ष्माकास, राजरोग ।—पक्ष ( पु० ) कृष्णपक्ष ।—मास, मलमास, अधिमास ।

क्षरण तत्० ( पु० ) क्षयण, स्वाव, घूना, भरन ।

क्षान्त तत्० ( गु० ) सहनशील, सन्तोषी, सहिष्णु, क्षमान्वित ।

क्षान्ति तत्० ( स्त्री० ) शक्ति रहने पर भी किसी अपकार न करना ।

क्षाम तत्० ( गु० ) क्षीण, दुर्बल, निर्बल ।—क्ष ( गु० ) सूखा ऋषट, मन्दशब्द ।

क्षार तत्० ( पु० ) खार, भस्म, नोना, लवणविशेष समुद्रीलवण ।—पत्र ( पु० ) बभ्रुघ्रा शाक विशेष ।—भूमि ( स्त्री० ) खारी भूमि, क्षर क्षेत्र ।—सृष्टिका ( स्त्री० ) खारीमिट्टी ।—श्रेष्ठ ( पु० ) दांकवृक्ष, पलास ।—सिन्धु ( पु० ) लवण समुद्र ।

क्षालन तत्० ( पु० ) प्रक्षालन, धोना, स्वच्छ करना ।

क्षिति तत्० ( स्त्री० ) पृथ्वी, भूमि, मेदिनी, अवनि ।—ज ( पु० ) भौमाक्षर, मङ्गल ग्रह, धातु उपधा आदि जो पृथिवी से निकलते हैं ।—नाथ ( पु० )

राजा, शासक, रत्नक ।—पाल ( पु० ) राजा, नृपति ।—मण्डन ( पु० ) ब्रह्मा, आदर्श पुरुष ।  
 द्वितीया तत्० ( पु० ) राजा, नरेश, पृथ्वीपाल ।  
 द्वितीया तत्० ( पु० ) प्रभु, स्वामी, महीश ।  
 द्वितीया तत्० ( पु० ) रखी हुई वस्तु, कैलापी गयी ।  
 द्वितीया तत्० ( पु० ) शीघ्र, उतावल, अविनाश ।  
 द्वितीया तत्० ( पु० ) निर्दल, दुर्बल, कृय, दुबला पतला ।  
 द्वितीया ( पु० ) दुर्बलाङ्ग ।  
 द्वितीया तत्० ( पु० ) दूध, दुग्ध, पय, ।—कण्ठ ( पु० ) यज्ञा, दूधमहां यालक ।—नीर ( वा० ) अभेद-भाय, गाढ़मैत्री ।—समुद्र ( पु० ) दूध का समुद्र ।  
 द्वितीया तत्० ( पु० ) प्रसिद्ध संस्कृत कवि, ये करमीर के महाराज जयापीड़ के राज्यकाल में विद्यमान थे, राजतरङ्गिणी में जयापीड़ का समय ७०० याके अर्थात् ७७६ ई० से लेकर सन् ८१३ ई० तक दिया गया है और यह भी लिखा है कि द्वितीया जयापीड़ के गुरु थे । द्वितीया स्वामी ने अमरकोश की टीका लिखी है तथा और भी व्याकरण सम्बन्धी ग्रन्थ लिखे हैं ।  
 द्वितीया तत्० ( जी० ) वृक्ष और फल विशेष, द्वितीया, यन ।  
 द्वितीया तत्० ( पु० ) चौर समुद्र ।—तनया ( जी० ) लक्ष्मी ।  
 द्वितीया तत्० ( पु० ) पूर्णकृत, दुःखित, सन्तापयुक्त चित्त ।  
 द्वितीया तत्० ( जी० ) भ्रूय प्यास ।  
 द्वितीया तत्० ( पु० ) चावल के छोटे टुकड़े, अल्प, छोड़ा, नीच, अधम ।—घण्टिका ( जी० ) कटिभ्रूयण, करधनी ।—ता ( जी० ) अल्पता, नीचता, अधमता ।  
 द्वितीया तत्० ( जी० ) पुसुला, खाने की इच्छा, भ्रूय ।  
 द्वितीया ( पु० ) चुधा से व्याकुल, चुधापीडित ।  
 द्वितीया ( पु० ) चुधापीडित, भ्रूया ।—वन्त ( पु० ) भ्रूया, अत्यन्त भ्रूया ।  
 द्वितीया तत्० ( पु० ) चुधान्वित, पुसुचित ।  
 द्वितीया तत्० ( पु० ) अस्तुरा, छुरा, छूर, मूँज ।—क ( पु० ) गोखर, वृक्ष विशेष ।

धुल्लक तत्० ( पु० ) कौड़ी, नीच, छुद्र ।  
 द्वितीया तत्० ( पु० ) खेत, पुष्यभूमि, शरोर, तीर्थ, सिद्धस्थान, प्रलय, प्रकृति, गृह, नगर ।—ज ( पु० ) अपनी स्त्री से दूसरे के द्वारा उत्पादित पुत्र ।—झ ( पु० ) आत्मा, जीव, शरीर का देवता ।—देवता ( पु० ) खेतों के अधिष्ठाता देवता ।—फल ( पु० ) खेत को लम्बाई चौड़ाई ।—पाल ( पु० ) देवता विशेष, खेत रत्नक, किसान ।—चित् ( पु० ) कृषिशास्त्र वेत्ता ।—जीव ( पु० ) कृषक, कर्षक ।—धिप ( पु० ) खेत के अधिष्ठाता देवता, मेघ आदि, बारह राशिपों के स्वामी, खेत का स्वामी ज़मींदार ।  
 द्वितीया तत्० ( पु० ) त्याग, फेंकना, छोड़ना, वीतना ।  
 द्वितीया तत्० छेपकर्ता, त्यागी, छेपकारक, ग्रन्थों में मिला हुआ भाग, ग्रन्थों का अतिरिक्त या अग्रगृह अंग ।  
 द्वितीया तत्० ( पु० ) प्रेरण, भोजना, पठाना, पठान ।  
 द्वितीया तत्० ( जी० ) कुशल, मङ्गल, भलाई, धर्मशासन के द्वारा उत्पन्न किया पुत्र ।—कुत् ( पु० ) कल्याण कारक मङ्गलकर्ता ।—कर ( पु० ) शुभकर मङ्गल कर ।—कुशल ( पु० ) आरोग्य मङ्गल ।  
 द्वितीया तत्० ( पु० ) ये करमीर नियासी एक प्रसिद्ध कवि हैं, करमीर के राजा अनन्त देव के समय में ये करमीर में वर्तमान् थे । इनका समय ११ ग्यारहवीं शताब्दी निश्चित हुआ है । कम से कम इनके बनाये २८—३० ग्रन्थ इस समय प्रसिद्ध हैं । इनकी कविताशक्ति और लौकिकज्ञान मिलक्षण था । इनके ग्रन्थों में एक का नाम "अयदानकल्पलता" है । उसमें बौद्धमहात्माओं का हाल दिया गया है ।  
 द्वितीया तत्० ( जी० ) पृथिवी, मेदिनी, अयती,—ग ( पु० ) चित्तिग, ( पु० ) मङ्गल ।—प ( पु० ) राजा, नरपति ।—देव ( पु० ) ब्राह्मण ।  
 द्वितीया तत्० ( जी० ) पृथिवी, भूमि ।  
 द्वितीया तत्० ( पु० ) क्रोध, पद्यालाप, उत्साह-भङ्ग ।  
 द्वितीया तत्० ( जी० ) देखो द्वितीया ।  
 द्वितीया ( पु० ) मधु, गृहद ।—ग ( पु० ) मधु मे उत्पन्न पदार्थ ।

द्विजली ।—ध्वंसी ( गु० ) अतिशय अस्थिर, क्षणमात्र ही में नष्ट होने वाला ।—भङ्गगुर ( गु० ) क्षण ही में नष्ट होने वाला, विनाशी ।

क्षणक तत्० ( पु० ) क्षण, राल ।

क्षणप्रति तत्० ( अ० ) सतत, अतथरत, बराबर ।

क्षणरुचि तत्० ( स्त्री० ) द्विजली, चमक, प्रकाश ।

क्षणिक तत्० ( गु० ) क्षणमात्र स्थायी, अल्पकाल, स्थितिशील ।

क्षत तत्० ( पु० ) घाव, चोट, घृण, फोड़ा ।

—कास ( पु० ) कास, रोगविशेष ।—ज

( पु० ) रक्त, शोषित, रुधिर, लोहू ।—घ्रत

( गु० ) नष्ट घृत ।

क्षति तत्० ( स्त्री० ) अपकार, अनिष्ट, हानि, अपचय, क्षय ।

क्षत्ता तत्० ( पु० ) सारथि, दरवान, ब्राह्मण के श्वोरस से और क्षत्रिया के गर्भ से उत्पन्न जाति विशेष, दासी पुत्र, नियोग से उत्पन्न सन्तान ।

क्षत्र तत्० ( पु० ) मुकुट, छाता, छतरी, शरीर, द्वितीय वर्ष ।—चन्द्रु ( पु० ) निन्दित क्षत्रिय ।

—धारी ( पु० ) राजा, भूपाल ।

क्षत्रिय तत्० ( पु० ) ब्रह्मा के बाहु से उत्पन्न वर्ष विशेष, क्षत्री, राजन्य, दूसरा वर्ष ।—१ ( स्त्री० ) क्षत्रिय जाति की स्त्री ।—१णी ( स्त्री० ) क्षत्रिय स्त्री जाति, क्षत्रिय पत्नी ।

क्षत्री तत्० ( पु० ) देखो क्षत्रिय ।

क्षत्रिन दे० ( स्त्री० ) क्षत्रिय जाति की स्त्री ।

क्षतरानी दे० ( स्त्री० ) क्षत्रिया ।

क्षपणक तत्० ( पु० ) बुद्धविशेष, संन्यासी, उन्मत्त, राजा विक्रामादित्य की सभा के नव-रत्नों का दूसरा रत्न, इसका यनामा कोई ग्रन्थ अथ-तक न तो देखा गया है और न सुना ही गया है । अभी तक इसका भी पता नहीं लगा है, कि इस नाम का ग्रन्थ इसने बनाया था । परन्तु फुटकल श्लोक इसके नाम से पाये जाते हैं । यह विक्रम के समकालीन था, इसका भी समय खृष्टीय छठी शताब्दी माना जाता है ।

क्षपा तत्० ( स्त्री० ) रजनी, रात्रि, निगा ।—१ ( पु० ) चन्द्रमा, शशाङ्क, विधु ।—नाथ ( पु० ) चन्द्रमा ।

क्षम तत्० ( गु० ) क्षम, योग्य, समर्थ, पाण ।—ता ( स्त्री० ) सामर्थ्य, शक्ति, योग्यता ।

क्षमना तद्० ( स्त्री० ) सहना, क्षमा करना ।

क्षमा तत्० ( स्त्री० ) सहिष्णुता, सहन करने की शक्ति, पृथ्वी, अपराध-मार्जन, रात्रि, दुर्गा, कृपा, मोक्ष, अपराधमुक्ति ।—वान् ( पु० ) दयालु, क्षमा करने वाला, धैर्यशील, सहिष्णु ।

क्षमापन तत्० ( पु० ) क्षमा कराना अपराध-मार्जन कराना । .

क्षमिय दे० ( गु० ) क्षमा कीजिये ।

क्षमिता तत्० ( गु० ) क्षमाशील, सहिष्णु ।

क्षमी तत्० ( गु० ) क्षमिता, दयालु, सहनशील ।

क्षय तत्० ( पु० ) रोगविशेष यक्ष्मारोग, चर्द, विनाश, प्रलय, अपचय ।—काल ( पु० ) प्रलयकाल ।—कास ( पु० ) यक्ष्माकाश, राजरोग ।—पक्ष ( पु० ) कृष्णपक्ष ।—मास, मलमास, अधिमास ।

क्षरण तत्० ( पु० ) क्षयण, क्षाव, घृणा, भ्रन ।

क्षान्त तत्० ( गु० ) सहनशील, सन्तोषी, धीर, सहिष्णु, क्षमान्वित ।

क्षान्ति तत्० ( स्त्री० ) शक्ति रहने पर भी किसी का अपकार न करना ।

क्षाम तत्० ( गु० ) क्षीण, दुर्बल, निर्बल ।—कण ( गु० ) सूखा करठ, मन्दशब्द ।

क्षार तत्० ( पु० ) खार, भस्म, नोना, लवणविशेष, समुद्रीलवण ।—पत्र ( पु० ) बयुष्मा शाक विशेष ।—भूमि ( स्त्री० ) खारी भूमि, ऊसर खेत ।—मृत्तिका ( स्त्री० ) खारीमिट्टी ।—श्रेष्ठ ( पु० ) दांकपृष्ठ, पलाश ।—सिन्धु ( पु० ) लवण समुद्र ।

क्षालन तत्० ( पु० ) प्रक्षालन, धोना, स्वच्छ करना ।

क्षिति तत्० ( स्त्री० ) पृथ्वी, भूमि, मेदिनी, अद्वितीय ।—ज ( पु० ) भोगमासुर, मङ्गल ग्रह, धातु उपधा आदि जो पृथिवी से निकलते हैं ।—नाथ ( पु० )

राजा, शासक, रक्षक ।— पाल ( पु० ) राजा, नृपति ।—मण्डन ( पु० ) ब्रह्मा, आदर्श पुरुष ।  
 द्वितीया तत्० ( पु० ) राजा, नरेश, पृथ्वीपाल ।  
 द्वितीश्वर तत्० ( पु० ) प्रभु, स्वामी, महीश्वर ।  
 द्विस तत्० ( पु० ) रक्षी हुई यस्तु, कैलायी गयी ।  
 द्विम तत्० ( पु० ) शीघ्र, उतावण, चञ्चलम्ब ।  
 द्वीण तत्० ( पु० ) निर्मल, दुर्वल, कृप, दुयक्षा पतला ।  
 —द्वि ( पु० ) दुर्वलाङ्ग ।  
 द्वीर तत्० ( पु० ) दूध, दुग्ध, पय, ।—कण्ठ ( पु० )  
 पशु, दूधमुहां बालक ।—नीर ( या० ) अभेद-  
 भाव, गाढ़मैत्री ।—समुद्र ( पु० ) दूध का समुद्र ।  
 श्रीरस्वामी तत्० ( पु० ) प्रसिद्ध संस्कृत कवि, ये  
 करमीर के महाराज जयापीड़ के राज्यकाल में  
 विद्यमान थे, राजतरङ्गिणी में जयापीड़ का  
 समय ७०० याके अर्थात् ७७६ ई० से लेकर  
 सन् ८१३ ई० तक दिया गया है और यह भी  
 लिखा है कि श्रीरस्वामी जयापीड़ के गुरु थे। श्रीर-  
 स्वामी ने अमरकोश की टीका लिखी है तथा और  
 भी व्याकरण सम्बन्धी ग्रन्थ लिखे हैं ।  
 श्रीरी तद्० ( श्री० ) वृक्ष और फल विशेष, श्रीरी,  
 यन ।  
 श्रीरोद तद्० ( पु० ) श्रीर समुद्र ।—तनया ( श्री० )  
 लक्ष्मी ।  
 शुष्ण तद्० ( पु० ) शूर्णांकित, दुःखित, सन्तापयुक्त  
 चित्त ।  
 शुद्धिपासा तद्० ( श्री० ) भ्रूल प्यास ।  
 शुद्र तत्० ( पु० ) चावल के छोटे टुकड़े, अल्प, छोड़ा,  
 नीच, अधम ।—घण्टिका ( श्री० ) कटिभ्रूयण,  
 करधनी ।—ता ( श्री० ) अल्पता, नीचता,  
 अधमता ।  
 शुधा तत्० ( श्री० ) शुभ्रा, खाने की द्रव्या, भ्रूल ।  
 —तुर ( पु० ) शुधा से व्याकुल, शुधापीडित ।  
 —( पु० ) शुधापीडित, भ्रूला ।—चन्त ( पु० )  
 भ्रूया, अत्यन्त भ्रूला ।  
 शुधित तत्० ( पु० ) शुधान्वित, शुधित ।  
 शूर तत्० ( पु० ) अस्तुरा, शूरा, खूर, मूज ।—क  
 ( पु० ) गोलक, वृक्ष विशेष ।

शुल्लक तत्० ( पु० ) कौड़ी, नीच, सुद्र ।  
 क्षेत्र तत्० ( पु० ) खेत, पृथ्वभूमि, शरीर, तीर्थ,  
 सिद्धस्थान, इष्य, प्रकृति, गृह, नगर ।—ज ( पु० )  
 अपनी स्त्री से दूसरे के द्वारा उत्पादित पुत्र ।—ज्ञ  
 ( पु० ) आत्मा, जीव, शरीर का देवता ।—देवता  
 ( पु० ) देवों के अधिष्ठाता देवता ।—फल ( पु० )  
 खेत की लम्बाई चौड़ाई ।—पाल ( पु० ) देवता विशेष,  
 खेत रक्षक, किसान ।—वित् ( पु० ) कृपिशाख  
 वेत्ता ।—जीव ( पु० ) कृषक, कर्षक ।—धिप  
 ( पु० ) खेत के अधिष्ठाता देवता, मेघ आदि, बारह  
 राशियों के स्वामी, खेत का स्वामी ज़मींदार ।  
 क्षेत्र तत्० ( पु० ) त्याग, फेंकना, छोड़ना, धीतना ।  
 क्षेत्रक तत्० क्षेत्रकर्ता, त्यागी, क्षेत्रकारक, ग्रन्थों में  
 मिला हुआ भाग, ग्रन्थों का अतिरिक्त या अशुद्ध  
 अंग ।  
 क्षेत्रण तत्० ( पु० ) प्रेरण, भेजना, पठाना, पठान ।  
 क्षेत्र तत्० ( श्री० ) कुशल, मङ्गल, भलाई, धर्मशासन  
 के द्वारा उत्पन्न किया पुत्र ।—क्षुत् ( पु० ) कल्याण  
 कारक मङ्गलकर्ता ।—कर ( पु० ) शुभकर मङ्गल  
 कर ।—कुशल ( पु० ) आरोग्य मङ्गल ।  
 क्षेमेन्द्र तत्० ( पु० ) ये करमीर नियासी एक प्रसिद्ध  
 कवि हैं, करमीर के राजा अनन्त देव के समय में  
 ये करमीर में वर्तमान् थे । इनका समय ११ ग्यारहवीं  
 शताब्दी निश्चित हुआ है । काम से कम इनके बनाये  
 २८—३० ग्रन्थ दस समय प्रसिद्ध हैं । इनकी  
 कविताशक्ति और लौकिकज्ञान विलक्षण था । इनके  
 ग्रन्थों में एक का नाम “अयदानकल्पलता” है ।  
 उसमें बौद्धमहात्माओं का हाल दिया गया है ।  
 क्षीण तत्० ( श्री० ) पृथिवी, मेदिनी, अधनी,—ग  
 ( पु० ) क्षितिग, ( पु० ) मङ्गल ।—प ( पु० ) राजा,  
 नरपति ।—द्वै ( पु० ) ब्राह्मण ।  
 क्षीणी तत्० ( श्री० ) पृथिवी, भूमि ।  
 क्षीभ तत्० ( पु० ) क्रोध, पक्षात्पाप, उत्साह-भङ्ग ।  
 क्षीणी तत्० ( श्री० ) देखो क्षीणी ।  
 क्षीद्र ( पु० ) मधु, शहद ।—ग ( पु० ) मधु से उत्पन्न  
 पदार्थ ।



क्षौम तत्० (पु०) श्रद्धी, पट्टवस्त्र ।

क्षौर तत्० (पु०) सुरकर्म, बाल बनाना, मुण्डन ।

क्षौरक (पु०) तत्० चुरा, नाई, नापित ।

क्ष्मा तत्० (स्त्री०) धरणी, धरा, पृथिवी ।—तल (पु०) धरातल, भूतल पृथिवी तल ।—भुक् (पु०) भूमिभोक्ता, राजा ।—भृत् ( ० ) राजा, नृपति, पर्यंत, पहाड़ ।

## ख

ख तत्० (पु०) आकाश, गगन मण्डल, सून्य, विन्दु, गृहक्षिद्र, देवलोक, इन्द्रिय, सुप्त ।

खई तत्० ( स्त्री० ) मुर्च्छा, मैल, जङ्ग, लोहे की मलिनता ।

खखारना दे० (क्रि०) खांसना, कफ निकालना ।

खखोरना दे० (क्रि०) फुरचना, कोड़ना, खोदना ।

खग तत्० (पु०) पक्षी, चिड़िया, आकाशगामी, वायु ग्रह, खचर ।—केतु (पु०) गरुडध्वज, भगवान्, श्रीविष्णु ।—नाथ—नायक (पु०) सूर्य, चन्द्रमा गरुड़ ।—नाह (पु०) वैनतेय, गरुड़, पक्षिराज ।—पति (पु०) गरुड़, सूर्य, चन्द्रमा ।—माला (स्त्री०) पक्षिसमूह ।—हा (पु०) पक्षिघाती, गैड़ा, धाज, वयाध ।

खगेन्द्र तत्० (पु०) पक्षिराज, गरुड़ ।

खगेश तत्० (पु०) पक्षियों का स्वामी, गरुड़, चन्द्रमा ।

खगोल तत्० (पु०) आकाश मण्डल ।

खग्ग तत्० (पु०) गुर, बीर, बलवान्, तलवार ।

खङ्गना दे० (क्रि०) कम होना, घटना, (पु०) नूनता, श्रथता ।

खङ्गर दे० (पु०) कामा, लोहे का मैल, लोहचून ।

खङ्गार या खकार दे० (पु०) बूक, कफ ।

खङ्गालना या खगारना दे० (क्रि०) धोना, बर्तन साफ़ करना, श्रवांसना ।

खङ्गौले (पु०) दँतेला, बड़े बड़े दाँत वाला ।

खचना दे० (क्रि०) सम्मिलनकरना, जोड़ना, सटाना, देखा करना ।

खचर तत्० (पु०) आकाशगामी नभचर, पक्षि, नक्षत्र ।

खच्चर दे० (पु०) पशुविशेष, गर्दभी और घोड़े के संयोग से उत्पन्न पशु ।

खचवाई दे० (स्त्री०) बनवाना, निर्मित कराना, खिचयाना, खिचवा कर ।

खचा दे० (पु०) खचित, जड़ित, जड़ाक, जड़ा हुआ, खोचा हुआ ।

खचित तत्० (पु०) जड़ित, जड़ाक, निर्मित ।

खची दे० (स्त्री०) बर्तन, निर्मित ।

खजरा दे० (पु०) मिलाहुआ, मिलावटी, मङ्गण, घण्टेरी, हप्पर के बीच का उठा हुआ भाग ।

खजूर तद्० (पु०) लुहारे का एक भेद ।

खजूरा दे० (पु०) गोजर, कनगोजर, धियैला कीट विशेष ।

खजुरिया दे० (पु०) खजूर ।

खज्योति तत्० (पु०) खद्योति, आकाश का प्रकाश, आकाश की ज्योति ।

खज्ज तत्० (पु०) लङ्गना लूला, पङ्क, विकलगति ।  
—ता (स्त्री०) चरण का अभाव, पङ्कत्व, लूलापन ।

खज्जन तत्० (पु०) खज्जरीट, पक्षी विशेष, खड़ैया, खड़लीच ।

खज्जर दे० (पु०) कटारी, अस्त्रविशेष, दाव ।

खज्जरी दे० (स्त्री०) वाद्यविशेष, खजड़ी ।

खज्जरीट तत्० (पु०) खज्जन पक्षी ।

खट दे० (स्त्री०) खाट, खट्वा, खट खट ध्वनि ।

खटक दे० (पु०) खटका, शङ्का, सन्देह, संशय ।

खटकना दे० (क्रि०) बजाना, भगड़ना, लड़ना, सन्देह हो आना, शब्द होना, चिन्ता होना ।

खटका तत्० (पु०) सन्देह, भय, सन्देह, भय, डर ।

खटकाना दे० (क्रि०) आहट देना, शब्द करना, ध्वनि के द्वारा सूचना, चलना, उठकराना ।

खटखटाना दे० (क्रि०) ठकठकाना, ठोंकना, खट खट ध्वनि करना ।  
 खटखटपर दे० (पु०) खटपर खट, खाट का एक भेद, श्या ।  
 खटना दे० (क्रि०) चलना, ठहरना, टिक रहना ।  
 —खटाहि (क्रि०) स्थिर रहते हैं ।  
 खटपट दे० (पु०) भगड़ा, लड़ाई, विरोध ।  
 खटमल दे० (पु०) खटकीरा, मत्कुण ।  
 खटराग दे० (पु०) अममेल, विरोध, देजोड़ ।  
 खटवा तद्० (स्त्री०) खाट, खटवा, पलङ्ग, श्या ।  
 खटाई दे० (स्त्री०) खटापन, अमलता, अममूर ।  
 खटाका दे० (पु०) मयङ्कर ध्वनि, धड़ाका, घटाका ।  
 खटापटी दे० (स्त्री०) अममन, विरोध, बैर, भगड़ा, लड़ाई ।  
 खटाव दे० (पु०) नांव बांधने का खूटा ।  
 खटास दे० (पु०) खटाई, खटापन, चार चैर का तन्तु-विशेष ।  
 खटिका तत्० (स्त्री०) लड़कों के लिखने की खड़ी, सेलखड़ी ।  
 खटिया दे० (स्त्री०) खाट, श्या ।  
 खटिक दे० (पु०) जाति विशेष, कुंलड़ा, बहेलिया ।  
 खटोला दे० (पु०) पालना, मंभा, छोटी खटिया ।  
 खट्ट दे० (स्त्री०) खाट, खट्टा ।  
 खट्टा दे० (पु०) अमल, अम्यत, गुरसाई, अमलता ।  
 खट्टिक दे० (पु०) खटीक, बहेलिया ।  
 खट्ट दे० (पु०) बनिहार, मजूर, चाकर ।  
 खट्टवा तत्० (स्त्री०) खाट, पलंग, खटवा ।  
 खड़ दे० (स्त्री०) पलाल, पयाल, तृण ।  
 खड़क दे० (पु०) गीशासा, गोष्ठ, गौ के रहने का स्थान ।  
 खड़कना दे० (क्रि०) भनभनाना, बजाना, अठमक ध्वनि ।  
 खड़कड़ाना दे० (क्रि०) ठकठकाना, दांत पीसना, खड़ खड़ ध्वनि ।  
 खड़खड़िया दे० (स्त्री०) पालकी, डोली, खड़लीच तद्० (पु०) खजुरीट, खजून ।  
 खड़चराहट दे० (स्त्री०) ध्वनि विशेष, आहट, भूचना विशेष ।

खड़सान दे० (पु०) शान, पत्थर धिगेप, अथ तेज करने का पत्थर ।  
 खड़ा दे० (पु०) उठा, सीधा, ऊपर को उठा हुआ ।  
 खड़ाऊं दे० (पु०) पादुका ।  
 खड़ी दे० (स्त्री०) श्वेतवर्ण मृत्तिका ।  
 खड़िया दे० (स्त्री०) दुधिया मिट्टी, सेलखड़ी ।  
 खड़ुवा दे० (पु०) बाला, बलय, क्रड़ा ।  
 खड़े खड़े दे० (व०) शीघ्र, तत्त्वण, गुरन्त, बेगि ।  
 खड़ेचड़ दे० (पु०) पक्षिविशेष, खजुरीट, खजून ।  
 खड़ तत्० (पु०) अमि, तलवार, गेंडा, जन्तुविशेष ।  
 खरड तत्० (पु०) टुकड़ा, खाई, अध्याय, भाग, हिस्सा ।—खरड (पु०) टुकड़ा टुकड़ा, भाग का भाग ।  
 खरडन तत्० (पु०) दूषण, तोड़ना, क्षिप्त भिन्न करना, अगुद प्रमायित करना ।  
 खरडना तद्० (स्त्री०) दूषण देना, खरडन करना, काटना ।  
 खरडनार्थ तत्० (पु०) खरडन करने के लिये, काटने के लिये ।  
 खरडप्रलय तत्० (पु०) छोटा प्रलय, किसी देश या खरड का नाश, महाकलह ।  
 खरडपरशु तत्० (पु०) शिख, महादेव ।  
 खरडर दे० (पु०) उजाड़, योरान, गड़वा, गढ़ा, कतवार खाना, खरडरना दे० (क्रि०) टुकड़े टुकड़े करना, खरडन करना, काटना ।  
 खरडशः तत्० (व०) खरड खरड, टुकड़ा टुकड़ा ।  
 खरडहर दे० (पु०) ऊनड़, फूटा टूटा मकान या गांव, योरान ।  
 खरिडत तत्० (पु०) तिरस्कृत, क्षेदित, भिन्न, अपूर्ण काटा गया ।—करना घात काटना, खरडन करना ।  
 खरिडता तत्० (स्त्री०) नायिका विशेष, पति की अत्यासक्ति के कारण दुःखिता, यया दोहा—  
 “पति तन धरि नार के रति के चिन्ह निहार ;  
 दुःखित होय नो खरिडता बरतन सुकवि विनार” ।  
 —रसरत्न  
 खतरानी दे० (स्त्री०) खत्री जाति की स्त्री ।

खतान दे० (स्त्री०) जमाखर्च, लेखा, हिसाब ।  
 खत्तिल दे० (पु०) पोस्त ।  
 खतियान दे० (पु०) लेखा यही, हिसाब की यही ।  
 खत्ता दे० (पु०) अन्न रखने का गड़ा, या खत्तो ।  
 खत्ती दे० (स्त्री०) अन्न रखने का छोटा खत्ता ।  
 खत्री दे० (पु०) जाति विशेष, पञ्जाब के रहनेवाली  
 भ्रातृपारी जाति ।  
 खदिर तत्० (पु०) खैर, कल्पा ।  
 खदेड़ दे० (पु०) दौड़, अछेर ।  
 खदेड़ना दे० (क्रि०) दौड़ाना, भगाना, रगेदना ।  
 खद्योत तत्० (पु०) जुगनू, पटथीजना ।  
 खन तद्० (पु०) खण्ड, भाग ।  
 खनक तत्० (पु०) खोदने वाला मूँसा, जूहा ।  
 खनकना दे० (क्रि०) खनखन शब्द करना, ठनठन  
 ध्वनि ।  
 खनन तत्० (पु०) विदारण, खानकरण, गड़ा खोदना,  
 खोदना ।  
 खनना तद्० (क्रि०) खोदना, कोड़ना, खनन करना,  
 गोड़ना ।  
 खना तत्० (स्त्री०) प्रसिद्ध ज्योतिःशास्त्र-विदुषी स्त्री,  
 यह विक्रमादित्य के नवरत्न सभा के एक रत्न बराह  
 मिहिर की स्त्री थी, यह मिहिर वररुचि के पुत्र  
 नदी से किन्तु इनके पिता का नाम बराह था ।  
 बराह भी प्रसिद्ध ज्योतिषी थे, खना ने लङ्का में  
 राक्षसों से ज्योतिर्विद्या पढी थी, इस विद्या में  
 यह इतनी चढ़ी बढ़ी थी कि समय समय पर  
 उसके पति और श्वशुर को भी नीचा देखना  
 पड़ता था ।  
 खनि तत्० (स्त्री०) धातुओं का उत्पत्तिस्थान,  
 आकर, खान ।  
 खनित्र तत् (पु०) अन्न विशेष, खोदने का अन्न,  
 खन्ती ।  
 खन्दान दे० (पु०) गर्त, गड़हा, गढ़ा, आफड़ ।  
 खन्ती दे० (स्त्री०) खनित्र ।  
 खपटा दे० (पु०) ठीकरा, छपरा, खपरे के टुकड़े ।

खपत दे० (पु०) बिकाव, बिक गया, बिकी ।  
 खपतो दे० (स्त्री०) कटत, बिकाव, बिकी ।  
 खपना दे० (क्रि०) बिकना, बिकी होना, घटना,  
 कम होना ।  
 खपरा दे० (पु०) गृहाच्छादन की सामग्री, खपरा ।  
 खपरी दे० (स्त्री०) घड़ा आदि का फटा भाग, छोटा  
 खपरा ।  
 खपरैल दे० (पु०) खपरा से बना हुआ, गपरा  
 निर्मित ।  
 खपाच दे० (स्त्री०) चैला, काठ या हाँस का  
 टुकड़ा ।  
 खपाना दे० (क्रि०) बँचना, बिकवाना, समझ  
 करना, घटाना ।  
 खपित दे० (पु०) बिका हुआ ।  
 खपुर तत्० (पु०) मुपारी का पेड़, खर्प,  
 आकाश ।  
 खपुष्प तत्० (पु०) असम्भय, आकाश पुष्प, अ-  
 सिद्ध, मिथ्या ।  
 खप्पर तद्० (पु०) साधुओं का पात्र विशेष,  
 खोपड़ी, कपाल ।  
 खपर दे० (स्त्री०) संवाद, समाचार, हाल चाल ।  
 खबसा दे० (पु०) कौंदा, चहला, पङ्क ।  
 खबवा दे० (पु०) बाँयाहत्या ।  
 खभार दे० (पु०) चोम, मोह, हलचल ।  
 खभारू दे० (पु०) पेटकी जलन, चबराहट, खड़बड़ा-  
 हट ।  
 खभ तद्० (पु०) ताल, भुजा, खम्भ ।—उँकना  
 ताल ठोकरना, पहलवानों की एक प्रकार की  
 मुद्रा ।  
 खभस दे० (पु०) निर्वात, वायुरहित, ग्रीष्म, उमस  
 ऊष्म ।  
 खमीलन दे० (पु०) यकाधट, झुलानि, अवसाद  
 भ्रान्ति ।  
 खम्बा तद्० (पु०) शम्भा, युनि ।

खम्भा तद्० ( पु० ) स्तम्भ, खम्बा, धाम्भा ।  
 खर तद्० ( पु० ) तोषण, तेज, कड़ा, तृण, घास, गृह्म, उत्तम, एक राक्षस का नाम, यह रामायण की प्रसिद्ध सुपनखा का भाई था । सुमाली राक्षस की कन्या विश्रवामुनि ने ब्याही गयी, उसीसे खर उत्पन्न हुआ, चौदह हजार राक्षसों को लेकर यह रायण की छात्रा से जनस्थान की रक्षा करता था । सुपनखा के नाक कान कटने के बाद यह अपनी सेना के साथ रामचन्द्र जी से लड़ने गया, यहाँ अपनी सेना और दूषण आदि वीर सेना-यतियों के साथ मारा गया ।  
 खरक दे० ( पु० ) गोशाला, खड़क ।  
 खरकना दे० ( क्रि० ) खसकना, गिरना, स्थलित होना, धमकाना, भगाना ।  
 खरखर दे० ( गु० ) खरहरा, दरदरा, शीघ्र, द्रुत ।  
 खरजा दे० ( पु० ) पटाप, पक्का बनाया हुआ, पक्की खड़क ।  
 खरछरा दे० ( गु० ) खड़खड़, चड़चड़, दरदरा ।  
 खरपा दे० ( पु० ) खराक, उर्मा, खियों के पहनने का जूता ।  
 खरपत्र तद्० ( पु० ) सुगन्धित पौधा, भरुवा ।  
 खरचर दे० ( खी० ) खड़बड़ ध्वनि, चड़बड़ ।  
 खरभर दे० ( खी० ) लोभ, अवसाद, खलबली, उग्रल पुथल ।  
 खरमञ्जरी तद्० ( खी० ) ऊंग, अपामार्ग ।  
 खरयष्टिका तद्० ( खी० ) खिरहरी, शौषधि विशेष ।  
 खरल दे० ( दु० ) शौषध कूटने का पत्थर का पात्र ।  
 खरवृज दे० ( पु० ) बड़ा खरवृजा, एक प्रकार का फल ।  
 खरहरा दे० ( पु० ) घोड़ा आदि को साफ करने का कढ़ा ।  
 खरहरा दे० ( पु० ) शशक, खरगोस ।  
 खरदारना दे० ( क्रि० ) बुहारना, भाड़ना, घटोरना ।

खरही दे० ( पु० ) कुन्दड़ा, टाल, देर, राशि ।  
 खरा दे० ( पु० ) चोखा, श्रेष्ठ, उत्तम, बढ़िया ।  
 खराई दे० ( खी० ) सत्यता, सचाई, उत्तमता ।  
 खराका दे० ( पु० ) भड़ाका, खड़खड़ाहट ।  
 खरारि तद्० ( पु० ) खरदैत्य के शत्रु, श्रीराम-चन्द्र ।  
 खराहन्द दे० ( खी० ) जली घास, दुर्गन्ध ।  
 खटिक दे० ( पु० ) गोशाला, खड़क ।  
 खरी दे० ( खी० ) उत्तम, अच्छा, चोखी, भली, खड़ी, गर्दी ।  
 खरीद दे० ( पु० ) क्रय, कोनना ।  
 खरीदा दे० ( गु० ) क्रयकिया, मूल्य देकर लिया ।  
 खरीदार दे० ( गु० ) क्रेता, क्रयकर्ता ।  
 खरे दे० ( गु० ) उत्तम, अच्छे, खड़े ।  
 खरीट दे० ( खी० ) बकोट, खसोट ।  
 खरीचना दे० ( क्रि० ) नोचना, खसोटना, बकोटना ।  
 खर्ज तद्० ( पु० ) खर्ज, राग उच्चारण का स्थान विशेष ।  
 खर्जूर तद्० ( पु० ) खजूर, हुहार ।  
 खर्जूरिका तद्० ( खी० ) पिण्डी खर्जूर, पिण्ड खजूर ।  
 खर्जूरी तद्० ( खी० ) सूसली, शौषध विशेष ।  
 खर्पर तद्० ( पु० ) खप्पर, खोंपरि, शिर, कपाल ।  
 खर्ष तद्० ( पु० ) कुवेर का धन विशेष, संख्या विशेष १००००००००००० ( गु० ) बुद्र, वामन, ब्रोटा, इत्य ।  
 खर्षुजा दे० ( पु० ) देवी, खरवृज ।  
 खर्षा दे० ( पु० ) पाण्डुलिपि, मसविदा, टट्टर, खरखरा, चिट्ठा, खसरा ।  
 खर्षाटा दे० ( पु० ) सोने में पुराना, गाढ़निद्रा, शीघ्रता ।  
 खल तद्० ( गु० ) दुष्ट, नीच, अधम, भूमिस्थान, बपटी से अन्न निकालने का स्थान, खलिहान, क्रूर, दुर्जन, शौषधि कूटने का पात्र ।—कथा ( खी० )

- भूर्तों की कथा, चापबूझी बात ।—ता ( श्री० )  
दुष्टता, नीचता, भूर्तता, झूटता ।
- खलङ्गा दे० ( पु० ) उपवन, रमणीय वाग, मनोहर-  
वन ।
- खलखल दे० ( पु० ) गलगल, खड़खड़, नदी के  
वेग की ध्वनि ।
- खलड़ा दे० ( पु० ) चमड़ा, छाल, खाल ।
- खलबल दे० ( पु० ) हलचल, कुतूहल, उत्सुकता,  
अधोरता ।
- खलबलाना दे० ( क्रि० ) उफनना, ऊपर उठना,  
उबलना ।
- खलबली दे० ( स्त्री० ) भीति, भय से घबड़ाहट ।
- खला तह् ( स्त्री० ) दुष्टा स्त्री, अधमा, बेधवा,  
पातुर, पतरिया ।
- खलान दे० ( पु० ) खलसमूह ।
- खलार दे० ( स्त्री० ) नीचो भूमि, नीचान ।
- खलारि तह् ( पु० ) नारायण, गिष्णु, सज्जन ।
- खलारु दे० ( पु० ) निचान, खलार ।
- खलियान दे० ( पु० ) खता, खलियान, रस, अन्न  
साफ़ करने क स्थान ।
- खलियाना दे० ( क्रि० ) झीलना, उधेड़ना, रिक्त  
करना, खाली करना ।
- खलिहान दे० ( पु० ) खलियान ।
- खली तह् ( स्त्री० ) खल, नीच, अधम, सरसों तिल  
आदि का तैल रहित चूर्ण ।—कार ( पु० ) अपकार  
अनिष्ट ।
- खलीन तह् ( पु० ) कविका, जगाम ।
- खलीता दे० ( स्त्री० ) धैली, पत्र, चिट्ठी, पत्री ।
- खलु तह् ( प्र० ) निश्चय निःसन्देह, संशय रहित ।
- खल्ल दे० ( पु० ) फुलेल, गड़ा ।
- खल्लै दे० ( क्रि० ) अखरना, भारी मालूम होना, ( पु० )  
दुष्टों को, खल्लों को, यह शब्द रामायण में प्रयुक्त  
हुआ है ॥
- खल्लिय तह् ( पु० ) चन्द्रला, गङ्गा, खल्ल्याट ।
- खल्ल्याट तह् ( पु० ) जिसके सिर पर घाल न हों,  
गङ्गा, चन्द्रला ।

- खवा दे० ( पु० ) कन्धा, स्कन्ध, कांध ।
- खश तह् ( पु० ) एक प्रकार का सुगन्धित तृण,  
उशीर, देशविशेष, यह देश पर्यंत प्रधान है जो  
भारतवर्ष के उत्तर की ओर है । यहां के अधिवासी  
को भी खश कहते हैं ।
- खसकन्त दे० ( स्त्री० ) चम्पत होना, गुम होना,  
भाग जाना ।
- खसकना दे० ( क्रि० ) नीचे आना, गिरजाना,  
हटना, एक स्थान से हट जाना, चाहे नीचे या  
ऊपर ।
- खसकाना दे० ( क्रि० ) सरकाना, हटाना, बढ़ाना ।
- खसखस दे० ( पु० ) पोस्ता का दाना, उशीर, खस।
- खसखसा दे० ( पु० ) गला सूखना, गले की ककका-  
हट ।
- खसना दे० ( क्रि० ) धसना, गिर पड़ना, नीचे  
आना ।
- खसटा दे० ( पु० ) यहाँ, घाटा, छूटी, छुजली ।
- खसाना दे० ( क्रि० ) गिराना, पक्षात्पद करना ।
- खसी दे० ( स्त्री० ) गिरा, सरकी, नीचे आयी ।
- खसोटना दे० ( क्रि० ) निकालना, अन्वय से किसी  
का धन लेना, नीचना ।
- खस्फटिक दे० ( पु० ) काच, सूर्य, मणि, आकाश  
मणि ।
- खांग दे० ( पु० ) यड़ा दाँत, नोकीली वस्तु ।
- खांच दे० ( पु० ) कीचड़, काँदा ।
- खांचा दे० ( पु० ) टोकरा ।
- खांड दे० ( पु० ) शककर, गुड़, चीनी ।
- खांडना दे० ( क्रि० ) छाटना, फूटना, आघात  
द्वारा अन्नादि को साँर करना, निस्त्युपीकरण ।
- खांडा दे० ( पु० ) खहग विशेष, अखविशेष, तेगा  
—खांडे को धार पर चलना ( वा० ) दुष्-  
न्याय, अतिशय कठिन, उचित मार्ग पर चलना  
खांसना तह् ( क्रि० ) खोलना, खोलारना, खोल-  
दों दों करना ।
- खांसी तह् ( स्त्री० ) रोग विशेष, कासरोग, खोख  
खाइ दे० ( क्रि० ) खाकर, भोजनकर ।
- खाइय दे० ( क्रि० ) खाइये, भोजन कीजिये ।

खाई दे० (क्रि०) खा लो, भोजन कर लिया । (स्त्री०)  
 क्लिने के या नगर के चारों ओर की नहर, गर्त,  
 गड्ढा, खात, नाला ।

खाऊ दे० (पु०) पेड़, पेटाघी, भोजन लोचुप, घालसी,  
 खा जाने वाला ।

खाग दे० नंदे के सींग ।

खाज दे० (स्त्री०) खुजलाहट, खुजली, कपड़ू ।

खाजा दे० (पु०) एक प्रकार की मिठाई ।

खाञ्जा दे० (पु०) काठ का बड़ा पात्र ।

खाट तद्० (स्त्री०) खट्टा, पत्तल, चारपाई ।

खाण्डव तद्० (पु०) वन विशेष, रन्द्र का वन, जिसे  
 अर्जुन ने जलाया था और उमें जलाकर अग्नि का  
 अजीर्णरोग दूर किया ।

खात तद्० (पु०) खोखरा, गड़ा, गड्ढा, खाद,  
 गोबर ।

खातक तद्० (पु०) कृष्ण, धरता, अधमर्ण ।

खाता दे० (पु०) एक धाप बंधे हुए पत्र, दिवाय,  
 बही, लेन देन ।

खातिर दे० (पु०) आदर, कारण, लिये ।

खातेऊ दे० (क्रि०) खानाता, खाता, खानेता,  
 मैं खानेता, खाते हुए भी, रामायण में इस शब्द  
 का प्रयोग किया गया है ।

खाती दे० (पु०) जाति विशेष, बड़ई ।

खाद दे० (पु०) गोबर, कतघार, सड़ीयस्तु मल  
 आदि ।

खादक तद्० (पु०) खाने वाला, खबैया, कृष्ण, कड़ों,  
 अधमर्ण ।

खादन तद्० (पु०) भोजन, भक्षण ।

खादि दे० (पु०) वस्त्र विशेष ।

खाद्य तद्० (पु०) भोजनीय वस्तु, भक्षणीय, खाने  
 योग्य वस्तु ।

खान तद्० (स्त्री०) खानि, आकर, आधार, उद्भव  
 स्थान ।

खानखर दे० (पु०) गर्त, सुरङ्ग, खोह ।

खाना दे० (पु०) भोजन, भक्षण, आहार ।

खानिक तद्० (पु०) खानि सम्बन्धी, खानि का,  
 आकर का ।

खानि तद्० (स्त्री०) खान, उत्पत्तिस्थान, आकर ।

खानी तद्० (स्त्री०) खान, आकर, खोदी ।

खाप दे० (स्त्री०) तलवार की खोल, म्यान, कोय ।

खायड़ दे० (पु०) ऊँच नीच, अड़वड़ ।

खार तद्० (पु०) चार, लोना, सन्नी मिट्टी ।

खारका दे० (पु०) डुहारा ।

खारय दे० (क्रि०) खाली करे, चार निकाने, साक  
 करे ।

खारा दे० (पु०) लोना, चार, तीखा ।

खारी दे० (स्त्री०) कड़वा निमक, भीखानांन ।

खारया दे० (पु०) एक प्रकार का लाल मोटा  
 कपड़ा ।

खाल दे० (स्त्री०) चमड़ा, धोकनी, भखा, चर्म ।

—खैचना (क्रि०) गरीर पर का चमड़ा उतार  
 लेना, खलड़ी उधेरना ।

खाली दे० (पु०) रीता, रिक्त, शून्य, खायली ।

खालु दे० (पु०) देह का चर्म, स्रोतना ।

खाले दे० खोदे, मोला करे, नीचे, गड्ढे में ।

खिन्वावट दे० (पु०) देवावट, तनाव, तानना,  
 सँठना ।

खिंदड़ी दे० (स्त्री०) योगी का आसन, योगी की  
 खटिया ।

खिचड़ी दे० (स्त्री०) खिचरी, मिश्रित भोजन विशेष,  
 कुशर ।

खिचना दे० (क्रि०) तानना, सँचना ।

खिन्नाय दे० (क्रि०) तिवचाकर, तना कर, [ इस  
 शब्द का प्रयोग ब्रजभाषा में होता है ]

खिन्वाव दे० (पु०) तनाव, खैचाव, सँचाव ।

खिजलाना दे० (क्रि०) कुपित होना, क्रुद्ध होना,  
 सताना, चिड़ाना ।

खिजाना दे० (क्रि०) क्रुद्ध करना, कुपित करना,  
 दुख देना ।

खिम्ब दे० (स्त्री०) क्रोध, कोय, खिसियाहट ।

खिम्बाना, खिम्बलाना दे० (क्रि०) खिजना,  
 खिजाना ।

खिड़की दे० ( स्त्री० ) झरोखा, गयाद, गौख, दरीची ।

खिण्डाना दे० ( क्रि० ) विथराना, विखेरना, छितराना ।

खिन्न तत्० ( गु० ) खेदित, विपाद प्राप्त, उदास, दुःखित, दुःखी, दुःखिया ।

खिरनी दे० ( स्त्री० ) फल विशेष, खिन्नी ।

खिल दे० ( पु० ) आगम, आगल, धन्नी ।

खिलखिलाना दे० ( क्रि० ) खूब जोर से हंसना, ठट्टा करना, हंसना ।

खिलजाना दे० ( क्रि० ) विकसित होना, प्रफुल्ल होना, हर्षित होना ।

खिलना दे० ( क्रि० ) विकसित होना, फूलना, पुष्पित होना ।

खिलाईदाई दे० ( स्त्री० ) धात्री, धाय, खिलाने पिलाने वाली, प्रतिपालन करने वाली ।

खिलाऊ दे० ( गु० ) खिलाने वाला, फूंकने वाला, अधिकव्ययी, अपठव्ययी ।

खिलाड़, खिलाड़ी दे० ( पु० ) चञ्चल, खेलने वाला, आचारा, चञ्चल ।

खिलाना दे० ( क्रि० ) भोज करना, खिलाना ।

खिलैया दे० ( पु० ) खेल करने वाला, खिलाड़, खिलाड़ी ।

खिलौना दे० ( क्रि० ) गुड़िया, पुतली, खेलने की वस्तु ।

खिल्ली दे० ( स्त्री० ) हंसी, ठठोली, परिहास, ठट्टा, धान का लावा ।

खिल्लू दे० ( गु० ) खिलाड़, खिलाड़ी ।

खिसकना दे० ( क्रि० ) चम्पत होना, सरकना, चलाना, भागना ।

खिसकाना दे० ( क्रि० ) हटाना, भगाना, टालना, सरकाना ।

खिसना दे० ( क्रि० ) नम होना, नमना, झुकना, शरणागत होना ।

खिसलना दे० ( क्रि० ) सरकना, फिसलना, विचलना, गिरना ।

खिसलहा दे० ( गु० ) चिक्कना, फिसलहा, चिक्क ।

खिसलाहट दे० ( स्त्री० ) खीभना, क्रोध, कोप ।

खिसाना दे० ( क्रि० ) हटाना, टालना, अनुस्मरित होना, झुट्ट होना ।

खिसाय रहना दे० ( क्रि० ) अप्रसन्न होजाना, हिचकना, टलना ।

खिसियाना दे० ( क्रि० ) धिड़चिड़ाना, क्रोध करना, खिसाना ।

खिसयानि दे० ( स्त्री० ) लज्जित होना, मन्त्रा, लजार्थ ।

खिसियाहट दे० ( स्त्री० ) क्रोध, कोप, खीस, खीन ।

खीच दे० ( स्त्री० ) अप्रसन्नता, अनयन ।

खीज दे० ( स्त्री० ) क्रोध, कोप ।

खीजना दे० ( क्रि० ) क्रोधित होना, कुपित होना ।

खीन तद्० ( गु० ) शीघ्र, दुर्बल, दुबला, पतला ।

खीर तद्० ( पु० ) क्षीर, पायस, तसमई ।

खीरा दे० ( पु० ) फलविशेष, ककड़ी ।

खीरी दे० ( स्त्री० ) मेवाविशेष, पिस्ता ।

खील, खीला दे० ( स्त्री० ) धान का लावा, मङ्गनाई लावा ।

खीली दे० ( स्त्री० ) पान की बीड़ी ।

खीस दे० ( स्त्री० ) टोटा, घाटा, न्यूनता, कमी, क्रोध, दांत का निकास ।

खीसना दे० ( क्रि० ) क्रोध करना, खीस निकालना ।

खीसा दे० ( पु० ) खलोता, घाटा, उतरा, सरक, जेब ।

खीह दे० ( स्त्री० ) रेह, सज्जी मट्टी ।

खुंदलना दे० ( क्रि० ) कुचलना, रौंदना, पदाहत करना ।

खुख दे० ( गु० ) भक्तिञ्जन, दरिद्र, दीन, कङ्काल, भिचुक ।

खुजलाना दे० ( क्रि० ) खजुखाना, मुहलाना, सुहराना, चुलचुलाना ।

खुजलाहट दे० ( स्त्री० ) खुजली, गुदगुदी, सुहरती ।

खुजली दे० ( स्त्री० ) खाज, कण्डु ।

खुभराहा दे० ( गु० ) कृपण, अर्थविश्राव, खीचड़ ।

खुटकना दे० ( क्रि० ) सन्देह करना, कुतरना, संग-  
चित्त होना ।

खुटका दे० ( पु० ) सन्देह, शङ्का, अग्रचिन्ता ।

खुटाई दे० ( स्त्री० ) दुष्टता, अधमता, नटखटी ।

खुटाना दे० ( क्रि० ) बराबर करना, तुल्य करना,  
समान करना, निःशेष होना, चीज होना, नष्ट  
होना ।

खुट्टी दे० ( स्त्री० ) पूंजी, रोकड़, धूलधन ।

खुडला दे० ( पु० ) पश्चिमों के रहने का स्थान, सर्गों  
का वास, बेहड़ ।

खुण्डला दे० ( पु० ) कोटर, वृक्ष का छिद्र, खोखर ।

खुली दे० ( स्त्री० ) पैली, तोड़ा, रुपया रखने की  
कोथली ।

खुदवाना दे० ( क्रि० ) कोड़वाना, माटी निकल-  
वाना, गुड़वाना ।

खुदी दे० ( स्त्री० ) कणिका, कणा, चावल का  
डुकड़ा ।

खुद्दे दे० ( स्त्री० ) अन्तर, अग्रधान ।

खुनस, खुनुस दे० ( पु० ) क्रोध, क्रोप, रोष,  
लाग ।

खुनसाना दे० ( क्रि० ) क्रोध करना, डाह रखना,  
रिसाना, घिसाना ।

खुनसी दे० ( पु० ) क्रोधी, कोवी, रिसाहा ।

खुन्दलना दे० ( क्रि० ) धुरचना, पैर से दवाना ।

खुबना दे० ( क्रि० ) बुभना, बिंधना, पैठना, प्रभाव  
जमाना ।

खुवाच दे० ( पु० ) विगड़ा हुआ, नष्ट ।

खुभना दे० ( क्रि० ) खुबना, बुभना, बिंधना ।

कुभी दे० ( स्त्री० ) कर्णभ्रंश, कान का गहना ।

खुर तत्० ( पु० ) गाय के पैर का नख ।

खुरचना दे० ( क्रि० ) झीलना, उधेड़ना ।

खुरण्ड दे० ( पु० ) खूटी, पपड़ी ।

खुरपा दे० ( पु० ) घास झीलने का अन्न, खुरपा,  
खुरपी ।

खुरमा दे० ( पु० ) खजूर, एक प्रकार की मिठाई ।

खुर्राट दे० ( पु० ) गहुत पुराना, जोर्य, चालबाज़ ।

खुरिया दे० ( पु० ) घुटने की चकती, चोंद्र ।

खुरेरना दे० ( क्रि० ) खदेड़ना, भगाना, रगेदना,  
खेदना ।

खुलना दे० ( क्रि० ) प्रकट होना, विखरना, वादलों  
का खितर वितर होना ।

खुलवाना दे० ( क्रि० ) खोल देना, खुड़ाना, मुक्त  
करना ।

खुलेचन्द दे० ( वा ) प्रकट रूप से, प्रकाश रूप से,  
निर्भीकता ।

खुल्लमखुल्ला दे० ( वा ) प्रकाश भाव से, निर्भी-  
कता से ।

खुशकी दे० ( पु० ) निर्जल मार्ग, सूखा, नीरस,  
पैदल मार्ग ।

खुसुर, कुसुर दे० ( पु० ) कानाकानी ।

खूँच दे० ( स्त्री० ) नाड़ी विशेष, जानु की नाड़ी ।

खूँट दे० ( पु० ) कोन, कोना, कान का मैल ।

खूँटना दे० ( क्रि० ) मद्धुचित्त करना, सङ्कीर्ण  
करना, औषध विशेष, उद्यत होना ।

खूँटला दे० ( पु० ) औषध विशेष ।

खूँटा दे० ( पु० ) यम्भा, यम्भला, खम्भा, काठ का  
टेकना ।

खूँटी दे० ( स्त्री० ) छोटा खूँटा ।

खूँदना दे० ( क्रि० ) पैरों से खोदना, टाप मारना,  
खोदना, रौदना, कुचलना ।

खूफा दे० ( पु० ) तलछट, मल ।

खूटना दे० ( क्रि० ) तोड़ना, खनोटना, उखाड़ना,  
उधेड़ना ।

खूटी दे० ( स्त्री० ) खूटी, पपड़ी ।

खूड दे० ( पु० ) रेघारी, अङ्क, छाई, खान ।

खूद या खूद दे० ( पु० ) स्वयं, आप आप, खली,  
सीढ़ी ।

खूदराना दे० ( क्रि० ) हुल्की चलना ।

खूमना दे० ( क्रि० ) पुराना होना, जोर्य होना ।

खेकसा दे० ( पु० ) चिन्ह, पहिचान, लक्षण ।

खेचर तत्० ( पु० ) आकाशगामी, गिय, पडी,  
विद्याधर ।



खेचारी तह० ( गु० ) विद्याधर, पत्नी, नक्षत्र ।  
खेट तह० ( पु० ) ग्रह, पत्नी, नीच, डर, अहेर,  
नक्षत्र, विद्याधर ।

खेटक तह० ( पु० ) ग्रामविशेष, छोटा नगर, गदा,  
वलराम की गदा, अहेर, अछविशेष, ढाल, कुत्सित,  
निन्दित ।

खेटिक तह० ( पु० ) बधिक, व्याध, बहेलिया ।

खेडा दे० ( पु० ) गाव, ग्राम, पुरवा ।

खेडी दे० ( स्त्री० ) लीहविशेष, कान्तिसार, इस्पात ।

खेटी दे० ( स्त्री० ) गर्भावरण, भिक्षु ।

खेत तह० ( पु० ) क्षेत्रभूमि, पुष्यभूमि, पाषणभूमि,  
समरभूमि, कृषिभूमि ।—छोडना युद्ध से भाग  
जाना ।—रहना लडाई में हत होना, मारा  
जाना ।

खेतल तह० ( पु० ) आकाशमण्डल ।

खेती तह० ( स्त्री० ) किसान का कर्म, जोताऊ, कृषि,  
कालकारो ।—चारी (घा०) काम धन्धा, खेती का  
काम ।

खेद तह० ( पु० ) सन्ताप, दुःख, शोक, पक्षान्ताप, पक्ष-  
तापा, मनस्ताप ।—न्यत (गु०) शोकान्वित  
खेदयुक्त, दुःखी ।

खेदना दे० ( क्रि० ) हाँकना, भगाना, सताना ।

खेदा दे० ( पु० ) हाथी पकड़ने का स्थान ।

खेदित तह० ( गु० ) दुःखित, पीडित, क्लेशित, सताया  
गया ।

खेप दे० ( स्त्री० ) भार, बोझ, जो एकबार उठाया जा  
सके, एक बार में उठाकर कहाँ ले जाया जाय,  
जैसे “तुम कितनी खेपें लाय,” “तुम एक दिनमें कै  
खेपें ले सकते हो ?”—हारना (य) हानि उठाना ।

खेपा दे० ( गु० ) उन्मत्त पागल, वातुल, बकवादी ।

खेरा दे० ( पु० ) ऊजड़ गाध, डीह ।

खेरी दे० ( स्त्री० ) लीहविशेष, हन, हर ।

खेल तह० ( पु० ) क्रीडा, विहार, कौमुक, मनोरञ्जन,  
खिन्द ।

खेलना दे० ( क्रि० ) खेल करना, क्रीडा करना,  
विहार करना ।

खेवक, खेवट तह० ( पु० ) माफ़ी, डाही, कर्षा,  
मल्लाह ।

खेवटिया दे० ( पु० ) नौका चलाने वाला, मल्लाह  
खेवट ।

खेवना दे० ( क्रि० ) डाढ़ मारना, नाव चलाना ।

खेवा दे० ( पु० ) नाव का गुल्क, नाव की उतरारंभ  
भाडा ।

खेसारी दे० ( स्त्री० ) अक्षविशेष ।

खेस, खेसडा दे० ( पु० ) कपडा विशेष ।

खेह दे० ( स्त्री० ) राख, धूली, छाक, भस्म ।

खेंच दे० ( स्त्री० ) उखाडा, खेंच, टान ।

खेंचना दे० ( क्रि० ) खेंचना, कसना, टानना, तान  
चित्र बनाना ।

खेंचाखेंच दे० ( घा० ) विरोध, लडाई, खेंवातानी ।  
—ी भगडा, विद्वेष ।

खैर दे० ( पु० ) कथ, कत्या, खदिर (प्र०)  
सूचक शठयय, अस्तु ।

खैरा दे० ( पु० ) भूरा रङ्ग, मङ्गली विशेष ।

खैला दे० ( पु० ) दोहान, बखडा, नया बैल ।

खोआ दे० ( पु० ) सुखी, अघौटा दूध, दूध -  
विकार विशेष ।

खोआना दे० ( क्रि० ) हार जाना, टगा जाना, भूत  
जाना ।

खोई दे० ( स्त्री० ) झिलका, ऊल की सीठी ।

खोखना दे० ( क्रि० ) काखना, खखारना, क  
निकालना ।

खोऊ दे० ( गु० ) उडाऊ, खर्चीला, अकथयी ।

खोखी दे० ( पु० ) खासी, कास, रोग विशेष ।

खोच दे० ( स्त्री० ) चीर, खोप, किसी चीज से  
का फट जाना, छेद होना ।

खोचना दे० ( क्रि० ) खुसेबना, टेलना ।

खोचा दे० ( पु० ) चीरा, भराव, ठेस ।

खोडकल दे० ( पु० ) गडहा, गडा, कौडर ।

खोता दे० ( पु० ) खोंधा, चौंसला, नीड, पक्षियों  
रहने का स्थान ।

खोपा दे० ( पु० ) गाध, ताग्य, बूडा, अन्न रखने  
लिये लृष निर्मित गृह विशेष ।

खोसना दे० (क्रि०) ठोसना, भरना, घुसेड़ना ।  
 खोखला दे० (पु०) पोला, हूखा, शून्य, रिक्त,  
 शोषा ।  
 खोखा दे० (पु०) रुपये चुकी हुई रुपहो, बालक,  
 बच्चा ।  
 खोज दे० (पु०) ढोह, ढूढ़ना, अनुसन्धान करना,  
 अन्वेषण, यत्न, चिन्त ।  
 खोटा दे० (स्त्री०) दुर्गुण, अवगुण, भूल ।  
 खोटा दे० (पु०) दुर्गुणी, भूटा, पापी, दुराचारी ।  
 खोटाई दे० (स्त्री०) अधर्म, दुराचार, दुर्गुण ।  
 खोपडला दे० (पु०) पोपला, अदन्त, दाँत रहित ।  
 खोडस तह० (पु०) सोलह, सोरह, संख्या विशेष,  
 १६ ।  
 खोद दे० (पु०) खोंच, खुदाव, अफेड़, भोंक, कटा  
 हुआ, खोदा हुआ ।  
 खोदना दे० (क्रि०) खनन, गाड़ना, कोड़ना,  
 गोड़ना ।  
 खोदर दे० (पु०) खड़बड़, ऊँच नीच, अड़बड़, दपट,  
 दीड़ ।  
 खोदरा दे० (पु०) दरदरा, अड़बड़ ।  
 खोदे दे० (क्रि०) खोद डाले, उपाड़े, नष्ट कर डाले,  
 निमूल कर डाले ।  
 खोना दे० (क्रि०) गँया देना, उड़ा देना, नष्ट करना,  
 नाशना ।  
 खोप दे० (पु०) खोंच, छेद, छिद्र, चौर ।  
 खोपरा दे० (पु०) नारियल की गरी, फल विशेष,  
 श्रीफल ।  
 खोपरी दे० (स्त्री०) छिर की हड्डी, कपाल ।  
 खोपा दे० (पु०) मल, मैल, खूद ।  
 खोपार दे० (पु०) मुअरों के रहने का घर ।  
 खोया दे० (पु०) नारियल का गोला, बूझा ।  
 खोरि दे० (स्त्री०) दोप, दुर्गुण, गली, गड्ढचित  
 मार्ग ।

खोर दे० (पु०) दुर्गुणी, दुष्ट, लहड़ा ।  
 खोल दे० (स्त्री०) खोखला, म्यान, रजाई, दोहर,  
 शरीर ।  
 खोलड़ा दे० (पु०) कोटर, खोखला, खोह, गड़हा,  
 गड़ा, गर्त ।  
 खोलना दे० (क्रि०) छोड़ देना, मुक्त करना, फैलाना  
 उपेड़ना ।  
 खोली दे० (स्त्री०) भोगल, चोंगी, नलिका, अक्ष  
 रखने की वस्तु ।  
 खोवै दे० (क्रि०) हरबाधे, विनाश करे, नष्ट करे ।  
 खोह दे० (पु०) गुफा, गुहा, कन्दरा ।  
 खोड़ दे० (पु०) तिलक, चन्दन कण, खौर ।  
 खौर दे० (पु०) तिलक विशेष, लहरियादार वन्दन,  
 यथा—“खौर भाल तव सोहत नीके” ।  
 खौरा दे० (पु०) पशुओं का रोग विशेष, जिससे  
 उनके बाल गिर जाते हैं ।  
 खौलना दे० (क्रि०) उबलना, उफनना, अधिक उष्ण  
 होना ।  
 ख्यात तह० (पु०) ख्यातिपुक्त, कीर्तिमान्, प्रसिद्ध,  
 यशस्वी ।—ख्य (पु०) प्रतिष्ठा योग्य, प्रशंसा योग्य ।  
 ख्याति तह० (स्त्री०) प्रसिद्धि, प्रतिष्ठा, नाम, यश,  
 कीर्ति ।—ख्य (पु०) दुर्नाम जनक, अपवादी ।  
 —मत्य (पु०) यशस्विता, विश्रुति, प्रतिष्ठा ।  
 ख्यात्यापन्न तह० (पु०) कीर्तिमान्, यशस्वी,  
 प्रतिष्ठित ।  
 ख्यापक तह० (पु०) प्रकाशक, व्यञ्जक, द्योतक, फैलाने  
 वाला ।  
 ख्यापन तह० (पु०) प्रकाश, विज्ञापन, प्रसिद्ध  
 होना ।  
 ख्याल दे० (पु०) कौमुक, स्वांग, खेल, तमाशा ।  
 खीष्ट दे० (पु०) ईसा, क्रिस्ट ।  
 खीष्टियान दे० (पु०) ईसाई ।

## ग

ग यह व्यञ्जन का तीसरा वर्ण है । इसका उच्चारण  
 कण्ठ से होता है ।

ग तह० (पु०) मोत, गवैग, गन्धर्व ।  
 गइया दे० (स्त्री०) गाय, गी, धेनु ।

गई दे० (क्रि०) जानना क्रिया का खीलिङ्ग रूप,  
गमन किया, जाती रही ।

गईवहोर दे० (यु०) गयी को लौटा ले आने वाला,  
विगडी बात को बनाने वाला ।

गठकटा (यु०) चोर, लेखतरा, स्तेन ।

गँवाऊ (यु०) उड़ाने वाला, खोल वाला, नाश  
करने वाला ।

गर्वाना (क्रि०) खोना, भ्रष्ट करना, विस्मृत होना,  
भूलना ।

गवार (यु०) गवश्या, अन्नपट, भूख, असमझ ।

गवी (स्रो०) गाव, ग्राम, देहान, ग्राम्य ।

गकार तल्० (यु०) कर्म का तीसरा वर्ण ग अक्षर ।

गगन तल्० (यु०) आकाश, अपीम, शून्य, नभ ।

—कुसुम (यु०) खपुष्प, असम्भव, मिथ्या ।

—गामी (यु०) आकाशगामी, नक्षत्र आदि ।

—चारी (यु०) आकाशगामी ।—विहारी (यु०)

चन्द्र, सूर्य, नक्षत्र, पर्वी ।—मण्डल (यु०)

आकाश मण्डल, खगोल ।

गगनभेड दे० (यु०) हड़गोला, गिहू, गीध ।

गगरी दे० (स्रो०) घट, चडा, कलश ।

गङ्गा तल्० (स्रो०) गङ्गा नदी, देवनदी ।—कवि  
हिन्दी के एक प्रसिद्ध कवि ।

गङ्गा तल्० (यु०) जानहयी, भागीरथी, सुतनदी,  
स्वनाम प्रसिद्ध नदी ।—जल (यु०) गङ्गा का जल

गङ्गादेक ।—जलिया (यु०) गङ्गाजल स्पर्श करके

शपथ खाने वाला ।—दास (यु०) एक संस्कृत

कवि का नाम, इन्होंने इन्दोमञ्जरीनामक छन्द

शास्त्र की एक पुस्तक रचानी है, गोपालदास वैद्य के

ये पुत्र थे, इनकी माता का नाम सक्तोपा था ।

इन्दोमञ्जरी के अतिरिक्त अद्भुतचरित्र, कृष्णशतक

और सुर्यशतक नाम के और भी ग्रन्थ रचाने

हैं । ये कवि १२ शताब्दी के इधर ही के

मान्य होते हैं यह कवि वैष्णव थे ।—धर

(यु०) शिव महादेव, समुद्र, इस नाम का एक

संस्कृत कवि, गोविन्दपुर के शिला लेख से

मान्य होता है कि खन् १३३३ ई० में यह

कवि वर्तमान था । इसके प्रपितामह का नाम

दमोदर, पितामह का नाम चक्रपाणि, पिता का

नाम मनोरथ, चाचा का नाम दशरथ और भाजे

का नाम महोदर तथा पुरुषोत्तम था । यह नहीं

कहा जा सकता कि विष्णु के समकालीन या

गङ्गाधर हैं या दुधरे ।—प्राप्ति (यु०) गङ्गाधर,  
मरण, मृत्यु ।—यमुनी (यु०) श्वेत कृष्ण वर्ण का

मिश्रण, दो वर्ण को धारुषों का सम्मिश्रण ।  
—सागर (यु०) गङ्गा और समुद्र का संक्रमस्थान,  
तीर्थ विशेष ।—स्नान (यु०) गङ्गा जी के  
स्नान ।—सुत (यु०) भोष्म, कार्तिकेय ।—स्नान

(यु०) गङ्गास्नान शील ।

गङ्गीभूत तल्० (यु०) पवित्र, पावन ।

गङ्गादेक तल्० (यु०) गङ्गाजल ।

गञ्ज दे० (यु०) पक्को छत, स्थूल, मोटा ।

गञ्जमीना दे० (यु०) ठोमना, छोटा मोटा ।

गञ्जपत्त दे० (स्रो०) भोडभाड, गोलमाल, घनत  
उलट पलट ।

गञ्ज तल्० (यु०) स्थान, चोड़ों का स्थान, म  
विशेष, स्वीकृत, न्यास बन्धक वृक्ष ।

गज तल्० (यु०) कुञ्जर, हाथी, दो हाथ धर परिमाण  
वास्तुस्थानभेद, धातु आदि जारने के लिये गडा

—गमनी (स्रो०) हाथी के समान धीरे धं  
चलने वाली स्त्री, गजगोत्री ।—गाह (यु०) हा

पोहे का आभूषण ।—गौनी (यु०) गजगामिनी  
—चर्मटी (यु०) इन्द्रधारणी, इनाकन

—च्छाया (स्रो०) आह का निश्चितकाल, इ  
चिह्न मास की मछा नक्षत्र युक्त त्रयोदशी ।—

(स्रो०) गज सङ्घ, हाथी का गूथ ।—दन्त (यु०)  
हन्ति सन्नधोर्दांत, हाथी के दाँत ।—दान (यु०)

हाथी का मद जल, हाथी के मस्तक से निक  
जल ।—पति (यु०) हाथियों के गूथ का नाम  
राजा, गजस्वामी ।—पाटल (यु०) कल्ल, काज

सुरमा ।—पाल (यु०) हाथीधान, महाप  
फोलवान ।—पिप्पली (स्रो०) पीपर विरे

गजपीपर ।—पुङ्ख (यु०) सुहृद् गज, प्रथ  
हाथी ।—पुट (यु०) श्राप्य पकाने के लिये

मकार का गडा ।—मिपक् (यु०) सॉठि ।—मु  
(यु०) हाथी, गणेश ।—मुक्ता (स्रो०) हाथी

मस्तक का मध्यस्थ मोती ।—मोती (स्रो०)

गजमुक्ता।—यूथ ( ५० ) हाथियों की टोली, हाथियों का कुण्ड, हस्ति समूह ।—राज ( ५० ) बड़ा हाथी ।—चदन ( ५० ) गजमुख, हस्तिमुख, गणेश ।—अग्रणी ( ५० ) बड़ा हाथी, सेरावत ।  
 —। ध्यक्ष ( ५० ) हाथी का अधिपति, हस्ति-स्वामी ।—अनन ( ५० ) गणेश, गजवदन ।—। रि ( ५० ) सिंह भृगराज , वृक्षविशेष ।—अशन ( ५० ) पीपल वृक्ष, पीलुवृक्ष ।—।स्य ( ५० ) लम्बोदर, गणेश ।—द्वय ( ५० ) नगर विशेष, हस्तिनापुर ।  
 —न्द्र ( ५० ) सेरावत, दिग्गज ।  
 जर तद्र० ( ५० ) गजर, एक मूल विशेष ।  
 जरा तद्र० ( ५० ) गजर के पत्ते, मोटी फूलों की माला ।  
 ज्ञाना दे० ( रि० ) सड़ाना, पचाना, गन्ध देना, बसाना ।  
 जुस्त तद्र० ( ५० ) कदलो, कदलिवृक्ष, केने का पेड़ ।  
 जा दे० ( ५० ) खुर्मा, खरूर, मिष्टान्न विशेष ।  
 ज्ञ दे० ( ५० ) रोग विशेष, सिर का एक रोग जो सिर में होता है । राशि, डेर, समूह, हाट, बजार, खजाना ।  
 ज्ञा दे० ( क्रि० ) यातना, वेदना, पीड़ा, दुःख, रत्नानिमुक्त वाक्य ।  
 ज्ञा तद्र० ( ५० ) जिसके सिर में बाल न हों, रोग विशेष, गांजा, मद्यगृह ।  
 ज्ञित दे० ( ५० ) अपमानित, कलङ्कित, दुःखित, लाङ्कित, पोड़ित ।  
 ज्मा दे० ( ५० ) जय में प्राप्त धन, जीता धन ।  
 ज्मीन दे० ( ५० ) धन, सधन, घना, निविड़ ।  
 गडयल दे० ( ५० ) परिहास में रक्ष नाम से पुकारना, धानर का दूसरा नाम ।  
 गटपट दे० ( ५० ) उलट, पुलट, एकत्रित करना, चक्रवाट ।  
 गटी दे० ( खी० ) समूह, राशि, भूय, यथा—“सद्य जान फटी दुख की चुपटी, कपटी, न, रहै जहँ एक घटी, निपटी सचि, मीच घटी हूँ घटी जगजीय यतीन की कूटी चटी, अन्न अघ की बेरी कटी विकटी, निकटी प्रकटी गुण, जान गटी, चहुँ

शोरन नाचत युक्ति नटी, गुण धुन जटी जटि पञ्चवटी ।”  
 —रामचन्द्रिका

गट्टा दे० ( ५० ) स्वनाम प्रसिद्ध मिठाई, गुरुक ।  
 गट्टा दे० ( ५० ) बड़ी गठरी, प्याज का गट्टा ।  
 गठन तद्र० ( ५० ) निर्माण करण, रचन ।  
 गठना तद्र० ( क्रि० ) जुड़ना, मिलना, सम्मिलित होना, एकत्रित होना, परस्पर प्रेमी बनना ।  
 गठर दे० ( ५० ) बड़ा गाँठ, गठिला ।  
 गठरी दे० ( खी० ) गाँठ, मोट, गठर, बोक, भार ।  
 गठवाना दे० ( क्रि० ) गठाना, गाँठ बाँधना, बंध-याना, जूता गठवाना ।  
 गठाना दे० ( क्रि० ) गठयाना, मिलयाना, पैयन्द लगवाना ।  
 गठित तद्र० ( ५० ) रचित ।  
 गठिया दे० ( खी० ) गठरी, ग्रन्थि, गाँठ, दात रोग विशेष, ग्रन्थियुक्त ।  
 गठिहा दे० ( ५० ) गाठोंवाला, ग्रन्थियुक्त ।  
 गठीला दे० ( ५० ) मक्क, पुष्ट, हृष्टपुष्ट, हट्टाकट्टा, सफ़हमुसफ़ह ।  
 गट्टवा दे० ( ५० ) कपड़ों की गाँठ, सुत की ग्रन्थि ।  
 गड्य दे० ( ५० ) गण्डा, टीना, एक खेप का नाम ।  
 गडक दे० ( ५० ) एक प्रकार की मछली ।  
 गडुगड़ाना दे० ( क्रि० ) गरजना, गर्जन करना, मेघ या नगारे की ध्वनि ।  
 गडुगुदर दे० ( ५० ) चिचड़ा, फटा, पुराना कपड़ा ।  
 गडुन दे० ( ५० ) धसान, दलदल, गड़त, निर्माण, भूर्ति, आकार ।  
 गड़ना दे० ( क्रि० ) धसान, धसजाना, रहजाना, पैठना, आसक्त होना, झिदना ।  
 गडुवडु दे० ( या० ) गटपट, उलट पुलट ।  
 गडुवडा दे० ( ५० ) खलबली, मड़ोरा, मिलाव ।  
 गडुवडाहट दे० ( खी० ) खडबड़ी, भय, डर, भीति, अनियमित, अनिश्चित ।  
 गड़रिया दे० ( ५० ) मेघपाल, मेड़िहारा, जातिविशेष, मेड़ पालनेवाली जाति ।  
 गडुलवण दे० ( ५० ) सांभर नोन ।  
 गडुक्षा दे० ( ५० ) गर्त, गड़ा, ताल ।  
 गड़ाना दे० ( क्रि० ) बिधना, चुभाना, खोमना ।

गड़ियार दे० ( गु० ) मगरा, मचला, अड़हटी, आलसी, अनुयोगी, जड़ ।  
 गड़ी दे० ( क्रि० ) धसी, हूबी, धस गयी, हूय गयी ।  
 गडुआ दे० ( पु० ) टोटीदार लोटा, हथहर ।  
 गडुर तद्० ( पु० ) गरुड़ पचीराज, धैनतेय ।  
 गडुवा दे० ( पु० ) जलपात्र विशेष, कलश, गडुआ ।  
 गड़रिया दे० ( पु० ) गड़रिया, चरवाहा, मेवपारा, भेड़ बकरी आदि पालने वाला ।  
 गड़ोना दे० ( क्रि० ) छेदना, खोसना, चुभाना बिधना ।  
 गड़ालिका तत्० ( स्त्री० ) देखा देखी कार्य में प्रवृत्ति होना, अधिचारित कर्म में प्रवृत्ति, भेड़िया धसान ।  
 गड़्डी दे० ( स्त्री० ) आंटी, पुला, दसदस्ते कागज़ ।  
 गड़ दे० ( पु० ) दुर्ग, कोट, किला, गड़ी, राजमहल ।  
 गढ़न दे० ( पु० ) बनायट, रचना, निर्माण ।  
 गढ़ना दे० ( क्रि० ) निर्माण करना, धनाना, रचना, ठोकना, सुधारना ।  
 गढ़नि दे० ( स्त्री० ) बनायट, रचना, गढ़ का बहुत धचन ।  
 गढ़वार दे० ( पु० ) मोटा, स्थूल, गाढा ।  
 गढ़वाल दे० ( पु० ) किले का रक्षक, गढ़ रक्षक, गाढा, मोटा, एक नगर का नाम जो उत्तर भारत में है ।  
 गढ़ा दे० ( पु० ) गढ़हा, गर्त ।  
 गढ़ाई दे० ( स्त्री० ) गढ़ने की मजूरी, गढ़ने की बनाई, बनाने का परिश्रम ।  
 गड़िया दे० ( स्त्री० ) भाला, बरछी, बल्लम, कुन्त, प्रास ।  
 गढ़ी दे० ( स्त्री० ) छोटा कोट, गढ ।  
 गढ़ेला दे० ( पु० ) गड़हा, खड़हर, गढ़ा, गढ़ा हुआ, खोदा हुआ गढ़ा ।  
 गढ़ैया दे० ( पु० ) छोटा पोखर, तलाई ।  
 गण तत्० ( पु० ) समूह, थोक, जाति, भुण्ड, ग्रय, रुद्र का अनुचर, प्रमथ रुद्र का गण, सेना, संस्था विशेष, २८ रथ, ८१ घोड़े, १३५ सिपाही इस

सेना में होते हैं । छन्दःशास्त्र के आठ गण, १ भगण, २ जगण, ३ सगण, ४ रगण, ५ बग्, ६ तगण, ७ मगण, ८ नगण, इनका लक्षण देता ।  
 “आदि मध्य अथवान में भजस होंहिं गुह जान परत होंहिं लघु क्रमहिं सो मन युक्त लघु, सब ज्ञान गणक तत्० ( पु० ) गणना करने वाला, ज्योतिष, देवध, ज्योतिर्वेत्ता, गणनाकारी ।  
 गणता तत्० ( स्त्री० ) गण का धर्म, समूहत्व, पत्र तिता, धूर्तमण्डली ।  
 गणदेवता तत्० ( पु० ) मिलितदेवता, सद्गतदेवता मिते हुए अनेक देव ।  
 गणन तत्० ( पु० ) संस्था करण ।  
 गणना तत्० ( स्त्री० ) संस्था, गिनना, पत्रपात ।  
 गणनाथ, गणनायक तत्० ( पु० ) गणस्वामी, गणेश ।  
 गणपति तत्० ( पु० ) गणेश, समाजपति, सम्मिलित संस्था के मालिक ।  
 गणराज तद्० ( पु० ) गणराज, गणनायक ।  
 गणाधिप तत्० ( पु० ) शिवपुत्र, गणेश, गजानन ।  
 गणिका तत्० ( स्त्री ) धाराङ्गना, वेदया, पशुविना पातुर, स्वैरिणी, कुलटा ।  
 गणित तत्० ( पु० ) अङ्कविद्या, ज्योतिषाश्च मण्यता, गणना किया हुआ ।—कार ( पु० ) गणक, ज्योतिर्वेत्ता, अङ्कवेत्ता ।—श ( पु० ) ज्योतिषी ।  
 गणेश तत्० ( पु० ) शिवपुत्र, हेरम्ब, सम्बोदर, नन, ये पार्वती के पुत्र हैं, इनका सम्पूर्ण देवों का सा परन्तु मुख हाथी का है । शिवजी आद्या से पार्वती ने पुण्यक व्रत का अनुष्ठान विष्णु को प्रसन्न किया, विष्णु ने पुत्र के वरदान दिया, जिसके फल से गणेश का हुआ, गणेश जी को देखने के लिये सभी उनमें शनिश्चर भी आये, शनिश्चर अपनी दृष्टि महिमा जानते थे इसी कारण गणेश को देखने उनकी इच्छा न थी, परन्तु पार्वती ने अतुर किया, अतएव उन्होंने भी अनिश्चित अपनी उठायी, उनके देखते ही गणेश का मस्तक उ उड़ गया, देवताओंने विष्णु की स्तुति विष्णु ने हाथी का माथा जोड़ दिया ।

गण्ड तत्० (गु०) कपोल, गाल, गजकुम्भ ।—माला (खी०) रोगविशेष, कण्ठमाला ।—स्थल (गु०) गाल, कपोल ।

गण्डक तत्० (गु०) गेंडा, पशुविशेष, दुग्धा, संख्या-प्रभेद ।

गण्डकी तत्० (खी०) स्वनामस्यैव नदी, जो बिहार में है और दक्षिण से आई है, जिसमें शालिग्राम निकलते हैं ।

गण्डदौल तत्० (गु०) पर्वत से टूटा हुआ बड़ा पत्थर, छोटा पहाड़ ।

गण्डा दे० (गु०) संख्या विशेष, चारकौड़ी, चारपैसा चार रुपया, चार आम आदि, तन्त्र मन्त्र क्रिया हुआ सूत, मैत्र का प्रसाद, गण्डा ।

गण्डासा दे० (गु०) ऊरसा, टांगी, अक्ष विशेष ।

गण्डासी दे० (खी०) छोटा गड़गाँव ।

गण्डिका तद्० (खी०) नदी विशेष, गण्डकी ।

गण्डि दे० (गु०) रोग विशेष, गण्डमाला ।

गण्डी दे० (खी०) वेरा, रेखा आदि के द्वारा सीमा-वद्द स्थान ।

गण्डीर तत्० (गु०) नेहुँड़ वृक्ष, गन्ना, ऊख ।

गण्डीरी तद्० (खी०) ऊख के टुकड़े, कटे हुए ऊख के गुच्छे ।

गण्डूल तद्० (गु०) प्रकृष्ट, विकसित ।

गण्डूप तत्० (खी०) पानो का कुल्ला ।

गण्य तत्० (गु०) गणनीय, गणनाहर्ह, माननीय, संख्या करने योग्य ।

गत तत्० (गु०) अतीत, व्यतीत, विगत, हत, नष्ट, मत, गति, गमन ।—कृम (गु०) विश्रान्त, अमरहित ।—त्रप (गु०) निर्लज्ज, लज्जा रहित ।—प्रभ (गु०) प्रभाहीन, निष्प्रभ ।—चित्त (गु०) गत विभ्रम, निर्व्यंन, दरिद्र ।—वैर (गु०) निरुपद्रव, शत्रु रहित, अज्ञातशत्रु ।—व्यथ (गु०) अक्रोश, क्रोश रहित, सुखी ।—गत (गु०) याता-यात, गमनागमन, आना जाना, पक्षियों का गति-विशेष ।—गि धि (गु०) सुखी ।—गुणतिक (गु०) अनुकरण करने वाला, अनुकारी, पिछलग्गू ।

—गुः (गु०) व्यतीत आयु, जीवन का अवसानकाल, मरणासन्न, मृत्यु ।—ग्य (गु०) अभि-प्राय विदु, एक से दूसरे का निष्प्रयोजन होना ।

गत दे० (खी०) चालचलन, दशा, व्यवहार, यथा:—“तिरो गत लखि न परे दयानिधि” ।

गति तत्० (खी०) गमन, यात्रा, मार्ग, पथ, दशा, ज्ञान, अवस्था, दशा, व्यवहार ।—क्रिया (खी०) त्रिलम्ब, कालक्षेप, शिक्षिता ।—विहीन (गु०) गति हीन, गमन शक्ति रहित ।

गते दे० (अ०) धीरे धीरे, शनैः शनैः, हौले हौले, धीमे धीमे ।

गद् तत्० (गु०) व्याधि, रोग, वाक्य, भाषण, श्लोक के एक भाई का नाम ।

गदका दे० (गु०) पटा, दण्ड विशेष ।

गदकारी तत्० (गु०) रोग उत्पन्न करने वाला (पदार्थ) ।

गद्गद् तद्० (गु०) आनन्द, प्रकृतता, हर्ष, हर्ष से शब्द न निकलना ।

गद्वदा दे० (गु०) मोटा, स्तूल, मुन्दिल, तोढ़ेला ।

गदला दे० (गु०) मैला, धमोला, मलिन, क्लृप्त ।

गदलाई दे० (खी०) मैलापन, धमोलापन, कालुष्य ।

गदहा तद्० (गु०) गधा, गर्हभ, खर, (तत् पु०) वैद्य, रोग मिटाने वाला ।

गदशत्रु तत्० (गु०) वैद्य, ओषध ।

गदा तत्० (खी०) लोहे का अक्ष विशेष, लोहे का सुन्दर या बाठी ।—धर (गु०) विष्णु, नारायण, श्रीकृष्ण ।—युध (गु०) यधि, लाठी, गदा ।—युद्ध (गु०) युद्ध विशेष ।—रि (गु०) रोगशत्रु, रोगनाशक वैद्य ।

गदाग्रज तत्० (गु०) श्रीकृष्ण, विष्णु, भगवान् ।

गदित तत्० (गु०) उक्त, कथित, भाषित, कहा हुआ ।

गदी तत्० (गु०) विष्णु, नारायण, (गु०) गदा विशिष्ट, रोगघ्न, रोगी ।

गदेल दे० (गु०) शिशु, बच्चा, माँ का दूध पीने वाला बच्चा, कौरि का बच्चा ।

गदला दे० (गु०) मोटा जिह्वीन ।

गद्गद तत्० (गु०) अति अस्पष्ट वक्ता, आनन्द  
या दुःख से अव्यक्त कथन, आनन्द, हर्ष ।

गद्दर दे० (गु०) अर्ध पक्क, अधपक्का, गदरा ।

गद्दी दे० (स्त्री०) तकिया, दिखौना, मोंटा दिखौना,  
सिंहासन ।

गद्य तत्० (पु०) छन्द रहित वाक्य, प्रबन्ध ।

गधा दे० (पु०) गदहा, गद्दम, खर ।

गन तद्० (पु०) समूह, गुथ, सजीवों का समूह ।

गनई तद्० (स्त्री०) गिनता है, गिनती करता है ।

गनना तद्० (स्त्री०) गणना, गिनती, विवाह में  
वरवधू का ग्रह योग देपना ।

गन्तव्य तत्० (गु०) गमन योग्य, सुगम, जाने का  
स्थान ।

गन्दना दे० (पु०) कन्द मूल विशेष ।

गन्धः तत्० (पु०) नासिका से ग्रहण करने योग्य  
पदार्थों की वास, आमोद, सौरभ, प्राण, सम्बन्ध,  
प्रणय ।—गर्भ (पु०) बेलवृत्त ।—द्रव्य (गु०)  
सुगन्धित वस्तु, सुवासित द्रव्य ।—द्विप (पु०)  
उत्तम हस्ति ।—पुष्प (पु०) चन्दन और फूल ।  
—प्रिय (गु०) प्राणलुब्ध, गन्धग्राही ।—वर्णिक  
(पु०) वर्णसङ्कर जाति विशेष, अचार ।—मादन  
पर्वत विशेष, वानर सेनापति ।—राज (पु०)  
चन्दन, सुगन्धित फूल ।—वह (पु०) वायु, पवन ।  
वाह (पु०) पवन, कस्तुरिया हरिन, नाक,  
नासिका ।—सार (पु०) चन्दन, श्रीखण्ड ।

गन्धर्व तत्० (पु०) स्वर्गगायक, यक्ष, देवयोनि-  
विशेष, घोडा, पशुयोनि विशेष, कस्तूरीमृग,  
गायक ।—विद्या (स्त्री०) गीत, वाद्य, नृत्य ।  
—विवाह (पु०) अष्टविवाह का एक भेद, उत्सव-  
हीन विवाह ।—वेद (पु०) सङ्गीतविद्या, गीत  
शास्त्र ।—नगर (पु०) अलका, गन्धर्वों का वास-  
स्थान, असत्य नगर, मिथ्या नगर, कल्पित नगर ।

गन्धाना दे० (स्त्री०) गंधाता है, गन्ध देता है,  
बसाता है ।

गन्धान तद्० (पु०) सुघर्ष, सीना ।

गन्धायुष्मा तत्० (पु०) गन्धक, उपधातु विशेष ।

गन्धार तत्० (पु०) रागिनी विशेष, देश विशेष,  
कन्धार ।

गन्धारी तद्० (स्त्री०) देखो गान्धारी, वारं नेत्र से  
निकलने वाला श्वास, यथा:—

गन्धारी वामाक्ष निवासी,  
हयजिह्वा दक्षिण दिग्वासी”

—ज्ञानतपु

गन्धि तत्० (स्त्री०) गन्ध, वास, गन्धक ।

गन्धिका तत्० (स्त्री०) आहूयेर, गन्धक ।

गन्धकारिणी तत्० (स्त्री०) लज्जा, अप्रीति  
विशेष लाजवन्ती ।

गन्धिपर्ण तत्० (पु०) वृक्ष विशेष, जिसके पत्तों में  
गन्ध हो, छतिवन वृक्ष ।

गन्धिलुब्ध तत्० (गु०) सुगन्धाभिलाषी, सुगन्ध  
लोभुष ।

गन्धी दे० (पु०) सुगन्धि वस्तु विक्रेता, अत्तार ।

गप दे० (पु०) गपशप, इधर उधर की बातें, निर्बंध  
बातें, झूठी बातें, गपोड़ा ।

गपकना दे० (स्त्री०) खाजाना, शीघ्रता से खाजाना,  
निगल जाना ।

गपड़ दे० (पु०) मिलावट, ठग्य, निर्बंधक ।—वौध  
(वा०) अज्ञान, अनिश्चित, अनियमित ।

गपशप दे० (वा०) झूठी सच्ची बात, मनोरञ्जन के  
बात ।

गप्पी दे० (पु०) बकवादी, असत्यवादी, धातुर्ण,  
अविश्वसनीय वक्ता ।

गवरू दे० (पु०) जवान, युवा ।

गवाशन दे० (पु०) चर्मकार, चण्डाल, म्लेच्छ ।

गभस्ति तत्० (पु०) किरन, रश्मि, प्रकाश, सूर्य,  
(स्त्री०) स्वाहा, अग्नि की स्त्री ।—मत् (पु०)

सूर्य, पाताल विशेष, तलातल ।

गभीर तत्० (पु०) गहरा, गम्भीर, अग्राह, अग्राह,  
सूक्ष्म ।—ता (स्त्री०) अग्राधता, नीचे की ओर

का परिमाण ।—त्व (पु०) गभीरता, निम्नता ।

गभुआरे दे० (पु०) गर्भ शिशु, बालकों के बाल,  
अङ्गुठिया बाल, कुपुटेदार बाल, झूले केण, चूँघर  
वाले बाल ।

गम तत्० (गु०) [गम् + अक्ष] गमन, चलना, गति, गम्य जाने की शक्ति, जाने का सामर्थ्य, शोक, दुःख ।

गमक दे० (गु०) नगाड़े का शब्द, राग का स्वर विशेष ।

गमकीला दे० (गु०) गन्धवान्, सुगन्धित, सुवास, गमकदार ।

गमन तत्० (गु०) [गम् + अनट्] प्रयाण, यात्रा, प्रस्थान, घूमना, भ्रमण ।—गमन (गु०) आना जाना, यातायात ।

गमना दे० (क्रि०) हड़ना, खोजना, अनुसन्धान करना ।

गमी तत्० (गु०) [गम् + ईङ्] गमनकर्ता, जाने वाला, चलने वाला ।

गमी दे० (गु०) गम करने वाला, शोक करने वाला ।

गम्भारी तत्० (स्त्री०) वृक्ष विशेष, गम्भार का वृक्ष ।

गम्भीर तत्० (गु०) गभीर, अग्राध, अतलस्पर्श, अग्रह ।—ता (स्त्री०) गम्भीर्य, गभीरता ।  
—वेदी (गु०) [गम्भीर + चिद् + णिङ्] मन्त्र-हस्ति, दुर्दमनीय हाथी, हस्ति विशेष, जो हस्ति-पक्ष को शिखा न माने ।

गम्य तत्० (गु०) [गम् + य] प्राप्य, सम्भाव्य, गमन करने योग्य, जाने योग्य, शक्य ।—मान् (गु०) अतिक्रान्त, गमन क्रिया का वर्तमान आश्रय ।—गम्य (गु०) साध्यासाध्य, मृदु-कठोर, स्वरूप कठिन, कर्तव्यकर्तव्य ।

गम्यन्द तद्० (गु०) गम्येन्द्र, प्रधान हस्ति, बड़ा हाथी ।

गय तत्० (गु०) धर्मपरायण सत्कर्मों एक राजा का नाम, ये अक्षतराय के पुत्र थे, इन्होंने १०० वर्ष तक यज्ञ का अक्ष धरया था, अग्नि के घर से वेद पाठ का अधिकार इन्हें प्राप्त हुआ था, शत्रुनाश पूर्वक इन्होंने अपना राज्य विस्तार किया था । ये प्रतिदिन एक लाख साठ हजार गौ, दस हजार घोड़े और एक लाख निरुक्त (मुद्रा विशेष) दान करते थे । इन्होंने एक यज्ञ किया था, जिसकी वेदी

की लम्बाई ३५ योजन थी, यह वेदी सोने की थी ।

(२) एक अमुर का नाम, इसी अमुर के नाम पर हिन्दुओं का पवित्र तीर्थ गया स्थापित हुआ है । यह अमुर होने पर भी विष्णुभक्त या, विष्णु की प्रकृता के लिये कोलाहल पर्यन्त पर इसने कठोर तपस्या की थी, इसके दर्शन मात्र से पापों के छूटने और स्वर्ग जाने का वर विष्णु ने इसको दिया था ।

गया तत्० (स्त्री०) [गय + आ] गय नामक राजा की पुरी, तीर्थ-विशेष ।—घाल (गु०) गया के घासी, गया के पहा ।—सुर (गु०) अमुर विशेष ।

ग्यारस तद्० (स्त्री०) द्रव्यविशेष, एकादशी, एकादशी तिथि ।

ग्यारह तत्० (गु०) संख्या विशेष, दश और एक, एकादश ११ ।

गर तत्० (गु०) [गर् + लृ] एकादश करणों में का एक करण, रोग, विष, हलाहल, गरल, यत्ननाम नामक विष का भेद, (तद्०) गला, कण्ठ—ग्र (गु०) [गर् + हत् + टक्] विषघ्न, रोगनाशक ।  
—द् (गु०) विषदाता ।

गरई दे० (क्रि०) गल जाता है, सड़ता है, चिनट होता है, लज्जित होता है, नख होता है ।

गरगराना दे० (क्रि०) गर्जन, कोलाहल करना, जोर से बोलना ।

गरज दे० (गु०) आचरयक, प्रयोजन, कार्य, चिन्घाड़, गर्ज, चोरनाद, भयानक शब्द, अचर, आशय ।

गरजना दे० (क्रि०) चढ़चढ़ाना, भयानक ध्वनि, म्रेच या सिंह का नाद ।

गरद दे० (स्त्री०) रज, धूर, गरदा ।

गरदन दे० (गु०) गल, कण्ठ, ग्रीवा ।

गरदा दे० (स्त्री०) गरद, रज, धूर, धूलि ।

गरभ तद्० (गु०) गर्भ, कुलि, पेट, उदर, अन्तर, भीतर, अहङ्कार, अभिमान ।

गरम दे० (गु०) उष्ण, तप्त, सन्तप्त, क्रुद्ध, क्रोध, क्रोध ।



गरल तत्० (गु०) [गर + ल] विष, सर्प विष, परि-  
माण विशेष, कालकूट, जहर।—रि (गु०) मरकत  
मणि, पद्मा, ।

गरवा दे० (गु०) भारी, बोझदार, धीर, प्रतिष्ठित ।  
—पन (गु०) बोझाई, मान्यता ।

गरावन दे० (गु०) यग, छांद, नौना ।  
गरागरी दे० (स्त्री०) देवदासी, देवदासवृत्त, देवताइ ।  
गरारी दे० (स्त्री०) रस्ते घटने का यन्त्र, चर्ची,  
टकुषा, कुए से जल निकालने के लिये काष्ठनिर्मित  
गोलाकार वस्तु विशेष, गिरीं ।

गरिमा तत्० (स्त्री०) गुरुता, यद्गई, दम्भ, अहङ्कार,  
योगी की आठ प्रकार की सिद्धियों में की एक  
सिद्धि ।—न्वित (गु०) [गरिमा + अन्वित]  
दाम्भिक, अभिमानी ।

गरिष्ठ तत्० (गु०) [गुरु + ष्ट] अतिगुरु, भारी,  
बोझ, गरवा, अतिप्रतिष्ठागुरु, अतिशय नान-  
नीय ।

गरी दे० (स्त्री०) नारियल के मध्य का अंश, खोपरा,  
गोला ।

गरीयान् तत्० (गु०) [गुरु + इयस्] अतिगुरु,  
गरिष्ठ, (स्त्री०) गरीयसी ।

गरुड दे० (गु०) भारी, बोझ, बोझिला, बोझाला ।  
गरुडाई दे० (स्त्री०) भार, बोझ ।

गरुड तत्० (गु०) पक्षिराज, गरुडमान्, धैर्य, विष्णु  
का वाहन पत्नी, प्रजापति ऋषि, कश्यप के औरस  
और विनता के गर्भ से इनका जन्म हुआ था । इनके  
उपेक्ष झाना अरुण सूर्य के सारथी का काम करते  
हैं । गरुड ने स्वर्ग से अमृत लाकर अपनी माता  
का दासत्व छोड़ा था । एक बार वसुधित गरुड ने  
अपने पिता से भोजन के लिये कहा, एक तालाब  
में लड़ते हुए गज और कच्छप को खाने के लिये  
पिता ने प्रेरणा की, ये गज कच्छप पहले विभावसु  
और सुप्रतिक नामक सहोदर तपस्वी थे, परस्पर  
के शप से इस योनि में श्राये थे, गरुड ने अपने  
चहुँल में उन्हें पकड़ लिया, और एक बरगद के  
पेड़ पर खाने की इच्छा से बैठे, उनके बैठने ही,

उस पेड़ की डाल टूट गयी, गरुड चिन्तित हुए  
पर्योकि उसी डाल में समाधिनिरत वालकिर  
ऋषि थे, अतएव गरुड उस वृक्ष शाखा को लेकर  
अपने पिता के पास कर्तव्य स्थिर करने के लिये  
गये । पिता के अनुरोध से वालकिर्य यहाँ से दूर  
जगह गये, गरुड भी एक पर्यत पर जाकर कुछ  
पूर्वक भोजन करने लगे ।—महा भा० आदि प० ।  
—ध्वज (गु०) विष्णु, नारायण ।—अग्रज (गु०)  
अरुण, सूर्य मारुधि ।—असन (गु०) गरुड पर का  
आसन, विष्णु ।

गरुत् तत्० (गु०) पक्ष, पौख, पर ।—मान् (गु०)  
गरुड ।

गरुता तद्० (स्त्री०) भारीपन, गुरुता, गौरव, बढ़ाई ।  
गरुव दे० (गु०) भारी, बोझ ।

गर्ग तत्० (गु०) मुनि विशेष, ब्रह्मा के पुत्र, विरगत  
ज्योतिर्वेत्ता ऋषि, ये यदुवंशियों के कुल पुरोहित  
थे, गर्ग संहिता तथा ज्योतिष के और कई ग्रन्थ  
इनके यनाये हैं ; इनके पुत्र का गार्ग्य और कन्या  
का गार्गी नाम था ।

गर्गज दे० (गु०) दौंजा गड़, गुमट, गिपर ।

गर्ग्या दे० (गु०) पक्ष विशेष, गौरिया ।

गर्गरी दे० (स्त्री०) भर्कर, भंकर ।

गर्ज तत्० (गु०) [गर्ज + श्ल] शब्दध्वनि, नाद,  
रव ।

गर्जन तत्० (गु०) [गर्ज + अनट्] शब्द नाद, उल्का  
ध्वनि, भस्मन कोष, गुह, मेघध्वनि, सर्पध्वनि,  
झुंझुं धीर की ध्वनि ।

गर्जित तत्० (गु०) [गर्ज + क्त] मेघ शब्द, कृत  
शब्द, मत्त हस्ति ।

गर्त तत्० (गु०) गड़वा, खड़हर, खिन्न, धूमिल,  
विपर, देश विशेष, त्रिगर्त देश, यह देश शतद्रु  
नदी के पूर्व की ओर था, आजकल के पटियाला  
से उत्तर है, इसे आज शतलज के नाम से  
पुकारते हैं ।

गर्हभ तत्० (गु०) पशुविशेष, रासभ, खर, गड़वा  
गधा ।—गर्हभी (स्त्री०) गर्हभ स्त्री, गधी, चूड़  
रोग विशेष ।

गर्भ तत् ० ( ५० ) [ गर्ह + अन् ] लिम्बा, स्पृहा, वाञ्छा,  
शैत्युष्य, आग्रह ।

गर्भ तत् ० ( ५० ) भ्रूण, अन्तःपत्य, शिशुकुञ्चि, मध्य,

अन्तर, उदर, घेट ।—कण्टक ( ५० ) पनसफल,

कटहल ।—कार ( ५० ) पुत्र, जीव, वृच विशेष,

पतिजिया ।—गृह ( ५० ) मृतिका गृह, सौर ।

—घातिनी ( स्त्री० ) लाङ्गलिका वृच, गर्भनाश

कारिणी स्त्री ।—च्युत ( ५० ) गर्भ से पतित,

अपूर्ण गर्भ से उत्पन्न ।—ज ( ५० ) गर्भजात, क्षेत्रज

पुत्र विशेष ।—दास ( ५० ) दासीपुत्र, जन्म से ही

दास, गर्भ में से ही पराधीन ।—धारिणी ( स्त्री० )

जननी, माता, गर्भवती ।—पात ( ५० ) गर्भनाश,

घेट गिरना ।—घती ( स्त्री० ) गर्भधारिणी,

गुर्धिणी, वसन्ता, अन्तःपत्यसहिता, गामिन,

दुर्जीया ।—रूप ( ५० ) पुत्र के समान बच्चा,

तण्ड ।—स्नाय ( ५० ) गर्भपात, गर्भ गिरना ।

—गार ( ५० ) गृह के मध्य का स्थान, वासगृह,

मृतिकागृह, प्रसवगृह ।—ङ्क ( ५० ) [ गर्भ + अङ्क ]

नाटक का अङ्क विशेष ।—धान ( ५० ) गर्भ

धारण करने के लिये संस्कार विशेष, प्रथमसंस्कार

निषेक क्रिया ।—शय ( ५० ) जराडु ।—ष्टम

( ५० ) गर्भ होने के दिन से आठवां मास या

आठवां वर्ष ।

गर्भिणी तत् ० ( स्त्री० ) [ गर्भ + इत् + ई ] गर्भवती,

गुर्धिणी ।

गर्भित तत् ० ( ५० ) [ गर्भ + क्त ] गर्भस्थित, उदर

मध्यस्थ ।

गर्भ तत् ० ( ५० ) [ गर्भ + अन् ] दर्प, अहङ्कार, दम्भ,

अभिमान ।—जनक ( ५० ) अहङ्कार जनक, दर्पा-

न्वित ।—ान्वित ( ५० ) अहङ्कारी, दर्प, दम्भी ।

गर्भित तत् ० ( ५० ) [ गर्भ + इतच् ] गर्भयुक्त, दर्प

अहङ्कृत, जातगर्व ।

गर्वी तत् ० ( ५० ) [ गर्व + ईत् ] अहङ्कारी, दर्पित ।

गर्हण तत् ० ( ५० ) [ गर्ह + अन्ट् ] कुत्सन, निन्दन,

दोषदान, निन्दाकरण ।

गर्हणीय तत् ० ( ५० ) [ गर्ह + आनीय ] निन्दनीय,

तिरस्करणीय, द्वेषणीय, द्रुष्य ।

गर्हा तत् ० ( स्त्री० ) [ गर्ह + ह् ] तिरस्कार, अपवाद,  
निन्दा, दुर्वचन ।

गर्हित तत् ० ( ५० ) [ गर्ह + इतच् ] निन्दित,  
तिरस्कृत, प्राप्तागर्हा, जुगुप्सित ।

गर्हा तत् ० ( ५० ) [ गर्ह + य ] अधम, नोच, निन्द-  
नीय, निन्द्य ।—घादी ( ५० ) निकृष्टवादी,

अपभाषी, दुर्वचन वक्ता ।—वृत्ति ( स्त्री० ) अधम  
जीवन, निन्दित जीविका ।

गल दे० ( ५० ) फांसी, उद्बन्धन, गले का रोग ।

—बहियां ( वा० ) परस्पर कन्धे पर हाथ रखकर  
चलना, प्रणय का मुद्राविशेष ।

गलका दे० ( ५० ) फोड़ा, रोग विशेष ।

गलगण्ड तद् ० ( ५० ) गण्डमाला, रोग विशेष, गले  
में अतिरिक्त मांस लटकना ।

गलगल दे० ( ५० ) चकोतरा, पत्नी विशेष ।

गलग्रह तत् ० ( ५० ) अनध्याय तिथि विशेष, श्वासा-  
शरोध, कंठ रोध, उद्वेग जनक, उत्पात, उपद्रव,  
मन्वाषक ।

गलजन्दड़ा दे० ( ५० ) गलासदी ।

गलण्डा दे० ( ५० ) आह्वान, हांक, पुकार ।

गलतनी दे० ( स्त्री० ) गलबन्धन ।

गलना दे० ( क्रि० ) पिघलना, नरम होना, पुलता,  
पुल जाना ।

गलन्दा दे० ( ५० ) कटुभाषी, मुखर, दुर्मुख ।

गलफटाकी दे० ( स्त्री० ) बड़ाई, घमरह, अपने मुंह  
अपनी प्रशंसा ।

गलफड़ा दे० ( ५० ) कपोल, गाल, जवड़ा, गालों पर  
का मांस ।

गलयाह दे० ( स्त्री० ) गोदी, आलिङ्गन ।

गलभङ्ग दे० ( ५० ) स्वरबद्ध, कण्ठ बैठना ।

गलसुई दे० ( स्त्री० ) तकिया, किरहाना, छोटी  
तकिया ।

गलस्तनी दे० ( स्त्री० ) बकरी, अज्ञा ।

गलहड़ दे० ( ५० ) गलगड़, रोग विशेष ।

गलहस्त दे० ( ५० ) गलग्रहण, गन्ना चोटना, गला  
दवाना, गले में हाथ लगा कर निकाल देना ।

गलही दे० (स्त्री०) नाव के आगे का भाग ।  
 गला दे० (पु०) गल, गर, कण्ठ, शब्द, ध्वनि ।  
 —पड़ना (वा०) भारी शब्द होना, गला घन  
 घनाना ।—फांसना (वा०) उद्बन्धन करना,  
 फासी देना ।—घैटना (वा०) शब्द का भारी  
 होना, एक प्रकार का रोग ।—घोटना (वा०)  
 गला दबाकर मार डालना, फाँसी देना ।  
 गलाना दे० (क्रि०) पिघलाना, द्रव करना, घुलाना ।  
 गलाव दे० (पु०) पिघलन, बहाव, द्रव ।  
 गलासी दे० (पु०) पशु वाधने की रस्सी, पगहा ।  
 गलित तत्० (पु०) [ गल + इतच् ] पतित, भ्रष्ट,  
 च्युत, द्रवोद्भूत, सड़ियल, गन्धा ।—कुष्ठ (पु०)  
 असाध्य रोग, महा व्याधि ।  
 गलियाना दे० (क्रि०) गाली देना, बुरा कहना,  
 अभिशाप देना, भोजन करन पर भोजन कराना,  
 गले में ठूसना ।  
 गलियारा दे० (पु०) छोटा गली, पेंडा, रथ्य ।  
 गली दे० (स्त्री०) छोटा मार्ग ।—गली (वा०) एक  
 गली से दूसरी गली में, गली गली में, प्रत्येक  
 गली में, यथा, “गली गली उत्सव हो रहा है,  
 वह गली गली भाग गया” ।  
 गले दे० (पु०) गले में, गर म ।—पड़ना (वा०)  
 खुशामद, विलैया दृष्टवत्, मिथ्या प्रशंसा ।  
 —पड़ी बजाये सिद्ध (वा०) अनिच्छा पूर्वक  
 क्लिष्ट काम को करना, अक्षि पूर्वक कर्म करण ।  
 —का हार होना (वा०) अतिशय प्रिय, अत्यन्त  
 प्यारा ।—लगना (वा०) आलिङ्गन, अङ्गवार ।  
 गल्प दे० (स्त्री०) उपन्यास, कल्पित कथा, उपकथा,  
 कहानी ।  
 गल्ला दे० (पु०) आटी, अन्न राशि ।  
 गल्लाला दे० (पु०) कुल्ली का काड़ा ।  
 गँच दे० (पु०) घात, दाघ, अक्सर, मोका, गरज,  
 प्रयोजन, ओसर ।  
 गचन दे० (पु०) गमन, चलन, गति ।  
 गचना दे० (पु०) बधुप्रवेश, स्त्री का पति के घर  
 आना ।

गचनि दे० (स्त्री०) गमन करने वाली, चलने वाली,  
 गई ।  
 गचय तत्० (पु०) जङ्गली पशु विशेष, माव के  
 समान पशु ।  
 गचनमेष्ट दे० (स्त्री०) राजकीय शासक शक्ति, बं  
 लाट और छोटे लाट की समिति ।  
 गचनी दे० (क्रि०) गयी, चली गयी ।  
 गचहि दे० (श्र०) गौं से, प्रयोजन में, अक्सर से ।  
 गवाक्ष तत्० (पु०) [ गच + अक्ष ] भरौवा, मौस  
 खिड़की, एक यानर का नाम ।  
 गचाना दे० (क्रि०) गान कराना, खोना,  
 कटना ।  
 गवासा तद्० (पु०) गोभक्तक, कसाई आदि ।  
 गवेधुका तत्० (स्त्री०) तृण, धान्य विशेष, गौकथा ।  
 गवैया दे० (पु०) गायक, गाने वाला ।  
 गच्य तत्० (पु०) गोसम्बन्धी द्रव्य, दुग्ध, घी,  
 गोबर आदि ।  
 गसना दे० (क्रि०) बांधना, घेरना, रोकना ।  
 गस्तान दे० (स्त्री०) कुपयगामिनी, कुलटा ।  
 गहई दे० (क्रि०) पकड़ना, ग्रहण करना,  
 करते हैं, धरते हैं ।  
 गह दे० (स्त्री०) बँट, हत्या, हथकड़ा, पकड़ी,  
 कर ।  
 गहक दे० (स्त्री०) मत्तता, उन्मत्तता, अमल ।  
 गहनकर दे० (पु०) मत्त होना, उमगना, आनन्दित  
 होना ।  
 गहगह दे० (पु०) नगर का आनन्द शब्द, सर्व  
 प्रसन्नता, यथा:—“इस समय यहां गहगह हो  
 रहा है” ।  
 गहगहाना दे० (क्रि०) लहकना, हिलोरना, उमगना ।  
 गहन तद्० (पु०) ग्रहण, पकड़ना, दुःख । (तत्०)  
 वन, कानन, दुर्गम ।  
 गहना दे० (क्रि०) पकड़ लेना, ग्रहण करना, (पु०)  
 भ्रूषण, अलङ्कार, निरवी, बन्धक, न्यास ।  
 गहनी दे० (स्त्री०) सन, पराध, काली पत्नी ।  
 गह्वर तद्० (पु०) गह्वर, सचन, घना वन, वृक्षों के  
 आच्छादित स्थान, वीरान जङ्गल, खोह, खाड़ी ।

- हारा दे० (गु०) गभीर, गम्भीर, अगाध ।  
 हहर दे० (पु०) डील, देर, विलम्ब, अतिकाल ।  
 हहा दे० (पु०) चिमटा, सरडासी, पकड़ने की यस्तु ।  
 हहवार दे० (पु०) क्षत्रिय जाति का एक भेद, गहवार क्षत्री ।  
 हहवारा दे० (पु०) डोलना, हिएडोलना ।  
 हहर तत्० (पु०) गर्त, गुहा, वन, कानन ।  
 हा दे० (क्रि०) गया, चला गया ।  
 हाई दे० (स्त्री०) गी, गाय, धेनु ।  
 हाऊ दे० (पु०) गांध, ग्राम, नगर, पुर, पुरवा, (क्रि०) गाऊं, गान कर्त्त ।  
 हाजना दे० (क्रि०) पूजा करना, विलोडना, राशि करना, एकत्रित करना, बटोरना ।  
 हांजा दे० (पु०) भङ्ग की पत्ती, गांफा, सन, भङ्ग, सबजी ।  
 हांफा दे० (पु०) गांजा ।  
 हांठ दे० (पु०) सन्धि, जोड़, बन्ध, गिरह, गिलटी, मोटरी ।—उखड़ना (वा०) जोड़ खुल जाना, हट्टी या नष्ट का विचलना ।—पड़ना (वा०) किसी के साथ विरोध होना, मनोमालिन्य बढ़ना ।—का पूरा (वा०) धनी, धनयन्त, धनशाली ।—का खोना (वा०) अपनी हानि करना ।—खोलना (वा०) खर्च करना ।—गठीला (वा०) हटा कटा, खूब बलवान् और कठोर अङ्ग वाला मनुष्य ।  
 हांठना दे० (क्रि०) बांधना, घश में करना, अपना प्रभुत्व जमाना, अधिकार करना ।  
 हांडर दे० (पु०) काच, तृण विशेष ।  
 हांडा दे० (पु०) ईत्तु, ईख, ऊख, गन्ना ।  
 हांधना दे० (क्रि०) गूंधना, धनाना, अणिवट्ट करना, भीत उठाना ।  
 हांव दे० (पु०) बस्ती, बसती, पुरवा, नगर, ग्राम ।  
 हांधना दे० (क्रि०) गान करना, बहकना, प्रदीप्य होना ।  
 हांसना दे० (क्रि०) बरमाना, छिद्र बन्द करना, परोना, गूंधना ।  
 हांसी दे० (स्त्री०) शास्त्रों के आगे का भाग, धार, तीक्ष्णता ।  
 हागर दे० (स्त्री०) घड़ा, गगरी, कलस, कलसी, घट ।  
 हाङ्गैय तत्० (पु०) गङ्गापुत्र, भीष्म पितामह, सुवर्ण ।  
 हाऊ दे० (पु०) वृक्ष, पेड़, ऊख, तरु ।—मिर्च (पु०) लालमिर्च ।  
 हाज दे० (पु०) भाग, केन, विद्युत्, विजली ।  
 हाजना दे० (क्रि०) गर्जना, सिंंहनाद करना, हर्षित होना, गरजना ।  
 हाजर दे० (पु०) गजरा, गङ्गन, मूल विशेष, इसका खाता धर्मशास्त्र से निन्दित है ।  
 हाजावाजा दे० (पु०) बहुविधवाद्य, अनेक वाजे, सर्वाङ्ग पूर्ण उत्सव ।  
 हाड दे० (पु०) गड़हा, गर्त, गढ़ा ।—तोप (स्त्री०) मिट्टी देना, कथुर करना, अश्लील या निन्दित वाग को छिपाना ।  
 हाडना दे० (क्रि०) तोपना, मिट्टी देना, छिपाना ।  
 हाडर दे० (पु०) भेड़, मेघ, भेड़ी ।  
 हाडरु तद्० (पु०) गारुड, सर्प का विष झाड़ने का मन्त्र, (गु०) सर्प का विष उतारने वाला ।  
 हाडहीं दे० (क्रि०) गाड़ते हैं, गड़े में दयाते हैं ।  
 हाड़ा दे० (पु०) प्वाड़े, दौब, गाड़ी, छोटी गाड़ी, गढ़ा, गर्त ।  
 गाड़ी दे० (स्त्री०) शकट, रथ, हरकड़ा ।  
 गाड़ीवान दे० (पु०) सारथि, बहलवान्, रथवाह ।  
 गाढ़ तत्० (पु०) घन, तरल नहीं, गाढ़ा, अत्यन्त दृढ़, कष्ट, आपद, वेदना, विपत्ति, ज्ञान, भङ्ग, विपत्ति ।—ता (स्त्री०) घनता ।  
 गाढ़ा दे० (गु०) कठिन, दृढ़, पांक के समान, मोटा, पोड़ा, घना, गर्त ।  
 गाढ़ालिङ्गन तत्० (पु०) बालिङ्गन, अकथार, भेंट ।

गार्णपत्य तत्० (पु०) गणेश के उपासक, गणेश के भक्त स्मार्त, उपासना का एक भेद ।

गणिका तत्० (पु०) गणिकामूह, चेश्याओं का दल,

गाण्डीय तत्० (पु०) अर्जुन के धनुष का नाम, यह धनुष अर्जुन को अग्नि की प्रसन्नता से मिला था, चाप, कामुक ।—धर (पु०) अर्जुन, तीसरा पाण्डव ।—री (पु०) अर्जुन, गाण्डीय नामक धनुष का धारण करनेवाला ।

गात तद्० (स्त्री०) गात्र, देह, तन, शरीर, तनु, अङ्ग ।

गाता तत्० (पु०) [ गै + तृण् ] गायक, गानकर्त्ता, गान कारक ।

गाता दे० (पु०) घूटा, पिठौता, जिल्द ।

गाती दे० (स्त्री०) चादर ओढ़ने की एक प्रक्रिया, जैसा साधू बांधा करते हैं, पट्टू, ऊर्णवस्त्र ।

गानु दे० (पु०) गायक, गवैया, गानेवाला, कोकिल, भ्रमर, गन्धर्व सङ्गीतकारी ।

गात्र तत्० (पु०) काय, देह, शरीर, यपु, गात, अङ्ग ।—कण्ट (स्त्री०) शरीर की खुजलाहट ।—वेदना (स्त्री०) शरीर को अथवा अङ्ग पीड़ा ।—भङ्गी (पु०) शरीर की विकृति, विकार, अङ्ग की घनावट ।—लेपनी (स्त्री०) शरीर में लगाने का सुगन्धित द्रव्यविशेष, उबटन ।—संवाहन (पु०) शरीर दवाना, अङ्गों की पीडा निकालना ।

गाथक तत्० (पु०) [ गै + यक् ] गायक, गानकारक, गवैया, कथक ।

गाथना तद्० (क्रि०) ग्रन्थन करना, गूँथना, बनाना ।

गाथा तत्० (स्त्री०) [ गै + या ] श्लोक, छन्द, गीत, पथारा, कहानी ।

गार्थे तद्० (क्रि०) गुण्ये, पिरोये, इसका प्रयोग ब्रजभाषा में किया जाता है और रामायण में भी ।

गाद दे० (पु०) तरछट, मेल, फुँट ।

गादना दे० (क्रि०) दृढ़ कप्पा, स्थिरकरना, दवाना, ठासना ।

गादर दे० (पु०) राशि, योक, ढेर, टाल ।

गादा दे० (पु०) कच्चा अन्न, चना यामटर का कचरी ।

गादा दे० (स्त्री०) सिंहासन, राज्यासन, गद्दी ।—पति (पु०) सम्प्रदाय का बड़ा संन्यासी ।

गादुर दे० (पु०) चमगीदर, चमगादुर ।

गाध तद्० (पु०) लिप्ता, स्पृहा, अमिल प ।

गाधि तत्० (पु०) चन्द्रवंशीय कुशिक राजा के प्रसिद्ध तपस्वी विश्वामित्र के पिता । महा कुशिक की रानी पौरकुन्ती के गर्भ में देश गाधिरूप से उत्पन्न हुए थे, गाधि की सत्यवती का विवाह महर्षि भृगु के साथ था । इसी सत्यवती के गर्भ में महर्षि जमदग्नि हुए थे ।—ज (पु०) विश्वामित्र मुनि ।—न (पु०) विश्वामित्र ।—पुर (पु०) कान्यकुब्ज दे ।—सुचन (पु०) विश्वामित्र मुनि, राजा के पुत्र ।

गाधेय तत्० (पु०) [ गाधि + ङक् ] विश्वामुनि ।

गान तत्० (पु०) [ गै + शिच् + अन्ट ] गाना, गेय, कीर्तन, ध्वनि ।

गाना दे० (क्रि०) आलापना, राग ।

गान्धर्व तत्० (पु०) गन्धर्व सम्बन्धी (पु०) विवाह विशेष, स्त्री पुरुष की इच्छा के अनुसार विवाह ।—विद्या (स्त्री०) मङ्गीतारा ।—विवाह (पु०) केवल घर कन्या की इच्छा विवाह ।

गान्धार तत्० (पु०) सिन्दूर, खर विशेष, जम्बू का उत्तरीय भाग जिसकी प्रसिद्धि कान्धा नाम से है ।—राज (पु०) शकुनि, दुर्वाचन मामा ।

गान्धारी तत्० (स्त्री०) [ गान्धार + ई ] जैनियों शासक देवता विशेष, यथासा, मादक द्रव्य पि राजा क्रोमु की पत्नी और अन्नमित्र की म मृत्तिकावती नगरी में रहने वाले राजाओं भोज पढ़ते हैं । इसी भोजवंशीय राजा की एक पत्नी का नाम ।

२) राजा भृतराष्ट्र की रानी। गान्धार देश के राजा सुवल् को कन्या और दुर्योधन को माता। इनके छोटे भाई का नाम शकुनि था। गान्धारी ने तपस्या द्वारा एकसी पुत्र प्राप्त करने का वर पाया था, भीष्मपितामह ने भृतराष्ट्र से गान्धारी का विवाह कर देने के लिये राजा सुवल् से अनुरोध किया। सुवल् ने इसे स्वीकृत किया, यह बात गान्धारी को भी मालुम हुई। गान्धारी का भावी पति अन्धा या अतएव उन्होंने भी अपनी आँखों में पट्टी बांध ली, ये प्रतिव्रता थीं, इन्होंने श्रीकृष्ण को शाप दिया था, जो सब निकला।

गान्धिक तत्० (पु०) लेखक, सुगन्ध द्रव्य व्यवहारा, अन्तार,।

गफिल दे० (पु०) लापरवाह, अमनोयोगी, अलस, जड़, बालसी।

गम दे० (पु०) गर्भ, घेद, हँडा।

गामा दे० (पु०) नवीन पत्र, कोमल पत्र, भीर का पत्ता, केले की नयी पत्तियाँ।

गामिन दे० (स्त्री०) गर्भिणी, अन्तरापत्य, गुर्विणी।

गम तद्० (पु०) ग्राम, गांव, नगर।

गामिनि तद्० (स्त्री०) गमनकर्त्री, गमन करनेवाली, जानेवाली।

गामी तत्० (पु०) गम + गिन्, गमनशील, गमन करने वाला, प्रत्यानकारी।

गमुक तत्० (पु०) चलने वाला, गमनकर्ता।

गम्भीर्य तत्० (पु०) गम्भीरता, गभीरता, धीरता, गुह्यता।

गय दे० (पु०) गौ, गाय, घेनु, गैया, गऊ।—गौठ तद्० (पु०) गौशाला, गौधों के रहने का स्थान, गौष्ठ।—गौरु (पु०) गैया, गौ, गौ सज्ज, गौशाला।

गयक तत्० (पु०) गवैया, गानेवाला।

गयत्री तत्० (स्त्री०) वेदमाता, 'मन्त्रविशेष, इन्द्रो-विशेष, दुर्गा, भगवती, ऊः अक्षर के बादवाला छन्द, इसके तीन पाद होते हैं। वेदों में लिखा है कि गृहस्वप्ति ने एक समय गायत्री का छिर काड़ दिया, परन्तु इससे गायत्री की मृत्यु नहीं हुई; किन्तु गायत्री के मस्तक से वषट्कार नामक

देवता की उत्पत्ति हुई। बहुत लोग इसके रूपक समझते हैं, गायत्री हिन्दूधर्म का धीजमन्त्र है। गृहस्वप्ति या चावीक नास्तिक मत के प्रचारक थे, हिन्दूधर्म के नाश को उन्होंने बहुत चेष्टा की, परन्तु सफल नहीं हुए। पद्मपुराण में लिखा है कि गायत्री ब्रह्मा की स्त्री है।

गायन तत्० (पु०) [ गै + अन्, ] गायक, गानकारी, गान से जीनेवाला।

गार दे० (स्त्री०) गाली, अभिशाप, विरुद्धचिन्ता, यथा—जैसे घरनत युद्ध में ज्यों विवाह में गार" —वृन्द सन्धर्ष।

गारना दे० (क्रि०) निचाड़ना, दुहना, निकालना।

गारा दे० (पु०) चहला, सानी हुई मिट्टी, ईंटे जेाड़ने के लिये गिलावा।

गारी दे० (स्त्री०) गाली, कुवाच्य, अपशब्द, अपभाषा।

गारुड़ तत्० (पु०) मरकतमणि, यन्त्र, एक पुराण का नाम, गरुड़ पुराण, स्वर्ण, विषमन्त्र, विषधैद्य, कालवेलिया, संपरा, सपहा।

गार्हपत्य तत्० (पु०) यज्ञीय अग्निविशेष, यज्ञ के त्रिविध अग्निओं में का एक अग्नि।

गार्हस्थ्य तत्० (पु०) गृहस्थाश्रम, गृहस्थ का धर्म, गृहस्थ सम्बन्धी।

गाल दे० (पु०) कपोल, गण्डदेग, कपट, झल। —चजाई (स्त्री०) बकवाद करके, धान बनाकर, धर्म की बहुतसी बातें बकना।

गालव तत्० (पु०) मुनि विशेष, गालवमुनि के पुत्र।

गाला दे० (पु०) कई की फली, धुनी हुई कई का गाला।

गाली तत्० (स्त्री०) अवमान बोधक शब्द, कुवाच्य। —गलीज (या) गाली।

गालु दे० (पु०) गाल, यथा—

एक संग नहिं हेहिं मुचाशु  
हमब ठटाय फुलावय गालु"

—रामायण।

गावघण्टू दे० (पु०) चायजूब, फुसलाऊ, स्वार्थी।

गावदी दे० (पु०) उजधक, भेला, गेगला, अज्ञान।

गावहिं दे० (क्रि०) गाता है, गान करता है।

गाह तद् ( पु० ) ग्राह, कुमीर, मगर, नक्र, जलजन्तु-  
विशेष ।

गाहक तद् ( पु० ) ग्रहक, खरीददार, क्रोता,  
कीननेवाला ।

गाहना दे० ( क्रि० ) हूडना, दावना, पकडना ।

गाहा तद् ( स्त्री० ) गाया, कथा, कहानी, ग्रहण  
करना, लेना ।

गाहियाहि दे० ( पु० ) हूड हूडकर, खोज खोजकर,  
टोह लगाकर ।

गाही दे० ( स्त्री० ) पाच की सख्या, पांच सख्या  
परिमित ।

गिजाई दे० ( स्त्री० ) कीट विशेष ।

गिचपिच दे० ( पु० ) कचपच, भीडभाड ।

गिचिपिचिया दे० ( पु० ) गिचपिच करनेवाला,  
भीड़भाड़ करने वाला ।

गिटकारी दे० ( स्त्री० ) गिड़गिड़ी, टुकड़े ।

गिटकौरी दे० ( स्त्री० ) पथरी, पत्थरनिर्मित, पत्थर  
के टुकड़े ।

गिडगिड़ाना दे० ( क्रि० ) अनुनय करना, यिन्ती  
करना, चिचिआना ।

गिनती दे० ( स्त्री० ) गणित, गनना, सख्या, हिसाब ।

गिनना दे० ( क्रि० ) गणना करना, गिनती करना ।

गिद्ध तद् ( पु० ) गोध, शकुनि, पक्षिविशेष ।

गिरगिट दे० ( पु० ) शरट, कूबलास, गिटगिटान ।

गिरत दे० ( क्रि० ) गिरतेही, गिरता है ।

गिरना दे० ( क्रि० ) पडना, ग्वसना, भडना ।

गिरपडना दे० ( क्रि० ) कूद पडना, भुङ्ग पडना,  
फिसल जाना, पतित होना ।

गिरते पडते दे० ( वा ) घटत कठिनता से, बहुत  
परिश्रम से ।

गिरा तद् ( स्त्री० ) वचन, वाणी, वाक् । दे०  
गिरवहा, फिसल गया, खसा ।—ग्राम ( पु० )  
ग्रामभाषा, गद्याङ्ग बोली ।

गिराना दे० ( क्रि० ) औंधाना, पटकना, छलकाना ।

गिरि तत् ( पु० ) पर्वत, पहाड, भूधर, अचल, सन्या-  
नियोंकी एकजाति ।—रूपटक ( पु० ) यज्ञप्रशानि ।

—कटक ( पु० ) महा नीच, बहुत कष्टी ।

—कदली ( स्त्री० ) कदली विशेष, पहाड़ी केना ।

—ज ( पु० ) शिलाजीत, पर्वत से उत्पन्न धतू

—जा ( स्त्री० ) पार्वती, पर्वत से उत्पन्न, प

की कन्या, भवानी ।—जानन्द ( पु० )

कार्तिकेय ।—धारी ( पु० ) श्रीकृष्णचन्द्र,

इतुमान् ।—न्दा ( पु० ) गिरीन्द्र, पर्वत राज,

हिमालय, सुमेरु ।—नन्दिनी ( स्त्री० ) पार्वती, गिरा

भवानी ।—नाथा ( पु० ) शिव, महादेव, भग

शङ्कर, हिमालय, पर्वतराज ।—राज ( पु० ) हिम

लय, सुमेरु ।—गर ( पु० ) पर्वतश्रेष्ठ, सुमेरु, हिम

लय, विन्ध्य ।—सुष्ट ( स्त्री० ) गेरु,

विशेष ।—साहय ( पु० ) शिलार्जात ।

गिरि ( पु० ) लडका, शिशु, बच्चा ।

गिरीन्द्र तत् ( पु० ) गिरि इन्द्र पर्वतराज  
हिमालय ।

गिरीश तद् ( पु० ) महादेव, शिव, कैलासपति,  
हिमालय, सुमेरु ।

गिरिई दे० ( क्रि० ) निगल गयी, खा गयी ।

गिरिटी दे० ( स्त्री० ) गाठ, ग्रन्थि, सूजन, फुफ्फू  
फोडा ।

गिरिन तत् ( पु० ) [ गृ + अनट्, ] निगरण, ल  
भक्षण ।

गिरिन ( या गेलिन ) दे० छः दोतल का परिमाण ।

गिरिहरा दे० ( पु० ) पान का डब्बा ।

गिरिहरी दे० ( स्त्री० ) रुली, चौखुर, कुडी ।

गिरिफ दे० ( पु० ) आच्छादन, टाकन, खोल ।

गिरित तत् ( पु० ) [ गृ + क ] भुक्त, भक्षित  
खा, दित ।

गिरियर दे० ( पु० ) आलसी, अमकती, [ ]  
दीला ।

गिरिये दे० ( स्त्री० ) अमृत, अमृतलता, गुहूच, गुहूची

गिरिी दे० ( स्त्री० ) गिरिये, लता विशेष, गुहूच ।

गिरिीरी दे० ( स्त्री० ) बीडी, खोली, पान की खोली

गिरिी दे० ( स्त्री० ) मकई की डुहड़ी ।

गौज दे० ( स्त्री० ) मुसलमानी का भोजन ।

गौजना दे० ( क्रि० ) मलना, भोलदेना, मर्दन करना ।

गीत तत्० ( पु० ) गान, ताल बाने के अनुसार गाना ।—घादन ( पु० ) गानकीर्तन ।—मोक्षी ( पु० ) [ गीम + मुद् + क्त, ] किरर, स्वर्ग गायक ।

गीता त् ( स्त्री० ) गान, अध्यात्म विद्या का ग्रन्थ, रात्रगोता, भगवद्गोता, गणेशगोता आदि ।

गीति तत्० ( स्त्री० ) [ गी + क्त ] गान, गीत, आर्या छन्द का एक भेद, यह मात्रावृत्त है ।

गीदड़ दे० ( पु० ) शियाल, गृगाल, जम्बूक ।  
—भयकी ( वा० ) चमपट, यहार, रोष जमाना, दधाना ।

गीध दे० ( पु० ) गिह, गृह, शकुनि, पक्षिविशेष ।

गीर्वाणतत्० ( पु० ) [ गीर् + घाण ] देयता, देव, सुद, चमर ।—कुसुम ( पु० ) मन्दार पुष्प, लवङ्गपुष्प ।  
—घाणी ( स्त्री० ) संस्कृतभाषा, हिन्दुमान की प्राचीन भाषा, शास्त्रीय भाषा ।

गीला दे० ( पु० ) भोग, आर्द्र, छोटा ।

गीपति तत्० ( पु० ) [ गीः + पति ] बृहस्पति, देवगुरु देवों के गुरु ।

गुगुल तत्० ( पु० ) गुगल, गोंद विशेष, सुगन्धि द्रव्य विशेष ।

गुच्छा तद्० ( पु० ) गुच्छक, मत्सक, कपा, कश्शा ।  
—गुच्छे ( बहु० ) कश्चे, फुदना ।

गुच्छेदार दे० ( स्त्री० ) कश्चेदार, गुच्छयुक्त ।

गुजर दे० ( पु० ) जाट, अहीर, गोप, जाति विशेष, ग्वाला, निर्वाह ।

गुजरात दे० ( पु० ) भारत के एक प्रान्त का नाम ।  
—'ी ( पु० ) गुजरात के राजा, गुजरात सम्बन्धी ( पु० ) एक रोग का नाम, यस्मा ।

गुजिया दे० ( स्त्री० ) कर्णफूल, कान का भूषण विशेष ।

गुज्र तत्० ( पु० ) गुब्ब, पुष्पस्तवक ।

गुञ्ज तत्० ( पु० ) गुन गुन करना, भ्रमर आदि का शब्द ।

गुञ्जा तत्० ( स्त्री० ) लता विशेष, पुङ्गची, लालरत्नी, परिमाण विशेष ।

गुञ्जान तद्० ( पु० ) गाढ़ा, मोटा, घना ।

गुञ्जभक्ता दे० ( पु० ) टीला, शिखिल ।

गुटकना दे० ( क्रि० ) कू कू करना, निगल जाना, कड़तर का शब्द ।

गुटका तद्० ( स्त्री० ) छोटे आकार की पुस्तक, शोध विशेष ।

गुटिका तत्० ( स्त्री० ) बटिका, गोलो, शोध की गोली ।

गुठलाना दे० ( स्त्री० ) फलों में गुठली होना, दांत खट्टा होना ।

गुठली दे० ( स्त्री० ) बीज, आम का बीज ।

गुड तत्० ( पु० ) [ गुड + अल् ] ईश का विकार लाल शक्कर ।

गुडगुड़ाना दे० ( क्रि० ) गुडगुड करना ।

गुडगुड़ी दे० ( स्त्री० ) छोटा हुक़ा ।

गुड़ाकू दे० ( पु० ) तमाकू, पीने का तमाकू ।

गुडाकेश तत्० ( पु० ) अर्जुन, निद्रा को अपने वश में करने के कारण अर्जुन का यद्द नाम पड़ा है ।

गुड़ाना दे० ( क्रि० ) छोदेना, खुदवाना, खनना ।

गुड़िया दे० ( स्त्री० ) तिलौना, गुद्दा, कपड़े की पुतली ।

गुड़ी दे० ( स्त्री० ) गुड़ी, पतङ्ग, कनकौशा, गुड़िया ।

गुडूची तत्० ( स्त्री० ) गुरच ।

गुडूी दे० ( पु० ) कनकौवा, पतङ्ग, तिलङ्ग ।

गुद्री दे० ( स्त्री० ) छिपने का स्थान ।

गुण तत्० ( पु० ) स्वभाव विशेषण, सद्बिद्या, वित्तय आदि, सत्य रज और तम, शुद्ध, कृष्ण, रक्त, पीत आदि, अध्रधानता, निपुणता, फल ।—कथन ( पु० ) यथोवर्णन, स्तुति, प्रशंसा करना ।—करना ( क्रि० ) भला करना, लाभ पहुंचाना ।—का पलटा देना ( वा० ) प्रत्युपकार करना, भलाई के बदले भलाई करना ।—गान ( पु० ) स्तुति, प्रशंसा ।

—गुह्य ( पु० ) सद्गुणयुक्त, गुणी ।—ग्राम ( पु० ) गुण समूह, गुणाकार ।—ग्राहक ( पु० ) गुणग्रहणकर्ता ।—ज्ञ ( पु० ) गुणवेत्ता ।—ज्ञान ( पु० )



बुद्धिमभाव ।—दर्शी (गु०) चारप्राही ।—दाता (गु०) शिक्तक, गुरु ।—धर्म (गु०) उत्तम पदार्थ, सार पदार्थ ।—न (गु०) अङ्क वृद्धि करण, हिसाब विशेष ।—निधि (गु०) गुणमिन्धु, गुणसागर ।—घन्त (गु०) गुणधान्. गुणी, प्रवीण ।—वान् (गु०) प्रवीण, निपुण, विद्वान् ।

गुणाकर तत्० (गु०) गुणों का समुद्र, गुणनिधि ।

गुणा तद्० (गु०) घार, बेर, पाला, गणित विशेष ।

गुणागुण तत्० (गु०) गुण दोष, भला बुरा ।

गुणाढ्य तत्० (गु०) एकसंस्कृत का कवि, इस कवि ने वृहत्कथा नामक एक विशाख भाषा का ग्रन्थ लिखा था । कथासरित्सागर में कात्यायन और व्याही के समकालीन इनको बताया गया है । कात्यायन का समय सन् ३१५ ई० से पूर्व माना जाता है । अतएव गुणाढ्य का भी यही समय निश्चित होता है । वृहत्कथा को दूसरी यथाह कथा भी कहते हैं । ये कवि अति प्राचीन और सत्कवि थे । इस बात को गोषर्दुनाचार्य ने अपनी आर्या सप्तशती में लिखा है ।

गुणातीत तत्० (गु०) [ गुण + अतीत, ] निर्गुण, गुणगून्थ, परब्रह्म ।

गुणित तत्० (गु०) [ गुण + क्त ] पुरित, आहत, पूरण करना ।—ा (स्त्री) गुणवत्ता, गुणयुक्ता ।

गुणी तत्० (गु०) [ गुण + ईन् ] गुणविशेष, गुण-शोल, सद्गुणान्वित, परिहृत ।—कृत (गु०) गुणित, पुरित, ।—भूत (गु०) अप्रधान ।—भूतच्यङ्ग (गु०) अरि विशेष, काठ्य विशेष ।

गुणोत्कर्ष तत्० (गु०) [ गुण + उत्कर्ष, ] गुण की प्रधानता, गुण की सुन्दरता, गुणव्याख्या ।

गुणोत्कीर्तन तत्० (गु०) [ गुण + उत्कीर्तन, ] गुण कथन, गुणगान, स्तुति, यशगान ।

गुणौघ तत्० (गु०) [ गुण + औघ, ] गुण समूह ।

गुण्डा तत्० (गु०) लम्पट, दुष्ट, दुरात्मा, दुराचारी, निर्लज्ज, सुद्धा ।

गुण्य तत्० (गु०) [ गुण + य ] गुणयुक्त, गुणनीय, जो अङ्क गुणा किया जाय, पूरणीयाङ्क ।

गुत दे० (गु०) उदासीन, मोन, गम्भीरता, सुपवा, सापरवाही ।

गुदगुदा दे० (गु०) केमल, मोटा, पुष्ट ।

गुदगुदाना दे० (क्रि०) सहलाना, सुलसुलाना, गुद-गुदी करना ।

गुदगुदाई दे० (स्त्री०) गुदराहट, सुहराना ।

गुदड़ी दे० (स्त्री०) कन्या, कयड़ी, नीर्य वस्त्र ।

गुदरत दे० (क्रि०) जानता है, चलता है, यह शब्द रामायण में प्रयुक्त हुआ है ।

गुदाम दे० (गु०) गोला, वस्तुधों का भण्डार, बड़े बहुतसी वस्तु जमा रहें ।

गुदारा दे० (गु०) घटश, एक स्थान पर इस पार से उस पार लेजाने वाली नौका, खेवानाय ।

गुदी दे० (स्त्री०) नाय बनाने का स्थान ।

गुद्दा दे० (गु०) अन्तःसार, सारभाग, दाह, शापा ।

गुद्दी दे० (स्त्री०) घाह, गर्दन, घोवा, ग्रन्थि, अन्तःसार ।

गुन तद्० (गु०) गुण, सुभाव, विशेषण, कला ।—गुना (गु०) कुनकुना, योड़ा गरम, सुख ।

—गाहक (गु०) गुणग्राहक, गुण का आदर करने वाला, यथा—“गुन ना हिरानों गुणगाहक हिरानो है”—गुनाना (क्रि०) सुख होना, गुन-गुन करना, धमर आदि का गन्द ।—द् (गु०) गुणदायक, लाभकारी ।—ह (गु०) दोष, पाप, अपराध, यथा—

“गुनहु लखन कर हम पर रोडु  
कतहु सुधाई ते थड़ दोडु”

—रामायण ।

—हु (क्रि०) विचारो, गुणन करो ।

गुनिये दे० गुनिये, मोचिये, विचारिये, गुणन कीजिये ।

गुनानि दे० (स्त्री०) मानसिक कल्पना, अभिलाष ।

गुनी दे० (गु०) गुणी, गुणवान् ।

गुप्त तत्त्वं (गु०) [गुप् + क्त,] कृत रक्षण-रक्षित-गृह,  
 द्विपा हुआ, वैश्य और गृह जाति का अङ्ग विशेष ।  
 —गति (गु०) चर, चार, दूत, सन्देशी, याताहारी ।  
 —चर (गु०) गोपनीय दूत, गृहचर, खुफिया ।—वेश  
 (गु०) हसी, कपटी ।  
 गुप्तार दे० (गु०) द्विपना, लुकना, लुकाय ।—घाट  
 (गु०) अथोष्वा जो के एक घाट का नाम ।  
 गुप्ती दे० (खी०) अस्त्र विशेष, एक प्रकार का डण्डा  
 जिसमें छोटी तलवार छिपी रहती है ।  
 गुफा दे० (खी०) गुहा, खोद, कन्दरा, विल, गह्वर ।  
 —गुमाना दे० (क्ति०) चुमाना, गड़ाना, गाड़ना,  
 बीधना ।  
 गुमट्टा दे० (गु०) बड़ा फोड़ा, श्लथ, गुमड़ा ।  
 गुमटी दे० (खी०) गुकट, लाट, कलस, शिखर, छोटी  
 कोठरी, यज्ञविशेष, यह मिथिला में बनता है, तथा  
 अत्यन्त सम्मान सूचकसम्पन्न जाता है, प्रायः राजा  
 को और से यह परिहर्तों को दिया जाता है ।  
 गुमान दे० (गु०) अभिमान, मान, अहङ्कार ।—  
 (गु०) अहङ्कारी, अभिमानो एक कवि का नाम, ये  
 कवि कुमायूँ प्रदेश के रहने वाले थे और संस्कृत  
 तथा भाषा के कवि थे ।  
 गुमसना दे० (क्ति०) दुर्गन्ध होना, सङ्गना ।  
 गुम्फ तत्त्वं (गु०) [गुम्फ + अल्.] ग्रन्थन, गायना,  
 श्रवण, वादुपपन्न विशेष ।  
 गुमसा दे० (गु०) सड़ा, गला ।  
 गुम्फित तत्त्वं (गु०) ग्रंथित, प्रणीत, गुहा हुआ ।  
 गुजरना दे० (क्ति०) घुटाना, घुड़कना, गर्जन  
 करना ।  
 गुर्जिया दे० (खी०) मनिया, बाला के दाने,  
 दाने ।  
 गुरु तत्त्वं (गु०) [गर + उ ] मन्त्रदाता, उपदेशक,  
 शिक्षक, आचार्य, पुरोहित, द्विमात्रिक अक्षर, धा,  
 ई, आदि, गुरु पांच प्रकार के होते हैं, पिता,  
 उपनयन करने वाला, विद्यादाता, अन्नदाता,  
 और भय से रक्षा करने वाला, (गु०) भारी, गह्व,  
 श्रेष्ठ ।—कार्य (गु०) आचर्यक कार्य, फलवाह  
 कार्य ।—जन (गु०) उपदेश, बड़े लोग, मान-  
 नीय ।—तर (गु०) बहुत बड़ा, बहुत भारी,

माननीय ।—तल्पग (गु०) सैतेली मा के साथ  
 सम्बन्ध करने वाला, गुरु स्त्री का हरणकारी ।  
 —तल्पव्रत (गु०) गुरु पत्नी हरण का प्रायश्चित्त ।  
 —ता (खी०) भारीपन, भार, गौरव ।—दशा (खी०)  
 गुरु की दशा, बृहस्पति की दशा ।—दार (खी०)  
 गुरु को स्त्री, वेदाध्यापक अथवा मन्त्रदाता की  
 स्त्री ।—देव (गु०) अथोष्ट देव, पिता, आचार्य ।  
 —दैवत (गु०) पुण्य नक्षत्र ।—पत्नी (खी०) गुरु  
 को स्त्री ।—पाक (गु०) दुग्ध, जिसका विलम्ब  
 से परिपाक है ।—पाप (गु०) कठिन पाप, महा-  
 पाप, अतिपातक ।—प्रमोद (गु०) अतिशय  
 आनन्द, अत्यन्त हर्ष ।—मुख (गु०) लक्ष्य  
 मन्त्र, दोषित, गृहीतमन्त्र ।—मुखहीना (क्ति०)  
 मन्त्र लेना, चेला होना, गुरु करना ।—मन्त्र (गु०)  
 दृष्टमन्त्र, दीक्षा में प्राप्त मन्त्र ।—लघु (गु०)  
 मान्य, अमान्य, प्रधान, अप्रधान, इस्त्र, दीर्घ ।  
 —शुधू पा (खी०) गुरु सेवा, गुरु को आराधना ।  
 —सेवा (खी०) गुरु पूजा ।  
 गुरुदान तद्गु० (खी०) गुरु पत्नी, माता ।  
 गुरुवार तत्त्वं (गु०) बृहस्पतिवार ।  
 गुरुपदिष्ट तत्त्वं (गु०) [गुरु + उपदिष्ट,] गुरु से  
 शिक्षा या उपदेश ग्रहण ।  
 गुरुपदेश तत्त्वं (गु०) गुरु के समीप की शिक्षा ।  
 गुर्मा दे० (गु०) धासन मंजने वाला, टहलुआ, भृत्य ।  
 गुर्माची दे० (खी०) लूनी, पनही ।  
 गुगरी दे० (खी०) कम्पज्वर, जुहो ।  
 गुज्जर तत्त्वं (गु०) देशविशेष, गुजरात, गुजरात  
 के वासी ।  
 गुर्जरी तत्त्वं (खी०) गुजरात की स्त्रियां, रागिनी  
 विशेष ।  
 गुर्ची दे० (खी०) भुंजा हुआ जड़ ।  
 गुर्वङ्गना दे० (खी०) गुरुपत्नी, सपत्नी, माता, सैतेली  
 मां, माननीय स्त्री ।  
 गुर्वादित्य दे० (गु०) योग विशेष, सूर्य और बृहस्पति  
 के एक राशिस्थ होने पर यह योग होता है, इन  
 योग में विवाह आदि मङ्गल कृत्य नहीं होते ।  
 गुर्धिणी तत्त्वं (खी०) गर्भवती, गर्भिणी ।  
 गुर्वी तत्त्वं (खी०) गर्भवती, (गु०) भारी ।

गुल दे० (पु०) अङ्गार का गोला, दीपक की बत्ती का अग्रभाग, बुकाना, पुष्प।—गुला (पु०) पकीड़ी, पकवानविशेष।—गुलाना (क्रि०) पिघलाना, नरमाना, नरम करना।—गूथना गाल फूला, छटना, कौहाना।—भूडी (स्त्री०) भूकट, घूरची, आनन्द।—हली (स्त्री०) गोला भगत, नये चावल का भात।

गुलाव दे० (पु०) पुष्पविशेष, गुलाव के फूले का रस।

गुलावजामन दे० (स्त्री०) मिठाई व रस विशेष।

गुलाल दे० (पु०) रङ्ग विशेष।

गुलिक दे० (पु०) मोती की माला के दाने।

गुलिया दे० (स्त्री०) सिर के पीछे का खट्टा।

गुलेल दे० (पु०) एक प्रकार की धनुष।

गुल्फ तत्० (पु०) फील्ड, चैर की गाठ।

गुल्म तत्० (पु०) रोगविशेष, ग्रीहा, मेना की संख्या विशेष।—शूल (पु०) रोग विशेष।

गुल्तर दे० (पु०) उदुम्बर, ऊमर।

गुल्ला दे० (पु०) गुलेल की गोली, गाटी की छोटो गोली।

गुल्लाला दे० (पु०) फूल विशेष।

गुवा दे० (पु०) सुपारी, सूगी फल।

गुवाक दे० (पु०) सुपारी का वृक्ष।

गुवैया दे० (स्त्री०) सली, सहेली, धयस्वा।

गुवालियर दे० (पु०) मध्यभारत की एक राजधानी का नाम, रवालियर।

गुष्टि तद्० (स्त्री०) सम्मति, सलाह, मित्रता।

गुस्ताई तद्० (पु०) स्वामी, संन्यासी, जितेन्द्रिय, संन्यासी, बङ्गाली और पञ्जाबी कुछ ब्राह्मणों की अङ्ग।

गुह तत्० (पु०) [ गुह + अच् ] कार्तिकेय, निपाद, निपादाधिपति का नाम, कायस्थों की एक पट्टति का नाम, विष्टा, मल।—पट्टी (स्त्री०) अगहन मास की शुक्ल पक्षी।

गुहक तत्० (पु०) एक अनार्य राजा का नाम, इसका अयोध्या के समीप राज्य था। इसकी राजधानी

का नाम, शृङ्गेरपुर था, यह महाराज दशरथ का मित्र था, इसी कारण रामचन्द्र जी भी रक्षक आदर करते थे। वनवास के समय इसी अनार्य राजा की सहायता से रामचन्द्र जी ने गङ्गा को पार किया था।

गुहर दे० (पु०) गुम, छिपा, टका, चुका।

गुहनी दे० (क्रि०) गांयना, घुयना, पिटोना।

गुहराना दे० (क्रि०) पुकारना, समीप बुलाना, सहाय करना।

गुहाजनी दे० (स्त्री०) चाँस पर फुटिया।

गुहा तत्० (स्त्री०) गुफा, कन्दरा, खोह, पर्वत आदि का गहर।—गूह (पु०) कन्दरा, गर्त।—शय (पु०) विष्णु, दवाग्र, सिंह।

गुहाना दे० (क्रि०) गुहवाना, प्रंचित कराना।

गुहार दे० (पु०) सहायता के लिये आह्वान, पुकार।

गुहारी दे० (पु०) गुहार करने वाला, गुहारनेवाला।

गुहिल तत्० (पु०) धन, वित्त, विभय, निधि, मेवाड के प्रथम राज्य स्थापक का नाम, सिसोदिया कुल के राजाओं का पहला राजा, इसी राजा के नाम से सिसोदिया क्षत्री अपने को गुहिलोत कहते हैं।

गुहक तत्० (पु०) देवयोनि विशेष, कुवेर के अतु-चर, यक्ष।

गुहकेश्वर तत्० (पु०) कुवेर, यक्षराज।

गू दे० (पु०) गुह, मल, विष्टा।

गूंगा दे० (पु०) मूक, मौन, धनबोल, बिना वाणी का, शब्द रहित।

गूँज दे० (पु०) प्रतिध्वनि, प्रतिशब्द।

गूँजना दे० (क्रि०) गूँज करना, भिन्नभिन्नाना, ध्रमर आदि का शब्द करना।

गूँझा दे० (पु०) एक प्रकार की मिठाई।

गूँडा दे० (पु०) नाव का आढा काठ।

गूँथना दे० (क्रि०) गुहना, पिटोना।

गूँदना दे० (क्रि०) सानना, एकत्रित करना, गोला बनाना।

गूदनी दे० (स्त्री०) गुंदेला वृक्ष विशेष, लमोर ।  
 गूंधन दे० (पु०) लोई, पेड़ा ।  
 गूंधना दे० (क्रि०) सानना, गूदना, बिनना ।  
 गूंड्या दे० (पु०) साथी, सङ्गी, साथी खेल का सङ्गी ।  
 गूगल दे० (पु०) गौंदविशेष, सुगन्धितद्रव्य ।  
 गूगला तद्० (स्त्री०) चींघा, सीप ।  
 गूजर तद्० (पु०) जाति विशेष, जाट अहोर का एक भेद ।  
 गूजरी दे० (स्त्री०) स्त्रियों के एक आभूषण का नाम ।  
 गूड़ तद्० (पु०) [गूह + क्त] गुम, गुह्य, अप्रकार्य, कठिन, सूक्ष्म, पकान्त, गुहा, निर्जन स्थान ।  
 —चार (पु०) गूढ पुरुष, गोदन्दा ।—ज (पु०) जाजल पत्र ।—पत्र (पु०) करधोर वृक्ष, करील वृक्ष, नागकली ।—पथ (पु०) अन्तःकरण, चित्त ।—पाद (पु०) सर्व, भुजङ्ग, अहि ।—पुरुष (पु०) चर, द्रुत, गुम्वर ।—भाषित (पु०) गूढ़वाद, गुम, विद्यापन ।  
 —ार्थ (गु०) गुम अर्थ, कठिन अर्थ ।  
 गूथ दे० (पु०) सूत की लड़ी ।  
 गूथना दे० (क्रि०) गायना, गूथना, तागना ।  
 गूदड़ दे० (सु०) पुराना वस्त्र, कन्या, (पु०) कन्या-धात्री ।  
 गूदड़ी दे० (स्त्री०) कन्या, रजाई, नूजनी ।  
 गूदर दे० (गु०) मोंटा, पलपल, गुदगुदा ।  
 गूदा दे० (पु०) फलों का सातवांश, मीजी, अन्तःसार, भेजा ।  
 गूदिया दे० (गु०) लोभी, दल्युक ।  
 गुप तद्० (ग०) गुम, द्विप ।  
 गुमडा दे० (पु०) फोड़ा, नूजन, गिलटो, प्रण ।  
 गुमड़ी दे० (स्त्री०) गठ ।  
 गुत्तर दे० (पु०) डूबर, उदुम्बर, उमर ।  
 गूहडिया दे० (पु०) घूँ, कूड़ा, कतवार, गोधर ।  
 गूजन तत् (पु०) गाजर, गजरा, लमुन, प्याज ।  
 गूधु तत् (गु०) लालची, लोभी, दल्युक ।—ता (स्त्री०) लोचुपता, लोभ, आकाङ्क्षा, अभिलाष ।  
 गूध तत् (पु०) गीध, गिह, पक्षि विशेष ।—राज (पु०) जटायुपक्षी ।  
 गूध्रा तद्० (गु०) मरभूखा, लोभी, लालची ।

गृही तत् (स्त्री०) एकवार की ध्यायी गौ, लताविशेष, धराही कन्द ।

गृह तत् (पु०) ईंट; आदि से बनाया हुआ स्थान, घर, गेह, भवन, निकेतन, आगार ।—कन्या (स्त्री०) घृतकुमारी, चीकुवारि, ।—कर्म (पु०) गृह सम्बन्धी कार्य ।—मोधिका (स्त्री०) विषहृदया, द्विपकली ।—छिद्र (पु०) गृहदोष, घर की गुप्त व.तें, गृह कलङ्क ।—तटी (स्त्री०) गली, बीथी, घर के बाहर का चैतरा ।—दास (पु०) गृह का भूत्य ।—दाहक (पु०) आततायी, घर जलाने वाला, गृह नाशक ।—निर्माता (पु०) घर बनाने वाला ।—पति (पु०) गृहस्वामी, घर का मालिक ।—पालक (पु०) कूकुर, गृह रक्षक ।—वाटिका (स्त्री०) घर के समीप का बगीचा ।—चासी (पु०) घर में रहने वाला ।—भङ्ग (पु०) गृहभेदक, प्रयास ।—भेदी (पु०) घर का दोष प्रकाशित करने वाला, द्रुत, सूचक ।—मणि (पु०) प्रदीप, दीपक ।—मेधी (पु०) गृही, गृहपति, घर वाला ।—त्रिच्छेद (पु०) कृद्म्व कलह, परिवार के नाश विधाद ।—स्थ (पु०) द्वितीयाश्रमी, उद्योगश्रमी, गृही, संसारी ।—स्थता (स्त्री०) गृह ध्यावार, गृहस्थ का धर्म ।—स्थाश्रम (पु०) चार आश्रमों के अन्तर्गत दूसरा आश्रम ।—गत (पु०) आगन्तुक, अतिथि, पाहुन ।—ार्थ (पु०) घर के लिये, गृह के निमित्त ।

गृहिणी तत् (स्त्री०) गृहस्वामिनी, भार्या, स्त्री, पत्नी ।

गृही तत् (पु०) गृहस्वामी, घर का मालिक, गृहस्थ ।

गृहीत तत् (पु०) पकड़ा हुआ, स्वीकृत, भङ्गीकृत, ग्रहण किया ।

गृह्य तत् (पु०) गृहासक्त, गृहस्थों के कर्तव्य कर्म, कर्मोपदेशक शास्त्र विशेष, प्रद्वय करने योग्य ।

—ग्रन्थ (पु०) धर्म संहिता कर्मशास्त्र ग्रन्थ ।

—सूत्र (पु०) स्मृति शास्त्र ।—अग्नि (पु०) गृह सम्बन्धी अग्नि, अग्निहोत्र का अग्नि, संस्कृत में अग्नि पुद्गल है, किन्तु हिन्दी में यह शब्द स्त्रीलिङ्ग मान लिया गया है ।

गैडक दे० (पु०) गैदा, फूल विशेष ।  
 गैडा दे० (पु०) एक जन्तु का नाम, इसीके चमड़े की डाल बनती है ।  
 गैद दे० (पु०) खेलने की एक पस्तु, गैदा ।  
 गैदा दे० (पु०) पुष्प विशेष, गैद ।  
 गैदी दे० (स्त्री०) खेलने की गोली ।  
 गैगरा दे० (पु०) कैंकड़ा, कर्कट ।  
 गे दे० (स्त्री०) गये, चले गये, बीत गये ।  
 गेगली दे० (स्त्री०) योदली, फूहर, कुछप खो ।  
 गेडुआ दे० (पु०) तकिया, छिरहाना, उपधान, टोटी दार लोटा ।  
 गेदरा दे० (पु०) अनशूक, अज्ञान, भौंदा, अयोध ।  
 गेदा दे० (पु०) पत्तरहित चिड़िया, पखरान ।  
 गेया दे० (पु०) मिटनी, बोटा, रखड ।  
 गेय तत्० (पु०) [गै + या] मानयोग्य, सहित करने के उपपुत्र, जानियोग्य ।  
 गेरू दे० (पु०) गैरिक, पहाड़ की लालमट्टी, उपधासु ।  
 गेरुआ दे० (पु०) गेरू से रंगा हुआ ।  
 गेह तत्० (पु०) गृह, भवन, घर ।—शूर (पु०) गृह प्रिय, गृहामक, घर हो में बोरता दिखानेवाला ।  
 गेही तत्० (पु०) गृही, गृहस्थाश्रमी, गृहाश्रमी ।  
 गेहूँ दे० (पु०) गेहू, गोधूम, अन्नविशेष ।  
 गेहुआं, गेहवा दे० (पु०) गेहू के रङ्ग का, गेहूवरन, सांयला ।  
 गैडा दे० (पु०) गैडा, एक जन्तु, जिसकी पवित्र हड्डी की अमूठिया अर्घा आदि पितृतर्पण में काम आते हैं ।  
 गैत दे० (स्त्री०) कुदार, मिट्टी खोदने का अस्त्र विशेष ।  
 गैना दे० (पु०) फाड ।  
 गैया दे० (स्त्री०) गाय, धेनु, गौ ।  
 गैर दे० (पु०) अन्य, दूसरा ।  
 गैरा दे० (पु०) चास का पूला, चाँदी, सुहा ।  
 गैरिक तत्० (पु०) लाल रङ्ग की मिट्टी, गेरू ।  
 गैरिय तत्० (पु०) शिलाजतु, शिलाजीत ।  
 गैल दे० (पु०) मार्ग, राह, रास्ता, गली, रथ्या, पथ ।  
 गैहरी दे० (स्त्री०) दण्ड, रोकने का दण्ड, अर्गल, बँडा ।

गो तत् (स्त्री०) गौ, धेनु, गैया, पशु, वाण, दिशा, वचन, पृथ्वी, माता । (पु०) मुघर्ण, किरण, प्रकार, सूर्य के दूसरे राशि पर जाने का समय, अथवा नामक ओषधि विशेष ।  
 गौंठा दे० (पु०) उपला, उपरी, कपडा, छान, गोही ।  
 गौंद दे० (पु०) लासा, बँप, निर्वास ।  
 गौंदनी दे० (स्त्री०) नृणविशेष, नरकट ।  
 गौंदा दे० (पु०) पत्तों के खाने की लोई जिससे पत्तों फैसाए जाते हैं ।  
 गोआल तद्० (पु०) गोपाल, गोप, आहोर ।  
 गौंदी दे० (स्त्री०) वृक्षविशेष ।  
 गोई दे० (पु०) गुम, छिपा, छिपाया ।  
 गोप दे० गुप्त किये, छिपाये ।  
 गोकर्ण तत्० (पु०) परिमाण विशेष, एक पद, मृग विशेष, खजूर, अश्वतर, सर्पविशेष, गणदेवता विशेष, तार्थविशेष, पर्वतविशेष ।—नाथ (पु०) एकतीर्थ का नाम, जिस के प्रधान देवता शिव हैं ।  
 गोकुल तत्० (पु०) गौका सपूद, ब्रज, मथुरा के पार का एक गाव, यही नन्दजी रहते थे यही भगवाद् श्री कृष्ण ने अपना दारुणकाल बिताया था ।  
 गोकुलेश तत्० (पु०) गोकुल का अधिपति, श्री कृष्णचन्द्र ।  
 गोपर तद्० (पु०) गोचुरक, एक ओषधि का नाम, भूयण विशेष ।  
 गोखुर दे० (पु०) गौ का खुर, एक घोड़े का नाम ।  
 गोचना दे० (पु०) धरना, पकड़लेन, गेहू और वना ।  
 गोचर तत्० (पु०) इन्द्रियों का विषय, प्रत्यक्ष, मनुष्य, सामने, गौर्षों के चरने का स्थान, जन्म राशि से लेकर कतिपय राशियों के नाम ।  
 गोचर्म तत्० (पु०) [गौ + चर्म], गौ का चमड़ा ।  
 गोचा दे० (पु०) दधाना, धोखा देना ।—गोची (वा०) धोखे पर धोखा, दबाव पर दबाव, बलात्कार से धोखा देना ।  
 गोचारण तत्० (पु०) गोपालन, गौ की चराना ।  
 गोचिकित्सा तत्० (स्त्री०) गौ का ओषधि, गौ की दवा ।  
 गोख दे० (पु०) मूख, गोख, गोखा ।

गोजल तत्० (पु०) गोमूत्र ।  
 गोजई दे० (पु०) मिथित अन्न, गेहूँ और जय ।  
 गोजर दे० (पु०) कनखरूरा, कांठर, कानसरई ।  
 गोजिका दे० (स्त्री०) वृत्तविशेष, एक प्रकार का वीधा ।  
 गोजिह्वा तत्० (स्त्री०) गोभी, जोधी ।  
 गोड दे० (पु०) किनारा, मगज़ों, भोज, जातीय भोजन, खेलने की गोठी ।  
 गोटा दे० (पु०) किनारा, किनारी, कोर, चांदी सेने के तारों से जो घनते हैं ।  
 गोटी दे० (स्त्री०) बेचक, शीतला, झाले ।  
 गोठ तद्० (पु०) गोध, पशुओं के रहने का स्थान, घरा, सघ्रह ।  
 गोड़ दे० (पु०) पाद, पांश, पिपडली, टांग, पैर ।  
 गोड़ना दे० (क्रि०) खोदना, खुरचना ।  
 गोड़िया दे० (पु०) जाति विशेष, कहार ।  
 गोड़ी दे० (स्त्री०) चोरी, अवहरण, छीनना ।  
 गोण तद्० (पु०) बोरार, पैला, आला, अन्न रखने का पैला ।  
 गोणी तत्० (स्त्री०) अन्न आदि लेजाने का आधार विशेष, गेन, परिमाण विशेष ।  
 गोत तद्० (पु०) गोत्र, वंश, जात, कुल ।  
 गोतम तत्० (पु०) ऋषिविशेष, गोतम मुनि, न्याय-दर्शन कर्ता, अष्टपाददेखो ।—अन्य (पु०) शाक्य-मुनि, बुद्धदेव,—नारी (स्त्री०) गोतम मुनि की स्त्री, सहस्वयी ।  
 गोतमी तत्० (स्त्री०) दुर्गा, कश्यप मुनि की भगिनी ।  
 गोता तद्० (पु०) गोत्र, वंश, कुल जल में डुबकी लगाना ।  
 गोतिया तद्० (पु०) परिवार, कुटुम्ब, जातभार्द, सम्बन्धी ।  
 गोती तद्० (पु०) गोत्रज, वंशज, कुटुम्ब ।  
 गोतीत तत्० (पु०) इन्द्रियों से परे, इन्द्रियों से न जानने योग्य, इन्द्रियातीत, यथा "गिराज्ञान गोतीत" ।  
 गोत्र तत्० (पु०) वंश, कुल, जाति, गोत, आदि पुरुष, पर्वत, पहाड़ ।—ग (पु०) गोत्र में उत्पन्न,

—रामायण ।

जाति, कुलज, वंशीय, पर्वतीय धातु ।—धन (पु०) वैशिक धन, पिता का धन ।—भृत् (पु०) इन्द्र, देवराज, शक्र, वामन ।—शत्रु (पु०) इन्द्र, शक्र, कुलाह्वार ।

गोद दे० (पु०) अकवार, गोदी, घुजन, पैर का मोटा होना, दत्तक पुत्र लेना ।—पसारना (घा०) मांगना, जांचना, याज्ञा करना ।—लेना (घा०) पासना, पालना, दत्तक बनाना, पोस घृत करना ।

गोदना दे० (क्रि०) चेंकना, चोंधाना, चिन्हित करना (पु०) चेचक का टीका लगाना ।

गोदन्त दे० (पु०) हरिताल, पीले रङ्ग की एक धातु ।

गोदा दे० (पु०) चिन्ह, अङ्क, गोपल य चङ्क के पके फल ।

गोदान तत्० (पु०) गोदान, गौ को अर्पण करना, पुण्य कर्म विशेष ।

गोदावरी तत्० (स्त्री०) नदी विशेष, इस नाम को प्रसिद्ध एक नदी, यह पवित्र नदियों में से है और दक्षिण में है ।

गोदी दे० (स्त्री०) अकवार, गोद ।

गोदीहन तत्० (पु०) गाय दुहना, गाय से दूध निकालना ।

गोदीहनी तत्० (स्त्री०) गोदीहन पात्र, दुधेड़ी, दोहनी, पूचा ।

गोधन तद्० (पु०) गोसघ्रह, गोकुप धन, दीयाली के समय की एक पूजा, गोसहृन्पूजा ।

गोध्रा तत्० (स्त्री०) धनुष के ज्या के आघात को रोकने के लिये चर्मपट्टिका, हाथ की कलाई पर बांधने का चमड़ा, जिसे धनुषारी लोग बांधते हैं ।

गोधिका तत्० (स्त्री०) गोद, जल जन्तु विशेष ।

गोधूम तत्० (पु०) शस्यविशेष, एक अन्न का नाम, नारङ्गी, गेहूँ, शीपथि विशेष ।

गोधूली तत्० (स्त्री०) सूर्य के अस्त और उदय होने के ३५४ य चङ्की और ५५४ य चङ्की का समय ।

गोधेनु तत्० (स्त्री०) दुग्धयुक्ती गौ, दुधार गाय ।

गोधौरा दे० (स्त्री०) सायङ्काय मन्थ्याकाल ।

गोनर्हीय तत्० ( पु० ) पतञ्जलि मुनि, व्याकरण महा-  
भाष्यकार । ( गु० ) गोनर्द देश का, गोनर्द देश  
संबन्धी ।

गोप तत्० ( पु० ) [ गो + पा + ङ ] जातिविशेष, अहीर,  
ग्वाला, ग्वाल, राजा, जमीनदार, एक कीड़े का  
नाम ।—कन्या ( स्त्री० ) अहिरीन ।

गोपक तत्० ( पु० ) [ गोप + क ] बहुत ग्रामों का स्वामी ।

गोपति तत्० ( पु० ) चांडू, वृष, बैल, गोरक्षक, अहीर,  
आभीर ।

गोपद तत्० ( पु० ) गोप्यद, गाय का सुर ।

गोपन तत्० ( पु० ) [ गुप् + अनट् ] छिपाव, लुकाव,  
अप्रकाश, रक्षण ।—हर्ह ( गु० ) छिपाने योग्य,  
गोपनार्ह, गोप्य, गुह्य, —ीय ( गु० ) गोप्य,  
अप्रकाश्य—पह्ली ( स्त्री० ) गोपों का वास स्थान ।  
—घधू ( स्त्री० ) गोप स्त्री, गोपाङ्गना ।

गोपा तत्० ( स्त्री० ) [ गोप + आ ] लताविशेष, इयाम-  
लता, सिद्धार्थ बुद्धदेवकी स्त्री का नाम, कपिलवस्तु  
नगर के समीपस्थ, कलिराज्य के अधिपति की ये  
कन्या थीं, इन्हीके गर्भ से बुद्ध देव का एक पुत्र  
उत्पन्न हुआ था, उस पुत्र का नाम राहुल था, गोपा  
असाधारण यिदुषी और पतिभक्ता स्त्री थीं, पति के  
वनगमन के बाद गोपा ने भी पुत्र के साथ, बुद्धा-  
श्रम में प्रवेश किया था, बुद्ध के मरने पर ये ही उनके  
आश्रम का सञ्चालन करती रही ।

गोपाल तत्० ( पु० ) गोप. अहीर, विष्णु का पूर्ण  
अवतार, यह वसुदेव के पुत्र थे परन्तु ब्रज में  
नन्द के यहाँ इनका वास्तव समय बीता था  
अतएव इन्हें नन्दनन्दन भी कहते हैं । यद्वायुराज  
में लिखा है कि यह सर्वदा वास्तवस्था के समान  
गोप वेष ही में रहते थे ।

गोपालक तत्० ( पु० ) गोप, अहीर, ग्वाला,  
गोपग्वाले दे० ( पु० ) गोआला, गोपालनेवाला ।

गोपालय तत्० ( पु० ) गोपगृह, ग्वालों का घर, ब्रज ।

गोपाष्टमी तत्० ( स्त्री० ) कार्तिक शुक्ल अष्टमी, इस  
दिन गौ की पूजा की जाती है ।

गोपिका तत्० ( स्त्री० ) [ गोप + इक् + आ ] गोप  
स्त्री, गोपाङ्गना, अहिरीन ।

गोपित तत्० ( गु० ) रक्षित, पालित, सुर,  
अप्रकाशित ।

गोपी तत्० ( स्त्री० ) [ गोप + ई ] गोपस्त्री, गोपा-  
ङ्गना, ग्वालिन ।—नाथ ( पु० ) श्रीकृष्ण, गोपियों  
के पति ।

गोपीचन्दन तत्० ( पु० ) एक प्रकार का चन्दन  
पीत वर्ण चन्दन विशेष ।

गोपुच्छ तत्० ( पु० ) हार विशेष, गो की पूंछ ।  
समान बना हुआ हार ।

गोपुर तत्० ( पु० ) नगर द्वार, शहर का फाट  
पुरद्वार, फ़िले का फाटक ।

गोसा तत्० ( पु० ) [ गुप् + तृष् ] रक्षक, वास्तव  
रक्षाकर्ता, अप्रकाशक ।

गोप्य तत्० ( गु० ) [ गुप् + य ] रक्षणीय, गोपनीय ।

गोप्रकाण्ड तत्० ( पु० ) अष्टौ गौ, उत्तम गौ  
प्रधान गौ ।

गोफणा तत्० ( स्त्री० ) गोफन, पत्थर फँकने व  
अन्न विशेष, भिन्दिपाल, देलवास, गुफना ।

गोफन तत्० ( पु० ) देलवास ।

गोफिया दे० ( स्त्री० ) गोफन, देलवास ।

गोवर दे० ( पु० ) गोमय, गौ का मल, गोविष्टा  
—गनेश ( पु० ) अकर्मण्य, अलस, जड़, स्थूल ।

गोवरी दे० ( स्त्री० ) गोवर का लिपाव, गोमयलेपन

गोवरौदा दे० ( पु० ) गोवर का कीड़ा ।

गोवरौदा दे० ( पु० ) गोवरौदा ।

गोभिल तत्० ( पु० ) मुनि विशेष, सामवेदी संध  
के चित्रकार, गोभिलगृह्यसूत्र नाम का कर्मकार  
ग्रन्थ इन्ही का बनाया है, इस ग्रन्थ का कर्म  
काण्ठी समाज में विशेषतः सामवेदियों में बड़ा  
आदर है ।

गोभी दे० ( स्त्री० ) कली, अड़र, नयोशावरा, गो-  
विशेष, गोजिह्वा ।

गोमका तत्० ( पु० ) कुम्हड़ा, कोहड़ा ।

गोमती तत्० ( स्त्री० ) स्वनाम प्रसिद्ध नदी विशेष  
वैदिक मन्त्र विशेष ।

गोमन्त तत्० ( पु० ) पर्यंत विशेष, एक पहाड़ का  
नाम ।

गोमय तत्० ( पु० ) [ गो + मयट् ] गोबर ।  
 गोमक्षिका तत्० ( स्त्री० ) दंश, दांश ।  
 गोमायु तत्० ( पु० ) [ गो + मा + उष् ] गृगाल,  
 सीपार, गीदड़ ।

गोमिथुन तत्० ( पु० ) दो गौ, गौ की जोड़ी ।  
 गोमुख तत्० ( पु० ) सेंध, घुरङ्ग, चोरी करने के  
 लिये एक प्रकार से मकान में बिल करना, गौ का  
 मुख, जपमाला छिपाने के लिये एक प्रकार की  
 यस्तु जो कनी यत्न से बनायी जाती है, यत्न विशेष ।  
 गोमुखी तत्० ( स्त्री० ) [ गोमुख + ई, ] हिमालय  
 पर्यंत से गङ्गाजी के गिरने के कारण गोमुख के  
 समान बना हुआ स्थान, तीर्थ विशेष, जपमाली,  
 जपमाला रखने की भोली ।

गोमूढ़ तत्० ( पु० ) गौ के समान मूर्ख, अतिशय,  
 अज्ञान, अज्ञोष ।

गोमूत्र तत्० ( पु० ) गोघृत, गौ का घृत ।  
 गोमूत्रिका तत्० ( स्त्री० ) मृणविशेष, फाव्य का  
 एक भेद, वियकाष्ठय विशेष, पद्य बनाने का एक  
 प्रकार, एक बन्ध का नाम ।

गोमेद तत्० ( पु० ) [ गो + मिद् + अल् ] पीले  
 रङ्ग का गौ के मस्तकस्थित पदार्थ विशेष ।

गोमेध तत्० ( पु० ) [ गो + मिध् + अल् ] यज्ञ-  
 विशेष ।

गौर तत्० ( पु० ) गौर वर्ण, फरसा, कवर, समाधि-  
 स्थान ।—मदायन इन्द्र धनु यथाः—  
 “धनु है यह गौरमदायन नहीं शरधार बहै गल-  
 धार बृथाही” ।

गौरक्ष तत्० ( पु० ) गधय, दूध, दही, मठा, तक्र,  
 छाछ ।

गौरक्ष तत्० ( पु० ) [ गो + रक्ष् + अल् ] गोपाल,  
 गौ रखनेवाला ।—नाथ ( पु० ) प्रसिद्ध सिद्ध और  
 धर्मप्रवर्तक, पृष्टोप १५—वीं शताब्दी में ये  
 महात्मा उत्तर पश्चिम प्रदेश में उत्पन्न हुए थे । ये  
 कबीर साहब के समकालीन थे । इनके अनेकों  
 शिष्य थे, शिष्य इनको गुरु गौरक्षनाथ या गुरु  
 गोरक्षनाथ कहते थे । इनका कहना है कि मय मे

षष्ठ संसार में योगी ही हैं । इन्होंने उदार धर्म  
 का प्रचार किया है, सभी श्रेणी के मनुष्यों को  
 ये अपने सम्प्रदाय में लेते थे । उदारवादी होने  
 के कारण राजा रङ्ग सभी इनका आदर करते थे ।  
 इन्होंने गौरक्षसंहिता नामक योग का ग्रन्थ संस्कृत  
 भाषा में लिखा है ।

गौरसदायन दे० ( पु० ) इन्द्र धनु, गौरमदायन ।  
 गौरसी तद्० ( स्त्री० ) दोहनी, दूध, दूधहड़ी ।  
 गौरा तद्० ( पु० ) गौर वर्ण, गौर, उजला, किरती  
 पण्डन के जवान, ( स्त्री० ) गौरी ।  
 गौर दे० ( पु० ) गौ, गो, वृषभ, पशु ।  
 गौरत तत्० ( पु० ) दो कौश, क्रोशद्वय ।  
 गौरोचना तत्० ( स्त्री० ) खनम एयात पीतवर्ण  
 द्रव्यविशेष, गोमस्तक स्थित शुष्कपित्त ।  
 गौल तत्० ( पु० ) वस्तुल, गोलाकार, मटका,  
 मण्डनाकार ।

गौलक तत्० ( पु० ) पति के न रहने पर जार से  
 उत्पन्न पुत्र, उपपत्ति के द्वारा उत्पन्न विधवा  
 पुत्र ।

गौलचला दे० ( पु० ) गोलन्दाज, तोप चलानेवाला ।  
 गौलमिर्च दे० ( स्त्री० ) काली मिर्च ।

गौला दे० ( पु० ) घेरा, मण्डल, गोल, वृत्त, तोप का  
 गोला, लोहे का गोलाकार पिपटा, नारियल, अन्न  
 रखने का स्थान, मण्डी, जहाँ अन्न विकता है ।

गौलाई दे० ( स्त्री० ) गौलापन ।  
 गौलाकार तत्० ( पु० ) गोलरूप, गोल ।  
 गौलाध्याय तत्० ( पु० ) ज्योतिष विद्या, ज्योतिष  
 के एक ग्रन्थ का नाम ।

गौलार तद्० ( पु० ) गौलाई, गौला ।  
 गौली दे० ( स्त्री० ) छोटा गोला, बन्दूक की गोली ।  
 —मारना ( या० ) बन्दूक चलाना, बन्दूक मारना ।  
 गौलोक तत्० ( पु० ) श्रीकृष्ण का स्थान, निरुपधाम,  
 धेकुपट ।—प्राप्ति ( स्त्री० ) यज्ञभाष्यर्ष त्री की  
 मुक्ति, गतिविशेष ।—दासी ( पु० ) भगवाद्,  
 श्रीकृष्ण, राजा ।

गौलोमा तत्० ( पु० ) चौबध विशेष, मष ।  
 गौचना दे० ( स्त्री० ) छिपाना, चुकाना, दांकना ।



**गोवर्द्धन तत्० ( पु० )** वृन्दावन के एक पर्यत का नाम, स्वनाम प्रसिद्ध पर्यत, पूजा न पाने के कारण जब इन्द्र ने व्रज को वृष्टि से नष्ट करना चाहा था, तब श्रीकृष्ण ने इसी पर्यत को उठाकर ब्रजवासियों की रक्षा की थी। इस पर्यत को श्रीकृष्ण ने अपनी कनिष्ठा अङ्गुली पर धारण किया था, यज्ञभाचार्य जी ने इसी पर्यत से श्रीनाथ जी का आयिष्कार किया था।—**धारी ( पु० )** गोवर्द्धन पर्यत को धारण करनेवाला, श्रीकृष्ण।

**गोवर्द्धनाचार्य तत्० ( पु० )** संस्कृत के कवि, गृह्णार के प्रसिद्ध आर्यासप्तशती नामक ग्रन्थ का कर्ता, अपने गीतगोविन्द में जयदेव ने इनका उल्लेख और बड़ी प्रशंसा की है। गृह्णारस की कविता लिखने में यह सिद्ध हस्त थे। इनके पिता का नाम नीलाम्बर था। उमापतिधर के समसामयिक होने के कारण १२ वीं शताब्दी का प्रारम्भ और मध्य इनका समय सिद्ध होता है।

**गोवशा तत्० ( स्त्री० )** वन्द्या गौ, यहिला गाय।

**गोविन्द तत्० ( पु० )** श्रीकृष्ण, गोअधिपति, वृहस्पति।—**ठक्कुर ( पु० )** यह मिथिलावासी संस्कृत पण्डित थे, काव्यप्रकाश की कारिकाओं की टीका इन्होंने लिखी है, जिसका नाम काव्यप्रदीप है। इनका समय अभी तक निश्चित नहीं हुआ है परन्तु अनुमान से १२-वीं सदी का अन्तिम भाग ही विद्वानों ने इनका समय सिद्ध किया है।—**राज ( पु० )** मनुस्मृति के एक टीकाकार का नाम, इन्हीं की बनायी टीका का अक्षरान्वयन कर के कुल्लूक भट्ट ने मन्वर्थमुक्तावली नाम की टीका बनायी है। इनके पिता का नाम माधव था। ग्यारहवीं सदी के अन्तिम भाग में इन्होंने मनुस्मृति का भाष्य बनाया था।

**गोशाला तत्० ( स्त्री० )** गौगृह, गाय बांधने का स्थान, गोशाल।

**गोष्ट तत्० ( पु० )** बाड़ा, गौओं के रहने का स्थान।  
—**विहार ( पु० )** गौ चराने के समय श्रीकृष्ण की केलि।

**गोष्ठी तत्० ( स्त्री० )** परिवार, सभा, कुटुम्ब, जाति।

**गोप्पद तत्० ( पु० )** गौ के रहने का स्थान, गौ के खुर प्रमाण।

**गोसद्वृत्त तत्० ( पु० )** समरी गाय व बनगौ।

**गोसाई तद्० ( पु० )** संन्यासियों का अग्र, ईश्वर, महन्त, गुण।

**गोसैया दे० ( पु० )** ईश्वर, परमेश्वर, प्रभु।

**गोस्तन तत्० ( पु० )** गौ की घन, गुच्छ, घोघ, स्तन।

**गोस्तनी तत्० ( पु० )** द्राक्षा, दाख, अङ्गूर।

**गोस्थान तत्० ( पु० )** [ गौ + स्था + अन्त ] गौष्ठ, गौठ, गोकुल।

**गोस्वामी तत्० ( पु० )** गोपति, गौरक्षक, यज्ञभाचार्य के श्रेणीय।

**गोह दे० ( पु० )** विद्वल्लोपरा, गोधा, विषलपर।

**गोहत्या तत्० ( स्त्री० )** गोवध, गोहिंसा।

**गोहरी दे० ( स्त्री० )** उपरी, कण्डा।

**गोहार दे० ( पु० )** हुल्लड़, शैला, गुल गवाड़, सहाय, सहायताय आह्वान।

**गौहं दे० ( पु० )** गेहूँ, गोधूम।

**गौह्वन दे० ( पु० )** सर्व विशेष, लाल रङ्ग का सौँव।

**गौ दे० ( स्त्री० )** दाघ, सुभीता, अवसट, गैका।

**गौ दे० ( स्त्री० )** गाय, गौ, गैवा, घेनु।

**गौख दे० ( पु० )** गधाच, छिड़की।

**गौखा दे० ( स्त्री० )** ताक, आला, दिअरखा।

**गौछई दे० ( स्त्री० )** अङ्कूर, कैन, फुतगी।

**गौड तत्० ( पु० )** स्वनाम ख्यात देश, यद्वा ल पूर्व भाग, गौड देश का वासी, कायस्थ विशेष, दशविध ब्राह्मणों के अन्तर्गत एक ब्राह्मण।

**गौडा दे० ( पु० )** उड़ीसा, कहार।

**गौडिया दे० ( पु० )** गौड़ देश के वासी।

**गौडी तत्० ( स्त्री० )** गुड़ की मदिरा, रागविशेष काव्यरति विशेष।

**गौण तत्० ( पु० )** अप्रधान, अधीन, गौणीवृत्ति के द्वारा वाधित अर्थ।—**काल ( पु० )** अप्रधान काल।

**गौणी तत्० ( स्त्री० )** अस्सी प्रकार की लक्षणाओं के अन्तर्गत एक लक्षण का नाम।

गौतम तत्० (५०) बुद्ध देव का दूसरा नाम, ये कपिल वस्तु के राजा बुद्धोदन के पुत्र थे। इनकी माता का नाम माया देवी था। ये अपनी माता की ४५ वर्ष की अवस्था में उत्पन्न हुए थे, इनके जन्म के ७ दिन के बाद इनकी माता परलोक गमिनी हुईं। यह अपनी माता के एक मात्र पुत्र थे। ये स्वभाव से ही दयालु थे, संसार के दुःखों से उद्दिग्ण होकर इन्होंने राज्य छोड़ दिया और वन चले गये। पीछे वेही बुद्ध नाम से प्रसिद्ध हुए।

(२) गौत्र प्रवर्तक भारद्वाज मुनि का नामान्तर, ये महर्षि गौतम के पुत्र थे।

(३) कृपाचार्य का नामान्तर, ये गौतमगौत्रीय शरद्धान्त के पुत्र थे। इसी कारण इनका गौतम नाम पड़ा था।

गौना दे० (५०) द्विरागमन, बधू प्रवेश, पति के घर प्रथमवार आगमन।

गौनहार दे० (५०) गौने के बराती, बधूप्रवेश में दुसरे के साथ जानेवाले।

गौर तत्० (५०) गौर, युक्त वर्ष, सुन्दर।

गौरव तत्० (५०) [गुरु + पयञ्] गुरुता, प्रभाव, मर्यादा गुरुत्व, भार, आदर, सम्मान, पूज्यबुद्धि, प्रतिष्ठा।

—जनक (५०) मर्यादा जनक, सम्मान सूचक,

—ान्वित (५०) प्रतिष्ठित, मान्य, गौरव युक्त, पूज्य, मान्य।

गौरा तद्० (स्त्री०) पार्वती, दुर्गा, पक्षिविशेष।

गौराङ्ग तत्० (५०) श्वेतवर्ण, सुन्दर, पीतवर्ण, सुतोषियन।

गौरिका तत्० (स्त्री०) [गौरी + इक् + ञ्] चाटवर्ण की कन्या।

गौरिया दे० (स्त्री०) चटक, गौरा, मिट्टी का ढुङ्गा।

गौरिला तत्० (स्त्री०) पृथ्वी, धरणी, धरती।

गौरी तत्० (स्त्री०) [गौर + ई] पार्वती, अष्टवर्षीया कन्या, हरदी, दाक्षहरदी, गो रोचना, प्रियङ्गु वृक्ष पृथ्वी, नदी विशेष, वरुण की स्त्री, बुद्ध की एक शक्ति का नाम, श्वेतवर्णा, रागिनी विशेष, मालव राग की पत्नी, जटामांसी।—पति (५०) शिव, महादेव।—पुत्र (५०) कार्तिकेय, गणेश।

गौरीश तत्० (म०) (५०) शिव, महादेव, भवानीपति।  
गौशाला तद्० (स्त्री०) गीर्णों के रहने का स्थान, या घर।

ग्यारस दे० (स्त्री०) एकादशी तिथि, व्रतविशेष।

ग्यारह दे० (५०) एकादश संख्या, दश और एक, ११।

ग्रथित तत्० (५०) [ग्रथ + क्त,] कृतग्रथन, गुथा हुआ, पिरोया हुआ।

ग्रन्थ तत्० (५०) प्रबन्ध, शास्त्र, पुस्तक, सिक्कों की धर्मपुस्तक का नाम, अतुष्टुपुस्तक, प्रलोक,।

—कर्ता (५०) [ग्रन्थ + कृ + मृण्,] ग्रन्थकारक, निबन्धकारक, शास्त्रकर्ता,।—कार (५०) [ग्रन्थ + कृ + षण्,] ग्रन्थकारक, ग्रन्थकर्ता।

ग्रन्थक तत्० (५०) [ग्रन्थ + क्त] निर्माण कर्ता, नियन्धकार, रचयिता, माला का सूत्र।

ग्रन्थन तत्० (५०) ग्रन्थ + ञनट्, गुणकन, ग्रथित करण, गांथन, रचन, निर्माण।

ग्रन्थि तत्० (स्त्री०) [ग्रन्थ + ई,] वीर चादि की गिरह, गांठ।

ग्रन्थिक तत्० (५०) दैवज्ञ, गणक, सहदेव नामक पाण्डव, वीरपामूल।

ग्रन्थित तत्० (५०) [ग्रन्थ + इत,] ग्रथित, गांथा हुआ, रचित, निर्मित।

ग्रन्थिमान् तत्० (५०) [ग्रन्थि + मत्] हरसिंगार, जड़, जोड़, वह श्लेषधि जिमसे टूटी हठी जुड़ जाती है।

ग्रन्थिल तत्० (५०) वीरपामूल, अदारव, आदी, कांकरई वृक्ष, करील।

ग्रसन तत्० (५०) [ग्रस् + ञनट्] भक्षण, खादन, निगलना, आक्रमण।

ग्रस्त तत्० (५०) [ग्रस् + क्त] युक्त, खादित, आच्छादित, आक्रान्त, राहु ग्राम, शुभ वर्षण्यद, घमस्त्रुयं वायु, गृहीत, छाया गया।—।—स्त (५०) चन्द्र सूर्य का ग्रहण के अनन्तर घस्त होना।—उद्य (५०) [ग्रस्त + उद्य] राहु ग्रस्त सूर्य और चन्द्र का उद्य।

ग्रह तत्० (५०) [ग्रह + षत्] सूर्य आदि नवग्रह, अनुग्रह, निर्ग्रन्थ, चाग्रह, हठ, अज्यवसाय।

—कह्लोल (पु०) आठवां ग्रह, राहू ।

ग्रहण तत्० (पु०) [ग्रह + अणट्] स्वीकार लेना, उपलब्धि, प्राप्ति, धन्द्र और सूर्य का उवराग, ग्रहण ।—अन्त (पु०) ग्रहण की समाप्ति, मोक्ष, उग्रह ।

ग्रहस्थापन तत्० (पु०) नवग्रहों की स्थापना, पूजा विशेष ।

ग्रहणी तत्० (स्त्री०) अतिघार रोग, संग्रहणी रोग ।

ग्रहणीय तत्० (पु०) [ग्रह + अनीय] ग्रहण करने योग्य, ग्राह्य ।

ग्रहीता तत्० (पु०) ग्रहणकर्ता, ग्राहक, ग्राहक ।

ग्राम तत्० (पु०) समूह, मनुष्यों का समूह, गांव, बस्ती, पुरवा, खेड़ा, यथा—

गिरि ग्राम लै लै हरि ग्राम मारै,

मनौ पद्मानीपत्र दन्ती विदारै ।

—रामचन्द्रिका ।

—कुफुट (पु०) पोसा मुर्गा ।—फूट (पु०)

यूद्ध जाति ।—गृह्य (पु०) गांव का बाहर ।

—तक्षा (पु०) गांव का बड़ई ।—याजक (पु०)

गांव के पुरोहित ।—वासी (पु०) गांव का रहने वाला ।

ग्रामणी तत्० (पु०) ग्राम के मुखिया, (पु०) ग्रामाधिपति, गांव के स्वामी, विष्णु, मण्डल, नापित, यक्ष (स्त्री०) देवता ।

ग्रामिक तत्० (पु०) ग्राम्य, दिहाती, गवहया ।

ग्रामीण तत्० (पु०) [ग्राम + ण] ग्राम में उत्पन्न, गधार, गवहयां (पु०) गांव का सूकर, कूपुर आदि ।

ग्रामपञ्च तत्० (पु०) गांव के भगड़े मिटाने वाले, गाँव के मुखिया ।

ग्रामेश तत्० (पु०) [ग्राम + ईश] गांव का मातृक ।

ग्राम्य तत्० (पु०) [ग्राम + य] ग्राम सम्बन्धी, ग्राम जात, सूर्य, गधार, छल कपट रहित ।

—देवता (पु०) ग्रामरक्षक देवता ।

ग्राव तत्० (पु०) पर्यंत, पत्थर, दूढ़, सक्त ।

ग्रास तत्० (पु०) [ग्रस + घञ्] कवल, कौर ।

—आच्छादन (पु०) अन्न वस्त्र, रोटी कपड़ा ।

ग्रासक तत्० (पु०) भक्षक, खादक, घेरेवाला, रोकने वाला ।

ग्रासना तद् (क्रि०) रोकना, घेरना, विंधना ।

ग्राह तत्० (पु०) [ग्रह + घञ्] ग्रहण, जल जन्तु विशेष, सूँघ, जलहाथी ।

ग्राहक तत्० (पु०) ग्रहण करनेवाला, ग्राहक, ह्याल-ग्राही, सवेरा ।—ता (स्त्री०) लोभ, ग्रहण करने की अभिलाषा ।

ग्राही तत्० (पु०) [ग्रह + णिङ्] मल रोधक, धारक, ग्रहण कर्ता ।

ग्राह्य तत्० (पु०) [ग्रह + घ्यण्] ग्रहण के योग्य, मनोनीत, अभिलषित ।

ग्रीषा तत्० (स्त्री०) गला, गरदन, कपठ, गले के पीछे का भाग ।—भरण (पु०) कपठ भक्षण, कपटा ।

ग्रीष्म तत्० (पु०) ऋतुविशेष, ऋतुओं के अन्तर्गत एक ऋतु का नाम, उष्ण, निदाघ, गरमी के दिन ।

—काल (पु०) निदाघ, उष्णकाल ।

ग्रीष्य तत्० (पु०) [ग्रीषा + ङक्] कपठभक्षण, गले का गहना ।

ग्लपित तत्० (पु०) [ग्लप् + क्त] अवसन्न, धक्ति, श्रान्त ।

ग्लह तत्० (पु०) जुष्ट की वाजी, पण ।

ग्लान तत्० (पु०) [ग्लै + क्त] रोग द्वारा दुर्बल शरीर, रोगी, खिन्न ।

ग्लानि तत्० (स्त्री०) [ग्ल + क्त] श्रान्ति, निन्दा, मानमी हथ्या, मन की थकावट ।

ग्वाला दे० (पु०) अहीर, गोपाल, गोप ।

ग्वालिन दे० (स्त्री०) अहिरिन, गोपी ।

ग्वैडा दे० (अ) समीप, निकट, आस पास, नगर के समीप ।

ग्वैडे दे० (पु०) पास, समीप, निकट ।

ग्लौ तत्० (पु०) चन्द्रमा, शशि, विष्णु, कपूर ।

घ तत्० (घ०) घण्टा, घर्जर शब्द, मेघ, धूप ।  
 घंघोरना दे० (क्रि०) मलिन करना, कपुयित करना, कहराना ।  
 घञ्च दे० (घ०) गला, कण्ठ, नरेंदी, ग्रीवा ।  
 घघरा दे० (स्त्री०) लहंगा, साया, चपहाताक, स्त्रियों के पहनने का एक वस्त्र ।  
 घचाघञ्च दे० (घा०) ठसाठस, अत्यन्त सङ्कीर्णता, लवालव भरा ।  
 घट तत्० (घ०) कलस, कुम्भ, गगरी, घड़ा, परिमाण विशेष देह, मन ।—ज (घ०) कुम्भज क्षयि, अगस्त्य-मुनि ।—दासी (स्त्री०) कुटनी, दूती, सद्गम-कारिणी ।—योनि (घ०) अगस्त्यमुनि, कुम्भज ।  
 घटक तत्० (घ०) योजक, योजनकारी, कुटना, दूत, मन्त्र्य, विचक्षेया, विचयनिया ।—ता (स्त्री०) योजकता, दैत्य, कुटनापन ।  
 घटकपर् दे० (घ०) राजा विक्रमादित्य की सभा के एक सभासद पण्डित, इनकी बनायी एक छोटी सी पुस्तिका है, जिसका नाम घटकपर् है, इसके अतिरिक्त नीतिशास्त्र नामक एक और भी ग्रन्थ इनका बनाया है । घटकपर् काश्य बनाकर इन्होंने अपनी यमकप्रियता का परिचय देना चाहा है, घटकपर् के समान एक राक्षस काश्य भी यमकप्रधान है । सम्भव है वह भी इन्हीं प्रकाशक पण्डित का बनाया हो । विक्रमादित्य के समकालीन होने से इनका समय भी इतना ही माना जाता है ।  
 घटती तद्० (स्त्री०) कमी, न्यूनता, अल्पता ।  
 घटना तद्० (स्त्री०) योजन, मिलन, संघट्टाकरण, अकस्मात्, प्रायण, कार्य, अद्भुत कर्म, विलक्षण दृश्य, दे० कम, न्यून ।  
 घटनीय तद्० (घ०) [ घटन + अनीय ] योजनीय, सम्भाष्य, घटने योग्य, होने योग्य ।  
 घटन्त दे० (स्त्री०) ह्रास, हीनता, उतार, अल्पता, न्यूनता ।

घटय दे० (घ०) कम होना, चोण होना, न्यून होना, निर्माण करना ।  
 घटवार दे० (घ०) घाट वाला, जो नदी के पार उतारने का काम करता है ।  
 घटहा दे० (घ०) नौका, नदी के इस पार उस पार जाने वाली नियत नाव, अथवाभी, दोषी ।  
 घटा दे० (स्त्री०) मेघ, बादल, मिर्चों का उभड़ना, भीड़ । (घ०) कम हुआ, घट गया, न्यून हुआ ।  
 घटाटोप तत्० (घ०) [ घट + आटोप ] आँहार, पालकी का आच्छादन, पर्दा, जयनिका, दम्भ, अभिमान ।  
 घटाना दे० (क्रि०) कम करना, न्यून करना ।  
 घटाय दे० (घ०) उतार, कमती, न्यूनता ।  
 घटिका तद्० (स्त्री०) घड़ी, सुहूर्त, दण्ड, गुल्फ, एड़ी के उपर का भाग ।  
 घटित तद्० (घ०) [ घट + इत ] मिश्रित, योजित, संयुक्त ।  
 घटिया दे० (घ०) निकृष्ट, अधम, अल्प मूल्य की वस्तु ।  
 घटी तद्० (स्त्री०) [ घट + ई ] दण्ड, घड़ी, लुद्र घट ।  
 —कार (घ०) घड़ी बनाने वाला, घड़ीसाज़, कुम्हार ।—यन्त्र (घ०) समय सूचक यन्त्र, घड़ी, जस निकालने का यन्त्र, दे० हानि, घाटा, टोटा ।  
 घटोत्कच तद्० (घ०) राक्षस विषेय, हिडिम्बा राक्षसी का पुत्र, द्वितीय पाण्डव भीम के औरस में और हिडिम्बा के गर्भ से यह उत्पन्न हुआ था । महाभारत के रथचेंद्र में इसने पाण्डवों की ओर से युद्ध किया था । कर्ण ने अर्जुन का वध करने के लिये जो शक्ति रक्षित की थी, उसी शक्ति से इने कर्ण का मारना पड़ा, दूसरी गति ही नहीं थी । क्योंकि इसके पराक्रमानल में कौरव सेना दग्ध हो रही थी । यदि कर्ण उस शक्ति का काम में न लाते, तो समस्त कौरव सेना नष्ट भ्रष्ट हो जाती । परन्तु इससे अर्जुन दुर्जेय हो गये और

कर्ण को भी उसी समय यह निश्चय हो गया कि मैं अर्जुन के द्वारा श्वशुर ही मारा जाऊंगा ।

घटोत्कर्ण तत्० (पु०) शिव के एक अनुचर का नाम, यह मङ्गल का पत्र था, इसकी माता का नाम मेधा था । इसका दूसरा नाम घटेश्वर था । शाप के कारण मनुष्ययोनि में इसे उत्पन्न होना पड़ा था, उज्जयिनी नगरी में इसका जन्म हुआ । विक्रमादित्य के नवरत्नों को परास्त करने की इच्छा से इसने तपस्या की थी, परन्तु कालिदास के अतिरिक्त अन्यरत्नों को जीतने का इसे धर मिला ।

(२) हरिवंश में लिखा है कि घटोत्कर्ण विष्णुद्वैपी एक राजस था, हरि का नाम न सुन पड़े इसके लिये यह सर्वदा कानों में घण्टा बांध कर बजाया करता था । शिवजी की आज्ञा से बदरिकाश्रम में जाकर हरि रूपी श्रीकृष्ण की इसने स्तुति की और मुक्त हुआ ।

घट्ट तत्० (पु०) घाट, नदी का या तालाब का किनारा, स्नान करने का स्थान ।

घट्टा दे० (पु०) गिलटी, काम करने से चाम का मोटा पैना ।

घड़घड़ाना दे० (क्रि०) गरजना, तड़कना, घड़ घड़ करना ।

घड़त दे० (स्त्री०) बनावट, मांचा, आकृति, डील ।

घड़ना दे० (क्रि०) गड़ना, बनाना, निर्माण करना ।

घड़ा तद्० (पु०) गगरा, कलस, घट ।

घरिया दे० (स्त्री०) कुल्हिया, पुरवा, मिट्टी का छोटा घरतन ।

घड़ियाल दे० (पु०) मगर, नक्र, जलजन्तु विशेष, घण्टा, वाद्य विशेष ।

घड़ियाली दे० (पु०) घण्टा, बनाने और बनाने वाला ।

घड़ी दे० (स्त्री०) समय का परिमाण, साठ पल, समय बतातेवाला यन्त्र ।—मैं तोला घड़ी में माशा (घा०) अश्वस्थितचित्त, जिसका चित्त चण चण बढ़ता रहे ।

घड़ोंचा दे० (पु०) तिपाई ।

घण्टा दे० (पु०) घड़ी, वाद्य विशेष, कांस्यनिर्मित, वाद्यविशेष, चड़ी, घड़ियाल ।—पथ (पु०) गांव का प्रधान मार्ग ।—शब्द (पु०) घण्टा का शब्द, समय सूचक ध्वनि ।

घण्टालि तद्० (स्त्री०) छोटा घण्टा, वृच विशेष, फोसातकी ।

घण्टिका तत्० (स्त्री०) तालु के ऊपर की छोटी जीभ, छोटी, लोला ।

घण्टी दे० (स्त्री०) लुटिया, छोटा घण्टा ।

घण्टू दे० (पु०) हाथी का घण्टा, प्रताप, उनाप, घण्टामाला ।

घण्टेश्वर तत्० (पु०) देवता विशेष, शिव का पण, घटोत्कर्ण, मङ्गल का पुत्र ।

घतिया तद्० (पु०) घातक, नृशंस, क्रूरकर्मा, हत्यारा ।

घन तत्० (पु०) तरलता रहित, गाढ़, सान्द्र, निविड,

अविरल, मेघ, बादल, ठोस, घोड़ा, दृढ़, मोटा,

अधिक, सजातीय, तीन अङ्कों का पूरण करना,

गणित विशेष, हथौड़ा, निहाई ।—काल (पु०)

धर्याकृतु ।—गोलक (पु०) सेना और सौदा

का मिलान ।—गरज (पु०) मेघ शब्द, मेघ

गर्जन ।—घन (पु०) सर्वदा, सदा ।—घनान

(क्रि०) घन घन शब्द करना ।—घेरा (पु०)

घघरा, सहंगा ।—घोर (पु०) गम्भीर मेघ

—उचाला (स्त्री०) विद्यत् विजुली ।—त

(स्त्री०) गाढ़ता, निविडता ।—ध्वनि (पु०)

मेघगर्जन, मेघशब्द ।—निहार (पु०) सुधारारि

अधिक सुधार ।—नाद (पु०) मेघ का शब्द

मेघनाद रावण का पुत्र इन्द्रजिह्वा ।—पदक

(स्त्री०) आकाश, अन्तरिक्ष, व्योम, नभ ।—फ

(पु०) अङ्क विद्या विशेष, गणित विशेष

—मूल (पु०) पूरण करने योग्य स्वजातीय ती

अङ्कों का मूल अङ्क ।—रस (पु०) सघन, गों

अवलेह, सम्यक् पकाया रस ।—श्याम (पु०)

अधिक कृष्ण वर्ण, मेघ के सदृश काला, श्री कृष्ण

—समय (पु०) धर्या कृतु ।—सार (पु०)

ऊपर, पारद विशेष ।

घना दे० ( गु० ) गहरा, सघन, बहुत देर, अधिक, प्रचुर ।

घनासन दे० ( पु० ) मैसा, महिष ।

घनाहु तत्० ( पु० ) [ घन + आहु ] औषध विशेष, नागरमोषा ।

घनेरा दे० ( गु० ) बहुत से बहुत, अधिक, (बहु व०) चनेरे ( ख० ) चनेरी ।

घपची दे० ( खी० ) लिपट, दो हाथ की चिपट ।

घवराना दे० ( क्रि० ) अवाकुल होना, हड़बड़ाना, उद्विग्न होना ।

घवराहट दे० ( खी० ) दुःख, क्लेश, उद्वेग, अवाकुलता ।

घवरी दे० ( खी० ) गुब्बा, स्तम्बक ।

घमण्ड दे० ( पु० ) दर्प, अभिमान, अहङ्कार, गर्व ।

घमण्डी दे० ( गु० ) अहङ्कारी, अभिमानी, दाम्भिक ।

घमरील दे० ( खी० ) रोला, कोलाहल, भीड़भाड़ ।

घमस दे० ( खी० ) निर्वात, वायु रहित, गुम्मत ।

घमसान दे० ( पु० ) भयङ्कर, घोर, भयानक, लहार्द, युद्ध ।

घमाघम दे० ( गु० ) कनाकच, घमघम शब्द, आघात का शब्द, अधिक धूप, धूप ही धूप ।

घमाना दे० ( क्रि० ) धूप में बैठना, धूप दिखाना, तापना ।

घमासान दे० ( पु० ) घोर, भयङ्कर, युद्ध ।

घंमोरी दे० ( खी० ) अम्मोरे, अंधोरी ।

घर तद्० ( पु० ) गृह, मकान, वासस्थान ।—घालना

( क्रि० ) गृह में रखलेना, उपपत्नी करना, गृह नाश करना ।—खलाना ( वा० ) गृह का प्रग्रन्थ करना, घर का खर्चवर्ष चलाना ।—जाना ( वा० )

घर पर किसी आपत्ति का पड़ना, उजड़ना, बिगड़ना ।—डुयीना ( वा० ) घर में कलह उत्पन्न करना, अन्य का या अपनी घर नष्ट करना ।

—डूचना ( वा० ) नाश होना, घर का नाश होना ।

—बैठना ( वा० ) निकम्मा बैठना, काम काज न करना, घर का टूटना ।—बैठ जाना ( वा० ) निश्चिन्त होना, काम न रहने से घर बैठ जाना, घर का टूटना, विनष्ट होना ।—होना ( वा० )

खी पुरुष में आपस का प्रणय होना ।

घरऊ दे० ( गु० ) घरेला चकवा, घर संबन्धी, घर का ।

घरनई दे० ( खी० ) चौघड़ा, बेड़ा, घर, बाड़ा बनाना ।

घरना दे० ( क्रि० ) गड़ना, बनाना, घर्षण करना, घिसना ।

घरनी दे० ( खी० ) खी, भार्या, पत्नी ।

घरघराव दे० ( पु० ) घर का अटाला ।

घरवार दे० ( पु० ) घराना, कुटुम्ब, परिवार ।

घरवारी दे० ( गु० ) गृहस्थी, कुटुम्बी ।

घररा दे० ( पु० ) गरागराहट, दुःख, पीड़ा ।

घरराटा दे० ( पु० ) पुनिविशेष, नासिका-ध्वनि ।

घरवाला दे० ( पु० ) गृहो, गृहस्थी, गृहस्वामी ।

घराना दे० ( पु० ) कुटुम्ब, घर के लोग, परिवार वर्ग ।

घरामी दे० ( पु० ) छवैया, घर छाने वाला ।

घरिक दे० ( घ० ) एक घड़ी, घड़ी भर, घोड़ी देर ।

घरी दे० ( खी० ) तह, चुन्नट, तहलगई, एक नियत समय, घड़ी ।

घरेला दे० ( गु० ) घर का पोसा, घर में उत्पन्न, घर सम्बन्धी, घर का ।

घरौंदा दे० ( पु० ) खेल के लिये लड़कों का बनाया घर, षोटा घर ।

घर्घर तत्० ( पु० ) शब्द विशेष, गूकर का शब्द, चक्की का शब्द ।

घर्घरा दे० ( खी० ) घाघरा, एक नदी का नाम, सरयू ।

घर्म तत्० ( पु० ) घाम, धूप, गरमी, अमवारि, स्वेद, पसीना ।—घुति ( पु० ) दियाकर, सूर्य ।—घिन्दु ( पु० ) स्वेदघिन्दु, स्वेदकणिका, पसीना ।—कि ( पु० ) पसीना में भींगा, स्वेद से लदफद ।

घर्षण तत्० ( पु० ) [ घृष्ट + घनट्, ] मार्जन, महुँन, घिसना ।

घर्षित तत्० ( पु० ) [ घृष्ट + क ] घृष्ट, घिसा हुआ ।

घलुवा दे० ( पु० ) सैत, बिनादाम का, खरीदार को दूकानदार से लेता है, छक ।

घसना दे० ( क्रि० ) घर्षण करना, रगड़ना ।

घसियारा दे० ( पु० ) घास काटने वाला मजदूर ।



घालित दे० ( गु० ) मारा हुआ, नष्ट किया हुआ, उजाड़ा हुआ ।

घाली दे० ( क्रि० ) डाल दी, फेंक दी, मार दी, ये शब्द रामायण में प्रयुक्त हुए हैं, युद्धक्षेत्र में लड़ने का भावा में इनका विशेषतः प्रयोग होता है ।

घाघ दे० ( पु० ) चोट, आघात, खत, क्षत ।

घास दे० ( पु० ) तृण, खर, फूस, पशुओं के खाने का तृण ।

घासी घासू दे० ( गु० ) घास वाला, घसियारा, घास बँच कर पेट पालने वाला ।

घिंधाना दे० ( क्रि० ) स्वरभङ्ग होना, अस्फुट शब्द बोलना, शब्द का विकार होना ।

घिंधियाना दे० ( क्रि० ) लड़खड़ाना, फुसलाना, आक्रान्तन करना, चिह्नाना, लड़ोचण्यो करना, अनुनय विनय करना ।

घिंधो बंधजाना दे० ( क्रि० ) अस्फुट बोलना, भय और लज्जा से शब्द न निकलना ।

घिचपिच दे० ( अ० ) घना, सघन, पास पास, भीड़ भाड़, भीड़ भड़का ।

घिन तद् दे० ( स्त्री० ) घृणा, घिनान, अरुचि, ग्लानि, अयत्ना, योभत्स ।

घिनाना तद् दे० ( क्रि० ) कुड़ना, घृणा करना, घिड़ना, अरुचि होना ।

घिनौना दे० ( गु० ) घृणाकार, अरोचक, घृणाजनक ।

घिया दे० ( स्त्री० ) घिया तुरई, एक तरकारी का नाम ।

घिरना दे० ( क्रि० ) घिर जाना, घेरे में आना, रुकना, रुकाव जाना, परवश होना, मेघों का उमड़ना ।

घिरनी दे० ( स्त्री० ) गरारी, कुए में जल निकालने की चरखी ।—खाना घूम जाना, चक्कर खाना ।

घिराना दे० ( क्रि० ) घेरा करवाना, ब्रेड़ा बनाना, हृदयन्दी करना ।

घिसना दे० ( क्रि० ) रगड़ना, खियाना, मर्दना, मलना ।

घिसाव दे० ( पु० ) रगड़, घर्षण ।

घिसावट दे० ( स्त्री० ) रगड़, रगड़ाहट ।

घिसियाना दे० ( क्रि० ) घसीटना, घर्षण ।

घी तद् दे० ( पु० ) घृत, घीव, श्राय्य, सर्पि ।

घीकुवार तद् दे० ( स्त्री० ) घृतकुमारी, घीगवार, घीपथ विशेष, एक पौधे का नाम ।

घुङ्गीना दे० ( पु० ) कुनकुना, घुनघुना, एक तिलौने का नाम ।

घुटना दे० ( पु० ) टेवना, टेहुना, गोड़, जासु, मांस रुकना ।

घुटनी चलना दे० ( वा० ) टेहुने में चलना जैसे बालक चलते हैं ।

घुटाई दे० ( स्त्री० ) चिकनाहट, सफाई, गद्दाई, उत्तमता ।

घुटाना दे० ( क्रि० ) मुड़ाना, चौर कराना, चिकना करना, साफ करना ।

घुड दे० ( पु० ) घोड़ा, चोटक, अश्व, हय ।—चढ़ा ( गु० ) घोड़े पर चढ़ने वाला, सवार, चाबुक मगार ।—दौड़ ( स्त्री० ) घोड़ों को दौड़ाना, बाजों रख कर घोड़ा दौड़ाना ।—घहल ( स्त्री० ) घोड़ों का रथ, चार पहिये का रथ, घोड़ा गाड़ी ।—घुई ( गु० ) घोड़े के समान मुँह यात्रा, किरा करे, —साल ( पु० ) तबेला, अन्तर्गत, घोड़ों का रथ का स्थान ।—सना ( गु० ) घुना देना ।

घुड़कना दे० ( क्रि० ) देना, रोष जमाना ।

घुड़की दे० ( स्त्री० ) स्कार ।

घुखा तद् दे० ( पु० ) [ घुण + चक्षर चलने से जो बिना प्रयत्न प्राप्त ।

घुण्डी दे० ।

घुन तद् दे० ( पु० )

घुना तद् दे० ( पु० ) खोजना,



घुनिया दे० (घु०) घुना, कपटी ।  
 घुप दे० (घु०) अन्धकार, अंधियारा ।  
 घुमघुमा दे० (घु०) घुमाव, टालना, फिर फिर  
 वहीं ।  
 घुमघुमाना दे० (क्रि०) घुमाना, फिराना, बात  
 फेरना, बात उलटन ।  
 घुमण्ड दे० (स्त्री०) मेघों का घिर आना, दुर्दिन  
 होना ।  
 घुमरी दे० (स्त्री०) तिमिरी, चक्कर, घुनों, एक रोग,  
 मूर्च्छा ।  
 घुमाना दे० (क्रि०) फिराना, बहकाना, धोखा देने  
 रहना, टहलाना ।  
 घुरकना दे० (क्रि०) घुड़कना, धमकाना, दबाना ।  
 घुरकी दे० (स्त्री०) धमकी, फिड़की, घुड़की ।  
 घुरघुरा दे० (घु०) कीट विशेष, एक प्रकार का रोग,  
 गलगण्ड का भेद ।  
 घुरनाना दे० (क्रि०) पराटा, मारना, नाक का  
 खरखर शब्द ।  
 घुरनी दे० (स्त्री०) घुमरी, तिरमरी, चक्कर ।  
 घुरका तद्० (घु०) भीमसेन का एक पुत्र, ( घटोत्कच  
 देखो ) ।  
 घुलना दे० (क्रि०) गलना, पकना, पिघलना,  
 सहना ।  
 घुलमिल दे० मिल गया, घुल गया, पक गया ।  
 घुलाऊ दे० (घु०) पिघलाऊ, गलाऊ, सहने योग्य ।  
 घुलाना दे० (क्रि०) पिघलाना, गलाना, सडाना,  
 नरम करना, पकाना ।  
 घुलावट दे० (स्त्री०) पिघलावट ।  
 घुघा दे० (घु०) सेमर की छर्द ।  
 घुसना दे० (क्रि०) पैठना, प्रविष्ट होना, भीतर  
 जाना ।  
 घुसपैठ दे० (घु०) आना जाना, पहुँच, पैसार,  
 प्रवेश ।  
 घुसाना दे० (क्रि०) पैठाना, घुसेडना, डागना,  
 गाडना, लगाना ।  
 घुसेडना दे० (क्रि०) ठोसना, पैठाना,  
 जोसना ।

घुस्की दे० (स्त्री०) कुलटा, दुराचारिणी, अक्रि-  
 चारिणी स्त्री ।  
 घुसण तद्० (घु०) गन्ध द्रव्य विशेष, कुङ्कुम ।  
 घूघू दे० (घु०) पक्षि विशेष, पण्डुक, पेचापेवक ।  
 घूङ्गनी दे० (स्त्री०) उसना चावल, तला चना ।  
 घूङ्गर दे० (घु०) लहराया वाल, अङ्गरिया वाल, फूँ  
 हुए वाल, लचड़ेदार वाल घुघराने वाल ।  
 घूङ्गची दे० (स्त्री०) लाल रत्नी, इसकी मासा शीघ्र  
 को बड़ी प्रिय है ।  
 घूघट दे० (घु०) छिये की ओढ़नी, लाज काठना ।  
 घूँघरू दे० (घु०) पैर का एक गहना जो छुमछुम शब्द  
 करने के लिये नाचने के समय पहना जाता है ।  
 घूँट दे० (घु०) एक बार में पीने योग्य पानी आदि,  
 यथा:—एक घूँट पीलो, मैं छूँन का घूँट पीका  
 रह गया ।  
 घूँटना दे० (क्रि०) निगलना, घूटना, लील जाना  
 पेट में करना ।  
 घूँटी दे० (स्त्री०) छोटा घूँट, बालको के ओषध दे  
 की मासा, बालकों की औषधि ।  
 घूँस दे० (घु०) सूँसा, बूँहा, मुथिर, रिशवत ।  
 घूँन दे० (घु०) द्वेष, विरोध, द्रोह, अनवनाव, खटपट  
 भगडा ।  
 घूना दे० (घु०) कपटी, द्रोही, छली ।  
 घूम दे० (घु०) घुमाव, घेर, फेर ।  
 घूम दे० (वा०) घूमाला घेरा, बाड़ा, बेड़ा, चक्करदार ।  
 घूमना दे० (क्रि०) टहलना, फिरना, लुडकना,  
 उद्योग करना ।  
 घूर दे० (घु०) ताक, देख, निहार, कूड़ा, कतवार ।  
 घूरची दे० (स्त्री०) उलफेडा, फसाव, उलफन ।  
 घूरना दे० (क्रि०) ताकना, देखना, क्रोध से बर्त  
 दिखाना ।  
 घूरा दे० (घु०) घूर, कूडा, कतवार ।  
 घूरिया दे० (घु०) घूरा, कूडा ।  
 घूर्णन तद्० (घु०) [ घृण + घनट् ] भ्रमण,  
 के समान घूमना भ्रम, भ्रान्ति, घेरा, ।  
 घूर्णित .. + क्त ] भ्रमित, ।  
 गया ।

धूस दे० ( पु० ) बड़ा सूसा, धूस, रिययत, उत्क्रोव ।  
 धूसत दे० ( पु० ) उल्लू का वचन ।  
 धूसी दे० ( पु० ) घण्टा, मुक्की, मुक्का ।  
 धूसी तत्० ( स्त्री० ) सुगुप्ता, अत्यन्त श्वहेला,  
 श्वशवा, धिन, ग्लानि ।—हँ ( पु० ) गर्हित, कुत्सित  
 धूणा के योग्य ।—रूपद ( पु० ) घृणाकर, चिनीता,  
 कुत्सित, निन्दित ।  
 धूणित तत्० ( पु० ) [ धूण + क्त ] अग्रहान्वित,  
 अग्रजात, निन्दित, कुत्सित ।  
 धूप तत्० ( पु० ) [ धृष् + य्, ] गर्श, गर्शण्य,  
 तिरस्कार के योग्य ।  
 धूप तत्० ( पु० ) [ धृ + क्त ] घोष, धो ।—कुमारी  
 धूपी ( स्त्री० ) धोकुधारी ।—क्त ( पु० ) घृत सिद्धित,  
 घृत में डुबोया ।  
 धूपी तत्० ( स्त्री० ) स्वर्ग को एक अष्टरा का  
 नाम ।  
 धूपी तत्० ( पु० ) [ धृष् + क्त ] धर्षित, धिसा  
 हुआ ।  
 धूपी तत्० ( पु० ) [ धृष् + ति ] धिसना, मारना,  
 धूपक, धूपक ( स्त्री० ) विष्णुकान्ता नाम को  
 धोपधि ।  
 धूपी दे० ( पु० ) धूपक का वचन ।  
 धूपी दे० ( पु० ) गलगण्ड रोग, धेपुष्पा ।  
 धूपी दे० ( पु० ) ज्वरीविषय ।  
 धूपी दे० ( स्त्री० ) मिलावना, मिश्रण करना ।  
 धूपी दे० ( पु० ) मण्डल, छंधा हुआ, घूमघुमाला ।  
 धूपी दे० ( स्त्री० ) छंधना, बेड़ा बांधना ।  
 धूपी दे० ( स्त्री० ) रहँट का हतया ।  
 धूपी दे० ( पु० ) पेड़ा, कुण्डल, मण्डल ।  
 धूपी दे० ( पु० ) मिठाई विशेष, घुपघुप ।  
 धूपी दे० ( पु० ) शम्भुक, खोखला, धोप ।  
 धूपी दे० ( स्त्री० ) रगड़ना, मलना, ( पु० ) मोटा  
 धूपी दे० ( पु० ) धोड़ा ।  
 धूपी दे० ( पु० ) धोता, धाधा, नीह, पक्षियों के  
 रहने का स्थान ।  
 धूपी दे० ( स्त्री० ) जेब, पैली, भोली ।

धोटा दे० ( स्त्री० ) चिकनाहट, मसृणता ।  
 धोटाक तत्० ( पु० ) अरब, धोड़ा, गुरङ्ग, वाजी ।  
 धोटना दे० ( स्त्री० ) परिश्रम करना, अश्र्वास करना,  
 सूड़ना ।  
 धोटनी दे० ( स्त्री० ) बुढ़िया, लोढ़िया, लोड़ा,  
 धोटना ।  
 धोटा दे० ( पु० ) धोटने की लकड़ी, धोसने का मोटा ।  
 धोट्ट दे० ( पु० ) नख, मीठा, मधुर ।  
 धोट्ट दे० ( पु० ) गुदना, गिहुष्वा ।  
 धोड़ा दे० ( पु० ) अरब, धोटक, वाजी, गुरङ्ग ।  
 धोपा दे० ( पु० ) ओढ़ने की एक चीज़, गुम स्थान ।  
 धोर तत्० ( पु० ) [ धृ + अल् ] भयङ्कर, भयानक,  
 विकट, अन्धकार ।—तर ( पु० ) अत्यन्त भयानक,  
 डरावना ।—रूपी ( पु० ) भयानक, भोषण,  
 भयङ्कर ।  
 धोल दे० ( पु० ) मट्टा, झाछ, मही, तक्र ।  
 धोलधुमाव दे० ( पु० ) टालमटोक, वनावट,  
 कृत्रिमता ।  
 धोलना दे० ( स्त्री० ) मिलाना ।  
 धोला दे० ( पु० ) गदना, धुमिला, गादा, धोला  
 हुआ ।  
 धोप तत्० ( पु० ) शहीरों की बस्ती, शहीरों का  
 गाँव ।  
 धोषणा तत्० ( स्त्री० ) [ धृष् + शिष् + भनट् + षा ]  
 उच्चैः शब्द प्रकाश, दिडौरा, सिद्धापन ।  
 धोषणीय तत्० ( पु० ) [ धृष् + क्षणीय ] प्रचारित  
 करने योग्य, प्रकाशित करने योग्य ।  
 धोषी तत्० ( पु० ) सुचलमान, शहीर ।  
 धौद, धौर दे० ( पु० ) गुच्छा, स्तवक, धवटि ।  
 प्राण तत्० ( पु० ) नासिका, गन्धग्रहण, धाप्राण,  
 सूँघना, वास ।—तर्पण ( पु० ) धुगन्धि, धौध ।  
 प्राणेन्द्रिय तत्० ( पु० ) [ प्राण + इन्द्रिय ]  
 नासिका, नाक ।  
 प्रात तत्० ( पु० ) [ प्रा + क्त ] गृहीत गन्ध, धूप  
 धादि का गन्ध लेना ।  
 प्रायक तत्० ( पु० ) [ प्रा + क्त ] गन्ध ग्राहक,  
 गन्ध ग्रहण करनेवाला, सूँघनेवाला ।

## ह

ह कर्म का प्रथम वर्ष, जिह्वामूल से इसका उच्चारण होता है, इस कारण उसे जिह्वामूलीय कहते हैं ।

ह तत् ( पु० ) विषयस्पृहा, विषय, विष, मेरु ।

## च

च यह चवर्ग का पहला वर्ण है, तालु से इसका उच्चारण होता है ।

च तत् ( अ० ) ममाहार अन्योन्वयार्थ, समुच्चय, पदान्तर, पादपूरण, श्रयधारण, हेतु ।

चवैर तद् ( पु० ) चामर, राजचिन्ह विशेष, चौंर ।

चक तद् ( पु० ) चक्रवा पत्नी, अपने अधिकार की भूमि, क्रयविक्रयस्थान, खेतों की सीमा का भेद ।

चकई तद् ( स्त्री० ) खिलाना, गोल काठ या टोन की बनी चकई में लम्बे डोरी बांध कर, ऐसे फेंकते हैं कि वह चकई अपने श्राप डेर लपेट लेती है, पत्तिविशेष, चकवा की स्त्री ।

चकचका तद् ( पु० ) गहरा उज्वल, खूब, निर्मल, प्रकाश, प्रकाशमय ।

चकचकी दे० ( स्त्री० ) कठार, भलाभल ।

चकछुदी दे० ( स्त्री० ) छुछुंदरि, सुखिका, सुखि भेद ।

चकड़वा दे० ( पु० ) चकड़स, आनन्द ।

चकता दे० ( पु० ) चिन्ह, आङ्क, चाट ।

चकताना दे० ( क्रि० ) दुब चोरा बैठना ।

चकती दे० ( स्त्री० ) गेंडे की खास, फाक, पैबन्द ।

चकनाचूर दे० ( पु० ) टुक टुक होना, भूर्ण होना, टूटना ।

चकमा दे० ( पु० ) एक प्रकार का ऊनी कपड़ा, मोड़ा, धोखा, जाति विशेष ।

चकरवा दे० ( पु० ) धूमधाम, हल्ला गुल्ला ।—मचाना ( वा० ) धूमधाम फाना ।

चकरा दे० ( पु० ) दाल का बड़ा, चौड़ा ।

चकरानी दे० ( स्त्री० ) टहलुई, टहलनी, नोकगनी, दासी ।

चकला दे० ( पु० ) पतुरियों का महाल, वेरधान, पाट और सूत से बना कपड़ा, देश का प्रांत, प्रदेश, भुवा ( पु० ) चौड़ा ।

चकलाई दे० ( स्त्री० ) चौहार्द, फैलाव, विस्तार ।

चकलाना दे० ( क्रि० ) चौड़ा करना, चौडाना, फैलाना ।

चकवा तद् ( पु० ) चक्रवाक, हंस जाति का एक पत्नी ।

चकवी तद् ( स्त्री० ) चकवा की स्त्री ।

चका तद् ( पु० ) चक्र, पहिया, कुम्हार का वाक ।

चकाचक दे० ( स्त्री० ) पूर्णता, पूर्ण, वृत्ति कारक, जैसे—“चकाचक छनी है, चकाचक है ।”

चकाचौध दे० ( स्त्री० ) उजास, जगरमगर, उजाना, तिलमिलाहट ।

चकावी दे० ( स्त्री० ) मैथिया दाद ।

चकित तत् ( पु० ) अचम्बित, चिम्बित, आश्चर्य-नियत, अवाकुल ।

चकेरा दे० ( पु० ) बड़ी शौच वाला, बड़बाला ।

चकोत्रा दे० ( पु० ) नीबू विशेष, बड़ा नीबू ।

चकोर तत् ( पु० ) पत्ति विशेष, तीतर का एक भेद यह चन्द्रमा को देख बहुत प्रसन्न होता है । यह श्राग खाता है । लोग कहते हैं कि यह पूर्वर्णमा के दिन यदि किसी तिजरा उबर रोगी की शी प्रसन्नता से ताक दे, तो उसका उबर बूट जाता है और पुनः उबर नहीं आता ।

चकौंड दे० ( पु० ) चकौदा, एक प्रकार का शीघ्र, जिससे दाद बूट जाती है ।

चक्र तद् ( पु० ) पहिया, चक्रा, चाक, चक्र, चक्र ।

चक्रस दे० ( पु० ) चिड़ियों का बड़ा ।

चक्रा दे० ( पु० ) चक्र, गाड़ी का पहिया ।

चकान दे० ( पु० ) गाड़ा, शक्रा, अमित, शक्ति ।

चक्री दे० (स्त्री०) पाट, जात, आटा पीसने के लिये पत्थर का यन्त्र ।

चक्रकू दे० (स्त्री०) छुरी ।

चक्रकेये दे० (पु०) चक्रवर्ती राजा, उदयास्त पर्यन्त राज्य शासन करने वाला, इस शब्द का प्रयोग रामायण में किया गया है ।

चक्र तत्० (पु०) रथाङ्ग, रथ का पहिया, कुशार का चाक, अश्व विशेष, सुदर्शन चक्र, जल का घुमाव, तगर का फूल, मण्डल, बहुरचना विशेष, हस्त-रेखा विशेष, राष्ट्र देश ।—धर विष्णु, स्रप ।

—पाणि (पु०) विष्णुनारायण, श्रीकृष्ण ।—वत् (श०) चक्राकार अश्व, चक्र के समान ।—वर्ती (पु०) सर्वांगीण, समुद्र पर्यन्त प्रजा पालन करने वाला, सवाट, यशुषा का साग ।—चाक (पु०) पवि विशेष, चक्रवा ।—घाल (पु०) शोकालोक पर्यन्त, मण्डलाकार, दिक् सङ्ग्रह ।—वृद्धि (स्त्री०) वृद्धि पर वृद्धि, बाढ़ पर बाढ़, मृद दर मृद ।—व्यूह (पु०) युद्ध के लिये मण्डलाकार सेना को सजाना, चक्राङ्गुल के युद्ध ही में सोलह वर्ष के वीरअष्ट अर्जुन पुत्र अभिमन्यु को नराधम दुर्योधन के पक्ष के राजाओं ने मिल कर मारा था ।—लक्ष्ण, (स्त्री०) गुणव, अमृतलता ।

चक्रा तत्० (स्त्री०) सङ्ग्रह, गिरोह, टोली ।—कार (पु०) गोलाकार, घेरा ।—ङ्ग (पु०) हंस ।

चकित तद्० (पु०) चकित, विस्मित ।

चक्री तत्० (पु०) विष्णु, चक्रवाक मत्स्य, कुम्भकार, कुम्हार, मर्ष, तेली, किलेदार, मंत्री । (पु०) चक्रविशिष्ट ।

चक्रीला तद्० (पु०) गोलाकार, चक्राकार, गोल घतुल ।

चक्षु तत्० (पु०) श्रौंल, नयन, नेत्र, लोचन ।

चक्षु तद्० (पु०) चक्षु, श्रौंल ।

चखन तद्० (पु०) श्रांल, चख, चक्षु, यथा—“चपल चखन वाला चौदनी में खड़ा था” (खानखाना) ।

चखना दे० (क्रि०) स्वाद लेना, चीखना ।

चखाचखी दे० (स्त्री०) बैट, विरोध, अगड़ा, टपटा ।

चखाना दे० (क्रि०) गिलाना, भीजन कराना, धक्का लगाना ।

चगलाना दे० (क्रि०) चबलाना, दौंनों से पीस पीस कर खाना ।

चङ्कमण तत्० (पु०) [ चं + कम् + अणट् ] पुनः पुनः भ्रमण, बारबार भ्रमण, चङ्कर लगाना ।

चङ्क दे० (पु०) शोभन, सुन्दर, दृढ, पट्ट, रोगहीन, सुख्य, गुह्यो, पतङ्ग, कष्टि करता, दुर्भिलाषा से मत्त होता । यथा—“वह चङ्क पर चढ़ा है,” “जब यह चङ्क पर चढ़ेगा तो, आप ही उसकी दुर्गति होजायगी ।” “उसे तो मैंने चङ्क पर चढ़ा लिया ।”

चङ्गा दे० (पु०) भला, सुखी, नोरोग, स्वस्थ ।

चङ्कर दे० (पु०) उत्तम, चँटे, सरम, बोला, चढ़िया, मनोहर ।

चङ्गेर दे० (पु०) दौंस आदि का बना छोटा पस, फूल रखने का यंत्र ।

चङ्गेरा दे० (पु०) खांचा, टोकरा, दोरी ।

चङ्गेरी दे० (स्त्री०) टोकरा, कठारी, तृण आदि का बना मात्र विशेष ।

चचा दे० (पु०) पिता का भाई, काका, ताऊ, पितृभय, (स्त्री०) चची, चाचा की स्त्री, काकी ।

चचीर दे० (पु०) रेखा, बप्टीर, लकीर ।

चचुलाई दे० (स्त्री०) चचेड़ा, तरकारी विशेष ।

चचेरा दे० (पु०) चाचा का, चाचा सम्बन्धी, अपने सम्बन्धी से सम्बन्ध रखने वाला ।

चचोरना दे० (क्रि०) चुनना, निचोड़ना, निकालना ।

चञ्चनाना दे० (क्रि०) चिन्नाना, चनचन करना, थकना ।

चञ्चनाहट दे० (पु०) टोस, भुंफुलाहट, चमक ।

चञ्चरीक तत्० (पु०) [ चञ्चरी + क, ] भ्रमर, मधुकर, अम्बि ।

चञ्चल तत्० (पु०) अस्थिर, तल, उनावल, चपल । (पु०) सम्पट, गम्भीर ।—ता (स्त्री०) अस्थिरता, चञ्चलत्व ।

चञ्चला तत्० (स्त्री०) त्रिवुल, चपला, विचुली ।

चञ्चलाई तद्० (स्त्री०) मृदता, टिठार्ई, उहवकता, चपलता ।

## ड

ड कवर्ग का पञ्चम वर्ण, जिह्वामूल से इसका उच्चारण होता है, इस कारण उसे जिह्वामूलीय कहते हैं । ड तत्० ( यु० ) विषयम्पृहा. विषय, विष, मैरय ।

## च

- च यह चवर्ग का पहला वर्ण है, तालु से इसका उच्चारण होता है ।
- च तत्० ( अ० ) नमाहार अन्योन्यार्थ, समुच्चय, पञ्चान्तर, यादपुरण, अयधारण, हेतु ।
- चवैर तद्० ( पु० ) चामर, राजचिन्ह विशेष, चौंर ।
- चक तद्० ( पु० ) चकवा पत्ती, अपने अधिकार की भूमि, क्रयविक्रयस्थान, खेतों की सीमा का भेद ।
- चकई तद्० ( ख० ) खिलाना, गोल काठ या टोम की बनी चकई में लम्बी डोरी बाध कर, थोड़े फँकते हैं कि वह चकई अपने आप डेर लपेट लेती है, पत्तिविशेष, चकवा की खी ।
- चकचका तद्० ( गु० ) गहरा उज्वल, स्वच्छ, निर्मल, प्रकाश, प्रकाशमय ।
- चकचकी दे० ( ख० ) कटार, भलाभल ।
- चकछुदी दे० ( ख० ) छुछुंदरि, मुसिका, मृषिक भेद ।
- चकड़वा दे० ( पु० ) चकल्लस, आनन्द ।
- चकला दे० ( पु० ) चिन्ह, अङ्क, चाड ।
- चकलाना दे० ( क्रि० ) दुब चौरा बैठना ।
- चकती दे० ( खी० ) गेंडे की खाल, फाक, पैबन्द ।
- चकनान्चूर दे० ( पु० ) टुक टुक होना, चूर्ण होना, टूटना ।
- चकमा दे० ( पु० ) एक प्रकार का ऊनी कपड़ा, मोड़ा, धोखा, जाति विशेष ।
- चकरवा दे० ( पु० ) धूमधाम, हल्ला गुल्ला ।—मचाना (वा०) धूमधाम करना ।
- चकरा दे० ( पु० ) दाल का बड़ा, चौड़ा ।
- चकरानी दे० ( खी० ) टहलुई, टहलनी, नोकगनी, दामी ।
- चकला दे० ( पु० ) पशुरियों का महाल, धेरवालय, पाट और भूत से बना कपड़ा, देग का प्राक, प्रदेश, मूया (पु०) चौड़ा ।
- चकलाई दे० ( खी० ) चौड़ाई, फैलाव, विस्तार ।
- चकलाना दे० ( क्रि० ) चौड़ा करना, चौडाना, फैलाना ।
- चकवा तद्० ( पु० ) चक्रवाक, हंस जाति का एक पत्ती ।
- चकवी तद्० ( खी० ) चकवा की खी ।
- चका तद्० ( पु० ) चक्र, पहिया, कुम्हार का चाक ।
- चकाचक दे० ( खी० ) पूर्णता, पूर्ण, तृप्ति कारक, जैसे:—“चकाचक छनी है, चकाचक है ।”
- चकाचौध दे० ( खी० ) उजास, जगरमगर, उजाला, तिलमिलाहट ।
- चकावी दे० ( खी० ) भैंसिया दाद ।
- चकित तत्० ( गु० ) अचम्भित, विन्मित, आश्चर्य निवत, टपाकुल ।
- चकेरा दे० ( पु० ) बड़ी शौंल घाला, बड़शौंला ।
- चकोत्रा दे० ( पु० ) नीबू विशेष, बड़ा नीबू ।
- चकोर तत्० ( पु० ) पत्ति विशेष, तीतर का एक भेद यह चन्द्रमा की देल बहुत प्रसन्न होता है । ज आग खाता है । लोग कहते हैं कि यह पूर्णिमा के दिन यदि किसी तिजरा ज्वर रोगी की ओर प्रसन्नता से ताक दे, तो उसका ज्वर हट जाता है और पुनः ज्वर नहीं आता ।
- चकौंड दे० ( पु० ) चकौंदा, एक प्रकार का पौध जिससे दाद हट जाती है ।
- चक्र तद्० ( पु० ) पहिया, चक्रा, चाक, चक्र, चक्र ।
- चक्रस दे० ( पु० ) चिड़ियों का झुंड ।
- चक्का दे० ( पु० ) चक्र, गाड़ी का पहिया ।
- चकान दे० ( पु० ) गाड़ा, चक्रा, अमित, प्रकित ।

चक्रों दे० (खी०) पाट, जात, आटा पीसने के लिये पत्थर का यन्त्र ।  
 चक्र दे० (खी०) घुरी ।  
 चक्रकेत्रे दे० (पु०) चक्रवर्ती राजा, उदयास्त पर्यन्त राज्य शासन करने वाला, इस शब्द का प्रयोग रामायण में किया गया है ।  
 चक्र तत्० (पु०) रथाङ्ग, रथ का पहिया, कुम्हार का चाक, अन्न विशेष, सुदर्शन चक्र, जल का घुमाव, तगर का फूल, मण्डल, वृहत्तरचना विशेष, हस्त-रेखा विशेष, राष्ट्र देश ।—धर विष्णु, सर्प ।  
 —पाणि (पु०) विष्णुनारायण, श्रीकृष्ण ।—वत् (पु०) चक्राकार अन्न, चक्र के समान ।—वर्ती (पु०) सार्वभौम, समुद्र पर्यन्त प्रजा पालन करने वाला, सखाट, यद्यथा का साग ।—घाक (पु०) पक्ष विशेष, चकवा ।—वाल (पु०) लोकालोक पर्यन्त, मण्डलाकार, दिक् सङ्घ ।—वृद्धि (खी०) वृद्धि पर वृद्धि, बाढ़ पर बाढ़, सूद दर सूद ।—व्यूह (पु०) युद्ध के लिये मण्डलाकार सेना की सजाना, चक्राव्यूह के युद्ध ही में सोलह वर्ष के वीरब्रह्म अर्जुन पुत्र अभिमन्यु को नराधम दुर्योधन के पक्ष के राजाओं ने मिल कर मारा था ।—लक्षण, (खी०) गुरुव, अमृतलता ।  
 चक्रा तत्० (खी०) समूह, गिरोह, टोली ।—कार (पु०) गोलाकार, घेरा ।—ङ्ग (पु०) हंस ।  
 चक्रित तद्० (पु०) चक्रित, विस्मित ।  
 चक्रो तत्० (पु०) विष्णु, चक्रवाक पक्षी, कुम्भकार, कुम्हार, सर्प, तैली, क्लिष्टदार, मंत्री । (पु०) चक्रविशिष्ट ।  
 चक्रोला तद्० (पु०) गोलाकार, चक्राकार, गोल वस्तु ।  
 चक्रु तत्० (पु०) आँसू, नयन, नेत्र, सोचन ।  
 चक्रु तद्० (पु०) चक्रु, घाँस ।  
 चक्रन तद्० (पु०) घाँस, चक्र, चक्रु, यथा --“चवल चक्रन वाला चौदनी में छड़ा था” (प्रान्तप्राना) ।  
 चक्रना दे० (क्रि०) स्वाद लेना, चीखना ।  
 चक्राचखी दे० (खी०) बैर, विरोध, भगड़ा, टपटा ।  
 चक्राना दे० (क्रि०) विमाना, भोजन कराना, चक्रा लगाना ।

चक्रालाना दे० (क्रि०) चक्रालाना, दौंतों में पीस पीस कर खाना ।  
 चक्रमण तत्० (पु०) [ चं + क्रम् + घनट् ] पुनः पुनः ध्रमण, बारबार ध्रमण, चक्र लगाना ।  
 चक्र दे० (पु०) शोभन, सुन्दर, दच, पट्ट, रोगहीन, सुख्य, युद्धो, पतङ्ग, कष्टित करना, दुर्भिलाषा से मन होना । यथा—“वह चक्र पर चढ़ा है,” “जब वह चक्र पर चढ़ेगा तो, आप ही उसकी दुर्गति होजायगी ।” “उसे तो मैंने चक्र पर चढ़ा लिया ।”  
 चक्र दे० (पु०) भला, सुखी, नोरोग, स्वस्थ ।  
 चक्रर दे० (पु०) उत्तम, अष्ट, मरु, चोला, वड़िया, मनोहर ।  
 चक्रेर दे० (पु०) घाँस आदि का बना छोटा पत्र, फूल रखने का पत्र ।  
 चक्रैरा दे० (पु०) लांचा, टोकरा, दोरो ।  
 चक्रैरो दे० (खी०) टोकरा, कठारी, तृण आदि का बना पात्र विशेष ।  
 चक्रा दे० (पु०) पिता का भाई, काका, ताऊ, पितृव्य, (खी०) चची, चाचा की स्त्री, काकी ।  
 चक्रोर दे० (पु०) रेखा, डक्कीर, लकोर ।  
 चक्रुलाई दे० (खी०) चनेड़ा, तरकारी विशेष ।  
 चक्रैरा दे० (पु०) चाचा का, चाचा सम्बन्धी, अपने सम्बन्धी से सम्बन्ध रखने वाला ।  
 चक्रोरना दे० (क्रि०) नूषना, निचोड़ना, निकालना ।  
 चक्रनाना दे० (क्रि०) चिह्नाना, चनचन करना, बकना ।  
 चक्रनाहट दे० (पु०) टीस, भुंभुनाहट, चक्र ।  
 चक्ररीक तत्० (पु०) [ चक्ररी + क् ] ब्रह्म, मधुकर, चलि ।  
 चक्रल तत्० (पु०) घस्विर, ताम्र, उभायण, चपल । (पु०) सम्पट, गम्भीर ।—ता (खी०) घस्विरता, चञ्चलत्व ।  
 चक्रला तत्० (खी०) विद्युत्, चक्रा, विद्युत् ।  
 चक्रलाई तद्० (खी०) भृष्टता, विद्या, उद्भवता, चपलता ।

स्त्रियां थी, सुराके लड़के का नाम मौर्य, और सुनन्दा के नौ पुत्रों को नयनन्द कहते थे। पिता ने नयनन्दों को राज्यासन का भार सौंपा और मौर्य को उनका मन्त्री बनाया। मन्त्री मौर्य को अनेक युद्ध उत्पन्न हुए, उन्हें हौनहार देख कर नयनन्द ईर्ष्या और अपनी शापति की उत्प्रेक्षा कर के कांप गये, अतएव उन्होंने मौर्यों को बन्दी किया, परन्तु किसी कारणवश चन्द्रगुप्त को उन्होंने छोड़ दिया, चन्द्रगुप्त बड़े ही दिनों में अपने सद्गुणों के कारण सर्वप्रिय हो गया। यह देख नयनन्द भयभीत हुए, उसे मारने की चेष्टा करने लगे, इसकी खबर पाते ही चन्द्रगुप्त ने बहुत सोच विचार कर अपनी रक्षा का उपाय ढूढ़ निकाला, यह दृढ़ प्रतिज्ञा अश्वघमायी और राजनीतिज्ञ चाणक्य को कौशल में अपने पक्ष में करके चन्द्रगुप्त राजा हुआ।—**ग्रहण (पु०)** चन्द्रमा का ग्रहण, राहुग्रहण।—**घण्टा (खो०)** देवी विशेष, नयदुर्गा के अन्तर्गत, तृतीसरी दुर्गा।—**चूड़ (पु०)** शिव, महादेव।—**प्रभा (खो०)** चन्द्रकिरण, ज्योत्स्ना।—**भागा (खो०)** नदी विशेष, चिनाव नदी, पंजाब की एक नदी का नाम।—**भाल (पु०)** श्रीमहादेव, गणेशजी।—**मणि (पु०)** चन्द्रकान्त मणि, शिव।—**मण्डल (पु०)** चन्द्रविम्ब, चन्द्रमा की परिधि।—**मल्लिका (खो०)** पुष्प विशेष, लताविशेष, इलायची।—**मुखी (खो०)** चन्द्रमा के समान मुंह वाली, सुन्दरी सुमुखि, धरवर्धिनी।—**मौलि (पु०)** महादेव, शिव।—**रेखा (खो०)** चन्द्रकला चन्द्रमा की एक कला।—**रेणु (पु०)** काव्य चौर, शब्द चौर, वागवहारी।—**लोक (पु०)** चन्द्रमा का लोक, चन्द्रमण्डल।—**लौह** ) चांदी, रूपा, रजत।—**वंश (पु०)** प्रसिद्ध **वंशुर** सन्तान विशेष, चन्द्रमा के कुल में उत्पन्न पत्नी।—**घाला (खो०)** बड़ी इलायची।—**व्रत (पु०)** प्रायश्चित्तविशेष, व्रतविशेष, राजधर्म, राजधर्म का पालन रूप व्रत।—**शाला (खो०)** अष्टासिका, अटारी।—**शिखा (खो०)** चन्द्रशृङ्ग, चन्द्रमा की कला का अग्रभाग।—**शेखर (पु०)** शिव,

महादेव, पर्यंत विशेष।—**सिता के (खो०)** कपूर।—**सेन (पु०)** प्राचीन भारत का एक पराक्रमी राजा का नाम, इनके पिता का नाम समुद्र सेन था, कुशसेन के पुत्र में पाण्डवों की और से यह लड़ते थे, और उसी युद्ध में अश्वत्थामा द्वारा यह सदा के लिये रणभूमि में हो गये। (२) चम्पावती नगरी का एक राजा। यह शिकार खेलने घन में गया था और मृग के घोखे में एक मुनि पर इसने धाण छोड़ा। मानस होने पर इसने मुनि का अनेक प्रकार अनुभव विनय किया, परन्तु किसी प्रकार मुनि का क्रोध कम नहीं हुआ, मुनि के शाप से राजा काला और बूढ़ा हो गया। शापमुक्त होने के लिये राजा ने अनेक यत्न किये, किन्तु सभी निष्फल हुए। अन्त में एक मुनि को सम्मति से बसन्तपुर (जयपुर राज्य के अन्तर्गत एक नगर) जाने से इनका शाप नष्ट हुआ, खट्टाब्द की प्रथम शताब्दी में इन्होंने चन्द्रावती नगरी स्थापित की। यह नगरी चन्द्रभागा नदी के तीर पर है, यह भालावार की राजधानी है। (३) परशुराम के द्वारा यह राजा मारा गया था, इसकी गर्भवती रानी ने महर्षि दालम्ब्य के आश्रम में जाकर अपने प्राणों की रक्षा की थी।—**हार (पु०)** अलङ्कार विशेष।—**हास (पु०)** [ चन्द्र + हस् + चञ् ] खड्ग विशेष, रावण के खड्ग का नाम, एक धार्मिक राजा का नाम इनके माता पिता वास्पावस्था ही में इन्हें इकेला छोड़ परलोक यात्री हुए। उस राज्य का प्रधान मन्त्री, यहयन्त्र रचकर, इन्हें मरवाने की चेष्टा करने लगा। अतः चन्द्रहास को अपनी राजधानी छोड़ घन में जाकर छिपना पड़ा। इस समय भी स्वर्गीय-वात्सल्य-भाव-पूर्ण-हृदया इनकी उपमाता ने इनको नहीं छोड़ा, किन्तु उसी ने इन्हें घन में जाकर प्राणरक्षा करने का सत्य-राम्य दिया और स्वयं भी यह साथ आयी। किसी अवसर पर राजमन्त्री से इनकी भेंट हुई। राजमन्त्री ने इन्हें पहचाना और इन्हें मारने के लिये इसने अपने गुप्तदूत उनके पीछे लगाये। भगवाह को चन्द्रहास का मारना उचित

नहीं मालूम होता था। इसी कारण मन्त्री के सभी प्रयत्न निष्फल हुए और यही राजा हुआ और मन्त्री अपने ही कर्मों से निःसन्तान होकर दुर्गति के साथ मर गया।

चन्द्रमा तत्० ( पु० ) चन्द्र, चन्द, चन्दा, निशाकर विष्णु।

चन्द्रा तत्० ( गु० ) सुखला, गङ्गा, बुद्धिमान्, इक्ष्वापवी।

चन्द्रातप तत्० ( पु० ) चाँदनी, चन्द्रिका, चन्द्रमा का प्रकाश, आच्छादन विशेष, वितान, चँदवा।

चन्द्राना दे० ( क्रि० ) सूक्ष्मता, सुरफाना, सूफना, पद्यास्ताप होना, परिताप होना।

चन्द्रापीड तत्० ( पु० ) बाणभट्टकृत संस्कृत गद्य काव्य कादम्बरी के नायक इनके पिता उज्जयिनी के राजा तारापीड थे, इनकी माता का नाम विलासवती था। कादम्बरी में लिखा है कि शाव के कारण चन्द्रमा ही को महारानी विलासवती के गर्भ से उत्पन्न होना पड़ा था, इनके मित्र और मन्त्रि पुत्र वैशम्पायन थे।

चन्द्रावली तत्० ( स्त्री० ) एक गौमी का नाम। यह राधा की चचेरी बहिन थी, राधा के पिता वृषभानु के जेठे भाई चन्द्रभानु की यह लड़की थी। चन्द्रावली गोवर्द्धन मठ से छपाही गयी थी, यह गोवर्द्धन मठ करला नामक गाँव का रहने वाला था।

चन्द्रिका तत्० ( स्त्री० ) ज्योत्स्ना, चन्द्रमा की किरण, चाँदनी, प्रकाश विशेष, व्याकरण की एक पुस्तक का नाम, चकोर।

चन्द्रोदय तत्० ( पु० ) चन्द्रमा का उदय, रात्रि का प्रथम ग्रहर, औपधि विशेष।

चन्द्रोपल तत्० ( पु० ) [ चन्द्र + उपल ] चन्द्रकान्त मणि, माणिक्य विशेष।

चनसुर दे० ( पु० ) हालम।

चपकन दे० ( पु० ) एक प्रकार का अँगूरवा, लम्बा अङ्गूरवा।

चपकना दे० ( क्रि० ) चिपटना, बुझना, संयुक्त होना, मिलना, सटना।

चपकाना दे० ( क्रि० ) सटाना, बुझाना, मिलाना, जोड़ना, सटना।

चपटना दे० ( क्रि० ) चपटा होना, मिल जाना, सट जाना, लग जाना।

चपटा दे० ( गु० ) समान, बराबर, मुख्य, चौरस, चौड़ा, चौखूटा।

चपटाना दे० ( क्रि० ) बैठाना, चपटा करना, मिलाना।

चपटी दे० ( स्त्री० ) बँटी वस्तु, चपटी वस्तु, मिली हुई छियाँ, संयुक्ता।

चपड़चपड़ दे० ( पु० ) खाने का शब्द।

चपड़ा दे० ( पु० ) एक प्रकार की लाल।

चपड़ाऊ दे० ( गु० ) निर्लज्ज, दीठ, भूढ़।

चपड़ाना दे० ( क्रि० ) छोटा करना, दीठ करना, बहकाना।

चपड़ी दे० ( स्त्री० ) गोबरी, कपड़ी।

चपना दे० ( क्रि० ) दबना, क्षिप्त होना, अधीन होना, दबना, मर्दित होना, मजल जाना।

चपनी दे० ( पु० ) टफनी, टपनी, टफन।

चपरास दे० ( स्त्री० ) एक प्रकार का विन्ह जो स्वामी भृत्य और भृत्य के पद का सूचन करता है।

चपरासी दे० ( पु० ) नौकर, दूत, हरकारा।

चपरि दे० ( स्त्री० ) गोघ्न, गुरत, दक्कर, दक्ककर, भूमि से मिलकर।

चपल तत्० ( गु० ) चञ्चल, अस्थिर, तरल, विकल, उद्विग्न।—ता ( स्त्री० ) चञ्चलता चाञ्चल्य, चापल्य, अस्थिरता।

चपला तत्० ( स्त्री० ) लक्ष्मी, विद्युत्, चञ्चला, उद्यमी, वेद्या, अस्थिरा, कुबटा, स्वमिचारिणी।

चपलाई तद्० ( स्त्री० ) चञ्चलता, चिलचिलापन, चुलचुलाहट।

चपाती दे० ( स्त्री० ) रोटी, फुलका।

चपाना दे० ( क्रि० ) दाबना, थोपना, लजाना, क्षिप्त करना।

चपेट तत्० ( पु० ) तमाषा, धरपा, धरपड़, हपेली, भौंक, धोखा।



चपेटा, चपेटिका तत्० ( स्त्री० ) धौल, घप्पड़, धोला ।  
 चपौटी दे० ( स्त्री० ) एक प्रकार की पगड़ी, पुरानी पगड़ी ।  
 चप्पन दे० ( पु० ) दकना, दक्कन, दपना, चपनी ।  
 चप्पा दे० ( पु० ) चार अङ्गुलियों का मिश्रण, किन्ती रङ्ग से दीवार या कपड़े पर बनाया जाता है ।  
 चप्पी दे० ( स्त्री० ) देह दबाना, अङ्ग मर्दन, शरीर दबाना ।  
 चप्पू दे० ( पु० ) डौड़, दपड़, नाव खेवने का डौड़ा ।  
 चफाल दे० ( स्त्री० ) पङ्क परितृप्त द्वीप, जिस द्वीप के चारों ओर दरादल हो ।  
 चबलाई दे० ( स्त्री० ) चबलाना, दातों से पीसना, कुचलना ।  
 चबलाना दे० ( क्रि० ) चबाना, कुचलना, पीसना ।  
 चवाई दे० ( स्त्री० ) फुचलाई, चर्षण ।  
 चवाउ दे० ( पु० ) मुखर, श्वेतकहाउ, पुकहाउनी ।  
 चवाना दे० ( क्रि० ) चायना, चिकलाना ।  
 चवूतरा दे० ( पु० ) चौतरा, चत्वर, अथाई, चौपाड़, बैठक, चौकी ।  
 चवेना दे० ( पु० ) भुंजा, भुना अन्न, भुजैना ।  
 चञ्च तत्० ( स्त्री० ) औषधि विशेष, चाच ।  
 चभक दे० ( पु० ) डंक, डांक, काटा ।  
 चभक दे० ( स्त्री० ) चलक, भड़क, चटक, उज्यलना, प्रभा, दीप्ति, दमक, गोभा ।  
 चभकता दे० ( पु० ) उजागर, उजला, जगमग, जगरमगर ।  
 चभकना दे० ( क्रि० ) भलकना, लौकना, प्रकाश हो जाना ।  
 चभकाना दे० ( क्रि० ) कैलाना, प्रकाश करना, भलकाना दिखाना ।  
 चभकाच दे० ( पु० ) चभक, उजार, उजागर ।  
 चभकाहट दे० ( स्त्री० ) भलक, भलभल ।  
 चभगादड़, चभगीदड़ दे० ( पु० ) दादुर, चभगादूर, गादूर ।  
 चभगुदड़ी दे० ( स्त्री० ) रात में चलने वाली चिड़िया ।

चमचड़क दे० ( पु० ) क्षीण, कृश, दुर्बल, मकरा, दुर्बल ।  
 चमचमाना दे० ( क्रि० ) शोभना, अधिक गोमा देना, चमकना ।  
 चमचमाहट दे० चमकाहट, शोभा, दीप्ति ।  
 चमड़ा दे० ( पु० ) चर्म, रघु, छाल, खाल, चमत्कार तत्० ( पु० ) [ चमत् + कृ + घञ् ] विस्मय, आश्चर्य ज्ञान, विचित्र विस्मय ।—ी ( पु० ) विस्मय जनक, विचित्र आश्चर्य ।  
 चमत्कृत तत्० ( पु० ) आश्चर्यान्वित, विस्मित ।  
 चमर तत्० ( पु० ) चवर, चामर, कपालव्यजन, रात चिन्ह विशेष, चमर नामक पशु विशेष ।  
 चमरख दे० ( पु० ) राटा की सामग्री, एक प्रकार का खट्टा फल ।  
 चमरी तत्० ( स्त्री० ) सुरा गी, चमर नामक गी, सुरागाय ।  
 चमस तत्० ( पु० ) [ चम + सत् ] यज्ञपात्र विशेष, चमचा, कदशी, दर्पि ।  
 चमाई दे० ( स्त्री० ) भौल, पीला, चमाऊ दे० ( स्त्री० ) लड़ाक, घरयादुका ।  
 चमार नद्दे० ( पु० ) चर्मकार, मोची, जूता बनाने वाला ।—  
 चम् तत्० ( स्त्री० ) सेना, दल, फटक, सेना विशेष, ७२८ हाथी, ७२८ रथ, २१८७ घोड़े, ३५४५ पैदल यह चम है ।—चर ( पु० ) सेनाचर, पुटुनीवी वेहा ।  
 चमूकन दे० ( पु० ) किलनी, पशुघों का जुंवा ।  
 चमरू तत्० ( पु० ) हरिण विशेष ।  
 चमेटा तद्दे० ( पु० ) चपेटा, धपेड़ा, धौल ।  
 चमोटा दे० ( पु० ) चमड़े की बैली जिसमें नाई अन्न रखता है ।  
 चम्पक तत्० ( पु० ) पुष्प विशेष, चम्पा का फूल ।  
 —कलिका, ( स्त्री० ) चम्पा की कली ।  
 चम्पत दे० ( पु० ) द्विपा, अदूरय, अन्तर्द्वान, भग-जाना ।—होना भगजाना, छिपजाना, चलाजाना, अज्ञान्य होना ।

चम्पा तत्त्वं (स्त्री०) कर्णपुरी, अङ्गदेश की राजधानी, भागलपुर का प्रदेश, चम्पारण्य, चम्पारण।—धिप (पु०) चम्पारण्य नामक प्रदेश के अधिपति कर्ण-राज । दे० एक फूल और वृक्ष का नाम ।

चम्पाकली दे० (स्त्री०) भूषण विशेष, एक प्रकार का गहना, यह गले में पहना जाता है ।

चम्पावती तत्त्वं (स्त्री०) नगरी विशेष, चम्पा नामक नगरी ।

चम्पी दे० (स्त्री०) पीत रङ्ग, पीत वर्ण, पोले रङ्ग से रंगा हुआ ।

चम्पू तत्त्वं (स्त्री०) काव्य विशेष, गद्य पद्य मय काव्य ।

चम्प्या दे० (पु०) मुंडूत्रिणा, एक भिक्षुकों की जाति ।

चम्पू दे० (पु०) जल पास विशेष, टोटीदार पात्र, यह देवपूजन के काम आता है ।

चम्पेली दे० (स्त्री०) एक प्रकार की लता और पुष्प, चमेली का फूल ।

चम्मल दे० (पु०) चमला, गुम्बा, एक नदी का नाम ।

चय तत्त्वं (पु०) [ चि+प्रल् ] सवृह, रागि, देर, प्राचीर, प्राकार, चार दीवारी ।

चयन तत्त्वं (पु०) संग्रह करण, आहरण, वटोरना, एकट्टा करना । दे० ध्यानन्द, कुशल, चेम, चैन ।

चर तत्त्वं (पु०) उठाने योग्य, बाधुका, टेक, खिप कर राजकीय बातों को जानने के लिये नियुक्त किया गया पुरुष, दूतों की बात जानने के लिये भूमने वाला, कण्ठ वेशधारी, दूत, खाना, भोजन, (पु०) चलने वाला, चलने योग्य, जङ्गम ।

चरक तत्त्वं (पु०) वैद्यक ग्रन्थ विशेष, कुष्ठ रोग का भेद, मुनि विशेष, विद्ययात वैद्यक ग्रन्थ चरक संहिता के रचयिता, अनन्त देव चर रूप से खिप कर पृथिवी पर आये और उन्होंने देखा कि यहाँ के वासी अनेक रोगों से अधिक कुष्ठ उठा रहे हैं । मनुष्यों का कष्ट देख कर उन्हें दया आयी और पड़ङ्ग वेद ज्ञाता महर्षि का रूप उन्होंने धारण किया तथा सांसारिक व्याधियों से मनुष्यों की रक्षा

कर के प्रसिद्धि प्राप्त की । अनन्त देव चर रूप ( गुप्त वेश ) से पृथिवी पर अवतीर्ण हुए थे । इसी कारण उनका नाम चरक पड़ा । इन्होंने अत्रि के पुत्र भरद्वाज से आयुर्वेद की शिक्षा प्राप्त की थी ।

चरकटा दे० (पु०) चारा काटने वाला, घसियारा ।

चरका दे० (पु०) कोढ़, कुष्ठ रोग विशेष, रवेत कुष्ठ ।

चरकी दे० (पु०) कुष्ठ रोग वाला, रवेत कोढ़ी ।

चरख दे० (पु०) चक्र, चका, घेरा, चीकर, पहिया ।

चरखा दे० (पु०) सूत काटने का यन्त्र, रूँटा ।

चरखी दे० (स्त्री०) रूँटी, उईंटा, घिरनी, एक प्रकार का यन्त्र जिस पर आदमी को बैठा कर घूमाया जाता है ।

चरचना तत्त्वं (क्रि०) सेपना, सेपन करना, अङ्गों में चन्द लगाना ।

चरचर, दे० (पु०) बकबक, गप, निरर्थक बोल ।

चरचरा दे० (पु०) बकती, यड़बड़िया, निरर्थक बोलने वाला ।

चरचराना दे० (क्रि०) चटकना, कड़कड़ाना, झुड़ होना, कुपित होना ।

चरचेली दे० (पु०) गध्वी, बह्वी, मुखर, बकबकहा ।

चरचैत दे० (पु०) चरचा करने वाला, कौर्निमान ।

चरट तत्त्वं (पु०) खड्गन पत्ती, खड्गरीट, खड्गलीच ।

चरण तत्त्वं (पु०) पद, अङ्गुलि, पैर, पशु पक्षी आदि के आहार के लिये घूमना, छन्द का चौथा हिस्सा ।—कमल (पु०) कोमल चरण, कमल के समान चरण ।—दासी (स्त्री०) चरण मेथिका,

स्त्री, भार्या, पैर पर गिरा हुआ झूता, खड़ाक ।

—पदवी (स्त्री०) पदाङ्क, चरण का चिन्ह ।—पीठ (पु०) पादपीठ, चरण रखने का पीड़ा, चरणसन ।

—वधू (स्त्री०) एक ग्रन्थ का नाम, यह वेदव्यास का बनाया है इसमें वेदों का विवरण लिखा गया है ।

—युगल (पु०) पदयुगल, चरणयुग, दोनों पैर ।

—सेवा (स्त्री०) उपासना, आराधना, अर्चना सेवा, शुभ्रूपा ।—मृत (पु०) चरणोदक पादोदक,

मान्वा का वैर धोया हुआ जल ।—**गुध** ( पु० )  
कुक्कुट, मुरगा ।—**रविन्द** ( पु० ) चरण कमल,  
पादपत्र ।—**देक** ( पु० ) पादप्रक्षालन जल, चरणामृत,  
देवता आदि का चरण धोया हुआ जल ।—**पान्त**  
( पु० ) चरण के समीप, पदप्रान्त ।

**चरती दे०** ( गु० ) व्रत न करने वाला, अप्रती ।

**चरना दे०** ( क्रि० ) चुगना, घूमघूमकर घास खाना ।

**चरनी दे०** ( स्त्री० ) कठरा, ठाय, स्थान, वैलों को  
घास खिलाने के लिये जो मिट्टी का बहुत लम्बा  
बनाया जाता है ।

**चरनी दे०** ( स्त्री० ) चार आने, चौभन्नी, सूकी ।

**चरपरा दे०** ( गु० ) तोता, खट्टा, कहुवा, तोखा,  
फुत्तीला साहसी ।

**चरपटाना दे०** ( ज्ञो० ) परपराना, वेदना मालूम  
होना, दर्द होना, भंभनाना ।

**चरपराहट दे०** ( क्रि० ) परपराहट, भंभनाहट ।

**चरपरिया दे०** ( गु० ) मनचला, सुन्दर, सुघर ।

**चरफर** ( पु० ) प्रवीणता, निपुणता, दक्षता ।

**चरफरा दे०** ( गु० ) दक्ष, निपुण, प्रवीण, कार्यकुशल ।

**चरफरादि दे०** ( क्रि० ) चरचराते हैं, दूटते हैं,  
चरते हैं ।

**चरवरापगी दे०** ( स्त्री० ) फुत्तीलापन, चहुपता,  
साहस, उम्साह ।

**चरवाना दे०** ( क्रि० ) ढोल को रस्सी से कसना ।

**चरम तत्०** ( गु० ) अन्तिम, शेष, अग्रस्थान, पश्चिम ।

—**काल** ( पु० ) शेष काल, अन्तिम समय, मरने  
का समय ।—**चल** ( पु० ) अस्त पर्यन्त अस्तगिरि ।

—**द्रि** ( पु० ) अस्त पर्यन्त, अस्ताचल ।

**चरवाई दे०** ( स्त्री० ) चराई का मूष्य, चराने का  
या रखने का मूष्य ।

**चरवाहा दे०** ( पु० ) चराने वाला, रखने वाला,  
रखवारा, गहरिया ।

**चरस दे०** ( पु० ) मादक द्रव्य विशेष, पुरघट, मीठ,  
पानी निकालने का चमड़े का बड़ा एक प्रकार का  
वर्तन, चमड़े का बड़ा ढोल ।

**चरसा दे०** ( पु० ) अजीर्ण, खान, चमड़ा ।

**चराई दे०** ( स्त्री० ) चराने की मजूरी ।

**चराक दे०** ( पु० ) चरानेवाला, चरवाहा ।

**चराचर तत्०** ( गु० ) [ चर + अचर ] स्थावरजङ्गम,  
चल । अक्षत ( पु० ) जगत्, आकाश, नभोमण्डप,  
जड़चेतन, सजीव निर्जीव ।

**चरान दे०** ( पु० ) तराई, चौगान, पटपर, पशुओं  
के चरने का स्थान ।

**चराना दे०** ( क्रि० ) पशुओं को घूमाकर घास  
खिलाना, चुगाना ।

**चराच दे०** ( पु० ) चरने योग्य खेत ।

**चरित तत्०** ( गु० ) [ चर + क्त ] गत, पात,  
प्राप्त, लब्ध, अधिगत । ( पु० ) चरित्र, व्यवहार,  
आचरण, रीति नीति, उपाख्यान ।—**ार्थ** ( गु० )  
प्राप्त प्रयोजन, जिसका दृष्ट सिद्ध हो चुका है  
कृतकार्य, कृतार्थ ।—**ार्थता** ( स्त्री० ) कृतार्थता,  
प्रयोजन सिद्धि, दृष्ट लाभ ।

**चरित्र तत्०** ( पु० ) [ चर + द्र ] स्वभाव,  
आचरण, व्यवहार ।—**चन्धक** ( पु० ) भाट,  
कवि, ग्रन्थकार, चरित्र लेखक ।

**चरो दे०** ( स्त्री० ) नदी, अस्थिर, चलनीय, पशुओं  
के खाने योग्य ।

**चरु तत्०** ( पु० ) यज्ञान्न, यज्ञ का श्रेय अन्न, खीर,  
होम करने की वस्तु ।

**चरु दे०** ( पु० ) भांड़ा, हाड़ा, वर्तन ।

**चर्चक तत्०** ( गु० ) चर्चा करने वाला ।

**चर्चना दे०** ( क्रि० ) विचारना, ध्यान करना,  
सोचना ।

**चर्चर दे०** ( पु० ) शब्द विशेष, दूटी गाड़ी के शब्द ।

**चर्चरी तत्०** ( स्त्री० ) [ चर्च + र + ई ] वायु  
विशेष, रागविशेष, गानविशेष, केशरचना, महा-  
काल, शाक ।

**चर्चरीक तत्०** ( पु० ) शिव, महादेव, महाकाल,  
केशविन्द्यास, शाक ।

**चर्चा तत्०** ( स्त्री० ) विचारना, आलोचन, आन्दोलन,  
अनुशीलन, चिन्ता, विचार, प्रस्ताव, तर्क,  
वक्तव्य ।

**चर्चित तत्०** ( गु० ) [ चर्च + क्त ] चन्दन के द्वारा  
लेपन करना, लिप, सुगन्धित, निरूपित, निर्णीत ।

चपट तत्० (प्र०) चपेट, चपेटा, चापट्ट ।  
 चर्म तत्० (प्र०) झाल, त्वक, चाम, चमड़ा, खाल,  
 अर्धविशेष, दान ।—कार चमार, मोषी, जूता  
 बनाने वाला ।—चटिका (स्त्री०) चमगुदड़ी ।  
 —ज (प्र०) रुधिर, केग, बाल, परम, ऊत ।  
 —दण्ड (प्र०) कशा, चायुक, कोड़ा ।—पात्र  
 (प्र०) चमड़ा का डोल ।—पादुका (स्त्री०)  
 चमड़े का जूता ।—पुटक (प्र०) चर्म निर्मित  
 पात्र विशेष, कुप्पा जिसमें घी तेल आदि रखा  
 जाता है ।—चख (प्र०) चमड़े का बना वस्त्र ।  
 चर्मो तत्० (प्र०) डाल रखने वाला, चर्म धारी,  
 डाल वाला ।  
 चर्या तत्० (स्त्री०) तपस्या में लीनता ।  
 चर्वण तत्० (प्र०) [ चर्व + अन्ट ] दांतों से चूरा  
 किया या पीसा हुआ, चराना ।  
 चर्वित तत्० (प्र०) कृत चर्वण, भक्षित, खाया हुआ ।  
 चल तत्० (प्र०) चञ्चल, अस्थिर, अस्थायी, गमन,  
 कूच, क्षिप्र भिन्न ।—कर्ण (प्र०) पृथिवी से ग्रहों  
 को पथार्थ दूर ।—चलाव (प्र०) यात्रा को  
 तयारी ।—चित्त (प्र०) अस्थिर मन, चञ्चल ।  
 —दिना (क्रि०) भागजाना, उपेक्षा करना ।  
 —निकलना (क्रि०) निकल चलना, सोमा को  
 अतिक्रम करना ।  
 चलते दे० चलते हैं, चलते ही हैं, चलते ही ।  
 चलता दे० (प्र०) फिरता, घूमता, चलना फिरना ।  
 चलदल तत्० (प्र०) पीपल का पेड़, आश्रयस्थ ।  
 चलन तत्० (प्र०) [ चल + अन्ट ] गमन, भ्रमण,  
 कम्पन, सरण, यहन, आचरण, व्यवहार, धारा,  
 प्रचार, रीति, चाल ।—ता (स्त्री०) छिन्नहार,  
 विकनेवाला, खपती ।  
 चलना दे० (क्रि०) जाना, गमन करना ।  
 चलनी दे० (स्त्री०) हांगा, रांगी, पीतल के चूत  
 अथवा चमड़े से बना अनेक छेद वाला एक घर्तन,  
 जिससे आटा चला जाता है, आटा को छनने ।  
 चलपत्र तत्० (प्र०) आश्रयस्थवृक्ष, चल दल, पीपल ।  
 चलपंजी तत्० (स्त्री०) चल धन, एक स्थान से दूसरे  
 स्थान में ले जाने लायक धन, मुवर्ण, सेना, रुपया  
 पैसा आदि ।

चलफेर दे० (प्र०) घूम घाम, गमन गति, डुलाय ।  
 चलविधरा दे० (प्र०) अङ्घ्रियल, मचलन वाला,  
 कालस्र, श्वमर जानने वाला ।  
 चलविचल दे० (प्र०) झल चूक भ्रम, मन्देह, धोखा ।  
 चला तत्० (स्त्री०) लक्ष्मी, चञ्चला, कुलटा (क्रि०)  
 चल निकला, चलपड़ा, प्रचलित हुआ, जाया  
 चाहता है, मरा चाहता है ।  
 चलाऊ दे० (प्र०) अन्वित्य, काम चलने लायक, चला  
 जाता है ।  
 चलाचल तत्० (प्र०) [ चल + अचल ] अस्थिर,  
 चञ्चल, चलचलाव, डोलफिर, घूमघुमाव ।  
 चलाचली दे० (स्त्री०) दीड़ भूप, साय साय  
 चलना, अन्वोन्यगमन ।  
 चलान दे० (प्र०) भेजना, पहुँचाव, प्रेषित करण,  
 मार्ग दिखाना ।  
 चलाना दे० (क्रि०) दीड़ाना, हांकना, गमन कराना ।  
 चलायमान तत्० (प्र०) चञ्चल, अस्थिर, (अनस्थिर  
 नहीं) अस्थायी ।  
 चलाव दे० (प्र०) चलन, रीति, व्यवहार, चाल ।  
 चलावा दे० (प्र०) चलाया, हांका, प्रचलित किया ।  
 चलित तत्० (प्र०) [ चल + क्त ] कम्पित गत,  
 प्रचार, चलन, व्यवहारी, चपल, व्यवहारिक,  
 हिलता हुआ ।  
 चलितव्य तत्० (प्र०) [ चल + तव्य ] चलने योग्य,  
 गमन करने के उपयुक्त ।  
 चलित्री दे० (प्र०) खिलाड़ी, रसिक, चञ्चल ।  
 चले दे० (क्रि०) चल निकले, प्रचलित हुए, जाने लगे ।  
 चलेन्द्रिय तत्० (प्र०) अजितेन्द्रिय, इन्द्रिय परवश,  
 इन्द्रियाधेन, लम्पट, असदा-चारी, इन्द्रिय-  
 सुखासक्त ।  
 चलो दे० (क्रि०) जाव, उठो, दौड़ो, फिरो ।  
 चलोना दे० (प्र०) चरखे का ढण्डा ।  
 चवाई दे० (क्रि०) चुपे, बड़े, टपके, टपकता है ।  
 चवय दे० (क्रि०) चुके, बड़े, टपके । (इन दोनों शब्दों  
 का प्रयोग रामायण में हुआ है) ।  
 चवाई दे० (प्र०) निन्दक, दुर्जन, पिगुन, भ्रूषक,  
 लयाधुनरा, चुगलखोर ।

चवाच दे० (पु०) निन्दा, दुर्ग्रह, अपवाद, पुगली, झूठा कलङ्क ।

चप तत्० (पु०) भोजन, खाना, मारण, मारना ।

चपक तत्० (पु०) जलपात्र, आम्बुखोरा, पीने का पात्र, मदिरा पीने का पात्र, गिलास ।

चपति तत्० (पु०) भोजन, खाना, मारण । (स्त्री०) मूर्च्छा, मदान्धता, चप, दुर्बलता, दुबलाई, यध, हत्या ।

चपाल तत्० (पु०) पक्ष के खम्बे के ऊपर रखा हुआ एक प्रकार का काष्ठ, मधुस्थान, मधुकोष ।

चसक दे० (स्त्री०) टपक, पीड़ा, टीस, वेदना, कषा ।

चसकना दे० (क्रि०) टीसना, टपकना, ठयथा करना, बधना ।

चसका दे० (पु०) प्यार, लालसा, चाट, स्वाद, अभिलाष, टेव ।

चसना दे० (क्रि०) मसकना, कसकना, गड़ना, फसकना ।

चस्सी दे० (स्त्री०) अपरस, रोगविशेष ।

चह तत्० (पु०) अहङ्कार, पाखण्ड, दम्भ । (पु०) अहङ्कारी, दम्भी, झलो, कपटो ।

चहकना दे० (क्रि०) चमकना, चहचहाना, शोभित होना, चिड़ियों की चहचहाहट ।

चहका दे० (पु०) जलन, ठयथा, आगदेना ।

चहकार दे० (स्त्री०) चिचियाना, चहचहाहट, चिड़ियों का शब्द ।

चहकैट दे० (पु०) चौदन्त, सांड, यलवास, बलिष्ठ ।

चहचहा दे० (पु०) खूब गहरा रङ्गा हुआ, अति मनोहर ।

चहचहाना दे० (क्रि०) चिड़ियों का रव ।

चहचहाहट दे० (स्त्री०) पक्षि समूह का शब्द ।

चहटी दे० (स्त्री०) चुटकी काटना ।

चहलना दे० (क्रि०) कांडना, कूचना, आन्त होना, धकित होना ।

चहलपहल दे० (स्त्री०) आनन्द, हंसी खुशी, हर्ष, उत्सव, मङ्गल ।

चहसि दे० (क्रि०) तू चाहता है ।

चहिय दे० (क्रि०) चाहिये, आवश्यकता है ।

चहला दे० (पु०) कीचड़, पांक, पङ्क, कांदा, कांदा, कीच ।

चहुं दे० (पु०) चारो ओर, चारो तरफ, चतुर्दिक् ।

चहुंचक दे० (पु०) चारो ओर, सत्र ओर, चहुंदिश, चारोप्ट ।

चहुंदिश दे० (श०) सत्र ओर, चारो ओर, चहुं ओर ।

चहुंधा दे० (पु०) चारो ओर ।

चहुंयुग दे० (पु०) चारो युग, चारो युग में, चतुर्युग ।

चहुं दे० (पु०) चार, चतुः, चौपा ।

चहौं दे० (क्रि०) चाहना हूँ । इच्छा करना हूँ ।

चौई दे० (पु०) छोटी जात, फझर । (बहुधा इस जाति को चोर जाति भी कहते हैं अतएव इस शब्द का अर्थ भी चोर ही हो गया है) ।

चौईजुई दे० (स्त्री०) गङ्गातीर ।

चौचर दे० (पु०) गीत विशेष, अरयो, जिस पर मुद्रा ले जाया जाता है ।

चौटना दे० (क्रि०) चापना, दाबना, चिन्ह करना ।

चौंड दे० (स्त्री०) भूमि, धन्वा, खम्भा, टेकन, टेक ।

चौंद तद् (पु०) चन्द्रमा, चन्द्र, सोम ।—रात (स्त्री०) पूर्णिमा की रात ।—मारना (क्रि०) सत्यवेध, निशाना मारना ।—ने खेल किया (वा०) चन्द्र उदय हुआ ।

चौंदना दे० (पु०) प्रकाश, उदयति, तेज ।—पक्ष (पु०) गुल्ल पक्ष, मुदि, उजैला पाख ।

चौंदनी दे० (स्त्री०) चन्द्रिका, उजियाली, अजोरी रात, बिछाने की चादर, स्वच्छता ।—चौक (पु०) चौड़ा याज़ार, चौक ।

चौंदी दे० (स्त्री०) रूपा, रजत ।

चौंप दे० (स्त्री०) बन्दूक का फल, का

चौंपना दे० (क्रि०) दाबना, दबा, चिन्ह के द्वारा ठाँसना, चुड़ाना ।

चा दे० ( स्त्री० ) औषधविशेष, जिसकी पत्ती प्रातः और सन्ध्या पर जाती है। आसाम की और यह बहुत होती है।

चाक तद्० ( पु० ) चक्र, कुम्हार की चक्री, पाट, चक्री, चक्र।

चाकचक्र तद्० ( पु० ) दीप्ति, उज्वलता, स्वच्छता।

चाकना दे० ( स्त्री० ) चाकन, छापना, ( रामायण में यह शब्द मिलता है )।

चाकर दे० ( पु० ) भूष्य, कर्मचारी, नौकर। ( स्त्री० ) चाकरानी।

चाका दे० ( पु० ) चक्र, रथ का पहिया।

चाकी दे० ( स्त्री० ) चक्री, पाट, जांत।

चाकू दे० ( पु० ) छुरी, अस्त्रिपुत्रि, धेनका, क्लम-तराय, चाकू।

चाक्षना दे० ( स्त्री० ) स्वादलेना, परखना।

चाक्षुला दे० ( पु० ) धोड़े का रङ्गविशेष।

चाचा दे० ( पु० ) पिता का भाई, काका, चचा। ( स्त्री० ) काकी, चाची, चचा की स्त्री।

चाञ्चल्य तद्० ( पु० ) चञ्चलता, अस्थिरता, चपलता, चापल्य।

चाट दे० ( स्त्री० ) चसका, उत्सुकता, लालसा, लोभ, लालच, मादक पदार्थों में रुचि होने के लिये खाद्य वस्तु।

चाटक तद्० ( पु० ) मण्डलो, विद्या, इन्द्रजाल।

चाटकी तद्० ( पु० ) चाटक विद्या जाननेवाला, ऐन्द्रजालिक।

चाटना दे० ( स्त्री० ) चीछन, रसा स्वादलेना।

चाटी दे० ( स्त्री० ) मथानि, मथनिया।

चाट्टु तद्० ( पु० ) त्रिपदाक्य, मोटा वचन, स्तुति, प्रशंसा, लोह का पात्र विशेष।—कार ( पु० ) त्रिपदापी, अनुनय विनय करने वाला, चापशूष।

—पट्टु ( पु० ) भण्ड, भांड, ठगनेवाला, मछणरा, जि. चक्र, सुशामदी।—वादी ( पु० ) स्तुति करने वाला, सुशामदी।

चाट्टुपत्र तद्० ( पु० ) प्रशंसा करने वाला, सुशामदी।

चातुर्वर्णी तद्० ( स्त्री० ) नहाण, चापय, चापप्रकता, स्थान में से कौट, हँकली।

वैसा चादि

चाणक तद्० ( पु० ) मुनिविशेष, गोत्रविशेष, उभाड़ने वाली बात, क्रोध उत्पन्न करने वाली बात।

चाणक्य तद्० ( पु० ) एक नीति के ग्रन्थ का नाम, मुनिविशेष, नीति शास्त्र के प्रसिद्ध पण्डित, यह जगत् गोत्र में उत्पन्न हुए थे अतएव उन्हें चाणक्य गोत्र कहते थे। इनका प्रकृत नाम विष्णुगुप्त था। इनका बनाया अर्थशास्त्र और चाणक्यनीति दो ग्रन्थ पाये जाते हैं। यह पाटलीपुत्र के चन्द्रगुप्त के मन्त्री थे। सुदारास्य में इनकी नीति कुशलता का वर्णन है। गुणात्मने वृहत्कथा में इनको स्मरण किया है। अतएव चन्द्रगुप्त का समय, ३२० ई० से पूर्व का मानना चाहिये।

चाणूर तद्० ( पु० ) दानवविशेष, कंसराज का योधा था।

चाण्डाल तद्० ( पु० ) वर्षवङ्कर जातिविशेष, चण्डाल, श्वपच, ( स्त्री० ) चाण्डाली चाण्डाल की स्त्री, बखाली, चण्डालिन।

चाण्डूल तद्० ( पु० ) पत्ती विशेष।

चातक तद्० ( पु० ) स्वनाम एवात पत्ती, पपीहा।

—चिन्द ( पु० ) मेघों के घाने का समय, वर्षा ऋतु।

चातकिनी तद्० ( स्त्री० ) चातकी।

चातर दे० ( पु० ) महाजाल, दुर्जनों का जमाय, दुश्चरित्रों का समुदाय।

चातुर तद्० ( पु० ) चतुर, चालाक, धूर्त, प्रवीण, बुद्धि-माद्, कुशल, चार, चौंया, त्रिपदापी, नियन्ता।

चातुराश्रय तद्० ( पु० ) ब्रह्मर्षय, गार्हस्प्य, यानप्रस्थ और संन्यास, इन चार आश्रमों का धर्म।

चातुर्मास्य तद्० ( पु० ) चार मास में समाप्त होने वाला व्रत।

चातुरी तद्० ( स्त्री० ) दक्षता, नैपुण्य, कौशल, चतुरता, छल शक्ता।

चातुर्वर्ण्य तद्० ( पु० ) चतुर्वर्ण, चतुरता, धूर्तता।

चातुर्वर्ण्य तद्० ( पु० ) चतुर्वर्ण के धर्म।

चातुर्वेद्य तत्० ( पु० ) चार वेदों के ज्ञाता,  
चतुर्वेद्य, चतुर्वेदी ।

चात्वाल तत्० ( पु० ) गर्त, गढा, गड्ढर, अग्निहोत्र  
की सामग्री ।

चातुक दे० ( पु० ) पपीहा, चातक ।

चादर दे० ( स्त्री० ) एकलार्ई, ओढ़ने का एक प्रकार  
का वस्त्र पिछोरा, पिछोरी ।

चान्द्र तत्० ( पु० ) चन्द्र सम्बन्धीय, चन्द्रमा का,  
मौम्य ।

चान्द्रमास तत्० ( पु० ) चन्द्रमा का महीना, कृष्ण  
प्रतिपदा से पूर्णिमा को समाप्त होने वाला मास ।

चान्द्रायण तत्० ( पु० ) व्रत विशेष, चन्द्रव्रत, एक  
प्रकार का प्रायश्चित्त । इस व्रत में चन्द्रमा की  
कला की घटती और बढ़ती के अनुसार भोजन में  
घटाव बढ़ाव किया जाता है । यह व्रत एक  
महीने का होता है ।

चाप तत्० ( पु० ) धनुष, कोदण्ड, धनुहाँ । दाव,  
दबाव ।—खण्ड ( पु० ) धनुष के टुकड़े ।

चापत दे० ( स्त्री० ) दबाता है, दबाते ही ।

चापन दे० ( पु० ) दयाना, दावन, ।

“सुनिवर शयन कीन्ह तब जाई,  
लगे चरण—चापन दोउ भाई” ।

—रामायण ।

चापल तत्० ( पु० ) चञ्चलार्ई, चपलाहट ।

चापलूस दे० ( पु० ) खुशामदी, प्रशंसक, स्तुतिकर्ता ।

चापलूसी दे० ( स्त्री० ) लज्जोपत्तो, फुसलाहट, खुशा-  
मद, अनुनय ।

चापल्य तत्० ( पु० ) चपलता, अधीरता, जल्दीबाज़ी ।

चापी दे० ( स्त्री० ) दवाई ।

चापन्द दे० ( पु० ) जाल, मल्लाह जिससे मछली  
पकड़ते हैं ।

चापना दे० ( स्त्री० ) दांतों से कुचलना, पीसना ।

चापी दे० ( स्त्री० ) कुञ्जी, ताली, कूची, तासे की  
कुञ्जी ।

चामर पाटना दे० ( स्त्री० ) दांतों से होठ काटना,  
दांत कटकाटना ।

चाम तद् ( पु० ) चर्म, चमड़ा, त्वक्, खाल ।

चामर तत्० ( पु० ) चमर, चदर, राजा का एक चिह्न ।  
चामीकर तत्० ( पु० ) सुवर्ण, स्वर्ण, सोना ।

चामुण्डा तत्० ( स्त्री० ) दुर्गा, देवी, काली, योगिनी,  
चण्डमुण्ड, राक्षसों को मारने वाली देवी ।  
मातृका भेद ।

चाम्पेय तत्० ( पु० ) चम्पा पुष्प, चंपा का फूल,  
नागकेशर ।

चाप तत्० ( पु० ) [ चि + घञ् ] चञ्चुप, चञ्चुह, हर्ष,  
स्वाद, आस्वाद, चोप, हर्ष, चाहत ।

चार तत्० ( पु० ) गूढ़ पुरुष, दूत, खोजी, अनुसन्धान-  
कारी, चर कारागार, संख्या विशेष, ४ ।—कर्म  
( पु० ) छिप कर देखना ।—चक्षु ( पु० ) रत्ना,  
नृपति ।—टुक ( पा० ) टुकड़े टुकड़े, साज़ साज़,  
छल रहित ।

चारक तत्० ( पु० ) मार्ईस, चरवाहा, चताने वाला ।

चारण तत्० ( पु० ) जाति विशेष, भाट, बन्दे,  
स्तुति करने वाली जाति ।

चारा दे० ( पु० ) पौधे, छोटे वृक्ष, पशुओं के खाने को  
चोत्र, घास आदि ।

चारी तत्० चलने वाला, गामी ।

चारु तत्० ( पु० ) सुन्दर, सुहावना, मनोहर, रमणीय,  
मनोत्र ।—ता ( स्त्री० ) सौन्दर्य, सुन्दरता, शोभा ।

—पर्णी ( स्त्री० ) गन्धपसारन औषधि विशेष ।

—फला ( स्त्री० ) दाव, अङ्गूर, किसमिच ।

—चाहू ( पु० ) श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम ।

—विक्रम ( पु० ) बलवान्, बली, बलिष्ठ, मनोहर,  
गति विशिष्ट ।—मति ( स्त्री० ) श्रीकृष्ण जी की

कन्या का नाम, बुद्धिमान् ।—लोचन ( पु० )

सुन्दर आँख वाला । ( पु० ) हरिण, मृगा ।—शिल

( स्त्री० ) मणि विशेष, हीरा ।—शील ( पु० ) सुकृप,

सुन्दरस्वभाव ।

चारैक्षण तत्० ( पु० ) [ चार + ईक्षण ] राजमन्त्री,

राजनीतिज्ञ ।

चारपाई दे० ( स्त्री० ) खाट, खटिया, पर्यङ्क, पलङ्ग ।

चार्वङ्गी तत्० ( स्त्री० ) सुन्दरी नारी, सुकृपा स्त्री,

रूपलावण्य युक्ता ।

**चार्यांक तत्त्वं (५०)** तार्किक विशेष, लौकायतिक, नास्तिक भेद, नास्तिक मत प्रवर्तक अर्थि । किसी का कहना है कि यह देव गुरु बृहस्पति ही थे । किसी के मत से चार्यांक बृहस्पति के शिष्य थे । किसी किसी का कहना है कि चार्यांक इस नाम का कोई था ही नहीं । यह न्याय मत के समान एक दार्शनिक मत है । चार्यांक स्वर्ग, मुक्ति, ईश्वर आदिको नहीं मानते । वे स्रोम स्वर्ग, मुक्ति, यज्ञ, तप, दान, आदि का खरबहन क्रिया करते हैं । वेद के विषय में इनकी सम्मति अत्यन्त निन्दित है । चार्यांक दर्शन का दूसरा नाम लोकायत दर्शन है, क्योंकि भौतिक विषय ही इस दर्शन का सर्वस्व है । चार्यांक के मत से परलोक एक अव्यक्त वस्तु है, अस्तव्य वे उसे नहीं मानते । किसी समय इस मत का प्रचार हुआ था यह निश्चय करना कठिन है । विष्णुपुराण में भी इस मत का उल्लेख किया गया है । महाभारत के शान्ति पर्व में चार्यांक को दुर्योधन का मित्र बतलाया गया है । वाल्मीकीय रामायण और तैत्तिरीय ब्राह्मण में भी इस मत का पता चलता है ।

**चाल दे० (खी०)** चलना, चलन गति, रीति, व्यवहार, परिपाटी, छप्पर, झोंद ।—पकाड़ना (क्रि०) फैलना, चलना, प्रकलित होना, घोड़े को गति सिखाना ।—चलना (क्रि०) निवाहना, व्यवहार करना, धोखा देना, धूर्तता करना ।—ढाल (सं०) चाल चलन, रीति भांति, व्यवहार ।

**चालक तत्त्वं (५०)** [ चल् + णक्, ] चालन कर्ता, भेदक, रेषक, सारक, हस्ति विशेष ।

**चालना तत्त्वं (५०)** स्थानान्तर, नयन, प्रेरण, दूरीकरण, सारण ।

**वालना दे० (क्रि०)** भाड़ना, पछोड़ना, छाना, खाटा चालना, फटकना, देखना, फारना ।

**वालनी दे० (खी०)** खाखा, फटना, छानने का पात्र, खाटा आदि का मोटा भाग निकालने वाला पात्र, आटा छानने का पात्र ।

**चाला दे० (५०)** गति, धाना, प्रस्थान, आचरण, रीति, व्यवहार ।

**चालाक दे० (५०)** धूर्त, निपुण, दक्ष, कुशल ।

**चालाकी दे० (खी०)** धूर्तता, निपुणता, विचार ।

**चाली दे० (५०)** नटखट, चञ्चल, चपल, रसिया, रसिक ।

**चालीस दे० (५०)** दो बीस, चत्वारिंशत्, संख्या विशेष, ४० ।

**चालीसा दे० (५०)** चालीस वर्ष की अवस्था वाला ।

**चाय दे० (५०)** चार अङ्गुल, चाय, उत्कण्ठा, रुचि, अभिलाष ।

**चावल दे० (५०)** तद्गुल, चावल, अन्न विशेष, शक्ति ।

**चाप तत्त्वं (५०)** स्वर्ण वातक, लहटोरवा, नीलकण्ठ, यथा—

“चारा चाप, याम दिशि लेई,  
मनी सकल मङ्गल कहि देई ।”

—रामायण ।

**चापु तद्ग० (५०)** नीलकण्ठ ।

**चास तद्ग० (५०)** खेती, कृषि, जोतार्ई ।

**चासा तद्ग० (५०)** किसान, खेतवाह, हरवाह, जोतवा ।

**चाह दे० (खी०)** इच्छा, अभिलाष, प्रीति, मनोरथ, लालसा ।

**चाहक दे० (५०)** छोही, प्रणयी, हितकारी, हित् ।

**चाहत दे० (खी०)** चाह, इच्छा, प्रीति, अभिलाष, प्रेम ।

**चाहना दे० (क्रि०)** प्रेम करना, इच्छा करना, अभिलाषा करना ।

**चाहा दे० (५०)** प्रेम, स्नेह, लालसा, अभिलाष, पक्षि विशेष ।

**चाहाचही दे० (खी०)** परस्पर प्रीति, अत्यन्त मैत्री ।

**चाहि दे० (ख०)** देखकर, निहार कर, इच्छा से, लालसा से, प्रेम से ।

**चाहिये दे० (ख०)** उपयुक्त, उचित, योग्य ।

**चाहिहीता दे० (५०)** इच्छित, अभिलषित, प्रिय, मनभावन ।—चाहिती (खी०) ।



चाही दे० (क्रि०) देखी, देखने की इच्छा की ।  
चाही दे० (श०) अथवा, किम्बा, या, या, वाक्यान्तर  
सूचक ।

चिक दे० (पु०) ज्वनिका, परदा, घास का बना  
हुआ परदा, रोग विशेष, कण्ठभारण विशेष,  
कण्ठ विशेष ।

चिकटा दे० (पु०) वस्त्र विशेष, टसर का बना  
कपडा । (गु०) चिकट, तेल का मूल ।

चिकठा दे० (पु०) तेली, तेल बनानेवाली एक  
जाति ।

चिकन दे० (पु०) एक प्रकार का कपडा, कपडा  
जिस पर हाथ से बेल बूटे काड़े जाते हैं ।

चिकना दे० (गु०) साफ सुधरा, सुन्दर, स्निग्ध,  
मस्सुण, तेलहा, तेलीस, घोंटा हुआ । निर्लज्ज,  
लम्पट, सुन्दर ।—घड़ा बनाना, (धा०) दूसरे की  
न मानना और अपनी कहते रहना । अपराध  
करके निरपराध प्रमाणित करना ।—चाँदा (घ०)  
सुन्दर, रमणीय, मनोहर, मनोह, सुहायना ।

चिकनाई दे० (स्त्री०) चिकनापन, स्निग्धता,  
फिसलन, चर्बी, चञ्चलता, ओष, भलक ।

चिकनाना दे० (क्रि०) उज्वल करना, साफ करना,  
चिकन बनाना, घोंटना, ओषना, भलकाना ।

चिकनाहट दे० (स्त्री०) चिकनापन, चिकनाई ।

चिकनिया दे० (पु०) छेला, बिसनी, सौलीन,  
लम्पट ।

चिकलना दे० (क्रि०) मसलना, पीसना, चवाना,  
भूर करना ।

चिकवा दे० (पु०) जाति विशेष, मास बेचनेवाली  
जाति ।

चिकार दे० (पु०) गुल, कोलाहल, चिगाहट ।

चिकारना दे० (क्रि०) चें चें करना, नाकी देना,  
कोलाहल करना, गुल करना, शोर करना,  
चिगाहना ।

चिकारा दे० (पु०) हरिण, मृगा, बाघ विशेष एक  
प्रकार की घारङ्गी ।

चिकारी दे० (स्त्री०) मसा, फूहबाई, फूहरपन ।

चिकित्सक तत्० (पु०) [ कित् + सृ + क् ]  
चिकित्सा करने वाला, रोग दूर करने वाला, वैद्य,  
भिक्षु ।

चिकित्सा तत्० (स्त्री०) [ कित् + सृ + था ]  
पीड़ा, प्रतीकार, व्याधि का अपनय, रोग हटाना,  
वैद्य कर्म, औषध करना, वैद्यार्थ,—लय (पु०)  
[ चिकित्सा + आलय ] चिकित्सा करने का स्थान,  
औषधालय, दवाखाना ।—शास्त्र (पु०) आयुर्वेद  
विद्या, चिकित्सा करने का शास्त्र ।

चिकित्सित तत्० (गु०) [ चिकित्सा + रत् ]  
चिकित्सा किया हुआ ।

चिकीर्षा तत्० (स्त्री०) [ कृ + सृ + था ] करने  
की इच्छा, अभिलाष ।

चिकीर्षित तत्० (गु०) [ कृ + सृ + क्त ]  
अभिलषित, वाञ्छित, अभिप्रेत, इष्ट, चाहा हुआ ।

चिकीर्षं तत्० (पु०) करने की इच्छा रखनेवाला,  
अभिलाषी ।

चिकुर तत्० (पु०) केश, कुन्तल, मुटुंज, नाथ,  
पक्षिविशेष, वृक्षविशेष ।—पाश (पु०) केश  
समूह ।

चिकोरना दे० (क्रि०) चोचियाना, चोच से बिलेला  
चिहोरना, खखोरना ।

चिकोरा दे० (गु०) चञ्चल, चपल, तरल ।

चिक दे० (पु०) छलुन्दर, बकरे, अजा, झण,  
यथा—

“पाहो खेत चिक धन अरु विठियन बटुवारि,  
येते पर जो नहि नसै तेर जाइ करै अधवारि।”

चिकट दे० (गु०) चिकटा, मलीन, मैला, तेलहा ।

चिकण तत्० (गु०) स्निग्ध, चिकना, चिकट  
सचिकन, फिसलनेवाला ।

चिकनी तत्० (स्त्री०) दक्षिणी सुपारी ।

चिकारहिं दे० (क्रि०) चिकारते हैं, चिहारते ।  
हाथी का शब्द करना ।

चिकस दे० (पु०) छाटा, जव का मैदा, जव  
गेहूँ का महीन छाटा ।

चिकहा दे० (पु०) चिकवा, कसाई ।

का दे० ( स्त्री० ) ह्युन्दरी, हृदी, मूत्र की एक जाति ।

कार दे० ( पु० ) चिंचाड़, भयङ्कर शब्द, हाथो का शब्द ।

की दे० ( स्त्री० ) सड़ी सुपरी ।

पुरन दे० ( पु० ) जङ्गली घास, खेत जोतने निकली हुई घास ।

पुरना दे० ( क्रि० ) निकाना, सोहना ।

ड़ा, चिड़ड़ी दे० ( स्त्री० ) कीटविशेष, पतित्वा, मेगा, भींगा मछली ।

नी दे० ( स्त्री० ) सुरंगी का बच्चा ।

रा दे० ( पु० ) सुरंगी का बच्चा ।

रा दे० ( स्त्री० ) चिह्नारी, पतङ्ग, कीट ।

ड़ दे० ( पु० ) चिह्नार, भयङ्कर शब्द, हाथो शब्द ।—भारना ( वा० ) भयङ्कर शब्द करना, भारना, हाथो का शब्द करना ।

हना दे० ( क्रि० ) किलकारना, बिह्वाना ।

दे० ( स्त्री० ) किलनी ।

रा दे० ( पु० ) तरकारी विशेष ।

ना दे० ( क्रि० ) चिह्नाना, पुकारना, ज़ोर से करना ।

( स्त्री० ) टुकड़ा, अंश विशेष, एक छोटा धन्नी ।

दे० ( पु० ) रेंटा, कीचड़, क्रुद्ध हुआ, फुपित

रा दे० ( पु० ) चिन्ह, अङ्क, दाग, छीटा ।

दे० ( स्त्री० ) धूप, घाम, ताप, गर्मी ।

( पु० ) मोटा, गौर धर्ष, खेत, सुन्दर, उपया, मुद्रा ।

( पु० ) प्रति दिन की कमाई, रोज़ाना ।

( स्त्री० ) पानी, पत्री, पत्र, पत्र,—पत्री

लिखा पत्रो, पत्रो किताबत करना ।

( स्त्री० ) चिट्ठी का आना जाना, पत्र

चिड़ दे० ( पु० ) क्रोध, घृणा, ग्लानि ।

चिड़चिड़ा दे० ( पु० ) क्रोधो धुनसाह, चिटकने वाला ।

चिड़पिड़ा दे० ( पु० ) तोषा, चरपरा, तोरण, क्रुद्ध ।

चिड़ा दे० ( पु० ) चटक, पक्ष विशेष, गौरैया ।

चिड़ाना दे० ( क्रि० ) सताना, खिजाना, क्रुद्ध करना, छेड़ना ।

चिड़िया दे० ( पु० ) गौरैया, पक्षी, अण्डज ।

चिड़ीमार दे० ( पु० ) बहेलिया, ठपाध, हत्याकारी, अधिक ।

चिण्ड दे० ( स्त्री० ) नृत्य विशेष ।

चित तद् दे० ( पु० ) मन, चित्त, हृदय, अन्तःकरण, सुध, स्मरण ।—चाय ( वा० ) अमीष्ट, मनभावन,

मन को अच्छा मान्यम होने वाला ।—चेता ( वा० ) मनमाना, उचित मान्यम होना, जंचना, पसन्द आना ।—चोर ( वा० ) मन हरनेवाला, अत्यन्त प्रिय ।—देना ( वा० ) ध्यान देना, मन लगाना,

अधिक उत्सुकता से करना ।—लगाना ( वा० ) मनोहर, सुहावना, मनभावन ।—लाना ( वा० ) सायधान हो जाना, सवेत हो जाना । ( स्त्री० ) दृष्टि,

दीठ, अयलोकन, समझ बूझ । ( पु० ) अष्टाक्षित, सीधा लैटना, मुँह ऊपर करके सोना, उतान

पड़ना ।—करना ( वा० ) उलटना, उतान गिरना, जीतना, हराना, पराजित करना ।

चितकवरा दे० ( पु० ) चितला, सतरगा, रङ्गविरङ्गा, कवरा, कर्बुर, अयलक ।

चितना दे० ( क्रि० ) रङ्गा जाना, ताकना, देखना, अयलोकन करना ।

चितरना दे० ( क्रि० ) चित्रित करना, रङ्ग देना, रङ्गना, चित्र बनाना ।

चितला दे० ( पु० ) चितकवरा, कर्बुर ।

चितयन दे० ( स्त्री० ) दृष्टि, दर्शन, भांकी, अयलोकन, कटाव ।

चितयना दे० ( क्रि० ) देखना, दर्शन करना, कटाव करना ।

चितहट दे० ( स्त्री० ) नीच, अनिच्छा, घृणा

चिन्ता तत्० ( स्त्री० ) शय दाह स्थान, जिस स्थान पर मुर्दा जलाया जाता है, शमशान, मसान, मर-घट ।—शायी ( पु० ) मुर्दा, मरा हुआ ।

चिन्ताखा दे० ( स्त्री० ) चिन्ता ।

चिन्ताङ्ग दे० ( पु० ) चिन्तु उतान ।

चिन्ताना दे० ( क्रि० ) जनाना, जताना, सावधान करना, सूचित करना ।

चिन्तावना दे० ( क्रि० ) जताना, चौकस करना ।

चिन्तावनी दे० ( स्त्री० ) जतावनी, सावधान करने का उपदेश ।

चित्तेरा तद्० ( पु० ) चित्रकार, चित्र बनानेवाला ।

चित्तीना दे० ( क्रि० ) देखना, विलोकन करना, दर्शन करना ।

चित्कार तत्० ( पु० ) चिन्ताना, चिन्तियाना, उच्चै शब्द ।

चित्त तत्० ( पु० ) [ चित् + क्त ] अनुसन्धान करने वाली शक्त-करण को वृत्ति, मन, हृदय, ज्ञान, बुद्धि ।—ताप ( पु० ) मन की पीड़ा, मानसिक दुःख ।—प्रसाद ( पु० ) आह्लाद, हर्ष, चित्त के सात्विक भाव का प्रकाश ।—चान ( पु० ) अनुग्राहक, कृपावान्, दयालु ।—विभ्रम ( पु० ) उन्माद, चित्त का ज्ञान भ्रूय हो जाना ।—विश्लेष ( पु० ) मन की चञ्चलता, उद्विग्नता, व्याकुलता । वृत्ति ( स्त्री० ) चित्त का विकार ।—समुन्नति ( स्त्री० ) दम्भ, अहङ्कार, मन का बढ़ना ।

चित्ता तद्० ( पु० ) औषधि, पौधाविशेष ।

चित्तोद्देग तत्० ( पु० ) चित्त का उद्देग, विरक्ति, व्याकुलता ।

चित्तोजति तत्० ( स्त्री० ) गर्व, अभिमान, अहङ्कार ।

चित्तप तत्० ( पु० ) समाधि का स्थान ।

चित्र तत्० ( पु० ) [ चित्र् + अल् ] तिलक, छवि, पट, आलेख्य, अद्भुत, विस्मय, मनोहर, अनेक प्रकार का रङ्ग तसवीर बेलबूटे ।—कण्ठ ( पु० ) कवूतर, पारावत, परेवा ।—कन्दुक ( पु० ) जिमीकन्द ।—फार ( पु० ) चित्र बनानेवाले, चित्तेरा ।—कारी ( स्त्री० ) चित्रकार का काम, चित्तेरापन ।—काय ( पु० )

बाघ, श्याम्र, शेर, चीता ।—कूट ( पु० ) पर्यट विशेष, पुन्देलखण्ड के अन्तर्गत कामता पहाड़ के नाम से यह प्रसिद्ध है ।—केतु ( पु० ) इस नाम के एक राजा हो गये हैं ।—गुप्त ( पु० ) यमराज के लेखक का नाम, जो सय के पाप पुण्य निष्कारते हैं, कायस्थों के आदिपुरुष हैं । पुराणों में इनके विषय में लिखा है कि इनकी उत्पत्ति ब्रह्मा के अङ्ग से हुई है । सृष्टि करने के पश्चात् तब ब्रह्मा ध्यान में मग्न थे उस समय कृतम दशत लिये अनेक वर्षों से चिन्तित एक मनुष्य उत्पन्न हुआ । उमने उत्पन्न होते ही ब्रह्मा से पूछा "क्या करना है" ? ब्रह्मा को आश्चर्य पाकर ये प्राणियों के पाप पुण्य सिखाने लगे । इनका लिखा हुआ चित्र चित्र लेखा गुप्त रहता है, इस कारण इनका नाम चित्रगुप्त पड़ा । ब्रह्मा की आश्चर्य ही से कायम इनकी जाति निश्चित हुई । अम्बष्ठ, श्रीयास्त्रय माधुर, गौड, भटनागर आदि नाम के नव पुत्र इनके थे । ये यमराज के मन्त्री हैं । कार्तिक गुहू द्वितीय को इनकी पूजा होती है ।—देवी ( स्त्री० ) रत्ना यास्त्रो ।—पद्म ( पु० ) नीतर नाम का पत्नी ।—पट ( पु० ) प्रति, मूर्ति, फोटो ।—भानु ( पु० ) सूर्य, अग्नि, अमल, दिवाकर ।—भेषज ( पु० ) कटूमरी, एक औषधि का नाम ।—रथ ( पु० ) गन्धर्व विशेष । इनका नाम अङ्गारण्य था इनके पास एक अनेक रथों से चित्रित रथ थे इसी कारण इनको लोग चित्ररथ कहने लगे इनकी स्त्री का नाम कुम्भीनर्सी था । पाण्डवों के यज्ञवास के समय में अर्जुन ने इनके उस रथ को जला डाला था । तब से इनका नाम दग्धरथ हो गये था । (२) धर्मरथ नामक राजा के पुत्र का नाम, श्री राज के क्षेत्रज्ञ पुत्र का नाम अङ्गताम था, यहाँ का देश के राजा थे । राजा अङ्ग के पुत्र का नाम दधिवाहन था, धर्मरथ के पिता दित्त इन्हींके पुत्र थे । धर्मरथ ही के चित्ररथ पुत्र थे ।—लिखित ( पु० ) चित्र में लिखा हुआ, निरर्थक चेष्टा हीन, चेष्टा रहित ।—लेखा ( स्त्री० ) अल्प

विशेष, इन्द्रो विशेष । दैत्यराज वाणासुर की कन्या उषा की सखी का नाम । यह वाणासुर के मन्त्री कुण्डमाण्ड की कन्या थी । इसीने उषा की प्रार्थना और देवर्षि नारद की सहायता से अग्नि-हनु को श्रीकृष्ण के मथन में हर लिया था ।

—लौचना (खी०) मदन पत्नी, मैना पत्नी ।  
—विचित्र (यु०) नानावर्ण का, बहुरङ्गी, अनेक प्रकार, नानाविध ।—शाला (खी०) चित्र बनाने का स्थान, जिस स्थान में अधिक चित्र हों ।

शिखण्डिज १--(यु०) बृहस्पति, देवगुरु ।—सारी (खी०) नगाइराना, अटारी, मजाया हुआ, युद्ध ।—सेन (यु०) गन्धर्व विशेष । अद्वैत वन के एक सरोवर के निकट इनका वास था ।

पाण्डव भी निर्वासित हो कर, इसी वन में रहते । एक समय दुर्योधन अपनी सेना और मित्रों अपने वैभव को दिखा कर, युधिष्ठिर आदि को इच्छा से चला । इस तालाब के

तब चित्रसेन को यहाँ से चला । चित्रसेन ने भी पक्ष में युद्ध होने का भय, कर्ण आदि

के न की महारानी, एक सेवक युधिष्ठिर ने प्राच्यन्त नयता से सहायता देने के विस्तृत

युधिष्ठिर ने समझा सुकाकर, और सहदेव को दुर्योधन की व भेजा । इनके पराक्रम से गन्धर्व हट गये । यह इधर उधर भागने

न लोगों ने दुर्योधन, उनकी स्त्रियों तथा आदि रथियों को कैद से छोड़ाया । गन्धर्व-दुर्योधन आदि को लेकर, युधिष्ठिर के समीप आये, और उन्होंने अपनी अपराध क्षमा कराया ।

दुर्योधन ने भी "खीले गये खल्वे बनने दूरे वन के घर आये" ।

को लोकहित चरितार्थ की ।

चित्रा तत्० ( खी० ) शोरमवाना, किकियाना, नाम, चौदहवां नक्षत्र, विशेष । भरा हुआ, लुपेला,

चित्राङ्ग तत्० ( यु० ) [ चित्र + रक्त चित्रक, शृगाल । नर्तन, जिसमें

चित्राङ्ग तत्० ( यु० ) चन्द्रवंशीय राज-धरदार महाराज शन्तनु का राजकुमार, महावीर (खी०) पितामह का यह सौतेला भाई था । सत्यवती ने गर्भ में इसकी उत्पत्ति हुई थी । इसके छोटे भाई का नाम विचित्रवीर्य था । शन्तनु के अनन्तर यह राजा हुआ था । इससे प्रजा प्रसन्न थी । चित्राङ्ग नामक गन्धर्व के साथ इसका तीन वर्ष तक घोर युद्ध होता रहा, उसी युद्ध में शन्तनुकुमार चित्राङ्ग मारा गया ।

चित्राङ्गदा तत्० ( खी० ) अर्जुन की स्त्री, मनीपुर के राजा चित्रवाहन की यह कन्या थी । इसके गर्भ से धर्मदाहन नामक पराक्रमशाली युद्ध उत्पन्न हुआ था । अपने नाना के वंश में उसका कोई उत्तराधिकारी न रहने के कारण, उनके राज्य का मालिक हुआ ।

चित्रिणी तत्० ( खी० ) चार प्रकार की स्त्रियों में दूसरे प्रकार की स्त्री ।

चिथड़ा दे० ( यु० ) फटा कपड़ा, गुदड़ ।

चिथड़िया दे० ( यु० ) गुदड़िया, गुदड़बाबा, चिरकूटिया ।

चिथाड़ना दे० ( क्रि० ) फाड़ना, सताड़ना, सयाड़ना, चीरना ।

चिदाकाश तत्० ( यु० ) चैतन्य आकाश, प्रह्ला, परमात्मा ।

चिद् तत्० ( यु० ) चैतन्य, सजीव, जीवधारी ।

चिदात्मा तत्० ( यु० ) ज्ञानमय आत्मा, ज्ञान-स्वरूप, परमात्मा ।

चिदानन्द तत्० ( यु० ) ज्ञान और ज्ञानरूप परमात्मा ।

चिदाभास तत्० ( यु० ) ज्ञान, ज्ञान का प्रकाश ।

चिद्रूप तत्० ( यु० ) ज्ञानमय, ज्ञानस्वरूप, स्फूर्तिमान्, मनोहर ।

चित्ता तत्० ( स्त्री० ) शय समय, परमात्मा ।

पर मुर्दा जलाया जाता, सूखकृद्भूरोग ।

घट ।—शायी ( स्त्री० ) टोसना, जलन होना,

चित्ताखा दे० ( स्त्री० )

चित्ताङ्ग दे० चिनगी दे० ( स्त्री० ) छुका, अग्नि,

चित्ताना मी ।

चित्ताना दे० ( स्त्री० ) चित्ताना, श्रीलता,  
आह मारना ।

चिन्त तद्० ( स्त्री० ) चिन्ता, स्मरण, सुध ।

चिन्तन तत्० ( पुं० ) अभ्यास, ध्यान, स्मरण ।

चिन्तना तद्० ( स्त्री० ) अभ्यास करना, मनन करना,  
ध्यान करना ।

चिन्ता तत्० ( स्त्री० ) चिन्तन, ध्यान, भावना,  
उद्देग, उत्कण्ठता, विषाद, कातरता, भय, त्रास,

सोच, हित वस्तु की प्राप्ति न होने का दुःख ।

—की मुद्रा ( घा० ) ध्यानमग्नता, सोच की

अवस्था ।—कुल ( पुं० ) [ चिन्ता + ] आकुल

उद्दिग्न, अशकुल, चिन्तित ।—न्यित ( पुं० ) चिन्ता-

युक्त, उदास, उन्मत्तस्क ।—पर ( पुं० ) भावना-

युक्त, चिन्तित ।—मणि ( पुं० ) शुभचिन्तक, प्रज्ञा,

बुद्धि विशेष, मणि विशेष, कल्पित मणि ।

चिन्ताना तद्० ( स्त्री० ) अभ्यास करना, मनन  
करना, पढ़े हुए को पुनः पढ़ाना ।

चिन्तित तत्० ( पुं० ) [ चिन्ता + इतच् ] चिन्ता-  
न्यित, भावनायुक्त, सोची ।

चिन्ह तत्० ( पुं० ) लक्षण, पहचान, अङ्क, दाग,  
परिचय, पताका ।

चिन्हार तद्० ( पुं० ) परिचित, पहचाना हुआ,  
लचित, अङ्कित ।

चिन्हारी तद्० ( स्त्री० ) परिचय, जान पहिचान ।

चिन्हित तत्० ( पुं० ) चिन्हयुक्त, अङ्कित, मनोनीत,  
सङ्केतित, दागी ।

चिपकना दे० ( स्त्री० ) लगना, सटना, चिपकजाना,  
सटजाना, दो वस्तुओं का आपस में मिल जाना ।

चिपकाना दे० ( स्त्री० ) सटाना, लगाना ।

चिपचिपा दे० ( पुं० ) लसदार, लसलसा, सटनेवाला,  
लजिलना ।

चिपचिपाना दे० ( स्त्री० ) लसलसाना ।

चिपटना दे० ( स्त्री० ) लिपटना, चिपकना, सटना ।

चिपटा दे० ( पुं० ) सटा हुआ, चिपका, लिपटा ।

चिपटाना दे० ( स्त्री० ) सटाना, लिपटाना, चिपका  
लगाना ।

चिपडाहा दे० ( पुं० ) किचड़ाई या किचराई हुई  
आँख ।

चिपड़ी दे० ( स्त्री० ) उपरी, गोहरी, उपसा, कण्ठा ।

चिपरा दे० ( पुं० ) गोंद, मासा ।

चिप्पक दे० ( पुं० ) छिछलाहा ( पुं० ) पक्ष विशेष ।

चिप्पा दे० ( पुं० ) बीप, पैयन्द, जोड़ ।

चिप्पी दे० ( स्त्री० ) टिकिया, घेगली, घिगी,  
टिकरी, फूटी और फटी वस्तुओं में जो जोड़ीं  
जाती हैं ।

चिथावला दे० ( पुं० ) लड़कपन, लहकेजास,  
खुलना ।

चिथिला दे० ( पुं० ) नटखट, चिथिल, चिथिला ।

चिथुक तत्० ( पुं० ) श्रोत के नीचे का भाग, दुई,  
तोड़ी, दाड़ी, वृक्षविशेष, मुचकुन्द वृक्ष ।

चिमचिमा दे० ( पुं० ) तेलछट, तेल का मूल, तन  
हुआ तेल ।

चिमटना दे० ( स्त्री० ) चिपकना, चिपटना, लिपटना,  
सटना ।

चिमटा दे० ( पुं० ) मोंचना, खीमटा, आग उठाने के  
लिये लोहे या पीतल का एक प्रकार का वर्तन,  
सँडसी ।

चिमटाना दे० ( स्त्री० ) सूखना, लिपटाना, चिपटाना,  
गले लगाना ।

चिमटी दे० ( स्त्री० ) चुटकी, सँडसी, चिमटी, छोटा  
चिमटा ।

चिमठा दे० ( पुं० ) लचीला, कड़ा, चिमड़ा ।

चिमड़ी दे० ( स्त्री० ) चिमड़ा, सूखा हुआ, गुञ्ज ।

चिमसा दे० ( पुं० ) पानी का सरोस, सासा, लसलसा ।

चिर तत्० ( घ० ) बहुत काल, दीर्घकाल, बहुत दिन  
का, बहुत दिन तक ।—फारी ( पुं० ) विलास के  
काम करने वाला, आलसी, दीर्घबुद्धी, गिथिक,  
दीला ।—काल ( पुं० ) दीर्घकाल, अनेक दिन

सदा, सब समय ।—जीवक (गु०) चिरजीवी, बहुत दिनों तक जीने वाला ।—जीवी दीर्घ-जीवी, विष्णु, काक, जीवक वृक्ष, शास्मली वृक्ष, मार्कण्डेय मुनि, अश्वत्थामा, बलि, ठपाम, हनुमान्, विभीषण, कृप, और परशुराम, ये चिरजीवी हैं ।—स्थायी (गु०) नित्य, सर्वदा रहने वाला ।

चिरञ्जी तद्गु (गु०) चिरञ्जीव, दीर्घायु । यह आयोर्वेद के अर्थ में कहा जाना है ।

चिरकुट दे० (गु०) चिट, चियड़ा, फटा, पुराना ।

चिरकुटिया दे० (गु०) चिरकुटिया, गुदङ्गिया, चियङ्गिया, गुदङ्ग बास, योगियों का एक भेद ।

चिरचिरा दे० (गु०) अयामार्ग, पौधा विशेष, एक औषध का नाम ।

चिरचिराना दे० (क्रि०) चरचराना, चरचर शब्द होना, बकवाद करना, फटकटाना, कटकना ।

चिरचिराहट दे० (स्रो०) चरचरापन, भनभनहाट ।

चिरजीव तद्गु दीर्घ जीवन, दीर्घायु ।

चिरण्टी तद्गु (स्रो०) युवती स्त्री, पिता के घर रहने वाली युवती, विवाहिता या अविवाहिता कन्या ।

चिरन्तन तद्गु (गु०) पुराना, प्राचीन ।

चिरवाना दे० (क्रि०) चिराना, फड़वाना ।

चिराद दे० (गु०) मौस भूनेने की गन्ध ।

चिराग दे० (गु०) दिया, दीपक, प्रदीप, यथा—“चिराग जलाद्यो” । “चिरागवुक्क तथा,” “चिराग तले अन्धेरा ।”

चिराना दे० (क्रि०) फड़वाना, चिरवाना ।

चिरायु तद्गु (गु०) देवता, (गु०) चिरजीवी, दीर्घजीवी ।

चिद तद्गु (गु०) वाहु का जोड़ ।

चिदौजी दे० (स्रो०) विद्याल, शुष्कफल विशेष ।

चिदौरी दे० (स्रो०) विनतो, प्रार्थना, विनय, अनुनय, छुथामद ।

चिल दे० (गु०) पत्ति विशेष, अतापि पत्ती, लहड़ पत्ती ।

चिलक दे० (स्रो०) चमक, भूषक, प्रकाश, दीप्ति ।

चिलकना दे० (क्रि०) भूषकना, प्रकाशित होना, चमकना ।

चिलचिलाना दे० (क्रि०) शोरमचाना, किकियाना, चिहाना ।

चिलड़ाहा दे० (गु०) जुयों से भरा हुआ, जुयोंला, चिल्ल भर ।

चिलम दे० (गु०) मिट्टी का एक वर्तन, जिसमें तम्बाकू आग रख कर हुक्का पीते हैं ।—चरदार (गु०) चिलम भरने वाला नौकर ।—चरदारी (स्रो०) चिलम भरना, चिलम पिलाना, चिलम पिलाने वाले का काम ।—तमाकू (स्रो०) चिलम भर तमाकू ।—चट (गु०) अधिक चिलम पीने वाला ।

चिलमची दे० (स्रो०) हाथ आदि धोने का पात्र, क्षारी ।

चिलवन दे० (स्रो०) चिक, कफली । यथा—  
दोहा ।  
“आयो विद्या मेरे नैनन में पुतली देवं विछाय ।  
पलकन चिलवन डार डूँ वैठे बीन बजाय ।”

चिलहला दे० (गु०) पङ्किल, किचड़ाहा, पंकेला ।

चिलहोरना दे० (क्रि०) टोगाना, टोकराना ।

चिलिक दे० (स्रो०) मोंच, हँव, मोचड़, ठपया, दर्द ।

चिलड़ दे० (गु०) चीलर, जूई, दोल ।

चिल्ला दे० (गु०) धनुष का रोदा, ज्या, पगड़ी का हॉर, जो कणायसू का होता है ।

चिल्लाना दे० (क्रि०) चिल्लाना, पुकारना ।

चिल्लाहट दे० (स्रो०) पुकार, चिल्लार ।

चिल्ली दे० (स्रो०) लोप्र, पत्रशाक विशेष, चपटे का बना भोजन विशेष ।

चिहटना दे० (क्रि०) चिपटना, भगना ।

चिहांना दे० (क्रि०) सिंगारना, सफारना, अचम्मित होना ।

चिहिकना दे० (क्रि०) लहकना, मनसनाना ।

चिहुर तद्गु (गु०) चिहुर, चाल, केग ।

चीटी दे० (स्रो०) चिधटी, चिकटी, पिपीसिका ।

चींधना दे० (क्रि०) फाड़ना, चिधड़ा करना, चिन्मिलना होना ।

चीऊटा दे० (गु०) कीट विशेष, स्वनाम प्रसिद्ध कीट ।

चीऊड़ा दे० ( पु० ) चुड़ुआ, चर्वण, चिपटा ।  
 चीक दे० ( पु० ) कीच, कीचड़, पांक ।  
 चीख दे० ( पु० ) चिहाड़, चिहाहट, स्वाद ।  
 चीखना दे० ( क्रि० ) चिल्लाना, चलना, स्वादलेना ।  
 चीखुर दे० ( पु० ) गिलहरी, कठयिल्ली ।  
 चीतना दे० ( क्रि० ) चाहना, इच्छा करना, मनोरथ  
 करना । चित्त बनाना, चित्र करना, चितेरना ।  
 चीतल दे० ( पु० ) तेंदुआ, चीता, बाघ, सर्प भेद ।  
 चीता दे० ( पु० ) चाह, इच्छा, मनोरथ, बुद्धि ।  
 बाघ, व्याघ्र, शेर ।  
 चीत्कार तत्० ( पु० ) चिल्लाहट, चिहाड़, पुकार ।  
 चीथना दे० ( क्रि० ) चिथेड़ना, थकौटना, फाड़ना,  
 खरोचना ।  
 चीन तत्० ( पु० ) देश विशेष, भारत के उत्तर  
 पूर्वस्थित देश, अन्न विशेष, जिसका माहा जनता  
 है ।  
 चीनी दे० ( स्त्री० ) छंड़, शर्करा, शर्करा, ( पु० )  
 चीन देश की वस्तु ।  
 चीन्हना तद्० ( क्रि० ) पहचानना, परिचय (महावर)  
 करना, जानना ।  
 चीन्हा तद्० ( पु० ) जानकार, परिचित,  
 पहचानता ।  
 चीपड़ दे० ( पु० ) शॉल का मल, शॉल का कीचड़ ।  
 चीर तत्० ( पु० ) पेड़ की छाल, पुराने बख का  
 टुकड़ा, कपड़ा, साड़ी, खोच ।  
 चीरना दे० ( क्रि० ) फाड़ना, फाड़ डालना, टुकड़े  
 टुकड़े कर देना ।  
 चीरम दे० ( पु० ) चिरौंजी ।  
 चीरा दे० ( स्त्री० ) पगड़ी, फाड़ा, मोलापन,  
 सुधापन ।  
 चीरो दे० ( स्त्री० ) भीगुर, एक कोट विशेष ।  
 चीरैता दे० ( पु० ) भूमिम्ब, चौपधि विशेष ।  
 चीर्य तत्० ( पु० ) विदीर्ण, फटा हुआ, खरिहत ।  
 —पर्यं ( पु० ) निम्ब वृक्ष, पुराने पत्ते ।  
 चील दे० ( पु० ) एक पक्षी का नाम ।—भूपट्टा  
 मारना ( वा० ) बलाहकार से छीन लेना, भूपट्ट  
 लेना ।

चीलर दे० ( पु० ) डीलजूई, जूं, चीलड़ ।  
 चीवर तत्० ( पु० ) संन्यासी का यख, कौपीन ।  
 चुआन दे० ( स्त्री० ) उरण, भरना, निकलना, जल  
 निकलने का भूमि ।  
 चुआना दे० ( क्रि० ) निकालना, टपकाना ।  
 चुकती दे० ( स्त्री० ) निपटारा, समाप्ति, त्याग,  
 फैसला ।  
 चुकना दे० ( स्त्री० ) समाप्त होना, चुकता होना,  
 श्रम होना, घटना, नष्ट होना ।  
 चुकाई दे० ( स्त्री० ) चुकौती, चुकती, चुकौता ।  
 चुकाना दे० ( क्रि० ) निपटाना, मोल ठहराना ।  
 चुकौता दे० ( पु० ) निपटारा, नियम ।  
 चुकाड़ दे० ( पु० ) कुलिया, पुरवा, मांड, कुख ।  
 चुकाड़ दे० ( पु० ) छोटी कुलिया ।  
 चुको दे० ( स्त्री० ) छल, धूर्ताई, धोखा, चाईपन ।  
 चुकौ दे० ( स्त्री० ) नियम, निरूपण, परिमित,  
 परिणाम, समाधान, निष्पत्ति, फैसला ।  
 चुक तत्० ( पु० ) बूक, खट्टा, अम्लरस, खट्टा  
 अम्लशक ।  
 चुगन दे० ( स्त्री० ) चुनन, बिनन, चुनत ।  
 चुगना दे० ( क्रि० ) टगना, चुगना, बिनना ।  
 चुङ्गी दे० ( स्त्री० ) बन्धन, अन्नदान, मिठा, एक  
 प्रकार का सरकारी कर, जो दूसरी जगह से आते  
 वाली नई वस्तुओं पर लगता है ।—घर ( पु० )  
 जहां चुङ्गी वसूल की जाती है ।  
 चुचकारना दे० ( क्रि० ) धारवासन करना, साधना  
 देना, चुमकारना ।  
 चुचकारी दे० ( स्त्री० ) चुमकारी, फुसलाई ।  
 चुचाना दे० ( क्रि० ) छूना, टपकना, टपटपाना,  
 गिरना, बहना ।  
 चुच्चड़ दे० ( पु० ) बड़ी घूंसी, मोटा स्तन ।  
 चुच्च तत्० ( पु० ) मुनि विशेष ।  
 चुच्चक तत्० ( पु० ) भेंड़, मेप ।  
 चुटकी दे० ( स्त्री० ) नोंच, दो अङ्गुलियों के मिलने  
 से जो मुद्रा बनती है । मुठ्ठी भर अन्न, पत्र  
 रंगने के लिये बांध, जिससे कपड़ा सफेद हो

रह जाता है । एक प्रकार का गोटा, जिसे  
दिलियां भी कहते हैं । एक प्रकार का धूरन,  
सीए हुए कपड़े को फैलाना, स्त्रियों के शंभूटे  
में पहिनेने की शंभूटी । यथादे, सुटकी  
बजाना ।—चढ़ाना ( वा० ) रुपया पाखना ।  
शंभू लियों से कपड़ा चीरना ।—लगाना ( वा० )  
जेब काटना ।—लेना ( वा० ) दयाना, नींचना,  
आशा करना, गलाना, गरम करना, उपहास  
करना, काम करना, दिक् करना ।—में ( वा० )  
गोत्र, बहुत शीघ्र ।—बजाते में ( वा० ) शरपन  
गोत्र ।—यों में उड़ाना ( वा० ) हँसी में उड़ा  
देना ।—यों में काम होना ( वा० ) शीघ्र काम  
होना ।

सुटकुला दे० ( पु० ) संक्षिप्त, ठंडीले हँसीड़ी ।

सुटला दे० ( पु० ) सुटिया, लूड़ा, चीटी ।

सुटाना दे० ( क्रि० ) घाय करना, सुटेल करना,  
चोट करना, आक्रमण करना ।

सुटिया दे० ( पु० ) चीटी, चोरों का भेद जानने  
वाल ।

सुटियाना दे० ( क्रि० ) घाय करना, आक्रमण करना,  
चोटिल करना ।

सुटीला दे० ( पु० ) घायल, आहत, क्षत विक्षत ।

सुडीहरा दे० ( पु० ) ब्रह्मी बनाने और बेचने वाला,  
सुडिहार ।

सुडुवा दे० ( पु० ) चोखड़ा, चर्यण, चोखा ।

सुडैल दे० ( स्त्री० ) प्रेतिनी, डाकिनी, फूडइ ।

सुनसुनी दे० ( स्त्री० ) सुनलाहट, कपड़, कृमि, खजू ।

सुनत दे० ( स्त्री० ) सुनत, तह, परत, तल ।

सुनरी दे० ( स्त्री० ) साड़ी, स्त्रियों के पहिनेने का  
रङ्गोन वस्त्र ।

सुनाना दे० ( क्रि० ) हूंगाना, बिनयाना इँटे सुड-  
याना, इँटे सुनवा कर दवा देना, गाड़ देना,  
नोपना ।

सुनाघट दे० ( स्त्री० ) सुनत, तह, परत ।

सुनीटी दे० ( स्त्री० ) सूना रखने का पास, सूनादानी ।

सुनीती दे० ( स्त्री० ) दादस, आश्यास, सेना का हर्ष,  
हुलास ।

सुन्धला दे० ( पु० ) तिरमिरा, शकचींथा, नेवरोगी ।  
सुन्धलाना दे० ( क्रि० ) चौधवाना, तिरमिरा  
होना ।

सुन्धा दे० ( पु० ) नेत्र रोग विशेष ।

सुना दे० ( क्रि० ) सुगना, सुगनेना, सुनना, बिनना ।

सुखी दे० ( स्त्री० ) छोटी पद्याराग मणि, लकड़ी के  
छोटे छोटे टुकड़े ।

सुप दे० ( पु० ) निःशब्द, नीरव, मौन, धनबोल,  
गोपन, श्रवाङ् ।

सुपचाप दे० ( पु० ) निःशब्द, गुप्त, शब्द-रहित ।

सुपड़ना दे० ( क्रि० ) धिकनाना, मलना, मसलना ।

सुपाचुप दे० सुप होकर, गुप्तरूप से, शकस्मात्,  
सहसा ।

सुप्पी दे० ( स्त्री० ) मौनता, निःशब्दता, शब्दहीनता ।

सुमकी दे० ( स्त्री० ) दुश्की, सुडकी, गोता, श्रव-  
गाहन ।

सुभना दे० ( क्रि० ) सुभना, पैठना, बिधना,  
पिठना ।

सुमाना दे० ( क्रि० ) सुसेड़ना, पैठालना, छेदना,  
बँधना ।

सुमा तद्द० ( पु० ) सुन्धा, मध्वी, मिट्टी, शीठ से शीठ  
हूना ।

सुमाना तद्द० ( क्रि० ) सूमा दिलवाना, विवाद की  
एक तीति ।

सुमकार दे० ( पु० ) सुचकार शब्द, फुसलाना, आशवा-  
धन दंकर वग में करना ।

सुमकारना दे० ( क्रि० ) टिटकारना, फुसलाना, उच्चे-  
जन करना ।

सुम्बक तद्द० ( पु० ) एक प्रकार का लोहा, परथर  
विशेष, लोहा खींचने वाली एक धातु ।

सुम्बन तद्द० ( पु० ) सुप्रसंगी, सुम्बा, हुमा ।

सुम्बित तद्द० ( पु० ) कृत सुम्बन, सुम्बा लिया  
हुया ।

सुरकी दे० ( स्त्री० ) चिङ्ग, शिला, चीटी ।

सुरकुट दे० ( पु० ) फटा कपड़ा, शूरवार, धूरन,  
बुकनी ।



चीऊड़ा दे० ( पु० ) चुड़घा, चर्षण, चिपटा ।  
 चीक दे० ( पु० ) कीच, कीचड़, पांक ।  
 चीख दे० ( पु० ) गिह्वाड़, चिल्लाहट, स्वाद ।  
 चीखना दे० ( क्रि० ) चिल्लाना, चपना, स्वादलेना ।  
 चौखुर दे० ( पु० ) गिलहरी, कठयित्री ।  
 चीतना दे० ( क्रि० ) चाहना, इच्छा करना, मनोरथ  
 करना । चित्र बनाना, चित्र करना, चितेरना ।  
 चीतल दे० ( पु० ) तेंदुआ, चीता, बाघ, सर्प भेद ।  
 चीता दे० ( पु० ) चाद, इच्छा, मनोरथ, वृद्धि ।  
 बाघ, व्याघ्र, शेर ।  
 चीत्कार तह० ( पु० ) चिल्लाहट, चिह्वाड़, पुकार ।  
 चीथना दे० ( क्रि० ) चिभेड़ना, धकोटना, फाड़ना,  
 खरोचना ।  
 चीन तह० ( पु० ) देश विशेष, भारत के उत्तर  
 पूर्वस्थित देश, अन्न विशेष, जिसका मार्हा बनता  
 है ।  
 चीनी दे० ( स्त्री० ) छाड़, शकर, शर्करा, ( पु० )  
 चीन देश की वस्तु ।  
 चीन्हना तह० ( क्रि० ) पहचानना, परिचय (महावर)  
 करना, जानना ।  
 चीन्हा तह० ( पु० ) जानकार, परिचित,  
 पहचानता ।  
 चीपड़ दे० ( पु० ) शौख का मल, शौख का कीचड़ ।  
 चीर तह० ( पु० ) पेड़ की छाल, पुराने वस्त्र का  
 टुकड़ा, कपड़ा, साड़ी, खोच ।  
 चीरना दे० ( क्रि० ) फाड़ना, फाड़ डालना, टुकड़े  
 टुकड़े कर देना ।  
 चीरम दे० ( पु० ) चिरौंजी ।  
 चीरा दे० ( स्त्री० ) पगड़ी, फाड़ा, भोलापन,  
 मुग्धापन ।  
 चीरी दे० ( स्त्री० ) भींगुर, एक कोट विशेष ।  
 चीरैता दे० ( पु० ) भूमिन्व, औषधि विशेष ।  
 चीर्ण तह० ( पु० ) विदीर्ण, फटा हुआ, खचित ।  
 —पर्ण ( पु० ) निम्ब वृक्ष, पुराने पत्ते ।  
 चील दे० ( पु० ) एक पक्षी का नाम ।—भूपट्टा  
 मारना ( वा० ) बलात्कार से स्त्रीन सेना, भूपट्ट  
 लेना ।

चीलर दे० ( पु० ) डोलजूई, जूं, चीलड़ ।  
 चीवर तह० ( पु० ) संन्यासी का वस्त्र, कौपीन ।  
 चुआन दे० ( स्त्री० ) झरण, भरना, निकलना, बन  
 निकलने की भूमि ।  
 चुआना दे० ( क्रि० ) निकालना, टपकाना ।  
 चुकती दे० ( स्त्री० ) निपटारा, ममाग्नि, न्याय,  
 फैसला ।  
 चुकना दे० ( स्त्री० ) समाप्त होना, चुकता होना,  
 श्रम होना, घटना, नष्ट होना ।  
 चुकाई दे० ( स्त्री० ) चुकौती, चुकती, चुकौता ।  
 चुकाना दे० ( क्रि० ) निपटाना, मोल ठहराना ।  
 चुकौता दे० ( पु० ) निपटारा, नियम ।  
 चुकड़ दे० ( पु० ) कुल्हिया, पुरवा, भाड़, कुण्ड ।  
 चुकाड़ दे० ( पु० ) छोटी कुल्हिया ।  
 चुकौ दे० ( स्त्री० ) छल, धूर्ताई, धोखा, चार्दैन ।  
 चुकी दे० ( स्त्री० ) नियम, निरूपण, परिमित,  
 परिणाम, समाधान, निष्पत्ति, फैसला ।  
 चुक तह० ( पु० ) बूक, खट्टा, अम्लरस, खट्टा  
 अम्लशयक ।  
 चुगन दे० ( स्त्री० ) चुनन, बिनन, चुनत ।  
 चुगना दे० ( क्रि० ) टंगना, चुगना, बिनना ।  
 चुङ्गी दे० ( स्त्री० ) बन्धन, असदान, भिडा, एक  
 प्रकार का सरकारी कर, जो दूसरी जगह से आने  
 वाली नई वस्तुओं पर लगता है ।—घर ( पु० )  
 जहां चुङ्गी वसूल की जाती है ।  
 चुचकारना दे० ( क्रि० ) आश्वासन करना, शरणा  
 देना, चुमकारना ।  
 चुचकारी दे० ( स्त्री० ) चुमकारी, फुसलाई ।  
 चुचाना दे० ( क्रि० ) चूना, टपकना, टपटपाना,  
 गिरना, बहना ।  
 चुचड़ दे० ( पु० ) बड़ी चूंची, मोटा स्तन ।  
 चुञ्च तह० ( पु० ) मुनि विशेष ।  
 चुञ्चक तह० ( पु० ) भेंड़, मेथ ।  
 चुटकी दे० ( स्त्री० ) नोंच, दो अङ्गुलियों के मिला  
 से जो मुद्रा बनती है । मुट्टी भर अन्न, पत्त  
 रंगने के लिये बांध, जिससे कपड़ा सफेद ।

रह जाता है । एक प्रकार का गोटा, जिसे बिलियाँ भी कहते हैं । एक प्रकार का बूरन, सीए हुए कपड़े को फैलाना, खियों के थंगूटे में पहिने की शङ्खूठी । बयार्द, सुटकी बजाना ।—चढ़ाना (या०) रुपया पगलना । शङ्खूलियों से कपड़ा चीरना ।—लगाना ( या० ) जेब काटना ।—लेना (या०) दवाना, नौचना, चाशा करना, गलाना, गरम करना, उपहास करना, काम करना, दिक् करना ।—में ( या० ) शीघ्र, बहुत शीघ्र ।—यजाते में (या०) अत्यन्त शीघ्र ।—यों में उड़ाना (या०) हँसी में उड़ा देना ।—यों में काम होना (या०) शीघ्र काम होना ।

सुटकुला दे० (पु०) संचिम, ठटेलो हँसोड़ी ।  
 सुटला दे० (पु०) सुटिया, बूढा, छोटी ।  
 सुटाना दे० (क्रि०) घाव करना, चुटैल करना, चोट करना, चाक्रमण करना ।  
 सुटिया दे० (पु०) छोटी, चोरों का भेद जानने वाला ।  
 सुटियाना दे० (क्रि०) घाव करना, चाक्रमण करना, चोटिल करना ।  
 सुटोला दे० (पु०) चापल, आहत, रात विघ्नत ।  
 सुडोहरा दे० (पु०) बूझी बनाने और बेचने वाला, बुद्धिहार ।  
 सुडुवा दे० (पु०) चोऊड़ा, चर्यण, चोडा ।  
 सुडैल दे० (स्त्री०) प्रतिनी, वाकिनी, फूहड़ ।  
 सुनसुनी दे० (स्त्री०) खजलाहट, कपड़, कुमि, खजू ।  
 सुनत दे० (स्त्री०) सुनत, तह, परत, तल ।  
 सुनरी दे० (स्त्री०) साड़ी, खियों के पहने का रङ्गोन बख ।  
 सुनाना दे० (क्रि०) दूगाना, बिनयाना इँटे सुड़याना, इँटे सुनवा कर दवा देना, माड़ देना, तोपना ।  
 सुनावट दे० (स्त्री०) सुनत, तह, परत ।  
 सुनौटी दे० (स्त्री०) नूना रफने का वाम, नूनागानी ।  
 सुनौती दे० (स्त्री०) दादस, आश्राव, सेना का हर्ष, हुलास ।

सुन्धला दे० (पु०) तिरमिरा, चक्कीघा, नेत्ररोगी ।  
 सुन्धलाना दे० (क्रि०) बोधियाना, तिरमिरा होना ।  
 सुन्धा दे० (पु०) नेत्र रोग विशेष ।  
 सुन्ना दे० (क्रि०) चुगना, चुगलेना, चुनना, बिनना ।  
 सुन्नी दे० (स्त्री०) छोटी पथराग मणि, लकड़ी के छोटे छोटे टुकड़े ।  
 सुप दे० (पु०) निःशब्द, नोरव, मौन, अनशोल, गोपन, शवाक् ।  
 सुपचाप दे० (पु०) निःशब्द, गुप्त, शब्द-रहित ।  
 सुपड़ना दे० (क्रि०) चिकनाना, मलना, मसलना ।  
 सुपाचुप दे० चुप होकर, गुप्तरूप से, शकस्मात्, सहसा ।  
 सुप्पी दे० (स्त्री०) मौनता, निःशब्दता, शब्दहीनता ।  
 सुभकी दे० (स्त्री०) बुझकी, सुड़की, गोता, शव-गाहन ।  
 सुभना दे० (क्रि०) चुसना, पैठना, बिधना, छिदना ।  
 सुभाना दे० (क्रि०) चुसेड़ना, पैठालना, खेदना, धँधना ।  
 सुमा तद् दे० (पु०) सुम्वा, मर्ब्बा, मिट्टी, चोट से चोट हूना ।  
 सुमाना तद् दे० (क्रि०) सूमा दिलवाना, विवाह की एक रीति ।  
 सुमकार दे० (पु०) सुभकार शब्द, कुसलाना, आरवा-सन हँकर वश में करना ।  
 सुमकारना दे० (क्रि०) टिटकारना, कुसलाना, उर्न-जन करना ।  
 सुम्बक तद् दे० (पु०) एक प्रकार का लोहा, पर्यट विशेष, लोहा खींचने वाली एक धातु ।  
 सुम्बन तद् दे० (पु०) मुखसंयोग, सुम्बा, ब्रूमा ।  
 सुम्बित तद् दे० (पु०) कृत सुम्बन, सुम्बा लिया हुआ ।  
 सुरकी दे० (स्त्री०) चिकुर, शिपा, छोटी ।  
 सुरकुट दे० (पु०) फटा कपड़ा, फूटार, बूरन, बुकनी ।

चुरगाना दे० (क्रि०) बकना, चिखाना, चेंचें करना ।

चुरमुरा दे० (गु०) चुर चुर करने वाला, चर्षण विशेष ।

चुराना दे० (क्रि०) चोरी करना, अपहरण करना, ारना ।

चुरी दे० (स्त्री०) बूड़ी, काच की कगनी ।

चुरगाना दे० (क्रि०) बडबडाना, बकना ।

चुर्त दे० (स्त्री०) तन्द्रा, आलस, ऊँच, ऊँचाई ।

चुल दे० (स्त्री०) खुजलाहट, खुजली, धाज, कपडू ।

चुलकना दे० (क्रि०) चिलचिलाना, चुलचुल करना, बुजाना ।

चुलचुल दे० (गु०) चञ्चलता, चपलता ।

चुलचुलाना दे० (क्रि०) गुदगुदाना, कुलचुलाना, बुजलाना, चुलचुल करना ।

चुलचुला दे० (गु०) चञ्चल, चतुर, चपल, देश-कालज्ञ ।

चुलचुलाहट दे० (स्त्री०) चञ्चलता, छटपटिया ।

चुलचुलिया दे० (गु०) चुलचुला, चञ्चल ।

चुलहाई दे० (गु०) कामातुर, कामी, लम्पट, व्यभिचारी ।

चुलहारा दे० (गु०) कामुक, कामातुर ।

चुलाना दे० (क्रि०) टपकाना, गिराना ।

चुन्ला दे० (गु०) चुन्धला, चुन्धा, तिरमिरा ।

चुल्लू दे० (गु०) पसर, पसरभर, एक हाथ का घन्मुटाकार ।

चुसकी दे० (स्त्री०) मुँह भर, मुँह भर पानी ।

चुसकर दे० (गु०) पियल्लू, खूब पीने वाला, अधिक नूतनेवाला ।

चुस्सी दे० (स्त्री०) किसी फल का रस ।

चुहचुहा दे० (गु०) शोभायमान, मनोहर, गहरा रङ्गा गया ।

चुहचुहाना दे० (क्रि०) अधिक रङ्ग, पक्षियों का चुह चुह करना ।

चुहल दे० (स्त्री०) चर्चा, चर्हण पहल, ठट्ठा, आनन्द मे उन्मत्तता ।

चुहला दे० (गु०) मसखरा, ठठोला, हँसोह ।

चुहली दे० (गु०) देखो चुहला ।

चूचहाट दे० (स्त्री०) चिड़िया का शब्द ।

चूचो दे० (स्त्री०) कुच, स्तन, यन, भिदनी, पयोधर ।

चूटा दे० (गु०) चोंटा, कोड़ा विशेष जो जमीन में रहता है ।

चूठना दे० (क्रि०) तोड़ना, नष्ट करना, फोड़ना, बकोटना ।

चूथाना दे० (क्रि०) चुलाना, चुथाना, निकालना, फारना ।

चूक दे० (स्त्री०) भूल, धम, अज्ञात, अपराध, खट्टा ।

चूकना दे० (क्रि०) भूल जाना, धम करना, मन्त्र भ्रम होना ।

चूका दे० (गु०) भूला, भ्रान्त, राक्ष भट्ट । (गु०) इस नाम का एक खट्टा शाक ।

चूड तद् दे० (गु०) आभरण विशेष, सोना या चादी की बूड जिसे विधवा पहनती है । हाथी के दाँतों में पहिनाने की बूडी, खाट की पाठी का बिया या नोक ।

चूडा तद् दे० (स्त्री०) मयूर शिखा, सिर के बीच की शिखा, बाहु भूषण, मस्तक, मस्तकस्थ, बन्धाकेण । दशविध सस्कारान्तर्गत सस्कार विशेष, सुखन । यह सस्कार विषम वर्ष ही में होता है । यथा प्रथम तृतीय और पञ्चम ।—करण (गु०) सस्कार विशेष, सुखन,।—मणि (गु०) शिरोरत्न, शिरोभूषण, आलङ्कार विशेष । (गु०) प्रधान, श्रेष्ठ, मान्य । —मणियोग (गु०) जब रविवार को सूर्यग्रहण अथवा सोमवार को सूर्यग्रहण हो, तब यह योग लगता है ।

चूडी दे० (स्त्री०) आभूषण विशेष, इस आलङ्कार का पहनना सधवा का चिन्ह है ।

चूतड दे० (गु०) नितम्ब, जंचा का ऊपरी भाग, पुट्टा ।

चूतिया दे० (गु०) उल्लू, उल्लूक, नासमझ ।

चून दे० (५०) गेहूँ का चून, चाटा, पिसान, पीसो वस्तु ।

चूना दे० (५०) चूर्ण जो कङ्कड़ पत्थर या सीप को जला कर बनाते हैं, जो मकान बनाने या पोतने के काम में आता है । (क्रि०) टपकना, भरना गिरना ।—लगाना (वा०) निन्दा करना, लाञ्छन लगाना, अपवाद करना, दुष्कीर्ति करना ।

चूनी दे० (स्त्री०) भ्रू को छुट्टी, केराई, चावल आदि की कणिका ।

चूने दे० (५०) टीस, बय्या, चमक, वेदना, दर्द, पीड़ा ।

चूना तद्० (क्रि०) चूमा लेना, मिट्टी लेना, प्रेम करना ।

चूना तद्० (५०) चुम्बन, चुम्ब्या, मिट्टी, मछी ।

चूर तद्० (५०) चूर्ण, चुकनी, मुरभुरा, खण्ड खण्ड किया हुआ—चूर (वा०) टूक टूक, खण्ड खण्ड ।

—रहना (वा०) मस्त रहना, मग रहना, दुबे रहना, अतिशय आसक्त होना ।—करना (वा०) टुकड़े टुकड़े करना, दधाना ।—होना (वा०) फटना, आसक्त होना ।

चूर तद्० (५०) चूर, चूर्ण, पाचक, पाचक को ओपधि ।

चूर दे० (५०) रेत, मुरभुरा, चूर, रेतन, घुराटा ।

चूरी दे० (स्त्री०) घी चुपड़ी हुई रोटी, चूड़ी, चियों का गहना विशेष ।

चूरा तद्० (५०) चूर, चुकनी, रेणु, धूलि, रेत, चूना, चाटा पिसान, चूरन, सक्कु, सकुथा ।—कार (५०)

चूना बनाने वाला, यणसङ्कर जाति विशेष ।

—कुन्तल (५०) अलक, जुरन, केश चिन्त्यस विशेष ।

चूनी तद्० (५०) चुकनी, रेणु, धूली, चूरन करना, चुकनी बनाना, चुकना ।

चूनीका तद्० (स्त्री०) पशु, पशुआ, चूरन, एक जन्तु का नाम, संक्षेप, श्री मन्त्रागत को एक टीका का नाम, फुटकल धातें, पुष्पिका कूट ।

चूर्मा दे० (५०) मिठाई विशेष, घी भीनी मिलाया हुआ धाटी का चूरा । चूर्मा लड्डू ।

चूल दे० (५०) लकड़ी का जोड़ना, कील, लोहे का एक कोला जो किवाड़ को चौखट से सटाये रहता है ।

चूल्हा दे० (५०) मिट्टी की बनी यह वस्तु जिसमें आग रखकर रोमाई बनाते हैं ।

चूल्ही दे० (स्त्री०) छोटा चूल्हा ।

चूचना दे० (क्रि०) चुचना, भरना, टपकना, भरना ।

चूसना दे० (क्रि०) पीलेना, खींचलेना, बूसलेना ।

चूसनी दे० (स्त्री०) छनना, छानने का कपड़ा ।

चूहड़ दे० (५०) छिपकर लक्ष्यवेध करना, छोट में छिपकर करना ।

चूहड़ा दे० (५०) मेहतर, भंगी, अधम जाति, (स्त्री०) चूहड़ी भङ्गिन ।

चूड़ना दे० (क्रि०) चूसना, चूसलेना, चोड़ना ।

चूड़ा दे० (५०) मुपिक, मूसा, इन्दुर ।—चूही छोटा मूस, मुपिका, मूसे की स्त्री ।

चेंचपेंच दे० (वा०) कचबच, चिचपिच, शोरगुल ।

चेंची दे० (स्त्री०) बूई रखने का घर ।

चेंचें दे० (वा०) चुहचुहाना, चेंचें करना, चूँचा, पहियों का शब्द ।

चेंचपड़ दे० (वा०) नाकारजुक, स्पष्ट नहीं कहना, चिचविचाना, धोखा देना, दाक्षायित चित्त ।

‘यया चेंचपड़ करने मे क्या लाभ’, ‘सच्ची बात कह दो, अभी तो यह चेंचपड़ कर रहा है ।’

‘‘उसका चेंचपड़ एक न चलेगा ।’’

चेंडा दे० (५०) पीपन, पुषा शवस्य, छोटा, जवान, युवा ।

चेंप दे० (५०) गोंद, लासा, चिय, चिचकने वाली वस्तु, लसलासा वृक्ष का फल ।

चेट तद्० (५०) क्रीतदास, दास, भृत्य, कर्मकर, नीकर, सेवक, चेला, लौंटा, नफर, नाटकों में मसखरे को चेट कहते हैं ।

चेटक तद्० (५०) दास, भृत्य, उपपति, नायक विशेष, इन्द्रनाल चिन्दा, ठगने की विद्या ।

चेड़ा तद्० (५०) दास, भृत्य, चेला ।

चेत तद्० (५०) चित्त, अन्तःकरण, मन, बुद्धि, स्मरण, मुध, मुधि ।

चुरगाना दे० (क्रि०) बकना, चिरगाना, चेंचें करना ।  
 चुरमुरा दे० (गु०) चुर चुर करने वाला, चर्षण विशेष ।  
 चुराना दे० (क्रि०) चोरो करना, अपहरण करना, रटना ।  
 चुरो दे० (स्त्री०) बूड़ी, काच की कंगनी ।  
 चुरगना दे० (क्रि०) थडथड़ाना, बकना ।  
 चुर्त दे० (स्त्री०) तन्द्रा, भालस, ऊँघ, ऊँघाई ।  
 चुल दे० (स्त्री०) खुजलाहट, खुजली, खाज, कपटू ।  
 चुलकना दे० (क्रि०) चिलचिलाना, चुलचुल करना, बुजाना ।  
 चुलचुल दे० (पु०) चञ्चलता, चपलता ।  
 चुलचुलाना दे० (क्रि०) गुदगुदाना, कुलबुलाना, खुजलाना, चुलचुल करना ।  
 चुलचुला दे० (गु०) चञ्चल, चतुर, चपल, देश-कालज्ञ ।  
 चुलचुलाहट दे० (स्त्री०) चञ्चलता, छटपटिया ।  
 चुलचुलिया दे० (गु०) चुलचुला, चञ्चल ।  
 चुलहाई दे० (गु०) कामातुर, कामी, लम्पट, व्यभिचारी ।  
 चुलहारा दे० (गु०) कामुक, कामातुर ।  
 चुलाना दे० (क्रि०) टपकाना, गिराना ।  
 चुन्ला दे० (गु०) चुन्धला, चुन्धा, तिरमिरा ।  
 चुल्लू दे० (पु०) पसर, पसरभर, एक हाथ का सम्पुटाकार ।  
 चुसकी दे० (स्त्री०) मुँह भर, मुँह भर पानी ।  
 चुसकर दे० (गु०) पियङ्गु, खूब पीने वाला, अधिक बूबनेवाला ।  
 चुस्सी दे० (स्त्री०) किसी फल का रस ।  
 चुहचुहा दे० (गु०) शोभायमान, मनोहर, गहरा रङ्गा गया ।  
 चुहचुहाना दे० (क्रि०) अधिक रङ्ग, पत्तियों का चुह चुह करना ।  
 चुहल दे० (स्त्री०) चर्चा, चहल पहल, ठट्ठा, आनन्द में वनमत्तता ।

चुहला दे० (गु०) मसखरा, ठठोला, हँसोड ।  
 चुहली दे० (गु०) देखो चुहला ।  
 चुचहाट दे० (स्त्री०) चिड़ियों का गद्य ।  
 चुँची दे० (स्त्री०) कुच, स्तन, यन, भिटनों, पयोधर ।  
 चुटा दे० (पु०) चाटा, कोड़ा विशेष जो ज़मीन में रहता है ।  
 चुँटना दे० (क्रि०) तोड़ना, नष्ट करना, फोड़ना, बकौटना ।  
 चुम्राना दे० (क्रि०) जुलाना, चुशाना, निशाना, झारना ।  
 चुक दे० (स्त्री०) भूल, भ्रम, अज्ञात, अपराध, खटा ।  
 चुकना दे० (क्रि०) भूल जाना, भ्रम करना, भ्रष्ट होना ।  
 चुका दे० (गु०) भूला, भ्रान्त, लक्ष्य भ्रष्ट । (पु०) इस नाम का एक खट्टा शाक ।  
 चुड़ तड़ (पु०) आभरण विशेष, सोना या चाँदी की बूड़ जिसे विधवा पहनती है । हाथी के दाँतों में पहिनाने की बूड़ी, खाट की पाटी का सिपा या नोक ।  
 चुड़ा तत (स्त्री०) मयूर शिखा, सिर के बीच की शिखा, बाहु भूषण, मस्तक, मस्तकस्थ, वन्याकेट । दशविध संस्कारान्तर्गत संस्कार विशेष, मुखन । यह संस्कार विषम वर्ष ही में होता है । यथा प्रथम तृतीय और पञ्चम ।—करण (पु०) संस्कार विशेष, मुखन ।—मण्डि (पु०) शिरोरत्न, शिरोभूषण, अलङ्कार विशेष । (गु०) प्रधान, अष्ट, मान्य ।—मण्डियोग (पु०) जब रविधर को सूर्यग्रहण अवधाय सोमधर को सूर्यग्रहण हो, तब यह योग लगता है ।  
 चुड़ी दे० (स्त्री०) आभूषण विशेष, इस अलङ्कार का पहनना सधवा का चिन्ह है ।  
 चुतड़ दे० (पु०) नितम्ब, अंचा का ऊपरी भाग, पुट्टा ।  
 चूतिया दे० (पु०) उल्लू, उजवक, नासमक ।

चून दे० (५०) गेहूँ का चूरन, आटा, पिसान, पीसी वस्तु ।

चूना दे० (५०) चूर्ण जो कड़क पत्थर या खोप को जला कर बनाते हैं, जो मकान बनाने या चोतने के काम में आता है । (क्रि०) टपकना, भरना गिरना ।—लगाना (वा०) निन्दा करना, लाज्जित लगाना, अपवाद करना, दुष्कीर्ति करना ।

चूनी दे० (खी०) अन्न की छुट्टी, केरार्द, चावल आदि की कणिका ।

चूम दे० (५०) टीस, छप्या, चमक, वेदना, दर्द, पंहा ।

चूमना तद्० (क्रि०) झूमा लेना, मिट्टी लेना, प्रेम करना ।

चूमा तद्० (५०) चुम्बन, चुम्बा, मिट्टी, मछी ।

चूर तद्० (५०) चूर्ण, चुकनी, भुरभुरा, खण्ड खण्ड किया हुआ—चूर (वा०) टुक टुक, खण्ड खण्ड ।—रहना (वा०) मस्त रहना, मग्न रहना, जुबे रहना, अतिशय आसक्त होना ।—करना (वा०) टुकड़े टुकड़े करना, दखाना ।—हीना (वा०) फसना, आसक्त होना ।

चूरण तद्० (५०) चूर, चूर्ण, पाचक, पाचक की औषधि ।

चूरा दे० (५०) रेत, भुरभुरा, चूर, रेतन, बुरादा ।

चूरी दे० (खी०) चो चुपड़ी हुई रोटी, रूड़ी, खियों का गहना विशेष ।

चूर्ण तद्० (५०) चूर, चुकनी, रेणु, धूलि, रेत, चूना, आटा पिसान, चूरन, सक्त, वस्तुआ ।—फार (५०) चूना बनाने वाला, वर्णसङ्कर जाति विशेष ।—कुन्तल (५०) अलक, सुहस, केश विन्यास विशेष ।

चूर्णां तद्० (५०) चुकनी, रेणु, धूलि, चूरन करना, चुकनी बनाना, चुफना ।

चूर्णिका तद्० (खी०) पगु, मगुआ, चूरन, एक छन्द वा नाम, संक्षेप, श्री मङ्गागशत को एक टीका का नाम, फुडकल धार्ते, बुद्धिना कृत ।

चूर्मां दे० (५०) मिठाई विशेष, श्री सीती मिलाया हुआ ब्राटी का चूर । चूर्मां रूह ।

चूल दे० (५०) लकड़ी का जोड़ना, कील, लोहे का एक कीला जो किराड़ की चौखट से सटाये रहता है ।

चूल्हा दे० (५०) मिट्टी की बनी यह वस्तु जिसमें आग रखकर रोलाई बनाते हैं ।

चूल्ही दे० (खी०) छोटा चूल्हा ।

चूवना दे० (क्रि०) चुम्बना, भरना, टपकना, भरना ।

चूसना दे० (क्रि०) पीलेना, खींचलेना, चुसलेना ।

चूसनी दे० (खी०) छनना, छानने का कपड़ा ।

चूह दे० (५०) छिपकर सत्यवैध करना, थोट में शिकार करना ।

चूहड़ा दे० (५०) मेहतर, भंगी, अधम जाति, (खी०)

चूहड़ी भङ्गिन ।

चूहना दे० (क्रि०) झूसना, झूसनेना, चचीड़ना ।

चूहा दे० (५०) मुषिक, झूमा, इन्दुर ।—चूही

छोटा मुस, मुषिका, झूसे की स्त्री ।

चेंचपड़ दे० (वा०) कचवच, चिचपिच, गोरगुल ।

चेंची दे० (खी०) चूई रखने का घर ।

चेंचें दे० (वा०) पुहपुहाना, चेंचें करना, चूँचा,

पक्षियों का शब्द ।

चेंचपड़ दे० (वा०) नाकारतुकर, स्पष्ट नहीं कहना,

चिचपिचाना, घोषा देना, दासायित चित्त ।

‘यहा चेंचपड़ करने मे क्या लाभ’, ‘सबो धात

जह दो, सभी तो यह चेंचपड़ कर रहा है ।’

‘उसका चेंचपड़ एक न चलेगा ।’

चैंडा दे० (५०) पीयन, पुषा अवस्था, छोटा, जवान,

पुषा ।

चैंप दे० (५०) गोंद, लासा, चिय, चिपकने वाली

वस्तु, लसलसा वृक्ष का फल ।

चेट तद्० (५०) क्रोतदाघ, दाघ, भृष्य, कर्मकार,

नोकर, वेधक, चेना, लौंडा, नजर, नाटकों में

मसतारे की चेट कहते हैं ।

चेटक तद्० (५०) शम, भृष्य, उपपति, नायक

विशेष, इन्द्रतास विद्या, ठगने को विद्या ।

चेड़ा तद्० (५०) दाघ, भृष्य, चेना ।

चेत तद्० (५०) चित्त, एजाकरण, धन, बुद्धि,

मरणा, सुध, बुधि ।

से और भी उद्भूत शक्ति पाये जाते हैं, इसीसे विद्वानों का अनुमान है कि इन्होंने और भी कोई ग्रन्थ बनाये होंगे। चौरपञ्चाशिका निर्माण का हेतु बड़ा ही अद्भुत सुना जाता है। गुजरात के राजा वीरसिंह की पुत्री शशिकला को यह पढाते थे, उसकी सुन्दरता पर यह मोहित हो गये। इनका गान्धर्व विवाह भी हो गया। इसको सुन कर राजा ने इनको बध करने को आज्ञा दी। बध्य स्थान तक पहुँचते पहुँचते, अपनी प्रेमिका के वर्णन में इन्होंने पचास श्लोक बना डाले। इनकी काव्य रचना का हाल सुन कर राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ। इस अद्भुत शक्ति और सुदृढ प्रेम को देख कर राजा ने अपनी लड़की विश्वरूप को त्याग दी। ये कल्याण के राजा विक्रमादित्य की सभा के पण्डित थे। इनका समय ११ वीं सदी का अन्तिम और बारहवीं सदी का आदिम काल निश्चित जान पड़ता है।

चौरी तह् ( खी० ) चोर की खी, चोरी करने वाली खी, अग्रहरण, हरना, चोरी करना।

चोल तह् ( पु० ) ओषध विशेष, मजीठ, एक देश का नाम, यह देश कावेरी नदी के किनारे पर है। इस समय मैसूर राज्य का दक्षिण भाग। चोल देश को कर्नाटक भी कहते हैं।

चोला दे० ( पु० ) अङ्गा, अंगरथा, वस्त्र विशेष, काय, शरीर, यथा—यमुनादास ने चोला बदल दिया, अर्थात् उनका शरीरान्त हो गया, अथवा उन्होंने कपड़े बदल दिये।

चोली दे० ( खी० ) अँगिया, कुत्ता, झूता।

चोवा दे० ( पु० ) चोखा, अर्गजा, सुगन्धित द्रव्य विशेष।

चोपण तह् ( पु० ) [ चुप् + अतद् ] झुसना, चाभना, रस का स्वाद लेना।

चोप्य तह् ( पु० ) [ चुप् + य ] झुसने योग्य, चाभने योग्य, रस लेने योग्य, छः प्रकार के भोजन के अन्तर्गत एक प्रकार का भोजन।

चोहड दे० ( पु० ) जपडा, हनु, ठोटी, गले का कपरी भाग।

चोहला दे० ( पु० ) खोंचा, चोभा, कोपा, कील।  
चोहाड दे० ( पु० ) एक पहाड में रहने वाली जाति।  
चौ दे० ( पु० ) चार संख्या, ४, पिछने दात, वृक्ष हल का फाल।

चौअग्नी दे० ( खी० ) चौअग्नी, चार आना, १) कुडी, रुपये का चौथाई भाग।

चौक दे० ( खी० ) किभक, भटक, घायल, बक समात् जानना, अचम्भा।

चौकना दे० ( क्ति० ) किभकता, ठिठकता, अचम्भा करना, अवरज करना, आश्चर्यित होना।

चौकैल दे० ( पु० ) किभकने वाला, भटकने वाला, यनेला, जङ्गली।

चौंगा दे० ( ए० ) कपट, छल, ठगना, फुसलाहट।

चौंगो दे० ( खी० ) फुसलाहट, छल, कपट।

चौङ दे० ( पु० ) मूढ, निर्बोध, अतसक, बेतमक।

चौतरा दे० ( पु० ) चवतरा, चोटा, थाना, अपारं, चौपाड।

चौतीस दे० ( पु० ) संख्या विशेष, चार अधिक तीस, ३४।

चौंध दे० ( पु० ) आँस, तिरमिराना, साक साक नहीं दीखना।

चौंधियाना दे० ( क्ति० ) ठपाकुन होना, चढडाना, उद्विग्न होना।

चौरा दे० ( पु० ) अन्न का तलघर, खाद, अन्न रखने के लिये ज़मीन में किया हुआ गड्डा।

चौरौ दे० ( खी० ) चवरो, छेटा चँवर, चामर, राजचिन्ह विशेष।

चौरसर दे० ( पु० ) खेल विशेष, चौपड, यह खेल पासों से खेला जाता है, जुए का एक भेद, फूर्त्तों की माला।

चौक दे० ( पु० ) बाज़ार, हाट, पैठ, चौराहा, चागन, अँगना, चौदहा, मूदही।

चौकड दे० ( पु० ) सुन्दर, मनोहर, उत्तम, रमणीय, अष्ट, मला, यली, दलवाह, दृष्ट पुष्ट।

चौकडा दे० ( पु० ) ध्रुवण विशेष, दो मोतियों का थाला, जिसे लडके कानों में पहनते हैं। कर्ण ध्रुवण।

चौकड़ी दे० (खो०) उखल कूद, फलांग, उखाल ।  
 —भरना (वा०) कूद कूद कर चलना, जैसे हरिण चलते हैं । उखलना, कूदना ।—भूलना (वा०) अपना काम भूलना, मोह में पड़ जाना, किसी काम से हाथ खींच लेना, कर्तव्यव्युत्त होना, विचित्र हो जाना । मार बैठना (वा०) चारों पैर मोड़ कर बैठना, पशुओं का सुवासन, सङ्कुचित हो कर बैठना, सिमित कर बैठना ।  
 चौकला दे० (गु०) सतर्क, सावधान, चौकस, सचेत, निपुण, जाग्रत, जागा हुआ, सचेत, उद्योगी ।  
 चौकपूरना दे० (वा०) वेदो बनाना, कुल परम्परा के व्यवहारानुसार वेदों पर बेल बूटें बनाना ।  
 चौकभरना दे० (वा०) विवाह आदि मङ्गल कार्यों में चौक बनाना, चौक को मिटाई से भरना ।  
 चौकस दे० (गु०) सावधान, चौकला, सतर्क, लगा रहना । यथा “दोनेय अपने काम में चौकस है” ।  
 चौकसाई दे० (खो०) सावधानी, सतर्कता ।  
 चौकसी दे० (खो०) धुन, रचा, कर्तव्यज्ञान ।  
 चौका दे० (गु०) लोपा हुआ स्थान जहां रसोई बनानी जाती है, चौखूटा स्थान, चौकोनी भूमि, रसोई बनाने या प्राङ्गणों के मन्थ्या करने का स्थान ।  
 चौकी दे० (खो०) चौकोनी फाट की बनी हुई वस्तु, रखा, पहरा, चौकसी, चौकीदारों के रहने का स्थान, भूषण विशेष जिसे लड़के या बच्चों गले में पहनते हैं ।—दार (गु०) चौकी देने वाला, रखा करने वाला, पहरेवा ।—दारी (खो०) चौकीदारी की मजूरी, चौकीदार की तमझाह ।  
 —देना (क्रि०) रखशरी करना, रखा करना, पहरा देना ।—मारना (क्रि०) छिपकर महभूली को न बुकाना, महभूल मारना ।  
 चौकोना दे० (गु०) चतुष्कोण, चौखूटा, चार कोने का ।  
 चौकोर दे० (गु०) चौकोना ।  
 चौखट दे० (गु०) द्वार के चारों ओर का फाट, द्वार का दांचा ।  
 चौखूटा दे० (गु०) चौकोना, चौकोरा, चारकोना, चतुष्कोण ।

चौगड़ा दे० (गु०) खरहा, शयक, खरगोश, शव ।  
 चौगान दे० (गु०) बगीचा, उद्यान, जनहीन स्थान, निर्जन भूमि, एक खेल विशेष, गेंद खेलने का स्थान ।  
 चौगानी दे० (खो०) हुक्रे की नली जो सीधी होती है ।  
 चौगुना, चारगुना दे० (गु०) एक को चार बार करना, चतुर्गुण ।  
 चौघड़ा दे० (गु०) पात्र विशेष, जिसमें चार घर या चार छूट हों ।  
 चौड़ दे० (गु०) नष्ट, सड़ा, बिगड़ा हुआ, उतरा हुआ ।—चपेट (गु०) निकाला हुआ, दुष्ट, त्यक्त, सत्र समाप्त बहिष्कृत ।  
 चौड़ा दे० (गु०) विस्तार, फैलाव, फरमाई, चौड़ाई, प्रस्थ, चकला ।  
 चौड़ाई दे० (खो०) पाट, चकलाई, फैलाव, विस्तार, विस्तृति ।  
 चौड़ान दे० (गु०) विस्तार, फैलाव ।  
 चौड़ाना दे० (क्रि०) चकलाना, फैलाना, विस्तृत करना, चौड़ा करना ।  
 चौडोल दे० (गु०) पालकी विशेष, चौपलिया पालकी ।  
 चौतनी दे० (खो०) चौखूटी टोपी ।  
 चौतरफा दे० (गु०) पट मफलद, दक्ष ग्रह, तम्बू, पाष, रावटी ।  
 चौतरा दे० (गु०) चौतरा, बहुतरा ।  
 चौतारा दे० (गु०) बाघ विशेष, चार तार का बाजा, यह तम्बूरे के समान होता है ।  
 चौताल दे० (गु०) रागिनी विशेष ।  
 चौथ दे० (गु०) चतुर्थी, चौथा हिस्सा, चित्तराज, एक प्रकार का कर जो मराठों के जमाने में लिया जाता था ।  
 चौथा दे० (गु०) चतुर्थी, चार संख्या की प्रति, चौथा ।—पन (गु०) चौथी अवस्था, बुढ़ाई ।  
 चौथाई दे० (खो०) चौथा हिस्सा, चौथा मार ।  
 चौथि दे० (खो०) चतुर्थी तिथि ।



चौथिया दे० (५०) चौथे भाग का मालिक, चौथ लेने वाला ।—उत्रर (५०) चौथे दिन आने वाला उत्रर, चातुर्थीक उत्रर ।

चौथी दे० (५०) चौथा भाग, चतुर्थी तिथि ।

चौदन्त दे० (५०) चार दांत का बच्चा, पशुओं की अत्रस्या विशेष, बली, हृष्ट, पुष्ट ।

चौदन्ती दे० ( स्त्री० ) शूद्रता, घोरता, दलता, निपुणता ।

चौदस तद्द० ( स्त्री० ) चतुर्दशी, चोदहवी तिथि ।

चौदह दे० (५०) चतुर्दश, संपग विशेष, १४ ।

चौदानिया, चौदानो दे० ( स्त्री० ) कर्ण भूषण विशेष, जिसमें चार मोती लगाये जाते हैं ।

चौधर दे० (५०) बलवान्, बली, मोटा ताज़ा, हृष्ट पुष्ट ।

चौधराई दे० ( स्त्री० ) चौधरी का काम, प्रधानता, मेठी, मेठपन, मुखियापन, अग्रुआयन, नेतृत्व ।

चौधरी दे० (५०) समाज का अग्रुग्रा, नेता, प्रधान, सरपञ्च, बाज़ार का मुखिया, अहूँ का मुखिया ।

चौपट दे० (५०) उजाड़, नष्ट, बरबाद, टूटा फूटा ।  
—करना ( वा० ) उजाड़ना, उजाड़ देना, नष्ट करना, बिगाड़ना ।

चौपड़ दे० (५०) चौंवर, खेल विशेष, पाँसों का खेल, चूत ।

चौपतिया, चौपत्ती दे० ( स्त्री० ) छोटी पुस्तक, लिखने की छोटी कांपी, हथबही ।

चौपहला दे० (५०) चौपाला, चारो ओर से समान, वह वस्तु जिसकी लम्बाई चौड़ाई बराबर हो ।

चौपाई दे० ( स्त्री० ) हिन्दी का एक छन्द, इसमें चार पाद होते हैं । यथा—“मङ्गलमवन, अमङ्गलहारी, ब्रह्म सुदशरथ अजिरविहारी ।”  
—रामायण

चौपाड़ दे० (५०) धैरक, बैठका, गृह विशेष ।

चौपाया दे० (५०) पशु जन्तु, चार पैर के जन्तु, अट्का, खटिया ।

चौपाला दे० (५०) पालकी, चौहोला, यान विशेष ।

चौबच्चा दे० (५०) चोकोना गड़ग, फुख, कृत्रिम फुपर ।

चौवारा दे० (५०) उमारा, दावा ।

चौबोस दे० (५०) चार अधिक बीस, चार बीस, २४ ।

चौवे दे० (५०) चतुर्वेदी, चतुर्वेदवाता, ब्राह्मणों की एक अन्न, मायुर ब्राह्मण ।

चौमासा दे० (५०) पावस, वर्षाकाल, चतुर्मास, आषाढ से कुआर तक के चार महीने ।

चौमुख दे० (५०) चार मुंह वाला, चौमुहा, चार बतियों का दिया, वह मकान जिसमें चारो ओर द्वार हों ।

चौमुखी दे० ( स्त्री० ) रुद्राक्ष का फल, देवी, चार मुख वाली दुर्गा ।

चौर तत्० (५०) चोर, चोरी करने वाला ।—कर्म (५०) चोर का काम, चोरी करना, अपहरण करना ।—भय (५०) चोर का भय, चोर से डर ।

चौरङ्ग दे० (५०) चित्त, उतान, चार अङ्ग, दौंय पेच ।

चौरस दे० (५०) समान, मुख्य, समभूमि, बराबर, एकसा, एक सूध, एक वृत्त में, सीधा ।

चौरसाई दे० ( स्त्री० ) समता, बराबरी, मुख्यता, सीधाई ।

चौरा दे० (५०) चहूतरा, सती की चिता, वीरों की चिता, ग्राम, देवता का स्थान ।

चौरानवे दे० (५०) नब्बे ओर चार, चार अधिक नब्बे, ८४ ।

चौरासी दे० (५०) असी चार ८४, चार अधिक अस्सी ।

चौराहा दे० (५०) चारो ओर जाने का मार्ग, चौक, चतुष्पथ, चौमुखापथ, चौहटा ।

चौरी दे० ( स्त्री० ) चार बार धोई हुई लाक, चौपाड़, चौबार, छोटा चँवर ।

चौलड़ा दे० (५०) चार लर वाला, चार लर की माला ।

चौला दे० (५०) अन्न विशेष, बोड़ा, बोरी ।

चौलाई दे० ( स्त्री० ) शाक विशेष, चौराई का शाक ।

चौवर दे० ( गु० ) बलवान, साहसी, उद्योगी, उन्साही ।

चौचा दे० ( पु० ) पशु, चारपाया, चौपाया ।

चौचावाई दे० ( छी० ) चान्धी, भक्कड़, चन्ध, चारो तरफ से चलने वाली हवा ।

चौचार दे० ( पु० ) सर्वसाधारण का वह स्थान जहाँ किसी उत्सव या विचार के लिये लोग इकट्ठे होते हैं । पञ्चायती घर, सर्वसाधारण की बैठक ।

चौसर दे० ( पु० ) चाटा, मैदा, पिसान ।

चौसर दे० ( पु० ) चौसर, चौपड़, खेल विशेष ।

चौसठ दे० ( गु० ) चार और साठ, ६४, चार अधिक साठ ।

चौहाट दे० ( पु० ) चौराहा, चौमुला पथ ।

चौहाटा दे० ( पु० ) चौराहा बाज़ार, चौक बाज़ार ।

चौहात्तर दे० ( गु० ) सत्तर और चार, ७४, चार अधिक सत्तर ।

चौहान दे० ( पु० ) राजपूतों की एक जाति, किसी समय वे भारत के सम्राट थे, इनका पहला चतुर्बाहु और अन्तिम राजा सम्राट् पृथ्वीराज थे ।

च्यवन तत्० ( पु० ) प्रसिद्ध एक प्राचीन ऋषि, पुलोमा के गर्भ और भृगु के औरस से इनका जन्म हुआ था । गर्भवती पुलोमा को कोई राक्षस बलात्कार पूर्वक हर कर लिये जाता था, इस अत्याचार से

पीड़ित गर्भ गिर पड़ा । अतएव उसका नाम च्यवन पड़ा क्योंकि संस्कृत च्यु भाग्य का अर्थ गिरना है । च्यवन एक दिन देवसभा में बैठे थे, कद्यपकथन में इन्हें मालूम हुआ कि महाराज कुशिक के ग्रंथ में हमारा वंश संयुक्त हुआ है । इससे कुशिकराज को नष्ट करने की ये चेष्टा करने लगे । परन्तु महाराज की असीम योग्यता और सहनशीलता देख इनको अपने विचार बदलने पड़े । च्यवन के पौत्र शचीक ने कुशिक की पौत्री ठगवाही गयी थी ।

किसी सरोवर के तीर पर च्यवन तपस्या कर रहे थे, उनका शरीर मिट्टी से ढका हुआ था, केवल दो आँखें दीखती थीं । शर्याति की पुत्री सुकन्या को यहाँ कुतूहल हुआ । उमने उनकी आँखें फोड़ डालीं । च्यवन के क्रोध से शर्याति की सेना जा मलमूत्र बन्द होगया । बहुत अनुसन्धान करने पर इसका कारण मालूम हुआ । शर्याति की प्रार्थना से मुनि प्रसन्न हुए, राजा ने सुकन्या का विवाह च्यवन से कर दिया । यह सुकन्या प्रसिद्ध पतिव्रताओं में से हैं ।

च्युत तत्० ( गु० ) पतित, पड़ा, झट, गिरा, नष्ट ।

च्युति तत्० ( छी० ) पतन, स्खलन, गिरन, हानि, विपन्नता ।

## छ

छ अपभ्रंश का सातवाँ वर्ण, इसका स्थान ताशु है, अर्थात् ताशु के द्वारा इसका उच्चारण होता है । अतएव इसे तालठप कहते हैं ।

छ तत्० ( पु० ) छेदन, काटना, ( गु० ) निर्मूल तल, ( दे० ) छः, संख्या विशेष, षट्, ६ ।

छई तद्दे० ( छी० ) छयी, रोगविशेष, राजरोग, नाथ का छप्पर, गद्दी ।

छकड़ा दे० ( पु० ) गाड़ी, पैलगाड़ी, शकट, रहड़, लहड़ ।

छकड़ाना दे० ( क्रि० ) चौपियाना, घड़वाना, चकराना ।

छकना दे० ( क्रि० ) अघाना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना, ठगकुल होना, उद्विग्न होना, सशङ्कित होना ।

छकाई दे० ( छी० ) अवाई, तृप्ति, सन्तुष्टता ।

छकाना दे० ( क्रि० ) सन्तुष्ट करना, खिलाना, तृप्त करना, अचवाना, निरुत्तर करना, अचम्बित करना, शङ्कित करना ।

छकड़ दे० ( पु० ) धौल, यण्ड, पेंड, खाने वाला ।

छका दे० ( पु० ) छाका सपूह, वह सपूह जिसमें छःहों । एक प्रकार का पिंजड़ा जिसमें जाली लगी रहती है । जुए का एक दाव ।—पंजा

चौथिया दे० (५०) चौथे भाग का मालिक, चौथ लेने वाला।—उत्तर (५०) चौथे दिन आने वाला उत्तर, चातुर्थीक उत्तर।  
 चौथी दे० (५०) चौथा भाग, चतुर्थी तिथि।  
 चौदन्त दे० (५०) चार दांत का बच्चा, पशुओं की अश्वत्था विशेष, बली, हृष्ट, पुष्ट।  
 चौदन्ती दे० (स्त्री०) शूद्रता, धीरता, दक्षता, निपुणता।  
 चौदस तद्दे० (स्त्री०) चतुर्दशी, चोदहवी तिथि।  
 चौदह दे० (५०) चतुर्दश, संख्या विशेष, १४।  
 चौदनिया, चौदानो दे० (स्त्री०) कर्ण भ्रूषण विशेष, जिसमें चार मोती लगाये जाते हैं।  
 चौधर दे० (५०) बलवान्, बली, मोटा ताज़ा, हृष्ट पुष्ट।  
 चौधराई दे० (स्त्री०) चौधरी का काम, प्रधानता, मेठी, मेठपन, मुखियापन, अगुशासन, नेतृत्व।  
 चौधरी दे० (५०) समाज का अगुया, नेता, प्रधान, सरपन्ना, याज़ार का मुखिया, अहूँ का मुखिया।  
 चौपट दे० (५०) उजाड़, नष्ट, बरबाद, हूटा फूटा।  
 —करना (चा०) उजाड़ना, उजाड़ देना, नष्ट करना, बिगाड़ना।  
 चौपड़ दे० (५०) चौंवर, खेल विशेष, पाँसों का खेल, खूत।  
 चौपतिया, चौपत्ती दे० (स्त्री०) छोटी पुस्तक, लिखने की छोटी कांपी, हथबड़ी।  
 चौपहला दे० (५०) चौथाला, चारो ओर से समान, वह वस्तु जिसकी सम्बन्ध चौड़ाई बराबर हो।  
 चौपाई दे० (स्त्री०) हिन्दी का एक छन्द, इसमें चार पाद होते हैं। यथा—“मङ्गलभवन, धामङ्गलहारी, ब्रह्म सुशशय अजिरत्रिहारी।”  
 —रामायण  
 चौपाड़ दे० (५०) बैठक, बैठका, गृह विशेष।  
 चौपाया दे० (५०) पशु जन्तु, चार पैर के जन्तु, अश्व, अटिया।  
 चौपाला दे० (५०) पालकी, चौहोला, यान विशेष।  
 चौपच्चा दे० (५०) चोकोना गड़ा, कुण्ड, कृत्रिम कुण्ड।

चौवारा दे० (५०) उमारा, टाया।  
 चौबीस दे० (५०) चार अधिक बीस, चार बीस, २४।  
 चौबे दे० (५०) चतुर्वेदो, चतुर्वेदज्ञता, ब्राह्मणों का एक ऋषि, मायुर ब्राह्मण।  
 चौमासा दे० (५०) पाचस, वर्षाङ्गु, चतुर्मास, अष्टादश से कुम्हार तक के चार महीने।  
 चौमुत्त दे० (५०) चार मुँह वाला, चौमुहा, चार यत्तियों का दिया, वह मकान जिसमें चारो ओर द्वार हों।  
 चौमुखी दे० (स्त्री०) रुद्राक्ष का फल, देवी, चार रूप वाली दुर्गा।  
 चौर तत्० (५०) चोर, चोरी करने वाला।—कर्म (५०) चोर का काम, चोरी करना, अश्वहण करना।—भय (५०) चोर का भय, चोर से डर।  
 चौरङ्ग दे० (५०) चित्त, उत्तान, चार अङ्ग, दीर्घ पेच।  
 चौरस दे० (५०) समान, मुख्य, समभूमि, बराबर, एकसा, एक बूध, एक सूत में, सीधा।  
 चौरसाई दे० (स्त्री०) समता, बराबरी, मुख्यता, सोधार्थ।  
 चौरा दे० (५०) चतुरतरा, सती की चिता, धीरों की चिता, ग्राम, देवता का स्थान।  
 चौरानवे दे० (५०) नव्वे और चार, चार अधिक नव्वे, ९४।  
 चौरासी दे० (५०) असी चार ८४, चार अधिक अस्सी।  
 चौराहा दे० (५०) चारो ओर जाने का मार्ग, चौक, चतुष्पथ, चौमुखापथ, चौहटा।  
 चौरी दे० (स्त्री०) चार बार धोई हुई लाख, चौपाड़ चौवार, छोटा चँवर।  
 चौलड़ा दे० (५०) चार लर वाला, चार लर का माला।  
 चौला दे० (५०) अन्न विशेष, बोज़ा, बोरी।  
 चौलाई दे० (स्त्री०) याक विशेष, चौराई का भाग।

बीबर दे० (गु०) बलवान, साहसी, उद्योगी,  
उत्साही ।

बीषा दे० (गु०) पशु, चारपाया, बीषाया ।

बीषावाई दे० (खी०) चान्धी, भक्कड़, चन्ध, चारो  
तरफ से चलने वाली हवा ।

बीषावार दे० (गु०) सर्वसाधारण का वह स्थान जहां  
किसी उत्सव या विचार के लिये लोग इकट्ठे  
होते हैं । पञ्चायती घर, सर्वसाधारण की बैठक ।

बीसास दे० (गु०) चाटा, गैदा, पिमान ।

बीसर दे० (गु०) बीसर, बीषड़, खेल विशेष ।

बीसठ दे० (गु०) चार और साठ, ६४, चार अधिक  
साठ ।

बीसहट दे० (गु०) बीराहा, बीमुखा भय ।

बीसहट्टा दे० (गु०) बीराहा याज़ार, बीक याज़ार ।

बीसहत्तर दे० (गु०) सत्तर और चार, ७४, चार  
अधिक सत्तर ।

बीसहान दे० (गु०) राजपूतों की एक जाति, किसी  
समय वे भारत के सम्राट थे, इनका पहला समुदाई  
और अन्तिम राजा सम्राट् पृथ्वीराज थे ।

बीषवन तत्० (गु०) प्रसिद्ध एक प्राचीन ऋषि, पुत्रोमा  
के गर्भ और भृगु के बीरस से इनका जन्म हुआ  
था । गर्भवती पुत्रोमा को कोई राक्षस बलात्कार  
पूर्वक हर कर लिये जाता था, इस अत्याचार से

पीड़ित गर्भ गिर पड़ा । अतएव उसका नाम  
बीषवन पड़ा क्योंकि संस्कृत ऋषु भातु का अर्थ  
गिरना है । बीषवन एक दिन देवममा में बैठे थे,  
कथोपकथन में इन्हें मालूम हुआ कि महाराज  
कुशिक के वंश में हमारा वंश संयुक्त  
हुआ है । इससे कुशिकराज को नष्ट करने की  
ये चेष्टा करने लगे । परन्तु महाराज की असीम  
योग्यता और सहनशीलता देख इनको अपने  
विचार बदलने पड़े । बीषवन के पौत्र ऋचीक से  
कुशिक की पौत्री ब्याही गयी थी ।

किसी सरोवर के तीर पर बीषवन तपस्या कर रहे  
थे, उनका शरीर मिट्टी से ढका हुआ था,  
केवल दो आँखें दीखती थीं । शर्याति की पुत्री  
सुकन्या को यज्ञ कुतूहल हुआ । उसने उनकी  
आँखें फोड़ डालीं । बीषवन के क्रोध से शर्याति की  
सेना जा मसखून बन्द होगया । बहुत धनुसन्धान  
करने पर इसका कारण मालूम हुआ । शर्याति की  
प्रार्थना से मुनि प्रसन्न हुए, राजा ने सुकन्या का  
विवाह बीषवन से कर दिया । यह सुकन्या प्रसिद्ध  
पतिव्रताओं में से हैं ।

च्युत तत्० (गु०) पतित, पड़ा, छट, गिरा, नष्ट ।

च्युति तत्० (खी०) घतन, सजलन, गिरन, हानि,  
विक्रता ।

## छ

छ अक्षर का सातवां अक्षर, इसका स्थान ताशु है,  
शर्याति ताशु के द्वारा इसका उच्चारण होता है ।  
अतएव इसे तालव्य कहते हैं ।

छ तत्० (गु०) छेदन, काटना, (गु०) निर्मल तरल,  
(दे०) छः, संख्या विशेष, षट्, ६ ।

छई तत्० (खी०) छपी, रोगविशेष, राजरोग, नाव का  
छप्पर, गद्दी ।

छकड़ा दे० (गु०) गाड़ी, बैलगाड़ी, शकट, रहड़,  
सहड़ ।

छकड़ाना दे० (खी०) चींचियाना, चबड़ाना,  
चकराना ।

छकना दे० (खी०) अघाना, तृप्त होना, सन्तुष्ट  
होना, अयाकुल होना, उद्विग्न होना, संशुद्धित  
होना ।

छकाई दे० (खी०) खवाई, तृप्ति, सन्तुष्टता ।

छकाना दे० (खी०) सन्तुष्ट करना, खिलाना,  
तृप्त करना, अघवाना, निरुत्तर करना, अचम्बित  
करना, शक्ति करना ।

छकड़ दे० (गु०) धौंस, घण्ट, पेंडू, खाने वाला ।

छका दे० (गु०) छका सग्रह, यह सग्रह जिसमें  
छःहों । एक प्रकार का पिंजड़ा जिसमें आली  
जनी रहती है । सुर का एक दास ।—पंजा

करना। (वा०) उधर उधर करना, छाना ठगना, धोखा देना, प्रतारणा।  
 छक्के-छूट जाना दे० ( वा० ) हताश हो जाना, निराश होना, घबड़ाना।  
 छग तत्० ( पु० ) छाग, बकरा, अज, भेंडा।  
 छगरी तद्० ( स्त्री० ) बकरी, छेरी, छिरिया।  
 छगल तत्० ( पु० ) नीला बख, छकरी, छेरी, अजा, छाग।  
 छगुनी दे० ( स्त्री० ) चूसनी, शोषणी, छनना।  
 छँगुली दे० ( स्त्री० ) छ अङ्गुलिया।  
 छछुन्दर दे० ( स्त्री० ) मूसे की एक जाति, प्रायः यह रात को निकलती है। इसकी दुर्गन्धि दूर दूर तक फैलती है। कहते हैं कि इसे रात ही को सुकता है दिन को नहीं।  
 छज दे० ( पु० ) भाइखण्डी, भाइ पतार्द, घना जङ्गल।  
 छजा दे० ( पु० ) बरामन्दा, उसारा, द्वार के ऊपर की लकड़ी, खम्भों के ऊपर की पटरी।  
 छनछनाना दे० ( क्रि० ) सनसनाना, गरम ची का गबद, फडकना।  
 छटना दे० ( पु० ) एक प्रकार को चलनी, पृथक् होना, समूह से अलग होना, न्यून होना, घटना, न्यून होना, विछुटना।  
 छटपटाना दे० ( क्रि० ) छटपट करना, तलफना, विषय होकर लोटना, मूर्च्छित होकर भूमि में लोटपोट करना।  
 छट्ठाँ दे० ( पु० ) निकृष्ट, अलग किया हुआ, बीछा बराया, समाजव्युत्, समाज से निकाला हुआ।  
 छट्टा दे० ( पु० ) विहचिन्ना, कटुधा, एकान्त अनु-रागी, विलक्षण प्रकृति का।  
 छटाफ दे० ( स्त्री० ) सेर का सोलहवा भाग, मान विशेष, पाच तोला, कनधा, तोल विशेष।  
 छटा तत्० ( स्त्री० ) उनाल, उजाड़, शोभा, दीप्ति, प्रकाश, सङ्ग, समाहार, समूह, जुना हुआ, घना हुआ, चालाक।—फल ( पु० ) नारियल वृक्ष, ताल वृक्ष, सुपारी का पेड़।—या ( स्त्री० ) विद्युत् पिजली, तड़ित्, सौदामिनी।

छटाना दे० ( क्रि० ) छटवाना, अलग करवाना, चुनवाना, विछवाना, बरवाना।  
 छट्टे दे० ( पु० ) चुने हुए, बने हुए, पृथक् हुए, चूना चालाक, अपना मतलब साधने वाले।  
 छट्ट दे० ( स्त्री० ) पगो, छठ पगो तिथि।  
 छट्टी दे० ( स्त्री० ) छठवीं, पगो, लड़कें के जन्म। छठवाँ दिन, सप्ताह विशेष, जो जन्म के छठे दिन होता है, तिथि विशेष, व्रत विशेष, इसमें मृत्यु देव को उपासना की जाती है।  
 छठ दे० ( स्त्री० ) पगो, छठ।  
 छठी दे० ( स्त्री० ) छठी, पगो।  
 छठे दे० ( पु० ) छठवें, छठवें, पग, छठवा।  
 छड दे० ( स्त्री० ) यछें की लकड़ी, लोह की ब लोटे का चिकचा, उठा, डाटी, तिनका, इ अ ख का एक दाग, जो श्वेत होता है।  
 छडना दे० ( क्रि० ) धान के छिकले निकालना, छानना, चावल छँटना।  
 छडा दे० ( पु० ) मोतियों की माला, पैर में पहना का गहना।  
 छडाना दे० ( क्रि० ) चावल साफ करना। बरतण्डुवाना।  
 छडिया दे० ( पु० ) पहरेदार, दरवान, आवाबरादा, फञ्जुकि, राजा का परिचारक, सकेत गण कोलिया।  
 छडियाना दे० ( क्रि० ) छडी मारना, छडी के समान करना, मार करके लम्बा करना।  
 छडी दे० ( स्त्री० ) बेंत, छडी, लकड़ी, डण्डा, हाथ में रखने का डण्डा, छडी के आकार की एक वस्तु जो फूलों से बनायी जाती है। गुलसारी, फूल छडी, बास की सूखी लकड़ी, छिकुनी, छाकुन।  
 छडीला दे० ( पु० ) जटामासी, पुष्प विशेष, एक प्रकार का सुगन्धित सेवार, फाई, कौंदा का मिट्टी, एकाकी, अकेला।  
 छण तद्० ( पु० ) छण, पल, मुहूर्त, छिन, शर्यका  
 छपटना दे० ( क्रि० ) दुर्बल होना, कम होना, होना, घटना।

छण्टधाना दे० (क्रि०) यकला उत्तरधाना, छिकला  
 उत्तरधाना, साफ करवाना, छटधाना ।  
 छण्टाई दे० (खी०) छांटने की मजूरी, छांटने का  
 काम ।  
 छण्टाच दे० (पु०) धान की कूटाई, कुटना, यकला  
 निकलाई ।  
 छण्डना दे० (क्रि०) छोड़ना, त्याग करना, तजना,  
 छुड़ाना ।  
 छण्डत दे० (पु०) छोड़ा हुआ, त्यक्त, तजा हुआ ।  
 छण्डुमा दे० (पु०) छूट, छोड़, त्याग, परित्याग ।  
 छण्टीती दे० (खी०) छुट्टी, छोड़ना, अवकाश ।  
 छत तद्दे० (पु०) छत, फोड़ा, घाव, चिन्ह (खी०)  
 गच, झान, पटान, पाटम ।—कुम्भक (पु०) कनेर,  
 कबोर, कन्देल ।—ज (पु०) रक्त, रधिर, लोह ।  
 छतना दे० (पु०) छत्ता, छत्र, आतपवारण ।  
 छतनार दे० (पु०) फैला हुआ, विस्तृत, सघन,  
 छायादार ।  
 छति तद्दे० (खी०) छति, हानि, घाटा, मुकसान,  
 टोटा ।  
 छत्तर तद्दे० (पु०) छत्र, भोजन स्थान, सत्र, अन्न  
 छत्र, छत्ता ।  
 छत्ता दे० (पु०) मधुमक्खी का घर, मधुमक्खियों का  
 छाता या छत्ता, चाक, गहार, छाता ।  
 छत्तीस दे० (पु०) तीस छः बई, छः अधिक तीस ।  
 छत्तीसी दे० (खी०) छिनाल, व्यवहारिणी, दुरा-  
 चारिणी, परपुरुषताखी ।  
 छत्र तद्दे० (पु०) वृष्टि घोर भूष रोकने के लिये  
 आवरण विशेष, आतपत्र, छाता, छतरी, राजाओं  
 के लगाने का खास छत्ता जो राजचिन्ह सम्भूत  
 जाता है ।—चक्र (पु०) चक्रियेष, नक्षत्र मण्डल ।  
 —धर (पु०) छत्रपति राजा, महाराज ।—पति  
 (पु०) टिकेत राजा, महाराज, स्वार्थीन नरपति ।  
 —भङ्ग (पु०) धधर, रखाया, नृपनाथ, राज-  
 नाथ, भराजक ।—चन्धु (पु०) नाच चत्रिय,  
 चत्रियाधम, चत्रिय के समान ।  
 छलक तद्दे० (पु०) नृण विशेष, भूईं फोर, धरती का  
 छल ।

छत्रा तद्दे० (खी०) धनिया, धरती का फूल ।  
 छत्री तद्दे० (पु०) छत्ता वाला, छत्र विग्रह, छत्रयुक्त,  
 (पु०) चत्रिय, दूतरा वर्ण, यीर जाति, राज जाति,  
 (खी०) छोटा छत्ता, मृत मनुष्यों का एक प्रकार  
 का स्मारक, शमशान में निर्मित गृह विशेष,  
 भारत की पुरानी प्रथा के अनुसार ये भी  
 पुराने हिन्दू राज्यों में बनायी जाती हैं ।  
 छत्वर तद्दे० (पु०) घर, गृह, कुञ्ज, लताच्छादित गृह,  
 कुटीर, पर्णकुटी ।  
 छत्तुर दे० (पु०) एक स्थान पर राशीकृत अन्न,  
 अन्न की राशि, मोला, ढेर ।  
 छद् तद्दे० (पु०) पत्र, पत्ता, पत्ती, पताई, पद्य, पंख,  
 आच्छादन, ढकना, छपना, तमाल वृक्ष, पुनर्नवा  
 औषध, गदहूराना, द्वारा, चाल, रीति ।  
 छद्न तद्दे० (पु०) पत्र, पत्ता, पद्य, तमाल वृक्ष,  
 तेजपान, आच्छादन, ढकना, छान, छत, खोल,  
 गिलाफ ।  
 छदाम दे० (पु०) दुकड़ा, दो दमड़ी, छदाम, पैने का  
 चौपा भाग ।  
 छदि तद्दे० (खी०) छपार, छानि, गृहाच्छादन,  
 पाटन ।  
 छदिकारिपु तद्दे० (पु०) छोटी इलायची, यमन  
 रोकने की औषधि ।  
 छद्म तद्दे० (पु०) कपट, छल, धोखा, स्वरूपच्छादन,  
 अपने को छिपाना, अन्य देश ।—तापस  
 (पु०) कृता तपस्वी, कपटी मुनि ।—देश (पु०)  
 गुमरूप, दूतरा रूप ।  
 छदिका तद्दे० (खी०) गुडूची, मजीठ ।  
 छनना दे० (क्रि०) निवृत्ताना, गलना, साफ होना,  
 बनना । यथा—भरने से छनछन कर पानी आता  
 है । पुड़ियां छन रहें हैं ।  
 छनकाना दे० (क्रि०) छनवाना, गलवाना, निवृत्त-  
 याना, संवत क ना, सावधान करना ।—“बैठा तो  
 अचेत था परन्तु हम लोगों ने उसे छनका दिया” ।  
 छनाक दे० (पु०) किसी वस्तु के टूटने का शब्द,  
 गरम ची या तेल में पानी पड़ने का शब्द ।

सुनाका दे० ( ५० ) सीप म्क नामा, चामी वा  
 ५० का चाम में सीप म्कना ।  
 सुनिक म्क० ( ५० ) सगिक, सपसगिक, उषहा,  
 विहार चामा ।  
 सुनेक म्क० ( ५० ) सगिक, एक सग, एक मुहूर्त ।  
 सुन्द म्क० ( ५० ) सोक, पद्य, काव्य, वेद म्केका,  
 सगिक, एकना, ससुहृद् चामि ।—सगि (सो०)  
 कर्मा को नाम, सन्द कर्माने को रीति ।—शारद  
 ( ५० ) विक्रम मुनि प्रभात साख, जियमें सगदी  
 का ससंम किना है ।  
 सुन्दना दे० ( जि० ) गटना, सगना, उगकना,  
 उगकन में सटना ।  
 सुन्दवानन म्क० ( ५० ) कपटी, सपनी, सग  
 सगम, धर्म सगनी । सगम सगधारी धर्म ।  
 सुन्दवग्द दे० ( ५० ) सगसग, कपट, म्क, सगारक,  
 सहा ।  
 सुन्दानुवर्ती म्क० ( ५० ) सगानुवर्ती, सगधोम,  
 सगधोमक ।  
 सुन्दी दे० ( ५० ) कपटी, धर्म, सगारक, सग,  
 सग ।  
 सुन्दोग म्क० ( ५० ) सगवेदी, सगवेदीसग,  
 सगसग सगवेदीसगानी ।—सगिसिष्ट ( ५० ) सग-  
 वेदी सगिक सगि मुर्मा का सगिदेव साख, जिसे  
 सगि सगारक में सगना है । सगमें सगवेदीसगे  
 के कर्म सगमें सगे हैं । सगवेदी सगसग साख  
 सगि ।  
 सुन्द म्क० ( ५० ) [ सन्द म्क ] सगसगिक, सग,  
 सगसग, सग, सग, सगसग, सगि सगसा, सगसग ।  
 सुन्द दे० ( ५० ) सुन्द सगि सगमे का सगसग,  
 सगसग, सगसग ।  
 सुदी दे० ( सो० ) सोदा सगसग, सुन्द सगिदेव  
 सुन्द दे० ( ५० ) सगमे सगसा ।  
 सुन्द दे० ( ५० ) सग सगिदेव,  
 सग सग दे सगसग है ।  
 सुदी दे० ( सो० ) सग सग  
 सग, सगसग, सग सग

सुपकली दे० ( सो० ) सगु सगिदेव, सगसग  
 सुपकाना दे० ( जि० ) चामी सगसा, सग  
 सगसा ।  
 सुपकी दे० ( सो० ) सग सगु का सग, सो  
 सग मारता है ।  
 सुपना दे० ( जि० ) सगया होना, सुगि सगसा  
 सगसा, सगिचाना ।  
 सुपरा दे० ( ५० ) सगसग, सग सगमे का सग ।  
 सुपरिया दे० ( सो० ) सोदा सपरा ।  
 सुपरी दे० ( सो० ) सगसा, सगसा ।  
 सुपयाना दे० ( जि० ) सगया कराना, सगि सग  
 सगिचाना, सुगिच कराना ।  
 सुपार् दे० ( सो० ) सगमे को सगुर्, सग सगमे  
 सग ।  
 सुपाका दे० ( ५० ) सग सगिदेव को सग सगमे  
 होना है ।  
 सुप्य दे० ( ५० ) सगसा सगः ५६, सगः सगि सग  
 सुप्य दे० ( ५० ) सगः सग का सग, सग, सग  
 सग ।  
 सुप्य दे० ( ५० ) सगसादन, सगि सगानी ।—  
 ( ५० ) सगसग, सग, सगसगसग सगसग ।  
 सुप्यसगु दे० ( ५० ) सपरा सगमे सगसा, स  
 सगिमे सगसा ।  
 सुय दे० ( सो० ) सोक, सगसगि, सगसा, सग, स  
 सगसग, सगसा, सगसा ।  
 सुयि दे० ( ५० ) सगसा, सोसा, सगसग, सग  
 सुयोमा दे० ( ५० ) सगि, सगि, सगसा, सगसा, सग  
 सुयोम दे० ( ५० ) सगि सग, ५६ ।  
 सुय दे० ( ५० ) सग सगसा, सग, सगि सगसा  
 सुय दे० ( ५० ) सग सगसा, सग, सगि सगसा  
 सुय दे० ( ५० ) सग सगसा, सग, सगि सगसा  
 सुय दे० ( ५० ) सग सगसा, सग, सगि सगसा  
 सुय दे० ( ५० ) सग सगसा, सग, सगि सगसा

त्य तद् ( ५० ) छय, रोग विशेष, छई ।—रोग ( ५० ) छई ।

र दे० ( ५० ) जटामाँसी, कड़ुपदा ।

रिच्छवि दे० ( स्त्री० ) भाड़े फिरने का स्थान, शीव-स्थान, पोखरा, पाप्राणा ।

रिस्स दे० ( ५० ) छः रस, यद् रस ।

रिन्द्रा दे० ( ५० ) एकाकी, अवसाय, अनेला, रिक्त-हस्त, शून्य हाथ, रीते हाथ ।

री दे० ( स्त्री० ) देखो छड़ी ।

री दे० ( ५० ) छटे, चुने हुए, बराबे हुए, उत्तम उत्तम । अलग किये हुये, बीने हुए ।

रैर्न तत् ( ५० ) [ छर्द + अन्ट् ] छांट, कय, वमन, उलटी ।

रैर्दान तत् [ छर्द + आयन ] खीरा, ककरी ।

रैर्दि तत् ( स्त्री० ) वमन, छांट, खाँसी ।

रैर्दी दे० ( ५० ) छोटी छाँटो गोली, जो बन्दूक में भरी जाती है ।

रैर्ल तत् ( ५० ) छद्म, ठगान, कपट, शठता, प्रतारणा, ठगई, चासुरी ।—कारी ( ५० ) छल करने वाला, ठग, धूर्त, धोखेबाज़ ।—ग्राही ( ५० ) छल हूँने वाला, प्रतारक, शठ, धूर्त ।

रैर्लक दे० ( स्त्री० ) उछाल, उफान, उमड़, आघात से जल आदि द्रव पदार्थों का पात्र से बाहर निकलना ।

रैर्लकना दे० ( क्रि० ) उमड़ना, ढलकना, उछलना याहर निकलना जल आदि का ।

रैर्लकाना दे० ( क्रि० ) उभकाना, उड़ेलना ।

रैर्लङ्गना दे० ( क्रि० ) कूटना, फाँदना, उछलना, छलांग मारना ।

रैर्लङ्गलाना दे० ( क्रि० ) जल को गति, बे रोक टोक गति, सगम्भ गति, भरी हुई गङ्गा आदि नदियों का शीघ्र गामी प्रवाह ।

रैर्लच्छिद्र तद् ( ५० ) छलबल, कपट, धोखा ।—नी ( ५० ) कपटो, छली ।

रैर्लवल तद् ( ५० ) कपट, धोखा, शठता, गाढ ।

रैर्लविनय तद् ( ५० ) कपट से बड़ाई, धोखा देने के लिये प्रयत्न ।

रैर्लना तद् ( क्रि० ) छल करना, ठगना, भटकना ।

रैर्लनी दे० ( स्त्री० ) चलनी, चाटा चालने का छेददार पात्र ।

रैर्लांग दे० ( स्त्री० ) कुदाय, फलांग, उछाल, फाँद ।

—मारना दे० उछलना, कूटना, कुलाच मारना, हर्षित होना, आनन्दित होना ।

रैर्लावा दे० ( ५० ) लू, लूक, लूका, मल्लूक ।

रैर्लिया दे० ( ५० ) धूर्त, छलकारी, धोखा देनेवाला ।

रैर्ली तत् ( ५० ) कपटी, धूर्त, शठ ।

रैर्ल्ला दे० ( ५० ) आभरण विशेष, शंभूठी, मुन्दरी, शङ्खुलीयक ।

रैर्लड़ा दे० ( ५० ) वांस आदि की बनी टोकरी, क्षीरा, लोंगा ।

रैर्लैया दे० ( ५० ) छप्पर छाने वाला, छप्पर बनाने वाला ।

रैर्लहरर दे० ( ५० ) शब्द विशेष, अधिक वृष्टि होने का शब्द ।

रैर्लराना दे० ( क्रि० ) छितराना, बिखराना, टूटना, फैलना । यथा—

कञ्चुक तूर तूर भई तानी ।

दूटी तार मोती रैर्लरानी ॥

—पद्यावत ।

रैर्लई दे० ( स्त्री० ) मुँह पर का सहसन, क्षीप, रोग विशेष जिससे मुँह का चमड़ा काफ़ा हो जाता है ।

रैर्ल दे० ( स्त्री० ) छाँह, छाया, प्रतिविम्ब ।

रैर्लट दे० ( स्त्री० ) सीठी, यान्ति, उबकाई, धूद, छिलका ।—करना ( वा० ) उवाल करना, वमन करना, कै करना ।—लेना ( वा० ) बीछ लेना, बरायलेना, चुनना, चुनलेना ।

रैर्लटन दे० ( स्त्री० ) उलटी करना, वमन करना, भूसे से अक्ष निकलना, कतरन, फाटकूट, फटकना, साफ करना, मुधारना, अलग करना, चुनना, टुकड़ा, छिलका ।

रैर्लट्टना दे० ( क्रि० ) वमन करना, कूटना, कतरना ।

रैर्लडना दे० ( क्रि० ) छोड़ना, त्यागना, उगलना, तजना ।



छांद दे० ( खी० ) पगहा, पशुओं के पैर बान्धने की रस्सी, पैकड़ा, जाल ।

छांदना दे० ( क्रि० ) बान्धना, गतिरोकना, रोकना, जकड़ना ।

छांदा दे० ( पु० ) भाग, अंग, खण्ड, टुकड़ा, हिस्सा ।

छांह दे० ( स्त्री० ) छाया, परछाई, प्रतिबिम्ब, छां यथा —

“कीन्हेसि, धूप सेय श्री छांहा ।  
कीन्हेसि, मेघ बीजु तेहि मांहा ॥”

—पद्यायत ।

छांहारा दे० ( पु० ) छायावास्, छायेला, छायायुक्त, छायान्वित ।

छाई दे० ( स्त्री० ) छाया गयी, छा गयी, फैल गयी, व्याप्त हो गयी, विस्तृत हो गयी, फैल गयी ।

छाफ दे० ( पु० ) कलेवा, जलपान, जलखवा, कल्प ।

छाकना दे० ( क्रि० ) फटकना, निर्मूल करना, माफ करना, गुठ्ट करना, मूल दूर करना, मूल हटाना ।

छाके दे० ( पु० ) मतवाना, उन्मत्त, पिच्छकड़, पिया हुआ ।

छाग तल्० ( पु० ) बकरा, अज, पशु विशेष ।  
—याहन ( पु० ) अग्नि, वह्नि, अन्नल देवता ।  
—भोजी ( पु० ) छाग भक्षक, बकरा खानेवाला, वचेरा, भेड़िया ।—मांस ( पु० ) बकरे का मांस ।—रथ ( पु० ) अग्नि, अन्नल, वह्नि ।

छागल तल्० ( पु० ) छाग, अज, पाठा ।—गोत्री ( पु० ) ह्यभिचारी, वह कामुक जिसे गम्या-गम्य का कुछ भी विचार न हो ।

छागी तल्० ( स्त्री० ) बकरी, छेरी, पाठी, अज ।  
छांछ. और छाछी दे० ( पु० ) तरु, मट्टा, मही, यथा— “अपनी छांछुं को कौन खट्टा कहता छै ।”  
छाज दे० ( पु० ) सोहा, शोभा, शोभित हुआ, सजा, भूष, दगर, छप्पर, छांद । यथा:—

“मुक्तानि की भालरनि मिलि, मनि लाल छन्ना छाजहि ।  
सन्ध्या समै मानहु नखतगन, लाल अम्बर रात्रहि ।  
जहं तहां उरध उटे, हीरा किरन धन समुदाय है ।  
मानौ गगन तंभू तन्यौ, ताके सपेत तनाय है ॥”  
—भूषण ।

“छाज बेले तो बोले, चलनी भी बोले जिसमें बहल  
सौ ब्रेद ।”

छाजना दे० ( क्रि० ) छाना, शोभना, पचना, सजना, छुलना, उचित मालूम होना, योग्य होना ।

छाड़ दे० ( स्त्री० ) त्याग, त्याग कर, तज के, हार कर, नदी का छोड़ा हुआ स्थान, भिन्न, विना ।

छाड़े दे० ( पु० ) छोड़े, त्यागे, छोड़े हुए ।  
छात दे० ( स्त्री० ) छत, दुबला, दुर्बल, सुकटा ।

छाता दे० ( पु० ) छत्र, छत्ता, छातपत्र, मधुमक्खिलों का छत्ता । पहलवानों की छाती, विशाल वक्ष्यल ।

छाती दे० ( स्त्री० ) छोटा छाता, उर, हृदय वक्षःस्थल सीना ।—पर धर के ‘कोई नहीं ले

जायगा ( वा० ) अर्थात् श्राप क्यों घबड़ाते हैं, इस वस्तु को कोई ले नहीं जा सकता, अर्थात् यह वस्तु ऐसा अच्छी नहीं है जिसे कोई लेनाय । ( तुच्छ सी वस्तु का ज्यादे आदर करते देख इस वाक्य का प्रयोग किया जाता है । )—पर तो हाथ रखो ( वा० ) इस बात की सत्यता या अचिन्त्यता तुम्हारा हृदय स्वीकार करता है ।—पर चढ़ कर कौन पी जायगा ( वा० ) किसी वस्तु को रक्षित होने के विषय में यह कहा जाता है ।

—पर पत्थर रखना ( वा० ) मन्तोष करना, किसी वस्तु की अभिलाषा छोड़ देना, पीठ बांधना, पैर्य धरना ।—पर मूंग दलना ( वा० ) दुःख देने के अभिप्राय से उसके सामने ही अप्रिय काम करना । चिड़ाना, कुड़ाना, मर्म वेधना ।—फटना ( वा० ) विन्ना से घबराना ।  
—पीटना ( वा० ) विलाप करना, दुःखित होना, व्योक्त होना, बिलविलाना, यथा—“राम के विषय-से सीता छाती पीट पीट कर रह जाती है” ।—ठोकना ( वा० ) उत्साहित होना, साहस

प्रकाश करना, भरौसा देना, अभय देना, यथा:—  
 “छाती ठोक कर भीम अखाड़े में उतर गये”  
 “में छाती ठोक कर इसके लिये प्रतिष्ठा करता हूँ।”  
 —ठण्डी होना (वा०) धानन्दित होना, प्रसन्न  
 होना, “गुमकी देख कर छाती ठंडी हुई” फिर  
 हमारी छाती फय ठंडी होगी।—का पत्थर  
 (वा०) दुःखद, शत्रु, कष्टक, “छाती का पत्थर  
 हटाना ही उचित है।” आज कल तो यह हमारी  
 छाती का पत्थर हो गया है।—खोलकर मिलना  
 (वा०) प्रेम से मिलना, उरसाह से मिलना, यथा—  
 “नङ्का ने लौट कर श्रीरामचन्द्र जी छाती खोल  
 कर भरत से मिले”।—लगाना—से लगाना (वा०)  
 प्रीति करना, प्रेम करना, प्रेम से मिलना, दोटों  
 के प्रति बड़े में प्रेम, “जनक ने रामचन्द्र  
 को छाती से लगाया, विता ने पुत्र को  
 छाती से लगाया”।—निकाल कर चलना  
 (वा०) अकड़ना, अकड़ कर चलना, अहङ्कार से  
 चलना, घेंट कर चलना।—भर (वा०) परिमाण  
 विशेष, छाती के धराधर, छाती जितना, “यह  
 पेड़ छाती भर का हो गया, छाती भर पानी में  
 नहाओ”।—भर आना (वा०) कहते कहते  
 कष्टक जाना, शीघ्र निकल पड़ना, मुग्ध हो  
 जाना, मोह के विषय होने से बात का न  
 निकलना।—पर चाल होना (वा०) साहस  
 वीरता और दृढ़ता का अनुमान होना, सामुद्रिक  
 का चिन्ह विशेष, यथा:—

“जिसके छाती एक न चार  
 नी रेबों का यह सरदार।”

त्र, तत्० (पु०) शिष्य, श्रुतेयासी, शिष्यार्थी,  
 विद्यार्थी, चेला।—वृत्ति (खी०) पढ़ने के लिये  
 प्रवृत्ति, वह वृत्ति जो विद्या अर्जन के निमित्त  
 दी जाती है। पारितोषिक, प्रगंसा पूर्यक परीक्षा  
 उत्तीर्ण करने वाले विद्यार्थियों को जो दिया  
 जाता है।

दान तद्० (पु०) दपना, दफना, दफन, आच्छादन,  
 दांकने का पक्ष।

दान दे० (पु०) जल रखने का पात्र विशेष,

मसक, जल रखने के लिये चमड़े का बनाया पात्र,  
 जल शैली।

दान दे० (खी०) अक्षर, छांद, आज, हत।  
 —दिनान (वा०) खोज, अनुसन्धान, जांच।  
 —धीन (वा०) विचार, विवेचना, अनुसन्धानक्रम,  
 अनुशीलन, अन्वेषण, तदारक करना, तहकीकात  
 करना।—मारना (वा०) खोजना, दूटना,  
 दूड़ मारना।

दानवे दे० (पु०) नखरे और छ, रई, छः अधिक नखरे।  
 दानस दे० (खी०) भूखी, चोकर, दुप, अन्न की  
 भुखी, करायी।

दाना दे० (क्रि०) छाया करना, पाटना, पाट करना,  
 दफना।

दाजाना दे० (क्रि०) दफनाना, छाया होना, पट  
 जाना, घिर जाना, विलुप्त होना, छपाइ होना,  
 फैलना।

दालेना दे० (क्रि०) टकलेना, दाजाना, अंधेरा  
 करना, दक लेना।

दाना दे० (क्रि०) निखारना, गारना, दूटना  
 खोजना।

दाप दे० (खी०) टिकट, टाग, अगूठे का चिन्ह,  
 छपाई, मुद्रण नकल करना, मोहर, चिन्ह, अङ्क,  
 हस्ताक्षरी कार्यालय की मोहर, बांट का चिन्ह  
 विशेष जिसमें उसके शिष्य को बांटें छपी रहती  
 हैं। धार्मिक चिन्ह विशेष, तिलक। यथा—  
 जयमाला छापा तिलक सरें न एकी काम।  
 मन फाचें नाचें वृथा, सावे राचे राम ॥

—विहारी।

दापना दे० (क्रि०) छापा करना, अङ्कित करना,  
 मोहर लगाना, मुद्रित करना।

दापा दे० (पु०) छपाई, चिन्ह, मुद्रा, तिलक।  
 —दाना (पु०) प्रेष, दापने की कल जिसमें कितारें  
 छापी जाती हैं।—मारना (वा०) धावा करना,  
 डाका डालना।—लगाना (क्रि०) टिकट  
 लगाना, मोहर लगाना, चिन्ह विशेष से अङ्कित  
 करना।—हासिल कपड़े दापने वालों का कर,

छोड़ावना दे० ( क्रि० ) छुटकारा करना, मुक्ति कराना, किसी प्रकार बन्धन फटवाना ।

छोड़ीती दे० ( स्त्री० ) छुटकारे का दाम, हुड़ौती, उत्तरार्द, उत्तारे का दाम ।

छोनिय तद्० ( पु० ) चोनिय, भूपति, भूमिपति, पृथिवीपति, भूप, भुञ्जाल ।

छोनी तद्० ( स्त्री० ) चोणी, पृथिवी, धरती, भूमि, यथा:—“छोनी में के छोनीपति छाजे तिन्ह छत्र छाया, छोनी छोनी, छाये छिति छाये निमि राज के; प्रवल प्रचण्ड धरवण्ड धरवेय वायु बरबे की बोली वैदेही बर काज के; बोले बन्दी विरद बजाये बर बाजनक, बाजे बाजे बीरवाहु धुनत समाज के; तुलसी मुदित मन पुनर नारी जेते, बार बार छेरे मुख अयध मृगराज के ।” कवित-रामायण ।

छोप दे० ( पु० ) एक बार का किया हुआ रङ्ग, किसी वस्तु पर एक बार रङ्ग चढ़ाना, रङ्ग भरना ।

छोपना दे० ( क्रि० ) भरना, रङ्गना, रङ्ग देना ।

छोम तद्० ( पु० ) चोम, चबराहट, मन की चञ्चलता, अस्थिरता ।

छोर दे० ( पु० ) किनारा, प्रान्त, कगर, एक किनारा, इधर उधर का सिरा ।

छोरना दे० ( क्रि० ) खोलना, छोड़ना, मुक्त करना ।

छोरा दे० ( स्त्री० ) लड़का, छोकरा, बालक ।

छोरा छोरी दे० ( स्त्री० ) लड़का, लड़की, पुत्र, पुत्री ।

छोरी दे० ( स्त्री० ) कन्या, पुत्री, बालिका ।

छोलना दे० ( क्रि० ) छोलना, झाल उतारना ।

छोला दे० ( पु० ) घास, कटी घास ।

छोलनी दे० ( स्त्री० ) धुप्रीं, घास काटने का औजार ।

छोह दे० ( पु० ) म्नेह, मोह, प्रेम, प्रीति ।

छोह दे० ( पु० ) प्यार, प्रीति, प्रेम ।

छोहरा दे० ( पु० ) नया, नयीन, लड़का, बच्चा, जवान, स्त्री ।—छोहरी बालिका, बच्चा बालिका ।

छोही दे० ( पु० ) प्रेमी, प्रणयी, अमुरागी, अभिलाषी ।

छौंकन दे० ( पु० ) बघार, छेक ।

छौंकना दे० ( क्रि० ) बघारना, छेकना ।

छौंकन दे० ( पु० ) छोना छीनी, भपटा, छपटा ।

छौंकना दे० ( क्रि० ) भपटा भपटी करना, छीन छीनी करना ।

छौंकल दे० ( पु० ) भपटा भपटी करना ।

छौंन दे० ( पु० ) शावक, सिंगु, बच्चा, जानवर का बच्चा, लड़का, छोरा, बालक, छोटा बच्चा । यथा:—

“भूप मण्डलो प्रचण्ड चण्डीश कोदण्ड खण्डो, चण्डवाहु दण्ड जाके ताहोसों कहत है । कठिन कुठार धर धरिदे की धीर ताहि, बीरता विदित ताकी देखिये चहुँ हौं । तुलसी समाज राज तजि सो विराजे बसु, गाज्ये मृगराज गजराज ज्ये गह्यु हो । छोनी में न छौंन्यो छपेवं छोनिय को छोनी, छोटे छोनिय छपन ताको बीरद बह्यु हौं ।

—कवित रामायण ।

छौर तद्० ( पु० ) मुपहन, माथा मुँड़वाना, धाँस बनवाना ।

छौलिया दे० ( पु० ) हर्षित, प्रसन्न, रसिक, बिलासी, आनन्दी ।

ज

ज, व्यञ्जन का आठवां अक्षर, इसका उच्चारण तालु द्वारा होता है। अतएव यह तालव्य वर्ण कहा जाता है ।

ज तत्० ( पु० ) किसी शब्द से साथ संयुक्त होने पर यह उत्पत्ति अर्थ का बाधक हो जाता है । यथा:—मित्रज, आत्मज, देशज, इत्यादि ।

जक दे० ( पु० ) रक्षित, धन का रक्षक, गाढ़े धन का रक्षक ।

जकड़ना दे० ( क्रि० ) कसना, बाँधना, खींच खींच कर बाँधना, दृढ़ बाँधना ।

जकड़बन्द दे० ( पु० ) अकड़वाय, रोग बिषय, वायु जनित रोग ।

जक्ष तद्० ( पु० ) यथा, देव बोनि विशेष ।  
 जक्षनाचार्य दे० ( पु० ) यह राजवंशीय प्रधान  
 शिल्पी थे, मैसूर के राजघराने में इनकी उत्पत्ति  
 हुई थी, खू० बारहवीं शताब्दी में यह विद्यमान  
 थे । विवरचना की निपुणता इनमें अलौकिक  
 थी । कहते हैं इस समय मैसूर राज्य में जो बड़े  
 बड़े प्रधान मन्दिर वर्तमान हैं, वे सब इन्होंने  
 बनाये हैं ।  
 जखम दे० ( पु० ) घाव, छत, चोट ।  
 जग तद्० ( पु० ) जगत्, भुवन, संसार, जङ्गम,  
 चलने वाले, वायु ।  
 जगच्चतुर् तद्० ( पु० ) सूर्य, दिवाकर, भातु,  
 मात्स्य, सूरज ।  
 जगजगा दे० ( पु० ) दीप्ति, सुन्दरता, प्रकाश,  
 शोभा, पीतल का मुलम्मा ।  
 जगजगाहट दे० ( स्त्री० ) चमक, प्रकाश, उजलार,   
 लावण्य ।  
 जगजागी दे० ( स्त्री० ) प्रख्यात, प्रसिद्ध, विख्यात,  
 संसार में विदित ।  
 जगजीवन तद्० ( पु० ) जगत् का आधार, जगत्  
 का प्राण, रक्तक, पानी, ईश्वर, मेघ, वायु ।  
 जगणु तद्० ( पु० ) गणविशेष, पदार्थना विषयक  
 रीति विशेष, छन्दों का सन्निवेश और यहवान  
 कराने वाले ऋग्विद्य गणों में का एक गण । जगण  
 में बीच का अक्षर गुण और आदि अन्त के सधु  
 होने चाहिये । इसका दैवता जल है ।  
 जगत् तद्० ( पु० ) संसार, जग, टिक, आड़ ।  
 —कर्ता ( पु० ) ब्रह्मा, विधाता, सृष्टिकर्ता,  
 परमात्मा । —जाता ( पु० ) जगत्कारक, जगत्सक ।  
 —प्राण ( पु० ) वायु, अनिल, वात । —साक्षी  
 ( पु० ) सूर्य, दिनमणि, भास्कर, दिवाकर, भातु ।  
 जगती तद्० ( स्त्री० ) भुवन, लोक, पृथिवी, धरती,  
 भूमि । —तल संसार, ब्रह्माण्ड, समस्त भूमण्डल,  
 पृथ्वीतल ।  
 जगत्सैठ दे० ( पु० ) इतिहास प्रसिद्ध सुर्यिदायाद  
 निवासी एक धनकुवेर, इनका नाम फतेचन्द था ।

१७२२ ई० में दिल्ली के बादशाह ने इनको जगत्-  
 सैठ की उपाधि दी थी, यह जैनी थे, इनके सुरपा  
 मारयाड से बङ्गाल आये थे । इनके पिता का नाम  
 उदयचन्द, और माता का नाम धनवाई था ।  
 धनवाई के भाई माणिकचन्द्र को कोई लड़का  
 नहीं था, अतएव उन्होंने अपनी बहिन के लड़के  
 फतेचन्द को गोद लिया । प्रसिद्ध धनी माणिक-  
 चन्द के अगुण समयों के मालिक फतेचन्द हुए थे ।  
 बङ्गाल के नवाब मीर फ़ारुख के क्रोध में पड़कर  
 जगत्सैठ को अन्त में अपने प्राण गँवाने पड़े ।  
 जिस धन के लिये उन्होंने कितना छल कपट  
 किया, कितने पर्यन्त रहे, परन्तु मीर के क्रोध  
 से उनको कुछ भी सहायता नहीं मिली ।

जगद्मया तद्० ( स्त्री० ) जगमाता, वैष्णवी शक्ति,  
 आदिशक्ति, भवानी ।

जगदादि तद्० ( पु० ) जगत् का आरम्भ समय,  
 सृष्टि का प्रारम्भ ।

जगदाधार तद्० ( पु० ) जगत् के आधार, अन्नान,  
 शेषनाग, संसार का अत्यसम्भ, वायु, परमात्मा,  
 धर्म ।

जगदीश तद्० ( पु० ) जगत् का स्वामी, परमात्मा,  
 जगन्नाथ ।

( २ ) नवद्वीप निवासी न्यायशास्त्र के एक विख्यात  
 विद्वान्, १७-वीं सदी के प्रारम्भ में यह उत्पन्न  
 हुए थे । इनका बाल्यकाल खेलने ही में  
 बीत गया । अठारह वर्ष की अवस्था में एक  
 संन्यासी से इनकी भेंट हुई । वे संन्यासी इनकी  
 बुद्धिमानी देख प्रसन्न हुए और इनको पढ़ाने लगे ।  
 जगदीश बड़े दरिद्र के पुत्र थे, तथापि अनेक कठों  
 को सह कर भी विद्योपार्जन इन्होंने किया ।  
 इनकी बुद्धि तीव्र थी ही, यह एक बड़े भारी  
 विद्वान् हो गये । न्याय शास्त्र के १५-व्यादेय ग्रन्थ  
 इन्होंने बनाये हैं ।

जगद्धर तद्० ( पु० ) संस्कृत के एक परिदित, न्याय  
 वैशेषिक और उपाकरण के बड़े परिदित थे ।  
 घेणोसंहार, वासवदत्ता, मालती माधव आदि



जगाज्योति तद् (स्त्री०) जगजगाहट, प्रकाशमान, प्रकाशयोग, सर्वदा प्रकाशित रहनेवाला ज्योति, अक्षयदीप, प्रभाव शाली देव ।

जगाना दे० (क्रि०) उठाना, सचेत करना, सोते से उठाना, जागृत करना ।

जगावहु दे० (क्रि०) जगाओ, उठाओ, जागृत करो ।

जगैसर तद् (पु०) यज्ञरवर, यज्ञपुरव, यज्ञ स्वामी, विष्णु ।

जघन तद् (पु०) कमर के भागे का भाग, कमरकटि, उरुस्थल, कटिदेश, ।—चपला (स्त्री०) नृत्य विशेष, नृत्य का एक भेद, व्यभिचारिणी दुर्ग-चारिणी, वेश्या ।

जघन्य तद् (पु०) अन्तिम, चरम, पीछे का, निन्दित, गहित, कुत्सित, अपम, नीच, अन्त्यज ।

—ज (पु०) झोटा, कनिष्ठ, युद्ध, चौथा वर्ष ।

जङ्गम तद् (पु०) चलने वाला, अस्थावर, गति शक्ति विधि, चरिष्यु । शैवी का एक भेद ।

—कुटी (स्त्री०) घर, आतपक ।—ता (स्त्री०)

जङ्गम का धर्म या स्वभाव, वास्तव्य, वपलता, अस्थिरता ।

जङ्गल तद् (पु०) वन, कानन, अरण्य, विना जल का देश, निर्जन स्थान, घुँघों का समूह ।—सेतु (पु०) चलनेवाला सेतु, जो बाँध चल सके, हटने वाला पुल ।

जङ्गला तद् (पु०) उजाड़, वन्य, पटयर, रागिनी विशेष, गदाह, गीघ, लिङ्गी ।

जङ्गलात् तद् (पु०) वनसङ्घ, घोरवन, वन्य, वनमय ।

जङ्गली तद् (पु०) वन्य, वनोद्भव, वनैला, वन में उत्पन्न, वनवासी ।

जङ्गल तद् (पु०) तीर्थ विशेष, एक प्रकार की कक्षावट, वाञ्छ, सेतु, पुल, बाँध, पगार, भौमान, कड़ादार धड़ा तमला ।

जङ्गा तद् (स्त्री०) जाँघ, कुर्क के ऊपर और देहना के बीच का भाग, जानु के नीचे का भाग ।

जङ्घिया दे० (पु०) वस्त्र विशेष, जिसे कसलत करने के समय पहलवान पहनते हैं । चाच्छादन वस्त्र, कटिपट, जह्वा दकने का वस्त्र ।

जचना दे० (क्रि०) पसन्द होना, घटकल होना, घटकला जाना, किसी वस्तु की अच्छाई बुझाई और दाम का मासूम होना, परीक्षित होना ।

जचाना दे० (क्रि०) घटकन कराना, परीक्षा कराना, छोटे धरे की परीक्षा कराना, पहचानना, अनुसन्धान करना ।

जचावट दे० (स्त्री०) जाँघ, परीक्षा, अनुसन्धान ।

जजालि दे० (पु०) उलभन, भङ्गट, प्रपञ्च, दुःख, क्रोध, उलकाव, उद्विग्नता, अवाकुलता, घबराहट, कठिनता ।

जजालिया दे० (पु०) उत्पाती, उपद्रवी, भङ्कटिया ।

जजाली दे० (पु०) झुँगी, दुखी, घबराधा, प्रपञ्ची, उलभन में फसा हुआ ।

जज्ञोपवीत तद् (पु०) यज्ञोपवीत, ब्रह्मसूत्र, जनेऊ, उर्ववीत, संस्कार विशेष, बह्या, ब्रतवन्ध, इस संस्कार के अधिकारी विवर्ण हैं । यथाक्रम ८-११ और १२ वर्ष की अवस्था में ब्राह्मण, त्रिज्य और वैश्य बालकों का यज्ञोपवीत संस्कार होता है ।

जजाति तद् (पु०) ययाति, एक राजा का नाम, एक चन्द्रवंशी राजा (ययाति देखो) ।

जट तद् (स्त्री०) जटा, मिले हुए बाल, धवाँ की लट्टी ।

जटना दे० (क्रि०) झूँटना, झूँचना, झूँछना, ठगना, धोखा देकर ले लेना ।

जटला दे० (पु०) समूह, समुदाय, भीड़, बैठका, जनता ।

जटा तद् (स्त्री०) एक में सटे हुए बहुत से बाल, साधुओं की जटा, जड़ितकेय, जटामौखी नामक शैविष्य विशेष, यतावरि, कथाह, मूल ।

—जूट (पु०) जटा का समूह, संहत यतुत केय, शिव की जटा ।—उद्याल (पु०) प्रदीप, दीपक, महादेव का तीसरा नेत्र ।—टङ्कफ (पु०) महेश, महादेव, रुद्र ।—धर (पु०) महादेव, वासक, योगी । एक कौशकार का नाम, बुद्धभेद ।—धह्री (स्त्री०) महादेव की जटा, गन्धमासी नामक एक शीघ ।—मार (पु०) जटा का मार, जटा मजूद,

जटा समुदाय, बहुत लम्बी लम्बी जटा ।—मांसी (खी०) श्लोधि विशेष, सुगन्ध द्रव्य विशेष, बालहृद ।

जटायु तत्० (खी०) स्वनाम प्रसिद्ध पक्षि विशेष, सम्पाति नामक पक्षिराज का छोटा भाई, महाराज दशरथ का मित्र, सूर्य सारथि अरुण के पुत्र, यह महाराज श्रयोध्याधिपति दशरथ के मित्र थे । जब पञ्चशती से रावण सीता जी को हर ले जाता था तब जटायु ने सीता का विलाप सुन कर उनको रावण के हाथ से छुड़ाने के बहुत यत्न किये थे, जटायु ने बड़ी वीरता से युद्ध किया रावण का रथ टूट गया ; परन्तु अन्त में रावण के अश्रुप्रहार से जटायु के पंख कट गये, वे भूमि पर गिर गये । जब राम लक्ष्मण सीता को ढूँढने निकले थे, तब उनकी भेट जटायु से हुई थी । सीता का समाचार सुना कर जटायु परलोकगामो हुए । श्रीरामचन्द्र ने अपने पिता के मित्र की अन्तिम क्रिया की ।

जटाल तत्० (गु०) जटायुक्त, जटाधर, जटाधारी, (गु०) कहर, घटवृत्त, बरगद, बर का पेड़, गुग्गुलु ।

जटाला तत्० (खी०) जटावती, जटावाली, जटामासी, छड़, छर ।

जटामुर तत्० (गु०) एक राक्षस का नाम, युधिष्ठिर आदि जब बदरिकाश्रम में रहते थे उस समय यह राक्षस द्रौपदी का हरण करने की इच्छा से वहा आया, और अपने को बड़ा बुद्धिमान् पण्डित बता कर रहने लगा । एक दिन भीमसेन शिकार के लिये वन गये हुए थे । राक्षस युधिष्ठिर, नकुल, और सहदेव के साथ द्रौपदी को बाध कर ले जाने लगा । सयोगवश भीमसेन से मार्ग में भेंट हो गयी, उन्होंने राक्षस को मार कर अपने भाई और द्रौपदी का उद्धार किया ।

जटित तत्० (गु०) जडित, जड़ा हुआ, संपट, जड़ाऊ, जटायुक्त ।

जटिया दे० (गु०) जटायुक्त, जटाविशिष्ट, जटाधारी ।

जटिल तत्० (गु०) जटाविशिष्ट, जटाधारी, सरलतापूर्वक न समझा जाय, कठिन, कठोर उलभन की धातों । घटवृत्त, ब्रह्मचारी, सप्त एक विष्णुभक्त बालक, इसके विषय में धात कही जाती है । यह पाठशास्त्र ज्ञाते या । इसकी माता गोविन्द गोविन्द मन्त्र से कहा करते थे । माता के उद्दिशानुसार गोविन्द नाम का स्मरण करता हुआ ।

लगा । उसकी भक्ति से प्रसन्न होकर बालक के रूप में उसके साथ पीता करते थे । दिन जटिल पाठशाले में ठीक समय वासका । गुरु के कारण पूँछने पर उसने बतला दिया, परन्तु उन्होंने उसकी विश्वास नहीं किया, उसको बँत से पीटा, उसके देह पर बँत का दाग नहीं पड़ा । गुरु को बड़ा आश्चर्य हुआ । एक दिन वि उन्सव था, उन्होंने दही ले आने के को कह रखा था । ब्राह्मण भोजन । कुँडिया दही लेकर बालक पहुँच कर भित्ती की मुनाने लगे । उसने कहा करते गोविन्द ने कहा है कि चाहे किन्हीं इसमें से खायँ परन्तु दही में घटियों का ऐसा ही हुआ । श्व लोगो को जटिल के साथ गोविन्द के दर्शन गुरु वन में गये ।

जटिला तत्० (खी०) राधा की बालिका । यह आयन घोष की माता थी । दुर्मयिणी, एक और इसकी पुत्र था और एक जिसका नाम कुटिला था । कृष्णप्रणयिक के चरित्र को यह अत्यन्त कलङ्कित ।

जटी तत्० (गु०) घटवृत्त, बरगद का पेड़, महादेव ।

जटुल दे० (गु०) तिल, मसा, लहसन, शरीर एक चिन्ह ।

जठर तत्० (गु०) उदर, पेट, (गु०) बड़, कठोर ।—अग्नि (गु०) पेट की आग, अन्न बाला, अग्नि, बुधा, बुधुत् ।—नल (गु०)

ग, बुभुक्षा ।—अमय (५०) रोग विशेष, जलोदर, देदरोगी ।

तद्द० (गु) सार, दृढ़, कठिन, कठोर ।

म तद्द० (गु) जलोदर, जठरामय, जलन्धर ।

दे० (गु) बड़ा, जेठा, चाग्रज, (खी०) जठेरी, घुटी, मान्या, पूज्या ।

त्० (गु) मूल, कारण, नींव, भूक, मूढ़, नींव, निर्वृद्धि, चलन शक्ति हीन, दुष्ट, अकार्य-नी, वेह, पर्यत ।—क्रिय (गु) दीर्घबुद्धि, नसी, अन्नम, निरुत्साही ।—ता (खी०) यता, अकड़पन, मूढ़ता, मूर्खता ।—जन्तु (गु) मूढ़जीव, मूर्ख, निर्वोध, पशु पक्षी, आदि । बुद्धि (गु) अज्ञान, निर्वोध, मूर्ख, मूढ़ । मति (गु) निर्वृद्धि, मूर्ख ।

०० (गु) गहने जड़ने का काम, गहनों में निरूपण आदि जड़ना ।

जे० (क्रि०) जड़ना, लगाना, बैठाना, अटका पीटना, साटना, नग बैठाना ।

जा० (खी०) मूल सहित वेह, समस्त वेह, जड़ना ।—से उखाड़ना (वा०) जड़मूल से उखाड़ना, सपुत्र नष्ट कर देना, निमूल कर देना, उखाड़ डालना ।

जपु० (खी०) सुप्त, द्रव्या, दृढा ।

जत्त० (गु) शालग्राम नामक स्थान के नामक राजा किसी वन में धानप्रस्य आश्रम स्थापित करके रहते थे । एक दिन गङ्गा के निकट, दुःखी मृगशिशु को इन्होंने देखा । दया परवश यह उसे अपने आश्रम में ले आये । उसको पालने पोसने लगे । योंही चौदें दिन बीत गये । तब का प्रेम उस मृगशिशु से बहुत अधिक हो गया । यहाँ तक कि भरते समय तक भी भरत नहीं भूल सके । उसीका स्मरण करते करते तब का प्राण छूट गया । मृगयोनि में भरत का रूप हुआ । परन्तु इनको अपने पूर्व की बातें पता नहीं थीं । अतएव अपने पूर्व आश्रम में जा कर पिता-प्राप्त आदि से इन्होंने अपना जीवन

बिताया । दूसरे जन्ममें यह ब्राह्मण हुए । त्रिषयोपभोग आदि सांसारिक विषयों में न रुसने के लिये, यह जन्मल के वेश में रहने लगे । अपनी विद्या या बुद्धि का परिचय यह किसी को नहीं देते थे । अतएव इनको मूर्ख समझ कर, गाँव वाले काम करा लिया करते थे और कुछ भोजन के लिये इन्हें दे दिया करते थे । पिता की मृत्यु के बाद भाइयों के व्यवहार से यह वन में जाकर भगवद्भजन करने लगे ।

जड़हन दे० (गु) अगहनिया धान, कातिक में कटने वाला धान ।

जड़हनिया दे० (गु) कतिका धान ।

जड़ाई दे० (खी०) जड़ने का काम, जड़ने की मजूरी, पञ्चाकारी ।

जड़ाऊ दे० (गु) जड़ा हुआ, जड़ित, जड़ाई किया हुआ । पशु किया हुआ, नग जड़ा हुआ, लघित मण्डित, संलग्न ।

जड़ाना दे० (क्रि०) जड़ाई कराना, जड़वाना, पचवी का काम कराना ।

जड़ाव दे० (गु) जड़ने का काम, पचवी कारी ।

जड़ावर दे० (खी०) जाड़े की सामग्री, जाड़े के कपड़े ।

जड़ित दे० (गु) जड़ा हुआ, जड़ित, जड़ाई का काम किया हुआ ।

जड़िनी दे० (खी०) जड़ खी, दुष्ट, मूर्ख ।

जड़िया दे० (गु) जड़ने वाला, जौहरी, घुनार ।

जड़ी दे० (खी०) मूल, मूत्रि, घुटि, जड़ी हुई, जड़ दी गयी ।—घुटी (खी०) दवाई, औषधि, औषधि, खली, मूल ।

जड़ीभूत तद्द० (गु) स्तम्भित, चकित, आश्चर्यित, स्तब्धी कृत ।

जत दे० (खी०) रीति, आकृति, डील, डील, जो, जितने, जेते, चाल, रीति, भाँति ।

जतन तद्द० (गु) यत्न, उपाय, उद्योग, परिश्रम ।

जतनी तद्द० (गु) यत्री, उद्योगी, उपायी, परिश्रमी ।



जताना दे० ( क्रि० ) बुझाना, चेताना, बताना,  
समझाना, सुध करना ।

जती तद्० ( पु० ) यती, सन्यासी, शान्त, योगी,  
भिखारी ।

जतु तत्० ( स्त्री० ) लाख, लाचा, अलक्षक, लाह,  
पीपल का गोंद ।

जतुक तत्० ( पु० ) लाख, हींग, जटुल ।

जतुगृह तत्० ( पु० ) लाचागृह, लाह का गृह,  
जतुगृह ही में दुर्योधन ने पाण्डवों को बन्द करके  
आग लगा दी थी ।

जत्रु तत्० ( पु० ) गले की हड्डी, कण्ठला, गले के  
उपरी भाग की हड्डी, कन्धे की जड़ ।

जथा तत्० ( अ० ) यथा, जैसे, जिस प्रकार से, ज्यो ।

जत्था तद्० ( पु० ) शूय, मण्डली, दल, समूह,  
समाज, टोली, भुंड ।—धांधना ( वा० ) शूय  
बनाना, दल धांधना, दलबन्दी करना ।

जथाथित तद्० ( अ० ) यथास्थित, ज्यो का ज्यो,  
समुचित, योग्य, पूर्वयत्, जैसा का तैसा ।

जथार्थ तद्० ( अ० ) यथार्थ, ठीक ठीक, बिल्कुल  
ठीक बहुतही ठीक, उचित, बहुत उत्तम ।

जथोचित तद्० ( अ० ) यथायोग्य, यथोचित,  
जैसा उचित है, उचित, योग्य, जैसा योग्य है ।

जद् तद्० ( अ० ) जब, यदा ।

जदपि तद्० ( अ० ) यद्यपि, पूर्व कथित वाक्य के  
अर्थ में कुछ विशेष अर्थ इसके द्वारा कहा जाता  
है । यद्यपि वे परिहृत हैं, तथापि क्रियावाच्य न  
होने के कारण जन समाज में उनका आदर नहीं  
है ।

“मूरख हृदय न चेत, जो युग मिले विरधि सम ।

भूले फरे न बँत, जदपि सुधा बरपहि जलद” ॥

—रामायण ।

जदु तद्० ( पु० ) चन्द्र वंशी राजा, यादव वंश के  
प्रवर्तक ।

जदुनाथ तद्० }  
जदुनाथक तद्० } भगवाह श्री कृष्णचन्द्र ।  
जदुपति तद्० }

जदुचशी तद्० ( पु० ) यदुवंशी, यादव, यदुकुल के ।

जद्यपि तद्० ( अ० ) जद्यपि, यद्यपि ।

जन तत्० ( पु० ) मनुष्य, मानव, आदमी, व्यक्ति,  
लोक, महर्लोक के उपर का लोक ।

जनक तत्० ( पु० ) पिता, जन्मदाता, उत्पन्न हुए  
बाला, मिथिला पुरी के राजा, विदेह का राजा,  
जनक वंश के पूर्वपुरुष का नाम निमि था । निमि  
के पुत्र का नाम मिथि । मिथि के राजत्व-काल में  
विदेह का नाम मिथिला पड़ा था । जनक मिथि  
के पुत्र थे । इन्होंने जनक के नाम पर कुल का नाम  
नाम जनक पड़ा । सीता के पिता का नाम सीत  
ध्वज जनक था । सीतध्वज के छोटे भाई का  
नाम कुशध्वज था ।—तनयो ( स्त्री० ) जनक की  
कन्या, सीता, जानकी ।—पुर ( पु० ) जनक का  
राजधानी, मिथिला ।—नन्दिनी ( स्त्री० ) सीता  
—सुता ( स्त्री० ) सीता, जानकी ।

जनकीरा तद्० ( पु० ) जनक राजा के संबन्धी, जनक  
के कुटुम्बी, जनक के पक्ष का ।

जनङ्गम तद्० ( पु० ) चाण्डाल, अधम जाति, नीच  
जाति ।

जनता तत्० ( स्त्री० ) लोक, समूह, जनसमुदाय,  
जनमय ।

जनन तत्० [जन् + अनट्] जन्म, उत्पत्ति, वंश, उद्भव,  
जनना दे० ( क्रि० ) जन्म होना, उत्पन्न होना ।

जननी तत्० ( स्त्री० ) माता, मा, अम्बा, जन्म  
वाली, मैया ।

जनपद् तत्० ( पु० ) देश, प्रान्त, प्रदेश, वसतिस्थान,  
जनस्थान, लोकालय, मनुष्यों की वासस्थिति ।

जनप्रवाद तत्० ( पु० ) लोकापवाद, निन्दा  
कैलाय, निन्दा की चर्चा, तिरस्कार ।

जनमेजय तत्० ( पु० ) राजा परीक्षित के पुत्र,  
राजा के पुत्र ।

जनपिता तत्० ( पु० ) पिता जनक, चाप,  
जनयित्री तत्० ( स्त्री० ) माता, जननी,  
अम्बा ।

जनरथ तत्० ( पु० ) लोकापवाद, जनप्रवाद, जनप्र  
थान्ति, प्रसिद्धि, किसी भी बात की चर्चा ।

लोक तत् (५०) लोकविशेष, उर्ध्वस्थ सम  
पवित्र लोकों में से एक लोक, स्वर्गभेद ।

त्वाद् तत् (५०) सम्वाद, समाचार, घर घर की  
चर्चा ।

त्वासा तद् (५०) वरातिथियों के रहने का स्थान ।

श्रुति तत् (५०) क्रियदन्तो, सन्देश  
समाचार ।

स्थान तद् (५०) दृष्टकारण्य, दृष्टकारण्य  
के समयस्थ एक स्थान, जहाँ श्रीरामचन्द्र  
रहते थे ।

हार्द दे० (५०) मनुष्य सहित, प्रत्येक मनुष्य,  
प्रतिमनुष्य, हर एक, प्रत्येक ।

हा दे० (५०) जन, मनुष्य लोग ।

हार्द दे० (५०) प्रभुता श्री, बच्चा जनने वाली श्री,  
धाय, धात्री ।

ताजात दे० (५०) जनहार्द, घरघर, चन्वोन्य,  
एक एक से ।

तातिग तत् (५०) अतिमातृप, मनुष्य से  
अधिक, मनुष्य की शक्ति से बाहर की ।

ताधिनाथ तत् (५०) नरपति, राजा, विष्णु ।

तना दे० (क्रि०) जन्माना, उत्पन्न करना, जताना,  
चेताना, (स्त्री०) श्री, नारी, कामिनी ।

तान्त्रिक तत् (५०) अग्रकाय, गोपन, छिपा  
सम्वाद । नाटक में आपस में बात करने की एक  
मुद्रा । हस्तसङ्केत से केवल एक मनुष्य की अपने  
पास बुला कर धीरे धीरे बात करना जनान्त्रिक  
कहा जाता है ।

ताथ दे० (५०) सैन, सङ्केत, लखाव, चेतान्य,  
सूचना, जनाथ ।

ताथ दे० (५०) सम्बोधन, अग्रधवात्, माननीय,  
संघ, मान्य, पूज्य ।

तार्दन तत् (५०) विष्णु, भगवान्, नारायण,  
श्रीकृष्ण ।

नि तत् (स्त्री०) जन्म, उत्पत्ति, उद्भव । दे० नहीं,  
मन, निवेधार्यक ।

जनिका दे० (स्त्री०) द्वेकोक्ति, दोहरावा, दो पर्य  
कहने वाले शब्द ।

जनित तत् (५०) जन्मा, उत्पन्न ।

जनी दे० (स्त्री०) श्री, दासी, बहू, बधू, ब्याई हुई ।

जनु तत् (५०) जनन, उत्पत्ति, जन्म ।

जनुक दे० (५०) मानो, जानो, विशेषतः, उपमार्यक ।

जनेऊ दे० (५०) यज्ञोपवीत, रत्न का दोष, पञ्चपुत्र ।

जनेत दे० (स्त्री०) वगत, वराती, विशाहयात्री ।

जनोदाहरण तत् (५०) यश, गौरव, कीर्ति, मान,  
प्रतिष्ठा ।

जन्ता दे० (५०) तार खींचने का यन्त्र ।

जन्ताना दे० (क्रि०) निचोड़ना, चापना, दखाना ।

जन्तु तत् (५०) प्राणी, जीव, देही, पशु ।

जन्दा दे० (५०) खेती का एक यन्त्र ।

जन्मा दे० (५०) जन्मना, उपजना, उत्पन्न होना ।

जन्त्र तद् (५०) कल, यन्त्र, याजा, गच्छा, ताथील,  
जन्तर, टोटका ।

जन्म तत् (५०) उत्पत्ति, जन्म, उद्भव ।—द (५०)

जन्मदाता, पिता, जनक ।—दिन (५०) वर्षगौठ

वर्ष दिन, जन्म की तिथि ।—पत्री (स्त्री०) सप्त-

कुण्डली, जन्मकुण्डली ।—भूमि (स्त्री०) उत्पत्ति-

स्थान ।—शोध (५०) मरण, मृत्यु, जीव धर्म की

समाप्ति ।—स्थान (५०) उत्पत्तिस्थान, स्वदेश ।

जन्माना दे० (क्रि०) उपजाना, उत्पन्न करना ।

जन्मान्तर तत् (५०) दूसरा जन्म, द्वितीय जन्म,  
अन्य जन्म ।

जन्मान्तरीय तत् (५०) दूसरे जन्म का, अन्त्य  
जन्म सम्बन्धी ।

जन्मान्ध तत् (५०) [ जन्म + अन्ध ] जन्म से  
अन्धा, चाजन्म नेत्रहीन, जन्मायधि दृष्टिविहीन ।

जन्माष्टमी तत् (स्त्री०) [ जन्म + अष्टमी ] श्रीकृष्ण  
की जन्मतिथि, मादों कृष्ण पक्ष की अष्टमी,  
प्रतान्तर में रायण की कृष्णाष्टमी ।

जन्मोत्सव तत् (५०) [ जन्म + उत्सव ] जन्म  
दिन का उत्सव, उखाह, वर्षगौठ ।

जन्य तत् (५०) उत्पत्तिगाम, उत्पन्न होनावाला,  
प्राप्ति पुत्र ।—जनकभाव्य (५०) उत्पन्न-



जमहाई तद् (स्त्री०) बालक से हाथ धर तोड़ना,  
अङ्गभङ्ग करना, जृम्भा श्राना ।

जमहाना तद् (क्रि०) जमहाई लेना, गासविशेष,  
गात्रप्रसारण ।

जमहाई तद् (पु०) जामाता, दामाद, कन्यापति ।

जमात दे० (स्त्री०) समूह, साधुओं का समूह, चलाड़ा,  
“पवहारी बाबा की जमात” ।

जमानत दे० (स्त्री०) जिम्मेदारी ।

जमाना दे० (क्रि०) एकट्ठा करना, राशि करना,  
बाँधना, यथास्थान रखना, अपने अपने स्थान पर  
रखना, उत्पन्न करना, प्रभाव फैलाना, प्रभाव  
जमाना ।

जमालगोटा दे० (पु०) एक औषध का नाम, रेशक  
औषध ।

जमाव दे० (पु०) भीड़भाड़, समूह, समुदाय ।

जमावट दे० (पु०) जुड़ाई, बन्धन, सङ्गठन ।

जमीन दे० (स्त्री०) भूमि, पृथिवी, स्थान, सम्पत्ति ।

जमीदार दे० (पु०) भूम्यधिकारी, भूस्वामी ।

जमुना तद् (स्त्री०) जमुना नदी, यह नदी गङ्गाल  
के प्रान्ततर्फी कलिन्द पर्यन्त से निकली है, दक्षिण  
की ओर बहती हुई दिल्ली की परिक्रमा करती  
मथुरा बटावा कालपी होती हुई प्रयाग में गङ्गा  
से मिली है । सम्झल केन ऐतथा ये तीन नदियाँ  
इस में मिली हैं । महाभारत के समय में इस नदी  
की बड़ी प्रतिष्ठा थी, यह सर्वाधिक पुण्य नदी  
समझी जाती थी । यह नदी गङ्गा की सबसे बड़ी  
सहायिका है ।

जमगना दे० (क्रि०) सङ्गोजना, सहजाना, अधिकारी  
की अधिकार सम्भला देना, विवधानी होना,  
स्वीकार कराना, जमानत देना ।

जमा दे० (क्रि०) बढ़ना, जमना, पनपना, अङ्कुर  
होना ।

जमपति तद् (पु०) दम्पति, जायापति, स्त्री पुरुष,  
नरनारी ।

जमवाल तद् (पु०) पट्ट, कर्दम, कीचड़, सेवाल,  
सेवाल ।

जम्बीर तद् (पु०) नींबू, जम्बीरो नींबू ।

जम्बुक तद् (पु०) गीदड़, गृगाल, चियार ।

जम्बुमाली तद् (पु०) राक्षसविशेष, रावण के  
सेनापति प्रहस्त का पुत्र ।

जम्बू तद् (पु०) जामुन का पेड़ या फल, जम्बू  
फल । कारमीर के अन्तर्गत एक नगर, कारमीर  
की राजधानी ।—द्वीप (पु०) सात द्वीपों में  
सुएय द्वीप । इसमें नौ खण्ड हैं, जिसका एक खण्ड  
यह भारत वर्ष है ।

जम्भमेदी तद् (पु०) जम्भ नामक राक्षस का भेदन  
करनेवाला, इन्द्र, महेंद्र ।

जम्बीर तद् (पु०) जम्बीरी, नींबू, मरुघा,  
मरुवक ।

जय तद् (पु०) जीतना, पराभव करना, पराजित  
करना, जीत, हराना, शायीर्वाद, प्रार्थना ।

विष्णु भगवान् के द्वाररक्षक का नाम, जय  
के छोटे भाई का नाम विजय था । ये दोनों  
भगवान् विष्णु के द्वाररक्षक थे । एक बार सनक  
आदि ऋषियों को इन लोगों ने विष्णु दर्शन करने  
जाने नहीं दिया, जिस कारण महर्षियों ने श्राप  
दिया । पुनः इनकी प्रार्थना से प्रसन्न होकर  
महर्षियों ने कहा कि “हमारा श्राप उपर्य नहीं  
हो सकता, तथापि तुम भोग विष्णु से गन्तु या  
मित्रता करके मुक्त हो सकते हो । महर्षियों के  
श्राप से जय, सत्ययुग में हिरण्यवाच, वेता में रावण  
और द्वापर में शिशुपाल हुआ था ; विजय सत्ययुग  
में हिरण्यकशिपु, वेता में कुम्भकर्ण और द्वापर में  
दन्तवक्र हुआ था । इन लोगों ने तीनों जन्म में  
भगवान् से शत्रुता की और भगवान् के द्वारा  
मारे जाकर मुक्त हुए ।—जयकार (पु०) जीत,  
अभ्युदय, शायीर्वादार्थक ।—पताका (स्त्री०)  
जयध्वनि, जय का अक्षर, जयका निशान, जय  
ध्वजा ।—पत्र (पु०) अरवमेध यज्ञ के घोड़े के  
सिर पर बंधा हुआ लेख, विवाद में जयबोधक  
पत्र, जीतपत्र ।—मङ्गल (पु०) राज पाहन  
न मक हस्ती, ज्वरनाशक औषधि, व्रतविशेष ।

उत्पादक भाव, पिता पुत्र भाव, नैयायिकों का एक सम्बन्ध विशेष ।

जप तत्० ( पु० ) पुनः पुनः कथन, पुनः पुनः मन्त्रो-

ः च्चारण, बार बार देवता का नाम स्मरण करना,

जप करना, जपना ।—कारी ( पु० ) जापक,

जप करने वाला ।—तप ( पु० ) पूजा, अर्चा,

भजन, सदाचार, पूजा पाठ ।—नीय ( पु० )

जप करने योग्य, जप्य, मन्त्र ।—परायण ( पु० )

जपासक्त, जापक, जप करनेवाला, जपनशील ।

—माला ( स्त्री० ) जप करने की माला, अक्ष-

माला, जपसूत्र, स्मरणी, सुमिरनी, १०८ दाने की

माला ।—माली ( स्त्री० ) गंगुजी, एक प्रकार की

शैली जिसमें माला रखकर जप किया जाता है ।

जपत तद्० ( पु० ) जपता हुआ, जप करता हुआ,

माला जपता हुआ ।

जपन तत्० ( पु० ) देवता का नाम स्मरण, जप ।

जपना तद्० ( क्रि० ) जप करना, मन्त्र का उच्चारण

करना ।

जपन्ता तद्० ( पु० ) जप करने वाला, जापक ।

जपा तत्० ( स्त्री० ) जवा पुष्प का वृक्ष, गृहहल का

फल ।

जपतीतपी तद्० ( पु० ) पूजक, अर्चक, भजनानन्द,

जपतपपरायण, तपशी, तपस्वी ।

जप्त तत्० ( पु० ) [ जप् + त ] जपित, जप किया

हुआ ।

जय दे० ( श्र० ) यदा, जिस समय, जिस काल ।

—तक ( श्र० ) यावत्, जिस समय तक ।

—तलक ( श्र० ) जब तक ।

जयड़ा दे० ( पु० ) जभा, चौहड़, जभड़ा ।

जयदना दे० ( क्रि० ) पूर्ण होना, भर जाना, भरा

रहना, मुन न पड़ना, कान का जयदना ।

जयड़ा दे० ( पु० ) घनाड़ी, भौंठ, नासमझ, जड़ ।

जयद्विया दे० ( पु० ) कुरुप, अमुन्दर, भद्रा, कुश्री,

कुत्सित आकार वाला ।

जब न तब दे० ( अ० ) अनियमित, बिना समय से,

मदा, मर्दा ।

जय लग दे० ( श्र० ) जिस समय तक, जब

जय लों ।

जभा दे० ( पु० ) जयड़ा, चौहड़ ।

जमकना दे० ( क्रि० ) जम जाना, सख्त

यना रहना, निभना, निब्रहना, ठहरना ।

जमकाना दे० ( क्रि० ) एकट्ठा करना, एकत्र

करना, राशि करना ।

जमघट दे० ( पु० ) भोड़, मपहली, मूष, मूष

फुण्ड ।

जमजम दे० ( श्र० ) सदा, निरन्तर, दहर द

रह रह कर ।

जमदग्नि तत्० ( पु० ) एक ऋषि का नाम

परशुराम का पिता । महर्षि ऋषीक के पुत्र,

वैदिक ऋषि थे । ऋग्वेद के मुक्तों से जाना जाता

कि जमदग्नि और विश्वामित्र, महर्षि ऋषि

विपत्तों थे । इनका विवाह राजा प्रसेनजित्

कन्या रेणुका से हुआ था । जमदग्नि के तीन

पुत्र थे । रुमेश्वर, सुपेण, ब्रह्म, विश्वाशु, और

यही राम परशु धारण करने के कारण

परशुराम नाम से प्रसिद्ध हुए थे । परशुराम का

सब से छोटे पेटे, तथापि इनके गुण सब से बढ़े

महर्षि जमदग्नि कार्तवीर्य के हाथ मारे गये ।

जमदूत तद्० ( पु० ) यमदूत, मृत्यु के दूत, म

चिन्ह, जो मरने के पहले होते हैं ।

जमदीया तद्० ( पु० ) यमदीपक, अर्थात् कार्त

कृष्ण त्रयोदशी का जो जम के नाम से ख

बाहर जलाया जाता है ।

जमधर तद्० ( पु० ) कटार, बिहुआ, अक्षविर्

तीखी नेाक वाली एक प्रकार की कुरी ।

जमना दे० ( क्रि० ) उत्पन्न होना, निकलना, उग

अङ्कित होना । बढ़ना । दृढ़ होना, गाढ़ा

घन होना, लही का जमना, पानी का

आदि ।

जमराज तद्० ( पु० ) यमराज, धर्मराज,

पाप पुण्य के व्यवस्थापक एक देवता ।

विशेष, दक्षिण दिशा के स्वामी ।

झोड़ कर अन्य पाण्डवों को सुम जीत सकते हो । महाभारत के युद्ध में अग्निमन्यु वध के समय, चक्रवर्तुह के रथक जयद्रथ ही थे, उसी वर के प्रभाव से इन्होंने पुषिष्ठिर आदि को भीतर नहीं जाने दिया । अर्जुन येही नहीं, वह संस्रक के साथ लड़ रहे थे । पुत्रवध सुन के अर्जुन ने सूर्यास्त के पहले ही जयद्रथ का वध करने की प्रतिज्ञा की । दुर्योधन के वीरों ने जयद्रथ की रक्षा करने की चेष्टा की, उसी समय भगवान् श्रीकृष्ण ने सुदर्शन-चक्र से सूर्य को छिपा लिया । कौरवों ने समझा कि सन्ध्या हो गयी, अथ अर्जुन श्वयं मर जायगा । परन्तु धोड़ीही देर में उनका विश्वास नष्ट हो गया, सुदर्शनचक्र को भगवान् ने हटा लिया, सूर्य को फिरसे चमकने लगीं, अर्जुन ने जयद्रथ का सिर काट डाला । जयद्रथ के पिता ने वर दिया था कि जो कोई हमारे पुत्र का सिर धूमि पर गिरावेगा उसका सिर टुकड़े टुकड़े हो जायगा । इसी कारण अर्जुन ने जयद्रथ का सिर उनके पिता वृहस्रज की गोद में रख दिया, उस समय वृहस्रज कुण्डल के घाम स्वमन्तपद्मक स्थान में तपस्या करते थे । जयद्रथ का सिर उन्हीं से धूमि पर गिरा, अतएव उनका भी सिर खण्ड खण्ड हो गया । जयद्रथ के पुत्र का नाम सुरघ था ।

यनगर तह० ( ५० ) राजवृत्ताने की पुरानी राजधानी ।

यन्त तह० ( ५० ) १—अयोध्याराज के एक मन्त्री का नाम ।

२—इन्द्र का पुत्र, पारिजातहरण के समय इससे श्रीर कृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न से युद्ध हुआ था । इसीने सोता के चौब मारी थी ।

यन्ती तह० ( जी० ) गौरी, इन्द्रपुत्री, पताका, वृचविशेष, दुर्गा देवी, अघराजिता, योगविशेष, नगरविशेष, किसी प्रसिद्ध देव-चरित मनुष्य की जन्मतिथि के उपलक्ष्य में उत्सव, भगवान् के अवतारों के जन्म की तिथि का महोत्सव ।

यन्तीपुर तह० ( ५० ) सिलहट से दश कोस की दूरी पर का एक नगर, जिसे जयन्ता भी कहते हैं ।

जयपाल तह० १--( ५० ) लाहौर का प्रसिद्ध हिन्दू राजा ८७७ ई० में गजनी का सुवक्तगिन इन पर चढ़ आया । उसने पेशावर को अपने अधीन कर लिया । ९० हाथी जोर १० लाख रुपये घूड़ लेकर पुनः लौट गया । पुनः १००१ में उसके पुत्र महमूद ने जयपाल पर चढ़ाई की, दस युद्ध में यह कैद भी हो गये थे, परन्तु वार्षिक कर देने की प्रतिज्ञा कर बूट गये । दो बार इस प्रकार की हार से यह दुःखी हो कर अग्नि में प्रवेश कर मर गये । इन्होंने अपने पुत्र अन्नपाल को राजगद्दी दे दी थी ।

( २ ) अन्नपालका पुत्र और पहले जयपाल का पौत्र । १०१३ ई० में पिता के मरने के बाद यह लाहौर के सिंहासन पर बैठे थे । १०२२ ई० में इनको भी महमूद गज़नवी ने पराजित कर के लाहौर को अपने अधीन कर लिया । यही सुलतानों के भारत में भावी साम्राज्य की नींव थी । मानूम होता है पिता के चरित्रों को खूब जानने पर भी अन्नपाल ने अपने पुत्र का नाम हारने के लिये ही जयपाल रक्खा था ।

जयवेर दे० ( अ० ) जै वार, जितने वार, जितनी दके ।

जयमल ( ५० ) १—प्रसिद्ध राजपूत वीर । यह वदनौर के राजा थे, वदनौर मेवाड़ का एक सामन्त राज्य है, राणा सौगा के पुत्र कहाने वाले, क्षत्रिय-कनक उदयसिंह जब अकबर के दर से चित्तौर छोड़ कर भग गये, तत्र वीर अष्ट जयमल और वीरवर पुत्र ने मातृभूमि की रक्षा करने के लिये बड़ी वीरता से लड़े थे । इनकी युद्ध-कुशलता देखकर मोगलों के छोके बूट गये । परन्तु असंख्य सेना के सामने दो चादमी क्या बस्तु होते हैं । १५६८ ई० में देश के लिये वीर अष्ट जयमल रण भूमि में सर्वदा के लिये सोगये । यद्यपि अकबर ने स्वार्थ-साधन के लिये अति निन्दित उपाय से इस वीर को मारा था, तथापि इनकी वीरता की प्रशंसा उसे करनी ही पड़ी, इनकी पत्न्यर की मूर्ति बना कर उसने दिल्ली में स्थापित की थी । ( २ ) अक-

जयचन्द्र तत्० (५०) कन्नोज का अन्तिम राजा । यह विजयचन्द्र का पुत्र था । दिल्ली के राजा अच्युतपाल को पुत्री से विजयचन्द्र और अजमेर के राजा सोमेवर्ध का विवाह हुआ था । सोमेवर्ध के पुत्र का नाम पृथ्वीराज, पृथ्वीराज और जयचन्द्र दोनों दिल्लीपति अच्युतपाल के दौहित्र थे । अच्युतपाल पृथ्वीराज को अधिक चाहते थे । उनके कोई पुत्र नहीं था, अतएव उन्होंने दिल्ली का राज्य पृथ्वीराज को दिया । इससे जयचन्द्र को बड़ा दुःख हुआ । इन्होंने पृथ्वीराज को राज्यच्युत करने का दृढ़ संकल्प कर लिया । जयचन्द्र प्रतापी राजा थे, उन्होंने नर्मदा नदी के किनारे तक अपना राज्य फैलाया था । अपनी कन्या संयोगिता के विवाह के लिये उन्होंने स्वयम्बर रचा, स्वयम्बर में सभी राजाओं को निमन्त्रण भेजा गया, परन्तु पृथ्वीराज और इनके सहनोद मेवाड़ के महाराणा ममरसिंह को निमन्त्रण नहीं भेजा गया । पृथ्वीराज का तिरस्कार करने के लिये उनकी मूर्ति को पहकड़ा बना कर द्वार पर जयचन्दने पड़ा कर दिया था । दैवयोग से संयोगिता ने उसी पीतल की मूर्ति को ही जयमाता पहना दी । यह सुन कर पृथ्वीराज संयोगिता को ले गया । जयचन्द्र ने इसका बदला लेने के लिये गज़नी के गहाबुद्दीन-गोरो को ११८१ ई० में दिल्ली पर आक्रमण करने को बुलाया । उनका पानीपत के समीप पृथ्वीराज से युद्ध हुआ, पृथ्वीराज विजयी हुए, गज़नी का लुटेरा छूँड़े हाथ फिर गया । दो वर्ष के बाद पुनः उमने दिल्ली पर चढ़ाई की । थय की वार भी यहीं लड़ाई हुई, इस युद्ध में पृथ्वीराज हार गये । जयचन्द्र भी पृथ्वीराज से बदला लेकर सुजौ नहीं हुआ । उस पर भी मुसलमानों ने चढ़ाई की, वह हार कर मगघा, नाथ पर चढ़ कर नदी पार करता था कि नाथ डूब गया, नाथ ही नाथ जयचन्द्र भी डूब गया ; परन्तु उमका अधर्म नहीं हुआ ।

जयपत २० (५०) पृथ्वीराज ।

जयति तत्० (कि०) यह संस्कृत की एक जिज्ञा । इसका अर्थ है जोतना, हिन्दी में भी प्रयोग रामायण आदि में पाया जाता है ।

जयदेव तत्० (५०) १—यह एक प्रसिद्ध भक्त हैं । संस्कृत का गीतगोविन्द नामक गीत इन्हीं का बनाया है, बङ्गाल में मानभूमि जिसे केन्दुलि ( किन्दुघिलय ) नामक गाँव के रहने लगे थे । इनकी माता का नाम चामादेवी और पिता का नाम भोजदेव था । यह बङ्गाल के देवता राजा लक्ष्मणसेन की सभा में रहते थे । लक्ष्मणसेन का सन् १११६-१० माना जाता थातः उनके साथी जयदेव के समय के विश्व में सन्देह करने का कोई कारण नहीं है ।—

२—यह प्रसन्नराघव नामक नाटक के रचियता । यह धिलक्षण कवि और नैययिक थे । इनकी माता का नाम सुमित्रा और पिता का नाम महादेव था । इन्होंने अपने को कौण्डिन्य लिखा । कौण्डिन्य का अर्थ कौण्डिन्य-गोत्र, अथवा कुण्डिपुर निवासी है, इसका निश्चय करना कठिन । परन्तु कौण्डिन्य गोत्र ही उसका ठीक अर्थ माना पड़ता है । इनका दूसरा नाम पञ्चपरमिष्ठ भी प्रसिद्ध था । चन्द्रालोक नामक ग्रन्थ भी इन्हीं का बनाया है । इनके निधन का समय का अभी तक ठीक पता नहीं है । लगभग १५-वीं शताब्दी में इनका होना अनुमान किया जाता है ।

जयद्रथ तत्० (५०) सिन्धु देश के राजा, दुर्गा की बहिन दुःशला इनके अग्रही थी । इनके पिता का नाम बृहस्पति था । जब पाण्डव कामरूपवन में रहते थे, उस समय इन्होंने द्रौपदी की कुटी में अकेली देव हरना चाहा था, परन्तु उस समय जहाँ से भीमसेन पहुँच गये । इन्होंने उनसे को बड़ी अप्रतिष्ठा की, जयद्रथ का सिर मुँह के यहाँ से निकाल दिया । जयद्रथ ने घोर तपस्विक्रियाओं से प्रसन्न होकर घर भाँगने के लिये आता तो उमने एकही समय पाँचों पाण्डवों को जल की इच्छा प्रकट की । शिव जी ने कहा, जयद्रथ

छोड़ कर अन्य पाण्डवों को सुम जीत सकते हो। महाभारत के युद्ध में अभिमन्यु वध के समय, चक्रवर्तुह के रक्त जयद्रथ ही थे, उसी वर के प्रभाव से इन्होंने युधिष्ठिर आदि को भीतर नहीं जाने दिया। अर्जुन येही नहीं, वह संसप्तक के साथ लड़ रहे थे। पुत्रवध सुन के अर्जुन ने सूर्यास्त के पहले ही जयद्रथ का वध करने की प्रतिज्ञा की। दुर्योधन के वीरों ने जयद्रथ की रक्षा करने की चेष्टा की, उसी समय भगवान् श्रीकृष्ण ने सुदर्शन-चक्र से सूर्य को छिपा लिया। कौरवों ने समझा कि सन्ध्या हो गयी, अथ अर्जुन स्वयं मर जायगा। परन्तु योद्धीही देर में उनका विश्वास नष्ट हो गया, सुदर्शनचक्र को भगवान् ने हटा लिया, सूर्य को फिर से चमकने लगीं, अर्जुन ने जयद्रथ का शिर काट डाला। जयद्रथ के पिता ने वर दिया था कि जो कोई हमारे पुत्र का शिर भूमि पर गिरावेगा उसका शिर टुकड़े टुकड़े हो जायगा। इसी कारण अर्जुन ने जयद्रथ का शिर उनके पिता वृद्धसत्र की गोद में रख दिया, उस समय वृद्धसत्र कुक्षेत्र के पाम स्वमन्तपद्मक स्थान में तपस्या करते थे। जयद्रथ का शिर उन्हीं से भूमि पर गिरा, अतएव उनका भी शिर खण्ड खण्ड हो गया। जयद्रथ के पुत्र का नाम सुरथ था।

जयनगर तत् ० ( ५० ) राजपूताने की पुरानी राजधानी।

जयन्त तत् ० ( ५० ) १—अयोध्याराज के एक मन्त्री का नाम।

२—इन्द्र का पुत्र, पारिजातहरण के समय इससे श्रीकृष्ण के पुत्र अर्जुन से युद्ध हुआ था। इसीने सोता के चौब मारी थी।

जयन्ती तत् ० ( श्री ० ) गौरी, इन्द्रपुत्री, पताका, वृषभिशेष, दुर्गा देवी, अथराजिता, योगविशेष, नगरविशेष, किसी प्रसिद्ध देव-चरित मनुष्य को जन्मतिथि के उपलक्ष्य में उत्सव, भगवान् के अवतारों के जन्म की तिथि का महोत्सव।

जयन्तीपुर तत् ० ( ५० ) मिलाहट से दण कोस की दूरी पर का एक नगर, जिसे जयन्ता भी कहते हैं।

जयपाल तत् ० १—( ५० ) लाहौर का प्रसिद्ध हिन्दू राजा ८७७ ई० में गज़नी का सुयक्तगिन इन पर चढ़ आया। उसने पेशावर को अपने अधीन कर लिया। ५० हाथी और १० लाख रुपया घूस लेकर पुनः फोट गया। पुनः १००१ में उसके पुत्र महमूद ने जयपाल पर चढ़ाई की, इस युद्ध में यह कैद भी हो गये थे, परन्तु वार्षिक कर देने की प्रतिज्ञा कर छूट गये। दो बार इस प्रकार की हार से यह दुखी हो कर अग्नि में प्रवेश कर मर गये। इन्होंने अपने पुत्र अन्नङ्गपाल को राजगद्दी दे दी थी।

( २ ) अन्नङ्गपाल का पुत्र और पहले जयपाल का पीत्र। १०१३ ई० में पिता के मरने के बाद यह लाहौर के सिंहासन पर बैठे थे। १०२२ ई० में इनको भी महमूद गज़नवी ने पराजित कर के लाहौर को अपने अधीन कर लिया। यही मुसलमानों के भारत में भावी साम्राज्य की नींव थी। मानूम होता है पिता के चरित्रों को छूब जानने पर भी अन्नङ्गपाल ने अपने पुत्र का नाम हारने के लिये ही जयपाल रक्खा था।

जयवेर दे० ( अ० ) जै वार, जितने वार, जितनी दके।

जयमल ( ५० ) १—प्रसिद्ध राजपूत वीर। यह बदनीर के राजा थे, बदनीर नेवाड़ का एक सामन्त राज्य है, राणा सैंगा के पुत्र कहाने वाले, अत्रिय-कलङ्क उदयसिंह जब अक्षर के डर से त्रिगौर छोड़ कर भग गये, तत्र वीर अष्ट जयमल और वीरवर पुत्र ने भातुभूमि की रक्षा करने के लिये बड़ो वीरता से लड़े थे। इनकी युद्ध-कुशलता देखकर भोगलों के एङ्के छूट गये। परन्तु अर्धस्य सेना के सामने दो आदमी क्या वस्तु होते हैं। १५६८ ई० में देश के लिये वीर अष्ट जयमल रण भूमि में सर्वदा के लिये सोगये। यद्यपि अक्षर ने स्वार्थ-साधन के लिये अति निन्दित उपाय से इस वीर को मारा था, तथापि इनकी वीरता की प्रशंसा उसे करनी ही पड़ी, इनकी पत्न्यर की मूर्ति बना कर उसने दिल्ली में स्थापित की थी। ( २ ) मल-



माल में भी एक जयमल राजा की कथा लिखी है। यह विष्णु-भक्त थे। बड़े आपत्ति के समय भी यह विष्णु-पूजन नहीं छोड़ते थे। किसी राजा ने इन पर चढाई की, उस समय यह विष्णु पूजन कर रहे थे। यह लड़ने नहीं गये, उस राजा की सेना छिन्न भिन्न होने लगी। देखते देखते ही केवल एक वही राजा ही बच गये। उन्होंने जयमल से इन सब का कारण पूछा। अन्त में यह भी विष्णु भक्त हो गया।

जयवन्त तद्० ( पु० ) जय करने वाला, जीतने वाला, जयी।

जयवती तद्० ( स्त्री० ) अग्नि की मम जिह्वा के अन्तर्गत एक जिह्वा ( गु० ) जीतने वाली, जय करने वाली।

जया तद्० ( स्त्री० ) दुर्गा, जयन्ती वृक्ष, तिथि विशेष, मृतीया, षष्टमी, त्रयोदशी, हरीतकी, दुर्गा की सखी, विजया, अग्निमन्थवृक्ष, नीलवृक्षा, पताका विशेष।—न्तराय ( १० ) [ जय + अन्तराय ] जय का विघ्न, जय का विरोधी।—चह ( गु० ) [ जय + धावह ] जय देने वाला, जीत कराने वाला।

जयी तद्० ( गु० ) जेता, विजयी, शत्रु-पराभव-कर्ता, पराजयकर्ता, जयवान्।

जय्य तद्० ( गु० ) जय करने के योग्य, जय करने के समर्थ, जयोपयुक्त, जिसका जय किया जा सके।

जर तद्० ( स्त्री० ) ज्वर, तप, ताप, बुखार।

जरठ तद्० ( पु० ) कठिन, निष्ठुर, प्राचीन, पुराना, युद्ध, कठोर।

जरण तद्० ( पु० ) दिङ्ग, जीरा, जलन, बुढ़ापा, कुष्ठरोग की औषधि, कूट, काला जीरा, कृष्ण-जोरक। ( गु० ) जीर्ण, पुराना, वृद्ध, युद्ध।

जरत तद्० ( पु० ) बुढ़ा, वृद्ध, पुराना, जीर्ण, डोकटा, प्राचीन।

जरती तद्० ( स्त्री० ) वृद्धा, युद्धी, प्राचीना, डोकती।

जरत् तद्० ( गु० ) वृद्ध, प्राचीन, पुरानन, जीर्ण।

जरत्कार तद्० ( पु० ) मुनि विशेष। नागराज धामुकी के भगिनीपति, धामुकी की भगिनी का नाम

भी जरत्कार ही था। ( आस्तिक देखो ) एक दिन स्त्री जरत्कार ने पति जरत्कार को निद्रा में उठाया, इसी कारण क्रुद्ध होकर जरत्कार घर से निकल पड़े। उनके जाने के समय उनकी स्त्री विलाप करने लगी, उन्होंने कहा "अस्ति" अर्थात् तुम्हारे गर्भ में पुत्र है। इसी से उनके पुत्र का नाम आस्तिक पड़ा।

जरद्गच तद्० ( पु० ) बूढ़ा चल।

जरना दे० ( क्रि० ) जलना, दग्ध होना, भस्म होना, भुलसना।

जरा तद्० ( स्त्री० ) १-अधिक अवस्था होने से, बानों का गिरना, शरीर के मांस का शिथिल होना, वृद्धावस्था, चौथायस, चौथायन। एक राजाओं का नाम, इस ने मगध के राजा जरासन्ध के शरीर को जेड़ दिया था ब्रह्मा ने इसका नाम गृह देवां रखा था इसी के लोग पृथी देवी के नाम से पूजते हैं।

२-(पु०) एक व्याध, यादववंश लोप होने पर वृद्ध के नीचे ध्यानमग्न श्रीकृष्ण को इसी व्याध ने मृत समझ कर मारा था। लोग कहते हैं यह व्याध पूर्व जन्म का बालिपुत्र अङ्गद था।

जराँश तद्० ( पु० ) ज्वरांश, ज्वर का भाग, ज्वर के पूर्वावस्था, सामान्यज्वर, बुखार, बुद्धी, बुखार।

जरानुर तद्० ( गु० ) [ जरा + आनुर ] जीर्ण, दुर्बल, बुढ़ा, डोकटा, जरारोगग्रस्त।

जराना दे० ( क्रि० ) जराना, जरना, बालना, कर्ता, यगा, दग्ध करना, भस्म करना।

जरायु तद्० ( पु० ) गर्भोपेष्टन चर्म, गर्भाशय, गर्भ-स्थान, भिङ्गी।

जरायुज तद्० ( गु० ) [ जरायु + ज + ङ ] गर्भनाश, गर्भोत्पन्न, पिण्डज, मनुष्य आदि, चतुर्विध जीवों में श्रेष्ठ जीव।

जरावस्था तद्० ( स्त्री० ) [ जरा + अवस्था ] वृद्धावस्था, वृद्धावस्था, जीर्णावस्था, बुढ़ाई।

जरासन्ध तद्० ( पु० ) [ जरा + सन्ध ] मगध का प्रसिद्ध और पराक्रमी राजा। इसके पिता का नाम

वृहद्रथ या, राजा वृहद्रथ ने पुत्र के लिये तपस्या की थी, प्रसन्न होकर देवता ने उनको एक फल दिया और कहा कि यह फल अपनी रानी को खिला दो, अथवा ही पुत्र होगा। वृहद्रथ की दोनों रानियों ने उस फल को खाया खाया चीर कर खाया, अतएव उनके खाया २ अर्थात् शरीर का एक २ भाग पृथक् पृथक् उत्पन्न हुआ। राजा वृहद्रथ ने उन फलों को फिकवा दिया। जरा नामकी एक राक्षसी वहाँ रहती थी, उसने उन दुकड़ों को जोड़ कर एक शरीर बना दिया, और यह पुत्र राजा को देकर उसने कहा थाप का यह पुत्र पराक्रमी होगा। जरासन्ध की अस्ति और प्राप्ति नाम की दो कन्यायें कंस को ट्याही गयी थीं, कंस के मरने पर इसने मयुरा पर चढ़ाई की थी। युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ के समय यह भीम के द्वारा मारा गया।

ी दे० (खी०) कारचोयी, मुनहले तारों का काम, कामदानी।

ीय दे० (खी०) एक प्रकार की यहीं या भाला, जो लकड़ी की होती है। जमीन नापने की डोरी जो प्रायः ६० गज अथवा इसके भी अधिक लम्बी होती है।

ीथ दे० (यु०) मांस, पल, विशित, तमइछार्ड।

ीर दे० (यु०) आवश्यक, अथर्व, प्रयोजन।

ीर तत्० (यु०) जरातुर, जीर्ण, विदीर्ण, चप, विलयुक्त, सरन्ध्र, विभक्त, बँटा हुआ, जौजर, (यु०) शैलज नामक औषधि विशेष, इन्द्रध्वज, इन्द्र का भण्डा।

ीरी तत्० (खी०) लहसन, तिल।—का (यु०) बहु छिद्र युक्त वस्तु, भाँकर, जीर्ण, जर्जर, जरातुर, खर्खरा, खड़बड़, ऊभड़-खाभड़।—कृत (यु०) नष्ट-शक्ति, शीघ्र-शक्ति, सामर्थ्य-रहित, शीघ्र-नामर्थ्य।

ीतत्० (यु०) चन्द्र, चन्द्रमा, वृक्ष। (यु०) जीर्ण, पुराना, मङ्गलला, फटा पुराना।

ील तत्० (यु०) यन्त्रैला तिल, यन में उत्पन्न हुआ तेल, धनतिल, धनजात तिल।

जर्दा दे० (यु०) पीतवर्ण, पीलावर्ण, खाने की तम्बाकू।

जल तत्० (न०) पानी, अथवा वारि, पशुधत के अन्तर्गत भूत विशेष, मलिन। (यु०) जड़, हित्ता-हित ज्ञानशून्य।—अलि (यु०) पानी का धमर, पानी का भँरा।—कण्टक (यु०) पानीफल, सिंघाड़ा।—कन्द (यु०) सिंघाड़ा।—कपि (न०) जलजन्तु विशेष, शिगुमार, सूस।—कमल (यु०) उत्पल, पद्म।—करङ्क (यु०) नारिकेल फल, पद्म पुष्प, कमल, शङ्ख, चोंधा, कौड़ी, बराटिका, मेघ, तरङ्ग।—कल्मष (यु०) जल का विष, समुद्र मन्थन से उत्पन्न विष।—कष्ट (यु०) सूजा, अनावृष्टि, अस्पजल।—काक (यु०) पक्षि विशेष। कामा (खी०) कंधाहोली, वृक्षविशेष।—किराट (यु०) हित जलजन्तु।—कुक्कुट (यु०) जल विहङ्गम, जलसुर्गा।—कूकड़ (यु०) पनडूबा, पंडुक, पक्षिविशेष। कूपी (खी०) कूप, गर्त, गढ़ा, पोखरा, पुष्करिणी, भँवर, तलाव।—कूर्म (यु०) जल जन्तु विशेष, जल कपि, शिगुमार, सूस, सूसमार।—क्रिया (खी०) देवता के लिये जल प्रदान, उदकतर्पण।—क्रीडा (खी०) जलाशय में बराबर वालों के साथ जल खिडकना रूप खेल।—खानि (यु०) मेघ, समुद्र, नदी।—गुल्म (यु०) भँवर, कछुवा, तलाव।—चर (यु०) जलजन्तु, जल में रहने वाले प्राणी।—चरकेतु (यु०) कामदेव, मदन, मन्मथ, मीनध्वज, कामदेव की ध्वजा पर मछली का निशान है इसी कारण उनको जलचरकेतु मीनध्वज आदि कहते हैं।—चारी (यु०) मत्स्य, जलजन्तु।—छत्र (यु०) प्रपा, पनताल, प्याक, जहाँ पक्षियों को जल पिलाया जाता है। जलदानस्थान।—ज (यु०) पद्म, शङ्ख, कमल, अम्भोज (यु०) जल में उत्पन्न होने वाले पदार्थ।—जला (यु०) क्रोधी, भुँकलिया, पिलपिल।—जलाना (क्रि०) भुँकलाना, रिसाना, क्रोध करना।—जात (यु०) जल में उत्पन्न, सलिलजात।—डिम्ब (यु०) शम्बूक, सीप, दो कपाटी कौड़ी।—तरङ्ग (यु०)

जर्मि, बौचि, लहर, धानुमय वायु यन्त्र विशेष,  
 —तरण (पु०) तैरना, नाय या जहाज से पार  
 जाना, नाय या जहाज चलाने की विद्या ।—त्र  
 (पु०) जल से बचाने वाला, छाता, छत्र ।—थल  
 (पु०) जल और स्थल ।—द (पु०) मेघ, जलधर,  
 घटा, घादल, घन, वारिद, मोथा, घास, काण्य,  
 घडा ।(गु०) जलदान कर्ता, जल देने वाला ।  
 —दागम (पु०) वर्षाकाल प्रावृद् काल, पावस  
 ऋतु ।—दाभ (गु०) मेघगुण्य, मेघ के समान,  
 मेघोपम ।—दैचता (पु०) वरुण, जल के अधि-  
 ष्ठाता देवता ।—दोप (पु०) पानी की विकृति से  
 रोग होना, कौयवृद्धि रोग, अयवृद्धि, पानी  
 लगना, जल विकार ।—धर (पु०) मेघ, समुद्र,  
 सागर, एक प्रकार की घास । (गु०) पानी रखने  
 वाला ।—धारा (स्त्री०) भरना, प्रवाह, सोता,  
 स्रोत, पानी का गिरना ।—धि (पु०) समुद्र,  
 सागर, दश शङ्ख सस्या, शतलक्ष, कोटि ।—धिजा  
 (स्त्री०) कमला, लक्ष्मी, विष्णुप्रिया ।—निकास  
 (पु०) जल निकलने का स्थान, जहा से होकर  
 जल निकलता है, मोरी, पनाला ।—निधि (पु०)  
 समुद्र, सागर, वारिधि ।—निर्गम (पु०) गृह आदि  
 से जल निकलने का मार्ग, मोरी, पनाला, पानी का  
 निकास ।—नीम (पु०) बरनी, औषध विशेष ।  
 —न्धर (पु०) असुरराज, राक्षसराज । इन्द्र एक  
 बार शिव के दर्शन करने गये । वहा एक बृहदाकार  
 मनुष्य बैठा हुआ था । इन्द्र ने उससे शिवजी  
 के विषय में पूछा । कुछ उत्तर न पाने से रुष्ट होकर  
 इन्द्र ने उस मनुष्य के सिर पर बज्र मारा, मारते  
 के साथ ही अग्निक्षण उसके मस्तक से निकलने  
 लगे, इन्द्र ठयाकुल हो गये, उन्हें माहूम हुआ कि  
 मैंने शिव को ही मारा है । अतएव उन्होंने स्तुति  
 की, स्तुति से प्रसन्न होकर शिव ने उस अग्नि को  
 समुद्र में फेंक दिया । उसी अग्नि से एक लड़का  
 उत्पन्न हुआ । जिसके रोने से सप्तराज अधिर होने  
 लगा । इसला समाचार सुन ब्रह्मा वहा आये, समुद्र  
 ने उस बालक को ब्रह्मा के हाथ समर्पित  
 और उसको पालन करने के लिये

लड़का ब्रह्मा की गोद में खेला करता था, एक  
 दिन उसने ब्रह्मा की सूँठें पकड़ कर लीं।  
 ब्रह्मा की आँसों से जल धारा निकल पड़े,  
 इसी कारण ब्रह्मा ने उस लड़के का नाम  
 जलान्धर रख दिया । ब्रह्मा ने उस लड़के  
 को बर दिया, कि शिव के अतिरिक्त दूसरा कोई  
 उसको नहीं मार सकता । ब्रह्मा ने उसको शूर्पों  
 का राजा बनाया । उसने इन्द्र की राज्यभूत  
 कर इन्द्रासन को अपने अधिकार में कर लिया।  
 इन्द्र शिव की शरण गये । शिव ने उसका बंधन  
 के इन्द्र को स्वर्ग राज्य दिला दिया ।—पति (गु०)  
 वरुण, समुद्र, सागर ।—पाई (पु०) वृष और  
 फल विशेष ।—पात्र (पु०) लोटा, घसा।  
 —पान (पु०) कलेत्रा, कषप, सबरे का भोजन।  
 —प्राय (पु०) जलमय, जलस्य ।—प्लव (गु०)  
 जलनकुल, उदविलास ।—प्ल (गु०) दग्ध,  
 भस्म, आग से नष्ट ।—बही (स्त्री०) पैराव, तैराव,  
 हेलाय ।—मय (पु०) जलामई, जलप्रण,  
 पानी पानी ।—मानुष्य (पु०) जलजात मनुष्य,  
 जल और स्थल में चलने वाला मनुष्य ।  
 —मार्जार (पु०) जलविडाल, उदविलास।  
 —लता (स्त्री०) तरङ्ग, लहर ।—रञ्ज (गु०)  
 धक, क्युला ।—विडाल (पु०) उदविलास।  
 —चिपुव (पु०) तुलासंक्रान्ति ।—शयन (गु०)  
 जल में सोना, विष्णु का जल शयन ।—सूत  
 (स्त्री०) नहरावा, जनजन्तु विशेष ।—सेनी  
 (स्त्री०) जलगयिनी, एकादशी, जिस दिन  
 भगवान् विष्णु शयन करते हैं, तबेश गुप्त  
 एकादशी ।—हूरी (स्त्री०) जनधरी, महर्षि  
 पर जल धारा चढाना ।

जलक तत् (पु०) घराटिका, कौड़ि, मुक्तिका,  
 सोप, घोंघा ।

जलन दे० (पु०) ज्वलन, तप ।

जलना दे० (क्रि०) बरना, दग्ध होना, दहना ।

जलचैया दे० (पु०) जलने वाला, दग्ध ।

जल दे० (वा०) जल जाना, भटक उठना,  
 जाना ।

जलबुधना दे० ( वा० ) राख हो जाना, क्रोध से  
धरार हो जाना । प्रतिकार न कर सकने के कारण  
श्वेत्यन्त दुःखी होना ।

जला दे० ( पु० ) भोल, तालाव, घर, सरोवर,  
पोखरा ।

जलाकर तत्० ( पु० ) [ जल + आकर ] सोत,  
खोन, भरना, नाव बाँधने का सोहा ।

जलाशु तत्० ( पु० ) जल जन्तु विशेष, जल नकुल,  
ऊदविलाव, जल विलाई ।

जलाञ्जल तत्० ( पु० ) भरना, नाला, सोता,  
स्रोत ।

जलाञ्जलि तत्० ( श्री० ) तर्पण, दोनों हाथों में  
र लिया हुआ जल, करपुट-गृहीत-जल, मृतक के  
सद्वेष्ट से जलदान ।

जलाधार तत्० ( पु० ) पुष्करिणी, बापी, तड़ाग,  
जलाशय ।

जलाना दे० ( क्रि० ) बालना, दाहना, दग्ध करना,  
भस्म करना ।

जलावला दे० ( पु० ) खाक हुआ, विड़विड़ा, क्रोधो,  
दग्ध ।

जलामय तत्० ( पु० ) जलभरा, जलमय, जल में  
डूबा हुआ, भौंगा, भाला, आर्द्र, खोदा, गीला ।

जलावन दे० ( पु० ) ईधन, काष्ठ, जलाने की लकड़ी,  
काठ ।

जलावर्त दे० ( पु० ) जल का शुभाव, चकोद,  
गतवक्र, भँवर ।

जलाशय तत्० ( पु० ) तड़ाग, सरोवर, घर, देह,  
भोल, तालाव ।

जलिका तत्० ( श्री० ) जलौका, जॉक, जलुका ।

जलिया दे० ( पु० ) धोवर, मच्छोमार, कैवर्त ।

जलेचर तत्० ( पु० ) जल में चलने या चरने वाले  
प्राणी, हंस आदि जलचर पक्षी ।

जलेन्धन तत्० ( पु० ) बाहुशक्ति, बाहुवानल,  
जल की शक्ति ।

जले पर नैन लगाना दे० ( वा० ) दुःख पर दुःख  
देना, दुःखी को दुःख देना, सताये को सताना ।

जलेयी दे० ( श्री० ) मिठाई, एक प्रकार की मिठाई ।

जलेध्वर तत्० ( पु० ) जलाधिपति, वरुण, समुद्र,  
जलपति ।

जलोदर तत्० ( पु० ) जलन्धर रोग, जठराम, घेट  
की बीमारी ।

जलौका तत्० ( श्री० ) [ जल + श्लोक ] गॉक,  
जलिका, जल का कीड़ा ।

जल्दी दे० ( श्र० ) शीघ्र, त्वरा, मुरन्त ।

जल्प तत्० ( पु० ) बृथा बकवाद, झूठा भगड़ा,  
बिजयी की कथा, दूसरे के विद्वान्त के उपदेन  
कर के अपना मत स्थापित करने की व्यवस्था,  
वाद, कथा, शास्त्रार्थ ।

जल्पक तत्० ( पु० ) वायवृक, वाचाल, जल्पी,  
बकवादी ।

जल्पना तद्० ( क्रि० ) बकना, बिना प्रयोजन की बातें  
कहना, आप अपनी बड़ाई करना ।

जल्पाक तत्० ( पु० ) बहुत बोलने वाला, बकवादी,  
झकी ।

जल्पित तत्० ( पु० ) उक्त, कथित ।

जल्लोद दे० ( पु० ) हल्पा करने वाला, बध करने  
वाला, घातक ।

जघ तद्० ( पु० ) यघ, एक शस्त्र का नाम, यह देवान्न  
समझा जाता है ।

जघन तत्० ( पु० ) वेग, दीड़ ।

जघनिका तत्० ( श्री० ) घामण, आच्छादन, पर्दा,  
कनात ।

जघा दे० ( पु० ) चहुली की एक रेखा जिसके अनु-  
सार शुभाशुभ का ज्ञान सामुद्रिक शास्त्र वाले  
करते हैं ।

जघापार दे० ( पु० ) जघ से निकाला हुआ एक प्रकार  
का खार शोरा विशेष ।

जघान तद्० ( पु० ) युवा, तरुण ।

जघार दे० ( पु० ) समुद्र की बाड़, समुद्र का उपनना ।

—भाटा (दे० पु०) समुद्र का उत्तर चड़ाव ।

जघारा दे० ( पु० ) मुट्टा, जत्र, जई, चन्न विशेष ।

जघाला दे० ( पु० ) गोबई, बेकर तिला हुआ जघ  
चोर गोहूँ ।

जवासा दे० (५०) कटौली घास, तृण विशेष, गरमी के दिनों में इसकी छट्टी बनाई जाती है इसका स्वभाव है कि पानी पड़ने से सूख जाता है।

जस तद्० (५०) यश, कीर्ति, नामवरी, भलभली, जैसे, जिस प्रकार से, जिस रीति से।

जसत जसता दे० (५०) धातु विशेष, जस्ता, राँगा।

जसयत, यशवन्त तद्० (५०) कीर्तिवान्, कीर्ति-शाली।

जसवन्त तद्० (५०) विष्णुवात तुकाजीराय होल्कर के पुत्र, इनका पूरा नाम था जसवन्त राव होल्कर, तुकाजी राव के चार पुत्र थे, उनमें यह छोटे थे, पिता के मरने के अनन्तर राज्य के लिये चारों में विवाद हुआ, अन्त में जसवन्त राव ही की जीत हुई। यह राजा बने, इन्होंने अपने बड़े भाई काशी राव और भतीजे खण्डेराव की गुप्त हत्या की थी, जिसके फल से थोड़े ही दिनों में ये पागल हो गये। बहुत दिनों तक दुःख भोग कर सन् १८११ ई० में ये मर गये।

(२)—विष्णुवात महाराष्ट्र साधु, इनका जन्म १८१५ ई० में पूना में हुआ था, पहले १० रु० वेतन को एक सरकारी नौकरी इन्होंने कर ली थी। धीरे धीरे इनकी उन्नति होती गई। अन्त में यह तहसीलदार बनाये गये। १९५) रुपये इनको वेतन भी मिलने लगा, सिपाही-विद्रोह के समय इन्होंने सरकार को बहुत मदद की थी, अतएव इनकी इज्जत भी बहुत बढ़ गयी थी। इनको लोग देवता कहा करते थे। एक बार यह कमिश्नर साहब से मिलने सतारा गये थे, वहाँ इनके दर्शकों की भीड़ लग गयी। यह देख कमिश्नर साहब ने कलकट से इसका कारण पूछा। कलकट साहब ने कहा कि “इनको लोग देवता समझते हैं” कमिश्नर साहब ने फटा कि “इनको पेंशन दे दो”। साधु जसवन्त ने अब भजन में अपना मन लगाया, होल्कर, सेन्धिया आदि राजा इनका बड़ा आदर करते थे।

(३)—माड्यार (जोधपुर) के राजा, ये सवाट् शाह-जहाँ के एक प्रधान सेनापति थे। इनकी पीरता देख औरङ्गजेब इनसे भीतर श्रुता करता था।

इनके पुत्र पृथ्वी सिंह को औरङ्गजेब ने थोड़े मार डाला, और भी इनके दो पुत्र-काबुल के लड़ाई में मारे गये। पुत्र शोक से चिढ़कर एक जसवन्त को १५४२ ई० में औरङ्गजेब ने विष द्वारा मार डाला।

जसखी तद्० (५०) यशस्वी, कीर्तिवान्।

जसी दे० (५०) कीर्तिमान्, यशस्वी।

जसुमती तद्० (स्त्री०) नन्द की रानी, यशोदा, यशोमति, कृष्ण की माता। यथा:—

“चलत देखि जसुमति सुख पावै,  
दुमुकु दुमुकु धरतीधर रंगत जननी देखि दिखवै।”  
—सूर सङ्गीतकार।

जसोदा तद्० (स्त्री०) जसुमति, नन्दरानी, कृष्ण की माता, यथा:—“सिखावत चलत यसोदा मैग”।

जसोमती तद्० (स्त्री०) जसुमती, जसोदा, नन्दरानी, यथा:—“जसोमति लटकति पाद परे”।

जहर दे० (५०) विष, गरल।

जहत्स्वार्थी तद्० (स्त्री०) गौणार्थ, अप्रसिद्धार्थ।

जहाँ दे० (अ०) यत्र, जिस स्थान में, जिधर।

जहाँ दे० (अ०) जहाँ ही, जिस किसी स्थान में।

जहाज़ दे० (५०) बड़ी नौका, पोतयान, समुद्र में चलने वाली बड़ी नाव।

जहानक तद्० (५०) प्रलय, समस्त संसार का प्रलय, जगत् का महाप्रलय।

जन्हु तद्० (५०) एक राजर्षि का नाम, गङ्गा नदी के पीने से इनकी प्रसिद्धि हुई है। इनके पिता का नाम सुहोत्र और माता का नाम केशिनी था।

सुहोत्र प्रसिद्ध राजा पुरूरवा के वंशज हैं। पुरूरव सर्वमेध नामक यज्ञ करते थे, गङ्गा उस स्थान के डुबाने लगी, जन्हु ने गङ्गा को पी लिया। तभी गङ्गा का नाम जन्हुवी पड़ा है। युवनाश्व

कन्या कावेरी से इनका विवाह हुआ था।

का नाम सुनह था।—तनया (स्त्री०)

भागीरथी, त्रिपथगा।—सप्तमी (स्त्री०)

शुकु सप्तमी।

जा दे० (स०) जिस, कोई, चला, जा, दूर हो।

जाई दे० (स्त्री०) जनी, बेटी, दुहिता, कन्या, पुत्री ।  
जांगर दे० (पु०) पपड़ली समेत जांघ, अङ्ग, गात्र,  
शरीर ।

जांघ तद्० (पु०) अङ्गा, जानु, उरुदेश ।

जांघल दे० (पु०) बड़ा बगुला, एक पक्षि विशेष ।

जांधिया दे० (पु०) कड़ना, सँगोटी, एक प्रकार  
का पहलवानों का सँगोटा ।

जांच दे० (पु०) परख, परखाय, परीक्षा, अनुसन्धान,  
खरे छोटे को पहचान ।

जांचना दे० (क्रि०) जांच करना, परखना, कसौटी  
कड़ना, अनुसन्धान, यथार्थ पता लगाने के लिये  
उपाय, उद्योग करना, दुहराना, किसी के किये  
हुए काम को देखना, ठीक करना ।

जांत दे० (स्त्री०) डोल, जल भरने का डोल । (पु०)  
दबाव, घाय बढ़ाना, चपौस ।

जांता दे० (स्त्री०) चक्की, पेपणो, पीसने का यन्त्र ।

जाउर दे० (पु०) मोठा भात ।

जाकड़ दे० (पु०) बन्धक, धरोहर, न्याय, किसी  
नियम पर बन्धु लेना, पुराना मास ।

जाकर दे० (पु०) जिसका, जिसका सम्बन्धी ।

जाका दे० (सर्व०) जिसका ।

जाग दे० (पु०) जागरण, जागना, प्रबोध, निद्रा-  
त्याग ।

जागत तद्० (स्त्री०) जाग्रत, सावधानी, सचेत,  
चौकसाई ।

जागतिज्योत तद्० (पु०) पराक्रमी, प्रतापी,  
भाग्यवाह ।

जागना दे० (क्रि०) निद्रात्याग करना, नींद से  
उठना, सचेत होना, सावधान होना ।

जागरण तद्० (पु०) निद्रा त्याग, जागना, एकादशी  
आदि का रात्रि जागरण, रात जगा ।

जागलिक तद्० (पु०) जाग्रवचस्व मुनि ।

जागुक तद्० (पु०) जागरणशील, जागरण कर्ता,  
जागने वाला, सावधान, कार्यतत्पर ।

जागा दे० (पु०) जाति विशेष ।

जाग्यन्दी दे० (स्त्री०) हृदयन्दी, सीमानिर्द्देश,  
नींद, जप, ऊँघाई ।

जागा जागी दे० (स्त्री०) निद्रात्याग, जागरण,  
जागने के लिये होड़ लगाना ।

जागू दे० (पु०) जागने वाला, जागरण कर्ता ।

जाग्रत तद्० (पु०) जागता, अनिद्रित, सावधान,  
जागरण विशिष्ट, नींद से उठा हुआ ।

जाङ्गल तद्० (पु०) जङ्गल का उत्पन्न, एक प्रकार  
का स्थल पशु, निर्जल प्रदेश । (पु०) टिटिहरी  
पक्षी, कपिञ्जल पक्षी ।

जाङ्गलिक तद्० (पु०) विषयैव, विषयचिकित्सक,  
साँप के काटने की चिकित्सा करने वाला, काल-  
खेलिया ।

जाङ्गल तद्० (पु०) विष, कालकूट, हालाहाल, गरल,  
फल विशेष ।

जाङ्गुलि तद्० (पु०) विषयैव, सर्पचत चिकित्सक,  
सँपेला सँपेरा, विष भड़ैया ।

जाचक तद्० (पु०) याचक, प्रार्थी, माँगने वाला,  
मिचुक, मंगल, भिखारी, बन्दी, मागध, भाट ।

जाचत तद्० (क्रि०) याचना है, माँगता है,  
भित्वाटन करता है ।

जाचना तद्० (क्रि०) माँगना, याचना, परखना,  
परीक्षा करना ।

जाचा तद्० (पु०) माँगा, चाहा, अभिलषित,  
ईच्छित, प्रार्थित ।

जाच्यमान तद्० (पु०) याच्यमान, प्रार्थ्यमान,  
प्रार्थित, चाहा हुआ, माँगा हुआ ।

जाजक तद्० (पु०) याजक, पुरोहित, यज्ञ कराने  
वाला ।

जाजम दे० (पु०) बिडौना, शतरुड़ी, दरी, गलीचा,  
चित्रविचित्र आसन विशेष, जाजिम ।

जाजलि दे० (पु०) अथर्व वेदज्ञ गोत्र प्रवर्तक ऋषि,  
यह कुछ दिनों तक दाम्भिक हो गये थे, इनकी  
अपनी तपस्व का अभिमान हो गया था । पुनः  
काशी के एक वया ( गुलाघार ) से धर्मशास्त्र का  
उपदेश सुनकर इनका चित्त ठिकाने हुआ ।

जाजा दे० (स्त्री०) कर्लीनी ।

जाजामन्ती दे० (स्त्री०) नय जपयन्ती ।



जादू दे० (पु०) माया कुड़क, टोना, जन्तार, मन्तार ।  
 जादूगर दे० (पु०) कुड़की, मायावी, टोन्हा ।  
 जान तद्द० (पु०) ज्ञानी, हीठबन्द, शोभा, मायावी,  
 सर्वज्ञ, देवज्ञ, । (पु०) यान, सवारी, विमान,  
 वाहन । (खी०) प्राण, चानना, अतिप्रिय,  
 प्रियतम ।  
 जानकी तद्द० (खी०) जनक राजा की लड़की,  
 जनक-राज-तनया, जनकधुना, सीता, श्रीराम  
 चन्द्र की धर्मपत्नी ( देखो सीता ) ।  
 जानत तद्द० (पु०) ज्ञानी, बुद्धिमान, ज्ञान से,  
 जानता है, समझता है ।  
 जानना तद्द० (क्रि०) समझना, पहचानना, परिचय  
 करना ।  
 जाननी दे० (क्रि०) जानना, चिन्हना, पहचाना,  
 समझना ।  
 जानपद तद्द० (पु०) जनस्थान, देश, परगना,  
 जिला, चकला ।  
 जानप दे० (क्रि०) जानना, समझना, जानो, समझो ।  
 जानपहचान दे० (पु०) चिन्हार, परिचित, चिन्हा  
 पहचान ।  
 जानवर दे० (पु०) जन्तु, प्राणी, पशु पक्षी, आदि ।  
 जानहार दे० (पु०) जयैया, जानिवाला, गमनशील ।  
 जाना दे० (क्रि०) चलना, गमन करना ।  
 जानि दे० (क्रि०) समझ कर, जानकर ।  
 जानी दे० जाननी, समझनी, पहचान ली ।  
 जानु तद्द० (पु०) घुटना, घाँटू, जानू, डेयना,  
 घाटना, उरु, जह्वा का मध्यभाग ।  
 जानु फलक तद्द० (पु०) खुटिया, चकति, मोटा  
 घुटना, पदरे के समान जानु ।  
 जानी दे० (ख०) मानी, समझा ।  
 जाना दे० (क्रि०) पहचानना, समझना ।  
 जाप तद्द० (पु०) जप, रटन, माला केरन, बार बार  
 पढ़ना ।  
 जापक तद्द० (पु०) जप करने वाला, भजन करने  
 वाला, जपने वाला, सदा स्मरण करने वाला,  
 जपी, जपकर्ता, सर्वदा मन्त्रोच्चारणकारी ।

जाफरान दे० (पु०) कुड़ूम, केशर ।  
 जाफरअली खां, दे० इनका प्रसिद्ध नाम मीर  
 जाफर था, इन्हींकी विश्वासघातकता के  
 कारण सिराजुद्दौला गद्दी से उतारा गया था,  
 सिराजके सिंहासन चुन होने पर यह बङ्गाल के  
 सिंहासन के अधिकारी हुए, परन्तु १७६० ई० में  
 इनकी विलासिता अकमपयता देश अङ्गरेजों ने  
 इन्हें गद्दी से उतार दिया ।  
 जाफर खां, इनका प्रसिद्ध नाम मुर्शिद कुली खां  
 था । दिल्ली के बादशाह आलमगीर ने १००४ ई०  
 में इनको बङ्गाल की नवाबो दी था । इन्हीं अपने  
 नाम पर प्रसिद्ध नगर मुर्शिदाबाद बसाया था ।  
 जाय दे० (पु०) ठाटी, जाल विशेष, गमन करना,  
 जाना ।  
 जायाली तद्द० (पु०) एक ऋषि का नाम ।  
 जाम तद्द० (पु०) प्रहर, याम, चार घड़ी, दिन रात  
 का चाठवां भाग, तीन घण्टा, प्याला, चक्क,  
 मदिरा का प्याला,—“कना का जाम पेसा कि  
 में पी पी खूँ हू भर भर दे” ।  
 जामदग्न्य तद्द० (पु०) जमदग्नि का पुत्र ( परशुराम  
 देखो ) ।  
 जामन दे० (खी०) वृक्ष घोर फल विशेष, जौरन,  
 मोहन, जिससे दही नमाया जाता है, जो दही  
 जमाने के काम में आता है ।  
 जामवन्त तद्द० (पु०) जलराज, रामचन्द्र की सेना  
 का प्रधान ।  
 जामवन्ती तद्द० (खी०) जामवान की पुत्री, श्रीकृष्ण  
 चन्द्र की प्रधान रानियों में से एक रानी, श्रीकृष्ण  
 के इश्वर सत्रजित् के पास एक मणि था, श्रीकृष्ण  
 ने उस मणि को माँगा था, परन्तु उन्होंने नहीं  
 दिया । सत्रजित् के छोटे भाई प्रभेन उस मणि  
 को धारण कर शिकार खेलने गये थे । वहाँ उनकी  
 एक सिंह ने मार डाला और मणि ले लिया ।  
 सत्रजित् ने समझा कि कृष्ण ही ने मणि लेलिया  
 है । अतः इस कण्डू की दूर करने के लिये कृष्ण  
 दान में गये । उन्होंने एस जगह देखा कि प्रभेन  
 और सिंह मरे पड़े हैं । अपने साधियों को वहाँ



छोड़ कर वह एक पर्वत की गुहा में चुप गये, वहाँ उन्होंने देखा एक बालिका उस मणि को लिये खेल रही है। श्रीकृष्ण को देख कर बालिका और उसकी धाय दोनों चिल्ला उठीं, उनका चिल्लाना सुन कर जाम्बाम् निकला, और कृष्ण को सामान्य मनुष्य समझ कर उनसे लड़ने लगा। जब वह हार गया, तब उसने श्रीकृष्ण की स्तुति की, और मणि तथा अपनी कन्या श्रीकृष्ण को अर्पित की। जामवन्ती से व्याह करके श्रीकृष्ण मयुरा लौट आये।

जामा दे० (पु०) अङ्गरवा विशेष चेरदार अङ्गा।

जाम ता, जामानु तत्० (पु०) कन्या का पति, जमाई, दामाद।

जामिनी तद्० (स्त्री०) यामिनी, रात्रि, रात, चार पहर की रात, यशनों की भाषा, अरबी, फारसी।

जामिन, जामिनी दे० जमानत, संरक्षण, प्रातिभय, जमानत करना, बहिष्कान होना।

जाम्बानु तत्० (पु०) राजपति यह ब्रह्मा के पुत्र थे। मेतायुग में यह सुग्रीव के सेनापति होकर सीता जो की वृद्धने में रामचन्द्रजी के सहायक बने थे। द्वापर के अन्त में स्यमन्तकमणि के कारण इन्होंने श्रीकृष्णचन्द्र से लड़ाई की थी, अन्त में मणि और अपनी कन्या को श्रीकृष्ण को इन्होंने दे दी। खोजियों (अनुसन्धान कारियों) का कहना है कि यह जाम्बानु भालू नहीं थे, किन्तु अनार्य राजा थे।

जाम्बुवत तद्० (पु०) कल्पित भाग्य।

जाम्बूनद तद्० (पु०) सुवर्ण, स्वर्ण, हिरण्यमय, काञ्चन।

जाम्बुफल तद्० (पु०) फल विशेष, जातीफल, एक गर्म मसाला।

जाया तत्० (स्त्री०) भार्या, पत्नी, स्त्री, यनिता।

—जीय (पु०) नट, चारण, घेरयापति।

—जुजीवी (पु०) [जाया + अनुजीवी] नट, घेरयापति स्त्री की कमाई खाने वाला। स्त्री से जीने वाला।—पति (पु०) दम्पति, जम्पति, स्त्री पुरुष, नर नारी, पति पत्नी।

जार तत्० (पु०) उपपति, गुम, धिगाहा, जगम, यार, दूसरा पति, भंडूषा।—गर्म (पु०) चारी, लम्पट।—ज (पु०) उपपति से सन्तान, जारोत्पन्न, व्यभिचारजात सन्तान।

जारण तत्० (पु०) [ज + ञन्ट्] जलाना, बंध करना, चय करना, धातु आदि का फूटना।

जारना तद्० (क्रि०) जलाना, घालना, लहरना, दग्ध करना।

जारल दे० (पु०) काष्ठ विशेष, एक प्रकार के लकड़ी।

जाल तत्० (पु०) सूत आदि का बना हुआ मार्ग पकड़ने का फन्दा, पाश, फन्दा, जातीदा खिडकी, भरोखा, इन्द्रजाल, कुहक, कुन्निम।

जा लगि दे० (सर्व०) जिसके लिये, जिस कारण, जिस हेतु।

जालगोष्णिका तत्० (स्त्री०) दधिमन्थन भाग, मघेनी, मघनी।

जालन्धर तत्० (पु०) त्रिगर्त देश, त्रिगर्त देश, राजस विशेष, (देवी जलन्धर)।

जालरन्ध्र तत्० (पु०) जाली का भरोखा।

जाला तद्० (पु०) मकड़ी का फाँद, जल रखने का बड़ा पात्र, मटका।

जालिक तत्० (पु०) मधुघा, कैवर्त, धीर मखोमार, मकड़ी, मकड़ा, जाड़े का मकड़ा। (पु०) जाल से जीने वाला।

जालिया तद्० (पु०) कपटी, छली, मायावी, धूर्त, ठग।

जाली तद्० (पु०) जाल करने वाला, मायावी, यज्ञक, धीवर, व्याध, भंफरी, भरोखा।

जाल्म तद्० (पु०) पामर, क्रूर, असमीक्ष्यकारी, मूर्ख, धूर्त, अधम, फुटिल, निष्ठुर, नृगल।

जावक तद्० (पु०) यावत्क, अलक्तक, अलता, खियों के पैर रङ्गने का एक रङ्ग।

जावका तद्० (स्त्री०) लौंग, लौंग का फूल।

जावनी तद्० (स्त्री०) अजवाइन।

जावा दे० (पु०) उपद्वीप विशेष, हिन्द महासागर का उपद्वीप, यह द्वीप उच्च जाति की अधीनता में

हैं। यहां की वस्ती खूब घनी है। इसकी राजधानी बटाविया है। लङ्का में जो वस्तु उत्पन्न होती है, ये ही यहाँ भी उत्पन्न होती हैं।

जावां दे० ( पु० ) यमज, यमल, एक साय दो सन्तान की उत्पत्ति।

जासु दे० ( सर्व० ) जिसने, जिसको, जिनसे, जिनको।

जाह दे० ( पु० ) घबड़ाहट, आपत्ति, विपत्ति, असमय, फसाव।

जाहा दे० ( पु० ) देखा, निरीक्षण किया। यथा:—

“पारवती पुनि सत्य सराहा,  
श्री फिर मुख महेस कर जाहा”।

—पद्यागत।

जहांगीर दे० ( पु० ) भारत का मुगल सम्राट यह अकबर का पुत्र था, जयपुर की राजकन्या प्रियम से यह उत्पन्न हुआ था, इसका पहले सलीम नाम था। यह युवराज की अवस्था में महाराणा प्रताप के विरुद्ध लड़ने को भेजा गया था, हलदी घाटी के युद्ध में मरते मरते बचा था। इसने अपने पिता के मित्र अय्युलकजल को विष देकर मार डाला था। इसका विवाह जोधा याद से हुआ था। यह भी अन्य यादशाहों के समान दुराचारी और बिलासी था। जिससे इसे जीवन के अन्त-काल में दुख भेलना पड़ा था। अकबर की मृत्यु के अनन्तर, १६०५ ई० के १२-वर्षी अकबर की ३८ वर्ष की अवस्था में सलीम का आगरे के किले में राज्याभिषेक हुआ और इसका जहांगीर नाम रखा गया। तमघा और भीरवाड़ी ये दो क़र इसने माफ कर दिये थे। जगह जगह अस्पताल सराय और कुर्चा इतने बनवाये थे। इसके शासनकाल में वृहत्पतिवार और रक्षिदार को पशुहत्या नहीं होने पाती थी। मिर्जा न्वास की कन्या से यह पहले ही से विवाह करना चाहता था, परन्तु अकबर की इच्छा न रहने से उनके जीवनकाल में जहांगीर का मनोर्थ पूर्ण नहीं हो सका था। उस लड़की का विवाह अकबर ने किसी दूसरे से करा दिया था। राज्य पाकर

भारत के सम्राट ने एक स्त्री के लोभ में यह कर एक निरपराधि अपनी प्रजा का वध करने के लिये सेना भेजी थी, और उसको मरवा कर उसकी स्त्री को मँगवा लिया था।

जाहि दे० ( सर्व ) जिसको, जिस किसी को।

जाहिर दे० ( पु० ) प्रकाश करण, प्रचार करण।

जान्हवी तत्० ( स्त्री० ) भागीरथी, गङ्गा, ( देखो जन्हु )।

जिअस दे० ( क्रि० ) जीता है, जीवित है।

जिआउ दे० ( पु० ) जिलाय, जीवन दान, रोग से छुटकारा।

जिआन दे० ( पु० ) नुकसान, हानि, क्षति।

जिआये दे० पालित, जिआये हुए, पाला पोसा।

जिगजिगिया दे० ( पु० ) चापलूस, खुशामदी, मिथ्या प्रशंसक, चिरीरिया।

जिगजिगी दे० ( स्त्री० ) चितौरी, खुशामद, अनुनय, चापलूसी, मिथ्या प्रशंसा।

जिगना दे० ( पु० ) वृक्ष विशेष।

जिगमिया तत्० ( स्त्री० ) गमनेच्छा, गमन करने की इच्छा, जाने का अभिलाष।

जिगमियु तत्० ( पु० ) गमनेच्छुक, जाना चाहने वाला, जाने की इच्छा वाला।

जिगीपा तत्० ( स्त्री० ) जीतने की इच्छा, जयेच्छा, पराभव करने की इच्छा, उपवसाय, प्रकर्ष, घसका।

जिगीपु तत्० ( पु० ) जयेच्छु, जय चाहने वाला, जय का अभिलाष करने वाला।

जिघासा तत्० ( स्त्री० ) [घद् + सद् + घा] घृणा, भ्रूय, भोजन करने की इच्छा, वसुता।

जिघन्सु तत्० ( पु० ) [घद् + सद् + उ] घुसुसु, भोजन करने की इच्छा रखने वाला, घुपित, भ्रूया।

जिघत्सा तत्० ( स्त्री० ) [घद् + सद् + घा] मारने की इच्छा, वध करने की इच्छा, वध करने की चेष्टा, नाश करने का अभिलाष।

जिघांसु तत्० ( पु० ) वध-करेच्छुक, घातक, घायक, नृशंस, क्रूर, बधोद्यत।

जिजिया दे० (स्त्री०) ज्येष्ठा भगिनी, यही यतिन, स्तन, चूंची ।

जिजीविषु तत्० (गु०) जीने की इच्छा करने वाले, जीवनेच्छुक ।

जिज्ञासन तत्० (गु०) [ ज्ञा + सन् + अणत् ] प्रश्न करना, पूछना जानने की इच्छा प्रकाशित करना ।

जिज्ञासा तत्० (स्त्री०) प्रश्न, मनोगत, भाषकथन, मन की वार्ता कहना, पूछना, जानने की इच्छा ।

जिज्ञासु तत्० (गु०) प्रश्न करने वाला, पूछने वाला, प्रच्छक ।

जिज्ञास्य तत्० (गु०) पूछने योग्य, प्रश्न करने योग्य, जिज्ञासितव्य, जिज्ञासनीय ।

जिज्ञीर दे० (पु०) बेड़ी, सिक्कर, गूहल ।

जिठानो दे० (स्त्री०) पति के जेठे भाई की स्त्री ।

जित तत्० (गु०) [ जि + क्त ] पराभूत, पराभव प्राप्त, पराजित, पराजयी, यशोभूत, अधीन । जिधर, जहाँ । (पु०) अर्हदुपासक, जैनविशेष ।

जित्ना दे० } (गु०) परिमाण, अवधि, और  
जित्के दे० } संख्यायक ।

जितनी दे० (स्त्री०) परिमाणार्थक, खेल की जीतार्थ, बाजो की जीत ।

जितयोनि तत्० (पु०) हिरन, हरिण, मृगा ।

जित शत्रु तत्० (पु०) कृत शत्रु पराजय, विजयी ।

जितामित्र तत्० (पु०) [ जित + मित्र ] विष्णु नारायण । (गु०) विजयी, जिसने शत्रु जीत लिये हैं ।

जिताहार तत्० (गु०) [ जित + आहार ] अन्न जयी, जिसने अन्न को अधीन कर लिया है ।

जितेन्द्रिय तत्० } (पु०) [जित + इन्द्रिय] इन्द्रिय  
जितेन्द्रो तद्० } जीत, जिउने इन्द्रियों को यश कर लिया है, शान्त, यशो, अकामी ।

जिधर दे० (अ०) जिधर, जहाँ, यत्र, जिस स्थान में ।

जिन तत्० (पु०) जैन धर्म प्रवर्तक, आचार्य, जैनियों के तीर्थङ्कर, इनके तीर्थङ्कर २४ हैं, यद्यपि सभी का स्वतन्त्र नाम भिन्न है, तथापि केवल जिन पद से भी उनका व्यवहार होता है । जिन ही का कोई कोई बौद्ध बतलाते हैं और जैन धर्म को

बौद्ध धर्म की शाखा मानते हैं, उनका ये समझना निष्कारण नहीं है । कोर्से में शोध जैन का नाम प्रायः एक ही साथ आना ही कारण है । परन्तु इससे अतिशय भिन्न इन दोनों धर्ममनों की एकता की कल्पना अनुचित है । इनके सिद्धान्त, धार्मिक, प्रक्रियायें, तथा शास्त्र आदि अत्यन्त भिन्न हैं । जैन धर्म प्राचीन है, गैर धर्म नहीं ।

जिनकेरे दे० (गु०) जिनके, जिस किसी के ।

जिन्स दे० (पु०) द्रव्य, यस्तु, पदार्थ, जात, प्रकाश

जिन्दगानी दे० (स्त्री०) जीवन, जिन्दगी, जन्म ।

जिम दे० (अ०) यथा, वैसा, यादृश—

“जिम दशनन महँ जीभ विचारी”

—रामायण

जिमाना दे० (क्रि०) भोजन करना, खिलाना अतिथि सत्कार करना ।

जिय तद्० (पु०) जीव, प्राण, आत्मा, हृदय ।

जियरा तद्० (पु०) प्रिय ।

जियाना तद्० (क्रि०) जिलाना, प्राण दान देना जीवित करना, पालना पोसना ।

जियोर दे० (गु०) साहसी, उत्साही, वीर, योग्य जीवन्त ।

जिला दे० (पु०) उपमान्त, प्रदेश के किसी भाग प्रधान स्थान जहाँ राजकर्मचारी राज्य व्यवहार करते हैं, जहाँ फलकटर साहय रहते हैं ।

जिलाना दे० (क्रि०) जीना करना, सजीव जीवित करना, जिला देना ।

जिल्द दे० (स्त्री०) पुस्तक की बँधवाई बँधने वाला, पुस्तक बन्धन कर्ता ।

जिच तद्० (पु०) जिय, प्राण, आत्मा, जीव, जीव यथाः—

“सुमिरहुं आदि एक करताऊ ।

जे जिच दोन्ह कोन्ह संसाऊ ॥”

—पद्माय

जिचनमूरी तद्० (स्त्री०) संजीवन औषध, जिच वाली चूटी ।

जिप्सु तत्त्वं ( पु० ) अजून, किरौटी, इन्द्र, जेतने  
वाला, जयो, विजयी ।

जवाना दे० ( क्रि० ) जिमाना, भीजन करना ।

जसु दे० ( सर्व० ) जिसका, सम्बन्धार्थ धाची ।

जहिं दे० ( सर्व० ) जो, जिम, जिसको ।

जहा तत्त्वं ( पु० ) कपट, कुटिलार्थ, छल, धूर्तता,  
सूझता ।—कर ( पु० ) कपटी, छली, धूर्त ।—ग  
( पु० ) सौंप, सर्प, टेढ़े चलने वाले, चक्रगामी,  
बाण, तोर ।

जिहल तत्त्वं ( पु० ) चटोर, लोचुप, लोभी, लुब्ध,  
जिभीर ।

जहा तत्त्वं ( स्त्री० ) रसना, जीभा, जीम,  
रसनेन्द्रिय ।—स्वाद ( पु० ) [ जिह्वा + आस्वाद ]  
चाटना, सेहन करना ।—ग्र ( पु० ) गुणध्र,  
कण्ठस्थ, धरजबानी ।

जी दे० ( पु० ) प्राण, मन, हृदय ।—उठाना ( या० )  
उदासीनता, मन खींचना, मित्रता में बाधा ।

—चुरा करना ( या० ) जी मिचलाना, उचकाई  
घाना, चप्रीति करना, उदासीनता दिखलाना ।

—घड़ाना ( या० ) उत्साहित होना, मन को  
उत्तेजित करना, बड़े बड़े कामों को करने का अभि-  
लाष होना, किसी बड़े काम को करने की प्रवण  
इच्छा ।—विखरना ( या० ) मन में भेद होना,  
अचेत होना, सुच्छां घाना ।—भर जाना ( या० )

सन्तोष होना, तृप्ति होना, सन्देह रहित होना,  
संशय दूर करना, अधाना, अधा जाना ।

—भा जाना ( या० ) किसी वस्तु की चाह  
होना, किसी वस्तु का पवन्द हो जाना ।—भर

घाना ( या० ) दया घाना, दया युक्त होना,  
दया हर्ष अथवा शीघ्र से गला रुक जाना, किसी

के दुःख से दुली होना ।—बहलाना ( या० )  
मन बहलाना, मनोरञ्जन करना । मनो विनोद

करना ।—पाना ( या० ) किसी के स्वभाव से  
परिचित होना, किसी को पदचानना ।—पानी

करना ( या० ) लज्जित करना, दुःखित करना,  
दुःख देना, विड़ाना, पिचाना ।—पर खेलना  
( या० ) किसी उद्देश्य से अपने को सङ्कट में

ढालना । अपने को सङ्कट में डाल कर भी किसी  
काम को करना ।—पिघलना ( या० ) दया

घाना, किसी के दुःख से दुःखित होना । मोह  
घाना ।—पकड़ा जाना ( या० ) शोक ग्रस्त

होना, शीघ्र घाना, उदासीन होना ।—फटना  
( या० ) प्रेम टूटना ।—फिर जाना ( या० )

सन्तुष्ट होना, तृप्त होना, अधाना, अनिच्छा  
होना ।—जलाना ( या० ) मन का दुःखित होना,

पीड़ा, वेदना, व्यथा ।—जलाना ( या० ) सताना,  
दुःख देना, पीड़ा पहुँचाना । दूसरों के कार्य के

विषे अपने को जलाना, स्वयं कष्ट उठा कर भी  
दूसरों को सुखी करना, निष्काम परोपकार करना ।

—चाहना ( या० ) किसी वस्तु की इच्छा ।  
—चुराना छिपाना ( या० ) आलस करना,

शक्ति के अनुसार काम न करना ।—चलाना  
( या० ) इन्द्रिय के विषयों को धीर मन का जाना ।

चाह, इच्छा, अभिलाष, मनोरथ ।—चलाना  
( या० ) शक्ति प्रदर्शन करना, सामर्थ्य दिखाना,

कार्ययुक्ता ।—दान करना ( या० ) अथरापी  
की चमा करना ।—घड़कना ( या० ) अशुद्ध

होना, चयहाना ।—हूच जाना ( या० ) शोकित  
होना, सुच्छिंत होना ।—रखना ( या० )

प्रसन्न करना, अन्य के इच्छानुसार काम करना,  
इच्छापूर्ति करना, मनोरथ सिद्ध करना, यात

रख लेना ।—से उतर जाना ( या० ) अप्रिय  
हो जाना, अनोचित होना, चाह नहीं रहना ।

—से मारना ( या० ) बध करना, जान से  
मारना, मार डालना ।—करना ( या० ) चाहना,

इच्छा करना, अभिलाष करना ।—खोल कर  
करना ( या० ) उत्साह से करना, प्रसन्नता से

करना, किसी काम को सामर्थ्य भर करना ।  
—खोलकर कहना ( या० ) स्पष्ट कहना, साफ

भाष कहना, यथार्थ कहना, उत्साह से कहना ।  
—पर घाना ( या० ) कष्ट में पहुँचना, शक्ति में

फसना, अनव्यगतिक होना, किसी से भाचार  
हो जाना ।—घट जाना ( या० ) अनुत्साहित,

होना, हताश होना ।—लगाना ( या० ) प्रीति

करना, प्रेम होना ।—लगाना ( वा० ) प्रेम लगाना, प्रणय उत्पन्न करना ।—लेना ( वा० ) मार डालना ।—मारना ( वा० ) निराश करना, मन तोड़ना ।—मिलाना ( वा० ) मिलाता करना ।—में आना ( वा० ) स्मरण आना ।—में जलजाना ( वा० ) ईर्ष्या से दुःखित होना, कुटना ।—में जी आना ( वा० ) आपत्ति से छुटकारा पाना, दुःख के पतन्तर सुखी होना । भय का कारण दूर होने से निर्भय होना ।—में घर करना ( वा० ) हृदय को अपने अधीन करना, अपना प्रेम दूसरे के हृदय में स्थापित करना ।—निकलना ( वा० ) मरना, मर जाना, बेकल होना, भयभीत होना, घबड़ाना ।—हारना ( वा० ) अधीर होजाना, व्याकुल होना, निराश हो जाना, घबड़ा कर काम छोड़ना, अनुत्साही हो जाना ।—हटजाना ( वा० ) मन हट जाना, प्रेम टूट जाना, विरोध हो जाना, उदासीन हो जाना ।

जी दे० ( वा० ) सम्मान पूर्वक स्वीकारार्थक, हाँ, जी । जीका तद्० ( स्त्री० ) जीविका, वृत्ति, बन्धान ।

जीझुराना दे० ( क्रि० ) सिक्कोड़ना, घनेटना, सङ्कुचित करना ।

जीत दे० ( स्त्री० ) जय, विजय, शत्रुपराजय, शत्रुपराभव ।

जीति दे० ( श्र० ) जीत करके, जय प्राप्त करके ।

जीतना दे० ( क्रि० ) जय करना, अपने अधीन करना, यश करना, हराना ।

जीतघ दे० ( पु० ) जीवन, जीना, जिन्दगी, स्थितिकाल ।

जीतघना तद्० ( पु० ) जयो, विजयो, जयमान, जितवैया ।

जीतवैया दे० ( पु० ) जेता, विजयी ।

जीता दे० ( पु० ) प्राणधारी, चेतन, जीता हुआ ।

जीतिया दे० ( स्त्री० ) व्रत विशेष, जीघन्तुत्रिका व्रत, पारिव्रत शुक्ल अष्टमी का महालक्ष्मी का व्रत, यह व्रत प्रायः स्त्रियाँ सन्तान जीवित रहने के हेतु किया करती हैं ।

जीतू दे० ( पु० ) जयो, विजयो, योद्धा, महायुद्ध जितवैया ।

जीते जी दे० ( वा० ) जय तक जीता है, जीते तक ।

जीन दे० ( पु० ) चारजामा, काठो, घोड़े की कसने की वस्तु, खोगीर ।

जीना दे० ( क्रि० ) जीता रहना, जीवित रहना ।

जीभ दे० ( स्त्री० ) जिह्वा, रसना, रसनेन्द्रिय

—चाटना ( वा० ) लालायित होना, उत्सुक हो

किसी के लिये आप्यन्त उत्कण्ठित होना

—निकालना ( वा० ) पक जाना, शान्त हो

घकने से अचेत होना ।—पकड़ना ( वा० ) न

देना, थोली बन्द करना, बात काटना, का

का दोष दिखाना ।—घटाना ( वा० ) चटोर हो

हानि लाभ का ध्यान न करके ताते जाना, नि

करना, बकबक करना ।

जीभारा दे० ( पु० ) चटोर, लोमो, लुब्ध, बकबक यज्ञो, मुँहफट ।

जीमी दे० ( स्त्री० ) जीम का मैल साफ करने वस्तु ।

जीमना दे० ( क्रि० ) भोजन करना, जीमना, खन

जीमार दे० ( पु० ) घातक, नृशंख, मारने वाला ।

जीमूत तद्० ( पु० ) मेघ, बादल, घन, घटा, र

पर्वत, मोया, मुस्वा ।—चाहन ( पु० ) प्र

स्मार्त पण्डित । ये ग्यारहवीं सदी के प्रथम

में उत्पन्न हुए थे, इन्होंने मनुस्मृति का म

दनाया है ।

जीयत दे० ( पु० ) जीवित, जीते हुए, इस उद्य प्रयोग रामायण में किया गया है ।

जीरक तद्० ( पु० ) जीरा, यक्षि त्रुष जि मसाला ।

जीरा तद्० ( पु० ) जीरा, जीरक, स्वनाम प्र मसाला ।

जीर्ण तद्० ( पु० ) पुराना, बूढ़ा, वृद्ध, जर्रा, वि परिपक्व, जर्जरीभूत, पाक विविष्ट ।—ता ( सं शयस्कता, दुर्बलता दौर्बल्य, निर्बलता ।— ( पु० ) फटा पुराना वस्त्र, सड़ा गला कपड़ा ।

जीर्ण तत् (स्रो०) जीर्णता, वृद्धावस्था, परिपाक, पचाय, पाचक, हजम, अन्नपाक ।

जीर्णोद्धार तत् (पु०) पुरानी वस्तुओं की मरम्मत, जीर्ण का उद्धार, पुरानी वस्तुओं को पुनः दृढीकरण ।

जील दे० (स्रो०) उच्चस्वर से गाना, तीक्ष्ण स्वर, उच्च स्वर, तानपूरा या सारङ्गी आदि का तार ।

जीव तत् (पु०) प्राण आत्मा जीव, जिय, जी, प्राणधारी, चेतन, जानदार जन्तु, प्राणी, वृहस्पति, देवयुक्त ।—दान (पु०) अन्नदान, प्राणदान ।

—धारी (पु०) प्राणी, चेतन ।

जीवक तत् (पु०) सेवक, क्लृप्त, कृपण ।

जीवस्नानि तद् (पु०) परमात्मा, ईश्वर, अनादि पुरज जीवों का आश्रय, प्राणियों का आधार ।

जीवगर तद् (पु०) सूमा, वीर, घोड़ा, निर्भय ।

जीवड़ा दे० (पु०) प्राणी, जन्तु, जानवर ।

जीवत् तत् (पु०) वर्तमान, सजीव, चेतन ।

—पतिका (स्रो०) वधवा, जिसका पति जीता हो ।—पितृक (पु०) जिसका पिता वर्तमान हो ।

जीवन तत् (पु०) [ जीव + अतद् ] जीविका, आयुष्य, प्राण धारण, प्राणवृत्ति, अन्न, मन्त्रन ।

—भास (पु०) जीवन का भय, न जीते का डर ।

—मृत (पु०) जोते जो मरा, जोता हुआ भी मृत के समान ।—योनि (पु०) रत्न विशेष, शरीर में प्राण संचार करने वाला एक प्रकार का रत्न ।

जीवता तत् (स्रो०) मेदीपथ, (क्रि०) जीता, जोते रहना ।

जीवन्ती तत् (स्रो०) सजीवन दृष्टि, जीवन वृत्तान्त, जीवन घटना का वृत्तान्त ।

जीवनोपाय तत् (पु०) उपजीविका, वृत्ति, जीने का उपाय ।

जीवनोपध तत् (पु०) जिस औपधि से मरे हुए भी जी जाते हैं । जीवन रचाकारी, जीवनोपाय, उपजीविका, रक्षा, वृत्ति ।

जीवन्त तद् (पु०) जीता, जीवित, सवेत, जीव-युक्त ।

जीवन्ती तत् (स्रो०) सजीवन दृष्टि, जीव रक्षा करने वाली महौषधि ।

जीवमन्दिर तत् (पु०) शरीर, देह, काय, तन ।

जीवन्मुक्त तत् (पु०) [ जीवत् + युक्त ] जीवन दया ही में ज्ञानार्जन की सहायता से ब्रह्म साक्षात्कार किये, इस जन्म ही में संसार बन्ध से मुक्त महात्मा ।

जीवा तद् (स्रो०) जीवन्ती, औषध विशेष, ज्या, धनुष की डोरी, जो एक छोर से दूसरे छोर तक बँधी रहती है, रोदा ।

जीवात्मा तत् (पु०) आत्मा, प्राण, देही, जीव ।

जीवान्तक तत् (पु०) जीवनाशक, जीमारने वाला, बड़ेसिया, क्याध, घातक, झूर ।

जीविका तत् (स्रो०) वृत्ति, निर्वाह जीवनोपाय, धन्यन ।

जीवित तत् (पु०) जीवन, आयुष्य, आयु ।

जीवित्ता तत् (पु०) जीने वाले, सजीव, प्राण धारी ।

जीवी तत् (पु०) जीवधारी, प्राणी ।

जोह, जोहा तद् (स्रो०) जीभ, जिह्वा, रसना ।

जुआ दे० (पु०) धूतक्रीड़ा, बाजी लगा कर पाशा खेलना, छलकर्म, कपट कर्म, कीट विशेष, जो चालों में रहता है ।

जुमारि दे० (स्रो०) अन्न विशेष, अगहन में होने वाला एक प्रकार का अन्न, मक्का, छोटी मकई, जोन्दी ।

जुमारी दे० (पु०) लुभा देखने वाला, धूतक्रीड़ा कर्ता, कपटी, छलकारी ।

जुग तद् (पु०) युग, बारह वर्ष की अवधि, सत्य, त्रेता द्वार पर और कलि, ये चार युग, युगल, युग, जोड़ा ।

जुगत तद् (स्रो०) युक्ति, चतुर्धाई, अपने पक्ष को पृष्ठ करने वाली उपवृत्ति, अनुभव की हुई सर्वमान्य बातें । अनुमान, रीति ।

जुगनी दे० (स्रो०) कद्योम, उयोति, रिङ्गण, भगजुगनी ।

करना, प्रेम होना ।—लगाना ( या० ) प्रेम लगाना, प्रणय उत्पन्न करना ।—लेना ( या० ) मार डालना ।—मारना ( या० ) निराश करना, मन तोड़ना ।—मिलाना ( या० ) मिलता करना ।—में आना ( या० ) स्मरण आना ।—में जलजाना ( या० ) ईर्ष्या से दुःखित होना, कुदना ।—में जी आना ( या० ) आपत्ति से छुटकारा पाना, दुःख के शान्तर सुखी होना । भय का कारण दूर होने से निर्भय होना ।—में घर करना ( या० ) हृदय को अपने अधीन करना, अपना प्रेम दूसरे के हृदय में स्थापित करना ।—निकलना ( या० ) मरना, मर जाना, बेकल होना, भयभीत होना, चषडाना ।—हारना ( या० ) अधीर होजाना, श्याकुल होना, निराश हो जाना, चषड कर काम छोड़ना, अनुत्साही हो जाना ।—हटजाना ( या० ) मन हट जाना, प्रेम हट जाना, विरोध हो जाना, उदासीन हो जाना ।

जी दे० ( या० ) सम्मान पूर्वक स्वीकारार्थक, हां, जी ।

जीका तद्० ( खो० ) जीविका, वृत्ति, बन्धान ।

जीङ्गराना दे० ( क्रि० ) सिकोड़ना, सनेटना, सङ्कुचित करना ।

जीत दे० ( खो० ) जय, विजय, शत्रुपराजय, शत्रुपराभव ।

जीति दे० ( अ० ) जीत करके, जय प्राप्त करके ।

जीतना दे० ( क्रि० ) जय करना, अपने अधीन करना, वश करना, हराना ।

जीतव दे० ( पु० ) जोवन, जीना, जिन्दगी, स्थितिकाल ।

जीतवना तद्० ( पु० ) जयो, विजयी, जयमान, जितवैया ।

जीतवैया दे० ( पु० ) जेता, विजयी ।

जीता दे० ( पु० ) प्राणधारी, चेतन, जीता हुआ ।

जीतिया दे० ( खो० ) ब्रा विशेष, जीवतुनिका व्रत, षाड्विन शुक्ल अशुभो का महालक्ष्मी का व्रत, यह व्रत प्रायः छियाँ सन्तान जीवित रहने के हेतु किया करती हैं ।

जीतू दे० ( पु० ) जयो, विजयी, योद्धा, जितवैया ।

जीते जी दे० ( या० ) जय तक जीता है, जीते तक ।

जीन दे० ( पु० ) चारजामा, काठो, घोड़े को सँढकने की वस्तु, खोमीर ।

जीना दे० ( क्रि० ) जीता रहना, जीवित रहना ।

जीम दे० ( खो० ) जिह्वा, रचना, रचने, रचना ।

—चाटना ( या० ) लालायित होना, उम्बुर्वा किसी के लिये आप्यन्त उत्कण्ठित होना ।

—निकालना ( या० ) धक जाना, शाल धकने से अचेत होना ।—पकड़ना ( या० ) न देना, बोलो यन्द करना, जात काटना का दोष दिखाना ।—घटाना ( या० ) चटो हानि लाभ का ध्यान न करके घाते जाना, करना, यकबक करना ।

जीभारा दे० ( पु० ) चटोर, लोभी, लुब्ध, बयझो, मुँहफट ।

जीभी दे० ( खो० ) जीम का मूल साफ वस्तु ।

जीमना दे० ( क्रि० ) भोजन करना, जीमना, जीमार दे० ( पु० ) घातक, नृयंघ, मारने व

जीमूत तत्० ( पु० ) मेघ, बादल, घन, पर्वत, मोया, मुस्वर ।—चाहन ( पु० ) स्मार्त यच्छित । ये ग्यारहवीं सदी के में उत्पन्न हुए थे, इन्होंने मनुस्मृति बनाया है ।

जीयत दे० ( पु० ) जीवित, जीते हुए, इस प्रयोग रामायण में किया गया है ।

जीरक तत्० ( पु० ) जीरा, यणिकू ब्रह्म मसाला ।

जीरा तद्० ( पु० ) जीरा, जीरक, स्वन् मसाला ।

जीर्ण तत्० ( पु० ) पुराना, बूझा, बूझ, जर् परिपक्व, जर्जरीभूत, पाक विगिष्ट ।—

अशक्तता, दुर्बलता दौर्लभ्य, निर्बल ( पु० ) फटा पुराना यज्ञ, सड़ा गला कप

जुन्हैया दे० ( स्त्री० ) चांदनी, तारा, तारका, चन्द्रमा ।

जुरना दे० ( कि० ) मिलना, उपलब्ध होना, प्राप्त होना ।

जुरा देना दे० ( कि० ) पाना, प्राप्त करना, दिलवाना, दिलवादेना, प्राप्त कराना ।

जुराना दे० ( कि० ) शीतल होना, शीतल करना, मिलना, जोड़ना, एकत्रित होना, घटोरना ।

जुरावना दे० ( कि० ) पाने योग्य, मिलने योग्य, मिलनहार, सम्प, उपलब्धि योग्य ।

जुरमा दे० ( स्त्री० ) भार्या, पत्नी, स्त्री, मेहराऊ, जोर ।

जुरे, दे० मिले, प्राप्त हो, लब्ध हो, मिल जाय ।

जुरल दे० ( पु० ) बढ़ावा, वस्त्राह देना, छल, कपट ।

जुरती तह० ( स्त्री० ) युवती, युवा स्त्री, जवान स्त्री ।

जुरराज तह० ( पु० ) गुजराज, राजकुमार, राज्य का अधिकारी, राजकुमार, उपराजा ।

जुरा तह० ( पु० ) पुषा, पुषाधस्या प्राप्त, जमान, तक्षण ।

जुरार दे० ( पु० ) अन्न विशेष, जुन्हरी ।

जुरारी दे० ( पु० ) जुषारी, झूतकर्ता, छली, कपटी ।

जुरार दे० ( पु० ) युद्धार्थ यात्रा की विदाई, बीरों के अभिवादन की रीति, युद्ध का अभिवादन, राजपुतों के प्रणाम करने की शैली, प्रणाम, नमस्कार, दण्डवत, पालागन, यथा:—  
आप आपमहं करहिं जोहारु,  
यह वमत्त सब कहैं त्योहारु ।

—पद्मावत ।

जू दे० ( स्त्री० ) सम्मान सूचक, माननीयों के आदर-प्रदर्शन के लिये यह शब्द उनके नाम के अन्त में जोड़ा जाता है । यथा:—श्री कृष्णचन्द्र-जू, श्री रामचन्द्र-जू इत्यादि ।

जूमा दे० ( पु० ) जुषा, झूत, पाशाकीड़ा, जुषाठ ।

जूमाठ दे० ( पु० ) जुषाड़, जुषा, जुषाठ, उम सकड़ी की बनी हुई यस्तु को कहते हैं, जो पैलों के बन्धे पर रखी जाती है, जिसमें हल बांध कर खेत जोता जाता है ।

जूझारी दे० ( पु० ) जुषा खेलने वाला, झूतकर्ता, जूष का खिलाड़ी, छली, कपटी ।

जूझार दे० ( पु० ) समुद्र का जल उकनना, समुद्र का जल बढ़ाना, समुद्र में उफान आना, चन्द्रमा की पूर्ण वृद्धि होने पर समुद्र में उफान आता है ।

जू दे० ( स्त्री० ) चिल्लर, चीलड़, एक प्रकार का छोटा कीड़ा जो कपड़ों की मैल से उत्पन्न होता है ।

जूफ दे० ( पु० ) युद्ध, लड़ाई, समर, संग्राम ।—मरना ( वा० ) लड़कर मरना, जान दे देना, प्राण देना ।

जूफना दे० ( कि० ) लड़ना, लड़ाई करना, मरना, मरने के समान कष्ट उठाना ।

जूट दे० ( पु० ) समूह, श्रृंखला, कुण्ड, दल ।

जूठ दे० ( पु० ) भोजन से बचा हुआ, उच्छिष्ट ।

जूठन दे० ( पु० ) भोजन का अवशेष, जूठा, गुद पित्त आदि मान्दों का जूठा ।

जूठा दे० ( पु० ) धखरी, सखारी अन्न वर्तन आदि ।

जूड़ दे० ( पु० ) शीत, शीतल, ठंडा, सर्दि, जुकाम ।

जूड़ा दे० ( पु० ) ठण्डा, शीतल, बन्धे हुए बाल, घोषा ।

जूड़ी दे० ( स्त्री० ) उजर विशेष, शीतज्वर, कम्प-ज्वर ।

जूता दे० ( पु० ) पगरखी, पनही, पैर में पहनने की चर्म पादुका, जूती ।

जूती दे० ( स्त्री० ) मुन्दर और छोटा जूता, खूबसूरत जूता ।

जूथ तह० ( पु० ) श्रृंखला, दल, कुण्ड, समूह, सेना ।—प ( पु० ) श्रृंखलापति, सेनापति, सेनाध्यक्ष, दल का नायक, कुण्ड का मालिक ।

जूवा दे० ( स्त्री० ) पृथक्, भिन्न, अलग, फरक, अलहदा ।

जून दे० ( पु० ) जुन, समय, काल, वेर, बेला, अवसर ।

जूना दे० ( पु० ) घास का बना परखा, मोड़ा, गेदुरी ।

जूप तह० ( पु० ) श्रृंखला, श्रृंखला ।

जूपी दे० ( पु० ) जुषारी ।

जूरा दे० ( पु० ) बालों की गाँठ, बन्धे हुए बाल, जुड़ा, खोफा ।



जुगनू दे० (पु०) कपठ भूषण, आभूषण विशेष जो गले में पहना जाता है ।

जुगल तद्० (पु०) जोड़ा, युगल, दो, युग्म, युग, डूहें ।

जुगवत दे० प्रतीक्षा करते, पालन करते, आसरा देखते, यत्र करते, परखते २ ।

जुगवना दे० (क्रि०) जुगवना, रक्षा करना, रचना ।

जुगविधि तद्० ( स्त्री० ) दोनों प्रकार से, दोनों रीति से ।

जुगवैया दे० जुगवने वाला, रचक, रचने वाला ।

जुगानजुग तद्० (वा०) युगानुयुग, अनेक युग, कई वर्ष, बहुत वर्ष तक, बहुत दिनों तक ।

जुगाना दे० (क्रि०) यत्र करना, उपाय करना, रक्षा करना, दुख से उबारना, बचाना ।

जुगालना दे० ( क्रि० ) पगुराना, पागुर करना, रोमन्ध करना, एक बार चवा कर खाये हुए को पुनः निकाल कर चवाना, जैसे घैल आदि करते हैं ।

जुगाली दे० (स्त्री०) पागुर, रोमन्ध, चर्चित चर्षण ।

जुगुप्सा तद्० (स्त्री०) [ गुप् + सत् + आ ] निन्दा, तिरस्कार, कुत्सा, ग्लानि, घृणा ।

जुगुप्सित तद्० (गु०) [ गुप् + सत् + क्त ] निन्दित, गर्हित, घृणित, तिरस्कृत ।

जुहु दे० (स्त्री०) उमङ्ग, साहस, उत्साह ।

जुहुत दे० (गु०) जाति पतित, जाति बहिष्कृत ।

जुहु दे० (पु०) भयङ्कर मूर्ति विशेष, भयङ्कर कल्पित मूर्ति, कल्पित भूत योनि ।

जुभाऊ दे० (गु०) युद्ध सम्बन्धी, युद्ध के लिये, युद्ध की सामग्री, लड़ाका शूर, वीर ।— बाजा (पु०) युद्ध के लिये प्रस्तुत होने का वाद्य विशेष, रणभेरी, योद्धाओं को उत्साहित करने वाला बाजा ।

जुभार दे० (पु०) लड़ाका, वीर भट, रणशौंकर भट ।

जुभाघट दे० (स्त्री०) युद्ध, समर, कलह, युद्ध के लिये उभड़ाव ।

जुभावना दे० (क्रि०) मरवा डालना, मरवा डालने के लिये उपदेश, असदुपदेश, प्रयत्न से विरोध रद्द करके मरवा डालना ।

जुटना दे० (क्रि०) मिलना, जुड़ना, एकत्रित होना, एकट्ठा होना, सड़ना, लड़ने के लिये सामने धाम अपेक्षा करना, राह देखना, आसरा ताकना बाट देखना ।

जुटाना दे० (क्रि०) जुड़ाना, एकत्रित करना, मिट देना, जमाना, जमा करना, मिलाना ।

जुटैया दे० (पु०) जुट जाने वाला, मिटने का मिलने वाला, लड़ाका, लड़ने वाला ।

जुठारना दे० (क्रि०) जूठा करना, उच्छिष्ट करना ।

जुठारि दे० जूठा करके, उच्छिष्ट करके ।

जुडना दे० (क्रि०) मिलना, मिलजाना, जुटाना, सटना, एकत्रित होना ।

जुड़हा दे० (पु०) यमल, युग्म, जुगल, जोड़ा ।

जुड़ाई दे० (स्त्री०) जोड़ने की मजूरी, बुढ़ने। दाम, जोड़ाई का काम, जुकाम, सर्दी, विशेष ।

जुड़ाना दे० (क्रि०) मिलाना, मिलवाना, मिश्रित एकत्रित करना, जोड़ देना, विश्राम करना, एक यत् उतारना, ठण्डाना ठण्डा होना, आराम कर सँदियाना, जुकाम हो आना ।

जुड़िया, जुड़िहा दे० (पु०) यमज, एक साथ जत दो लड़के ।

जुताई दे० (स्त्री०) खेत जोतने का काम, जो जोतना, खेत जोतने की मजूरी ।

जुताना दे० (क्रि०) खेत जोतवाना, खेत जोत कर बनाना ।

जुतियाना दे० (क्रि०) जूतों से मारना, अप्रति करना ।

जुद्ध तद्० (पु०) युद्ध, संग्राम, समर, लड़ाई, रण ।

जुधिष्ठिर तद्० (पु०) युधिष्ठिर, स्वनाम प्रसिद्ध चन्द्रवंशीयराजा, यह अपनी सत्यवादिता कारण देव चरित्र हो गये हैं । पाण्डवों में यह सत्र से बड़े थे । (देखो युधिष्ठिर) ।

जुन दे० (पु०) समय, काल, अक्षर, मौका ।

जुन्हरी दे० (स्त्री०) जुभार, अन्न विशेष ।

जुन्हारै दे० (पु०) चन्द्रमा, चन्द्र, (स्त्री०) चाँद प्रकाश ।

माला तद्० (खो०) जयमाला, स्वयम्बर माला, जीत की माला ।

मिनि तद्० (पु०) मुनि विशेष, प्रसिद्ध हिन्दू दर्शन प्रणेता, इनके बनाये दर्शन का नाम पूर्व मीमांसा है । इस दर्शन को जैमिनि दर्शन भी कहते हैं । आस्तिक पद दर्शनों के अन्तर्गत मीमांसा दर्शन भी है । श्रुति और स्मृति का जहाँ विरोध है, उनका विचार इस दर्शन में किया गया है । यह मंत्र छप ही देवता मानते हैं । इनके मत ने सृष्टि अनादि है, ईश्वर सत्ता के अस्तित्व आदि के ऊपर इसमें कुछ भी विचार नहीं किया गया है । यह कृष्ण द्वैतवादी धर्म के शिष्य थे । जैमिनि ने सामवेद और महाभारत इनसे पड़े थे । मीमांसा दर्शन के अतिरिक्त एक संहिता भी इन्होंने बनायी है, जिसका नाम जैमिनि भारत है । सुमन्तु और सुन्धान नाम के इनके दो पुत्र थे । इनके दोनों पुत्र अतुम्भी विद्वान् थे । इनके पुत्रों ने भी वेद की संहिताएँ बनायी हैं ।

मिनी तद्० (पु०) ब्रह्मवादी, ब्रह्मवेत्ता, आत्मज्ञानी ।

सा दे० (च०) यथा, जिस प्रकार, उपमानवाची ।  
है दे० (क्रि०) जायँगे ।

ा दे० (सर्ज०) जो कोई, यदा, यदि, सम्बन्धार्थक ।

ाँ दे० (च०) जो, जैसा, यदि, जब ।

ाँक दे० (पु०) जलौका, रक्तपान करने वाला एक जल जन्तु ।

ीकर दे० (च०) जिस प्रकार, जैसा, यादृश ।

ाँही दे० (च०) जिस समय में, जिस काल में, जमी ।

ाख दे० (खो०) तौल, माप, नाप, भार, परिमाण, यज्ञ ।

खिना दे० (क्रि०) तीक्ष्णता, तीक्ष्ण करना, वजन करना, नापना, मापना ।

खिम दे० (खो०) दायित्व, भार, रक्षा का भार, चिन्ता, शङ्का, उत्तर दायित्व, धन, मोना, चाँदी, रत्न ।—उठाना (या०) दायित्व सेना,

रक्षा का भार ग्रहण करना, साहस, किसी भयङ्कर काम करने को उत्साहित होना ।

जोखीं दे० (खो०) जोखिम, घाटा, बीमा ।

जोग तद्० (पु०) योग, चित्त की वृत्तियों को बाहरी वस्तुओं से हटाना, चित्त को अन्तर्मुख करना, ध्यान प्राप्त करने का साधन, भगवान का उचित भक्त बनने का उपाय ।—माया (खो०) भगवान को एक शक्ति ।

जोगवत दे० (क्रि०) परीक्षा करते, रखते, रचा करते ।

जोगाम्यास तद्० (पु०) योगाम्यास, योग साधन, योग की क्रियाओं का साधन करना ।

जोगी तद्० (पु०) योगी, योगाम्यासी, महात्मा ।

जोगिनी तद्० (खो०) योगिनी, देवी की सहचरी (देखो योगिनी) ।

जोगिया दे० (पु०) अतिय, संन्यासिणों का रङ्ग, एक रागिनी विशेष ।

जोगेश्वर तद्० (पु०) योगियों के उपास्य देव, भगवान्, नारायण, श्रीकृष्ण, “यत्र योगेश्वरः कृष्णो, यत्र पार्यो धनुर्धरः, तत्र श्री शिञ्जयो भूतिध्रुवा नीतिर्मतिर्मम” ।

—गीता ।

जोग्य तद्० (पु०) योग्य, अच्छा, उत्तम, समर्थ, अर्थ ।

जोजन तद्० (पु०) योजन, चार कोस, चार कोस का मार्ग ।

जोट दे० (पु०) जोड़ा, साथी, सङ्गी, सहचर ।

जोटा दे० (पु०) बराबरी के, तुल्य, समान, साथी, सहचर ।

जोड़ दे० (पु०) मेल, ग्रन्थि, जोड़ाई, गाँठ, टोटल, मीज़ान ।

जोड़ती दे० (खो०) लेखा, गणित, हिसाब, गिनती, संख्या ।

जोड़न दे० (पु०) जामन, मोहागा ।

जोड़ना दे० (क्रि०) मिलाना, मिलान करना, एकत्रित करना, गाँठना, गाँठ लगाना, पैयन्द

जूरी दे० (स्त्री०) एकत्रित, सत्रह, कुण्ड, दल, यथा:—  
“बाँध तथा आनी जहं घूरी,  
जूरी आय सत्र सिंहल घूरी” ।

—पद्यावत ।

जूस दे० (पु०) परेह, कड़ी, रोग के लिये पच्य ।  
जूह जूहा दे० (पु०) सत्रह, जूआ, गूय सेना, पद्या-  
वत में इस शब्द को खोलिङ्ग माना है, यथा:—  
हत्वि की जूह आय अंग सारी,  
हनुमत तवै लंगूर पसारी” ।

—पद्यावत ।

जूही तद्० (स्त्री०) घृयिका, पुष्प विशेष ।  
“जूही में कन्हैया वसे,  
गुलनारी में राधा प्यारी” ।

जूम्भाय तत् (पु०) [जूम्भ + घनच्] जँभाई, अङ्ग  
तोड़ना, मरोड़ना ।

जूम्भा तत्० (स्त्री०) मुखविकास, जँभाई, जूम्भण ।  
जे दे० (सर्व०) जो, जो लोग, सब ।

जेई दे० जो कोई, भोजन करके, खाकर ।

जेऊ दे० जो कोई भी, अनिर्द्धारित मनुष्य ।

जेठ दे० (पु०) राशि, एकत्रित, एकठा, घटोरा ।

जेठ तद्० (पु०) ज्येष्ठ, बड़ा, अग्रज, पति का बड़ा  
भाई, ज्येष्ठ महीना, जेठ मास ।

जेठरा तद्० (पु०) ज्येष्ठ, बड़ा, पहलौठा, प्रथम  
उत्पन्न पुत्र, जेठ, ज्येष्ठ, अग्रज ।

जेठा तद्० (पु०) बड़ा, जेठ, ज्येष्ठ, पहलौठा,  
प्रथम उत्पन्न ।

जेठानी तद्० (स्त्री०) जेठ की स्त्री, पति के बड़े  
भाई की स्त्री ।

जेठी तद्० (स्त्री०) बड़ी, अष्ट, प्रधाना।—मधु (पु०)  
औषध विशेष, एक प्रकार का बाँधा, मुलहठी ।

जेठीत तद्० (पु०) ज्येष्ठोत्पन्न, जेठ का पुत्र, पति  
के बड़े भाई का पुत्र ।

जेता दे० (पु०) जितना, परिमाण और संख्याय  
वाची ।

जेव दे० (पु०) खलीता, चाकेट, बैली, कपड़े में  
लगी हुई बैली।—कतरा (पु०) जेव काटने  
वाला, चोर, उचका ।

जेमन तत्० (पु०) भोजन, खाना, खाने की  
भोजन की सामग्री ।

जेया दे० (पु०) जीत जाने योग्य, जीने के

जेर दे० (पु०) गर्भ बन्धन, जरायु, खेड़ी, बिड़ी

जेल दे० (पु०) कारागार, बड़ा घर,  
बँधुओं के रहने का घर, बँधुओं की बँधने  
पद्धति।—खाना (पु०) कारागार, बँधना  
बन्दीगृह ।

जेचड़ा दे० (पु०) रस्ता, डोर ।

जेचड़ि दे० (स्त्री०) रस्ती, डोरि, छोटा रस्ता ।

जेचना तद्० (क्रि०) खाना, भोजन करना ।

जेचनार तद्० (पु०) जेमन, भोजन, खाना,

जेवरी दे० (स्त्री०) रस्ती, डोरी, रस्ती ।

जेहड़ दे० (स्त्री०) घुष पर रखा घड़ा ।

जेहर दे० (पु०) मटकी, मिट्टी का पात्र,  
विशेष, खियों के एक गहने का नाम जो  
पहना जात है ।

जेहि दे० (स०) जिसको, जिसने, जिसके ।

जे दे० (पु०) जितना, संख्या और  
वाची ।

जे दे० (स्त्री०) जय, जीत, विजय।—  
(वा०) जय शब्द का उच्चारण पूर्वक आदि  
देना, अभ्युदय चाहना, मङ्गल मनाना ।

जेगीपद्य तद्० (पु०) ऋषि विशेष, यह  
असित देवल के गुरु थे । पहिले असित  
नामक एक ऋषि गृहस्थ के धर्मों का  
हुर आदित्य तीर्थ पर वास करते थे ।  
दिनों के बाद जैगीपद्य मुनि भी वही आये,  
उन्होंने योगाभ्यास के द्वारा सिद्धि प्राप्त  
महर्षि देवल जैगीपद्य की योग सिद्धि  
शिष्य हो गये ।

जेत दे० (पु०) वृच विशेष, रागिनी विशेष ।

जेन तत्० (पु०) जिनके धर्म को मानने  
जिनके बताये धर्म के अनुसार चलने वाला,  
धर्मों ।

जेनी तत्० (पु०) जैन मत वाला, आँवक,  
जिनतोपासक ।

पा रोहना दे० (क्रि०) घाट देखना, प्रतीक्षा करना,  
 तालकना, खोजना, झूटना, पता लगाना, मान्य  
 करना, अनुसन्धान करना ।  
 पा रोही दे० (गु०) खोजी, झूठीया, अनुसन्धानी ।  
 पा रोही दे० (गु०) जो, यदि, जब,—लगा (अ०) जयतक,  
 जिस समय तक, जितनी देर तक,—लौं (अ०)  
 जयतक ।  
 पा रोही तत्० (गु०) यद्य, अत्रविशेष, स्वनामप्रसिद्ध अत्र ।  
 पा रोहिका दे० (क्रि०) गाली देना, बकना, बड़बड़ाना,  
 कुशाच्य कहना ।  
 पा रोहि दे० (सर्व०) जो, जिस ।  
 पा रोहिनार दे० (गु०) जेयनार, भोजन, भोज खाना,  
 उत्सव का भोज ।  
 पा रोहि तत्० (गु०) बुध, परिहृत, प्रह्ला, महीसुत, मङ्गल,  
 (गु०) अभिन्न, विदग्ध, अगुर ।  
 पा रोहित तत्० (गु०) धा + क, कृतज्ञान, जाना हुआ,  
 विदित, प्रतीत, अवगत,—सार (अ०) विदित,  
 मान्य,—सिद्धान्त (गु०) शास्त्रतत्त्व, शास्त्र का  
 यथार्थ प्रमं जानने वाला ।  
 पा रोहित्य तत्० (गु०) धा + तथ्य, ज्ञान का विषय,  
 जानने योग्य, अवगन्तव्य, धीष्य ।  
 पा रोहिता तत् (गु०) धा + तत्, ज्ञानशील, बोद्धा, ज्ञान  
 प्राप्त, जानने वाला, जानकार ।  
 पा रोहित तत्० (गु०) सविष्ट, भाई वधु, कुटुम्ब  
 परिवार, धान्यव ।  
 पा रोहित तत्० (गु०) [ज्ञा + अन्तः] बोध, चैतन्य,  
 चेतनता, बुद्धि, अनुमान, अवगम, आत्मा का एक  
 गुण विशेष, समक ।—काण्ड (गु०) वेद का एक  
 काण्ड जिसमें ज्ञान प्राप्त करने की रीति है, जिसमें  
 उपनिषद् आदि की आज्ञा है ।—गम्य (गु०)  
 बोध, ज्ञातव्य, ज्ञान की सहायता से जानने योग्य ।  
 —द (गु०) ज्ञानदाता, ज्ञान देने वाला, हिताहित  
 समझने वाला ।—दीप (गु०) ज्ञान रूप दीप,  
 ज्ञान का प्रकाश, जिससे अज्ञान दूर होता है ।  
 —पूर्वक (गु०) सञ्चान, ज्ञान के सहित, जानकर,  
 समक कर ।—घान् (गु०) ज्ञानवाह्य पण्डित, प्राज्ञ,  
 विवेक्षण ।—वापी (स्त्री०) कार्यों के एक तीर्थ

का नाम, कहते हैं उदपद प्रकृति, धर्मद्वीदी,  
 मुहम्मद ग़ोरी जिस समय काशी के मन्दिरों को  
 तोड़ फोड़ कर भारत का धन बूट रहा था, उस  
 समय काशी के प्रधान देवता विश्वनाथ जी मन्दिर  
 छोड़ थक रूप में कूद गये । विश्वनाथ के मन्दिर  
 के स्थान ही पर मस्जिद बनी हुई पूर्व घटना  
 का स्मारक हो रही है ।—विहीन (गु०) ज्ञान  
 हीन, ज्ञान रहित, झूठ, सुख, अज्ञान ।—मय  
 (गु०) ज्ञानविशिष्ट ज्ञानमय, ज्ञानयुक्त, ज्ञानी,  
 ज्ञानवाह्य ।—मार्ग (गु०) निवृत्तिमार्ग, उपनिषदों  
 का मतन, ज्ञानाभ्यास ।—मूल (गु०) सत्यज्ञान,  
 ज्ञान जनित, ज्ञानोत्पन्न ।

धानी तत्० (गु०) [ज्ञान + दश्] बोद्धा, ज्ञान युक्त,  
 बुद्धिमान्, प्राज्ञ, (गु०) दैवज्ञ, महाप्राज्ञ, प्रज्ञेयता ।

धानेन्द्रिय तत्० (गु०) [ज्ञान + इन्द्रिय] जिन  
 इन्द्रियों से ज्ञान होता है, बुद्धि, मन, चक्षु, श्रोत्र,  
 घ्राण, जिह्वा, त्वक् ।

धायन तत्० (गु०) [ज्ञा + णिच् + यञ्] बोधन,  
 जनाना, विदित करना, प्रचारण, प्रकाशन ।

धापित तत्० (गु०) [ज्ञा + णिच् + क्त] विचारित,  
 जनाया, विदित किया, मान्य कराया ।

धेय तत्० (गु०) [ज्ञा + य] बोधगम्य, जानने  
 योग्य, जानने के उपयोगी ।

उया तत्० (स्त्री०) माता, मा, जननी, वृषिकी,  
 पृथ्वी, रोदा, धनुष का चिह्न, मौर्यी ।—घांप  
 (गु०) धनुष का टुकड़ा, धनुष का शब्द ।

उयानौ (ना०) दे० (क्रि०) जिलाना, पालना, पोसना,  
 रक्षण करना ।

ज्यायान् तत्० (गु०) [बृह + ईयञ्] अग्रज, बड़ा,  
 जेठा, ज्येष्ठ, प्रधान, अतिवृद्ध, वर्षायाह्य ।

ज्येष्ठ तत्० (गु०) [बृह + ईह] अष्ट, अतिवृद्ध । (गु०)  
 अग्रज, अधिक वयस्क, बड़ा, अधिक उमर वाला,  
 पहलौठा, प्रथम पुत्र, जेठमास, इस महीने की  
 पूर्णिमा को ज्येष्ठा नक्षत्र होता है और पूर्ण  
 चन्द्रमा इसी नक्षत्र के पास रहता है ।—तात  
 (गु०) पिला का बड़ा भाई ।

लगाना, गणन करना, सङ्कलन करना, धन बटोरना, लगाना, सटाना, चिपटाना, जोड़ देना ।  
जोड़ा दे० (पु०) युग, युगल, स्त्री पुरुष, जूता, एक धार पहनने योग्य कपड़े ।

जोड़ाई दे० (स्त्री०) जोड़ाई का काम, जोड़ना, जोड़ने की मजूरी ।

जोड़ी दे० (स्त्री०) दो. युगल ।

जोत तद्० (पु०) खेत की जुताई, हल चलाना, चासना, (स्त्री०) ज्योति, प्रकाश, किरण ।

जोतना दे० (क्रि०) हल से जोतना, चासना, चास करना, हल चलाना, हल से खेत को घेरे योग्य याना ।

जोतमान तद्० (पु०) ज्योतिष्मातृ, चमकदार, प्रकाश शील ।

जोतार दे० (पु०) हटवाहा, हलवाह, जोतने वाला, चासा ।

जोति तद्० (स्त्री०) ज्योति, चमक, प्रकाश, तारा, द्युति, कान्ति, शोभा, शक्ति ।—स्वरूप (पु०) भगवान्, लय योगियों के श्रेय आत्मा, आत्मा का प्रकाश, जिसका लय योगी ध्यान करते हैं ।

जोतिष तद्० (पु०) ग्रहनक्षत्र आदि के विषय की बातें बताने वाला शास्त्र, काल ज्ञान शास्त्र, इसके प्रधानतः फलित और गणित ये दो भेद हैं ।

जोतिषी तद्० (पु०) दैवज्ञ, ज्योतिषी, शास्त्र वेत्ता, गणितज्ञ, ज्योतिष् विद्या जानने वाला ।

जोती दे० (स्त्री०) तराजू के पलड़े बाँधने की रस्सी, जुआठ, हल जोड़ने वाली रस्सी, जोत ।

जोत्स्ना तद्० (स्त्री०) ज्योत्स्ना, चन्द्रिकायुक्त रात्रि, प्रकाशयुक्त रात, उजेली रात, चन्द्रिका, चाँदनी, प्रकाश ।

ज्योत्स्नी तद्० (स्त्री०) रात्रि, रात, शुक्लपत्र की रात, उजेली रात ।

जोधन तद्० (पु०) आबोधन, लड़ाई, संग्राम, समर ।

जोधा तद्० (पु०) योधा, वीर, लड़ाका, लड़नेवाला, भट, सेना का मिपाही ।

जोनराज तद्० (पु०) करमीर के विख्यात ऐतिहासिक पण्डित, कारमीर के एक मात्र इतिहास राज-

तरङ्गिणी के ये कर्ता हैं । कलहण राजतरङ्गिणी पूरी नहीं कर सके थे, उनके बनाने का शेष पण्डित जोनराज ने पूरा किया, कलहण ने ११३३ ई० में राजतरङ्गिणी लिखी थी । जोनराज ने अपनी बनायी राजतरङ्गिणी में लिखा है कि "पण्डित जोनराज महाशय, ३५ संवत् में एत तरङ्गिणी बनाकर शिष्यायुज्य प्राप्त हुए" इसी कारण पर यह बात निश्चित हुई है कि जोनराज का समय १४-वीं सदी है । इनकी बनायी राजतरङ्गिणी दूसरी राजतरङ्गिणी के नाम से प्रसिद्ध है । भारविकृत राजतरङ्गिणी की टोका भी इनकी बनायी थी । इनके शिष्य का नाम श्रीधर पण्डित था, इन्होंने, १४-वीं और १५-वीं सदी के प्रथम तीसरी राजतरङ्गिणी बनायी है ।

जोनि तद्० (स्त्री०) योनि, स्त्री का विशेष विभाग, उत्पत्ति स्थान, उद्गम स्थान, जनि, शास्त्र खान, कारण, हेतु ।

जोन्ह दे० (पु०) चन्द्रमा, चाँदनी ।

जोधन तद्० (पु०) यौवन, युवावस्था, तरुणार्थ, लय पयोधर, छाती, बूँची ।

जोधनवती तद्० (स्त्री०) यौवनवती, युवती, तरुणी युवावस्थावाली स्त्री, युवा स्त्री, जवान स्त्री ।

जोधनवा, जोयना तद्० (पु०) जोवन, यौवन, तारुण्य ।

जोय, जोरु, तद्० (स्त्री०) जाया, भार्या, पत्नी, स्त्री, कुटिमित्री ।

जोरी दे० (स्त्री०) जोड़ा, जोड़ी, बांधकर ।

जोला दे० (पु०) कपट, छल, धोखा, धूर्तता, ठगना, ठगी ।

जोवत दे० (क्रि०) अभिलाष करते, चाहते, देखते ।  
जोयना दे० (क्रि०) देखना, ताकना, खोजना, इन्द्रिय अनुसन्धान करना, चितवन ।

जोपित् तद्० (स्त्री०) योपित्, सीमान्तिनी, स्त्री, कामिनी ।

जोषी, जोसी, दे० (पु०) ज्योतिषी, ज्योतिः वेत्ता, दैवज्ञ ।

पौहना दे० (क्रि०) घाट देखना, प्रतीक्षा करना, ताकना, खोजना, ढूँढना, पता लगाना, मानूस करना, अनुसन्धान करना ।

पौही दे० (गु०) खोजी, ढूँढीया, अनुसन्धानी ।

पौ दे० (गु०) जो, यदि, जब,—लग (अ०) जयतक, जिस समय तक, जितनी देर तक,—तौ (अ०) जयतक ।

पौ तत् (गु०) यद्य, अत्रविशेष, स्वनामप्रसिद्ध अत्र ।

पौकना दे० (क्रि०) गाली देना, बकना, बड़बड़ाना, कुशाध्य कहना ।

पौन दे० (सर्व०) जो, जिस ।

पौनार दे० (गु०) जेयनार, भोजन, भोज खाना, उत्सव का भोज ।

पौत (गु०) बुध, पवित्र, प्रज्ञा, महीसुत, मङ्गल, (गु०) अभिन्न, विदग्ध, चतुर ।

पौत तत् (गु०) ज्ञा + क्त, कृतज्ञान, जाना हुआ, विदित, प्रतीत, अवगत,—सार (अ०) विदित, मानूस,—सिद्धान्त (गु०) शाश्वतत्व, शाश्व का यथायं सर्वं जानने वाला ।

पौतव्य तत् (गु०) ज्ञा + तव्य, ज्ञान का विषय, जानने योग्य, अयगन्तव्य, धोष्य ।

पौता तत् (गु०) ज्ञा + तत्, ज्ञानशील, बोद्धा, ज्ञान प्राप्त, जानने वाला, जानकार ।

पौति तत् (गु०) सपिच्छ, भाई बन्धु, कुटुम्ब परिवार, शान्धव ।

पौन तत् (गु०) [ज्ञा + अनट्,] बोध, चैतन्य, चेतनता, बुद्धि, अनुमान, अवगत, आत्मा का एक गुण विशेष, समझ ।—काण्ड (गु०) वेद का एक काण्ड जिसमें ज्ञान प्राप्त करने की रीति है, जिसमें उपनिषद् आदि की आशा है ।—गम्य (गु०) ज्ञेय, ज्ञातव्य, ज्ञान की सहायता से जानने योग्य ।

—द (गु०) ज्ञानदाता, ज्ञान देने वाला, हिताहित समझाने वाला ।—दीप (गु०) ज्ञान रूप दीप, ज्ञान का प्रकाश, जिससे अज्ञान दूर होता है ।

पूर्वक (गु०) सज्ञान, ज्ञान के सहित, जानकर, समझ कर ।—घान् (गु०) ज्ञानवात् पण्डित, प्राज्ञ, विचक्षण ।—वापी (स्त्री०) काशी के एक तीर्थ

का नाम, कहते हैं उदयक प्रकृति, धर्मग्रीही, मुहम्मद गोरी जिस समय काशी के मन्दिरों को तोड़ फोड़ कर भारत का धन छूट रहा था, उस समय काशी के प्रधान देवता विश्वनाथ जी मन्दिर छोड़ एक कूप में छूद गये । विश्वनाथ के मन्दिर के स्थान ही पर मस्जिद बनी हुई पूर्व घटना का स्मारक हो रही है ।—विहीन (गु०) ज्ञान हीन, ज्ञान रहित, सुद, भ्रष्ट, अज्ञान ।—मय (गु०) ज्ञानविशिष्ट ज्ञानमय, ज्ञानयुक्त, ज्ञानी, ज्ञानवात् ।—मार्ग (गु०) निवृत्तिमार्ग, उपनिषदों का मनन, ज्ञानाभ्यास ।—मूल (गु०) सत्यज्ञान, ज्ञान जनित, ज्ञानोत्पन्न ।

ज्ञानी तत् (गु०) [ज्ञान + रन्] बोद्धा, ज्ञान युक्त, बुद्धिमान्, प्राज्ञ, (गु०) दैवज्ञ, महाप्राज्ञ, ब्रह्मवेत्ता ।

ज्ञानेन्द्रिय तत् (गु०) [ज्ञान + इन्द्रिय] जिन इन्द्रियों से ज्ञान होता है, बुद्धि, मन, चक्षु, श्रोत्र, घ्राण, जिह्वा, त्वक् ।

ज्ञायन तत् (गु०) [ज्ञा + णिच् + णक्] बोधन, जनाना, विदित करना, प्रचारण, प्रकाशन ।

ज्ञापित तत् (गु०) [ज्ञा + णिच् + क्त] विज्ञापित, जनाया, विदित किया, मानूस कराया ।

ज्ञेय तत् (गु०) [ज्ञा + य] बोधागम्य, जानने योग्य, जानने के उपयोगी ।

ज्या तत् (स्त्री०) माता, मा, जननी, पृथिवी, पृथ्वी, रोदा, धनुष का विज्ञा, मौर्वी ।—घोष (गु०) धनुष का टङ्कार, धनुष का शब्द ।

ज्यानी (ना०) दे० (क्रि०) जिसाना, पालना, पोसना, रक्षण करना ।

ज्यायान तत् (गु०) [वृद्ध + ईयस्] अग्रज, यज्ञ, जेठा, ज्येष्ठ, प्रधान, अतिवृद्ध, वर्षीयात् ।

ज्येष्ठ तत् (गु०) [वृद्ध + ईष्ट] अष्ट, अतिवृद्ध । (गु०) अग्रज, अधिक वयस्क, बड़ा, अधिक उमर वाला, पहलौटा, प्रथम पुत्र, जेठप्रास, इस महर्षि की पूर्णिमा को ज्येष्ठा नक्षत्र होता है और पूर्ण चन्द्रमा इसी नक्षत्र के पास रहता है ।—तात (गु०) पिता का बड़ा भाई ।

ज्योष्ठा तत्० (स्त्री०) नक्षत्र विशेष, अठारहवाँ नक्षत्र ।

ज्योष्ठाश्रम तत्० (पु०) [ज्येष्ठ + आश्रम] गार्हस्थ्य, गृहस्थाश्रम, दूसरा आश्रम ।— १ (पु०) गृहस्थ, गृहस्थाश्रमी, गृही ।

ज्यो का ल्यौं दे० (श्र०) ययार्थ, ठीक वैसा ही, अपरिवर्तित ।

ज्योतिः तत्० (स्त्री०) दृष्टि, नक्षत्र, प्रकाश, दीप्ति, उजाला, चमक, जोत ।—शास्त्र (पु०) ग्रह, राशि, नक्षत्र आदि की विद्या खगोल विद्या, ज्योतिष ।

ज्योतिरिङ्गण तत्० (पु०) कोट विशेष, खद्योत ।

ज्योतिर्वर्ण तत्० (पु०) [ज्योतिस् + वर्ण] आकाश-स्थित पदार्थ ।

ज्योतिर्विद् तत्० (पु०) [ज्योतिर् + विद् + क्तिप्] गणक, दैत्य, ज्योतिः शास्त्र वेत्ता ।

ज्योतिर्विद्या तत्० (स्त्री०) [ज्योतिष् + विद्या] ज्योतिः शास्त्र, खगोल ।

ज्योतिर्वेत्ता, तत्० (पु०) [ज्योतिस् + वेत्ता] गणक, दैत्य, ज्योतिषी ।

ज्योतिश्चक्र तत्० (पु०) राशिचक्र, राशि समूह, बारह राशियों का चक्र ।

ज्योतिष् तत्० (पु०) वेदाङ्ग, शास्त्र विशेष, ग्रहण आदि गणन करने का शास्त्र, ग्रहादि विषयक शास्त्र ।

ज्योतिषी तत्० (पु०) गणक, दैत्य, जौही ।

ज्योतिष्टोम तत्० (पु०) [ज्योतिस् + स्तोम] यज्ञ विशेष, स्वर्ग फलक यज्ञ ।

ज्योतिष्मती तत्० (स्त्री०) मालकंगनी, सता विशेष, रात्रि, रजनी, प्रकाशयुक्त रात्रि ।

ज्योतिष्मान् तत्० (पु०) ज्योतिषुक्त, तेजस्वी, प्रतापी ।

ज्योतीरथ तत्० (पु०) [ज्योतिस् + रथ] भ्रम तारा, भ्रुवनक्षत्र ।

ज्योत्स्ना तत्० (स्त्री०) चन्द्रमा की ज्योति, प्रकाश, चाँदनी, चन्द्रिका, कौमुदी, ज्योत्स्ना युक्त रात्रि ।

ज्वर तत्० (पु०) [ज्वर + अल्] रोग विशेष, ताप, स्वनाम प्रसिद्ध रोग । राक्षस विशेष, दैत्य-राज वाणासुर के सेनापति का नाम, इसके तीन पैर, तीन स्त्रि, छः हाथ और नौ नेत्र थे । इसकी सृष्टि महादेव जी ने की थी, श्रीर उन्होंने वाण की सहायता के लिये इसे भेजा था । एक बार बलराम और प्रद्युम्न के साथ श्रीकृष्ण वाण की राजधानी में गये थे, वाण ने अश्विमेध की कैंद कर लिया था, अतएव श्रीकृष्ण का यहाँ नाम आवश्यक था । वाणसेनापति ज्वर ने वहाँ श्रीकृष्ण को पीड़ित किया । श्रीकृष्ण ने दूसरे ज्वर की सृष्टि की, उसने वाण के सेनापति को पराजित किया और उसे बँध कर श्रीकृष्ण के हाथों समर्पित कर दिया । उसने शरण चाहा, श्रीकृष्ण ने प्रवृत्त हो कर उसके इच्छानुसार जगत् में अन्य ज्वरों को न रहने का वर दिया । (हरिवंश) —

विनाशिनी (स्त्री०) ज्वरनाशक श्लेषध ।

ज्वलन तत्० (पु०) अग्निदाह, तपन उर्ध्वपन, कातर होना, अग्नि ।

ज्वार दे० (पु०) सुभार, समुद्र का उफान ।

ज्वाला तत्० (स्त्री०) आँव, लौ, लपट, दाह, प्रकाश, ताप जन्म पीडा ।—मुखी (स्त्री०) पीठस्थान विशेष, महाविद्या विशेष, देश विशेष, जिस स्थान से ज्वाला निकलती हो ।

## भ

भ भ्रज्जन का नयाँ वर्ण है, इसका उच्चारण तालु से होता है, अतएव इसे भी तालुवर्ण कहते हैं ।

भङ्गार तत्० (पु०) [ भं + कृ + घञ् ] भन भन शब्द, भनकार ।

भंखना दे० (क्रि०) बड़बड़ाना; पक्षात्पाय करना, अनुत्पाय करना ।

भंख तत्० (पु०) मीन, मत्स्य, मछली ।—केतु (पु०) मीन केतु, मीनध्वज, मछली के निशान धारण कामदेव, मदन ।

भंखाड़ दे० (पु०) पुरातन वृक्ष, बहुत पुराना वृक्ष, पुराना, जीर्ण ।

भंगा दे० (पु०) भंगा, पहिने का एक वस्त्र, झड़ा, कुता ।

भंभकार दे० (पु०) भं भं गब्द, भंगुर आदि कीड़ों के शब्द ।

भंभट्ट दे० (पु०) चमड़ाहट, खटपट, भगड़ा, तकरार, ठपप्रता ।

भंभट्टी दे० (पु०) ठपप्र, भगड़ानू ।

भंभना दे० (पु०) कड़वा, चिड़चिड़ा, खीझ, चिड़कहा ।

भंभनाना दे० (क्रि०) भंभन शब्द करना, भण्टकार, धाम्पण आदि का शब्द ।

भंभनाहट दे० (खी०) भनकार, घुंघरू शब्द, नूपुरध्वनि, चिड़चिड़ाहट ।

भंभरी दे० (खी०) जाली, भरोखा ।

भंभाना दे० (क्रि०) किसी हेतु से मनस्ताप होना, मुफ्ताना, 'फुनसना, रत्नानि होना, भौवर होना, यिषर्ष होना, फिट्ट पड़ना ।

भक दे० (पु०) क्रोध, रिस, क्रोप, वान, लत, सनक, बकबकावः।—भोरी (घा०) खीनाखीनी, भपटा भपटी, खैचा खैची, नूटपाट, धाक्रमण ।  
—मारना (घा०) ठपर्यं श्रम, विना प्रयोजन का काम करना, ठपर्यं समय गवाना ।

भकना दे० (क्रि०) बकबक करना, निष्कल धोलते रहना, विलाप करना ।

भकरी दे० (खी०) पात्र विशेष, जिसमें दूध दुहा जाता है, दोहनी, दोहन पात्र ।

भकाभक दे० (पु०) बहुत स्वच्छ, चमकता हुआ स्वच्छ, साफ सुथरा ।

भकौर दे० (पु०) भौक, टोटा, घाटा, हिलोड़, कम्प, कम्पन ।

भकौरना दे० (क्रि०) हिलोड़ना, कंपाना, कम्पित करना, चलाना, स्थान उभृत करना ।

भकौरा दे० (पु०) अन्धड़, झाँधी और पानी, बौझार ।

भकौलना दे० (क्रि०) झुनाना, हिलाना, कंपाना ।

भकड़ दे० (पु०) झाँधी, अन्धड़, चौघापी, बयार, गरम प्रकृति का मनुष्य, बहुत बकने वाला मनुष्य ।

भकड़ी दे० (पु०) उन्मत्त, पागल, बक्री, बकवादी, प्रलापी, लहरी, तर्कनी ।

भकखना दे० (क्रि०) भंखना, पद्यात्ताप करना, प्रलाप करना ।

भकड़ना दे० (क्रि०) लड़ना, लड़ाई करना, खटपट करना, विवाद करना, विरोध उठाना, कलह करना । मिड़ना, सामना करना ।

भकड़ा दे० (पु०) लड़ाई, दंगा, फसाद, बैर, विरोध, विद्वेष ।

भकड़ाना दे० (क्रि०) लड़ाई कराना, विरोध कराना, कलह कराना ।

भकड़ालिनु दे० (खी०) भगड़ा करने वाली खी, लड़ांखी खी ।

भकड़ाखू दे० (पु०) लड़ने वाला, लड़ाई करने वाला, लड़ाका ।

भका दे० (पु०) झड़ा, जामा, कुता, पहिरन, भंगा ।

भकगुला दे० (पु०) छोटा भगा, घालक का जामा ।

भकगुलिया दे० (पु०) कुलया, चोलना, घालकों का कुता ।

भक दे० (पु०) लम्बी दाढ़ी, वृहत्कूर्च ।

भककारना दे० (क्रि०) धमकाना, तिरस्कार करना, डपटना, डांटना, दसाना ।

भकमला दे० (पु०) एक प्रकार की मिठाई ।

भकभर दे० (पु०) सुराही, जल पात्र, कुना, मिट्टी का बना जल रखने का एक प्रकार का पात्र जिसमें जल ठंडा रहता है ।

भकभरी दे० (खी०) जाली, जालीदार भरोखा, काटा ।

भकभा तत् (खी०) भड़, झाँधी, वृष्टि के साथ झाँधी पानी।—निल (पु०) [भकना + चनिन] बड़ी भाँधी, प्रबलवात्या, भयानक बवपडल ।  
—चात (पु०) भड़ी, बवपडल, पानी और झाँधी, अन्धड़, जिसमें पानी भी बरसता हो ।

भट्ट तद् (घ०) गुत्त, रीप्र, वेगि, भटिति, त्ररा से, द्रुत।—पट (घा०) बहुत रीप्र, घति



शीघ्रता से, बहुत जल्दी।—से ( वा० ) गुरन्त, शीघ्र, जल्दी।

भट्टक दे० ( पु० ) छूट खसोट, छूटतराज, छूटना, हरण करना, चुराना, उछारा, कुटाव।

भट्टकना दे० ( क्रि० ) छूटना, अपहरण करना, चुराना, धोखे से ले लेना, भुलावा देकर लेना, दुखलाना, उतरना, फीका पड़ना, भूलना।

भट्टका दे० ( पु० ) खींच, खिचाव, छूट, हरण, भटके से मारने का शब्द। ( पु० ) भटके से भरा हुआ।

भट्टास दे० ( स्त्री० ) बौछार, पानी का छीटा, वायु के भोके से पानी द्धर उधर जाना, भट्टाक।

भट्टि दे० ( पु० ) भाड़, वन भाड़ी, अपने से उत्पन्न कतिपय वृक्षों का समूह, रुखड़ा, धांधी।

भट्टिति तत्त्वे० ( अ० ) द्रुत, शीघ्र, त्वरित, वेगि, गुरन्त, जल्दी।

भट्ट दे० ( स्त्री० ) अंधड़, प्रचण्ड वायु, भट्टी, झांच, एक प्रकार का ताला, ताले की कल।

भट्टन दे० ( स्त्री० ) पतन, गिरन, पके फल आदि का पतन, भरन, बत्ती की गुल या टैम।

भट्टना दे० ( क्रि० ) गिरना, टपकना, पतन होना, भरना, बूना, पके फल आदि का बूना, बजना शहनाई, नौबत आदि का।

भट्टप दे० ( स्त्री० ) तिक्तता, कटुआपन, कटुआहट, आक्रमण, हमला।

भट्टपना दे० ( स्त्री० ) लड़ना, आक्रमण करना, हमला करना, मारामारी करना, भपटना, भपट मारना।

भट्टपाभट्टपी दे० ( स्त्री० ) लड़ाई, दह्रा, फसाद, टपटा डपटी।

भट्टपाना दे० ( क्रि० ) लड़ाना, क्रोध कराना, चिड़ाना, खिजाना।

भट्टवरना दे० ( वा० ) सब का सब जल जाना, समी नष्ट होना, समस्त जलना।

भट्टवेर दे० } ( पु० )  
भट्टवेरी दे० } ( स्त्री० ) जङ्गली बेर, भाड़ की बेर।

भट्टवाना दे० ( क्रि० ) भट्टाना, साफ करना, मैल हटवाना।

भट्टाक दे० ( पु० ) उतावलो, शीघ्रता, फुर्ती, हड़बड़ी, जल्दी।

भट्टाका दे० ( पु० ) शीघ्रता, जल्दी।

भट्टाभट्ट दे० ( अ० ) चटपट, भटपट, शीघ्र, क्रमिक, धारा प्रवाह।

भट्टाना दे० ( क्रि० ) साफ कराना, भाड़ू दिलवाना, भट्टवाना, भाड़ू फूंक कराना, मन्त्र तन्त्र करवाना।

भट्टी दे० ( स्त्री० ) लगातार वृष्टि, बराबर पानी बरसते रहना, अविच्छिन्नवृष्टि, बाहरी आमदनी, बार्षिक या मासिक आमद से अतिरिक्त लाभ, कर्ती आमद।

भट्टीता दे० ( पु० ) फल के समय की समाप्ति, फल की समाप्ति का समय, 'फल भार।

भट्टा दे० ( पु० ) ध्वजा, पताका, कीर्ति, ध्वजा, यश-पताका, राज चिन्ह विशेष, सत्कर्म सूचक चिन्ह, विशेष कठिन अथवा उपयोगी काम करने वालों का सम्मान सूचक चिन्ह, किसी उत्तम कामका स्मारक, सीमा निर्देशक।

भट्टूला दे० ( पु० ) बहु पत्र, अधिक पत्तों से घना, बहुकेशी, बहुत बाल वाला लड़का, छोटा लड़का जिसके सिर पर बाल बहुत हों, घिना मुपहन किया हुआ लड़का।

भट्ट तद्दे० ( पु० ) भणत्, अनुकरण शब्द, कङ्कण वृत्त आदि की ध्वनि।

भट्टक तद्दे० ( पु० ) ध्वनि विशेष, धातु निर्मित वर्तनों का शब्द।

भट्टकना तद्दे० ( क्रि० ) भन भनाना, भनभन करना, भणत्कार करना।

भट्टकार तद्दे० ( पु० ) भंकार, भ्रमर आदि की ध्वनि।

भट्टकारना तद्दे० ( क्रि० ) बजाना, शब्द करना, भन भन बजाना।

भट्टवां दे० ( पु० ) धान्य विशेष, एक प्रकार का धान।

भट्ट दे० ( अ० ) भट, शीघ्र, गुरन्त, शीघ्र, त्वरित, वेगी।—से ( वा० ) शीघ्रता पूर्वक, त्वरा पूर्वक, भटपट, भट से।

भूपकना दे० (क्रि०) निद्रा लेना, पलक मारना, भयकी घाना, भलना, पंखा करना, पंखा भलना, लपकना, भपटना, भपट लेना ।

भूपकाना दे० (क्रि०) पलक मारना, मटकाना, लपकना, उंचाना ।

भूपकी दे० (स्त्री०) पलक, मटकी, लपकी, ऊंच, उंचाई ।

भूपट दे० (स्त्री०) लपक, आक्रमण, बढ़ाई, छीना छीनी, लूट एसोट, खीचने के लिये वेग से आगे बढ़ना, सेने के लिये आक्रमण करना ।—लेना (क्रि०) छीन लेना, बलात्कार से नेलेना, जबर-दस्ती छीनना ।

भूपटना दे० (क्रि०) लपकना, आगे बढ़ना, घुटी दख्खा से किछी जो धोर आगे बढ़ना, चढ़ घाना, चढ़ दीड़ना, छीनना ।

भूपट्टा दे० (पु०) धाया, आक्रमण, बलात्कार, दौड़, चढ़ाई, छीन, लूट ।—मारना (क्रि०) भपटना, भपट कर छीन लेना, बलात्कार से छीनना, भपटलेना ।

भूपलाना दे० (क्रि०) खंगालना, धोना, सूख पानी में धोना ।

भूप्याभूपी दे० (स्त्री०) हड़बड़ी, शोषता, अतिथरता ।

भूप्याट दे० (त०) (स्त्री०) स्फूर्ती, फूर्ती, शीघ्र, जल्दी, कटकट ।

भूपाना दे० (क्रि०) भपकी लेना, उंचाना, निद्रा लेना, आलस यह अपने आप निद्रा घाना ।

भूपाल दे० (स्त्री०) भीसी, फूँही, छोटी छोटी हृन्द, झड़ी, ठगार, धूर्तता, धूर्ताई । (पु०) धूर्त, धोखा बाज, ठग ।

भूपालिया दे० (पु०) छली, कपटी, धूर्त, अघर्मा, ठग ।

भूपकाना दे० (क्रि०) घबड़वाना, चकित करना, अचम्भित करना, आह्वयित करना ।

भूपिया दे० (पु०) भ्रूषण विशेष, खियों का एक गहन ।

भूपुआ दे० (पु०) लोमय, भदरा, बहुकेश, रौंठरा, बड़े बड़े बाल वाला, जिसके बाल बड़े बड़े हों ।

भूपुआ दे० (पु०) गुब्बा, लटकन, स्तयक, बड़ा जामा, लवादा, फूँदा, गुब्बा ।

भूम तत्त्वं (पु०) भोक्ता, भोजन कर्ता, खादक ।

भूमक दे० (स्त्री०) चमक, दीप्ति, प्रकाश, शोभा, भलक ।

भूमकड़ा दे० (पु०) चटक, जगमग, चमकीला, भड़कदार, चिलक, दीप्तिमान्, प्रकाशशील ।

भूमकना दे० (क्रि०) चमकना, चिलकना, चम-चमाना, नाचना, क्रोध से दूधर उधर हाथ फेंकना ।

भूमका दे० (पु०) प्रताप, तेज, प्रभाव, ज्ञान ।

भूमकी दे० (स्त्री०) भूमक, भलक, चमक, चकचक, शोभा ।

भूमभूम दे० (अ०) लगातार, सतत, अचिरत, अनंतरत, अग्रान्त, एक के बाद एक, ध्वनि विशेष ।

भूमभ्रमाना दे० (क्रि०) चमकाना, चिलकना ।

भूमरभूमर दे० (अ०) सहसा वृष्टि घाना, बूंद बूंद से ।

भूमका दे० (पु०) झड़ी, वृष्टि प्रपात ।

भूमभूम दे० (अ०) भूमभूम, लगातार, सतत, अनंतरत ।

भूम्या दे० (पु०) भया हुआ, दका हुआ, आच्छादित ।

भूर तत्त्वं (पु०) निर्भर करना, पर्यंत से निकला हुआ जल प्रवाह, सोता, सोता, भरना । (स्त्री०) झड़ी, वर्षा, आंच, जलन ।

भूरभूर दे० (पु०) भूभूर, सुराही, अन्न आदि के गिरने का शब्द ।

भूरना दे० (स्त्री०) सोता, पर्यंत के जलका सोता, छोटी नदी, निर्भर ।

भूरहि दे० (क्रि०) भरते हैं, बहते हैं, गिरते हैं, टपकते हैं, बूते हैं, निकलते हैं ।

भूरि दे० (स्त्री०) निरन्तर जल वृष्टि, भर कर, बूकर ।

भूरौखा दे० (पु०) भूकटी, खिड़की, जातीदार खिड़की ।

भर्भरा तत्० ( पु० ) वेदवा, पशुरिया, कुलटा, याराङ्गना ।

भर्भरो तत्० ( स्त्री० ) खजरी, डफली, बाजा विशेष ।  
भर्ना दे० ( पु० ) सूय विशेष, जिसमें बहुत छेद होते हैं और उमसे मिले अन्न पृथक् पृथक् किये जाते हैं । ( क्रि० ) भडना, गिरना, टपकना ।

भल दे० ( स्त्री० ) ज्वाला, क्रोध, कोप, जलजलाहट, उष्णता ।

भलक दे० ( स्त्री० ) चिपक चमक, जगमग, आभा, उजाला ।

भलकत दे० ( क्रि० ) चमकते हैं, जगमगाते ह, आभा देते हैं, दीख पडते हैं, साफ साफ मानूम होते हैं ।

भलकना दे० ( क्रि० ) प्रकाशित होना, चमकना, साफ साफ दीख पडना, उज्वल होना ।

भलका दे० ( पु० ) फोला, फोला ।

भलकार दे० ( पु० ) जलन, भलक, आब, आभा, प्रकाश ।

भलकी दे० ( स्त्री० ) दृष्टि कटाक्ष, भौंयली, अपाङ्ग दृष्टि ।

भलभल दे० ( पु० ) चमकता हुआ, बहुत ही साफ, अत्यन्त स्वच्छ, पतला, सूक्ष्म, तेज, तीक्ष्ण, लहक ।

भलभलाना दे० ( क्रि० ) चमकना, चमकित होना, भलभल करना, टीसना, पीडा करना, क्रोध, करना ।

भलभलाहट दे० ( स्त्री० ) चमक, भलक, प्रकाश ।

भलना दे० ( क्रि० ) हिलाना, डुलाना, भपकना, सुधारना, पखा करना या हाँकना ।

भलमल दे० ( पु० ) चमचम, चमक ।

भलहाया दे० ( पु० ) शङ्कित, सन्देही, सशयी, धोखा खाया हुआ, ठगा गया, यज्ञित ।

भलाभल दे० ( पु० ) ज्योतिष्मान्, प्रकाशयुक्त, ज्योति विशिष्ट ।

भलाना दे० ( क्रि० ) सुधारना, साफ कराना, टाका लगाना ।

भलावार दे० ( पु० ) चमकीला, भडकीला, सुशोभित, चमत्कार ।

भलार दे० ( पु० ) भाडी, गहन, कानन, घना जङ्गल ।

भप तत्० [ भप् + अल् ] मत्स्य, मीन, मछली, मच्छ, बडी मछली, प डीन ।—फैतन ( पु० ) मदन कामदेव, मीन ध्वज ।—भङ्ग ( पु० ) [ भप + अङ्ग ] अनिष्ट उपापति, शीकृण पौत्र कामदेव का दूसरा रूप ।—भशन ( पु० ) [ भप + अशन ] मत्स्यभोगी, मीनभक्षी, गियुनार सूष, जलजन्तु विशेष ।—भेदरी ( स्त्री० ) भ्रू-उदरी, व्यासदेव की माता, मत्स्य गन्धा, योत्र गन्धा ।

भौंई दे० ( पु० ) परछाईं, लहसन, प्रतिविम्ब भलक, छाया, यथा—'मेरी भय बाधा हरी राप नागरि सोइ । जातन की भौंई परे दयाम हरि दुति होइ ।' ( विहारी की सप्तशतिका )

भौंऊ दे० ( पु० ) वृक्ष विशेष, भाक, वेतस ।

भौंक दे० ( स्त्री० ) ताक, भुपड, प्रप, सप्रह, पाल ।

भौंकड दे० ( पु० ) भाडी, सघनवन, सघन कानन ।

भौंकना दे० ( क्रि० ) छिप कर देखना, ताकन ओट से देखना, निहारना, कनखी से देखना ।

भौंकाभौंकी दे० ( स्त्री० ) ताका ताकी, देखा देप परस्पर निरीक्षण, परस्परालोकन ।

भौंर दे० ( पु० ) जन्तु विशेष, वन्य जन्तु, बाण विधा, हरिण विशेष ।

भौंभ दे० ( स्त्री० ) मजीरा, एक प्रकार का नाजन ।

भौंभट दे० ( स्त्री० ) भगडा, कलह, विरोध, टर्ग ।

भौंभर दे० ( पु० ) बहुविक्रियुक्त, जिसमें अनेक बिरा या हो गये हों ।

भौंभरी दे० ( स्त्री० ) बहुत छेद वाली कण्ठ भरना ।

भौंभा दे० ( पु० ) भीगुर, कीडा विशेष, जो के दिन में प्राय विशेष होते हैं ।

भौंभिया दे० ( पु० ) क्रोधी, कोपी, सिञ्जू ।

भौंभी दे० ( स्त्री० ) खेल विशेष ।—कौडी ( या फूटी कौडी ) कुछ नहीं, निरर्थक, बिना प्रयोजन

कौप दे० (पु०) दम्पन, दहन, बाँस या तृण का यना हुआ गृहावरण विशेष, दीवार की रक्षा के लिये टट्टर, सिरकी की टाटी ।

कौपना दे० (क्रि०) दफना, बन्द करना, आच्छादन करना, आवृत करना, तोपना, दाप लेना ।

कौघरा दे० (गु०) काला, कृष्ण, कृष्णवर्ण का ।

कौवली दे० (स्त्री०) नखरा, पोचना, हाथ भाग ।

कौवा दे० (पु०) पक्की ईंट, अधिक पकने से दो तीन या अधिक सटी हुई ईंट ।

कौसना दे० (क्रि०) विगाड़ना, कुनलाना, सुगामद करके रास्ते पर से खाना, असत्य लोभ का लोभ दिया कर कुत्र लेलेना, धोखा देना ।

कौसा दे० (पु०) कुसलावा, धोखा, असत्य लोभ ।

कौसू दे० (गु०) कुसलाक, धोखावाज, धूर्त, ठग, विगाड़ू ।

क्राऊ दे० (पु०) भाऊ वृत्त विशेष, वेतस ।

क्राग दे० (पु०) केन, भाग, उधाल, पानी में अधिक तरङ्ग उठने से या और किसी प्रकार रगड़ पहुँचने से जो सफेद केन निकलता है ।

क्राभा दे० (पु०) गाँजा, भाँग, एक प्रकार की नशीली पत्ती जिसका आज कल के महात्मा बड़ा आदर करते हैं, मादक वस्तु विशेष ।

क्राट दे० (पु०) निकुञ्ज, लता आदि से घिरा हुआ स्थान, मँड़वा ।

क्राड दे० (पु०) कटीला वन, झाड़ी, एक प्रकार का दीपक, जो वृक्ष के आकार का पीतल आदि का बनाया जाता है, जिस में शोभे के ग्लास लगाये जाते हैं, बत्तियों का झाड़ू, पञ्चाण्डव, अनवरत वृष्टि।—खण्ड (पु०) एक वन का नाम, जो विहार के पूर्व भाग में है, जहाँ धैवनाथ नामक महादेव हैं। पुरी के पास के वन का नाम भी झाड़ू-खण्ड ही है, यथा—“झाड़ूखण्ड में भले विराजो जी, औरैसा जगन्नाथ पुरी में ठाकुर भले विराजो जी”

—क्राड (वा०) कटीलो तथा सूखी झाड़ी, बीहड़ वन, धीरान जङ्गल।—क्राटक (वा०) झाड़ना, बहारना, साफ सुधरा करना।—क्रूड

(वा०) झाड़ना, बहारना, सफाई संशोधन, जपरी घामठनी, नियमित धाय से अधिक धाय, धचा सुचा।—डालना (वा०) साफ कर देना, लपटा, मोड़देना, स्पष्ट कहदेना, गिरफ्तार करना, खनादर करना, अनुचित कड़े शब्द का प्रयोग करना ।

—पछाड़ कर देखना (वा०) खूब देखना, खूब जांच करना, परखना, अनुवन्धान, करना, परीक्षा करना, जांचना, कसौटी कसना।—घाँचना (वा०) अधिरत वृष्टि होना, सर्वदा पानी बरसना, किसी वस्तु का ताँता बाध देना, निर्गल बोलते जाना ।

क्राडन दे० (स्त्री०) बहारना, सुहारना, कूड़ा, कचरा, कतथार, साफ करने वाला कपड़ा, वह कपड़ा जिससे वस्तु साफ की जाती है ।

क्राडना दे० (क्रि०) साफ करना, सुहारी लगाना, झाड़ू लगाना, सुहारना, साफ करने की कूची, या कपड़े से साफ करना, बुन्दिया झाड़ना, सेव झाड़ना, गिराना, टपकाना, बुखाना, उतारना ।

—फूँकना (वा०) भूत उतारना, टोटका करना मन्त्र करना ।

क्राडन्त दे० (पु०) सभी, समस्त, सम्पूर्ण, अखिल, सब के मय, समस्त रूप से, पूर्ण रूप से ।

क्राडा दे० (पु०) गुह, विद्या, मत्त, मलत्याग, हगना, पुरीपोषण ।

क्राडी दे० (स्त्री०) धन जङ्गलों, घना वन, छोटा और घना वन ।

क्राडा भपटा लेना दे० (वा०) डूढ़ना, खोचना, अन्वेषण करना, मार्गण करना, तलाशी लेना ।

क्राडा देना दे० (वा०) तलाशी देना ।

क्राडे भपटे जाना दे० (वा०) मलत्याग करनेजाना, पाखाने जाना ।

क्राड दे० (पु०) बड़नी, शोधनी, सम्मार्जनी, सुहारी, कूँचा।—कश मेहतर, भङ्गी, हलालखोर ।

क्रापा दे० (पु०) टोकरी, बड़ी टोकरी, दौरी ।

क्रावर दे० (पु०) पङ्किल भूमि, दलदल ।

क्राया दे० (पु०) चर्मपात्र, चामका एक प्रकार का पात्र, जिससे तेल या घी नापा जाता है । कुप्या, कुप्यी ।

भ्रामर दे० ( पु० ) शान, शाण, सिलो, पथरी, एक प्रकार का पत्थर जिस पर अख लीखे किये जाते हैं ।

भ्रामा दे० ( पु० ) भ्रामा, पक्षी इंट ।

भ्रार दे० ( पु० ) आग की लय, अग्निक्षण, विस्फुल्लिङ्ग, प्रकाश ।

भ्रारि दे० ( क्रि० ) भ्रारकर, गिराकर, भरभराकर, भाङ्कर ।

भ्रारी दे० ( स्त्री० ) जलपात्र विशेष, गड्ढा, करवा, टोटीदार जलपात्र, सुराही, समूह, भाङ्गी, वृच समूह, वृच जाल, कमएहलु ।

भ्राल दे० ( पु० ) तीव्ररस, कटु, तीक्ष्णरस, कहुष्ण, बड़ा ठोकरा, धातुमय द्रुटे वस्तुओं का जोड़ना, दूटा वस्तुन सुधारना ।

भ्रालना दे० ( पु० ) चोटना, जोड़ना, चिकनाना, स्निग्ध करना, बालिय करना, साफ करना, द्रुटे धातु पात्र का छिद्र रोकना ।

भ्रालर दे० ( स्त्री० ) जालीदार किनारा, गरुडदेदार किनार, गोट ।

भ्रालरा दे० ( पु० ) सोताभरना, फुण्ड, बड़ा फुण्ड ।

भ्रापा दे० ( पु० ) भ्रांका, छांपा, बड़ा जालीदार ठोकरा ।

भ्रिभक दे० ( स्त्री० ) चौंक, भय, डर, भङ्क, अचम्भा ।

भ्रिभकना दे० ( क्रि० ) भङ्कना, डरना, चौंकना, आश्चर्यित होना, अचम्भित होना ।

भ्रिभका दे० ( पु० ) चौंका हुआ, डरा हुआ, भयभीत, अचम्भित ।

भ्रिभकाना दे० ( क्रि० ) भङ्काना चौंकाना, डराना, भयदिखाना ।

भ्रिभकी दे० ( स्त्री० ) भङ्क, चौंक, डर, भय ।

भ्रिभ्भा दे० ( स्त्री० ) फूटो कौड़ी, कानी कौड़ी, जिगना नामक एक वृच ।

भ्रिभ्भायी दे० ( स्त्री० ) जिगना वृच ।

भ्रिभ्क दे० ( स्त्री० ) धमकी, घुड़की, फटकार ।

भ्रिभ्कना दे० ( क्रि० ) धमकी देना, धमकाना, घुड़की देना, फटकारना, दवाना, दयकाना, भटका देना ।

भ्रिभ्काभ्रिभ्की दे० ( स्त्री० ) भगड़ा, रगड़ा, टंटा बखेड़ा, वैर, विरोध ।

भ्रिभ्की दे० ( स्त्री० ) घुड़की, दबाव, धमकी ।

भ्रिभ्किडाना दे० ( क्रि० ) क्रोध करना, अधिक क्रोधित होना ।

भ्रिभ्कहा दे० ( पु० ) दुर्वच, पतली हड्डी धाला, सुपट, मुकटा ।

भ्रिभ्किनी दे० ( स्त्री० ) समसनी, भनभनी, वैर का सोजाना । किसी अङ्ग की नस दब जाने से उभने एक प्रकार की समसनी हो जाना ।

भ्रिभ्भिर दे० ( पु० ) पतला प्रवाह, धीरे धीरे बहना, छोटी धारा ।

भ्रिभ्भिरा दे० ( पु० ) मन्दतर प्रवाह, मन्दवेगवाली नदी ।

भ्रिभ्री दे० ( स्त्री० ) भ्रिभ्नी, भ्रिभ्गुर, कीटविशेष ।

भ्रिभ्भिराना दे० ( क्रि० ) भरना, टपकना, गिरना, बहना ।

भ्रिलगा दे० ( पु० ) पुरानी खाट, टूटी खाट, मिखाट की बिनापट टूट गयी हो ।

भ्रिलङ्गा दे० ( पु० ) एक प्रकार के सिपाही, वैश्वविशेष ।

भ्रिलम दे० ( स्त्री० ) कयच, सत्राह, लोहे का धनु जो युद्ध में अर्धों से शरीर की रक्षा के निमित्त पहना जाता है । यज्ञर, सिर पर लोहे के कटों के समान पहिनाव ।

भ्रिलमिल दे० ( पु० ) भ्रुकरी, जालीदार सिङ्की दरवाजे की भ्रुकरी ।

भ्रिलमिलाना दे० ( क्रि० ) चमकना, चीणप्रभ होना प्रकाश का नष्ट होना, बीच बीच में एक धा चमक जाना, कभी चमकना कभी लोण होना ।

भ्रिल्लिका तत्त्वं ( स्त्री० ) भीगुर, कीट विशेष ।

भ्रिल्ली तत्त्वं ( स्त्री० ) अति सूक्ष्म चमड़ा, चर्म, भीगुर, भ्रिल्लिका ।

भ्रिभ्कना दे० ( क्रि० ) पछात्ताप करना, करना, पछताना, शोकांत होना, दुःखित होना, अजीम की पीनक में आना, दुखड़ा रोना ।

खिना दे० ( क्रि० ) भिकभिक करना, दुविधा करना, दुविध होना ।

गिट दे० ( पु० ) मज्जाह, केपट, कैवर्त, दास, धीवर, माभी, कर्णधार ।

गा दे० ( खी० ) चिंगड़ी मछली, एक प्रकार की मछली ।

गुर दे० ( पु० ) कीट विशेष, भिल्ली, घुरघुरा ।

न दे० ( यु० ) भीना, महीन, सूदम, पतला, पतील, दुर्बल, बारीक । ( खी० ) भीनी हलकी, महीन, पतली, यथा:—

दर मोरी भीनी, मूरख मैल कर दीनी ।

चादर मोर कबिरा चांड़े ज्यों के ह्यों धर दीनी ॥

—कबीर साहब ।

यका दे० ( खी० ) भींगुर कीट ।

ल दे० ( खी० ) सरोवर, इद, जलाशय, ताल, बहुत बड़ा तालाब, प्राकृतिक जलाशय, धारा रहित बड़ा सरोवर ।

सी दे० ( खी० ) फूली, छोटी छोटी दून्नें, फुहरा, भ्यास ।

रुना दे० ( क्रि० ) नम होना, गिरना, निहुरना, नथना, लचना, सिर नीचा करना, सज्जा से सिर घयनत करना, अभिवादन करना, बड़े को प्रणाम करना, नीचे की ओर आना, झोप करना, झोपित होना । यथा:—

“भुकी रानि अरहू अरगानी” ।

—रामायण ।

राना दे० ( क्रि० ) नवाना, नीचा दिखाना, नम करना, प्रणत करना, झोप कराना ।

कावट दे० ( खी० ) निहुराव, नथता, लचाव, लटकाव, चलावट ।

भुलाना दे० ( क्रि० ) झोप करना, रिस करना, चिड़चिड़ाना, शीघ्र झोप करना, खिसियाना ।

उलाना दे० ( क्रि० ) झूठा करना, झूठ साबित करना, मिथ्या सिद्ध करना, अशुद्ध करना ।

डाई दे० ( खी० ) झूठापन, मिथ्या, असत्य । ( क्रि० ) झूठा करके, मिथ्या बताकर ।

भुठालना दे० ( क्रि० ) अशुद्ध बताना, मिथ्या होना सिद्ध करना, प्रमाणों के द्वारा मिथ्यात्व प्रतिपादन करना, झूठा ठहराना, झूठा करके बताना, उच्छिष्ट करना, बूटा करना ।—मुँह भुठालना ( वा० ) कुछ खाना, नाम मात्र के खाने के लिये बैठना, स्वल्प खाना ।—मुँहा मुँह भुठालना ( वा० ) मुह पर झूठा बनाना, सामने झूठा साबित करना ।

भुड, भुण्ट, ( पु० ) स्तवक, गुच्छा, भाँप, झोटा भाड़ ।

भुण्ड दे० ( पु० ) श्रप, समूह, समुदाय, दल, भीड़भाड़, ठह, मण्डल, साधुओं का अण्डाड़ा, साधुओं का समूह विशेष, जिसमें निश्चित संख्या के साधु रहते हैं ।

भुण्डा दे० ( पु० ) पताका, वैजयन्ती, भण्डा ।

भुण्डी दे० ( खी० ) भाड़ी वृक्ष का समूह, धनजण्ड, गुच्छा, साधुओं का एक दल विशेष, भुड के अधीनस्थ रहने वाला साधुदल, इसमें भी साधुओं की एक नियत संख्या रहती है ।

भुन दे० ( खी० ) सादृश्य, समानता, लगाव, छुवाव ।

भुनभुना दे० ( पु० ) खिलौना, लड़कों के खेल की एक वस्तु ।

भुनभुनी दे० ( खी० ) नूपुर, वैजनी, घूघरू, सनसती ।

भुमका दे० ( पु० ) गुच्छा, स्तवक, गुच्छा के आकार का एक गहना, कर्णभूषण, कनफूल, फूल या फल का गुच्छा, डेड़ी, फल विशेष ।

भुरना दे० ( क्रि० ) सुखाना, सूख जाना, सूखा होजाना, कुम्हलाना, सुरभाना ।

भुरमुट दे० ( ए० ) भीड़, मण्डली, समूह, समुदाय, भीड़भाड़, होहल्ला, हुल्लड़, गुलगपाड़ा ।

भुराना दे० ( क्रि० ) सुखाना, शुष्क करना, सुरभवाना, ( पु० ) सूखा हुआ ।

भुराने दे० ( पु० ) सूखे, सूखे हुए, सुरभाये हुए, ( विशेषण 'भुराना' का बहुवचन ) ।

भुरियाना दे० ( क्रि० ) बीनना, बीभना, बराना, सोहना, निकाना, खेत की घास निकाल देना ।

भुरी दे० (खी०) समेट, सिकोड, सिकुड़न, शरीर के माँस का सिकुड़ाव, ढीला पड़ना ।

भुर्ना दे० (क्रि०) घुमहलाना, घुमकाना ।

भुलकाना दे० (क्रि०) दग्ध करना, भस्म करना, जलाना, जला देना ।

भुलना दे० (क्रि०) झुलना, हिलना, लटकना, हिडोले पर चढ कर हिलना, लटक जाना ।

भुलभुली दे० (खी०) कान के पात, खियों के कान में पहनने के लिये, पत्ता के आकार का गहना विशेष ।

भुलसना दे० (क्रि०) भुनना, जलना, अर्ध दग्ध होना, अधजला होना ।

भुलसाना दे० (क्रि०) जलाना, जला देना, अधजला करना, अर्ध दग्ध करना ।

भुलाना दे० (क्रि०) लटकाना, झुलाना, हिलाना, हिडोला झुलाना ।

भुल्ला दे० (खी०) पहनने का कपड़ा, भंगा, चोला, जनाना कुर्ता ।

भूँभ दे० (उ०) घोंसला, खोंता, वासा, नीद, पत्तियों के रहने का स्थान, खोता ।

भूँभल दे० (उ०) क्रोध, खुनस, क्रोधावेश, क्रोध चढ़ना, रिस, चिडचिडाहट, कोपावेश ।

भूँटर दे० (खी०) दोफसली भूमि, दो अन्न बोयी जाने वाली भूमि, जिस भूमि में दो अन्न बोये जाते हैं ।

भूँठन भूँठन दे० (उ०) झूठ, झूठ, उच्छिष्ट, भोजन से बचा छुवा ।

भूँठ दे० (उ०) मिथ्या, अशुद्ध, असत्य, निरर्थक ।  
—मूँठ (वा०) झूठ, सरासर झूठ, विलकुल झूठ, निरा असत्य ।

भूँठा दे० (उ०) मिथ्यावादी, असत्यवादी, झूठ बोलने वाला, उच्छिष्ट, भोजन का बचा भाग, झूठा, भोजनावशेष ।—भूँठा (वा०) झूठ, उच्छिष्ट ।

भूना दे० (उ०) पक्का नारियल, सूजा नारियल का फल, सूझ वज्र, महीन कपड़ा, चूल्हे में आग जलाना ।

भूमक दे० (खी०) भीड़, सङ्घ, समुदाय, रत्ना भूषण विशेष, कनकूल, (गु०) हिनने वाला, कापे वाला ।

भूमभूम दे० (उ०) मेघ, घन, बादलों का उमड़ना, हिलहिल कर, अहङ्कार के साथ हिलना ।

भूमना दे० (क्रि०) हिलना डोलना, सहान, जंचना ।

भूरना दे० (क्रि०) कूटना, चूर्ण करना, भावन, पेड़ से फल उतारना, भूषना, किसी कारण से दुर्बल होना, कलपना, पक्षताना, पक्षान्ताप कान, दुःखित होना, शोक करना ।

भूरा दे० (गु०) भूखा, सुरभाषा, कुहलाया, घन, वृष्टि, अजाल पड़ना, महँगी पड़ना, वृष्टि न होना ।

भूल दे० (खी०) ढीला ढाला वज्र, ओहार, हाथ का ओढ़ना, बैल छोड़े आदि पशुओं के छोड़ने से वज्र, सवारी का पर्दा, ओहार, बैली, टोपी ।

भूलना दे० (क्रि०) डोलना, हिलना, लटकना ।  
—छन्दोविशेष । कविता बनाने की एक रीति ।

भूला दे० (उ०) हिडोला, पालना, डोला, हिंडो रस्सी के सहारे बघा हुआ पाट जिस पर धु हैं । वृच विशेष, दांस वृच ।

भूँसी दे० (खी०) फूही, भीसी, भटास, फूँ एक नगर का नाम, यह प्रयाग के सामने है । बहुत ही पुराना है । भारत के चन्द्रवंशी राजा की राजधानी, इसका पुराना नाम प्रतिष्ठानपुरा इसे ही राजा पुच्छरवा ने अपनी राजधानी बनाया, इसी स्थान पर प्रसिद्ध सोमांसक बौद्धिक स्वधर्मप्रवार्क कुमारिलभट्ट गुपदग्ध हुए थे । हैं यही के परवर्ती किसी राजा का नाम ली था, इस नगरी का नाम उस समय अन्धेर ना पड़गया था । जो हो यह नगर पुराना है इ सन्देह नहीं ।

झोंक दे० (खी०) धक्का, आघात, टकील, रे भकोरा, बल के साथ खींचना, भटका (क्रि०) आग में लगाना, नष्ट करना, भस्म का जताना, जलादेना, फेंकना, आपत्ति में डाल खतरे में डालना ।

त्रोंकना दे० (क्रि०) फेंकना, टकेलना, पुसेड़ना, लगाना, डालना, घूँसे में लकड़ी लगाना, बिना विचारे करना, निरर्थक करना ।

त्रोंटा दे० { (यु०) सिर के बड़े बड़े बाल, चिखरे  
त्रोंटी दे० { (स्त्री०) या उलझे बाल, लट, पिछले बाल, चोटी, हिंडोले का भौंका ।

त्रोंपड़ा दे० (यु०) मड़ी, छप्पर का छोटा घर, गुण निर्मित गृह, घास फूस का घर, कुटी, आश्रम ।

त्रोंपड़ी दे० (स्त्री०) छोटा भोंपड़ा, कुटी ।

त्रोंपा दे० (यु०) गुच्छा, स्तम्भक, फल या फूल का भोंप, भौंटा, घेर चिराय, परिधि ।

त्रोंरा दे० (यु०) गुच्छा ।

त्रोक दे० (स्त्री०) धक्का, ठोकर, अकस्मात् भिक्कना, सहसा चक्कर आना, घूमरी, कड़ी बीमारी, मरने के समान दुख देने वाले रोग, मरते मरते बच जाना, आकत आना, दुःख आना, किसी प्रकार का उपद्रव ।

त्रोका दे० (यु०) ठोकर, ठेस, उदक, धक्का, आघात, भकौरा, बलात्कार से खिंवाध, भटका देकर खींचना, भौंटा पकड़ कर ज़यरदस्ती खींचना, गिराने की इच्छा से खींचना, सहसा खींचना, अचानक अपनी थोर खींच लेना ।

त्रोका दे० (यु०) खींचना, ओक, बड़ा पेट, लम्बोदर, फलों का बड़ा घबद, फेले का घबद, फेले का भोभ, एक गुच्छे में लगे हुए बहुत से फल ।

त्रोका दे० (यु०) बड़पेटा, बड़ा पेट वाला, तुन्दिल, स्त्रुलोदर ।

त्रोटिंग दे० (यु०) प्रोभेद, प्रीति का भेद विशेष, भौंका देकर, भौंटा पकड़ कर लटकाना, कैस पकड़ कर खींचना, भोटिया कर खींचना ।

त्रोटियाना दे० (क्रि०) बाल पकड़ के खींचना, भौंटा खींचना, भौंटा पकड़ कर मारना, क्रोध से भौंटा खींचना ।

त्रोटो दे० (स्त्री०) छोटा भौंटा, चोटी, पिछले बाल, लट, केश समूह, जटा समूह, गुण आदि का समूह, पूजा ।

त्रोल दे० (यु०) कपड़े की सिकुड़न, ढील ढाल, कपड़े का ठीक न होना, ढीला होना, शरीर में बड़ा होना, कपड़े का ठीक नहीं बैठना, घुप, तरकारी का रस्ता, मसालेदार तरकारी का रस, बच्चे, लड़के ।

त्रोला दे० (यु०) शैला, बड़ी भोली, रोग विशेष, अर्द्धज्ञ, लकवा, वायु विकार से आधे अङ्ग का पड़ जाना, उसका अचेतन हो जाना, लकवा, पतला । (यु०) लटका, सिकुड़ा हुआ, झुग हुआ ।

त्रोली दे० (स्त्री०) कोयली, शैनी, जेब, भोटा, भोला ।

त्रोरा दे० (यु०) सौंवर, भांवर, कासा, कृष्ण वर्ण, धांयला, नेहूँधारु, न कासा न गोरा ।

त्रोसना दे० (क्रि०) जलाना, सूख जलादेना, अच्छी तरह जलाना ।

त्रोसा दे० (यु०) जला हुआ, भस्म किया हुआ, दग्ध, भुलसा हुआ, जलाया हुआ ।

त्रोड दे० (स्त्री०) भगड़ा, टपटा, लड़ाई ।

त्रोरी दे० (स्त्री०) खेत की घास ।

## ज

ए यह व्यञ्जन का दसवां वर्ष है, तालव्य वर्ष है, क्योंकि तालु से इसका उच्चारण होता है । नासिका

से उच्चारण होने के कारण इसको नासिक्य भी कहते हैं ।

## ट

व्यञ्जन का ग्यारहवां वर्ष, यह मूर्धन्य है । क्योंकि इसका उच्चारण मूर्द्धा से होता है ।

तत्त् (यु०) धामन, शब्द, नाद, ध्वनि, चन्द्रमा, गान, रुद्र, अक्षय, युद्धार्द्र, वृहदावस्था, जरा ।

टक दे० (स्त्री०) नाक, देख, निरन्तर दर्शन, लगातार देखना, अनिमित्तप्रवेक्षण, बिना पत्तक गिराये देखना ।—टकी (स्त्री०) लगातार देखते ही रहना, निरन्तर देखना, अद्विगत दृष्टि से देखना ।





टङ्कार दे० (स्त्री०) धनुष के रोदे का शब्द, धनुष  
 टङ्कार, भयानक धनुष ध्वनि ।  
 टङ्कारना दे० (क्रि०) भाड़ना, धनुष के रोदे को  
 भाड़ना, उषा को धोँचना, उसे साफ करने के  
 लिये धोँच कर छोड़ना ।  
 टङ्कना तट्ट० ( क्रि० ) टांकना, घीना, सटकना,  
 झूलना ।  
 टङ्कड़ी दे० (स्त्री०) बैर, पाद, टगरी, गोड़, फिड़ी ।  
 टङ्ग दे० (पु०) कृपण, घुम, घुमड़ा, कङ्गूस, मक्की  
 हूस ।  
 टङ्का दे० (पु०) नया, नयीन, अभिनव, ताजा,  
 धनी का गुलना बना हुआ । (पु०) उतरा गुलरा,  
 (स्त्री०) टट्टकी नयी, नयीना, ताज़ी ।  
 टट्टी दे० (स्त्री०) घेरा, मेंह, घाला, आलबास, वृक्षों  
 के मूल में पानी सींचने के लिये जो घेरा बनाया  
 जाता है ।  
 टट्टपूजिया दे० (पु०) थोड़ी पूंजी वाला, अल्प मूल  
 धन वाला, जिसके पास स्वल्प धन हो ।  
 टट्टवानों दे० (स्त्री०) छोटी घोड़ी ।  
 टट्टिया दे० (स्त्री०) भाँप, द्वार बन्द करने और वृष्टि  
 से दीवार की रक्षा करने के लिये तृणादि निर्मित  
 टट्टर ।  
 टट्टीहरी दे० (स्त्री०) पत्ती विशेष, टिट्टिम ।  
 टट्टुआ दे० (पु०) घोड़ा, छोटा घोड़ा ।  
 टट्टुई दे० (स्त्री०) टट्टवानी, छोटी घोड़ी ।  
 टट्टोलना दे० (क्रि०) डूढ़ना, हाथों से डूढ़ना, छू छू  
 कर के पहचानना, टीसा छोई करना ।  
 टट्टर दे० (पु०) भाँप, बड़ी टट्टी, टट्टिया ।  
 टट्टरी दे० (स्त्री०) झूठ, वाद्य विशेष, दोलक, डोल ।  
 टट्टी दे० (स्त्री०) भाँप, टट्टर, टट्टिया, छोटा टट्टर ।  
 टट्ट दे० (पु०) छोटा घोड़ा, टट्टुआ ।  
 टट्टा दे० (पु०) लड़ाई भगड़ा बखेड़ा, उपद्रव ।  
 टन दे० (पु०) टङ्कोर, धनुष का शब्द, अहङ्कार,  
 ध्वनि विशेष, परिमाण विशेष, सत्ताईस मन का  
 एक टन होता है ।

टनक दे० (स्त्री०) टीस, कर्कश शब्द, गम्भीर शब्द,  
 तीक्ष्ण स्वर ।  
 टनाना दे० (क्रि०) विस्तार करना, विस्तृत करना,  
 फैलाना, पसारना, बान्धना, खींच कर बान्धना,  
 कसकर बान्धना ।  
 टप दे० (पु०) हूद फांद, उखान, बड़ा वर्तन जिसमें  
 स्नान किया जाता है, अथवा जल रखा जाता है,  
 बांस की बनी बड़ी दीरी जिससे चिड़ियों के बच्चे  
 आदि टके जाते हैं ।  
 टपक दे० (पु०) पीड़ा, वेदना, जल आदि के बूंद  
 गिरने का शब्द ।  
 टपकना दे० (क्रि०) टपटपाना, टपक टपक गिरना,  
 झूना, गिरना, फूटे वर्तन से जल आदि द्रव पदार्थों  
 का गिरना, टूट पड़ना, गिर पड़ना ।  
 टपका दे० (पु०) पानी की बूंद अलग अलग होकर  
 गिरना, पके फलों का वृक्ष से आपही आप गिरना,  
 आप से गिरा हुआ पत्रका फल ।  
 टपकाना दे० (क्रि०) चुभाना, छानना, निकालना,  
 रङ्ग आदि निकालना, छानना ।  
 टपकी दे० (स्त्री०) छोटी बूँदें, टपटप ।  
 टपजाना दे० (क्रि०) कूद जाना, उछल जाना, आगे  
 बढ़ जाना, अग्रसर होना, पीछे की बात भूल  
 जाना, पहले की बात को भूल जाना ।  
 टपना दे० (क्रि०) नाँचना लाँचना, कूद कर जाना,  
 फाँद कर निकल जाना ।  
 टपपड़ना दे० (क्रि०) बीच में कूद पड़ना, हाथ  
 बटाना, दूसरों के काम के बीच आगड़ना, अवि-  
 चार से किसी काम को उठा लेना, किमी काम की  
 गुरुता या हानि लाभकारिता बिना सोचे ही उसमें  
 लग जाना ।  
 टपाना दे० (क्रि०) कुदा देना, नँधवाना कुदवाना,  
 फँदाना, फँदवा देना ।  
 टप्पा दे० (पु०) डाक घर, डाकघाना, पोस्ट  
 आफिस, घरनाई, पालकी होने वाले कहारों की  
 डाक, धीच धीच में उनका पड़ाव, रागिनी विशेष,  
 एक प्रकार के गीत का नाम । गँद का उखाल, एक

- प्रकार काटा ।—खाना (या०) गोली या गेंद को उछालते हुए चलना ।
- टव्वर दे० (पु०) परिवार, कुल, वंश, कुटुम्ब ।
- टभक दे० (स्त्री०) पीड़ा, यातना, वेदना, फट, टीस, ध्वनि विशेष, पानी में पानी गिरने का शब्द ।
- टभकना दे० (क्रि०) गिरना, टपकना, जूना, टभक होना, प्रण में वेदना होना ।
- टर दे० (स्त्री०) अहङ्कार, गुमान, अकड़, सेंट, (पु०) मतधाला, उन्मत्त, अचेत, असायधान ।—टर (स्त्री०) बकबक, बड़बड़ ।—टराना (क्रि०) बक-बक करना, टरटर करना, निरर्थक बहुत धोलना, बकवाद करना ।—टरी (पु०) बकवादी, बहुभाषी, बड़बड़िया ।
- टरई दे० (क्रि०) हटती है, टलती है, हटजाना ।
- टरना दे० (क्रि०) हटना, टल जाना, खिसक जाना, दूर हो जाना, भगजाना ।
- टराना दे० (क्रि०) हटाना, हटा देना, टाल देना, भगा देना, हटयाना ।
- टरा दे० (पु०) क्रोधी, बकवादी, बक्की, बली, गुण्डा ।
- टराना दे० (क्रि०) बकवक करना, चिड़चिड़ाना, क्रोध में आकर यकना, गाली देना ।
- टलना दे० (क्रि०) हटना, चम्पत होना, भगजाना, चला जाना, सरकना, दूर होना, जाता रहना, नष्ट हो जाना ।
- टलप दे० (स्त्री०) खॉट, टुकड़ा, कतरन, जख्म, भाग, अंश ।
- टलमलाना दे० (क्रि०) हगमगाना, स्थिति का अनिश्चित होना, सन्दिग्ध स्थिति का होना, ललचना ।
- टलाटली दे० (स्त्री०) बहाना, मिस, ठयाज, हीला-हवाला ।
- टलाना दे० (क्रि०) छिपाना, टकना, छुकाना, हटवा देना, हटवा कर छिपा देना, सरका देना, छुका देना ।
- टल्ला दे० (पु०) कूठपूठ, असत्य, मिथ्या, निरर्थक, सारहीन वस्तु ।

- टवर्ग तत्० (पु०) टका वर्ग, “ट” के समान ।
- षचर, ट ठ ड ट ष, टकारादि पांच अक्षर ।
- टसक दे० (स्त्री०) टीस, चमक, दर्द, ठपपा पीना ।
- टसकना दे० (क्रि०) टीस देना, ठपपा होना, घटना हटना, हिलना ।
- टसकाना दे० (क्रि०) हिलाना, चलाना, चसकाना, दूर हटाना ।
- टसना दे० (क्रि०) मसकना, फटना, चीरना, टट जाना ।
- टस से मस दे० (या०) इधर से उधर, इस घात से उस घात पर, एक विषय को छोड़ कर दूसरे विषय पर, पूर्व स्थिति को छोड़ कर दूसरी स्थिति पर ।
- टहक दे० (स्त्री०) गौंठ की पीड़ा, प्रण की वेदना ।
- टहकना दे० (क्रि०) दुखना, दर्द करना, दम होना, पिराना, पिघलना, द्रव्य होना ।
- टहटह, टहटहा दे० (पु०) सुन्दरता, नशीलता, ताज़ापन, मनोहरता, रमणीयता ।
- टहना दे० (पु०) शाखा, शाख, डाल, विटप ।
- टहनी दे० (स्त्री०) छोटी शाखा, छोटी डाली ।
- टहल दे० (पु०) सेवा शुभ्रूपा, घर का काम कान, यथा:—  
“नीच टहल सब गृह के करि हों,  
पद विशेषि भयसागर तरि हों” ।  
—रामायण ।
- टकोर (या०) शुभ्रूपा, काम काज, गृह कर्म ।
- टकोर करना (या०) सेवा करना, अधीनता बजाना ।
- टहलना दे० (क्रि०) चलना, फिरना, घूमना, भ्रमण करना, हया खाने जाना, सन्ध्या को भ्रमण करना ।
- टहलनी दे० (स्त्री०) दासी, सेविका, सेवा करने वाली स्त्री, घर का काम काज करने वाली स्त्री मजूरिन, नौकरानी ।
- टहलाना दे० (क्रि०) घुमाना, फिराना, चलाना हया खिपाना, सन्ध्या भ्रमण करना ।
- टहलुआ दे० (पु०) सेवक, नाकर, नौकर, कर्म करने वाला, दास, टहल करने वाला ।

लुई दे० ( खी० ) लौंडी, दासी, चाकरानी, काम करने वाली, दहल करने वाले की स्त्री; दहलुई नहीं है किन्तु दहल करने वाली को दहलुई कहते हैं।

री दे० ( पु० ) बालक का शब्द, बालक की सलाई, अन्मते बालक का शब्द।

रौक दे० ( पु० ) पूंसा, चपेटा, घपपड़।

क तद्दे० ( पु० ) टड्ड, चार मारे का परिमाण, सीने का साधन, एक प्रकार की मुई, सिलाई, सीधन।

कता दे० ( क्रि० ) सीना, सिलाई करना, तुरपना, टांका चलाना।

फर दे० ( पु० ) सन्पट, लुघा, बदमाश, गुण्डा, उच्छुहून।

फा दे० ( पु० ) सीधन, लुड़ाई, जोड़, जोड़न, सन्धान।

की दे० ( खी० ) फर्यर फाटने का अक्ष, छेनी, रुखानी, नासूर, फोड़ा, खर्बूजा या अन्य किसी फल का चौकीना टुकड़ा, जिससे फलका अच्छा पुरा होना पहचानते हैं। कुल्हाड़ी, खसटा।

कू दे० ( पु० ) टांके वाला, फर्यर फाटने वाला।

ग दे० ( खी० ) टंगड़ी, गोड़, पैर, एड़ी से चुटने तक का भाग, लटकाव, टंगाव।

गन दे० ( पु० ) एक प्रकार का घोड़ा, पहाड़ी घोड़ा।

गना दे० ( क्रि० ) लटकाना, ऊपर चढ़ाना, लम्बा करना।

गी दे० ( खी० ) कुल्हाड़ी, फरसा, लकड़ी फाटने का एक अक्ष विशेष, टांकी।

च दे० ( पु० ) हठीला, हठी, थक, टेटा, ( पु० ) चड़ा दे० ( पु० ) पेच, दयाव।

ट दे० ( खी० ) सिर के बीच का भाग, चांदी, ताण्डु, टटडी, खोपरी।

ठा दे० ( पु० ) पोड़ा, ठोस, सवार, सार युक्त, कड़ा, उत्साही, उद्योगी, उत्साहशील।

ठाई दे० ( खी० ) पोड़ाधन, उत्साह, ठोसाई, प्रगल्भता।

टांड दे० ( खी० ) मसू, मचान, पैठाने के लिये घाँस आदि का बना ऊँचा आसन।

टांडा दे० ( पु० ) खेप, एक मनुष्य का बोझ, एक बार के उठाने योग्य वस्तु, धनजारे को वस्तु।

टाट दे० ( पु० ) सनका बना हुआ एक प्रकार का विद्यावन, अजाड़।

टाटक दे० ( पु० ) टटका, नया, नवीन, ताज़ा।

टाटी दे० ( खी० ) टटिया, टट्टी, भाँप, टटर।

टाड़ी दे० ( खी० ) लकड़ी फाटने का अक्ष विशेष, छोटी कुल्हाड़ी, फरसी, छोटा फरसा।

टानना दे० ( क्रि० ) फैलाना, विस्तार करना, फैलाना, खींचना।

टाप दे० ( पु० ) छोड़े के बगले पैर का शब्द, छोड़े के दीड़ने में उसके पैरों का शब्द, बाँस का बना हुआ एक प्रकार का यन्त्र, जिससे मछलियाँ पकड़ी जाती हैं।

टापना दे० ( क्रि० ) टाप मारना, दूड़ना, पोजना, ताकते रह जाना, निराश हो जाना, निराश बैठे ताकते रहना, भूला रह जाना।

टापा दे० ( पु० ) खाँचा, बाँस का बना दौरा, यड़ा पिंजरा।

टापू दे० ( पु० ) द्वीप, उपद्वीप, दोबाव, जिस मैदान में चारों ओर जल भरा हुआ हो, ( देखो द्वीप )।

टावर दे० ( खी० ) छोटी फील, तालाव, अकृत्रिम छोटा ताल।

टार दे० ( अ० ) टारकर, हटाकर, नाँचकर, उल्लूहन कर।

टारन दे० ( पु० ) उल्लूहन, हटावन, टालन।

टारना दे० ( क्रि० ) हटाना, सटकाना, दूर करना, टालना।

टारी दे० ( खी० ) दूर, अन्तर, फासला, व्यवधान।

टाल दे० ( खी० ) टालमटोल, ध्यान से फाल फाटना, वहाना करके समय निकालते जाना। लकड़ी अक्ष आदि के बेचने का स्थान, लकड़ी की डेर, अन्नराशि, पहलवानों की लड़ाई का धोसा।

टालाटोल दे० ( पु० ) ध्यान, वहाना, मिया मिस, टालमटोल।

ठिठुरा दे० (गु०) ठिठुरा हुआ, जकड़ा हुआ, पासे का मारा हुआ ।

ठिनकना दे० (क्रि०) धीरे धीरे रोना, शनैः शनैः रोना, सिसकना, सिसकी सेना, तुनकना ।

ठिरना दे० (क्रि०) जमना, घन होना, सङ्ग होना, बंधजाना, जमजाना, एकत्रित होना, कठिन होना ।

ठिलिया दे० (स्त्री०) गगरी, छोटा चड़ा, मटकी, मटकनी ।

ठीक दे० (गु०) उचित, योग्य, यथार्थ, पूरा, शुद्ध, बराबर, सत्य, यथोचित, यथायोग्य, जोड़ ।  
—झाना (क्रि०) मिलना, बराबर होना, उचित घटना, जितना चाहिये उतना होना ।—करना (क्रि०) शुद्ध करना, निश्चित करना, निश्चित कर लेना, दृष्ट देकर सुधारना, मारना, पीटना, सुधारना ।—ठाक (गु०) शुद्ध, सत्य, कृत-प्रबन्ध, कृतव्यवस्था, जिसकी व्यवस्था हो गयी हो, निश्चित, निर्णित ।—ठाक करना (घा०) निश्चित करना, प्रबन्ध करना ।—मठीक (श्र०) यथार्थ, शुद्धता से, यथार्थता से, जोड़तोड़, विष्कुल ठीक ।

ठीकरा दे० (गु०) ठिकरा, मिट्टी के फूटे वर्तन का टुकड़ा ।

ठीकरी दे० (स्त्री०) छोटा ठीकरा, गिटकी, कङ्कड़ ।

ठीका दे० (स्त्री०) निश्चय, ठीक, उचित, यथार्थ, काम का, तात्कालिक धेनन, रोजाना मजूरी, चुकता, चुकौता, इजारा, काम करने के पहले ही उसके लिये मजूरी आदि का निश्चय कर लेना ।

ठीप दे० (स्त्री०) एक प्रकार की झड़ीटी ।

ठुकराना दे० (क्रि०) लतियाना, लात से मारना, ठोकर से मारना, ठोकर मारना ।

ठुह्ठी दे० (स्त्री०) ठोड़ी, दाढ़ी, चिबुक, भुँजा चबेना जिसमें लावा न हो, बिना लावा का चबेना ।

ठुनुक दे० (स्त्री०) सिसक, ठिनक, धीरे धीरे रोदन ।

ठुनुकना दे० (क्रि०) सिसकना, ठिनकना, धीरे धीरे रोना ।

ठुमकना दे० (क्रि०) सुदौल चलना, स्वामाधिक्य से चलना । यथा—“ठुमक चलत रामवन्दु वाजत पैजनिया ।”

ठुमका दे० (गु०) छोटा, नाटा, ठिङ्गना, खर्ब, बीना, घामन ।

ठुमकी दे० (गु०) बालसी, शिथिल, बीला, दीर्घ सूत्री, पतंग की छोटी हिलाना ।

ठुसकना दे० (क्रि०) वादना, वायनवायु का त्याग, धीरे धीरे रोना, दूसरों के कथोपकथन में कही बात कह देना, एक न एक झड़झा लगाते रहना ।

ठुसकी दे० (स्त्री०) शब्दरहित वायुत्याग, ठुसकी, पाद ।

ठुसाना दे० (क्रि०) भराना, भरवाना, दुखवाना, ठसाना ।

ठूँठ दे० (गु०) डुंढा, बिना पत्ते की डाल, पत्ता डाल रहित वृक्ष, शूल्य, शूणा, स्याणु, कटा हाथ, हथकड़ा मनुष्य ।

ठूँठिया दे० (गु०) ठूँठ वृक्ष जिसकी शाखा काट दी गयी हो ।

ठूँठी दे० (स्त्री०) छूँटी, छोटी, अन्न का ढाँठ ।

ठेंडना, ठेंडना (गु०) घुटना, ठेंडना ।

ठेंडना दे० (गु०) खर्ब, छोटा, नाटा, ठिङ्गना ।

ठेंडा दे० (गु०) लाठी, लठ ।—ठेंडी (श्र०) लाठ लाठी, परस्पर में मारामारी ।—वाजना (क्रि०) लाठी चलाना, मारामारी करना ।

ठेंठ (गु०) शुद्ध, फैसल, अमिश्रित, प्राकृतिक, स्वभाव-सिद्ध ।

ठेंठी दे० (स्त्री०) कान का मैल, ठुहा ।

ठेक दे० (स्त्री०) टेकनी, सहारा, अवलम्ब, अन्न से भरा हुआ बड़ा बोरा ।

ठेका दे० (गु०) दृष्ट, रोक, ठेपी, ठेंठी, बोतलआदि का मुँह बन्द करने के लिये ठेपी, रुकावट ।  
—धिकारी (गु०) टीकादार ।

ठेकी दे० (स्त्री०) विश्राम का स्थान, जहाँ फिर का बोझ उतारने के लिये सुविधा हो ।

ठेठ दे० (गु०) ठेंठ, स्वभाव शुद्धि, अमिश्रित, अतमिल, बेमेल ।

डेपी दे० (स्त्री०) ठेंठी, डट्टा, डांट, जाग ।—मुँह में देना (ना०) धवाक् रहना, चुपचाप रहना, कुछ भी न बोलना ।

डेलना दे० (क्रि०) दकेलना, रेलना, पेलना, धक्का देना, भोंकना, हटाना, धागे बढ़ाना ।

डेला दे० (पु०) धक्का, दकेल, भोंक, एक प्रकार की माल लादने की गाड़ी, जिसे घादमो खींचते हैं ।  
—ठेली (अ०) धक्कम धक्का, रेलपेल ।

डेवना दे० (पु०) घुटना, जातु, डेंटना ।

डेस दे० (पु०) टोकर, चपेट, चोट ।

डेसना दे० (क्रि०) छेदना, टोकराना, डूँटना, भरना ।

डेसरा दे० (पु०) नकचड़ी, मेहना ।

डेकना दे० (क्रि०) मारना, पीटना, गाड़ना, अङ्गुली से बजाना, पधयाना ।

डेग दे० (स्त्री०) चोंच भयवा अङ्गुली की मार ।

डेगना दे० (क्रि०) चोंचियाना, चोंच से विखेरना, चिखोरना ।

डेगाना दे० (क्रि०) चोंचियाना, डोंगना ।

डेठ दे० (स्त्री०) चोंच, ठोर, झोठ, पचियों का झोठ ।

डेक दे० (स्त्री०) मारकूट, मारने का शब्द, ठोकने का शब्द ।

डेकर दे० (स्त्री०) ठेप, पैर की मार, लतियाना, बाधा, पैर में चोट लग जाना ।—खाना (क्रि०) गिर पड़ना, मुड़कना, झूल करना, झूल जाना,

बूकना, हानि उठाना, घटी सदना ।—लगना (क्रि०) पैर में चोट लगना ।

डेकरा दे० (पु०) घुटकी, कड़ा, करी, कठिन, कठोर, सख्त ।

डेकराना दे० (क्रि०) घाप घाप टोकर खाना, घोड़ा खादि का टोकर खाना ।

डेदी दे० (स्त्री०) ठुड़ी, विपुक्त, दाढ़ी ।

डेोर दे० (स्त्री०) चोंच, चञ्चु, पचियों का ठोठ ।

डेोल दे० (स्त्री०) डोर ।

डेोला दे० (पु०) कुल्हिया, चिड़ियों का भोजन पात्र, छोटे छोटे बर्तन, जिनमें चिड़ियों को खाना और पानी देते हैं । अङ्गुलियों का पर्य, गाँठ ।

डेोस दे० (पु०) टाँटा, घोड़ा, सप्पार, कठोर, दृढ़, घना, अन्तःसारयुक्त, भीतर से भरा हुआ, भीतर से खोखला नहीं ।

डेोसना दे० (क्रि०) ठासना, दबाना, भरना, दबा दबा के भरना ।

डेोसा दे० (पु०) ठेंगा या अङ्गुठा दिखाना, घोंने या चाँदी की गोली, जिस पर देवता का ध्यायान और पूजन किया जाता है ।

डेोर दे० (स्त्री०) स्थान, टाँप, ठिकाना, स्थल, जगह, भूमि, प्रयन्ध, जीविका का स्थान ।—रहना (क्रि०) वहीं रहना, खेत रहना, मारा जाना, मारा पड़ना ।

## ड

ड यह व्यञ्जन का तेरहवाँ वर्ण है, मुहूर्त में उच्चारण होने के कारण इसे मुहूर्त कहते हैं ।

ड तत्त्वं (पु०) शिव, महादेव, पशुपति, भय, डर, शब्द, ध्वनि, नाद, वाङ्मय, बाङ्गयानल ।

डकारा दे० (पु०) विष, एक प्रकार की औषधि, (पु०) तीक्ष्ण, तीखा, कट्टा, प्रवारि गन्धि, जिसका गन्ध फैलने वाला हो, तीक्ष्णगन्धि, कट्टागन्धि ।

डकाराना दे० (क्रि०) चौथ मार के हसाना, फलपाना, विलाप करवाना, सताना ।

डकार दे० (स्त्री०) उद्गार, हिचकी, हुचकी, डकार,

भोजन से मुग्धि या सूचक पेट का एक शब्द विशेष ।—जाना (क्रि०) खा जाना, पचा जाना, हजम करना, किसीसे कुछ लेकर देने की इच्छा न करना ।—बैठना (क्रि०) पचा लेना, पचा कर निश्चिन्त बैठना, किसी से लिये हुए को भूल जाना ।—लेना (क्रि०) डकारना, डकार जाना, हस्तगत कर लेना, अधीन करना ।

डकारना दे० (क्रि०) टिकारना, डकार लेना, रौभना, हुंकार करना, गर्जना, भोंकना, पना जाना ।

डकैत दे० (पु०) डौंकू, चोर, बटमार, लुटेरा, असहाय पर धाक्रमण करके उसकी वस्तुओं को छीन लेने वाला ।

डकैता दे० (पु०) डौंकू, डकैत, डकैतों का दगा, डकैत समूह ।

डकैती दे० (स्त्री०) डौंका, लूटतराज, चोरी, डकैत का काम, बटमारी ।

डकौत } दे० (पु०) भड़रिया, भड़री के धंशज,  
डकौतिया } दे० (पु०) एक सङ्कर जाति, ये ज्योतिष का व्यवसाय करते हैं और शनि आदि का निकृष्ट दान लेते हैं । कहते हैं, एक भड़री नाम के ब्राह्मण ज्योतिष विद्या के पारङ्गत विद्वान् थे, वह कही बाहर गये हुए थे, उनके विचार में एक रेशा मुहूर्त दो दिन के बाद आने वाला था, जिस मुहूर्त के गर्भ से बड़े भारी विद्वान् का उत्पन्न होना निश्चित होता था । वह गृह के लिये प्रस्थित हुए परन्तु वन का मार्ग भूल जाने से ठीक समय अपने घर नहीं पहुँच सके । मुहूर्त आ पहुँचा, परन्तु भड़री जी अभी वन में ही हैं । वह थड़े चिन्तित थे । उसी समय एक खालिन जो कहीं जा रही थी वहाँ उपस्थित हुई । ज्योतिषी जी ने उससे सघ यातों कह कर इस विषय में सम्मति पूछी । उसने कहा मुहूर्त निकट है, आप किसी प्रकार घर पहुँच नहीं सकते, ऐसे मुहूर्त का निकल जाना, जिसमें एक बड़े विद्वान् के उत्पन्न होने की सम्भावना है उचित नहीं है । मैं यहाँ उपस्थित हूँ । यद्यपि मैं आपके समान धर्म की नहीं हूँ । अतएव यह सम्भव है कि आपके औरस और मेरे गर्भ से उत्पनी यीर्यशाली सन्तति न हो, तथापि यह निश्चित है कि सामान्य की अपेक्षा वह अधिक यीर्यधातु होगा, क्योंकि मुहूर्त का भी तो कुछ बल है । भड़री जी इस बात पर सहमत हुए । उन्हीं से उत्पन्न डकौतिया हैं ।

डग दे० (स्त्री०) चलाया, सम्पी चाल, डेग, पद-विन्यास ।

डगडगाना दे० (क्रि०) हिलना, हिलते डुलते चलना, कम्पित होकर चलना, काँपते चलना, भलमल करना ।

डगना दे० (क्रि०) हिलना, चञ्चल होना, स्थिर नहीं रहना, फिसल जाना, काँपना, कम्पित होना, डिगना ।

डगमग दे० (गु०) चञ्चल, अस्थिर, काँपने वाला, स्थिर न रहने वाला, चलायमान, डौंदाहोल ।

डगमगाना दे० (क्रि०) चञ्चल होना, डौंदाहोल होना, काँपना ।

डगमगानि दे० (स्त्री०) चञ्चल हुई, डगमग हुई, डौंदाहोल हुई ।

डगर दे० (स्त्री०) मार्ग, रास्ता, राह, पथ, पद्वि, पैड़ा, यथा—“प्रेमनगर की डगर कठिन है न रंगरेज सयाना ।”

डगरना दे० (क्रि०) हिलना, फिरना, फिसल जाना, ढालवी भूमि से लुढ़क जाना, रास्ते भ्रमना ।

डगरा दे० (पु०) बाँस का बना हुआ बर्तन के गोल और छिन्ना होता है । छीटा, छीतल, छीतनी ।

डगरिया दे० (पु०) डगर, रास्ता, राह, मार्ग, पथ यथा—“कहाँ गये मनमोहन ययाम, डगरिया हूँ न पड़ी”—(मुर०)

डग्गा दे० (पु०) दुर्बल घोड़ा, अस्थिरघुरावर्ति घोड़ा, हड़ोला घोड़ा ।

डगी दे० (गु०) हिलै, खसकै, टसकै, कम्पित हो, चलायमान हो ।

डङ्क दे० (पु०) चमक, बिचकू का काँटा जो जहरीला होता है, विषैला काँटा।—मारना (क्रि०) बिचकू का काटना ।

डङ्का दे० (पु०) बाद्यविशेष, हुन्दुभि यात्रा, नगाणा धौंसा, नगाड़ा, युद्धयात्रा विद्याहायात्रा आदि यह बजाया जाता है ।

डङ्किनी दे० (स्त्री०) डाकिन, भूत प्रेत की जानने वाली स्त्री ।

डङ्कियाना दे० (क्रि०) डङ्क से मारना, डङ्क से करना, डङ्क मारना, जहरीला काँटा घुसाना ।

डङ्गीला दे० (गु०) डङ्काला, जहरीले वाला ।

डटना दे० (क्रि०) उद्यत रहना, तैयार रहना, प्रस्तुत रहना, धमना, रुकना, जमजाना, प्रस्तुत होकर खड़ा रहना ।

डट्टिया दे० (गु०) डटने वाला, उद्यत, प्रस्तुत ।

डट्टा दे० (गु०) दट्टा, टेपी, ठेंठी, डाट, रुकावट, शोथन आदि का मुँह बन्द करने की वस्तु ।

डठा दे० (गु०) बाँधी भेंठी, दपड़ी, हाँड, चन्न या फल आदि का हाँड, जिस लकड़ी के सहारे से वृक्ष में लगे रहते हैं ।

डढ़मुण्डा दे० (गु०) दाढ़ी रहित, जिसकी दाढ़ी मुँह दी गयी हो ।

डड़ियल दे० (गु०) दाढ़ी वाला, लम्बी दाढ़ी वाला ।

डडुआ } दे० (गु०) जला हुआ, दग्ध, भस्मीभूत,  
डडुई, } तेल विशेष जो जला के निकाला जाता है,  
याताल धन्त्र में निकाला हुआ तेल ।

डपड तद्द० (गु०) दपड, अपराध का प्रायश्चित्त, अपराधी को उसके अपराध की गुफता और क्षुत्ता के अनुसार सजा देना, जिसके अर्थदपड, शरीरदपड आदि कई भेद हैं । व्यायामविशेष, एक प्रकार की कसरत, जिसमें दोनों हाथ और पैरों के बल पर शरीर का सञ्चालन किया जाता है । दपडपेल, खड़ी, लकड़ी ।

डपडवत् तद्द० (गु०) दण्डवत्, दपड के समान समस्त अङ्गों से गिरना, भूमिष्ठ होकर प्रणाम करना, घटाङ्ग प्रणाम करना ।

डपडा तद्द० (गु०) दपड, दपडा. लठ, लाठी, मोंटा, पताफा की लकड़ी, भण्डे की लकड़ी ।

डपिड्या दे० (गु०) खी का वस्त्र विशेष, खियों के थोड़ने का कपड़ा, दुपट्टा, थोड़नी, बाजार का फाँ उगाहने वाला ।

डपडी तद्द० (स्त्री०) बेंट, हंडा, कुलहाड़ी, फरसा आदि अर्धों में लगायी हुई लकड़ी पकड़ने की लकड़ी । काष्ठविशेष, जो तराजू के पल्लुओं में लगाया जाता है । (गु०) दपडी संन्यासी जो दपड धारण करते हैं । पपदपडी, चिन्ह, पदचिन्ह, गुप्त मार्ग, चोर गली ।

डपडीर दे० (स्त्री०) धारी, रेखा, चिन्ह, लकीर, लीक ।

डपटना दे० (क्रि०) पुकारना, हाँटना, दबाना, कड़े शब्दों में तिरस्कार करना, सुधारने के लिये हाँट बताना ।

डफ दे० (गु०) लज्जरी, एक प्रकार के बाजे का नाम ।

डफारना दे० (क्रि०) कूक मारना, चीख मारना, विलाप करना, गिलखना, भयानक कष्ट से रोना ।

डफाली दे० (गु०) डफ बनाने वाला, लज्जरी पर चमड़ा चढ़ाने वाला, चीक, डफ बजा कर भीख माँगने वाला, एक प्रकार का मुसल्मान फुकीर ।

डय दे० (गु०) बल, सामर्थ्य, शक्ति, पराक्रम, जेय, पतला चमड़ा जो कुप्पा आदि बनाने के काम आता है ।

डयकना दे० (क्रि०) चमत्कार होना, शोभित होना, जगमगाना, चमकना ।

डयका दे० (गु०) ताजा, कुए का टटका जल । (गु०) मोटा, स्थूल ।

डयगर दे० (गु०) चर्मकार, मोची, चमड़े को साफ करने वाला, चमड़ा कमाने वाला ।

डयडवाना दे० (क्रि०) धौंख भर खाना, धौंख खाना, कपट रुक जाना, अधिक हर्ष या शोक से शब्द न निकलना ।

डयरा दे० (गु०) सीसी भूमि, पञ्जिल भूमि, लिवाड़, छपरी, गन्दे जल का छोटा तालाब, गड़हा, गँवई का यह छोटा तालाब, जिसमें भैंस या मुथर बैठ कर पानी गन्दा कर देते हैं ।

डयरिया दे० (गु०) लतरहत्या, धायँ हाथ, धायँ हाथ से काम करना ।

डवस दे० (गु०) रक्षण, चिन्ता, व्यवस्था, तैयारी, जलवात्रा के उपयुक्त वस्तुओं का भाण्डार, समुद्र यात्रा के उपयोगी वस्तु ।

डवीना दे० (क्रि०) डुबाना, डोरना, जल में गोता लिसाना, उजाड़ना, नष्ट भ्रष्ट करना, बिगाड़ना ।

डव्या दे० (गु०) बड़ी दिविया, खन्दा, कुप्पा, रेलगाड़ी का खाना ।



डबू, डबुआ दे० (पु०) लोहे या पीतल का कर्झला,  
जिससे दाल आदि परोसी जाती है ।

डमर तत्० (पु०) डर से भागना, भय के कारण  
भागना, राजा को अपने समान अन्य राजा का  
भय, आश्रयकलह ।

डमरुआ दे० (पु०) घुटने की गाँठ ।

डमरु तत्० (पु०) बाद्य विशेष, शिवजी के बजाने  
का बाजा, कापालिक योगियों के बजाने का बाजा,  
चमत्कार, आश्चर्य, अद्भुत ।—मध्य (पु०) दो  
द्वीपों का आपस में जोड़ने वाला, एक प्रकार का  
भूमिखण्डविशेष, वह भूमि जिससे दो टापू आपस  
में मिले रहते हैं ।

डम्फ दे० (पु०) खजुरी के आकार का एक प्रकार  
का बाजा ।

डयन तत्० (पु०) [ डि + अनट् ] नमोगमन,  
आकाशमार्ग से चलना, उड़ना, उड़कर चलना,  
पत्नी की गति ।

डर तद्० (पु०) डर, भय, घास, भीति, शङ्का,  
आतङ्क ।

डरना तद्० (क्रि०) भय करना, घास पाना, शङ्का  
करना ।

डरपना तद्० (क्रि०) भयलाना, डरना, ब्रह्मा होना ।

डरपोक तद्० (गु०) डरने वाला, भीरु, डरवैया ।

डरपोकना तद्० (गु०) डरनेवाला, भीरु, डरपोक ।

डरवैया तद्० (गु०) भयभीत, भीरु, डरपोक ।

डराऊ तद्० (गु०) डराने वाला, भयङ्कर, भयानक,  
भयावना ।

डराक तद्० (गु०) डरने वाला, भीरु, भीत ।

डराना तद्० (क्रि०) भयदेना, डरवाना, भय दिलाना,  
भीत करना ।

डरालू तद्० (गु०) भीरु, डरपोक ।

डरायना तद्० (गु०) भयदायक, भयानक, भयङ्कर ।

डारी दे० (स्त्री०) मांस के छोटे छोटे टुकड़े, मांस-  
पिण्ड ।

डारीला दे० (गु०) मांस-पिण्डवाला, मांस की  
बोटिया वाला ।

डारीना दे० (गु०) डराऊ, डरायना, भयानक ।

डलवा दे० (पु०) टोकरा, दौरा ।

डलवाना दे० (क्रि०) भोंकवाना, गिरवाना, मारना,  
फेंकवाना ।

डला दे० (पु०) डलवा, टोकरा, बड़ा टुकड़ा, हिला,  
खण्ड ।

डलिया दे० (स्त्री०) छोटी टोकरी, बाँस की रानों  
फूज रखने की छोटी टोकरी ।

डली (स्त्री०) टुकड़ा, छोटा टुकड़ा, टुक, खण्ड ।

डस दे० (स्त्री०) तराजू की रस्सी, जिसमें पत्तों  
डंडों में बाँधे जाते हैं । सूत, सूत की डोरी ।

डसना दे० (क्रि०) डङ्क मारना, छेदना, काटना,  
पतली धार वाली चोड़ा से काटना, घोंपना  
काटना, डङ्कियाना, चुभाना, गढ़ाना ।

डसीना दे० (पु०) डसाने की वस्तु, विशेष,  
विस्तार, विस्तरा ।

डहक दे० (पु०) गुफा, कन्दरा, खोह, बिपने की  
जगह ।

डहकना दे० (क्रि०) डहकना, लालच करना, बिप  
खना, निराशा से दुःखित होना, बिगड़ना ।

डहकाना दे० (क्रि०) निराश करना, निरा  
लौटना, घियाडना, धोखा देना, ठगना, उतारना ।

डहडहा दे० (गु०) लहलहा, प्रफुल्ल, खिलना प्रफुल्लित ।

डहडहाना दे० (क्रि०) खिलना, विकसन, वि  
सित होना, खिल जाना, प्रफुल्ल होना ।

डहर दे० (स्त्री०) डगर, मार्ग, रास्ता, राह, पथ ।

डहरिया दे० (स्त्री०) डहर, डगर, मार्ग ।

डहक दे० (पु०) तोखा, तोहड़, जगजगा, डङ्क मि  
आदि का ।

डहंग दे० (स्त्री०) लाठी, पर्वत के ऊपर की श्रृं  
शिखर ।

डहंगर दे० (पु०) पशु, बलहीन पशु, दुर्बल प  
सूली की पत्नी ।

डहंट डपट दे० (स्त्री०) निरस्कार, अपराधी  
सावधान करने के लिये निरस्कार ।

डहंटना दे० (क्रि०) ताड़ना, दवाना, घुड़क  
भर्त्सन करना ।

डॉडल दे० (पु०) दण्डी, डण्डी, डॉटो ।  
 डॉडी दे० (खी०) डपटा, डाली, डॉठ, डण्डी ।  
 डॉड़ दे० (पु०) दण्ड, बदला, अपराधी को सज़ा, पाग़दण्ड, धिग़दण्ड, धर्य दण्ड, शरीर दण्ड, समान दण्ड आदि इसके भेद हैं । नाथ चलाने वाली बौध को बज़ी, डॉड़ा, रीड़, पीठ की हड्डी, लकड़ी, लाठी, लट्ट ।—भरना (क्रि०) जुमाना देना, दण्ड देना ।—लेना (क्रि०) जुमाना बमूल करना ।  
 डॉड़ना दे० (क्रि०) घदसा लेना, सज़ा करना, दण्ड देना, शास्ति देना ।  
 डॉड़ा दे० (पु०) मंड, सिवाना, सीमा, किमी देश ग्राम आदि की अवधि, खेत की सीमा ।  
 डॉड़ी दे० (खी०) कर्णधार, खेपैया, नाथ चलाने वाला, मॉंभी ।  
 डामाडोल दे० (पु०) अनिश्चित, अत्यवस्थित, अधर से अधर ।  
 डौवर दे० (पु०) बाघ का बच्चा, बच्चा जो बहुत बढ़ा न हो ।  
 डौस दे० (पु०) डौस, मक्खी, मच्छर, बड़ो मक्खी ।  
 डाक दे० (पु०) आह्वान, शब्द, चौकार, चीख, हॉक, टप्पा, घोड़े आदि के बदलने या विश्राम का स्थान, चौकी । (खी०) चिट्ठी पत्री आदि की शीघ्र भेजने का उपाय, सततवमन, उग्र गन्ध ।  
 —खाना, घर (पु०) पत्रादि के आने जाने का दफ़्तर ।  
 डाकना दे० (क्रि०) पुकारना, आह्वान करना, वमन करना, शोकाना, उग्र गन्ध देना ।  
 डाका दे० (पु०) बलात्कार से अपहरण, ज़बरदस्ती खीन लेना, चोरों का धावा, छाप, आक्रमण ।  
 —पड़ना (क्रि०) छुट जाना, डाके से चोरी हो जाना, बलात्कार से अपहरण हो जाना, छाप पड़ना ।—डालना (क्रि०) रास्ते चलते हुए का मास बलात्कार से खीन लेना, बलपूर्वक आक्रमण करना ।—देना (क्रि०) नूटना, खीनना, हस्तगत कर लेना ।

डाकिन, डाकिनी दे० (खी०) डायन, चुड़ैल, प्रेतिनी, जन्तार मन्तार जानने वाली स्त्री, योगिनी ।  
 डाकिया दे० (पु०) डाकू, डाका डालने वाला, डाक लेनाने वाला, पियन, पोस्टमैन, चिट्ठीरसो ।  
 डाकी दे० (पु०) खाक, पेड़, बहुत खाने वाला, श्रौतिक, शक्ति से अधिक काम करने वाला ।  
 डाकू दे० (पु०) डकैत, बलात्कार पूर्वक अपहरण करने वाला, दस्यु, साहसी, चोर, बटमार, चुटेरा ।  
 डाट दे० (खी०) पुड़की, धमकी, तिरस्कार, भर्त्सन, अनादरसूचक शब्दों का प्रयोग, किड़की, डपट ।  
 डाटना दे० (क्रि०) धमकाना, पुड़कना, किड़कना, डपटना ।  
 डाढ़ दे० (खी०) दाँत, चौ, पिहले बड़े दाँत जिनसे भोजन पीसा और चबाया जाता है ।  
 डाढ़ी दे० (खी०) दाढ़ी, डाढ़ का दूसरा भाग, ठुड़ी, गालों पर के बाल ।  
 डाय दे० (पु०) नारियल का कच्चा फल । परतला, जिसमें तलवार लटकवायी जाती है । डाम, दर्भ, कुय ।  
 डायर दे० (पु०) पात्र विशेष जिसमें हाथ धोया जाता है, चिलमची, गड़हा, गोल तालाब । (पु०) गन्दला, मैला, कलुषित, भावर ।  
 डाम तद्द० (पु०) दर्भ, डाव, कुशा, दाघ, जङ्गल, वन, कानन ।  
 डामर तद्द० (पु०) शिथोक शास्त्रविशेष, तन्त्रभेद, समान राष्ट्र का भय, परचक्रभय, धूना, रास, सर्जरस ।  
 डायन दे० (खी०) डाकिन, चुड़ैल ।  
 डायरी दे० (खी०) दिनचर्या, दैनिक व्यवहार लिपिना, रोज़नामचा ।  
 डार दे० (खी०) शाफ़ा, साख, डास, डाली, पॉत, पंक्ति, सीधी रेखा, कृता ।—की डार (घा०) मुँड का मुँड, दल का दल, पंक्ति की पंक्ति । टोली, जल्पा, समूह ।  
 डारना दे० (क्रि०) डालना, लगाना, जेंकना, पहनाना, उड़ाना, उभरण ।

डारिय तद्० ( पु० ) दाड़िम, अनार, अनार का फल ।

डाल दे० ( स्त्री० ) शाखा, टहनी, डाली ।

डालना दे० ( क्रि० ) डारना, लगाना, फेंकना ।

डाला दे० ( पु० ) डोला, यड़ी डाली, दीरा, यड़ी रलिया ।

डालिय तद्० ( पु० ) दाड़िम, अनार का फल ।

डाली दे० ( स्त्री० ) भेंट, उपहार, फल आदि उपहार में भेजना, फलों की टोकरी, शाखा, फूल रखने का पात्र, जो प्रायः बाँस का बनता है ।

डासन दे० ( पु० ) बिल्लीना, दसौना ।

डासना दे० ( क्रि० ) बिल्लाना, बिस्तर बिछाना, बिल्लीना करना ।

डासी दे० ( स्त्री० ) थिठार हुई ।

डाह तद्० ( स्त्री० ) दाह, वैर, विद्वेष, द्रोह, लाग, अनयन, गाँठ ।

डाहना तद्० ( क्रि० ) वैर करना, डाह रखना, दुःख देना, धी पिचलाना, धातु पिचलाना ।

डाही तद्० ( पु० ) द्रोही, दाही, ईर्षी, क्रोधी, मन्दाग्नि रोगी ।

डिगना दे० ( क्रि० ) हिलना, डगमगाना, अस्थिर होना, प्रतिज्ञाभ्रष्ट होना, शर्त से बदल जाना, हटना, धरधराना, काँपना ।

डिगाना दे० ( क्रि० ) हिलाना, काँपना, चलायमान करना, प्रतिज्ञाभ्रष्ट करा देना, विचलित करना ।

डिङ्कर दे० ( पु० ) मोटा, स्फुरल, धूर्त, ठग, धोकायाज्ञ, दास, सेवक, नौकर ।

डिठियारा तद्० ( पु० ) दृष्टिवाञ्छ, आँखवाला, दृष्टि, शक्तिपुष्प ।

डिण्डिम तद्० ( पु० ) डुगडुगी, डुग्गी, टिंदोरा ।

डिण्डिर तद्० ( पु० ) समुद्र का केन, समुद्र की आग ।

डिबिया दे० ( स्त्री ) दक्कनदार फाट का एक प्रकार का गोल पात्र, डड्या, डिब्यी ।

डिब्या दे० ( पु० ) यड़ी डिबिया ।

डिब्यी दे० ( स्त्री० ) डिबिया, टोटा रखने का पात्र ।

डिम्भ तद्० ( पु० ) संग्राम, पाखण्ड, दम्भी, पूर्ण, प्रलय ।

डिम्भी तद्० ( पु० ) पाखण्डों, दम्भी ।

डिम्भ तद्० ( पु० ) संग्राम, प्रलय ।

डिम्ब्य तद्० ( पु० ) पाखण्ड, भय, त्रास, सुदृश, विना हथियार की लड़ाई, अथवा मुषडा, कुसुप ।

डिम्बक तद्० ( पु० ) शाण्व नगर के राजा ब्रह्मरत्न का पुत्र, इसके सौतेले भाई का नाम था हंवा ।

महादेव ने इसको अथथ्य बनाया था, देवन अमुर दानव गन्धर्व आदि फोर्ड इसको मार नहीं सकता था । विरूपाक्ष और कुपडोदर नामक दो

महादेव के गण इसकी रक्षा के लिये सर्वदा इसके पास रहा करते थे । इन लोगों ने एक बार दुर्वास

ऋषि को यड़ा तद्ग किया, उनके दण्ड कमरडु आदि तोड़ फोड़ दिये । दुर्वास ने अपने तिरस्कार

का हाल श्रीकृष्ण से कहा, श्रीकृष्ण हंस और डिम्बक के साथ युद्ध करने के लिये उद्यत हुए ।

श्रीकृष्ण हंस के साथ युद्ध करते करते उसकी बर्षा दूर तक भगा ले गये, डिम्बक सात्पकि से युद्ध

करता था । डिम्बक ने समझा श्रीकृष्ण द्वारा हंस मारा गया, ऐसा समझ कर वह धमुना में पुन

गया, अपनी जिह्वा उखाड़ कर उसने आत्महत्या कर ली । कहते हैं आत्म-हत्या के पाप से डिम्बक

को बहुत दिनों तक नरकवास का दुःख भोगना पड़ा ।

डिम्बिका तद्० ( स्त्री० ) कामिनी, कामुकी, जल बिम्ब, वृक्षविशेष ।

डिम्भ तद्० ( पु० ) [ डिम्भ + चत् ] शिशु, बालक, मूर्ख, अनारी, अज्ञान, डिम्ब, अपह, पशुशासक

थण्डा ।—चक्र ( पु० ) मनुष्यों का शुभागुण वर्तमान वाला एक प्रकार का चक्र ।—ज ( पु० ) अपहर्ष

द्विज, द्विजन्मा पत्नी, चिड़िया, शकुन्त ।

डिम्भक तद्० ( पु० ) बालक, शिशु ।

डिम्भा तद्० ( स्त्री० ) बच्चा, गदला, अतिथिपुत्र, दुधमुँहा बच्चा ।

डोंग दे० ( पु० ) यड़ाई, अहङ्कार, दर्प, अमिमान, गर्व ।—मारना ( क्रि० ) चमण्ड करना, यड़ा

हौकना, धपनी बड़ाईं आप करना, स्वयं धपनी प्रशंसा करना ।—हौकना (क्रि०) डोंग मारना, धमिमान करना, धपनी प्रशंसा करना ।

डीठ तद्० (स्त्री०) दृष्टि, दर्शन, धौंल, नेत्र, नयन ।

—धन्दी (वा०) इन्द्रजाल से देखने की शक्ति को नष्ट कर देना, नज़रबन्दी, माया, इन्द्रजाल, नटविद्या ।

डीठना तद्० (क्रि०) देखना, दर्शन करना, ताफना ।

डीठि तद्० (स्त्री०) दृष्टि, डीठ, दर्शन ।

डीठियारा तद्० (गु०) दृष्टिवाद्, अच्छी धौल, वाला, देखने वाला, ताकने वाला, दर्शक, टरुटकिया ।

डीन तद्० (गु०) [ डी + क ] पत्नी का गमन, आकाश पथ में विचरण, उड़ना, आगमशास्त्र-विशेष ।

डील दे० (गु०) आकार, आकृति, काय, शरीर, देह, टीस, मट्टी का ऊँचा इड ।

डीला दे० (गु०) डेला, मिट्टी का टुकड़ा ।

डीह दे० (गु०) यास, धमति, यास-स्थान, यह स्थान जहाँ गाय आदि बसते हैं ।—पड़ना (क्रि०)

खँटहर हो जाना, ऊजड़ होना, ऊजाड़ हो जाना ।

डीहा दे० (गु०) टाला, मट्टी का पहाड़ ।

डीक दे० (गु०) मुक्का पूसा, मार ।

डीकरवा दे० (गु०) वृद्ध, बूढ़ा, पुराना, जोर्ण ।

डीकरिया दे० (स्त्री०) वृद्धा, बुढ़िया, वृद्धा स्त्री ।

डीडुगाना दे० (क्रि०) डुग डुग करना, डड्का बजाना, डड्का पोटना ।

डीगी दे० (स्त्री०) तबला, वाद्यविशेष ।

डीडु, डुपडुभ तद्० (गु०) सर्पविशेष, जल का सर्प ।

डीकी दे० (स्त्री०) बुढ़की, गोता, धमगाहन ।

डीमाना दे० (क्रि०) बुड़ाना, घोरना, गोता खिलाना,

डुबाना, नष्ट भ्रष्ट कर देना, उजाड़ना ।

डीपाव दे० (गु०) धमगाह जल, अधिक जल, धमगाह जल, डुबने योग्य जल ।

डीपोना दे० (क्रि०) डुबाना, घोरना, बुड़ाना ।

डीर तद्० (गु०) उदुम्बर, गुलरं का वृक्ष, फल ।

डुरियाना दे० (क्रि०) चलना, फिराना, रस्ती में बाँध कर घुमाना, बागडोर पर छोड़े की लेशलना ।

डुलना दे० (क्रि०) हिलाना, चलना, कँपना, कम्पित होना, झूलना, झूले पर झूलना ।

डुलाना दे० (क्रि०) हिलाना, झुलाना, भगवाड् को हिरहोले पर झुलाना, कँपाना ।

डुंगर दे० (गु०) पहाड़, पहाड़ी, वृक्ष, छोटी पहाड़ी । यथा:—

“रगही में सब खोदि यहाँ,

डुंगर को घर नाम मिटावें ।

—ब्रजविलास ।

डुय दे० (गु०) डुबकी, गोता, बुड़की ।

डुयना दे० (क्रि०) धमगाहन करना, मग्न होना,

डुबकी लगाना, डुबना, जलमग्न होना, धस्तमित

होना, घुर्पास्त होना, झिप जाना, नष्ट होना,

धिगड़ जाना, नष्ट भ्रष्ट होना, लोन होना, ध्यान-

मग्न होना, लौ लग जाना, धत्यन्त आसक्त हो

जाना, विषय होना, मूर्च्छित होना ।

डुया दे० (गु०) बूड़ा हुआ, जल मग्न हुआ । (गु०)

जल का अधिक घाना, बाढ़ ।

डेग दे० (गु०) फलांस, चलावा, पद, पग, एक पैर रखने और दूसरे पैर रखने के बीच की धूमि ।

डेड़ दे० (गु०) एक और आधा, आधा मिला हुआ एक, १½ ।—गत (स्त्री०) एक प्रकार का नाच ।

—पाव (गु०) एक पाव और आधा पाव, छः

छटाँक ।—पवा (गु०) बाँट, जो डेड़ पाव का

हो, डेड़ पाव की तील ।

डेना दे० (गु०) परखना ।

डेरा दे० (गु०) विदेश का यास-स्थान, कुछ दिनों रहने का स्थान, घर, तम्बू, पटमण्डप, कपड़े का मकान ।

डेला, डेला दे० (गु०) डेला, लौंदा, टुकड़ा ।

डेवड़ा दे० (गु०) डेड़गुना, एक और आधा गुना, साह्यगुणित ।

डेवढी दे० (स्त्री०) दरवाज़ा, सदर दरवाज़ा, फाटक, द्वार ।

- डेउड़ दे० (स्त्री०) बन्दूक की धाड़ ।
- डेउड़ी दे० (स्त्री०) डेवड़ी, दरवाजा, द्वार, धोसारा ।
- डैन तद्द० (पु०) डपन, उड़ने का साधन, पङ्क, पङ्क, पाख, त्रिङ्गियों के पर ।
- डैना दे० (पु०) डाल, शाखा, टहनी ।
- डौई दे० (स्त्री०) काठ की फलछी ।
- डोंगर दे० (पु०) डूंगर, पर्यत, टीला ।
- डोंगा दे० (पु०) नावविशेष, छोटी नाव, कठरा, उडुप ।
- डोंगी दे० (स्त्री०) अति छोटी नाव, फलछी ।
- डोंड़ी दे० (स्त्री०) डिंदोरा, डुगडुगी, मनादो ।  
—फिराना (क्रि०) एक प्रकार के गाजे के सहारे से किसी बात को प्रकाशित कराना, राजकीय आज्ञाको प्रचारित करना ।
- डौर, डौरा दे० (पु०) सर्पविशेष, दो मुँहा साँप ।
- डोकना दे० (क्रि०) ओकना, यमन करना, उलटी करना, उबकाई आना ।
- डोकरा दे० (पु०) वृद्ध, जठ, जीर्ण, बुद्धा, झुड़ा, ।  
—डोकरी (स्त्री०) वृद्धा, बुढ़िया, डुकरिया ।
- डोय दे० (पु०) डूब, डुबकी, बुढ़की, गोता, रङ्गना ।  
—देना (क्रि०) रङ्ग देना, रङ्गवटाना, गोता देना ।
- डोषा दे० (पु०) ताल, तालाब, सर, पोखरा, सरोवर, झर्रा ।
- डोम, डोमड़ा दे० (पु०) जातिविशेष, अन्त्यज जाति, जो मूष आदि बनाने का रोजगार करते हैं ।—डोमनी ( स्त्री० ) डोम की स्त्री “मुसलमान जाति के लोग जिनकी स्त्रियाँ केवल स्त्रियाँ ही के सामने जाती और नाचती हैं और मर्द गधिये और बजिनिये होते हैं” (श्रीधर) ।
- डोर दे० (स्त्री०) रस्सी, जंवर, सुतली, कूप से पानी निकालने की रस्सी ।
- डोरफ तद्द० (पु०) डोर, सूत, सूत्र, गण्डा, रत्तासूत्र ।
- डोरा दे० (पु०) सूत, सूत्र, सीने का सूत, धागा, लोक, लकीर, रेखा, तलवार की धार, शौख की धार, शौखों में जो लाल रङ्ग की लकीर सी होती है ।

- डेरिया दे० (पु०) एक प्रकार का कपड़ा ।
- डेरी दे० (स्त्री०) सुतरी, रस्सी, डोर, पानी निकालने की रस्सी ।
- डोल दे० (पु०) उदञ्चन, पानी निकालने का पात्र जो सोहा या घमड़े का बनता है ।
- डोलची दे० (स्त्री०) छोटा डोल, कपड़े का बना छोटा डोल ।
- डोल डोल दे० (पु०) भ्रमणकारी, फिरैया ।
- डोलना दे० (क्रि०) डोलना, झुलना, हिलना, हलना, फिरना, भटकना ।
- डोला दे० (पु०) एक प्रकार की पालकी जिस पर स्त्रियाँ चढ़ती हैं ।—देना (क्रि०) सामान्य कुल से स्त्री का विवाह के लिये उच्चकुल के घराने में जाना, अविवाहिता लड़की को विवाहार्थ भेजना, शूद्र आदि जातियों का अपनी विधवा पुत्री को दूसरे पति के यहाँ भेजना, लड़की ब्याह देना, विवाहार्थ अपनी लड़की या यहिन और राजा को समर्पित करना, मुसलमानों का दाराह के समय में राजपूताने के कतिपय पेट्ट कुलकण्ड राजाओं ने अपनी यहिन और बेटियों का डोला मुसलमानों को दिया था, इस वस्तु के अस्तित्व आभार के राजा भगवानदास और मानसिंह थे ।
- डोली दे० (स्त्री०) पालकीविशेष, जो स्त्रियों के चढ़ने के लिये है, चौपाला, स्त्रियों की पालकी ।
- डोंगा दे० (पु०) मञ्ज, मचान, ऊँचा आसन, गरगज ।
- डोंड़ी दे० (स्त्री०) डोंड़ी, मनादी, डिंदोरा ।
- डौड़ी दे० (स्त्री०) डेवड़ी, द्वार, दरवाजा, उधारा । (पु०) डेड़गुना, उच्चस्वर से गाना ।
- डौल दे० (पु०) प्रकार, रीति, दङ्ग, दब, झोंत, तरह, भौंति ।
- ड्यौड़ा, दे० (पु०) डेवडा, डेड़गुना ।
- ड्यौड़ी दे० (स्त्री०) डेवड़ी, डौड़ी, द्वार, दरवाजा, फाटक ।—द्वार (पु०) द्वार की रखा करने वाला, दरवान, द्वारपाल, प्रतिहार, द्वारपालक ।

## द

व्यञ्जन का चोदहर्षो वर्ण है, वह भी सुदृन्त्य है, क्योंकि इसका उच्चारण ङर्त्त से होता है।

तन्० ( पु० ) बड़ा ढोल, धरनि, नाद, गम्भीर शब्द।

दिना दे० ( क्रि० ) प्राधापयेशन से कुड़ पाना, धरना देकर न्योता पाना, किनो प्रकार का भय दिखाना करना कार्य सिद्ध करना।

द दे० ( पु० ) तोल विशेष, तौलने का मान, बटखरा, बॉट, पत्थर या लोहे का गोला जिससे तोला जाता है।

दना दे० ( क्रि० ) दपना, छिपना, चुकाना, गुप्त करना, तोपना ( पु० ) दौरे की वस्तु, शराब।

दनी दे० ( स्त्री० ) छोटा दकना, दकने के लिये छोटा वस्तु।

दतत ( पु० ) द अक्षर, द वर्ण, ट वर्ण का चौथा वर्ण, व्यञ्जन का चौदहवाँ अक्षर। ( स्त्री० ) दकार, उद्गार, एक प्रकार का शब्द जो भोजन के बाद तृप्ति को सूचना करता है।

देल दे० ( पु० ) धक्का, टेल, रेल, येल।

देलना ( क्रि० ) टेलना, धक्का देना, रेलना घेनना।

देल दे० ( पु० ) धक्का देने वाला, टेलने वाला, टेलने वाला, हटाने वाला, भगाने वाला।

दन दे० ( पु० ) दकना, दपना, चुकावन, छिपावन।

दतन्० ( पु० ) [दक + तन्] वाद्य विशेष, पटह, तगरा, भेरी, दुन्दुभी, डमरू।—री ( स्त्री० ) देरी विशेष, दुर्गा का एक नाम।

द दे० ( पु० ) रीति, प्रकार, प्रथा, लक्षण, चालचलन, रहन सहन।

दया दे० ( स्त्री० ) दृष्टी, बागडोर, छोड़े की एक प्रकार की लगाम।

द दे० ( पु० ) देवी, देवी, रोक, बजरी आदि अर्थों की देवी।

दौमा दे० ( पु० ) एक प्रकार का भयानक कोषा, जहूली कोषा।

दडवा दे० ( पु० ) पत्नी-विशेष, एक प्रकार की विद्विया जो मैत्र की जाती की होती है।

दँदोरना दे० ( क्रि० ) खोजना, ढूँढना, पता लगाना, जल में भूली हुई वस्तु को ढूँढना।

दँदोरा दे० ( पु० ) दिंदोरा, दँडी, दुग्दुगी, धागे के साथ राजाज्रा सुताना।

दँदोरिया दे० ( पु० ) दँदोरा फैरने वाला।

दनमनाना दे० ( क्रि० ) गिर पड़ना, किसल जाना, बूक जाना, सुड़कना।

दनमनी दे० ( स्त्री० ) दुककी, सुड़क गयी, गिर पड़ी, किसल गयी।

दपदपाना दे० ( क्रि० ) ढोल बजाना, ढोलक पंढना, बिना ताल के ढोलक बजाना।

दपना दे० ( क्रि० ) दकना, छिपना, चुकना, छपने को छिपाना। ( पु० ) दकना, दकने की वस्तु।

दथ दे० ( पु० ) दौल, धाकार, धाकृति, डीलडौल, गहन, गठन।

दथरा दे० ( पु० ) कलुष, आधिल, गंदला, मैला, मलीन, मिट्टी मिला हुआ जल।

दथोला दे० ( पु० ) दयदार, सुदौल, सजीला, रूपशाली।

दथुमा दे० ( पु० ) पैसा, तथि का सिक्का।

दथलाना दे० ( क्रि० ) दगरना, सुड़कना, पड़ना, गिरना, किसलना।

दथक दे० ( स्त्री० ) दास, सुड़गाव, नोवे की ओर भुकी हुई भूमि।

दथरी दे० ( स्त्री० ) दनो, सुड़की, पिचली, ओर धा गयी, प्रसन्न हुई, धनुरस्त हुई।

दथलक दे० ( स्त्री० ) दथक, दहाव, दास, सुड़कन, किसलन।

दथलकना दे० ( क्रि० ) दथक कर जाना, पानी आदि द्रव पदार्थों का गिर जाना, सुड़कना, पड़ना, गिरना।

दलका दे० ( गु० ) चुन्धना, चौंधना, भुका, छलका ।

दलकाना दे० ( क्रि० ) गिराना, चुदकाना, चौंधा कर गिराना, उलट कर गिराना, चौंधा करना ।

दलना दे० ( क्रि० ) गिरना, फिसलना, घीटना, घीत जाना, ध्वसीत होना, भलकना, डगरना, भुकना, भर जाना, सौंचे में पिचले धातुओं को भरना, दलकना ।

दलती फिरती छौंव दे० ( या० ) सांसारिक पदार्थों का परिधर्तन, पदार्थों की अनित्यता, कैयदल, अस्थिरता ।

दलमलाना दे० ( क्रि० ) चञ्चल होना, डगमगाना, अस्थिर होना, कौंपना, कम्पित होना ।

दलाना दे० ( क्रि० ) सौंचे से बनाना, सौंचे में डालना ।

दलुवा दे० ( गु० ) उतार, नीचा, लुडकाय, डालू ।

दलैत दे० ( गु० ) वीर, अछधारी, योद्धा, दाल तलवार सौंधने वाला, साहसी योद्धा ।

दवाना दे० ( क्रि० ) दहाना, गिरवाना, पड़वाना, हुड़वाना ।

दहना दे० ( क्रि० ) गिरना, पड़ना, गिर पड़ना, पतित होना, टूट जाना, टूट कर गिर पड़ना ।

दहाए दे० ( क्रि० ) गिराए, गिरादिये, हुड़काए ।

दहावहिं दे० ( क्रि० ) गिरवाते हैं, हुड़वाते हैं, उजड़वाते हैं ।

दाई दे० ( गु० ) अड़ाई, दो और आधा, सार्द्धद्वय, आधा और दुगुना, २½ ।

दाँकना दे० ( क्रि० ) छिपाना, दापना, छिपाना, लुकाना ।

दाँग दे० ( स्त्री० ) कन्धला, गिखर, गृह्ण, पहाड़ की चौटी, पर्यंत या ऊपरी भाग ।

दाँचा दे० ( गु० ) ठाँठ, सौंचा, घर, डौल, बनाये जाने वाले का प्रथम रूपसङ्कठन, प्राक्-रूपनिर्माण, अधवनी वस्तु, खाट का घेरा ।

दाँपना दे० ( क्रि० ) दाँकना, छिपाना, लुकाना, लुपाना ।

दाँसना दे० ( क्रि० ) दोष देना, कलङ्क लगाना, अपवाद करना ।

दाँसा दे० ( गु० ) दोष, कलङ्क, अपवाद ।

दाक दे० ( स्त्री० ) पलाय वृत्त, श्रौक का पेड़, प्रभाव, तेज, प्रताप, एक प्रकार का वाजा जो सौंचे के थिय उतारने के काम आता है ।

दाटा दे० ( गु० ) एक प्रकार का कपड़ा, जो दाईं सौंधने के काम में आता है । एक प्रकार की बरी पगड़ी जो राजपूताने के सन्निय सौंधते हैं ।

दाठी दे० ( स्त्री० ) घोड़े का मुँह सौंधने का रस्सी, कसन, मुँहबन्धना, घोड़े के मुँहपर बाँधा जाने वाला 'रौंदा' ।

दाढस तद्द० ( गु० ) दाढ्य, दृढ़ता, स्थिरता, मानसिक दृढ़ता, भरोसा, साहस, धीरता, धैर्य ।

—देना ( क्रि० ) भरोसा देना, धैर्य देना ।

—सौंधना ( क्रि० ) धैर्य रखने का उपदेश देना, साहस देना, धीरज देना, दृढ़ता देना, दृढ़ होने के लिये उपदेश देना । शान्ति धराना ।

दाढिन दे० ( स्त्री० ) दाढ़ी की स्त्री ।

दाढी दे० ( गु० ) जाति विशेष, गाने बजाने के व्यवसाय करने वाली जाति ।—लीला ( स्त्री० ), एक खेल, भगवान् कृष्ण की बाल लीला के अभिनय ।

दान दे० ( गु० ) घेरा, बेड़ा, बाड़ा, हाता ।

दाना दे० ( क्रि० ) दाहना, गिराना, उजाड़ना ।

दावर दे० ( गु० ) गहरा, गँदला, मैला, मलिन ।

दावा दे० ( गु० ) ओसारा, ओरी, बरखा, ओसती ।

दार दे० ( स्त्री० ) प्रकार, भाँति, भेद, भेय, कर्णधार विशेष ।

दारना दे० ( क्रि० ) डालना, उलटना, सौंधना ।

दारी दे० ( स्त्री० ) दार, डाल, दलकाय, दार दे दारका दी ।

डाल दे० ( गु० ) उतार, दलाय, दलाऊ, भुका ( स्त्री० ) फरी, फलक, चर्म ।

डालना दे० ( क्रि० ) सौंचे में उतारना, बिगाड़ना नीचे गिराना, किसी धातु को पिचला कर सौंचे में उतारना, बहाना, बिगाड़ना ।

गलया दे० ( गु० ) उतराय, उताह, सुदजाय, दला  
हुधा, सौवे से दाल कर निकाला हुधा ।  
गलू दे० ( गु० ) विगाहू, त्रिगाहने वाला, बँडा ।  
ताहति दे० ( क्रि० ) दाहती है, गिराती है, नाश  
करती है ।  
हा दे० ( पु० ) नदी का किनारा, करार, ऊँचा  
करार ।  
हम दे० ( पु० ) समीप, पास, निकट, नगीच ।  
हडाई तहू ( स्त्री० ) चञ्चलता, निर्लज्जता, साहस,  
साहसिकता, धृष्टता ।  
हडिम दे० ( पु० ) टिटिहरी पत्ती, टिट्टिम ।  
डका दे० ( पु० ) गुमड़ा, गिलटो, फोड़े का गढ़ा ।  
हमडिमी दे० ( स्त्री० ) डमरू, खँजरी चादि बाजों  
का शब्द ।  
हल्लड दे० ( पु० ) आलसी, अकर्मण्य, सुस्त,  
शिथिल ।  
हड तहू ( पु० ) शृष्ट, चञ्चल, बेधड़क, निहरी ।  
हडा तहू ( पु० ) शृष्ट, मगरा ।  
हडि दे० ( पु० ) धींताली, धूर्तता, चञ्चलता ।  
हल दे० ( स्त्री० ) आलस, असावधानी, अचेती,  
देरी, विलम्ब, कालक्षेप ।  
हला दे० ( पु० ) मुक्क, छुटा हुधा, शिथिल, आलसी,  
असावधान, अचेत, मन्द, मन्दा ।  
हलाई दे० ( स्त्री० ) शिथिलता, छुटकारा, मुक्क,  
मोचन, विलम्ब, कालक्षेप ।  
हा दे० ( पु० ) टीला, डील, डूँगर, पहाड़, पहाड़ी ।  
हना दे० ( क्रि० ) घुसना, प्रवेश करना, भीतर  
जाना, मिल जाना, शामिल होना, फुकना, थिर  
फुकाना ।  
हकी दे० ( स्त्री० ) ताक, पीछा करना, किसी के चरित्र  
का गुण अनुसन्धान करना ।  
हना दे० ( क्रि० ) नखरे से चलना, नाचना, कबूतर  
की गति ।  
हना दे० ( क्रि० ) डरना, दलना, गिरना, छुड़कना ।  
हलाना दे० ( क्रि० ) उठयाना, गठरी उठयाना,  
गिराना ।

हुलाई दे० ( स्त्री० ) हुलाने की मजूरी, गठरी उठाने  
की मजूरी ।  
हुलाना दे० ( क्रि० ) डराना, दलवाना, गिरवाना,  
छुड़कवाना ।  
हुआ दे० ( पु० ) मेड़, मिट्टी का छोटा बाँध जो बूँचों  
की जड़ में पानी डालने के लिये बनाया जाता है ।  
हुँडडौंड दे० ( क्रि० ) डूँध ताह, खोज, अनुसन्धान,  
टोह ।  
हुँडन दे० ( पु० ) खोज, टोह, सन्धान ।  
हुँडना दे० ( पु० ) खोजना, टोह लगाना, पता  
लगाना ।—हुँडना ( क्रि० ) खोजना, हेरना,  
तलाश करना, प्रयत्नपूर्वक हुँडना ।  
हुँडार दे० ( पु० ) राजपूताने के अन्तर्गत एक प्रान्त-  
विशेष, जयपुर राज्य का प्रान्त ।  
हुँडिया दे० ( पु० ) जैन संन्यासी, जैन धर्म के मिश्रुक ।  
( पु० ) हुँडने वाला, टोह लगाने वाला,  
अनुसन्धानी ।  
हुक दे० ( स्त्री० ) हुक्की, ताक ।  
हुकना दे० ( क्रि० ) घुसना, घँटना, पास आना,  
बन्ध कटना ।  
हुका दे० ( पु० ) पाप, डेस, किसी की ताक में  
छिपना ।  
हुसर दे० ( पु० ) जातिविशेष, धैर्यों की एक  
जाति ।  
हुऊ दे० ( पु० ) तारू, लहर, चीचि ।  
हुक दे० ( पु० ) सारस पत्नी ।  
हुकली दे० ( स्त्री० ) कुर्चा से जल निकालने का एक  
यन्त्र ।  
हुँका दे० ( पु० ) धान चादि का बकला छुटाने  
का यन्त्र ।  
हुँकी दे० ( स्त्री० ) छूटने का यन्त्र ।  
हुँडस दे० ( पु० ) तरकारी-विशेष ।  
हुँडी दे० ( स्त्री० ) पोस्ता का फूल, कर्णसूयण-  
विशेष ।  
हुँडा दे० ( पु० ) गर्भ, सम्प्रोदर, बड़ा पेट, लम्बा  
उदर, संवी नामि, पैरों का मध्य भाग ।



ढेढ दे० (पु०) जातिविशेष, चर्मकार, चमार, चमड़े का काम करने वाला ।

ढेढी दे० (खो०) कान का एक प्रकार का गजना, फलो, फनियाँ ।

ढेर दे० (खो०) राशि, गोना, टाला ।

ढेरा दे० (पु०) भेंगा, रस्सो बैठने की कल, चिन्ह-विशेष ।

ढेरा दे० (खी०) राशि, टाल, थोरु, डेर ।

ढेला दे० (पु०) मिट्टी का टुकड़ा, पिण्डा, लौंदा ।

—चौथ (खो०) भादों शुक्ल का चतुर्थी । इस दिन को रात्रि को अग्निसहित हिन्दू दूधरों के घरों में देना फेंकते हैं और उसके बदले में गाल सुनते हैं । कहा जाता है कि ऐसा करने वाले मनुष्य साल भर फलझी नहीं होते । परन्तु शास्त्रों में देना फेंकना कहीं नहीं लिखा है । किन्तु स्वमन्तक मणि के विषय वाली कथा सुनने को लिखा है । (देखो, जाम्बवहाह, और स्वमन्तक) ।

ढैया दे० (खो०) अढ़ैया, अड़ाई षेर का मान, तोल ।

—टेकर (पु०) जन शून्य, उजाड़, ऊजड़, शून्य, रिक्त ।

ढोआ दे० (पु०) भेंट, उपहार, उत्सवविशेष में आश्रितों का मालिकों को दिया हुआ उपहार ।

ढोड़ दे० (खो०) डेरी, फलो, बीजकोष ।

ढोक दे० (पु०) प्रथम, नमस्कार, अभिवादन । राज-पूताना प्रान्त में प्रणाम नमस्कार के अर्थ में इस शब्द का प्रयोग किया जाता है । दण्डवत् ।

ढोकना दे० (क्रि०) पीना, घूँटना, निगलना, निगल जाना ।

ढोका दे० (पु०) शर्यर का बड़ा टुकड़ा, पाँच की संख्या, आम आदि खरीदने में इसका उपयोग किया जाता है ।

ढोटा दे० (पु०) बालक, छोटा, बाल, पुत्र, सन्तान ।  
—“सुम हो ढोटा नन्द यवा के हम वृषभानु-दुलारी” ।

ढोना दे० (क्रि०) सेजाना, उठा कर सेजाना, उठाना, एक जगह से उठाकर दूसरी जगह रखना ।

ढोर दे० (पु०) गाय, गोरू, पशु, गौ भैंस का पशु ।

ढोरा दे० (पु०) मुनस्मानों का तानिया ।

ढोरी दे० (खो०) दाढ़, ताप, दहक ।

ढोल दे० (पु०) वाद्यविशेष, ढोलक ।

ढोलक दे० (पु०) छोटी ढोल ।

ढोलकिया दे० (पु०) ढोलक बजाने वाला, ढोलक बजाने में निपुण ।

ढोलकी दे० (खो०) छोटी ढोल, ढोलक, जिसे बजाने वालों को खियाँ बजाती हैं ।

ढोलन दे० (पु०) प्रियतम, रसिक, रसिया ।

ढोलना दे० (पु०) एक प्रकार का वाद्य जो दोन समान होता है ।

ढोला दे० (पु०) छोररा, बालक, रागविशेष । प्राचीन गृह्यार का एक प्रसिद्ध प्रेमो, दोता म की कथा उस समाज में प्रसिद्ध है । शायद कथा को पुस्तक भी छप गई है । गाने वालों को ढोला जाति ।

ढोलिन दे० (खो०) दोना जाति की स्त्री, इस जाति के लोग मारवाड़ में अधिकता से पाये जाते हैं इनका धन्धा गाना बजाना है ।

ढोलिया दे० (पु०) ढोल बजाने वाला, ढोलक बजासजाया पलंग, बिछाया हुआ पलंग ।

ढोली दे० (पु०) ढोल बजाने वाला, ढोलक जातिविशेष, ढोला । (खो०) दो सौ पान आँटी, दो सौ पान की एक ढोली ।

ढोलैत दे० (पु०) ढोल वाला, ढोल बजाने वाला ढोलकिया ।

ढौंचा दे० (पु०) सड़े चार, साड़े चार गुना साड़े चार से गुणित ।

ढौंकन तह० (पु०) [ ढोक + अन्ह ] धूँल, डाली, नजर, किसी प्रकार का लोम विषयने मतलब का काम कराने का उपाय ।

ढौरी दे० (खो०) ताप, दाह, दहक, चौंव ।

ए

ए अङ्गन का अङ्गलया वण, यह भी दृष्टव्य है ।  
 एण त्त् ( ३० ) विन्दु देव, उवण, निगुण, गुणःहित,  
 निर्णय, दान. बोध, बुद्धि, हृदय, शिव, दान,

एष. उपाय, विदुम्, अजस्यन्, निर्माण, त्रिगु-  
 ण कर ।

त

त अङ्गन का सोलहवाँ वर्ष, यह दन्त्य कहा जाता है, क्योंकि इससे उच्च एण का स्थान दन्त है ।  
 त त्त् ( ३० ) चोर, अमृतपुच्छ, भोड़, गेद, मनेच्छ, गर्भ, गड, सिपाजपूछ, वृष, रत्न, सुत, बौद्ध, योद्धा, कुटिल, तंम, तैरना । (ख०) गुण, गण ।  
 तई दे० (अ०) तक, पर्यन्त, चाप, सोना, लिने, वास्ते, तदर्थ । (ख०) ताक दृष्टि ।  
 तई दे० (ख०) कड़ाही, छोड़े की कड़ाही, जिसमें जोषी मालजुषा आदि बनाये जाते हैं ।  
 तऊ दे० (अ०) तयापि, तौरी, तदपि ।  
 तक दे० (अ०) तलक, तई, पर्यन्त, अथपि । (ख०) दृष्टि, ताक, तरजू, तखड़ी ।—तक (५०) पगु आदि को हौकने का शब्द ।  
 तकनः दे० (कि०) ताक लगान, दृष्टि रखना, देखा करना, एकटक देखना, चिन्तना, सस्पृष्ट दृष्टि ।  
 तकला दे० ( ५० ) तकुषा, सूत कातने का यन्त्र, चण्डा ।  
 तकली दे० (ख०) छोटा तकला, घटेन, परेना, चूर्नी ।  
 तकवा .ा दे० (५०) ताकनेवाला, रत्नक, चीर्कदार, पहरेवा, पहरेवाला ।  
 तकवा .ी दे० (ख०) रवा, चोकोटारा, पहरा, पहरेवाते का काम, चगेरना ।  
 तकहु दे० (कि०) ताकी, देखो, अथनोकन करो, दृष्टि रखना ।  
 तकान दे० (३०) भावमङ्ग, दय ।  
 तकाना दे० (कि०) ताक रखना, दृष्टि रखना, लक्ष्य रखना ।  
 तकार दे० दधि मयने का दण्ड ।  
 तकि दे० (अ०) ताक कर, लक्ष्य कर, देखकर ।

तकिया दे० (ख०) सिंहाते रखने की वस्तु, ओषध, अन्न, उपधान, सिंहाना ।  
 तकनी दे० (ख०) छोटा उसासा ।  
 तकुमा दे० (३०) सूत कातने की जेहशलाका जो बर्त में लगायी जाती है, तकता ।  
 तक त्त् (५०) छौड, महु, मही ।  
 तक त्त् (३०) [ तच + चत् ] आच्छादन, कर्तन, काटना, चमड़ा, चर्म, विमानचर्म ।—शिला (५०) प्रसिद्ध ये तैहाविक नगर, यह पञ्जाब में था, इसका उल्लेख पुराणियों के इतिहास में आया है ।  
 तकरु त्त् (५०) [ तच + चत् ] बड़ई, लकड़े काटने वाला, स्वामप्रसिद्ध, सर्वराज, विश्वकर्मा, सूत्रधार, वृक्षविशेष ।  
 तखड़ी दे० } (ख०) पनड़ा, तरजू, अक्ष आदि  
 तखरी दे० } ताल का गुण ।  
 तखान त्त् ( ३० ) तवण, बड़ई, लकड़ो काटने वाला, छाती ।  
 तगण त्त् ( ५० ) कविता का गणविशेष जिसके अन्त का अक्षर लघु हो यथा जीवत ।  
 तगना दे० ( कि० ) सोना, चिसाई करना, तागा चनाना ।  
 तगर त्त् ( ३० ) उद्योगविशेष, सुगन्धित कृत्रिमविशेष, मरुचा वृक्ष, मदन वृक्ष ।  
 तगई दे० (ख०) मिलाई, नागने का काम, तागने की मजूती ।  
 तगाना दे० (ख०) त.गा ढालना, चिल्लाना ।  
 तग्गा दे० (५०) सूत, बटा हुआ सूत जिससे तागा जाता है ।  
 तगड़ी दे० (ख०) कर्धनी, कटिमूत्र ।  
 तद्गा दे० (५०) दो पैने, टका ।

तचना दे० ( क्रि० ) सन्तप्त होना, दुःखी होना, गरम होना ।

तचाना दे० ( क्रि० ) गरम करना, तपाना, कुलसाना ।

तज दे० ( पु० ) तेजपात, तेजपात का वृत्त ।

तजई दे० ( क्रि० ) छोड़ देना है, त्यागता है, त्याग देता है ।

तजन दे० ( स्त्री० ) छोड़ना, त्यागना, त्याग ।

तजना दे० ( क्रि० ) त्यागना, छोड़ना, सम्बन्ध छोड़ देना ।

तजि दे० ( अ० ) छोड़ कर, तजकर, त्याग कर ।

तजिये दे० ( क्रि० ) छोड़ो, छोड़ दो, छोड़िये । यथा—  
“जाको प्रिय न राम वैदेही, तजिये ताहि कोटि  
वैरी सम यद्यपि परम सनेही ।”

तज्ज्ञ तत्० ( पु० ) तत्त्वज्ञाना, ज्ञानी आत्मज्ञ, परिहृत ।

तजरुयत दे० तजरुषा, अनुभव, विचार, यथार्थ ज्ञान ।

तट तत्० ( पु० ) [तट + षण्] तीर, कूल, किनारा, नदी का कटार ।—स्थ ( गु० ) तीर पर रहने वाला, तीरवासी, चमत्कृत, सद्बुद्धित, मध्यस्थ, उदासीन, बीचबचाव कराने वाला । ( पु० ) लक्षण-स्वरूप, स्वरूपलक्षण के अतिरिक्त लक्षण, पारमार्थिकता, अपह्नपातिता ।

तटाक तत्० ( पु० ) तड़ाग, बड़ा सरोवर, वृहत् जलाशय, जिस सरोवर में कमलपुष्प हों ।

तटिनी तत्० ( स्त्री० ) [तट + इन्] नदी ।

तटी तत्० ( पु० ) नदीकूल, तीर, तट, किनारा, तटवाला, तीरवाला ।

तड़ दे० ( पु० ) दल, पत्र, गिरोह, जथा, टोली, अठपत्त शब्द ।—तड़ ( पु० ) लकड़ी आदि के टूटने का अठपत्त शब्द ।

तड़क दे० ( स्त्री० ) तर्क, टेई, एक लकड़ी जिस पर मे ध्वजन होती है ।

तड़कना दे० ( क्रि० ) टूटना, फूटना, टूट जाना, फटना ।

तड़का दे० ( पु० ) प्रातःकाल, भोर, बिहान, भिनसार, सबेरा ।

तड़के दे० ( अ० ) सबेरे, प्रातःकाल, प्रातःकाल के समय ।

तड़तड़ाना दे० ( क्रि० ) झिटकना, क्रोधित होना, रिसाना, झिरझिराना ।

तड़प दे० ( स्त्री० ) चटक, झपट, शीघ्रता, उतावर्ग, उचक ।

तड़पड़ा दे० ( पु० ) वृष्टि गिरने का शब्द ।

तड़पना दे० ( क्रि० ) तलफना, दुःख से छटपटाना, धड़कना, तड़कना, हाथ पैर धुनना ।

तड़पाना दे० ( क्रि० ) तलफाना, दुःख देना ।

तड़पीला दे० ( गु० ) प्रभावशाली, फुर्तीला, चटपटिया ।

तड़फ दे० ( स्त्री० ) व्याकुलता, घबड़ाहट, श्रान्त, दुःखदायी, उद्विग्नता, अधिक दुःख से अधोता । यथा—“ज्वर से तड़फ रहा है” “बिना जल के मछलियाँ तड़फ रही हैं ।” “तड़फ तड़फ कर उठने प्राण दे दिये ।”

तड़फड़ाना दे० ( क्रि० ) तड़पना, व्याकुल होना, उद्विग्न होना, धड़कना, छटपटाना ।

तड़फड़ाहट दे० ( स्त्री० ) धुकधुकी, धड़क, तड़क ।

तड़फड़ी दे० ( स्त्री० ) छटपटी, धुकधुकी, शूड़ा से छटपटी ।

तड़फना दे० ( क्रि० ) तड़फड़ाना, तड़पना, व्याकुल होना ।

तड़फाना दे० ( क्रि० ) तड़फाना, तड़पाना, व्याकुल करना, उद्विग्न होना ।

तड़ा दे० ( पु० ) टापू, द्वीप, उपद्वीप, दोआब ।

तड़ाक दे० ( पु० ) चमत्कार, भड़कीला, चटकीला, दीप्तरमान, शीघ्र, गुरन्त ।—पड़ाक ( अ० ) शक्ति शीघ्र, बहुत जल्दी, श्रान्त्यन्त शीघ्रता से, शीघ्रता-पूर्वक ।

तड़ाका तत्० ( स्त्री० ) समुद्र का किनारा, समुद्रतट, बड़ी बड़ी नदियों का तीर—( पु० ) मारने का शब्द, टूटने की धमति ।

तड़ाग तत्० ( पु० ) तालाब, पोखरा, सरवर, सरोवर, जलाशय, पाँच सौ धनुष के परिमाण का जलाशय ।

तडाघात तत्० ( पु० ) [तड़ा + आघात] ऊपर उठे हुए हस्तियुद्ध का आघात ।

डाड़ा दे० (प्र०) जल की तीव्र धारा, तरङ्गा, तरखा ।

दाया दे० (प्र०) रसिकता, द्वैलापन, चटक मटक, तड़क भड़क ।

दावा दे० (प्र०) दर्प, अभिमान, गर्व ।

डिन् तत्० (स्त्री०) विद्युत्, विजली, मौसमिनी, चञ्चला, चपला ।—समाचार (प्र०) विजली के द्वारा समाचार भेजना, टेलीग्राफ, तारबर्की, तार ।

डिट्वात् तत्० (प्र०) [नडिट् + यत्] मेघ, जलधर, वारिद, बादल ।

डिहता तत्० (स्त्री०) [नडिट् + लता] विद्युद्धता, विजली ।

पडक तत्० (प्र०) खड्गन पत्ती, खड्गचा, खंडलीच, भारद्वाज पत्ती, फेन, अधिक समास वाला वाक्य, छान की लकड़ी, धरन, धत्री, कड़ी, तरस्कन्ध, वृक्ष का वह स्थान जहाँ से शाखें फूटती हैं । साफ, सुधरा, निर्मल । (प्र०) मायावहुल, मायावी, छली, प्रपञ्ची ।

पडु तत्० (प्र०) शिव का द्वारपाल, अनुकर्म-शिक्षक, कर्तव्य कर्मों का उपदेशक ।

पडुल तत्० (प्र०) चावल, चाउर, बिना घकले का धान, कूटा धान, तन्दुल ।

पू तत्० (श्र०) बुद्धिस्थ, परामर्शक, सर्वनाम, वह, यही, ब्रह्म का विशेषण, प्रसिद्धार्थक ।—फन्द (प्र०) अदरक, चाराहीकन्द ।—फतूक (प्र०) उसका बनाया, उसके द्वारा बनाया हुआ ।—कर्म (प्र०) वह कर्म, यही कर्म, जाना हुआ कार्य, प्रसिद्ध कार्य ।—कार्य (प्र०) वह कार्य, वो काम ।

—काल (प्र०) उसी काल में, उसी समय में, उसी क्षण ।—कालिक (प्र०) उस समय का, तदानी-न्तन ।—कालीन (प्र०) उसी काल का, उसी समय का ।—कालोत्पन्न (प्र०) उस समय का उत्पन्न ।—कृत (प्र०) उसका बनाया, उसके द्वारा बनाया हुआ ।—क्षण (प्र०) उसी क्षण, उसी समय, उसी काल में ।—तुल्य-उसके समान, उसके सदृश, उसके ऐसा ।—पर (प्र०) उद्युक्त, घनलस, मुनिपुत्र, सामक, लगा हुआ, उद्योगी;

तदनन्तर, उसके पश्चात् ।—परायण (प्र०) तदा-मक, उसके अनुरक्त, उसके अनुययी ।—पुरुष (प्र०) समासविशेष, इस समास में उन्नत पद की प्रधानता रहती है, यथा—कृष्ण का दास, कृष्ण दास, कर्मधारय इसीके अन्तर्गत है ।—फल (प्र०) पीछू वृक्ष, गजपीपल, जामुन वृक्ष, बदरी वृक्ष, बेर, रवेन कमल ।

ततच्छन तद्० (श्र०) तत्क्षण, उसी समय, तत्काल, बहुत शीघ्र । यथा:—

“ततश्चन द्वार बेगि उतराना,

पावा मखहिं चन्द्र विहसाना ।” —पद्मावत ।

ततरी दे० (स्त्री०) अठखेलन, चपला युवती ।

ततवा दे० (प्र०) जातिविशेष, कपड़ा धोने वाली हिन्दू जाति ।

ततटरा दे० (प्र०) गर्म करने का हथका ।

तताना दे० (क्रि०) गरम करना, उष्ण करना, तपाना, सेंकना ।

ततार दे० (स्त्री०) सेंक, गरम, टकीर, प्रचालन ।

ततेड़ा दे० (प्र०) पानी आदि गरम करने का स्थान, पानी गरम करने का पात्र, हथका ।

तत्ता दे० (प्र०) उष्ण, गरम, क्रोध, उग्र, प्रसन्न, तेज, तीव्र ।

तत्र तत्० (श्र०) तहाँ, यहाँ, उस स्थान में, उस विषय में ।—स्थ (प्र०) तत्स्थानीय, उस स्थान का, उस स्थान सम्बन्धी ।—भयती (स्त्री०) आर्या, मान्या, माननीया, पूज्या, पूजनीया, पूज्य, स्त्री सम्बोधन ।—भयान् (प्र०) पूज्य, मान्य, हाच्य, अद्वैय, गुरु आदि माननीय पुरुषों का सम्बोधन ।—स्थ (प्र०) तत्स्थानीय, यहाँ रहने वाला, यहाँ का निवासी, यहाँ का ।—ऽपि (श्र०) बिना नाम के स्थान का सूचन करने वाला शब्द, उस पर भी, यहाँ पर भी ।

तत्त्व तत्० (प्र०) यथार्थ, सुख, मत्स्य, सार, सुख उप-वस्था, सुखज्ञान, सुखबोध, धर्म, स्वरूप, ब्रह्म-भाव, अनुसन्धान, उद्देश्य अन्वेषण ।—फारक (प्र०) परिहत, यथार्थ वितर्क करने वाला, अनु-मन्यन करने वाला ।—ज्ञान (प्र०) ब्रह्मज्ञान,

परमार्थज्ञान, अज्यात्मविद्या, तत्तद्विद्या ।  
 —ज्ञानी (गु०) ब्रह्मज्ञानी ब्रह्मज्ञ ।—तः (अ०)  
 यथार्थ, सत्यम्, ठीक ठीक, सच सच ।—वादी  
 (गु०) यथार्थवाक्ता, सत्यवादी, ब्रह्मवादी ।  
 —वार्ता (स्त्री०) अनुसन्धान, अन्वेषण ।  
 —चित् (गु०) सत्यचित्, ब्रह्मज्ञ, ब्रह्मज्ञानी ।  
 —विज्ञान (गु०) तत्तद्विज्ञान, यथार्थज्ञान, रहस्य-  
 ज्ञान ।—वेत्त (गु०) ब्रह्मज्ञानी ।—अनुसन्धान  
 (गु०) यथार्थ, अन्वेषण, सारवस्तु का ज्ञान,  
 यथार्थ अन्वेषण, विशेष वृत्तान्त का सन्धान ।  
 —अध्यायक (गु०) रचक, रचनेवाला करने वाला,  
 अभिभावक, देखरेख रखने वाला ।—अध्यायक  
 (गु०) रचण वेक्षण, देखरेख, अव्यवस्था ।  
 —अधिविद् (गु०) तत्तद्विज्ञानी ।—अभियोग = जत-  
 वृत्तविशेष ।

तथ तद्गु (गु०) तथ सत्य, यथार्थ, सत्य ।

तथा तद्गु (अ०) वैश, उस प्रकार, उस तरह, उस  
 भाँति ।—गत (गु०) योद्ध, युद्ध भगवत्, जिन,  
 जैत ।—च (अ०) जैते ।—पि (अ०) [तथा +  
 अपि ], तभी, वैसा होने पर भी, उस पर भी ।  
 —स्तु (अ०) वैसा हो, वैसा ही हो  
 स्वीकारोक्ति ।

तथैति तद्गु (अ०) वैसा, तादृश ।

तथैव तद्गु (अ०) वैसा ही, उसी प्रकार, यथा के  
 साथ का अर्थ बोधक, वैसा ।

तथ्य तद्गु (गु०) [ तथा + या ], सत्य, तथार्थ,  
 यथार्थ सत्य, यथार्थ्य, (गु०) सत्य, यथार्थ्य ।  
 —अनुसन्धान (गु०) तत्त्व का अन्वेषण, सत्य का  
 अनुसन्धान, यथार्थ की जाँच करना, सत्य-  
 सन्धान ।

तद्गु तद्गु (गु०) तद्, यह, सो ।—अंश (गु०) वह  
 अंश, उसका अंश ।—अकरण (गु०) धिना नहीं  
 करना, उसको नहीं करना ।—अतिपात (गु०)  
 उसका अतिक्रम करना, उल्लङ्घन करना ।—अधिक  
 (गु०) उसके अतिरिक्त, उससे अधिक, ततोऽधिक ।  
 —अनन्तर (गु०) उसके पश्चात्, उसके बाद ।  
 —अनुग (गु०) उसके पीछे चलने वाला, तत्पश्चा-

द्गामी, उसके पश्चात् चलने वाला ;  
 (गु०) उसके अनुग, उसके अनुगामी ।  
 —अनुयायी (गु०) उनके अनुगामी :  
 (गु०) उसके समान, तादृश, तत्तुल्य ।—अनुग  
 (अ०) तद्गुत्तर, उसके समान ।—अन्त (अ०)  
 शेय, समाप्त, अन्तिम ।—अन्तः (अ०) उसके अन्त,  
 उसके अन्तर्गत ।—अन्तर्पाति (गु०) तत्तत्-  
 वर्ती, उसके बीच में का ।—अपि (अ०) तथा,  
 ती भी ।—अध्वधि (अ०) उस समय से, तदो-  
 धी समय से ।—अवस्य (गु०) उसी प्रकार  
 अवस्य, की प्रमाण, एक प्रकार की अवस्था वाले ।  
 —अर्थ (अ०) तन्निमित्त, तद्गु, उस कारण । (गु०)  
 तद्गुप्रिय, यह अभिप्राय ।—अनु (अ०) अने  
 बाद, उसके अनन्तर, उसके पश्चात् ।—गत (गु०)  
 उसमें लिप्त, उसमें आसक्त ।—गति (अ०) गत  
 दया, उसकी अवस्था ।—गुणविशेषः (गु०)  
 उस गुण का युक्त ।—भावबोधक (गु०) उस भाव  
 का बोधक, उस भाव का सूचक ।

तदा तद्गु (अ०) उस समय, उस काल ।—तदा  
 (गु०) वह काल, वह समय ।—दि (अ०)  
 तद्वधि, तत्प्रभृति, तत्र से, उस समय से ।

तदानाम् तद्गु (अ०) उस समय, उस काल ।  
 तदोय तद्गु (गु०) तत्सम्बन्धी, उसका ।  
 तदुक्ति तद्गु (स्त्री०) उसका उक्ति, उसकी उक्ति ।  
 तदुत्तम तद्गु (गु०) उसकी अपेक्षा उत्तम ।

तदुत्तर तद्गु (गु०) उसका उत्तर, प्रत्युत्तर,  
 उत्तर, उसके बाद उसके अनन्तर ।

तदुपरि तद्गु (अ०) उसके ऊपर, उसके मध्य ।

तदेकचित्त तद्गु (गु०) समान स्वयं व,  
 अनुक्त, उसका भक्त, उसका अनुगामी ।

तदेव तद्गु (अ०) वही ।

तद्वन तद्गु (गु०) [ तत् + धन ] कृपण,  
 कम खर्च करने वाला, वही धन, उतना ही धन ।

तद्वित तद्गु (गु०) [ तत् + वित ] उसका  
 उसका हितकर, ध्याकरण का प्रत्ययविशेष ।

तद्यो दे० (अ०) तभी, तब ही, त्यों ही ।

न तद् ० (५०) तनु, शरीर, काय, देह, अङ्ग ।—देना (क्रि०) ध्यान देना, अत्यन्त परिश्रम सह कर भी काम करना, शक्ति से बाहर का काम करना ।

नक दे० (५०) घोड़ा, अल्प, अंश, टुकड़ा, छोटा, सूत्र, अल्प ।

नखाह, दे० वेतन, मासिक, वृत्ति, महीने भर की मजूरी ।

नना दे० (क्रि०) फैलना, खिंचना, विस्तार करना । नय तन् ० (५०) पुत्र, सन्तान, आत्मज, सुत, बेटा, नया (स्त्री०) कन्या, पुत्री, दुहिता, सुता ।

नहा दे० (५०) एकाकी, अकेला, असहाय, सहायताहीन, निरालम्ब, आश्रयरहित ।

नादि तन् ० (५०) [तद् + आदि] दशविध धातुओं के अन्तर्गत अष्टम धातु ।

नापा दे० (५०) ज्वानी, युवावस्था, तादृश्य, तरुणाई ।

निक दे० (५०) तनक, घोड़ा, अल्प, सूत्र ।

निष्ठ तन् ० (५०) [तद् + इष्ठ] सुद्र, अत्यल्प, नून, चीप, अति सूत्र ।

नी दे० (स्त्री०) अंगरखे का बन्द, अंगरखा बाँधने की तनी, ततपा, पुत्री, कन्या ।

नीयान् तन् ० (५०) [तनु + ईयञ्] सूत्रमत्तर, अल्पतर, बहुत घोड़ा, सुद्र, छोटा, लघु ।

नु तन् ० (५०) तद् + उ, शरीर, देह, त्वरु, घर्म, तन ।—कूप (५०) रोमकूप, रोमछिद्र ।—च्छत् (५०) तर्म, कवच, अक्षतर, सत्राद, युद्ध में जाने के उपयोगी परिच्छेद ।—ज (५०) पुत्र, आत्मज, सुत, मृत ।—जा (स्त्री०) कन्या, पुत्री, ततपा, दुहिता ।—ता (स्त्री०) चीणता, सुहमता ।—त्व (५०) चीणत्व, मृत्तत्व ।—त्र (५०) कवच, शरीर-रक्षाकारी, सत्राह ।—त्राण (५०) तनुत्र, शरीर-रक्षण ।—त्याग (५०) मृत्यु, देहत्याग, शरीरपात, मरण ।—घत (५०) एक प्रकार के नरक का नाम ।—घ्रण (५०) वास्त्विक रोग, छोटे घाव ।—मध्या (स्त्री०) चीण कटि स्त्री, पतली कमर वाली स्त्री ।—रुक्षा (५०) रोम, लोम, दाह, केय ।

तनुक दे० (५०) अल्प, थोड़ा, सूत्र ।

तनू तन् ० (५०) देह, तन, काया, शरीर ।—ज (५०) पुत्र, आत्मज ।—जा (स्त्री०) कन्या ।—नपात् (५०) अग्नि, यन्त्रि, अन्त ।—भृत् (५०) मनुष्य, देही, देहधारी ।

तन्त दे० (५०) तारदार, प्रबन्ध, व्यवस्था, सुप्रसिद्धि, गुरन्त, शीघ्र, मन्तान, औपधि, उपाय ।

तन्तनाना दे० ( क्रि० ) पिनपिनाना, तनना, तोला होना, गरम होना, मन्ताना, क्रोध से बचना ।

तन्तनाहट दे० ( स्त्री० ) पिनपिनाहट, जलने की पीड़ा ।

तन्ति तन् ० (५०) तन्तुवाय, ततया, कपड़ा बिनने वाली एक हिन्दू जाति ।

तन्तु तन् ० (५०) सूत, सूत्र, तागा, धागा, हाड़द, बंध, सन्तान ।—काष्ठ ( ५० ) तौत का काठ ।

—कीट (५०) रेशम का कीड़ा, पाटकीट ।

—निर्यास (५०) तालवृक्ष ।—चाय (५०) कपड़ा बिनने वाला, जुलाहा, तौती, ततया, कोरी ।

—शाला (स्त्री०) कपड़ा बिनने का घर, तौतघर ।

—सन्तान (५०) अतिपूजन्य भूत, पतने बहुत सूत ।

तन्तुना दे० (५०) तनुना, तार ।

तन्त्र तन् ० ( ५० ) मिथुन, परिवार का काम, औपधि, प्रधान, मुख्य, अग्नि की एक शाखा का नाम, हेतु, अर्थक, दोतरफ़ी धान, राष्ट्र, अर्थ-साधक, उपाय, अपने राज्य की चिन्ता, प्रबन्ध, शक्य, धनग्रह, यपन, बोना, साधन, कुण, शिव-पार्वतीकथित शास्त्र, इस शास्त्र के दो भेद हैं, एक का नाम दक्षिण तन्त्र, और दूसरे का नाम वामतन्त्र है । दक्षिणतन्त्र में पशुदेव की उपासना मानविक मनुष्यों के लिये सामाजिक रीति पर वर्णित है । वामतन्त्र राज्ञी प्रकृति के मनुष्यों के लिये है । तन्त्र के इमी भाग के उपासकों में पशुमकारक्षेत्र की विधि प्रचलित है । इस शास्त्र के बहुत से ग्रन्थ अब भी उपलब्ध होते हैं ।

तन्त्राचाप तन् ० (५०) [तन्त्र + अचाप] अपने रज्या की व्यवस्था और शत्रु राज्य की दशा तथा स्वराष्ट्र परराष्ट्र का ज्ञान ।

तन्त्रि तत्० (स्त्री०) निद्रा, नींद, घूम, ऊँचाई, आलस्य, आलस ।—पालक (पु०) राजा जयद्रथ ।

तन्त्री तत्० (स्त्री०) [ तन्त्र + ई ] धीणागुण, बीन का तार, गुड़ची, शरीर की नाडियाँ, नदीभेद, युवतीभेद । (पु०) एक प्रकार का बाजा, सितार, तन्त्रशास्त्री, तन्त्रशास्त्रवेत्ता ।

तन्द्रा तत्० (स्त्री०) [ तन्द्र + घा, ] ईपत्निद्रा, थका-यट, आन्ति ।

तन्द्रालु तत् (पु०) [ तन्द्र + आलु ] क्लान्त, आन्त, थकित, निद्रागुर, आलस, निद्रालु ।

तन्द्री तत्० (स्त्री०) घट्यन्त परिश्रम करने से इन्द्रियो की अपटुता, सर्वाङ्गशैथिल्य ।

तन्ना दे० (क्रि०) फीचन, फैलाना, विस्तार करना ।  
तन्नाना दे० (क्रि०) तन्नानाना, पिनपिनाना, कडा हो जाना, मिजाज गरम करना ।

तन्निमित्त तत्० (श्र०) [ तद् + निमित्त ] तदर्थ, तद्देष्टु, उसके लिए, उसके कारण, उसके हेतु ।

तन्निष्ठ तत्० (पु०) [ तद् + निष्ठ ] तत्रस्थ, तद्वर्ती, वहाँ स्थित ।

तन्मय तत्० (पु०) [ तद् + भव ] निर्द्विष्ट, वस्तु की प्रधानता से पूर्ण, अधिक अनुराग से उसका स्वरूप, उसका आधिपत्य ।

तन्मात्र तत्० (पु०) [ तत् + मात्र ] केवल यही, केवल, एक, अद्वितीय ।

तन्वी तत्० (स्त्री०) [ तनु + ई ] क्षीणा, कृशाङ्गी, सुन्दरी, कामिनी ।

तप तत्० (पु०) [ तप् + ञ् ] गर्मी, उष्णता, गर्मी की शक्त, उष्णकाल, तपस्या, शरीर कष्ट, शरीर संयम करने के उपाय, माघ महोत्सव का नाम ।

तपत दे० (स्त्री०) गर्मी, उष्णता ।

तपती तत्० (स्त्री०) सूर्य की पुत्री का नाम, यह सूर्य-पत्नी छाया के गर्भ से उत्पन्न हुई थी, कुर्वरीय ऋषि नामक एक प्रसिद्ध राजा थे, ऋषि सवरण बड़ा सूर्य-भक्त था, सवरण की तपस्या उपासना से प्रसन्न होकर सूर्य देव ने सवरण को दया दृष्टी ।

तपन तत्० (पु०) [ तप् + ञ् ] ग्रीष्म, ताप, गर्म, सूर्यकान्तमणि, नरक-विशेष, जहाँ पाप फल का भोग करने के लिए अग्नि से पापी जलाये जाते हैं । महा तक वृक्ष, भिलायर्षी का पेड़ ।—तनया (स्त्री०) सूर्यपुत्री, शमीवृक्ष, यमुना नदी ।—मणि (पु०) सूर्यकान्तमणि ।—त्मजा (स्त्री०) गोदावरी नदी, यमुना नदी ।

तपना तद्० (क्रि०) गरम होना, दहकना, जमना, प्रभाववाद् होना अतिनेजयुक्त होना, तेस्व होना ।

तपनीय तत्० (पु०) उचापनीय, तपाने योग्य, सुवर्ण, स्वर्ण, काष्ठुन ।

तपरी दे० (स्त्री०) मंड, डोट, धूहा, बाँध, शेर बाँध ।

तपलोक तद्० (पु०) तपोलोक, स्वर्गविशेष, ऊर्ध्व स्थित सप्तलोकों के अन्तर्गत छठा लोक ।

तपसाल तद्० (पु०) तपस्वी, तपसी, तप करने वाला, तपी ।

तपसी तद्० (पु०) तपस्वी, तप करने वाला ।

तपस्क तत्० (पु०) तपस्वी, योगी ।

तपस्य तत्० (पु०) पायुन का महीना, फाल्गुण मास, मध्यमपापहय, धर्जुन ।

तपस्या तत्० (स्त्री०) तप, साधना, योगसाध ईश्वरभजन ।

तपस्विनी तत्० (स्त्री०) [ तपस् + वि + ई ] तपसा कारिणी, प्रतनिष्ठनियमकारिणी, तपस्या वाली स्त्री ।

तपस्वी तत्० (पु०) (तपस् + वित् ) तपसाकर्त्ता ऋषि, मुनि ।

तपा दे० (पु०) पुजक, आराधक, अर्चक ।

तपाना दे० (क्रि०) गर्म करना, उष्ण करना, करना, आग दिखाना ।

) यर्षाकाल, प्राविट् काल,

तपित तत् ( पु० ) [ तप् + इत् ] तप्त, उष्ण, उष्णतप-  
युक्त ।

तपी तद् ( पु० ) तपस्वी, [ तपस्या करने वाला, आत्म  
संयमी, नियमयुक्त ।

तपेदवर, तपेध्वरी तद् ( पु० ) तपस्वी, तपस्ययां-  
राघव, तपी ।

तपे दे० ( क्रि० ) तप जाये, गरम हो जाये, तपस्या  
करे ।

तपोधन तद् ( पु० ) तपस्वी, मुनि, ऋषि, जिनके  
तपस्या ही धन है, लिनके धन के द्वारा होने  
वाले कार्य तपस्या के द्वारा होते हैं ।—तपोधना  
( स्त्री० ) तपस्यारिणी, तपस्विनी, नियम परायण  
स्त्री, योगसिधनतत्परा ।

तपोवन तद् ( पु० ) तपस्वियों का आश्रम, वन का  
प्रदेशविशेष, जहाँ तप करने वाले रहते हैं ।

तपोमूर्ति तद् ( पु० ) [ तप् + मूर्ति ] तपस्वी,  
तपस्याशील ।

तपोराशि तद् ( पु० ) [ तप् + राशि ] तपस्वी,  
बड़ा तपस्वी, जिसकी तपस्या अधिककाल  
व्यापिनी हो ।

तप्त तद् ( पु० ) ( तद् + त्त ) उष्ण, सन्तापयुक्त, तथा  
हुचा ।—कुम्भ ( पु० ) नरकविशेष, तथा हुचा  
पत्र ।—कृच्छ्र ( पु० ) व्रतविशेष, प्रायश्चित्त  
विशेष ।—घालुक ( पु० ) नरकविशेष, जो तपी  
बालुका से बना हुआ है ।—भापक ( पु० ) एक  
प्रकार की घरीचा ।—मुद्रा ( स्त्री० ) शरीर पर  
द्रवण किये जाने योग्य अग्निप्रतम घ्राण्यमय भगवाह  
के घ्राणुषों का चिन्ह ।

तप्पां दे० ( पु० ) चकला, पुरवा, पुरा, पत्नी, गौव,  
ग्राम, गवर्द ।

तप्तसोल दे० विवरण ।

तपावत, दे० अन्तर, व्यवधान, भेद, पार्यव्य,  
विशेषता ।

तव दे० ( श० ) तदा, उस समय, उस काल, उस क्षण,  
ऐसी दशा में, ऐसी स्थिति में ।

तवही दे० ( श० ) ठीक उसी समय ।

तवी दे० ( श० ) तबही, तदैव, उसी समय ।

तम तद् ( पु० ) विशेषण शब्दों के अन्त में आने से  
आनेकों के बीच एक का उत्कर्षबोधक, अन्धकार,  
तमोगुण, अहङ्कार, तमालवृक्ष, तेजपात का वृक्ष ।

तमः तद् ( पु० ) प्रकृति का गुण, त्रिगुण के अन्तर्गत  
एक गुण का नाम, तमोगुण, अन्धकार, शोक,  
पाप, अहङ्कार ।

तमक दे० ( स्त्री० ) चमपट, अमिमान, अहङ्कार,  
शैली ।

तमकना दे० ( क्रि० ) क्रोधित होना, क्रोध से लाल  
मुण होना ।

तमका दे० ( पु० ) बहुत गर्मी, अधिक उष्णता ।

तमचुर तद् ( पु० ) तावचूड़, सुरग, कुक्कुट ।

तमत दे० ( पु० ) अभिलाषी, इच्छुक, आकांक्षी, प्रार्थी ।

तमतमाना दे० ( क्रि० ) लाल होना, अधिक क्रोध  
करना ।

तमप्रभ तद् ( पु० ) नरकविशेष, अन्धकार मय  
नरक का नाम ।

तमस तद् ( पु० ) अन्धकार, तमोगुण, नगर, गदी-  
विशेष, कूप, नरकविशेष, राहु, मनुविशेष ।

तमसा तद् ( स्त्री० ) एक नदी का नाम, इषी नदी  
के तीर पर महर्षि वाष्पनीक रहते थे ।

तमस्तुक दे० ( पु० ) काणपत्र, कर्ज पत्र, यह पत्र जो कर्ज  
लेने वाले धनीको लिखते हैं । दस्तावेज, पत्र ।

तमस्तति तद् ( स्त्री० ) [ तमस् + तति ] अन्धकार-  
सङ्घ, घोर अन्धकार ।

तमस्विनी तद् ( स्त्री० ) [ तमस् + वित् + ई ] रात्रि,  
रजनी, निशा, अंधेरी रात ।

तमाकू दे० ( पु० ) सुरती, स्वनामप्रसिद्ध पत्रविशेष ।  
धूम पान करने योग्य पत्रविशेष, आने की  
सुरती, दैनी तमाकू ।

तमाम दे० ( पु० ) सकल, समस्त, समग्र, सगुदाय ।

तमारि तद् ( पु० ) तमोनाशक, सूर्य, मार्तण्ड,  
दियाकर ।

तमाल तद् ( पु० ) वृक्षविशेष, तिलक, पत्रक, पंचण,  
वृक्ष, काशा खैर, काली परियाँ वाला वृक्ष,  
तमाकू, मेरपंख ।—पत्र ( पु० ) तिलक, तेजपत्र ।



तमिस्र तत्० (पु०) [तमिस् + र] तिमिर, अन्धकार,  
ध्वान्त ।—पक्ष कृष्णपक्ष, बदी पक्ष ।

तमिस्रा तत्० (स्त्री०) [तमिस्र + आ] अन्धकारमय  
रात्रि, तामसी निशा, कृष्णपक्ष की अधेरी रात ।

तमी तत्० (स्त्री०) [तम + ई] अन्धकारमय रात्रि,  
निशा, तमिस्रा ।—चर (पु०) राक्षस, निशाचर,  
चार, द्यभिवचारी, लम्पट ।

तमोगुण तत्० (पु०) [तमस् + गुण] प्रकृति के  
त्रिविध गुणों के अन्तर्गत एक गुणविशेष । मोह,  
क्रोध आदि को उत्पन्न करने वाला गुणविशेष ।

तमोगुणी तत्० (पु०) अहङ्कारी, अभिमानो दर्पी,  
गर्वी ।

तमोघ्न तत्० (पु०) तमोनाशक, अग्नि, सूर्य, चन्द्र,  
बुद्ध, विष्णु, कैशव, शम्भु, ज्ञान ।

तमोज्योति तत्० (पु०) [तमस् + ज्योति] ज्योति-  
रिक्षण, खद्योत, झुगनू ।

तमोनुद् तत्० (पु०) [तमस् + नुद् + अच्] सूर्य,  
रवि, दिनकर, चन्द्र, बुद्ध, अग्नि, अज्ञाननाशक  
गुरु ।

तमोपह तत्० (पु०) [तमस् + अप् + हस् + उ] अन्धकारनाशक,  
सूर्य, चन्द्र, अग्नि, दीप, दीपक,  
बुद्ध ।

तमोल तत्० (पु०) ताम्बूल, पान, नागर बेल की  
पत्ती ।

तमोलिन दे० (स्त्री०) तमोली की स्त्री, पान बेचने  
वाली स्त्री ।

तमोली तत्० (पु०) ताम्बूलिक, जातिविशेष, जो  
पान का व्यवसाय करता है ।

तम्बालु, तम्बिया दे० (पु०) तंबू का यतन, तंबू  
का हथका ।

तम्बू दे० (पु०) पटमण्डप, यज्ञगृह, रावटी, झोलदारी ।

तम्बूरा दे० (पु०) वाद्य विशेष, तानपुरा, तीन  
तार की धीन ।

तम्बेरम तत्० (पु०) स्तम्बेरम, हाथी, कुञ्जर, दन्ती ।

तम्बोली तत्० (पु०) ताम्बूलिक, पान का व्यवसायी ।

तर तत्० (पु०) [तृ + अच्] तरना, पार होना,  
अग्नि, वृष्ट, विशेषण शब्दों के अन्त में आने से यह

देा के बीच एक ही उत्कृष्टता बतलाता है । तद्,  
तल, तले, नीचे ।

तरई तत्० (स्त्री०) तारा, नक्षत्र, तरैया ।

तरक दे० (स्त्री०) तडक, धरण, फडी, तर्क, विना  
परम्परा, चटक कर, डूट कर ।—कटना (स्त्री०)  
असंग करना, पृथक् करना ।

तरकऊ दे० (श्र०) तर्क भी, विचार भा ।

तरकना दे० (क्रि०) उल्लाना, कूटना, अपो खाना  
के विरुद्ध बातें सुनकर उल्लाना, चकित होना  
विस्मित होना ।

तरकस दे० (पु०) तूनीर, तूनीर, जौण, वाण रखे  
का भाया, एक प्रकार का बौस का चोगा निरम  
वाण रखे जाते हैं ।

तरकारी तत्० (स्त्री०) तृप्तिकारी, व्यञ्जन बनाने  
योग्य फल मूल आदि, साग, भाजी ।

तरङ्ग तत्० (स्त्री०) लहर, कर्मि, बीच, डेज, रिह  
कोरा, (पु०) उमङ्ग, मोज, मानसिक उमङ्ग ।

तरङ्गिणी तत्० (स्त्री०) नदी, सरिता ।

तरङ्गित तत्० (पु०) [तरङ्ग + इत्] कर्मिगत,  
लहरीयुक्त ।

तरङ्गी तत्० (पु०) लहरी, चञ्चलमना, उत्साह,  
उदाहवाला ।

तरण तत्० (पु०) [तृ + अणट्] उत्तरण, उतरना  
पार जाना, तैरना, उद्धार, बचाव, बोगा, नाव  
स्वर्ग । (पु०) पार होने वाला, उतरने वाला, तले  
वाला, मुक्त होने वाला ।

तरणि तत्० (स्त्री०) [तृ + अणि] नौका, नाव,  
चँकुआरि, घृतकुमारी । (पु०) सूर्य किरण, अक्षय  
अक्षयन वृष्ट ।—रत्न (पु०) माणिक्य, मणि, सूर्य  
कान्त मणि ।—सुत (पु०) यम शनि, कर्ण ।  
—सुता (स्त्री०) यमुना, कालिन्दी नदी ।

तरणी तत्० (स्त्री०) [तरण + ई] नौका नाव  
तरणि, तरी । घृतकुमारी, तरनी, पद्मचारिणी ।

तरज तत्० (पु०) तर्ज, डपट, डपेट, डाँट, तर्ज  
माने की रीति, मान का प्रकार, रीति, प्रथा,  
उम ।

तरजत तद्० (क्रि०) तर्जत, तड़पता है, डौंटाता है ।  
 तरजन तद् (पु०) तर्जन, गर्जन, तड़प, डपेट, डौंटा ।  
 तरतरा दे० (पु०) एक प्रकार का घाल ।

तरन तद्० (पु०) तरण, तारनेवाला, तैर जाने वाला,  
 पार होने वाला, मुक्त होजाने वाला ।—तरन (पु०)  
 अपने साथियों के सहित मुक्त होने वाला, स्वयं  
 तरे, और दूसरों को भी तारे ।

तरना दे० (क्रि०) पार होना, उद्वार पाना, तर जाना ।  
 तरनि तद्० (पु०) तरणि, भूर्य, रत्रि, भोनु, दिवाकर ।  
 तरनी तद्० (स्त्री०) तरणी, नौका, नाव ।  
 तरन्त तद्० (पु०) भेक, मेडल, कुहासा, धामार, भड़ ।  
 तरन्ती तद्० (स्त्री०) नौका, तरणी, तरी ।  
 तरपन तद्० (पु०) तर्पण, तृप्ति, मनःप्रसाद, मन की  
 प्रसन्नता, मन्त्रों के द्वारा पितरों के उद्देश्य से  
 जलप्रदान ।

तरपहिं तद्० (क्रि०) तरपते हैं, तरपन करते हैं ।  
 तरफ दे० (स्त्री०) पार्श्व, दिग, धार, पक्ष, ओर ।  
 —दार (पु०) पक्षपाती, पक्षवाला, सहायक ।

तरफना दे० (क्रि०) तड़पना, उष्णकुल होना ।  
 तरयूज-दे० (पु०) कर्लिंगड़ा, स्वनाम प्रसिद्ध फल  
 विशेष ।

तरल तद्० (पु०) हार के बीच का मणि, तल,  
 चञ्चल, द्रवीभूत, पतला, दीप्तिपूक । (पु०) चञ्चल,  
 अस्थिर, अनिश्चितचिन्त, पतला, द्रवीभूत पदार्थ ।  
 —ता (स्त्री०) चञ्चलता, प्रसरता, तीक्ष्णता,  
 तेजी ।—लोचना (स्त्री०) चञ्चलनयनी, चपल-  
 नेत्रा नारी, मृगी ।

तरला तद्० (स्त्री०) [तरल + धा] जाउर, यवाह,  
 मधुमक्षिका, बाँस विशेष (पु०) सबसे नीचे वाला,  
 नीचे वाला ।

तरलाई तद्० (स्त्री०) तारण्य, तरलता ।

तरलायित तद्० (पु०) जाततारण्य, जिसमें तर-  
 णता उत्पन्न हुई हो । (पु०) उच्च तरङ्ग, बड़े तरङ्ग ।

तरलित तद्० (पु०) [तरल + इत] चाञ्चल्यान्वित,  
 चलित, विचलित, आन्दोलित, द्रवीभूत ।

तरख तद्० (पु०) तरु, वृक्ष, पेड़, काज, गाड़ ।

तरवर तद्० (पु०) तरवर, बड़ा वृक्ष, उपयोगी वृक्ष,  
 म्रिय वृक्ष,  
 तरवरिया दे० (पु०) तरवार धारण करने वाला,  
 खड्गधारी, तलवार ।

तरवार तद्० (स्त्री०) तरवारि, तलवार, खड्ग, खौंटा ।  
 तरस दे० (स्त्री०) ग्रीम, कृपा, दया ।

तरसना दे० (क्रि०) बहुत चाहना, उत्कण्ठित होना,  
 जी लगा रहना, दया दिखाने की इच्छा रखने  
 पर भी दया नहीं दिखा सकना, किञ्च उत्क-  
 ण्ठित होना ।

तराई दे० (स्त्री०) दलदल, जलभूमि, पहाड़ या तदी  
 धादि के पास की भूमि, पटिभर, पर्यन्त भूमि,  
 वैगान, चरने की भूमि ।

तराज दे० (स्त्री०) गुला, पलड़ा, जो अन्न धादि के  
 तैलने के काम में आता है ।

तरान दे० (पु०) उद्धारण, उगाहन, प्राप्त किया हुआ,  
 तहसीला गया, वधूल किया गया राज कर  
 चन्दा धादि ।

तराना दे० (क्रि०) पार कराना, उद्धार करना,  
 बचाना ।

तरास तद्० (पु०) त्रास, भय, शङ्का, डर, पिपासा,  
 व्याध, तृषा ।

तरि तद्० { (स्त्री०) [तृ + इ] नौका, तरी, तरणी,  
 तरी तद्० } (स्त्री०) [तृ + षण् + इ]

तरिका दे० (पु०) दण्ड, प्रकार, उपयोग की रीति ।  
 तरु तद्० (पु०) वृक्ष, द्रुम, गाड़ ।—ज (पु०)  
 वृक्ष से उत्पन्न फल वृक्ष धादि ।—जीयन (पु०)  
 वृक्ष, मूल ।

तरुण तद्० (पु०) नवान, नूतन, युवा ।—उचर  
 (पु०) सात दिन के भीतर का उचर, नवचर,  
 नवीन उचर ।—दधि (पु०) ताज़ा दही, पाँच  
 दिन का आसी दही ।

तरुणार्ई तद्० (स्त्री०) शैवन, युवायस्या, युवाकाव,  
 तादृश्य ।

तरुणी तद्० (स्त्री०) युवागी, युवायस्या की स्त्री,  
 पोदगवर्षीया स्त्री, नववैयना, रमणी, कामिनी,

गृहकन्या, दन्ती नामक वृक्ष विशेष, पुष्प विशेष, शेषती का फूल ।

तरेड़ा दे० (प्र०) टेटी से पानी का गिरना, धार बाँध कर पानी गिरना ।

तरेरना दे० (क्रि०) त्वीरी चढाना, धौंल दिवाना, धौंल बदलना ।

तरेत दे० (प्र०) बया, लद्दर का चिन्ह ।

तरैया तद्० (स्त्री०) तारका, तारा नक्षत्र, तरिया ।  
यथा:—

“यथा तरैया प्रात के सब नृप भये उदास ।  
सखि दिन मणि कर राम हयि, सकुचाने चहुँ चास”  
—कवि याक्य ।

तरोस दे० (प्र०) तरोस, तीर पर का जल, पँदे पर का जल । यथा:—

“इयाम मुरति करि राधिका तकलि तरनिजा तीर,  
अमुदन करति तरोस को खिनक प्ररोहो नीर”  
—सतसई ।

तरौना दे० (प्र०) कर्णभूषण विशेष, एक प्रकार का गहना, जिसे छियाँ कानो में पहनती हैं । यथा—  
लसत खेत सारी दिख्यो, तरल तरौना कान  
पखो मनो मुरसरि सलिलरवि प्रतिबिम्ब बिहान ।”  
—सतसई ।

तर्क तत्० (प्र०) [तर्क + अल्] तर्क, ऊहापोह, बुद्धि-  
द्वारा विवेचना, न्यायशास्त्रसम्बन्धी विचार, अनुमान, कल्पना, अनुमानोक्ति ।—वितर्क (प्र०)  
शुद्धा, सन्देह, अनिश्चित सिद्धान्त को निश्चित करने के लिए विवाद ।—विद्या (स्त्री०) आन्वी-  
चिकी, न्यायविद्या ।—शास्त्र (प्र०) यह दर्शन के अन्तर्गत एक दर्शन विशेष, गौतम और वैशेषि-  
क का बनाया शास्त्र ।

तर्कक तत्० (प्र०) [तर्क + क्] याचक, आकाशी, तर्ककारक ।

तर्कन तत्० (प्र०) तर्ककरण, शुद्धा करना, सन्देह करना ।

तर्कित तत्० (प्र०) [तर्क + इत्] विवेचित, आलोच-  
ित, शकित, सन्देहान्वित, सन्देहशुक्त ।

तर्की तत्० (प्र०) [तर्क + इत्] तर्ककारक, नैयायिक,  
न्यायशास्त्रवेत्ता, विवेचक । (दे०) कर्णभूषण विशेष ।  
तर्कु तत्० (स्त्री०) सूत बनाने का यन्त्र, तर्कुषा,  
तर्कुला ।

तर्कुटी तत्० (स्त्री०) [तर्कुट + ई] सूत्र निर्माणयन्त्र,  
सूत बनाने की कल, तर्कुषा, फिरकी ।

तर्कुल दे० (प्र०) तारु का वृक्ष, तारु फल, तारुफल ।  
तर्खा दे० (प्र०) तीक्ष्णधारा, प्रखर धारा, वेग से  
चलने वाली धारा, शीघ्रवाहिनी धारा ।

तर्जन तत्० (प्र०) [तर्ज + अणट्] भर्त्सन, तारु,  
गर्जन, धमकन, क्रोध से भयानक शब्द करना ।  
तर्जनी तत्० (स्त्री०) अँगूठे के पास की अँगुली, निहँह  
करने वाली अँगुली, बतलाने वाली, प्रादेशिकी ।  
यथा—

इहाँ कुम्हड बतिया कोउ नाही ।  
को तर्जनि देखत मरि जाही ।” —रामायण ।  
तर्जित तत्० (प्र०) [तर्ज + ता] भर्त्सित, तारु,  
धमकाया गया ।

तर्जुमा दे० (प्र०) अनुवाद, उल्लथा, एक भाषा से  
लिखी हुई बात को दूसरी भाषा में करना ।

तर्णक तत्० (प्र०) नवीनवस्त्र, तर्णकाल  
बखड़ा ।

तर्तराता दे० (प्र०) स्निग्ध, शक्ति चिक्कन ।  
तर्तराना दे० (क्रि०) चञ्चलता, करना, गलकटाई  
करना, सफ़ाटा भरना ।

तर्तराहट दे० (स्त्री०) सफ़ाटा, गीदह भभकी, तल  
फटाकी, श्लाघा ।

तर्षण तत्० (प्र०) [तृप् + अणट्.] तृप्ति, तृप्तिरूप,  
प्रीणन, यज्ञकाष्ठ, महायज्ञविशेष, पितृ षड्  
देव ऋषि और पितरो को जलाहुलि द्वारा परि-  
तृप्त करना । मन्त्रों द्वारा पितृ पितामह के उद्धारण  
से जलदान ।

तर्ष दे० (स्त्री०) वाद्य की लय, स्वर, ध्वनि ।  
तर्षाना दे० (क्रि०) बख़रवाना, बकबक करना, उ  
चिड़ना ।

तर्ष तत्० (प्र०) [तृप् + अल्] अभिलाष, तृष्णा  
इच्छा, समुद्रमवन, तरणी, मुर्ष ।

तर्पण तद् ० (५०) [ वृष् + घनट ] तृषा, पिषामा, तृष्णा, प्यास ।

पैत तद् ० (५०) तृषित, पिषासित, तृषान्वित, प्यासा हुआ ।

वैरिया दे० (५०) तलवार बौधने वाला, खड्गधारी ।  
 तं दे० (श्री०) दया, कृपा, कृपा, अनुकम्पा ।  
 —स्राना (क्रि०) दया करना, कृपा करना ।

स्राना दे० (क्रि०) लज्जाना, लुभाना ।  
 त्रिं दे० (च०) परसों का चिह्नला दिन, परसों के घागे का दिन, वर्तमान दिन से पहला वा चिह्नला चौथा दिन ।

त्र तद् ० (५०) [ तम् + चल् ] स्वल्प, महीतल, अनूर्ध्व, नीचे, अधोभाग, गङ्गा, कानन, वन, तला, नीचे का भाग, तलवा, तली ।—घर (५०) नीचे का घर, तहखाना ।—छट (५०) मील, निचोड़, घुदघुदरा, नीचे बैठे हुई मील ।—पट (५०) मसमेट, मटियामेट, चौपट, विनष्ट ।—फार (च०) तल जोड़कर निकला हुआ ।

तक दे० (च०) तक, पर्यन्त, अघधि ।  
 तना दे० (क्रि०) धूनना, धुजना. तेल में धूनना ।  
 तफना दे० (क्रि०) तड़पना, छटपटाना, ध्याकुन होना ।

तमलाना दे० (क्रि०) सलघना, लोभना, विकृत गति से चलना, दुर्बलता से हक हककर चलना, हिलते डोलते चलना ।

तष दे० (५०) धुलाना, चाहानपन्न, प्रभुतापूर्वक धुलाना, महीना, मासिक, वेतन, वृत्ति ।

तचरिया दे० (५०) तद्वार धारण करने वाला ।  
 तघार दे० (श्री०) ध्वङ्ग ।

तघासना दे० (क्रि०) घैर खियाना ।  
 ता दे० (श्री०) पेंदा, अधोभाग, निम्नस्थान, घाद, झूते के नीचे का चमड़ा, तड़ा ।

तातल दे० (५०) लोकविशेष, रसातल, पाताल, नीचे के सात लोकों में का एक लोक ।

ताव दे० (५०) पुष्करिणी, वेणुदरा, शरोवर, तड़ाग ।

तलाश दे० (५०) अनुसन्धान, खोज, सन्धान, पतला गाना, शब्देवण, मार्गण ।

तलित दे० (५०) तला हुआ, मुना मांस, तला मांस ।  
 तलिन तद् ० (५०) शब्दा, (५०) विरल, दुर्बल, स्तोफ, स्वच्छ, अल्प, निर्मल ।

तली दे० (श्री०) तला, नीचा, पेंदा, झूते के नीचे का चमड़ा ।

तलुभा दे० } (५०) पर्व के नीचे का भाग ।  
 तलवा दे० } (५०)—चाटना (वा) हताश होना, निराश होना, हतमनोरथ होना ।

तलुवे तले हाथ धरना (वा) स्वार्थ सिद्धि के लिए अनुगत बनना, शत्रोपचो करना, शत्रो चप्ये करना, शुकामद करना, अनुनय करना ।

तले दे० (च०) नीचे, अधोभाग में, नीचे की ओर, उतर के, घट के, कुछ काम ।—ऊपर (वा) उलट पुलट, नीचे ऊपर, दोनों तरफ़ ।

तलैया दे० (श्री०) छोटा तालाब, परवल, अल्प जलाशय ।

तल्प तद् ० (५०) शब्दा, पलंग, बिछाना, अट्टालिका ।—कीट (५०) बिछाने का कोट, उड्डिया, माकड़, माकण, चिलुआ, जुआँ ।

तल्लज तद् ० (५०) प्रशस्त, उत्तम, प्रधान, उत्कृष्ट ।  
 तल्लिका तद् ० (श्री०) ताली, कुँची, कुञ्जी, चाभी ।  
 तव तद् ० (सर्व०) तुम्हारा, तेरा ।

तपना दे० (क्रि०) भाग देना, बाँटना, भाग करना ।  
 तपरी दे० (श्री०) पात्रविशेष, तर्बे का एक यर्तन जिसमें तर्पण आदि का जल गिराया जाता है ।

तसर तद् ० (५०) चसर, पट्टवख विशेष, एक प्रकार का रेशम ।

तसला दे० (५०) बटुई, बटलोई, पीतल की हंडी । जिसमें भात वगैरा बनाया जाता है ।

तस्कर तद् ० (५०) चोर, चोटा, अघहर्ता, दूसरे का धन अघहरण करने वाला ।—ता (श्री०) चोरपन, चोहूई ।

तस्करी तद् ० (श्री०) कोपना नारी, क्रोध स्वभाव की स्त्री, क्रोधिनी, क्रोधयुक्ता नारी, सेरी, सैर्य ।

तस्म दे० (पु०) चमोटा, चमोटी ।  
 तस्मई दे० (स्त्री०) खीर, हयिष्य ।  
 तस्मिन् तत्त्वं (सर्व०) उसमें, वहाँ पर ।  
 तस्मै तत्त्वं (सर्व०) उसके लिए, उसको ।  
 तस्य तत्त्वं (सर्व०) उसका ।  
 तस्सू दे० (पु०) मापविशेष, इंच ।  
 तहसनहस दे० (अ०) नष्ट भ्रष्ट, तितर बितर ।  
 तहसील दे० (पु०) खजाना, कोष, वसूली, करग्रहण,  
 राजकर ।—दार (पु०) खजाना रखने वाला,  
 राजकर ग्रहण करने वाला ।—दारी (स्त्री०) तह-  
 सील दार का पद, राज कर वसूल करने का  
 काम ।  
 तहाँ दे० (अ०) उस स्थान पर, उस स्थान में, उस  
 ठाँव, उस भूमि पर ।  
 तहाना दे० लपेटना, चौपतना, चौपरत करना, गड़ी  
 करना, मढ़ना, चुनना, चुनत करना ।  
 तहिया दे० (पु०) उस दिन, पहले के दिन, पहले ।  
 तहीं दे० (अ०) वहाँ, वहाँ, उस स्थान, उसी  
 स्थान ।  
 ता दे० (सर्व०) उधे, उसको । (पु०) अण्डे से बच्चा  
 निकालना, अण्डे को गर्म करना ।  
 ताँगा दे० (पु०) गाड़ी विशेष, एक प्रकार की घोड़ा-  
 गाड़ी, इक्का ।  
 ताँत दे० (स्त्री०) बमड़े की रस्ती, कपड़ा बिनने का  
 यंत्र ।—चाँधना (क्रि०) बकरकी को चुपाना,  
 चमड़े की रस्ती से बाँधना ।  
 ताँता दे० (स्त्री०) पंक्ति, अंशो, तार, कृतार ।  
 ताँती दे० (पु०) जातिविशेष, ततवा, कारिया,  
 पटवा, कपड़ा बिनने वाली एक हिन्दू जाति ।  
 ताँचड़ा दे० (पु०) ताँबे का यंत्र, ताँबे की यस्तु,  
 झूठी सुप्री ।  
 ताँवा दे० (पु०) धातुविशेष, ताँब, स्वनामप्रसिद्ध  
 धातु ।  
 ताँवत दे० (पु०) चर्मरज्जु, चर्मबन्धनी, तन्त्री, ताँत,  
 यन्त्र, जन्तर, गण्डा, टोटका ।

ताई दे० (स्त्री०) चाची, काकी, चाचा की स्त्री,  
 की स्त्री, पिता के बड़े भाई की स्त्री,  
 जिसमें जलेबी आदि बनाई जाते हैं ।  
 ताऊ दे० (पु०) बड़ा चचा, पिता का बड़ा भाई  
 पितृव्य ।  
 ताक दे० (स्त्री०) डीठ, दृष्टि, दर्शन, सब्य, दृष्टिमान  
 अवलोकन, सम्धान करण ।—घाक (स्त्री०)  
 ठोक समय ।  
 ताकना दे० (क्रि०) भाँकना, देखना, घूरना, दृष्टि  
 पात करना ।  
 ताग दे० (पु०) डेरा, सूत, सूख, धागा ।—ताँगा  
 (पु०) गोटा, फिनारी, धारी ।  
 तागना दे० (क्रि०) सोना, डेरा चलाना, टाँका  
 टाँका लगाना, मुई में धागा लगाना, मुई में  
 धागा पिरोना ।  
 तागा दे० (पु०) धागा, सूत, सुतली, मोटा धागा ।  
 ताज दे० (पु०) मस्तकावरण विशेष, राजा के सिंहा  
 की पगड़ी, मुकुट, फिरीट ।  
 ताजक तत्त्वं (पु०) ज्योतिष का ग्रन्थ विशेष ।  
 ताजन दे० (पु०) कोडा, कशा ।  
 ताजगो दे० (स्त्री०) नजोनता, सरलता, सरसता,  
 अच्छापन, टटकापन ।  
 ताजा दे० (पु०) टटका, टाटका, अम्लान, रसा  
 नवीन ।  
 ताजी दे० (पु०) चुद्र अश्व विशेष, पहाड़ी घोड़े की  
 एक जाति, तेज़ घोड़ा, कुत्ते की एक जाति ।  
 ताडक तत्त्वं (पु०) कर्णभूषण विशेष, कान का  
 गहना, कर्णकूल ।  
 ताटस्थ्य तत्त्वं (पु०) उदासीनता,  
 सामीप्य ।  
 ताड़ दे० (पु०) जान पहचान, परिचय, समझ, बोध,  
 अद्यगम, ताल, ताल धृष्ट, ताड़ का पेड़ ।  
 ताड़क दे० (पु०) ताड़ने वाला, समझने  
 जानने वाला ।

ताड़का तत्० (स्त्री०) मुकैयु नामक वृक्ष की कन्या,  
[मुकैयु निःसन्तान था, सन्तान प्राप्ति के लिये उसने  
ब्रह्मा की श्राद्धना की, ब्रह्मा के घर से ताड़का  
का जन्म हुआ। यह जन्म के पुत्र मुन्द को ठगही  
गई थी। किसी कारणवश मुन्द श्रगस्त्य के शप  
से मारा गया। स्वामी की मृत्यु का बदला लेने के  
लिये ताड़का और उसका पुत्र दोनों श्रगस्त्य के  
आश्रम में पहुँचे। श्रगस्त्य के शप से वे माता  
पुत्र राक्षस भावायुक्त हुए। इससे ताड़का का क्रोध  
और भी द्विगुणित हुआ, और वे ब्राह्मण जाति-  
के शत्रु बन बैठे। ब्राह्मण को देखते ही वे आग  
बहूला होकर उन पर आक्रमण करने लगे। इनके  
अत्याचार से श्रगस्त्य का आश्रम जन-शून्य हो गया।  
अपनी रक्षा के लिये महर्षि उस आश्रम को छोड़कर  
भग गये। उस वन का नाम ही ताड़कावन हो  
गया। गङ्गा यमुना के दक्षिण तट पर जो चारा  
ज़िला है वही ताड़का का वन है। ताड़का और  
उसके पुत्र के अत्याचार से महर्षिवृन्द बड़ा दुःखी  
हुआ। इनसे रक्षा पाने के लिये विश्वामित्र शपेया  
पहुँचे, महाराज दशरथ से राम और लक्ष्मण को  
विश्वामित्र ने भौंगा। यद्यपि पुत्रप्रेम के वशवर्ती  
महाराज दशरथ, राम लक्ष्मण को देना नहीं चाहते  
थे, तथापि राजधर्म की युक्तता की और देव उन्हे  
राम और लक्ष्मण को विश्वामित्र के माय कर  
दिया। विश्वामित्र के तथेयन में वे दोनों भाई  
आगे, रामचन्द्र ने ताड़का को मार डाला और  
मारीच को बाणों द्वारा दूर फेंक दिया। ताड़का  
को मारने से स्त्रीवध के दोष की आशङ्का रामचन्द्र  
पर नहीं की जा सकती है, क्योंकि जो ताल ठोक  
कर रण में लड़ने को तैयार है, जिन्हने स्त्री जनेचित  
सन्ना और कामलता छोड़ दी है उसे स्त्री कहना  
ही किस परिभाषा के अनुसार न्याय भङ्गत हो  
सकता है। ]

डङ्क तत्० (पुं०) ताटङ्क, कर्णभूषण विशेष, कान  
का एक गहना।

डन तत्० (पुं०) [तङ् + णिच् + धनच्] धमकाना,  
मारना, प्रहार करना, आघात पहुँचाना,।

ताड़ना दे० (क्रि०) पहचानना, जानना, समझ लेना।  
(स्त्री०) डाँट, धमकी, दण्ड, भर्त्सन।

ताड़नी तत्० (स्त्री०) [ताड़न + ई] छोड़े आदि को  
मारने की छड़ी, चायुक, कोड़ा, कथा।

ताड़नीय तत्० (पुं०) [तङ् + णिच् + धनीय]।  
ताड़ने योग्य, ताड़न करने के उपयुक्त, मारने योग्य,  
अपराधी।

ताड़ित तत्० (पुं०) [तङ् + णिच् + क्त] आघात-  
प्राप्त, जिसका ताड़न किया गया हो, मारा हुआ।  
ताड़ी दे० (स्त्री०) ताल, रस, नगीला ताड़ का रस,  
मादक द्रव्यविशेष, कटार की छूट।

ताड्यमान तत्० (पुं०) [तङ् + णिच् + शान्] पीछ-  
मान, हटाया गया, पीटा गया, आघातप्राप्त,  
यज्ञ के लिये मृदङ्ग आदि को आहत करना।

ताण्डव तत्० (पुं०) नृत्य, नटन, नाच, उद्दत नृत्य,  
कौमलता विवर्जित नृत्य। कहते हैं तण्डि नामक  
एक ऋषि ने दस विद्या का सर्वप्रथम मनुष्यों में  
प्रचार किया, इसी कारण इसको ताण्डव कहते हैं।  
महादेव और उनके गण इसी नृत्य के पक्षपाती हैं।

तात तत्० (पुं०) भद्र, भान्य, माननीय, श्रेष्ठ, पूज्य,  
श्लाघ्य, पिता, चाचा, प्रियभाई, प्रियमित्र "यथा—  
"तात प्रथम तात जन कहैऊ" —रामायण।  
यहाँ पहला तात शब्द प्रियमित्रवाची है और  
दूसरा पितावाची। प्रिय सम्बोधन, पुत्र शिष्य  
आदि का सम्बोधन, "कहहु तात जननी  
बलिहारी" —रामायण (पुं०) गरम, उष्ण,  
तप्त, तपाया हुआ।

तातनी, तातनी दे० (पुं०) उसकी, उसका।

तातल दे० (पुं०) ताता, गर्म, गरमीला, उष्ण,  
उष्णतायुक्त।

ताते दे० (सर्व०) उसमें, उस कारण से, उस हेतु से।  
तात्कालिक तत्० (पुं०) तत्कालोत्पन्न, उसी समय  
का उत्पन्न हुआ, तत्कालोद्भूत, तत्कालीन।

तात्पर्य तत्० (पुं०) अभिप्राय, अर्थ, मर्म, आशय।

तादवस्थ तत्० (पुं०) तद्रूपता, उसी प्रकार से  
स्थित, वही भाव।

तादर्थ्य तत्० (पु०) समान अभिप्राय, उसके प्रयोजन, उसके लिये ।

तादात्म्य तत्० (पु०) तत्स्वरूप, अभेदसम्बन्ध, भेद रहने पर भी अभेद-प्रतीति ।

तादृश तत्० (पु०) तद्रूप, उसी प्रकार, उसीके समान, वैसाही, उस कैसा ।—तादृशी (स्त्री०) तद्रूप, तत्समान ।

तान तत्० (स्त्री०) [ तम् + घञ् ] विस्तार, ज्ञान-विशेष, राग, स्वर । (पु०) गान का एक शब्द-विशेष ।—तौडना (क्रि०) परिहास करना, तान की समाप्ति करना ।—पूरा (पु०) याद्य विशेष, धीमा के ऐसा एक धाजा ।—सेन (पु०) नामी गधिया, यह गौड ब्राह्मण थे, इन्होंने गान विद्या में श्रद्धयुक्त पारदर्शिता प्राप्त की थी । कहते हैं एक समय अपने प्रतिद्वन्द्वी वैजू बावरे के साथ शास्त्रार्थ करते हुए इन्होंने दीपक राग गाया । दीपक राग गाते ही चारों ओर से दीपक आकर इनके शरीर में चिपट गये । शर्त यह थी कि तानसेन के शरीर में जब दीपक चिपटने लगेंगे, उसी समय वैजू-बावरा मेघ राग गाकर पानी बरसायेंगे, परन्तु वैजू बावरे ने ऐसा नहीं किया । अतएव तानसेन का शरीर दग्ध हो गया । इस अन्याय से दुःखित होकर इन्होंने अपने जन्मस्थान को छोड़कर गुजरात की यात्रा की । घटनाक्रम से यह एक गाँव में पहुँचे वहाँ ताता और नाना नामकी दो स्त्रियाँ जो इस विद्या में बड़ी निपुणता रखती थीं उन्होंने इनको श्रद्धा किया । तभी से तानसेनी राग का गाना ताना नाना से शुरू करते हैं ।

तानव तत्० (पु०) तनुता, चीणता, कृयता ।

ताना दे० (पु०) फैलाया हुआ मूल, कपड़े बिनने के लिये फैलाया हुआ मूल, ओत, तानामूल, तानी । यथा:—

“ताना नाचे बाना नाचे नाचे मूल पुराना,  
करिगह भोतर कविरा नाचे, यह सत्पुत्र कर बाना”  
—कबीर साहय ।

तानी दे० (स्त्री०) ताना बिनने का मूल । (पु०) रागी, गधिया ।

तान्त्रिक तत्० (पु०) तन्त्रशास्त्र, तन्त्रशास्त्रज्ञ, शास्त्रतन्त्र, शास्त्रसिद्धान्त, सुपरिहृत ।

ताना दे० (क्रि०) खींचना, कसना, तन्तू तानना टानना, फैलाना ।

ताप तत्० (पु०) [ तप् + घञ् ] सन्नाप, उष्णता ज्वाला, मन की पीड़ा, आधि ।—जनक (पु०) उष्णजनक, क्लेशकर, पीड़ादायक ।

तापक तत्० (पु०) तापकर्ता, ताप देने वाला, दुष्कृदायी, दुःखदाता । (पु०) उषर, बुझार ।

तापन तत्० (पु०) [ तप् + णिच् + भनट् ] तापकरण, तपाना, जलाना, शोकयुक्त होना, पीड़न

तापना दे० (क्रि०) चमाना, गर्माना, देह सफाई आग के पास बैठना ।

तापतिष्ठी दे० (स्त्री०) झीहा, चिलही रोग, वेद रोग ।

तापस तत्० (पु०) तपस्वी, योगी, तपस्वरश्मिकारु (पु०) इन्द्रगुदीवृक्ष, एक प्रकार का वृक्ष, जिस फल से तेल निकलता है ।

तापहीन तत्० (पु०) उष्णतरहित, शीततरहित ।

तापिच्छ तत्० (पु०) वृक्षविशेष, तमाल का पेड़ ।

तापित तत्० (पु०) दुःखित, तापयुक्त ।

तापी तत्० (स्त्री०) एक नदी का नाम, यह विन्ध्य पर्वत के दक्षिण की ओर है, अ नाम से प्रसिद्ध है ।

तापीय दे० (पु०) सेनामाखी, औषधविशेष ।

तापूस तद्० (पु०) तमालपत्र, तेजपात ।

ताप्य तत्० (पु०) धातुमाहिक, सेनामाखी तापीय ।

ताफ़ता दे० (पु०) एक प्रकार का देशी कपड़ा, धूपड़ाह भी कहते हैं ।

ताघड़तोड दे० (अ०) एक पर एक, लगातार, निरन्तर ।

तामचीनी तद्० (स्त्री०) धातुविशेष, ताँबा हुआ धातु ।

तामडा दे० (पु०) ताँबे के रङ्ग का एक रश्मि ।

तामरस तत्० (पु०) कमल, पद्म, ताँबा, सेना, सुवर्ण ।

तामल तद्० (५०) देशविशेष ।

तामलको तद्० (खी०) भूमिका, चौबला, एक प्रकार का वृक्ष ।

तामलिनी तद्० (खी०) तामलिनी, एक नगर का नाम, जो दक्षिण बंगाल में है, तामलूक ।

तामल तद्० (गु०) तामलिक, तमोगुणयुक्त, मूड़, जड़, दुष्ट, खल । (५०) क्रोध, ऋद्धार, तमोगुण ।

तामसिक तद्० (गु०) तामस, तमोगुण का कार्य, तमोगुणयुक्त, धर्मविवर्जित कृत्य, तमोगुणी, तामसी ।

तामसी तद्० (खी०) निगा, रात्रि, कालरात्रि, दुर्गा, जटामासी, (५०) क्रोधो, चालसी, तमोगुणी, रिमहा, कोपी, कोपन स्वभाववाला ।

तामह दे० (घ०) तत्र, उसमें, उस मध्य में, उस बीच में ।

तामा तद्० (५०) ताम, तौबा, स्वनामप्रसिद्ध धातुविशेष ।

तामील दे० (५०) सम्पादन करना, आचानुसार काम कर देना, मालिक की आज्ञा का पालन करना, देश विशेष ।

तामीली दे० (खी०) सम्पादन, आज्ञापान, आज्ञा पालन करने वाली को जो दिया जाता है । अज्ञात के अपराधियों को सम्मन तामील करने के लिये वादी और प्रतिवादी पक्ष से जो मिलता है, अथवा वे स्वयं दवाय दासकर ले लेते हैं । देग-भाषा विशेष, तामिळ देग का भाषा ।

तामेश्वर तद्० (५०) चौपधविशेष, अपने नाम से प्रसिद्ध चौपध, तमि का वंग ।

ताम्बूल तद्० (५०) तमोल, नागरबेल का पान, पान ।

ताम्बूली तद्० (५०) ताम्बूल की लता, नागरबेल ।

ताम्बूलिक तद्० (५०) तमोलो, पान बेचने वाला ।

तात्र तद्० (५०) धातुद्रव्यविशेष, तौबा ।—कर (५०) कठेरा, ठठेरा, तमि का व्यवहार करने वाला ।

—गर्म (५०) हृत्तिया, तीलाघोषा, तौबा इनसे निकाला जाता है ।—चूड़ (५०) कुकुट, मुग्गा ।

—पत्र (५०) तौबा का बना पत्र, पहले जिस पर राजाजा सिखी जाती थी ।

तायफा दे० (५०) नर्तकीसम्प्रदाय, रक्षियों का समूह, वेरपा, वेरपासमुदाय ।

तार दे० (५०) सोहे आदि धातुओं का खिंचा हुआ धूत, धातु का धागा ।—धौधना (वा०) लगातार जारी रखना, किसी काम को लगातार करना, तौता धौध देना ।—दूटना (धा०) अलग होना, छूट जाना, बंद होना ।

तारक तद्० (५०) मन्त्रविशेष. उद्धारकर्ता मन्त्र, रामतारक मन्त्र, तारा, वितारा, नचत्र, चौख की पुतली, तारा, एक राक्षस का नाम, देवराज । इनने तपस्या से ब्रह्मा को प्रसन्न करके दो वर पाये थे । पहला वर यह था कि इस संसार में उससे बलवाह दूखरा कोई उत्पन्न न हो, और दूसरा वर यह था कि महादेव के पुत्र से ही वह मारा जाय । ब्रह्मा का वर पाकर वह देवताओं को दुःख देने लगा । देवताओं के कष्ट की सीमा न रही । उसका अध साधन करने के लिये देवताओं ने प्रयत्न करना प्रारम्भ किया । महादेव के पुत्र उत्पन्न होने के लिये देवताओं ने पद्वन्त्र रचा । क्योंकि योगिराज महादेव विवाह करना ही नहीं चाहते थे । अतएव उन लोगों ने कामदेव को इसका भार धोया । कामदेव जाकर महादेव की क्रोधाग्नि में भस्म हो गया । इससे देवताओं के कष्ट की सीमा न रही । हिमाद्रितनयाः पार्वती शिव को पतिव्रण करने के लिये उन दिनों उसी पर्वत पर तपस्या कर रही थीं । पार तपस्या करने के अनन्तर महादेव प्रसन्न हुए और उनसे विवाह किया । उनके गर्भ से शार्तिकेय उत्पन्न हुए । देवताओं ने इनको अपना सेनापति बनाया । युद्ध में इन्होंने तारकामुद्रा का भार डाला । (२) इन्द्र का शत्रु राक्षस, इसने इन्द्र को बड़ा कष्ट दिया, इन्द्र विष्णु की शरण में गये, विष्णु ने नपुंसक का रूप धारण करके इसे मार डाला ।



तारकारि तत्० (५०) [ तारक + चरि ] तारकासुर का शत्रु कार्तिकेय, स्वामिकार्तिक, पढ़ानन ।  
 तारकी तत्० (५०) तारकायुक्त, तारासहित ।  
 तारकूट तद्० (५०) ताम्रकूट, रूपा, पीतल ।  
 तारकेश्वर तत्० (५०) सदाशिव, महादेव, इस नाम का तीर्थविशेष ।

तारकूटना दे० (क्रि०) टिक्की उठाना, कारवार नष्ट हो जाना, प्रवेश बन्द होना, भुलावा देकर अपने यश में लामे हुए का छिटक जाना ।

तारण तत्० (५०) [ तृ + णिच् + ञनट् ] उद्धारण, पारकरण, पार उतारना, उद्धार करना ।  
 —तरण (५०) पार करने जाता, उद्धार करने वाला, स्वयं उद्धार देनेवाला ।

तारणा दे० (क्रि०) पार करना, उद्धार करना, 'त्वाण करना, उबारना ।

तारणीय तत्० (५०) [ तृ + णिच् + ञनीय ] तारण करने योग्य, उद्धारणीय, उद्धार करने योग्य, पार करने योग्य ।

तारतम्य तत्० (५०) न्यूनधिक्य, मामान्य प्रभेद, दो पदार्थों में एक की अधिकता और दूसरे की न्यूनता, थोड़ा बहुत भेद ।

तारतोड़ दे० (५०) कारचोयी विशेष, एक प्रकार का सोने के तारों का काम, बूटेफारी, बूटा निकालने का काम ।

तारना दे० (क्रि०) उद्धार करना, उधारना, पार करना, मुक्त करना ।

तारपतार दे० (५०) तितरबितर, क्षिन्नभिन्न, फटाफूटा ।

तारा तत्० (स्त्री०) तारुका, नक्षत्र, श्राँखों की पुतली ।  
 (१) कपिराज बालि की स्त्री, यह सुषेण नामक कपिराज की कन्या और अङ्गद की माता थी । बाली के मारे जाने के अनन्तर इसने सुग्रीव को अपना पति बनाया था । यह पशुकन्याओं में है जिनका प्रातः स्मरण करना शाककारों ने बताया है ।

(२) दश महाविद्या के अन्तर्गत एक विद्या, यह काली का दूसरा रूप है, इसका आकार—काली

के समान तो नहीं—परन्तु तामी भयङ्कर है । इनका वर्ण नील है, जीभ लक्ष्मी और लक्ष्मण हैं । इनका यर्ष नील है, जीभ लक्ष्मी और लक्ष्मण हैं । इनका यर्ष नील है, जीभ लक्ष्मी और लक्ष्मण हैं ।

(३) देवगुरु बृहस्पति की स्त्री, चन्द्रमा इन्के सुन्दरता पर मोहित होकर एक दिन इनको श्लेष ले गये, बृहस्पति ने चन्द्रमा का श्लेषाचार देखा तो श्राँखों से काट सुनाया, देवता और श्राँखों ने तारा को दे देने के लिये चन्द्रमा से कहा, परन्तु चन्द्रमा ने किसी का कहना नहीं सुना । यह देख कर बृहस्पति को श्राँखों से लड़ने के लिये प्रेरित हुए । ब्रह्मा ने बात को अधिक बढ़ते देख चन्द्रमा को समझा बुझाकर उनसे तारा दिलवादी, उस समय तारा के गर्भ था, बृहस्पति ने गर्भ निकाल कर अपने पास आने का अनुरोध किया, तारा ने उस गर्भ को सरपत पर निकाल कर रख दिया । उस लड़के का नाम रखा गया दस्युसुन्तम, परन्तु जब चन्द्रमा को यह मालूम हुआ कि मेरे श्राँखों से उसकी उत्पत्ति हुई है तब चन्द्रमा ने उसे से लिया, श्राँखों उसका नाम रखा बुध ।

—गण (५०) नक्षत्रसमुदाय, नक्षत्रों का समूह ।  
 —पति (५०) चन्द्रमा, बृहस्पति, बाली ।  
 (५०) आकाश, गगन मण्डल, नभोमण्डल ।  
 (५०) चन्द्र, चन्द्रमा, विधु, निशाकर ।  
 (५०) नक्षत्रमण्डल, नक्षत्रसमुदाय ।

तारावाई दे० (स्त्री०) प्रसिद्ध सीसोदिया वीर पृथ्वीराज की वीरपत्नी । यह खैलङ्गी राजाराय बुरतल की कन्या थी । तारावाई के पिता पितामह बालि खोड़ा में राज्य करते थे । एक बार सायणा नामक अफगान ने इन पर चढ़ाई की, पुरतल वहाँ से भाग कर राजपूताना आरावली के पाल-देशस्य वेदनौर में आकर रहने लगे । उस समय तारावाई युवती थी, युद्ध के राज में रहना उन्हें बहुत अधिक अच्छा मालूम होता था । उनकी प्रतिज्ञा थी कि जो मुसलमानों से खोड़ा का उद्धार करेगा उसीसे मैं अपना विवाह करूँगी । मेरा के राजा रायमल के पुत्र पृथ्वीराज को इच्छा

अपना पति बनाया । पुनः इस दम्पति ने राजपूत सेना लेकर छोड़ा पर लड़ाई की, और उस पर अपना अधिकार कैला लिया । पृथ्वीराज प्रमुराय की विजयसमाप्तकता से मारे गये, उन्हींके साथ वीरशाला तारावार्द का भी अन्त हो गया ।

(२) प्रसिद्ध महाराष्ट्रवीर शिवाजी की पुत्रबधू, और राजाराम की पत्नी । १७०० ई० में पति की मृत्यु होने पर सिंहगढ़ पर औरङ्गजेब की सेना की लड़ाई रोकने के लिये तारावार्द ने योद्धाओं का वेष धारण कर लड़ाई की थी । तीन बरस तक लगातार लड़ाई होने के बाद सिंहगढ़ औरङ्गजेब के अधिकार में आया था, किन्तु ज्योंही औरङ्गजेब वहाँ से सैदा खोईहीं तारावार्द ने सिंहगढ़ को अपने अधिकार में कर लिया । मरहटों के अनेक युद्ध और राजनीति में तारावार्द की विमलवण युद्धमत्ता का परिचय मिलता है । १७५३ ई० में तारावार्द ने परनेकयाबा की ।

तारिका तल्० (खी०) तालीर, ताड़ी, (तद्द०) खोंखों की पुतली ।

तारिणी तल्० (खी०) दुधरी महाविद्या, उद्धारकर्त्री, उद्धार करने वाली स्त्री ।

तारी दे० (खी०) ताड़ी, मादकद्रव्य, तार का बना हुआ । तेल मापने का यंत्र जिसमें पाँच तैर तेल आता है ।

तारीय दे० (खी०) दिवस, दिन, तिथि ।

तारीफ दे० (खी०) प्रशंसा, स्तुति, स्तव ।

तारुय तल्० (घ०) वैद्यन, युवत्व, वैद्यनायस्या, जवानी ।

तारु तद्द० (घ०) तालु ।

तारे गिनता दे० (वा०) नौद न धाना, निठल्ले घैटे रहना, निकम्मा रहना ।

तार्किक तल्० (घ०) तर्कशास्त्रवेत्ता, नैयायिक, न्यायशास्त्री ।

तारु तल्० (घ०) इतिहास, तालीयपत्र, दुर्गा का सिंहासन, तात्पत्र, गान का परिमाण, दो हाथ का शब्द, ताली बजाने का शब्द, ताड़ का पेड़,

खजूर का पेड़ ।—खजूहीं (खी०) वृक्षविशेष, दुपहरिया वृक्ष ।—मारना—ठोंकना (वा) युद्धार्थ आह्वान करना, चेष्टाविशेष से मजबूत करने के लिए युजाना, एक मुखा को मोड़ कर दूसरे हाथ में उसे ठोंकना ।—ध्वज (घ०) बलराम, श्रीकृष्ण के बड़े भाई ।—पत्नी—मूलिका (खी०) शौर्यविशेष, मूल ।—वृन्त (घ०) पंखा, तालपत्र निर्मित पंखा, व्यवहन, बेना, खेतिया ।—वृन्तक (घ०) पंखा, शयन ।

तालक दे० (घ०) चागल, चिह्न, कितकिनी ।

तालमखाना दे० (घ०) खाना प्रसिद्ध पैधा, फन ।

तालव्य तल्० (घ०) ताल के द्वारा उच्चारित वर्ण, तालुजात ।

ताला दे० (घ०) द्वार बन्द करने की कल, द्वारका अधरीधक यन्त्र, कोठे का लख ।

तालाङ्क तल्० (घ०) बलद्वय, हलधर ।

ताली दे० (खी०) चाभी, कुन्नी, ताला बन्द करने की चाभी, दोनों हाथ बजाने का शब्द, ताल वृक्षविशेष ।—एक हाथ से पजाना (वा०) अन्वेषणी बात, अस्मभय ।—पजाना—मारना (वा०) हाथ पर हाथ पटकना, ठट्ठा करना, ठहाका मारना, परिहास करना, धुतकारना, दुत कारना, धिक्कारना ।

तालीम दे० (घ०) शिक्षा, सिखावन, उपदेश, अध्वयन ।

तालीस तल्० (घ०) वृक्षविशेष ।

ताल् तल्० (घ०) तारु, मुँह के ऊपर का भाग, तालुषा ।

ताव तद्द० (घ०) ताप, हन्ताप, क्रोध, रोंठ, चंकड़, अकड़न, तमक, बल, शक्ति, सामर्थ्य, कामुज का तड़ा, परख, परीक्षा, उतावली, शीघ्रता, हड़बड़ी ।—देना (क्रि०) मरोड़ना, रँठना, बटना, बलदेना, झूठों पर हाथ रखकर अपनी शक्ति बतलाना, चाशनी बनाना ।—पँचखाना (वा०) गरम होना, क्रोधित होना ।

तावत् तल्० (घ०) तब तक, यहाँ तक, इतना तक, अधविद्याची अवयव ।

तावना तद्० (क्रि०) तापन, गरम करना, गरम करके खराई खोटाई की जाँच करना, ताव देना, परखना, फसना, जाँचना, उल देना, धकड़ाना, मरोड़ना, रेंठना ।

तावीज़ दे० (पु०) अलङ्कारविशेष, गण्डा, यन्त्र ।

तावेदार दे० (पु०) अधीन, वशतापन्न, नौकर, सेवक, भृत्य ।

ता (श) स्त, दे० गजीफा, बूटेदार पट्टू, एक प्रकार का खेल खेलने के लिये कई प्रकार के चित्रित पत्ते ।

तासा दे० (पु०) वाद्यविशेष, एक प्रकार का देशी बाजा ।

तासु दे० (सर्व०) उसको, उसका, तत्संबन्धी ।

तासो दे० (सर्व०) उससे ।

ताहि दे० (सर्व०) उसको, उसे ।

ताहिरी दे० (स्त्री०) भोजनविशेष, एक प्रकार का भोजन, पीले चाँवल और घरी ।

तिकतिक दे० (पु०) गाढो आदि के बेल चलाने का शब्द ।

तिकुरी दे० (स्त्री०) तिहाई, तीसरा, एक प्रकार का यन्त्र जिससे यज्ञोपवीत का भूत बटा जाता है ।

तिकोनिया तद्० (पु०) त्रिकोण, तीन कोण का पदार्थ, तिखूँटा ।

तिक्रा दे० (पु०) मास का छोटा टुकड़ा ।

तिक्र तद्० (पु०) [तिज् + क्र] रसविशेष, तीव्ररस, तीता, तीखा, चिरायता, तिक्रसयुक्त, तीता, कड़ुआ, चरपटा ।—तयडुला (स्त्री०) औषधविशेष, पिप्पली, पीपल ।—चक्रा (स्त्री०) फुटकी ।

तिक्रक तद्० (पु०) पटोल, परवर, चिरतिक्र, चिरायता ।

तिक्रका तद्० (स्त्री०) कट्टुगुन्धी, चिरपोटा ।

तिखरा दे० (पु०) तिथारा, तिहारा, तिहरा, तीन-धेर ।—करना (क्रि०) तीन बार खेत को जोतना, तीन बार स्वीकार करना ।

तिखारना दे० (क्रि०) दो बार जोते हुए खेत को जोतना, किसी बात को क्षयता जाँचने के लिये तीन बार पूछना, परखना ।

तिगुन तद्० (पु०) त्रिगुण, तिनगुना, तिहारा ।

तिग्म तद्० (पु०) [तिज् + म] तीक्ष्ण, चम, कट्टु, पैना, तेज ।

तिग्मांशु तद्० (पु०) [ तिग्म + अशु ] सूर्य, तारे, भावु ।

तिच्छन तद्० (पु०) तीक्ष्ण, तेज, फटार ।

तिजारी दे० (स्त्री०) अन्तरिया, कम्पज्वर, तीले दिन आनेवाला ज्वर ।

तिजिल तद्० (पु०) [तिज् + इल्] चन्द्रमा, राक्षस ।

तियाका तद्० (पु०) तृण, घास, तिनका, घास टुकड़ा ।

तित दे० (अ०) तत्र, तहाँ, तहाँ ।

तितना दे० (पु०) उतना, परिमाणवाची ।

तिनरधितर दे० (अ०) छिन्नभिन्न, इधर उधर छितरा ।

तितरी दे० } (स्त्री०) कीटविशेष, लघुकीट ।

तितली दे० } (स्त्री०)

तितिक्रक तद्० (पु०) सहनशील, सहिष्णु, बर्तन, जमायाह्, धैर्यधाह्, धीरतायुक्त ।

तितित्ता तद्० (स्त्री०) धैर्य, धीरज, जमा, सहनशीलता ।

तितित्तु तद्० (पु०) [ तिज् + सत् + उ ] सहिष्णु, तितित्तक ।

तितित्म्या दे० (पु०) अटक, धोखा, धौंधल, धम्य, अनुकरण ।

तितीर्षु तद्० (पु०) [ तृ + सत् + उ ] तल्लेखना करना चाहनेवाला ।

तितिर तद्० (पु०) तितिरपची, पक्षिविशेष ।

तिथि तद्० (स्त्री०) प्रतिपदा आदि पन्द्रह चन्द्रकला की क्रिया, चन्द्रकला का उतराव, घटाव, चन्द्रकला से युक्त काल, दिन, तारीख ।

(पु०) पञ्चाङ्ग, जन्ती पत्रा ।—स्य (पु०) तित की हानि ।

तिदरा दे० (पु०) तीन द्वार का स्थान, घर, तिनतीन द्वार हैं, पैठक ।

तिदरी दे० (स्त्री०) तीन द्वार का छोटा घर, छोटी बैठक, छतरी।

उधर दे० (सर्व०) उस स्थान पर, उस स्थान की ओर।

विधारा दे० (पु०) विधाविशेष, तीन धारे का चक्रम।

तिनकना दे० (क्रि०) टोसना, फड़फड़ाना, चिड़ना।

तेनका दे० (पु०) खर, डाँठी, घास का टुकड़ा,

तृण।—दाँती में लेना (वा०) शरण जाने की एक

मुद्रा, अधीन होना, जो का दान माँगना, अपराध क्षमा करना।

तिन्तिड़ी तत्० (स्त्री०) हमली, कुचिया।

तिन्नी दे० (स्त्री०) एक प्रकार का चावल, जो कृष्ण-

हार में गिना जाता और अष्टमिपञ्चमी के दिन खाया जाता है।

तिन्द तद्० (पु०) वृक्ष और फल विशेष।

तिन्दुक तत्० (पु०) तमालवृक्ष, तँदुवा।

तिन्दुला तत्० (स्त्री०) औषधविशेष, पीपर।

तिवारा दे० (पु०) तीनबेर, तीसरी बार।

तिव्यत दे० (पु०) देशविशेष, हिमालय के उत्तरस्थित एक देश का नाम।

तिमि तत्० (पु०) अतथोजतविस्तृत मत्स्य, बृहत् मत्स्यविशेष।

तिमिङ्गल तत्० (पु०) निमि से भो यड़ा मत्स्य, सुबृहत् मछली, एक प्रकार का अष्टज जीव।

तिमित तद्० (पु०) स्तिमित, स्थिर, अवशुल, अचल।

तिमिर तत्० (पु०) अन्धकार, अँधेरा, अँधियारा।

—हर (पु०) सूर्य, रवि, चन्द्रमा, अग्नि।

तिय, तिया दे० (स्त्री०) स्त्री, योधि, नारी, अग्रजा।

तिरकाना तद्० (पु०) त्रिकोण, तिनकानिया, तीन कोने की वस्तु।

तिरखा तद्० (स्त्री०) नृण, विपासा, प्यास।

तिरखूँटी दे० (स्त्री०) त्रिकोण अक्षविशेष, तीन कोने का अक्ष।

तिरछा तद्० (पु०) तिर्यञ्च, टेढ़ा, बाँका, चक्र।

—देखना कनखियों से देखना, तिरछी बिलयन से देखना।

तिरछाना तद्० (क्रि०) टेढ़ा करना, बाँका करना, हठीला होना, हठ करना।

तिरछी तद्० (पु०) टेढ़ी, बाँकी।

तिरतिराना दे० (क्रि०) रिसाना, फिरफिराना।

तिरना दे० (क्रि०) तैरना, उतराना, पैरना, हेलना।

तिरपद् तद्० (पु०) तिपाई, तीन पैर के चासन।

तिरपदी तद्० (स्त्री०) }

तिरपन दे० (पु०) पचास और तीन, ५३, तीन अधिक पचास।

तिरपैलिया दे० (पु०) सिंहद्वार, राजमहल का वह द्वार जो धनुष के आकार का बना हुआ हो।

तिरफल तद्० (पु०) त्रिफला, तीन फल का समुदाय, अँवला, हर और बहेड़ा, तीन फल।

तिरभंगा दे० (पु०) टेढ़ामेड़ा, ऊभड़ खाभड़, तिच्छा, बाँका।

तिरभंगी तद्० (पु०) अन्धविशेष, श्रीकृष्ण का एक नाम।

तिरस् तत्० (पु०) टेढ़ापन से, चक्रता से।

तिरसठ दे० (पु०) साठ तीन, ६३, तीन अधिक साठ।

तिरस्कार तत्० (पु०) निन्दा, अवमान, अपमान, अप्रतिष्ठा।

तिरस्कृत तत्० (पु०) अपमानित, निन्दित, अवज्ञात।

तिरस्क्रिया तत्० (स्त्री०) अनादर, अप्रतिष्ठा, अयहेला।

तिरहुत दे० (पु०) देशविशेष, विहार का एक प्रान्त, मिथिला।

तिराना दे० (क्रि०) तैरना, धार होना, पैरना, साभ लेना।

तिरानये दे० (पु०) नखे और तीन, ८३, तीन अधिक नखे।

तिराघ दे० (पु०) पैराघ, हलाघ, पाह, तरने योग्य।

तिरासी दे० (पु०) अस्सी तीन, ८३, तीन अधिक अस्सी।

तिरिया दे० (स्त्री०) स्त्री, नारी, सुगार, कामिनी, योधि।—चरित्र (पु०) खियों का अक्ष प्रपञ्च,

स्त्री का मक्षर।

तिरीविरि दे० (अ०) तितर वितर, खिन्नमिन्न, उधलपुधल ।

तिरेन्दा दे० (पु०) तरेत, तिरैदा ।

तिरोधान तत्० (पु०) [ तिरस् + धा + अनट् ] अनन्तद्धान, सुफान, छिपान, दकाध, रुपधान, आच्छादन ।

तिरोहित तत्० (गु०) [ तिरस् + धा + क्त ] अनन्त-हित, गुप्त, आच्छादित ।

तिर्मिरा दे० (पु०) चञ्चल, अस्थिर, उच्छ्रिता से उपाकुल, उद्विग्नचित्त ।

तिर्मिराना दे० (क्रि०) झूलाना, लहकना, चौधियाना, क्याकुलतासे हाथ पैर धुनना, पानी पर तेल की झूँटों का फैलना ।

तिर्मिरी दे० (स्त्री०) चक्र, घुमड़ी, भँवर ।

तिर्यक् तत्० (गु०) [ तिरस् + अच् + क्तिप् ] टेढ़ा, बाँका, तिरछा, यक्र, कुटिल, प्राणिविशेष ।—पति (पु०) चिंन, यार्दूल ।—स्त्रीता (पु०) पशु पत्नी आदि, ब्रह्मा का आठवाँ सर्ग ।—यौनि (पु०) पशु पत्नी आदि ।

तिरहुत दे० (पु०) प्रान्तविशेष, विहार का प्रान्त, मिथिला ।

तिल तत्० (पु०) शस्यविशेष, खनाम प्रसिद्ध अश्व-विशेष, शरीर का चिन्ह, काले काले शरीर के दाग, अत्यल्पकाल, बहुत थोड़ा समय, निमेषमात्र समय ।—कुट (पु०) तिलकी मिठाई, तिल की बनाई एक प्रकार की मिठाई ।—चट्टा (पु०) कीटविशेष, तैलया, तैलवारिका ।—चायली (स्त्री०) मिला हुआ तिल और चायल, एक प्रकार का चबेना, काली और खेत वस्तुओं का मिलाप ।

—चूरी (स्त्री०) तिलकुट, मोदकविशेष, कुटा हुआ तेल ।—तैल (पु०) तिलका तेल, तिलका ही तेल ।—धेनु (स्त्री०) तिल की बनी हुई गाय, जो दान करने के लिये प्रायः माघ महीने में बनाई जाती है ।—पर्णी (स्त्री०) चन्दन ।—पिञ्ज (पु०) तिलका पक्षी ।—पिण्डक (पु०) तिलकी खली, तिल का उबटन ।—चर (पु०) पक्षिविशेष ।—मेद (पु०) पोस्त का पैधा, पोस्त का बिरवा ।

तिलक तत्० (पु०) टीका, चन्दन आदिका मल-कस्यित चिन्ह, भ्रुकभेद, पुष्पवृक्षविशेष, हाँसे स्थ तिल, अश्वभेद, रोगभेद । (गु०) घोट, प्रसव, मुण्ड, यह शब्द विशेषण शब्दों के अन्त में होने से उनकी उत्कृष्टता—अधिकता बतवाता है ।

या :—

“रघुकुलतिलक सदा गुम उधपन थापन”

—जानकीमठ ।

तिलङ्गा दे० (पु०) सिपाही, सैनिक, तैलङ्गदेश रहने वाले, कहते हैं सबसे पहले अंग्रेजों सेना में तैलङ्गदेश के ही यासी भर्ती किये गये थे, इस कारण अंग्रेजी सैनिकों का नाम ही तिलङ्गा हो गया ।

तिलङ्गो दे० (स्त्री०) गुह्री, पतङ्ग, चक्र ।

तिलडा दे० (स्त्री०) तिनलरा हार, तीन सर हार ।

तिलहा दे० (गु०) तेल के समान चिकना, चिह्न, तैलिया, तेली ।

तिला दे० (पु०) सेना, पगड़ी का छोर, जिसमें छोर के तारों का काम किया जाता है ।

तिलाई दे० (स्त्री०) सेनाहला, छोटी कडाही ।

तिलुवा दे० (पु०) तिला का लड्डू, तिल का लड्डू ।

तिलैहा दे० (पु०) पक्षिविशेष, पुष्प, पण्डुकी ।

तिलोत्तमा तत्० (स्त्री०) स्वर्ग की अङ्गना, स्वर्गीय अप्सरा । पहले दैत्यराज हिरण्यगिषु के में निकुम्भ नामक एक दैत्य उत्पन्न हुआ था । सुन्द और उपसुन्द नामक दो पुत्र थे । इन ने त्रिलोक जीतने की इच्छा से कठोर तपस्या ब्रह्मा ने इन्हें वर दिया कि त्रिलोक में कोई भी गुम लोगो को मार नहीं सकेगा, हाँ यदि किसी कारण आपस में विवाद करोगे, तभी दोनों की परस्पर के आघात से मृत्यु होगी । क्या था, वे उपद्रव करने लगे, देवता चार से अत्यन्त पोडित हुए । मिलकर सभी ब्रह्मा के पास गये, ब्रह्मा ने विश्वकर्मा को

घोर मर्दाङ्ग मुद्दरी रमणी की सृष्टि करने के निचे उनसे कहा, उन्हें तिलोदक के समी उच्चम पदायों में तिल तिल संग्रह करके एक रमणी की सृष्टि हो, जिसका नाम तिलोत्तमा रखा गया। प्रजा की आशा में वह मुद्दर उपमुद्दर के समीप गयी। उसको देख उन चमुरों के हृदय में आप ही आप विवादान्त भङ्क उठा। वे तिलोत्तमा के निचे आपम में सड़ने लगे और व्यापल ही में कट मर गये। यही तिलोत्तमा दुर्गासा के शाप से याणासुर के यहाँ उत्पन्न हुई थी।

तिलोदक तत्० [तिल + उदक] तिल और जल मिलाकर तर्पण, पितरों का तर्पण, पितृतर्पण।  
 तिलोदन तत्० (प्र०) [तिल + चोदन] मिला हुआ तिल और चोदन, त्रिचड्डी, फूसारात्र।  
 त्रिवारा तद्० (प्र०) तिसरी त्रिगुणित, तीसरे बार।  
 त्रिवासी दे० (प्र०) तीन दिन का वामी।  
 त्र्य तद्० (स्त्री०) तृष, तृष्णा, पिपासा, प्यास।  
 तृणना तद्० (क्रि०) ठहलना, स्थिर होना, विराजना, प्रकाश होना, गति शून्य होना।  
 तृणित तद्० (प्र०) ठहरा हुआ, बैठे हुआ।  
 तृष्य तद्० (प्र०) [तृष + य] पुष्यनक्षत्र, आठवाँ नक्षत्र, वैष मास, कतिगुण।  
 तृष्का दे० (सर्व०) उमका, उसके सम्बन्धी।  
 तृषरायत दे० (प्र०) बादी और प्रतिबादी से दूतरा, मध्यस्थ, मध्यवर्ती, उदासीन, विचरई।  
 तृषत दे० (प्र०) चौपध विशेष।  
 तृषत्तर दे० (प्र०) सत्तर और तेन, ७३, तीन और सत्तर।  
 तृषरा दे० (प्र०) तिलड़ा, तीनलड़ा। (प्र०) त्रिगुणित, तिगुना।  
 तृषराना दे० (क्रि०) तिहरा करना, तीन बार बटना, तीन बार बलदेना, त्रिगुणित करना, तीन लक्ष करना।  
 तृषरायत दे० (स्त्री०) तिगुनाच, तिगुना करने का काम।  
 तृषरे दे० (सर्व०) तिहारे, गुम्हारा।  
 तृषरे दे० (स्त्री०) तीसरा हिस्सा, तीसरा भाग।

तिहायत दे० (प्र०) तीसरा, उदासीन, मध्यस्थ, पचपात रहित।  
 तिहारी दे० (स्त्री०) गुम्हारी, गुम्हारे सम्बन्ध की।  
 तिहारे दे० (प्र०) गुम्हारे, तिहारे, गुम्हारे सम्बन्ध का।  
 तिहारे दे० (प्र०) गुम्हारा।  
 तिहु दे० (प्र०) तीना, तीन।—पुर (प्र०) त्रिपुर, देवों का एक प्रधान नगर, इस नगर का नाश महादेव ने किया था।—लोक (प्र०) त्रिलोक, तीनों लोक, पाताल, मर्त्य और स्वर्ग।  
 तीकट दे० (प्र०) नितम्ब, पद्माङ्ग, कटि का पिछला भाग।  
 तीक्ष्ण तद्० (प्र०) तेज, तीखा, पैना, चोख, चोखा, क्रोधी, गरम प्रकृति, तीता, कड़वा, उन्हाही, बिमकारी, चतुर, दक्ष, प्रवीण, निपुण, विप, सौह, युद्ध, मरण, यज्ञ, समुद्र का नौन, यथचार, श्वेतकुण्ड, तीक्ष्णशय, यथा:—सरलोषा, चाड्डी, ज्येष्ठा, मूल। (प्र०) निरासल, सुसुद्धि योगी।—कण्टक (प्र०) धतूर, धनुन, इगुदी, कतीर।—कन्द (प्र०) प्याज, पलाश।—कर्मा (प्र०) निपुण, दक्ष, चतुर, कुशल।—ता (स्त्री०) तेज, उरत्रय, प्रखरता।—सूत्र (प्र०) शादल, ट्याग्र, बाघ।  
 तीखा तद्० (प्र०) तीक्ष्ण, चोखा, पैना, तेज, धारदार।  
 तीखी तद्० (स्त्री०) सूक्ष्मस्वर, पतला शब्द।  
 तीखुर दे० (प्र०) वृक्षविशेष का सत, आटा विशेष, फलाहार विशेष।  
 तीखन तद्० (प्र०) तीक्ष्ण, तेज, धारदार, चोखा, पैना।  
 तीज दे० (स्त्री०) तृतीया, तीसरी तिथि, दक्ष का तीसरा दिन।  
 तीजा दे० (प्र०) तीसरा, मृतक के तीसरे दिन का कर्म।  
 तीजिया दे० (स्त्री०) प्रायण शुक्ल तृतीया का पर्य, त्योहार विशेष।  
 तीजे दे० (प्र०) तीसरा।  
 तीत दे० (प्र०) तीखा, कड़वा, तीव्र।

तीतर दे० (५०) तित्तिर, पत्तिविशेष ।— के मुँह में लक्ष्मी (५०) अयोग्य सङ्गम, जो जिस काम के योग्य नहीं है उस पर वह काम सौपना ।

—के मुँह में कुशल (५०) अयोग्य के काम से अपनी रक्षा की आशा, जो जिसके लिये मर्षया अयोग्य है उससे आशा रखना ।

तीतररी दे० (खी०) कीट विशेष, तितररी, पतङ्ग, पतङ्गा ।

तीता दे० (५०) तीन कटुषा, कटु, तीव्र, तीक्ष्ण ।

तीन दे० (५०) सद्य विशेष, त्रि, ३ ।—तेरह (५०) तितर खितर, डार्वोडोल, खिटफूट, छिन्न-भिन्न, दल का नाश, सपूह भ्रश ।

तीय दे० (खी०) अथवा, स्त्री, नारी, यथा:—  
सधिया—

पीय पहारनि पास न जाहु यो,  
तीय वहाहुर से कह सोचै ।

कौन बचै है नयाव सुन्हें,

भनै भूपन भोसिला भूप के रे, वै ॥

वन्दि कियो इहे शारदस्तज्ञा,

असधन्त से भाउ करण से दोचै ।

सिह सिवाजी के वीर से,

जो अमीरनि बाचि गुनीजन जोचै ।

शिवराज भूपण ।

तीयल दे० (५०) छियो क पहनने के तीन कपड़े ।

तीयन दे० (५०) तरकारी विशेष, एक प्रकार की धन हुई तरकारी ।

तीर तत्० (५०) नदी का किनारा, तट, फूल, घण, सर, समीप, निकट, पास ।—स्थ (५०) तीर-स्थित, तटस्थित, तीर पर का ।

तीरथ तद्० (५०) तीर्थ, देवयात्रा, देव दर्शनार्थ यात्रा ।—राज (५०) प्रयाग खेल सब तीर्थों का राजा, प्रयाग, यथा:—

वट विश्वास अचल निज धर्मा,

तीरथराज प्रयाग सुकर्मा । —रामायण

तीरन्दाज्ञ दे० (५०) तीरलेखक, तोर चलानेवाला, थाण चलाने में निपुण ।

तीर्थ तत्० (५०) [ तृ + क ] उत्तीर्थ, पारङ्गन, पार हुआ ।

तीर्थ तत्० (५०) गार्ह, अधार, खेल, पुरस्कार, उपाय, नारीरज, अवतार, घाट, ऋषि भक्ति जल, पात्र, घर्तन, उपाध्याय, उपदेशक, योगि दर्शन, विप्र आगम, निदान, संन्यासियों के उपाधि विशेष, ब्राह्मण का पहिना कान ।—तु (५०) जैनियों के चै बीस धर्माचार्य अथवा अतार ।—धर्वात्त (५०) तीर्थकाक, तीर्थ में रह वाले काक प्रकृति के मनुष्य । मिथ्या यात्रि अद्वाभक्ति हीन तीर्थयात्री ।—पर्यटन (५०) पुण्यस्थानों का घूमना ।—राज (५०) तीर्थों के तीर्थस्वामी, महान् तीर्थ प्रयाग ।—सेवी (५०) पुण्यक्षेत्र में वास करने वाले, यानप्रस्थाश्रमी ।

तीली दे० (खी०) तूली, सलाई, पिण्डली ।

तीघर दे० (५०) वर्षलङ्कार, जाति विशेष, बड़ेन ठपाध ।

तीघ्र तत्० (५०) अधिक तेज, कटु कटुषा, प्र —गन्धा (खी०) जवाईन, अजवाइन, अजु —वेदना (खी०) अत्यन्त अधिक कष्ट, महापान्तीस दे० (५०) संख्या विशेष, बीस और दश, तीस दश, ३० ।

तीसरा दे० (५०) तृतीय, तिहायत ।

तीसी दे० (खी०) अश्वविशेष, चतसी, चतसी, पसीना, (५०) तीस सख्या से परिमित ।

तुक दे० (५०) पद, छन्द, भाग, यमक, समान की योजना, यथा—निहारी, तिहारी, अदि चैपाई आदि के अन्त में जिस प्रकार के पद आते हैं । यथा:—

दुरग पर दुरग जते सरजा सिवाजी गाजी  
ठग नाचे दुरग पर हंढमंड करने ।

भूपन भनत धाले जीत के नगारे भारे,  
सारे करनाटी भूप सिंघल के सरके ।

मारो सुनि सुभट पनारे उदभट तारे,  
तारे पागे भिरन सितारे गजधर के ।

गोलकुण्डा धीरन के बीजापुर बीरन के,  
दिल्ले उर मीरन के दाबिम से दरके ।

—सिवाजावली ।  
—घन्दी (खी०) कविता विशेष, जिसमें पद हैं ।

तुङ्ग तत्त्वं (३०) पुष्पगवृक्ष, पर्वत, पुष्पवृक्ष, नारिकेल, योगमैत्र, (गु०) उन्नय, उच्च, ऊपर, प्रधान, उग्र, त.प्र.।—भद्रा (ख०) दक्षिण दिग् का प्रसिद्ध नदी, मैसूर प्रान्त का पुरु नदी का नाम।—सुक्ष्म (गु०) नारियल का पेड़।

तुच्छ तत्त्वं (गु०) अल्प, छोड़ा, बहुत छोड़ा, अल्पज्ञान, निःस्फुट, हेर, नीच, हीन, अजम, निडरता, निकम्मा।—स्तान (गु०) देयज्ञान, अनादर, अनान्यता।—ता (ख०) आज्ञा, हेयता, नाचता, अवतता।—द्रुम (गु०) नाच वृक्ष, एरण्ड वृक्ष।

तुष्ट तत्त्वं (गु०) संशय, युद्ध, रण।

तुडाना दे० (क्रि०) बैत आदि पशुओं का बगदा तैड़ा कर भागना, तैड़ना।

तुण्ड तत्त्वं (गु०) मुण्ड, बदन, आठभार, बोंब, डेर।

तुतरा (ला) दे० (गु०) अस्वच्छ उच्चारण करने वाला, अटक अटक के बोलने वाला, हकबका कर बोलने वाला।

तुतरा (ला) ना दे० (क्रि०) अस्वच्छ उच्चारण करना, अटक अटक कर बोलना।

तुतिया दे० (खी०) उपधातु विशेष, विधिविधेय, रूप।

तुट्य तत्त्वं (गु०) तुतिया, नीलाघोषा।

तुन दे० (गु०) वृक्षविधेय, नन्दीवृक्ष।

तुनकी दे० (खी०) पतली, एक प्रकार की रोटी।

तुनतुनाना दे० (क्रि०) सुखस्वर से बजाना, सितार आदि बजाना।

तुन्द तत्त्वं (गु०) जठर, पेट, उदर।—परिमृज (गु०) अरुच, आलसी, अकर्म, पेट पर हाथ फेरते रहने वाला, निकम्मा।

तुन्दिल तत्त्वं (गु०) तोड़ल, लम्बोदर, बड़ा पेटवाला, लम्बे पेटवाला मनुष्य।

तुध दे० (गु०) तुध वृक्षविधेय।—ध.य (गु०) दर्जी, सूजीकार, कपड़े सानेवाला।

तुपक दे० (खी०) बन्दूक, छोटा बन्दूक, विमैला।

तुकला दे० } (गु०) कौटुम्बिक, छोटी पतङ्ग, छोटी तुकली (ख०) } गुह्री।

तुकाजी होलकर दे० (गु०) जगत् प्रसिद्ध महारानी अहल्याबाई की सेनापति, अहल्याबाई का इन पर बड़ा ही स्नेह था, उसी स्नेह का फल स्वल्प राज-प्रतिष्ठा सूचक "होलकर" की उपाधि महारानी अहल्याबाई ने उन्हें दी थी।

तुकाराम दे० (गु०) एक महाराष्ट्र साधु, १५५८ ई० में पुना के ममीपस्य देहुक नामक ग्राम में इनका जन्म हुआ था। यह जाति के भूत्र थे, तथापि दक्षिण देग के सभी श्रेणों के लोग इनका आदर करते थे। १५ वर्ष की अवस्था में इनका विवाह हुआ था; परन्तु बाल्यकाल ही से इनकी प्रवृत्ति धर्म की ओर झुकी हुई थी। २० वर्ष की अवस्था में इनके पिता और माता परलोकवासी हुए, उभी समय इनके बड़े भाई भी विरक्त लोक घर से चले गये। संयोगवश उसी समय दक्षिणदेग में अकाल भी पड़ा हुआ था, इन्हीं सब घटनाओं से तुकाराम ने संसार का यथार्थ स्वरूप देख लिया। उन्होंने संसार छोड़कर भजन करना ही अपने लिये उत्तमकार्य विचार लिया। इनकी यनाई कविता का नाम अभङ्ग है। आठ हज़ार से भी अधिक इनकी यनायी कविता हैं। इनकी कविता दक्षिण देश में आदर की वस्तु समझी जाती है। एक समय स्वयंसेवक शिवाजी इनके उपदेश सेने गये थे और उपदेश लेकर वे यत में जाकर तपस्या करने लगे। उन्होंने संसारचिन्ता तिलकुल छोड़ दी। यह देख शिवाजी की माता ने तुकाराम की यह समाचार सुनाया। पुनः तुकाराम ने उन्हें तारिखक उपदेश देकर शिवाजी को कार्य में लगाया। तुकाराम की मृत्यु का समय प्रायः अनिश्चित है; तथापि अनुमान किया जाता है कि संवत् १६५८ में उन्होंने परलोकयात्रा की।

तुका दे० (गु०) माल के टुकड़े, मुड़ा बाण, मोहर-तीर, पहाड़ी छोटा पर्वत।

तुगा तत्त्वं (खी०) तुगाचोरी, घंसेरोवन।—चोरी—घंशी (खः०) घंसेरोवन।



तुपकिया दे० (खी०) ठोटा तुपक । (५०) बन्दूक चलानेवाला ।

तुफान दे० (५०) आँधी, आँधड़, पानी, भड़, आँधी पानी ।

तुम दे० (सर्व०) मध्यम पुरुष का बहुवचन ।—तनी (सर्व०) तुम्हारा, तुम्हारे सम्बन्ध का ।

तुमड़ी दे० (खी०) सँपेरे क यंगी, एक प्रकार का बाजा जिसे सँपेरे बजाते हैं । पुङ्गली, साधुओं का काष्ठ निर्मित जरापात्र ।

तुमाई दे० (खी०) धुनाई, तुमाने का पैसा, तुमाने की मजूरी ।

तुमाना दे० (क्रि०) धुनवाना, पिजाना, रुई धुनाना ।

तुमुल तत्० (५०) रण संकुच, सङ्कीर्णयुद्ध, अत्यन्त लोमहर्षण युद्ध, घोस्युद्ध, भयानक युद्ध, शेर, गुल ।

तुम्बरी तत्० (खी०) घोणा, यीन ।

तुम्बा दे० (५०) लौका, मासु, लाक, अनाहु, एक प्रकार का लौका, जिसकी तुमड़ी साधु लोग बनाते हैं ।

तुम्बिका तत्० (खी०) कद्दू, पायू, लौका ।

तुम्बिया तत्० (खी०) कमण्डल, करवा ।

तुम्बी तत्० (खी०) लौकी, मदारी की यंगी ।

तुम्बूर तत्० (५०) यादवविशेष, तंभूरा, तानभूरा ।

तुम्बुरु तत्० (५०) गन्धर्व विशेष, स्वर्गगायक, त्रिनेत्रासक विशेष, वृक्षमेद ।

तुम्ई दे० (खी०) तरकारी विशेष ।

तुरक तद्० तुर्क, देशविशेष, उस देश के वासी मुसलमान हैं । जाति विशेष, जो तुर्कदेश में रहती है, तुर्क देशवासी ।

तुरग तत्० (५०) तुर्क, अश्व, घोटक, घोड़ा, चित्त, मन, अन्तःकरण ।—ब्रह्मचर्यक (५०) न मिलने के कारण स्त्रीत्याग ।—रोही (५०) अश्व-रोही, घोड़सवार ।

तुरगी तत्० (५०) घुसड़ा, घुसड़वार ।

तुरङ्ग तत्० } (५०) तुर्क, अश्व, घोड़ा ।  
तुरङ्गम तत्० } (५०)

तुरङ्गाहा तत्० (खी०) शीशुविशेष, नमग, अश्वगन्धा ।

तुरत दे० } (अ०) शीघ्र, स्थिर, तूर्ण, अचरित, जल्दी, अभी ।

तुरन्त दे० } (अ०)

तुरपन दे० (खी०) टाँका, टोप, सिलाई, तलाई, तागा चलाना, एक प्रकार का छोटा टाँका चलाना ।

तुरपना दे० (क्रि०) सीना, टाकना, टाका लगाना ।

तुरमती दे० (खी०) राज पत्नी विशेष, रूपवी ।

तुरही दे० (खी०) एक प्रकार का बाजा जो तुर्कों से बजाते हैं, रणसिंगा, साधुओं के बजाने की मुर्ती ।

तुराई दे० (खी०) तोयक, विद्यावन, सेज, शरणा । (५०) त्वरा, वेग ।

तुराना दे० (क्रि०) छूट जाना, छुड़ाना, पैत शक्ति पशुओं का बन्धन तोड़कर भागना ।

तुरापाद् तत्० (५०) देवराज, इन्द्र, सुरेन्द्र ।

तुरिय दे० (५०) घोड़ा, अश्व ।

तुरी तत्० (खी०) कण्ठे बोनने का उपकरण विशेष, तन्त्रकण्ठ, चित्तेर, तर्ती की कुची, रणसिंहा, नरसिंहा ।

तुरीय तत्० (५०) चतुर्थ, चौथा, चार संख्या के पूरण करने वाली संख्या । (५०) ब्रह्म, अक्षर के प्राप्त चेतनता का आधार अनुवस्थित चेतन, मुक्तावस्था । (खी०) एक अवस्था, जीव की अवस्था विशेष ।—धर्म (५०) चौथावर्ण, ब्राह्म, क्षत्रिय, वैश्य ।—श्रम (५०) चतुर्थ आश्रम, चौथा आश्रम, संन्यास आश्रम ।

तुरुक तद्० (५०) तुर्क, मुसलमान, तुर्किस्तान के वासी ।

तुरुम दे० (५०) पैरुड़ा, रिकाय, बेड़ी, पादबन्धनी रज्जू पैर बाँधने की रस्सी ।

तुरुक तत्० (५०) देशविशेष, तुर्क, तुर्किस्तान का वासी देश । गन्ध द्रव्यविशेष, शिलासद, लोहावन ।

तुल दे० (अ०) तुलन्त, तुलत, शीघ्र ।—तुलते (गु०)  
 बहुत हा शीघ्र, बात की बात में ।

तुलति दे० (अ०) शीघ्र, तुलन्त, तुलत ।

तुलति तुलते दे० (अ०) तुलन्त, शीघ्र, शीघ्रता से ।

तुलतुरा दे० (गु०) सतर्क, नावधान, वेगवात्, तेज,  
 प्रवर ।

तुलतद् दे० (गु०) तुल्य, सद्गुण, समान, बराबर ।  
 —कर खड़े होना (व०) तुलाना (क्रि०) पिल-  
 पिलाना, नरमाना, नरम होना ।

तुलना तद् दे० (क्रि०) जे.खना, परिमाण करना,  
 कूलना, तैलना, मान करना (खी०) दूष्टान्त,  
 सादृश, उपमा, सादृशकण, समोकरण, बराबरी,  
 करना, एक को दूसरे से समानता ।

तुलसिका तत् दे० (खी०) हरिप्रिया, वृन्दा, तुलसी,  
 एक पवित्र शीघ्र पूजनीय देववृक्ष, इसके पत्र भंग-  
 वात् विष्णु की पूजा में काम आते हैं ।

तुलसी तत् दे० (खी०) तुलसिका, हरिप्रिया, स्वनाम  
 प्रसिद्ध देववृक्ष ।

तुलसीदास तत् दे० (गु०) भारत के प्रसिद्ध भक्त कवि,  
 यह सरस्वती प्रदेश में यह उत्पन्न हुए थे । हिंदी-  
 भाषा में इनके बनाये ग्रन्थ का नाम "मानस  
 रामायण" है । कहते हैं भगवान् आरामचन्द्र ने  
 रामायण बनाने के लिये इनको स्वप्न में आदेश  
 दिया था । उनका दार्शनिक सिद्धान्त विशिष्ट-द्वैत  
 था । रामानन्द स्वामी के समान यह भी विशिष्ट-  
 द्वैत सिद्धान्त के प्रचारक थे । कहते हैं तुलसदास  
 बड़े ही शीघ्रपायण थे । एक दिन उनकी स्त्री  
 रत्नायसी घरने पिता के घर जा रही थी, तुलस-  
 दास को जब पता लगा तो वह दौड़े दौड़े अपने  
 श्वशुर के घर गये, उनकी स्त्री से भेंट हुई, स्त्री ने  
 कहा कि—इस चर्ममय शरीर में जितनी तुम्हारी  
 अनुक्ति है, यदि उतनी राम में होती तो तुम्हारा  
 संसार-कष्ट दूर जाता । स्त्री को इन बातों का  
 तुलसीदास पर बड़ा प्रभाव पड़ा, वह उसी क्षण से  
 संसार से विरक्त हो गये । वह तीर्थयात्रा की

निकले, काशी, मथुरा आदि आदि अनेक तीर्थों  
 में बहुत दिनों तक घूमते रहे. अथ वे अपनी स्त्री  
 आदि को स्मरण नहीं करते थे । घूमते घूमते संयोग  
 वश एक दिन वह अपने श्वशुर के घर पहुँचे ।  
 उनकी वृद्धा स्त्री उनका सत्कार करने लगी । थोड़ी  
 देर के बाद उसने अपने पति को पहचाना ।  
 स्त्री ने कहा—खटाईलाक, तुलसीदास ने कहा—  
 भोरो में है, स्त्री ने कहा—कपूरलाक, तुलसीदास  
 ने कहा—भोरा में है । यह सुनकर उनकी स्त्री ने  
 कहा—मह राज जब सभी वस्तु का पकी भोरी में है  
 तब एक विचारी स्त्री का क्या अर्थ धई ? तुलसी-  
 दास ने अथ समझा कि उनकी स्त्री उनसे अधिक  
 ज्ञानी है । भोली उन्हें उसी समय फेंक दी ।  
 समर के राजा उनका बड़ा भक्ति करते थे । धार-  
 काण्ड तक रामायण की रचना उन्होंने आधा  
 में की थी, जब वहाँ क वैरागियों से कु. भगवा  
 होगया तब वह वहाँ से काशी आगये और  
 वहाँ आपने अपने रामायण की पूर्ति की । तुलसी-  
 दास-जिस स्थान पर रहते थे वह आज तक भी  
 तुलस-घाट के नाम से प्रसिद्ध है । इनकी परलोक  
 यात्रा के विषय में यह दोहा प्रसिद्ध है ।  
 संवत सोलह सौ आठ, (१६८०) असे गङ्गा के तीर,  
 आधनशुक्ल सप्तमी, तुलसी तज्यो शरार ।

तुला दे० (खी०) तराजू, ताली, तैलने का साधन,  
 बराबरी, समान, उपमा, समरार्थि ।—दान (गु०)  
 दानविशेष, अपने शरीर के बराबर किसी वस्तु का  
 दान ।—धार (गु०) काशी नियासी एक धर्मवरा-  
 यण और ब्रह्महठक, यज्ञिक, इसने महर्षि जाजलि  
 को मोक्षधर्म का उपदेश किया था ।

(२) वाराणसी नियासी एक ठगध, इसने माता-  
 पिता की सेवा के प्रभाव से सर्वदयिता प्राप्त की  
 थी । सभी का जीवन वृत्तान्त यह अनायास ही जान  
 सकता था ।

तुलाना तद् दे० (क्रि०) तैलाना, तैल करना, तुला  
 पर चढ़ाना ।

तुलित तद् दे० (गु०) तुला हुआ, तैल किया गया,  
 बराबर, समान ।

तुनी तद्० (ख०) लू लेका, चित्र बनाने को कलम, बर्ती, घती ।

तुल्य तद्० (घ०) समान, बराबर, सदृश ।—ता (खे०) समानता बराबरी, समता ।

तुवर दे० (उ०) अरहर, अन्नविशेष, जिसकी दाग होती है ।

तुघरी द० (खे०) फिटफटी, औषध विशेष ।

तुप तद्० (घ०) भूसी चोकर, धान आदि का झिलका ।

तुपार तद्० (घ०) शीत, पाला, हिम, बर्फ ।

तुपित तद्० (घ०) उपदेशता विशेष ।

तुष्ट तद्० (घ०) [ तुष् + क ] आनन्दित, हर्षित, प्रसन्न ।

तुष्टि तद्० (खी०) [ तुष् + क्ति ] आनन्द, हर्ष, तृप्ति, प्रसन्नता ।

तूष्णीभूत तद्० (घ०) चुप्चाप, रुद्धवचन, नीरव, निःशब्द, मौनी ।

तुसार तद्० (घ०) तुगर, हिम, पाला, बर्फ ।

तुहिन तद्० (घ०) तुगर, तुसार, शजनम ।

तुही दे० (सर्व०) तुन्हा, तुन भी, तुनको । (खे०) को कल का शब्द, कोइल को फूक ।

तू दे० (सर्व०) मध्यम पुरुष का एक वचन, नीच सम्बोधन ।

तू दे० (उ०) फुने को बुलाने का शब्द, आनादर के साथ बुलाना ।

तूता करना द० (ब०) भगडना, अपमानित करना, तुकारना ।

तूया तद्० (घ०) लैकी, कडू, साधु का जलपात्र विशेष ।

तूकारना दे० (कि०) अथे तथे करना, अभिशाप देना, गाली देना, अपमानित करना, आनादर करने को इच्छा से तू तू कहना ।

तूढ्यों दे० (घ०) सन्तुष्ट, सन्तोष प्राप्त, तृप्त, तूष्णा-रहित ।

तूष्ण तद्० (खे०) तरकम, इयुधि, निपट्ट, भाया, जिसमें धीर लोग लड़ाई के समय बाण

तूष्णीरतद्० रखकर पोटको ओर लटकाने रहते हैं ।

तूतई दे० (ख०) करई, कटवा, मिट्टी का प्रकार का बर्तन, जिसमें टे टो लगी रहता है ।

तूतक दे० (खे०) तुम्ब, नीलाघोया, तूतिया ।

तूतन दे० (घ०) कतलन, फटाकुटा, रेतन ।

तूतिया दे० (खी०) तूतिया, नीलाघोया ।

तून दे० (घ०) एक पेड़ का नाम, एक प्रकार का लकड़, जिसको मेज कुर्सी आदि बनाने जाती है ।

तूनना द० (कि०) धुनना, तुनना ।

तूवर तद्० (घ०) रमविशेष, कषाय, कसैता ।

तूयरी दे० (ख०) तुम्बी ।

तूमना द० (कि०) तूनना, रुई धुनना, हाथ से केशों को साफ करना, दिनैला निकालना ।

तूमरो दे० (खी०) कुम्भोर का कषाय, मगर खे पड़ो ।

तूमिया दे० (घ०) धुनी हुई रुई का सूत, धुन वाला ।

तूमना दे० (कि०) हाथ से रुई सुधारना ।

तूर्ण तद्० (घ०) शोष, तुलत, तुलन, जल्दी ।

तूर्प तद्० (उ०) नगाडा, भेरी, दुन्दुर्ग, यात्राविशेष । (घ०) सैया, चार की सयग करने वालो सयग, मुतीय, चतुर्प ।

तूल तद्० (उ०) दिनैला निकाला हुई रुई, रहित कषाय, रघा । (द०) आयाजन, तैयारी

त घोल (घा०) डोटी यस्तु को घरी समस्त सामान्य बात को घड़ी समझ कर उसके नि

बड़ी तैयारियाँ करना ।

तूल्नीय तद्० (घ०) कदम्बरवृक्ष, कदम का पेड़ ।

तूलिना तद्० (घ०) रुषावाला वृक्ष, सेमर का पेड़ ।

तूली तद्० (खी०) तुरी, तसवीर बनाने का एक प्रकार की कलम जिससे चित्रकार तस्वर पर रङ्ग चढाते हैं ।

तूवर दे० (घ०) राजपूतों की एक जाति, तूवर भी कहते हैं ।

तूष्णीम् तद्० (ब०) चुप्चाप, मौन, वचनरहित ।

ए तत् ० (५०) घास, खड़, खर, घासफूस, तिनका ।  
 —कूटी (खी०) घास की बनी कोणड़ी, तृणा-  
 च्छादित लघु वृह ।—राज (५०) नारियल, नारि-  
 यल का पेड़, ऊज, तालवृक्ष ।—घत् (५०) तृण  
 के समान, लघु, शुद्ध, माररहित, निकम्मा,  
 उठला ।

एघिन्दु तत् ० (५०) शपिथियेश, द्वार के वेदस्थास,  
 इन्होंने २४ द्वारपुर्णों में वेदों का विभाग किया  
 था, अतएव इनको वेदस्थास की उपाधि मिली  
 थी ।

णाघर्त तत् ० (५०) दैन्यविशेष, कंस का अनुचर  
 दानव । इसको श्रीकृष्ण का वध करने के लिये कंस  
 ने मोक्ष भेजा था, बपहन बन करके यह श्रीकृष्ण  
 को लेकर कर उड़ गया, परन्तु श्रीकृष्ण बहुत भारी  
 हो गये, इस कारण उनको यह लेना नहीं सका,  
 और श्रीकृष्ण ने इसका गला पकड़ लिया । अतएव  
 यह भाग भी नहीं सका, दानव बेहोश होकर भूमि  
 पर गिर पड़ा और मर गया ।

गोदक तत् ० (५०) घास और पानी, पशुओं का  
 भोजन ।

गीय तत् ० (५०) तीसरा, तृतीय की प्रतिपत्ती  
 संख्या ।—प्रकृति (खी०) तीसरी प्रकृति, खे  
 और प्रकृति ने विलक्षण स्वभाव, नपुंसक ।

गीया तत् ० (खी०) पक्ष का तीसरा दिन, तीसरी  
 तिथि, गौरी इस तिथि की स्वामिनी हैं ।—न्त  
 (५०) [ तृतीया + अन्त ] जिसके अन्त में तृतीया  
 विभक्ति के चिन्ह हैं ।—रैग (५०) [ तृतीया + अंग ]  
 तीसरा भाग, तीसरा हिस्सा ।

ग तत् ० (५०) [ तृप् + ऋ ] परितोषान्वित,  
 सन्तोष, हर्षित, आत्प्रापित, प्रसन्न, हृष्ट ।

ग तत् ० (खी०) [ तृप् + ऋ ] सुन्नित्वृत्ति, परि-  
 तोष, आह्लाद, सन्तोष ।—कर (५०) सन्तोष-  
 जनक, तृप्ति करने वाला ।—जनक (५०) तृप्तिकर,  
 आह्लादजनक ।

गड तत् ० (५०) चिपुण्ड, तिलक विशेष, तीन  
 धारी का चेंडा तिलक जैसा गेय लगाने हैं ।

तृपूर तत् ० (५०) त्रिपुर एक दैत्य के नगर का नाम,  
 (देखो त्रपुरार) ।

तृफला तत् ० (खी०) त्रिफला, तीनफल, श्रायला,  
 हरीतकी और बहेड़ा ।

तृचिक्रम तत् ० (५०) त्रिचिक्रम, भगवान का यामन  
 अक्षर, यामन ।

तृवेनी तत् ० (खी०) त्रिवेणी, गङ्गा यमुना और सर-  
 स्वती का सङ्गम ।

तृभुवन तत् ० (५०) त्रिभुवन, तीनलोक, त्रिलोक,  
 स्वर्ग मर्त्य और पाताल ।

तृमुानो दे० (खी०) त्रिमुहानों, तीन मार्गों का  
 योग, त्रिमार्ग ।

तृय दे० (खी०) खे, युवती, त्रिया ।

तृलोक तत् ० (५०) त्रिलोक, तीनलोक ।

तृविध तत् ० (५०) त्रिविध, तीन प्रकार का, तीन  
 रङ्ग का ।

तृवत्, तृवृता तत् ० (खी०) शीघ्र विशेष, निशेष,  
 निशेता ।

तृपा तत् ० (खी०) [ तृप् + आ ] तृष्णा, पिपासा,  
 प्यास ।—त (५०) [ तृपा + आर्त ] पिपासा से  
 पीड़ित, प्यास से ठपकुल ।

तृपाचन्त तत् ० (५०) प्यास, पिपासित ।

तृपित तत् ० (५०) [ तृप् + ऋ ] तृष्णापुक्त,  
 पिपासित, प्यासा ।

तृष्णा तत् ० (खी०) तृप् + न + आ ] पिपासा, पीने  
 की इच्छा, उत्कण्ठा, अत्यन्त अभिलाष, अधिक  
 उत्सुकता, लोभुपता, लोभ ।—ज्ञय (५०) तृष्णा  
 निवृत्ति, पिपासा, शान्ति, वासनानाश, लोभुपता  
 की निवृत्ति ।

तृस्ङ्क तत् ० (५०) त्रिंशुकु, एक सूर्यवंशी राजा, राजा  
 हरिसन्द्र के पिता (देखो त्रिंशुकु) ।

तृसूल तत् ० (५०) त्रिसूल, मन्नादेय का मुख्य अक्ष ।  
 ते दे० (खी०) से, लेकर, (सर्व०) से ।

तैत्तलीस दे० (५०) चाक्षीन और तीन, ४३, तीन  
 अधिक चाक्षीन, त्रयसत्त्वारिंशत् ।

तैत्तिरीय दे० (गु०) तीस और तीन, ३३, तीन अधिक तीस, त्रयस्त्रिंशत् ।

तैदुम्ना दे० (गु०) वाघ, चीता, छोटा वाघ ।

तैदू दे० (गु०) फलविशेष, वृक्ष और फल ।

तैईस दे० (गु०) बीस त न, २३, तीन अधिक बीस, त्रयोविंशति ।

तेकाला दे० (गु०) अन्नविशेष खिगूल के आकार का एक अन्न, मछली पकड़ने का यन्त्र ।

तेगवहादुर दे० (गु०) सिक्खे का नवौं गुरु, १६७५ ई० में श्रीरङ्गजेव को आजा से इनका सिर कटा गया था । इनके पिता का नाम हरमोविन्द था यह सिखों के छठवें गुरु थे । इनकी माता का नाम नानको था । सम्राट् औरङ्गजेव ने इन्हें पकड़ कर दिल्ली मगवाया था । मुसलमान होने के लिये सम्राट् ने इन्हें बड़े कष्ट दिये, परन्तु इन्होंने मुसलमान होना न चाहा । तेगवहादुर न अपने गले में एक क गुजर क टुकड़ा बाँधकर सम्राट् से कहा कि हमारे गले में जो यन्त्र बाँधा है उसके प्रभाव से कटा सिर जुड़ जाता है । उसी समय सम्राट् ने सिर कटवा लिया, परन्तु सिर न जुटा । उनके गले में कागज़ खेराकर देखा गया तो उसमें लिखा था कि 'सिर दिया, सर नहो दिया' अर्थात् सिर तो दिया परन्तु मन की बातें नहीं दीं ।

तेगा दे० (गु०) तणवार, खट्ट ।

तेज तद्द० (गु०) तेजस्, प्रभाव, प्रताप, बल, चमक, प्रकाश ।

तेजपात दे० (गु०) तेज का पता, एक गरम मसाला, तमासपत्र ।

तेजमान् तद्द० (गु०) प्रतापी, तेजस्वी, चमत्कारी, बली ।

तेजवन्त तद्द० (गु०) प्रतापी, चमकीला, चमत्कारी ।

तेजयल तद्द० (गु०) शोषण विशेष ।

तेजस् तद्द० (स्त्री०) दीप्ति, ताप, प्रताप, प्रखरता, तीव्रता, उग्रता, धैर्य, धन, वीर्य, सन्वरता, पराक्रम, तीव्रता, प्रभाव अग्नि, सुवर्ण ।

तेजस्कर तद्द० (गु०) तेज बढ़ानेवाले पदार्थ, पुष्टिकर ।

तेजस्विनी तद्द० (स्त्री०) महाज्योतिष्मती, महाप्रतापान्विता, तेजोयुक्ता ।

तेजस्वी तद्द० (गु०) प्रतापान्वित, प्रभाशाली, बलवान्, दीप्तिमान् ।

तेजोमय तद्द० (गु०) अग्निपुञ्ज, ज्योतिर्मय, मय, प्रकाशस्वरूप ।

तेताला दे० (गु०) तिमहला, तीन खण्ड का तीन खण्ड की अटारी ।

तेता दे० (गु०) तावत्, तितना, उस परिमाण ।

तेतो दे० (गु०) तितना ।

तेपची दे० (स्त्री०) टाँका टाप ।

तेमन तद्द० (गु०) आर्द्राकरण, शोदा, विशेष ।

तेरस दे० (स्त्री०) त्रयोदशी तिथि ।

तेरइ दे० (गु०) दस तीन, १३, सद्ययाविशेष, अधिक दश ।

तेरुस दे० (गु०) तीसरा वर्ष ।

तेल तद्द० (गु०) तैल, तिलविकार, स्तिपधुवन ।  
—चट्टना (क्रि०) ब्याह को एक रोति, पुष्प और दुलहिन के देह में हल्दी और तेल लगाना ।

तेलिन दे० (स्त्री०) तेली की स्त्री, तेल बेचने वर्षमद्धर जाति विशेष की स्त्री ।

तेलिया दे० (गु०) एक रङ्ग विशेष, तेल का माप विधिविशेष ।

तेली दे० (गु०) जातिविशेष, वर्ष सङ्करजाति, तैलकार ।

तेवर दे० (गु०) घूमरी, चक्कर, तिमिरी ।

तेवरस दे० (गु०) तेरस, तीसरा वर्ष ।

तेवराना दे० (क्रि०) घूमना, घूमराना, आना ।

तेवरी दे० (स्त्री०) घुड़की, धमकी, क्रिडकी, कड़ी कर के घुड़कना ।—चट्टाना (वा०) घुड़कना, आँखें दिखाना, भी चट्टाना, धमकाना ।

तेवहार दे० (गु०) वर्ष, उत्सव, उद्वाह ।

दे० (घ०) तैसा, तादृश, उस प्रकार, वैसा ।  
 ङा दे० (गु०) चूधा, चूधला, त्योंधा, चन्धा,  
 तात का चन्धा ।  
 दे० (गु०) क्रोध, कोप, भौक, माहस, चंमपद,  
 म्हाङ्कार ।  
 दे० (खी०) खियों के पैर के एक गहने का नाम ।  
 दे० (गु०) तेद, क्रोध, कोप ।  
 दे० (सर्व०) उमको, उमीकी ।  
 दे० (घ०) तितना, उतना, उस परिमाण में ।  
 ल तत्० (गु०) कारण विशेष ।  
 र तत्० (गु०) पश्चिमिष्येय, तित्तिरपक्षी, तित्तिर  
 चियों का भुण्ड ।  
 रीय तत्० (गु०) यजुर्वेदीय शाखाविशेष, यजु-  
 वेद का विद्वाद्, यजुर्वेदक ।  
 रीयक तत्० (गु०) यजुर्वेद की एक शाखा का  
 विद्वाद् ।  
 र दे० (गु०) उद्यत, प्रसृत ।  
 दे० (क्रि०) पैरना, तरना, हेलना, पार  
 नना ।  
 तत्० (गु०) तेल, तिल आदि से उत्पन्न चिकन  
 दाब ।—फार (गु०) वर्षसङ्कर जातिविशेष,  
 ली ।—किट्ट (गु०) तैलमल, तेल का मैल, तेल  
 का फोट ।  
 तत्० (गु०) देशविशेष कर्णाटक देश का एक  
 अन्त विशेष, उस देश के वासी, दशविध ब्राह्मणों  
 चन्तर्गत एक ब्राह्मण विशेष ।  
 दे० (गु०) तैलद्रव्य निवासी, अंग्रेजी सेना  
 सिपाही ।  
 रिका तत्० (खी०) तिलचट्टा, तिलपा, पच-  
 विशेष ।  
 ली तत्० (खी०) पलीता, तैलिनो ।  
 नी तत्० (खी०) पलीता, बली ।  
 तत्० (गु०) तैलकार, तैली । (गु०) तैल सम्बन्धी,  
 लमय ।  
 तत्० (गु०) पैपमास, घूस का महीना ।  
 तत्० (खी०) पुष्यवत्सपुष्या पूर्णिमा, पैपी  
 र्णमासी, घूस की पूर्णिमा ।

तैसा दे० (घ०) उसके समान, उसके सदृश ।  
 ता दे० (घ०) तत्र, तदा, निश्चन्देह ।  
 तों दे० (अ०) त्यों, इस प्रकार ।  
 तौद तद्० (खी०) तुन्द, बड़ा पेट, जठर, लम्बा  
 पेट ।  
 तौदी तद् (खी०) तुन्दिका, तौद का मध्य, नाभि,  
 नाभिकुहर ।  
 तौदेल तद्० (गु०) तुन्दिसा, मोटा, स्थूलकाय,  
 बड़ा पेटवाला ।  
 तौदिला तद्० (गु०) }  
 तौदी दे० (घ०) उसी क्षण में, उसी काल में, उसी  
 समय में ।  
 तौक तत्० (गु०) सन्तति, सन्तान, पुत्र, कन्या ।  
 तौकई दे० (सर्व०) तुमको, तुमकी ।  
 तौटक तत्० (गु०) छन्दविशेष, द्वादशाक्षर छन्द,  
 एक छन्द का नाम जिसके प्रतिपाद में बारह  
 अक्षर होते हैं ।  
 तौड़ दे० (गु०) दूट, छूट, जख्दन, भङ्गन, नदी का  
 वेग, नदी का तेज, प्रवाह की प्रवृत्तता, धारा की  
 तीव्रता । दूध का या दही का पानी, तूक, सों,  
 तलक, पर्यन्त ।—जौड़ (घा०) ठीक ठीक, नाप  
 जोख, बहुत ही ठीक, यथार्थ, यथायोग्य, उचित ।  
 —डालना (क्रि०) धिनाय करना, नष्ट करना,  
 फाड़ना, टुकड़े टुकड़े करना ।—देना (क्रि०)  
 खींचना, मोचन, फल फूल आदि का तोड़ना ।  
 तौड़ना दे० (क्रि०) फाड़ना, टुकड़ा करना, रूपया  
 धुनाता, रूपये के वैसे बदलाना ।  
 तौड़ल दे० (गु०) घाला, कड़ा, कङ्कण, हाथ में पह-  
 नने का गहना ।  
 तौ(तु)ड़वाई दे० (खी०) बट्टा, फुड़ाई, रूपया धुनाने  
 का दाम ।  
 तौ(तु)ड़वांता दे० (क्रि०) रूपया धुनाना, फाड़ना,  
 पुनः बनवाने के लिये गहने आदि का तुड़वाना ।  
 तौड़ा दे० (गु०) रूपया से भरी बैली, हज़ार रूपयों  
 की बैली, चटका, पलीता, चरचा, यन्त्री जिससे  
 तौप आदि में आग लगाई जाती है । चिकड़ी,  
 गले की सोकरी, पैर में पहनने का चोंदी का  
 एक भ्रूषण ।

तो(तु)डाना दे० (क्रि०) तोडवाना गृहवाना ।  
 तोडी दे० (स्त्री०) सर्वे राई, अन्नविशेष ।  
 तोतना दे० (क्रि०) निवार, दरी आदि बुनना,  
 गूथना ।  
 तो(तु)तला दे० (गु०) अस्फुटवाक्, अस्पष्टवक्ता,  
 लडवडहा ।  
 तोतलाना दे० (क्रि०) हकलाना, अस्पष्ट बोलना ।  
 तोता दे० (गु०) पक्षिविशेष, सुक, सुष्मा, सुरगा ।  
 तोपडा दे० (गु०) मत्तिका, मक्खी, पक्षिविशेष ।  
 तोपना दे० (क्रि०) दाँकना, छिपाना, छुकाना,  
 आच्छादित करना ।  
 तोपाना दे० (क्रि०) गहवाना, छिपवाना, छुकवाना ।  
 तोचडा दे० (गु०) एक प्रकार की धैली, जिसमें  
 घोटो को दाना खिलाया जाता है । चमड़े की  
 धैली ।  
 तोमडी या तुमडिया दे० (स्त्री०) तुमडी, तुम्बी,  
 चाधुआँ का जलपात्र ।  
 तोमर तत्० (गु०) अश्वविशेष, चरखी, साग, भाला,  
 यह अश्व हाथ से चलाया जाता है, एक लम्बे डण्डे  
 में शूल लगा हुआ होता है । छन्द विशेष कविता  
 का एक छन्द ।—ग्रह (गु०) योद्धा, जो भाले  
 से लड़ाई करते हैं ।—धर (गु०) अग्नि, अनल,  
 हुताशन ।  
 तोय तत्० (गु०) जल, सलिल, वारि, नीर ।—काम  
 (गु०) परिठयाध जल में उत्पन्न होने वाला एक  
 प्रकार का बेत, (गु०) जलामिलायी, जलप्रायी,  
 जल चाहनेवाला ।—द (गु०) जल देने वाला,  
 तर्पण कर्ता । (गु०) मेघ, वारिद, घटा ।—धर  
 (गु०) वारिद, तोयद, मेघ, जनद ।—धि (गु०)  
 जलधि, समुद्र, सागर ।—निधि (गु०) समुद्र,  
 सागर, जलधि ।—पिप्पली (स्त्री०) जलपोषक,  
 जलज, शाकविशेष ।—प्रसादन (गु०) कतकरुल,  
 निर्मली फल, शीतलचीनी जिसको पीस कर जल  
 में डालने से जल साफ हो जाता है ।—सूचक  
 (गु०) मेक, बर्षासू, मेढक, जिसके बोलन से वृष्टि  
 होने की सूचना मिलती है ।

तोयाधिवासिनी तत्० (स्त्री०) [ तोय  
 वासिनी ] लहमी, पाटला वृक्ष ।  
 तोयाशय तत्० (गु०) जलस्थान, तहाणादे ।  
 तोर दे० (स्त्री०) दलहन विशेष । (सर्व०) तेरा ।  
 तोरण तत्० (गु०) [ तुर् + अणद् ] बहिर्द्वार,  
 द्वार, उत्सव आदि में बाह्यद्वार लगाने का  
 निर्मित वस्तुविशेष, बन्दनवार, ५।  
 मासा जो उत्सव में लटकायी जाती है,  
 कपटी ।  
 तोरी दे० (स्त्री०) तरकारी विशेष, सरसो, राई ।  
 तौल दे० (स्त्री०) तौल, जेख, नाप, परिमाव ।  
 तौलक तत्० (गु०) अस्वी रत्नी भर, तोला । (ः)  
 बटखरा, बाँट तौलने वाला, तुलधैवा ।  
 तोला तद्गु० (गु०) तोला, परिमाण विशेष,  
 माशा, अस्वी रत्नी ।  
 तोशक दे० (गु०) आस्तरण विशेष, रं  
 का गद्दा ।  
 तोप तत्० (गु०) [ तुष् + अल् ] तुष्टि, तृप्ति,  
 आनन्द, आग्राद ।  
 तोपक तत्० (गु०) [ तुष् + णक् ] हर्षजनक,  
 तोपक, आनन्दक, परितोपकारक, धीरजदाला ।  
 तोपण तत्० (गु०) [ तुष् + अणद् ] ,  
 आनन्दितकरण ।  
 तोपित तत्० (गु०) हर्षित, धीरजवाद् ।  
 तोसखाना दे० (गु०) कोशागार, खजाना,  
 आदि रखने का स्थान ।  
 तोहि दे० (सर्व०) तुमको, तुम्हको ।  
 तौसना दे० (क्रि०) गरमी से शिथिल होना,  
 जन्य शिथिलता ।  
 तौतातिक तत्० (गु०) गुतात भट्टकृत  
 विशेष ।  
 तौर्य तत्० (गु०) मुरज आदि बाद्य विशेष,  
 आदि बाजा ।  
 तौर्यत्रिक तत्० (गु०) नृत्य, गीत और  
 ये तीन ।  
 तौल तत्० (गु०) तुला, परिमाण क्रिया,  
 रीति, मापनदण्ड, जेख, तौल ।

लना दे० (क्रि०) जेखना, परिमाण करना, तौलना ।

लवाई तद्० (स्त्री०) तौलना, तौल करने का काम, तौलवाई ।

लवाई तद्० (स्त्री०) तौल की मजूरी, ववाई ।

लाना दे० (क्रि०) जेखाना, तौल कराना ।

लिया दे० (स्त्री०) छोटी श्रौंगोली, शरीर पोखने की श्रौंगोली ।

ली दे० (स्त्री०) पात्रविशेष, बटलोही, जिसमें भात आदि बनाये जाते हैं ।

ही दे० (शु०) तैमी, तब भी, तथापि, इस पर भी ।

हू दे० (शु०) तथापि, तैमी, तैही ।

क तद्० (गु०) [स्वञ् + क] कृतव्याग, उञ्जित, विमर्जित, छोड़ा हुआ, त्याग किया हुआ, विरक्त, विचित्रचित्त ।—जीघन (पु०) गतप्राण, मृत ।

काग्नि तद्० (पु०) अग्नि रहित ब्राह्मण, अग्निहोत्र रहित ।

ग तद्० (गु०) [स्वञ् + चञ्] दान, चर्जन, उत्सर्ग, विरक्त, वैराग्य ।—पत्र (पु०) चर्जनपत्र, फार-खती ।—शील (पु०) दाता, दानशील ।

गन दे० (पु०) स्वजन, त्याग, विराग ।

गना दे० (क्रि०) छोड़ना, तजना, त्याग करना ।

गी तद्० (गु०) दाता, गूर, वर्जनशील, त्याग-कारी, विचर्जक, कर्मफल को त्यागने वाला, वैरागी, छोड़ने वाला ।

जित तद्० (गु०) स्वक, विमर्जित, छोड़ा हुआ ।

ज्य तद्० (गु०) त्यागयोग्य, चर्जनीय, परित्याग करने के उपयुक्त, त्याग करने योग्य, छोड़ने योग्य ।

दे० (शु०) उस प्रकार से, उसी रीति से ।

धा दे० (गु०) रात का श्रन्धा, रतौधिया, बुन्धला ।

नार दे० (स्त्री०) निपुणता, दक्षता, कुशलता, सुवृत्ति ।

त्योनारी दे० (स्त्री०) कर्म निपुण स्त्री, अपने काम को चतुरता पूर्वक स्वच्छ बनानेवाली स्त्री ।

त्योरी दे० (स्त्री०) शरीर के चमड़े पर सिकुड़न, घुड़की, धमकी ।—चढ़ाना (क्रि०) मृदु होना, श्रांति बढलना ।

त्योस दे० (पु०) वर्तमान वर्ष से दो वर्ष पहले या पीछे ।

त्रपा तद्० (स्त्री०) [ त्रप् + घा ] म्रीडा, लज्जा, लाज —कर (गु०) लज्जाकर, म्रीडाशील ।  
—न्वित (गु०) त्रपाश्रन्वित, सलज्ज, म्रीडायुक्त, लज्जालु ।—भर (गु०) पूर्णलज्जा, अधिक लज्जा ।  
—चान् (गु०) त्रपायुक्त, त्रपान्वित, लज्जायुक्त ।

त्रपित तद्० (गु०) [ त्रपा + क ] लज्जित, लज्जा-प्राप्त, सलज्ज ।

त्रपिष्ठ तद्० (गु०) अत्यन्त लज्जित, अतिशय म्रीडान्वित, सलज्ज ।

त्रपु तद्० (गु०) सीमा, रौंग ।

त्रपुरी तद्० (स्त्री०) छोटी इलायची ।

त्रय तद्० (गु०) तीन, तीन की संख्या, ३ ।—गङ्गा (स्त्री०) तीन गङ्गा, यथाः—मन्दाकिनी, भागीरथी और प्रभावती ।—ताप (स्त्री०) तीन ताप, देहिक, दैयिक, और भौतिक ।—पायक (पु०) तीन अग्नि, आहवनीय, दक्षिणाग्नि और गार्ह-पत्याग्नि, अथवा जठरानल, दावानल, और बड़-घानल ।—रेखा (स्त्री०) तीन लकीर ।—रोग (पु०) त्रासपित्त और कफ से उत्पन्न ।

त्रयी तद्० (स्त्री०) [ त्रय + ई ] वेदत्रय, ऋग, यजुः और साम से तीन वेद, गुरुन्धी, गृहिणी, सुमन्ती, सोमराज्ञी वृक्ष ।—तनु (पु०) मूर्ध, भास्कर, रवि ।—धर्म (पु०) वेदोक्तधर्म, कर्मकारण ।  
—मय (पु०) ईश्वरीय, ईश्वर ।—मुख (पु०) ब्राह्मण, द्विज, विप्र ।

त्रयोदश तद्० (गु०) संख्या विशेष, तेरह की संख्या, तेरह संख्या की पूर्ति करने वाली संख्या, १३ ।

त्रयोदशी तद्० (स्त्री०) तिथिविशेष, चन्द्रमा की तेरहवीं कला के बढ़ने या मय होने का समय, तेरह, तेरहवीं तिथि ।



त्रसरेणु तत्० (प०) तीस परमाणुओं का परिमाण, अणु परिमाण, गवाच के सूक्ष्म छिद्रों से जो सूर्य की किरणें आती हैं उनमें जो कण कण सा दीख पड़ता है उसके साठवें भाग को परमाणु कहते हैं तीन परमाणुओं या त्रसरेणु होता है।

त्रसित तद्० (गु०) मस्त, डरा हुआ, भयभीत, भीष, शङ्कित, शङ्कान्वित।

त्रस्त तद्० (गु०) शङ्कित, सासप्राप्त, भीष।

त्राण तद्० (पु०) [ त्रै + अणट् ] रक्षण, उद्धारकरण, निस्तार, उद्धार।—कर्त्ता (गु०) रक्षक, उद्धारकर्त्ता, रक्षा करने वाला।

त्राणी तद्० (गु०) रक्षणकर्त्ता, रक्षक।

त्रात तद्० (गु०) [ त्रै + क्त ] रक्षित, कृतरक्षा, उद्भूत, परित्रात।

त्राता तद्० (गु०) [ त्रै + तृण ] रक्षाकर्त्ता, त्राणकर्त्ता, उद्धारक, बचाने वाला, रक्षा करनेवाला।

त्रापमाण तद्० (गु०) [ त्रै + शान ] रक्षमाण, प्राप्तरक्षण, रक्षित।

त्रास तद्० (गु०) [ त्रस + घञ् ] लय, शङ्का, डर, हीरा आदि मणियों का एक प्रकार का दोष।

—दायी (गु०) [ त्रस + दा + णिच् ] भयदाता, शङ्कादायक, भयप्रदर्शक, भयदायक, भयप्रद।

त्रासक तद्० (गु०) त्रासदायी, भयदायक, भयदाता।

त्रा ना तद्० (गु०) शङ्कित, भीत, भयमान।

त्रासित तद्० (गु०) [ त्रस् + णिच् + क्त ] भयान्वित, डरपाया गया।

त्राह तद्० (क्रि०) त्राहि, बचाओ, रक्षा करो, त्राण करो — करना (वा०) रक्षा करने के लिये पुकारना, दुःख से बचाकुल होकर रक्षक को पुकारना।

त्राहि तद्० (क्रि०) रक्षा करो, बचाओ, त्राण करो।

त्रि तद्० (गु०) संप्रदा विशेष वाचक, तीन संप्रदा का वाचक, ३, इसका योग अन्य शब्दों के साथ आदि और अन्त में किया जाता है। जब यह

शब्दों के आदि में आता है, तब इसका ठीक रूप रहता है, परन्तु जब यह शब्दों में आता है तब बिके स्थान में त्रय हो जाता। यथा—त्रिभुवन, त्रिदश, त्रिमूर्ति, त्रिवेद तापत्रय, वेदत्रय, भुवनत्रय, दशत्रय आदि।

त्रिंश तद्० (गु०) तीसवाँ, तीस सख्या के करने वाली संप्रदा।

त्रिंशति तद्० (गु०) तीस, ३०।

त्रिक तद्० (गु०) तीन सख्या, त्रिपय स्थान, मुहानो, त्रिकला, त्रिकूट, त्रिवली, ये तीनवली।

त्रिककुत् तद्० (गु०) पर्यंत विशेष, त्रिकूट त्रिकच्छ तद्० (गु०) धोती पहनने की रीति के अनुसार धोती पहनना, तीन काँट।

त्रिकट तद्० (गु०) गोक्षुरीलता, गोखर।

त्रिकटू तद्० (गु०) मिर्च, सेठ, पीपल मिश्रण।

त्रिकाल तद्० (गु०) भूत, भविष्यत्, वर्तमान प्रातः, मध्याह्न, संध्या काल।—दृ (गु०) सूर्य, त्रिकालवेत्ता।—दर्शी (गु०) सुनि, (गु०) त्रिकालज्ञ।

त्रिकुट तद्० (गु०) सिंघाड़ा।

त्रिकुटा तद्० (गु०) सेठ, मिर्च, मीर।

त्रिकूट तद्० (गु०) पर्यंत विशेष, इसी पर्यंत लङ्का नगरी यही है।—मथाः—

गिरि त्रिकूट ऊपर बस लंका,

तहाँ रह रावण सहज अशङ्का।

त्रिकोण तद्० (गु०) तीन कोण, त्रिकोण त्रि जो स्थान त्रिकोण रेखा के अन्तर्गत है। येनि, भग, लग्न से पाचवी और नवौंलग्नको कहते हैं।—मिति (स्त्री०) त्रिकोण वस्तु मापनेवाली विद्या।

त्रिगण तद्० (गु०) त्रिवर्ग, धर्म, धर्म, ये तीन।

त्रिगर्त तत्० (५०) देशत्रियेष, जालन्धर, पञ्चाय का एक मान्य विशेष ।

त्रिगुण तत्० (५०) मत्स्य, (ज, और तमोगुण । (५०) तीन से गुणित जो तीन संख्या से गुणा गया है ।  
—इत्त (चि०) तीन धार जाता हुआ खेत, तीन घासा ।—तीत (५०) द्रव्य, परम पुरुष । (५०) निर्गुण, जीवन्मुक्त, शान्ति ।—रामक (५०) गुणत्रयत्रिगुण, ससार के पदार्थ ।

त्रिचतुर तत्० (५०) तीन या चार, अनिश्चित ।

त्रिजगत् तत्० (५०) त्रिभुवन, स्वर्ग, मर्त्य, और पाताल ।

त्रिजगत् तत्० (५०) त्रिजगत्, तीनलोक, त्रिभुवन ।  
—योनि (५०) त्रिभुवनकर्त्ता, त्रिजगत् को बनाने वाला ।

त्रिजटा तत्० (स्त्री०) लङ्केजर रावण के धनःपुर की एक राक्षसी, यह सीता की रक्षा करने के लिये नियुक्त की गयी थी । दूधरी राक्षसियों का व्यवहार सीता के साथ अत्यन्त निन्दुर और क्रूर था । परन्तु त्रिजटा के हृदय में सीता की प्रीति का अङ्कित हो गयी थी, त्रिजटा सीता के प्रति दयायुक्त व्यवहार करती थी ।

त्रिज्या तत्० (स्त्री०) व्यासार्द्ध रेखा, पापे विस्तार की रेखा ।

त्रिणता तत्० (स्त्री०) धनुष, धनुष्य, कामुक, कामान ।

त्रिणाचिकेत तत्० (५०) यजुर्वेद का एक अध्याय, यजुर्वेद का एक भाग, यजुर्वेदाध्यायी ।

त्रित तत्० (५०) गौतम मुनि का पुत्र, एकल और द्वित नामक इनके दो भाई और थे । ये तीनों अत्यन्त तपस्वी थे । त्रित अपने अल्प दो भाइयों की अपेक्षा अधिक विद्वान् और कर्मों में । एक समय ये तीनों भाई पशु-संग्रह करने के लिये किसी गाँव में गये । पशुसंग्रह हो जाने के पश्चात् त्रित को वन में छोड़कर दोनों भाई घर चले आये । यहाँ एक भेड़िया त्रित की ओर बढ़ा, उसने डर कर यह भागे । भागते भागते यह एक कुएँ में गिर गये । उसी क्षण में त्रित ने सोम पत्र किया । कहते

हैं उस पत्र में देवगण उपस्थित हुए थे और उसी क्षण में सरस्वती नदी का भी प्राविर्भाव हुआ था । इसी कारण उस क्षण का उदपानतीर्थ नाम पड़ा । उस क्षण का जल पीने से सोमरस पीने का फल होता है । त्रित के प्राप से इनके दोनों भाई भेड़िया होगये, और वे वन में घूमने लगे ।

त्रितय तत्० (५०) तीन की दूरक संख्या, तीन संख्या, ३ ।

त्रिदण्ड तत्० (५०) संन्यासाश्रम, चौथा आश्रम, यति, आश्रम ।—धारण (५०) संन्यासियों का दण्डग्रहण विशेष, संन्यास आश्रम ग्रहण करते समय कायदण्ड, वागुदण्ड और मनोदण्ड का ग्रहण करना । दण्ड ग्रहणविधि ।

त्रिदण्डी तत्० (५०) [त्रिदण्ड + इन्] त्रिदण्डधारी-यति, संन्यासी विशेष, त्रिदण्ड धारण करने वाले संन्यासी, यज्ञोपवीत, उपवीत, जनेज ।

त्रिदश तत्० (५०) देवता, सुर, अमर ।—दीर्घिका (स्त्री०) स्वर्गगङ्गा, मन्दाकिनी, गङ्गा ।—नदी (स्त्री०) मन्दाकिनी, स्वर्गगङ्गा ।—चधू (स्त्री०) देव स्त्री, त्रिदश बनिता, देशगङ्गा, अक्षरा ।  
—अञ्जरी (स्त्री०) तुलसी, बहुमञ्जरी ।—इक्षुश (५०) [त्रिदश + अक्षुश] अग्नि, वज्र ।—आचार्य (५०) [त्रिदश + आचार्य] देवगुरु, बृहस्पति ।  
अयुध (५०) [त्रिदश + आयुध] वज्र, अग्नि ।  
—ारि (५०) [त्रिदश + अरि] दनुज, दानव, दैत्य ।—आलय (५०) [त्रिदश + आलय] स्वर्ग; त्रिविष्टप, सुमेधर्वत ।—आवास (५०) स्वर्ग, सुरपुरी, देवलोका, सुमेधर्वत ।—आहार (५०) [त्रिदश + आहार] अमृत, सुधा, पीपल ।—श्वरी (स्त्री०) [त्रिदश + श्वरी] देवी, दुर्गा ।

त्रिदिघ तत्० (५०) स्वर्ग, आकाश, अन्तरिक्ष ।  
—चाद (५०) दार्शनिक सिद्धान्त विशेष ।

त्रिदिवीकस् तत्० (५०) [त्रिदिव + वीकस्] स्वर्गस्थ, स्वर्ग में रहनेवाले देवता, अमर ।

त्रिदोष तत्० (५०) बात पित और कफ का विकार, दोषत्रय ।—घ्न (५०) श्लेष्म विषेय, त्रिमसे

त्रिदोष श्रच्छा होता है। त्रिदोष नाशक औषध।  
 —ज (गु०) त्रिदोष जनित रोग, सन्निपात रोग।  
 त्रिधा तत् (गु०) तीन प्रकार, त्रिविध।  
 त्रिधातु तत् (गु०) गणेश, ऐरम्ब, गणेश की मूर्ति  
 तीन धातु की अधिक प्रशस्त है अतएव गणेश को  
 त्रिधातु कहते हैं। धातुत्रय, तीनधातु, सेना,  
 चाँदी और तौबा।  
 त्रिधामा तत् (गु०) शिव, विष्णु, और अग्नि,  
 धामत्रय।  
 त्रिधारा तत् (स्त्री०) तीनधारा, स्रोतत्रय।  
 त्रिध्वनि तत् (स्त्री०) तीन प्रकार की ध्वनि, मधुर,  
 मन्द और गम्भीर।  
 त्रिनयन तत् (गु०) शिव, शम्भु, महादेव (गु०)।  
 नयनत्रय।  
 त्रिनयना तत् (स्त्री०) दुर्गा, भगवती।  
 त्रिनेत्र तत् (गु०) शम्भु, महादेव।—चूडामणि  
 (गु०) शशधर, चन्द्र, चन्द्रमा।  
 त्रिपञ्चाशत् तत् (गु०) सप्त्या विशेष, तिरपन  
 तीन अधिक पचास, ५३।  
 त्रिपताक तत् (गु०) रेखा त्रयाङ्कित कपाल, नाटक  
 के अभिनय की एक मुद्रा, तीन अँगुलियों के सङ्केत  
 से दूसरे को रोककर एक आदमी के साथ रहस्य  
 भाषण करना।  
 त्रिपथगा तत् (स्त्री०) गङ्गा, भागीरथी।  
 त्रिपद तत् (गु०) पदत्रय, त्रिरेखायुक्त।  
 त्रिपदा तत् (स्त्री०) वृत्तविशेष, हसपदी वृत्त,  
 गायत्री छन्द।  
 त्रिपदिका तत् (स्त्री०) धातुनिर्मित शब्द रखने  
 की तिपाई।  
 त्रिपदी तत् (स्त्री०) हाथी के बाँधने की रस्सी,  
 भाषा कविता का एक छन्द।  
 त्रिपर्णी तत् (स्त्री०) शालपर्णी, वनकपासी।  
 त्रिपाट तत् (गु०) क्षेत्रविद्या भेद।  
 त्रिपाद् तत् (गु०) विष्णु, नारायण, उबर, छन्द  
 विशेष, गायत्री छन्द।  
 त्रिपादिका तत् (स्त्री०) हसपदी लता।

त्रिपु दे० (गु०) सीसा, धातु विशेष, रौंदा।  
 त्रिपुसी दे० (स्त्री०) इन्द्र, घरुण, इनाहन।  
 त्रिपुरा तत् (स्त्री०) [ त्रिपुर + षा ] हंसपदा,  
 मल्लिका, त्रिवृत्।  
 त्रिपुण्ड तद् (गु०) तिलक विशेष, जिसमें ती  
 रेखाएँ होती हैं।  
 त्रिपुण्ड्र तत् (गु०) तीन रेखा का तिलक, मरु  
 आदि से मस्तक पर बनायी टेढ़ी लकीर, दा  
 तीन रेखा, त्रिपुण्ड्र, दैत्यविशेष।  
 त्रिपुर तत् (गु०) मय दानव निर्मित पुरत्रय, दै  
 विशेष।—दहन (गु०) त्रिपुरान्तक, महार्जुन  
 शिव, त्रिपुरारि।  
 त्रिपुरा तत् (स्त्री०) देवी विशेष, एक देवी का  
 नाम।  
 त्रिपुरान्तक तत् (गु०) त्रिपुर दहन, शिवदहन  
 दय, शम्भु।  
 त्रिपुरारि तत् (गु०) महादेव का एक नाम, पु  
 त्रय के नाश करने से महादेव ने यह नाम पा  
 है। तारकासुर के तीन पुत्र य, जिनका ना  
 तारकाच, कमलाच और विद्युन्माली था।  
 तीनों ने तपस्या करके ब्रह्मा से वर पाया।  
 कि—“तुम लोग तीन नगर में वास करो।  
 हजार वर्ष के बाद वे नगर आपस में मिलेंगे, व  
 समय जो वाष से उन नगरों का नाश कर सकें  
 उसीके द्वारा तुम लोगों का वध होगा। यह व  
 पाकर उन्होंने मय दानव को तीन नगर बनाने  
 आदेश दिया, मय ने अपने तपोबल से स्वर्ग  
 सेना का, अन्तरिक्ष में राजा का, और मर्त्यलोक  
 में लोहे के तीन नगर बनाये। कमलाच, स्वर्ग में  
 तारकाच अन्तरिक्ष में और विद्युन्माली मर्त्यलोक  
 में वास करता था। तारकाच के हरि नाम  
 पुत्र ने भी तपस्या की और उसने भी ब्रह्मा  
 वर पाया कि उसके नगर के एक सरोवर में अ  
 द्वारा मृतव्यक्ति को बुझाने से वह उसी वध  
 जायित हो उठेगा। ब्रह्मा के वसे वर पाकर

असुरों का अत्याचार बहुत ही बढ़ गया। उनके अत्याचार से पीड़ित होकर देवता ब्रह्मा के पास गये। ब्रह्मा ने विचारा कि बिना महादेव के इन असुरों का विनाश दूसरे से नहीं होगा। अतएव देवताओं को साथ लेकर ब्रह्मा महादेव के पास गये। ब्रह्मा के मुख से असुरों के अत्याचार की बात सुनकर महादेव को बड़ा क्रोध हुआ। उन्होंने देवताओं के कल्याण के लिये असुरों के विनाश करने का सङ्कल्प किया। यह दिव्य रथ पर आरुढ़ हुए। ब्रह्मा सारथि बने। घोड़ी दूर जाकर वह घोड़े पर चढ़े, पुनः बैल पर चढ़कर उन्होंने असुरों के नगर देखे। उसी समय उन्होंने अश्वों का स्तन काटा और बैल के थुर बीच से फाड़ दिये। महादेव धनुष पर पाशुपत अस्त्र चढ़ाकर तीनों नगरों के मिलान की प्रतीक्षा करने लगे। जब वे पुर मिलने लगे उसी समय महादेव ने बाण छोड़कर उन तीनों नगरों को नष्ट भष्ट कर दिया। पुर के बासी चिह्नाने लगे, महादेव ने उन सभी को जलाकर पश्चिम समुद्र में फेंक दिया। देवता निककण्ठक हो गये।

त्रिपुरस दे० (५०) घोर, फलविशेष।  
 त्रैपालिया दे० (५०) सिंहद्वार, राजमहल का पहला द्वार, तीन द्वार का मकान।  
 त्रैफला तत्० (स्त्री०) समभाग मिश्रित शौबला, हट, और बहेड़ा फल।  
 त्रैमङ्गल तत्० (५०) तीन अङ्ग का भङ्ग, मूर्ति विशेष।  
 त्रैमङ्गला तद्० (५०) टेढ़ा खड़ा होना।  
 त्रैमङ्गी तत्० (५०) छन्दविशेष, श्रीकृष्ण की एक मूर्ति विशेष।  
 त्रैभुज तत्० (५०) त्रिकोण रेखा, तीन भुजा का तिनकोना।  
 त्रैभुजात्मक तत्० (५०) [त्रिभुज + आत्मक] त्रिभुज, त्रिकोण।  
 त्रैभुवन तत्० (५०) त्रिलोकी, त्रैलोक्य, तीनलोक, स्वर्ग मर्त्य और पाताल।  
 त्रैमधु तत्० (५०) शर्यद का एक भाग, मधुवाता आदि तीन अन्वार्थों का देवा।

त्रिमुखा तत्० (स्त्री०) युद्ध देवता भेद, मायादेवी।  
 त्रिमूर्ति तत्० (पु०) ब्रह्मा, विष्णु और शिव की मूर्ति।  
 त्रिमुहानी दे० (स्त्री०) तीन मार्गों का मिलान, जहाँ तीन मार्ग मिले हैं।  
 त्रिया दे० (स्त्री०) नारी, स्त्री, कामिनी, यनिता।  
 त्रियामा तत्० (स्त्री०) [त्रि + याम + मा] रात्रि, रजनी, निशा, यमुना।  
 त्रियुग तत्० (५०) विष्णु, नारायण।  
 त्रियानि तत्० (५०) लोभ खादि से उत्पन्न कलह।  
 त्रिलोक तत्० (५०) तीन लोक, त्रिभुवन, स्वर्ग, मर्त्य, और पाताल।  
 त्रिलोकी तत्० (स्त्री०) तीन लोकों का समूह, यथा—  
 भूर्लोक, भुवर्लोक और स्वर्लोक, त्रिभुवन, त्रिजगत्—नाथ (पु०) तीनों लोकों के नाथ, विष्णु, ईश्वर, भगवान्।  
 त्रिलोचन तत्० (५०) त्रिनेत्र, त्रिनयन, महादेव, शम्भु।  
 त्रिलोहक तत्० (५०) सेना, चाँदी और तौबा ये तीन धातु।  
 त्रिवर्ग तत्० (पु०) धर्म अर्थ और काम, त्रियुग मर्त्य रज और तम।  
 त्रिचर्पात्मक तत्० (५०) त्रैचार्यिक, तीन वर्ष का, तीन साल का।  
 त्रिचरिका तत्० (स्त्री०) त्रिहायणी, त्रिचर्यागी, तीन वर्ष की गौ।  
 त्रिचली तत्० (स्त्री०) जठर का घवय्य विशेष, नाभि के ऊपर पेट की तीन रेखाएँ।  
 त्रिविक्रम तत्० (५०) वामनावतार विष्णु, वामन भगवान्, इनकी कथा प्रसिद्ध है।  
 त्रिविक्रममट्ट तत्० (५०) संस्कृत के एक कवि का नाम, ये कवि प्रसिद्ध विद्वाद् देवादित्य शर्मा के पुत्र थे। वाक्यावस्था में पढ़ने लिखने की और इनकी विशेष रुचि नहीं थी, इनके पिता प्रामा-  
 न्तर गये। उसी समय एक विदेशी पण्डित राजा के यहाँ आये और उन्होंने शास्त्रार्थ करने के लिये राजा से कहा। उस राजा का राजपण्डित त्रिवि-

क्रमभट्ट के पिता ही थे। राजा ने उन्हें बुलवाया, उनके उपस्थित न रहने के कारण त्रिविक्रमजी राजा के समाप गये, राजा ने उनका शास्त्रार्थ करने को कहा, और दिन भी नियत कर दिये। विद्या में विशेष परिचय न होने के कारण वह चिन्तित हुए और सरसवती के मन्दिर में जाकर भगवती का आराधना करने लगे। भगवती प्रसन्न हुई और पिता के न आने तक सब शास्त्र के ज्ञान होने का इन्हें वर दिया। इन्होंने शास्त्रार्थ में यादी को जीता, और ये नलचम्पू नामक ग्रन्थ बनाने लगे। सात उच्छ्वास तक इन्होंने बनाया था कि इनके पिता बाहर से चले आये, अतः यथ विद्युत् होकर नलचम्पू इन्हें अंधूरा ही छोड़ देना पड़ा। षष्ठ्यीय आठवीं शताब्दी इनका समय अनुमान से सिद्ध किया गया है।

त्रिविधि तत्० (गु०) तीन प्रकार, तीन धारा, त्रिधा।

त्रिवेणी तत्० (स्त्री०) स्थान विशेष, गङ्गा और यमुना का सङ्गम स्थान।

त्रिवेद तत्० (गु०) ऋक् यजु और साम ये तीन वेद।

त्रिशङ्कु तत्० (गु०) विद्याल, शलभ, चातक, पत्नी, राद्योत, राजाविशेष, सूर्य यशोयराज, इसी शरीर से स्वर्ग जाने के लिये इन्होंने महर्षि वशिष्ठ को यज्ञ कराने के लिये कहा था। इनकी अभिलाषा पूर्ति को वशिष्ठ ने असम्भव बतलाया। तब ये वशिष्ठजी के पुत्रों के पास गये और उनसे अपनी अभिलाषा कह सुनायी। उन्होंने कहा कि जिस काम के विषय में पिता की असम्मति है उस काम को करना हम लोगो को उचित नहीं है। तब त्रिशङ्कु ने कहा कि जब तुम लोग यज्ञ नहीं कराओगे तब मैं दूसरा गुरु करूँगा। वशिष्ठ के पुत्रों ने उन्हें शाप दिया, तदनुसार यह चापडाल हो गये। तदनन्तर विश्वामित्र के पास त्रिशङ्कु गये, और अपनी मनोरथ कह सुनाया। विश्वामित्र ने अपने योगबल से सभी बातें जानली और वह यज्ञ कराने के लिये प्रस्तुत हो गये।

उस यज्ञ में ऋषि और देवताओं को निमंत्रित किया, केवल वशिष्ठ पुत्र और महोदय नामक ऋषि निमन्त्रित नहीं किये गये थे। वशिष्ठ के पुत्रों ने आपत्ति की कि जिस यज्ञ में ऋषि अज्ञेय और चापडाल यज्ञमान है, उस यज्ञ में देवा और ऋषिगण क्योंकर जा सकते हैं। यह सुन विश्वामित्र को बड़ा क्रोध हुआ। विश्वामित्र ने वशिष्ठ के पुत्रों को कुक्कुर माँस भोजी डोग और मंदास को निपाद हो जाने का शाप दिया। विश्वामित्र के अनुरोध से अन्यान्य महर्षियों ने यज्ञ प्रारम्भ किया, परन्तु कोई भी देवता नहीं आये। इस विश्वामित्र का क्रोध और भी बड़ा और वे अपने तपस्या के बल से उसे स्वर्ग भेजने का प्रयत्न करने लगे। इन्द्र ने उनको ऐसा नहीं करने दिया। फिर कहा था विश्वामित्र एक नयी सृष्टि करने लगे। सप्तऋषि मण्डल और नक्षत्रों की उन्होंने सृष्टि की, यह देवकर देवो ने विश्वामित्र को समझाया, विश्वामित्र ने कहा त्रिशङ्कु को नीचे नहीं गिरने देंगे। देवो ने यह मान लिया, तब त्रिशङ्कु अन्तरिक्ष में सिर नीचे किये हुए लटका हुआ है।

(२) हरियज्ञ में एक दूसरे त्रिशङ्कु की कथा लिखी मिलती है। यह ऐष्यायण के पुत्र थे। इनका पहला नाम सत्यव्रत था। इन्होंने दूसरे की ट्याही स्त्री को हर लिया था। इससे इनके पिता अप्रसन्न हुए थे। तदनन्तर गुरु वशिष्ठ की दुष्ठा गौ मात कर इसने गोमांस खाया, इन्हीं तीन पापों के कारण इसका त्रिशङ्कु नाम पड़ा था। उसकी अपार्थिकता के कारण पिता ने उसे अपने राज्य से निकाल दिया था। इसकी दुर्दशा देखकर विश्वामित्र को दया आई। उन्होंने त्रिशङ्कु को पिता का राज्य दिलवा दिया। इसी शरीर से स्वर्ग भेजने के लिये विश्वामित्र ने यज्ञ कराया था। देवताओं ने इसे स्वर्ग में स्थान दिया, इसकी स्त्री का नाम सत्यरथा था। सत्यरथा के गर्भ से हरिसिद्ध नामक त्रिशङ्कु का एक पुत्र हुआ था। यह पुरपात्मा हरिसिद्ध वैशङ्कव नाम से पुकारा जाता है।

त्रिशूल तत्० (५०) अक्ष विधेय, महादेव का अक्ष ।  
 —घाटी (५०) शिवालयघाटी, महादेव, शम्भु ।  
 —पाणि (५०) महादेव ।  
 श्रुती तत्० (५०) शिव, महादेव, महेश ।  
 श्रुत तत्० (५०) विकृत पर्वत, त्रिकोण ।  
 श्रुत तत्० (श्री०) छन्दोविधेय, एक वैदिक छन्द का नाम ।  
 सन्धि तत्० (श्री०) पुष्प विधेय ।  
 सन्ध्य तत्० (५०) सायं, प्रातः और मध्याह्न काल ।  
 —व्यापिनी (श्री०) त्रिसन्ध्या के अन्तर्गत कियत् चण व्यापिनी तिथि ।  
 सन्ध्या तत्० (श्री०) प्रातः, सायं और मध्याह्न काल ।  
 दे तत्० (श्री०) अग्नि, हनि, अपचय, नाश, न्यूनता, आनालक्षण, प्रतिज्ञा का अन्वया करना, क्षम, अपराध, संशय, कालभेद मुहूर्त, चण दूपात्मक काल, अरण्य, संशय । —कारक (५०) अतिकारक, हानिकारी, दैवी, अपराधी ।  
 देत तत्० (५०) खण्डित, भग्न, अत, टूटा हुआ ।  
 दी तत्० (श्री०) क्षुब्ध देखो ।  
 टी तत्० (श्री०) युग विधेय, दुसरा युग, इस युग का मान १२८६००० वर्ष का है । यज्ञाग्नि विधेय, यज्ञ के तीन दक्षिणाग्नि गार्हपत्य, और आहवनीय अग्नि । —शि (५०) [ श्रेता + अग्नि ] यज्ञ के अग्नि का रक्षा करने वाला, आहिताग्नि ।  
 —युगाद्या (श्री०) वेतायुग की आरम्भ तिथि, कार्तिक शुक्ल नवमी ।  
 यो तत्० (श्री०) [ त्रि + धा ] त्रिधा, तीन प्रकार ।  
 युष्य तत्० (५०) त्रिगुण का, धर्म, त्रिगुण का, स्वभाव, सत्वरत्न और तम इनका समुदाय ।  
 युगिक तत्० (५०) त्रिवर्ग सम्बन्धी ।  
 युगिक तत्० (५०) वर्ष अयात्मक, तीन वर्ष का त्रिषोडशवर्षिक ।  
 युग तत्० (५०) त्रिवेदज्ञ, वेदब्रह्मवेत्ता ।  
 युध्य तत्० (५०) प्रकारान्वय, तीन प्रकार ।

त्रैमासिक तत्० (५०) त्रिमासी, तीन मास सम्बन्धी, तीन मास का ।  
 त्रैराशिक तत्० (५०) अक्ष प्रकरण विधेय, जिसमें एक वस्तु का मुख्य जानने से तीन वस्तुओं का मुख्य जाना जाता है । तीन को संघा का गणित सम्बन्धी नियम ।  
 त्रैलोक्यस्वामी तत्० (५०) इन महात्मा का जन्म दक्षिणात्य ब्राह्मण वंश में हुआ था । वर्ष १५२८ ई० के पूर महीने में त्रिजिना जिला के हेरिया ग्राम में इनका जन्म हुआ था । इनके पिता का नाम नृसिंहधर था, यह बड़े धनी थे । इनकी दो श्री थीं । बड़ी श्री के गर्भ से त्रैलोक्यधर उत्पन्न हुए थे । यहाँ त्रैलोक्यधर पीछे त्रैलोक्य स्वामी के नाम से प्रसिद्ध हुए । त्रैलोक्य की ४० वर्ष की अवस्था में उनके पिता का स्वर्गवास हुआ । पिता के वियोग के अनन्तर इन्होंने अपनी माता से शास्त्रों का अध्ययन और योगाभ्यास की शिक्षा पायी । इनकी १२ वर्ष की अवस्था में इनकी माता का परलोकवास हुआ । माता के अन्तिम संस्कार के बाद पुनः ये घर नहीं लौटे । इनके छोटे भाई ने घर चलाने के लिये बहुत विनय किया, परन्तु इन्होंने कुछ नहीं सुना । तदनन्तर इनके छोटे भाई ने इनके लिये वहाँ मकान बनवा दिये, और भोजन की भी व्यवस्था कर दी । इसी समय भगीरथ स्वामी नामक योगी के साथ इनका परिचय हुआ । त्रैलोक्य इन्होंने स्वामीजी के साथ पुष्कर तीर्थ का गये, और वहाँ इन्होंने योग के सूत्रतंत्रों का ज्ञान प्राप्त किया । इन्होंने उन्हींसे मन्त्रग्रहण भी किया । कुछ दिनों के बाद भगीरथ स्वामी, अपने तीर्थों में घूमते हुए सेतुबन्ध रामेश्वर पहुँचे । वहाँ से स्वामीजी सुदामापुरी की ओर चले बढ़े । वहाँ स्वामीजी के घर से एक दरिद्र ब्राह्मण धनी और पुत्रवाद्द हुआ था । स्वामीजी का दैवीक प्रभाव देखकर लोग बेटा धन आदि के लिये उन्हें खताने लगे । अतएव विषय होकर स्वामीजी वहाँ से हिमालय की ओर नैपाल राज्य में गये, और कुछ दिनों तक वहाँ योगाभ्यास करते रहे । वहाँ वहाँ की अशुभता के कारण स्वामीजी, पुनः



नेला दे० (पु०) स्तन का रोग विशेष, स्तन का घाय ।

शेखरी तट्ट० (पु०) कुक्कुट के रहनेवाले ब्राह्मण ।

शक दे० (पु०) याप, ठोक, चुमकार ।

शडा दे० (पु०) चपत, चपेटा, घप्पड़ ।

शही दे० (खी०) करतासी, हाथों से तानी देना ।

शना तट्ट० (क्रि०) स्थापना, बैठाना, स्थापित करना, देवता आदि की प्रतिष्ठा करना ।

शत तट्ट० (पु०) स्थापित, प्रतिष्ठापित, स्थापना किया हुआ ।

शाना तट्ट० (क्रि०) स्थापना कराना, प्रतिष्ठित कराना ।

शडा दे० (पु०) शैव, चपेटा, घपड़ा ।

शड़ दे० (पु०) चपत, चपेटा, घाय ।

शतट्ट० (पु०) स्तम्भ, खम्भ, पाया ।

शडा दे० (पु०) शुद्धिल, तोड़िल, बड़े पेटवाले ।

शाना, शंभना दे० (क्रि०) रुकना, शंभना ठहरना ।

शेट० (पु०) सिंह बाघ का खोह, बीहड़ जङ्गल, शीरान बन ।

शर दे० (पु०) कम्प, डगमग, हलचल, एक प्रकार का कम्प, बहुत कम्प, यथा—“जाड़े से शरयर कौपता हुआ भी प्रातःकाल गङ्गास्नान करने गया ।”

शराना दे० (क्रि०) कौपना, कम्पित होना, भय से कौपना ।

शराहट दे० (खी०) कम्प ।

शरी दे० (खी०) कपकपी ।

श दे० (क्रि०) कौपना, शङ्कित होना, भयभीत भಾಗामी भय की चिन्ता से कौपना ।

शराना दे० (क्रि०) चिन्ता से कौपना ।

शाना दे० (क्रि०) कम्पित होना, कम्पित करना, रुपा देना, शङ्कित करना ।

शतट्ट० (पु०) स्थल, जगह, जमीन, ठाँव, धरती, स्थान ।

शकना दे० (क्रि०) घड़कना, फड़कना, तलफना, उथल पुथल होना ।

थलथलाना दे० (क्रि०) सामान्य आघात से, भी हिलने लगना, कम्पित होना, जिस प्रकार मोटे धादिमियों का मौस हिलता है ।

थलचर तट्ट० (पु०) स्वसचारी, भूमि पर चलनेवाले मनुष्य आदि ।

थलथेड़ा दे० (पु०) घर, वासस्थान, रहने का मकान ।

थलिया दे० (खी०) थाल, भोजन करने का घर्तन ।

थली दे० (खी०) घर, पाण्डुर, पर्वत या बन की प्रान्त भूमि ।

थर्वई दे० (पु०) राज, थई, मकान बनाने वाला ।

थहराना दे० (क्रि०) कौपना, शङ्कित होना, भीत होना ।

थांग दे० (खी०) चारों का गुप्त गृह, मॉद, यह बीहड़ स्थान जहाँ चार चोरी करने के लिये ब्राह्मण करते हैं ।

थांगी दे० (पु०) चोर, तस्कर, बटमार ।

थांभ दे० (पु०) खम्भा, स्तम्भ ।

थांभना दे० (क्रि०) अश्लम्बन करना, रोकना, अटकाना, आड़ना, सहायता करना, बिलम्ब करना ।

थांचला दे० (पु०) कपारी, खालबाल ।

थाकता दे० (क्रि०) थकना, श्रान्त होना, क्लान्त होना ।

थाती, थाथी (खी०) गिरा, धरोहर, न्यास, शमानत, बन्धक, जाकड़ ।

थान दे० (पु०) कपड़े का घान, स्थान, जगह, पशु बाँधने का स्थान ।

थाना दे० (पु०) चौकी, सिपाही के रहने का स्थान, कोतवाली ।

थानी दे० (पु०) स्थानी, स्थान का स्वामी, स्थान का प्रधान, मुख्य ।

थाप दे० (खी०) थाल, घप्पड़, पशु का पौंस, मयौंद, बैठक, श्लेट टोल के बजने का शब्द ।



भारत में सौतकर नर्मदा के तीर पर माईपदेव गुनि के प्राथम में रहने लगे । अनन्तर इन्होंने काशी में रहना स्थिर किया । स्वामीजी का प्रभाव चारों ओर फैल गया, लोग दूर दूर से इनके दर्शनों के लिये आते थे । काशी के यामी विश्वनाथ के समान भक्ति करते थे । १८० वर्ष की अवस्था में ये विनाशी गरीर को छोड़कर मुक्त हुए ।

त्रैलोक्य तत्० (पु०) त्रिभुवन, त्रिमोक्षी, स्वर्ग, मर्त्य और पाताल, ब्रह्माण्ड ।

त्रोटक तत्० (पु०) संस्कृत का एक छन्द विशेष ।

त्रोट्टी तत्० (स्त्री०) चञ्चु, चोंच, चोट, ठोट ।

त्रोथ दे० (पु०) तृण, तरकस, रूपधि, बाण रखने का घर ।

त्रयधीश तत्० (पु०) त्रिकालाधिपति, त्रिलोकेश, सूर्य ।

त्रयम्बक तत्० (पु०) त्रिय, महादेव, त्रिलोकेश ।  
—सप्त (पु०) कुबेर, यक्षराज, धनाधिप ।

त्र्याहिक तत्० (पु०) तीसरे दिन होनेवाला, तीसरे दिन का, दो दिन के बाद होने वाले रोग आदि ।

त्वक् तत्० (स्त्री०) स्पर्शेन्द्रिय, छाल, बरकल ।

—फणु (पु०) ब्रण, स्फोटक, घाय, घत ।—पत्र (पु०) तेजपात ।—सार (पु०) घाँव ।

त्वचा तत्० (स्त्री०) चर्म, बरकल, छाल ।

त्वद्दृष्टि तत्० (पु०) आपके धरण ।

त्वदीय तत्० (पु०) गुन्हारा, गुन्हारा बरकल

त्वरा तत्० (स्त्री०) वेग, शीघ्रता, दृढ़ता

--फारक (पु०) शीघ्रकारक, द्रुतकारी

(पु०) [स्वरा + चञ्चित] तूर्ण, स्वरित ।

त्वरित तत्० (पु०) स्वरान्वित, (पु०) त्वरित

त्वरितोदित तत्० (पु०) [स्वरित + उदित]

कथित वाक्य, जल्दी से कहा गया वाक्य ।

त्वष्टा तत्० (पु०) [स्वष्ट + तृष्ट]

सूर्य, विरयकर्मा, वर्षसङ्कर

चदर ।

त्याग्न तत्० मृत्साधुर, वृत्र नामक अगुर ।

त्याग्री तत्० (स्त्री०) सिद्धा नक्षत्र, महा

सूर्य की स्त्री ।

त्यिय तत्० (स्त्री०) योगा, प्रभा, ज्ञानि,

सवि, वाक्य, उपवसाय, त्रिगीषा,

इत्या ।

त्यिया तत्० (स्त्री०) दीप्ति, योगा राशि, ज्ञान

त्यिपाम्पति तत्० (पु०) सूर्य, रति, भावु ।

त्यियि तत्० (पु०) किरण, राशि, तेज, प्रभा ।

थ

थ व्यञ्जन का सत्तरहवाँ अक्षर, दन्तस्थान से उच्चारण होने के कारण इसे दन्त्य कहते हैं ।

थ, तत्० (पु०) पहाड़, रचक, व्याधि विशेष, भय-चिन्ह, भक्षण, मङ्गलध्वंस ।

थई दे० (स्त्री०) कपड़ों की राशि, वस्त्रसङ्ग्रह, इँटों की बनी घटारी, गृहनिर्माता, घर बनानेवाला राज,

धवई ।

थंय, थंघा, थंभ तद्० (पु०) स्तम्भ, एम्भा, एम्भ, धूनी, पाया ।

थंभना दे० (क्रि०) ठहरना, रुकना, समदलना, स्थिर होना ।

थक दे० (पु०) थका, थका, थकान, देला ।—थक (पु०) लयपथ, तरबतर, सिक्त, अक्त ।

थकना दे० (क्रि०) थान्त होना, हारना, अधिक परिश्रम से इन्द्रियों का अथय

पैर आदि की शिथिलता ।

थका दे० (पु०) थान्त, थका हुआ, थकित

थकाना दे० (क्रि०) थान्त करना, परिश्रम शिथिल करना ।

थकार तत्० (पु०) थ अक्षर, तवर्ग

थकित दे० (पु०) थका, थान्त, थकित,

थघा दे० (पु०) थोक, थकान, सोदा,

पदार्य, जमा हुआ, जमावट ।

थन तद्० (पु०) स्तन, गौघादि की बूँदी,

सेवा ।

थनी दे० (स्त्री०) चाड़े का एक दोष ।

ला दे० (पु०) स्तन का रोग विशेष, स्तन का घाय।

श्वरी तद्० (पु०) कुक्कुट के रहनेवाले ब्राह्मण।

क दे० (पु०) थाप, ठोक, चुमकार।

ड़ा दे० (पु०) चपत, चपेटा, घण्टा।

ड़ी दे० (स्त्री०) करताली, हाथों से तानी देना।

ना तद्० (क्रि०) स्थापना, बैठाना, स्थापित

करना, देवता आदि की प्रतिष्ठा करना।

तद्० (पु०) स्थापित प्रतिष्ठापित, स्थापना

किया हुआ।

ना तद्० (क्रि०) स्थापना करना, प्रतिष्ठित

कराना।

ड़ा दे० (पु०) धौन, चपेटा, घण्टा।

पड़ दे० (पु०) चपत, चपेटा, थाप।

तद्० (पु०) स्तम्भ, खम्भ, पाया।

ड़ा दे० (पु०) मुन्दिल, तोंदिल, बड़े पेटवाले।

ना, यंभना दे० (क्रि०) रुकना, यंभना ठहरना।

दे० (पु०) सिंह बाघ का छोह, बीहड़ जङ्गल,

बीरान घन।

थर दे० (पु०) कम्प, डगमग, हलचल, एक प्रकार

का कम्प, बहुत कम्प, यथा—“जाड़े से थरथर

सौंपता हुआ भी प्रातःकाल गङ्गास्नान करने

गया।”

थराना दे० (क्रि०) काँपना, कम्पित होना, भय

से काँपना।

थराहट दे० (स्त्री०) कम्प।

थरी दे० (स्त्री०) कपकपी।

ा दे० (क्रि०) काँपना, शङ्कित होना, भयभीत

प्राणामी भय की चिन्ता से काँपना।

हराना दे० (क्रि०) चिन्ता से काँपना।

ना दे० (क्रि०) कम्पित होना, कम्पित करना,

हँपा देना, शङ्कित करना।

तद्० (पु०) स्थल, जगह, जमीन, ठौर, धरती,

स्थान।

कना दे० (क्रि०) पड़कना, फड़कना, तलफना,

उपन पुगल होना।

थलथलाना दे० (क्रि०) सामान्य आघात से भी हिलने लगना, कम्पित होना, जिस प्रकार मेढे आदिमियों का मौँस हिलता है।

थलचर तद्० (पु०) स्वलचारी, भूमि पर चलनेवाले मनुष्य आदि।

थलवेड़ा दे० (पु०) घर, वासस्थान, रहने का मकान।

थलिया दे० (स्त्री०) घाल, भोजन करने का यंत्र।

थली दे० (स्त्री०) घर, पाण्डुर, पर्यत या घन की

प्रान्त भूमि।

थरई दे० (पु०) राज, थर, मकान बनाने वाला।

थहराना दे० (क्रि०) काँपना, शङ्कित होना, भीत

होना।

थांग दे० (स्त्री०) चारों का गुप्त गृह, मौँद, यह

बीहड़ स्थान जहाँ चार चोरी करने के लिये घाक-

मण करते हैं।

थांगी दे० (पु०) चोर, तस्कर, बटमार।

थांभ दे० (पु०) खम्भा, स्तम्भ।

थांभना दे० (क्रि०) अगलमगन करना, रोकना,

घटकाना, आड़ना, सहायता करना, बिलम्ब

करना।

थांभला दे० (पु०) कपारी, आलबाज।

थाकना दे० (क्रि०) थकना, थान्त होना, कुम्ह

होना।

थाती, थाथी (स्त्री०) गिरी, धरोहर, न्यास, चमा-

नत, बन्धक, जाकड़।

थान दे० (पु०) कपड़े का यान, स्थान, जगह, पगु

बाँधने का स्थान।

थाना दे० (पु०) चौकी, विपाही के रहने का स्थान,

कोतवाली।

थानी दे० (पु०) स्थानी, स्थान का स्वामी, स्थान

का प्रधान, मुख्य।

थाप दे० (स्त्री०) धौन, घण्टा, पगु का धौँ, मर्याद,

दौँक, छोटे टोस के बजने का शब्द।

थापना दे० (क्रि०) घोपना, घोलियाना, गोबर पापना, उपरी बनाना, धपधपाना, ठोकना, रखना, स्थापन करना, ठहरा देना, धरना, फलश स्थापन की पूजा ।

थापा दे० (पु०) पशु के पाँव का चिन्ह, हाथ का चिन्ह ।

थापित दे० (पु०) स्थापित, प्रतिष्ठापित, बैठाया गया ।

थापी दे० (स्त्री०) थापने का शब्द, काठ की बनी हुई थापी, जिससे छत आदि पीटते हैं ।

थाम दे० (पु०) धम्म, धूनी, टेक ।

थामना दे० (क्रि०) रोकना, पकड़ना, झटकाना, रोकना ।

थाम्भना दे० (स्त्री०) सम्भालना, रोकना, बिलम्ब करना ।

थार, थाल दे० (पु०) बड़ी थाली, भोजन करने का बड़ा पात्र ।

थाला दे० (पु०) घालवाल, धाँवला ।

थाली दे० (स्त्री०) थलिया, भोजन करने का पात्र ।

थावर तद्० (पु०) स्थावर, प्राणिविशेष, अचल, वृक्षादि ।

थाह दे० (स्त्री०) तला, पेंदा, पानी के नीचे की भूमि, उताराघाट ।

थाहा दे० (पु०) नदी का उथला स्थान, जहाँ अधिक जल न हो ।

थाही दे० (स्त्री०) उथली नदी, नदी विशेष, जो गहरी न हो ।

थिति तद्० (स्त्री०) स्थिति, स्थिरता, निश्चितपण ।

थिर तद्० (पु०) स्थिर, अचल, निश्चित ।

थिरकना दे० (क्रि०) निपुणतापूर्वक नाचना ।

थिरकी दे० (स्त्री०) चमत्कार, विशेषता, धूमने की रीति ।

थिरता तद्० (स्त्री०) स्थिरता, अचञ्चलत्व ।

थिरा तद्० (स्त्री०) स्थिरा, पृथ्वी, पृथिवी, धरती ।

थिराना दे० (क्रि०) स्थिर होना, बैठाना, ठहराना, मिट्टी के बैठ जाने से पानी का साफ होना ।

थीर दे० (पु०) सुखी, स्थिर ।

थुकथुकाना दे० (क्रि०) झूकना, घुणायोग्य देख कर झूकना ।

थुकाना दे० (क्रि०) निन्दा कराना, कराना ।

थुतकारना दे० (क्रि०) अनादर के साथ फिटलना, अपमानित करना, अपमानित करना ।

थुथनी दे० (स्त्री०) झूकर का मुँह ।

थुथाना दे० (क्रि०) भौ चढाना, तेवरो चढाना, लटकाना ।

थूक दे० (पु०) मुँह का पानी, कफ, खार ।

थूकना दे० (क्रि०) झूक फेंकना, खारना ।

थूखी तद्० (स्त्री०) स्त्रुण, स्तम्भ, खम्भा, की लकड़ी जो छप्परो से लगायी जाती युनकिया ।

थूथडा दे० (पु०) झूकर आदि पशुओं का झयनी, (पु०) घुरा, खाराय ।

थूथन थूथना दे० (पु०) झयबा, पशुओं का मुँह, धूनी तद्० (स्त्री०) धूणी, स्त्रुण, स्तम्भ, धरन ।

थूरन दे० (पु०) पीटन, कूचन, कूचना, कूटना ।

थूरना दे० (क्रि०) मारना, पीटना, रस्सी बनाने में मूँज या नारियल के छुमे को पतला बनाना ।

थूहर दे० (पु०) पोधा विशेष, सीज, मेहुड, से यह कटिला पोधा होता है ।

थेईथेई दे० (स्त्री०) ध्यानन्द, हर्ष, नृत्य ध्यानन्द, बाजे के अनुकरण का शब्द विशेष ।

थेगली दे० (स्त्री०) टिकड़ी, जोड़ पैदल, का की चिप्पी ।

थेवा दे० (पु०) नग, हीरा, चाँगाटी या और गहने में जड़े जाने वाला बहुमूल्य पत्थर ।

थैथै दे० (पु०) वाद्यानुकरण शब्द, बाजे के नाचने वाले अपने घुँघरू से जो शब्द लते हैं ।

थैला से० (पु०) बेरा, गान, सोया ।  
 थैलिया थैलो दे० (खी०) छोटा थैला, कोयली,  
 वटुआ ।  
 थैक दे० (पु०) एकत्र, समुदाय, राशि, समूह, देश,  
 एक देश, भाग, टैला, महल्ला ।  
 थैड दे० (पु०) फले हुए केने का गाभा, फलित  
 फदली वृक्ष का गर्भ, फेले का मध्यदेश ।  
 थैड़ा दे० (गुं०) अल्प, किञ्चित्, कम, न्यून, तनिक ।  
 —थैड़ा (अ०) कुछ कुछ, अल्प अल्प, शनैः शनैः,  
 धीरे धीरे, कम कम ।—थैड़ा होना (वा०) अस्मित  
 होना, घटना, धीरे धीरे आगे बढ़ना, क्रमशः  
 अग्रसर होना ।—थहुत (वा०) घाटघाड़, न्यून-  
 अधिक, कमवेश ।—से थैड़ा (वा०) अल्पत्व,  
 बहुत कम ।  
 थैरा दे० (गु०) मोंघर, मोंघरा, कुचिठत, तेज  
 नहीं ।  
 थैला दे० (गु०) अतीवण, कुचिठत, चिना  
 धार का ।

थोथा दे० (पु०) औपधि विशेष, फलहीन तीर,  
 बिना धार का बाण, मोपह अस्त्र, (गु०) छूटा,  
 पीता, रिक्त ।  
 थोथीवात दे० (वा०) अनर्थक वाक्य, बिना प्रयोजन  
 का वाक्य, अर्थहीन वचन, ऊटपटांग वात ।  
 थोप दे० (गु०) पालकी के बाँग का मुखड़ा, टोप,  
 टॉप, छाप, सुहर, भूषण, अलङ्कार ।  
 थोपना दे० (क्रि०) एकत्रित करना, संभालना,  
 थापना, लेपना, गाँजना, बटेरना ।  
 थोपियाना दे० (क्रि०) नूना, छूँद छूँद गिरना,  
 फिरकियाना, बुँदियाना ।  
 थोपी दे० (खी०) चपेटा, चपत, धक्का, मुक्का ।  
 थोय, थोम दे० (खी०) धरन की धूनी, लरही का  
 टेकन, लड़ी का टेकन ।  
 थोहर दे० (पु०) गृहर, सेहुँद, चीज ।  
 थोना दे० (पु०) गाने के बाद की स्त्री की  
 चिदाई ।

## द

यह ध्यञ्जन का अक्षरहोयों वर्ण है यह दन्त्य वर्ण है  
 क्योंकि इसका उच्चारणस्थान दन्त है ।  
 दत्० (गु०) दाता, देनेवाला, पर्वत, दान, दत्त,  
 उपहन, रक्षण, भार्या, पत्नी, संस्करण, मुधारन,  
 किसी शब्द के अन्त में आने से यह देने वाले  
 का बोधन करता है । यथा—धनद, जलद,  
 पयोद, आदि । इसका काटना अर्थ हिदी में  
 अमसिद्ध है ।  
 दद० (गुं०) दैव, भाग्य, दिष्ट, अदृष्ट, ईश्वर,  
 देवता ।—मारा (गुं०) भाग्यहत, भाग्य का मारा,  
 दुर्भाग्य, अभाग्य ।  
 दत्त० (गुं०) दौत, डक, डाँस, वन की मकड़ी,  
 अक्षर विशेष, भृगुमुनि के श्याप से अलक नामक  
 कीट की योनि रहने पाई थी ।—भीरु (गुं०)  
 महिष, भँसा ।  
 दत्त० (गुं०) कीट विशेष, वन मकड़ी, (गुं०)  
 दन्ताघातकारी, डक मारने वाला, सर्प आदि ।

दंशन तत्० (गुं०) [दंश + शनट] काटना, दन्ताघात  
 करना, दौतकाटना ।  
 दंशित तत्० (गुं०) [दंश् + शत] दष्ट, दन्त द्वारा  
 काटा हुआ, खण्डित ।  
 दंशी तत्० (खी०) सुद्रव्य, छोटा डाँस ।  
 दंष्ट्र तत्० (गुं०) [दंश् + त्र] दन्त, रदन, दौत ।  
 दंष्ट्रा तत्० (खी०) [दंष्ट्र + प्रा] विद्याल दन्त, बड़ा  
 दौत, सिंह आदि हिंस्र जन्तुओं के मुकीले दौत ।  
 दंष्ट्री तत्० (गुं०) वृहदन्त विशेष, शूकर, हिंसक-  
 जन्तु ।  
 दंश तत्० (गुं०) सिंह, कुत्ता, दंष्ट्री ।  
 दक तत्० (गुं०) उदक, पानी, जल, रस ।  
 दत्त तत्० (गुं०) निपुण, कुशल, प्रवीण, पट्ट, दाहिना  
 हाथ, (गुं०) मुनि विशेष, शिष्य का पैर, वृक्ष-  
 विशेष, अग्नि, शिष्य, शिष्य, प्रजापति विशेष । यह  
 ब्रह्मा के दस मानव पुत्रों में से एक थे । इनका

विवाह मनु की कन्या प्रसूति से हुआ था। इनकी १६ कन्याएं थी। इनमें से तेरह कन्याएं धर्म को, एक अग्नि को, एक पितृगण को और एक शिव को उपाही गई थी। शिव को उपाही कन्या का नाम सती था। एक समय शिव ने दक्ष का अनुष्ठान नहीं किया इससे दक्ष को बड़ा क्रोध आया और उन्होंने शिव की बड़ी निन्दा की और उन्होंने शिव को समाजव्युत्तर करके उनका यज्ञभाग रोक दिया। कुछ दिनों के बाद दक्ष सब प्रजापतियों के अधिपति बनाये गये, इससे दक्ष का अहङ्कार और भी बढ़ गया। उन्होंने बृहस्पति नामक यज्ञ का अनुष्ठान प्रारम्भ किया, उस यज्ञ में सभी निमन्त्रित किये गये, परन्तु शिव और सती नहीं। भिता के यज्ञ करने का समाचार सुनकर सती ने पिता के यहाँ जाने की शिव की अनुमति चाही, शिव ने अनुमति दे दी। सती पिता के यज्ञ में उपस्थित हुई। सती के सामने दर्पान्धदक्ष शिव की निन्दा करने लगे। पति की निन्दा न सुनने के लिये सती ने वहीं शरीर त्याग किया। इसकी खबर नारद ने शिव तक पहुँचायी। शिव क्रोध से अधीर हो गये। उन्होंने अपनी जटा भूमि पर पटक दी। उसमें से वीर-भद्र की उत्पत्ति हुई, वीरभद्र शिव के अनुचरों के साथ यज्ञभूमि में पहुँचे और उन्होंने यज्ञ नष्ट भृष्ट करके दक्ष का सिर उतार लिया और उसे जला डाला। पुनः ब्रह्मा की प्रार्थना करने पर शिव ने यक्रे का सिर दक्ष के कर्णस्थ में जोड़ने की अनुमति दी। दक्ष जीवित हुए। तब यज्ञ समाप्त करके उन्होंने अनेक प्रकार से महादेव की स्तुति की।

—श्रीमद्भागवत

—कन्या (स्त्री०) दुर्गा, भगवती, सती।—जा (स्त्री०) उमा, सती, दुर्गा, सत्ताइस नक्षत्र।—जापति (पु०) चन्द्र, शिव, करवय, धर्म, अग्नि, रुद्र।—ता (स्त्री०) चतुःता, पद्मता, नैऋत्य, निपुणता।—सावर्णि (पु०) नवम मनु।—सुता (स्त्री०) सती, उमा।

दक्षन दे० (पु०) दक्ष शब्द का प्रथमाभा के निम्नानुसार बहुवचन, यथा—देव, देवन, सेक, सेक, नायक विशेष। यथा—

“एक भौति सब तियन सो जाके होय सनेह,  
सो दक्षन मतिराम वरनत है मति गेह।”

—रत्ना

दक्षिण तत्० (पु०) सरल, उदार, अनुकूल, परबन्धुवर्ती, अन्वचिन्तानुवर्ती, चतुर, प्रवीण, अपक्व दक्षिण दिशा, दहिनाभाग, चार प्रकार के पति में से एक पति, अनेक नायिकाओं का समान से देखने वाला। देखो दक्षन।—कालिका (की महाविद्या विशेष, आद्या शक्ति।—केन्द्र व वानर, इङ्गाग्रि।—एण्ड (पु०) विन्ध्यावर्ष दक्षिण का देश।—ता (स्त्री०) अनुकूलता, सलता, सारथ्य।—पथ दक्षिण दिशा।—पू (स्त्री०) दक्षिण और पूरव का कोन।—पश्चि (स्त्री०) दक्षिण और पश्चिम का कोन।—वे (पु०) दाहिना हाथ।

दक्षिणा तत्० (स्त्री०) दक्षिण दिशा, धर्म कर्म पारितोषिक, भेंट, पूजा। कर्म की पूर्ति के। दान, नायिका विशेष।—अग्नि (पु०) दा + अग्नि ] यज्ञाग्निविशेष।—खल (ः [दक्षिण + अखल] मलय पर्वत, दक्षिण दिशा पर्वत विशेष।—पथ (पु०) दक्षिण दिशा—वर्त (पु०) [दक्षिण + आवर्त] शङ्खविं दहिनी और से मुड़ा हुआ शङ्ख, बहुमुख्य। मङ्गलमूचक अग्नि,।—भिन्नुक (पु०) [दक्षिण अग्निमुख] दक्षिण और का रुख।—मुख (ः) दक्षिणास्य, दक्षिण दिशा में कृतमुख।—ह (ः) [दक्षिण + अर्ह] दक्षिणायोग्य, दक्षिणा के अकारी।—शा (स्त्री०) दक्षिणा की या दक्षिण दिशा

दक्षिणायन तत्० (पु०) सूर्य का दक्षिण दिशा गमन, कर्म की सक्रान्ति से धन की सक्रान्तिक का काल, जब सूर्य की दक्षिणगति रहती दक्षणीय तत्० (पु०) दक्षिण देश का मह दक्षिण देशायामी, दान योग्य, दान पाने अधिकारी।

दखन तद्द० (५०) दक्खन, दक्षिण दिशा ।  
 दखनी तद्द० (५०) दक्षिण देशवासी, दक्षिणदेश का ।  
 दखल दे० (५०) अधिकार, सत्ता, अधिकृति ।  
 दखिनी तद्द० (५०) दक्षिण देशवासी, दक्षिण देश सम्बन्धी ।  
 दगड़ दे० (५०) धक्का दक्का, नगरा, दुन्दुभी ।  
 दगड़ना दे० (क्रि०) अविश्वास करना, अग्रव्यय करना ।  
 दगड़ा दे० (५०) उगर, मार्ग, राह, रास्ता, पथ ।  
 दगड़ाना दे० (क्रि०) उगराना, दौड़ाना, धवाना, चलाना ।  
 दगदगा दे० (५०) चमकीला, स्वच्छ, साफ, सुधरा ।  
 दगदगाना दे० (क्रि०) चमकाना, धक्कना, प्रकाशित होना ।  
 दगदगाहट दे० (स्त्री०) चमक, चमत्कार, प्रकाश ।  
 दगधना दे० (क्रि०) जलाना, छेड़ना, सताना, दुःख देना, मानसिक कष्ट पहुँचाना ।  
 दगला दे० (५०) बड़ा अङ्गा, चोगा, रुई भरा बड़ा अंगरत्ता ।  
 दग्ध तत्त्० (५०) [दह् + क्त] भस्मीकृत, भस्म किया हुआ, जलाया हुआ, ज्वलित, अग्नितापित ।  
 —काक (५०) अंधकाक, बुढ़कौआ ।—योनि (५०) नष्टबीज, मूलध्वंस, उत्पादन शक्तिहीन ।  
 —रथ (५०) गन्धर्व विधेय, इनका नाम था अङ्गारवर्ष, अनेक रथों का एक रथ इनके पास था इसी कारण इनका लोग चित्ररथ भी कहते थे । जिस समय युधिष्ठिर अपने भाइयों को लेकर वनवास करते थे उसी समय कारण विशेष से अर्जुन और चित्ररथ में घोर युद्ध हुआ, चित्ररथ हार गये, इसी कारण दुःखित होकर उन्होंने अपना रथ जला डाला, तभी से उनके दग्धरथ कहने लगे ।  
 दग्धा तत्त्० (स्त्री०) अमङ्गलतिथि, सूर्यस्थितिदशा, तिथि विशेष, वारविशेष ।  
 दग्धिका तत्त्० (स्त्री०) दग्ध-अन्न, जलाभास, भुँजा अन्न, भूष्टपान्य ।

दग्धोदर तत्त्० (५०) [दग्ध + उदर] चुभान, लुधा पीड़ित । (५०) भोजन की अभिलाषा, भोजन वाञ्छा ।  
 दङ्गल दे० (५०) एक प्रकार की चौकी, काष्ठनिर्मित घासन विशेष, मल्लयुद्ध, यदावदी का युद्ध, पण-बन्धयुद्ध ।  
 दङ्गा दे० (५०) भगड़ा, रौला, हुलड़, वलधा ।  
 दङ्गित दे० (५०) दङ्गा करने वाला, भगड़ावृत्त ।  
 दद्य तत्त्० (५०) त्याग, हिंसा, नाश ।  
 दच्छ तद्द० (५०) दक्ष, निपुण, फुराल ।  
 दक्षिना तद्द० (स्त्री०) दक्षिणा ।  
 दटना दे० (क्रि०) टटना, धीरता के साथ सामना करना, अड़ना, खड़ा रहना, मोड़े पैर नहीं देना ।  
 दङ्कना दे० (क्रि०) दरकना, फटना, चिरना, तड़कना ।  
 दङ्गरेा दे० (५०) प्रचण्ड भङ्ग, भारीवृष्टि, धक्का, दरेल ।  
 दङ्गमुड़ा दे० (५०) बिना दाढ़ी का, दाढ़ी रहित, जिसकी दाढ़ी झूठ दी गई हो ।  
 दद्वियल दे० (५०) लम्बी दाढ़ीवाला ।  
 दण्ड तत्त्० (५०) [दण्ड + अत्] साठ पल परमित काल, चड़ो, लाठी, पट्टि, दमन, निग्रह, शासन, अपराधी को उसके अपराध के अनुसार शरीर या धर्म सम्बन्धी सजा, ऊर्ध्वस्थिति, संन्यास धर्म, सैन्य, ठगूहमेद, शत्रु दमन करने वाली राजशक्ति, ठगूह रचना विशेष, चक्रठगूह, प्रकाण्ड, यज्ञ, अश्व, कौन, कौण, मानविशेष, भूमि नापने की लाठी जिसको फाटा कहते हैं । यम, यमराज, अभिमान, ग्रह भेद, दहवाकु राजा का पुत्र ।  
 दण्डक तत्त्० (५०) वन विशेष, हृन्द विशेष, एक राजा का नाम ।  
 दण्डकारण्य तत्त्० (५०) दण्डक नाम राजा का देश, शुक्राचार्य किसी कारणवश राजा से दृष्ट हो गये और उन्होंने उसके देश को जङ्गल होने का गाय

विवाह मनु की कन्या प्रसूति से हुआ था। इनकी १६ कन्यारं थी। इनमें से तेरह कन्याएं धर्म को, एक अग्नि को, एक पितृगण को और एक शिव को ठपानी गई थी। शिव को ठपानी कन्या का नाम सती था। एक समय शिव ने दत्त का अभ्युत्थान नहीं किया इससे दत्त को बड़ा क्रोध आया और उन्होंने शिव की बड़ी निन्दा की और उन्होंने शिव को समाजच्युत करके उनका यज्ञभाग रोक दिया। कुछ दिनों के बाद दत्त सब प्रजापतियों के अधिपति बनाने गये, इससे दत्त का अहङ्कार और भी बढ़ गया। उन्होंने बृहस्पति नामक यज्ञ का अनुष्ठान प्रारम्भ किया, उस यज्ञ में सभी निमन्त्रित किये गये, परन्तु शिव और सती नहीं। पिता के यज्ञ करने का सभाचार सुनकर सती ने पिता के यहाँ जाने की शिव की अनुमति चाही, शिव ने अनुमति दे दी। सती पिता के यज्ञ में उपस्थित हुई। सती के सामने दर्पान्धदत्त शिव की निन्दा करने लगे। पति की निन्दा न सुनने के लिये सती ने वहीं शरीर त्याग किया। इसकी खबर नारद ने शिव तक पहुँचायी। शिव क्रोध से अधीर हो गये। उन्होंने अपनी जटा भूमि पर पटक दी। उसमें से घोर-भद्र की उत्पत्ति हुई, घोरभद्र शिव के अनुचरो के साथ यज्ञभूमि में पहुँचे और उन्होंने यज्ञ नष्ट भूट करके दत्त का सिर उतार लिया और उसे जला डाला। पुनः ब्रह्मा की प्रार्थना करने पर शिव ने धरकरे का सिर दत्त के कन्यक में जोड़ने की अनुमति दी। दत्त जीवित हुए। तब यज्ञ समाप्त करके उन्होंने अनेक प्रकार से महादेव की श्रुति की।

—श्रीमद्भागवत

—कन्या (स्त्री०) दुर्गा, भगवती, सती।—जा (स्त्री०) उमा, सती, दुर्गा, सप्ताहस नक्षत्र।—जापति (पु०) चन्द्र, शिव, करयप, धर्म, अग्नि, रुद्र।—ता (स्त्री०) चतुरता, पद्धता, नैपुण्य, निपुणता।—सावर्णि (पु०) नवम मनु।—सुता (स्त्री०) सती, उमा।

दत्तन दे० (पु०) दत्त शब्द का व्रजभाषा के निष्पन्नानुसार बहुवचन, यथा—देव, देवन, सेक, तोष, नायक विशेष। यथा—

“एक भौति सब तियन से जाकी होय सनेह, से दत्तन मतिराम बरनत है मति गेह।”

—रसा

दक्षिण तत्० (पु०) सरल, उदार, अनुकूल, पक्व, नुवर्ती, अन्यचिन्तानुवर्ती, चतुर, प्रवीण, अपर्याप्त दक्षिण दिशा, दहिनाभाग, चार प्रकार के पर्वतों में से एक पति, अनेक नायिकाओं का समानार्थी से देखने वाला। देखो दत्तन।—कालिका (स्त्री०) महाविद्या विशेष, आद्या शक्ति।—किन्ट वरवानल, दक्ष्याग्नि।—खण्ड (पु०) विन्धासत, दक्षिण का देश।—ता (स्त्री०) अनुकूलता, सरलता, सारल्य।—पथ दक्षिण दिशा।—पूर्व (स्त्री०) दक्षिण और पूरव का कोन।—पश्चिम (स्त्री०) दक्षिण और पश्चिम का कोन।—हस्त (पु०) दाहिना हाथ।

दक्षिणा तत्० (स्त्री०) दक्षिण दिया, धर्म कर्म का पारितोषिक, भेंट, पूजा। कर्म की पूर्ति के लिये दान, नायिका विशेष।—अग्नि (पु०) दक्षिण + अग्नि ] यज्ञाग्निविशेष।—चल (पु०) [दक्षिण + अचल] मलय पर्वत, दक्षिण दिया का पर्वत विशेष।—पथ (पु०) दक्षिण दिशा।—वर्त (पु०) [दक्षिण + आवर्त] गङ्गाविशेष, दहिनी और से मुड़ा हुआ शङ्ख, बहुवचन शङ्ख मङ्गलमूचक अग्नि।—भिन्नुक (पु०) [दक्षिण + अभिमुख] दक्षिण और का चल।—मुख (पु०) दक्षिणास्य, दक्षिण दिशा में कृतमुख।—हँ (पु०) [दक्षिण + अर्ह] दक्षिणायोग्य, दक्षिणा के अधिकारी।—शा (स्त्री०) दक्षिणा की आया, दक्षिण दिशा

दक्षिणायन तत्० (पु०) सूर्य का दक्षिण दिशा में गमन, कर्म की सक्रान्ति से धन की सक्रान्ति तक का काल, जब सूर्य की दक्षिणगति रहती है। दक्षणीय तत्० (पु०) दक्षिण देश का मनुष्य, दक्षिण देशवासी, दान योग्य, दान माने का अधिकारी।

दत्तना दे० (क्रि०) डाँटना, सामना करना ।

दत्तन दे० } (स्त्री०) दत्तन, दत्तनायन, दौत साफ  
करने की लकड़ी ।  
दत्त दे० } (स्त्री०)

दत्तना दे० (पु०) पैधा विशेष ।

दत्तनी दे० (स्त्री०) छोटे छोटे दौत, बच्चों के दौत ।

दत्त दे० (स्त्री०) दत्तन, दत्तनायन ।

दत्त तत्० (पु०) [दा + क्] रक्षित, कृतदान, विमुक्त, जेा दिया गया है । (३०) दान, राजा विशेष, भगवान् का एक अवतार, दत्तात्रेय अवतार (देखा दत्तात्रेय) उग्राधि विशेष । द्वादश विध पुत्र के अन्तर्गत एक पुत्र, जिसे दत्त्रिम कहते हैं । चापत्ति काल में सहस्ररूप पूर्यक जिस पुत्र को स्नेहो और अर्पने समान ठपक्ति की दें वह पुत्र । धैर्यों की उपाधि, यथा—चाहदत्त, अर्चदत्त, आदि ।—गुप्त (पु०) अन्नसूया और अन्न के पुत्र (देखा दत्तात्रेय) ।

दत्तपुत्र तत्० (पु०) दत्तक, द्वादश विध पुत्रान्तर्गत पुत्र विशेष, माता पिता द्वारा दिया हुआ पुत्र, पोषपुत्र ।

दत्तना तत्० (स्त्री०) [दत्त + चा] विशाहिता कन्या, याजक, स्तुता घर को दी गई कन्या ।—दत्ता (पु०) [दत्त + चात्ता] स्वयं दत्त पुत्र, जेा दूसरे का पुत्र होने के लिये स्वयं अपने को दान करे । अनुगत, जिसेने अपने को समर्पित कर दिया है ।—त्रेय (पु०) [दत्त + चात्रेय] दत्तनामक अत्रिपुत्र । भगवान् विष्णु अत्रिपत्नी अन्नसूया के गर्भ में दत्तात्रेय के रूप में उत्पन्न हुए थे । कुशिकवंशी कुष्ट नामो एक ब्राह्मण प्रतिष्ठानपुर (वर्तमान भूँखी) में रहता था । उसकी पतिव्रता स्त्री अनेक प्रकारों से उसकी सेवा सुश्रूया किया करती थी, एक दिन वह ब्राह्मण किसी घेरया पर अनुरक्त हुआ और उसके घर से चलने के लिये अपनी स्त्री से कहा । तो उसको कंधे पर थिठा का घेरया के घर ले गयी । रात अंधेरी थी, आँसे हुए कुष्ठो ब्राह्मण का अन्ध अन्धिमामरठव्य नामक अर्थि की देह में लागत । जैसे कुष्ठ होकर मुनि ने श्राप दिया कि जिसका

पैर मेरे लगा है वह सूर्योदय होति हो मर जायगा । मुनि का श्राप सुतकर वह स्त्री बहुत चिन्तित हुई, पुनः वह दृढ़ता पूर्वक बोली, “अथ सूर्योदय नहीं होगा” पतिव्रता का कहना झूठा नहीं हो सकता, रात थीत गयी परन्तु सूर्य के दर्शन नहीं हुए । उससे देवता बड़े चिन्तित हुए, बहुत विचार के अनन्तर देवताओं ने यह स्थिर किया कि पतिव्रता को शान्त करना पतिव्रता ही का काम है । अतएव देवता अन्नसूया की शरण गये । अन्नसूया उस पतिव्रता स्त्री के पास गयी और उन्होंने कहा कि सूर्योदय होने दे, गृहभार पति मर जायगा तो उसे मैं जिला दूँगी । उस पतिव्रता स्त्री ने कहा कि अथ सूर्योदय हो, उधर सूर्योदय हुआ, उधर उसका पति मर गया, अन्नसूया ने उसके पति का जिला दिया । अन्नसूया ने घर मँगने के लिये देवीं ने कहा, अन्नसूया ने कहा, मुझे कुछ नहीं चाहिये, ब्रह्मा विष्णु महेश्वर हमारे पुत्र हैं । देवताओं ने यही घर दिया । यही त्रिदेव का अवतार दत्तात्रेय हैं ।

—दत्त (पु०) [दत्त + चादत्त] दत्त अर्पण, दिया हुआ ले लेना ।—दत्त (पु०) [दत्त + चादत्त] सत्कृत, मेवित, सेव्यमान् ।—नयकर्म (पु०) दान करके पुनः नहीं लेना ।—पहत (पु०) दान करके छीन लेना, देकर ले लेना ।—प्रदानिक (पु०) [दत्त + चाप्रदानिक] अष्टादश विधाद के अन्तर्गत विधाद विशेष, दिये हुए ऋण का मोक्ष कराने के लिये विधाद ।—अधान (पु०) [दत्त + चाधान] कृतावधान, अमिनिविष्ट, आसक्त, आसक्तचित्त ।

दत्त्रिम तत्० (पु०) दत्तक पुत्र, दिया हुआ पुत्र, गृहीत पुत्र, पोषपुत्र ।

ददत्त तत्० (पु०) [दद् + अदत्] दान, वितरण, त्याग, देना ।

ददरीक्षेत्र दे० (पु०) भृगुमुनि का स्थान, जहाँ कालिक की पूजिमा को प्रेमा लगता है । यह स्थान बलिया के पास है ।

ददलाना दे० (क्रि०) डाँटना, मीसना, भस्मन करना ।



दिया। तभी से यह देश घन होगया और उसका दण्डकारण्य नाम पडा। यह हिन्दुस्तान के दक्षिण भाग में है। वनवास का कुछ समय श्रीरामचन्द्रजी ने यही बिताया था।

दण्डदास तत्० (गु०) दण्ड देनेवाला कर्मचारी, व्याध, हिंसक।

दण्डधर तत्० (गु०) यमराज, धर्मराज, पुण्य पाप का फलदाता, कुलाल, कुम्हार, लगुधारी, दण्ड धारण करने वाला, दण्डी, संन्यासी, द्वारपाल, दरवान, सिपाही।

दण्डन तत्० (गु०) [दण्ड + अनट्] अनुशासन, निग्रह, सजा।

दण्डनायक तत्० (गु०) सेनानी, सेनापति, चतुरङ्गिणी सेना का सञ्चालक, दण्डदाता, अपराध-विचार कर्ता।

दण्डनीति तत्० (स्त्री०) अर्थशास्त्र, नीतिशास्त्र, दण्ड-व्यवस्था, अनुशासन।

दण्डनीय तत्० (गु०) [दण्ड + शनीय] शासन करने योग्य, शास्ति देने योग्य।

दण्डपांशुल तत्० (गु०) द्वारपाल द्वाररक्षक, दरवान, चौकीदार।

दण्डपाणि तत्० (गु०) शिव के एक गण का नाम, दण्डधारी।

दण्डपाशिक तत्० (गु०) घातुक पुरुष, बध कर्माधिकारी, फाँसी चढ़ाने वाला, जश्नाद।

दण्डप्रणेता तत्० (गु०) दण्डकर्ता, दण्डदाता।

दण्डमान तत्० (गु०) दण्ड्यमान, दण्डित, प्राग्-दण्ड।

दण्डवत् तत्० (स्त्री०) दण्ड के समान पतित होकर प्रणाम, सर्वाङ्ग पातपूर्वक प्रणाम, साष्टांग प्रणाम।

दण्डयोग्य तत्० (गु०) दण्डार्ह, दण्डनीय, दण्ड पाने के योग्य, अपराधी।

दण्डाजिन तत्० (गु०) [दण्ड + आजिन] दण्ड और मृगधर्म।

दण्डादण्डी तत्० (शु०) लाठी की लड़ाई, सेढा, सेढी, लाठी पाठी।

दण्डायमान तत्० (गु०) उत्थान, उठना, दण्ड के समान सीधे खड़े होना।

दण्डाश्रम तत्० (गु०) संन्यास धर्म, दण्डी आश्रम, संन्यासी का आचार।

दण्डाश्रमी तत्० (गु०) संसार त्यागी, विपकी, संन्यासी, दण्डी।

दण्डित तत्० (गु०) [दण्ड + इत्] दण्डप्राप्त, शास्ति, सजायाफ़ता।

दण्डी तत्० (गु०) दण्डयुक्त, लठैल, लठवान। (शु०) चतुर्थाश्रमी, यती, योगी, संन्यासी, दण्डकर्ता संन्यासी।

संस्कृत के एक कवि का नाम, यह बड़े प्रसिद्ध कवि हो गये हैं। यह आलङ्कारिक भी थे। एक बनाये ग्रन्थों का संस्कृत साहित्य में

है। काव्यादर्श, दशकुमारचरित,

और कलापरिच्छेद ये चार ग्रन्थ इनके

अभी तक मालूम हुए हैं। काव्यादर्श और दश

कुमारचरित प्रसिद्ध ही हैं परन्तु छन्दोविचित

कलापरिच्छेद अभी तक प्रकाशित नहीं हुए हैं

इनके स्थान का कुछ ठीक ठिकाना नहीं मिलता।

इंश्वरचन्द्रविद्यासागर कहते हैं कि ये

संन्यासी कहीं एक जगह घर बनाकर

रहा करते थे। संन्यासियों को दण्डी भी कहते हैं।

अतएव विद्यासागर का कहना ठीक मालूम

है, एक तो संस्कृत कवियों के समय निरूपण

योंही भ्रमेला होता है। उसमें भी इन रमते वा

का समय निरूपण करना बड़ा ही कठिन।

तथापि ऐसा अनुमान किया जाता है कि मृ

कटिककार युद्धक से ये प्राचीन नहीं थे। इत

लेखकाली के अनुसार उन्हें कालिदास के कुछ वा

का मान सकते हैं। अतएव ५वीं सदी का

भाग यदि इनका समय माना जाय तो बहुत

ऊँचे निपट जाँयगे।

दण्ड्य तत्० (गु०) [दण्ड + य] दण्डार्ह, दण्ड्यो-दण्डनीय।

ना दे० (क्रि०) डाटना, सामना करना ।

चन दे० } (स्त्री०) दहन, दन्तधावन, दाँत साफ  
करने की लकड़ी ।  
न दे० } (स्त्री०)

ना दे० (पु०) पैधा विशेष ।

ली दे० (स्त्री०) छोटे छोटे दौन, बच्चों के दौन ।

न दे० (स्त्री०) दहन, दन्तधावन ।

न दे० (पु०) [दा + ऋ] रजित, कृतदान, विष्ट, ज्ञा दिया गया है । (१०) दान, राजा विशेष, भग-  
वत् का एक आचर, दत्तात्रेय अवतार (देवो  
दत्त, त्रेय) उपाधि विशेष । द्वादश विध पुत्र के  
अन्तर्गत एक पुत्र, जिसे दत्त्रिम कहते हैं । आपत्ति  
काल में सद्गुरुम पूरक जिस पुत्र को स्नेहों और  
अपने समान भक्ति को दें वह पुत्र । वैश्यों की  
उपाधि, यथा—चादत्त, अर्थात्त, आदि ।—गुप्त  
(पु०) अनसूया और अन्वि के पुत्र (देवो  
दत्तात्रेय) ।

रूपुत्र तत्० (पु०) दत्तक, द्वादश विध पुत्रान्त-  
र्गत पुत्र विशेष, माता पिता द्वारा दिया हुआ  
पुत्र, पोसपुत्र ।

न तत्० (स्त्री०) [दत्त + आ] विवाहिता कन्या,  
आत्मसंस्कृता घर को दी गई कन्या ।—त्मा (पु०)  
[दत्त + आत्मा] स्वयं दत्त पुत्र, जो दूसरे का पुत्र  
माने के लिये स्वयं अपने को दान करे । अनुगत,  
जैसे अपने को समर्पित कर दिया है ।—त्रेय  
(पु०) [दत्त + आत्मेय] दत्तात्मक अत्रिपुत्र ।  
देवता विष्णु अत्रिपत्नी अनसूया के गर्भ में दत्ता-  
त्रेय के रूप में उत्पन्न हुए थे । कुण्डिकवंशी कुष्ठ  
रोगो एक ब्राह्मण प्रतिष्ठानपुर (वर्तमान भूँनी)  
रहता था । उसकी पतिव्रता स्त्री अनेक प्रकारों  
उसकी सेवा गुह्युपा किया करती थी, एक दिन  
ह ब्राह्मण किसी वेश्या पर अनुरक्त हुआ और  
उसके घर ले चलने के लिये अपनी स्त्री से कहा ।  
वी उसको कन्धे पर बिठा कर वेश्या के घर ले  
गयो । रात आँधेरी थी, जाते हुए कुटी ब्राह्मण का  
र अग्निमासहय नामक शक्ति को देह में लगर ।  
उसके क्रुद्ध होकर मुनि ने श्राप दिया कि जिसका

पैर मेरे लगा है वह सूर्योदय होते ही मर जायगा ।  
मुनि का श्राप सुनकर वह स्त्री बहुत चिन्तित हुई,  
पुनः वह क्रुद्धता पूर्वक बोली, “अब सूर्योदय नहीं  
होगा” पतिव्रता का कहना झूठा नहीं हो सफता,  
रात बीत गयी परन्तु सूर्य के दर्शन नहीं हुए ।  
उससे देयता बढ़े चिन्तित हुए, बहुत विचार के  
अनन्तर देवताओं ने यह स्थिर किया कि पतिव्रता  
को शान्त करना पतिव्रता ही का काम है । अतएव  
देयता अनसूया को शरण गये । अनसूया उस  
पतिव्रता स्त्री के पास गयी और उन्होंने कहा कि  
सूर्योदय होने दे, मुझ्कार पति मर जायगा तो  
उसे मैं जिला दूँगी । उस पतिव्रता स्त्री ने कहा  
कि अब सूर्योदय है, उधर सूर्योदय हुआ, उधर  
उसका पति मर गया, अनसूया ने उसके पति को  
जिला दिया । अनसूया से वर माँगने के लिये  
देवों ने कहा, अनसूया ने कहा, मुझे कुछ नहीं  
चाहिये, ब्रह्मा विष्णु महेश्वर हमारे पुत्र हैं ।  
देवताओं ने यही वर दिया । यही त्रिदेव का अय-  
तार दत्तात्रेय हैं ।

—दत्त (पु०) [दत्त + आदत्त] दत्त अर्पण, दिया  
हुआ ले लेना ।—दर (पु०) [दत्त + आदर]  
मस्कृत, सेवित, सेव्यमाद् ।—नयकर्म (पु०)  
दान करके पुनः नहीं लेना ।—पहत (पु०) दान  
करके लीन लेना, देकर ले लेना ।—प्रदानिक  
(पु०) [दत्त + अप्रदानिक] अष्टादश विवाद के  
अन्तर्गत विवाद विशेष, दिये हुए अण का शोध  
कराने के लिये विवाद ।—घधान (पु०) [दत्त  
+ अघधान] कृतायधान, अभिनिविष्ट, आसक्त,  
आसक्तचित्त ।

दत्त्रिम तत्० (पु०) दत्तक पुत्र, दिया हुआ पुत्र,  
गृहीत पुत्र, पोसपुत्र ।

ददन तत्० (पु०) [दद + अद] दान, वितरण,  
त्याग, देना ।

ददरीक्षेत्र दे० (पु०) भृगुमुनि का स्थान, जहाँ  
कातिक की पूर्णिमा को मिला लगता है । यह  
स्थान बलिया के पास है ।

ददलाना दे० (क्रि०) डाटना, सामना, भर्त्सन  
करना ।

—मूल (३०) ओषधि त्रिवेद दश अ पधियो के मूल । —ये गमङ्ग (३०) सप्तम क कम जन्म नक्षत्र वेध विशेष । —रथ (५०) इक्ष्वाकु कुनेत्पन्न राजाविशेष, भूर्यशयोय राजा, यह अज के पुत्र और श्रीरामचन्द्र तथा उनके तीन भाइयो के पिता थे । इनकी राजधानी का नाम अयोध्या था, इनको तीन प्रधान रानिया कौशल्या, सुमित्रा और केकयी थीं । परन्तु बहुत वर्ष बीत गये उनमें से किसी के पुत्र नहीं हुआ, अन्त वशिष्ठ की अनुमति से उन्होंने पुत्रोष्टि नामक यज्ञ करना विव रा और उस यज्ञ के सम्पन्न करने के लिये विभाषक ऋषि के पुत्र ऋष्यशृङ्ग को बुलाया । उन्होंने पुत्रोष्टि यज्ञ कराया, और यज्ञोप तान रानियो को खाने के लिये भिजवाया । कौशल्या ने राम को, सुमित्रा ने लक्ष्मण और शत्रुघ्न को और केकयी ने भरत को यथा समय उत्पन्न किया । यज्ञ करने के प्हने दशरथ मृगया करने वन में गये थे । वहाँ किसी का शब्द सुनकर इन्होंने शब्दबेधा थाण मारा । उस थाण से अश्व मुनि का पुत्र मारा गया । अश्व मुनि पुत्र वियोग से मरने लगे । उन्होंने मरते मरते राजा को शाप दिया कि तुम भा पुत्र वियोग से मरोगे । दशरथ जब अश्व पुत्र श्रीराम का राज्याभिषेक करने को तयारा करने थे, उस समय मन्थरा के कुचक्र से ककया ने राजा के पहले दिये दो धरे में एक तो राम का वनवास और दूसरा भरत का राज्याभिषेक मोगा । इसी धमसंकट में यह कर राजा दश थ को अवन प्रण देन पडे थे । —शीस (५०) दशानन, रा.ण । —रा (३०) अवेष्ट गुफा दशमी, इते गङ्गादशहरा कहते हैं । क्योंकि यह गङ्गा को जन्मतिथि है । आश्विन गुफा दशमी । कहते हैं इस दिन रामचन्द्र ने रावण को मारा था, पर यह ठीक नहीं है । इसे विजयदशमी भी कहते हैं ।

दशान तत्० (५०) दौत, दन्त, कत्रव, शिखर ।  
—च्छद (३०) षोष्ठ, अघर । —शु (५०) दशन घोभा, दन्तश्वि ।  
दशम तत्० (५०) दश संघया की प्ररण करने वाली संघया, दशवा । —लव (३०) दशमांश, दशवा हिस्वा ।

दशमी तत्० (३०) पठ का दशवा दिन, दशती तिथि ।  
दशा तत्० (३०) अत्रस्या, भाय, गति, वृत्ति, स्थिति, दीपवर्त, दिशा को बली ।  
दशांस तत्० (३०) दशवाँ भाग, दशवाँ हिस्वा ।  
दशागुल तत्० (५०) दश अगुल का परिमाण ।  
दशानन तत्० (५०) रावण, दशकण्ठ ।  
दशावतार तत्० (५०) चारो दुर्गों में त्रिष्णु के दस अवतार ।  
दशाचिपाक तत्० (५०) दुःख की अन्तिम अस्था ।  
दश खे तत्० (५०) देश विशेष, विन्ध्य पर्वत के पूर्व और दक्षिण भाग का देश, मालवा का पश्चिम भाग, इस देश की राजधानी का नाम विदिशा है ।  
दशाहं तत्० (३०) बुद्ध, देश विशेष, पदुदेश, यह देश के रहने वाले ।  
दशास्प तत्० (५०) दशमुख, रावण, दशान्त ।  
—जत् (३०) रामजा, श्रीरघुनायजी ।  
दशाह तत्० (३०) दश दिन में किये जाने वाले कर्म, दश दिन साध्य कार्य ।  
दशाहीन तत्० (५०) दुर्भाग्य, दुःखस्य, दुर्गत, दुःखस्वापन्न ।  
दशोला दे० (५०) सुखे, सुभाग्य, श्रीमाह ।  
दस तत्० (५०) दस, संघया विशेष, पाँच की द्वी संघया ।  
दमन तत्० (५०) उन्वेषण, प्रस्थापन ।  
दक्षी तत्० (३०) दशा, धागा, सूत, सूत्र ।  
दसौखा दे० (५०) पक्षा का भालना ।  
दसोद्धार तत्० (५०) दस द्वार, शरीर के दस मार्ग, विजयादशमी के बाद का समय ।  
दसोंधी दे० (३०) भाद्रवन्दी, स्फुटिकर्ता, गुणगानकार, प्रशक, राय, चारण ।  
दस्त तत्० (५०) प्रवित्र, प्रस्थापित, नष्ट । (दे०) हस्त, हाथ, कर, पाखाना ।

स्तखत दे० (५०) स्वाक्षर, सही, अक्षरे नाम की सही करता ।

स्ता दे० (५०) धातुविशेष, तामचीनि, राँगा कलई ।

स्यु तत्० (५०) साहसिक, चोर, तस्कर, डाँकू, डकैत, दुश्मन ।—सृष्टि (स्त्री०) चोरी, डकैती ।

स्र तत्० (५०) शिशिर, गर्दभ, अश्रिवनीकुमार, अश्रिवनीधुत ।—देवता (स्त्री०) अश्रिवनी नामक नक्षत्र ।

स्री तत्० (५०) अश्रिवनीकुमारद्वय, देववैद्य ।

इ दे० (५०) गह्वर, गर्त, गहरा, आवर्त, जलकुण्ड ।

इक दे० (स्त्री०) दाह, चमक, चिलक, प्रकाश ।

इकना दे० (क्रि०) जलना, पश्चात्ताप करना, पछताना, अशुताप करना, बचना ।

इकाना दे० (क्रि०) जलाना, बिगाड़ना, पश्चात्ताप कराना, अशुताप कराना, पछतवाना ।

इडदइ दे० (घ०) वेग में, जोरसे, प्रखरता से, तीव्रता से ।—जलना (घा०) यद्देवेग से जलना । बहुत वेग में आग का लहकना ।

इन तत्० (५०) [दह + अनट] दाह, जलन, भस्मीकरण, भस्म होना, अग्नि, अजस, चायक, आग, चित्रकवृक्ष, भल्लातक, भिलाया । (५०) दुष्टचित्त, दुर्जन, जलाने वाला, दुःख देनेवाला ।—केतन (५०) धूम, धुआँ ।—प्रिया (स्त्री०) स्वाहा और स्वधा, अग्नि की भार्या ।

इना दे० (क्रि०) जलना, बचना, भस्म होना, बहना, जलमिश्रित होना ।—(५०) दक्षिण भाग, दहिना ।

इनाराति तत्० (५०) [दहन + अराति] जल, सलिल, तैय, पानी ।

इनीय तत्० (५०) [दह + अनीय] दाह, दाहाई, दग्ध करने योग्य, जलाने के उपयुक्त ।

इनीपम तत्० (५०) [दहन + उपम] सूर्यकान्त मणि, अग्निमुल्य ।

इनीपल तत्० (५०) [दहन + उपल] अग्निमय पत्थर, सूर्यकान्तमणि, आतशी गीशा ।

दह्य तद्० (क्रि०) जलावे, तप्त करे, भस्म करे, सतावे ।

दहर तत्० (५०) मुषिक, मुसा, बूहा, भ्रामा, भाई, यासक, स्वल्प, मुसम, गह्वरस्थ, आकाश, हृदयाकाश, हृदयमध्यवर्ती आकाश ।

दहलना दे० (क्रि०) दपना, शक्ति, शङ्काक्रान्त, काँपना, डरना, भयभीत होना ।

दहलाना दे० (क्रि०) दधाना, जपाना, कम्पित करना ।

दहसेरा दे० (५०) दस मेर का तैल, परिमाण विशेष ।

दहाड़ना दे० (क्रि०) गरजना, डकारना ।

दहाना दे० (क्रि०) जलाना, भस्म करना, बसना ।

दहिना दे० (५०) दक्षिण, दहिना, दक्षिण भाग ।

दही तद्० (५०) दधि, दूध का विकार ।

दहेड़, दहेल दे० (५०) पठिविशेष ।

दहेड़ी दे० (स्त्री०) दही की हाँड़ी, जिसमें दही रखी या बनाई जाती है ।

दह्यमान तत्० (५०) [दह + आन] दग्ध, गुप्त, उजलित, जलाया हुआ ।

दहो दे० (५०) दही, दधि । (क्रि०) जलाया, भस्म किया ।

दा तत्० (५०) देनेवाला, दाता, दानो, दानकर्ता ।

दाइज दे० (५०) वैद्यक, दैजा, दान, कन्याप्रदाता की देयवस्तु, जो कन्या का पिता कन्यादान के उपलक्ष में घर को देता है ।

दाई तद्० (५०) दायी, दाता, देनेवाला, यह जिस शब्द के अन्त में आता है उसका देनेवाला अर्थ होता है । मुखदाई, दुखदाई आदि । (स्त्री०) धाय, धायी, बच्चे को दूध पिलानेवाली, दामो, धारानी, नौकरानी, धारणी का दायद शब्द से यह शब्द निकला है ।

दाऊ दे० (५०) बड़ा भाई, बड़ा चाचा, बसदेव की का नाम ।

दाऊदी दे० (स्त्री०) एक भाङ्ग अथवा उसका फूल, एक प्रकार की आतशबाजी, सफ़ेदी, यह शब्द अरबी के दावदी शब्द से निकला है यथा—अ०—गुल-दावदा, हि०—गुलदाउदी ।

दाँड तद्० (पु०) दण्ड, सजा, ताडन, शासन, नाथ खेयने की डौंड़ी ।

दाँडा दे० (पु०) सोमा, सींव, मेंढ, सियाना ।—मेड़ा (पु०) सियाना, सोमा, खोर, दो ग्राम या खेतों के विभाग का चिन्हविशेष ।

दाँडी दे० (पु०) खेयक, नाथ खेयने के लिये लकड़ी का बना हुआ दाँड ।

दाँत तद्० (पु०) दन्त, रदन, दाढ, दशन ।—उँगली काटना (या०) अचम्बे में आना, आश्चर्यित होना विस्मित होना, विस्मय करना ।—कचकचाना (या०) क्रोध करना, क्रोध से दाँत पीमना ।—कटकटाना (या०) अपकारी का बदला न चुका सकने के कारण क्रोध से जलना ।—काटो रोटी खाना (या०) घनिष्ठ मित्रता करना, दिली दोस्ती ।—खट्टे करना (या०) दूसरे के प्रयत्न को विफल करना, अपने पराक्रम से शत्रु को नीचा दिखाना ।—तले उँगली दवाना (या०) अचम्भा करना, विस्मित होना, भौचक रह जाना ।—निकालना (या०) हार जाना, अपनी अयोग्यता और विपश्चिता जतलाना ।—पर चढाना (या०) कलङ्कित करना, अपमानित करना ।—पीसना (या०) क्रोध करना, क्रोध यतलाने के लिये दाँत कटकटाना ।—घजना (या०) कटकटाना, क्रोध करना, भगडना, बक बक करना ।—रखना (या०) किसी के लिये उत्कृष्टित होना, स्पर्धा करना, अयत्न करना, गुच्छ जानना ।

दाँतन दे० (पु०) दन्तवन, दन्तधावन, दाँत साफ करने की लकड़ी ।

दाँताकिलकिल तद्० (स्त्री०) दन्तकिनाकिना, बकबक, भगडना ।

दाँती तद्० (स्त्री०) दात्री, आरा के दाँत ।

दाँच दे० (पु०) घात, अवसर, मौका, घाटी, अथवा अपने अनुकूल समय ।—चलना (या०) जेजय करना, सरस होना, आगे बढ़ना, चलना, शतरज आदि खेलों में गोटी आगे बढना ।—चलाना (या०) अधिकार चलाना, चलाना, चोट पहुँचाना ।—पकडना (या०) मजबूत करना, कुरती लडना, कुरती में पकडना ।—चैठना (या०) अयसर होना, हाथ मौका चला जाना ।

दाँतन दे० (पु०) डौंटी, जलावन, नारा ।

दाक्षाथण तद्० (पु०) दक्षसम्बन्धी, दक्ष के पुत्र आदि, सुवर्णासङ्कृत ।

दाक्षाथणी तद्० (स्त्री०) दुर्गा, सती, रोहिणी नाम अश्विनी आदि सप्तविंशति नक्षत्र, दन्ती का जमालगोटा का वृक्ष ।—पति (पु०) त्रिचन्द्रमा, धर्म ।

दाक्षाय तद्० (पु०) गृहपत्नी ।

दाक्षिण तद्० (पु०) कथन, उपाय, अधिकार, देशीय, दक्षिण सम्बन्धी ।

दाक्षिणात्य तद्० (पु०) दक्षिणदेशजात, देशीय । (पु०) नारिकेल वृक्ष ।

दाक्षिण्य तद्० (पु०) उदारता, अनुकूलता, भावविशेष, दक्षिणाचाररूप । (पु०) दक्षिण पाने योग्य ।

दाक्ष्य तद्० (पु०) दक्षता, निपुणता, नैपुण्य ।

दाख तद्० (पु०) द्राक्षा, अमूर, मुनक्का ।

दाखिल दे० (पु०) आर्पण, परिशोधकरण, वस्तु को साठाना, जमा करना ।—दफतर देना देना, रख देना ।

दाग दे० (पु०) चिन्ह, अङ्क, फलङ्क, दीप, धातु जलने का चिन्ह ।—चढाना (या०) लगाना ।—देना (या०) तपे लोहे में चिन्ह दागना, जलाना, अङ्कित करना, कलङ्क ।—लगाना (या०) अयशी होना, पाप से होना ।—लाना (या०) दाग लगाना, होना ।

दागना दे० (क्रि०) चिन्ह करना, दाग देना, तपाये लोहे से शरीर जलाना, अङ्कित करना । तैप या चन्दूक छोड़ना, तैप को वाड़ दागना ।

दागी दे० (गु०) चिन्हित, अङ्कित, कलङ्कित, दक्षित ।

दाघ तत्० (गु०) जला हुआ, दग्ध ।

दाङ्गिम तत्० (पु०) अनार, योजयूरक, फल-विशेष ।

दाङ्ग दे० (स्त्री०) चीँह, पिछने दाँत, पीछने के दाँत ।

दादा दे० (स्त्री०) बड़ा दाँत, वीरखाँग, दन्त-विशेष ।

दाढ़ी दे० (स्त्री०) मुख के नीचे का भाग, रमथु, चिबुक, ठुब्दी ।—बनाना (क्रि०) चौर कराना, दजामत बनवाना ।

दात तत्० (गु०) छिन्न, कर्तित, छेदन किया हुआ, काटा हुआ, (पु०) दातृत्व, यदान्यता ।

दातन दे० (पु०) दहन, दन्तकाष्ठ ।

दातव्य तत्० (गु०) देने योग्य, दानार्ह, दान करने का पाव ।

दाता तत्० (पु०) देनेवाला, दानी, दानशील, दानकर्ता, यदान्य ।

दाता तद्० (गु०) दाता, दानी ।

दातृत्व तत्० (गु०) टातृता, यदान्यता, दानशीलता, दानशक्ति, अकृपणता, दान करने की शक्ति ।

दातृह तत्० (पु०) पक्षिविशेष ।

दात्र तत्० (पु०) [ दा + त्र ] अक्षविशेष, लक्षित्र, दाय, काता ।

दात्री तत्० (स्त्री०) [ दातृ + ई ] दानकर्त्री, दान करने वाली स्त्री ।

दाद दे० (पु०) रोगविशेष, दद्रु, खजू ।—मर्दन (पु०) दद्रुमर्दन, ओषधिविशेष, चकपड़ ।

दादा दे० (पु०) पितामह, पिता का पिता, बड़ा भाई, (स्त्री०) दादी पितामह की स्त्री, पिता की माता ।

दादुर तद्० (पु०) दर्दुर, मेंढक, पैंग ।

दादू दे० (पु०) पुत्र आदि का प्रिय सम्बोधन, एक महान्मा का नाम, इन्होंने अपना एक नया पन्थ चलाया है । इनका पूरा नाम दादूदयाल है । इनका चलाया धर्ममत दादूपन्थ के नाम से प्रसिद्ध है, इनके शिष्य दादूपन्थी कह कर अपना परिचय देते हैं । यह धर्ममत भक्तिप्रधान है ।

दाधना दे० (क्रि०) दग्धना, जलाना, यातना ।

दाधिक तत्० (गु०) दधिसेस्कृत वस्तु, दधि-मिश्रित मिष्ठान्न, दहीबड़ा ।

दान तत्० (पु०) [ दा + दान् ] पुण्यार्थ धनस्याग, उत्सर्ग, त्याग, वितरण, हाथी का मदजल ।

—पति (पु०) नित्य दानकर्ता, सततदाता ।

—पत्र (पु०) वृत्तिदानलिपि, दानकी हुई वस्तु पर सम्प्रदान का स्वत्व बतलाने के लिये लेख ।—यज्ञ (पु०) दान के लिये यज्ञ के समान, वैश्य ।—घीर (पु०) अति दानकर्ता, प्रसिद्ध दानी ।—शाली (गु०) दाता, यदान्य ।—शील (गु०) दाता, दानकर्ता, यदान्य ।

दान्य तत्० (पु०) अमुर, दैत्य, दनुज, करपपत्नी, दनु की सन्तान ।—ारि (पु०) देवता, गुर, अमुरराजु ।

दाना दे० (गु०) अनुभवी, बुद्धिमान्, ज्ञाता, अभिन्न । (पु०) अन्न, अनाज, शस्य, धान्य, घोड़े का यथा हुआ चना ।—पानी (या) अन्नजल, संयोग, समय ।

दानी तत्० (गु०) दाता, दानशील, दान देनेवाला, सततदाता ।

दानीय तत्० (गु०) [ दा + नीय ] सम्प्रदान, दातव्य, दान के उपयुक्त ।

दान्त तत्० (गु०) [ दम् + णि ] सुशंसित, धनी-भूत, जितेन्द्रिय, तपस्या के क्लेश महने योग्य ।

दान्ति तत्० (स्त्री०) [ दम् + णि ] तपःक्षेत्र मदि-स्थिता, तपस्या के कष्टों को सहन करने की शक्ति, इन्द्रियनिग्रह, दमन ।

दाप दे० (गु०) प्रताप, दर्प, गर्व, अभिमान, चहङ्कार । दापक दे० (पु०) अभिमानी, चहङ्कार, प्रतापी ।

द्वाना दे० (क्रि०) द्वाना, घय में रखना, दमन करना, अधीन करना, चापना ।

दाय रखना दे० (वा०) छिपाना, छिपालना, लुफाना, ढकना ।

दाम तत्० (खी०) गोदबन्धन रज्जु, रस्सी, माता । (पु०) रुपया पैसा, मोल, भाव, मूल्य । (पु०) एक पैसे का चौबीसवाँ भाग ।

दामन दे० (खी०) आँचल, अञ्जल, यज्ञप्रान्तभाग, कपड़े का क्षेत्र, शरण, आश्रय, अवलम्ब ।

दामलिप्त तत्० (पु०) ताम्रलिप्त देय, (देखो ताम्रलिप्त) ।

दामवती तद्० (खी०) माला, स्रग्, फूला की माता ।

दामाञ्जन तत्० (पु०) अश्वत्थ का पादबन्धन रज्जु, पिछाड़ी, घोड़े के पिछले पैर बाँधने की रस्सी ।

दामासाही दे० (खी०) ययार्थभाग, उचित भाग के कार्य ।

दामिनी तत्० (खी०) विजली, तड़ित, विद्युत् । यथा:—

देहा ।

दामिनि दमकि रही घनमाही ।

खन की प्रीति यथा थिर नाही ॥

—रामायण ।

दामी दे० (खी०) कर, बाह्य, लगती, लगान, राज-देय कर ।—लगाना (क्रि०) कर लगाना, कर ठहराना ।—वासिल्लात (पु०) गाँव के प्रधान ऋणदाता ।

दामीयात दे० (पु०) वस्तुविशेष, जिसने रक्त विकार होता है ।

दामोदर तत्० (पु०) [ दाम + उदर ] गैर, भूतार्ह-द्विशेष, श्रीकृष्ण का एक नाम । कहते हैं श्रीकृष्ण लडकई में बड़े चञ्चल थे । घर की वस्तुओं को वह तोड़ फोड़ डालते थे, इसी कारण यशोदा (कृष्ण की पालिका माता) ने कृष्ण की कमर में रस्सी बाँधकर उन्हें ओखल से बाँध दिया और स्वयं निश्चिन्त होकर काम करने लगी । इधर कृष्ण भी

समय पाकर पैसैहो घर से निकल पड़े, उनके को पास ही दो पेड़ थे । उन्हीं के नीचे निकलने लगे, परन्तु ओखल बाँधी रहने के निकल न सके, उन्हींने निकलने के लिये जोर लगाया त्योंही ये दोनों पेड़ टूट गये । श्रीकृष्ण का नाम दामोदर हुआ है ।

दामोदरगुप्त तत्० (पु०) संस्कृत का एक कवि, कवि करमीरनियासी थे । कुट्टनीमत नामक ग्रन्थ इनका बनाया संस्कृत साहित्य में पाया है । करमीर के इतिहास राजतरङ्गिणी से मालूम पड़ता है कि यह कवि महाराजा जयापीर मन्त्री थे, इनका समय सन् ७७२ से ८७१ ई. तक था । यिद्धानों ने अनुमान किया है अतश्च इन्होंने गुप्त का भी यही समय मानना चाहिये । इन्होंने का समयमातृका और इनका कुट्टनीमत ये दो एक ही प्रकार के और एकही उद्देश्य से लिखे हैं । धेय्याओं के फन्दे से बचाने के लिये इन्होंने कुट्टनीमत नामक ग्रन्थ लिखा है । वेदों की चालाकियाँ इसमें सूक्ष्म और साफ़ दिख गई हैं । यद्यपि इसका विषय अश्लील है, तथा इसकी उपयोगिता की ओर ध्यान देने से इसकी उत्तमता माननी पड़ती है । मेरी समझ से विद्या में न सही, परन्तु कविता में परिलक्षणा जगन्नाथ से इनकी तुलना कई भाँसों में की सकती है ।

दामोदर मिश्र तत्० (पु०) ये कवि भोजपुरी समकालीन हैं, इन्होंने ने हनुमत्काव्य का रचना किया है । इस ग्रन्थ के संग्रह करने के लिये लिखित और कोई इनका उल्लेखयोग्य पुस्तक नहीं है । ग्यारहवीं सदी इनका समय बताया जाता है ।

दाम्पत्य तत्० (पु०) परिणयावस्था, विवाह अवस्था, स्त्रीपुरुषसम्बन्धी ।—मुक्तिपत्र (पु०) तलाफनामा, जिस पत्र को लिख स्त्री पुरुष का सम्बन्ध तोड़ देते हैं । यह हिन्दुओंकी नहीं, किन्तु आधुनिक जातियोंकी है ।

दाम्भिक तत्त्वं (गु०) दम्भयुक्त, बहङ्गात्, चान्द-  
रत्रापी, चान्दमप्रयंसा करने वाला। पावतही, धूर्त।  
(पु०) वकपत्नी।

य तत्त्वं (गु०) [दा + क] दैतुक आदि देयधन,  
कन्यादान के धननार घर या घर के पिता को दिया  
जानेवाला धन, पैतृकधन, पिता के धन का भाग,  
वैवाहिक धन, बहीती, दारज, विपत्ति, आपद।  
—घन्यु (पु०) धाता, दायद, साथ रहनेवाले पिता  
के धनाधिकारी।—भाग (पु०) मृत पिता आदि  
का धनविभाग, धन्यविशेष, धर्मशास्त्र का धन्य,  
जिसमें धनाधिकारियों का निरूपण है। स्वतन्त्र-  
निरूपक, धर्मशास्त्र का षड् विधेय।

यक तत्त्वं (पु०) दाता, देनेवाला, दान करने  
वाला।

यजा तत्त्वं (पु०) दाय, दादज, व्याहसम्पत्ती  
दान, दैतुक।

या तत्त्वं (पु०) दावा, दायी, अभियोग,  
वाद।

याद तत्त्वं (गु०) पुत्र, ज्ञाति, सपिण्ड, उत्त-  
राधिकारी, कुटुम्ब, परिवार, धनाधि-  
कारी।

यादी तत्त्वं (स्त्री०) कन्या, दुहिता, उत्तराधि-  
कारिणी।

यार्ह तत्त्वं (गु०) [दाय + अर्ह] पिता के धन  
पाने के अधिकारी।

येत तत्त्वं (गु०) निश्चित अपराधी, जिसका दोषी  
शेना निश्चित हो चुका है।

यी तत्त्वं (गु०) दानशील, अणुप्रस्त, भारप्रस्त,  
अपेक्षयुक्त, प्रतिवादी, किसी काम के बनने या  
विगड़ने के उत्तरदाता।

येव तत्त्वं (पु०) उत्तरदातृत्व, कार्यभार।

यत्त्वं (गु०) पत्नी, जाया, भार्या, स्त्री।—कर्म  
(गु०) विवाह, पाणिग्रहण, ब्याह।—त्यागी (गु०)  
स्वपत्नी त्यागी; अपत्नी स्त्री को छोड़ देनेवाला।  
—संग्रह (गु०) विवाह, पाणिग्रहण।

दारुक तत्त्वं (पु०) अश्वविशेष, काठने का अश्व,  
पुत्र, शिशु, बालक।

दारुचीनी तत्त्वं (स्त्री०) दारुचीनीय, चीन देश की  
लकड़ी, दालचीनी।

दारुण तत्त्वं (गु०) विदीर्ण करना, फाड़ना, बिह-  
रना, बीच से फटना।

दारुद तत्त्वं (गु०) विपविशेष, पारा, हिंगुल।

दारा तत्त्वं (स्त्री०) जाया, भार्या, स्त्री, पत्नी।  
—धिगमन (पु०) [दारा + धिगमन] पाणि-  
ग्रहण, विवाह, दाराप्राप्ति।—पत्य (पु०) [दारा  
+ अपत्य] स्त्री पुत्र।

दारिका तत्त्वं (स्त्री०) कन्या, पुत्री, दुहिता,  
तनया।

दारित तत्त्वं (गु०) कृतविदारण, कृतभद्र, तोड़ा  
हुआ, फाड़ा हुआ।

दारिद्र्य तत्त्वं (पु०) दारिद्र्य, दीनता, निर्धनता,  
कंगाली।

दारिद्र्य, दारिद्र्य तत्त्वं (पु०) दरिद्रता, दीनता, दुःख,  
दैन्य, अन्न आदि का कष्ट, निर्धनता।

दारी तत्त्वं (पु०) यह दारुविशिष्ट, परदारुगामी,  
अपमिचारी, सम्पत्ता, सुद्रोमविशेष, विवाह,  
पति। (स्त्री०) युद्ध में पकड़ो हुई दासी।

दारु तत्त्वं (पु०) काष्ठ, लकड़ी, देवदाह वृक्ष।  
—कदली (स्त्री०) वनकदली, वनकेला।—गन्या

(स्त्री०) गन्धद्रव्यविशेष।—गर्भा (स्त्री०) दारु-  
मयी स्त्री, काष्ठ निर्मित पुतलिका, गुड़िया, पुतली,  
कठपुतली।—चीनी (स्त्री०) एक वृक्ष की  
छाल, दालचीनी।—ज (गु०) काष्ठमय, काठ  
का बना।—जचित्र (पु०) काठ की पुतली,  
कठपुतली।—निशा (स्त्री०) दारुहरिद्रा, दारु  
हरदी।—फल (पु०) चिलगोज़ा।—मय (गु०)  
काष्ठमय, काष्ठनिर्मित, काठ का बना हुआ मकान  
आदि।—हरिद्रा (स्त्री०) दारुहरदी।—हस्तक  
(पु०) काठ का बना हाथ, काठ की लकड़ी।

दारुक तत्त्वं (पु०) देवदाह, वृक्षविशेष, श्रीकृष्ण के  
एक सारथि का नाम, सुभद्राहरण के समय इतने



अर्जुन से कहा था कि मैं यादवों के विरुद्ध रथ नहीं हाँक सकता इस कारण आप मुझे बाँधकर जहाँ चाहें वहाँ जा सकते हैं। मृत्यु के समय का श्रीकृष्ण का सन्वाद हमने अर्जुन को सुनाया और दुखी होकर स्वयं वन में चला गया।

दारुण तत्० (पु०) वित्रक (गु०) भयानक, घोर, कठोर, कठिन असह्य।—वीर्यं (गु०) भयानक, घोर, दारुण, भीम।

दारू दे० (स्त्री०) मद, शराव, मदिरा वारूद।

दारूडा दे० (दु०) मद, शराव।

दारूडी दे० (स्त्री०) मद, मदिरा, शराव।

दास्यो दे० (पु०) दाहिम, अनार, यथा —  
दाहा।

सुभर भस्यो तथ गुनकननु पाकयो कुयत कुचाल।  
क्यो धौं दास्यो ज्यो हियो दरक्त नाहिन लाल ॥  
—विहारीसतसई।

दाढ्यं तत्० (पु०) दृढता, कठिनता, काठिन्य।

दावां तत्० (स्त्री०) औपधविषय, रसेत।

दावीं तत्० (स्त्री०) दाहहरिद्रा, दाहहरदी।

दार्शनिक तत्० (गु०) दर्शनशास्त्रवेत्ता, दर्शन-शास्त्रज्ञ।

दाप्टान्त तत्० (गु०) उपमिति, उपमेय, आदर्श आदर्शित।

दाल दे० (स्त्री०) दला हुआ चना अरहर भूँग आदि, दलहन।—गलना (वा०) प्रभाव होना, भूँछ-तौड़।

दालिद्र तद्० (पु०) दारिद्र्य।

दाघ तत्० (पु०) जङ्गल, वन, उपताप, दावानल, वनाग्नि।

दाघन दे० (पु०) पीडन, मर्दन, मीसना, डौँठ से अन्न अलगाना।

दाघना दे० (क्रि०) दधाना, अन्न निकालना डाठ से अन्न निकालना।

दाघरि दे० (स्त्री०) एक प्रकार की रस्मी, जिससे कतार से बैल बाँधे जाते हैं और उन्हीं से रौदवा कर घुमा और अन्न घूबक करते हैं।

दाघा दे० (पु०) हक, स्वत्व, स्वत्वप्राप्ति के लिये नियेदन।

दाघानल तत्० (पु०) दाघाग्नि, दाघवन्दि, क का आग, वनाग्नि, यनोद्भव अग्नि।

दाघी दे० (स्त्री०) याचना, प्रार्थना, नाशिष।

दाश तत्० (पु०) मछली पकड़ने वाला, मज़ाह, वर्षंधार, मछुआ, धोवर।

दाशरथि तत्० (पु०) दशरथापत्य, दशरथ के पुत्र श्रीरामचन्द्र आदि।

दाशार्ह तत्० (पु०) विष्णु, नारायण।

दाश्व तत्० (पु०) दानकर्ता, दाता, दानशील।

दास तत्० (पु०) भृत्य, किङ्कर, कैवर्त, धोवर, गुड, टहलुआ। उपनामविशेष, साधुओं की एक श्रेणी।

—ता (स्त्री०) पराधीनता, परनत्रता, सेवकई, पराधीनभाव, सेवकभाव।—त्व (पु०) दास्य, सेवकभाव।—नन्दिनी (स्त्री०) व्यासमाता, सत्य धती।—वृत्ति (स्त्री०) पराधीन जीवन, नौकरी, दासता।

दासा दे० (पु०) एक प्रकार का फास, जो, फुँडी के नीचे दीवार पर रखते हैं।

दासी तत्० (स्त्री०) मजिष्या, कर्मकरी, किङ्करी, भृत्यस्त्री, गुडरा, परिवारिणी, परिवारिका।

दास्य तत्० (पु०) दासत्व, सेवा-जीविका, भृत्यता, नौकरी।

दाह तत्० (पु०) दहन, भस्मीकरण, ज्वालना, ताप।

—जनक ज्वालाकार।—देना (वा०) दाघ करना, अन्त्येष्टि संस्कारण करना, मुर्दा जलाना।

—सर (पु०) प्रेतावास, श्मशान, शवदाह स्थान, चिताभूमि।—हरण (पु०) औपध विशेष, वीरण भूत।

दाहक तत्० (पु०) दाहकर्ता, दाघ करने वाला, जलाने वाला, ताप देनेवाला।

दाहना दे० (क्रि०) जलाना, बालना, भस्म करना, (गु०) दहिन, दक्षिण, दक्षिणभाग।

दाहात्मक तत् ० (गु०) दाहस्वरूप, दाहप्रद ।

दाहिना दे० (गु०) दहना, दक्षिण, दहिना ।

दाह्य तत् ० (गु०) दाह करने के उपयुक्त, जलाने योग्य, दाहाहर् ।

दिक् तत् ० (पु०) दिशा, दिग्, ओर ।—पति (पु०)

दशाध्यक्ष, दिग्पाल, दश दिशाओं के अधिपति ।

क्रम से वे ये हैं पूर्व का इन्द्र, अग्नि कोण का अग्नि, दक्षिण का यमराज, नैऋत्य कोण का नैऋत्य, पश्चिम का यक्ष, वायव्य कोण का यवन, उत्तर का कुबेर, ईशान कोण के महादेव, ऊपर की दिशा के ब्रह्मा और नीचे की दिशा के अनन्त या विष्णु पति हैं ।—दूल (पु०) दिशाविशेष में जाने का निषिद्ध दिन । शनि और सोमवार पूर्व का, बृहस्पतिवार दक्षिण का, रवि और शुक्रवार पश्चिम का, और मङ्गल बुध उत्तर का दिक्दूल है । अर्थात् निर्वृष्ट दिनों में निर्वृष्ट दिशा की यात्रा निषिद्ध है ।

दिक दे० (गु०) दुखी, व्याधित, कष्टयुक्त, क्लेशी ।

दिकदार दे० (गु०) रोगवाङ्मि, व्याधित, रोगी, दुखी, दीन, कष्टग्राम, क्लेशयुक्त ।

दिल्लाना दे० } (क्रि०) समझाना, युक्ताना, द-  
सना, बताना, बतलाना ।

दिल्लाना दे० } (क्रि०) एकटित करना, प्रकाशित  
करना, प्रकाश करना, सलाना, सक्षित करना,  
प्रत्यक्ष कराना, साक्षात्कार कराना ।

दिल्लाना दे० (गु०) हूहा, भ्रमधाम, बाहरी साज-  
बाज ।

दिल्लाना दे० (क्रि०) मान्य होना, मान्य  
पड़ना ।

दिल्लाना दे० (गु०) सुन्दर, दिखावटी, सुन्दर, सजीला,  
सुहावना, बाहरी सुन्दरता ।

दिल्लाना दे० (क्रि०) बतलाना, सुझाना, प्रत्यक्ष  
कराना, दरसाना ।

दिल्लाना दे० (गु०) बाहरी चटकमटक, टीमटाम,  
फौटफाट ।

दिग् तद् ० (स्त्री०) दिशा, दिक् ।—अन्त (पु०)

दिग्मण्डल, चक्रवाल, दिशाओं की परिधि ।

—अन्तर, अन्तराल (पु०) शून्य, आकाश, श्याम,

नभ ।—अखर (गु०) विवक्ष, वखरहित, नग,

नंगा । (पु०) शिव । संन्यासी ।—गज (पु०)

दिशाओं के हस्ती, घाट दिग्गज हैं उनके नाम ये

हैं शेरायत, पुषदरीक, यामन, कुमुद, अङ्गन,

पुष्यदन्त, सार्वभौम, सुमतीक ।—दर्शन बहुदर्शन,

सर्वभावनेकन, इङ्गितमात्र से दियाना ।—दाह

(पु०) देशदाह, अग्नि का उत्पात ।—ध (गु०)

विधाकृष्ण, धि से बुझाया हुआ धाण ।

—वासाः (गु०) नग, धिषण, नङ्ग ।—विजय

(पु०) विद्या अथवा युद्ध के द्वारा देशविजय ।

—विजयी (गु०) देशजयी, विरथनेता, सर्वत्र-

जयशील ।—विदिक् (स्त्री०) सकल दिशा में,

चरने ओर ।—भ्रम (पु०) दिशाओं का अन्यथा

ज्ञान, दूसरी दिशा को दूसरी दिशा समझना ।

—भ्रमण (पु०) सर्वत्र भ्रमण, दिक्पर्यटन ।

—मण्डल (पु०) चक्रवाल, दिग्मन्त ।—मुख

(पु०) दिग्गभिमुख ।

दिग्गी दे० (स्त्री०) दिधी, तालाव, धापी, पालरा ।

दिधी दे० (स्त्री०) दीर्घिका, तालाव, पालरा, धापी,

तड़ाग ।

दिङ्नाम तत् ० (पु०) एकबहु दार्शनिक पण्डित का

नाम, में बौद्धमत के आचार्य भी थे । ये काष्ठी में

रहते थे । इनका कालिदास के समकालीन होना

परिहृत सांग बताते हैं शतः कालिदास का ६००

ई० इनका भी समय माना जाता है ।

दिङ्गीना दे० (पु०) बच्चों का मिलक जेा दृष्टिदोष

हटाने के लिये किया जाता है ।

दिण्ड दे० (पु०) नृपविशेष ।

दिद्धाना तद् ० (क्रि०) दूढ करना, उहराना ।

दिति तत् ० (स्त्री०) प्रजापति दत्त की कन्या करपप

की स्त्री ओर शैत्य की माता का नाम, देवताओं

की सहाई में दैत्यों के नाश होने पर दिति ने

एक दिन अपने पति से इन्द्र को परास्त करने

वाले एक पुत्र की, प्रायना की, करपप दिगि की

प्रार्थना पूर्ण करने बोलते, तुमको हजार वर्ष तक गर्भ धारण करना होगा, और प्रसव होने तक बहुत ही गूढ़तापूर्ण रहना होगा, दिति भी बड़ी सावधानी से पति के वताये नियमों का पालन करने लगी। इस समाचार को पाकर इन्द्र वरपथित हुए, वह मैला देखे लगे। एक दिन बिना पैर धोये दिति से गई, उसी अघमर पर इन्द्र ने यज्ञ से गर्भ को ४८ खण्ड कर दिया। उसी गर्भ से उत्पन्न पुत्रों का नाम मरुतु है।

दिदृक्षा तत्० (स्त्री०) दर्शनेच्छा, देखने की इच्छा।

दिधिक्षा तत्० (स्त्री०) दहनेच्छा, दहन करने की इच्छा, जनाने की इच्छा।

दिधिपु तत्० (स्त्री०) द्विरुदा, दो बार व्याही स्त्री।

—पति (पु०) द्विरुदापति, दो बार व्याही स्त्री का पति, विधवापति।

दिन तत्० (पु०) सूर्यउद्योति से नियमित काल,

वामर, दिवस, घस, अहः।—कर (पु०) दिन-

पति, दिनमणि, सूर्य, राशि।—काटना (वा०)

समय बिताना, गुज़र करना, दुःख या आलस्य से

दिन बिताना।—केशव (पु०) तम, शान्धकार।

—का दिन (वा०) समस्त दिन, सपुत्रा दिन।

—खुलना (वा०) अच्छे दिन आना, सुख का

समय, उन्नति होना, वृद्धि होना, बढ़ती होना।

—गँवाना (वा०) आलस में पड़कर बैठे रहना,

युवा समय खोना।—चढ़ना (वा०) अधिक समय

बिताना, बिलम्ब होना, स्त्रियों के रजोधर्म होने

में बिलम्ब होना। चढ़ाना (वा०) बिलम्ब करना,

अति काल करके किसी काम को प्रारम्भ करना,

आलस से काम का समय बिताना देना।—उद्योतिः

(पु०) आतप, धूप, घाम।—ढलना (वा०) दिन

घटना, दिन चला जाना, दिन पलटना, अच्छा या

बुरा दिन आना, समय का परिवर्तन होना।

—दाना (पु०) प्रतिदिन दाता, प्रतिदिन

दानकर्ता।—दिन (पु०) प्रतिदिन।—दुःखित

(पु०) चक्रवाक पक्षी, चक्रवा। (पु०) दिनहीन,

दरिद्र, निःस्व, निर्धन।—नाथ (पु०) दिनकर,

दिवाधिपति, सूर्य।—पड़ना (वा०) सन्ध्या होना,

दिन बीतना, दुःख पड़ना, दुःख आना।

—फिरना (वा०) भाग्य गुलना, बुरे दिनों का

चला जाना और अच्छे दिनों का आना।

—चदिन (वा०) प्रति दिन, दिन पर दिन।

--चल (पु०) पञ्चम, षष्ठ, सप्तम, अष्टम, एकादश

और द्वादश राशि।—मरना (वा०) दुःख और

कष्ट में समय बिताना।—मणि (पु०) दिवाकर

भासु, सूर्य।—मान (पु०) दिवस काल, सूर्योदय

से सूर्यास्त तक का समय, सूर्योदय और सूर्यास्त से

नियमित काल।—मुदना (वा०) दिन छिपना,

सूर्यास्त होना, सन्ध्या होना।—मुख (पु०)

प्रातःकाल, सबेरा, भिनसार, बिहान।—मूर्द्धा

(पु०) उदयाचल, पूर्व-पर्यंत।

दिनकर तत्० (पु०) संस्कृत के पण्डित और कवि,

इन्होंने कालिदास के रघुवंश की टीका बनायी थी।

१३८५ ई० में रघुवंश की टीका इन्होंने बनायी

थी। ऐसा कुछ लोगों का कहना है। ये वैद्वि-

धर्मावलम्बी थे, सम्भव है इन्होंने की टीका को

लक्ष्य करके मञ्जिनाथ ने "दुर्वापना विपरीक्षिता"

कहा है। यह दिनकर वेदभाष्यकर्ता रामण

और सर्वदर्शनसंग्रहकर्ता माधव ने प्राचीन

जँचते हैं। इनका समय चौदहवीं सदी का पिछला

भाग हो माना जा सकता है। इन्हें मिश्र की

उपाधि थी, इनका पूरा नाम दिनकर मिश्र था।

(२) यह बम्बई प्रदेश के रत्नगिरि जिला के देवतर

ग्राम में १८१९ ई० में उत्पन्न हुए थे। इनका

नाम दिनकर राय था। इनके पिता महाराष्ट्र

ब्राह्मण थे उनका नाम राघव राहू था। दिनकर

राय चार पीढ़ियों से गयालियर में रहते थे। वहाँ

इनके पूर्वपुरुष जँचे जँचे पदों पर थे। दिनकर

राय संस्कृत और फारसी के विद्वान् थे। पहले

पहले इनको हिमाचनधीस का काम दिया गया।

इनकी योग्यता और प्रभुभक्ति के कारण इनका

पद बढ़ता ही गया। अन्त में यह गयालियर

राज्य के दीवान बनाने गये। उस समय राज्य की

अवस्था बहुत बिगड़ी हुई थी खज़ाने में रुपये नहीं

थे। इन्होंने पाँच हजार के स्थान में दस हजार

अपना भासिक कर दिया था, राज्य के कामों पर

उपयुक्त मनुष्यों को रख कर राज्य का उत्तम प्रयत्न किया । सिपाही विद्रोह के समय इन्होंने अङ्ग्रेजी सरकार की बड़ी सहायता की थी, उस समय के बड़े साठ ने इनकी सहायता के बदले में इन्हें काशी के जिले में एक बड़ी ज़मींदारी दी। सन् १८५९ ई० में इन्होंने गवालियर का मन्त्रिपद त्याग दिया और कुछ दिनों तक पौलपुर में राज के सुपरिटेन्डेंट का काम करते रहे, तदनन्तर बड़े साठ की ठपप-स्थापक सभा के सभ्य बनाये गये । सन् १८६४ ई० में इन्हें के० सी० एस्० चार्ज की पदवी गवर्नमेंट ने दी । पुनः ये राजा बनाये गये, नाहं उपकरिने ने इनकी राजा उपाधि को बंशगत कर दिया । वृद्ध अवस्था में उन्होंने सभी कामों को छोड़कर भगवद्-भजन में मन लगाया । सन् १८९६ ई० में एक भारतीय प्रभुमन्त्र की जीवन शीला समाप्त हुई ।

दिनाइ दे० (स्त्री०) दाद, दद्रु, रोग विशेष ।

दिनांश तत्० (पु०) पृषान्द, मध्यान्ह, सायान्हादि, दिन का भाग ।

दिनादि तत्० (पु०) [दिन + आदि] प्रभात, प्रातःकाल, सवेरा ।

दिनान्त तत्० [दिन + अन्त] दिवसावसान, मध्याह्न, दिनस्य ।

दिनामार दे० (पु०) देनमाकं देश के वासी ।

दिनालोक तत्० (पु०) [दिन + आलोक] सूर्य का प्रकाश, सूर्यकिरण, धूप ।

दिनी दे० (पु०) दिनी, पुराना, बहुत दिनों का ।

दिनेश तत्० (पु०) [दिन + ईश] दिनपति, दिनकर, सूर्य, भातु ।

दिनेला दे० (पु०) दिनी, पुराना, बहुत दिनों का ।

दिया दे० (पु०) दीपक, दीप, चिरागु।—सलाई (स्त्री०) स्वनाम प्रसिद्ध, दीप बालने की एक वस्तु ।

दिलवाना दे० (क्रि०) दिलाना, देना धातु की प्रेरणाार्थक क्रिया, दान कराना ।

दिलवाली दे० (पु०) दिल्ली का वासी, दिल्ली का वना ।

दिलवैया दे० (पु०) दिलाने वाला, दान कराने वाला, प्रेरणा करके दान कराने वाला ।

दिलाना दे० (क्रि०) दिलवाना, दान कराना ।

दिलीप तत्० (पु०) सूर्यवंशी राजा, यह रघु राजा के पिता थे । इन्होंने ९९ अरगमेध यज्ञ किये थे, कालिदास का रघुवंश इन्हींके चरित्र से प्रारम्भ किया गया है ।

दिल्ली दे० (पु०) एक प्रसिद्ध नगर का नाम, भारत की पुरानी राजधानी ।

दिव तत्० (पु०) स्वर्ग, अन्तरिक्ष, आकाश, वन, दिश, दिन ।

दिवस तत्० (पु०) दिन, दिवा, घस, अहः।—सुख (पु०) प्रमात, प्रातःकाल ।

दिवसात्यय तत्० (पु०) दिन की समाप्ति, सायं, सायंकाल, संध्या ।

दिवरूपति तत्० (पु०) [दिवस + पति] इन्द्र, देवराज, मुत्पति ।

दिवा तत्० (पु०) दिन, दिवस, घासर।—फर (पु०) सूर्य, दिनकर, दिनमणि, संस्कृत के एक कवि का नाम, राजशेखर ने अपने सूर्य के कवियों में इनका भी नाम लिया है । ये कन्नौज के अधीश्वर हर्ष-वर्द्धन के सभासदों में थे थे । श्रीहर्ष का समय ६०० ई० के लगभग निश्चित हुआ है, अतएव उनके सभा पश्चिम दिवाकर का भी यही समय मानना चाहिये । यद्यपि ये नीच जाति के थे, तथापि इस कारण इनकी विद्या का अनादर नहीं किया जाता था । हर्ष वर्द्धन की सभा में वाणमयूर आदि के समान इनकी प्रतिष्ठा थी इनके विषय में एक संस्कृत का श्लोक है:—

अहो प्रभातो वाग्देव्या यन्मातङ्गदिवारकः,  
श्रीहर्षस्वाभयमभ्यः सभा वाणमयूरयोः ॥  
इनका पुरा नाम मातङ्गदिवारक था ।

(२) भट्टराज गोत्रीण्यस एक प्रसिद्ध ज्योतिषि ब्राह्मण । इनके पिता का नाम नृसिंह था, मित्र देवस इनके चचा और विद्यादाता गुरु थे । पं० सुधाकर द्विवेदीजी इनका जन्मकाल शके १५२८ या

प्रार्थना पूर्ण करने बोलते, तुमको हज़ार वर्ष तक गर्भ धारण करना होगा, और प्रसव होने तक बहुत ही गूदुतापूर्वक रहना होगा, दिति भी बड़ी सावधानों से पति के बताने नियमों का पालन करने लगी। इस समाचार को पाकर इन्द्र व्यथित हुए, यह मैंका देखने लगे। एक दिन बिना पैर धोये दिति से गई, उसी अवसर पर इन्द्र ने वज्र से गर्भ को ४८ खण्ड कर दिया। उसी गर्भ से उत्पन्न पुत्रों का नाम महर्तु है।

दिदृक्षा तत्० (स्त्री०) दर्शनेच्छा, देखने की इच्छा।

दिधिक्षा तत्० (स्त्री०) दहनेच्छा, दहन करने की इच्छा, जलाने की इच्छा।

दिधिषु तत्० (स्त्री०) द्विच्छुद्धा, दो बार व्याही स्त्री।  
—पति (पु०) द्विच्छुद्धापति, दो बार व्याही स्त्री का पति, विधवापति।

दिन तत्० (पु०) सूर्यज्योति से नियमित काल, वासर, दिवस, घस, अक्षरः।—कर (पु०) दिन-पति, दिनमणि, सूर्य, रवि।—काटना (वा०) समय बिताना, गुज़र करना, दुःख या आलस्य से दिन बिताना।—केशव (पु०) तम, अन्धकार।  
—का दिन (वा०) समस्त दिन, सपुत्रा दिन।  
—खुलना (वा०) अच्छे दिन आना, सुख का समय, उन्नति होना, वृद्धि होना, बढ़ती होना।  
—गँधाना (वा०) आलस में पड़कर बैठे रहना, वृथा समय खाना।—चढ़ना (वा०) अधिक समय बिताना, बिलम्ब होना, खियों के रजोधर्म होने में बिलम्ब होना। चढ़ाना (वा०) बिलम्ब करना, अति काल करके किसी काम को प्रारम्भ करना, आलस से काम का समय बिताना देना।—उज्योतिः (पु०) आतप, धूप, धाम।—ढलना (वा०) दिन घटना, दिन चला जाना, दिन पलटना, अच्छा या बुरा दिन आना, समय का परिवर्तन होना।  
—दानी (पु०) प्रतिदिन दाना, प्रतिदिन दानकर्ता।—दिन (पु०) प्रतिदिन।—दुःखित (पु०) अक्रयाक पत्नी, अकथा। (पु०) दिनहीन, दक्षि, निःस्व, निर्धन।—नाथ (पु०) दिनकर, दिवाधिपति, सूर्य।—पड़ना (वा०) सन्ध्या होना,

दिन बीतना, दुःख पहना, दुःख खाना।  
—फिरना (वा०) भाग्य सुलना, घुरे दिनों का चसा जाना और अच्छे दिनों का खाना।

—चदिन (वा०) प्रति दिन, दिन पर दिन।

—चल (पु०) पञ्चम, षष्ठ, सप्तम, अष्टम, एकार और द्वादश राशि।—मरना (वा०) दुःख और कष्ट में समय बिताना।—मणि (पु०) दिवाकर भातु, सूर्य।—मान (पु०) दिवस काल, सूर्योदय से सूर्यास्त तक का समय, सूर्योदय और सूर्यास्त में नियमित काल।—मुदना (वा०) दिन छिपना, सूर्यास्त होना, सन्ध्या होना।—मुख (पु०) प्रातःकाल, सबेर, भिनसार, बिहान।—मूर्ख (पु०) उदयाचल, पूर्व-पर्यंत।

दिनकर तत्० (पु०) संस्कृत के पण्डित और कवि, इन्होंने कालिदास के रघुवंश की टीका बनायी थी। १३८५ ई० में रघुवंश की टीका इन्होंने बनायी थी। ऐसा कुछ लोगो का कहना है। ये वैदिक-धर्मावलम्बी थे, सम्भव है इन्हीं की टीका के लक्ष्य करके मल्लिनाथ ने “दुर्बोध्यया विप्रसृष्टिता” कहा है। यह दिनकर वेदभाष्यकर्ता सायण और सर्वदर्शनसंग्रहकर्ता माधव से प्राचीन जँचते हैं। इनका समय चौदहवीं सदी का पित्रा भाग ही माना जा सकता है। इन्हें मिश्र की उपाधि थी, इनका पूरा नाम दिनकर मिश्र था।  
(२) यह बम्बई प्रदेश के रत्नगिरि ज़िला के देवतर ग्राम में १८१८ ई० में उत्पन्न हुए थे। इनका नाम दिनकर राय था। इनके पिता महाराष्ट्र ब्राह्मण थे उनका नाम राघव राहू था। दिनकर राय चार पीढ़ियों से गवालियर में रहते थे। यहाँ इनके पूर्वपुरुष ऊँचे ऊँचे पदों पर थे। दिनकर राय संस्कृत और फ़ारसी के विद्वान् थे। पहले पहल इनको हिमायनधीस का काम दिया गया। इनकी योग्यता और प्रभुभक्ति के कारण इनका पद बढ़ता ही गया। अन्त में यह गवालियर राज्य के दीवान बनाने गये। उस समय राज्य की अवस्था बहुत बिगड़ी हुई थी एज़ाने में रुपये नहीं थे। इन्होंने पाँच हज़ार के स्थान में दो हज़ार खपना मासिक कर दिया था, राज्य के कामों पर

उपयुक्त मनुष्यों को रख कर राज्य का उत्तम प्रबन्ध किया। निवाही विद्रोह के समय इन्होंने अहमदशाही सरकार की बड़ी सहायता की थी, उस समय के बड़े सात ने इनकी सहायता के बदले में इन्हें काशी के जिले में एक बड़ी ज़मींदारी दी। सन् १८५९ ई० में इन्होंने गयासियर का मन्त्रिपद त्याग दिया और कुछ दिनों तक पैतालपुर में राज के सुपरिटेण्डेंट का काम करते रहे, तदनन्तर बड़े सात की व्यवस्थापक सभा के सभ्य बनाये गये। सन् १८६४ ई० में इन्हें के० सी० एस० आई० की पदवी गवर्नमेंट ने दी। पुनः ये राजा बनाये गये, लार्ड डफरिन ने इनकी राजा उपाधि को बंशगत कर दिया। बृहत् गवस्था में इन्होंने सभी कामों को झांझकर भगवद्-भजन में मन लगाया। सन् १८८६ ई० में एक भारतीय प्रभुमन्त्र की जीवन लीला समाप्त हुई।

दिनाङ्क दे० (सो०) दाद, दह, रोग विशेष।

दिनांश तत्० (प्र०) पूर्वान्ध, मध्याह्न, सायान्हादि, दिन का भाग।

दिनादि तत्० (प्र०) [दिन + आदि] प्रभात, प्रातः काल, सबेरा।

दिनान्त तत्० [दिन + अन्त] दिवसाधिसान, सम्पन्ना, दिनस्य।

दिनामार दे० (प्र०) डेनमार्क देश के वासी।

दिनालोक तत्० (प्र०) [दिन + आलोक] सूर्य का प्रकाश, सूर्यकिरण, धूप।

दिनी दे० (प्र०) दिनी, पुराना, बहुत दिनों का।

दिनेश तत्० (प्र०) [दिन + ईश] दिनपति, दिनकर, सूर्य, भागु।

दिनेसा दे० (प्र०) दिनी, पुराना, बहुत दिनों का।

दिया दे० (प्र०) दीपक, दीप, चिराग।—सलाई (सो०) स्वनाम प्रसिद्ध, दीप धालने की एक धम्यु।

दिलवाना दे० (क्रि०) दिखाना, देना धातु की प्रेरणाार्थक क्रिया, दान कराना।

दिलवाली दे० (प्र०) दिल्ली का वामी, दिल्ली का बना।

दिलवैया दे० (प्र०) दिलाने वाला, दान कराने वाला, प्रेरणा करके दान कराने वाला।

दिलवाना दे० (क्रि०) दिलवाना, दान कराना।

दिलीप तत्० (प्र०) मुर्यवंशी राजा, यह रघु राजा के पिता थे। इन्होंने ९९ अरघमेष यज्ञ किये थे, फालिदास का रघुवंश इन्हींके चरित्र से प्रारम्भ किया गया है।

दिल्ली दे० (प्र०) एक प्रसिद्ध नगर का नाम, भारत की पुरानी राजधानी।

दिव तत्० (प्र०) स्वर्ग, अन्तरिक्ष, आकाश, वन, दिवा, दिन।

दिवस तत्० (प्र०) दिन, दिवा, पक्ष, अहः।—मुख (प्र०) प्रभात, प्रातःकाल।

दिवसात्यय तत्० (प्र०) दिन की समाप्ति, सायं, सायंकाल, सम्पन्ना।

दिवस्पति तत्० (प्र०) [दिवस + पति] इन्द्र, देवराज, सुरपति।

दिवा तत्० (प्र०) दिन, दिवस, वासर।—कर (प्र०) सूर्य, दिनकर, दिनमणि, संस्कृत के एक कवि का नाम, राजशेखर ने अपने पूर्ण के कवियों में इनका भी नाम लिया है। ये कन्नौज के श्रीहर्य-हर्ष-वर्द्धन के ममासदों में से थे। श्रीहर्ष का समय ६०० ई० के लगभग निश्चित हुआ है, अतएव उनके सभा परिहत दिवाकर का भी वही समय मानना चाहिये। यद्यपि ये नीच जाति के थे, तथापि इस कारण इनकी विद्या का अनादर नहीं किया जाता था। हर्ष वर्द्धन की सभा में वाणमयूर आदि के समान इनकी प्रतिष्ठा थी इनके विषय में एक संस्कृत का श्लोक है:—

अहो प्रभातो वाग्देव्या यन्मातङ्गदिवाकरः,  
श्रीहर्षस्याभवत्सभ्यः सतो वाणमयूरयोः ॥  
इनका पूरा नाम मातङ्गदिवाकर था।

(२) भरद्वाज गोत्रोत्पन्न एक प्रसिद्ध ज्योतिषि ब्राह्मण। इनके पिता का नाम नृसिंह था, शिव दैत्य इनके चचा और विद्यादाता हुए थे। पं० मुधाकर द्विवेदीजी इनका जन्मकाल शके १५२८ वा

प्रार्थना पूर्ण करने बोलें, तुमको हजार वर्ष तक गर्भ धारण करना होगा, और प्रसव होने तक बहुत ही गृह्णतापूर्वक रहना होगा, दिति भी बड़ी साधधानी से पति के यथाये नियमों का पालन करने लगी। इस समाचार को पाकर इन्द्र व्यथित हुए वह मौफा देखने लगे। एक दिन बिना पैर धोये दिति से गर्भ, उसी शयनर पर इन्द्र ने घञ्ज से गर्भ को ४८ खण्ड कर दिया। उसी गर्भ से उत्पन्न पुत्रों का नाम मरुत् है।

दिद्विज्ञा तत्० (स्त्री०) दर्शनेच्छा, देखने की इच्छा।

दिधिज्ञा तत्० (स्त्री०) दहनेच्छा, दहन करने की इच्छा, जलाने की इच्छा।

दिधिपु तत्० (स्त्री०) द्विरुद्धा, दो बार ब्याही स्त्री।  
—पति (पु०) द्विरुद्धापति, दो बार ब्याही स्त्री का पति, विधवापति।

दिन तत्० (पु०) सूर्यज्योति से नियमित काल, साक्षर, दिवस, घण्टा, अक्षरः।—कर (पु०) दिन-पति, दिनमणि, सूर्य, रवि।—काटना (वा०) समय बिताना, गुज़र करना, दुःख या आलस्य से दिन बिताना।—केशव (पु०) तम, शब्धकार।—का दिन (वा०) समस्त दिन, सपूषा दिन।—खुलना (वा०) अच्छे दिन आना, सुख का समय, उत्थति होना, वृद्धि होना, बढ़ती होना।—गँवाना (वा०) आलस में पड़कर बैठे रहना, वृथा समय खोना।—चढ़ना (वा०) अधिक समय बिताना, विलम्ब होना, खियों के रजोधर्म होने में विलम्ब होना।—चढ़ाना (वा०) विलम्ब करना, अति काम करके किसी काम को प्रारम्भ करना, आलस से काम का समय बिताना देना।—ज्योतिः (पु०) आतप, धूप, घाम।—ढलना (वा०) दिन घटना, दिन चला जाना, दिन चलना, अच्छा या बुरा दिन आना, समय का परिवर्तन होना।—दानी (पु०) प्रतिदिन दाता, प्रतिदिन दानकर्ता।—दिन (पु०) प्रतिदिन।—दुःखित (पु०) चक्रवाक पड़ो, चक्रवा। (पु०) दिनहर्ष, दरिद्र, निःस्व, निर्धन।—नाथ (पु०) दिनकर, दियाधिपति, सूर्य।—पड़ना (वा०) सन्ध्या होना,

दिन बीतना, दुःख, पड़ना, दुःख प्राप्तः।  
—फिरना (वा०) भाग्य खुलना, बुरे दिनों का चणा जाना और अच्छे दिनों का आना।

—यदिन (वा०) प्रति दिन, दिन पर दिन।  
—बल (पु०) पञ्चम, षष्ठ, सप्तम, अष्टम, नवम और द्वादश राशि।—मरना (वा०) दुःख और कष्ट में समय बिताना।—मणि (पु०) दिवाकर भातु, सूर्य।—मान (पु०) दिवस काल, सूर्योदय से सूर्यास्त तक का समय, सूर्योदय और सूर्यास्त से नियमित काल।—मुदना (वा०) दिन छिपना, सूर्यास्त होना, सन्ध्या होना।—मुख (पु०) प्रातःकाल, सबेर, भिनसार, बिहान।—मूत्र (पु०) उदयावल, सूर्य-पर्वत।

दिनकर तत्० (पु०) संस्कृत के पण्डित और कवि, इन्होंने कालिदास के रघुवंश की टीका बनायी थी। १३८५ ई० में रघुवंश की टीका इन्होंने बनायी थी। ऐसा कुछ लोगों का कहना है। ये वैदिक धर्मावलम्बी थे, सम्भव है इन्हीं की टीका को लक्ष्य करके मञ्जिनाथ ने "दुर्व्याख्या विपरीति" कहा हो। यह दिनकर वेदभाष्यकर्ता सायण और सर्वदर्शनसंग्रहकर्ता माधव से प्राचीन जँचते हैं। इनका समय चौदहवीं सदी का विजला भाग हो माना जा सकता है। इन्हें मिश्र की उपाधि थी, इनका पुरा नाम दिनकर मिश्र था। (२) यह बम्बई प्रदेश के रत्नगिरि जिला के देवतर ग्राम में १८१८ ई० में उत्पन्न हुए थे। इनका नाम दिनकर राव था। इनके पिता महाराष्ट्र ब्राह्मण थे उनका नाम राघव राहू था। दिनकर राव चार पीढ़ियों से गयालियर में रहते थे। वहाँ इनके पूर्वपुरुष ऊँचे ऊँचे पदों पर थे। दिनकर राव संस्कृत और फ़ारसी के विद्वान् थे। पहले पहल इनको हिमाचलधीस का काम दिया गया। इनकी योग्यता और प्रभुभक्ति के कारण इनका पद बढ़ता ही गया। अन्त में यह गयालियर राज्य के दीवान बनाने गये। उस समय राज्य की आवश्यकता बहुत बिगड़ी हुई थी प्रजापति में रुपये नहीं थे। इन्होंने पैसे हजार के स्थान में दो हजार अपना भाषिक कर दिया था, राज्य के कामों पर

उपयुक्त मनुष्यों को रख कर राज्य का उत्तम प्रबन्ध लिया। सिपाही विद्रोह के समय इन्होंने अङ्ग्रेजी सरकार को बड़ी सहायता की थी, उस समय के बड़े नाट ने इनकी सहायता के बदले में इन्हें काशी के जिले में एक बड़ी ज़मींदारी दी। सन् १८५८ ई० में इन्होंने गयानियर का मन्त्रिपद त्याग दिया और कुछ दिनों तक धौलपुर में राज के सुपरिटेन्डेंट का काम करते रहे, तदनन्तर बड़े नाट की उपव्यापक सभा के सभ्य बनाये गये। सन् १८६४ ई० में इन्हें कै० मी० एस० आई० की पदवी गवर्नमेंट ने दी। पुनः वे राजा बनाने गये, लार्ड डकरिन ने इनकी राजा उपाधि को संशयित कर दिया। कुछ अवस्था में इन्होंने सभी कामों को छोड़कर भगवद्-भजन में मन लगाया। सन् १८८६ ई० में एक भारतीय प्रभुमक की त्रयीय लीला समाप्त हुई।

दिनाइ दे० (बी०) दाद, दद्रु, रोग विशेष।

दिनांश तत्० (पु०) पूर्वान्ध, मध्यान्ह, सायान्हादि, दिन का भाग।

दिनादि तत्० (पु०) [दिन + आदि] प्रभात, प्रातःकाल, सबेर।

दिनान्त तत्० [दिन + अन्त] दिवसावसान, सन्ध्या, दिनस्य।

दिनामार दे० (पु०) डेनमार्क देश के राजा।

दिनालोक तत्० (पु०) [दिन + आलोक] सूर्य का प्रकाश, सूर्यकिरण, धूप।

दिनी दे० (पु०) दिनी, पुराना, बहुत दिनों का।

दिनेश तत्० (पु०) [दिन + ईश] दिनपति, दिनकर, सूर्य, भाग्य।

दिनेला दे० (पु०) दिनी, पुराना, बहुत दिनों का।

दिवा दे० (पु०) दीपक, दीप, विराग।—सलाई (बी०) स्थानात् प्रसिद्ध, दीप बालने की एक वस्तु।

दिलवाना दे० (क्रि०) दिलाना, देना धातु की प्रेरणार्थक क्रिया, दान कराना।

दिलवाली दे० (पु०) दिल्ली का वाली, दिल्ली का बना।

दिलवेया दे० (पु०) दिलाने वाला, दान कराने वाला, प्रेरणा करके दान कराने वाला।

दिलाना दे० (क्रि०) दिलवाना, दान कराना।

दिलीप तत्० (पु०) सूर्यवंशी राजा, यह रघु राजा के पिता थे। इन्होंने ८८ अरवमेघ यज्ञ किये थे, कानिदास का रघुवंश इन्हीं के चरित से प्रारम्भ किया गया है।

दिल्ली दे० (पु०) एक प्रसिद्ध नगर का नाम, भारत की पुरानी राजधानी।

दिव तत्० (पु०) स्वर्ग, अन्तरिक्ष, आकाश, वन, दिवा, दिन।

दिवस तत्० (पु०) दिन, दिवा, घस, अहः—सुख (पु०) प्रभात, प्रातःकाल।

दिवसात्यय तत्० (पु०) दिन की समाप्ति, सायं, सायंकाल, सन्ध्या।

दिवस्पति तत्० (पु०) [दिवस + पति] इन्द्र, देवराज, सुरपति।

दिवा तत्० (पु०) दिन, दिवस, वासर।—कर (पु०) सूर्य, दिनकर, दिनमणि, संस्कृत के एक कवि का नाम, राजशेखर ने अपने पूर्व के कवियों में इनका भी नाम लिया है। ये कन्नौज के श्रीहर्यर हर्ष-वर्द्धन के सभासदों में से थे। श्रीहर्ष का समय ६०० ई० के लगभग निश्चित हुआ है, अतएव उनके सभा पश्चित दियाकर का भी वही समय मानना चाहिये। यद्यपि ये नीच जाति के थे, तथापि इस कारण इनकी शिक्षा का खनादर नहीं किया जाता था। हर्ष वर्द्धन की सभा में धानमपुर आदि के समान इनकी प्रतिष्ठा थी इनके विषय में एक संस्कृत का श्लोक है:—

अहो प्रभातो वाग्देव्या यन्मातङ्गदिवाकरः,  
श्रीहर्षदेवाभवत्सभ्यः समो वागमपूरयोः ॥

इनका पूरा नाम मातङ्गदिवाकर था।

(२) भरद्वाज गोशोषक एक प्रसिद्ध ज्योतिषि ब्राह्मण। इनके पिता का नाम भृषिंह था, शिव देवज्ञ इनके चना और विद्यादाता हुए थे। पं० मुधाकर द्विवेदीजी इनका जन्मकाल शके १५२८



१६०६ ई० यतलाते हैं। इनके यनाये कई एक ग्रन्थ हैं उनमें जातक पट्टति नामक सन् १५१६ ई० में प्रकाशित हुआ था। गोदावरी नदी के तीर पर गोल नामक ग्राम में इनका निवास-स्थान था।  
—**न्ध** (गु०) दिन का अन्धा, जिते दिन में नही सूझता हो। (पु०) उलूक, उलूह।—**भीत** (पु०) भयंकर, उलुआ, उलूह, चोर, तस्कर।—**मणि** (पु०) सूर्य, दिनकर।—**मध्य** (पु०) मध्याह्न, दिन का मध्यभाग, द्वितीय प्रहर।

**दिवाला दे०** (पु०) ऋण चुकाने की शक्ति, न्यास किये हुए धन को न देना।

**दिवाली तद्गु०** (स्त्री०) दीपावलि, कार्तिक मास की अमावस्या का त्योहार, जिस दिन जन्मो पूजन तथा दीप दान किया जाता है।

**दिविज तत्०** (गु०) स्वर्गीय, दिव्य, अलौकिक।

**दिविरथ तत्०** (पु०) राजाविशेष, महाराजा अङ्ग के पुत्र और दधिवाहन का पुत्र, दिविरथ का पुत्र धर्मरथ और धैर्य विरथरथ थे।

**दिविपद् तत्०** (पु०) देवता, अमर, देव।

**दिवेश तत्०** (पु०) इन्द्र, देवराज।

**दिवोदास तत्०** (पु०) ब्रह्मरथ के पुत्र, मेनका के गर्भ से यह उत्पन्न हुए थे। इनको बहिन का नाम अदल्या था।

(२) काशिराज मनुवंशीय रिपुञ्जय के पुत्र, इन्होंने तपस्या द्वारा ब्रह्मा को प्रसन्न किया था और वर पाया था। ब्रह्मा के वर से नागराज की कन्या अनङ्गमोहिनी से इनका विवाह हुआ था और स्वर्ग से कुसुम और रत्न इनको मिले थे। इसी कारण इनका दिवोदास नाम पडा था। इन्होंने बहुत दिन तक काशो का राज्य किया था।

(३) इनको प्रतर्द्धन नाम का एक पुत्र था, इनके पिता का नाम था सुदेव। आपुवंशोय सुदेश पुत्र कार्य प्रथम राजा, इनके पुत्र काशिराज, या काश्य ही से उस राज्य का काशी नाम पडा। उसी वंश में हर्षश्व नामक एक राजा उत्पन्न हुए। यदुवंशीय वैदय के पुत्रों ने इन्हें मार डाला। उसके

बाद सुदेव काशी के राजा हुए, यह भी इन्हें बंशियो के द्वारा मारे गये, तदनन्तर उनके पुत्र दिवोदास काशी के राजा हुए और इन्होंने काशो को गुरुय यत्र पूर्वक सुरक्षित किया, उस समय काशो गङ्गा के उत्तर तीर और गोमती के दक्षिण तीर तक विस्तृत थी। भद्रश्रेय के पुत्र ने काशो पर चढाई की और उसने युद्ध में दिवोदास को हरा दिया। तदनन्तर भद्रश्रेय के पुत्र दुर्धम को दिवोदास के पुत्र प्रदर्शन ने हराया।

**दिवौकस तत्०** (पु०) स्वर्ग निवासी, देवता, देव, अमर।

**दिव्य तत्०** (गु०) स्वर्गीय, सुन्दर, मनोह, ऐश्वर्यवान् ईश्वर सम्बन्धी। (पु०) शपथ।—**कारी** (गु०) कोपघाटी, शपथकारी।—**कण्ड** (पु०) कामरुपी लोमक नाम पर्यंत के पूर्व भागस्थ पुष्कलिनी विशेष।—**गन्ध** (पु०) लज्ज, शिर।—**गायन** (पु०) स्वर्गीय गायक, गन्धर्व।—**चक्षु** (पु०) ज्ञानचक्षु, उपचक्षु।—**दोहद** (पु०) अवाचित, उपस्थित, बिना मांगे प्राप्त।—**दृष्टि** (गु०) अलौकिक ज्ञान सम्पन्न, सर्वज्ञ।—**धर्मो** (गु०) धार्मिक, धर्मात्मा, मनोह, मनोहर, रम्य।—**रत्न** (पु०) विन्तामणि।—**रथा** (पु०) ठरोमयान, देवता का विमान।—**लता** (स्त्री०) दुर्वा।—**घसन**, **वख**, (पु०) सुन्दर वख, मनोहर वख, स्वर्गीय कपड़े।—**चाक्ष** (पु०) दैववाणी।—**ज्ञान** (पु०) उच्चज्ञान, अलौकिकज्ञान, ब्रह्मज्ञान।—**स्थान** (पु०) सुन्दर गृह, स्वर्गीय गृह, उत्तम वास्तुमान।

**दिव्याङ्गना तत्०** (स्त्री०) सुन्दरी, बरान्गना, मनोहरा स्त्री, उत्तमा, सुन्दरी, स्वर्गीया स्त्री।

**दिव्यादिव्य तत्०** (पु०) [ दिव्य + अदिव्य ] अलौकिक मनुष्य, देव मुख्य मनुष्य, नायक विशेष।

**दिव्योदक तत्०** (पु०) [ दिव्य + उदक ] आकाश जल, गुमार, हिम।

**दिश तत्०** (स्त्री०) दिश, पूर्व आदि दस दिशाएँ।

दिशा तत्० (ख०) दिग्, दिशा, दिग् ।—शूल  
(३०) दिग्शूल ।

दिशि तत्० (ख०) दिशा ।—नाथ (पु०) दिग्पाल,  
दिशाओं के स्वामी ।—प, पाल (पु०) दिग्पाल,  
दिशानाथ, लोकपाल ।

दिश्य तत्० (गु०) दिग्भव वस्तु, दिग्जाता, दिशाओं  
में उपवन्न होनेवाली वस्तु, दिशा सम्प्रन्धी ।

दिष्ट तत्० (घ०) भाग्य, देव, नियति । (गु०) उप-  
दिष्ट, उपदेश पाया हुआ ।—भुक् (गु०) भाग्या-  
पीन, भाग्यफल का भोग करने वाला ।

दिष्ट्या तत्० (घ०) हर्ष, क्षतिगम्य आनन्द वृत्तक  
चरण्य ।

दिशार तत्० (पु०) चर देश, अन्य देश, विदेश,  
परदेश ।

दिशाधरी या दिसाधरी तत्० (गु०) चर देशीय,  
अन्य देशों, दूसरे देश का, दूसरे देश का वास्तु ।  
(पु०) एक प्रकार का पान ।

दिरा दे० (पु०) देशालय, देवस्थान, मन्दिर ।

दिहली तत्० (ख०) देहली, देहली, दोनों किवाड़ों  
के नीचे की गलती ।

दीलक तत्० (गु०) दीक्षादत्ता, मन्त्रोपदेशकर्ता, गुरु,  
उपदेशक, मन्त्रदाता, धर्मोपदेशक ।

दीक्षा तत्० (ख०) भजन, पूजन, व्रत संग्रह, गुरु  
मुझ से अपने हृदय का मन्त्र ग्रहण ।—कर्ता  
(पु०) गुरु, उपदेशक, दीक्षा कारक ।

दीक्षित तत्० (गु०) उपदिष्ट, गृहीत मन्त्र, भजन  
करने में प्रवृत्त, ब्राह्मणों की एक श्रेणी, उपाधि ।

दीक्षना दे० (क्रि०) दिग्दर्शन, वृक्षना, दीक्ष  
पड़ना, दीठ पड़ना ।

दीठ तत्० (ख०) दृष्टि, शील, नेत्र, नयन, चक्षु ।

दीठा तत्० (गु०) द्रष्टा, दर्शक, देखने वाला ।

दीठि तत्० (ख०) दृष्टि, दर्शन, नेत्र, नयन ।

दीदी दे० (ख०) बड़ी बहिन, बड़ी ननद, पति की  
बड़ी बहिन ।

दीधिति तत्० (ख०) किरण, राश्री, तेज, न्याय  
के एक ग्रन्थ का नाम, पञ्चम त्रिषु कृत न्याय-  
ग्रन्थ ।

दीन तत्० (गु०) दरिद्र, निर्धन, निरक्ष, दुःखी,  
स्थान, भंत् ।—चेतन (गु०) विषय, अक्षय, उद्विग्नचित्त, उग्रकुल मानस ।—चेता (गु०) निर-  
हङ्कार, अविमान शून्य, सीधा सादा ।—तां,  
ताई (ख०) दरिद्रता, दुःख, अधीनता ।—दयालु  
(गु०) दीनों पर दया करने वाले, दीनपालक,  
दुःखियों का दुःख दूर करने वाला ।—नाथ (गु०)  
दीनपालक, दीनरक्षक ।—घन्धु (गु०) दीन पर  
कृपा करने वाले भगवान् ।—वत्सल (गु०)  
कठणात्मा, कृपाशु, दयाशु ।

दीनानाथ तत्० (गु०) दीनरक्षक, दीनस्वामी,  
भगवान् ।

दीनार तत्० (पु०) स्वर्णालङ्कार, मुद्रा, निष्क परि-  
माण, दो कर्प परिमित सुवर्ण, उग्रहार की सुग-  
मता के लिये मान करने की वस्तु, यन्त्रिच रत्नी  
भर सेना, सेने के गुराने सिक्के का नाम ।

दीप तत्० (पु०) प्रदीप, दिया, चालोक, जलती हुई  
बत्ती की आग्निधिया ।—क तत्० (गु०) [दीप  
+ चक्षु] प्रकाशक, शोभक, शोभाकर, शोभाकारक ।  
(पु०) दीप, दिया, काष्ठपालङ्कार विरोप, जहाँ  
उपमान और उपमेय दोनों का एकही धर्म वर्णन  
किया जाय, वह दीपक अलङ्कार है । इसके दो  
भेद हैं दीपक और चावृत्त दीपक ।  
यथा:—

दोहर ।

वर्ण्य शवर्णनं के धरमु जहँ वरनत है एक ।

दीपक ताके कहत हैं भूपन सुकवि विवेक ॥

उदाहरण—

कामिनी कंत से, जामिनी बंद से,

दामिनी पावम मेघ घटाने ।

कीरति दान से, घृति खान से,

प्रीति बड़ी सनमान महासे ॥

भूपन भूपन से तदनी,

नसिनी नय भूपन से यथार्थे ।



परन्तु अनगिनत सुसज्जमान सेना से गढ़ प्रधाना कठिन समक कर उसने सुसज्जमानों को गढ़ दे देना स्थिर कर लिया। राजमहिषी दुर्गावती ने सुसज्जमानों के हाथ पड़ने से मर जाना ही अच्छा समझ कर ७०० सौ, राजपुत्र स्त्रियों के साथ अग्निकुण्ड में शरीर भस्म कर दिया।

(२) चन्देल राजपुत्र महोबा के राजा की कन्या। महोबा हमीरपुर जिला का एक मुख्य जनपद है। दुर्गावती के रूप तथा गुण की प्रशंसा सुनकर गौर जाति के राजपुत्र राजा दशपत् साह ने इसके साथ विवाह करने का पैगाम पठाया, परन्तु महोबा के राजा ने उसे स्वीकार नहीं किया। दशपत्साह सेना लेकर चढ़ आये, और महोबा के राजा को परास्त करके उन्हींने दुर्गावती के साथ अपना विवाह किया। परन्तु दशपत्साह बहुत दिन तक दुर्गावती के साथ नहीं रह सके विवाह होने के ४ वर्ष के बाद ही दुर्गावती विधवा हो गयी। उस समय उनके ३ वर्ष का एक पुत्र था। उसी मरने पुत्र को रक्षक होकर वह गढ़ मण्डल राज्य का शासन करने लगी। उनके शासन काल में राजा और प्रजा दोनों सुखी हुए। दुर्गावती का यह सुख भी विधि से नहीं देखा गया, इनके राज्य के सुखी होने का समाचार दिल्ली के बादशाह अकबर ने सुना। अर्सेलोसुप अकबर को आज्ञा से मध्यभारत के उनके सेनापति आसफुजान ने १८००० सेना लेकर गढ़मण्डल की राजधानी सिंहगढ़ पर चढ़ाई की। प्रथम दिन के युद्ध में विजय सारमी महारानी की ओर रही। परन्तु दूसरे दिन के युद्ध में हमीर पर चढ़े हुए रानी काहत हुई। उनके शरीर में दो बाण लगे। उनकी यह अत्रस्या देखकर उनकी सेना भागने लगी। युद्ध में जय की आशा न देखकर महारानी ने महावत से अंकुश लेकर उसीके द्वारा युद्धभूमि में प्राणत्याग किया।

दुर्घट तत् ० (गु०) कष्टसाध्य, दुःसाध्य, कठिन, कटोर, जिसकी सिद्धि प्रति कष्ट से हो।

दुर्घटना तत् ० (खी०) दुष्ट घटना, दुःख की घटना, विपत्सात।

दुर्जन तत् ० (गु०) क्रूर, दुष्ट, खल, कुचित आचार वाला, अधम, नीच।—ता (खी०) क्रूरा, दुष्टता, अधमता, यष्टता।

दुर्जनताई तत् ० (खी०) दुर्जन का कर्म, क्रूरा।

दुर्जय तत् ० (गु०) दुःख से जीतने योग्य, दुर्दम। (गु०) प्रबल शत्रु।

दुर्दम तत् ० (गु०) दुर्दमनीय, दुःख से दमन करने योग्य, प्रबल, पराक्रमी, अयश।

दुर्दशा तत् ० (खी०) दुर्गति, विपत्ति, हीन अत्रस्या।

दुर्दिन तत् ० (गु०) कुदिन, पानी, बादल का दिन, मेघघृत दिन।

दुर्द्वेष तत् ० (गु०) दुर्भाय, कुभाय, अभाय।

दुर्दान्त तत् ० (गु०) दुरन्त, अशान्त, प्रबल, भयङ्कर, भयानक।

दुर्द्वेष तत् ० (गु०) निर्लज्ज, दुष्ट।

दुर्नाम तत् ० (गु०) अकीर्ति, अयश, अयश, कुख्या, निन्दा, अप्रशंसा।

दुर्नामा तत् ० (गु०) अयश रोग, बयासीर।

दुर्नामी तत् ० (गु०) अयशयी।

दुर्निवार तत् ० (गु०) जो बहुत कष्ट से निवारण किया जाय।

दुर्नीति तत् ० (खी०) अन्याय, कुनीति, कुप्रवहार, अतश्चरित्र, कुचरित्र, कुप्रभाव।

दुर्बल तत् ० (गु०) दुबला, बल रहित, निर्बल, अशक्त, क्षतहान।—ता (खी०) बलहीनता, असाध्य, निर्बलता।

दुर्भंगा तत् ० (खी०) पति स्नेह रहिता, भाग्यहीना खी, अश्रिय भाग्य।

दुर्भाग्य तत् ० (गु०) दुर्दृष्ट, अभाग्य, मन्दभाग्य।

दुर्भाव तत् ० (गु०) दुष्टभाव, दुष्ट अभिप्राय, निन्दित स्वभाव।

दुर्मिस्त्र तत् ० (गु०) अकाल, कुप्रवय, महंगी।

दुर्मति तत् ० (खी०) कुबुद्धि, मन्दबुद्धि, अज्ञान, अज्ञता।

पोली सारवे ।—आप (गु०) दुष्प्राप्य, दुर्लभ, दुःख से पाने योग्य ।—आरोह (गु०) दुःख में आरे हण करने योग्य, ऊँचा पैद, जिस पर दुःख से चढ़ा जाय ।—आलाप (गु०) कट्टुवाक्य, बुरी बात, गाली ।—आलोक (गु०) दुर्निरोध्य, दुर्दर्श, अति कष्ट से देखने योग्य ।—आशय (गु०) क्रूर, दुष्ट मानस । आशा (स्त्री०) बुरी आशा, नहीं पूर्ण होने योग्य आशा ।—आसद (गु०) दुष्प्राप्य, दुर्लभ ।

दुरता दे० (क्रि०) छिपना, लुकना, भागना, पलायन, पलायन करना ।

दुराना दे० (क्रि०) छिपाना, गुप्त रखना, लुकाना, भेद भाव रखना ।

दुराव दे० (गु०) लुकाव, छिपाव, छल, कपट ।

दुरित तत्० (गु०) पाप, अपराध, दोष, अधर्म ।

दुरिष्ट तत्० (गु०) अतिमन्द, अतिशय निन्दित, महापापी, पापिष्ठ, दुष्ट ।

दुरी दे० (स्त्री०) खेल में दो पढ़ना, लुए के खेल का एक दाव, दुआ ।

दुरुक्त तत्० (गु०) शाय, गाली दुर्बचन ।

दुरूक्ति तत्० (स्त्री०) दुगारा कथन, बार बार कहना, एक बात को दो बार कहना । अनुचित रीति से कहना, जैसे गँवार थोलेते हैं भोजन चोजन, हूध ऊध आदि ।

दुरुखा दे० (गु०) जिस वस्तु का दोनों बाजू एक ममान हो ।

दुरुत्तर तत्० (गु०) दुःतिक्रम, दुर्लघ्य, दुःख से तरने योग्य ।

दुरेफ तद्गु (गु०) हिरक, धमर, भौरा ।

दुरोद्धर तत्० (गु०) लुआ, लुआ का खेल ।

दुर्ग तत्० (गु०) गढ़, कोट, घाट ।

दुर्गत तत्० (गु०) विपन्न, दुरवस्थ, दुखी, दरिद्र ।

दुर्गति तत्० (स्त्री०) विपत्ति, दुःख, कुगति, बुरी अवस्था, क्लेश, दुरवस्था, दुर्दशा, दरिद्रता ।

—नाशिनी (स्त्री०) दुःख हारिणी भगवती, दुर्गा ।

दुर्गन्ध तत्० { (स्त्री०) दुष्ट गन्ध, बुरा बास ।  
दुर्गन्धि तत्० } (स्त्री०)

दुर्गन्धा तत्० (स्त्री०) पताण्डु, प्याज ।

दुर्गम तत्० (गु०) कष्टगम्य, दुःख से जाने योग्य अघट, बोहड, यीरान ।—ता (स्त्री०) गम्भीरता, कठिनता, अघटपन ।

दुर्गा तत्० (स्त्री०) हिमालय की कन्या, भयवती, शक्ति विशेष, आद्याशक्ति, दुर्ग नामक असुर के विनाश करने से इनका दुर्गा नाम पड़ा है । देवताओं को स्वर्ग से निकाल कर महिषासुर स्वर्ग का राजा बन बैठा । इससे दुखी होकर देवता ब्रह्मा के निकट गये, ब्रह्मा देवताओं को साथ लेकर महादेव के पास गये, देवताओं की दुःख कहानी सुनकर महादेव ने क्रोध किया और उनके मुख से एक ज्योति प्रकट हुई, इसी प्रकार सभी देवों के शरीर से एक एक ज्योति प्रकट हुई और उन ज्योति समुदाय ने एक स्त्री का रूप धारण किया । देवों ने अपने अपने अस्त्र शस्त्र उस स्त्री को दिये, उसी स्त्री ने महिषासुर का नाश किया था । आद्याशक्ति देवी महिषासुर के सामने जब लड़ने को उपस्थित हुई थी, तब उससे महिषासुर ने कहा था—देवि ! आप मुझे मारेंगी, इसका मुझे कुछ भी कष्ट नहीं है, परन्तु आपके साथ साथ मेरी भी संसार में पूजा हो इसकी व्यवस्था आपके करनी चाहिये । देवि ने “तथास्तु” कहा ।

—ध्यक्ष (गु०) [दुर्ग + अध्व्यक्ष] दुर्ग रक्षक, गढ़ का रखवारा, किलादार ।—नवमी (स्त्री०) तिथि विशेष, पर्य विशेष, कार्तिक शुक्लपक्ष की नवमी ।

दुर्गामी तत्० (गु०) कुमार्गी, कुमार्गामी, दुराचारी ।

दुर्गावती दे० (स्त्री०) चित्तौर के महाराणा नागा की कन्या, बेसिन के राजा सिलोढी के यह व्याही गयी थी । गुजरात के मुबेदार बहादुरशाह ने १५२१ ई० में सिलोढी को पकड़ कर सुसलमान बना दिया । सिलोढी के छोटे भाई लक्ष्मण ने कुछ दिनों तक बड़ी धीरता से लड़ कर गढ़ की रक्षा की थी,

परन्तु भयानकत मुमक्षमान सेना से गढ़ बचाना कठिन समझ कर उसने मुमक्षमानों को गढ़ दे देना स्थिर कर लिया। राजमहियो दुर्गावती ने मुमक्षमानों के हाथ पड़ने से मर जाना ही अच्छा समझ कर ७०० सौ, राजपूत जियों के साथ अग्निकुण्ड में शरीर भस्म कर दिया।

(२) चन्देल राजपूत महोबा के राजा की कन्या। महोबा हमीरपुर जिला का एक सुख जनपद है। दुर्गावती के रूप तथा गुण की प्रशंसा सुनकर गौर जाति के राजपूत राजा दलपत् साह ने इसके साथ विवाह करने का पैगाम पठाया, परन्तु महोबा के राजा ने उसे स्वीकार नहीं किया। दलपत्साह सेना लेकर चढ़ चाये, और महोबा के राजा को परास्त करके उन्होंने दुर्गावती के साथ अपना विवाह किया। परन्तु दलपत्साह बहुत दिन तक दुर्गावती के साथ नहीं रह सके विवाह होने के ४ वर्ष के बाद ही दुर्गावती विधवा हो गयी। उस समय उनके ३ वर्ष का एक पुत्र था। उसी अपने पुत्र को रक्षक होकर यह गढ़ मण्डल राज्य का शासन करने लगे। उनके शासन काल में राजा और प्रजा दोनों सुखी हुए। दुर्गावती का यह पुत्र भी विधि से नहीं देखा गया, इनके राज्य के सुखी होने का समाचार दिल्ली के बादशाह अकबर ने सुना। अर्थात्: सुख अकबर को आत्ता से मध्यभारत के उनके सेनापति आसफखान ने १८००० सेना लेकर गढ़मण्डल की राजधानी सिंहगढ़ पर चढ़ाई की। प्रथम दिन के युद्ध में विजय सखी महारानी की ओर रही। परन्तु दूसरे दिन के युद्ध में हाथी पर चढ़ी हुई रानी अक्षत हुई। उनके शरीर में दो वाण लगे। उनकी यह अत्रत्या देखकर उनकी सेना भागने लगी। युद्ध में जय की आशा न देखकर महारानी ने महावत से शंकुप लेकर उसीके द्वारा युद्धभूमि में प्राणत्याग किया।

दुर्घट तत् ० (गु०) कण्ठसाध्य, दुःसाध्य, कठिन, कठोर, जिसकी सिद्धि चित्त कष्ट से हो।  
दुर्घटना तत् ० (खी०) दुष्ट घटना, दुःख की घटना, विषयपात।

दुर्जन तत् ० (गु०) क्रूर, दुष्ट, खल, कुत्सित, पाचार वाला, अधम, नीच।—ता (खी०) क्रूरता, दुष्टता, अधमता, शत्रुता।

दुर्जनताई तद् ० (खी०) दुर्जन का कर्म, क्रूरता।

दुर्जय तत् ० (गु०) दुःख से जीतने योग्य, दुर्म। (गु०) प्रयत्न शत्रु।

दुर्म तत् ० (गु०) दुर्मनीय, दुःख से दमन करने योग्य, प्रयत्न, पराक्रमी, अधश।

दुर्मशा तत् ० (खी०) दुर्गति, विपत्ति, हीन अवस्था।

दुर्मिन तत् ० (गु०) कुदिन, पानी बादल का दिन, मेघायुत दिन।

दुर्मिय तत् ० (गु०) दुर्भाग्य, कुभाग्य, अभाग।

दुर्दान्त तत् ० (गु०) दुर्दान्त, अमान्य, प्रयत्न, भयङ्कर, भयानक।

दुर्मयं तत् ० (गु०) निराल्प, दुष्ट।

दुर्नाम तत् ० (गु०) अनीति, अधश, अधयश, कुख्या, निन्दा, अप्रशंसा।

दुर्नामा तत् ० (गु०) अर्थ रोग, बयासीर।

दुर्नामो तत् ० (गु०) अधयशी।

दुर्निवार तत् ० (गु०) जो बहुत कष्ट से निवारण किया जाय।

दुर्नीति तत् ० (खी०) अन्वय, कुनीति, कुव्यवहार, अक्षयवर्जित, कुचरित, कुव्यभाव।

दुर्बल तत् ० (गु०) दुबला, बल रहित, निर्बल, असमर्थ, बलहीन।—ता (खी०) बलहीनता, असाध्य, निर्बलता।

दुर्भंगा तत् ० (खी०) पति स्नेह रहिता, भाग्यहीन खी, अश्रिय भायी।

दुर्भास्य तत् ० (गु०) दुर्द्रष्ट, अभाग्य, मन्दभाग्य।

दुर्भाव्य तत् ० (गु०) दुष्टभाव्य, दुष्ट अभिप्राय, निन्दित स्वभाव।

दुर्मिच्छ तत् ० (गु०) अकाल, कुसमय, महंगी।

दुर्मति तत् ० (ख०) कुबुद्धि, मन्दबुद्धि, अज्ञान, अज्ञता।

दुर्भेद तत्० (गु०) मस्त, अहङ्कारी, घमरही, तमो-  
गुण युक्त, मतवाला ।

दुर्भेदा तत्० (गु०) उद्विग्नचित्त, अन्वयमनस्क  
चिन्तित, भायित ।

दुर्मुख तत्० (गु०) ब्रानर विशय, घोटक, महिषासुर  
का मेनापति विशेष । (गु०) दुर्भाषी, कठोर वचन  
बोलने वाला ।

दुर्मुख तत्० (गु०) ठसनी, सुगर, सुदर ।

दुर्मूल्य तत्० (गु०) महंगा, बहुमूल्य, षडुत  
मूल्य का ।

दुर्मैत्रा तत्० (गु०) मेधाहीन, दुर्बुद्धि, अज्ञानी ।

दुर्योग तत्० (गु०) युवा समय, मेघाच्छन्न दिन,  
अनक, अगुम सुचक्र पाधक योगा का भेज ।

दुर्योनि तत्० (गु०) नीच धरोद्भव, नीच पशु  
में उत्पन्न ।

दुर्योधन तत्० (गु०) [दुर + युध् + अनट्] धृतराष्ट्र  
का ज्येष्ठ पुत्र, महाभारत के युद्ध में ये ही कौरव  
दल के नेता थे । यह भीम के समय के थे, भीम  
के बलवीर्य आदि देखकर ये जला करते थे । धारय-  
काल में खेल में दुर्योधन ने भीम को त्रिय देकर  
समुद्र में फेंकवा दिया था, यासुकी के प्रयत्न से  
भीम के गणों की रक्षा हुई थी । राजा धृतराष्ट्र  
ने अपने ज्येष्ठ भतीजे युधिष्ठिर को युवराज बनाना  
चाहा था परन्तु दुर्योधन के विरोध करने से यह  
नहीं हो सका । दुर्योधन की समृप्ति से धृतराष्ट्र  
ने पाण्डवों को हस्तिनापुर से निकाल कर वार-  
णास्य नामक नगर में भेज दिया । वारणास्य में  
पाण्डवों को जला देने की इच्छा से दुर्योधन ने  
साक्षात्गृह बनवाया था, परन्तु उसकी इच्छा सफल  
न हुई । यहाँ से भागकर पाण्डव पाञ्चाल राज्य  
में चले गये । इस राज्य के राजा द्रुपद थे, द्रुपद  
के साय कौरवों की पुरानी शत्रुता थी, द्रुपद की  
पत्न्या द्रौपदी का पाण्डवों के साथ विवाह होने  
पर यह शत्रुता और भी बढ़ गई । द्रौपदी के  
स्वयंवर में अनेक श्लेटे बड़े राजा निमन्त्रित हुए  
थे । कौरव भी गये थे । एक एक करके कौरवों ने

सत्य वैध करने का प्रयत्न किया परन्तु विफल हुए ।  
पाण्डव भी ब्राह्मण वैध में वहाँ उपस्थित थे एक  
में छद्मवैधधारी अर्जुन ने सत्यभेद किया और  
द्रौपदी उन्ही को मिली । धृतराष्ट्रने पाण्डवों  
को मुला कर उन्हें आधा राज्य दे दिया और  
इन्द्रप्रस्थ में उनकी राजधानी बना दी ।  
यहाँ पाण्डवों ने राजसूय यज्ञ किया, इनका  
यज्ञ बड़ी भूमिपाम से समाप्त हुआ । दुष्ट दुर्योधन  
से यह नहीं देखा गया । उसने शकुनि से मित्रकर  
धर्मान्ता युधिष्ठिर को लुब्धा खेपने के लिये बुलाया ।  
शकुनि के हल से युधिष्ठिर राज्य हार गये, पुन  
द्रौपदी दाँव पर रखी गयी उसे भी हार गये ।  
दुर्योधन ने भरी समा में द्रौपदी को अपमानित  
किया । द्रौपदी का अपमान देखकर भीम ने दुःश-  
सन का वसस्थल और दुर्योधन का उद्दिष्टाने की  
प्रतिज्ञा की, वीर भीम ने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की  
थी । दुर्योधन ने पाण्डवों का १२ वर्ष के लिए  
अधन में भेज दिया । एक समय पाण्डवों को अपनी  
प्रभुता दिखाने के लिये दुर्योधन ने घोषयात्रा की  
परन्तु यहाँ त्रिविसेन नामक गन्धर्व के द्वारा बन्ध  
हुए । इसका समाचार सुनकर युधिष्ठिर ने भीम  
और अर्जुन को उनकी रक्षा के लिये भेजा । इ  
जोगों ने दुर्योधन को कैद से छुड़ाया । दुर्योधन  
इससे बहुत सज्जित हुआ । परन्तु उसने पाण्डव  
के इस उपकार का बदला अपकार के द्वारा चुकाने  
निश्चित किया । पाण्डवों के वनवास की अवधि  
समाप्त हुई । उन्होंने श्रीकृष्ण को दुर्योधन के पा  
आधा राज्य सौटा देन का प्रस्ताव करने के लिये  
भेजा । परन्तु अभिमानी दुष्ट दुर्योधन ने बिना  
युद्ध के एक तिन्के के बराबर भी भूमि देना न चाही ।  
अत युद्ध हुआ युद्ध में कौरवों का सर्वनाश हुआ ।  
एक एक करके कौरव मारे गये । १८ दिन में  
दुर्योधन को आहुति देकर यह युद्ध यज्ञ समाप्त  
किया गया ।

दुर्लभा तत्० (गु०) अगुम चिन्द, अशक्त, बुरे  
वचन श्लेषण, कुशलण ।

दुर्लभ तत्० (गु०) मन्दवाचनी, दुर्लक्षिता, अशुचि  
अभिलाष, अप्राप्य वस्तु की अभिलाषा ।

दुर्लभ तत्त्वं (५०) दुष्प्राप्य, अति प्रयत्न, प्रिय ।

दुर्लभ्य तत्त्वं (५०) अप्राप्य, कष्ट से प्राप्त होने योग्य ।

दुर्वचनं तत्त्वं (५०) दुवाक्य, कुत्सित कथा, कुकथा, निन्दित वचन, गाली ।

दुर्वर्तनं तत्त्वं (५०) कुपय, असन्मार्ग, कुत्सित, आचार ।

दुर्वह तत्त्वं (५०) बहन करने के अयोग्य, भारी, शोकेल ।

दुर्वाक्य तत्त्वं (५०) कुशाक्य, दुर्वचन, गाली, निन्दित-वाक्य ।

दुर्वाद तत्त्वं (५०) निन्दित वचन, अकीर्ति, अपश, अपयश, दुर्नाम ।

दुर्वार तत्त्वं (५०) अप्रतिकार्य, अनियार्य, जो निवारण नहीं किया जा सके, अथवा जो दुःख से निवारित हो ।

दुर्वासना तत्त्वं (श्री०) बुरी वासना, अशुभ अभिलाष, दुष्ट इच्छा ।

दुर्वासा तत्त्वं (५०) अति मुनि के पुत्र, अनसूया के गर्भ से इनका जन्म हुआ था । ये महादेव के आँसू से अनसूया के गर्भ में जनमे थे । दुर्वासा बड़े क्रोधी थे । अश्व मुनि की कन्या कन्दला के साथ इनका विवाह हुआ था । इनके शाप से देवराज इन्द्र राज्यस्रष्ट हो गये थे । इन्हींके शाप से पति परित्यक्ता गङ्गुन्तला को अनेक कष्ट भोगने पड़े थे । एक समय गरम शीत छाते छाते इन्होंने श्रीकृष्ण को कहा था कि इसे मुझ अपने सव शरीर में लाने लो । श्रीकृष्ण ने भी वैसा ही किया, परन्तु ब्राह्मण का अनादर न हो इस कारण उन्होंने पायस को अपने चैरों में नहीं लगाया । यह देख दुर्वासा ने कहा तुमने चैर में पायस नहीं लगाया, अतएव चैर के अतिरिक्त तुम्हारा चौर सब चङ्ग बच्य होगा । इसी कारण मृत्यु के समय श्रीकृष्ण के चैर ही में अथाध का बाण लगा था । दुर्वासा

के शाप से श्रीकृष्ण के पुत्र के मुसल उत्पन्न हुआ था, जिसमे यदुवंश का नाश हुआ । यह कुन्ती की सेवा से अत्यन्त प्रसन्न थे, और प्रसन्न होकर इन्होंने कुन्ती को एक मन्त्र बताया था जिसके प्रभाव से कर्ण और पाण्डवों की उत्पत्ति हुई । इनकी मोघ कहानी अद्भुत है और इनकी प्रकृति विश-क्षण थी ।

दुर्विनीत तत्त्वं (५०) अविनीत, दुष्ट, अशुद्ध, अशु-चित्त, उजड़, गयौर ।

दुर्विपाक तत्त्वं (५०) बुरा फल, अशुभ परिणाम, दुर्दैव, दुर्भाग्य ।

दुर्विपह तत्त्वं (५०) घमटा, कठिन, कठोर ।

दुर्वुद्धि तत्त्वं (श्री०) मन्दबुद्धि, कुमति, अज्ञान ।

दुर्वुद्धी तत्त्वं (५०) अज्ञेय, झूठ, दुष्ट, अनाधारी ।

दुर्वौध्य तत्त्वं (५०) कुमति, अज्ञेय, झूठ, दुष्ट से समझाने योग्य ।

दुर्वृत्त तत्त्वं (५०) दुर्जन, दुर्गन्धर्व, उपद्रवी, कुमार्गी ।

दुलकी दे० (श्री०) कुकर की चाल, अश्वगति विशेष, घोड़े की एक प्रकार की चाल ।

दुलडा दे० (५०) दो लड़ की माला । (५०) दोलरा, दुगुना ।

दुलडी दे० (श्री०) शिपों के एक गहने का नाम जो दो लड़ों का होता है ।

दुलसी दे० (श्री०) पगुओं के पिछले दो पैरों का मार ।—छोटना (शा०) लात मारना, पाय नहीं चोले देना, कहीं बातें सुनाकर हटकाना ।—मारना (शा०) पिछले दोनों पैरों से मारना, किसीको अप-मानित करना ।

दुलहन दे० (श्री०) दुष्टैया, नव परिणीता, यष्ट, नयी ब्याही बहू ।

दुलहा दे० (५०) नव, विवाहाय प्रसूत पुत्र ।

दुलहिन दे० (श्री०) दुलहन, नयीबहू, यष्ट ।

दुताई दे० (श्री०) अथर्वे का एक विशेष, नईदर जोड़ना, जो जादे के दिन में जोड़ने के काम में आता है, फट ।



- दुलार दे० (प्र०) प्यार, स्नेह, लाड़, प्रेम ।  
 दुलारा दे० (ग्र०) प्यारा, स्नेहपात्र, प्रिय, लाड़ला ।  
 दुलारी दे० (स्त्री०) प्यारी, प्रिया, लाड़िली, लाड़  
 की, प्यार की ।  
 दुवार तद्० (प्र०) द्वार, दुधार, कपाट, किवाड़ ।  
 दुविद तद्० (प्र०) द्विविद, एक धानर का नाम,  
 यह लक्षा के युद्ध में रामचन्द्रजी की सेना में था ।  
 दुवे दे० (प्र०) प्राक्षणों की एक अन्न, पञ्चगौड़  
 प्राक्षणों की अन्न ।  
 दुशमन दे० (प्र०) शत्रु, वैरी, विपत्ती, अरि, रिपु ।  
 दुशाला दे० (प्र०) शाल का जेहा, महा कम्बल,  
 कनी बहुशय्य पर विशेष जो छोड़ने के काम में  
 आता है ।  
 दुश्चरित्र तद्० (प्र०) मन्द प्रकृति, कु ीति, कुचलन,  
 कुश्रवहार ।  
 दुश्चकित्स्य (ग्र०) असाध्य रोगी, जिसकी दुःख से  
 चिकित्सा की जा सके, चिकित्सा के लिये  
 असाध्य ।  
 दुष्कर तद्० (ग्र०) कष्टसाध्य, क्लेशकर, दुःख से  
 करने योग्य ।  
 दुष्कर्म तद्० (प्र०) कुकर्म, नीच क्रिया, अधम  
 व्यवहार ।  
 दुष्कर्मी तद्० (प्र०) दुष्कृतकारी, कुक्रियान्वित,  
 पापी, भद्राचारी ।  
 दुष्कुलीन तद्० (ग्र०) दुष्कुलोद्भव, कुवंशजात,  
 अधम कुल में उत्पन्न ।  
 दुष्कृत तद्० (प्र०) पाप, कुक्रिया, अपराध, दोष ।  
 दुष्कृती तद्० (ग्र०) पापी, पापाचारी ।  
 दुष्ट तद्० (ग्र०) बुरा, नीच, उपद्रवी, अधम, पापिष्ट,  
 निर्लज्ज, विकृतान्तःकरण ।—बारी (ग्र०) अधा-  
 मिक, खल, दुर्जन ।—ता (प्र०) दौरात्म्य,  
 खलता, दुर्जनता ।  
 दुष्टा तद्० (स्त्री०) भद्रा, पंखी, व्यभिचारिणी,  
 अशर्ती, क्षिणा, दुराचारिणी ।

- दुष्प्रवेश तद्० (प्र०) दुर्गम प्रवेश, अति परिक  
 साध्य प्रवेश ।  
 दुष्प्राप्य तद्० (ग्र०) दुर्लभ, अप्राप्य, अगम्य ।  
 दुष्पन्त तद्० (प्र०) अन्दर्वशीय एक राजा, इनके  
 दुष्पन्त भी कहते हैं । एक समय अत्रे खेजने दुष्पन्त  
 श्रम में गये थे । जाते जाते वह कष्ट मुनि के  
 आश्रम में पहुँचे । अपने परिजनों को बाहर ही  
 छोड़कर राजा आश्रम में गये । वहाँ उन्होंने ताप-  
 शेष-धारिणी एक अविद्याहिता युवती देखी,  
 उसका नाम शकुन्तला था । राजा ने उसकी सुँह  
 से उसकी उत्पत्ति तथा नाम आदि सुने ।  
 दुष्पन्त ने शकुन्तला से गान्धर्व विवाह किया,  
 और किसी कार्यरथ अपनी राजधानी के लौट गये ।  
 राजधानी में जाकर शकुन्तला के बुलवाने की  
 राजा ने प्रतिज्ञा की थी, परन्तु यहाँ जाकर वे  
 भूल गये । शकुन्तला के एक पुत्र हुआ । उस  
 पालक की तीन वर्ष की अश्रया होने पर महर्षि  
 कश्यप ने जातकर्म आदि संस्कार करके शकुन्तला  
 को राजा के पास भेजा । राजा ने शकुन्तला के  
 विवाह की बातें भूलकर उसका प्रत्याख्यान किया ।  
 तेजस्विनी शकुन्तला ने भी बड़ी कड़ी बातें राजा  
 को सुनाई, इसी समय देवराजो हुई "राजा तुम  
 अपनी पत्नी और पुत्र को ग्रहण करो" । (महा मा०  
 आदि पर्व) (कालिदास ने अपने शकुन्तला  
 नामक नाटक में इस कथा को कुछ उलट  
 दिया है) ।  
 दुस्तूती दे० (स्त्री०) एक प्रकार का मोटा कपड़ा जो  
 बिलाने के काम में आता है ।  
 दुस्तर तद्० (ग्र०) दुष्वार, अतरणीय, दुस्तरणीय,  
 पार होने के अयोग्य ।  
 दुस्त्यज तद्० (ग्र०) अपरिहरणीय, दुःख से त्यागने  
 योग्य ।  
 दुस्थ तद्० (ग्र०) दुर्वस्थान्वित, दुःखी, दरिद्र  
 कुशुक्ल, अशुस्थ ।—ता (स्त्री०) दारिद्र्य, दैन्य  
 दौर्भाग्य, क्लेश, दुर्गति ।

दुहना दे० (क्रि०) दोहना, गानना, गी के स्तनों से दूध निकालना ।

दुहराना दे० (क्रि०) दूना करना, दो बार करना, या कहना, द्विगुणित ।

दुहाई दे० (स्त्री०) गुहार, पुकार, दुःख से उबारने के लिये पुकार, गणायत शैली ।—तिहाई करना (घा०) बार बार पुकारना, ठगानुन होकर रसक को पुकारना ।

दुहाना दे० (क्रि०) दुडवाना, दूध निकलवाना ।

दुहार दे० (पु०) दूध दुहनेवाला ।

दुहिता तत्० (स्त्री०) कन्या, कुमारी, पुत्री, सड़को, बेटा ।—पति (पु०) जामाता, जमाई, दाम द ।

दुहितपति तद्० (पु०) दुहित्यःपति, जामाता, जमाई

दुहेला दे० (पु०) कठिन, भारी, बेफैल ।

दूह दे० (स्त्री०) दो. दोनों ।

दुच्छे तत्० (पु०) दोहने के योग्य, दोहने के उपयोगी ।

दुत्कामान तत्० (पु०) जिससे दुहा जाय, दोहन विशिष्ट ।

दुमा दे० (पु०) दो का चक्र ।

दुम दे० (स्त्री०) द्वितीया तिथि, पंच का दूसरा दिन ।

दुजावर दे० (पु०) द्वितीयवर, दुसरा वर, जिसके दो विवाह हुए हों ।

दुजा दे० (पु०) द्वितीय, दुसरा ।

दूत तत्० (पु०) वाताहर, चर, संवाददाता, सन्देशी, निम्नार्थ, मितायं और सन्देश हारक-दूत के ये तीन भेद होते हैं । कार्य की सिद्धि अथवा विघ्न का भार जिस दूत पर हो वह निम्नार्थ दूत कहा जाता है । जितने के लिये स्वामी का आदेश हो उतना ही काम करने वाला दूत मितायं कहा जाता है और जो केवल सन्देश कहने वाला दूत है उसे सन्देशहारक कहते हैं ।—ता (स्त्री०) दूत का काम, दूतकर्म ।

दूतिका तत्० (स्त्री०) दूती, नायिका की सखी समाचार पहुँचाने वाली, कुटिनी ।

दूती तद्० (स्त्री०) दूत के काम में निपुण की हुई स्त्री, समाचार हारिणी, कुटिनी, कुटनी । यथाः—  
दोहा ।

“निपुण दूतता में सदा दूती ताहि बखाने,  
उत्तम, मध्यम, अधम ये तीनों मतिं खोजे जान ।  
(उत्तम दूती)

मोहै जो मूढ़ बेगलिके मधुर बचन अभिराम ।  
ताहि कहत कविराज है उत्तम दूती नाम ॥  
(मध्यम दूती)

कहू बचन मित के कहे, बे से अहित कहूँक ।  
मध्यम दूती कहत है ताते सुकवि अहूँक ।  
(अधम दूती)

अधम दूतिका जानिये बचन कहत सतराय ।  
प्रमथन को मधि देखिके बरनत, सब कविराय ॥  
—रसराज ।

दूध तद्० (पु०) दुग्ध, घीर, पय, गोख ।

दूधाधारी तद्० (पु०) दूध पीके जीनेवाला, केवल दूध के साहाय पर रहने वाला, दुग्धहारी ।

दूधामाती दे० (स्त्री०) दूध चोर भात, विवाह की एक रीति, विवाह के चौथे दिन का घर का भोजन ।

दुधिया दे० (पु०) एक प्रकार के पै.पे जिनका रस दूध के समान होता है ।

दुधी दे० (पु०) दूध का, दुधेला । (पु०) मीठी, दुधिया पै.पा ।

दूना दे० (पु०) दोहरा, दुपुना, द्विगुण ।

दूव तद्० (पु०) दूर्वा, तृण विशेष, स्वनाम प्रसिद्ध तृण, यह तृण गण्डेय की पर चढ़ाने के काम में आता है ।

दुवर तद्० (पु०) दुर्वल, निर्बल, यत्न रहित ।

दुधिया दे० (स्त्री०) रङ्ग विशेष, दूध के समान रङ्ग, दूध की हरियाली ।

दूर तत्० (पु०) अतिकट, अक्षयिकुट, धनर, वीच, अथवाचन, परे, न्यारा ।—गामी (पु०) दूर गमन

कारी, दूर जानेवाला । (५०) तीर, यापु, पवन ।  
 —गम (५०) गधा, रासभ ।—तर (५०) अधिक  
 दूर, अत्यन्त दूर ।—दर्शक (५०) दूरवीन, देखने  
 का एक यन्त्र, जिसकी सहायता से बहुत दूर की वस्तु  
 देखी जाती है । (५०) दूर देखने वाला, अग्रसेवाची ।  
 —दर्शिता (स्त्री०) विवेक, विवेकिता, दूरन्देयी ।  
 —दर्शी (५०) विवेकी, ज्ञानी, गीध, दूरन्देय ।  
 —दृष्टि (स्त्री०) दूरदर्शन, विवेक ।—भागना  
 (वा०) घृणा करना, अपमान करना, सम्बन्ध  
 तोड़ना ।—धीन (५०) दूरवीक्षण, दूर देखने का  
 यन्त्र ।—धीक्षण (५०) दूरवीन, दूरदृश्य यन्त्र ।  
 —मूल (५०) जवासा ।—स्थ (५०) दूरस्थित,  
 दूरवर्ती ।

दूरीकरण तत्० (५०) दूर कर देना, हटा देना,  
 अन्तर कर देना, भगा देना ।

दूरीकृत तत्० (५०) दूरीभूत, भगाया हुआ, निकाला  
 गया ।

दूर्वा तत्० (स्त्री०) तृण विशेष, दूब, घास ।—ष्टमी  
 (स्त्री०) [ दूर्वा + ष्टमी ] भादों शुक्लपक्ष की  
 षष्टमी ।

दूपक तत्० (५०) [ दूप् + षाक् ] निन्दक; निन्दा  
 करने वाला, कलङ्कित करने वाला, दूषयिता ।

दूषण तत्० (५०) निन्दा, दोष, मुटि, दोषप्रकाशन,  
 भर्षन, कुलक्षण, राक्षस विशेष, लङ्केश्वर; रावण  
 के एक सेनापति का नाम, इसके दूसरे भाई का  
 नाम खर था । रावण का राज्य गौदावारी तीरस्थ  
 दण्डकारण्य तक विस्तृत था । उसकी रक्षा के लिये  
 खर और दूषण नामक दो सेनापति १४ हजार  
 सेना के साथ यहाँ रहते थे । रावण की बहन सुप-  
 नखा भी उसी वन में रहती थी । सीता और  
 लक्ष्मण के साथ जिस समय रामचन्द्र इस वन में  
 रहते थे उस समय सुपनखा ने अपना व्याह राम-  
 चन्द्र से करने की इच्छा प्रकट की थी । इससे  
 क्रुद्ध होकर लक्ष्मण ने उसकी नाक और कान काट  
 डाले । सुपनखा की ऐसी दशा देखकर खर और  
 दूषण ने रामचन्द्र पर चढ़ाई की पाँच हजार सेना  
 का मालिक दूषण था । खर और दूषण दोनों ही

राम के हाथ मारे गये । केवल दूषण  
 नामक एक राक्षस इस समाचार को रावण के पास  
 पहुँचाने के लिये बचा हुआ था ।

दूषित तत्० (५०) दोष प्राप्त, अभिग्रस्त, निन्दित,  
 दोषयुक्त, भ्रष्ट, कलङ्कित ।

दूषीका तत्० (स्त्री०) लीचट, पीचट, कीचर, अण्डि-  
 का मल ।

दूष्य तत्० (५०) दूषणीय, दूषण करने योग्य, निन्द-  
 नीय, कुत्सित, गहित ।

दूसर. दूसरा दे० (५०) द्वितीय, दूसरा, और, अन्य ।

दूहिया दे० (५०) दो मुँहा गूस्हा ।

दूग तद्दे० (५०) दूह, आँख, चक्षु, नेत्र, नयन, हा ।

—श्ल तद्दे० (५०) कटाक्ष, नयनकार, पक्ष की  
 चाण ।

दूढ़ तत्० (५०) पौड़ा, श्वरा, कडा, कठोर, अतिशय,  
 प्रगाढ़, बलवान, कठिन ।—तम (५०) अत्यन्त  
 कठिन, अतिशय कठोर ।—तर (५०) अधिक  
 कठिन ।—ता (स्त्री०) कठिन्य, कठिनता,  
 स्थिरता ।—त्व (५०) कठिन्य, कठोरता ।

धन्वा (५०) समर्थ धनुर्धारी, सर्वम धन्वी ।

—प्रतिष्ठा (५०) स्थिर, प्रतिष्ठ, सत्य प्रतिष्ठ,  
 सत्त्वसम्पन्न ।—व्रत (५०) धर्म कर्म में एकाग्रचित्त,  
 धर्मपरायण ।—मुष्टि (५०) शब्द, कृपाण, तनवार,  
 कृपाण ।

दूढ़ाङ्ग तत्० (५०) हीरक, हीरा । (५०) कठिन  
 अङ्ग विशेष ।

दूढ़ाना दे० (स्त्री०) पौड़ा करना, बलवाह करना,  
 बल धनाना ।

दूढ़ार्ति तत्० (स्त्री०) धनुष का अग्रभाग, कौटी ।

दूस तत्० (५०) [ दूप् + ष् ] गर्हित, अहङ्कार, अति-  
 मानी, अहङ्कारी ।

दूश्य तत्० (५०) देखने योग्य, देखने की वस्तु,  
 रमणीय, मनोहर ।

दृश्यमान तत्० (५०) देखने योग्य, दर्शनीय, देखने  
 के उपयोगी ।

पद्मती तत्० (स्री०) एक नदी का नाम, यह नदी आर्यावर्त देश की पूर्वी सीमा पर बहती है।

दृष्ट तत्० (गु०) ईशित, आलोकित।—कूट (गु०) कूटप्रदेस, पहेलिका, पहेली।

दृष्टान्त तत्० (गु०) [दृष्ट + अन्त] उदाहरण, उपमा, निदर्शन, समानता करण, तुलना करण।

दृष्टि तत्० (स्री०) आलोकन, निरीक्षण, दर्शन, चक्षु, नेत्र, नयन, बुद्धि, शिष्यक, विचार।—गोचर (गु०) नयनगोचर, साक्षात्, प्रत्यक्ष।—पात (गु०) दमन, नाक, फटाक, वितवन।—शं श (गु०) शिश, महादेव।

देमाङ्ग दे० (गु०) दोमक का यना हुआ घर, यज्ञिक।  
देखना दे० (क्रि०) देखना, लखना, ताकना, निहारना।—भालना (या०) ध्यान से देखना, विचार पूर्वक देखना, ताकना, निहारना, लखना।

देखवैया दे० (गु०) दर्शक, देखने वाला।

देखा दे० (गु०) दृष्टि, दर्शन, अवलोकन, साक्षात्कार।  
—देखी (स्री०) दृष्टानुसरण, देण के अनुसरण करना।—सुना (या०) साक्षात् सन्धान, विचार पूर्वक निष्पन्न किया हुआ।

देजा दे० (गु०) दायजा, दहेज, वै.गुण, कन्यादेय द्रव्य।

देड़ दे० (गु०) चट्टक, आधा चपिक एक, एक चौर आधा।

देदोप्यमान तत्० (गु०) जाउप्यमान, अतिशय दोषि विधिष्ट, घमकीला, घमकदार, प्रकाश शील।

देन दे० (गु०) बाण, उधार, देव।—दार (गु०) दायधुक्त, अचमर्ण, कर्ज खोर, बाण लेनेवाला।  
—देन (गु०) व्यवहार, व्यापार, धनिज, देना लेना।

देना दे० (क्रि०) दे देना, देनालना, सौपना, त्यागना, अर्पित करना। (गु०) बाण, देण देन, उधार, कर्ज।—पाना (या०) देन लेन, दिया धन पाना।

देमारना दे० (क्रि०) घटकना, घटक देना, पठाड़ डालना।

देय तत्० (गु०) दानयोग्य, देने, योग्य, परि शोधनीय।

देर दे० (स्री०) विलम्ब, श्वेत, दील।

देरी दे (स्री०) विलम्ब, मौन, देर।

देव तत्० (गु०) [दिव् + अच्] प्रमत्, सुर, देवता, नाटकोक्ति में राजा।—फलो (स्री०) एक रागिनी का नाम।—काण्डार (गु०) धनुसुर, एक वैश्वि का नाम।—काष्ठ (गु०) देवदारु काष्ठ।—कुण्ड (गु०) बिना घनाया हुआ कुण्ड, स्वयं बना हुआ जल कुण्ड देव खात।—कुसुम (गु०) लक्ष्मणता, लक्ष्मी।—खात (गु०) अक्षुभ्रि जन्माशय।—गायन (गु०) गन्धर्व, देव योगि विशेष।—गिरि (गु०) हिमालय पर्वत, (स्री०) रागिनी विशेष।—गुरू (गु०) बृहस्पति, मुतावयं।—गृह (गु०) देवालय, देव मन्दिर, ठाकुरवाडी, चन्द्रमा चौर सूर्य का ज्योतिर्मण्डल।—चिकित्सक (गु०) अश्विनी कुमार।—ठान (गु०) देवस्थान, प्रतविशेष, कार्तिक गुह्य एकादशी। रबी दिन भगवान् विष्णु निद्रा त्याग करते हैं।—तरु (गु०) मन्दार वृक्ष, प्राणिमान, कष्टवृक्ष।—ता (गु०) धमदेव, सुर।—ता.अप (गु०) देवराज, देवत्वामी इन्द्र।—तीर्थ (गु०) अंगुलि का अग्रभाग, अश्वि. देव तर्पण किया जाता है।—तुल्य (गु०) देवता के समान, अमर सद्रूप।—त्व (गु०) देवताओं के धर्म, देवपद, देवता का आधिर्म्य।—त्र (गु०) देवस्य, देवता के अर्पित धन आदि।—दत्त (गु०) उडु का छोटा भाई, अर्जुन के गुरु का नाम, शरीर धारण करने वाले पशु प्राणियों के अन्तर्गत एक प्राण विशेष। (गु०) देव प्रसाद, देवता का दिया हुआ।—दाह (गु०) वृक्ष विशेष, पारिभद्रक, देवकाष्ठ।—दासी (स्री०) अक्षता, स्वयेश्वर्या, देवता के भेंट की हुई स्त्री, जाति विशेष की स्त्री।—दूत (गु०) देवता का भेजा हुआ भूत आदि, यवन, योयु।—द्वैच (गु०) महादेव, प्रसाद।—द्वैष्ट (गु०) देव शत्रु, देव निन्दक, नास्तिक, पाण्डवी।—धान्य (गु०) देवता का धान्य, इविष्य आदि दानने योग्य।—सात्त्विक धान्य।—धुनि (स्री०) देवनी, गङ्गा,

भागोरयो ।—धूप (५०) युग्मूल, धूप विशेष ।  
 —नागर (३०) दशसनान विद्वानों को लिपि,  
 हिन्दी भाषा का वर्णमाला ।—निन्दक (३०)  
 ईश्वर निन्दाकारो, नास्तिक, पाखण्डो ।—निष्ठ  
 (५०) ईश्वर वादो, ईश्वर भक्त ।—पति (५०)  
 इन्द्र, दक्षराज, सुरपति ।—पथ (५०) देवमार्ग,  
 ज्ञायापय, अज्ञायापय, परिवहणय ।—पूजक  
 (५०) देवोपासक, देवार्चक, देवाराधन कर्ता ।  
 —पूजा (ख०) देवता को पूजन, देवता की  
 आराधना ।—प्रतिमा (ख०) देवप्रतिमूर्ति,  
 भगवन् की मूर्ति ।—वधू (खी०) देव व्रत,  
 महारानी, यथा—

“देववधू जगहि हरिस्वयामे ।

क्यं तत्रहो तजि ताहि न चाये ॥

—रामचन्द्रिका ।

—ग्रह्या (३०) देववधि, नारद मुनि ।—ग्राह्यण  
 (५०) देव पूजित ग्रहण, देव गुरुग्रहण ।  
 —भजन (३०) अश्वत्थ वृक्ष, पीपल का पेड़ स्वर्ग ।  
 —मणि (५०) भर्तृ, कैस्तुभ मणि, घोड़े की  
 भँवरी ।—माता (ख०) अदिति, कश्यपकी स्त्री ।  
 —मातृक (३०) वृष्टि के जल से पालित देश ।  
 —मास (५०) गर्भ का आठवौं महीना, देवों  
 का महीना, मनुष्य के परिमाण से तोष वर्ष का  
 समय ।—मुनि (५०) नारद ।—यज्ञ (५०) होम  
 हवन, मन्त्रोच्चारण, पुर्यक अग्नि में घृत हुति प्रदान ।  
 —यानि (३०) उपदेशता, भूत प्रेत पिशाच आदि,  
 गन्धर्व ।—रथ (५०) देवयान, देवताओं का  
 विमान, पुष्पक रथ राज (५०) इन्द्र, सुरपति ।  
 —रात (५०) राजा परीक्षित ।—लोक (५०)  
 देवों का वासस्थान, स्वर्ग ।—घापी (खी०)  
 संस्कृत भाषा —वृक्ष (५०) कल्पवृक्ष, कल्पद्रुम ।  
 —घर्षिणी (खी०) भारद्वाज मुनि की कन्या  
 और विश्रवा का पत्नी, इनके गर्भ से विश्रवा ने  
 वैश्रवण नामक एक पुत्र उत्पन्न किया था, वैश्रवण  
 का दूधरा नाम कुचेर था । ये देवों के धनाध्यक्ष हैं,  
 पहले सङ्कापुरी इनकी राजधानी थी । परशु अपने  
 सैतले भाई रावण को इन्होंने सङ्का से दी, और

स्वयं हिमालय के उत्तर अलकापुरी को धरते  
 राजधानी बनाया ।—श्रीण (खी०) पूत,  
 मुहरि, देवों को सभा ।—सर (५०) मानस  
 सर । सेना (खी०) सायित्री के गर्भ से उत्पन्न  
 प्रजापति की कन्या इनका दूधरा नाम था ।  
 देवतेनापति कान्तिक्षय से इनका विवाह हुआ था,  
 इनकी दूधरी यहीन का नाम देवतेना है ।  
 —श्री (खी०) देवाङ्गना, देवपत्नी ।—स्थान (५०)  
 देवालय, देवगृह, देवमन्दिर ।—स्व (५०)  
 दायन, दायुजा के लिये स्थापित धन ।—हिसक  
 (३०) अशु, दैत्य, दानव, सुरारि ।

देवक तत् (३०) भोजवंशीय राजा विशेष, भोज  
 वंशीय राजा अहुक के पुत्र, इनके भाई का नाम  
 उग्रसेन और कन्या का नाम देवकी था, देवक  
 श्रीकृष्ण के नाना थे ।

देवकी तत् (ख०) देवक, राजकन्या, श्रीकृष्ण की  
 माता ।—नन्दन (३०) श्रीकृष्ण ।

देवन तत् (५०) [दिक् + अन्ट] क्रीडा, व्यवसाय,  
 जिगीषा, लोभोद्यान, द्युति, स्तुति, द्युत,  
 लुब्धा ।

देवयानी तत् (खी०) देवगुरु शुक्राचार्य की कन्या  
 और राजा ययाति की कन्या । दैत्यराज वृषपर्वा  
 की कन्या शर्मिष्ठा के साथ इनका बड़ा प्रेम था ।  
 एक दिन दोनों स्नान करने गयीं । मूल से शर्मिष्ठा  
 ने देवयानी के कपड़े पहन लिये, इससे उन दोनों  
 में विवाद हुआ । शर्मिष्ठा ने देवयानी के पिता  
 को अपने पिता का स्तुतिपाठक कहा और देव-  
 यानी को कुर्से में फेंककर स्वयं घर चली गई ।  
 भाग्यवश उसी वन में राजा ययाति और खेतने  
 चाये थे, उन्होंने कुर्से में से स्त्री की विकृष्ट स्तु-  
 त्ति सुनकर उसे कुर्से के निकलवाया । कुर्से से निकल  
 कर देवयानी अपने घर नहीं गयी, उसने एक  
 दासो से अपने वृत्तान्त अपने पिता के निकट  
 कहलवाया । पिता शुक्राचार्य सब बातें सुनकर  
 वृषपर्वा के निकट गये और उसके राज्य से अपने  
 जाने की इच्छा, कारण के साथ कही । इससे  
 वृषपर्वा बहुत घबड़ाया, और वह देवयानी के

समीप आकर उनको प्रसन्न करना चाहा। देवयानी ने कहा कि यदि हज़ार दामियों के साथ तुम्हारी कन्या शर्मिष्ठा मेरी दासी बने भी मैं तुम्हारे नगर में जा सकती हूँ। दृष्यवर्षा ने यह स्वीकार किया। शर्मिष्ठा ने अपने पिता की आज्ञा को सादर और सहर्ष स्वीकार किया, और वह हज़ार दासियों के साथ देवयानी की सेवा करने लगी। एक समय देवयानी शर्मिष्ठा और उनकी दासियाँ किसी वन में विचर रही थीं, उसी समय राजा ययाति भी संयोग से उस वन में उपस्थित हुए। प्रथम दर्शन ही से राजा ययाति और देवयानी का प्रेम हो गया था। देवयानी ने उनको प्रति व्रतनामा चाहा, शुक्राचार्य ने भी इस प्रस्ताव को स्वीकार किया। देवयानी का व्रत नाम श्यामा। उनके साथ शर्मिष्ठा भी देवयानी की ससुराल गयी।

देवर दे० (५०) पति का खोटा भाई।

देवरात्री दे० (श्री०) देवर की स्त्री, देवताओं की रात्री, देवराज की स्त्री। यथा:—

देवराजा क्षिये देवरात्री मनो,  
पुत्र संयुक्त भूलाक में मोहियो।

—रामचन्द्रिका।

देवल तत्० (५०) महर्षि विरोच, षष्ठि मुनि के पुत्र और ब्रह्मदेव के शिष्य, एक समय रम्भा नामक स्वर्ग की चप्परा इन पर आसक्त हुई, परन्तु इन्होंने उसका प्रत्याख्यान किया। इससे विद्वकर रम्भा ने शाप दिया कि तुम्हारी यह सुन्दरता स्वर्ग है तुम इसके योग्य नहीं हो, तुम कुक्ष्य हो जाओ। रम्भा के शाप से देवल अष्टावक्र हो गये थे।

देवल तत्० (५०) देव पूजेपत्नीधी, पुजारी ब्राह्मण, धार्मिक, नारद मुनि, धार्मिक, धर्मशास्त्र रक्ता मुनि विरोच। (दे०) मन्दिर, ठाकुरद्वारा, देवस्थान, यथा:—

गुलसी देवल देव को लागे लाख करोर।

काग आमागे हगि मयेवा महिमा भई न शोर ॥

देवदुति तत्० (श्री०) स्वाध्याय मनु की कन्या तथा कर्दम प्रजापति की भार्या, इन्हींके गर्भ से सप्त-

दर्शन प्रणीता महर्षि कपिल का जन्म हुआ था। कपिल के अतिरिक्त इनके नौ और कन्याएँ भी थीं।

देवा तद्० (५०) देव, देवता, अमर, सुर।

देवाङ्गना तत्० (श्री०) देवघो, देवभार्या, चप्परा।

देवान दे० (५०) कर्मसचिव, राजा के शासन में योग देनेवाला मन्त्री, सचिव।

देवारि तत्० (५०) दैत्य, निशाचर।

देवाल दे० (५०) चारदिवारी, प्राचीर, चारों ओर की भीत, देनेवाला।

देवाल्य तत्० (५०) देवस्थान, देवल, देवयुह।

देवाला दे० (५०) दिवाला, श्यापार बिगड़ना, तेन देन का भारा पड़ना।

देवालिपा दे० (५०) जिसका दिवाला निकल गया, गतवर्षस्व, निर्धन, दरिद्र।

देवाली दे० (श्री०) दिवाली का त्योहार।

देवालैर् दे० (श्री०) देवलैन।

देवी तत्० (श्री०) दुर्गा, नाट्योक्ति में कृताभियेका रात्री, सामन्य देवपत्नी, ब्राह्मणी, आदिप्यमर्ता, ययामा नामक एक पति विधेय।

देवीन्द्र तत्० (५०) देवाधिप, देवराज, इन्द्र।

देवीस्थान तत्० (५०) कार्तिक सुदी एकादशी जिस दिन भगवान् विष्णु निद्रा का त्याग करते हैं।

देवोद्यान तत्० (५०) देवता का उपवन, सुन्दर वाटिका, विहार स्थान।

देवोपासना तत्० (श्री०) देवाराधन, देवपूजा।

देश तत्० (५०) पृथिवी का खण्ड, मण्डल, चक्र, प्रदेश।—दशामिज्ञ (५०) देश की अथवा जानने वाला, देश-वृत्तान्त-वेत्ता।—निकाला (५०) द्रव्य विरोध, किसी अथवा अथवा के कारण अथवा देश छोड़कर बाहर हो जाने की जो राजाज्ञा होती है।—मरु (५०) देश की सेवा करने वाला, देश की कष्टों से छुड़ाने वाला।—भाया (श्री०) देश की भाषा, देश की धोनी, राष्ट्रभाषा, देश की बोली।—मय (५०) देश में अथवा देश में

सर्वत्र विस्तृत ।—रूप (५०) उचित, योग्य, न्याय ।—स्थ (५०) देश में स्थिति, देश में वर्तमान, देश में ठहरा हुआ । (५०) महाराष्ट्र प्राधान्य का एक भेद ।

देशाचार तत्० (५०) देश का आचार, व्यवहार, देश की रीति भौति ।

देशाशन तत्० (५०) देशपरिभ्रमण, देश की यात्रा ।

देशाधिप तत्० (५०) अधिराज, देशाधिपति, राज्याधिकारी ।

देशाधीश तत्० (५०) देश का स्वामी, राजा, देशाधिप ।

देशान्त तत्० (५०) देश की सीमा, देश का सिमाना ।

देशान्तर तत्० (५०) विदेश, सुमेरु और लङ्का का मध्यवर्ती भूमिलपट, मध्यान्ह रेखा में पूर्व या पश्चिम किसी स्थान को दूरी, भारत के ज्योतिषी लङ्का से और गुरुप के ज्योतिषी प्रीतिच नामक नगर से देशान्तर का गणित करते हैं ।

देशाचर दे० (५०) दूसाग देश, अन्वदेश, परदेश ।

देशिक तत्० (५०) गुरु, आचार्य, ब्रह्मज्ञान के उपदेशक गुरु ।

देशी तत्० (स्त्री०) रागिनी विशेष, दीपक राग की भार्या । (५०) देश का, देश सम्बन्धी, देश में उत्पन्न ।

देशोन्नति तत्० (स्त्री०) देश की बढ़ती, देश की वृद्धि, देश में सुकाल होना, देशवासियों की सुख समृद्धि पूर्णता ।

देश तत्० (स्त्री०) शरीर, तन, काय, गात्र ।—ज

(५०) देहात्मक, देहजात ।—त्याग (५०) मरण, मृत्यु, प्राणत्याग ।—दुराना (घा०) गुप्त अर्हों का

वैकला ।—पात (५०) शरीरपतन, मृत्यु ।

मृतः (५०) जीव, प्राण, आत्मा ।—यात्रा

(स्त्री०) शरीर धारण, भोजन, संसार, निर्वाह,

मरण, देहत्याग ।—हीन (५०) देह रहित,

अशरीर ।

देहरा दे० (५०) देवघर, पैहरा, देवालय ।

देहली दे० (स्त्री०) चौखट, खोड़ी, द्वार के नीचे लकड़ी ।

देहात्मवादी तत्० (५०) चायक, नास्तिक विेष, जो देह ही को आत्मा कहते हैं । इनके सिद्धान्त में देहातिरिक्त दूसरा पदार्थ नहीं है, आत्मा परमात्मा आदि इनके सिद्धान्त में नहीं माने जाते । जिस प्रकार अन्न को सड़ाने से उसमें मादकशक्ति उत्पन्न हो जाती है उसी प्रकार पञ्चभूतों के एक भी कारण से उसमें एक प्रकार की चेतना उत्पन्न हो जाती है और जब पञ्चभूतों का विश्लेषण होता है तब चेतनता भी आद्यन्याय के साथ ही साथ नष्ट होती है । इनके मत में कर्म धर्म आदि कुछ पदार्थ ही नहीं हैं और परलोक मानने की भी कोई आवश्यकता नहीं पड़ती । परन्तु पञ्चभूतों के एक भी कारण और विश्लेषण में देह क्या है इस प्रश्न का उत्तर अभी तक देहात्मवादियों का देते नहीं बना ।

देही तत्० (५०) शरीर युक्त, शरीर, जीव, आत्मा ।

दैजा दे० (५०) दायजा, कन्या को देवद्रव्य, वैतुक ।

दैतेय तत्० (५०) दैत्य, असुर, दानव, दित के पुत्र ।

दैत्य तत्० (५०) असुर, दिति पुत्र ।—गुरु (५०)

शुक्राचार्य, भार्गव ।—निस्तुदन (५०) विष्णु,

नारायण ।—पुरोध्रा (५०) शुक्राचार्य ।—माता

(स्त्री०) दिति, करण की स्त्री ।—पूज्य (५०)

दैत्यों के पूजनीय, दैत्य पुरोहित, शुक्राचार्य ।

—सेना (स्त्री०) प्रजापति की कन्या और देव

सेना की भगिनी, यह केशी नामक दानव की

स्त्री थी, केशी ने इने बल पूर्वक हरण करके इसे

व्याह किया था ।

दैत्याचार्य तत्० (५०) [दैत्य + आचार्य] शुक्राचार्य

दैत्य पुरोहित ।

दैत्यारि तत्० (५०) [दैत्य + अरि] विष्णु, नारायण ।

दैनंदिन तत्० (५०) प्रत्याहिक, प्रति वासर सम्बन्धी,

जो प्रति दिन हो ।—प्रलय (५०) ब्रह्मा का दैनिक

प्रलय विशेष, प्रति दिन का अणुअणु जो प्रति

दिन पद्यों में एक प्रकार की विकृति होती है ।

दैनिक तत्त्वं (३०) प्रात्याह्निक, दिग्भव, दिन का, प्रति दिन होनेवाला ।—पत्र (३०) प्रति दिन प्रकाशित होनेवाला, समाचार पत्र ।—वेतन (३०) प्रति दिन का वेतन, प्रत्येक दिन को मँसूरी ।

दैनिकी तत्त्वं (३०) एक दिन का वेतन ।

दैन्य तत्त्वं (३०) दीनता, दरिद्रता, कृपणता, कातरता, कातर्य, कंगालपन ।

द्वैया दे० (३०) माँ, माता, आश्रय या धारा होने पर यह शब्द सुँह से निकलता है ।

द्वैर्घ्य तत्त्वं (३०) दीर्घता, लम्बाई ।

द्वैव तत्त्वं (३०) भाग्य, चट्ट, विधाता, प्रारब्ध, सजाट, संगुणिक का चक्रभाग, षष्ठ विधिविज्ञानान्तर्गत, विवाह विशेष ।—ह (३०) गणक, लग्नधार्य, ज्योतिषी ।—दुर्धिर्पाक (३०) दुष्टदृष्ट, दुर्भाग्य, दैव, दुर्घटना ।—घाणो (३०) चाकाशजलो, खानुषी वृक्ष, संस्कृत वाक्य ।—युग (३०) देवताओं का युग, देवताओं के परिमाण के अनुसार बारह हजार वर्ष परिमित काल और मनुष्यों की गणना के अनुसार चार युग ।—योग (३०) दैवात्, हठात्, चक्रमात्, अचानक ।—चाद्री (३०) चालनी, भाग्याधीन ।

द्वैवत तत्त्वं (३०) देव, सगृह । (३०) देव सम्बन्धी ।

द्वैवलक तत्त्वं (३०) भीत, भूतभक्त, भूत सेवक ।

द्वैवागत तत्त्वं (३०) भाग्य से प्राप्त सुख या दुःख, चक्रमात्, हठात् ।

द्वैवात् तत्त्वं (३०) हठात्, चक्रमात्, दैवाधीन ।

द्वैवाधीन तत्त्वं (३०) दैवायत्त, ईश्वराधीन, हठात्, सुकार ।

द्वैवानुसारी तत्त्वं (३०) ईश्वर का प्रेमी, ईश्वर भक्त, भगवद्भक्त, भाग्य से प्रेम करने वाला, भाग्यानुसार काम करने वाला ।

द्वैवानुरोधी तत्त्वं (३०) दैव यगीभूत, दैवायत्त, भाग्यानुवर्ती ।

द्वैवायत्त तत्त्वं (३०) दैवाधीन, भाग्यानुसार, चक्रमात्, हठात्, ईश्वराधीन ।

द्वैविज्ञ तत्त्वं (३०) देव सम्बन्धी, भाग्य से उत्पन्न व्याधि, पीडा विशेष, क्षीणदि उपद्रव तैलित पीडा । यथा:—

द्वैहिक द्वैविक भौतिक ताया ।  
रामराज काहू नहिं क्याया ॥

—रामायण ।

द्वैवी तत्त्वं (३०) हठात् घटना, चापद, सम्पत्ति विशेष, मानसिक सम्पत्ति, जो वह तथा परलोक के कार्यों में सहायक हो जिसका उपदेश गीता में भगवान् ने किया है ।

द्वैव्य तत्त्वं (३०) भाग्य, चट्ट, दैव, पूर्व कर्म ।

द्वैशिक तत्त्वं (३०) देश सम्बन्धी, दैवाधिक्य के मत से एक सम्बन्ध, समान देव जात वस्तुओं में यह सम्बन्ध माना जाता है । देशनिष्ठ विशेषणत्वात् ।

द्वैहिक तत्त्वं (३०) देह सम्बन्धी, कायिक, शारीरिक ।

द्वैही दे० (३०) दानार्थक देना-धाम्य की भविष्य कालिक क्रिया दूंगा । यथा:—

नित्र भुज वल में देव बढ़ाया ।  
द्वैह उतर जो रिपु चढ़ि छाया ॥

—रामायण ।

द्वी दे० (३०) द्वि, दूसरी संघा, दो की संघा ।

द्वीऊ दे० (३०) दोनों, द्वौ, उभय ।

द्वौकना दे० (३०) गर्जनना, गर्जन करना, घुर-घुराना, घूरना ।

द्वौक दे० (३०) बड़ेड़ा, दो दान का बड़ेड़ा ।

द्वौमाड़ा दे० (३०) दोनाली बन्दूक, चाणैयाक, जिसमें दो नलिकाएँ हैं ।

द्वौगाना दे० (३०) दोहरा, द्विगुण, द्विगुणित, दोहरा ।

द्वौचर दे० (३०) दुहरा, दूसरा ।

द्वौजीया तत्त्वं (३०) द्विजोषा, गर्मिणी, अन्ता-संधा, अन्तर्पत्य ।



दो जी से होना दे० (घा०) गर्भ रहना, गर्भवती होना ।

दोम्ना दे० (घु०) दुजावर, दो विवाहकर्ता, दूसरे विवाह का वर, एक विवाह के पश्चात् दूसरा विवाह करने वाला ।

दोदना दे० (क्रि०) झूठाना, सुकरना, बात कहकर पलटना ।

दोघक तत्० (घु०) छन्द विशेष ।

दोधूयमान तत्० (घु०) पुन. पुनः कम्पन विशिष्ट यथावत कौपेने वाला ।

दोना दे० (घु०) दोना, पत्तों का बना हुआ वस्त्र, एक प्रकार का पत्रपात्र, पुष्प विशेष ।

दोनाली दे० (खी०) दो नल की बन्दूक ।

दोनों दे० (घु०) दोक, उभय, दो ।

दोवर दे० (घु०) दुहवा, दो तट, दोवार ।

दोवे दे० (घु०) दुबे, ब्राह्मणों की एक पदवी ।

दोमुहा तद्० (घु०) द्विमुख, दो मुँह का सौंप, कर्वा, गड्ढा ।

दोय दे० (घु०) दो, दो को संख्या, २ ।

दोरक तत्० (घु०) सितार का तार अनन्त चतुर्दशी के दिन का सूत्र, रूपप्रसाद, जिसे अनन्त कहते हैं ।

दोर्दण्ड तत्० (घु०) बाहुकपी दण्ड ।

दोल तत्० (घु०) दोलीत्मय, श्रीकृष्ण का झूलन, हिंडोला ।

दोलन तत्० [दुष् + अनट्] झूलन, हिलन ।

दोला तत्० (घु०) हिंडोला, झूलना ।

दोलिका तत्० (खी०) हिंडोला, झूलन, जिस पर झूलते हैं ।

दोष तत्० (घु०) [दुष् + ष] द्वयण, बुद्धि, कलङ्क, भ्रम, पाप, अपराध, निन्दा, अनिष्ट, बात, पित्त और कफ ।—फर (घु०) दूषणावह, अनिष्टकर, निन्दाकर ।—खण्डन (घु०) अपराध मार्जन, कलङ्क मार्जन, दोषायनयन ।—गायक (घु०)

निन्दक ।—ग्राहक (घु०) दोष ग्रहणकर्ता, अघाद कारक, निन्दक, खल ।—झ (घु०) पक्षि चिकित्सक, दोषवेत्ता ।—त्रय (घु०) बात, वि, कफ ।—नाश (घु०) पापमोचन, अपवादहार ।—भाक् (घु०) अपराधी, निन्दाई, निन्दा करने वाला ।

दोषक तत्० (घु०) निन्दक, अपराधी, दोषी, पापी ।  
दोषना दे० (क्रि०) दोष देना, दोष लगाना, अपराध लगाना ।

दोषा तत्० (खी०) रात्रि, निशा, रात । (ख०) प्रदोष, निशामुख, बन्ध्या ।—तन (घु०) निशा जात, रात्रिभव, रात में उत्पन्न ।

दोषादोष तत्० (घु०) भलाई बुराई, उत्तम निकृष्ट ।  
दोषारोपण तत्० (घु०) दोष लगाना, अपराध लगाना ।

दोशावह तत्० (घु०) [ दोष + आवह ] दोषोप विषये दोष की उत्पत्ति हो ।

दोषी तत्० (घु०) कलङ्की, अपराधी, पापी, दुष्क, असुह ।

दोषैकदक तद्० (घु०) दोषमात्रदर्शी, जो गुण छोड़कर केवल दोष ही देखा करता है ।

दोसरा दे० (घु०) दूसरा, द्वितीय, बड़ी स सहचर ।

दोसाद दे० (घु०) भासुख, नीच जाति विशेष ।

दोस्त दे० (घु०) मित्र, बन्धु, सुहृद ।

दोहड़िका दे० (खी०) भाषा का एक विशेष ।

दोहसड़ दे० (खी०) दोनों हाथों का चपेट, त

दोहना तद्० (घु०) दौहित्र, बेटे का बेटा,

दोहनी तद्० (खी०) दौहित्री, नतितो, बेटे की बेटे ।

दोहद तत्० (घु०) इच्छा, स्पृहा, गर्भ, गर्भिणी अमिलाय, गर्भिणी की लालसा, साध ।—

(घु०) गर्भ के लक्षण, गर्भचिन्ह ।

दोहदवती तत्० (खी०) अन्नपानादि पद अमिलाय रखने वाली, गर्भवती स्त्री ।

दोहन तत्० (पु०) दुग्ध निस्सारण, दूध निकालना, दुहना ।

दोहनी तत्० (पु०) दोहनयात्र, दूध दुहने का यात्र ।

दोहर दे० (स्त्री०) दोहरावय, जो चोटने के काम में जाता है, गसेफ, पाप ।

दोहरा दे० (पु०) द्विगुण, द्विगुणित, दुगुणा, पञ्च-विशेष, पहेली का शब्द ।

दोहराव दे० (पु०) दोहराया हुआ, दोहराने का काम, तह करना ।

दोहा दे० (पु०) दो चरण का श्लोक, पद्याधिक्य, यह ४८ मात्राओं का होता है । प्रथम तृतीय चरण में तेरह तेरह मात्राएं और द्वितीय चतुर्थ चरणों में ग्यारह ग्यारह मात्राएं होती हैं ।

दोहाई दे० (स्त्री०) दुहाई, पुकार, गुहार, विचार के लिये प्रार्थना करना, शपथ, शौगन्द ।

दोहान तत्० (पु०) द्विहायन, दो वर्ष का बच्चा ।

दोहा दे० (पु०) भारी वर्षा ।

दोह दे० (स्त्री०) धावा, सर्पट, अति वेग से गमन, शीघ्र गमन ।—धूप (स्त्री०) यज्ञ, परिश्रम, उद्योग, चेष्टा ।—धूप करना (वा०) बहुत उद्योग करना, यज्ञ परिश्रम करना ।

दोहना दे० (क्रि०) धावना, सर्पट लगाना, वेग से चलना ।

दोहा दे० (पु०) चुड़चुड़ा, चुड़ सवार, बटमार ।

दोहाक दे० (पु०) दोहने वाला, धावक, दौड़ाहा ।

दोहादोहा दे० (वा०) धावाधाई, वेग पूर्वक गमन आगमन ।

दोहाना दे० (क्रि०) वेग से चलाना, शीघ्र चलाना ।

दोहाहा दे० (पु०) दौड़ने वाला, सन्देशिया, दरकारा ।

दोह्य तत्० (पु०) दूय, दूत का धर्म, दूत का कर्म, वातावहता ।

दोना दे० (पु०) दोना, पत्ता का बना हुआ पात्र ।

दोरा दे० (पु०) टोकना, टोकना, दौरी से बड़ा ।

दौरात्म्य तत्० (पु०) दुरात्मा का कार्य, परपीड़न, उत्पत्ता, दुष्टता, अनिहकार, दुर्जनता ।

दौरी दे० (स्त्री०) चमेरी, टोकरी ।

दौहित्र तत्० (पु०) दुहिता पुत्र, दोहता, कन्या तनय, भाती, बेटा का बेटा ।

दौहित्री तत्० (स्त्री०) कन्या की कन्या, दुहिता पुत्री, नतिनी, बेटा की बेटा ।

धुति तत्० (स्त्री०) प्रकाश, सुन्दरता, दीप्ति, शोभा, किरण, तेज ।

धुतिच तत्० (पु०) दीप्ति विशिष्ट, शोभान्वित ।

धुमणि तत्० (पु०) सूर्य, रवि, भाद्र, अक्षीषा का पेड़, अर्कवृक्ष ।

धुमत्सेन तत्० (पु०) शाक्यदेश के राजा, इनके पुत्र का नाम सत्यवाद् और पुत्रवधु का नाम सावित्री था । राजा धुमत्सेन किसी विशेष कारण से अन्धे हो गये थे । कतिपय अंधम कर्मचारियों ने मिलकर राजा धुमत्सेन को राज्यच्युत कर दिया । तब महारानी शक्या और पुत्र सत्यवाद् को लेकर राजा धुमत्सेन वन में गये, एक समय मद्रदेश के राजा उसी वन में गये और उन्होंने अपनी कन्या का विवाह सत्यवाद् से करना ठीक किया । मद्र देश को राजकुमारी का दयाह सत्यवाद् से हाँगया । सत्यवाद् अशपायु थे, पौड़े ही दिनों में उनकी आयु पूर्ण होगयी । सावित्री ने अपने पातिव्रत के प्रभाव से धमराज को मोहित करके उनसे कितने ही वर पाये थे । उन्हीं वरों के प्रभाव से राजा धुमत्सेन ने नेत्र और राज्य पुनः पाये और मृत सत्यवाद् भी पुनः जीवित होगये । राजा धुमत्सेन योग्य पुत्र सत्यवाद् को राज्य का भार देकर और उचित समय पर यानप्रस्थ व्रत ग्रहण करके पुनः वन में चले गये ।

धुसद् तत्० (पु०) स्वर्गवासी, स्वर्ग में रहने वाला, देवता, देव, सुर ।

धृत तत्० (पु०) बुधा, पासा, स्वनाम प्रसिद्ध क्रीड़ा विशेष ।—कार (पु०) बुधाड़ी, बुधा खेलनेवाला ।

—क्रीड़ा (स्त्री०) श्रु का खेल ।

घो तत्० (पु०) स्वर्ग, अन्तरिक्ष, सुरलोक, आकाश ।

घोत तत्० (पु०) दोषि, प्रकाश, चमक, किरण ।

घोतक तत्० (पु०) प्रकाशक, प्रकाशशील, दीप्ति-  
मान् ।

घोतन तत्० (पु०) प्रकाशन, प्रकाश करण, दर्शन,  
प्रदीप ।

घोतित तत्० (पु०) प्रकाशित, प्रकटित, व्यक्तीकृत ।

घोरानो दे० (स्त्री०) देवरानी, पति के छोटे भाई  
की स्त्री ।

द्रम्म तत्० (पु०) मान विशेष, सोलह १६, पण  
का मान ।

द्रव तत्० (पु०) स्नेह द्रव्य, रस, पलायन, गतियोग ।  
—भाव (पु०) तरलभाव, गलना, पिघलना ।

द्रविड तत्० (पु०) वर्षसङ्कर जाति विशेष, देश  
विशेष, दक्षिण देश का एक प्रान्त, यहाँ के रहने  
वाले ब्राह्मण भी द्रविड कहे जाते हैं ।

द्रविण्य तत्० (पु०) धन, द्रव्य काञ्चन, सेना,  
रुपया, पैसा ।

द्रवित तत्० (पु०) यहता हुआ, पिघला हुआ, कृपा-  
युक्त, नम्र ।

द्रवीकरण तत्० (पु०) कठिन द्रव्य को तरल करना,  
पिघलाना, गलाना ।

द्रवीभूत तत्० (पु०) गलित, मिश्रित ।

द्रवी, द्रवहु दे० (क्रि०) दया करो, कृपा करो, दया  
युक्त हो ।

द्रव्य तत्० (पु०) वित्त, धन, नैवायिकों के मत से  
पृथिवी, अग्नि, तेज, वायु, आकाश, काल, दिक्,  
आत्मा और मन ये नव द्रव्य हैं ।—जन्मभाव  
(पु०) वस्तु और वस्तु जन्य पदार्थ का सम्बन्ध  
विशेष ।

द्रष्टव्य तत्० (पु०) दर्शनीय, दर्शन योग्य, मनोहर  
रमणीय ।

द्रष्टा तत्० (पु०) द्रष्टा, दर्शक, दर्शनकारी, दिव्यदिया,  
देखने वाला ।

द्राक्षा तत्० (स्त्री०) दास, अंगूर ।—रस (पु०)  
मदिरा, मद्य ।—लता (स्त्री०) अंगूर की लता,  
अंगूर की टहनो ।

द्राधिमा तत्० (स्त्री०) दोषता, लम्बाई, दीर्घ,  
दीर्घ ।

द्रावक तत्० (पु०) द्रव्यकारक, गलाने वाला, प्रत्य-  
भेद, सोहागा ।

द्रावण्य तत्० (पु०) द्रवकरण, गलाना, निर्मली ।

द्राविड तत्० (पु०) देश विशेष, विन्ध्य पर्वत की  
दक्षिण दिशा का देश, द्राविड देशवासी, ब्राह्मण  
विशेष, कन्नूर ।

द्राविडी तत्० (स्त्री०) द्राविड देशीय वस्तु, छोटी  
एलायची, द्राविड देश की भाषा ।

द्रुत तत्० (पु०) पिघला हुआ सुवर्ण आदि, शीघ्र,  
गुप्त, स्वरित । (पु०) नृत्य विशेषक शीघ्र गमन ।  
—गामी (पु०) शीघ्र गामी, द्रुतगमनकर्ता, जल्दी  
चलने वाला ।

द्रुपद् तत्० (पु०) चन्द्रवंशीय पृथक् नामक राजा का  
पुत्र, राजा पृथक् के साथ भरद्वाज ऋषि की मित्रता  
थी । पृथक् के पुत्र द्रुपद् और भरद्वाज के पुत्र द्रोण  
दोनों समान वय के थे अतएव हममें भी मित्रता  
हागयी । राजा पृथक् के मरने पर द्रुपद् राजा  
बनाये गये । भरद्वाज के मरने के बाद द्रोण तपस्या  
करने लगे । द्रुपद् राजा होकर अपने बाल्यमित्र  
का भूल गये थे । एक समय द्रोण पूर्व मैत्री स्मरण  
करके राजा के पास गये, परन्तु राजा ने दक्षिण  
ब्राह्मण पुत्र से मैत्री करनी न चाही । कुछ दिनों  
के बाद द्रोण कौरव और पाण्डवों के अशुभितक  
नियत हुए । द्रोण द्रुपद् के अथमान को भूल नहीं  
ये । भीम अर्जुन आदि जय प्राप्त शिवा में निगुण  
हो गये तब द्रोण ने द्रुपद् पर चढ़ाई करके उसे  
बोध कर अपने समीप जाने के लिये अर्जुन को  
आज्ञा दी, अर्जुन ने पाञ्चाल राज्य पर चढ़ाई की  
और आमात्यों के साथ राजा द्रुपद् को बँधकर  
ले ले आये । द्रोण ने अपने पूर्व अथमान की  
जात का स्मरण दिलाकर द्रुपद् से मैत्री की, परन्तु

इस दबाव की मैत्री को मैत्री नहीं कह सकते । द्रुपद को इससे बड़ा दुःख हुआ । इसका बदला लेने के लिये द्रुपद एक पुत्र प्राप्ति की कामना से यह करने लगे । गङ्गातीरवासी यात्र और उष्याज नामक दो स्नातक ब्राह्मणों को द्रुपद ने अपना पुरोहित बनाया और उन्हींके द्वारा यह सम्पन्न किया । इसी यह से द्रोणहन्ता धृष्टद्युम्न की उत्पत्ति हुई थी, उसी यज्ञवेदी से एक कन्या उत्पन्न हुई थी, जिसे द्रौपदी अपवा कृष्ण वर्ण होने के कारण कृष्णा कहते हैं । महाभारत के युद्ध में द्रोण ने द्रुपद को मारा था, परन्तु द्रुपद पुत्र धृष्टद्युम्न के द्वारा द्रोणाचार्य मारे गये । द्रुपद का एक नर्पुंसक सन्तान शिखण्डी था जिसने द्वारा भीष्म मारे गये ।

पदां तद्ग० (खी०) राजा द्रुपद की पुत्री, द्रौपदी, पाण्डवों की स्त्री, (देखो द्रौपदी) ।

में तद्ग० (पु०) [ द्रु + मं ] वृक्ष, पारिजात, पेड़, ऊँच, तडवर ।—व्याधि (खी०) लाजा, लास, लाही ।—श्रेष्ठ (पु०) तालवृक्ष; ताड़ का पेड़ । (पु०) उत्तम वृक्ष, श्रेष्ठ पेड़ ।

मलिक तद्ग० (पु०) राक्षस विशेष, एक राक्षस का नाम ।

मारि तद्ग० (पु०) [ द्रुम + मारि ] वृक्षों का शत्रु, हाथी, गज, फरी । (पु०) कुठार, कुलहाड़ी, अन्धड़, प्रचण्ड बाण ।

माश्रय तद्ग० (पु०) [ द्रुम + आश्रय ] शरर, कुकलास, गिरगिट । (पु०) वृक्ष पर रहने वाले, प्राणिमात्र ।

मेश्वर तद्ग० (पु०) [ द्रुम + ईश्वर ] तालवृक्ष, अश्व-रूपवृक्ष, पीपल का पेड़, चन्द्रमा, निशांक ।

हेय तद्ग० (पु०) विधाता, विधि, ब्रह्मा, प्रजापति ।

क्षण तद्ग० (पु०) क्षण के तीसरे भाग का एक भाग ।

यु तद्ग० (पु०) परिमाण विशेष, चार चादक का परिमाण, चादक चतुष्टय । २२ सेर प्रचलित परि-

माण । द्रोणाचार्य, कीरव पाण्डवों के धनुर्विद्या गुरु, (देखो द्रोणाचार्य) कृष्ण काक, वृक्षिक, विष्णु चार सौ धनुष परिमाण का जलाशय । यथेवयव छोटा फूल ।—काक (पु०) बनेता कौवा, वन्य-यावस, दाढ़ काक ।—पुष्पो (खी०) पैदा विशेष, गोशीर्षक वृक्ष, यह शोध के काम में आती है ।—मुख (पु०) चार सौ गावों में से सुन्दर गाँव ।

द्रोणाचार्य तद्ग० (पु०) [ द्रोण + आचार्य ] भरद्वाज ऋषि के पुत्र, भरद्वाज का आश्रम गङ्गा तट पर था । एक दिन गङ्गास्नान के समय भरद्वाज ने शिष्या भृताची नामकी अश्वरा को देखा । उसके देखने से काम शिष्य महर्षि का रेतःपात हुआ । भृताची ने उसको द्रोण नामक यज्ञ के पात्र में रख दिया-कुछ दिनों के बाद उस यज्ञपात्र से एक लड़का उत्पन्न हुआ । महर्षि ने उसका नाम भी द्रोण ही रखा । भरद्वाज ने अग्निवेश्य नामक ऋषि को आग्नेयास की शिक्षा दी, जो द्रोण ने भी धनुर्विद्या और आग्नेयास की शिक्षा उन्हीं अग्निवेश्य से पायी । द्रोण का मित्र द्रुपद नामक राजा था । (द्रुपद देखो) परन्तु किसी विशेष कारण से इनकी मित्रता नष्ट हो गयी । पिता की आज्ञा से शरद्धान की कन्या कृपी से द्रोणाचार्य ने अपना शवाह किया । उसी विवाह से द्रोण के एक पुत्र हुआ था जिसका नाम अश्वत्थामा था । अश्व विद्या सीखने के लिये द्रोण महेन्द्र पर्यन्त पर धर्मशाला के निगट गये और वहीं उन्हींके अश्व विद्या सीखी । पाण्डव और कौरवों का पड़ाने के लिये भीष्मपितामह ने इन्हें नियुक्त किया । अर्जुन इनका प्रिय शिष्य था । अर्जुन ने जब युद्धसिखा देने की इच्छा प्रकट की तब द्रोणाचार्य ने कहा था—“अर्जुन जब कभी हम युगसे युद्ध करें उस समय तुम भी मेरे साथ युद्ध करना । उस समय किसी प्रकार का मद्बोध मत करना ।” इसी कारण महाभारत युद्ध के अर्जुन ने युद्ध के साथ धैर्य संग्राम किया था । नहीं तो द्रोण का सबसे अधिक प्रिय शिष्य अर्जुन कभी युद्ध के साथ युद्ध

द्यो तत्० (पु०) स्वर्ग, अन्तरिक्ष, सुरलोक, आकाश ।

द्योत तत्० (पु०) दीप्ति, प्रकाश, चमक, किरण ।

द्योतक तत्० (पु०) प्रकाशक, प्रकाशशील, दीप्ति-  
मात् ।

द्योतन तत्० (पु०) प्रकाशन, प्रकाश करण, दर्शन,  
प्रदीप ।

द्योतित तत्० (पु०) प्रकाशित, प्रकटित, उज्ज्वलकृत ।

द्योरानो दे० (स्त्री०) देवरात्री, पति के छोटे भाई  
की स्त्री ।

द्रम्म तत्० (पु०) मान विशेष, सोलह १६ वण  
का मान ।

द्रव तत्० (पु०) स्नेह द्रव्य, रस, पलायन, गतिवेग ।  
—भाव (पु०) तरलभाव, गलना, पिघलना ।

द्रविड तत्० (पु०) वणसङ्घ जाति विशेष, देश  
विशेष, दक्षिण देश का एक प्रान्त, वहाँ के रहने  
वाले ब्राह्मण भी द्रविड़ कहे जाते हैं ।

द्रविण तत्० (पु०) धन, द्रव्य, काञ्चन, सेना,  
रुपया, पैसा ।

द्रवित तत्० (पु०) बहता हुआ, पिघला हुआ, कृपा-  
युक्त, नख ।

द्रवीकरण तत्० (पु०) कठिन द्रव्य को तरल करना,  
पिघलाना, गलाना ।

द्रवीभूत तत्० (पु०) गलित, मिश्रित ।

द्रवी, द्रवहु दे० (क्रि०) दया करो, कृपा करो, दया  
युक्त हो ।

द्रव्य तत्० (पु०) वित्त, धन, नैवायिकों के मत से  
पृथिवी, अग्नि, तेज, वायु, आकाश, काल, दिक्,  
आत्मा और मन ये नव द्रव्य हैं ।—जन्मभाव  
(पु०) यस्तु और यस्तु जन्म पदार्थ का सम्बन्ध  
विशेष ।

द्रष्टव्य तत्० (पु०) दर्शनीय, दर्शन योग्य, मनोहर  
रमणीय ।

द्रष्टा तत्० (पु०) द्रष्टा, दर्शक, दर्शनकारी, दिग्दर्शक,  
देखने वाला ।

द्राक्षा तत्० (स्त्री०) दास्य, अंगूर ।—रस (पु०)  
मदिरा, मद्य ।—लता (स्त्री०) अंगूर की लता,  
अंगूर का टहनी ।

द्राधिमा तत्० (स्त्री०) दोषता, लम्बाई, दीर्घता,  
देर्घ्य ।

द्राघक तत्० (पु०) द्रव्यकारक, गलाने वाला, प्रस्त-  
भेद, सोहागा ।

द्राघण तत्० (पु०) द्रवकरण, गलाना, निर्मली ।

द्राघिड तत्० (पु०) देश विशेष, विन्ध्य पर्वत को  
दक्षिण दिशा का देश, द्राघिड देशवासी, ब्राह्मण  
विशेष, कन्नूर ।

द्राघिडी तत्० (स्त्री०) द्राघिड देशोत्पन्न वस्तु, छोटी  
पलायची, द्राघिड देश की भाषा ।

द्रुत तत्० (पु०) पिघला हुआ सुवर्ण आदि, शीघ्र,  
गुप्त, स्वरित । (पु०) नृप विषयक शीघ्र गमन ।  
—गामी (पु०) शीघ्र गामी, द्रुतगमनकर्ता, जल्दी  
चलने वाला ।

द्रुपद् तत्० (पु०) चन्द्रवंशीय पृथक् नामक राजा की  
पुत्र, राजा पृथक् के साथ भरद्वाज ऋषि की मित्रता  
थी । पृथक् के पुत्र द्रुपद् और भरद्वाज के पुत्र द्रोण  
दोनों समान वय के थे अतएव दोनों भी मित्रता  
हास्यी । राजा पृथक् के मरने पर द्रुपद् राजा  
बनाये गये । भरद्वाज के मरने के बाद द्रोण तपस्या  
करने लगे । द्रुपद् राजा होकर अपने वासुदेव  
को भूल गये थे । एक समय द्रोण पूर्व मैत्री स्मरण  
करके राजा के पास गये, परन्तु राजा ने दक्षिण  
ब्राह्मण पुत्र से मैत्री करनी न चाही । कुछ दिनों  
के बाद द्रोण कौरव और पाण्डवों के अशुभक  
नियत हुए । द्रोण द्रुपद् के अद्यमान को भूले नहीं  
थे । भीम अर्जुन आदि जय प्राप्त शिवा में निपुण  
हो गये तब द्रोण ने द्रुपद् पर चढ़ाई करके उसे  
बाँध कर अपने समीप लाने के लिये अर्जुन को  
आज्ञा दी, अर्जुन ने पाञ्चाल राज्य पर चढ़ाई की  
और आमात्यों के साथ राजा द्रुपद् को बाँधकर  
ले ले आये । द्रोण ने अपने पूर्व अद्यमान को  
बान का स्मरण दिलाकर द्रुपद् से मैत्री की, परन्तु

इस दवाय की मैत्री को मैत्री नहीं कह सकते । द्रुपद को इससे बड़ा दुःख हुआ । इसका बदला लेने के लिये द्रुपद एक पुत्र प्राप्ति की कामना से यत्न करने लगे । गङ्गातीरवासी यात्र और उपयात्र नामक दो स्नातक ब्राह्मणों को द्रुपद ने अपना पुरोहित बनाया और उन्हींके द्वारा यज्ञ सम्पन्न किया । इसी यज्ञ से द्रोणहन्ता धृष्टद्युम्न की उत्पत्ति हुई थी, उसी यज्ञवेदी से एक कन्या उत्पन्न हुई थी, जिसे द्रौपदी अथवा कृष्ण वर्ण होने के कारण कृष्णा कहते हैं । महाभारत के युद्ध में द्रोण ने द्रुपद को मारा था, परन्तु द्रुपद पुत्र धृष्टद्युम्न के द्वारा द्रोणाचार्य मारे गये । द्रुपद का एक सपुंसक सन्तान शिशुवर्दी था जिसके द्वारा भीष्म मारे गये ।

द्रुपदी तत्स० (सौ०) राजा द्रुपद की पुत्री, द्रौपदी, पाण्डवों की स्त्री, (देखो द्रौपदी) ।

द्रुम तत्स० (पु०) [ द्रु + म ] वृक्ष, पारिजात, पेड़, रुज, तड़वर ।—व्याधि (सौ०) लाटा, लाण, लाही ।—श्रेष्ठ (पु०) तालवृक्ष; ताड़ का पेड़ । (पु०) उत्तम वृक्ष, चोड़ पेड़ ।

द्रुमलिक तत्स० (पु०) राक्षस विशेष, एक राक्षस का नाम ।

द्रुमारि तत्स० (पु०) [ द्रुम + अरि ] वृक्षों का शत्रु, हाथी, गज, कर्ी । (पु०) कुठार, कुचहार्डी, चन्पड़, प्रचण्ड वायु ।

द्रुमाश्रय तत्स० (पु०) [ द्रुम + आश्रय ] शर, कुक-लास, गिरगिट । (पु०) वृक्ष पर रहने वाले, प्राणिमात्र ।

द्रुमेश्वर तत्स० (पु०) [ द्रुम + ईश्वर ] तालवृक्ष, शरव-त्वष्ट, पापल का पेड़, चन्द्रमा, त्रिशाक ।

द्रुदिण तत्स० (पु०) विधाना, विधि, प्रज्ञा, प्रजापति ।

द्रुकाय तत्स० (पु०) लग्न के तीसरे भाग का एक भाग ।

द्रोण तत्स० (पु०) परिमाण विशेष, चार चाइक का परिमाण, चाइक धनुष्य । इर नेर प्रचलित परि-

माण । द्रोणाचार्य, कीरय पाण्डवों के धनुर्विद्या गुरु, (देखो द्रोणाचार्य) कृष्ण काक, वृक्षिक, विच्छ चार सौ धनुष परिमाण का जलाशय । खेतवर्ष छोटा फूल ।—काक (पु०) बनेला कैया, अन्य-यायस, दाड़ काक ।—पुष्पी (सौ०) पैया विशेष, गोशीर्षक वृक्ष, यह श्राव्य के काम में आती है ।—मुख (पु०) चार सौ गार्दों में से सुन्दर गार्द ।

द्रोणाचार्य तत्स० (पु०) [ द्रोण + आचार्य ] भरद्वाज ऋषि के पुत्र, भरद्वाज का आश्रम गङ्गा तट पर था । एक दिन गङ्गास्नान के समय भरद्वाज ने विद्यवा भृताची तामकी अण्डरा को देखा । उसके देखने से काम विषय महर्षि का रेतःपात हुआ । भृताची ने उसको द्रोण नामक यज्ञ के पात्र में रख दिया कुछ दिनों के बाद उस यज्ञपात्र से एक लड़का उत्पन्न हुआ । महर्षि ने उसका नाम भी द्रोण ही रखा । भरद्वाज ने ऋग्निवेद्या नामक ऋषि को आग्नेयास्त्र की शिक्षा दी थी । द्रोण ने भी धनुर्विद्या और आग्नेयास्त्र की शिक्षा उन्हीं ऋग्निवेद्या से पायी । द्रोण का मित्र द्रुपद नामक राजा था । (द्रुपद देखो) परन्तु किसी विशेष कारण से इनकी मित्रता नष्ट हो गयी । पिता की आज्ञा से शरद्वाज की कन्या कृपी से द्रोणाचार्य ने अथना ब्याह किया । उसी विवाह से द्रोण के एक पुत्र हुआ था जिसका नाम अश्वत्थामा था । अश्व विद्या सीखने के लिये द्रोण महेन्द्र पर्यत पर परशुराम की निगट गये और वहाँ उन्हींने अश्व विद्या सीखी । पाण्डव और कौरवों को पढ़ाने के लिये भीष्मपितामह ने इन्हें नियुक्त किया । अर्जुन इनका प्रिय शिष्य था । अर्जुन ने जब गृहदक्षिणा देने की इच्छा प्रकट की तब द्रोणाचार्य ने कहा था—“अर्जुन जब कभी हम मुझसे युद्ध करें उस समय तुम भी मेरे साथ युद्ध करना । उस समय किसी प्रकार का सङ्कोच मत करना ।” इसी कारण महाभारत युद्ध के अर्जुन ने युद्ध के चार संश्राम किया था । नहीं तो द्रोण का अधिक प्रिय शिष्य अर्जुन कभी युद्ध के

करने का साहस नहीं करता। उसी युद्ध में अश्व-  
त्यामा के मरने का संवाद सुनकर द्रोण सूक्ष्म  
हुए। इसी अवसर पर धृष्टद्युम्न ने तलवार से  
उनका सिर काट डाला।

द्रोणी तत्० (श्री०) [द्रोण + ई] देश विशेष, नदी  
विशेष, बेगी, छोटी नौका, पर्वत विशेष, दो  
बृच्चों की सन्धि।

द्रोह तत्० (पु०) [द्रह + अल्] निघांसा, अनिष्ट  
चिन्तन, अपकार, रति, हानि पहुँचाने की इच्छा।  
धैर, द्वेष, विरोध, त्याग।—कारी (पु०) [द्रोह  
+ कृ + णिङ्]। हिल्क, द्वेषी, वैरी, विरोधी।  
—चिन्तन (पु०) दूररों का अनिष्ट करने की  
चिन्ता, किसी की अनभलाई सोचना।

द्रोहि्या तद्० (गु०) द्रोही, द्वेषी, वैरी, विरोधी।

द्रोही तत्० (पु०) [द्रह + इल्] अनिष्टकारी, खल,  
विशुन, स्वभाव से वैरी, विरोधी, द्वेषी।

द्रौणायन तत्० (पु०) [द्रोण + आयन] द्रोणाचार्य  
का पुत्र, अश्वत्यामा, यह सप्त चिरजीवियों में  
से हैं।

द्रौपदी तत्० (श्री०) पाञ्चालराज द्रुपद की यज्ञ-  
वेदी से उत्पन्न कन्या। इसका वर्ष काला था  
इस कारण इसका दूमरा नाम कृष्णा था। स्वयं-  
वर स्थान में लक्ष्मण के अर्जुन ने इसे पाया  
था। परन्तु पाँचों भाइयों का इससे उग्रह हुआ।  
यह अपने पतियों के साथ वन व्रत भूमती फिरती  
थी, अज्ञातवास के समय विराट के घर इसने  
सैरिन्द्रो, (दासी) जा काम किया था। दुःशासन  
और दुर्योधन ने भरी समा में इसका अपमान  
किया था। इसीका बदला भीम ने फुल्लेख के युद्ध  
में लिया था। महाभारत युद्ध समाप्त होने पर  
कुछ दिनों तक यह सुख शान्ति से राज्यभोग  
करती थी, पुनः जब इसके पति महाप्रस्थान के  
लिये उद्यत हुए तब द्रौपदी भी अपने पतियों  
के साथ चली, हिमपर्वत पर चढ़ने के समय  
मयसे पहले यही गिर गयी।

द्वन्द्व तत्० (पु०) युग्म, जोड़ी, युगल, मिश्रण, रहस्य,  
कलह, श्री पुरुष की जोड़ी विवाद, कलह, रोग

विशेष, पदविध समास के अन्तर्गत एक समास का  
नाम। द्वन्द्व समास, सुख दुःख, राग द्वेष, तित  
आतप आदि।—कारी (पु०) कलह कारक,  
भगद्वार, विवादी।—खर (पु०) तक्रयाक एका,  
चकवा।—ज (पु०) [द्वन्द्व + जह् + उ] दो दोनों  
से उत्पन्न रोग, कलहजन्य, कलह से उत्पन्न।

द्वाचत्वारिंशत् तत्० (गु०) दो अधिक चात्सीस, ३२,  
बयालीस।

द्वात्रिंशत् तत्० (गु०) दो अधिक तीस, ३२, बत्तीस।  
—अक्षरी (पु०) ग्रन्थ, पुस्तक।—लक्षण (पु०)  
बत्तीस लक्षण, जो महापुरुषों में होते हैं, वे ये हैं—  
सुकृत, स्वरूप, शील, सत्य, पराक्रम, युक्ति,  
अभ्यास, वर विद्या, सुमान, परमज्ञान, शास्त्रज्ञान,  
परस्त्रीत्याग, पूर्णता, लोकेश, दास विभाग, पुत्र  
विद्या, प्रियवाद, सत्संग, अकाम, गुणपूर्ण, मातृ-  
भक्ति, पितृभक्ति, गुरुभक्ति, जितेन्द्रियत्व, दातृत्व,  
धर्म, देवपूजन, अल्प निद्रा, स्वल्पाहार, स्वच्छता,  
पुष्टता, धैर्य इति, ३२।

द्वादश तत्० (गु०) [द्वादश + उट्] दो अधिक दश,  
१२ बारह, बारहवीं संख्या।—उपवन (पु०)  
साङ्केतिक बारह उपवन यथाः—शान्तसुकुण्ड,  
राधाकुण्ड, गौधर्दन, परमन्दर, वरसाना, मकैत,  
नन्दघाट, वीरघाट, बलरामस्थल, नन्दगर्भ,  
गोकुल, चन्दनवन।—कर (पु०) बृहस्पति, कार्ति-  
केय।—पत्र (पु०) वेनि विशेष।—भानु (पु०)  
बारह सूर्य।—भानुकला (श्री०) सूर्य की बारह  
कलाएँ उनके नाम ये हैं। तपिनी, तापिनी, पूषा,  
मरिचे, उत्रलिनी, रुद्रि, रुचिनिम्ना, भोगदा,  
विश्ववेदिनी, धारिणी, समा, शोषिणी।  
—लोचन (पु०) कार्तिकेय, कुमार, देव सेनापति  
—वन (पु०) बारह वन, जो प्रज में हैं। मणु  
वन, तालवन, वृन्दावन, कुमुदवन, कामवन, कौट-  
वन, चन्दनवन, लोहवन, महावन, खदिरवन,  
बेलावन, भाषदीरवन।

द्वादशशु तत्० (पु०) [द्वादश + शंशु] बृहस्पति  
सुराचार्य, देवगुरु।

द्वादशाक्ष तत्त्वं (पु०) [द्वादश + अक्षि] कार्तिकेय, गृह, पदान्न ।  
 द्वादशांगुल तत्त्वं (पु०) [द्वादश + अंगुल] वितस्ति परिमाण, एक बीता, आधा हाथ ।  
 द्वादशात्मा तत्त्वं (पु०) [द्वादश + आत्मा] सूर्य, मानु दियाकर, अक्षयन का पेड़ ।  
 द्वादशी तत्त्वं (स्त्री०) [द्वादश + उद् + ई] तिथि विशेष, पक्ष की बारहवीं तिथि, चन्द्रमा की बारहवीं कक्षा का समय ।  
 द्वापर तत्त्वं (पु०) युग विशेष, तीसरा युग, इसका मान ८६४००० वर्ष का होता है । श्रीकृष्ण और बौद्ध दो अक्षतार हुए थे, चन्देद, अनिष्टय ।  
 द्वापञ्चशत तत्त्वं (पु०) संख्या विशेष, दो अक्षिक पचास, ५२, बावन ।  
 द्वार तत्त्वं (पु०) निकलने का मार्ग, घर में से निकलने का पथ, दरवाजा ।—कण्टक (पु०) किवाड़, फण्ट ।—पाल (पु०) द्वार रक्षक, दरवान ।  
 —पालक (पु०) द्वाररक्षक, द्वारवान, पहरुथा, प्रहरी ।—घती (स्त्री०) द्वारकापुरी, श्रीकृष्ण की पुरी, यह प्रसिद्ध सप्तपुरियों में से है ।—घन्त्र (पु०) द्वार बन्द करने का यन्त्र, ताला, कुसक ।  
 द्वारका तत्त्वं (स्त्री०) स्वनाम प्रसिद्ध पुरी, श्रीकृष्ण का नगरी ।  
 द्वारकेश तत्त्वं (पु०) श्रीकृष्ण, द्वारका के अधिपति ।  
 द्वारा तत्त्वं (पु०) कारण से, हेतु से, सहायता से ।  
 द्वारावती तत्त्वं (स्त्री०) द्वारवती, द्वारका, जिसका श्रीकृष्ण ने बसाया था, जो सुवर्णमयी द्वारका के नाम से प्रसिद्ध है ।  
 द्वारिका तत्त्वं (स्त्री०) द्वारका, द्वारावती, चार धाम के अन्तर्गत तीर्थ विशेष ।—धीश (पु०) [द्वारिका + अधीश] श्रीकृष्णजी ।  
 द्वारी तत्त्वं (पु०) [द्वार + इद्] द्वारपाल, द्वार रक्षक, दरवान, पैरिया ।  
 द्वाषष्टी तत्त्वं (पु०) दो अक्षिक साठ, ६२, षासठ ।  
 द्वासप्तति तत्त्वं (पु०) संख्या विशेष, दो अक्षिक सत्तर, ७२, बहत्तर ।

द्वास्व तत्त्वं (पु०) द्वाररक्षक, द्वारपाल, द्वारी, दरवान ।  
 द्विः तत्त्वं (पु०) वारद्वय, दो बार ।—ध्रुतिघर (पु०) [ द्विः ध्रुति + घृ + अर्ध ] किसी बात को दो बार बुनने ही से जो स्मरण रहते हैं ।  
 द्विशु तत्त्वं (पु०) समास विशेष, यह समास तत्पु-रुष समास के अन्तर्गत है ।  
 द्विशुण तत्त्वं (पु०) दुग्गा, दोहरा, दुबारा, दो सण्या द्वारा गुणित ।  
 द्विशुणित तत्त्वं (पु०) द्विशुणित, दुग्गा किया हुआ ।  
 द्विचत्वारिंशत् तत्त्वं (पु०) संख्या विशेष, दो अक्षिक चासी, ४२, बयासीठ ।  
 द्विज तत्त्वं (पु०) [ द्वि + जन् + ष ] दो बार में उत्पन्न, ब्राह्मणादि त्रिवर्ण, ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य, इन वर्णों की उत्पत्ति जन्म और संस्कार से होती है अतएव ये द्विज कहे जाते हैं । अष्टजन, पत्नी, दौत, दन्त ।—पति (पु०) चन्द्रमा, शशाङ्क, चन्द्रमा ब्राह्मणों के स्वामी हैं । अति में लिखा है “नेमोऽस्माकं राजा” अर्थात् सोम हम लोगों का राजा, शासक है ।—प्रपा (स्त्री०) प्रातःकाल, वृच झूल में जल देने के लिये बनाया हुआ घसा ।  
 —प्रिया (स्त्री०) सोमपत्नी, सोमनाम की बत्नी ।  
 (पु०) त्रिवर्ण की प्रिय वस्तु ।—घन्धु (पु०) ब्राह्मण के समान, अब्राह्मण, कुलित ब्राह्मण ।  
 —वर्ष (पु०) अष्ट ब्राह्मण, उत्तम ब्राह्मण ।  
 वृष (पु०) जातिमात्र का ब्राह्मण, नीच ब्राह्मण ।  
 —राज (पु०) चन्द्रमा, शशाङ्क, शशाङ्क ।  
 द्विजन्मा तत्त्वं (पु०) [ द्वि + जन् + मत् ] विप्र, ब्राह्मण, दन्त, पत्नी, क्षत्रिय, वैश्य । (पु०) दो बार उत्पन्न होने वाला ।  
 द्विजाति तत्त्वं (पु०) ब्राह्मण, अष्टजन, पत्नी, क्षत्रिय, वैश्य ।  
 द्विजातीय तत्त्वं (पु०) त्रिवर्ण सम्बन्धी ।  
 द्विजालय तत्त्वं (पु०) [द्विज + आलय] वृच कोटर, ब्राह्मण गृह, पत्नियों का स्थान, सोमला, सोता ।



द्विजिह्व तत्० (३०) [द्वि + जिह्व] सर्प, सूत्रक, पियुक्त,  
खज, इधर की बात उधर कहने वाला ।

द्विजोत्तम तत्० (३०) [द्विज + उत्तम] ब्राह्मण, ब्रह्म-  
पत्नी, गण्ड ।

द्विज्या तत्० (स्त्री०) [द्वि + ज्या] गोला अध्याय  
की एक रेखा विशेष ।

द्वितय तत्० (गु०) [द्वि + तय] युग्म, दो ।

द्वितीय तत्० (गु०) [द्वि + तीय] दो को पूरण करने  
वाली संख्या, दूसरा, दूजा, द्वय ।

द्वितीया तत्० (स्त्री०) [द्वितीय + षा] मेहिनी,  
भार्या, तिथि विशेष, चन्द्रमा का दूसरी तथा सत्त-  
रहमें कला की क्रिया का समय ।

द्वितीयान्त तत्० (गु०) जिसके अन्त में द्वितीया  
विभक्ति का प्रत्यय हो ।

द्वित्रा तत्० (स्त्री०) दो या तीन की पूरण करने  
वाली संख्या ।

द्वित्व तत्० (गु०) [द्वि + त्व] दो संख्या, बार, द्वय  
करण, एक को दोबार करना, दोहराना ।

द्विदैवत्या तत्० (स्त्री०) विशाखा, नक्षत्र, इसके दो  
देवता हैं ।

द्विधा तत्० (शु०) दो प्रकार, द्वयर्थ, सन्देह, अनि-  
श्चित, द्विविध, दो भाँति ।—कल्प (गु०) सन्देह  
का विषय, अनिश्चित विषय ।

द्विप तत्० (गु०) [द्वि + पा + उ] द्विरद, हस्ति, हाथी,  
दन्ती ।

द्विपञ्चाशत् तत्० (गु०) संख्या विशेष, दो अधिक  
पचास, ५२, बावन ।

द्विपथ तत्० (गु०) दो मार्ग, दो ओर का मार्ग ।

द्विपद तत्० (गु०) दो पैर वाला, द्विपाद विशिष्ट ।  
(गु०) मनुष्य, देवता, पक्षी, राक्षस ।—राशि  
(गु०) मिथुन, बुध, कुम्भ कन्या और धनु का  
पूर्वभाग ।

द्विमुख तत्० (गु०) एक प्रकार का साँप, दुमुँहा  
साँप, राजसर्प ।

द्विरद तत्० (गु०) [द्वि + र्द] हाथी, दन्ती, कर्ती,  
चारण, गज ।

द्विरद न्तक तत्० (गु०) सिंद, केयरी ।

द्विरसन तत्० (गु०) [द्वि + रसन] सर्प, श्लि,  
विषधर ।

द्विरागमन तत्० (गु०) [द्वि + आगमन] पुनः-  
गमन, बहू का पति के घर दूसरी बार जाना,  
गोना ।

द्विरक्त तत्० (गु०) [द्वि + र्क्त] बारद्वय कर्म,  
दो बार कहा हुआ ।

द्विरक्ति तत्० (स्त्री०) [द्वि + र्क्ति] पुनः पुनः  
कथन, एक बात को दो बार कहना, काव्य का  
एक दोष, यह शब्द गतदोष कहा जाता है, एक  
पद्य में एक ही अर्थ का वाचक शब्द यदि दोबार  
या जाय तो द्विरक्तिदोष होता है ।

द्विरूपी तत्० (गु०) [द्विरूप + इत्] द्विप्रति, दूधरा  
रूप धारण करने वाला ।

द्विरूप तत्० (गु०) समर, भृङ्ग, शलि, भँवरा ।

द्विर्भोजन तत्० (गु०) दोबार भोजन ।

द्विघचन तत्० (गु०) दो संख्या की वाचक विभक्ति,  
दूसरा वचन ।

द्विचिद तत्० (गु०) वानर विशेष, देवताओं के शत्रु  
नरकासुर से इसकी मैत्री थी, इसदेव ने इसे वानर  
को मारा था ।

द्विचिध तत्० (शु०) दो प्रकार, दो भाँति, द्विधा ।

द्विस्वभाव तत्० (गु०) ज्योतिष में प्रसिद्ध ज्ञान  
विशेष ।

द्विहायनी तत्० (स्त्री०) [द्वि + हायन + णी] द्विवर्षीया,  
दो वर्ष की अवस्था वाली वास्तिका ।

द्वीप तत्० (गु०) द्व्याग्रचर्म, द्व्याग्र, जल सङ्घर्ष  
पृथिवी का खण्ड, जिसके चारों ओर जल भर  
हुआ हो । हिन्दू शास्त्रानुसार सात द्वीप हैं—  
सातों द्वीप सात समुद्रों से वेष्टित हैं । उन द्वीपों  
के नाम ये हैं:—

जम्बुद्वीप, कुशद्वीप, सुसुन्दरीप, शालमलीद्वीप,  
कोशद्वीप, शाकद्वीप और पुष्करद्वीप ।

द्वीपवती तत्० (स्त्री०) नदी, भूमि ।

द्वीपवान् तत्० (पु०) समुद्र, सागर ।  
 द्वीपशत्रु तत्० (पु०) क्षताघर, यताघर, द्वीपध  
 विशेष, यताघरि ।  
 द्वीप सम्मवा तत्० (स्त्री०) पिपडी, खडूर ।  
 द्वीपस्थ तत्० (पु०) [ द्वीप + स्था + उ ] द्वीप में रहने  
 वाला, द्वीपवासी ।  
 द्वीपिका तत्० (स्त्री०) यताघर, यताघरि ।  
 द्वीपी तत्० (पु०) व्याघ्र, चित्रक व्याघ्र, चीता  
 बाघ ।  
 द्वीप्य तत्० (पु०) [ द्वीप + य ] द्वीप में उत्पन्न  
 होने वाला ।  
 द्वेष तत्० (पु०) हिंसा, शत्रुता, विरोध, ईर्ष्या,  
 वैर, लाग, क्रोध ।  
 द्वेषी तत्० (पु०) [ द्विप् + इत् ] शत्रु, वैरि, हिंसक ।  
 द्वेषा तत्० (पु०) [ द्विप् + तृत् ] विद्वेषक, द्वेषकर्ता ।  
 द्वेष्य तत्० (पु०) [ द्विप् + थ ] द्वेष का वियोग, द्वेष  
 करने के योग्य ।  
 द्वै तद्० (पु०) दो संख्याय चक ।  
 द्वैत तत्० (पु०) दो, दो प्रकार, भेद, सन्देह ।—  
 (पु०) [ द्वैत + वा + क ] द्वैतवादी, भिन्नेश्वरवादी ।  
 —ज्ञान (पु०) द्वैतवाद, भिन्न ईश्वर का ज्ञान ।  
 —वादी (पु०) [ द्वैत + यद् + णिच् ] जीव-शरीर  
 ईश्वर का भेद जानने वाला, ईश्वर से जीव की  
 पृथक् सत्ता मानने वाला सिद्धान्त, माध्य भादि ।  
 द्वैध तत्० (शु०) सन्देह, संशय, द्विप्रकार, द्वय-  
 भेद, दो धर्म ।  
 द्वैधीकरण तत्० (पु०) छेदन, खण्डन, भेदन ।

द्वैधीभाव तत्० (पु०) विरलेप, अल्पभाव, पार्थक्य,  
 परस्पर का विरोध ।  
 द्वैपयन तत्० (पु०) व्यासदेव ।  
 द्वैमतुर तत्० (पु०) गणेश, जरासन्ध राजा । (पु०)  
 दो माताओं से उत्पन्न, भगीरथ ।  
 द्वैमातृक तत्० (पु०) [ द्वैमातृ + कन् ] नदी ताल  
 आदि के जलद्वारा जिस देश में अन्न उत्पन्न होते  
 हैं । दो माताओं के पुत्र, भगीरथ ।  
 द्वैरथ तत्० (पु०) दो रथारोहियों का, परस्पर  
 युद्ध ।  
 द्वैप तद्० (पु०) द्वेष, हिंसा, वैर, विरोध ।  
 द्वयंगुल तत्० (पु०) [ द्वि + अंगुल ] अंगुलि द्वय  
 परिमित, दो अंगुलियों के परापर की वस्तु ।  
 द्वयञ्जलि तत्० (पु०) [ द्वि + अञ्जलि ] दो अञ्जलि  
 परिमाण, अञ्जलिद्वय, दो अञ्जलियों से मापी  
 हुई वस्तु ।  
 द्वयक्षर तत्० (पु०) [ द्वि + अक्षर ] अक्षरद्वय, दो  
 अक्षर, मन्त्रविशेष, दो अक्षर का मन्त्र ।  
 द्वयगुणक तत्० (पु०) [ द्वि + अगुणक ] परमाणुद्वय,  
 दो परमाणु ।  
 द्वयर्थ तत्० (पु०) [ द्व + अर्थ ] अर्थ द्वयगुणक, दो  
 प्रकार के अर्थों का वाचक, वे वाक्य या शब्द  
 जिनके दो अर्थ हैं, व्यंगोक्ति ।  
 द्वयात्मक तत्० (पु०) [ द्वि + आत्मक ] मिथुन, कन्या,  
 अशु, मीनराशि, द्विविध, दो प्रकार ।  
 द्वयाहिक तत्० (पु०) दो दिन के अनन्तर उत्पन्न  
 होने वाला, दिनद्वय अन्य ।

ध

यह अक्षर का उच्चीसर्वा अक्षर है, इसे दन्त्यवर्ण  
 कहते हैं क्योंकि इसका उच्चारणस्थान दन्त है ।  
 ध तत्० (पु०) धन, द्रव्य, कुवेर, धर्म ।  
 धिला दे० (पु०) धोखा, छल, फट, चकमा,  
 प्रतापना ।  
 धिलाना दे० (क्ति०) धोखा देना, चकमा देना,

उपना, प्रसारित करना ।  
 धंधक दे० (पु०) उद्यमी, परिश्रमी, कामकाजी,  
 धंधालाला, व्यवसायी, व्यापारी ।  
 धंधा दे० (पु०) काम, उद्यम, व्यवसाय, व्यापार ।  
 धंधार दे० (पु०) उदास, बेलाग रहने वाला,  
 निष्कर्मा ।

धंधारी दे० (स्त्री०) उदासी, शिथिलता, किसी काम में चिन्त न देना ।

धंसना दे० (क्रि०) घुसना, बैठना, प्रविष्ट होना, गड़ना, ब्रेकस पड़ना, फँसना ।

धकधक दे० (पु०) श्रोतमान, प्रकाशमान, उज्ज्वल, दीप्तिशील, धड़क, कम्प, कँपकपी, थरथर ।

धकधकाना दे० (क्रि०) धड़कना, थरथराना, कँपना, कम्पित होना ।

धकधकी दे० (स्त्री०) कँपकपी, थरथराहट, कम्प, वेपथू, थरथरी, घबराहट, हड़बड़ी ।

धकेलना दे० (क्रि०) धक्का देना, धकेलना, ठेलना, धक्का देकर हटाना ।

धकेलदेना दे० (क्रि०) धक्का देना, आघात से पीछे हटाना, भौंकदेना, ठेल देना ।

धक्का दे० (पु०) आघात, अभिघात, रैला, भौंका, ठेलाव ।—देना (क्रि०) आघात देना, रैलना, भौंका देना ।

धक्कमधक्का दे० (पु०) रेलपेल, ठेलाठेली, दबोचा-दयोची ।

धक्काधक्की दे० (स्त्री०) धक्कमधक्का, रैलापेल, ठेला-ठेली ।

धगड़ा दे० (पु०) उपपत्ति, जार, विट, भड़ुआ ।

धगोलना दे० (क्रि०) सोटना, नोट चोट करना, करपट बदलना, छटपटाना ।

धज दे० (पु०) डीलडौल, ठाठबाठ, साजबाज, आकार, आकृति, व्यवहार, चालचलन, दशा, व्यवस्था, रूप ।

धजभङ्ग तद्० (पु०) ध्वनभङ्ग, रोगविशेष, नर्पुंसकता का एक भेद विशेष ।

धजा तद्० (स्त्री०) ध्वजा, पताका, कपड़े की फंडी ।

धजीला दे० (पु०) रूपवाह, सुरूप, सुन्दर, सुडौल, सुस्वरूप ।

धजियाँ उड़ाना दे० (वा०) अपमानित करना, अप्रतिष्ठा करना, दुर्नाम करना, धयश करना ।

धजियाँ करना दे० (वा०) दुकड़े दुकड़े कर देना ।

धज्जी दे० (स्त्री०) चीर, कतरन, टुकड़ा, कानून का कपड़े का कटका ।

धड़ दे० (पु०) देह, काय, शरीर, गले से नीचे का शरीर । यथा:—

सिर धड़ से अलग होगया, सीरों की तमझापनी चक्कचकाहट से शम्भुओं को चौधियारी, धड़ से सिर अलग करने लगीं ।

धड़क दे० (स्त्री०) भय, डर, भय से उत्पन्न व्याकुलता, हृदय का जोम, धुकधुकी, कम्प, सहम ।

धड़कना दे० (क्रि०) भय करना, डरना, कँपना, भय से व्याकुल होना, थरथराना, धुकधुकाना, धड़धड़ाना, फड़कना ।

धड़का दे० (पु०) भय, सन्देह, दुविधा, दुविधा, दहल ।

धड़काना दे० (क्रि०) भय दिखाना, डराना, व्याकुल करना, कँपाना, चिन्तित करना, सन्दिग्ध करना, दुविधा में डालना ।

धड़धड़ाना दे० (क्रि०) तड़कड़ाना, छटपटाना, पछियों का परकाड़ना ।

धड़का दे० (पु०) गम्भीर ध्वनि, ठनक, डर, भय ।

धड़ा दे० (पु०) नया, समूह, डोकियों का समूह, डौंका डालना, पत्र, तैल, जेज, रुख, शोर ।

धड़ाका दे० (पु०) धमक, शब्द, भारी शब्द, कड़क ।

धड़ी दे० (स्त्री०) पाँच सेर की तैल, रैला ।

धड़वा दे० (पु०) पवि विशेष, मैना, सारिका ।

धत दे० (स्त्री०) हाथी हाँकने का शब्द, चलने के लिये हाथियों को सङ्केतार्थक शब्द, निरस्कार्य शब्द, दुत्कार ।

धतीनगर दे० (पु०) कुजात, जीव, चपम ।

धतूरा तद्० (पु०) धतूरा, एक वृक्ष और उसके पुष्प का नाम, यह विषैला होता है, कहते हैं यह महादेव को बड़ा मिय है ।

धत्रिया दे० (गु०) कपटी, छली, बहुकथिया ।  
 धधकना दे० (क्रि०) प्रज्वलित होना, भमक उठना,  
 जल उठना, एकबार ही खुल जाना ।  
 धधच्छर तद्० (पुं०) दग्धाक्षर, कविता का एक  
 श्लोक, कविता के आदि मध्य या अन्त में अशुभ-  
 फलदायी अक्षरों का आना दग्धाक्षर या धधच्छर  
 कहा जाता है । आदि में ह, ग, न, मध्य में  
 र, ज, स, और अन्त में क, ट, ष, अगुम हैं ।  
 धन तद्० (पु०) जीवन का उपाय, धित्त, विभव,  
 स्थावर जड़म सम्पत्ति, गणित में जोड़ का चिन्ह,  
 + ।—केलि (पु०) कुवेर, धनाधिप ।  
 —गर्हित (पु०) धनगर्वी, धन से अहङ्कारी, धन  
 उन्मत्त ।—चेष्टा (स्त्री०) अर्थचिन्ता, धन पाने  
 की इच्छा ।  
 धनक दे० (स्त्री०) कारवेबी, सेना या चाँदी के तार  
 से बनी वस्तु, जुड़ाव, गोटे का सामान ।  
 धनकटी दे० (स्त्री०) एक प्रकार का कपड़ा, धान  
 काटने का समय ।  
 धनञ्जय तद्० (पु०) अजुन, अग्नि, वायु विशेष,  
 शरीरस्थित वायु, वृक्ष विशेष, चित्रक वृक्ष, नाग  
 भेद, जलाशयाधिपति ।  
 एक संस्कृत कवि का नाम । यह धारानगरी के  
 राजा भोजराज के पितृव्य सुश्रुत के सभा  
 परिहित थे । इनका बनाया हुआ संस्कृत में एक  
 ग्रन्थ है जिसका नाम "दशरूपक" है । इस ग्रन्थ में  
 केवल नाटक के सषणों ही का वर्णन है । इनके  
 पिता का नाम विष्णु था । महाराज सुश्रुत का समय  
 १० वीं शती का अन्तभाग माना जा सकता है,  
 तदनुसार उनके सभा परिहित धनञ्जय का भी वही  
 समय मानना होगा ।  
 धनन्तर दे० (पु०) धनी, धनवान, धनिक, प्रतापी ।  
 धनन्तर तद्० (पु०) धनवन्तरि, देवधिया, चि कन्वक,  
 समुद्र से निकाले हुए चौदह रत्नों में का एक रत्न ।  
 धनद तद्० (पु०) [ धन + दा + ड ] धनपति, कुवेर,  
 धनाधिप ।—नुज (पु०) [ धनद + अनुज ]  
 रावण, दशानन ।

धनपति तद्० (पु०) कुवेर, धनाधिप, धन का देवता,  
 कुवेर का दूसरा नाम, शरीरस्थित वायु विशेष,  
 कहते हैं यह वायु ब्रह्मा के मुख से निकला और  
 उन्हींकी आज्ञा से मूर्ति धारण करके धनपति  
 नाम से परिचित हुआ । तदनन्तर उसी मूर्ति से  
 ब्रह्मा की आज्ञा पाकर देवताओं के धन की रक्षा  
 करने लगा ।  
 —वामन पुराण ।  
 धनपिशाचिका तद्० (स्त्री०) धनाया, धनतृष्णा,  
 धनप्राप्त करने की अथर्व तृष्णा ।  
 धनयाहुल्य तद्० (पु०) अर्थाधिक्य, धन की अधिकता,  
 धनवान् ।  
 धनमद तद्० (पु०) विभव, गर्व, धन होने के कारण  
 अहङ्कार ।  
 धनलुब्ध तद्० (पु०) धनलिप्सु, अर्थलोभी, धन  
 का लोभी ।  
 धनवती तद्० (स्त्री०) [ धन + वत् + ई ] धनिष्ठा  
 नक्षत्र, धनान्विता, स्त्री, धनी स्त्री ।  
 धनवन्त तद्० (पु०) धनवान्, धनी, मालदार, धनिक,  
 लक्ष्मीपति, धनाढ्य ।  
 धनहीन तद्० (पु०) धनरहित, धनशून्य, दरिद्र,  
 कंगाल, निर्धन ।  
 धनागम तद्० (पु०) [ धन + आगम ] आय, धन  
 का आना ।  
 धनागार तद्० (पु०) [ धन + आगार ] धन रखने का  
 स्थान, खजाना, भाण्डार ।  
 धनाढ्य तद्० (पु०) [ धन + आढ्य ] धन विशिष्ट,  
 अर्थशाली, धनी, ऐश्वर्यशाली, धन सम्पन्न ।  
 धनान्ध तद्० (पु०) [ धन + अन्ध ] अहङ्कारी, धन  
 गर्हित ।  
 धनाधार तद्० (पु०) [ धन + आधार ] धन रखने  
 का स्थान, धनागार, भाण्डार, वास्तु, सन्दूक,  
 आदि ।  
 धनाधिकृत तद्० (पु०) [ धन + अधिकृत ] कोषा-  
 धर, खजानेवादी ।

—पति (पु०) भूपति; महिपाल, राजा ।—पाल (पु०) राजा, महीपति ।—सुता (स्त्री०) सीता, जानकी ।

धरती दे० (स्त्री०) पृथ्वी, पृथिवी, भूमि ।

धरना दे० (क्रि०) ग्रहण करना, पकड़ना, रखना, अधीन करना ।—देना (वा०) एक प्रकार का अभियोग, जब कोई बली मनुष्य दुर्बल मनुष्य को किसी कारण से दुःख देता है, उस समय दुर्बल मनुष्य प्राण देने के लिये अथवा दुःख से बचाव पाने के लिये बली मनुष्य के घर पर बैठ जाता है; और खाना पीना बिलकुल छोड़ देता है, इसे ही धरना देना कहते हैं ।

धरनैत दे० (पु०) धरना देने वाला, हठी, दुःप्रायर्षी ।

धरपना तद्० (क्रि०) धर्वण, भर्त्सन, डाँटना, दयाना, शोध करना ।

धरहर दे० (स्त्री०) सहाय, अवलम्ब, आश्रय, यथा:—  
यदि संसार असार महँ राम नाम भूँतिहार ।  
रवि सुतपुर धरहर करे नरहरि नाम उदार ॥

—प्रह्लाद चरित्र ।

धरा तत्० (स्त्री०) [धृ + धृ + धा] पृथिवी, भूमि, गर्भाशय, भेद, नादो, महादान विशेष ।—तल (पु०) भूतल, मर्त्यलोक, पृथिवीतल ।—धर (पु०) विष्णु, कूर्म; पर्वत ।—भर (पु०) [धरा + धमर] विग्र, ब्राह्मण, भूदेव ।

धराना दे० (क्रि०) अधीन होना, अधीन होना, धारना ।

धरित्री तत्० (स्त्री०) पृथ्वी, धरणी, भूमि ।

धरोहर दे० (पु०) न्यास, शांति, गिरों, रखा हुआ द्रव्य, बन्धक, रक्षा के लिये रखा धन ।

धरौना दे० (पु०) पुनर्विवाह ।

धर्तव्य तत्० (पु०) [धृ + तव्य] धारणीय, ब्राह्म, स्वातन्त्र्य, ग्रहण करने योग्य ।

धर्ता तत्० (पु०) धारण करने वाला; अधी ।

धर्म तत्० (पु०) [धृ + मर्] शुभकर्म, पुण्य, अथ,

सुकृत, न्याय, आचार, उपमा, यज्ञ, अहिंसा, सन्निपत्, उत्तम आचार, स्वभाव, रीति, कति-  
व्यवहार ।—कर्म (पु०) शुभ भाव बनाने वाले क्रिया; धर्मकार्य ।—काय (पु०) युद्ध ।—कृत (पु०) धर्म कर्म, शास्त्रविहित कर्म ।—कोष (पु०) धर्मसंचय ।—चारिणी (स्त्री०) सहधर्मिणी, नाय, भार्या, वनिता, पत्नी, स्त्री, लता विशेष ।—चिन्ता (स्त्री०) पुण्यभावना, सत्कर्म की चिन्ता ।

—जीवन (पु०) धर्ममय जीवन, धर्मानुयायी ब्राह्मण ।—ज्ञ (पु०) धर्मज्ञानयुक्त, धर्मिष्ठ, धार्मिक ।—ज्ञान (पु०) परलोक सम्बन्धी शुभ-  
शुभ ज्ञान, कर्तव्यज्ञान, धर्मवेद्य ।—तर्ष (पु०) धर्म की यथार्थता, धर्मरहस्य ।—द्रोही (पु०) धर्मघाती, पापिष्ठ, पापी, वैदन्दिन्दक, शास्त्रनिन्दक ।

—धुरन्धर (पु०) धार्मिकनेता, धर्म के कार्यों में आगे रहने वाला, धर्मतिमा, धर्माचार्य ।

—ध्वजी (पु०) दार्मिक, पाखण्डी, कपटी, किसी स्वार्थ के कारण धर्म करने वाला, दिखावे का धर्मात्मा ।—निष्ठ (पु०) धर्मिष्ठ, पुण्यवाह,

धर्मस्थापक ।—पत्नी (स्त्री०) अपने गौत्र की विवाहिता स्त्री, शास्त्रविधि के अनुसार विवाहिता पत्नी, धर्म की स्त्री, दत्त की कन्या ।—घाता (पु०) समपाठाध्यायी, सांघ पढ़ने वाला ।—मूर्ति (पु०) धर्म का स्वरूप, धर्मात्मा, धर्मावतार ।—याज्ञिक (पु०) पुरोहित, पुराण याचने वाला, यज्ञ करने वाला ।—राज (पु०) धर्म से राज्य चलाने वाला, न्यायी राजा, यमराज, सुधिष्ठिर का दूसरा नाम ।

—शाला (स्त्री०) उपासना गृह, प्रजा करने का घर, दानगृह, दान करने के लिये बनाया हुआ घर, अतिथिशाला, धर्मागृह, विचार स्थान ।

—शास्त्र (पु०) मनु आदि महर्षियों के बनाये शास्त्र व्यवस्था शास्त्र, स्मृतिशास्त्र, मनु, कृत्रि, विष्णु, हारीत, याज्ञवल्क्य, उशना, अश्विन, यम, आपस्तम्ब, संवत्, कात्यायन, बृहस्पति, परा-

शर, व्यास, शङ्ख, लिखित, दत्त, गौतम, आताप, यश्विष्ठ इन महर्षियों के बनाये ग्रन्थ धर्मशास्त्र

कहे जाते हैं ।—शील (पु०) धार्मिक, पुण्यशील, पुण्यात्मा ।—संहिता (स्त्री०) स्मृतिशास्त्र, धर्मशास्त्र

मं तत्० (५०) देव विषय, ब्रह्मा के दक्षिण गङ्ग से  
 उनकी उत्पत्ति हुई है, धाराह पुराण में लिखा है  
 कि सृष्टि उत्पन्न करने समय ब्रह्मा को बड़ी चिन्ता  
 हुई थी, उसी समय उनके दक्षिण घङ्ग से एक  
 मनुष्य उत्पन्न हुआ जिम्हाका नाम धर्म था। यह  
 पुत्र कानों में श्वेत कुण्डल कण्ठ में श्वेतमाला  
 और शङ्खों में चन्दन लगाये हुए था। ब्रह्मा ने  
 कहा—तुम ब्रह्मवाद वृषभ के समान ही श्वेतवर्ण  
 तुम ही ज्येष्ठ होकर इस सृष्टि का पालन करो।  
 इसी कारण सप्तयुग में धर्म ब्रह्मवाद, ब्रह्मा में  
 त्रिपाद, द्वापर में द्विपाद, और कलि में केवल  
 एक पाद होकर ब्रह्मा की रक्षा कर रहा है। गुण  
 ब्रह्म, क्रिया और जाति ये ही धर्म के चार पाद हैं,  
 वेद में धर्म का त्रिगुण नाम भी पाया जाता है  
 इसके दो सिर और सात हाथ हैं। एकादशी तिथि  
 में धर्म का वास है इसी कारण एकादशी तिथि  
 को उपवास करने वालों का यातक दूर होता है।

धर्मदास तत्० (५०) यह एक संस्कृत के कवि थे।  
 इनका बनाया विदग्धमुलमपहन नामक ग्रन्थ पाया  
 जाता है। लोगों का अनुमान है कि ये वैदुधर्म  
 के परंपरागत थे। इनके स्थान और समय के विषय  
 में किसी को भी कुछ ठीक पता नहीं है। तथापि  
 कतिपय विद्वानों का अनुमान है कि ये कवि  
 मगध देश के वासी थे क्योंकि मगध देश में वैदु-  
 धर्म का विशेष प्रचार था और इनका समय  
 खड़ीय ८वीं सदी के पूर्व ही होना चाहिये,  
 क्योंकि इसके बाद का समय शङ्कराचार्य का है  
 जो वैदुधर्मों के। कतिपय विद्वानों की सम्मति  
 है कि धर्मदास भोजराज से बहुत शर्वाचीन हैं  
 क्योंकि इनकी लेखनीय पुरानी नहीं मान्य  
 होती।

धर्मध्वज तत्० (५०) मिथिला के जनकवंशी एक  
 राजा का नाम, दण्डनीति, वेद और उपनिषद् में  
 इनका अगाध परिचित्य था, एक समय सुलभा  
 नाम की एक संन्यासिनी योगधर्म की शर्वा करती  
 हुई और धर्मध्वज की विद्वता की प्रशंसा करती  
 हुई मिथिला में उपस्थित हुई। धर्मध्वज के मोक्ष

शास्त्र संख्यन्धी-ज्ञान की परीक्षा लेने के हेतु अपने  
 अप ता रूप छोड़ कर एक सुन्दर स्त्री का रूप धारण  
 किया और यह भिचा मँगने के कथाज से राजा के  
 निकट उपस्थित हुई। बहुत देर तक राजा उस  
 संन्यासिनी से धर्म-संख्यन्धी बातें करते रहे। अन्त में  
 उस स्त्री का मोक्षशास्त्र संख्यन्धी ज्ञान देख कर उन्हें  
 आश्चर्य हुआ।

धर्मव्याध तत्० (५०) मिथिलावासी एक कथाध का  
 नाम, यह पूर्व जन्म में श्रोत्रिय ब्राह्मण था। एक  
 समय किसी राजा के साथ यह वन में अद्वैत  
 खेलने गया था, वहाँ उस श्रोत्रिय ब्राह्मण ने मृग-  
 रूपधारी किसी तपस्वी के बाण मारा। उसीके  
 शय से उसे यूद्ध योनि में जन्म लेना पड़ा। धर्म-  
 व्याध अपनी जाति के अनुसूच्य मंस विक्रय आदि  
 काम करता था, परन्तु उसका धर्मज्ञान बहुत  
 बढ़ा था। बहुत दूर दूर के विद्वान् ब्राह्मण  
 उससे धर्मज्ञान सीखने आते थे।

धर्मात्मा तत्० (५०) [ धर्म + आत्मा ] साधु, पुण्य-  
 शील, धार्मिक, धर्मनिष्ठ।

धर्माधिकरण तत्० (५०) [ धर्म + अधिकरण ]  
 राजा का विचार स्थान, न्यायालय, विचारालय,  
 धर्मालय।

धर्माधिकारी तत्० (५०) [ धर्म + अधिकारिन् ]  
 विचारकर्ता, विचारक, धर्मस्थान, धार्मिक, तप-  
 स्यादाता, दक्षिणी ब्राह्मणों की उपाधि विशेष।

धर्माध्यक्ष तत्० (५०) [ धर्म + अध्यक्ष ] विचार  
 कर्ता, न्यायप्रति, विचारक, न्यायाधिप।

धर्मानुसार तत्० (५०) [ धर्म + अनुसार ] धर्म के  
 अनुसार, धर्म की रीति से।

धर्मारण्य तत्० (५०) [ धर्म + अरण्य ] पुण्य स्थान  
 विशेष, तपोवन, महर्षियों के आश्रम, पवित्र वन।

धर्मावतार (५०) [ धर्म + अवतार ] धर्म का अव-  
 तार, धर्म का स्वरूप, बड़ा धार्मिक।

धर्मासन तत्० (५०) [ धर्म + आसन ] विचार का  
 आसन, न्यायकर्ता के बैठने का आसन।

धर्मिष्ठ तत्० (पु०) [धर्म + इष्ट] माधु पुण्यशील,  
पुण्यवान्, धर्मात्मा, धार्मिक ।

धर्मोपदेशक तत्० (पु०) [ धर्म + उपदेशक ] गुरु,  
आचार्य, धर्म के विषय का उपदेश देने वाला ।

धर्म्य तत्० (गु०) न्याय्य, धर्मसुक्त, उचित ।

धर्म्य तत्० (पु०) [धृप् + भृत्] प्रगल्भता, प्रागल्भ्य,  
अभय, साहस, धृष्टता ।

धर्मक तत्० (गु०) [धृप् + क्] साहसी, अहङ्कारी,  
गर्वित, धीर ।

धर्मण्य तत्० (पु०) [ धृप् + ञन्ट् ] साहस करण,  
पराभव करण, दुष्टता का व्यवहार, रति ।

धर्मित तत्० (पु०) [ धृप् + णिच् + क्त ] परिभूत,  
पराजय प्राप्त ।

धव तत्० (पु०) पति, स्वामी, भर्ता, स्वनाम प्रसिद्ध  
वृत्त विशेष ।

धवल तत्० (पु०) श्वेतवर्ण, शुक्ल, धौला, वृत्त विशेष ।  
(गु०) शुन्दर, श्वेतगुणयुक्त ।

धवलाल्य दे० (पु०) विद्याल ।

धवलानिदि तद्० (पु०) पर्वत विशेष ।

धवा दे० (पु०) जाति विशेष, कहार जाति, जो  
पानी भरते हैं ।

धसकना दे० (क्रि०) धसना, धस जाना, गिरना,  
पैठना ।

धसन दे० (स्त्री०) चोली भूमि, दलदल भूमि, धसने  
वालय स्थान ।

धसना दे० (क्रि०) चुभना, घुसना, धुसना, गड़ना ।

धसान, धसाव दे० (पु०) दलदल, पङ्किल भूमि ।

धसाना दे० (क्रि०) घुसाना, पैठाना, गडवाना,  
गड़ाना ।

धौगर दे० (पु०) एक हिन्दू जाति विशेष, जो प्रायः  
किसानी और कुलीगरी करती है ।

धौघना दे० (क्रि०) लिखमिन्न करना, निकम्मा बना  
देना, भकोसना, अकरना, अनुचित रीति से  
खाना ।

धौघल दे० (स्त्री०) निष्प्रयोजन भगवा, नटकनी,  
दिना कारण की लडाईं । (स्त्री०) अन्धपुत्रो।  
(गु०) भगडाधु, लडाका, कलहकारी ।

धौघधौघ दे० (स्त्री०) शब्द विशेष, तोप खादि  
की ध्वनि, धडाका ।

धौसना दे० (क्रि०) खौसना खौसना ।

धौसी दे० (स्त्री०) रोग विशेष, खौसी, खोपी, काण  
की बीमारी ।

धौई तद्० (स्त्री०) धात्री, उपमाता, दूध पिलाने  
वाली माता, दाई ।

धक दे० (स्त्री०) डर भय, धमकी, प्रभाव, घातक,  
रोय, ठाठवाठ, धूमधाम, नाम, प्रताप,  
कीर्ति ।

धाकर दे० (पु०) घणसङ्कर जाति विशेष ।

धाखा दे० (पु०) धूला, पलाश वृत्त ।

धागा दे० (पु०) तागा, झुत, डोरा, सूत्र ।

धाता तत्० (पु०) [ धा + तृण ] ब्रह्मा, विधाता,  
विष्णु, सूर्य । (गु०) पालक, रक्षक, धारक, भृश  
सुनि के पुत्र ।

धातु तत्० (पु०) शरीर धारक वस्तु, कफ, रक्त,  
पित्त, रस, रक्त, मौस, मेद, अस्थि, मज्जा, शुक,  
महाभूत यथाः—

पृथिवी, जल, तेज, वायु, आकाश । तद्गुण—  
गन्ध, रस, रूप, स्पर्श, शब्द, गेह, प्रसविल  
आदि, शब्दयोगि, प्रकृति, उपाकरण के धातु;  
धु, पच्, पठ् आदि । अष्टधातु—तेना, रुपा, कौसा,  
ताँवा, सीसा, राँगा, लोहा और धारा ।—मादिक  
(पु०) सेनामौखी ।—घादी (पु०) धातु परी-  
चक ।—घेदी (पु०) धातु-विद्यावेत्ता, धातुप्र-  
परीचक ।—साधिन् (गु०) धातु द्वारा प्रवृत्त,  
जिसके बनाने में धातु का प्रयोग किया गया  
हो । श्लोपधि विशेष ।

धात्वितर तत्० (गु०) [धातु + इतर] बिना धातु  
का, धातु रहित ।

घात्री तत्० (खी०) [ धा + तृण् + ई ] धाई, उप-  
माता, दाई, पृथिवी, ग्रामलकी वृत् ।—पत्र  
(५०) नट, लालीशपत्र, ग्रामलकी पत्र ।—पुत्र  
(५०) उपमाता का पुत्र, नट, नर्तक ।—फल  
(५०) ग्रामलकी, श्रायला ।

धान तद्० (५०) धान्य, समुप, तपडुल, बकला  
सहित तपडुल, चाउल, चावल, यिन कूटा  
चावल ।

धानी दे० (क्रि०) दौड़ना, काम करना, टहल करना,  
परिभ्रम करना, पूजा करना, अर्जन करना ।

धानाचूर्ण तत्० (५०) भुंजे जय का चूर्ण, शक्त,  
समुषा ।

धानी दे० (स्त्री०) धान विशेष, धान के समान एक  
प्रकार का धान, रङ्ग विशेष, हरे और पीले  
रङ्ग के मिलाने से जो रङ्ग होता है ।

धानुक तद्० (५०) धानुक, धनुहर, तोरन्दाज ।

धान्य तत् (५०) अन्न, बिना कूटा चावल, चार  
तिल का परिमाण, धनिया ।—कोष्टक (५०)  
धान रखने का गृह, गोला ।—चमस (५०)  
चिपिरक, चिहडा ।—धेनु (५०) दान करने के  
लिये अन्न की बनी धेनु ।—धीज (५०) बीज का  
धान, बोने के लिये धान ।—राज (५०) शय्य  
विशेष, यद्य, जौ ।—राशि (५०) धान की  
राशि ।

धाप दे० (५०) एक फुट का माँप, एक सौंठ में  
जितनी दूर तक दौड़ा जा सके, ऊपर चढ़ने की  
पैडियाँ, जिन पर पैर रखा जाता है ।

धाभाई दे० (५०) कोका, दूधभाई, धपनी धाप का  
लड़का ।

धाम तत्० (५०) धामत्, गृहवसति स्थान, घर, स्थान,  
गेद, देग, स्थान, आश्रय, अग्रलम्ब, प्रमा, दीप्ति,  
राश्री, प्रभाव ।—निधि (५०) सूर्य, रवि,  
दिव्याकर ।

धामा दे० (५०) धैतनिर्मित पात्र विशेष, यंत्र का  
टेकरा, चङ्गेरा ।

धामिन दे० (५०) सर्प की एक जाति, इस जाति के  
सर्प दौड़ने में बड़े तेज होते हैं ।

धाय दे० (स्त्री०) दूध पिलाने वाली, धात्री, उप-  
माता, धाई ।—मारना दे० (धा०) पुकार के  
रोना, रचक, न मिलने के कारण रोना, हाय  
हाय करके रोना ।

धार तत्० (५०) [ धृ + चञ् ] देना, अण, जलधारा,  
तीर, तट, किनारा, अन्न के आगे का भाग, प्रख-  
रता, तीक्ष्णता ।

धारक तत्० (५०) [ धृ + णञ् ] धारणकर्ता । (दे०)  
शशी, अधमर्ण, धरता ।

धारण तत्० (५०) [ धृ + णिच् + घनट् ] ग्रहण, अय-  
सम्बन्ध, रक्षण, रखना, परिधान करना, अण  
लेना ।

धारणा तत्० (स्त्री०) [ धारण + णा ] बुद्धि, विषय  
ग्रहण करने वाली बुद्धि, उचित मार्ग पर स्थिति,  
मन की स्थिरता, विश्वास, उपाहा, स्मरण,  
चेत ।

धारना दे० (क्रि०) रखना, स्मरण करना, चेत  
करना ।

धारस दे० (स्त्री०) दाढस, धैर्य, धीरता ।

धारा तत्० (स्त्री०) रीति, व्यवहार, आचरण, प्रकार,  
प्रणाली, प्रकरण, प्रवाह जलपात, सेता, स्रोत ।

—वाहिक (५०) परम्परागत, क्रमागत, अवि-  
च्छिन्न प्रचलित, बिना त्रिच्छेद का, लगातार आया  
हुमा ।—यन्त्र (५०) जल को कल, कौशरारा,  
जल फेंकने का यन्त्र (५०) ।—सार (५०)  
[ धारा + आसार ] भारी वर्षा, मुसनाधार वर्षा ।

धारि दे० (स्त्री०) धाड़ा डालने वाली का समूह,  
हाकुर्थी की सेना ।

धारित तद्० (५०) धृत, धारण किया हुआ ।

धारी दे० (स्त्री०) देवा, लकीर, एक पैपे का नाम ।  
(५०) रखने वाला, शशी ।—द्वार (५०) कपड़ा  
विशेष जिनमें लकीर हो ।



धार्तराष्ट्र तत्० (पु०) भृतराष्ट्र राजा के पुत्र दुर्वीधन आदि, काला चैर और चोचवाला, हस, कलहस, एक प्रकार का सर्प ।

धार्मिक तत्० (गु०) पुण्यात्मा, धर्मशील, धर्मनिष्ठ, धर्माचरण करने वाला ।—ता (स्त्री०) धार्मिकत्व, धर्मशीलता, धर्मभाव ।

धार्य तत्० (गु०) धारणीय, धारण करने योग्य, ग्राह्य ।

धाव दे० (पु०) दौड़, वृक्ष विशेष ।

धावक तत्० (गु०) धावनकर्ता, दौड़नेवाला, द्रुत-गामी, हरगारा, द्रुत । (पु०) मस्कृत के एक कवि का नाम । ये कवि बहुत ही प्राचीन और प्रसिद्ध हैं । ये कवियारामिल सैमिल के समकालीन हैं । इनके विषय में विलक्षण विलक्षण दन्तकथाएँ प्रचलित हैं । कोई कहता है श्रीहर्ष के नाम से इन्होंने नाटिका बनायी थी, और बहुत धन भी पाया था । परन्तु इस दन्तकथा में प्रमाण कुछ भी नहीं है । हों काठ्यप्रकाश की “श्रीहर्षोद्धार्याकादीनामिषधनम्” यह पंक्ति प्रमाण में कही जा सकती है । परन्तु यह पाठ ठीक नहीं है क्योंकि इस पाठ का पुष्ट करने वाला प्रमाण कहीं दूढ़ने पर भी नहीं मिलता है । अतएव “श्रीहर्षोद्धार्याकादीनामिषधनम्” काठ्यप्रकाश का, यही ठीक पाठ मानना चाहिये । इस बात को सिद्ध करने के लिये प्रमाण भी बहुत हैं । अभिनन्दन कवि ने कहा है “श्रीहर्षोविततार गद्यकवये वाणाय याणी फलम्” इति, इसी प्रकार और भी प्रमाण उद्धृत किये जा सकते हैं । अतएव इनको श्रीहर्ष से सम्बन्धयुक्त न करके कालिदास से प्राचीन और भास, या रामिल सैमिल के समकालीन मानना ही युक्तियुक्त प्रतीत होता है ।

धाघन तत्० (गु०) [धाघ + अन्ट] वेग पूर्वक गमन, दौड़ना, गति, फिराव । (दे०) द्रुत, सन्देशिया, हरकार ।

धाघना दे० (क्रि०) दौड़ना, द्रुत उधर धूमना, रोड़ना, अर्चना ।

धाघनी दे० (स्त्री०) द्रुती, परिचारिका ।

धाघमान तत्० (गु०) दौड़ता हुआ, भागत, द्रुत-गामी, शीघ्रयायी ।

धाघा दे० (पु०) दौड़, चढ़ाई, आक्रमण, हाथ ।  
—मारना (घा०) चढ़ाई करना, आक्रमण करना, हाथ मारना ।

धाह दे० (स्त्री०) चीख, दुःख का शब्द, क्रक, हाथ की ध्वनि ।

धिक् तत्० (अ०) निन्दार्थ सूचक शब्दय ।

धिक्कार तत्० (पु०) फटकार, तिरस्कार ।

धिक्कारना दे० (क्रि०) निन्दा करना, फटकारना, तिरस्कार करना ।

धिक्कारी दे० (गु०) शपित, निन्दित, गर्हित, अपमानित ।

धिगाना दे० (पु०) हौक, पुकार, उपद्रव ।

धिघा दे० (स्त्री०) बेटा, पुत्री, कन्या, सतया ।

धिख्यो दे० (क्रि०) धमकाया, डाँटा, फटकारा ।

धिखाना दे० (क्रि०) धमकाना, ताड़ना देना, हाथ पहुँचाने की धमकी देना ।

धिषण तत्० (पु०) बृहस्पति, देवगुरु, देवाचार्य ।

धिषणा तत्० (स्त्री०) बुद्धि, ज्ञान, मति ।

धी तत्० (स्त्री०) मति, बुद्धि, ज्ञान ।

धीग, धीगडा दे० (पु०) उपपत्ति, जार, लगुआ ।

धीगार्धीगी दे० (स्त्री०) उच्छृङ्खल व्यवहार, पतुवित रीति, असभ्य कार्य ।

धीति तत्० (स्त्री०) विपत्ति, तृष्णा, प्रतीति, विश्वास, यथा:—

मेहि द्वार वैठाय सखि, तू कित जल हित जाय ।

—धीति लाल तेरो कहौं, दधि घुटाय ब्रज लाय ।

—कवि वाक्य

धीम दे० (पु०) सुस्त, शिथिल, आलसी, धीर ।

धीमत् तत्० (गु०) बुद्धिमान्, बुद्धिष्ण ।

धीमर दे० (पु०) एक जाति विशेष, बहार जाति ।

धीमा दे० (गु०) सुस्त, शिथिल, आलसी, काम्य धीर ।

धोमाई दे० (खी०) धीरता, धैर्य, स्थिरता ।  
 धोमान् तत्० (गु०) बुद्धिमान्, चतुर, निपुण, दक्ष,  
 कुशल ।

धीमे धीमे दे० (ब०) शनैः शनैः, धीरे धीरे ।  
 धीय दे० (खी०) बुद्धि, मति, कन्या, पुत्री, तनया ।  
 धीर तत्० (गु०) धैर्यान्वित, पण्डित, बलवान्, अच-  
 झुल, सुस्थिर, शान्त, स्थिरमता, विनीत, शिष्ट ।  
 —ता (खी०) धीरस्वभाव, शिष्टता, श्रद्धा,  
 धैर्य ।—स्व (पु०) शान्त स्वभाव ।—प्रशान्त  
 (पु०) नाटकात्मि में सर्वगुण युक्त मनुष्य ।  
 —ललित (पु०) अति साहसी मनुष्य, इस शब्द  
 का प्रयोग प्रायः नाटक में ही किया जाता है ।  
 —स्कन्ध (पु०) महिष, वीर, वृषभ ।

धीरज तत्० (पु०) धैर्य, धीरता, स्थिरता, बहुत  
 विघ्नों से भी नहीं चञ्चलना ।

धीरा तत्० (खी०) शिष्टा, विनीता, नायिका विशेष,  
 मानिनो प्रणामा मध्या नायिका, मध्या धीर प्रौढा  
 नायिकाओं का धीरा एक भेद है यथा—  
 “वचननि की रवनानि सीं, धियहि जनावत कोप,  
 मध्या धीरा कहत है, ताहि सुमति रस सोप”  
 —रघुराज ।

धीराधरा तत्० (खी०) [धीरा + अधीरा] मानिनी  
 मध्या प्रणामा नायिका यथा—  
 “रगि उदास हूँ नाहर्को, डर दिखरावे वाम,  
 प्रौढ़ अधीरा धीरतिय, वरनत कधि मतिराम”  
 —रघुराज ।

धीरिया दे० (खी०) कन्या, दुहिता, बेटा ।  
 धीरो दे० (खी०) कनीनिका, तारा, चाँलों में की  
 पुतली ।  
 धीरे दे० (ब०) शनैः, मन्द, धीरता से, स्थिरता से ।  
 धीरेधीरे दे० (अ०) कोमलता से, मन्दमन्द, शनैः  
 शनैः ।

धीरोदात्त तत्० (पु०) [धीर + उदात्त] नायकविशेष,  
 अति साहस तथा दया से युक्त जिसके व्यवहार हों ।  
 धीरोद्धत तत्० (पु०) [धीर + उद्धत] नायकभेद,  
 नाटक का नायक, जो साहसी हो वीर हो, अपनी  
 प्रशंसा आप करने वाला हो ।

धीवर तत्० (पु०) मत्स्यजीवी जाति विशेष; कैवर्त,  
 जालजीवी, मच्छीमार ।

धीशक्ति तत्० (खी०) बुद्धिसामर्थ्य, शान्तरिक,  
 बुद्धि की तीव्रता ।

धीसचिव तत्० (पु०) मन्त्री, अमात्य, बुद्धिजीवी,  
 राजकीय कार्यों में सम्मति देने वाला मन्त्री ।

धुँआँ तत्० (पु०) धूम, अग्निपताका, अग्निविन्द,  
 वायुविशेष, चिताधूम । यथा—  
 धुँआँ देखि खर दूषण केरा  
 जाइ सुपनया रावण प्रेरा”

धुँगार दे० (पु०) धौंक, धकार, धौकन ।

धुँगारना दे० (क्रि०) धकारना, धौकना ।

धुँध दे० (पु०) उदर की उष्णता, गरमी, चोंधलाई,  
 अंधेरा, अंधकार ।

धुँधकार दे० (पु०) अंधेरा, अन्धकार, तम, अंधकार ।

धुँधला दे० (गु०) अंधला, समल, अंधन्ध, अंधकार ।

धुँधलाई दे० (खी०) अन्धेरा, अन्धलाई ।

धुँधु तत्० (पु०) राक्षस विशेष, यह प्रसिद्ध मधु  
 राक्षस का पुत्र था यह राक्षस उतङ्ग मुनि के  
 आश्रम के पास तेतीली समभूमि में रहा करता  
 था । जनसंहार करने के लिये इस राक्षस ने बहुत  
 दिनों तक मरुच्छेत्र में चित्त छोकर तपस्या की ।  
 धीरे धीरे यह एक वर्ष तक श्वाश बन्द कर लेता  
 एक वर्ष के बाद जब एक दिन वह श्वाश लेता  
 था तब वन पर्वत सब काँप जाते थे । यह देखकर  
 देवता भी भयभीत हो जाते थे । बृहदश्व के पुत्र  
 कुवलयश्व ने इसे मारा था ।

धुँधेला दे० (पु०) छली, कपटी, हठी, दुराग्रही ।

धुकड़पुकड़ दे० (पु०) धड़क, हृत्कम्प, कँपकपी,  
 घबराही, धपपहाट, चबड़ाहट, झुलाव, हिलाव ।

धुकड़ी दे० (खी०) बैनी, तोड़ा, रुपये रखने की  
 छेनी ।

धुकधुकी दे० (खी०) एक प्रकार का गहना जो गले  
 में पहना जाता है । व्याकुलता, सोच, घबड़ाहट ।

धुत्ता दे० (पु०) धूर्तता, क्षल, कपट, धोखा ।—देना  
 (वा०) धोखा देना, छलना, कपट करना ।

धुन दे० (स्त्री०) ली, अभिलाष, मनोरथ, अभ्यास, चसका ।

धुनकना दे० (क्रि०) हुनना, धुनना रुई धुनना ।

धुनवी दे० (स्त्री०) छोटा धनु, धनुष, धनुही ।

धुनिया दे० (पु०) जाति विशेष, बेहना, तुमने वाला ।

धुनिहाव दे० (पु०) हडफूटन, हड्डी की पीडा, शरीर की पीडा ।

धुनेहा दे० (पु०) तुमने वाला, धुनियाँ ।

धुन्ना दे० (क्रि०) धुनना, गिर हिलाना, गिर धुनना ।

धुनुमार तत्० (पु०) कुबलयाश्वराजा, गृहदरय का पुत्र, शक्रगोप, गृहधूम, गोलमाल, कुहराम, कोलाहल ।

धुवला दे० (पु०) सहंगा चौधरा, स्त्रियों के पहनने का कपडा ।

धुमला दे० (पु०) अप्रकाश, अंधरा, बहुत स्वच्छ नहीं ।

धुमलाई दे० (स्त्री०) अंधियारा, अस्वच्छता ।

धुर तत्० (पु०) भार बोजा, जुवा, गाड़ी या हल खींचने के समय जो बैलों के कन्धे पर रक्खे जाते हैं । आदि, आरम्भ, अन्त, किनारा, छोर ।—से धुरतक (या०) इस सिरे से उस सिरे तक, आदि से अन्त तक ।

धुरपद दे० (पु०) एक प्रकार के गीत का नाम ।

धुरसाँझ दे० (स्त्री०) सन्ध्या समय, गोपूली का समय ।

धुरन्धर तत्० (पु०) [ धुर + धृ + र ] धुरीण, भारवाहक, गाड़ी हल आदि खींचनेवाला । (पु०) बड़े कामों का प्रबन्ध करने वाला, प्रधान, नेता, मुखिया, अगुआ ।

धुरवा दे० (पु०) मेघ, बादल, यथा—

“धु धुधारे धुरवा चहुँपासा  
समुझि परै नदि धरनि अकासा ।”

धुरव्य दे० (पु०) मेघ, बादल ।

धुरा तत्० (स्त्री०) भार, बोजा, चिन्ता, रथ की धुरी ।

धुरियाना दे० (क्रि०) मटियाना, माटी लगाना, धूल लगाना, धूल चढाना ।

धुरी दे० (स्त्री०) लकड़ी या लोहे का दरवा जिस पर गाड़ी के पहिये लगाये जाते हैं ।

धुरीण तत्० (पु०) [ धुर + ईण ] भार वहन करने वाला, प्रधान, अष्ट, धुरन्धर, साहसी, मुखिया, अगुआ ।

धुर्य तत्० (पु०) धुरन्धर, धुरीण, बोज उठाने वाला, भारवाही । (पु०) अथम नामक शोधधि वृषभ, बैल, प्रधान, अष्ट, मुखिया, अगुआ ।

धुलना दे० (क्रि०) साफ़ होना, निर्मल होना, स्वच्छ होना, धोया जाना, पवित होना ।

धुलवाना दे० (क्रि०) साफ़ करना, स्वच्छ करना, धुलाना ।

धुलाई दे० (स्त्री०) कपड़े धोने का काम, वस्त्र धोना, वस्त्र साफ़ करना, कपड़े साफ़ करने की मजूरी ।

धुलाना दे० (क्रि०) निर्मल कराना, साफ़ कराना, कपड़े साफ़ कराना ।

धुलेंडी दे० (स्त्री०) त्योहार विशेष, होली का दूसरा दिन, जिस दिन लोग धूल उढाते हैं ।

धुरसा दे० (पु०) लोई, कर्ण वस्त्र विशेष, एक प्रकार का कनी कपडा जो जाड़े के दिनों में ओठने के काम में आता है ।

धूर्वा दे० (पु०) धूम, धुआँ ।

धूर्वाधार दे० (पु०) बहुत धुआँ । (पु०) धूर्वाहा, भगाधा, हराया, सजाया हुआ, बनाया हुआ, सयारा हुआ ।

धूर्वारा दे० (पु०) धूर्वा निकलने का मार्ग, मार्ग, जिससे धूर्वा निकाला जाता है ।

धुधरा दे० (पु०) अन्धेरा, अन्धकार ।

धूत तत्० (पु०) [ धू + त ] कम्पित, कपाया हुआ, (दे०) धूर्त, झलो, झलिया, कपटी ।

धूति दे० (स्त्री०) धूर्तता, ठगई, झल, कपट, तथा—  
“मूलसी रघुवर सेवकहि सके न कलियुग धूति” ।

धूना दे० (गु०) राल एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य, यह एक वृक्ष का गोंद होता है ।

धूनी दे० (स्त्री०) धूर्पा, आग, अग्निकुण्ड, जिसमें साधु लोग आग रखते हैं और अपने भक्तों को उसी धूनी से भस्म निकाल कर दिया करते हैं । भूतशाधा दूर करने के लिये कतिपय श्रेयधियों का धूम ।—देना (वा०) जला देना, समाधि देना, मृत साधु का अन्तिम संस्कार करना ।—रमाना (वा०) साधु होना, घर छोड़ के निकल जाना, योगी का वेध धरना ।—लगाना (वा०) स्थिर होना, हट जाना, हट करना ।—लेना (वा०) आग तापना, पञ्चाग्नि लेना ।

धूप दे० (स्त्री०) रौद्र. घाम, तपिश, किरण, राशि, धर्म । (गु०) सुगन्ध काष्ठ-विशेष, जो देवपूजा में जलाया जाता है । गुग्गुलु ।—काल (गु०) गर्मी का समय, ग्रीष्मकाल, सराना, भगवान् के सामने नैवेद्य अर्पण करना ।

धूपना दे० (क्रि०) धूप देना, धूप जलाना ।

धूपित दे० (गु०) धूप दिया हुआ, धूप से वासा गया, धूप से सुगन्धित किया हुआ ।

धूम तत्० (गु०) भीगी लकड़ी के संयोग से अग्नि से निकले परमाणु, धुँआ, अग्निचिह्न ।—केतन (गु०) अग्नि, अन्न, केतुग्रह ।—केतु (गु०) अग्नि, उत्पात का चिह्न विशेष, उत्पात का प्राकृतिक चिह्न, शिष्यायुक्त धूम के आकार का तारा, ग्रह-भेद ।—ध्वज (गु०) अग्नि, अन्न, चिह्न ।—पान (गु०) तमाकू का धूम पीना, बीड़ी आदि का पीना ।—प्रभा (स्त्री०) धूम्रान्धकार नामक एक नरक विशेष ।—यन्त्र (गु०) इन्ड्रिन, जो वाष्प के सहारे चलता है ।—घाहिनी (स्त्री०) रेलगाड़ी । (दे०) राला, हलचल, कोलाहल ।—घाम (स्त्री०) उत्सव की भीड़ ।

धूमावती तत्० (स्त्री०) दश महाविद्याओं के अन्तर्गत एक महाविद्या । मन्त्रशास्त्रों में इसकी उल्लेखित रस प्रकार लिखी है । एक समय पार्वती ने धूप से व्याकुल होकर, महादेव से खाने की वस्तु माँगी, परन्तु महादेव नहीं दे सके । इसी कारण पार्वती

ने महादेव ही को खा डाला । परन्तु इससे पार्वती के शरीर से धूम निकलने लगा । तभी से पार्वती का नाम धूमावती प्रसिद्ध हुआ । पुनः महादेव ने अपना शरीर कल्पित करके कहा “देवि ! त्वं तुमने मुझको खालिया है तब तुम विषया होगई अतएव अब से तुमको विषया वेद्य से रहना चाहिये इसी वेद्य में लोग तुम्हारी पूजा करेंगे और अब से तुम्हारा नाम धूमावती हुआ । पुराणसिद्धि के लिये कृष्णचतुर्दशी को धूमावती का जप किया जाता है ।

धूमरा, धूमल, धूमला दे० (गु०) मटमैला, धुँसा सा रङ्ग, धुमैला ।

धूमा दे० (गु०) धूमरा, धूमला, मटमैला, धुँसा सा रङ्ग ।

धूमो दे० (गु०) उष्णता, उवद्रवी ।

धूम तत्० (गु०) कृष्ण रक्त मिश्रित वर्ण, कृष्ण लोहित वर्ण, बैंगनी ।—पान (गु०) धूर्पा पीना ।—पानयन्त्र (गु०) डुङ्गा ।

धूम्रलोचना तत्० (गु०) एक राक्षस का नाम, दान-वेन्द्र शुम्भ का सेनापति, शुम्भ ने इसीके ६० हजार सेना के साथ, भुवनेश्वरिणी महामाया को पकड़ने के लिये भेजा था । महामाया के डुङ्गर से ६० हजार सेना के साथ धूमलोचना भस्म होगया ।

धूम्राक्ष तत्० (गु०) एक राक्षस का नाम ।

धूर दे० (स्त्री०) धूम, रज, रेत ।

धूरा दे० (गु०) धूर्ण, सफूफ ।

धूरि दे० (स्त्री०) धूमि ।

धूरी दे० (स्त्री०) धुरी, धूमि ।

धूर्जटि तत्० (गु०) महेश्वर, महादेव, शिव ।

धूर्त तत्० (गु०) वज्रुक, प्रसारक, शठ, लज ।—ता (स्त्री०) शठता, ललाता, प्रवृत्तना ।

धूल, धूलि दे० (स्त्री०) रज, रेणु, धूरि ।

धूसना दे० (क्रि०) निन्दित करना, अपमान करना, कोसना ।

धूसर तत्० (गु०) रंजित पावदुर्धर, हलका पीला रङ्ग, मटिया रङ्ग ।

धृहा दे० (गु०) धोखा, एक प्रकार के खेल का मध्य-स्थान, चञ्चापुरुष जो खेल में गाढ़ते हैं।

धृत तत्० (गु०) [धृ + क्त] धारणा विशिष्ट, धारणा किया हुआ। अथवाधी, पकड़ा हुआ, गृहीत, धारित।—कमुकेप (गु०) धनुर्वाणधारी, घोड़ा, बोर।—धृतपट (गु०) गृहीत वस्त्र, वस्त्र-धृत, कपड़ा पहना हुआ।—अमन (गु०) [धृत + आत्मन] जितेन्द्रिय, यमी, सुस्थिर।

धृतराष्ट्र तत्० (गु०) शान्तनुनन्दन विश्वित्रवीर्य का क्षेत्रज पुत्र, इनकी माता काशिराज की पुत्री अम्बिका थी, काशिराज की दूसरी कन्या अम्बालिका भी विश्वित्रवीर्य ही से ब्याही गई थी, अम्बालिका के गर्भ से पाण्डु उत्पन्न हुए थे। धृतराष्ट्र का विवाह गान्धारराज सुवल की कन्या गान्धारी से हुआ था। गान्धारी के गर्भ से धृतराष्ट्र के एक सौ पुत्र हुए थे और एक कन्या। दुषोधन आदि इन्हींके पुत्र थे। कन्या का नाम दुःशला था। यह विन्धुराज जयद्रथ को ब्याही गई थी। महाभारत के युद्ध में इनके सभी पुत्र मारे गये। गान्धारी के साथ धृतराष्ट्र वन में चले गये। इ महीने वहाँ रहने पाये थे कि इतने में उस वन में आग लगी, अन्धराज धृतराष्ट्र दौड़ नहीं सकते थे, अतएव वहाँ तल गये।

(२) नागविशेष, यह क्रुद्र का पुत्र था, इसके साथ पाण्डवों का विरोध था। अश्वमेध का घोड़ा लेकर अर्जुन मणिपुर गये। वहाँ अर्जुन पुत्र वधु-वाहन ने घोड़ा पकड़ लिया। पिता पुत्र में लड़ाई हुई, अर्जुन मारे गये। वधुवाहन की माता चित्राङ्गदा और अर्जुन को पत्नी उरूपी वहाँ आकर विलाप करने लगी। उरूपी की सम्मति और माता की आज्ञा से वधुवाहन सजीवन मणि लेने के लिये पाताल गये। वहाँ धृतराष्ट्र नामक नाग के कहने से घासुकी ने मणि देना आसानी कर दिया अतएव वधुवाहन और घासुकी में लड़ाई हुई। लड़ाई में घासुकी हार गया और उसने सजीवन मणि वधुवाहन को दे दिया। यह देखकर धृतराष्ट्र ने अपने दो पुत्रों को अर्जुन के पास भेजा।

अपने पिता की आज्ञा के अनुसार उन्होंने कृष्ण का सिर काट कर एक वन में फेंक दिया। इस अर्जुन का शरीर मस्तक गुरुय देखकर वहाँ हाहाकार मच गया। अन्त में श्रीकृष्ण धृतराष्ट्र के दोनों पुत्रों को मारकर अर्जुन का मस्तक से बाँधे। यह मस्तक अर्जुन के शरीर से लौट दिया गया और सजीवनमणि के स्पर्श से अर्जुन पुनः जी उठे।

धृति तत्० (स्त्री०) [धृ + क्त] धैर्य, मन की स्थिरता, धारणा, सुल, योग विशेष।

धृतिमान् तत्० (गु०) स्थिरचित्त, स्थिरामन, धैर्यावलम्बी, धीर, गम्भीर।

धृष्ट तत्० (गु०) [धृष्ट + क्त] प्रगल्भ, साहसी, उत्साही, निर्लज्ज चतुर्विध नायक के अन्तर्गत एक नायक विशेष। यथा:—

“करै दोष निरसंक जो डरे न तिय के मान।

लाज धरै मन में नहीं नायक धृष्ट निदान ॥”

रसरान।

—ता (स्त्री०) डिठारं, प्रगल्भता, निर्लज्जता, धृत्ता, मचलाहट, साहस।

धृष्ट्यु तत्० (गु०) [धृष्ट + क्तु] धृष्ट, प्रगल्भ, निर्लज्ज।

धृष्ट्युम्न तत्० (गु०) पाञ्चालराज द्रुपद का पुत्र और पृथक का पौत्र, महाभारत युद्ध में इस पुत्र योक्तासुर द्रोणाचार्य का सिर काटा था और युद्ध के अन्तिम दिन रात को द्रोणाचार्य के पुत्र अश्वत्थामा ने छिप कर पाण्डवों के शिविर में घुस कर अपने पितृघाती धृष्ट्युम्न को मार डाला था।

धैर्यामुद्रि दे० (स्त्री०) सुकामुकी, पुष्पापुरासी। धेनु तत्० (स्त्री०) सवत्सा गौ, तवमधुता गौ, दुधार गाय।

धेनुक तत्० (गु०) रतिवन्धु विशेष, अमुर विशेष, यह गर्दभ के आकार का था। नरमौत्र लोग इस राक्षस को बलराम ने मारा था। एक समय श्रीकृष्ण और बलराम गौ चराने चराने ताल

वन में चले गये और वहाँ ताल तोड़ने लगे। उसी वन में धेनुक रहा करता था। ताल गिरने का शब्द धुनकर धेनुक इनकी श्रावण दौड़ा। बलराम ने उसके दोनों पैर पकड़ कर ताल के पेड़ पर उसे पटक दिया इसीसे उसकी मृत्यु हुई।

**धेनुमती तल (खी०)** एक नदी का नाम, गोमती।  
**धेला दे० (पु०)** धधेला, धाधा पैसा, एक प्रकार का सिक्का, जिसका दाम धाधा पैसा होता है।

**धेली दे० (खी०)** धधेली, धाधा रुपया।  
**धैर्य तल (पु०)** धीरता, स्थिरता, अवाञ्छित, उमर, सहिष्णुता।—**कलित (पु०)** धैर्यशाली, धीर।  
—**च्युत (पु०)** धैर्य, चञ्चल, अधीर, असहिष्णु।  
—**शाली (पु०)** स्थिरता विशिष्ट, धीर, शान्त।

**धैर्य तल (पु०)** गाने का एक स्वर विशेष।  
**धोआ दे० (पु०)** फल की भेंट, उपहार, उपायन।  
**धोई दे० (खी०)** बिना खिलके की पूँग या उड़द की दास।

**धोधा दे० (पु०)** टीला, मट्टी का टेर, मट्टी का गोला।

**धोवाला दे० (पु०)** धूमर, धुआँ निकलने की राह।  
**धोक दे० (पु०)** देवता या गुरु को प्रणाम करना, दृष्टवत् करना।

**धोकड़ दे० (पु०)** बलशाली, महायसी, पराक्रमी।  
**धोखा दे० (पु०)** छल, कपट, धम, मुलावा, छलना, प्रतारणा, प्रवञ्चना।—**खाना (वा०)** छला जाना, वञ्चित होना, ठगा जाना।—**देना (वा०)** ठगना, छलना, बहकाना, मुलावा देना।

**धोता दे० (पु०)** धूर्त, छली, कपटी।  
**धोती दे० (खी०)** पहनने का वस्त्र, धातवस्त्र, कमर में पहनने का वस्त्र।  
**धोना दे० (क्रि०)** पसारना, प्रचालन करना, साफ करना।

**धोप दे० (खी०)** एक प्रकार की तलवार।  
**धोब दे० (पु०)** कपड़े साफ करने का काम, धोने का काम।

**धोबिन दे० (खी०)** धोबी की स्त्री, रजकी।

**धोवी दे० (पु०)** रजक, कपड़े धोनेवाली जाति।  
**धोपी तल (पु०)** संस्कृत के एक प्रसिद्ध कवि,

‘पवनदूत’ नामक एक ग्रन्थ, इन्होंने संस्कृत भाषा में बनाया है जो मैघदूत के समान है। ये कवि वङ्गदेश के निवासी थे। बङ्गाल के राजा लक्ष्मणसेन के ये समासद थे। ये कवि जयदेव कवि के समकालीन थे। जयदेव का समय ख्रीष्टीय १२वीं सदी का पूर्वभाग निर्णीत हो चुका है। उसीके अनुसार धोपी कवि का भी समय मानना चाहिये। जयदेव ने इन्हें ‘‘कविरमापति’’ कहा है।

**धोरिणी तल (खी०)** परम्परागत बात, क्रमागत रीति।

**धौ दे० (पु०)** वृद्ध विशेष, धायवृद्ध।  
**धौ दे० (पु०)** धैर्य, धाध मन, बीस सेर, एक मन का धाधा।

**धौक दे० (खी०)** रोग विशेष, कायखराब।  
**धौकना दे० (क्रि०)** फूँकना, भायी चलाना, हौकना।

**धौकनी दे० (खी०)** भस्त्रा, भापी, चमड़े का एक यन्त्र जिससे हवा निकालते हैं।

**धौका दे० (खी०)** धौकनी, भस्त्रा।  
**धौज दे० (खी०)** विवेचना, विचार, परिशीलन।  
**धौस दे० (पु०)** धमकी, मुलावा, चढ़ाई, आत्ममग्न, अभकी, दौड़।

**धौसा दे० (पु०)** नगरा, दुन्दुभि, बड़ा नगरा।  
**धौसिया दे० (पु०)** प्रधान, अगुचा, नेता, दल का प्रधान, दौड़ के दल का प्रधान।

**धौत तल (पु०)** प्रचालित, धोया हुआ, रवेत, परिष्कृत।

**धौमक तल (पु०)** देश विदेश।  
**धौम्य तल (पु०)** पाण्डवों के पुरोहित का नाम, इनके ज्येष्ठ भ्राता का नाम देवल था। चित्ररथ की सम्मति से पाण्डवों ने धौम्य को अपना पुरोहित बनाया था। नारद ने प्रसन्नता पूर्वक इनके मृत्यु-देय का एक-श्रोत्र दिया था। उसी श्रोत्र की

शिखा धेन्व ने युधिष्ठिर को दी थी। और उन्हीं  
खोर के प्रभाव से युधिष्ठिर को अल्प स्वासो  
मिली थी।

घौर दे० (५०) कपोत विशेष कन्नूर की एक जाति,  
जहली कन्नूर।

घौरा दे० (५०) धवल, श्वेत, शुक्ल; युध् + त् +

घौर दे० (खी०) घण्ट, चपत, घण्टा, घाप।

—जड़ना (वा०) पीटना, सुकना मारना।

—मारना (वा०) —लगाना (वा०) घण्ट मारना,  
धोल जड़ना।—लगाना (वा०) हानि उठाना,  
घटी सहना, हत य होना, मनोरथ भङ्ग होना,  
निराश होना।—घण्टा (वा०) मारपीट, मार  
कूट, चोट चपेट।

घौरा दे० (५०) घौरा, धवल, श्वेत, शुक्ल, युध् +

—गिरि (५०) धवल गिरि, हिमालय पर्वत।

घौराना दे० (क्रि०) घैलियाना, घण्ट मारना,  
चपत जमाना।

ध्यात० तत्० (५०) [ ध्यै + क्त ] विचारित,  
चिन्तित, सोचा हुआ।

ध्यातव्य तत्० (५०) [ ध्यै + तव्य ] ध्यान के  
योग्य, ध्यान देने योग्य, ध्यायन्त उपयोगी, अति-  
शय प्रिय।

ध्याता तत्० (५०) [ ध्यै + तृण ] ध्यानकर्ता,  
विचारक।

ध्यान तत्० (५०) [ ध्यै + शान्त् ] सोच, विचार,  
चिन्ता, उपरपडा पूर्वक स्मरण, अनुध्यान, ज्ञान  
वस्तु का पुनः स्मरण, ली लगाना।

ध्यानसिंह दे० (५०) पञ्जाब, केरली, रणजीत सिंह  
का प्रधान मन्त्री, इन पर रणजीत सिंह बड़ा  
भरोसा रखते थे। ध्यानसिंह के बड़े भाई का  
नाम गुलाब सिंह था और इनके छोटे भाई का  
नाम सुचित सिंह था। इन तीनों भाइयों पर  
महाराज बड़ी प्रीति रखते थे। इनका राजा की  
उपाधि मिली थी। इसके बाद राजा की आज्ञा  
से राजकीय पत्रों में "राजा किलाने बहादुर"  
लिखे जाते थे। महाराज रणजीत सिंह ने अपने  
चलित्तम समय में अपने पुत्र खड्गसिंह को राज्य  
का उत्तराधिकारी और उनका समिभावक ध्यान

सिंह को नियत किया। परन्तु खड्गसिंह

के उत्तराधिकारी होने के योग्य नहीं था।

के परामर्श से यह ध्यानसिंह पर अधिकार करे

जग, शान्त में ध्यानसिंह और उनके पुत्र का मृत

में शाना भी उसने दूके दिया। इस समय का

फुल्ल ध्यानसिंह को बहुत ही शीघ्र मिला। वह

यन्दी होकर जेल भेज दिये गये। उनके पुत्र

नयतिहालसिंह को पञ्जाब की गद्दी मिली। खड्ग

सिंह को मृत्यु जेठखाने में हुई, उसी दिन नयति-

हालसिंह भी तोरण द्वार के गिरजाने में दूक

मर गये। इनके बाद खड्गसिंह की स्त्री ने राज

का कार्यभार ग्रहण किया, राजसिंहसत्र पर बैठ

कर रानी चौदकुमारी ने ध्यानसिंह से बदन्या गुजाने

का प्रण किया। ध्यानसिंह भी उसे पदच्युत करने

की चेष्टा करने लगे। शान्त में यह अपनी चेष्टा में

सफल हुए, रानी चौदकुमारी गद्दी से उतार दी

गयी और रणजीतसिंह की उपपत्नी के नाम से

उत्पन्न शेरसिंह राजगद्दी पर बैठाये गये। शेरसिंह

ने रानी चौदकुमारी से छगाह करना चाहा, परन्तु

उसने इसे अस्वीकार किया। तदनन्तर इनमें लड़ाई

हुई परन्तु शान्त में सुलभ हुई और २६ नौ लाख

रुपये वार्षिक रानी को देना निश्चित हुआ। ध्यान

सिंह और शेरसिंह दोनों ने मिल कर रानी को

मरवा डाला। चित्तवाला सरदार पञ्जाब में बड़े

प्रसन्नचित्त हैं वे राजकुल के थे। उन्होंने इन सब

घातों को देख ध्यानसिंह और शेरसिंह का काम

समाम कर देना ही उचित समझा। इसी विचार

से प्रेरित होकर वे एक दिन कुछ सेना लेकर बड़े

गये। दोनों दक्ष में लड़ाई हुई, शान्त में शेरसिंह

और ध्यानसिंह दोनों मारे गये। इसी लड़ाई में

शेरसिंह का १२ वर्ष का लड़का भी मारा गया।

ध्याना दे० (क्रि०) ध्यान करना, ध्यान लगाना।

ध्यानी तत्० (५०) ध्यानकर्ता, ध्यान करने वाला  
ध्यान लगाने वाला, जयी, योगी।  
ध्यानीय तत्० (५०) ध्यान योग्य, ध्यान करने  
योग्य स्मरणीय।  
ध्यापक तत्० (५०) चिन्तक, विचारक, ध्यानकर्ता  
ध्याता





नाम रख कर गौ चरते थे। युधिष्ठिर के राजसूय नामक पशु के समय ये दशार्ण ( छत्तीसगढ़ ) मालव देश तथा समुद्र तीरवर्ती आभीर देश को जीतकर पञ्जाब में उपस्थित हुए। उसके बाद पञ्जाब अमर पर्वत, द्वारपाल आदि देशों को इन्होंने जीता। तदनन्तर इन्होंने द्वारका में वामुदेव के पास दूत भेजा था। यादवों के युधिष्ठिर की अधीनता स्वीकार करने पर भारत के उत्तर पश्चिम प्रदेशों में रहने वाले म्लेच्छ पल्लव आदि असभ्य जातियों को जीत कर ये इन्द्रप्रस्थ लौट आये। चेदिराज की कन्या करेणुमती से इनका ध्याह हुआ था। करेणुमती के गर्भ से नकुल को निरमित्त नामक एक पुत्र उत्पन्न हुआ था।

नकुआ दे० (५०) नोक, अणि।

नकेल दे० (खी०) काठ की बनी एक प्रकार की सलाई जो ऊट की नाक में लगाते हैं।

नकका दे० (५०) तास का रङ्गा, खेल के तास में का रङ्गा।

नक्की दे० (खी०) नासिका से उच्चारण करना, आनुनासिक उच्चारण करना, निश्चय, स्थिर, दृढ़।

—मूठ (५०) झुर का एक दौब।

नक्कू दे० (५०) अकोर्तिमान, अपपत्नी, अपपत्नी, दुर्नामी।

नक तत्० (५०) रात, रात्रि, रजनी, निशा।

नकक तत्० (५०) लघुवक्त्र, मलिन, भ्रूवर्ण, भ्रूविला रङ्ग।

नक्षत्र तत्० (५०) जिसका नाश न हो तारागण, २७ नक्षत्र, अश्विनो, भरणी आदि।—नाथ,

—पति-प-राज (५०) चन्द्रमा।—चक्र (५०)

तारामण्डल, ताराचक्र।—पुरुष (५०) नक्षत्र मध्यवर्ती पुरुष विशेष, नक्षत्र का अधिष्ठाता देवता।—विद्या (खी०) ज्योतिष विद्या।

—सूचक (५०) निन्दित ज्योतिषी, सूखे ज्योतिषित्। नक्षत्र सूचक का लक्षण वृहत्संहिता में

इस प्रकार लिखा हुआ है। यथा—

“तिष्ठत्युत्पत्तिं न जानन्ति ग्रहाणां नैवसाधनम्, परवाययेन वर्तन्ते ते वै नक्षत्रसूचकाः”

अविदित्यैव यः शास्त्रं दैवतत्वं प्रपद्ये, सर्पंक्ति दूषकः पापो ज्ञेयो नक्षत्रसूचकः।

नक्षत्री दे० (५०) भाग्यवान, प्रतापी, भाग्यशाली।

नक्षत्रेश तत्० (५०) नक्षत्र ईश, चन्द्रमा।

नक्र तत्० (५०) मगर, कुम्भीर, नाका

(५०) हांगर, ग्राहः।

नख तत्० (५०) नाखून, नखर, हाथ और पैर अङ्गुलियों के अग्रभाग स्थित कठिन चर्म विशेष

—रेखा (खी०) नख का चिह्न, बकोट।—सिख सिख तक (या०) घमस्त, छिद्र से पैर तक, पशरोर।

नखत तद्० (५०) नखत्र, तारा।

नखर तत्० (५०) नह, नख, कड़े नख।

नखायुध तत्० (५०) बाघ, कुक्कुट, मुर्गा, मोर, मयूर, नसिंह।

नखियाना दे० (क्रि०) नख से बकोटना, खोजना, नखाघात करना, खसोटना।

नखी तत्० (५०) नख विशिष्ट, नखधारी, अलवाल, नखैल, वे जन्तु जो नख से शास्त्रमण करते हैं।

नग तत्० (५०) पहाड़, पर्वत, वृक्ष, जड़ पदार्थ मात्र, सात की संख्या। (दे०) नगोना, शैलूटी आदि

गहनों पर जड़ने के पर्यन्त।—पति (५०) पर्वत स्वामी, पहाड़ों का मालिक, हिमालय पर्वत।

नगचाई दे० (खी०) समीप, निकट, निकटागमन, अर्थात्।

नगचाना दे० (क्रि०) पास आना, समीप जाना, पहुँचना।

नगचाहट दे० (खी०) सामीप्य, निकटता, नगचाह नगदीना तद्० (५०) नागदमन, शीघ्र विशेष, एक जड़ी।

नगन तद्० (५०) नग्न, नङ्गा, चकहीन, दिगम्बर, अनावृत।

नगभिन्नक तत्० (५०) पाषाणमेद, एक प्रकार का पत्थर।

नगर तत्० (५०) पुर, ग्राम, बड़ा ग्राम।—की (५०) कोट काँगड़ा, नगर के बाहर की सीमा

—नारी (स्त्री०) गणिका, घेरया, वाराङ्गना, नगर की साधारण स्त्री ।—घर्ती (गु०) नगर के मध्यस्थिति, नगरवासी, नगर में रहने वाले ।

—वासी (गु०) नागरिक, नगर के वासी ।

नरी तत्० (स्त्री०) बसती, ग्राम, गाँव, छोटा नगर ।

नरोपान्त तत्० (गु०) नगर का परिसर, नगर का निकाल ।

नरु नरुा दे० (गु०) दिगम्बर, वस्त्रहीन, संन्यासियों का सम्प्रदाय विशेष, नरनारी समुदाय के एकत्रित होने पर नरुा रहना ही इनका धर्म बताया जाता है । ये बड़े धनी हैं और घर पर ये कपड़े वगैरह पहनते हैं ।

नरु तत्० (गु०) नरुा, वस्त्रहीन ।

नरुी दे० (स्त्री०) दिगम्बर स्त्री ।

नखाना दे० (क्रि०) नाख कराना, नखाना, नृत्य कराना ।

नखैया दे० (गु०) नाखनेवाला, नर्तक, नृत्यकर्ता, नाख करने वाला ।

नखिं दे० (क्रि०) नाखता है, नृत्य करता है ।

नखाना दे० (क्रि०) नखाना, नाख कराना, नृत्य कराना ।

नखावत दे० (क्रि०) नखाता है, नृत्य करता है, नाख करता है ।

यथा:—

सखिं नखावत राम गुसाईं ।

नर नाखिं मरकट की नारिं ॥

—रामायण ।

नट तत्० (गु०) नर्तकों की एक जाति, नर्तक, नच-वैया, भौंड, कौयुकी, मायावी ।—नागर (गु०) नरशिरोमणि, श्रीकृष्णचन्द्र, टोनहा, जाटगर ।

—भूषण (गु०) हस्ताल ।—घर (गु०) महादेव ।

नटखट दे० (गु०) धूर्त, कपटी, झलो, पापवही ।

नटखटी दे० (स्त्री०) धूर्तता, कपट, झल ।

नटत दे० (क्रि०) न करता है, नहीं करता है, चस्की-कार करता है ।

नटना दे० (क्रि०) न मानना, होदना, न कारना ।

नटमाया तत्० (स्त्री०) हलविद्या, हस्तजाल, नट का खेल, हल प्रपञ्च ।

नटवा दे० (गु०) टोनहा, मायावी ।

नटसाल दे० (गु०) हूटाकाँटा ।

नटिन दे० (स्त्री०) नट की स्त्री, नटी, जाटू करने वाली स्त्री, टोनही ।

नटी तत्० (स्त्री०) नट की स्त्री, नाटकों में मुखधार की स्त्री, वेरया, गणिका ।

नटुभा, नटुवा (गु०) नट, नटवा, नट की एक जाति विशेष ।

नटना दे० (क्रि०) नचना, नट होना, बिगड़ना, खराब होना ।

नड दे० (गु०) जाति विशेष, जो झड़ी, खादि बनाते हैं ।

नत तत्० (गु०) [नि + क्त] नच, विनयी, विनीत ।

नतर दे० (गु०) नहीं तो, ऐसा नहीं हुआ तब, अन्यथा ।

नताङ्गी तत्० (स्त्री०) [नत + अङ्ग + ई] युवती, सुन्दरी, बाला, नारी ।

नति तत्० (स्त्री०) [नि + क्त] नमस्कार, प्रणाम, अभिवादन ।

नतिनी दे० (स्त्री०) दैविकी, पुत्री की पुत्री, नातिन, बेटो की बेटो ।

नतैत दे० (गु०) नतैदार, सगा, सम्बन्धी ।

नथ दे० (गु०) नाक में पहनने का गहना, बड़ी नयुनी ।

नथना दे० (क्रि०) नाक छेदना, नथ पहनने के लिये नाक छिदाना ।

नथनी दे० (स्त्री०) एक प्रकार का गज, जिससे माया जाना है ।

नथी दे० (स्त्री०) छिदी, कुँसी, मायी गयी ।

नथुमा दे० (गु०) नाचने वाला, छिदुवा ।

नथुई दे० (स्त्री०) छिदुई ।

नथुना दे० (गु०) नाक का चपप्रमाण ।

नद तत्० (गु०) बड़ी नदियाँ, जिनकी धारा उत्तर

या पश्चिम को ओर जाती है; यथा—शोण, ब्रह्म-  
पुत्र, सिन्धु आदि ।

नदित तद् ० (गु०) शब्दित, फलशब्द, ज्ञातशब्द । -  
नदी तद् ० (ख०) पर्यतो से निकला वह श्रोत जो  
समुद्र में जाकर मिले, गङ्गा, सरयू, यमुना आदि ।

—कान्ता (ख०) काकजङ्गा, नामक झरो ।

नदेश तद् ० (गु०) समुद्र, सागर, महादधि ।

नदीला दे० (गु०) बड़ा नाद, जिसमें दैत आदि  
को चित्राया जाता है, जो मिट्टी का बना  
होता है ।

ननका दे० (गु०) छोटा यक्षा लडका, लाडला । -

ननद तद् ० (ख०) पति की पहिन, ननदी ।

ननदिया, ननदी दे० (ख०) ननद, पति की भगिनी ।

ननिहाल दे० (गु०) नाना का घर, माता के पिता  
का घर, नाना का गाँव ।

ननु तद् ० (ख०) निष्पय, अवधारण, अनुसा, सम्म-  
तिदान, अनुमति, अनुनय, आमन्त्रण, आक्षेप,  
विरोधात्मक, उत्प्रेक्षा ।

नन्द तद् ० (गु०) श्रीकृष्ण का पालने वाला पिता,  
यमुना के द्वारे तीर पर पहले एक गोकुल नामक  
गाँव था वहाँ गोप बसते थे । नन्द उन्हीं गोपों  
के अधिपति थे । उस समय कथ मथुरा का राजा  
था । नन्द मथुरा के राजा के करद सामन्त थे ।  
भगवान् श्रीकृष्ण गोकुल में ही पने थे । यहीं उन्होंने  
कथ के द्वारा भेजे हुए रावलों का उध, किया था ।  
यही वे कथ के धनुर्पथ में निमन्त्रित होकर श्रीकृष्ण  
मथुरा गये और वहाँ कथ को मारकर अपने माता  
पिता के यहाँ रहने लगे । पुरा से वृन्दावन नहीं  
लेटे कृष्ण के चले जाने के बाद ही से नन्द का  
जीवन एम प्रकार का बोक हो गया था । इस  
और द्विम्बक के मारने के लिये एक बार श्रीकृष्ण  
वृन्दावन गये थे और वही नन्द और यशोदा से  
भेंट भी हुई थी, नन्द और यशोदा को समझाकर  
श्रीकृष्ण पुनः मथुरा लौट आये । इसके बाद एक  
बार और भी श्रीकृष्ण से इनकी भेंट हुई थी वह  
भेंट प्रभास क्षेत्र में हुई थी जो अन्तिम भेंट थी ।

नन्द पहले जन्म में द्रोण नामक यज्ञ थे ।

(२) मगध का राजा, इस नाम के जैसा राजा  
पाटलीपुत्र के विहासत पर आरूढ हुए थे । इनका  
उत्पत्ति के विषय में अनेक प्रकार की बातें देली  
जाता है । पुराणों में लिखा है कि ये एक शूद्रा  
के गर्भ से उत्पन्न हुए थे । इनके पिता का नाम  
नन्दो था । परन्तु बहुत ग्रन्थकार कहते हैं कि  
नन्द वेदव्य के गर्भ और नाई के ओरव से उत्पन्न  
हुए थे । जो हो ये भाग्यशाली थे इसमें सन्देह  
नहीं । पाटलीपुत्र का राजा अशुभक मर गया  
था । राजमन्त्री यही विचारते थे कि किसका पति  
पेन किया जाय, यही सोच कर उस समय की  
प्रया के अनुसार वे नगर के बाहर राजहस्ति, इस  
छत्र कुम्भ और चामर आदि राजसामग्री लेकर  
उपस्थित थे । उसी समय नन्द वहाँ उपस्थित  
हुए । राजहस्ति ने उन्हीं पर चढ़े के जल से अभि-  
षेक किया, और मुँह से उनको अपने पीठ पर रख  
लिया, चारों ओर मङ्गलध्वनि होने लगी, नन्द  
४६६ ई० में राजा हुए थे । इनके वय में क्रमशः  
सात नन्द राजा हुए थे । कल्पक नामक एक महा  
पण्डित नन्द के मन्त्री थे । अना में नन्द नन्द  
राजगद्दी पर बैठे, जिन्हें महानन्द भी कहते हैं ।  
इनके मन्त्री कल्पक के पुत्र यकटाल थे । इन्होंने  
समापण्डित विद्यात वरकवि थे । प्रसिद्ध राजनीति  
कुशल चाणक्य ने इसी नन्द वरा की रजिपत्र  
करके चन्द्रगुप्त को राजसत्त दिया था । जिस  
घटना का अश्लम्यन वारके विशाखदत्त ने मुद्रा  
रासस नामक नाटक बनाया था ।

नन्दकुमार तद् ० (गु०) ये कश्यप गोब्रज देव के  
वधधर थे । महाराज आदिशूर ने कश्यप से पौत्र  
अक्षयपिण्डान् पुत्राय थे । इस उन्हीं में से एक  
थे । नन्दकुमार के पूर्व पुरुष मुञ्जिदाबाद जिले के  
जहान गाँव में रहते थे । महाराज नन्दकुमार के  
पिता का नाम पद्मानाभ था । नन्दकुमार के पूर्व  
पुरुष पीतमुषडी नामक गाँव में रहते थे । इसी  
कारण इनका वय पीतमुषडी ब्राह्मण नाम से  
विख्यात था । बङ्गाल के नयाँ बलीवर्दी खाँ के  
समय में नन्दकुमार ने अमीनी के पद पर रह कर  
बहुत धन कमाया था । परन्तु वहाँ के दीवानों से

कुछ खटपट हो जाने के कारण इन्हें धरना काम छोड़ना पड़ा, असीखद्वी के मरने के अनन्तर सिराजुद्दीन बङ्गाल के नवाब हुए । नन्दकुमार नफीरी के लिये सिराज के यहाँ आने जाने लगे । सिराज ने नन्दकुमार को दीवानी का काम दिया । अङ्गरेजों के साथ आशय होने के कारण सिराज के पदच्युत होने के अनन्तर नन्दकुमार लार्ड क्लाइ के भूयों के पद पर नियुक्त हुए । क्लाइ के विलापन चले जाने पर, येरेण्ट साहब बङ्गाल के गवर्नर हुए । ये पहिले तो नन्दकुमार को बड़ी प्रीति में परस्पर विरोध हो गया । येरेण्ट के बाद कार्टियार बङ्गाल के गवर्नर हुए, ये भी अपन समय पूरा करते चले गये । नन्दकुमार को एक मुकद्दमे में उच्च समय के जज सर इलाजदरम्ये ने प्राणान्त दुष्ट की आज्ञा दी । नन्दकुमार मरने के समय १२ लाख रुपये और भूमि सम्पत्ति छोड़ गये थे । एक बार इन्होंने एक लख ब्राह्मणों को दृष्टा भोजन कराया था ।

नन्दन तत्० (५०) [नन्द + इण्ड] पुत्र, बेटा, धानन्द-दायक, सुखदायक, प्रदायक, प्रसन्न करने वाला, सन्तान, विष्णु, नारायण, पर्यन्त विशेष, इन्द्र का उपपत्न । (५०) : हयजन्तक, आह्लाद जनक ।—ज (५०) हरिवन्दन ।

नन्दनन्दन तत्० (५०) श्रीकृष्ण, विष्णु ।

नन्दा तत्० (स्त्री०) [नन्द + ञ] तिथि-विशेष, दोनों पूर्ण की तिथि पर और एकादशी तिथि । सम्पत्ति । भगवती का दूसरा नाम । बाराह-पुराण में लिखा है कि ब्रह्मा ने देवी से कहा था कि देवि ! आपने देवी के बहुत बड़े कार्य किये हैं, परन्तु आपकी एक और देवताओं का कार्य करना चाहिये, आपकी महिमासुर का विनाश करना होगा । ब्रह्मा के यह कहने के अनन्तर देवताओं ने भगवती की हिमालय में स्थापना की और वे इसने बहुत प्रसन्न हुए, इसी कारण भगवती का नाम नन्दा पड़ा । दूसरी पुस्तकों में लिखा हुआ

है कि भगवती देवताक नन्दनकानन और पवित्र हिमालय में रहकर बहुत धानन्दित हुईं थीं इसी कारण उनका नन्दा नाम पड़ा है ।

नन्दात्मज तत्० (५०) [नन्द + आत्मज] श्रीकृष्ण, विष्णु ।

नन्दि तत्० (५०) शिव का द्वारपाल, शूत लोहा, शुष्का का खेल ।

नन्दिग्राम तत्० (५०) ग्राम विशेष, जहाँ रामचन्द्र के वनवास के समय भरतजी तपस्या और राज की वप्रस्था करते थे ।

नन्दिघोष तत्० (५०) अर्जुन के रथ का नाम, धानन्द देने वाला नन्दिघों का शब्द, भाटों की स्तुति । मङ्गल घोषणा ।

नन्दिनी तत्० (स्त्री०) [नन्द + इन् + ई] कन्या, पुत्री, उमा, गङ्गा, वशिष्ठ की धेनु । कामधेनु की कन्या नन्दिनी, महर्षि वशिष्ठ ने इसी धेनु का पालन किया था । सेवा से प्रसन्न करके इसी नन्दिनी के प्रसाद से अथर्वविधिपति राजा दिलीप ने रघु नामक पुत्र पाया था ।

नन्दी तत्० (५०) [नन्द + इन्] शिव का अनुचर, महादेव ने इसको द्वाररक्षक का काम दिया था । वृक्षविशेष, शयनस्थान (मुनि, यह शिव के ग्रंथ थे ।

नन्दी, नन्दीसी दे० (५०) नन्द का पति, पति की मतिनी का पति ।

नन्दोला दे० (५०) नौद, मट्टी का मूँडा ।

नन्दा दे० (५०) शेटा, नाटो, लघु, देटा, लड़का, शिशु, वास्तक ।

नपुंसक तत्० (स्त्री०) हिजड़ा, पुंसप्रहोत, उरुप्रहोत ।—सिद्ध (५०) तीसरा सिद्ध ।

नप्ता तत्० (५०) कन्या का पुत्र, नाति ।

नपर-दे० (५०) नैकर, चाकर, सेवक, मृत्यु ।

नफीरी दे० (स्त्री०) याच विशेष, हुँची, महलाई ।

नमः तत्० (५०) आकाश, गगन, आवरण का  
महीना ।

नमग तत्० (५०) पत्नी, नचत्र, ग्रह, पक्षेक, चिडिया ।  
—नाथ (५०) गरुड, चन्द्रमा ।

नमगामी तत्० (५०) नमग, पत्नी, नचक्र ।

नमगेश तत्० (५०) नमगनाथ, गरुड, चन्द्र ।

नमचर तद्० (५०) पक्षेक, पत्नी, विद्याधर, मेघ,  
वायु, पवन । (५०) आकाश मं घूमने वाला,  
आकाशचारी, खेचर ।

नमश्चर तत्० (५०) आकाश में उड़ने वाले, आकाश-  
चारी, पत्नी, तारा, ग्रहदेवता, विद्याधर, सिद्ध,  
गन्धर्व ।

नमस्य तत्० (५०) भाद्रपद, भादों का महीना,  
भाद्रमास ।

नमस्वान् तत्० (५०) [नमस् + वत्] वायु, अनिल,  
पवन ।

नमोगति तत्० (स्त्री०) [ नमस् + गति ] आकाश  
गगन, उड़ना, उड़पन ।

नमोधूम तत्० (५०) [नमस् + धूम ] धारिद, मेघ ।  
घन ।

नम. तत्० (श०) नमस्कार, प्रणाम, अभिवादन ।

नमकीन दे० (५०) नोन की वस्तु, पकान, जिसमें  
नमक पड़ा हो, लवणाक ।

नमत तद्० (क्रि०) नमस्कार करता है, प्रणाम  
करता है, अभिवादन करता है, नम्य होता है,  
नवता है, झुकता है ।

नमन तत्० (५०) [नम + नट् ] अधोगमन, नम-  
होना, प्रणाम करना, विनीत होना, नत होना ।

नमस्कार तत्० (५०) [ नमस् + कार ] प्रणाम,  
सम्मान प्रदर्शन करना ।

नमाज दे० (५०) मुसलमानों की स्तुति, मुसलमानों  
की ईश्वर वन्दना की रीति ।

नमित तत्० (५०) [ नम + क ] कृत नमस्कार  
विनम्य, कृतयिनय, प्रह्वीभूत ।

नमुचि तत्० (५०) कामदेव, मदन, कन्दर्प, देव  
विशेष, प्रसिद्ध दानव, महासुर शुम्भ का तीसरा  
भ्रातृ, शुम्भ से छोटा विशुम्भ और विशुम्भ से  
छोटा नमुचि था ।

(२) विषयात् दानवराज, इसके साथ इन्द्र का  
मित्रता थी । तथापि इन्द्र ने नमुचि को मा  
डाला, नमुचि के मारने से इन्द्र को ब्रह्महत्या का  
दोष लगा था । इस दोष को दूर करने के लिये इन्द्र  
ने अरुणा नामक नदी में स्नान किया था । अरुणा  
नदी सरस्वती नदी की प्रधान शाखा है । एक  
समय दानवराज नमुचि इन्द्र के भय से सूर्य की  
किरणों में छिपा हुआ था, यह देखकर इन्द्र ने  
इससे मित्रता की, और बोले, मित्र ! मैं सब कहता  
हूँ दिन में या रात में भीगे या शुष्क वक्ष द्वारा  
मैं तुम्हारा विनाश करने की चेष्टा नहीं करूँगा ।  
एक दिन नीहार से दिशाएँ आच्छन्न थीं उसी  
समय जलफेन द्वारा इन्द्र ने नमुचि का सिर छेदन  
किया । उस समय वह छिन्न मुण्ड बोला और  
पापी ! तुमने मित्रबंध किया, यह कह कर दानव  
राज के सिर ने इन्द्र को दौड़ाया, डर कर इन्द्र  
ब्रह्मा के शरण गये, ब्रह्मा के उपदेश से इन्द्र अरुणा  
नदी में स्नान तथा यज्ञ करके पापमुक्त हुए ।  
अनन्तर यह दानवराज का सिर भी अरुणा तीर्थ  
में स्नान कर अन्वयधाम को गया ।

नम्र तत्० (५०) [नम + र्] कृतप्रणाम, विनीची,  
विनीत, मिलनसार ।—ता (स्त्री०) नम्रता,  
विनय, विनीतत्व, मृदुता, विनीतभाव ।

नय तत० (५०) नीति, न्याय, धर्म, दृढ विशेष ।  
(५०) न्याय्य, शौचित्य, नेता । (दे०) नौ की,  
सप्या, निषेध, अस्वीकार ।

नयन तत्० (५०) लोचन, नेत्र, आँख, चक्षु ।  
—गोचर (५०) दृष्टि गोचर, नेत्रपथ, आँकों  
का सामना ।—विशारद (५०) नीतिबुद्धय,  
नीतिशास्त्र पंडित ।

नथना तद् ० ( श्री ० ) शंखों का तारा, पुतली, तारका, कानीनिका ।

नया दे ० ( गु ० ) नवीन, नूतन, अमिनव, ताज़ा, आधुनिक, नव, टटका ।

नर तत् ० ( गु ० ) मानव, मनुष्य, मानुष, पुरुष, भाग्यवत में विष्णु का चौथा अवतार नर का यत्नसाया गया है । यह धर्म की पत्नी मुक्ति के गर्भ से उत्पन्न हुई है । नर और नारायण वे दो मूर्ति थीं, परन्तु दोनों की आकृति समान थी । महाभारत में लिखा है कि नर नारायण बदरिकाश्रम में कठोर तपस्या करते थे । नारद जी वहाँ गये, उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ कि जिनकी उपासना संसार कर रहा है, देवता आदि भी जिनका सर्वदा ध्यान करते हैं वे किसकी उपासना करते हैं । नारद ने पूँछा भगवन् ! आप लोग किसकी उपासना कर रहे हैं । भगवाह् बोले—जो ब्रह्म, अधिपति, कार्यविहीन, अवल ग्निथ तथा त्रिगुणातीत हैं, जिनसे सत्य आदि गुण उत्पन्न होते हैं, जो वास्तव में अव्यक्त होने पर भी वक्त्ररूप से अवस्थान करके प्रकृति नाम से परिचित हैं, वे परमात्मा ही हम लोगों के भी कारण हैं । हम लोग उन्हींकी उपासना करते थे । नर नारायणकी कठिन तपस्या देख देवता डर गये, इनकी तपस्या में विघ्न करने के अर्थ इन्द्रादि देवों ने अस्त्राद्यैर्भेजा, परन्तु यहाँ अस्त्राद्यैर्भे के किये कुछ न हुआ । उर्वशी की सृष्टि करके नारायण ने अम्बरा और देवों के मनोरथ पर धामी कर दिया । यही नर नारायण द्वारके अन्त में अर्जुन और श्रीकृष्ण के रूप में अवतीर्ण हुए थे ।—देव ( गु ० ) राजा, नृपति, ब्राह्मण, विप्र ।—नारायण ( गु ० ) दो अधियों का नाम, भगवाह् का चौथा अवतार, श्रीकृष्ण, अर्जुन ।—पति ( गु ० ) राजा, नृपति, नरेन्द्र ।—पुर ( गु ० ) मर्त्यलोक, नृलोक, भूलोक ।—मेध ( गु ० ) यज्ञ विशेष, जिस यज्ञ में मनुष्य का यज्ञ करके धनि दी जाती है । किसी समय में नरमेध शब्द से ब्राह्मण भोजन करना समझा जाता था, परन्तु अब यह अर्थ गौण हो गया है ।—लोक ( गु ० ) नरपुर मर्त्यधाम, मर्त्य

लोक ।—वाहन ( गु ० ) कुबेर, पंचराज, उदयन का पुत्र, गन्धर्व चक्रवर्ती, ।—सिंह ( गु ० ) भगवाह् का अवतार ।

नरक तत् ० ( गु ० ) देवरात्रिप्रभेद, दैत्य विशेष, भुमि का पुत्र, कष्टजनकस्थान पापभोगस्थान, निरपे । पुराणों में नरकों के नाम दस प्रकार गिनाये गये हैं । तामिस्र, अन्धतामिस्र, रौरव, महारीरव, कुम्भीपाक, कालभूज, अक्षिपत्रघन, शूकरमुल्ल, अन्धकूप, कृमिभोजन, सन्दंश, तम्रभूमि यज्ञकष्टक, शास्मसी, धैतरणी, प्रयोद, प्राणरोध, विगहन, लालामक्ष, सारमेयादन, अयोचिरयःपान, चारकहूम, रक्षोगण, भोजन, शूलप्रोत, दन्तगूक, अवनिरोधन, पर्पावर्तन, सूषीमुल्ल, आदि ।—कुण्ड ( गु ० ) कष्टदायक कुण्ड, पाप का फल भोगने का कुण्ड, ब्रह्मधैवत पुराण में लिखा है कि नरक कुण्ड ८६ हैं ।

नरकट दे ० ( गु ० ) नृणविशेष, सर्कंडा ।

नरकासुर तत् ० ( गु ० ) एक राक्षस का नाम, यह श्रीकृष्ण का मित्र था ।

नरकेशरी तत् ० ( गु ० ) नरसिंह, भगवाह् का चौथा अवतार ( गु ० ) नरघोष्ठ, प्रधान मनुष्य ।

नरकान्तक तत् ० ( गु ० ) [ नरक + अन्तक ] विष्णु, श्रीकृष्ण ।

नरकामय तत् ० ( गु ० ) [ नरक + आमय ] प्रेत, विशाच, नरक का रोग, कुष्टरोग ।

नरकी तद् ० ( गु ० ) नरकयोग, दुःखी, पापी ।

नरक तत् ० ( गु ० ) नारदों, नारद, संतरा, नारदों, तीर्थ ।

नरम दे ० ( गु ० ) मृदु, कोमल, एकठिन, आर्द्र, शीतल ।

नरमाना दे ० ( क्लि ० ) नरम करना, कोमल करना, मृदु बनाना ।

नरसिंगा दे ० ( गु ० ) एक प्रकार का राजा, सुररी, शीमा ।

नरसिंगिया दे ० ( गु ० ) नरसिंगा बनाने वाला ।

नरसी दे ० ( गु ० ) बीता हुआ या जाने वाला चौथा दिन ।

नरहड दे० (५०) पिस्हली की हड्डी, पिस्हारी ।

नरहरि तत्० (५०) नरसिंह, विष्णु का षष्ठतार ।

—दास (५०) मुलसीदास के गुरु का नाम, कवि विशेष ।

नराधम तत्० (५०) [नर + अधम] अधम, नीच, पापी, दुराचारी, असत्कर्मी ।

नराधिप तत्० (५०) [नर + अधिप] राजा, नरपति, नृपति, भूपति, भूपाल ।

नरिया दे० (५०) खपरा, छोटी नाली, मिट्टी का बना हुआ एक प्रकार का षषड़ा जिससे मकान छाये जाते हैं ।

नरी तत्० (स्त्री०) नर जातीया स्त्री, चर्म विशेष, चाम, चमड़ा, सौह यन्त्र विशेष, जिसमें कपड़े बुनने के लिये सूत रखते हैं ।

नरुख दे० (५०) पुल्लिङ्ग, उपप ।

नरेट दे० (५०) सौंसी, नली, नलिका, नटई, गला, घाँटी ।

नरेटी दे० (स्त्री०) ग्रीवा, गला, गठई, गर्दन, टेंडूवा ।  
—दवाना (धा०) गला घाँटना, मारना, जान से मार डालना ।

नरेन्द्र तत्० (५०) [नर + इन्द्र] नरेश्वर, बहु-देशाधिपति, राजा, नरपति, विषयैद्य, विप चिकित्सक ।

नरेश तत्० (५०) [नर + ईश] राजा, नरपति ।

नरेश्वर तत्० (५०) [नर + ईश्वर] देशाधिपति, रासा, नरेन्द्र, नरपति ।

नरोत्तम तत्० (५०) [नर + उत्तम] श्रेष्ठ मनुष्य, उत्तम मनुष्य, समाजपति, किली दल का अगुआ ।  
(५०) विष्णु, श्रीकृष्ण ।

नर्तक तत्० (५०) [नृत + क] नृत्यकारी, नाचने वाला, नट, धारण ।

नर्तकी तत्० (स्त्री०) [नर्तक + ई] नृत्यकारिणी, नटी, चेरपा, धाराङ्गना ।

नर्तन तत्० (५०) [नृत + नन्] नृत्य, नाच, अङ्ग-भङ्गी ।—प्रिय (५०) गिल्ली, मूट, मेर ।

नर्दक तत्० (५०) [नर्द + अक] बोलने वाला, हठ करने वाला ।

नर्म तत्० (५०) [नृ + म] कौमुक, सीसा, झांझ ।

नर्मद तत्० (५०) [नर्म + दा + ड] केलि उचित, क्रीड़ा विशेष के सहायक, आनन्दकारी, सुख दायक ।

नर्मदा तत्० (स्त्री०) नदी विशेष, यह नदी दक्षिण में है । रेवा, मेकल, कन्यका ।

नर्मसच्चि तत्० (५०) [नर्म + सच्चि] राजा के साथी, क्रीडामित्र, मुसाहब ।

नल तत्० (५०) तृण विशेष, बौस, नेजा, नाणे, प्रणाली, पनाली, खस, पितृदेव, दैत्य विशेष, नैयधराज, स्वयम्बर विधि से इन्होंने विदर्भात् भीम की कन्या दमयन्ती से विवाह किया था । दमयन्ती के रूप और गुण की प्रशंसा सुनकर नल उस पर आसक्त हुए थे । एक दिन रात नल ने उद्यान में घूमते घूमते एक हंस पकड़ा था । हंस मनुष्य की बोली में राजा से कहने लगा थाप हमकी छोड़ दें, हम आपका बहुत उपकार करेंगे । राजा भीम की कन्या दमयन्ती के सामने गुहारें गुण वर्णन करेंगे, जिससे वह आपके साथ अपना विवाह कर लेगी । नल ने हंस को छोड़ दिया । दमयन्ती के समीप जाकर हंस ने नल के गुणों का वर्णन किया दमयन्ती नल पर अनुरक्त होगई । कन्या को विवाह योग्य देख भीम ने स्वयम्बर सभा जोड़ी, उसमें दिव्यताओं को छोड़कर दमयन्ती ने नल को ही वर्णन किया ।

नलकूबर तत्० (५०) दक्षराज कुंवर का पुत्र, इनके भाई का नाम मणिग्रीव था । एक समय दोनों भाई मदीन्यत्त होकर कैलाश के पास गङ्गातीर के तपोवन में स्त्रियों के साथ क्रीड़ा करते थे । यह देख नारद जी को बड़ा क्रोध आया । उन्होंने शाप दिया । नारद के शाप से नलकूबर और मणिग्रीव दोनों भाई यमलार्जुन वृक्ष हो गये थे । बङ्गाल के प्रसिद्ध कवि गुणाकर भारतचन्द्रराय ने एक स्थान पर लिखा है कि नारद के शाप से नलकूबर का जन्म,

बहुदेश में भवानन्द मज्जुपदार के रूप में हुआ था।

नलद तत्० (५०) पुष्परस, मकरन्द, उशीर, योरण-सूत, खस।

नलपुरादिक दे० (५०) कलिहारी।

नला तद्० (स्त्री०) उदरघ्न नाड़ी विशेष।

नलिका तत्० (स्त्री०) [नलिक + का] नाड़ी, नली, चिरा, युगन्धि द्रव्य विशेष।

नलिन तत्० (स्त्री०) पद्म, कमल, पानी, जल, पवित्र विशेष, सारस पक्षी।

नलिनी तत्० (स्त्री०) [नलिन + ई] पद्मयुक्त देव, पद्मसमूह, पद्मलता, कमलिनी, कुमुदिनी, कोई, कमलाकर।—रह (५०) मृणाल, कमल की डंडी।

नलिया दे० (५०) बहेलिया, क्याध, निपाद, चिड़ीमार।

नली तत्० (स्त्री०) [नल + ई] नरेटी, प्रीथा, गहूँन, गला, चोटी, सोहे का एक पत्र, जिसमें मूल रख कर कपड़े बितते हैं।

नलुमा दे० (५०) बाँस का चोंगा, जिसमें पत्रा खादि रखते हैं, या साधु लोग पानी पीते हैं।

नल तत्० (५०) नया, नवीन, नूतन, अभिनव, संख्या विशेष। एक कम दस, ६, नौ।—छापड (५०) पृथिवी के नौ भाग, प्राचीन भूगोल वेत्ताओं ने पृथ्वी को नौ भागों में बाँटा था वे थे:—भरत, इलावर्त, किंरुच, भद्र, केतुमाल, हिरण्य, रम्य, हरि, कुक।—ग्रह (५०) सूर्य खादि नौ ग्रह।

—दुर्गा (स्त्री०) दुर्गा की नौ मूर्ति, शैलपुत्री खादि।—द्वार (५०) शरीर के नौ मार्ग, यथा—

“नखद्वार का पींजरा यामें पंछी, पौन”—कवीर।

—निधि (५०) कुबेर का खज़ाना।—धधू (स्त्री०) नई बहू, दुलहिन, युवती।—घासा (स्त्री०) नव-बैठना, युवती।—घीवना (स्त्री०) युवती स्त्री।

—रत्न (५०) मुक्ता खादि नव प्रकार के मणि। यथा—हीरा, पन्ना, माणिक, नीलम,

कहमनिया, पुखराज, गजमुक्ता, मोती, मूंगा,।

विक्रमादित्य राजा की राजसभा के नौ परिषद, यथा—धन्वन्तरि, छपणक, धमरचिंह, गड्डु, वेतालभद्र, घटकपर, कालिदास, बराहमिहिर और परदधि, चाक्षुषण विशेष, जिसमें नीरव जड़े हैं।  
—रात्र (५०) चाखिन मास की शुक्ल प्रतिपदा से लेकर नवमी पर्यन्त और चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से लेकर नवमी पर्यन्त नौ दिन तक किया जाने वाला व्रत।—रस (५०) नव प्रकार के रस, यथा—गुह्वार, योर, ककण, अतुत, हास्य, भयानक, वीभत्स, रौर और यान।—भक्ति (स्त्री०) नव प्रकार की भक्ति, नवीनभक्ति, भक्ति के नौ प्रकार ये हैं—प्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवा, शर्वन, वन्दन, दास्य, सय, आत्मनिवेद।—शिक्षक (५०) नवीन शिक्षक, नूतन अध्यापक, नया पढ़ाने वाला।

नवनी तद्० (स्त्री०) नवनीत, माखन, नैवू, नौनी।

नवनीत तत्० (५०) माखन, मखन, नैवू।

नवम तत्० (५०) नवाँ, नव संख्या को पूर्ण करने वाली संख्या।

नवमीश तत्० (५०) नवाँ भाग, नव, हिस्सा, नव भाग में का एक भाग, ५।

नवमी तत्० (स्त्री०) [नयम + ई] तिथि विशेष, चन्द्रमा की नवीं कला का क्रिया काल।

नवल दे० (५०) नया, नवाँ, नवीन, सुन्दर, मनोह, मनोहर, (५०) एक पौधे का नाम।

नवा दे० (५०) नवीन, नूतन, नया।

नवाँश तत्० (५०) नवम, नवाँ।

नवाड़ा दे० (५०) नाव विशेष, छोटी नाव, डोंगी।

नवाना दे० (स्त्री०) झुकाना, मिहुराना, नव करना, नवा देना, विनीत करना।

नवाभ्र तत्० (५०) [नव + अश्र] नवीन शर, मन्व-त्वर का प्रथम अश्र।

नवारना दे० (स्त्री०) रमना, भटकना, घूमना, फिरना।

नवारी दे० (स्त्री०) युष्प विशेष, उसका वृक्ष, नवारी का फूल, जो चैत में फूलता है।



नवासा दे० (पु०) नाति, नमा, दौहित्र, दोहिता,  
पुत्री का पुत्र, बेटा का बेटा ।

नवासी दे० (स्त्री०) नातिन, नतिनी, बेटा की बेटा,  
दोहिती, संख्या विशेष, ८६ ।

नवी दे० (स्त्री०) गराँवन, नौना, पगा, भविष्यदृक्ता ।  
नवीन तत्० (यु०) नव्य, नूतन, तात्कालिक, तत्त्वण  
उत्पन्न ।

नवोद्गा तत्० (स्त्री०) [नश् + ऊङ्] नूतन विवाहिता  
स्त्री, नवयौवना, मुग्धा नायिका विशेष । यथा—  
“मुग्धा जो भय लाज जुत, रतिन चहत पतिसङ्ग ।  
ताहि नवोद्गा कहत है, जो प्रवीन रस रङ्ग ॥”  
—रसराज ।

नव्वे दे० (यु०) नवति, ९०, नवदहाई, १०  
कम १०० ।

नव्य तत्० (यु०) नूतन, नवीन, आधुनिक ।

नश्वर तत्० (यु०) नाशवाद्, विनासी, विनसनशील,  
मिथ्या ।

नष्ट तत्० (पु०) [नश् + ऋ] नाशप्राप्त, ध्वस्त, पता-  
यित, मृत, अपचित, भ्रष्ट, दुष्ट, शठ । (यु०) अदर्शन  
विशिष्ट, तिरोहित, नाशाश्रय ।—चित्त (यु०) मूढ,  
हतबुद्धि, अज्ञान, अयिवेकी ।—चेष्ट (यु०) [नष्ट  
+ चेष्टा] स्पन्दहीन, निस्तब्ध, चेष्टा हीन ।  
—चेष्टता (स्त्री०) प्रलय, शोक आदि के द्वारा  
शरीर की चेष्टा शून्यता, संज्ञाहीनता, कुकर्म चिकु-  
र्युत्थ, पाप करने की इच्छा ।—ता (स्त्री०)  
भ्रष्टता, दुष्टता, शठता ।—संस्मृति (यु०)  
विस्मरणशील, स्मरण शक्ति विहीन ।

नष्टा तत्० (स्त्री०) भ्रष्टा, दुष्टा, व्यवचारिणी,  
कुलटा ।

नस दे० (स्त्री०) नाड़ी, रग, सिरा ।

नसाना दे० (क्रि०) नाश करना, बिगाड़ना, भ्रष्ट  
करना, तितर बितर करना ।

नसी दे० (स्त्री०) हल का फाल, ची, तोड़ा, फाले का  
अप्रमाण ।

नसीय दे० (यु०) भाग्य, अदृष्ट, कपास ।

नसीठ दे० (पु०) अभाग्य, दुर्भाग्य, अशुभ, अशुक्ल।

नस्ता दे० (स्त्री०) नाक का छेद, नयना ।

नस्य तत्० (पु०) ताम्रकूटवृष्ट, नस, सानुनासिक ।

नह दे० (पु०) नख, नखर, नाखून ।

नहक दे० (यु०) दुर्बल, क्षीणयन, पतला, सूक्ष्म ।

नहट्टा दे० (पु०) नखचत, नखाघात, बकोट, खोटे।

नहनी दे० (स्त्री०) नख काटने का अस्त्र विशेष ।

नहरनी दे० (स्त्री०) नहनी, नखकटनी, नख काटे  
का अस्त्र ।

नहलाना दे० (क्रि०) स्नान कराना, नहानी, न-  
याना ।

नहयाना दे० (क्रि०) नहलाना, स्नान करना ।

नहान दे० (पु०) स्नान, अवगाहन, शौच ।

नहाना दे० (क्रि०) स्नान करना, शरीर सुदृढ़ करना,  
अवगाहन करना, नहाना ।

नहानी दे० (स्त्री०) स्त्रियों का रजोदर्शन के समय  
का स्नान, मृतक स्नान ।

नहारहमुह दे० (अ०) विना भोजन, विना पाये,  
उपवास ।

नहारवा ) दे० (पु०) रोग विशेष, नार निकलना,  
नहारू ) इस रोग में शरीर के किसी स्थान से  
नहारबा ) सूत के समान निकलता है । यह रोग  
राजपुताने के प्रान्तों में विशेष होता है ।

नहियर दे० (पु०) पीहर, मैका, स्त्री का अपने पिता  
का घर ।

नहीं दे० (अ०) निषेध, मना, मत, न, नकारना ।

नहुष तत्० (पु०) चन्द्रवंशीय आयु नामक राजा के  
पुत्र । इन्होंने तपस्या और यज्ञ आदि के अगुष्ठान  
द्वारा इन्द्र का पद पाया था । महर्षि अगस्त्य के  
शप से इन्द्रपद से भ्रष्ट होकर पृथ्वी पर दस  
हज़ार वर्ष तक शंष होकर इन्होंने रहना पड़ा था ।  
नहुष के बहुत प्रार्थना करने पर अगस्त्य ने अगुष्ठान  
करके कहा था कि तुम्हारे वंश में युधिष्ठिर नामक  
राजा होंगे उन्हींकी प्रवृत्तता से तुम्हारी यति  
होगी । वनवास के समय भीम एक दिन अदर की  
गये थे, वही भीम को नहुषरूपी अजगर ने पकड़  
लिया । भीम के जाने में विस्मय देखकर उनको

दूधने के लिये पुषिष्ठिर भी निकले । यहाँ को  
अपत्या देखकर पुषिष्ठिर ने सर्प का परिचय  
कृष्ण और साय ही भ्रम को रक्षा का उपाय भी ।  
सर्प अपना परिचय देकर उसी समय प्राण मुक्त  
हुआ और दिव्य शरीर धारण करके पयास्थान  
चला गया ।

ना दे० (अ०) नहीं, अभाव, निषेध, निषेधार्थक  
अवयव ।

नाई दे० (अ०) सट्टय, समान, मुख्य, प्रकार ।

नाइन दे० (खी०) नावित की स्त्री, नाई की स्त्री ।

नाई दे० (ए०) नापित, नाऊ, औरकार, स्वनाम  
ध्यात जाति विशेष ।

नाऊ दे० (ए०) नाई, नापित ।

नाँदिया दे० (ए०) महादेव का बाहन, बैल, वृषभ,  
जो महादेव का वाहन है ।

नाँव, नाँऊ दे० (ए०) नाम, संज्ञा, अभिधान, कीर्ति,  
पद, प्रतिष्ठा ।

नाँह दे० (अ०) निषेधार्थक अवयव ।

नाक तत्त्वं (ए०) [न + चक] स्वर्ग, जहाँ दुःख न हो,  
स्वर्ग लोक (दे०) (खी०) नासिका, नासा ।—पति  
(ए०) इन्द्र, देवराज, सुरेन्द्र ।—नटी (खी०)  
अपहरा, देवाङ्गना, स्वर्गवेश्या ।—फटाना (वा०)  
अप्रमानित होना, अनादर करना ।—फटी होना  
(वा०) स्वर्ग चयनी प्रतिष्ठा गवीना, अपना मान धोना  
अवश्यकी होता ।—फा घाल (वा०) रष्ट, आपत्त  
प्रिय, ईप्सित ।—चटाना (वा०) अपसन्न होना,  
विरक्त होना, झुट्ट होना ।—रखना (वा०)  
प्रतिष्ठा रखना, मान रक्षित रखना ।—सकोड़ना  
(वा०) नाक चटाना अपसन्न होना । अपसन्नता  
जानाके की एक मुद्राविशेष ।

नाकड़ा दे० (ए०) रोग विशेष, नाक का एक रोग ।

नाका दे० (ए०) मार्ग का अन्त, एक मार्ग का अन्त  
और दूसरे का प्रारम्भ, मुँह का छेद, मगर, चरि-  
वार, हांगर ।

नाकिन दे० (खी०) देने वाली स्त्री, यह स्त्री जो नाक  
से बोले ।

नाग तत्त्वं (ए०) सर्प, शैप, अहि, पन्नग, हायी,  
दन्ती मुख्य वायु भेद ।—उरग (ए०) प्राण विशेष,  
सीसा ।—कन्या (खी०) नागों की कन्या, पाताच-  
वासी, देवताओं की कन्या ।—केशर (ए०)  
पुत्र विशेष, एक प्रकार के फूलों का वृक्ष ।—गर्भ  
(ए०) सिन्दूर ।—चाम्पेय (ए०) नागकेशर वृक्ष ।  
—ज (ए०) सिन्दूर, रङ्ग ।—दन्त (ए०) गजदन्त,  
हायी का दाँत, घर की दिवालियों में गाड़े दपड़े,  
खूँटी ।—दन्तक (ए०) घर की भीत में लगे  
दपड़े, खूँटी, बाला, ताप ।—दन्ती (खी०)  
श्रीहस्तिनी, विश्वया, इन्द्रवाहनी ।—दमनी  
(खी०) छोटा पीपल विशेष ।—पञ्चमी (खी०)  
श्रावण शुक्ल की पञ्चमी, जिस दिन नाग की पूजा  
होती है ।—पाश (ए०) अक्ष विशेष, वरुणाक्ष,  
फौस, फन्दा, फौसी ।—फौस (ए०) वरुण का  
अक्ष, पाश, फौसी, फन्दा ।—घेल (ए०) पान,  
ताम्बूल ।—भाषा (खी०) प्राकृतभाषा, यह भाषा  
जो पाताच वासी बोलते हैं ।—माता (खी०)  
शरयप शक्ति की स्त्री, कद्रू ।—रिपु (ए०) नकुल,  
म्यौला, मोर, मयूर ।—लोक (ए०) पाताच, नागों  
का वासस्थान ।

नागदीन दे० (ए०) पीपल विशेष, महत्वा, सुगन्ध-  
युक्त पीपल ।

नागरी, नागरी दे० (खी०) सर्पिणी, सापिन ।

नागर तत्त्वं (ए०) नगरवासी, चतुर, दक्ष, निपुण,  
कुशल, ब्राह्मण विशेष, दस जाति के ब्राह्मण गुज-  
रात में विशेषता से पाये जाते हैं ।

नागरङ्ग तत्त्वं (ए०) नारङ्गी, केवला नीबू ।

नागरमुस्ता तत्त्वं (खी०) मोषा विशेष, जड़  
विशेष ।

नागरमीषा तत्त्वं (ए०) हुगन्धिकुण विशेष का मूल,  
नागरमुस्ता ।

नागारि तत्त्वं (खी०) चतुर स्त्री, नगर की स्त्री ।

नागरिन् तत्त्वं (खी०)

नागरी तत्त्वं (खी०) लिपि विशेष, एक प्रकार के  
अक्षर, संस्कृत अक्षर, शिवितों की लिपि, सम्भो  
की लिपि ।

नागल तद्० (पु०) हल, जिससे खेत जोता जाता है, लाङ्गल ।

नागा दे० (पु०) नग्न, संन्यासियों की एक शाखा ।

नागाहा तत्० (स्त्री०) नागदान, मन्त्रा ।

नागारि तत्० (पु०) [नाग + आरि] गरुड, नागशुभ्र, धैर्य, मयूर, मोर ।

नागार्जुन तत्० (पु०) सहस्राबाहु, कातंबीर्य, इसी महाप्रतापी राजा को परशुराम ने मारा था ।

नागिन } तद्० (स्त्री०) नाग की स्त्री, सर्पिणी,  
नागिनी } सर्पिन ।

नागोजीभट्ट तद्० (पु०) एक संस्कृत वैयाकरण का नाम, ये काशीनिवासी महाराष्ट्र ब्राह्मण थे । इनके पिता का नाम शिवभट्ट और माता का नाम सती था । ये गृह्यवेत्तर (सिगरौर) के राजा रामसिंह के आश्रित थे । इन्होंने बहुत ग्रन्थ रचे हैं । परिभाषेन्दुशेखर, लघुसम्बन्धेन्दुशेखर वृहन्मञ्जूषा, लघु-मञ्जूषा आदि व्याकरण के ग्रन्थ प्रायश्चित्तेन्दु-शेखर, तीर्थेन्द्रशेखर आदि शिखरान्त धर्मशास्त्र के बारह ग्रन्थ तथा बहुत से ग्रन्थों की टीका इनकी बनाई हुई है । कहते हैं सोलह वर्ष तक ये कुछ नहीं पढ़ते थे, पीछे किसी के उपदेश से इन्होंने वागीश्वरी के मन्त्र का जप किया, जिससे इनकी आँखों में शक्ति समता हुई । यिद्वात् इनका समय १७वीं सदी स्थिर करते हैं ।

नागोद् दे० (पु०) छाती पर रखने का कथक, उरलाप ।

नागीर दे० (पु०) एक नगर का नाम ।

नाघना दे० (क्रि०) लांघना, पार जाना, पार उतरना, तरजाना, डाकना, डाक जाना, उतरना ।

नाद्य दे० (पु०) नृत्य, नाट्य, नाचना ।—नाचाना (या०) सताना, पीड़ित करना, दिक्कदिकाना, विवश, करना ।

नाचना दे० (क्रि०) नृत्य करना, नाच करना, कूदना ।

नाचहिं दे० (क्रि०) नाचता है, नृत्य करता है, कूदता है ।

नाचिकेता तत्० (पु०) प्रसिद्ध तपस्वी उद्दालक के पुत्र, एक समय महर्षि उद्दालक पूजन सामग्री लाने लगे पर छोड़कर चले आये । घर आकर उन्होंने अपने पुत्र नाचिकेता को उन सामग्रियों को लेने के लिए भेजा, परन्तु उन्हें वे वहाँ न मिलीं, अतएव नाचिकेता रीते हाथ चले आये, उनका देख पिता आत्यन्त क्रुद्ध हुए और उन्होंने कहा तुम यमराज का दर्शन करो । पिता के ऐसा कहते ही नाचिकेता गिर कर मर गये । उद्दालक की दया बचन होगई यह भी मूर्च्छित होगये । शव वहाँ रहा था, दूसरे दिन देखा गया उस शव में कुछ चेष्टा होने लगी । उद्दालक ने अपने पुत्र को यह कह कर प्रणाम किया कि तुमने अपने प्रभाव से देवताक का दर्शन किया है । तुम्हारा शरीर मृत्यु का शरीर नहीं है । पुनः नाचिकेता ने अपनी यात्रा का हाल वर्णन किया । कठोपनिषत् में नाचिकेता का वृत्तान्त दूसरे प्रकार से कहा गया है । वहाँ इनको राज-पुत्र लिखा गया है ।

नाज दे० (पु०) अनाज, अन्न, नखरा, घमबह, मात ।

नाट दे० (पु०) वासा, वासस्थान, रहने की भूमि, कर्णाट, देश विशेष, नृत्य, नाच ।

नाटक तत्० (पु०) गद्यपद्यमयकाव्य विशेष, रङ्ग-यात्रा में खेलने के उपयुक्त काव्य, दूरवकाव्य का एक भेद । (पु०) नर्तक, नचद्वैया, नाचने वाला ।

नाटन दे० (पु०) नर्तन, नाच, नाच करना ।

नाटा दे० (पु०) इस्खलव, इस्वाकृति, ठिंगना, बदन, छोटे कद का ।

नाटिका तत्० (स्त्री०) नाड़ी, दूरवकाव्य विशेष, उपरूपक का एक भेद ।

नाटी दे० (स्त्री०) छोटी, ठिंगनी, छोटे कद की इस्वाकृति स्त्री ।

नाट्ये तत्० (पु०) नटी का पुत्र, वेण्या पुत्र ।

नाद्य तत्० (पु०) नृत्य गीत और वाद्य, तौर्बत्रिक, नट समूह, नाद्य आरम्भ करने के नक्षत्र, यथा—अनुराधा, धनिष्ठा, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती,

येहा, शतभिषा खीर रेवती ।—शाला (खी०)  
नाट्य मन्दिर, नाच घर, छटाती के द्वार के समीप  
का घर ।

नाट्योक्ति तत्० (खी०) [ नाट्य + उक्ति ] नाटक  
विषयक वाक्य ।

नाट्य दे० (पु०) अभाव, नास्तिक, शून्य, रहित,  
वर्जित ।

नाट्य दे० (खी०) टीया, चाँटी, नरेटी, गला,  
गहूँन ।

नाटिका तत्० (खी०) एक घड़ी, माठ पल, घटिका,  
घड़ी ।

नाटिमण्डल तत्० (पु०) स्वर्गीय रत्ना विशेष,  
निरुद्धेश ।

नाटो तत्० (खी०) धमनी, उदरस्थगिरा, हाथ की  
मुख्य नस, नली ।—तिक्त (पु०) श्रौषध विशेष,  
चिरायता ।—धम (पु०) सेनाप, स्वर्णकार ।

—मण्डल (पु०) नाटियों का समूह, नाटो समु-  
दाय ।—ज्ञान (पु०) रोग परीक्षा, निदान ज्ञान ।

—वृण (पु०) नखों का घाव, नखूर ।

नाटो (पु०) सम्बन्ध, विरादरी ।

नातर तद्दे० (ख०) नान्यतर, निश्चित, सन्देह रहित  
संशय शून्य ।

नाता दे० (पु०) सम्बन्ध, नात, भोजिनी, अपनायत ।

नातिन दे० (खी०) नतिनी, नवासी, पुकी की पुत्री ।

नाती दे० (पु०) बेटों का बेटा, दोहता, दौहित्र ।

यथा:—

उत्तम कुल पुत्रस्य के नाती ।

शिव विरंचि पूजेषु बहुभौती ॥

—रामायण ।

नाथ तत्० (पु०) स्वामी, प्रभु, नियन्ता, कर्ता, प्रति-  
पालक, नाक की रस्सी, जो दुष्ट रथन खादि को  
पहनाने हैं । एक सम्प्रदाय विशेष, नोरखनाथ का  
सहाया 'कनकटा सम्प्रदाय का दूसरा नाम नाथ  
सम्प्रदाय है । इनके अनुयायियों के नाम के अन्त  
में नाथ लगा दिया जाता है । यथा—नोरखनाथ,  
गम्भीरनाथ, मुञ्जन्दरनाथ आदि ।

नाथयान् तत्० (पु०) परमधेन, प्रभु विशिष्ट, मासिक  
के साथ, सत्वात्मिक ।

नाथना दे० (क्रि०) सताना, पीड़ित करना, दुःख  
देना, नाक छेदकर नाथ पहनाना, नाम पहनाने  
के लिए नाक छेदना ।

नाद तत्० (पु०) [ नद + घञ् ] ध्वनि, शब्द, गर्जन,  
शब्दचन्द्राकार का वर्ष, जिसका उच्चारण अनुस्वार  
के समान होता है । ब्रह्मस्वरूप विशेष । (दे०)  
मिट्टी का वर्जन, गमला ।

नादन तत्० (पु०) [ नद + णिच् + घनट् ] शब्द  
करना, गजर्जना, गर्जन करना, ध्वनि करना,  
नाद करना, पुकारना, धुनाना ।

नादना दे० (क्रि०) धारम्भ करना ।

नादविन्दु तत्० (पु०) बिन्दु सहित, शब्दचन्द्र,  
योगियों के ध्यान करने का तन्त्र ।

नादाहा दे० (पु०) पनाला, नाली, खाई, जल निक-  
लने का मार्ग ।

नादित तत्० (पु०) कृषित, ध्वनित, संज्ञात शब्द ।

नाधना दे० (क्रि०) युक्त करना, जोतना, बैल के  
हल या गाड़ी खींचने के लिये जुए में लगाना ।

नाधा दे० (पु०) पानी निकालने का मार्ग, पाट या  
चमड़े की बनी रस्सी जिससे बैल जुए में जोते  
जाते हैं ।

नानक दे० (पु०) सिक्खों का गुरु, १४६६ ई० में  
इरायती नदी के तीरस्थ पञ्जाब के तलबन्दी नामक  
गाँव में नानक का जन्म हुआ था । नानक के पिता  
का नाम फारू था । सात वर्ष की अवस्था में फारू  
ने अपने पुत्र को विद्यालय में पढ़ने के लिये भेजा ।  
ती वर्ष की अवस्था में अपने पुत्र को यज्ञोपवीत  
देने के लिए काष्ठ प्रबन्ध करने लगे, यह देख  
नानक ने अपनी असम्मति प्रकाशित करके कहा  
इस कौटिलिक यज्ञोपवीत से क्या लाभ परमात्मा  
का नाम उपवीत है । काष्ठ सामान्य स्थिति के  
गृहस्थ थे, उन्होंने एक दिन कुछ पैसे नानक को  
बाजार से सामान ले खाने के लिए दिये । परन्तु  
नानक गरीबों को पैसे बाँट कर घर लौट आये ।

उनके पिता ताड़ना देने लगे, उस समय नानक ने कहा कि मनुष्यों के साथ बेचने खरीदने में जो लाभ होता है। उससे अधिक लाभ ईश्वर के साथ बेचने खरीदने में होता है। उस समय नानक की अवस्था १५ वर्ष की थी। एक दिन नानक ने तो ये, उनके पैर किसी देव मन्दिर की ओर थे। इससे लोगों का आश्चर्य हुआ, किसी के पूँछ पर नानक ने कहा जिधर मैं पैर फैलाऊँ उधर ही तो ईश्वर के मन्दिर हैं, इस प्रकार भायीं सिख गुरु का हृदय धर्मभाव से पूर्ण था।

नानक एकेश्वरवादी थे। इन्होंने बड़े परिश्रम से अपना धर्म सम्प्रदाय प्रचरित किया था। इनके बनाये ग्रन्थ का नाम "ग्रन्थसाहब" है। इस सम्प्रदाय के साधु उदासी कहे जाते हैं। नानक के हिन्दू और मुसलमान दोनों शिष्य थे। लोग कहते हैं कि हिन्दू और मुसलमान इन दोनों जातियों में प्रेम स्थापित करना ही नानक का उद्देश्य था। ४० वर्ष की अवस्था में ये शिष्यों के गुरु हुए। कहते हैं उनके मृत शरीर को मुसलमान चले कर देना चाहते थे और हिन्दू जलाना। इसलिये दोनों में लूब भगवा हुआ, अन्त में देखा गया कि नानक का शरीर वहाँ नहीं था, इस कारण कफन को दो टुकड़े करके चेलों ने अपना अपना मनाय पूर्ण किया।

—पन्थ दे० (गु०) सिख सम्प्रदाय, गुरु नानक प्रचारित धर्ममत, एकेश्वरवाद ।—पन्थी दे० (गु०) गुरु नानक के सम्प्रदाय के अनुयायी, सिख ।—शाही दे० (गु०) नानकपन्थी, अर्थात् सिख ।

नाना तत्० (शु०) अनेकार्थक, उभयार्थ, विविध । (दे०) (गु०) मातामह, माता के पिता ।—कार (गु०) [ नाना + कार ] अनेक रूप के, विविध भौतिक के ।—कारण (गु०) भौतिक भौतिक के कारण, अनेक प्रकार के हेतु ।—जातीय (गु०) अनेक प्रकार, अनेक तरह ।—त्मा (गु०) [ नाना + आत्मा ] आत्मभेद, पृथक् पृथक् आत्मा ।

—ध्वनि (गु०) अनेक प्रकार के शब्द, विभिन्न ध्वनि ।—प्रकार (गु०) बहुत भौतिक, अनेक पति ।—भौतिक (गु०) भौतिक भौतिक, अनेक पति ।—मिश्र (गु०) मिश्र मिश्र मत, बहुविध सिद्धान्त ।—अर्थ (गु०) अनेक प्रकार ।—अर्थ (गु०) [ नाना + अर्थ ] अनेक अर्थ, बहुत अर्थ ।—विधि (गु०) अनेक प्रकार, अनेक उपाय ।—शास्त्रज्ञ (गु०) विविध विद्या विशारद, पट्ट शास्त्री ।

नानी दे० (स्त्री०) मातामही, माता की माता ।

नान्द दे० (गु०) मट्टी का बड़ा पात्र ।

नान्दिया दे० (गु०) शिवशाहन, वृषभ, धामुषी शिवशाहन की मूर्ति ।

नान्दीमुख तत्० (गु०) आहुति विशेष, जो पृथक् तत्त्व विवाह आदि उत्सव कृत्यों में किया जाता है। यथा.—

तव नान्दीमुख आहुति करि जातकर्म सब कोन ।

— रामायण ।

नाप दे० (गु०) माप, परिमाण, तौल, वजन लेख ।

नापना दे० (क्रि०) मापना, परिमाण करना, तौलना, जोतना ।

नापित तत्० (गु०) नाई, चौकरा, बाल बनाने वाला, नाक ।

नाभि तत्० (स्त्री०) पेट का मध्य स्थान, नाभि चक्र का मध्य, तोड़ी, नाभ ।—जन्मा (गु०) प्रज्ञा, प्रजापति, विधाता ।—वर्ष (गु०) भारत वर्ष, हिन्दुस्तान ।

नाम तत्० (गु०) नाव, सडा, अभिधान, यश, सपति, प्रसिद्ध ।—करण (गु०) संस्कार विशेष, नाम रखना, जन्म के दसवें दिन यह संस्कार किया जाता है ।—करना (वा०) प्रसिद्धि करना, यश फैलाना, विख्यात होना ।—दुयोना (वा०) दुर्नाम करना, उपनाम करना ।—देना (वा०) नाम रखना ।—धरना (वा०) नाम रखना, नाम ठहराना ।—धैय (गु०) सडा, नाम ।—निकालना (वा०) नामी होना, यशस्वी होना ।

लेकर मंग खाना (या०) दुधरे की प्रतिष्ठा से  
 प्राय प्रतिष्ठित बनना, किसी प्रतिष्ठित से अपना  
 सम्बन्ध बनाकर धन कमाना ।—लेना (या०)  
 स्तुति करना, मन्त्र का अर्थ जानना, स्मरण करना,  
 स्मरण करते रहना ।—होना (या०) घां होना,  
 कीर्ति बढ़ना प्रतिष्ठा बढ़ना ।—दोष तत्० (यु०)

नष्ट, भ्रष्ट, भ्रम, मृत, मरा हुआ ।  
 नामाङ्कित तत्० (यु०) [ नाम + अङ्कित ] नाम-  
 चिह्नित, नाम मुद्रित, गुदा हुआ नाम । (यु०)  
 प्रसिद्ध, विद्यमान, प्रतिष्ठित, यशस्वी ।  
 नामावली दे० (खी०) [ नाम + अवली ] देवना-  
 माङ्कित उत्तरीय, रामनामो, नामघोषो, नामध्वजी,  
 नामों की सूची ।

मी-दे० (यु०) विद्यमान, प्रसिद्ध, यशस्वी, कीर्ति-  
 माह ।—होना (या०) प्रसिद्धिमाना, विद्यमान  
 होना ।  
 अयक तत्० (यु०) [ नी + अक ] अदर्शक, गीता,  
 अष्ट, अग्रगामी, प्रधान, हार के मध्य भाग, मुनि,  
 मासा का मुख, सेनापति, अध्वर्यु, प्रेमप्रतिभाषी  
 पुरुष, शूद्रार साधक पुरुष ।—यथा—दोहा  
 "मदन सुन्दर सुन्दर सकल काम-कथानि-प्रवीण,  
 नौयक से मतिराम कहि कविता गीत सुश्रीन"  
 —रसराज ।

अपन दे० (खी०) नापित, नापित की खी ।  
 अयव दे० (यु०) प्रतिनिधि ।  
 अयिका तत्० (खी०) प्रसाधना, युवती, सामान्य  
 बनित्वा सली, भगवती की-एक-शक्ति-विशेष,  
 शूद्रार रस का सामान्य । यथा दोहा—  
 उपजत जाहि विलोकि के चित्त-धीव रसभाव,  
 नादि-बदानन-नायिका के प्रवीण कवि राम ।  
 —रसराज ।

स्वकीया परकीया और सामान्य भेद से नायिका  
 तीन प्रकार की हैं । यथा—  
 "स्वकीया, यथाही-नायिका; परकीया-परवाम,  
 यो सामान्य-नायिका जाको धन से काम"  
 पुनः आठ अवस्था के भेद से इन प्रत्येक में आठ  
 भेद होने हैं ।

नायकी तद्० (खी०) नायकी-स्त्री, तीव्र, त्रिमा,  
 कुटनी, दूती, वैरवा, नर्तकी, नाचने वाली ।  
 नार तत्० (यु०) नर समूह, बहुत मनुष्य । (दे० खी०)  
 खी, सुगार ।  
 नारक तत्० (यु०) नरक, सम्बन्धी, नरक में  
 रहने वाले जीव ।

नारकी तत्० (यु०) नरकस्थ, नरकवासी, नरक-  
 भोगी, पापी, दुराचारी, दुराचार ।  
 नारङ्क तत्० (यु०) कल वृक्ष विशेष, केशवा नीहू ।  
 संतरा, एक प्रकार का पेटमिह्रा फल ।

नारद तत्० (यु०) देवर्षि, मुनि विशेष; नारद-के  
 विषय में श्रीमद्भागवत में इस प्रकार लिखा है ।  
 नारद वेदश ब्राह्मणों की एक दासी के पुत्र थे ।  
 बाल्यकाल में वे उन ब्राह्मणों की सेवा करते थे ।  
 ब्राह्मण भी इनसे बहुत प्रेम करते थे । एक दिन  
 नारद ने ब्राह्मणों का उच्छिष्टान्न खा लिया,  
 इससे उनके चित्त शुद्ध हो गया और वे हरियुग  
 गान करने लगे, इस समय उनकी अवस्था पाँच  
 वर्ष की थी । इसके कुछ ही दिनों के बाद सौर के  
 काठने से इनकी माता का वियोग हुआ । घर  
 नारद खाधीन हो गया । ब्राह्मण छोड़कर उत्तर  
 दिशा की ओर वे प्रस्थित हुए । प्रभते प्रभते यह  
 एक जङ्गल में पहुँचे । भूल व्यास से सहाये हुए वे ही  
 एक तपोस्थ में स्नान-जलपान करके उसीके  
 तीर पर एक बड़े के पेड़ की छाया में बैठ गये  
 और भगवाद् का स्मरण करने लगे । भगवाद् ने  
 उनका हृदय में दर्शन दिया । परन्तु नारद भग-  
 वाद् का दर्शन बहुत समय तक नहीं कर सके ।  
 इससे नारद को बड़ा क्रोध हुआ । भगवाद् ने नारद  
 को आकाशवाणी द्वारा समझाया । नारद, इस  
 जन्म में तुम हमारा सतत दर्शन नहीं कर सकते,  
 हमने तुम्हारी अनुत्तमवृद्धि के लिये ही तुमको  
 दर्शन दिया है । तुम साधु सेवा करो; उसीसे तुम  
 हमारे पास आ सकते हो । इसके अनन्तर नारद  
 इस शरीर को छोड़-परमधाम पहुँचे । पुनः  
 युगवृष्टि के समय नारद भरीचि भृगु, आदि ब्रह्मा  
 के मानस पुत्र हुए । ब्रह्मदेवतं पुराण-में नारद को  
 ब्रह्मा का पुत्र बतलाया है ।

नारविचार दे० ( पु० ) किष्की, खेदी ।  
 नारा दे० ( पु० ) नाला, लाल धागा, मौली, कमर-  
 बन्द, पाजामा में पगाने वाला सूत ।  
 नाराच तत्० ( पु० ) लौहमय धाग, विग्रिय, तीर ।  
 नाराज दे० ( पु० ) क्रोध, कोप, क्रोधजनित दुःख,  
 घनाद्वाहित, असन्गुष्ट ।  
 नारायण तत्० ( पु० ) विष्णु, ( नर देखो ) संस्कृत का  
 एक ज्योतिषी, इन्होंने सुहूर्तमार्तपद नामक  
 ज्योतिष का एक ग्रन्थ संस्कृत में लिखा है  
 और मार्तपदयज्ञमा नामक उसकी टीका भी  
 आप ही ने लिखी है । पण्डित सुधाकर द्विवेदी के  
 मत से इन ग्रन्थों का निर्माणकाल सङ् १५७१-  
 १५७२ ई० है, नारायण ने भी अपने ग्रन्थ में यही  
 आपना समय लिखा है । सुहूर्तमार्तपद के अन्त में  
 इन्होंने आपना कुछ परिचय दिया है, जो यह  
 है । इनके पिता का नाम अनन्त था । देवगिरि  
 से कुछ दूर पर टायर नामक गाँव में ये रहते थे ।  
 इनका समय १६ वीं, शताब्दी मानना ही उचित है ।  
 —तैल ( पु० ) शोध विशेष, पका हुआ तैल ।  
 —घलि ( स्त्री० ) मृत पतितों के उद्धार के लिये  
 प्रायश्चित्त विशेष ।  
 नारायणी तत्० ( स्त्री० ) लक्ष्मी, नारायण की स्त्री,  
 दुर्गा, गङ्गा, सुदामल मुनि की पत्नी, शतायरी, छता-  
 वर, नारायण सम्बन्धिनो ज्योतिष विशेष ।  
 नारि दे० ( स्त्री० ) नारी, अयला, नाडी, कपड़े बुनने  
 के समय जिसमें सूत रखा जाता है । बौस का  
 टुकड़ा, जिसमें मट्टा आदि भर कर बड़ड़ों या  
 बेलों को दिया जाता है ।  
 नारिकेर, नारिकेल तत्० ( पु० ) खनाम । मसिद्ध  
 फल विशेष, नारियल, ओफल ।  
 नारियल दे० ( पु० ) नारिकेल फल ।  
 नारी तत्० ( स्त्री० ) पुरुष धर्मयुक्ता स्त्री, स्त्री,  
 अयला, महिला, ललना, कुटुम्बिनी । —  
 ( पु० ) स्त्रियों के मद्यपान कुसङ्ग आदि ह्य  
 यथा पान ( नशा आदि का ) दुर्जन चर्मा,  
 विरह, भ्रमना ( तीर्थयात्रा आदि ) परगृह मं  
 और वास ये ह्य नारियों । — धर्म ( पु

स्त्रियों का धर्म, पति सेवा पुत्रपालन आदि  
 पतिव्रता धर्म, मासिक होना, रमोदर्यन ।  
 नारु दे० ( पु० ) ( देखो नहाहथा ) ।  
 नाल तत्० ( पु० ) कमल आदि की डेटी, हरिताम  
 नार । ( दे० ) फोंफों, निल, नली, नल के आका  
 की बनी हुई वस्तु, घोड़ा बैल आदि के घु  
 में बंधी जाने वाली वस्तु, जो सोंहे की बर्  
 हुई होती है ।  
 नालकी दे० ( स्त्री० ) शिथिला, पालकी, यानविशे  
 जिसे मनुष्य दौते हैं ।  
 नाला दे० ( पु० ) जल निकलने का मार्ग, मोर्  
 पनाला ।  
 नालायक दे० ( पु० ) अनुपयुक्त, अयोग्य, मूर्ख ।  
 नालिक तत्० ( पु० ) आग्नेयास्त्र, बन्दूक, मुद्गुरी ।  
 नालिसिदुक दे० ( पु० ) सभासु ।  
 नाली दे० ( स्त्री० ) छोटा नाला, मुहारी, मुहरी ।  
 नाव तद्० ( स्त्री० ) नौ, नौका, तरनी, डोंगी बोट ।  
 नाचना दे० ( क्रि० ) नमन, नवना, झुकना, प्रण  
 होना ।  
 नावरि दे० ( स्त्री० ) निवारण, जलक्रीड़ा, नाव पर  
 जलक्रीडा, नाव झुकाना, नावफेरना ।  
 नाधिक तत्० ( पु० ) कर्णधार, मौंकी, नाव खेने  
 वाला, केवट, कैवर्त ।  
 नाश तत्० ( पु० ) [ नश् + घञ् ] क्षय, ध्वस्त, क्षय,  
 क्षति, हानि, अपचय, अदर्यन ।  
 नाशक तत्० ( पु० ) नाशकर्ता, ध्वंसक, क्षयकारी,  
 क्षतिकर, हानिकर्ता ।  
 नाशन तत्० ( पु० ) [ नाश + घनट् ] ध्वंसकरण,  
 हनन, मारण ।  
 नाशपाति दे० ( पु० ) फल विशेष, सर्वांत में उत्पन्न  
 होने वाला फल ।

तत्० [ नश् + घञ् + क ] ध्वस्त, क्षय, क्षति

[ नश् + घञ् + क ] नाश

स दे० (जी०) नस्य, सुंधनी, हुलास, तमाकू का  
रूप ।—दानी (जी०) नास रखने की द्विधिया ।

सना दे० (क्रि०) भागना, पताना, पीठ देना ।

सत्य त० (गु०) अश्विनी कुमार, देववैद्य ।

समरु दे० (गु०) बुद्धिहीन, अज्ञेय, अज्ञान,  
झड़, घूर्ण ।

सा त० (जी०) [ नस + घञ् + घा ] नासिका,  
नाक, द्वारपर की लकड़ी, रोग विशेष, नाकड़ा,  
नासिकाद्वार पर निकला हुआ मस ।—सभेदन  
(गु०) नरुद्धिकनी घास ।—वामावर्त (गु०) वाम  
नासिका में पहनने के गहने, नय, चेशर आदि ।  
—मल (गु०) नाक का मैल ।

सिका त० (जी०) प्राणेश्चिद्रय, नाक, नासा ।  
—मल (गु०) नाक का मैल ।

सीर त० (गु०) अग्रसर, अग्रगामी, सेनापति के  
बागे चलने वाली सेना ।

स्ति त० (क्रि०) नहीं है, अविद्यमानता, अभाव ।

स्तिक त० (गु०) [ नास्ति + इक ] अनीश्वरवादी,  
इश्वर नास्तित्ववादी, इश्वर की सत्ता न मानने  
वाला, जो वेद का प्रमाण नहीं मानते हैं ।  
पाण्डव, चार्वाक, लौकापतिक ।—ता (घी०)  
नास्तिक्य कर्मफल आदि कुछ नहीं, इस प्रकार  
का ज्ञान, मिथ्या दृष्टि ।—घाद (गु०) परलोक  
न मानने वाला सिद्धान्त ।

स्तित्व त० (गु०) अभाव, अस्तन्मय, अस्तव्य,  
गुण्यता ।

स्य त० (गु०) नासिका में उत्पन्न होने वाला,  
रोग विशेष, बिल की नाक में लगाई जाने वाली  
रस्सी ।

इ दे० (गु०) स्वामी, मातृक, नाय, पति ।

इक दे० (गु०) उपय, बिना प्रयोजन का, मिथ्या,  
अन्याय, अवधार्य, अनुचित ।

हर दे० (गु०) व्याघ्र, बाघ, बैर, यादू ल ।

दल दे० (गु०) मनेच्छी की एक जाति विशेष ।

हिं दे० (अ०) नहीं, निषेध, अस्वीकारार्थक  
अवयव ।

नाहीं दे० (अ०) नहीं, न, मत, निषेध बोधक  
अवयव ।

नाहुयि त० (गु०) [ नहुय + इञ् ] राजा नहुय का  
पुत्र, राजा ययाति ।

निः त० (अ०) उपसर्ग विशेष, निरोधार्यक, निरु-  
धार्यक, निवेश, भूधार्यक, अतिशयार्थक, संशय,  
आक्षेप, कौशल, उपरम, संामीष्य, आशय, दान-  
मोच, अन्तर्भाव, बन्धन, विन्यास । यह उपसर्ग जिन  
शब्दों के पहले आता है उनको विपरीत कर देता  
है । यथा—निचद्योगी, उद्योग गुण्य ।—फण्टक  
(गु०) सुखी, आनन्दी, बाधा रहित, निःशत्रु ।  
—पाप (गु०) अदोष, पापरहित, निरपराध ।  
—शङ्क (गु०) निडर, अभय, भयगुण्य, साहसी ।  
—प्रम (गु०) प्रमाहीन, तेजहीन, दीप्ति रहित ।  
—शब्द (गु०) नीरव, शब्दहीन, मौनी, वाक्य  
रहित, अवाक् ।—शलाफ (गु०) निर्जन, रकान्त,  
रहस्य, गोपन, गुप्तस्थान ।—दीप (गु०) समाप्त,  
सम्पूर्ण, रोष रहित ।—श्रेणी (जी०) सीढ़ी,  
नवेनी, अधिरोहिणी, काष्ठमयः सोपान । काठ  
की सीढ़ी ।—श्रेयः (गु०) कुशल, शुभ, अनुभव,  
भक्ति, मोच, मुक्ति, विद्या ।—श्वसित (गु०)  
दीर्घनिश्वासी ।—श्वस (गु०) प्राणवायु, प्रवासा ।  
—सङ्ग (गु०) सङ्ग रहित, सङ्गव्युत्, पासनाहीन ।  
—संशय (गु०) निःसन्देह, निश्चय, संशय रहित ।  
—सन्देह (गु०) अशंभय, निश्चय, श्रुत ।  
—सम्पर्क (गु०) अस्तन्मय, उदासीन, ।—सरण  
(गु०) उपाय, निकलना, निकलने का मार्ग, मृग्य,  
निर्वाण, यहिर्गमन, निर्गमन, सरण, सरकना,  
भरना, घूना ।—सहाय (गु०) सहायहीन,  
असहाय, एकाकी, अकेला, निरात्मक, दुःखी,  
अनाथ ।—सार (गु०) अघार, सारहीन, तेजरहित,  
हूँ छा, रिक्त, खाली ।—सारण (गु०) बहिष्करण,  
निर्गत करण, निकासना ।—सूत (गु०) अरित,  
आतं हुआ, निरा हुआ, निकला हुआ, निर्गत ।  
—स्नेह (गु०) प्रेमगुण्य, सूना, निर्दय ।—स्पृह  
(गु०) स्पृहाहीन, इच्छा रहित, अनिच्छुक ।  
—स (गु०) दरिद्र, निर्धन ।



निकट तत्० (गु०) समीप, अदूर, आसन्न, सन्निकृष्ट, उपकथ, उपान्त, सन्निकृत ।—घर्तौ (गु०) निकटस्थ, समीपस्थ ।—स्थ (गु०) पास रहने यापा ।

निकन्द तद्गु० (गु०) निःस्कन्ध, स्कन्धरहित, उखडा ।

निकन्दन तत्० (गु०) निर्मूलन, उखादन, उजादन ।  
निकम्मा दे० (गु०) निठाना, बिनाकाम का, निर्गुणी आसनी, शिथिल ।

निकर तत्० (गु०) [नि + कृ + अल्] समूह, राशि, सार, न्याय, देवधन, निधि, निष्पय, कररहित, निकरना दे० (क्रि०) निकलना, निर्गत होना, बहिर्गत होना, निकसना ।

निकरन्ध्र तत्० (गु०) समूह प्रथ, दल, गिरीह ।  
निकल दे० (खी०) निकास, निर्गम ।—चलना (धा०) बाहर हो जाना, भाग जाना, पला जाना, अधिक होना, बढ के बीपाना ।—पड़ना (क्रि०) बाहर आना, तैयार होना ।

निकलना दे० (क्रि०) निकसना, निःसृत होना, आगे जाना, भागना, भाग उठना ।

निकसना दे० (क्रि०) निकलना ।

निकपा तत्० (खी०) राक्षस माता । (घ०) निकट, समीप, अन्तिक ।

निकाना दे० (क्रि०) बोधे हुए खेत से घास निकालना, निराना, सोहनी करना ।

निकाम तद्गु० (गु०) निष्काम, जिसको किसी बात की इच्छा येष न हो, इच्छारहित, निस्पृह, कामनारहित ।

निकाय तद्गु० (गु०) [नि + चि + घञ्] मिलय, निवास, लक्ष्य, स्वधर्मिणाणि समूह, समूहों की एकता, परमात्मा ।

निकार तत्० (गु०) [नि + कृ + घञ्] अपकार, धिक्कार, निन्दा, अनादर ।

निकारना दे० (क्रि०) निकालना, बाहर करना, चुसने में देना, निषेध करना, अस्वीकार करना ।

निकाल दे० (गु०) निसार, निकास, बाहर आना,

यचने को युक्ति, उपाय, जोड तोड ।—डाकना (धा०) बाहर कर देना, स्थानान्तरित करना । बूझ करना ।—देना (धा०) उबारना, बाहर लाना, अलगना ।—लाना (धा०) बच लेना, निकालना ।—लेना (धा०) उखाड देना, बाँट लेना, फाड लेना ।

निकालना दे० (धा०) उखाडना, उजाटना, मूढ करना, काटना ।

निकास दे० (गु०) निकाल, निकलने का मार्ग, द्वार, कगार, गँवैया का परिसर, नगर के आस पास का भाग ।

निकासना दे० (क्रि०) निकालना, बाहर कर देना ।

निकासी दे० (खी०) कर, महसूल, गँवैया से निकलने का मासूल, निकलने का आजायज, परदाता ।

निकासू दे० (गु०) निकासी (हुआ), निष्कासित, बहिष्कृत ।

निकास्ता दे० (खी०) शून्य, यन्मला, स्तम्भ, लम्बा, घाम ।

निकुच दे० (गु०) बबूल ।

निकुञ्ज तत्० (गु०) सता, गुह्यमयुक्त स्थान, निविड-स्थान, लताश्रादित स्थान, क्रीडा स्थान, कुञ्ज ।  
—विहारी (गु०) श्रीकृष्ण ।

निकुट्टी तत्० (खी०) छोटी इलायची ।

निकुम्भ तत्० (गु०) दैत्य विशेष, यह दैत्य श्रीकृष्ण के हाथों से मारा गया था (२) कुम्भकर्ण का पुत्र, यह रावण का मन्त्री था । लक्ष्मी के युद्ध में यह मारा गया था इसके भाई को नाम कुम्भ था ।

निकुम्भिला तत्० (खी०) राक्षसों का देवघर, मेघनाद का यज्ञस्थान ।

निकुण्ड तत्० (गु०) [नि + कृ + ण्] अधम, नीच, निन्दित, अधमान, तुच्छ ।—ता (खी०) मन्त्रता कदराई, अधमता, नीचता, निचाई ।

निकेतन तत्० (गु०) गृह, आलय, आगार ।

निकि दे० (खी०) सौह गुला, तालने की छोटी तराजू, कौटा ।

निकासना दे० (क्रि०) धोसना, लिखियाना, दौत दिवाना; चपमान करना।

नेपकाय तह० (पु०) योषागृह्य, सिगार भादि का शब्द।

निलिप्त तह० (गु०) [ नि + लिप् + क्त ] त्यक्त, चर्चित, न्यस्त, स्थापित, दन्धक रखा हुआ, याती।

निक्षेप तह० (गु०) [ नि + क्षिप् + क्त ] सेपण, फेंकना, त्याग, समर्पित वस्तु, रखा हुआ धन, उपनिधि, न्यास, समर्पण, स्थापन, याती, गिरो।

निक्षेपक तह० [ नि + क्षिप् + क्त ] स्थापनकर्ता, समर्पक, न्यास रखने वाला, याती धरने वाला, गिरो रखने वाला, स्वागकर्ता।

निक्षेपण तह० (पु०) [ नि + क्षिप् + क्त ] स्थापन, समर्पण, त्याग करण।

निखट्ट दे० (गु०) आलसी, निकम्मा, निहुर, निर्दय, कटोर, उड़ाऊ, सुटाऊ।

निखण्ड दे० (गु०) मज्ज, सीध, सीध का भाग, माँक, मकारी।

निखनन तह० (गु०) [ नि + खन + क्त ] खोदना, खनना, काँड़ना।

निखरना दे० (क्रि०) उबेत होना, साफ होना, चमकना, उजला होना, स्थिर होना, धिराना, क्षिप्तका उत्थारना।

निखराना दे० (क्रि०) धिराना, साफ कराना, चमकना, उजला होना।

निखर्य तह० (पु०) मंग्या विशेष, दसखय सख्या, दस हजार कोटि, १००००००००००००।

निखात तह० (गु०) [ नि + खन + क्त ] गुप्त, परिया, गढ़ा, धार।

निखारना दे० (क्रि०) उजला करना, साफ करना, कपड़े धोना।

निखिल तह० (गु०) समस्त, समस्त, समुदाय, सकल, अग्रिम, सब, सर्व।

निखोष्ट दे० (गु०) सीधा, सरल, उदार, साधु, कोट रहित, छत कपट गून्ध।

निखोड़ना दे० (क्रि०) छीलना, उधेड़ना, क्षिप्तका निकासना।

निगड़ तह० (पु०) सौहनिर्मित गृहला, बेड़ी, पैकड़ी, फाट।

निगड़ित तह० (गु०) [ निगड़ + क्त ] बँधा हुआ, बड़, बेड़ी पहनवाया हुआ।

निगद तह० (पु०) [ नि + गद + क्त ] कथन, भाषण, कहना, औपधि विशेष।

निददित तह० (पु०) [ नि + गद + क्त ] कथित, भाषित, उल्लेख किया हुआ, उक्त, वर्णित, कहा हुआ।

निगत दे० (गु०) नङ्गा, लङ्गटा, नम्र, दिगम्बर।

निगन्दना दे० (क्रि०) तागना, टांफना, सीना धिरोना।

निगन्दार्ह दे० (सो०) सीने का काम, सीना।

निगम तह० (पु०) [ नि + गम + क्त ] शास्त्र विशेष, वेद की शाखा, नगर नाम आदि, यागिन्य, पुरी, वेद, बाजार की राह, निष्पय मार्ग।—ज्ञ (पु०)

निगमशास्त्रज्ञता, निगमशास्त्रज्ञता, निगमवित्त।

—नदी (सो०) भागीरथी, गङ्गानदी।—निवासी (पु०) घेदों में निवास करने वाला, विष्णु, मझा।

निगलना दे० (क्रि०) घूटना, लीलना, गले उतार जाना, खा जाना, गट कर जाना।

निगली दे० (सो०) हुका पीने की नली।

निगुण तह० (गु०) निगुण, गुणगून्ध, गुण रहित।

निगूह तह० (गु०) [ नि + गृह + क्त ] हुक्म, अग्र-कार्य, गुप्त, चुका हुआ, छिपा हुआ, धति कठिन, अग्रकट।

निगोड़ा दे० (पु०) अकर्म, दुआचारी, दुकर्म।

निगार दे० (गु०) ठोस, हड, घोट।

निग्रह तह० (गु०) [ नि + ग्रह + क्त ] ताड़ना, प्रहार, पन्त्रण, झेय, दन्धन, सीमा, चिकित्सा, इन्द्रियादि दमन, यासन।

निग्रहण तत्० (पु०) [नि + ग्रह + घनट्] पराजय, आक्रमण, विरोध, कलह, युद्ध, मानवच्छेदन, हठ, बन्धन, चुड़की, धमकी, रोष, कोप, क्रोध ।

निग्राही तत्० (पु०) [नि + ग्रह + णिष्] क्लेशदायक, निग्रहकर्ता, दण्डदायक ।

निघटत दे० (क्रि०) निघटते ही, न्यून होते ही, कम होते ही ।

निघटना दे० (क्रि०) घटना, कम होना, न्यून होना ।

निघटाना दे० (क्रि०) घटवाना, कम कराना ।

निघटी दे० (क्रि०) घटी, घट गई, कमती हुई ।

निघण्ट तद्० (पु०) निघण्ट, कोश, अभिधान, नाम-संग्रह ।

निघण्टु तत्० (पु०) अभिधान, नामकोश ।

निघरघटा दे० (पु०) दुलखाना, धूँलता करना, दूबता करना, दिठाई करना ।

निग्र तत्० (पु०) अधीन, यशीभूत, शिष्ट, आयत ।

निचय तत्० (पु०) [नि + चि + ञच्] संध, गण, समूह, दल, सूय ।

निचिन्त तद्० (पु०) निश्चिन्त, चिन्ताशून्य, बेफिक्र, अशोच, अचिन्त, शोक रहित ।

निचिन्ताई दे० (स्त्री०) अनवधानता, अज्ञ वधानी, प्रमाद ।

निचित होना दे० (या०) नियटना, अवकाश पाना, अपना काम पूरा करना ।

निचाई दे० (स्त्री०) नीचता, अधमता, सुच्छता, कुटिलता, शोधान्य, नीचापन ।

निचोड़ दे० (पु०) सार, निष्कार्य, निष्पत्ति, आश्रय ।

निचोड़ना दे० (क्रि०) दवाना, गारना, घूस लेना, कपड़े से पानी निकालना ।

निचोड़ (पु०) चुटेरा, सोभी, घालीघप ।

निखावरे दे० (स्त्री०) उतारा, हर्षदान, किसी प्रिये के लिये दान ।

निच्छिद्र तत्० (पु०) छिद्रहीन, रन्ध्रेयून्य, सर्वोद्गमपूर्ण ।

निज तत्० (पु०) [नि + जङ् + उ] स्त्रीय, स्वकीय, आत्मीय ।—तन्त्र (पु०) स्वाधीन स्वतन्त्रता ।

—मतावलम्बी (पु०) आत्म मतावलम्बी, अपने दृष्टा के अनुसार काम करने वाला ।—स्व (पु०) स्वकीय धन, अपने अधिकार का धन ।

निजजाल दे० (पु०) निर्दिवाद, कलहयून्य, निरापद, निश्चिन्त ।

निभक्तिभू दे० (स्त्री०) पवित्रता, शुद्धता, योग्यता ।

निभाना दे० (क्रि०) निरखना, भौकना, ठहराना, बुझाना, निर्वापित होना, अग्नि का बुझाना ।

निक्षोटना दे० (क्रि०) खसोटाना, भटकना, काड़ना, युहारी, काड़ना, भारना, साफ़ करना ।

निक्षोल दे० (पु०) भोल रहित, कसा हुआ, सुवैत ।

निटिलाक्ष तत्० (पु०) [निटिल + ञच्] शिव, महादेव, शम्भु ।

निठल्ला दे० (पु०) निकम्मा, बालसी ।

निठुर तद्० (पु०) निष्ठुर, कठोर, कठिन हृदय, निर्दय, स्नेहयून्य, बिन प्रीति ।—ता. (स्त्री०) निर्दयता, कठिनता, कड़ाई ।

निठुराई दे० (स्त्री०) कठोरता, कठिनता, हृदय की क्रूरता ।

निडर दे० (पु०) निर्भय, निःशङ्क, भययून्य, अण्ड, धृष्ट ।

निढाल दे० } (पु०) जानयून्य, जड़, स्वावर,  
निढाल } अचल ।

नित दे० (पु०) नित्य, प्रतिदिन, सदा, सर्वदा ।

—उठ (पु०) प्रति दिन उठकर, नियमित, सदा, निरन्तर ।—नव (पु०) नित्य नया, प्रति दिन नया, नित्य नित्य, दूसरा ।—नित (पु०) दिन

दिन, प्रति दिन ।—प्रति (पु०) नित्य, प्रतिदिन, सतत, सदा, सर्वदा ।

नितम्ब (पु०) छिपों के कटि के पीछे का भाग, छूतड़, पुट्टा, कूला, पर्वत का प्रान्त भाग ।

नितम्बिनी तत्० (स्त्री०) [नितम्ब + ङङ् + ई] प्रयत्ने नितम्ब विधिष्टा स्त्री, अथला, पारि, श्रीमाता ।

तान्त तत्० ( ५० ) अतिशय, चात्यन्त, अधिक ( ५० ) एकान्त, अवरय, अतिशय विधिष्ट ।

त्य तत्० ( ५० ) कालत्रयव्यापी, तीनों काल में रहने वाला, शाश्वत, प्रयु, सनातन, जिसका कभी नाश न हो। ( ५० ) समुद्र, स्थिर, निश्चित, जन्म मृत्यु रहित, सदातन, सनातन, प्रतिदिन ।

सतत, सनातत, अचान्त अनिश, अजन्म ।—कर्म ( ५० ) प्रतिदिन का कर्तव्य कर्म, प्रतिदिन अनुष्ठेय कर्म, आवश्यक क्रिया । प्रात्याहिक व्यापार ।

—कृत्य ( ५० ) नित्यकर्म ।—क्रिया ( ५० ) प्रतिदिन का कर्तव्य कर्म, प्रात्याहिक व्यापार ।

—गति ( ५० ) वायु, अनिल, पवन ।—सा ( ५० ) चिरकालीनत्व, सनातनता ।—दान ( ५० ) प्रतिदिन का कर्तव्य दान ।—नैमित्तिक ( ५० ) नित्य और नैमित्तिक कर्म, सन्ध्योपामन और प्रहण स्नानादि ।—प्रलय ( ५० ) चतुर्विध प्रलयान्तर्गत, प्रलय विशेष, जीव का प्रतिदिन का नाश ।—मुक्त ( ५० ) क्रियावाद् कर्मनिष्ठ, चिरमुक्त, जीवन्मुक्त ।

—यौवन ( ५० ) स्थिर यौवन, सदा युवा रहने वाला ।—यौवना ( ५० ) स्थिर यौवना, चिर-यौवना, द्रोपदी, कुन्ती आदि ।—शः ( ५० ) प्रत्यह, अचरत, सदा, सर्वदा ।—सम ( ५० ) निर्विकार, अप्रशस्त उत्तर ।

नित्यानित्यविवेक तत्० ( ५० ) नित्य और अनित्य वस्तु का विचार ।

नित्यानन्द तत्० ( ५० ) सदानन्द, जिसका आनन्द सर्वदा वर्तमान रहे । ब्रह्मण के गोस्वामी वंश के आदिपुरुष, वे पहिले संन्यासी हो गये थे, परन्तु पीछे किसी कारण से गृहस्थ हो गये थे, वे चैतन्य महाप्रभु के शायी थे ।

निधम्म दे० ( ५० ) स्वप्न, खम्भा, पीलपाया ।

निधरा दे० ( ५० ) स्वच्छ हुआ जल, मिट्टी के बैठ जाने से निर्मल जल ।

निधारना दे० ( क्रि० ) निवारना, साफ़ करना, स्वच्छ करना, दारना ।

निदग्धिका तत्० ( ५० ) ज्वेत, छोटी कटाई ।

निदरहिं दे० ( क्रि० ) निन्दा करते हैं, नहीं मानते, प्रतिष्ठा नहीं करते ।

निदरना दे० ( क्रि० ) निन्दा करना, अपमान करना ।

निदरि दे० ( ५० ) निरादर करके, अपमान करके, निन्दा करके ।

निदर्शन तत्० ( ५० ) [ नि + दृश + घनट् ] दृष्टान्त, उदाहरण ।—पत्र ( ५० ) दृष्टान्तपत्र ।—मुद्रा ( ५० ) प्रतिष्ठासुद्रा, मान बूचक मुद्रा ।

निदर्शना तत्० ( ५० ) [ निदर्शन + आ ] काव्यालङ्कार विशेष, रसका लक्षण इस प्रकार है । यथाः—

सदृश वाक्य जुग अर्थ को, जरिये एक आरोप ।  
भूषण ताहि निदर्शना, कहत बुद्धि दे सोय ॥

( उदाहरण )  
दोहा ।

औरनि को जो जनम है सो जाको एक रोज ।  
औरनि को जो राज सो, सिवस र जाको मोज ॥

साहिन से रन मॉदि के कीनो सुकवि निहाल ।  
सिव रच जाको क्यास है, औरनि को जज्वाल ॥

—शिवराज भूषण ।

निदाघ तत्० ( ५० ) ग्रीष्मकाल, उष्ण, गर्म ।—कर ( ५० ) सूर्य, दिवाकर ।—काल ( ५० ) ग्रीष्मकाल, तपसि का समय, कथे और आषाढ का महीना ।

निदान तत्० ( ५० ) मूल कारण, आदि कारण, कारण, रोग निर्णय, रोग का मूलानुसन्धान, वैद्यक के एक ग्रन्थ का नाम ( ५० ) अन्त में, पीछे, निकट, आरंभ ।

निदिध्यासन तत्० ( ५० ) [ नि + ध्ये + सन् + घनट् ] पुनः पुनः स्मरण, परमार्थ चिन्ता विशेष ।

निदेश तत्० ( ५० ) [ नि + दिश + घट् ] आज्ञा, आदेश, अनुमति, निवोग, कथन, कथा, अनुयायन । यथाः—

“कीन्हेसि मेर निदेश निमेह ।  
देव दवाय नागतर वेह ॥”

—प्रह्लाद चरित ।

निद्रा तत्० ( ५० ) अथव्या विशेष, मनुष्य की एक अवस्था, मेधा नामक नाड़ी से मन का संयोग, सुषुप्ति की अवस्था, शयन, सोना ।

निद्रा तत्० ( ५० ) अथव्या विशेष, मनुष्य की एक अवस्था, मेधा नामक नाड़ी से मन का संयोग, सुषुप्ति की अवस्था, शयन, सोना ।

निद्रा तत्० ( ५० ) अथव्या विशेष, मनुष्य की एक अवस्था, मेधा नामक नाड़ी से मन का संयोग, सुषुप्ति की अवस्था, शयन, सोना ।

निद्रा तत्० ( ५० ) अथव्या विशेष, मनुष्य की एक अवस्था, मेधा नामक नाड़ी से मन का संयोग, सुषुप्ति की अवस्था, शयन, सोना ।

निद्रा तत्० ( ५० ) अथव्या विशेष, मनुष्य की एक अवस्था, मेधा नामक नाड़ी से मन का संयोग, सुषुप्ति की अवस्था, शयन, सोना ।

निद्रालु तत्० ( गु० ) निद्राशील, निद्रायुक्त, सोने वाला, सुवैया ।

निद्रित तत्० ( गु० ) प्राप्तनिद्रा, निद्रागत, सोयाहुआ, शयिन ।

निघडक दे० ( गु० ) निर्भय, निहर अशङ्क, साहसी, उद्योगी उत्साही, ( घ० ) अचानक, सहसा, एकाएक, अकस्मात् ।

निघन तत्० ( गु० ) धनहीन, ( पु० ) मृत्यु, मरण नाश, ध्वंस ।—ता ( स्त्री० ) कगाली, दरिद्रता, निर्धनता ।

निधान तत्० ( पु० ) निधि, आधार, पात्र, स्थापन, खजाना ।

निधि तत्० ( स्त्री० ) कुवेर का भाण्डार, सम्पत्ति रख विशेष, आधार, समुद्र, भाण्ड ।—जात ( पु० ) समुद्र से उत्पन्न रख आदि ।—नाथ ( पु० ) कुवेर, धनाधिप ।—प्रभु ( पु० ) कुवेर, अधीश, स्वामी, राजा ।—सुता ( स्त्री० ) लक्ष्मी ।

निनाद तत्० ( पु० ) [ नि + नद् + घञ् ] शब्द, रव, गजन, ध्वनि ।

निनादित तत्० ( गु० ) [ नि + नद् + णिच् + क्त ] ध्वनित, शब्दित ।

निनाया दे० ( पु० ) खटमल, मत्स्य, उदिस, कृमि विशेष ।

निनायी दे० ( पु० ) रोग विशेष, मुख का एक रोग ।

निनावा दे० ( पु० ) छाक रोग ।

निनीपा तत्० ( स्त्री० ) [ नी + न् + प्रा ] ग्रहणेच्छा, लेने की इच्छा, ग्रहण करने का अभिलाषी ।

निनीषु तत्० ग्रहणेच्छु, ग्रहण करने का अभिलाषी ।

निनेता तत्० ( पु० ) नायक, प्रधान, मुख्य, श्रेष्ठ, नेता ।

निन्दक तत्० ( गु० ) दूसरे का दोष ढूँढने वाला, परदोषानुबन्धन करने वाला ।

निन्दकार्ही दे० ( स्त्री० ) निन्दकता, निन्दा करने का स्वभाव ।

निन्दना दे० ( स्त्री० ) कलङ्कलगाना, दोष लगाना ।

निन्दनीय तत्० ( गु० ) निन्दा के पात्र, निन्दा के योग्य, गर्हा, निन्द्य ।

निन्दा तत्० ( स्त्री० ) कुत्सा, गर्हा, अपवाद, दुष्प्रशंसा, मिथ्या, कलङ्क ।—स्तुति ( स्त्री० )

स्तुति, मूयावाद, मिथ्यास्तुति, श्रय्या स्तोत्र ।

निन्दास दे० ( स्त्री० ) ऊँचास, भपकी, निद्राकुत्सा ।

निन्दासा दे० ऊँचासा, निन्द्रालु ।

निन्दित तत्० ( गु० ) उपेक्षित, अपमान, जुगुप्सित, -गर्हित, कुम्भित, अपम, दूषित, कलङ्कित ।

निन्द्य तत्० ( गु० ) निन्दनीय, हेय, दुष्क ।—कर्म ( पु० ) कुम्भित कर्म, निन्दित काम ।

निज्ञानवे दे० ( गु० ) नौ अधिक 'तब्दे, १२१ ।—के केर में पडना ( पाठ ) धन लोहने में मगना, कृपणता ।

निपट दे० ( गु० ) बहुत, अधिक चतुर्नत शक्तिशाली ।

निपटना दे० ( स्त्री० ) पूरा होना खतम होना समाप्त होना, सम्पूर्ण होना ।

निपटाना दे० ( स्त्री० ) ठहराना, 'पूरा' करना, समाप्त करना ।

निपटारा दे० ( पु० ) निबेरा, कैलला, निर्णय ।

निपटारु दे० ( पु० ) निबेरा, निर्णायक ।

निपतन तत्० ( पु० ) [ नि + पत् + षण्ट ] अध पतन, मरण, नष्ट होना, मारा जाना, नीचे गिरना ।

निपतित तत्० ( पु० ) पतित, ध्वस्त, भष्ट रूपित, गिरा हुआ ।

निपात तत्० ( पु० ) मृत्यु, पतन, गिरना, मरण, नाश, निघन, अध पतन, व्याकरण में च आदि और प्र आदि अक्षर को निपात कहते हैं ।

निपातक तत्० ( पु० ) नाशक, उजाड़ने वाला, गिराने वाला, दाहने वाला ।

निपातना दे० ( स्त्री० ) गिराना, दाहना, नाश करना, मारना ।

निपादित तत्० ( गु० ) [ नि + पत् + णिच् + क्त ] अध क्षिप्त, नीचे गिराया हुआ ।

निपान तत्० ( पु० ) कृपया तालाब के पास पशुओं के जल पीने के लिये बनाया हुआ जलकुण्ड, आहाय, कठरा, दौदी ।

निपीडन तत्० ( पु० ) [ नि + पीड + षण्ट ] मर्दन, शय्या, पीटा देना, दुःख देना, भसलना ।

निपीडित तत्त्वं (ग्र०) मंदित, व्यथित, दुःखित ।  
 निपुण तत्त्वं ( ग्र० ) कार्यक्षम, अभिज्ञ, पटु, योग्य,  
 प्रवीण, कुशल, दक्ष ।—ता ( स्त्री० ) कार्यक्षमता,  
 योग्यता, प्रवीणता ।

निपुणार्थः दे० ( स्त्री० ) बुद्धिमान्नी, चतुरार्थः, कुशलार्थः,  
 दक्षता ।

निपूता दे० (ग्र०) उपवृत्त, निःसन्तान, अपुत्री ।

निपोडना दे० ( क्रि० ) दौत दिखाना, निकीयना,  
 निपोरना । निलम्बता की एक मुद्रा ।

निफल तत्त्वं (ग्र०) निष्फल, निरर्थक, फल रहित ।

निबटेरा दे० (ग्र०) सकार, निर्णय, छुटकारा ।

निबडुना दे० ( क्रि० ) हो जाना, समाप्त होना,  
 सम्पूर्ण होना ।

निबटना दे० ( क्रि० ) व्यथ होना, खर्च होना ।

निबन्ध तत्त्वं (ग्र०) ग्रन्थ सम्बन्ध, ग्रन्थों की वृत्ति,  
 स्थिर नीतिका, रोग विशेष ।

निबन्धन तत्त्वं (ग्र०) ठहराव, पण, समर्थ, यत्न, हेतु,  
 कारण, निमित्त, सीमा आदि का ऊर्ध्वभाग ।

निबन्धित तत्त्वं (ग्र०) पटु, संपृहीत ।

निबल तत्त्वं (ग्र०) निर्बल, दुबला, दुर्बल, प्रवृत्त,  
 सामर्थ्यहीन ।

निवाह तत्त्वं (ग्र०) निर्वाह, पूरा करना, समाप्त  
 करना, दिन काटना ।

निवाहना दे० ( क्रि० ) पूरा करना, सिद्ध करना,  
 योग्यतापूर्वक समाप्त करना, रक्षा करना ।

निवाह दे० (ग्र०) टिकाऊ, स्थायी, विरस्थायी,  
 बहुत दिनों तक ठहरने वाला ।

निवेदना दे० ( क्रि० ) निवेदना, पूरा करना, बुझाना,  
 साफ़ करना ।

निवेदना दे० (ग्र०) निवेदना, निबटेरा, सफ़ाई ।

निवेदि दे० (ग्र०) निवाह, निवेदाह ।

निम तत्त्वं (ग्र०) मुख्य, सद्गुण, समान, प्रकाश ।

निमता दे० ( क्रि० ) पार लगाना, धार बढ़ना, समाप्त  
 होना, बन जाना ।

निमाना दे० ( क्रि० ) निवाहना, पार करना, रक्षा  
 करना ।

निभूत तत्त्वं (ग्र०) नभः, धिनीत, तिर्जन, विरजः,  
 गुण, प्रबल, निवृत्त, धरतमित, एकांत; रहस्य ।

निम तत्त्वं (ग्र०) शलाका, शंख, सूची, फंतरनी ।  
 ( दे० ) घोड़ा, न्यून, कम ।

निमक दे० (ग्र०) लवण, नोन, लोम, वून ।—हराम  
 (ग्र०) अविरयस्त, विख्यासघातक ।

निमकी दे० ( स्त्री० ) अचार विशेष, नींबू का  
 अचार ।

निमकीड़ी दे० ( स्त्री० ) नीम मूत्र का फल, तिंबोरी ।

निमन दे० (ग्र०) सुन्दर, दर्शनीय, मनोहर, मनोरम,  
 रमणीय ।

निमनार्थ दे० ( स्त्री० ) घोड़ाई, सुन्दरताई, अष्टायन ।

निमनाना दे० ( क्रि० ) घोड़ा बनाना, सुन्दर करना,  
 अच्छा बनाना ।

निमन्त्रण तत्त्वं (ग्र०) आमन्त्रण, आह्वान, आयाहन,  
 नेत्रता, युवाहट ।

निमन्त्रित तत्त्वं (ग्र०) नेत्रता गया, बुलाया गया,  
 आहूत ।

निमन्त्रयिता तत्त्वं (ग्र०) आहूतकर्ता, आमन्त्रण-  
 कर्ता, आमन्त्रण भेजने वाला, यजमान, या उत्सव-  
 कर्ता जो आमन्त्रण भेज कर बुलाता है ।

निमय तत्त्वं (ग्र०) [ नि + मि + यत् ] विनियम,  
 परिपत्त, एक पदार्थ टुकट-टुकटा पदार्थ सेना,  
 बदला ।

निमि तत्त्वं (ग्र०) सीता के पिता कुशध्वज जनक के  
 पूर्वपुत्र, इनके पुत्र का नाम मिथि या और  
 इनके नाम के अनुसार उस राज्य की भी मिथिला  
 कहते हैं । मिथि के पुत्र का नाम जबक यानी  
 जनक के शतनर उनके वंशधर "जनक" इस  
 उपनाम से परिचित होते थे । सीतानी के पिता  
 का नाम जनक न था ।

निमित्त तत्त्वं (ग्र०) कारण, हेतु, निदान । (ग्र०)  
 प्रयोजन, वास्ते, लिये ।—कारणः (ग्र०) प्रयोजन,  
 हेतु, निमित्त, व्यापक के मत से अथाहक विविध  
 कारण के शतनरत कारण विशेष ।

निमीलन तत्० (यु०) [नि + मील + क्त] मुद्रित करना, धाँस मूँदना, धाँस मीचना ।

निमीलित तत्० (गु०) मुद्रित, मूँदा हुआ, बन्द हुआ ।

निमेष तत्० (यु०) [नि + मिष् + क्त] नेत्रों के पलक का स्पन्दन काल, पलक, अति सूक्ष्म काल, विपल, क्षण, लव ।

निम्न तत्० (गु०) अध, नीचे, नीचे की ओर, नीचा-स्थान, गभीर, गदा, गर्त ।—गा (स्त्री०) नदी, स्रोतस्थिनी ।—ता (स्त्री०) गम्भीरस्थ, अधो-गतत्व ।

निम्ब तत्० (यु०) स्वनाम प्रसिद्ध वृक्ष विशेष, नीब का पेड़ ।

निम्बक तत्० (गु०) नीब का पेड़, नींबू ।

निम्बरक तत्० (गु०) नीब या नीब का वृक्ष ।

निम्बादित्य तत्० (यु०) एक वैष्णव सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य । इन्होंने द्वैताद्वैत सिद्धान्त का प्रचार किया है । इनका निम्बादित्य नाम पढ़ने का कारण सुनने में यह आता है कि ये किसी जैन साधु से शास्त्रार्थ करते थे । शास्त्रार्थ करते ही करते सन्ध्या हो गई । अथ सन्ध्या होने के कारण जैन साधु तो भोजन कर ही नहीं सकता है, इसी अशुविधा को मिटाने के लिये इन्होंने एक नीब के पेड़ पर सूर्य को रोक दिया और उस साधु से भोजन करने के लिये कहा । सूर्य देव तब तक उस पेड़ पर थे जब तक उस साधु ने भोजन नहीं कर लिया । यही कारण है कि इनका नाम निम्बादित्य या निम्बाक पड़ा । इनके धनाये ग्रन्थ का नाम धर्माधिबोध है । इनका समय १०वीं सदी मानी जाती है ।

निम्बू दे० (यु०) वृक्ष विशेष, नींबू, कागजी नींबू के वृक्ष, कागजी नींबू ।

नियत तत्० (गु०) [नि + यत् + क्त] नियम विशिष्ट, नित्य, सर्वदा, निर्णित, निर्दिष्ट, स्थिरकृत, बद्ध, दमित, शासित, निश्चित, नियुक्त, ठहराया हुआ ।

—मानस (गु०) प्रशान्त चित्त, जितेन्द्रिय ।

नियतात्मा तत्० (गु०) [नियत + आत्मा] धाम्म-वशीभूत, धर्मी, यमी, धर्ती ।

नियताहार तत्० (गु०) [नियत + हार] परीक्षित भोजन, मितभुक्, मिताशन, अन्नपाहार ।

नियति तत्० (स्त्री०) [नि + यत् + क्त] नियत देव, विधि, भाग्य, अदृष्ट, विधाता ।

नियतेन्द्रिय तत्० (गु०) [नियत + इन्द्रिय] कितेन्द्रिय, इन्द्रियदमनशील, सयत शरीर, प्रशान्त, चित्त ।

नियन्ता तत्० (यु०) [नि + यत् + क्त] शास्त्र, शासनकर्ता, प्रभू, नियामक, सारथि नियंत्रण करने वाला, शासन करने वाला, रथवाह ।

नियन्त्रित तत्० (गु०) सयमित, नियमित, नियुक्त, यन्त्रित, जकड़ा हुआ, बँधा हुआ, निवारण किया हुआ, रोक गया ।

नियम तत्० (यु०) [नि + यत् + क्त] निश्चय, व्यवधारण, निर्णय, निरूपण, प्रकार, धारा, दमन, निरोध, योगी, शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वरप्रणिधान इनको नियम कहते हैं । प्रतिष्ठा, अङ्गीकार, स्वीकार, उपशासति इत फलरूप कर्म ।

नियमन तत्० (यु०) [नि + यत् + क्त] नियम, यन्धन, दमन, वारण, रुकावट, निवारण ।

नियमशाली तत्० (गु०) [नियम + शाली] नियम युक्त, रीत्यानुयायी, नियमित कार्यकर्ता, नियम पूर्वक कार्य करने वाला ।

नियमसेवा तत्० (स्त्री०) नियमपालन, कार्तिक भाग में नियम पूर्वक भगवाण का आराधन ।

नियमित तत्० (गु०) [नि + यत् + क्त] कृतनियम, नियमबद्ध, निश्चित, विधिबद्ध ।

नियर दे० (अ०) समीप, निकट, पास, नजदीक ।

नियराई दे० (क्रि०) समीप आगई, निकटाई (स्त्री०) समीपता, निकटता ।

नियराना दे० (क्रि०) पास आना, नजदानी, निकट आना, समीप पहुँचना ।

नियरे दे० (अ०) समीप, समीप में, निकट में ।

नियामक तत्० (यु०) नियमकर्ता, नियन्ता, निष्ठा यक, पोतवाहक, कर्णधार, नायक ।

न्याय तद् ( ५० ) न्याय, धर्म, उचित व्यवहार ।  
 न्याय दे० ( ५० ) कठी, घर, सेहना, घट्ट आदि को  
 उनके पिता के घर में पुलाने के लिये दिन कहना  
 सेवना ।

न्याया दे० ( ५० ) पूषह, अलग, न्याय, अलग, अलग  
 धातु का खाद ।

न्यायिया दे० ( ५० ) सुनार, सुवर्णकार ।

नियुक्त तद् ( ५० ) [ नि + युज् + क्त ] नियोग  
 विधि, नियोजित, जिसका नियोग किया जाय,  
 जिस पर किसी कार्य का भार दिया जाय, आशा  
 प्राप्त, अवधारित, छात ।

नियुक्त तद् ( ५० ) [ नि + यु + क्त ] संख्या विशेष,  
 दस लाख, १०,००,००० ।

नियुक्त तद् ( ५० ) [ नि + युध् + क्त ] आहुयुद्ध,  
 महयुद्ध, पहलवानों की फुरती ।

नियोग तद् ( ५० ) [ नि + युज् + धञ् ] अवधारण,  
 आशा, नियोजन, अनुमति, शासन, प्रेषण,  
 आराधन, मनोनिवेश, प्रवृत्ति, निष्पत्ति, अधिकार ।

—कर्ता ( ५० ) नियोग करने वाला, भार धरणा-  
 कर्ता । —धर्म ( ५० ) पति की मृत्यु होने पर पति  
 के छोटे भाई से पुत्र उत्पन्न कराना । यह प्रथा  
 कश्मिर में वर्जित है ।

नियोगी तद् ( ५० ) नियोग विधि, नियुक्त,  
 आशाप्राप्त, उपाय, किसी व्यवहार में लगा हुआ ।

नियोजन तद् ( ५० ) [ नि + युज् + क्त ] नियुक्त  
 करण, प्रेषण, आदेशन, आशा देकर किसी कार्य  
 में लगाना ।

नियोजित तद् ( ५० ) नियुक्त, संयोजित, स्थापित,  
 आदिष्ट, किसी कार्य में नियुक्त किया हुआ ।

निर तद् ( उपसर्ग ) नहीं, विना, निष्पत्ति, आशा,  
 बाहर, उचित ।

निरङ्कार तद् ( ५० ) निराकार, आकार रहित,  
 आकार शून्य, प्राकृतिक आकार, मनुष्यों के  
 आकार से रहित, ( ५० ) परमेश्वर, परमात्मा,  
 विष्णु महाबाह ।

निरङ्कुश तद् ( ५० ) [ निर + कुश ] बाधा शून्य,  
 अनिवार्य, स्वतन्त्र, स्वेच्छाचारी, नियमनिराद  
 पूर्ण कार्यकर्ता ।

निरखना दे० ( क्त ) देखना, ताकना, निरीक्षण  
 करना ।

निरञ्जन तद् ( ५० ) निष्कलङ्क, अञ्जन रहित,  
 निर्मल, तेजोमय ।

निरत तद् ( ५० ) [ नि + रत् + क्त ] अतिशय,  
 अनुक्त, आसक्त, लगा हुआ, तत्पर, किसी कार्य  
 में निरन्तर लगा हुआ ।

निरति तद् ( ५० ) अप्रीति, अप्रेम, अल्लेह ।

निरधार तद् ( ५० ) निर्धार, निष्पत्ति, निर्णय ।

निरन्त तद् ( ५० ) अन्त रहित, अन्त शून्य, अन्त,  
 अपार ।

निरन्तर तद् ( ५० ) निविड, अन्त, अन्तकाम,  
 सर्वदा, अविच्छेद, अन्तवत्, आशीम, अपरिधान,  
 अमेद, सदृश, समान, सघन, सटा हुआ ।

निरन्तरभ्यास तद् ( ५० ) [ निरन्तर + अभ्यास ]  
 स्वाध्याय, वेदाध्ययन, पठित शास्त्रों का अभ्यास ।  
 निरन्तराल तद् ( ५० ) [ निर + अन्तराल ] अविच्छेद,  
 निरवकाश, अवकाश शून्य ।

निरन्न तद् ( ५० ) [ निर + अन्न ] अन्नाभाव, आहार-  
 शून्य ।

निरपत्य तद् ( ५० ) [ निर + अपत्य ] निःसन्तान,  
 पुत्र कन्याविहीन ।

निरपराध तद् ( ५० ) [ निर + अपराध ] अपराध  
 शून्य, दोष रहित, निष्पाप, निर्दोष ।

निरपाय तद् ( ५० ) [ निर + अपाय ] रक्षा, निर्विघ्न,  
 अनुद्वेग ।

निरपेक्ष तद् ( ५० ) [ निर + अपेक्ष ] स्वाधीन,  
 अन्वेष, उदासीन, अपारवाह ।

निरय तद् ( ५० ) नरक, दुःख भोगस्थान ।

निरर्गल तद् ( ५० ) [ निर + अर्गल ] अव्याध,  
 अप्रतिवन्धक, बेरोकड़क ।



निरर्थक तत्० ( यु० ) [ निर् + अर्थक ] अनर्थक,  
- अप्रयोजन, श्पर्य, - विफल ।

निरस तद्० ( यु० ) नीरस, रसहीन, रसाभाव,  
- शुष्क ।

निरसन तत्० ( यु० ) [ निर् + अस + अनट् ] प्रत्या-  
ख्यान, निराकरण, खण्डन, निक्षेप, विखर्जन ।

निरस्त तत्० ( यु० ) [ निर् + अस् + क्त ] प्रत्याख्यान,  
- निराकृत, निवारित, हटाया हुआ, हराया गया ।

निरस्त्र तत्० ( यु० ) [ निर् + अस्त्र ] अस्त्रशून्य ।

निरा दे० ( अ० ) केवल, मात्र, असहाय, अन्य रहित,  
एकाकी ।

निराकार तत्० ( यु० ) [ निर् + आकार ] आकार  
रहित, अशरीर । ( यु० ) आकाश, परमेश्वर, विष्णु,  
ब्रह्म, शिव ।

निराकाँची तत्० ( यु० ) निस्पृह, सन्तुष्ट, शान्त ।

निराचार तत्० ( यु० ) [ निर् + आचार ] अनाचार,  
आचारभ्रष्ट ।

निरात तत्० ( यु० ) [ निर् + आतङ् ] निःशङ्क,  
निर्भावना, निर्भय ।

निरादर तत्० ( यु० ) [ निर् + आदर ] आदरहीन,  
अपमान, अप्रतिष्ठा ।

निराधार तत्० ( यु० ) [ निर् + आधार ] आधार  
शून्य, अनाश्रय, आश्रय रहित, शून्यस्थित ।

निरानन्द तत्० ( यु० ) [ निर् + आनन्द ] आनन्द  
रहित, आनन्द शून्य, दुःखी ।

निरापद तत्० ( यु० ) [ निर् + आपद ] अनापद,  
निर्दिग्ध ।

निरामय तत्० ( यु० ) [ निर् + आमय ] रोग रहित,  
नोरोग, स्वस्थ ।

निरामिष तत्० ( यु० ) [ निर् + आमिष ] आमिष  
शून्य, मौन रहित, अत विशेष ।

निरायुध तत्० ( यु० ) [ निर् + आयुध ] आयुध  
रहित, निरस्त्र, अस्त्रशून्य ।

निरालम्ब तत्० ( यु० ) [ निर् + आलम्ब ] आलम्बन  
शून्य, अनाश्रय, विना आश्रय का ।

निरालय तत्० ( यु० ) [ निर् + आलय ] उदात्त  
- आलय रहित, विना आलम्बन, एकान्त, निर्द्वे,  
अनिवृत्तवाच ।

निरालस्य तत्० ( यु० ) [ निर् + आलस्य ] आलस्य  
- शून्य, कर्मिष्ठ, उद्योगी ।

निराला दे० ( यु० ) एकान्त, निर्जन स्थान, अ-  
शून्य स्थान ।

निराचना दे० ( क्रि० ) निराना, चेत से प्राप्त निर-  
चना ।

निराश तत्० ( यु० ) आशाहीन, बेभरोश, हताश ।

निराश्रय तत्० ( यु० ) [ निर् + आश्रय ] आश्रय  
शून्य, निराश, निरालम्ब ।

निरास तत्० ( यु० ) [ निर् + आस + घञ् ] निरास  
रण, दूरीकरण, खण्डन, निक्षेप, त्याग ।

निराहार तत्० ( यु० ) [ निर् + आहार ] अमोजन  
अनशन, भोजनाभाव ।

निरिन्द्रिय तत्० ( यु० ) [ निर् + इन्द्रिय ] इन्द्रिय  
शून्य, इन्द्रिय रहित, अन्ध, पतु प्रमत्ति ।

निरिक्षण तत्० ( यु० ) [ निर् + ईक्ष् + अनट् ] अ-  
लोकन, देखन, देखना, दर्शन, ईक्षण ।

निरिक्षदेश तत्० ( यु० ) निरक्षदेश, देश विशेष,  
- यमकोटि नामक स्थान, पूर्व दिशा में भद्राश्वर्य में  
यमकोटि नामक स्थान । दक्षिण भारत में लङ्का,  
पश्चिम दिशा में केतुमालवर्ष में रोमकनामक  
स्थान, उत्तरकुक्षुवर्ष में सिद्धपुरी ।

निरिक्षेश्वर तत्० ( यु० ) [ निर् + ईश्वर ] ईश्वराभाव-  
वादी, नास्तिक । - दर्शन ( यु० ) ईश्वर सत्ता न  
मानने वाले । शास्त्र, सौख्य जैन आदि । - वाद  
( यु० ) परमेश्वर की सत्ता न मानने वाला  
- सिद्धान्त, नास्तिक सिद्धान्त ।

निरिह तत्० ( यु० ) [ निर् + ईह ] ईहा शून्य,  
- निष्प्रेष्ट, निस्पृह, स्थिर, धीर, शिष्ट । आनन्द  
रहित, निरमिलाय, इस शब्द का प्रयोग निरपराध  
- के अर्थ में करना अत्यन्त भूल है ।

निरुक्त तत्० ( यु० ) वेदाङ्ग शास्त्र विशेष, इसमें वैदिक  
- शब्दों के कई प्रकार के अर्थ लिखे गये हैं । यास्क  
मुनि विरचित एक ग्रन्थ का नाम ।

निरुत्तर तत्त्वं (गु०) [ निरु + उत्तर ] उत्तर-हीन,  
-अधाक, उत्तर देने में अक्षम्य ।

निरुत्साह तत्त्वं (गु०) [ निरु + उत्साह ] उत्साह  
हीन, निश्चेष्ट, जो कोई काम उत्साह पूर्वक न  
करे ।

निरुत्सुक तत्त्वं (गु०) [ निरु + उत्सुक ] अकुपित,  
-निरुद्देग, अनाकुल, उत्सुकता रहित ।

निरुद्योग तत्त्वं (गु०) [ निरु + उद्योग ] उद्यम हीन,  
-उद्यमानाभाव विगिष्ट, निश्चेष्ट, निकम्मा, निकाम ।

निरुपद्रव तत्त्वं (गु०) [ निरु + उपद्रव ] उत्पात  
रहित, दौरात्म्यहीन, शान्त, अघञ्जल ।

निरुपम तत्त्वं (गु०) [ निरु + उपम ] अगुल, उपमा  
गून्य, अनुपम ।

निरुपाधि तत्त्वं (गु०) [ निरु + उपाधि ] उपाधि  
हीन, अभाव, अकपट, निर्मल, शुद्ध ।

निरुपाय तत्त्वं (गु०) [ निरु + उपाय ] उपाय रहित,  
निराश्रय ।

निरूप तत्त्वं (गु०) अवयवहीन, काव्यनिक, निरा-  
कार, अस्वरूप, अरूप ।

निरूपण तत्त्वं (गु०) [ नि + रूप + ण ] निर्णय  
करना, वितर्क करना, स्थिर करना, अवधारण ।

निरूपित तत्त्वं (गु०) [ नि + रूप + क्त ] कृतनिरू-  
पण, निर्णय किया हुआ, विस्तार पूर्वक कथित,  
निर्णीत ।

निरुखना दे० (क्रि०) निरुखण करना, देखना,  
ताकना, अवलोकन करना ।

निरोग तत्त्वं (गु०) रोग रहित, स्वस्थ, चारोग्य ।

निरोध तत्त्वं (गु०) [ नि + रुध + ण ] वेष्टन,  
अवरोध, घेरा, जँव ।

निर्गत तत्त्वं (गु०) [ निरु + गत् + क्त ] निस्वत्,  
निकला हुआ ।

निर्गता तत्त्वं (गु०) निकल कर ।

निर्गन्ध तत्त्वं (गु०) गन्धगून्य, गन्धहीन ।

निर्गम तत्त्वं (गु०) [ निरु + गम् + क्त ] बहिर्गमन,  
निःसरण ।

निर्गमन तत्त्वं (गु०) बहिर्गमन, बाहर जाना,  
निकलना, प्रस्थान-करना, पलायन ।

निर्गुण तत्त्वं (गु०) त्रिगुणातीत, सत्त्व रज और तम  
इन तीन गुणों के अतीत, परमेश्वर, विद्या-आदि  
सद्गुणों से गून्य ।

निर्गुण्डी तत्त्वं (स्त्री०) नीलशेफालिकापुष्प, पुष्प  
विशेष, एक औषध का नाम, संभाव ।

निर्घण्ट तत्त्वं (गु०) कोय, शब्दाद्यं निरूपक  
सूची ।

निर्जन तत्त्वं (गु०) एकान्त, जनगून्य, जनहीन,  
विजन, निमत, ।

निर्जर तत्त्वं (गु०) अमर देवता, देव । (गु०) अजर,  
जरा रहित ।

निर्जल तत्त्वं (गु०) जलगून्य देश आदि । मरुभूमि ।  
—एकादशी (त्री०) जेठ की शुक्ल एकादशी ।

निर्जित तत्त्वं (गु०) प्राप्त-पराजित, परास्त, परा-  
जित, वशीभूत ।

निर्जीव तत्त्वं (गु०) जीवात्मा रहित, प्राणगून्य,  
मरा हुआ, मृत, दुबल, शान्त ।

निर्भर तत्त्वं (गु०) पर्यंत से गिरने वाला जल प्रवाह,  
पहाड़ का भरना, मूर्य का घोड़ा ।

निर्भरिणी तत्त्वं (स्त्री०) नदी, स्रोतस्त्रिनी ।

निर्णय तत्त्वं (गु०) निश्चय, अवधारण, स्थिरीकरण,  
विचार, तर्क, चर्चा, विरोध परिहार, सिद्धान्त ।

—कर्ता (गु०) निश्चयकर्ता, निर्णयकारक अव-  
धारक ।

निर्णीत तत्त्वं (गु०) कृतनिश्चय, स्थिरीकृत ।

निर्णीता तत्त्वं (गु०) निश्चयकारक, अवधारणकर्ता ।

निर्दय तत्त्वं (गु०) निहुर, कठिन, दयागून्य ।  
—ता (स्त्री०) निहुरता, दयागून्यता ।

निर्दई दे० (स्त्री०) कठोर अन्तःकरण-वाला, निर्दय,  
दयाहीन, दयागून्य ।

निर्दिष्ट तत्त्वं (गु०) निरूपित, स्थिरीकृत, निश्चित,  
कथित ।

निवर्तन तत्० (५०) क्षीटाना, रोकना, वापस आना ।

निवात कवच तत्० (५०) दैत्य विशेष, यह दैत्य सहाद का पुत्र और दैत्यवत हिरण्यकशिपु का पैस था । इसके यशज दानव निवातकवच के नाम से प्रसिद्ध हैं । महाभारत में इनकी सपना तीन कोटि लिली हुई है । यह दानवों का दल देवों का प्रयत्न शत्रु है । पापहत्या के यन्त्रास के समय अर्जुन इन्द्र से अस्त्र प्रिया सोखने के लिये स्वर्य गये थे । इन्द्रादि देवों से और अस्त्र यद्या भं निपुण यत् तथा गन्धर्वों से उन्होंने अस्त्रविद्या सीखी । अस्त्रविद्या की शिक्षा समाप्त होने पर अर्जुन से गुरुदक्षिणा देने के लिये इन्द्र ने कहा । जब अर्जुन ने गुरुदक्षिणा देना स्वीकार किया, तब निवातकवच राक्षसों का यद्य ही गुरुदक्षिणा में मँगा । मातली परिचालित दिव्य रथ पर चढ़कर निवातकवच राक्षसों के वासस्थान पर पहुँचे । उनके साथ अर्जुन का घोड़ा युद्ध हुआ । उस युद्ध में निवातकवच का समूल विनाश हुआ । इन दानवों का वासस्थान रसातल में था ।

निवान दे० (५०) नीचान, गहराई निम्नता तथा ।

निवाना दे० (क्रि०) भुक्ताना, निहुराना, मोडना, दोबर करना ।

निवार दे० (५०) कोर, पट्टी, जिससे पलंग बिते जाते हैं ।

निवारण तत्० (५०) रोक, रोकथाम, अटकवाय, बाधा दूर करना, निवारना, हटाना, प्रशमित करना, उपशमन करना ।

निवारना दे० (क्रि०) रोकना, बचाना, बर्जना, हटाना, दूरकरना ।

निवारत दे० (क्रि०) बचावत, बचाता है, रखा करता है, रोकता है ।

निवारि दे० (क्रि०) बचाय कर, रोक कर, रखा कर ।

निवारित तत्० (५०) बचाया हुआ, रोक, हुआ, रक्षित किया हुआ ।

निवार तत्० (५०) [नि + वच् + घञ्] वास्तव, डेरा, मकान, जगह, घर, गृह, निवास ।

निवासो तत्० (५०) रहने वाला, बसने वाला, वासकर्ता ।

निचिड तत्० (५०) घघन, घना, बहुत सन्ना हुआ एक से एक मिला हुआ ।

निचुक दे० (क्रि०) निपट कर, अशक्य पाकर ।

निवृत्ति तत्० (स्त्री०) अवकाश, बन्धन मुक्ति, विश्राम ।

निवेदन तत्० (५०) प्रार्थना, विनती, अनिवा प्रकाय, मनोरथ कथन ।—पत्र (५०) प्रार्थनापत्र ।

निवेदित तत्० (५०) प्रार्थित, अर्पित, समर्पित ।

निशङ्क तत्० (५०) शङ्का रहित, शङ्का मूल्य, निर्भय, निडर, नि सन्देह, नि संशय ।

निशा तत्० (स्त्री०) रात्रि, रजनी, शयनी, यात्रिणी, रात, हरिद्रा, हल्दी ।—कर (५०) चन्द्रमा, विपु इन्दु ।—गम (५०) [निशा + आगम] रात्रि का आगम सन्ध्या, सन्ध्याकाल, सँक ।—वर (५०) राक्षस, चोर, शृगाल, उलूक, उलूक वर्ण, चक्रवाक, चकवा पक्षी ।—चरी (स्त्री०) राक्षसी, वैर्या, कुलटा ।—टन (५०) [निशा + चन] उलूक, उलूक ।—न्त (५०) [निशा + चन] रात्रि का अन्तकाल, प्रभात, प्रातःकाल, प्राह्न ।

मुहूर्त ।—पति (५०) चन्द्र, विपु शशधर, कर्पूर, कपूर ।—वसान (५०) [निशा + अवसान] रात्रि शेष, प्रभातकाल, उषा ।

निशात तत्० (५०) शान्त, तीक्ष्णकृत, शान दिया हुआ ।

निशान दे० (५०) बची अवज्ञा, जो राजाओं का राजचिन्ह है ।

निशि तत्० (स्त्री०) निशा, रात्रि, रात ।—वर (५०) निशाचर, चन्द्रमा ।—नाथ (५०) चन्द्रमा, चौद ।—मुख (५०) प्रदोष, सन्ध्याकाल ।—भातु चन्द्रमा ।

निशित तत्० (५०) तीक्ष्ण, तीक्ष्ण, वैना, वैनी ।

निशोध तत्० (५०) अर्द्धरात्रि, आधीरात, रात्रि मध्य ।

निशीथिनी तत्० (खी०) रात, रात्रि, रजनी ।  
 मनुग्म तत्० (गु०) विषयात् दानव, यह कश्यप के  
 और और उनकी पत्नी दनु, के गर्भ से उत्पन्न  
 हुआ था। इसके ज्येष्ठ भाई का नाम गुग्म और  
 छोटे का नाम नमुचि था। नमुचि को इन्द्र ने  
 मारा था। छोटे भाई की मृत्यु से गुग्म और  
 निगुग्म ये दोनों अत्यन्त क्रोधित हुए और इन  
 दोनों महावीरों ने इन्द्र पर चढ़ाई की, देवताओं  
 को स्वर्ग से निकाल कर ये स्वर्ग स्वर्ग के अधीन  
 बन बैठे। एक समय महिषासुर के मन्त्री रक्तवीज  
 नामक प्रसिद्ध दानव से इनकी भेंट हुई। इन  
 दोनों ने रक्तवीज से सुना कि विन्ध्य पर्वत पर  
 कात्यायनी देवी के हाथ महिषासुर मारा गया  
 और उसके सेनापति चण्ड और मुण्ड भय से जल  
 में छिपे हुए हैं। इन्होंने कात्यायनी देवी का  
 नारा करने के लिये सङ्कल्प किया, और चण्ड  
 मुण्ड से भी साक्षात् किया। अथ इन लोगों ने  
 सुपीर नामक दूत को देवी के निकट भेजा।  
 दूत देवी के निकट जाकर कहने लगा—पृथिवी  
 में गुग्म और निगुग्म से यह कर दूसरा वीर  
 नहीं है और तुम भी इस संसार में सर्वोत्तम  
 सुन्दरी हो, अतएव तुमकी उचित है कि इन  
 दोनों में जिससे चाहो तुम अपना विवाह कर लो।  
 देवी ने कहा—तुम जो कहते हो वह बहुत ठीक है  
 परन्तु मैंने एक प्रतिज्ञा की है कि जो युद्ध में मुझ  
 को हरा देगा उसीसे मैं अपना हाथ दूँगी।  
 गुग्म निगुग्म के पास जाकर दूत ने ये बातें कहीं।  
 धूम्रलोचन नामक दैत्य को उन लोगों ने देवी  
 की पकड़ लाने के लिये भेजा। धूम्रलोचन को  
 देवी ने मार डाला। तब चण्ड और मुण्ड को  
 गुग्म ने देवी के पास भेजा। चण्डमुण्ड की भी  
 यही दशा हुई। चण्डमुण्ड के मारे जाने पर  
 तीस कोटि अर्द्धहिणी सेना के साथ रक्तवीज  
 भेजा गया। देवी के साथ रक्तवीज यही वीरता  
 से लड़ा, परन्तु अन्त में वह भी मारा गया।  
 अथ कात्यायनी गुग्म और निगुग्म युद्धक्षेत्र में उप-  
 स्थित हुए और मन भर लड़ कर, इन्होंने भी  
 वीरों के समान गति पाई।

निश्चय तत्० (गु०) स्थिर, अचञ्चल, असंशय, निर्णय,  
 विद्वान्त, व्यवधारण, विश्वास, प्रतियोग, स्थिर,  
 अवरय।—ज्ञान (गु०) दृढप्रत्यय, अद्वा।  
 निश्चल तत्० (गु०) अचल, स्थिर, पर्यंत, वृत्त, स्था-  
 यर।  
 निश्चला तत्० (खी०) अचला, स्थिरा, पृथिवी,  
 भूमि।  
 निश्चित तत्० (गु०) निर्णयित, स्थिरकृत, विद्वान्त  
 निश्चय किया हुआ।—कर्मा (गु०) स्थिरकर्मा,  
 दृढकर्मा।  
 निश्चिन्त तत्० (गु०) चिन्ता हीन, सुस्थिर, उद्वेग  
 शून्य, चिन्ता रहित।  
 निश्चेष्ट तत्० (गु०) चेष्टा रहित, अनुयोग, सुर्द्धित,  
 निरुपाय।  
 निश्चिद्ध तत्० (गु०) छिद्र रहित, श्रेय रहित।  
 निश्वास तत्० (गु०) [नि + श्वा + + च्च्] बहिः  
 श्वास, प्राणवायु, निर्वास।—संहिता (खी०)  
 शिव प्रणीत शास्त्र विशेष।  
 निपङ्गु तत्० (गु०) लूण, बाण रखने की शैली,  
 भाषा, सुपीर, तर्क।  
 निपण्ण तत्० (गु०) चुपप, विषय, उपस्थित, बैठ  
 हुआ।  
 निपध तत्० (गु०) पर्यंत विशेष, देशविशेष, निपध  
 देश का राजा, निपादस्वर।  
 निपाद तत्० (गु०) स्वर विशेष, पहला स्वर,  
 चण्डाल, धीवर विशेष।  
 निपिद्ध तत्० (गु०) निषेध का विषय, वज्रित,  
 निवारित, रोक, प्रतिषेधित, मना किया हुआ।  
 निपिद्धाचरण तत्० (गु०) प्रतिषिद्धाचरण, अकर्म-  
 करण, शास्त्र विद्वद्धारण।  
 निपेक तत्० (गु०) संस्कार विशेष, गर्मोपान  
 संस्कार।  
 निपेध तत्० (गु०) प्रतिषेध, निवृत्ति, निवारण,  
 धारण, मना करना।  
 निषेधक तत्० (गु०) निषेधकर्ता, निवारणकर्ता,  
 रोकने वाला।

निरुक्त तत्त्वं (५०) एक सी घाट रस्ती भर सोना, सुवर्ण, हेम, एक प्रकार का मले का गहना, धुक-धुकी । शास्त्रीय परिमाण विशेष । अशरफी, दीनार ।

निरुक्तपटक तत्त्वं (५०) अकपटक, कपटक शून्य, निरुद्धेग ।

निरुक्तपट तत्त्वं (५०) कपट शून्य, अकपट, सीधा, सरल ।

निरुक्तर तत्त्वं (५०) कर रहित, राजस्य रहित, वृत्ति, ।

निरुक्तर्य तत्त्वं (५०) निश्चय, निष्पत्ति, स्थिरीकृत व्यवस्था, तात्पर्य, सत्य, प्रत्यक्ष, सिद्धान्त ।

निरुक्तलङ्क तत्त्वं (५०) निर्दोष, अदोष, अपराधहीन, गृह दीप्तिशील ।

निरुक्तकाम तत्त्वं (५०) कामना रहित, इच्छा शून्य, फल की अनिच्छा सहित काम, निरा काम का फल भगवाद् को अर्पित किया जाय ।

निरुक्कारण तत्त्वं (५०) कारणहीन, हेतुशून्य, निष्प्रयोजन, अहेतुक ।

निरुक्कर्मण तत्त्वं (५०) संस्कार विशेष, वहिर्गमन, निःसरण ।

निरुक्कान्त तत्त्वं (५०) निर्गत, प्रसिधत्, वहिर्गत, निःसृत ।

निरुक्क्रय तत्त्वं (५०) ब्रह्म, निरञ्जन । ( ५० ) क्रिया शून्य, अकर्म, जड़ ।

निरुक्त तत्त्वं (५०) स्थित, स्थिर, तत्पर, अभिनिविष्ट, तत्रस्थ ।

निरुक्ता तत्त्वं (श्री०) निष्पत्ति, नाश, अन्त, निर्वहण, यात्रा, दृढ़भक्ति, धर्मविश्वास, धर्मतत्परता, विश्वास, स्थिरता ।

निरुक्तर तत्त्वं (५०) पक्ष, कठोर, निर्दय, कठिन, क्रूर, दुराचार ।

निरुक्तात् तत्त्वं (५०) प्रवीण, विद्व, पण्डित, अभिन्न, पारङ्गत, पारदर्शी ।

निरुक्त्ति तत्त्वं ( श्री० ) समाप्ति, शेष, अवधारण, निश्चय ।

निरुक्त्त तत्त्वं (५०) स्पन्द रहित, अवलन, स्थिर, दृढ़ ।

निरुक्त्त तत्त्वं (५०) समाप्त, शेष, सम्पन्न, पूर्ण, सिद्ध ।

निरुक्त्तिप्रह तत्त्वं ( ५० ) योगी, तपस्वी, वैराग्य संन्यासी ।

निरुक्त्तादन तत्त्वं ( ५० ) सम्पादन साधन, निष्पत्ति करण, शेषकरण, सिद्धान्त करना, समाधान करण, प्रतिज्ञा पूरण करना, निष्पत्ति, निष्कर्ष ।

निरुक्त्ताप तत्त्वं (५०) निरवराध, निर्दोष, पापहीन ।

निरुक्त्तितम तत्त्वं ( ५० ) अन्न, जड़, सुख, विशेष हतबुद्धि ।

निरुक्त्त्यूह तत्त्वं (५०) निर्दिष्ट, बाधाहीन, निरापद ।

निरुक्त्तप्रभ तत्त्वं (५०) दोषरहित, प्रभाहीन, बलक, हतमनोरथ ।

निरुक्त्तप्रयोजन तत्त्वं (५०) प्रयोजन रहित, निरर्थक, अहेतुक, अकारण ।

निरुक्त्तफल तत्त्वं (५०) विफल, निरर्थक, व्यर्थ, फल रहित ।

निरुक्त्तदूट तत्त्वं (५५०) निःसङ्कट, सङ्कटमुक्त, सङ्कट रहित, आनायास ।

निरुक्त्तार्ह दे० ( श्री० ) सन्धि रहित, निरिच्छ, टॉस, पोड़ा ।

निरुक्त्त तत्त्वं (५०) निःशक्य, अशक्य, उपरार्थहीन ।

निरुक्त्तना दे० (क्रि०) निकलना, निकलना, बाहर होना ।

निरुक्त्तार्ग तत्त्वं ( ५० ) प्रकृति, स्वभाव, रूप, स्वर्ग, सृष्टि, त्याग, परिवर्त, स्वाभाविक, प्राकृतिक ।

—अ (५०) सहजात, स्वभावज, नैतिक ।

निरुक्त्तस दे० (५०) आह भरना, विलाप करना ।

निरुक्त्तसी दे० (५०) दुःखी, व्यस्त, उद्विग्न ।

निरुक्त्तान दे० (५०) नगर, दुन्दुभी, सूर्य ।

निरुक्त्तस तत्त्वं (५०) निःश्वास, सौंख्य, प्राणवायु ।

निरुक्त्त तत्त्वं (५०) वैनी, तीक्ष्ण, धारदार, निश्चित ।

निरुक्त्त तत्त्वं (५०) मध्यस्थ, न्यस्त, अर्पित, शोभा हुआ, त्यक्त ।

सुदृष्टार्थ तत्त्वं (५०) दूत विशेष, धन का धारण  
 क्षय और पालन आदि के विषय में निवृत्त  
 किया हुआ ।

सोनी तद्दं ( स्त्री० ) निष्पेणि, सीड़ी, जीना,  
 सोपान ।

स्रोत दे० (५०) एक ओषधि का नाम ।

स्तारण तत्त्वं (५०) पार होना, तरना, उद्धार  
 करना, मुक्ति पाना, छुटकारा होना, उपाय ।

नेस्तल तत्त्वं (५०) तल रहित, गोलाकार, गोल,  
 वर्तुल ।

स्तार तत्त्वं ( ५० ) [ निष् + तृ + घञ् ] रत्ना,  
 उद्धार, प्राण, मुक्ति, मोक्ष, छुटकारा, यथाय ।

स्तारना दे० ( स्त्री० ) बहाना, उधारना, उद्धार  
 करना, छुटकारा देना, ब्राण करना, रत्ना करना ।

स्तारा दे० (५०) छुटकारा, बचाव, मोक्ष, मुक्ति ।

स्तेज तद्दं ( ५० ) निस्तेजा, तेजहीन, प्रताप  
 रहित, मोघा ।

स्वप तत्त्वं निर्लज्ज, अशिष्ट, नितान्त, सक्षान्त-  
 रहित ।

स्वश तत्त्वं (५०) अशि, फल, तलवार ।

स्वन्द तत्त्वं ( ५० ) स्वन्दन शून्य, कल्प शून्य,  
 निष्पेष्ट, अटल, स्थिर ।

स्पृह तत्त्वं (५०) स्पृहा शून्य, वाञ्छा रहित,  
 निरभिलाष ।

ख तत्त्वं (५०) निर्धन, दरिद्र, दुखी, अर्थहीन ।

खन तत्त्वं (५०) शब्द, ध्वनि, त्रिनाद ।

खड्ग दे० (५०) नङ्गा, नग्न, विन्ता रहित, फलङ्ग ।

खल तत्त्वं (५०) आहत, निपातित, मारा गया,  
 पथ किया हुआ ।

खत्या दे० (५०) अन्नहीन, अन्नरहित, अन्न-  
 विना होय को ।

खड्ग दे० ( स्त्री० ) धन, सोहे की बनी एक प्रकार की  
 वस्तु जिसे घर तपे हुए सोने चाँदी आदि को गड़ते  
 हैं । अयोधन, निहाली ।

खानी दे० ( स्त्री० ) खो का रज, अशु, रूपदे होना ।

खायत दे० ( स्त्री० ) अत्यन्त, अधिक, अतिशय,  
 अपरिमित ।

निहार तत्त्वं ( ५० ) कुहर, कुहिरा, अन्धकार,  
 गिरिद, हिम, यथा—

“जिमि निहार में दिनकर दूरा”  
 ( रामायण )

निहारना दे० ( स्त्री० ) देखना, धिलोकन करना,  
 दर्शन करना, अवलोकन करना, निरीक्षण करना,  
 ध्यान पूर्वक देखना ।

निहारा दे० ( स्त्री० ) देखा, निरीक्षण किया, अवलो-  
 कन किया ।

निहाल दे० (५०) प्रसन्न, सुखी, आनन्दित, हर्षित,  
 तृप्त, अभिलाष पूर्ण होने से तृप्त, मनोरथ सिद्धि ।

निहाली दे० ( स्त्री० ) पंन, निहाई, अयोधन ।

निहित तत्त्वं ( ५० ) [ नि + धा + क्त ] स्थापित,  
 अर्पित, न्यस्त, रखा हुआ, रखा पूर्वक रखने के  
 लिये रखा हुआ ।

निहुरना दे० ( स्त्री० ) भुक्तना, दबना, नबना, नभ  
 होना, प्रणत होना ।

निहुराना दे० ( स्त्री० ) भुक्ताना, नयाना, प्रणत करना,  
 नब करना ।

निहोर दे० (५०) कृपा, उष्कार, विनती, विनय ।

निहोरा दे० (५०) चिरीरी, विनती, अनुनय, विनय,  
 नयता ।

द्विष तत्त्वं ( ५० ) [ नि + ष् + घञ् ] अपलाप,  
 अपहृष, तोषन, लुकारना, द्विषना, अविश्वास,  
 न मानना ।

निहाद तत्त्वं (५०) शब्द, ध्वनि, नाद, त्रिनाद ।

नीद तद्दं ( स्त्री० ) निद्रा, भयकी, उँघाई, आलस्य ।  
 —उच्चाट होना ( वा० ) नीद न आना, नीद  
 टूटना ।—भर सोना ( वा० ) शून्य सोना, गहरी  
 निद्रा से सोना ।

नीदना दे० ( स्त्री० ) सोना, शयन करना ।

नीदू दे० (५०) सुषेया, निद्राशु, शयाशु ।

नीच दे० (५०) वृष विशेष, निम्न वृष ।

नीचू दे० (५०) निवृद्धा, जँभीरी नीचू, फल विशेष ।

नीक दे० (५०) मना, अच्छा, उत्तम, सुन्दर ।

नीच तत्त्वं (५०) अधा, निम्न, अफुष्ट, अधम,  
 हतर, जघन्य, धामन, खर्ष ।—गण (५०) नीच-

गामी, घामर, अधम ।—गा (खी०) नदी, द्वादिनी, निम्नगामिनी ।—गामी (गु०) नीचे की ओर से चलने वाला, निम्नगामी ।—ता (खी०) अधमता, अपकृष्टता, जघन्यता ।

नीचा दे० (गु०) नीच, अधम, छोटा । (प०) तला, तल ।—ऊँचा (या०) ऊँचहाथमड, उद्गामिनी भूमि ।

नीचाई दे० (खी०) नीचता, नीचपन, छुटाई ।  
नीचाशय तत्० (गु०) [ नीच + आशय ] चुद्राशय, चुद्रान्त करण, लघुहृदय ।

नीचू दे० (गु०) अधस्तल, वृचविशेष, एक वृच का नाम ।

नीचे दे० (अ०) तले ।

नीठ दे० (गु०) तुम्हारा, तुम्हारे सम्बन्ध का ।

नीड तत्० (गु०) पत्ति का वासस्थान, विहगावास, कुलाय, वासस्थान, घोसला, खोता ।

नीत तत्० (गु०) [ नी + क ] प्राप्त, गृहीत, लिया हुआ ।

नीति तत्० (खी०) [ नी + ति ] न्याय्य व्यवहार, शास्त्र विशेष, नय ।—कथा (खी०) ग्रन्थ विशेष, हितोपदेश, चुद्रउपाख्यान ।—झ (गु०) नीतिशास्त्रवेत्ता, नीतिशास्त्र विशारद, राजमन्त्री ।—बिद्या (खी०) नीतिशास्त्र, हितोपदेश देनेवाला शास्त्र ।—सार (गु०) नीतिशास्त्र विशेष ।

नीद दे० (खी०) निद्रा, नीद, शयन, सोना ।

नीप तत्० (गु०) कदम्ब वृक्ष, कदम्ब का पेड़ ।

नीपी तत्० (खी०) छपापर धरने वालों का मूलधन, खिरो का कटिपथ ।

नीचू दे० (गु०) निम्न, एक प्रकार का फटा फल जिसका रस विशेष करके काम में लाया जाता है ।

नीम दे० (गु०) नीब ।

नीमन दे० (गु०) अच्छा, भला, उत्तम, सुन्दर, मनोरम ।

नीमायत दे० (गु०) एक धर्मपथ, जिसे नीमानन्द सरस्वती ने चलाया था । यह धर्मपथ बिलकुल आधुनिक है ।

नीर तत्० (गु०) पानी, जल, रस, सलिल, पथ ।— (गु०) पद्म, कमल । (गु०) जल से उत्पन्न जल, मास, निर्धूसी देश, भरजस्का लो, कुमादि कन्या ।

नीरथ दे० (गु०) निरर्थक, निष्फल, वृथा, व्यर्थ ।

नीरद तत्० (गु०) [ नीर + दा + द ] लज्ज, लज्ज, भुस्नक, मोथा ।

नीरधि तत्० (गु०) सागर, समुद्र, पयोनिधि, तीर निधि ।

नीरनिधि तत्० (गु०) सागर, समुद्र, जलधि ।

नीरमय तत्० (गु०) [ नीर + मयद् ] जलमय, जल घेष्टित, जल में डूबा ।

नीरस तत्० (गु०) [ नीर + रस ] रसहीन, गुण, विस्वाद, स्वाद रहित ।

नीराजन तत्० (गु०) विस्मय, भारती, भारती उतारना ।

नीरज तत्० (गु०) स्वस्थ, रोग का अभाव ।

नीरोगी तत्० (गु०) रोग शून्य, बीबा रहित, सुस्थ ।

नील तत्० (गु०) कृष्णवर्ण, नील इसगुण वृष तालीशपत्र, विय नरल, १०८ नृत्य क मैदों में अन्तर्गत एक प्रकार का नृत्य । पर्यंत विशेष, मति विशेष, नदी विशेष, यह नदी मिसर देश में बहती है । मिथि विशेष, कुवेर के एक इजाने का नाम यानर विशेष, यह रामचन्द्र की सेना में था और इसने सेतु बनाने में रामचन्द्र की बड़ी सहाय की थी ।

(२) माहिष्मती पुरी के एक राजा, इनकी अत्यन्त सुन्दरी कन्या के रूप पर मोहित हो अग्नि ने उससे अपना प्याह किया । अग्नि ने राजा नील को यह वर दिया था कि जो कोई इस वर पर चढ़ाई करेगा, वह भस्म हो जायगा । अग्नि के राजसूय यज्ञ के समय सहदेव ने इस वर पर चढ़ाई की थी, उस समय सहदेव ने देखा कि वह सेना आग से घिरी हुई है, तब सहदेव ने अग्नि स्तुति और उपामना की, अग्नि ने प्रसन्न हो

नीलराज की पूजा, लेकर सहादेव से शीत जाने के लिये कहा। अग्नि की आज्ञा से नीलराज ने सहादेव की पूजा की। सहादेव भी कर लेकर वहाँ से दक्षिण की ओर चले गये।

नीलक तत् ० (५०) नील रङ्ग का मृगा विशेष, शीत गणित का प्रमाण विशेष।

नीलकण्ठ तत् ० (५०) शिव, महादेव, शम्भु, मेरु, मधुर, शिखी, संस्कृत ज्योतिःशास्त्रवेत्ता, इनकी बनाई "नाजिक नीलकण्ठी" नाम की पुस्तक का ज्योतिषी समाज में विशेष आदर है। इनके पिता का नाम चिन्तामणि और पितामह का नाम चिन्तामणि था। मुहूर्तचिन्तामणि नामक ग्रन्थ के कर्ता रामदेवचन्द्र इन्होंने छोटो भाई थे। नीलकण्ठ के पुत्र भी प्रसिद्ध ज्योतिषी थे। इन्होंने भी मुहूर्तचिन्तामणि की टीका पीरूयधारा बनाई है। इन्होंने अपने ग्रन्थ के प्रारम्भ में अपने पिता का कुछ वृत्तान्त लिखा है जिससे मालूम होता है कि नीलकण्ठ मीमांसक, नैयायिक, ज्योतिषी और शिवाकरण से और ये शकवर के समासद भी थे। ये विदर्भ देश के रहने वाले थे। इनकी स्त्री का नाम पद्मा था। ये शकवर बादशाह के समकालीन थे, इसलिये इनका समय ख्रिष्टीय १६वीं शती का पिड्डसा भाग ही मानना चाहिये।

नीलकमल तत् ० (५०) नीलवर्ण का पद्म, कृष्ण कमल, नीलपद्म।

नीलगन्ध तत् ० (५०) नील गौर, रोम, गौर के समान एक जङ्गली जन्तु।

नीलाग्न दे० (५०) नील गौर, रोम, नीलगाय।

नीलप्रीव तत् ० (५०) महादेव, शिव, नीलकण्ठ, विष पान करने के कारण महादेव का कण्ठ काला पड़ गया है, इसीसे इन्हें नीलकण्ठ कहते हैं।

नीलवड्डी दे० (श्री०) नील का टुकड़ा, नीलरङ्ग।

नीलम दे० (५०) नीलकान्त मणि, राज विशेष, नीलम।

नीलमणि तत् ० (५०) नीलम, नीलकान्तमणि, राज विशेष।

नीलमाधव तत् ० (५०) विष्णु, नारायण, जगन्नाथ देव, जगदीश।

नीललोहित तत् ० (५०) शिव, महादेव, शम्भु, नीलकण्ठ, नील और रक्त मिश्रित वर्ण, बैंगनी रङ्ग।

नीलवर्ण तत् ० (५०) श्याम रंग, आकाशी रङ्ग, आसमानो रङ्ग।

नीला दे० (५०) नीले रङ्ग वाला, नील रङ्ग में रंगा हुआ।

नीलाई दे० (श्री०) श्यामता, नीलता, नीलापन।

नीलाधोधा दे० (५०) नीलाञ्जन, तृतीय, उपधाशु विशेष।

नीलाम दे० (५०) चिकी, विकास, श्वेतनी। यह शब्द पुर्तगाली, "लेलाम" शब्द का अपभ्रंश है। किसी वस्तु को मोल लेने वाले—चाहे वे कितने ही हों—मोल बोलते जाते हैं, उनमें जो सबसे अधिक मोल देना स्वीकार करता है, और उसके बाद दूसरा नहीं बोलता, तो वह वस्तु सबसे अधिक मोल देने वाले के हाथ बेची जाती है।

नीलाम्बर तत् ० (५०) बलदेव, शनैश्वर।

नीलात तत् ० (५०) पौधा विशेष, कटीना, एक वृक्ष जिसमें पीले फूल लगते हैं, प्रिययासा, प्रियापांशु।

नीलात्पल तत् ० (५०) नीलकमल, नील पद्म, इन्दीवर।

नीलापल तत् ० (५०) नीलाम, नीलमणि।

नीवा दे० (५०) मुनाहट, मन्दाई, मन्दाता।

नीवार तत् ० (५०) तिली का वृक्ष, एक प्रकार का वृक्ष जो तानाबों में होता है।

नीची तत् ० (श्री०) धनियों का मूलधन, पूँजी, नारा, जारघन्द।

नीचूत् तत् ० (५०) देश, जनपद, जनस्थान।

नीशार तत् ० (५०) शीत निवारण करने वाला, आच्छादन, शामियाना, कनात, तम्बू, घटमचबप, बसनपट्ट।

नीसारना दे० (क्रि०) निकालना, निकालना।



नीहार तत्० (५०) चनीभूत शिशिर, बरफ, हिम,  
तुषार, षोड, कुहर, कुहासा ।

नुहडा दे० (५०) नख का खडोट, नख का बकोट ।

नुति तत्० (स्त्री०) [नु + ति] स्तुति, स्तव, पूजा ।

नूतन, नूल तत्० (५०) नया, नवीन, अभिनव ।

नूधा दे० (५०) तमाकू विशेष ।

नून दे० (५०) लोन, जेन, तमक ।

नूनी दे० (स्त्री०) लिहू, बसों का लिहू,  
भयभूत ।

नूपुर तत्० (५०) भूषण विशेष, यह भूषण पैर में  
पहनना जाता है, पायजैव ।

नृग तत्० (५०) एक राजा का नाम, ये बहुत दानी  
थे, दान में व्यतिक्रम होने से इन्हें सरट की पोति  
प्राप्त हुई । पुनः श्रीकृष्णजी ने इनका उद्धार  
किया ।

नृत्य तत्० (५०) नर्तन, नाँच, नाचना ।—कारी  
(५०) नाचने वाला, नचैया, नट ।

नृदेव तत्० } (५०) राजा, नृप, महाराज ।  
नृदेवता }

नृप तत्० (५०) राजा, भूपाल, भूपति, नरपति,  
राजा ।—घाती (५०) राजवंश नायक, पर्युराम  
भार्गव ।

नृपति तत्० (५०) नरपति, राजा, नृपाल ।

नृपाल तत्० (५०) राजा, भूपति, नरपति नृपति ।

नृघराह तत्० (५०) शूर, वीर, घोड़ा, बराह रूप-  
धारी भगवाद् का अवतार विशेष ।

नृशेख तत्० (५०) घातक, क्रूर, दुष्ट, व्याध, हत्यारा,  
पर्रोही ।

नृसिंह तत्० (५०) प्रधान मनुष्य, नरब्रह्म, रतियन्त्र-  
विशेष, भगवाद् का एक अवतार विशेष, जिनका  
रूप मनुष्य और सिंह के समान था ।—चतुर्दशी  
(स्त्री०) वैशाखमास की शुक्ल चतुर्दशी, इसी दिन  
भगवाद् नृसिंह प्रकट हुए थे, इस कारण इसको  
नृसिंह जयन्ती भी कहते हैं ।

नृहरि तत्० (५०) नरसिंह अवतार, भगवाद् का  
नृसिंहावतार ।

नेऊन दे० (५०) मण्डन, नवनीत ।

नेक, नेकु दे० (५०) कुड्ड, षोडा, अथ, अथर,  
तनक, अच्छा, भला, उत्तम, मनोहर, मनोरम,  
रमणीय ।

नेकनाम दे० (५०) नामी, कीर्तिमाद्, यशसी ।

नेका तत्० (५०) पोषक, पालक, पोषणकर्ता ।

नेग दे० (५०) विवाह में का दान, जो बंधा रहता  
है ।—चार (५०) नातेदार आदि का विवाह  
आदि उत्सवों में देना ।

नेगी दे० (५०) नेर पाने के अधिकारी, नेग में हिस्सा  
घटाने वाला, परजा, मंगता, अधिकारी ।

नेजक तत्० (५०) घोड़ी, रजक, परिष्कारक, शुद्ध  
करने वाला, कपड़ा धोने वाला ।

नेजन तत्० (५०) परिष्करण, शोधन ।

नेटा दे० (५०) पोटा, नाक का मल ।

नेठमी दे० (५०) स्थिर, स्थायी, एक स्थान पर रहने  
वाला ।

नेतक दे० (५०) नडफूल, नरकट ।

नेता तत्० (५०) नींव का वृक्ष, प्रधान, मुख्य, ब्रह्म,  
अग्रथा ।

नेति तत्० (७०) नहीं, ऐसा नहीं ।

नेती दे० (स्त्री०) मयानी की रस्सी, मयानी पुमाने  
की रस्सी । एक प्रकार का मोटा डेरा, जिसको  
हठयोगी नाक में डाल कर साफ करते हैं, योगी  
की क्रिया विशेष ।

नेत्र तत्० (५०) चक्षु, नयन, अक्षि, चाँद ।—बन्द  
(५०) नेत्रविधायक चर्मपुट, नेत्र बन्द करने वाली  
पपनी ।

नेत्रलोत दे० (५०) बन्धवा, बन्दी, दम्बित,  
अपराधी ।

नेत्राम्बु तत्० (५०) अम्बु, चक्षु का जल ।

नेपथ्य तत्० (५०) वेद्य, अणुकार, भूषण, रत्नभूमि,  
—जहाँ नाटक के पात्र सजते हैं ।

नेपाल तत्० (५०) देग विशेष ।

नेपु तद् (५०) नेपु, पादभ्रम, पायनेत्र ।  
 नेम तद् (५०) नियम, संयम, धर्म में हठ, व्रत, प्रतिष्ठा, बचन, संकल्प ।—धर्म (५०) गृह-  
 व्यवहार ।  
 नेमि तद् (स्त्री०) चक्रपरिधि, रथ के पहियों का वह भाग जो भूमि में लगा रहता है । चक्र का प्रान्त भाग, कूप के समीप घना हुआ चौरस चौरस, कुएँ के पास रस्सी रखने के लिये रखी हुई तिसासी लकड़ी ।  
 नेमी तद् (५०) नियमी, नियम करने वाले, नियमपालक ।  
 नेरषा दे० (५०) पयाल, नेली, हॉठी ।  
 नेरे, नेरी दे० (च०) निकट, समीप, निपरा ।  
 नेष दे० (स्त्री०) भीत की जड़, नींव, मूल ।  
 नेषतना दे० (क्रि०) निमन्त्रण देना, पुसाने के लिये पत्र भेजना ।  
 नेषता दे० (५०) पुलाहट, निमन्त्रण, न्योता ।  
 नेषना दे० (क्रि०) नयना, नय होना, निहुरना ।  
 नेषर दे० (स्त्री०) घाड़े के एक रोग का नाम, यह रोग घाड़े के पैर में होता है । कहीं इसे नेषल भी कहते हैं ।  
 नेषल, नेषला दे० (५०) नकुल, न्योला, यह सर्पों का स्वामाधिक शत्रु है ।  
 नेह तद् (५०) स्नेह, प्रीति, प्रेम, चिकनाहट, चिकूणता ।  
 नेही तद् (५०) स्नेह, प्रिय, प्रेमी, मित्र, सुहृद्, गुमचिन्तक ।  
 नेमृत तद् (५०) राक्षस विशेष, निश्चिन्ति नामक राक्षस के संज्ञक । यह दक्षिण और पश्चिम के कोने का अधीश्वर है ।  
 नेमृत्य तद् (५०) दक्षिण और पश्चिम के बीच की दिशा, दक्ष दिशा के अधिपति निश्चिन्ति हैं, इस कारण इसको नेमृत्य कहते हैं ।  
 नेकट्य तद् (५०) निकटभाव, सामोप्य, समोपता, निकटता, निकटत्व ।

नेगम तद् (५०) उपनियत, वणिक, नागर, नय, नायक, पय ।  
 नेज तद् (५०) शास्त्रीय, शास्त्र सम्बन्धी ।  
 नेजाना दे० (क्रि०) भुक्तना, निहुरना, नयना, नय होना ।  
 नेन, नेना तद् (५०) नयन, चाँक, पगहा, गरावन, खाँद, पयु बाँधने की रस्सी ।  
 नेपाल तद् (५०) तीर्था, देव विशेष, नीति रक्षा, नय रथा ।  
 नेमाली तद् (५०) मनसिल नामक धातु, नेपाल-वासी ।  
 नेपुण्य तद् (५०) निपुणता, चतुरता, दबता, कुशलता ।  
 नेमित्तिक तद् (५०) निमित्त सम्बन्धी, किसी हेतु से घाय, त्योहार आदि का उत्सव, किसी कारण विशेष से किया जाने वाला काम ।  
 नेमिय तद् (५०) तीर्थ विशेष, एक तीर्थ का नाम जो हरिद्वार के पास है ।  
 नेमिपारण्य तद् (५०) वह वन जहाँ मृतजी वाराणिक रहते थे तथा और भी अनेक महर्षि रहा करते थे ।  
 नेया दे० (५०) नी, नैका, नाय, तरणी ।  
 नेयायिक तद् (५०) न्यायशास्त्र विशारद, तर्कशास्त्र विशारद, न्याय पढ़ने या पढ़ाने वाला ।  
 नेराशय तद् (५०) निराशा, छाया शून्यता, छाया का अभाव ।  
 नेमैल्य तद् (५०) निर्मलता, शुद्धता, स्वच्छता, मलाभाज ।  
 नेवेद्य तद् (५०) अर्पण, उत्सर्ग, देवता का भोग, प्रसाद, चढ़ावा ।  
 नेसार्मिक तद् (५०) स्वामाधिक, प्राकृतिक, स्वभाव-सिद्ध, स्वतः उत्पन्न ।  
 नैष्ठिक तद् (५०) वादन्तीवन, गृह के गृह में ब्रह्म-धर्म व्रत पालने वाला, धार्मिक, विश्वासी ।

नेहर दे० (पु०) पीहर, मयका, स्त्री के पिता का घर ।  
नोकचोक दे० (स्त्री०) सङ्केत से बातें करना,  
सागडाट ।

नोकभौंक दे० (स्त्री०) खैचाखैची, खैचानानी, उपरा  
चठी, अन्नबनाय, खटपट, पारस्परिक द्वेष ।

नोच दे० (पु०) चुटकी, थकाट, खसोट ।

नोचना दे० (क्रि०) थकोटना, खसोटना ।

नोन दे० (पु०) निमक, नून, नोन ।

नोना दे० (क्रि०) गाय भैंस आदि का दूध दुहने के  
लिये पैर बांधना (पु०) फल विशेष, सीताफल,  
मट्टी का गलना ।—पानी (पु०) लवणयुक्त जल,  
ज्वारा पानी, लवणाम्बु, समुद्र का जल ।

नोनिया दे० (पु०) जाति विशेष, जो नून बनाने का  
काम करती है, मुनियौ ।

नोय दे० (पु०) एक प्रकार की रस्सी जिससे गाय  
का पैर बाँधते हैं ।

नौकर दे० (पु०) चाकर, सेवक, भृत्य, महीना लेकर  
सेवा करने वाला ।

नौकरी दे० (स्त्री०) चाकरी, सेवा, नौकर का काम ।

नौका तत्० (स्त्री०) नाव, नौ तरणी ।

नौखण्ड तद्० (पु०) (नयखण्ड देखो) ।

नौगरी दे० (स्त्री०) ब्राह्मण विशेष, पहुँची, कगना ।

नौची दे० (स्त्री०) छोटी अवस्था की चेरया, चेरया  
की शिचया, जो उसके बाद उसके पद की अधि-  
कारिणी होती है ।

नौहावर दे० (पु०) निहावर, उतारा ।

नौदना दे० (क्रि०) निहुरना नव होना, प्रणत  
होना ।

नौतना दे० (क्रि०) निमन्त्रण देना, नेवता देना,  
आदर पूर्वक बुलाना ।

नौता दे० (पु०) निमन्त्रण, नेवता ।

नौना दे० (क्रि०) नवना, निहुरना, नौदना ।

नौवत दे० (स्त्री०) समय, अवसर, वाद्ययंत्र आर्थात्

नगाड नफीरी और भौंक ।—खाना (पु०)  
वाद्यगृह ।

नौमासा तत्० (पु०) गर्भ के नवें मास का उत्सव,  
सस्कार विशेष, पुसवन ।

नौमी तद्० (स्त्री०) नवमी, तिथि विशेष, पञ्चमी  
नवी तिथि ।

नौरतन तद्० (पु०) नवरत्न ।

नौल दे० (पु०) नवल, सुन्दर ।

नौशिख तद्० (पु०) नव शिखित, छात्र, विद्यार्थी ।

नौसादर दे० (पु०) एक प्रकार का खार ।

न्यकार तत्० (पु०) तिरस्कार, कुत्सा, निन्दा, गर्ह,  
अवज्ञा, घृणा ।

न्यग्रोध तत्० (पु०) घट वृक्ष, बरगद ।

न्यस्त तत्० (पु०) समर्पित, दत्त, सञ्चित, स्वाग्नि,  
रक्षित ।

न्याय तत्० (पु०) नीति, युक्ति, यथार्थ, उचित,  
तर्कशास्त्र, विचार, वितर्क, विवेचना ।—कर्ता

(पु०) विचारक, तर्कशास्त्रवेत्ता, गौतम मुनि ।

—शास्त्र (पु०) तर्कशास्त्र ।—ालय (पु०) [न्याय  
+ आलय] धर्माधिकरण, विचार गृह ।

न्यायक तत्० (पु०) विचारक न्यायकारी, न्याय-  
कर्ता ।

न्यायी तत्० (पु०) मध्यस्थ, न्यायकर्ता, उचित  
करने वाला ।

न्याय्य तत्० (पु०) उचित, यथार्थ, प्रशस्त ।

न्यारा दे० (पु०) बलग, पृथक्, भिन्न, अति  
रिक्त ।

न्यास तत्० (पु०) रखने योग्य धन आदि, अर्पण  
त्याग, तान्त्रिक क्रिया विशेष ।

न्याय तद्० (पु०) न्याय, उचित, यथार्थ  
विचार ।

न्यून तत्० (पु०) अल्पपूर्ण, किञ्चित्, थोडा, कम,  
अल्प ।—ता (स्त्री०) छुटाई, नीचता  
नोचापन ।

## प

प हल्वर्ण का रङ्गीसर्प अक्षर है। इसका उच्चारण षोडश से होता है, रस कारण इसे षोष्ट्य कहते हैं।

प तत्० (पु०) पवन, वायु, पर्ण, पत्र, पात।

पर्वार दे० (पु०) चकोड़, राजघृतों की एक जाति विशेष, परमार क्षत्रिय, अग्निवंशीय क्षत्रिय।

पर्वारा दे० (पु०) कहानी, कथा, इतिहास।

पर्वारिया दे० (पु०) भाट, कहानी कहने वाली एक जाति जो नाचती और गाती है।

पकड़ दे० (स्त्री०) ग्रहण, धरन, रोक।

पकड़ना दे० (क्रि०) ग्रहण करना, रोकना, धरना, गहना, अगुष्टि बताना।

पकड़ाना दे० (क्रि०) चरवा देना, पकड़वा देना ग्रहण कराना।

पकना दे० (क्रि०) सोंफना, रंधाना, पक होना।

पकला दे० (पु०) प्रण, घाव, फोड़ा, फुन्वी।

पकवाई दे० (स्त्री०) पकाने का काम, सिद्ध करने का काम, पकाने की मजूरी।

पकवान दे० (पु०) पकान, मिठाई, घी में बनी हुई सामग्री।

पकवाना दे० (क्रि०) सोंफाना, बनवाना, पकवाना, रंधाना।

पका दे० (पु०) पक, पका हुआ, सिद्ध।—पकाया (पु०) पक, बना हुआ, तैयार, सिद्ध, पकाकर रखा हुआ, तैयार किया हुआ।—ई दे० (स्त्री०) पकाने का काम, पकाने की मजूरी, सिद्धता, तैयारी।—ना दे० (क्रि०) पकवाना, पका करना, रंधाना, चुराना, सोंफाना।

पकाव दे० (पु०) दृढ़ता, स्थिरता, पुख्तापन।

पकोड़ा दे० (पु०) पकोड़ी (स्त्री०) पाक विशेष, गरा, फुनवरी, पकोड़ी, बजका।

पका दे० (पु०) रंधा हुआ, पकाया हुआ, निपुण, अक्षर, दल, सावधान, दृढ़, पोढ़, प्रौढ़, सिद्ध, बनाया हुआ।

पक्ति तत्० (स्त्री०) [पक् + क्तिच्] पाक, पकाना, पकना, पाक करना, सिद्धि, पकाई।

पक तत्० (पु०) परिणत, तैयार हुआ, सिद्ध हुआ, सुदृढ़, निपुण, विनारा के लिये उन्मुख, निकट विनारा।

पकान तत्० (पु०) [पक् + क्तिच्] पकाया, तपस्यु आदि, रंधा भात, मिठाई आदि, केवल घी में बनी हुई वस्तु।

पकाशय तत्० (पु०) [पक् + आशय] नाभि का अधोभाग, पक्षास्थान, अक्ष पकने का स्थान, अक्षकोष।

पक्ष तत्० (पु०) पन्द्रह दिन रात, पाय, आधा महीना, अंधेरा और उजला पाय, पक्षियों का अग्रयण विशेष, पर, पक्ष, पौख, हयन, डेना। सहायक, बल, सखा, मण्डली, दल, समूह, पार्य्य पौजर, राजकुञ्जर, विहंग, पत्नी, सलय, देह का अग्रयण, देहाङ्ग।—द्वार (पु०) पार्य्यद्वार, लिङ्गी का द्वार।—धर (पु०) चन्द्र, अशुभ, संस्कृत के एक प्रतिष्ठ पण्डित का नाम (देवो जयदेव) (पु०) पक्ष धारण करने वाले, सहायक, साहाय्यदाता।—पात (पु०) अनुचित सहायता दान, एक और भुक्ताव।—पाती (पु०) पक्षपात कर्ता, अनुचित साहाय्यदाता, अन्याय से एक पक्ष की सहायता करने वाला।

पक्षक तत्० (पु०) मित्र, सुदृढ़, सहायक, लिङ्गी।

पक्षाघात तत्० (पु०) स्वनाम प्रतिष्ठ रोग विशेष, किसी किसी अङ्ग का अग्रयण हो जाना।

पक्षान्त तत्० (पु०) [पक्ष + अन्त] पूर्णिमा, अमावस्या, पक्षदयी पर्व।

पक्षान्तर तत्० (पु०) भिन्नपक्ष, दूसरा पक्ष, विषयान्तर।

पक्षिराज तत्० (पु०) गहड़, मयूर, एक प्रकार का घोड़ा।

पक्षिशायक तत्० (पु०) पक्षी की सन्तान, पक्षी के सङ्केत।

पक्षी तत्० (पु०) पक्ष विशिष्ट, विहङ्गम, विडिया,  
पखेड़, बाण, तीर, विशिख, सहायक ।

पक्षीय तत्० (गु०) पक्ष का, दल का, समूह का, और  
का, हिमायती, तरफदार ।

पक्ष्म तत्० (पु०) अक्षिणाम, बरबती, झौंल के बाल,  
किञ्चलक, केशर, सूत्र आदि का 'आत्यल्प भाग,  
पलक ।

पक्ष्म तद्० (पु०) पक्ष, पखवारा, चाधा महीना,  
पन्द्रह दिन ।

पक्ष्मो तद्० (स्त्री०) पुष्प की पत्ती ।

पखरौटा दे० (गु०) तथक, सेने या रूपे का पक्ष,  
जो पान के बीड़े पर लगाया जाता है ।

पखवारा दे० (गु०) पक्ष, मासार्द्ध, पन्द्रह दिन ।

पखा दे० (पु०) पक्ष, पौष, पर । यथा—

“पखा मौर धारे जटा शीघ्र मोहै,”

(ज्ञानदीपक) ।

पखान तद्० (पु०) पयाण, पथर, उपल, यथाः—  
दोहा ।

“ज्यो पनिहारी जेवरी, खँचत फटत पखान ।

शुलसी रसना राम कहु, याप कितिक अनुमान ॥”

पखारना दे० (क्रि०) प्रचालन करना, धोना, खंचा-  
लना, साफ करना, शुद्ध करना ।

पखारे दे० (क्रि०) धोये, प्रचालन किये, शुद्ध किये ।

पखाल दे० (स्त्री०) पुर, मसक, घड़ी मसक, चर्म  
निर्मित जलपात्र, यह एक प्रकार का चाम कावडा  
थैला होता है जिसमें जल लाते दे । मारवाड आदि  
'देशों में जहाँ जल की महँगी है वहाँ ऐसे थैले  
विशेष पाये जाते हैं ।

पखावज दे० (पु०) मृदङ्ग, ढोलक एक प्रकार का बाजा ।

पखावजी दे० (पु०) पखावज बनाने वाला ।

पखेरू दे० (पु०) पक्षी, विडिया, पच्छी ।

पखेस दे० (पु०) झापा, चिन्ह, मुद्रा, अङ्क, झाप ।

पखोर दे० (पु०) ठाकर, लात की ठाकर ।

पखोरन दे० (पु०) ठाकरें, यह पखोर शब्द का बहु-  
वचन है ।

पखोरना दे० (क्रि०) ठाकर मारना, लात का धक्का  
मारना, लात से मारना ।

पखौडा दे० (पु०) पारव की हड्डी, पौर को हड्डी,  
कन्धे की हड्डी ।

पग दे० (पु०) पद, पाँव, पैर, चरण, जेह ।—हण्डी  
दण्डी (स्त्री०) छोटा मार्ग, बिना वनया हुआ  
मार्ग, पदचिन्ह, लीक, गुप्तमार्ग ।—शातो  
(क्रि०) पधारना, खाना, 'जाना ।—पर तात्र  
वजाना (क्रि०) नाचना और पैर से तात्र बजाने  
जाना ।

पगडी दे० (स्त्री०), पाग, पगिया, सिरबन्धा, सि  
बोधने का वस्त्र विशेष, उष्णीय, चीग ।

पगना दे० (क्रि०) निमज्जित होना, डूबना, डू  
जाना, रस में डूबना, मग्न होना ।

पगला दे० (पु०) पागल, उन्मत्त, मूर्ख, सिद्धो ।

पगहा दे० (पु०) घड़ी रहती, जिससे बैल मँल आदि  
बँधे जाते हैं ।

पगहिया, पगही दे० (स्त्री०) छोटा पगडा ।

पगा दे० (गु०) रस से डूबाया हुआ, चीनी के रस में  
डूबाया गया ।

पगार दे० (पु०) भीत बनाने के लिये गीली मिट्टी,  
गारा, गोली मिट्टी ।

पगारनि दे० (स्त्री०) मुडेर, छत की चारो ओर  
जो कुछ ऊँचा बना होता है । यथाः—

“अति उच्च पगारनि बनी पगारनि  
जनु चिन्तामणिनार ।”

—रामवल्दिका

पगिया दे० (स्त्री०) पगडी, पाग, चीरा ।

पगु दे० (पु०) पाँव, पैर, पद, चरण ।

पगुराना दे० (क्रि०) रोमन्थ करना, चबाये हुए  
'को पुनः चबाना, जुगालो करना ।

पङ्क तत्० (पु०) कर्दम, काँदा, काँदी, पाँक, कीचड़ }  
—ज (गु०) कमल, पद्म सरोवर, पुपट्टीक }

—निधि (गु०) समुद्र, सागर ।—रुह (गु०)  
कमल, पद्म, सरोवर ।

पङ्किल तत्० (गु०) कर्दममय, पङ्कपुत ।

पङ्करुह तत्० (गु०) पद्म, कमल, सारस नामक पक्षि  
विशेष ।

पक्षि तत् ० (खी०) सजातीय संख्यान विशेष, एक समाज के मनुष्यों की बैठक, पौति, पौत, पङ्कत, धारी, लकीर, अंगि, कतार, पद्य का छन्द विशेष, दस की संख्या, पृथिवी, गौरव, प्रतिष्ठा, पाक, जन सङ्घ, सभा ।—दूधक (पु०) अण्डाण्डेय, आहु भोजी ब्राह्मण, आहु में भोजन करने वाला ब्राह्मण, पतित ब्राह्मण, अथम ब्राह्मण ।—पाघन (पु०) पक्षि को पवित्र करने वाला, श्रोत्रिय ब्राह्मण ।

पङ्क दे० (पु०) पाँच, पङ्क, स्यन, डैना ।  
पङ्कड़ी दे० (खी०) पखड़ी, कली, फूल की पत्ती ।  
पङ्क दे० (पु०) सोजना, सजना, डैना, पङ्क ।  
पङ्किया दे० (पु०) भगड़ापू, बखेड़िया, दुराचारी, कुकर्मि ।

पङ्की दे० (खी०) डैटा पङ्का, चिड़िया, पङ्की ।  
पङ्कत दे० (खी०) पौति, धारी, अंगि, कतार ।  
पङ्कला दे० (पु०) लँगड़ा, पंगु ।  
पङ्कला दे० (पु०) पतला, पानीया, पत्रिया, एक प्रकार का कृत्रिम दूध ।

पङ्काल दे० (पु०) मछली का एक भेद ।  
पङ्गुल तत् ० (पु०) खेताख, गुकुर्य का घोड़ा, खेत काँच के समान घोड़ा ।

पङ्गु तत् ० (पु०) पाद विकृत, चलने में असमर्थ, खड्ड, छोड़ा, बहुरा हीन । (पु०) शनिग्रह ।

पङ्कक दे० (खी०) गुच्छना, सुझाई, उतार ।  
पङ्ककना दे० (खी०) गुच्छना, गुच्छक होना, गलना, सुख कर गल जाना ।

पङ्कखना दे० (पु०) यौव खण्ड वाला, जिसमें पाँच विभाग हों । (खी०) अङ्कुरित होना, पौधों में नई शाख निकलना ।

पङ्कघरा दे० (पु०) पाँच घर वाले मकान ।  
पङ्कतोलिया दे० (पु०) सख विशेष, श्रोत्रियों की धारी ।

पङ्कना दे० (खी०) सङ्घना, गलना, पत्र करना, उद्योग करना, परिश्रम करना, अधिक परिश्रम से थक जाना ।

पङ्कपचाना दे० (खी०) अल्पना सङ्घना, पसोजना ।  
पङ्कपन दे० (पु०) संख्या विशेष, पचास की संख्या, ५५ ।

पङ्कमहला दे० (पु०) पङ्कखना, पाँच महल का मकान ।

पङ्कमान तत् ० (पु०) पङ्कने वाला, पङ्कता हुआ ।  
पङ्कमिल दे० (पु०) मिलित, मिश्रित ।

पङ्कमेल दे० (पु०) पङ्कमिल, पाँच सङ्घर्षों की मिलावट ।

पङ्कलड़ी दे० (खी०) पाँच सर का हार, जिस हार में पाँच सर हों ।

पङ्कलोना दे० (पु०) औपध विशेष, एक औपधि का नाम ।

पङ्कालना दे० (खी०) पचाना, खाजाना, जीर्ण कर देना, हड़प जाना, दया लेना ।

पङ्कानवे दे० (पु०) संख्या विशेष, नब्बे पाँच, ८५ ।

पङ्काना दे० (खी०) पचाना, जीर्ण करना, हड़प करना, सङ्घाना ।

पङ्काय दे० (पु०) जीर्ण, पकाय, पचना, पक हो जाना ।

पङ्कास दे० (पु०) संख्या विशेष, पाँच दहाई, ५० ।

पङ्कासी दे० (पु०) संख्या विशेष, अस्सी पाँच, ८५, पाँच अधिक अस्सी ।

पङ्कास दे० (पु०) संख्या विशेष, बीस पाँच, २५, पाँच अधिक बीस ।

पङ्कासी दे० (खी०) एक प्रकार के खेल का नाम, यह खेल सात कैदियों से खेला जाता है ।

पङ्कका दे० (पु०) पिचकारी, दमकला ।  
पङ्कौतर दे० } (पु०) पङ्कौतर, पाँच अधिक बीस, पाँच पङ्कौतर } इतने सैकड़ा ।

पङ्कौनी दे० (खी०) पाकाशय, आमामय, चक्र पचने का स्थान ।

पङ्कुर दे० (पु०) कौल, सूँटी, मेल, बड़ा सूँटा ।  
—मारना (खी०) विक्राना, सताना, दुःख देना,

- आड़ देना, होते हुए किसी काम में विग्रह डालना,  
किसी का काम बड़ा देना ।
- पञ्ची दे० (गु०) लगा हुआ, संलग्न, संयुक्त, आसक्त,  
सटा हुआ ।—होना (वा०) दो वस्तुओं को सटाना,  
किसी चीज़ से दो वस्तुओं को जोड़ देना । बहुत  
प्रेम करना । आतिशय प्रेम होना ।—फारी (खी०)  
जहाँ, खुश, गहनों पर नग आदि जोड़ने का  
काम, जहाँ गहने बनाना, रफ़ करना, टाँका  
। मारना, सुधारना ।
- पच्छिम, पच्छिम तद्० (पु०) पश्चिम, वह दिशा  
जिसमें सूर्य अस्त होते हैं ।
- पच्छी तद्० (पु०) पक्षी, विडिया, पखेड़ ।
- पछुडना दे० (क्रि०) गिरना, गिर जाना, लपट  
जाना ।
- पछुताना दे० (क्रि०) परचाताप करना, दुःख करना  
शोक करना, खेद करना, अनुताप, यश न रहने के  
कारण अप्रिय किसी कार्य के हो जाने से जो दुःख  
होता है वह पछुताप कहा जाता है ।
- पछुतावा दे० (पु०) पछुताप, शोक, खेद, अनुताप ।
- पछुनी दे० (पु०) एक अन्न का नाम, जिससे फोड़े  
आदि चिरे जाते हैं ।
- पछुनी दे० (खी०) नहरनी, अन्न विशेष ।
- पछुवा दे० (खी०) पश्चिमवात, पच्छिम की हवा,  
जो पवन पच्छिम की ओर से आती है ।
- पछाड दे० (खी०) पटकन, धड़कन, गिराना ।  
—खाना (वा०) खिर के बल गिरना, बेलग  
गिरना, चित गिरना ।
- पजाडना दे० (क्रि०) गिराना, पटकना, भूमि में  
गिरा देना ।
- पछाह दे० (पु०) पश्चिम दिशा, पश्चिमदेश, पश्चिम  
दिशा के देश ।
- पछियाव दे० (खी०) पश्चिम घात, पछुवा धरार ।
- पछोडना } (क्रि०) पटकना, बीनना, बराना, धुप से  
पछोरना } पटक कर साफ़ करना ।
- पजावा दे० (पु०) भट्टा जहाँ ईंटें आदि पकायी  
जाती हैं ।

- पजेव दे० (खी०) घूँघरू, पाँव का गहना, झुंझुर ।
- पजोडा दे० (पु०) निरुम्मा, दुष्ट, दुश्चरित्र, बध,  
नीच ।
- पञ्च तत्० (गु०) सफ़या विशेष, पाँच, ५। (पु०)  
चौबरी, समाज का अगुआ, पञ्चायत में बैठक  
विचार करने वाला, मध्यस्थ विनारक्तनी ।  
—कपाल (पु०) यज्ञ विशेष ।—कपाय (पु०)  
श्रीपथ विशेष ।—कोश (पु०) अन्नमय प्राणमय,  
मनोमय, विज्ञानमय और ज्ञानन्दमय ये पाँच कोश ।  
—गव्य (पु०) गौके पाँच पदार्थ, दही, दूध,  
गोमूत्र, गोमय, गोघृत, ।—चामर (पु०) हृद  
विशेष, यह छन्द सोलह अक्षरों का होता है इसमें  
एक अक्षर लघु, और एक अक्षर गुरु होता है ।  
—चूड़ा (खी०) अण्डरा विशेष, स्त्रीय वैरग  
विशेष ।—जन (पु०) देव्य विशेष, असुर विशेष,  
यह असुर पाताल में रहता था, भगवान् श्रीकृष्ण ने  
इसे मारा था, इसकी हड्डी से जो शङ्ख बना है  
उसे पाञ्चजन्य कहते हैं, वह भगवान् कृष्ण का  
प्रिय शङ्ख है ।—ज्योनार (पु०) पाँच प्रकार का  
भोजन, भोज्य, भक्ष्य, लेह्य, चोष्य, पेय ।—तन्त्र  
(पु०) पञ्चभूत, आकाश, वायु, जल, अग्नि, पृथिवी ।  
—तन्त्र (पु०) पाँच प्रकार के तन्त्र, मारण  
मोहन, यथीकरण, उच्चाटन और आकाश, इव  
नाम की एक पुस्तक ।—तन्मात्र (पु०) पृथिवी  
आदि सूत्रम पञ्चभूत, रूप, रस, गन्ध, शब्द, स्पर्श ।  
—ता (खी०) मृत्यु, मरण, निधन, काल, धर्म,  
पञ्चत्व ।—दश (पु०) पन्द्रहवीं संख्या, पन्द्रह  
को पूर्ण करने वाली संख्या ।—दशानार्थ (पु०)  
पन्द्रह प्रकार के अन्नयं, यथा—चोरी, दिवा,  
मिथ्या, दम्भ, काम, क्रोध, विस्मरण वैद, अप्र-  
तीति, भेद, भय, खेद, चिन्ता, लोभ, गर्व, स्वर्दा ।  
—धा (अ०) पाँच प्रकार, पञ्चविधि ।—नक्ष  
(पु०) मनुष्य, खानर, हस्ता, कूर्म, व्याघ्र, शक,  
शङ्खकी, मोथा, गेंडा कूर्म ।—नद (पु०) देश  
विशेष, पंजाब देश, यह देश जहाँ पाँच नदी हैं ।  
सतलज, व्यास, राप्ती, चनाब, जेलम ।—पाण्डव  
(पु०) पाण्डु राजा के पाँच पुत्र, यथा—युधिष्ठिर,

भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव ।—पात्र (पु०)  
 पूजा का पात्र विशेष, पाँच पात्रों से किया जाने  
 वाला, पार्षण यादु विशेष ।—प्राण (पु०) शरी-  
 रस्य, प्राणादि पाँच वायु, यथा—प्राण अथान,  
 अपान, उदान, समान ।—भूत (पु०) पञ्चतत्त्व,  
 पृथिवी, जल, तेज, वायु और आकाश ।  
 —भूतात्मा (पु०) देही, प्राणी, शरीरी ।  
 —मकार (पु०) धाममार्गियों की उपासना, मद्य,  
 मौन, मत्स्य, मुद्रा, मैथुन ।—महायज्ञ (पु०)  
 गृहस्थों के पाँच प्रकार के नित्यकर्म, यथा—ब्रह्म-  
 यज्ञ, वितृयज्ञ, देवयज्ञ, नृयज्ञ, और भूतयज्ञ  
 अर्थात् पाठ, तर्पण, हवन अतिथिसेवा और  
 पूजा ।—मुख (पु०) श्रीमहादेव ।—मुद्रा (स्त्री०)  
 देव पूजा में नित्य की जाने वाली पाँच मुद्रा,  
 यथा—आवाहनी, स्थापनी, मन्त्रिधानी, सम्बो-  
 धनी, और सम्मुखीकरणो ।—रङ्गी (पु०)  
 विचित्र वर्ण, अनेक प्रकार के रङ्गों से रंगा ।  
 —रत्न (पु०) सुवर्ण आदि पाँच प्रकार के रत्न,  
 यथा—सुवर्ण, रौप्य, मुक्ता, स्फटिक, ताँबा ।  
 —रात्र (पु०) ग्रन्थ विशेष, श्रीवैष्णवशास्त्र का  
 ग्रन्थ ।—रज (पु०) शिव, महादेव ।—घटी  
 (स्त्री०) पाँच प्रकार के घृत्नों का समूह, एक स्थान  
 का नाम, जो गोदावरी नदी के तीर पर है  
 अन्वय के समय श्रीरामचन्द्र जी यही रहते थे ।  
 —शर (पु०) कामदेव, मदन, मन्मथ ।—शाख  
 (पु०) हाथ, कर, हस्त ।—शिव (पु०) सिंह,  
 कैठरी, अथि विशेष, ये विशेषात् दार्शनिक  
 आसुरि के शिष्य थे । आसुरी प्रसिद्ध साहूय दर्शन  
 के रचयिता महर्षि रूपिलदेव के शिष्य थे । पञ्च-  
 शिष्य, ने ही सांख्य दर्शन का प्रचार किया है ।  
 आसुरी की स्त्री का नाम कपिला या । पञ्चशिख ने  
 पुत्रभाव से गुरुपत्नी कपिला के स्तन्यपान किये  
 थे, इसी कारण इनको बहुत लोग कपिला पुत्र  
 भी कहते हैं ।—सूता (स्त्री०) १। गियों के बंध  
 के पाँचस्थान, यथा—तूला, चक्की, जालन,  
 बड़नी और चढ़ा रखने का स्थान ।  
 शक तत्त्वं (पु०) धनिष्ठा से लेकर देवती तक पाँच

नक्षत्र, पाँच संख्या, पञ्चम सम्बन्धीय ।

पञ्चकी दे० (स्त्री०) पानी चक्की, जलघनत्र, एक  
 प्रकार का यन्त्र जो पानी के धक्के से चपता है,  
 इससे आटा आदि पीसा जाता है ।

पञ्चम तत्त्वं (पु०) पाँच की संख्या की पूरण करने  
 वाली संख्या, बीषा आदि से उत्पन्न स्वर विशेष ।

पञ्चमी तत्त्वं (स्त्री०) चन्द्रमा की पाँचवीं कला की  
 क्रिया का काल, तिथि विशेष, पाँचवीं तिथि,  
 पक्ष की पाँचवीं तिथि ।

पञ्चाङ्ग तत्त्वं (पु०) पत्रा, पञ्चिका, ग्रह नक्षत्र, तिथि  
 आदि देखने का पत्रा, जंत्री ।

पञ्चामृत तत्त्वं (पु०) दुग्ध आदि पाँच द्रव्यों से  
 बना जिमसे भगवात् को स्नान करते हैं ।

पञ्चाङ्गुल तत्त्वं (पु०) पाँच अङ्गुलि परिमाण युक्त ।

पञ्चाङ्गुली तत्त्वं (स्त्री०) पाँच अङ्गुलियाँ, पाँचों  
 अङ्गुली, अङ्गुष्ठ, तर्जनी, मध्यमा अनामिका  
 और कनिष्ठा ।

पञ्चाध्यायी तत्त्वं (स्त्री०) श्रीमद्भागवत के रास-  
 मण्डल के पाँच अध्यायों का समुदाय, रामपञ्चा-  
 ध्यायी ।

पञ्चानन तत्त्वं (पु०) सिंह, कैशरी, शेर, महादेव,  
 शिव ।

पञ्चामृत तत्त्वं (पु०) शर्करा, दुग्ध, घृत, दधि,  
 और मधु, इन पाँचों द्रव्यों के मेल से बनी हुई  
 द्रव्य, यह द्रव्य देवताओं के लिये बनाई जाती  
 है ।—योग (पु०) चौपथ विशेष, गुरुव, गोसुर,  
 भूचली मुष्टिका और अनावरी इनके योग से बनी  
 चौपथ ।

पञ्चाम्नाय तत्त्वं (पु०) शिव के पाँच मुख से निकला  
 हुआ पाँच प्रकार का शैवशास्त्र, तन्त्रशास्त्र ।

पञ्चायत दे० (स्त्री०) जातीय सभा, जो किसी  
 विवाद को शान्त करने के लिये होती है, विचार  
 करने की सभा ।

पञ्चाल तत्त्वं (पु०) देश विशेष, पञ्चाय देय ।

पञ्चालिका तत्त्वं (स्त्री०) बख आदि की प्रनायी



- हुई पुतली, कठपुतली, गुडिया गीत विशेष, ब्रौपदी, पञ्चाल देश की राजकन्या ।
- पञ्चावस्था तत्० (खो०) मनुष्यों की पाँच अवस्थाएँ, यथा— बाल्य, कुमार, वीणावृद्ध, युवा और वृद्ध ।
- पञ्चीकरण तत्० (पु०) पञ्चभूत के भागों का मिलाना, सृष्टि प्रकरण का एक सिद्धान्त ।
- पञ्चेन्द्रिय तत्० (पु०) पाँच इन्द्रियाँ, पाँच ज्ञानेन्द्रिय या कर्मेन्द्रिय ।
- पञ्चों दे० (पु०) चापों, सङ्गो, मित्रमण्डल ।
- पञ्चाला दे० (पु०) गुह्री की पूँछ ।
- पञ्चकी दे० (पु०) पत्नी, पत्नेय, बिहंग, चिहिया ।
- पञ्जर तत्० (पु०) शरीर की हड्डियों का समूह, पाँजर, पसली, ठठरी, पिजडा, पसियों के रहने के स्थान, पिजरा ।
- पञ्जिका तत्० (खो०) पुस्तक विशेष, जिसमें तियि, वार आदि जाने जाते हैं, पञ्चाङ्ग, तिथिपत्र ।
- पञ्जीरी दे० (खो०) एक प्रकार का देयता या प्रसाद ।
- पट तत्० (पु०) वस्त्र, वसन, कपडा, कपडे पर बना हुआ चित्र, पर्दा, यवनिका, शब्द विशेष जो व्याघात से उत्पन्न होता है, गिरने या मारने का शब्द, किराड, देवमन्दिर का किराड, तिर्यक, सीधा ।—कार (पु०) तन्मुखाय, वस्त्र निर्माण ।—कुटी (खो०) कपडे का घर, तम्बू, कनात ।—मञ्जरी (खो०) एक रागिनी का नाम ।—मण्डप (पु०) दलपुट, कनात ।—वेद्य (पु०) कपडे या घर, बेरा, शामियाना ।
- पटक तत्० (पु०) डेरा, कनात, पटाय, छायनी, शिविर, सेना के रहने का स्थान ।
- पटकन दे० (खो०) पछाड, पटकी, चोट ।—खाना (या०) पछाड खाना, गिरना ।
- पटकना दे० (क्रि०) पछाडना, गिराना, नीचे गिराना ।
- पटका दे० (पु०) कमर बन्धा, कमर बाँधने का वस्त्र, करधनी ।—जाना (क्रि०) पछाडा जाना, गिराया जाना ।
- पटकाना दे० (क्रि०) पछाड खाना, गिराया जाना, पछाडा जाना ।
- पटूका दे० (पु०) पटका, कमरकस, कटिरस, बमर बाँधने का कपडा ।
- पटडा दे० (पु०) विली, तपता, पटरी, पीडा ।
- पटतर दे० (पु०) तुल्य, सदृश, समान, बराबर ।
- पटन दे० (पु०) पाटन, छावन, कोटा आदि का पटरी से पाटना, झत पाटना, छत बनाना ।
- पटना दे० (क्रि०) पाटना, पाटन करना, छाडना, भर पाना, वसूल हो जाना, हुडो आदि के रूपे मिल जाना, सीघना, पानी सोचना, भरना, ढाया जाना । (पु०) नगर विशेष, पाटलीपुत्र, यह नगर किसी समय विहार की राजधानी था ।
- पटनी दे० (खो०) नैया, माफ़ी, कर्णधार, केवट ।
- पटपट दे० (पु०) शब्द विशेष, शब्दपत्र शब्द जो ब्रह्म आदि के भूजने से या मारने से होता है ।
- पटरा दे० (पु०) पटडा, तरा ।
- पटरानी दे० (खो०) यही रानी, महिषी, महारानी, राजा की वह स्त्री जिसका राजा के साथ समिकेक हुआ हो ।
- पटरो दे० (खो०) छोटा पटरा, तरा ।
- पटवा दे० (पु०) जाति विशेष, जो कपडे बीनने का व्यवसाय करती है, पटकार ।
- पटवाना दे० (क्रि०) रुपये भरवाना, रुपये वसूल कर लेना, मिचवाना ।
- पटवारो दे० (पु०) गाँव का हिसाब रखने वाला, भूमि का लेखा लगाने वाला, गुमारता ।
- पटह तत्० (पु०) घानकवाद्य, वाद्य विशेष, बका विशेष, पुहु के उपयोगी दस्तका, मेरी, हुन्दुमि, नगारा ।
- पटा दे० (पु०) पाट, काहासन, जिस पर बैठ कर भोजन या देव पूजन आदि किया जाता है । गदका, पीवर ।
- पटाका दे० } (पु०) छहाका, शब्द विशेष, एक प्रकार की आतशबाजी, अग्नि पटाखा } कोडा, छहूँदर ।

पटाना दे० (क्रि०) सींचना, पानी देना, चौका देना, लीपना, गोबर से या मिट्टी से लीपना, पोतना ।  
कड़ी और पटरी से छत को पटवाना । हुंही के रूपमें भरना, थियाद मिट जाना । विस्तृत होना, फैल जाना ।

पटापट दे० (पु०) मारने का शब्द, धड़ाधड़, चपक शब्द विशेष ।

पटाष दे० (पु०) विचार, छयाई, द्वार के ऊपर का काठ ।

पटिया दे० (स्त्री०) पटरी, पट्टा, खिली, तिर की बनाई, खोटी, स्केट, पट्टी । (पु०) एक गहना, जो गले में पहना जाता है, पाटिया ।

पटौना दे० (पु०) एक प्रकार के पत्ती का नाम ।

पटौमा दे० (पु०) छापने का पट्टा, जिस तह्ने पर कपड़े रख कर छपी लोग छापते हैं ।

पटौर तह्० (पु०) चलनी, घालनी, कियारी, खेत, वारिद, मेघ, सेणुवार, यंशरोवन, बात रोग विशेष, चन्दन, फदिर, खैर, उदर, जठर, पेट, कन्दर्प ।

पटौलना दे० (क्रि०) निचोड़ना, नूनना, मार निकाल लेना, मारना, पीटना ।

पटू तह्० (पु०) दूध, निपुण, नीरोग, चतुर, कुशल, तीक्ष्ण, स्फुट, निष्ठुर, दया हीन, धूर्त, शठ । (पु०) पटोल, परेरा, परवर, फरेला ।—तह् (स्त्री०) ।  
—त्व (पु०) चतुराई, दक्षता, कुशलता, निपुणता ।

पटुवा दे० (पु०) रेशम का काम करने वाला, रेशम से माला आदि सूजने का काम करने वाला ।

पटुका दे० (पु०) पटका, कमरबन्द ।

पट्ट दे० (पु०) पुहुपुह, पुहुपुह, पट्टता, चतुरता ।

पट्टा दे० (पु०) पाट, सन विशेष जिसके रस्ती तथा कपड़े कम्बल आदि बनते हैं ।

पट्टे दे० (पु०) एक चौधे का नाम, गोंदी ।

पट्टेरा दे० (पु०) एक तरह का बूटा ।

पट्टेले दे० (पु०) लठवाजी का काम, प्रभुत्व, अधि-

कार, जाति विशेष, कुरमी, जाति का सरपट्ट, चतुवा, गुजरात महाराष्ट्र आदि प्रान्तों की एक पदवी ।

पट्टेला दे० (पु०) एक प्रकार की नाव, बजरा ।

पट्टेली दे० (स्त्री०) छोटा पट्टेला, छोटी नाव ।

पट्टेत दे० (पु०) लठैत, ठंगैत, लठ चलाने की क्रिया में कुशल ।

पट्टेतन दे० (पु०) पटन, पाटन, तह्ने से चर पाटना ।

पट्टोर दे० (पु०) रेगमी वस्त्र, पाट के बने कपड़े ।

पट्टोल तह्० (पु०) परवर, परेरा, पलवल ।

पट्टोहिया दे० (पु०) उरुह, पेचा, उलूक ।

पट्टौनी दे० (पु०) पट्टेनी नाव, नैया ।

पट्ट तह्० (पु०) पाटी, रेगमी, सन के कपड़े, कौचेव वस्त्र, पगड़ी ।—महिपी (स्त्री०) प्रधान महारानी ।

पट्टन तह्० (पु०) नगर, पत्तन, बड़ा ग्राम, शहर ।

पट्टा दे० (पु०) चौड़े की पेटी, कुत्ते के गले में बाँधने का चमड़ा, कानों के पास रखे हुए घाल, चकनामा, किसी प्रकार का अधिकार पत्र ।

पट्टी दे० (स्त्री०) पाटी, व्रण बाँधने का कपड़ा, किमी वस्तु का भाग ।

पट्टे दे० (पु०) एक प्रकार का गरम कपड़ा जो जन का होता है, लोई, कम्बल ।

पट्टा दे० (पु०) नयपुवा, पहलवान, कुम्भी लड़ने वाला, पाठा, जवान हाथी, नर, तिरा ।

पट्टन तह्० (पु०) पाट, पड़ना, सध्यन ।

पट्टाना दे० (क्रि०) भेजना, रवाना करना, पठवाना ।

पट्टिया दे० (स्त्री०) युवती, तरुणी, जवान स्त्री, छोटी बकरी ।

पट्टौना दे० (क्रि०) पठाना, भेजना, पठवाना ।

पट्टौनी दे० (स्त्री०) पठाने की मञ्जरी, भेजने का दाम ।

पड़ जाना दे० (क्रि०) पटका जाना, पछाड़ या जाना, गिरना ।

पडना दे० (क्रि०) गिरना पटकना, घटना, घट जाना, ठहर जाना, डेरा करना ।

पडपडाना दे० (क्रि०) बहब्रहाना, बिना प्रवेशन की बातें करना, बकना, पीटना, खूब पीटना ।

पडरहना दे० (वा०) सो रहना, काम छोड़ देना, हताश होना, निराश हो जाना ।

पडापड दे० (श्र०) बार बार मार के, खूब मार के, धमाधम पीटकर ।

पडापाना दे० (क्रि०) अनायास पाना, सहज से पाना, बिना परिश्रम पा लेना ।

पडाघ दे० (पु०) शिबिर सन्निवेश, सेना के ठहरने का स्थान, छावनी, डेरा कपू, मार्ग का वास-स्थान ।

पडिया दे० (स्त्री०) मैस का बच्चा, पाड़ी ।

पडोस दे० (पु०) प्रतिवास, समीपवास, सन्निकट वास ।

पडोसी दे० (पु०) प्रतिवासी, समीप वासी, पास पास रहने वाले आवास में पडोसी हैं ।

पहन दे० (श्र०) पहने की चाल, अध्ययन की रीति, आश्रय ।

पहना दे० (क्रि०) पाठ पढ़ना, अध्ययन करना, अभ्यास करना, याचना, सीखना, रटना, घोषना ।

पहन्त दे० (स्त्री०) अध्ययन, पाठ, स-या, सबक ।

पेदा दे० (पु०) परिहृत, पटा हुआ ।—गुना (पु०) ।  
—लिखना (पु०) पटा हुआ, प्रधीण, अभिज्ञ ।

पदाना दे० (क्रि०) सिखाना, सिखताना सिखा देना, विद्या अध्ययन कराना, पाठ पढाना, सन्या देना ।

पढिन दे० (स्त्री०) एक प्रकारको मछली ।

पण तत्० (पु०) प्रतिज्ञा, वचन, होड़, शर्त, बीस गण्डे कीड़ी का परिमाण, उपग्रह, लेन दान का उपपाद, सूर्य, वेतन ।

—न तत्० (पु०) बेचना, विक्रय करना, दूकान चलाना ।

परिहृत तत्० (पु०) बेचा गया, बेचा हुआ, विक्रय स्मृत, स्मृति किया हुआ ।

पण्डा दे० (पु०) पुजारी, देवपूजक, तीर्थ पुतेहित ।  
(स्त्री०) मति, बुद्धि ।

परिहृत तत्० (पु०) विद्वान्, पटा हुआ, अध्यापक, पढ़ाने वाला ।—मन्य (पु०) परिहृत भिमानी, विद्याभिमानी, सुख ।

परिहृताई दे० (स्त्री०) परिहृत का काम, पढ़ाना आदि ।

परिहृतायन दे० (स्त्री०) परिहृत की स्त्री ।

पण्डुक् दे० (पु०) पत्नी विशेष, पुच्छू ।

पण्डुधी दे० (स्त्री०) जल का पत्ति विशेष ।

पण्य (पु०) बेचने योग्य वस्तु, उपग्रह को वस्तु बेचने के लिये बाजार में रखी हुई वस्तु ।—शाला (स्त्री०) दूकान, हाट, बाजार ।—स्त्री (स्त्री०) देश्या, वाराङ्गना, पत्तुरिया ।

पत दे० (स्त्री०) मुद्यति, यदाई, प्रतिष्ठा, कीर्ति, यश ।

पतग तद्० (पु०) आकाशचारी, पत्नी, सूर्य, सूर्य, माँव ।

पतङ्ग तत्० (पु०) सूर्य, पत्नी, फतिङ्गा टिहो, उड़ने वाला कीड़ा, एक प्रकार की लकड़ी, जिससे रू निकाला जाता है ।

पतङ्गा दे० (पु०) चिनगारी, चिनगी, स्फुलिङ्ग, चण्डि के छोटे छोटे कण ।

पतञ्जलि तत्० (पु०) उपकरण महाभाष्यकर्ता ऋषि इन्द्रनि पाणिनि के सूत्रों पर भाष्य बनाया है योग दर्शन का पतञ्जलि और उपकरण महाभाष्यकार पतञ्जलि दोनों एकही व्यक्ति थे। कात्यायन पाणिनि के सूत्रों का खण्डन किया और पाणिनि के पञ्चमानी पतञ्जलि ने कात्यायन के वार्तिकों को अपने भाष्य में खण्डन किया। इन्होंने एक वैदिक ऋषि भी ग्रन्थ बनाया है। भारत के पूर्वभाग में गीत

प्रदेश के ये वासी थे, इनकी माता का नाम गोणिका या । पुत्रात्प्रवेत्ता पविर्दत्तो ने महाभाष्य के शब्दों और वाच्यों के आधार पर पतञ्जलि का समय निर्णय कर दिया है "मैर्येहिंरपार्थिभिरर्थाः प्रकल्पिता" इस वाक्य के टुकड़े में यह अर्थय मानना होगा कि चन्द्रगुप्त के पीछे पतञ्जलि हुए हैं । अतएव उन विद्वानों ने ईसवी सन् के १८० वर्ष पूर्व पतञ्जलि का समय माना है । इसी प्रकार और प्रमाणों के आधार पर यूनानी मिनिस्टर और पाटलीपुत्र (पटना) के राजा पुष्यमित्र के समकालीन थे पतञ्जल को मानने हैं ।

तिरुङ्ग दे० (यु०) एक ऋषि का नाम, जिस ऋषि में वृद्धों के पत्ने भङ्ग जाते हैं ।

तिन तत्० (यु०) [ पत् + चन्द ] पछाड़, पटकन, पड़ना, पड़ना, गिरना, स्वल्पित होना ।

तित्र तत्० (यु०) पत्र, पंख, पर, पौल ।

तिप्रह तत्० (यु०) पीकदान, पीकदानी, पठीयन-पाम ।

तिला दे० (यु०) सूक्ष्म, भीना, फुग, दुर्बल, महीन ।

तिलाई दे० (स्त्री०) दुर्बलता, दुर्बलापन ।

तिलो दे० (यु०) मुर्खापत्ता, भङ्गपत्त ।

तवार दे० (स्त्री०) कन्हर, नाथ के पीछे का डौंड जिससे नाथ चलाई जाती है ।

ता दे० (यु०) चिन्ह, लोग, सन्धान, ठिकाना ।

ताका तत्० (स्त्री०) ध्रजा, भण्डा, निगान, फरहरा ।

ताकी तत्० (यु०) पताकाधारी, ध्रजाधारी, ध्रजैल, ध्रजा वाला ।

ति तत्० (यु०) स्वामी, प्रभु, भर्ता, रक्षक, ध्य ।

—देव—देवता (स्त्री०) पति को देवता के समान समझने वाली स्त्री, देवयुक्ति से पति ही की सेवा करने वाली, पतिव्रता । वया :—

तू पतिदेवता की युद्ध बेटी ।

तेरी यम मृत्यु कहावत बेटी ॥

—रामचन्द्रिका ।

—चूता (स्त्री०) कुलपती, पतिदेवता स्त्री, पति की सेवा करने वाली स्त्री ।

पतित तत्० (यु०) ऋष, दोषी, कलङ्की, जाति च्युत, समाजच्युत, अधर्मी ।—पावन (यु०) पतिर्त्तो को पवित्र करने वाला, परमात्मा, परमेश्वर ।

पतिमा तद्० (स्त्री०) प्रतिमा, मूर्ति, किसी वस्तु की बनी हुई मूर्ति ।

पतिया दे० (स्त्री०) चिट्ठी, पत्र, प्रतीति पत्र, विश्वास का पत्र ।

पतियाना दे० (क्रि०) भरोसा करना, विश्वास करना, प्रतीति करना ।

पतियारा दे० (यु०) भरोसा, विश्वास, प्रतीति ।

पतिवरा तत्० (स्त्री०) पतिवरण करने के योग्य स्त्री, विवाह योग्य अथवा धाली ।

पतीरी दे० (स्त्री०) चटाई विशेष, एक प्रकार की चटाई ।

पतील दे० (यु०) पतला, भीना, मिही ।

पतीला दे० (यु०) बट्टवा, बट्टई, बटलोही ।

पतुकी दे० (स्त्री०) मिट्टी की हड्डिया, छोटी कड़ाही ।

पतुरिया दे० (स्त्री०) बेश्या, नर्तकी, याराङ्गना ।

पतोह दे० (स्त्री०) बेटा की स्त्री, पुत्रवधु, यहू ।

पतोषा दे० (यु०) पत्नी, पत्ता, पत्तव, पात ।

पत्तन तत्० (यु०) नगर, ग्राम, पुर, शहर ।

पत्तर दे० (यु०) पत्र, पत्ता, चिट्ठी, सेने चाँदी या ताँबे का पत्र, जिसमें दान खादि की बातें मिली जाती हैं ।

पत्तल दे० (स्त्री०) पत्थार, पतरी, पत्ता ।

पत्ता दे० (यु०) पाता, पत्र, पत्नी ।—होना (या०) भाग जाना, निकल जाना, चंपत होना ।

पत्ति तत्० (यु०) वैदल चलने वाली सेना, एक प्रकार की सेना का नाम । एक रथ, एक हाथी, तीन घोड़े और पाँच वैदल जिस सेना में हों उसका नाम पत्ति है ।

पत्ती दे० (स्त्री०) पाती, पत्र, पंखड़ी, भांग, धूटी ।

पत्थर दे० (यु०) पत्थान, सिला, पोंथर, उपल ।

—छाती पर रखना (या०) सन्तोष करना, सह लेना, यश न चलने में चुप रह जाना । बहुत बँधी

आपत्ति को धीरता पूर्वक सहना ।—पत्नीजना (वा०) कोमल चित्त होना, सदस्य होना, दयावाद होना, दुःखी पर दया करना ।—पानी हो जाना (वा०) कठोर चित्त का भी कोमल हो जाना, क्रूर चित्त में भी दया उत्पन्न होना ।—सा फेंक मारना (वा०) बिना समझे झुके लड़ना, बात बिना जाने ही उत्तर देना, कठोर बातें कहना, कड़ी बात कहना ।—से सिर फोड़ना (वा०) कठिन काम करने के लिये उद्यत होना, सूर्य को सिखाना, नासमझ को समझाना ।—होना (वा०) भारी होना, ठिठक जाना, अचल होना, निर्दय होना ।—फला (स्त्री०) वन्दुक, गुपक ।

पत्नी तत्० (स्त्री०) भार्या, स्त्री, दास, कुदुम्बिनी ।  
पत्नारो दे० (पु०) पतिवारा ।

पत्र तत्० (पु०) पाती, चिट्ठी ।—रथ (पु०) पत्नी, चिट्ठिया ।—रेखा (स्त्री०) तिलक की रेखा, चन्दन लगाना ।—दाता (पु०) चिट्ठी देने वाला, चिट्ठी बाँटने वाला, चिट्ठीरसा ।—दारक (पु०) अशु, अशु, बालक, यायु ।—परशु (पु०) सेने के पत्र काटने वाली कैंची ।—पाश्या (स्त्री०) सेने का टीका, गहना विशेष, जो मस्तक पर लगाया जाता है ।—रंजन (पु०) पत्र लिखना, चित्र बनाना, रङ्ग चढाना ।

पत्रा दे० (पु०) लिखपत्र, पत्राङ्क, पत्रिका, पत्रा, पृष्ठ ।

पत्रालय तत्० (पु०) डाकखाना ।  
पत्राङ्क तत्० (पु०) पृष्ठ सख्या, पत्रों पर के अङ्क ।  
पत्रिका तत्० (स्त्री०) चिट्ठी, पत्र ।

पथ तत्० (पु०) मार्ग, राह, रास्ता, याद, पैदा, इगार ।  
पथर दे० (पु०) पत्थर, पत्थान ।—कला (पु०) वन्दुक, गुपक ।—चटा (पु०) शाक विशेष, कृपण ।  
—फोड (पु०) फटफोड़ना, पछि विशेष ।

पथराना दे० (क्रि०) पत्थर के समान हो जाना, कड़ा होना, ब्रण आदि का कड़ा होना, पत्थर से ललना, पत्थर मारना ।

पथरी दे० (स्त्री०) आँकड़, कंकरी, एक प्रकार का

रोग जिसमें घातों ऊपर चढ़ जाती हैं । हुंसे लिये पच्छिया के भीतर का अण्ड ।

पथरीली दे० (पु०) कङ्करीली, जहाँ बहुत कङ्करी हैं, प्रस्तरमय भूमि ।

पथिक तत्० (पु०) यात्री, अश्वघ्न, राही, राता चलने वाला ।

पथ्य तत्० (पु०) रोगी का आहार, रोगी का हिनकारी आहार ।

पथ्या तत्० (स्त्री०) हड़, हर्, हरीतकी ।

पद तत्० (पु०) पौध, पैर, चरण, पैर का चित्त पदाङ्क, स्थान, प्रतिष्ठा, मान, आदर, अधिकार महिमा, शब्द, स्वरूप, विभक्ति के साथ हा शब्द —क्रम (पु०) पौध का फल, देग ।—ग (पु०) पैदल, पियादा, पैदल चलने वाला ।—चर (पु०) पदगामी, मनुष्य ।—च्युत (पु०) अधिकार पदवाह ।—ज (पु०) पौध की शृंगुलियाँ ।—त्या (पु०) अधिकारस्थान, स्थानस्थान ।—जा (पु०) पद की रक्षा करने वाले, जूता, पगप पहनी ।

पदना दे० (पु०) पदङ्कड़, पादने वाला, अधिक पा वाला, डरपोकना, डरू ।

पदनी दे० (स्त्री०) दुराचारिणी, ह्यभिचारिणी ।

पदपटी दे० (स्त्री०) नृत्य विशेष, एक प्रकार नाच ।

पदपत्र तत्० (पु०) पुस्तकसूचक, पुस्तकसूचक का पत्र, कमलपत्रा, अधिकारपत्र, पद की निपु का अधिकारपत्र ।

पदपीठ तत्० (पु०) खडाऊँ, जूता ।

पदम तत्० (पु०) पद्म, कमल, सरोरुह ।

पदधी तत्० (स्त्री०) पद्धति, उपाधि, अङ्ग, मन्त्र सूचक पद, स्वरूप श्रोतक शब्द, मन्त्रा, पद्य, मा

पदवृत्त तत्० (पु०) वृत्त शब्द, वृत्तपत्र शब्द, शब्दों के मिलाने से बना हुआ शब्द, अन्त जिन शब्दों में अक्षरों का नियम रहता है वे वृत्त या अक्षरवृत्त कहे जाते हैं ।

पदस्य तत्० (गु०) पदाच्छ्र, पद पर वर्तमान ।  
 पदाङ्क तत्० (गु०) पद चिन्ह, पैर का दाग ।—अनु-  
 सरण करना (या०) पीछे पीछे चलना, अनु-  
 यायी बनना, अनुकरण करना ।

पदाघात तत्० (गु०) लात का आघात, पैर से  
 मारना ।

पदाति तत्० (गु०) पदातिक, पैदल चलने वाली  
 सेना ।

पदाना दे० (क्रि०) तङ्ग करना, दुःख देना, धमकाना,  
 डरवाना, डराना करना ।

पदान्मोज तत्० (गु०) चरण कमल, कमल के समान  
 चरण, कमल गुण्य पद ।

पदारविन्द तत्० (गु०) [ पद + अरविन्द ] पदपद्म,  
 कमल गुण्य चरण ।

पदार्थ तत्० (गु०) वस्तु, सामग्री, सामान, तत्त्व,  
 पद के अर्थ, शब्दों का प्रतिपाद्य वैशेषिक, न्याय  
 के मत से सात वस्तुओं की पदार्थ संज्ञा है द्रव्य,  
 गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय और  
 अभाव, नैयायिकों के मत से सोलह पदार्थ हैं ।

पदासन तत्० (गु०) पादपीठ, पीड़ा, बैठने का  
 पीड़ा, काहासन विशेष ।

पदैड़ा दे० (गु०) पदना, पादने घाला, पदफड़,  
 पद्म ।

पदैति तत्० (स्त्री०) पदकी, मार्ग, पैड़ा, डगर, परि-  
 पाटी, क्रम ।

पद्म तत्० (गु०) उत्पल, पद्मज, कमल, संज्ञा  
 विशेष, शैल नील, १००००००००००००००००,  
 गृह विशेष, राशिरथ, श्रीराम, नाम विशेष  
 पद्मोत्तर के पुत्र, बलदेव, रतिवन्ध विशेष ।  
 —काष्ठ (गु०) ओषधि विशेष, पद्मवृक्ष ।—गर्भ  
 (गु०) ब्रह्मा, प्रजापति, विधाता, विधि ।—जन्मा  
 (गु०) ब्रह्मा, प्रजापति, पद्म से उत्पन्न ।—तन्तु  
 (गु०) मृगाल, पद्म की डंढी ।—नाम (गु०)  
 विष्णु, नारायण ।—नेत्र (गु०) पद्मपत्र के समान  
 नेत्र विशिष्ट, कमल पुष्प के पत्र के समान जिसकी  
 शीय हो ।—पत्र (०) पुष्करमूल, कमलदल, पद्म-

पत्र ।—पलाश—लोचन (गु०) श्रीकृष्ण, विष्णु,  
 पद्म पत्र के समान विस्तृत लोचन ।—यौनि (गु०)  
 ब्रह्मा, प्रजापति, हिरण्यगर्भ ।—राग (गु०) रत्न-  
 यर्ष, मणि विशेष ।—रेखा (स्त्री०) हस्तरैखा  
 विशेष ।—लाञ्छन (गु०) मूर्ख, कुवेर, राजा,  
 प्रजापति ।—लोचन (गु०) पद्म समान चतु  
 विशिष्ट ।—स्तुपा (स्त्री०) लक्ष्मी, दुर्गा, गङ्गा ।

पद्मगुप्त तत्० (गु०) संस्कृत के एक विद्यात और  
 महा कवि, ये धारा के राजा और भोजदेव के  
 चचा राजा मुद्ग के समावद थे । भोजदेव के पिता  
 के वर्णन में इन्होंने एक कथ्य रचा है, जिसका  
 नाम नवसाहसाङ्क है । रचनाशैली तथा मधुरिमा  
 में ये कालिदास की बराबरी करते हैं । इनका नव-  
 साहसाङ्क, कुमारदास का जानकीहरण, अर्यघोष  
 का बुद्धिचरित, कालिदास का रघुवंश ये तीन  
 समान श्रेणी के कथ्य हैं । इनका दूसरा नाम  
 परिमल था । दशरथी शताब्दी ही इनका समय  
 है ।

पद्मयर्ष तत्० (गु०) महाराज पदु के पुत्र, ये नाग  
 कन्या के गर्भ से उत्पन्न हुए थे । इनकी माता का  
 नाम मुमुकुन्दा था ।

पद्मा तत्० (स्त्री०) लक्ष्मी, कमला, लयङ्ग, पद्म-  
 चारिणी, पद्मगी, मनसादेवी, बृहद्रथ राजा की  
 कन्या । एक नदी का नाम ।—फर (गु०) जलाशय  
 विशेष, दीर्घिका, चापी, तड्गाग, कमल पुष्प  
 पुष्करिणी ।—घती (स्त्री०) मनसादेवी, नदी विशेष,  
 पद्मानदी, पद्मचारिणी नामक एक वृक्ष, गीत-  
 तोविन्दकर्ता जयदेव कवि की स्त्री का नाम ।  
 —लिया (स्त्री०) [ पद्म + आलया ] लक्ष्मी, कमला  
 जिसका कमल ही गृह है ।—सन (गु०) [ पद्म  
 + आसन ] योगासन विशेष, ब्रह्मा, प्रजापति ।  
 —हू (स्त्री०) [ पद्मा + आहू ] पद्मचारिणी, वृक्ष  
 विशेष ।—हू (गु०) [ पद्म + अहू ] पद्मगुण्य  
 नेत्र ।

पद्मिनी तत्० (स्त्री०) पद्मवृक्ष देव, पद्म लघुह, पद्म-  
 लता, कमलिनी, बलिनी, मुलच्छा स्त्री, उत्पमा  
 स्त्री, शरवर्णिनी, शिवों के चार भेट में का एक भेट,

एक महारानी का नाम । महाराणा भीमसिंह की प्रधान महिषी । १२७५ ई० में लक्ष्मणसिंह मेवाड़ के राजसिंहासन पर बैठे, परन्तु उनके अप्रामादयस्क होने के कारण उनके पितृव्य भीमसिंह राज्य व्यवसाय करते थे । पद्मिनी बड़ी सुन्दरी स्त्री थी, उसका सौन्दर्य ही उसके लिये काल हो गया, उसकी सुन्दरता की आग में मेवाड़ की राजधानी जलभुन गई । खिलजी वंश के सम्राट् ने पद्मावती के रूप गुण की प्रशंसा सुनी । पद्मिनी के मिराने की आशा से छप कपट रच कर दिल्ली के सम्राट् ने भीमसिंह को कैद कर लिया । खिलजी अलाउद्दीन ने सोचा था कि इस उपाय से पद्मिनी अपने हाथ लग जायगी, परन्तु उनका सोच विचार पानी में पड़ गया । पद्मिनी ने अपनी चतुरता से उनके कान काट लिये । पद्मिनी ने सम्राट् के यहाँ कहवाया कि मैं आपके यहाँ आने को प्रस्तुत हूँ, परन्तु उसके पहले आप अपनी सेना यहाँ से हटा लें, क्योंकि हमारे साथ हमको विदा करने के लिये बहुत सी स्त्रियाँ आवेंगी, किसी प्रकार उनकी प्रतिष्ठा में बाधा न हो, और उन बड़े घर की स्त्रियों के साथ आदर का बर्ताव हो, इसका प्रबन्ध आपके करना होगा, और अन्तिम विदाई लेने के लिये एक बार हमारे पति से मॅट करा देनी होगी । कामान्ध अलाउद्दीन ने सब बातें मान ली । नियत दिन हजारों धीर राजपूत पट्टे ओहारि पालकी पर चढ़ कर अलाउद्दीन के डेरे में जमा होने लगे, भीमसिंह के लिये पद्मिनी से थोड़ी देर के लिये मॅट करने की भी व्यवस्था हुई थी । अपनी पालकी में भीमसिंह को बैठा कर पद्मिनी सौटी, पद्मिनी की सहेलियाँ जा रही हैं यह समझ कर किसी ने रोका टोका नहीं । अभी तक पद्मिनी नहीं आई इससे खिलजी अलाउद्दीन बहुत चयड़ाया, शीघ्र ही उसने पालकियों के ओहार उठवाये, ओहार उठाने पर जो उसने देखा उससे उसका क्रोध और निराशा अधिक बढ़ गई । पालकी से उतर कर राजपूत धीरे ने शीघ्र ही सम्राट् की सेना पर धावा किया । सम्राट् की

सेना वहाँ ही लड़ने में लूभक गई, इधर भीमसिंह एक घोड़े पर सवार होकर चित्तौर के किने के पहुँचे । परन्तु इतना करने पर भी पद्मिनी का स्वामी की रक्षा नहीं कर सकी । अलाउद्दीन ने बड़े समारोह से चित्तौर पर चढ़ाई की, राजपूत धीर भी जो खोख कर किने की रक्षा करने लगे । पद्मिनी का चाचा गौरा और उसका भ्राता यादल ये दोनों बड़ी धीरता से अनेक शत्रुओं को मार अन्त में उसी युद्ध में काम आये । स्वयं भीमसिंह युद्ध क्षेत्र में उपस्थित हुए, इधर राजपूत धीरान्नाथों ने चित्तौर में प्रवेश किया । भीमसिंह युद्ध में मारे गये, चित्तौर की भूमि धीरशून्या हो गई । परन्तु अलाउद्दीन को पद्मिनी नहीं मिली, अलाउद्दीन ने देखा था कि चित्तौर से भूम निकल रहा है । वह स्थान एक पवित्र तीर्थ समझा जाता है ।

पद्य तत् ० (५०) छन्द, कवि की कृति, काव्य, श्लोक, कविता, शब्द, शठता ।—रचना (श्री०) रत्न बनाना, कविता करना, पद्यग्रन्थ ।

पधारना दे० (क्रि०) पाना, जाना, विदा होना, पूज्या के जाने के या जाने के समय इस शब्द का प्रयोग किया जाता है ।

पन तद् ० (५०) पण, होड़, उहराव, शर्त, प्रतिज्ञा, बचन, भाव, वाचक, भावार्थ द्योतक । मया :—लक्षपन, भोलापन, आदि ।—कपड़ा (५०) भीगा कपड़ा जो व्रण आदि के धुँधने के लिये होता है ।—गौटी (श्री०) बनी वस्त्र, सेचक का एक भेद ।—घट (५०) जलावतार, पानी भरने का घाट ।—घ (५०) प्रत्यङ्गा, रोदा, चिदा, धनुष का गुण ।—चक्की (श्री०) एक प्रकार की चक्की जो पानी के वेग से चलती है ।—पना (क्रि०) मोटा होना, बढ़ना, परिवृद्ध होना ।—पनाहट (श्री०) सख्तनाहट, ज़ोर से हवा के चलने का शब्द ।—घटा (५०) पान रखने का डब्बा ।—भात (५०) पानी में भिगाया हुआ भात ।—घाड़ी (श्री०) पान की दाबी, पान का

करीवा, जहाँ पान बोया जाता है।—घार (५०) पौधा विशेष, राजपूतों की एक शाख।—घारा (५०) पत्तल, पतरी।—शह्ला (खी०) प्याऊ, पैयाल।—सा (५०) जीका, खलौना, खाने की किसी वस्तु में अधिक पानी पड़ जाने के कारण पानी का सा स्वाद होना।—सारी (५०) पसारी, गन्ध चणिक, औषध आदि किराना बेचने वाला बनिया।—सालें (५०) प्याऊ, पनशाला, पानी पिलाने का स्थान, प्रपा।—सोई (खी०) छोटी नाव, डोंगी।—हा (५०) पत्ता, चिन्द, सुराग, घेरी गई वस्तु का पत्ता बताने के लिये कुछ ठहराव करना, यक्ष का चौड़ान, कपड़े की चौड़ाई।—पनहाना (क्रि०) गौ भैंस आदि का दूध दुहने के लिये उनका स्तन सुहराना।—हारा (५०) भरा, पानी भरने वाला, नौकर।—हारिन (खी०) पानी भरने वाली, मजूरिन।—हारी (खी०) पानो भरने वाली स्त्री, पनहारिन।

।नस तत्० (५०) फल विशेष, कटहर का फल।  
।नही दे० (खी०) जूता, पगरखी, उषानह।  
।नाली तद्० (खी०) प्रणाली, जल निकलने का मार्ग, नाली, मोरी।  
।निया दे० (५०) पानी, जल। (५०) पानी का सर्प।  
।नियाना दे० (क्रि०) पानी लगाना, पानी भरना।  
।नियाला दे० (५०) पनियार, एक प्रकार के फल का नाम।

।निर दे० (५०) खाद्य विशेष, खाने की एक वस्तु का नाम, अन्न संयोग से दूध को फाड़ डालने से जै खाद्य बनता है।

।नीहा दे० (५०) पानी के संयोग से बनी हुई वस्तु जलजन्तु, जल में उत्पन्न होने वाले जीव।

।न्य दे० (५०) धर्म मार्ग, मत, मार्ग, पदवी, कवीर पन्थ, दादू पन्थ।

।न्या दे० (५०) मार्ग, याद, पैदा, पन्थ, मार्ग, रास्ता, राह।

।न्यी दे० (५०) किसी धर्मपंथ के अनुयायी, पन्याई, पयाः—दादूपन्थी, कवीर पन्थी, पथिक, यात्री, बटोही, अध्वग, मार्ग चलने वाला।

।न्यार्थ दे० (५०) पन्थी, पन्थ का अनुयायी, मत-यसन्धी।

।न्यग तत्० (५०) [पद + न + गन् + ड] सर्प, उरग, अहि, औषध विशेष।—पति (५०) शेष, सर्प-राज, अन्नत।

।न्यगारि तत्० (५०) सर्पशु, गरुड़, विष्णु का याहन।

।न्यगासन तत्० (५०) [पन्नग + अशन] पन्नगारी, गरुड़ पत्नी।

।न्यगी तत्० (खी०) सर्पिणी, मनसादेवी।

।न्या दे० (५०) रत्न विशेष, हरे रत्न का मणि, हरिन्मणि।

।न्यी दे० (खी०) सुवर्ण, आदि का पतला पत्र, तपक।

।पपड़ा दे० (५०) दूकड़ा, चूर्ण, खिलका।

।पपड़िया दे० (खी०) छोटा पपड़ा।

।पपड़ियाकट्या दे० (५०) रवेतकट्या, सफ़ेद खैर।

।पपड़ी दे० (खी०) देवली, दिवाली, छिलका, परत, त्यक्।

।पपड़ीला दे० (५०) पड़तीला, अधिक खिलके वाला।

।पपनी दे० (खी०) दरनी, दरयनी, यक्ष।

।पपरा दे० (५०) पपड़ा, छिलका, त्यक्, मूच आदि का त्यक्।

।पपरी दे० (खी०) छोटी पपड़ी, पतला खिलका।

।पपीहा दे० (५०) पथि विशेष, घातक, रस पत्ती का स्वभाव है कि नदी आदि का पानी कभी नहीं पीता, किन्तु खाने की वस्तु के मेषों का ही पानी पीता है।

।पपीया दे० (५०) खिलौना विशेष, एक प्रकार का फल, पथि विशेष।

।पपीटा दे० (५०) पन्नक, शोध का पन्नक, पथि-पुट।

।पय तत्० (५०) पानी, नीर, जल, दूध।—निधि



परमायु तत्० (पु०) [ परम + आयु ] जीवित काल,  
आयु, उमर, अवस्था, बडी अवस्था ।

परमेश्वर तत्० (पु०) [ परम + ईश्वर ] परब्रह्म, शिव,  
विष्णु, परमात्मा, सर्वेश्वर्य सम्पन्न, ईश्वर,  
भगवान् ।

परमेश्वरी तत्० (स्त्री०) लक्ष्मी, भगवती, दुर्गा,  
पार्यती, सरस्वती ।

परमेष्ठि तत्० (पु०) ब्रह्मा, पितामह, जिन विशेष,  
शालग्राम विशेष, गुह विशेष ।

परम्पर तत्० (पु०) प्रपौत्रादि, क्रमागत, उत्तरो-  
त्तर, मृग विशेष ।

परम्परा तत्० (स्त्री०) अन्वय, वंश, कुल, सन्तान,  
परिपाटी, अनुक्रम, क्रमशः, आनुपूर्वी ।—गत  
(गु०) [ परम्परा + आगत ] क्रमागत, यथानुक्रम  
से आया हुआ, पीढी दर पीढी से आया हुआ ।

परला दे० (गु०) दूसरी ओर का, उधर का, उस  
ओर का ।

परलोक तत्० (पु०) अन्यलोक, दूसरा लोक, स्वर्गा-  
दिलोक, लोकान्तर, उत्तर काल, जन्मान्तर ।  
—गम (पु०) मृत्यु, मरण निधन, परलोक गमन,  
लोकान्तर गमन ।

परवल दे० (पु०) पलवल, खनाम स्यात फल,  
जिसकी तरकारी होती है ।

परवान् तत्० (गु०) परतन्त्र, पराधीन, परधश ।  
(पु०) पाल का डपटा ।

परवश तत्० (गु०) पराधीन, अन्यत्रय, अन्याधीन,  
परवान ।

परश तत्० (पु०) रत्न विशेष, पारसमणि ।

परशु तत्० (पु०) अस्त्र विशेष, परश्वध, कुठार,  
कुल्हाडी ।—धर (पु०) गणेश, कुठारधारी ।

परशुराम तत्० (पु०) महर्षि जमदग्नि के पुत्र, इनकी  
माता का नाम रेणुका था । इनके पितामह महर्षि  
अचिक ब्राह्मण थे, परशु, इनकी पितामही सत्य-  
यती छत्रिया थीं । परशुराम का नाम केवल राम  
ही था, परन्तु गन्धमादन पर्यत पर इन्होंने तपस्या  
के द्वारा महादेव को सन्तुष्ट किया और उनसे  
त्रिजामय परशु पाया, इसी कारण इनका नाम

परशुराम हुआ था । परशुराम ने अपनी शक्त  
रेणुका का सिर काट डाला था, और इहें पर  
छत्रिया का समूल नाश करने की चेष्टा करने  
भी परशुराम पृथिवी को निःछत्रिय नहीं कर  
सके थे । महर्षि पराशर ने सौदास पुत्र शंकर  
की रक्षा की थी, और भी अनेक राजकुमारों से  
जहाँ तहाँ रक्षा हुई थी, महर्षि करप ने इन  
समस्त छत्रिय राजकुमारों को ले आकर राधा  
भिषेक कराया ।

परश्व तत्० (शु०) परशे, आने वाला तीसरा दिन,  
एक दिन के अनन्तर ।

परस दे० (पु०) स्पर्श, छूत ।

परसत दे० (क्रि०) छूते ही, स्पर्श करते ही, स्पर्श  
करने ही से ।

परसना दे० (क्रि०) स्पर्श करना, छूना ।

परसिया दे० (पु०) हसिया, हंसुवा, दौती,  
दराती ।

परसूत दे० (पु०) रोग विशेष, परसूत का रोग,  
लडका होने के बाद लो छियों का रोग होता है ।

परसूती दे० (स्त्री०) लडके वाली, जिसके पुत्र  
लडके हुए हो, परसूत रोग वाली स्त्री ।

परसे दे० (शु०) आगे या पीछे का तीसरा दिन,  
एक दिन के अनन्तर का पहला या पाँचवाँ  
दिन ।

परस्यौ दे० (पु०) रहना, वास करना, ठहरना,  
स्थित होना ।

परस्पर तत्० (शु०) अन्योन्य, इतरेतर, आपस में ।

परस्मैपद तत्० (पु०) व्याकरण में क्रिया का एक  
प्रकार का चिन्ह ।

परा तत्० (शु०) विमोच, मुक्ति, प्राधान्य, प्रति-  
लोभ्य, वैपरित्य, भ्रष्टार्थ, आभिमुद्य, विक्रम  
गति, (उपसर्ग) भङ्ग, अहङ्कार, अनादर, प्रत्या-  
वृत्ति, निरस्कार, शब्द का स्वरूप विशेष । नामि-  
रूप मूलाधार से उत्पन्न प्रथम उक्त, नाद स्वरूप  
वर्ण, शब्द का आदि स्वरूप ।

पराव तत्० (पु०) व्रत विशेष, प्रविक्षित विशेष  
खड्ग, सुद्र, रोग विशेष, जन्मु मेद ।

- राक्रम तत्त्वं ( ५० ) शक्ति, वीर्य, विक्रम, प्रताप, उद्योग, निष्क्रमण ।—शून्य ( ५० ) शक्तिहीन, निर्बीर्य, प्रताप रहित, दुर्बल ।
- पराक्रमी तत्त्वं ( ५० ) वीर्यवान्, विक्रमी, प्रतापान्वित, प्रतापी, बलवान्, साहसी, शूर, वीर, योद्धा ।
- पराग तत्त्वं ( ३० ) पुष्परेणु, पुष्पधूली, स्नानोपद्रव्य, गिरि विशेष, विद्यमति, उपराग, चन्दन, स्वच्छन्द गमन, स्वैच्छापूर्वक गमन ।
- परामुख तत्त्वं ( ३० ) विमुक्त, बहिर्मुख, लौटा हुआ, उदासीन ।
- पराजय तत्त्वं ( ३० ) पराभव, निरस्तकार, हार ।
- पराजित तत्त्वं ( ५० ) कृत पराजय, पराधीन, विजित, निर्जित, हारा हुआ, रणभङ्ग ।
- पराजिता तत्त्वं ( ५० ) लता विशेष, विष्णुकान्ता ।
- पराजेता तत्त्वं ( ५० ) पराजयकर्ता, विजयी, जीतने वाला ।
- परादा दे० ( ३० ) एक प्रकार की रोटी, स्वनाम प्रसिद्ध रोटी ।
- परात दे० ( ३० ) घाल, बड़ी घाली ।
- परातिका तत्त्वं ( ५० ) शीतघ्न विशेष, लाल पुनर्तवा ।
- पराती दे० ( ५० ) परात, धानी ( ५० ) प्रातःकाल गने योग्य भजन, प्रभाती ।
- पराधीन तत्त्वं ( ५० ) शस्त्रतन्त्र, परवश, परतन्त्र ।
- पराना दे० ( ५० ) भागना, भागजाना, उड़लड़ा होना ।
- परानी तत्त्वं ( ५० ) प्राणी, जीवधारी, वेतन ।
- परान्न तत्त्वं [ पर + अन्न ] अन्न का अन्न, दूसरे का अन्न, दूसरे का दिया हुआ अन्न ।
- परामय तत्त्वं ( ५० ) पराजय, हारना, परिभव, निरस्तकार, उपक्रमन, विनाश, उखाड़ना ।
- पराभूत तत्त्वं ( ५० ) पराजित, परान्त, निर्जित, हारा ।
- परामर्श तत्त्वं ( ५० ) मन्त्रणा, युक्ति, विवेचना, वितर्क, सम्मति, मलाह ।

- परामर्ष तत्त्वं ( ५० ) निवृत्ति, तितिक्षा, समा, सहना, समा करना ।
- परामोघ दे० ( ३० ) फुललावा, फुलावा, फौला ।
- परायण तत्त्वं ( ५० ) चासङ्गवचन, चापासक्त, चापय, निपुण, तपस्वर, अभोष्ट ।
- पराया दे० ( ५० ) अन्यज्ञीय, अन्य संबन्धी, दूसरे का, चोर का ।
- परारि तत्त्वं ( ५० ) पूर्वतर वर्ष, गया हुआ या जाने वाला तीसरा वर्ष ।
- परार्थ तत्त्वं ( ५० ) अन्याय, दूसरे के निमित्त, स्वार्थ मिश्र ।
- पराई तत्त्वं ( ५० ) लचलक कोटी, अन्तिम संस्था, संस्था का शेष, प्रज्ञा की चाधी चापु ।
- परादर्य तत्त्वं ( ५० ) प्रधान, चेट, सर्वोत्कृष्ट, सर्वोत्तम ।
- पराल दे० ( ३० ) पलाल, घ घ, मृण ।
- पराशर तत्त्वं ( ५० ) महर्षि वशिष्ठ का पौत्र और शक्ति का पुत्र, इनकी माता का नाम अदृश्यवती था । इनके विषय में महाभारत में लिखा है कि एक समय चणोध्या का राजा कर्मायपाद चहेर जेत कर आ रहा था और इधर ने वशिष्ठ के ज्येष्ठ पुत्र शक्ति जा रहे थे, राजा ने इन्हें मार्ग छोड़ने के लिये कहा परन्तु इन्होंने उस पर कुछ ध्यान न दिया । इस कारण कर्मायपाद ने शक्ति के कोड़ा लगाया । शक्ति ने राखत हो जाने का राजा को शपथ दिया, मुन्तल राखत बनकर राजा ने शक्ति को पाटाटा और पुनः पीरे पीरे वशिष्ठ के अन्यान्य पुत्रों को भी मार डाला । इसमें विश्वामित्र की भी सम्मति थी । वशिष्ठपुत्र शोक से कातर होकर प्राण देने की उद्यत हुए । वे पर्वत से कूद पड़े, चग्नि में कूदे । परन्तु किसी प्रकार उनके प्राण नहीं निकले, अन्त में हताश होकर वे अपने चापम की लौटे आते थे । उसी समय पीले में वेदपञ्चमि गुनायी पड़ी । वशिष्ठ ने पूछा कौन है ? उत्तर मिला चापकी ज्येष्ठ पुत्रवधु अदृश्यवती, अदृश्यवती ने कहा—“मेरे गर्भ में चापका पीत्र वर्तमान है, यह वह वर्ष में यह वेदाध्ययन कर रहा है ।” यह सुनकर

यशिशु प्रसन्न हुए उन्होंने देखा कि हमारा वंश चलाने वाला वर्तमान है, उसी समय एक राजस खाने के लिये ऋद्धयन्तो की चोर लपका। यशिशु ने मन्त्रघल से उसका राजसत्त्व दूर किया। यह राजस राजा कलमापपाद था। यशिशु ने अपनी आत्मा गाकर उसे राज्यशासन करने का आदेश दिया। पराशर बड़े हीगे पर अपने पिता की मृत्यु का संघट्ट सुनकर एक यज्ञ करने को उद्यत हुए। राजसकुल का नाश करना ही उस यज्ञ का उद्देश्य था। परन्तु पुनस्त्य पुलह आदि ऋषियों ने उन्हें समझाया कि तुम्हारे पिता की मृत्यु राजसों से नहीं हुई, किन्तु अपनी मृत्यु का प्रधान कारण तुम्हारे पिता ही हैं। यह सुनकर पराशर ने यज्ञ करना छोड़ दिया। मत्स्यगन्धा नामक धीवर कन्या से पराशर का एक पुत्र उत्पन्न हुआ था जिसका नाम द्वैपायन था। पराशर ने एक महिता बनाई थी, जिसका नाम "पराशरसंहिता" था पराशरस्मृति है।

- पराश्रय तत्० (गु०) पराधीन, परवश।
- परास्त तत्० (गु०) पराजित, पराभूत, हारा।
- पराह दे० (गु०) भागाभाग, भगाव, देशत्याग।
- पराहू तत्० (गु०) दिन का दूसरा भाग, अपराहू।
- परि तत्० (उपसर्ग) सर्वतोभाष्य, वर्जन, ठपाधि, शेष, इस प्रकार, आद्यपान, भाग, धीप्ता, आलिङ्गन, सन्नय, दोषाद्यात, दोषकथन, निरसन, पूजा, ठयापकता, विस्मृति, भूषण, उपरम, शोक, सन्तोषभाषण।
- परिकर तत्० (गु०) कटिबन्धन, कमरबन्द, पर्यङ्क, खट्वा, खाट, परिवार, समारम्भ, मृन्द, सल्लह, सहकारी, विवेक।
- परिकर्म तत्० (गु०) कुहूम आदि के द्वारा, अन्न संस्कार, स्नान उषटन लगाना आदि। शरीर संस्कार मात्र।
- परिकल्पना तत्० (खी०) उपाय, चिन्ता, चेष्टा, उद्योग, कर्म, क्रिया।
- परिकीर्तन तत्० (गु०) प्रस्ताव, स्तुति, बहाई, प्रतिष्ठा करण, सब प्रकार से प्रशंसा करना।

- परिक्रमा तत्० (खी०) क्रोडाचं पैदल चलना, विहार, देयपरिक्रमा, प्रदक्षिण।
- परिखा तत्० (खी०) राजधानी के चारों ओर घाई, खाल, नाछा।
- परिगणन तत्० (गु०) मापना, गिनना, गणनकाल, संघषा करना।
- परिगणित तत्० (गु०) ठीक ठीक गणना किया हुआ, संघषाकृत।
- परिगत तत्० (गु०) प्राप्त, सत्य, विदित, ज्ञात, विस्मृत, चेष्टित गत चेष्टित।
- परिग्रह तत्० (गु०) प्रतिग्रह, स्वीकार, सेना के पंजे का भाग, पत्नी, भार्या, परिजन, भृत्य, नेयक, परिवार, आदान, ग्रहण, स्वीकार, शाप, शपथ, रातु के द्वारा सूर्य का ग्रान्त, सूर्य ग्रहण।
- परिघ तत्० (गु०) लोहा जड़ी पाठी, लौहमय यष्टि, गदा, सुदगर, शूल।
- परिघोष तत्० (गु०) शब्द वियेष, मेघगर्जन, मेघ ध्वनि।
- परिचय तत्० (गु०) विशेष रूप से ज्ञान, जानपद चान, मेल, मिश्रता।
- परिचर तत्० (गु०) युद्ध के समय शत्रु के प्रहार से रय की रक्षा करने वाला, सेना की व्यवस्था करने वाला, दण्डनायक, सहायक।
- परिचर्या तत्० (खी०) सेवा, शुभ्रूपा, उवाचना।
- परिचायक तत्० (गु०) सायक, बोधक, निवेक द्वारा परिचय प्राप्त हो, जान पहचान कराने वाला, मध्यस्थ।
- परिचारक तत्० (गु०) मृत्यु, सेवक, मौक, चाकर, शुभ्रूपाकारी।
- परिचारिका तत्० (खी०) दासी, चाकरी, सेविका।
- परिचित तत्० (गु०) परिचय विशिष्ट, ज्ञात, चीन्हा, जाना।
- परिच्छद तत्० (गु०) शेष, वसन भूषण आदि, परिधान, आच्छादन, पोशाक, परिवार, हस्ति, अश्व, यज्ञ।

परिचित्त तत्त्वं (गु०) परिचयेद-विधिदः, अथपि प्राप्ते, सीमावद्, परिमित ।

परिच्छेद तत्त्वं (गु०) ग्रन्थ विच्छेद, ग्रन्थ के अध्याय, सीमा, अवधि, विभाग, प्रकरण, उप-धान, पर्व ।

परिजन तत्त्वं (गु०) परिवार, कुटुम्बः, पुत्रकलत्र आदि पारिवर्तीय धर्म, स्वजन, सम्बन्धी, अनुचर, अनुगामी ।

परिज्ञान तत्त्वं (गु०) निश्चय बोध, सब प्रकार से जानना हुआ, विशेष रूप से ज्ञात ।

परिणत तत्त्वं (गु०) [परि + णत् + क्त] परिणाम, प्राप्ति, पक्ष, पक्ष हुआ, टिप्पणी चलने वाला-हाथी, नम, नया हुआ ।

परिणति तत्त्वं (स्त्री०) [परि + णत् + णि] परिणाम, निष्पत्ति, समता से, शेष होना, निष्प्रभाव ।

परिणय तत्त्वं (गु०) त्रिवाह, दारपरिग्रह, वधाह ।

परिणाम तत्त्वं (गु०) [परि + णत् + क्त] विकार, प्रकृति का दूसरे रूप में बदल जाना, अवस्थान्तर प्राप्ति, भावान्तर-नाम, उत्तर काल, शेष ।—दृशी (गु०) दूरदर्शी, विद्व, अविद्व, परकालदर्शी, दूरन्देगी ।

परिणायक तत्त्वं (गु०) पति, यर, धय, पौसा खोलने वाला ।

परिणाह तत्त्वं (गु०) परिसर, विस्तार, विस्तृत, विभाजता, चौड़ाई, आकार, आकृति ।

परिणीता तत्त्वं (स्त्री०) [परि + णी + क्त + णा] विवाहिता, जड़ा, याचिणीहीता ।

परितः तत्त्वं (अ०) सर्वतः, चतुर्दिशा में उपाम, चारों तरफ से, चारों ओर से ।

परिताप तत्त्वं (गु०) [परि + तप् + क्त] मनस्ताप, सन्ताप, क्लेश, दुःख, शोक, भय ।

परितुष्ट तत्त्वं (गु०) [परि + तुष्ट + क्त] सन्तुष्ट, आर्द्रादित, आनन्दित, हृष्ट ।

परितुष्टि तत्त्वं (स्त्री०) सन्तोष, सुमि, आनन्द, हर्ष ।

परितुष्ट तत्त्वं (गु०) [परि + तुष्ट + क्त] सम्पत्, सुम, अतिशय सुम, अधिक सुम ।

परितोष तत्त्वं (गु०) हर्ष, सुमि, सन्तोष, आनन्द ।

परित्यक्त तत्त्वं (गु०) परित्याज्य, छोड़ने योग्य, परित्यक्त, त्यक्त, सब प्रकार से छोड़ा हुआ ।

परित्याग तत्त्वं (गु०) सब प्रकार से त्याग, विसर्जन, वर्जन ।

परित्राण तत्त्वं (गु०) मृत्यु से रक्षा, रक्षण, मोचन, निष्कृति ।

परित्रात तत्त्वं (गु०) रक्षित, पालित, पाला हुआ ।

—तत्त्वं (गु०) निस्तारक, परित्राणकर्ता, रक्षक ।

परिदान तत्त्वं (गु०) परिधर्म, विनिमय, बदला, लेनदेन ।

परिदेवक तत्त्वं (गु०) विलापकर्ता, दुःखकर्ता, दुःखकारी, बुधारी, बुधा खोलने वाला ।

परिदेवन तत्त्वं (गु०) अनुधीवन, अनुतोष, पश्चात्ताप, विलाप, पक्षतावा, टिप्पणी, रूप का खेल ।

परिधन } तत्त्वं (गु०) धन्यादिधारण, परिधेयधन, परिधान } यथा—

“जटा, सुकुट परधन मुनिवीरा”

—तोमावणी ।

परिधि तत्त्वं (स्त्री०) परिधिष, वेष्टन, वेष्ट, मण्डलाकार रेखा, चन्द्र सूर्य मण्डल, चन्द्रसूर्य मण्डल के चारों ओर जो कभी कभी मण्डल दोष-पड़ता है ।

परिधेय तत्त्वं (गु०) पहनने योग्य वस्त्र आदि, पहनने के योग्य, धारण योग्य ।

परिध्वंस तत्त्वं (गु०) अपघ्नय, नाश, हानि, क्षति, ध्वंसकर ज्ञाति विशेष ।

परिनिष्ठित तत्त्वं (गु०) परिज्ञान, ज्ञानी, प्रतिष्ठित, प्रतिष्ठा प्राप्त ।

परिपक्व तत्त्वं (गु०) सुपक्व, पका हुआ, पेट, निपुण, उपयुक्त, योग्य, दक्ष, कुशल, चतुर, कार्यदक्ष, कार्यकुशल ।

परिपन्थी तत्त्वं (गु०) गत्र, कैरी, विपत्, चोर, छुटेर, टग ।

परिपाक तत्त्वं (गु०) अर्जता, पक्षपा, परिणाम, निपुण, निपुणता, फल, निष्कर्ष, उत्तर काल ।

परिपाटी तत्त्वं (स्त्री०) रीति, प्रथा, जाल, अनुक्रम, यथाक्रम, उन्नत, आङ्ग-विद्या ।

परिपालन तत्त्वं (५०) प्रतिपालन, पोषण, रक्षण,  
रक्षा करना ।

परिपालक तत्त्वं (५०) प्रतिपालक, रक्षाकर्ता,  
रक्षक, पोषणकारी ।

परिपालित तत्त्वं (५०) रक्षित, प्रतिपालित,  
आश्रित ।

परिपिष्टक तत्त्वं (५०) सीसक, सीसा, धातु विशेष ।  
परिपूत तत्त्वं (५०) पवित्र, शुद्ध, यिना छिलके का  
धान ।

परिपूरन तत्त्वं (५०) समस्त, सकल, सम्पूर्ण ।  
परिपूर्ण तत्त्वं (५०) परिपूर्ण, समस्त, सकल,  
सम्पूर्ण, पूर्ण, भरा हुआ, पूर्ण, प्रचुर, यथेष्ट ।  
परिभव तत्त्वं (५०) पराजय, पराभव, परास्त,  
अज्ञाता, अनादर, हेयबुद्धि ।—पद (५०) दुर्नाम,  
दुष्कृति, दुर्पथ ।

परिभात्र तत्त्वं (५०) अवज्ञा, अनादर, पराभव,  
पराजय ।

परिभाषो तत्त्वं (खी०) परिष्कृतभाषा, प्रशस्ति, ग्रन्थ  
संघेय करने के लिये साङ्केतिक नियम ।

परिभ्रमण तत्त्वं (५०) पर्यटन, अनवरत भ्रमण,  
घनत घूमना, सर्वदा घूमते रहना ।

परिमण्डल तत्त्वं (५०) कर्तुल, गोलाकार, अक्ष,  
गोल, ग्रहमार्ग ।—अक्ष (५०) ग्रहपथ, ग्रहचक्र ।

परिमल तत्त्वं (५०) त्रिमूर्त्तजन्म गन्ध कुङ्कुमादि  
महान, महानोत्थित मनोहर गन्ध, सुगन्ध, सुवास,  
सौम्य ।

परिमाण तत्त्वं (५०) माप, वजन, तोल, जोष ।

परिमाजित तत्त्वं (५०) परिसोधित, शुद्ध, साफ ।

परिमित तत्त्वं (५०) नापा हुआ, मापा हुआ,  
नियमित ।—उपय (३०) उपय में सङ्कोच, मित-  
उपय, स्वयं उपय, उपय परामुद्रता, परिमितत्व  
कृपणत्व ।

परिमिते तत्त्वं (खी०) परिमाण, किमारा, अत्रधि ।

परिरम्भ तत्त्वं (५०) आतिङ्गन, भेंटना, इलेव,  
संकारा भेंट ।

परिवर्जन तत्त्वं (५०) त्याग, परिहार ।

परिवर्त तत्त्वं (५०) बदला, लेन देन, रूप विचार ।  
परिवर्तन तत्त्वं (५०) पनटाव, पनटना, रोक-  
करना ।

परिवाद तत्त्वं (५०) माली, उलहना, निशा, क  
निन्दा ।

परिवादक तत्त्वं (५०) निन्दक, निन्दा करने वाला,  
द्वेषी ।

परिवार तत्त्वं (५०) कुटुम्बी, कुटुम्ब के मनुष्य,  
पुत्रादि ।

परिवारण तत्त्वं (५०) मँगना, रोकना, हठक  
- डालना, बाधा डालना ।

परिवाह तत्त्वं (५०) जल की उछाल, बहाव, मेघव,  
मेघमार्ग ।

परिवृत तत्त्वं (५०) रक्षित, आच्छादित, घिरा हुआ,  
छे घृत ।

परिवेषण तत्त्वं (५०) परीक्षना, भोजन, परेषण,  
परिवेषण तत्त्वं (५०) चतुर्दिक् से आच्छादन,  
मपहलाकार वेष्टन, आच्छादन ।

परिघ्राञ्जक तत्त्वं (५०) सन्यासी, मुनि, चतुर्धास्यी ।

परिघ्राञ्ज तत्त्वं (५०) सन्यासी, यती, योगी ।

परिशिष्ट तत्त्वं (५०) अवशेष विशिष्ट, अशुद्धि  
प्रकाशन, ग्रन्थ भाग, बाँकी, अशुद्धि ।

परिशुद्ध तत्त्वं (५०) परिशोधित, पारिष्कृत, हाथ  
सुधरा, पवित्र, शुद्ध, उज्ज्वल ।

परिशुद्धक तत्त्वं (५०) अतिशय शुद्ध, बहुत शुद्ध  
हुआ ।

परिशेष तत्त्वं (३०) अन्न, सीमा, विच्छेद, समाप्ति

परिशोध तत्त्वं (५०) परिसोधन, सर्वतोभाष  
शुद्ध । अशापनयन, अज्ञ बुझाना, प्रतिकार  
प्रतिदान ।

परिश्रम तत्त्वं (५०) आयास, श्रम, उद्योग, वेष्ट  
होश, क्रान्ति, यकायत ।

परिश्रमो तत्त्वं (३०) उद्योगी, श्रमकर्ता, वेष्टान्त्रि  
परिश्रान्त तत्त्वं (५०) श्रमयुक्त, सब प्रकार से श्रम  
श्रमयुक्त, क्रान्त, अवश्रम ।

परिषद् तत्त्वं (खी०) सभा, संसद्, समिति, म  
लीगी के एकत्रित होने का स्थान ।

परिष्कार तत्त्वं (५०) निर्मल, स्वच्छ, मुहुः, सुव्याप्त, स्पष्ट ।

परिष्कृत तत्त्वं (५०) भूषित, अलङ्कृत, भूषणयुक्त, निर्मल, मुहुः, स्वच्छ, वैद्वित, प्राम्ण संस्कार ।

परिष्पृङ्ग तत्त्वं (५०) आलिङ्गन, रमण ।

परिसंख्या तत्त्वं (स्त्री०) गणना, सीमा, काष्ठप्रालङ्कार विशेष, पद्या—

“अतत वरनि कस्य वस्तु जहं, वरनत एकहि ठौर ।  
माहि कहत परिसंख्य हे, भूषन कथि दिलदौर ॥”  
गुण आदि का किसी वस्तु विशेष में जहाँ नियम किया जाता है वहाँ ही परिसंख्यालङ्कार होता है।  
पद्या—“अति, मतभारे जहाँ हिरदं निहारियतु,  
गुणगन मैही चहुभाई परकीति है । भूषन भनत  
जहाँ पर सगै वाननि में, कोक पच्छिनिहि मोह  
विद्युन रीति है, गुनिगन चोर जहाँ एक चितही  
के लोक, वँधै जहँ एक वरजाकी गुन प्रीति है,  
कंतु कदली में पैर वृक्ष बदली में सिवराज बदली  
के राज में यो राजनीति है ॥”

—शिवराजप्रवण ।

परिहरना दे० (क्रि०) छोड़ना, त्याग करना,  
त्यागना, परिहार करना ।

परिहार तत्त्वं (५०) अग्रज, अनादर, मोहन,  
छोड़ना, त्यागना, हटाना, त्याग, एक जाति विशेष,  
राजपूतों की एक शाखा ।

परिहास तत्त्वं (५०) उपहास, ठट्ठा, कौतुक,  
कुसुहण ।

परिहास्य तत्त्वं (५०) हठने के योग्य, हास्य के  
उपयुक्त, हँसी का पात्र ।

परिहित तत्त्वं (५०) परिधान किया हुआ, पांछा-  
हित, वैद्वित ।

परी दे० (स्त्री०) भाँडे से तेल निकालने का पात्र,  
पैरी, अष्टरा, देवाङ्गना, स्वर्ग की वेरवा ।

परिच्छिन्न तत्त्वं (५०) अन्योच्छिन्न, दूसरे का इष्ट ।

परोक्ष तत्त्वं (५०) परीक्षा करने वाला, जाँच  
करने वाला, प्रश्नों के उत्तरपत्र देखने वाला ।

परोक्षा तत्त्वं (स्त्री०) प्रत्यक्ष रीति से गुण का विवे-  
चन ।

परीक्षित तत्त्वं (५०) जिनका गुण विवेचित हुआ है,  
अभिमन्यु के पुत्र । ये मत्स्यराज विराट की कन्या  
उत्तरा के गर्भ से उत्पन्न हुए थे । एक समय कर्ण  
नामक स्थान में पास के समय राजा परीक्षित ने  
सुना कि उनके राज्य में कलि, घुस आया है, वे  
कलि को दमन करने के लिये सरस्वती नदी के  
तीर पर पहुँचे । वहाँ उन्होंने देखा कि राजोचित  
वस्त्र पहन कर एक युद्ध रथ गौ और एक बैल को  
ढपड़े से पीट रहा है । उस वृत्त के केवल एक ही  
पैर था । राजा परीक्षित ने समझा ये ही धर्म है  
और वह युद्ध कलि था । कलि को मारने के लिये  
राजा ने तलवार उठायी । उस समय कलि राज  
वेष उतार कर राजा के पैरों पर गिर पड़ा और  
उसने शरण ग्रहण किया । शरणागत समझ कर  
राजा ने उसे छोड़ दिया और कुशा, मय, हिंता  
और स्त्री ये चार स्थान उसके रहने के लिये उन्होंने  
बताये । एक समय राजा अष्टेर खेलने गये थे ।  
समय अधिक हो जाने के कारण राजा सुषामुर  
हो गये थे । वे एक आश्रम में एक महर्षि के पास  
गये । मुनि मीनो थे, इसी कारण उन्होंने राजा के  
प्रश्नों के उत्तर नहीं दिये । इसने क्रोध होकर एक मरा  
साँव राजा ने उस मुनि के गले में लगा दिया ।  
इस मुनि के शूद्रों नामक एक पुत्र था, उन्होंने  
किसी से यह घटना सुनी, और उन्होंने श्राप  
दिया कि जिसने मेरे पिता के गले में साँव लगाया  
है, उसको सातवें दिन तलक साँव काटेगा ।  
मुनि ने जब अपने पुत्र से ये बातें सुनी तो वे बड़े  
दुखी हुए और राजा का श्राप की बात कहवा  
भेजो जिससे वे श्रापधान हो जाँव । देखते देखते  
सातवाँ दिन भी आगया, तबक राजा को काटने  
के लिये ला रहा था । उसे एक ब्राह्मण मिला, जो  
राजा को परिष्कार करने जाता था । तबक ने  
उसकी परीक्षा की, जिससे उसकी विद्वता से  
भीत होकर तबक ने बहुत रुपये देकर उस ब्राह्मण  
को छोटा दिया । ठीक समय तबक ने राजा को  
काटा, और राजा का जीवन समाप्त हुआ ।

पृष्ठ दे० (५०) पोर, चर्म, ग्रन्थि, गौँठ, साँव आदि  
की गौँठ ।

- (या०) फिरना, उलटना ।—लेना (या०) लेना, बदला लेना, बैर शोध करना, बैर चुफाना ।
- पलट ना दे० (क्रि०) बदलाना, फिराना, सैटाना, परिवर्तन कराना, अपने किये हुए का फल ले लेना ।
- पलटार दे० (पु०) किराय, सैटाय ।
- पलडा दे० (पु०) पल्ला, तुना, तराजू या पल्ला ।
- पल्लापड्डु तत्० (पु०) प्याज ।
- पलथा दे० (पु०) लेट घोट ।—मारना (या०) लेटना, घोटना, बैर समेट कर बैठना, पलथी मार कर बैठना ।
- पलथी दे० (स्त्री०) शासन विशेष, स्वस्तिक शासन, याँ बैर को दहिने जहुँ पर और दहिने बैर को याँ जहुँ से मिला कर बैठना ।
- पलना दे० (क्रि०) प्रति पालन होना, बढना, वृद्धि-पाना, पनपना ।
- पलल तत्० (पु०) मौस, आमिष, खसी जो पशुओं की पिल्लवति हैं ।
- पलवल दे० (पु०) परवल, परेरा ।
- पलवाना दे० (क्रि०) पोसवाना, पालन कराना, रवा कराना ।
- पलवार दे० (पु०) नाथ विशेष, बडी नाथ ।
- पलवारी दे० (पु०) पलवार, नाथ के चलाने वाला, केडड, मल्लाह ।
- पला दे० (पु०) बडा चमचा, कर्डा, डडू, परी, तेल धी आदि निकालने का बर्तन ।
- पलान दे० (पु०) पोढे की जीन ।
- पलाना दे० (क्रि०) भागना, भय में एक स्थान छोड़कर दूसरे स्थान को जाना, छाना, छाजाना ।
- पलानी दे० (स्त्री०) छाथनी, छौँद, तृण निर्मित, छौँद ।
- पलान्ना दे० (क्रि०) जीन बाँधना, पोढे पर जीन कमना ।
- पलायन तत्० (पु०) भय के कारण दूसरे स्थान में जाना, प्रस्थान, भागना ।

- पलायन तत्० (पु०) भगोड़ा, भाग प्रकर कारक ।
- पलायित तत्० (पु०) पलायन विधि, प्रसिद्ध भागा हुआ ।
- पलाय दे० (पु०) पलातो, छावनी ।
- पलाश तत्० (पु०) वृक्ष विशेष क्रिगुक्त वृक्ष, या का पेड़, हरित वर्ण, मगध देश, राबन, पत्र, पत्ती ।—पापडा (पु०) पलाश का बीत ।
- पलास दे० (पु०) पालक, पानने का काम रवा करना ।
- पलित तत्० (पु०) किसी कारण से केशों का पड जाना, केशपाफ, ताप, कर्दम, वृद्ध, शिविन ।
- पली दे० (स्त्री०) एक प्रकार का चम्मच, धी, तेल आदि निकालने की कर्डी ।
- पलीत दे० (पु०) भ्रत, प्रेत पिशाच, वेनि विशेष, भूत वेनि ।
- पलीता दे० (पु०) बत्ती, धाती, शब्दक का तोड़ा ।
- पल्लुा दे० (पु०) पालित, पला हुआ, पोता हुआ, पाला पोसा ।
- पलेधन दे० (पु०) मूछा घाटा, जिसके सहारे रीढ़ बेनी जाती है ।—निकालना (या०) पीटना, पीट कर बेडम कर देना ।
- पलेच दे० (पु०) परेह, कडी, डूरा ।
- पलोटना दे० (क्रि०) दवाना, सेवना, सेवा करना धीरे धीरे पाँव दवाना ।
- पलोटा दे० (पु०) प्रथम पुत्र, प्रथम उत्तर पुत्र पहिलौंठा ।
- पल्ल तत्० (पु०) धान रखने का स्थान नीक शजार ।
- पल्लव तत्० (पु०) नये पत्तों सहित शाखा का भाग, पत्र, शाखा, अक्षुर, नयीन पत्तों का गुच्छ किशलय, विटप ।—ग्राहि पाण्डित्य (या) जिस विद्या का फल न देया जाय, निचलस विद्ये उपर्य अनाप शनाप बचना ।
- पल्लवित तत्० (पु०) पल्लवयुक्त, सपल्लव, विस्तृत बहुशोकृत, नयीन पल्लवयुक्त ।

पल्ला दे० (५०) अन्तर, व्यवधान, दूरी, महापंता, कपड़े का छोर, चौंकर, चञ्चल, तीन मन का भार ।  
—दार (५०) मजूर; बेज देते वाला, कुत्ता ।

पल्लो तद्० (खी०) छोटा गाँव, गँवर ।

पल्लू दे० (५०) बख का पूँट, कपड़े का छोर ।  
—दार (५०) जरी के काम वाला कपड़ा, जरी-दार कपड़ा ।

पल्लव तद्० (५०) अल्प जलाशय, चापी, तड़ाग ।

पल्लिपट्टा दे० (५०) पनहरटा, तिपारं, पानी भर घड़े रखने का स्थान ।

पल्लन तद्० (५०) चायु, हवा, बसाठ, चायु कौण का स्वामी, देवता विशेष ।—कुमार (५०) हनुमान, मीम ।—तनय (५०) हनुमान, मीम ।—सखा (५०) अग्नि, अाग ।—रक्षा (खी०) यक्षुर्वाची उग्रमेन की स्त्री का नाम, कंस रन्हींका बेटा था ।  
—सुत (५०) पवन का पुत्र, हनुमान, मीम ।

पल्लनायन तद्० (५०) वातायन, भरोणा, जिड़की ।  
पल्लनावती तद्० (खी०) महर्षि करवय की एक स्त्री का नाम ।

पल्लनाशन तद्० (५०) चायु भूचक, चायु का आहार करने वाला, चर्य, चौंय ।

पल्ल दे० (खी०) छोड़े के पैर की चौंकर, पैकड़ी, पैकड़ा, एक कुत्ता, एक पल्ला ।

पल्लाज दे० (५०) गँवरया, ग्रामीण, गँवार, नीच, अधम ।

पल्लार दे० (५०) जाति विशेष, छत्रियों की एक जाति, छत्रिय जाति की एक शाखा, परमार ।

पल्लारना दे० (क्रि०) फँकना, झालना, बलाना, पठाना ।

पल्लि तद्० (५०) यज्ञ, हन्द्र का अक्ष विशेष, कुलिय ।  
—पात (५०) यज्ञ पढ़ना, ब्रिजली गिरना ।

पल्लि तद्० (५०) शुद्ध, स्वच्छ, पाँच रहित, सौंय, विमल, निर्मल, दोष रहित, निर्दोष, निष्कलङ्क ।  
—ता (खी०) शुद्धता, स्वच्छता, निष्कलङ्कता, निर्दोषता, निर्मलता, विमलता ।

पल्लि तद्० (खी०) येसोपयो, कुण्ड, एक प्रकार

की रेशम की माला, जो पवित्रा एकदमी को भगवाण को समर्पित की जाती है ।

पल्लि तद्० (खी०) कुछ मुद्रिका, पैता, यह जुया की बनार जाती है, केवल सुवर्ण अपवा-अष्टभाण से भी यह बनती है । पूजा तर्पण आदि में इसके धारण करने की विधि है ।

पल्लम दे० (५०) अर्णा, लोम, जन ।

पल्लमी दे० (५०) अर्ण निर्मित, लोमरचित, पल्लम, के बने कपड़े दुपल्ला आदि ।

पल्लु तद्० (५०) अणु विशेष, सौंय, ब्रूक्ष, बाला, प्राणी, चतुष्पाद, प्राणिमात्र, संसारियों का आत्मा, साधकों के विभाव में का एक भाग ।—ता (खी०) पल्लुभाव, मूलंगता ।—तुल्य (५०) पल्लु सूक्ष्म, निर्बोध, अज्ञ, मूल, मूल ।—पति (५०) शिव, महादेव, त्रिलोचन, ब्रह्मा आदि स्यावर पर्यन्त सभी पल्लु कहे जाते हैं, महादेव इन सब के पति हैं इस कारण महादेव को पल्लुपति कहते हैं ।  
—पाल (५०) पल्लुपालनकर्ता, पल्लुचक ।—राज (५०) सिंह, मृगेन्द्र, कैगरी ।

पल्लत् तद्० (ख०) चरम, शेय, पीछे, पश्चिम दिक् भनन्ता, व्यवधान, वाद ।

पल्लत्ताप तद्० (५०) कर्मान्तर, अन्ताप, पल्लत्त गोक, अणुगोचर, पल्लत्ताप ।

पल्लत्ती तद्० (५०) अणुवती, पल्लत्तीगामी, पल्लत्त संस्थित, पीछे चलने वाला, अन्तस्थित ।

पल्लत्त तद्० (५०) शेवाहु, अपरहु, अरौर का अर्ध भाग ।

पल्लत्त तद्० (५०) पश्चिम दिशा, पछौह ।

पल्लत्तोर दे० (५०) शेर, शेर, जो देखने से कर्तुरा से, उठारगौर, स्वर्णशेर, सुतार ।

पल्लत्तार तद्० (५०) आंधार विशेष, सामंसाधियों की क्रिया विशेष ।

पल्लत्त दे० (क्रि०) फैलना, विलग्न होना, अधिक अदूर तक अगम होना ।

पल्लती दे० (खी०) पौंजर की हड्डी, पल्लर ।



पसा दे० (५०) मुट्टी भर, दो मुट्टी भर ।  
 पसाईं दे० (स्त्री०) चावल विशेष ।  
 पसाना दे० (क्रि०) मौड़ निकालना, काटना ।  
 पसार तद्ग० (५०) प्रसार, फैलाव, विस्तृत, व्याप-  
 कता ।  
 पसारना दे० (क्रि०) फैलाना, घुलने के लिये घुब  
 में फैलाना, विह्वाना ।  
 पसारो दे० (पु०) पत्रसारी, गन्धवणिक ।  
 पसीजना दे० (क्रि०) पिघलना, पानी छूटना, नरम  
 होना, प्रस्वेद निकलना, दयालु होना, दयाई  
 होना ।  
 पसीना दे० (पु०) प्रस्वेद, स्वेद, पसेव ।  
 पसोव दे० (पु०) पसीना, प्रस्वेद, स्वेद ।  
 पसुज दे० (स्त्री०) संघन, गुर्पन ।  
 पसुजना दे० (क्रि०) गुर्पना, सीना, डोरा डालना ।  
 पसेव दे० (पु०) प्रस्वेद, पसीना, पसीय, प्रसन्नता,  
 हर्ष ।  
 पस्ताना दे० (क्रि०) पड़ताना, पछतावा करना,  
 प्रधात्ताप करना, अनुताप करना, अनुशोचन  
 करना ।  
 पहा दे० (स्त्री०) प्रभा, प्रात, तड़का, पै.ह, मिनसार ।  
 —फटना (क्रि०) प्रातःकाल होना, सवेरा होना,  
 सूर्यादय होना ।  
 पहचान दे० (स्त्री०) परिचय, जान, भेंट, मुलाकात,  
 चिन्हार ।  
 पहचानना दे० (क्रि०) जानना, चीन्हना, परिचय  
 करना ।  
 पहनना दे० (क्रि०) पहिरना, परिधान करना,  
 कपड़ा पहनना, वस्त्र धारण करना ।  
 पहनावा दे० (पु०) वस्त्र, कपड़ा, पहनने योग्य  
 वस्तु ।  
 पहर तद्ग० (पु०) पहर, समय का परिमाण, दिन का  
 अंशभाग, एक पहर प्रायः तीन घण्टे का होता  
 है ।

पहरा दे० (५०) चौकी रक्षा ।  
 पहराना दे० (क्रि०) पहनना, पहिराना, वस्त्र  
 धारण करना, वस्त्र परिधान करना ।  
 पहरा देना दे० (धा०) चौकी देना, रक्षा करना,  
 रखवाली करना ।  
 पहरें में डालना दे० (धा०) रक्षा में रखना, रक्षालत  
 में देना, पहरण को सौंपना ।  
 पहरें में पड़ना दे० (धा०) हवालात में रहना, किसी  
 अपराध के विचारार्थ हवालात में रखा जाना ।  
 पहरावनी दे० (स्त्री०) वस्त्र, वसन, कपड़े का जो,  
 जो विवाह आदि उत्सव के समय दिया जाता  
 है ।  
 पहरिया, पहरा दे० (पु०) पहरा देने वाला, चौकी  
 करने वाला, चौकीदार ।  
 पहर दे० (पु०) प्रहरी, पहरा देने वाला, पहरवा ।  
 पहल दे० (स्त्री०) रुई का पत, माल, भाग, वस्त्र  
 धोर का, खेल की मुजा ।  
 पहला दे० (पु०) प्रथम, आद्य, प्रारम्भ का ।  
 पहाड़ दे० (पु०) पर्वत, शैल, गिरि ।—सी रातें  
 (धा०) यही रात, दीर्घ रजनी, कृष्ण की राति,  
 कृष्ण की राति ।  
 पहाड़ा दे० (पु०) जाड़नी, गुणन, सङ्कलन ।  
 पहाड़िया दे० (पु०) पर्वतवासी, पहाड़ का रहने  
 वाला, पर्वती ।  
 पहाड़ी दे० (स्त्री०) छोटा पहाड़, टीला, टुकरी ।  
 पटाड़ पर रहने वाला ।  
 पहिनना दे० (क्रि०) पहनना, परिधान करना, धारण  
 करना ।  
 पहिया दे० (पु०) चक्र, रथचक्र, गाड़ी का पहिया,  
 पहिया ।  
 पहिरना दे० (क्रि०) पहनना, परिधान करना ।  
 पहिरावन दे० (पु०) वस्त्र, वसन, पहरावनी ।  
 पहिला दे० (पु०) प्राथमिक, प्रारम्भिक, पहले का,  
 आगे का, अग्रता ।  
 पहिले दे० (पु०) आगे, प्रथम, आदि ।

हिलौठा दे० (पु०) प्रथम पुत्र, ज्येष्ठ पुत्र ।  
 हुँक दे० (खी०) धाना, चागमन, शक्ति, सामर्थ्य,  
 पैवार, प्रवेश, पैठ, प्राप्ति सूचक पत्र, रसीद ।  
 हुँकना दे० (कि०) प्राप्त होना, पहुँच जाना, चला  
 जाना, बढ़ जाना, भ्रमना, पास आना ।  
 हुँका दे० (पु०) मणिग्रन्थ, कलाई, पहुँचा ।  
 हुँकाना दे० (कि०) प्राप्त कराना, भिजाना, भ्रमना ।  
 हुँकी दे० (खी०) कड़ुण, कड़ु, चाभूषण विशेष ।  
 हुँकना दे० (कि०) सेटना, सेना, शयन करना,  
 पैड़ना ।  
 हुँकाना दे० (कि०) सेटाना, सुलाना, शयन कराना,  
 पैड़ाना ।  
 हुँकाने दे० (खी०) मेहमानों, आदर, सम्मान,  
 आतिथ्य ।  
 हुँकाने दे० (पु०) उष्ण, कुसुम, फूल ।  
 हुँकाली दे० (खी०) प्रहेलिका, दृढकृत, कहानी, गूढ़  
 प्रश्न, यह काष्ठ का एक गुण है । इसमें एक  
 चामान्त्र्य धर्म प्रकाशित किया जाता है, परन्तु इसकी  
 धर्म लिखा रहता है, इस प्रकार जहाँ एक वाक्य से  
 दो धर्म प्रकाशित किये जाते हैं उसे प्रहेलिका या  
 हुँकाली कहते हैं ।  
 पा दे० (पु०) पाँच, पैर, पद, चरण ।  
 पाई दे० (खी०) पैसा, पैसे का तीसरा भाग, एक  
 प्रकार की पतली छड़ी जिस पर धाना लपेटा  
 जाता है ।  
 पाँक दे० (पु०) कीचड़, पड़, कड़ुम, दसदस ।  
 पाँगा दे० (पु०) एक प्रकार का धुन, जो धनाया जाता  
 है ।  
 पाँच दे० (पु०) पञ्च, संख्या विशेष, ५ ।—सात  
 (वा०) अंकट, उलभन, श्याकुन्ता, उद्भिप्रता,  
 उद्भेग ।  
 पाँचवाँ दे० (पु०) पञ्चम, पाँच को पूर्य करने वाली  
 संख्या ।  
 पाँजर दे० (पु०) पसली, पाँख, पञ्जर, पाँजर की  
 दही ।  
 पाँडे दे० (पु०) पाठक, अध्यापक, ब्राह्मण, ब्राह्मणों  
 की एक उपाधि, पड़ाने वाला, पाँडेय ।

पाँत, पाँती दे० (खी०) छोनी, कतार, पंक्ति,  
 श्रवण ।  
 पाँतर दे० (पु०) उजाड़, निरान स्थान, प्रान्तर,  
 घोरान ।  
 पाँपती दे० (खी०) पैताना, पैर की थोर, पैर की  
 थोर का थिथोना ।  
 पाँप दे० (पु०) पैर, चरण, पद, गोड़ ।—उठाना  
 (वा०) शीघ्र शीघ्र चलना, वेग से चलना ।  
 —उतरना (वा०) पाँप का दूट जाना, पाँप का  
 झूलना ।—कौपना (वा०) बचना, किसी काम को  
 करने भय भावम होना ।—किसी का उमाड़ना  
 (वा०) किसी स्थान पर ठहरने नहीं देना, —किसी  
 को जमने नहीं देना ।—किसी के गले में  
 डालना (वा०) तर्क के द्वारा उसीकी बातों से उसे  
 दोषो ठहराना ।—चल जाना (वा०) बगमगना,  
 अस्थिर होना ।—जमाना (वा०) दूढ़ होना,  
 दृढ़ता पूर्वक ठहरना ।—जमीन पर न ठहरना  
 (वा०) शयन प्रसन्न होना, अतिशय हर्ष से झूल  
 जाना, अभिमान करना, चहकुर करना ।—डालना  
 (वा०) किसी काम को प्रारम्भ करना, किसी बात  
 को करने के लिये उद्यत होना ।—डिगना (वा०)  
 किसलना, सपटना, किसी काम से निराश होना ।  
 —तले मलना (वा०) पीड़ा देना, दुःख देना,  
 पीड़ित करना ।—तोड़ना (वा०) किसी के काम  
 में बाधा डालना, किसी को हानि पहुँचाना,  
 चालस में घेरे रहना, अधिक चलना ।—धो  
 धो पीना (वा०) अधिक आदर करना, बख्श  
 भक्ति करना, अनुनय करना, शिरा होना ।  
 —निफालना (वा०) मर्यादा होना, जून रीति  
 को डीक जाना ।—पकड़ना (वा०) बल से  
 माना, शिरा करना, बिकली करना ।—पट  
 पाँप रखना (वा०) अनुशय करना, हुकूमत  
 चाल पर चलना, रुद्धवाना, बँकट करना ।  
 —पाँप (वा०) पैदल ।—पैदल  
 होना, चढ़ना जाना, पैदल  
 निरुक्त उद्योग करना ।  
 करना, चलना रहना, पैदल

रखना (वा०) सावधान होना सावधानी से चलना  
विचार पूर्वक किसी काम को करना ।—फैलाकर  
सोना (वा०) निश्चिन्त रहना, बिना चिन्ता के  
रहना, निडर रहना, निर्भय रहना ।—फैलाना  
(वा०) अपना अधिकार बढाना, बैठ करना, पसार  
करना ।—भर जाना (वा०) एक जाना, भ्रान्त  
होना ।—रगड़ना (वा०) निष्कल काम करना,  
निरर्थक उद्योग करना । थोक करना, दुष्प्रकाय  
करना ।—लगना (वा०) प्रणाम करना, नमस्कार  
करना ।—से पाव बाँधना (वा०) सर्वदा किसी  
के पीछे लगा रहना, रक्षा करना, एक लक्ष्य के लिये  
भी नहीं छोड़ना ।—से पाँव भिड़ाना (वा०)  
धराधरी करना, तुल्यता करना ।—सोना (वा०)  
पाँव झुन्य होना, पाँव में क्लिन्निकिते उठाना ।  
—द्वेये जाना (वा०) धीरे धीरे जाना, यज्ञ  
शयने जाना ।

पौषडा दे० (प्र०) टाट या नारियल की जटा की  
बनी घंटाई का टुकड़ा जो पैर पोखने के लिये  
छोटी पर बिछाया जाता है, पाँपिश ।

पौषव तत्० (प्र०) पौष, निमक ।

पौशु तत्० (प्र०) पूलि, रेणु, रेणुका, स्त्री का मासिक  
धर्म ।

पौशुका तत्० (स्त्री०) पूलि, रज. रेणु, रजस्वला स्त्री ।

पौशुल तत्० (प्र०) पूलि पुक्त, पूलि पूसरित,  
पूलि विधिष्ट । (प्र०) शिव, महादेव, खाकी  
बाया ।

पौशुला तत्० (स्त्री०) धद पुरिचा की, कुलटा,  
वेश्या ।

पौस दे० (प्र०) खाद, मार, धूप ।

पौसना दे० (स्त्री०) खाद देना, खाद महाना ।

पौसु दे० (प्र०) पसली, पाँजर की हड्डी ।

पाई दे० (स्त्री०) चर्खे का काँटा, चर्खे की सुई ।

पाक तत्० (प्र०) [प्रच + षञ्] पचन, पकाना,  
रींघना, रींजना, पुटपाक आदि, चाहुँक्य के कारण  
क्रियों की सुकृता, उलूक, पेशक, भङ्गभ्रीति, एक  
दैन्य का नाम ।—कर्ता (प्र०) पाचक, सुपकार,  
—रक्षककारी, रखाई बनाने वाला ।—गृह (प्र०)

रन्धनालय, रखाई घर ।—पात्र (प्र०) कल,  
हाँदी ।—पुटी (स्त्री०) खाली, कृपा, धान  
भट्टी, पजाया ।—यज्ञ (प्र०) वृक्षोत्सव, गृह प्रसा  
आदि के लिये दहन ।—शास्ता (स्त्री०) रन्धनगृह,  
पाकस्थान, रखाईघर ।—शासन (प्र०) पत्र,  
देवराज ।—स्थाली (स्त्री०) हाँदी, कढ़ाई, का  
पात्र विशेष ।

पाकड़ दे० (प्र०) वृक्ष विशेष, पकड़ी वृक्ष ।

पाकना दे० (स्त्री०) उबलना, सीकना ।

पाकरी दे० (स्त्री०) पाकदिया वृक्ष ।

पाकसडसी दे० (स्त्री०) गहवा, सडसी ।

पाकु क दे० (प्र०) पाचक, पाककर्ता ।

पाक्या दे० (प्र०) सज्जीकार ।

पाक्षिक तत्० (प्र०) सहायक, सहायदाता, यह में  
उत्पन्न होने वाला, यह में प्रकाय होने वाला ।

पाख दे० (प्र०) पद, पन्दरह दिन, भीति, दीवार ।

पाखण्ड तत्० (प्र०) दम्भ, कपट, धूर्तता, झूठ,  
नास्तिकता, लोक में पूजा पाने के लिये दोग रचना,  
दाम्भिक, कपटी, धूर्त, झूठी, नास्तिक, लाल  
में पूजा लेने के लिये दोग रचने वाला ।

पाखर दे० (प्र०) घोडा और हाथी की झूल, जो  
सोहे के तारों की बनती है ।

पाखा दे० (प्र०) उचारण, वृषारण ।

पाग दे० (स्त्री०) पगड़ी, पगिया ।

पागना दे० (स्त्री०) रस में पकाना, रस सड़ाना ।

पागल दे० (प्र०) उन्मत्त, विक्रिप्त, सिद्धि ।

पागा दे० (प्र०) घोड़े का घुड़ ।

पागुर दे० (स्त्री०) बवाई, उगाल, जुगाल, रोमन्ध,  
सबाए हुए को पुनः चबाना ।

पागुराना दे० (स्त्री०) जुगाली करना, जुगालना,  
चबाना, रोमन्ध करना ।

पाचक तत्० (प्र०) सुपकार, रन्धनकर्ता, पाककर्ता,  
रखाईयादार ।—ता (स्त्री०) रखाई बनाना, रींघने  
का काम, रखाई बनाने का गुण ।

पाचिका तत्० (स्त्री०) पाककर्त्री, रखाई बनाने  
वाली स्त्री ।

प्राचीर तत्० (प्र०) दीवार, भीत, आदमीवारी ।

पाण्डु दे० (पुं०) टोका, गोटी, एक-तीक्ष्ण चक्षुःके  
 शरीर का दुग्ध रुधिर निकलवाना ।  
 पाण्डुना दे० (क्रि०) टोका लगाना, गोटी खोदना,  
 पाण्डु मारना ।  
 पाण्डु दे० (शु०) चन्दनर, पीछे ।  
 पाण्डो दे० (पुं०) अधम, दुष्ट, दुराचारी, दुर्विनीत ।  
 पाण्डुजन्य तत्त्वं (पुं०) नारायण के शङ्ख का नाम  
 से पाण्डुजन नामक राक्षस की दम्पि से  
 बना था ।  
 पाण्डुवर्गीयक तत्त्वं (पुं०) पाण्डुद्वारा निर्मित,  
 पाण्डुजनमय, पाण्डुवर्गीय का विचार ।  
 पाण्डुचाल तत्त्वं (पुं०) देश विशेष, पञ्चाङ्गु देश,  
 पञ्जाब, द्रुपद राजा का देश ।  
 पाण्डुवाही तत्त्वं (शु०) पाण्डुल देशोद्भूतना राम-  
 कल्या, पाण्डुवपत्री, पाण्डुसेनी, द्रौपदी ।  
 पाण्डु दे० (पुं०) पट्टना, एक प्रकार का धन, पैसा, दंड,  
 नदी का पाठ ।  
 पाण्डुकुम्भ तत्त्वं (पुं०) रेशम का कीड़ा ।  
 पाण्डु दे० (पुं०) क्षाता, क्षत पटवाना, छौंद क्षाता ।  
 पाण्डुना दे० (क्रि०) क्षानना, क्षत बनवाना, पूर्ण  
 करना, भरना, भर देना ।  
 पाण्डुमहिषी तत्त्वं (शु०) पट्ट महिषी, प्रधान रानी,  
 महारानी ।  
 पाण्डुम्बर तत्त्वं (पुं०) रेशमी कपड़े, पट्टा-  
 म्बर ।  
 पाण्डुरानी तत्त्वं (शु०) पट्टराणी, पट्टरानी, महा-  
 रानी, प्रधान रानी ।  
 पाण्डु तत्त्वं (पुं०) पाण्डु पुंस्य, गुलाब का फूल,  
 नामान्य सासं रंग, गुलाबी रङ्ग । (पुं०) श्वेत और  
 लाल रङ्ग का मिश्रण ।  
 पाण्डु तत्त्वं (शु०) दुर्गा, चार्दगी, भोगवती, पुष्प  
 वृक्ष विशेष, सास रोध ।  
 पाण्डुपुत्र तत्त्वं (पुं०) पटना नगर, बिहार प्रदेश  
 का प्रधान नगर, प्रसिद्ध महाराज शशोक की  
 राजधानी यहीं थी ।  
 पाण्डु तत्त्वं (पुं०) पट्टना, विजया, नैपुण्य, भारोगम,  
 स्वास्थ्य, सुखता ।

पाण्डु दे० (पुं०) पट्टना, पट्टा, पोसी का तपन जिस  
 पर धे रूपसे पोते हैं, पीछा, पीठ ।  
 पाण्डु दे० (शु०) छाट की पट्टिया, पट्टरी जिस पर  
 लड़के लिखते हैं, बालकों के लिखने की पट्टी,  
 चटाई, सीतलपाटी ।  
 पाण्डुर तत्त्वं (पुं०) चन्दन, मलय, द्रुम ।  
 पाण्डु तत्त्वं (पुं०) अध्ययन, पठन, विद्याभ्यास ।  
 —कर्म (पुं०) क्रम से अध्ययन, पढ़ने की रीति,  
 अध्ययन का क्रम ।—शास्त्र (शु०) अध्ययन-पुष्ट,  
 विद्यालय ।  
 पाण्डु तत्त्वं (पुं०) उपाध्याय, अध्यापक, पढ़ाने  
 वाला, गुरु ।  
 पाण्डु तत्त्वं (पुं०) पढ़ाना, अध्ययन-कराना, अभ्यास  
 कराना, विद्या पढ़ाना ।  
 पाण्डु दे० (पुं०) जवान, दृढ़ पुष्ट, मज्ज, पोष्टा, पक्ष-  
 चान ।  
 पाण्डु दे० (पुं०) युवा बकरी, छागी ।  
 पाण्डु तत्त्वं (पुं०) मत्स्य विशेष, मछली का एक  
 भेद ।  
 पाण्डु तत्त्वं (पुं०) पाण्डोपयुक्त, पढ़ने के योग्य ।  
 पाण्डु दे० (पुं०) नरगज, डींग, मज्ज, मवान ।  
 पाण्डुना दे० (क्रि०) गिराना, पछाड़ना, पटकना,  
 कागल बनाना ।  
 पाण्डु दे० (पुं०) अँव का बंधन ।  
 पाण्डु दे० (पुं०) मृग-विशेष ।  
 पाण्डु दे० (शु०) नदी पार होना ।  
 पाण्डु दे० (शु०) पीना, पला; कपड़े की माँड़ी,  
 ताँतल ।  
 पाण्डु तत्त्वं (पुं०) हाथ, हस्त, कर ।—प्रदण्य (पुं०)  
 ब्याह, विवाह, परिणय ।—तल (पुं०) क्षातन,  
 हस्ततल ।  
 पाण्डु तत्त्वं (पुं०) हाथ के द्वारा बनाया जाने वाला  
 मृदङ्ग आदि वाद्य, पाणिवाद्य, हाथ से बनाये जाने  
 वाला वाद्य ।  
 पाण्डु तत्त्वं (पुं०) मुनि विशेष, इन्होंने संस्कृत  
 का व्याकरण बनाया, या इनके पिता का नाम

देवस्य ओर माता का नाम दाक्षीया । माता के नामानुसार इनको भी दाक्षी पुत्र या दाक्षेय कहते हैं । गान्धार देश के अन्तर्गत शलातुर नामक स्थान में इनका जन्म हुआ था इस कारण वे शाला-पुत्रेय भी कहे जाते हैं । शब्दशास्त्र का ज्ञान प्राप्त करने के लिये पाणिनि शिव की आराधना करने लगे, महेश्वर प्रसन्न हुए, और उनकी इष्टसिद्धि के लिये उन्होंने वर दिये । महेश्वर के प्रसाद से पाणिनि ने एक व्याकरण बनाया जिसका नाम अष्टाध्यायी या पाणिनिदर्शन है । यह आठ अध्यायों में विभक्त है । इस कारण इसे अष्टाध्यायी कहते हैं । सोमदेव रचित कथासरित्सागर के अनुसार वरदक्षि ओर कात्यायन के ये 'समकालीन थे । परन्तु यह बात प्रामाणिक नहीं मानी जा सकती । क्योंकि यास्क रचित निरुक्त पठने वाले इस बात को कभी नहीं मान सकते । क्योंकि निरुक्तकार ने अनेक स्थानों में सादर पाणिनि का नाम लिया है । यास्क मुनि बहुत ही प्राचीन हैं, और पाणिनि उनसे भी प्राचीन हैं । व्याकरण के अतिरिक्त एक काव्य भी पाणिनि का बनाया हुआ है ; जिसका नाम 'जाम्बवतीजय है । कतिपय विद्वाद् व्याकरण-कर्ता और काव्य-कर्ता को भिन्न भिन्न पाणिनि मानते हैं । परन्तु सेनेन्द्र के इस श्लोक से वे अपनी भ्रान्ति समझ सकते हैं ।

“नमः पाणिनये तस्मै यस्य रुद्रप्रसादतः । १७

आदौ व्याकरण काठयमनुजानाम्बवतीजयम् ॥”

उस पाणिनि को नमस्कार, जिसने रुद्र प्रसाद से पहले व्याकरण और तदन्तर जाम्बवतीजय काव्य बनाया ।

पाणिनीय तत्त्वं (५०) पाणिनि मुनि निर्मित ग्रन्थ ।

पाणिपाद् तत्त्वं (५०) हाथ पैर, कंठ चरण, हाथ और पाँव ।

पाणिपीडन तत्त्वं (५०) पाणिग्रहण, बियाह ।

पाण्डुर तत्त्वं (५०) कुन्द पुरुष, नैतिक धारु विशेष, (५०) खेत वर्ष शुक्र ।

पाण्डेय तत्त्वं (५०) पाण्डुनन्दन, पाण्डुपुत्र, पाण्डु राजा के पुत्र, पशुपाण्डेय ।

पाण्डित्य तत्त्वं (५०) पण्डित का धर्म और ज्ञान, नैपुण्य, दक्षता, विद्या, पण्डितार्थ, विद्वान् ।

पाण्डु तत्त्वं (५०) शुकु और पीत मिश्रित वर्ण, पीत मिश्रित वर्ण, कुण्डलीय एक राजा का नाम, विचित्रवीर्य का चतुर्न पुत्र, महर्षि कृष्णद्वैपायन व्यास के श्रोतस और विचित्रवीर्य की विष्णु पत्नी अम्बालिका के गर्भ से उत्पन्न । इनकी ईश्वरिणी श्री । कुन्ती और माद्री । भोजकन्या कुन्ती ने पाण्डु को स्वयन्वय में वरण किया था । इसके अनन्तर भीष्मप्रियतामह ने मद्र देश के राजा की पुत्री माद्री को पाण्डु से वयाह दिया । भीष्मप्रियतामह ही चतुराद्र पाण्डु और विदुर के एक थे, युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन कुन्ती के गर्भ से उत्पन्न हुए थे । माद्री के गर्भ से नकुल और सहदेव उत्पन्न हुए थे । पाण्डु के चतुर्न पुत्र पाण्डेय कहे जाते हैं । पाण्डु ने यान्तु को मृग कीर्ति का उद्धार किया था, अनेक राजाओं को जीत कर उन्होंने अधिक धन एकत्रित किया था, और उसी धन से पाँच यज्ञ किये थे । यह करने के अनन्तर पाण्डु अपनी पत्नियों के साथ वन में गये । वहाँ उन्होंने काममेहित एक युग का वध किया, उसने शाप दिया कि तुम, छोड़ करके ही मर जाओगे । मरने के भय से पाण्डु ने खीरहल करना ही छोड़ दिया । दुर्वास ने कुन्ती को जिस मन्त्र का उपदेश दिया था, उसीसे कुन्ती ने शेष का आह्वान करके तीन पुत्र उत्पन्न किये । पाण्डु के अनुरोध से कुन्ती ने उस मन्त्र का उपदेश माद्री को भी दिया, माद्री ने भी अपने दो पुत्र उत्पन्न किये । एक दिन पाण्डु ने कामार्ता हो कर माद्री का सङ्ग किया, जिससे उनकी मृत्यु हुई, पाण्डु का मृत शरीर हस्तिनापुर लाया गया, या और उसका अन्तिम संस्कार विदुर ने किया ।

पाण्डुर तत्त्वं (५०) शुकु पीत मिश्रित वर्ण ।

पाण्डुरा तत्त्वं (स्त्री) मसुराक्ष, मता विशेष, शुकु पीत वर्ण वाली स्त्री, मायवर्णीयता ।

पाण्डेय तत्त्वं (५०) माद्री की एक जाति विशेष, अध्यापक, पाठक ।

तत् तत् (५०) [तत् + त्] पान, गिरना पड़ना ।  
 (२०) पुस्तक के पत्र, वृष आदि के पत्ते, कर्ण-  
 बूबज, एक प्रकार का कान का गड़ना ।  
 तत्क तत् (५०) नरक साधन, पाप, ब्रह्म,  
 क्लिष्टव, क्लृप्त, चमूत, चपराध, दोष ।  
 तत्की तत् (५०) पापी, दोषी, चपराधी ।  
 तत्कृत तत् (५०) शास्त्र विशेष, योग यात्र, पत-  
 न्कृति निर्मित योग ध्यान ।  
 तत्तर दे० (क्रो०) वैश्या, पशुव्या, गणिका, (५०)  
 पाप्मा, दुर्जन, निर्दल ।  
 तत्ता तत् (५०) रक्षिता, भाग कर्ता, रक्षक, रक्ष  
 कर्ता, (२०) पत्र, पत्ता, पत्ती ।  
 तत्ताल तत् (५०) तन्म में चौथा स्थान, स्थानम  
 प्रतिष्ठु मया, रमात्मक, नानालोक, अधोमुखत, नरक,  
 विषय, ब्रह्मयान्त, एक पन्त विशेष जिससे दोषविधि  
 बनती है । तत्ताल के मात भेद हैं, यथा—घात,  
 वित्त, सतन, तलातन, महोतन, नित्त, रमा-  
 त्त ।  
 तत्तित्य तत् (५०) पातक, पाप, दुराचार, दुष्कृत,  
 भाति घट्टे होने का कारण ।  
 तत्तित्य तत् (५०) पतिव्रता का धर्म, साध्वी  
 धर्म, सतीव्य, पतिव्रता का गणन ।  
 तत्ती दे० (क्रो०) विद्वी, पत्री, पत्र, पत्ता, पत्ती ।  
 तत्त तत् (५०) जिसके द्वारा जल आदि पिया  
 जाय, आहार, भाजन, भाष्य, योग्य, उचित,  
 राजमन्त्री, सचिव, दो तीर का चन्तर, वण, पत्र,  
 पत्ता, नाटक खेचने वाला, नट, अनुकरणकारी,  
 वर जिसको कन्या दी जाय । विद्या आदि गुणों  
 में युक्त, योग्य, दानीय व्यक्ति, पारलौकिक  
 कल्याण के लिये जिसको दान दिया जाय ।  
 तत्त तत् (५०) जल, पानी, पानीय, ताय ।  
 तत्तना दे० (क्रि०) घोपनी, कपड़े बनाना,  
 उपती बनाना ।  
 तत्तत दे० (५०) पत्थर, प्रस्तर, वास्तान, पाषाण,  
 धिया ।  
 तत्तय तत् (५०) पप में ४५म करने की सामग्री

पयिकों के पूर्ण करने का इश्य, रास्ते का खर्च,  
 रास्ते में करने का भोजन ।  
 पाथोज तत् (५०) कमल, पद्म, पुष्परीक ।  
 पाथोद तत् (५०) मेघ, घन, शारिद, पादर,  
 बादल, समुद्र ।  
 पाथोधि तत् (५०) [पाथस् + धि + ति], समुद्र,  
 मागर, जलधि, तायनिधि ।  
 पाथोनिधि तत् (५०) [पाथस् + नि + धि + ति]  
 समुद्र, मागर, पाथोधि ।  
 पाद तत् (५०) [पद + त्] चरण, पैर, पाँव,  
 चापेदीय मन्त्रों का चतुर्थांश, श्लोक का  
 चतुर्थांश, चतुर्थ भाग, चौथा भाग, बड़े  
 धर्म के समीप का छोटा पर्यंत ।—फटक (५०)  
 विदुआ ।—फुल्ल (५०) अत विशेष, प्रायश्चित्त  
 विशेष ।—प्रहण (५०) पादस्पर्श पूर्वक प्रणाम,  
 अभिवादन ।—चारी (५०) प्यादा, पदाति । (५०)  
 पैदल चलने वाला, पैर से चलने वाला ।—ज  
 (५०) चत्र चर्च, गूढ़ जाति ।—घ्राण (५०)  
 जूता, खड़ाक, पद रक्षक, पैर के भोजे ।—दारी  
 (स्त्री०) पादस्फोट, विशारद, शीत से पैर का  
 फटना ।—पु (५०) वृक्ष, द्रुम, तह, छल, पेड़ ।  
 —पद्म (५०) पद्म मध्य चर्च, चरण कमल ।  
 —पीठ (५०) पाद स्थापनाय बाधन, पदासन, पैर  
 रखने का पीड़ा ।—प्रज्ञान (५०) पैर धोना,  
 पाँव धोना ।—प्रहार (५०) पदाघात, लात  
 मारना ।—संवाहन (५०) पैर दबाना, पदचर्च  
 करना ।  
 पादना दे० (क्रि०) पाद मारना, अधोवायु त्याग  
 करना ।  
 पादनाम दे० (५०) काला निमक ।  
 पादाध्य तत् (५०) शक्ति के पैर धोने का जल ।  
 पादापण तत् (५०) प्रवेष्ट करना, पैर देना ।  
 पादुका तत् (क्रि०) खड़ाक, जूता, पतही, पग-  
 रणी ।  
 पादादक तत् (५०) पाँव धोवन, देवता या गुरु के  
 पैर का चौथा जल, चरणामृत, पाद, पाँव धोने के  
 लिये जल ।

देवत और माता का नाम दाही या माता के नामानुसार इनको भी दाही पुत्र या दाहिय कहते हैं। गान्धार देश के अन्तर्गत शलातुर नामक स्थान में इनका जन्म हुआ था इस कारण ये शाला-सुरोय भी कहे जाते हैं। शब्दशास्त्र का ज्ञान प्राप्त करने के लिये पाणिनि शिव की आराधना करने लगे, महेश्वर प्रसन्न हुए, और उनकी इष्टसिद्धि के लिये उन्होंने वर दिये। महेश्वर के प्रसाद से पाणिनि ने एक व्याकरण बनाया जिसका नाम अष्टाध्यायी या पाणिनिदर्शन है। यह आठ अध्यायों में विभक्त है। इस कारण इसे अष्टाध्यायी कहते हैं। सोमदेव रचित 'क्यासरत्नाकर' के अनुसार बरहृचि और कात्यायन के ये समकालीन थे। परन्तु यह बात प्रामाणिक नहीं मानी जा सकती। क्योंकि यास्क रचित निष्कण पढ़ने वाले इस बात को कभी नहीं मान सकते। क्योंकि निष्कणकार ने अनेक स्थानों में सादर पाणिनि का नाम लिया है। यास्क मुनि बहुत ही प्राचीन हैं, और पाणिनि उनसे भी प्राचीन हैं। व्याकरण के अतिरिक्त एक काव्य भी पाणिनि का बनाया हुआ है; जिसका नाम जाम्बवतीजय है। कतिपय विद्वाह व्याकरण-कर्ता और काव्य-कर्ता को भिन्न भिन्न पाणिनि मानते हैं। परन्तु वेमेन्द्र के इस श्लोक से वे अपनी भ्रान्ति समझ सकते हैं।

“नमः पाणिनये तस्मै यस्य रुद्रप्रसादात्  
 आदौ व्याकरणं काव्यमनुजाम्बवतीजयम्”  
 उस पाणिनि को नमस्कार, जिसने रुद्र प्रसाद से पहले व्याकरण और तदनुजाम्बवतीजय काव्य बनाया।

- पाणिनीय तत्० (१०) पाणिनि मुनि निर्मित ग्रन्थ।
- पाणिपोद तत्० (१०) हाथ पैर, कर चरण, हाथ और पैर।
- पाणिपीडनं तत्० (१०) पाणिग्रहण, विवाह
- पाण्डर तत्० (१०) कुन्द वृक्ष, गैरिक धातु विशेष, (१०) स्वत वर्य युक्त।
- पाण्डव तत्० (१०) पाण्डुतन्दन, पाण्डुपुत्र, पाण्डु राजा के पुत्र, पशुपतिदेव।

- पाण्डित्य तत्० (१०) पखित का धर्म और नैपुण्य, दक्षता, विद्या, परिहाराद, विद्वान्।
- पाण्डु तत्० (१०) शुक्र और पीत मिश्रित वर्ण, पीत मिश्रित वर्ण, कुवशीय एक राजा का विचित्रवीर्य का उत्तर पुत्र, महर्षि कृष्णदेव का व्यास के श्रोत और विचित्रवीर्य का पिता पत्नी अम्बालिका के गर्भ से उत्पन्न। इनकी स्त्रियाँ भी। कुन्ती और माद्री। भोजकन्या कुन्ती पाण्डु को स्वयम्बर में वरण किया था। अतन्तर भीष्मपितामह ने मद्र देव के राजा पुत्री माद्री को पाण्डु से ववाह दिया। भीष्मपितामह ही वृत्रासुर पाण्डु और विदुर के रक्षक, सुधृष्टिर, भीम और अर्जुन कुन्ती के नाम से उत्पन्न हुए थे। माद्री के गर्भ से नकुल और सहदेव उत्पन्न हुए थे। पाण्डु को उत्तर पाण्डव कहे जाते हैं। पाण्डु ने शालतुर की लक्ष्मी का उद्धार किया था, अनेक राजाओं को जीत कर उन्होंने अधिक धन एकत्रित किया और उसी धन से पाँच पत्र किये थे। पत्र करने के अनन्तर पाण्डु अपनी पत्नियों के साथ वन में गये वहाँ उन्होंने काममेहित एक मृग का वध किया उसने शाय दिया कि तुम को सङ्ग करते ही मर जायेंगे। मरने के भय से पाण्डु ने लोभङ्ग कर ही होइ दिया। दुर्वास ने कुन्ती को जिस मृग का उपदेश दिया था, उसीसे कुन्ती ने देवी का आह्वान करके तीन पुत्र उत्पन्न किये। पाण्डु अनुरोध से कुन्ती ने उस मन्त्र का उपदेश सा को भी दिया, माद्री ने भी अपने दो पुत्र उत्पन्न किये। एक दिन पाण्डु ने कामार्त ही कर मृग का वध किया, जिससे उनकी मृत्यु हुई, पाण्डु मृत शरीर, हस्तिनापुर साम्राज्य या और का अन्तिम संस्कार विदुर ने किया।
- पाण्डुर तत्० (१०) शुक्र पीत मिश्रित वर्ण।
- पाण्डुरा तत्० (स्त्री०) मसुराक, लता विशेष, पीत वर्ण वाली स्त्री, मायपण्यलता।
- पाण्डेय तत्० (१०) ब्राह्मणों की एक जाति विशेष अध्यापक, पाठक।

यक दे० ( पु० ) विषादा, वैदल, यदाति, सेचक,  
यथा—“हनुमान से पायक है जिन केरे ।”

—गुजरीदास ।

पायक दे० ( पु० ) महु, मवान, महु, मांच ।

पायकामा दे० ( पु० ) वज्राब्जादन विशेष, एक प्रकार  
का कपड़ा जो पैर में पहना जाता है, स्थानाम  
प्रसिद्ध यत्न ।

पायकी दे० ( श्री० ) पैर की ओर की छाट, पैताना,  
पदतल, छाट का वह भाग जिधर पैर रहता है ।

पायल दे० ( श्री० ) पैर का भूषण, पैरी, पायजोब ।  
( पु० ) सुवाल, सुन्दर गति, चल की गीड़ी ।

पायस तह० ( पु० ) दुग्ध आदि के द्वारा बनाया अन्न,  
पदमात्र, तपमई, जाउर, खीर ।

पाया दे० ( पु० ) गार आदि के पार, ईटा या पत्थर  
के बने धम्मे ।

पायिक दे० ( पु० ) दूत, विषादा, यदातिक, हटकारा ।

पाया तह० ( पु० ) पान-कर्ता, पीने वाला, पान करने  
वाला ।

पार तह० ( पु० ) पार, तीर, दूसरा तट, नदी नांच  
कर जिन स्थान पर जाया जाय । समाप्ति, शेय,  
पूर्यता, प्रान्त, महान, तरण, उदुरण, मोचन ।  
—क तह० ( पु० ) समर्थ, कर्म समाप्ति-कर्ता, पारण,  
वृत्तिकारक, पालक, प्रीतिकारक, उपयामकारी ।

—करना दे० ( दा० ) पार जाना, पार उतरना,  
लाचना, किसी काम को पूरा करना, निषाहना,  
पूर्य करना ।

पारख दे० ( पु० ) परखने वाला, परीक्षक, जाँचने  
वाला, परखिया ।

पारखी दे० ( पु० ) पारख, परखिया ।

पारग तह० ( पु० ) [ पार + ग + ड ] समर्थ, पार-  
गामी, निपुण, कर्मदत्व, नदी समुद्र आदि के पार  
उतरने वाला ।

पारण तह० ( पु० ) व्रत के दूसरे दिन का भोजन उप-  
वास के दूसरे दिन का विहित भोजन ।

पारतन्त्र्य तह० ( पु० ) परतन्त्रता, परधीनता,  
अस्वाधीनता, पारवश्य ।

पारत्रिक तह० ( पु० ) परलोक सम्बन्धी, पारलौ-  
किक, परलोक का विषय ।

पारद तह० धातु विशेष, पारा, रस धातु, म्लेच्छ  
जाति विशेष ।

पारदर्शी तह० ( पु० ) पारगामी, निपुण, दृढ,  
निष्ठात, यत्नित ।

पारदारिक तह० ( पु० ) कामुक, परखी रत, दूसरी  
खी पर घासक ।

पारन तह० ( पु० ) पारण, उपवास के दूसरे दिन का  
भोजन ।

पारना दे० ( पु० ) पारण करना, पूर्ण करना, पूर्ति  
करना ।

पारमार्थिक तह० ( पु० ) परमार्थ सम्बन्धी, परकाम  
विषयक, पारलौकिक, मोक्षदायक, सुख, प्रधान ।

पारम्पर्य तह० ( पु० ) परम्परागत, कुलक्रम, अनु-  
क्रम, परम्परा से आया, कुल रीति, कुल परम्परा ।

पारल दे० ( पु० ) पौधा विशेष ।

पारलौकिक तह० ( पु० ) परलोक सम्बन्धी, परलोक  
के उपयोगी, परलोक का विषय ।

पारशय तह० ( पु० ) युद्ध के गभे और ब्राह्मण के  
ओर से उत्पन्न सन्तान, निषाद जाति, पर श्री  
मनय, यक्ष, लोहाख ।

पारस दे० ( पु० ) स्वर्ण मणि, मणि विशेष, जिसके  
स्पर्श से लोहा सेना हो जाता है । देश विशेष,  
ईरान, फारस देश ।—नाथ ( पु० ) पारशनाथ,  
जिन विशेष, तेईसवाँ जिन ।—पीपल ( पु० )  
वृक्ष विशेष ।

पारसाल दे० ( पु० ) गत या आगामी वर्ष ।

पारसी तह० ( श्री० ) भाषा विशेष, पारस देश की  
भाषा, ईरान की भाषा, पारसवासी ।

पारसीक तह० ( पु० ) पारस्य देशीय, पारस देश के  
वासी या वस्तु ।

पारा दे० ( पु० ) धातु विशेष, पारद, रस धातु ।

पारायण तह० ( पु० ) पुराण पाठ विशेष, निवम  
पूर्वक मन्नाह भर पठन या पाठन, सम्पूर्णता  
समाप्ति ।



पाद्य तत् (पु०) पद प्रक्षालनार्थं जल, पैर धोने के लिये पानी ।

पाधा दे० (पु०) उपाध्याय, पुरोहित, शिक्षक, गुरु ।

पांन तत् (पु०) पीना, द्रव द्रव्य जल आदि को पीट जाना, भाजन, रक्षण, (दे०) ताम्बूल, पत्ता ।

—पात्र (पु०) पियाला, जल पात्र, पानी पीने का पात्र, पनद्वया ।—श्रीरुद्र (पु०) शक्तिशय महापायी, मतवाला ।

पाना दे० (क्रि०) प्राग् होना, भिंसना, एकत्रित करना, लाभ होना । (ओ०) खिचि वंश में उत्पन्न एक राजपूत था । वे चितौर के महाराजा संग्रामसिंह के यहाँ उनके पालक पुत्र उदयसिंह की धाप थीं । इन्होंने अपने पुत्र के प्राण छोड़ कर उदयसिंह के शत्रुओं की रक्षा की थी । पाना का स्वार्थत्याग और प्रभु भक्ति संसार के इतिहास में सोने के अक्षरों से लिखा गया है । इनकी अभ्युत्थल कीर्ति संसार में छटल रहेगी ।

पानात्यर्थ तत् (पु०) [पान + अत्यर्थ] महात्यर्थ रोग, अधिक नया होने का रोग, जो प्रायः मत्त वालों को हुआ करता है ।

पानासक तत् (पु०) [पान + आसक] मद्य प्रिय, मद्य पाने में अनुक्त ।

पानाहार तत् (पु०) [पान + आहार] खाना पीना, अन्न जल ।

पानी दे० (पु०) जल, तैय, पानीय, नीर, सीधं सामर्थ्य, शक्ति, लावण्य, चमक, शोभा, बनघट की सुन्दरता ।—करना (वा०) नष्ट करना, खराब कर देना, नष्टित करना, लजप्रदाना, सहज करना, सुगम करना ।—का खुलखुला (वा०) अस्थिता नखाता, चणभंगुता, चाञ्चल्य ।—देना (वा०) तर्पण करना, पितरों को जल देना ।—न मांगना (वा०) सेवा मानना निषेध हुन्त मर जाय ।—पड़ना (वा०) मेघ बरसना, वृष्टि होना, लज्जित होना, शरमाना ।—पीपी कोसना (वा०) धरंदा घुरा मराना, अत्यन्त अशुभ सोहना ।—मरना या अधीन होना, अधीनता स्वीकार करना, फिट पड़ना, मुच्छ होना ।—में आमा लगाना (वा०)

। असम्भव काम करना । मिटे कण्ठ को फिर ऊँड़ना ।—पतला करना (वा०) पीड़ा पहुँचाना, दुख देना, दुःखित करना ।

पानी फल दे० (पु०) सिंघाड़ा, पानी में उत्पन्न वाला फल विशेष ।

पान्थ तत् (पु०) पथिक, राही, बात्री, ब्रह्मचारी ।

पाप तत् (पु०) अधर्म, दूरित, कलुष, अशुभ, पाप राध ।—खण्डन (पु०) पाप नाशक, मंत्र क्रिये

द्वारा विशेष जो पाप दूर करने के लिये किये जाते हैं ।—ग्रह (पु०) ऋतुचक्र, मङ्गल, राहु, शनि, बुध, रवि, अतिशुक्रात्क ग्रह, अशुभ ग्रह ।

—चेता (पु०) पापःत्मा, पापी ।—जनक (पु०) पापोत्पादक ।—नापित (पु०) पूरा नाशित ।

—रूपी (पु०) पाप की मूर्ति, पापात्मा, अशुभ ।

—रोग (पु०) कुट्ट रोग, चेचक ।

पापड़ दे० (पु०) झुंग या उर्द को बहुत पतली एक प्रकार की रोटी ।—बैलना (वा०) पाप बनाना, बहुत परिश्रम करना, बहुत मिश्रण का काम करना उत्पात खड़ा करना ।—कार दे० (पु०) किले की राख, किले के वृक्ष को उखाड़ कर एक प्रकार का बनाया हुआ चार ।

पापात्मा तत् (पु०) पापिष्ठ, अधर्म, अपापी, पापी ।

पापिन दे० (क्रि०) पापीयसी, पापिन की, अधर्म, चारिणी, यथा—

“मैं पापिन देखी जलो, कोयला हुई न राख ।

पापिया दे० (पु०) पापात्मा, अष्टकाकिनी, वृक्ष विशेष जिसमें फल लगते हैं । यह वृक्ष पर्यति के नाम से प्रसिद्ध है ।

पापी तत् (पु०) पापात्मा, पापिष्ठ, अपापी, दुष्कर्म, दुराचारी ।

पामर तत् (पु०) अधर्म, नीच, पापिष्ठ, दुष्ट ।

पामरी तत् (क्रि०) अधर्मा की, रेशमी वस्त्र ।

पामा तत् (क्रि०) रोग विशेष, पुण्डरी, कान्ज, कण्डू ।

पामरि तत् (पु०) गन्धक, पुण्डरी नाशक ।

यक दे० (पु०) विवादा, वैदल, यदाति, नेवक, यथा—“हनुमान से पायक हैं जिन केरे।”

—गुलसीदास ।

यङ् दे० (पु०) मनु, मवान, मनु, मांच ।

यजामा दे० (पु०) वखाच्छादन विशेष, एक प्रकार का कपड़ा जो पैर में पहना जाता है, स्वताम प्रसिद्ध यज्ञ ।

यजन्तो दे० (स्त्री०) पैर की खोर की छात्र, पैताना, यदतल, छाट का वह भाग जिधर पैर रहता है ।

यजल दे० (स्त्री०) पैर का भूषण, पैरो, पायज्वेय । (पु०) सुवाल, सुन्दर गति, चांस की गीड़ी ।

यजस तत्० (पु०) दुग्ध आदि के द्वारा बनाया अन्न, परमान्न, तवमई, जाउर, खीर ।

यापा दे० (पु०) खार खादि के पार, हँटा या पर्यार के बने ग्रन्थे ।

यायिक दे० (पु०) दूत, विवादा, यदातिक, हरकार ।

यायी तत्० (पु०) पान-कर्ता, पीने वाला, पान करने वाला ।

यार तत्० (पु०) पर, तीर, दूमरा तट, नदी सांच कर जिन स्थान पर जाया जाय । समाप्ति, शेष, पूर्णता, मान्त, लहन, तरण, उदरण, मोचन ।

—क तत्० (पु०) समर्थ, कर्म समाप्ति-कर्ता, पारण, प्रति-कारक, पाचक, प्रोत्तिकारक, तथायामकारी ।

—करना दे० (या०) पार जाना, पार उतरना, सांचना, किसी काम को पूरा करना, निर्याहना, पूर्ण करना ।

पारख दे० (पु०) परखने वाला, परीचक, जाँचने वाला, परखिया ।

पारखी दे० (पु०) पारख, परखिया ।

पारग तत्० (पु०) [पार + गस् + ड] समर्थ, पारगामी, निवृण, कर्मदक्ष, नदी समुद्र आदि के पार उतरने वाला ।

पारण तत्० (पु०) व्रत के दूसरे दिन का भोजन उपवास के दूसरे दिन का विहित भोजन ।

पारतन्त्र्य तत्० (पु०) परतन्त्रता, पराधीनता, भस्वाधीनता, पारतन्त्र्य ।

पारत्रिक तत्० (पु०) परलोक सम्बन्धी, पारलौकिक, परलोक का विषय ।

पारद् तत्० धातु विशेष, पारा, रस धातु, म्लेच्छ जाति विशेष ।

पारदर्शी तत्० (पु०) पारगामी, निवृण, दक्ष, निष्ठात, अभिन्न ।

पारदारिक तत्० (पु०) कामुक, परखी रत, दूसरी स्त्री पर आसक्त ।

पारन तद्० (पु०) पारण, उपवास के दूसरे दिन का भोजन ।

पारना दे० (पु०) पारण करना, पूर्ण करना, प्रति-करना ।

पारमार्थिक तत्० (पु०) परमार्थ सम्बन्धी, परकाल विषयक, पारलौकिक, मोक्षप्रापक, सुख, प्रधान ।

पारम्यर्ष तत्० (पु०) परम्परागत, कुणक्रम, अनुक्रम, परम्परा से आया, कुले रीति, कुल परम्परा ।

पारल दे० (पु०) पीधा विशेष ।

पारलौकिक तत्० (पु०) परलोक सम्बन्धी, परलोक के उपयोगी, परलोक का विषय ।

पारशय तत्० (पु०) युद्ध के गभ शौर आक्षेप के शौर से उत्पन्न सन्तान, निषाद जाति, पर शी तनय, शत्रु, लोहाख ।

पारस दे० (पु०) स्वर्ण मणि, मणि विशेष, जिसके स्वर्ण से लोहा सेना हो जाता है । देश विशेष, ईरान, फारस देश ।—नाथ (पु०) पार्वनाथ, जिन विशेष, तेईसवाँ जिन ।—पीपल (पु०) वृक्ष विशेष ।

पारसाल दे० (पु०) गत या आगामी वर्ष ।

पारसी तत्० (स्त्री०) भाषा विशेष, पारस देश की भाषा, ईरान की भाषा, चाणवासी ।

पारसीक तत्० (पु०) पारस्य देशीय, पारस देश के वासी या वस्तु ।

पारा दे० (पु०) धातु विशेष, पारद, रस धातु ।

पारायण तत्० (पु०) पुराण पाठ विशेष, नियम पूर्वक-समाह मर पठन या पाठन, सम्पूर्णता समाप्ति ।

- पारायणिक तत्० ( ५० ) पारायण-कर्ता, पाठक, छात्र ।
- पारावत तत्० ( ५० ) कपोत, गृह कपोत, कम्बलर, मर्कट घानर ।
- पारावार तत्० ( ५० ) सरित्पति, समुद्र, सागर, निग-निधि, नीरनिधि, मलह्वय, दोनों ओर का तट ।
- पाराशर तत्० ( ५० ) पराशर का पुत्र, वेद व्यास । ( ५० ) पराशर सम्बन्धी, पराशर-स्मृति, मिच्छ संहिता ।
- पाराशर्य तत्० ( ५० ) पराशर पुत्र, व्यासदेश ।
- पारिजात तत्० ( ५० ) पारिमद्र वृक्ष, देवतक, सुरद्रुम, देवताओं का वृक्ष, पुत्र विशेष, हरिचन्दन वृक्ष ।
- पारिणाह्य तत्० ( ५० ) सम्बन्ध, बन्धन, मृगोपकरण, गृहस्थी के लिये उपयुक्त सामग्री ।
- पारित्य्या तत् ( स्त्री० ) सधवा जिमो के पहनने की उपयुक्त वस्तु ललाटालङ्कार, शिरोभूषण विशेष, टिकुली, बँदी ।
- पारितोपिक तत्० ( ५० ) हुष्टिजनक दान, प्रसन्नता-बूझक दान, पुरस्कार ।
- पारिन्द्र तत्० ( ५० ) सिंह, भृगुन्द्र, केशरि, पञ्चानन ।
- पारिपन्धिक तत्० ( ५० ) तस्कर, चोर, छुटेरा, डाकू ।
- पारिपात्र तत्० ( ५० ) पर्वत विशेष, एक पर्वत का नाम, विन्ध्याचल के पश्चिमी भाग का नाम जो मालवा देश की सीमा पर है ।
- पारिपार्श्वक तत्० ( ५० ) नर विशेष, जो सूत्रधार की सहायता करता है ।
- पारिमद्र तत्० ( ५० ) देवदारु वृक्ष, निम्ब वृक्ष, सालू का पेड़ ।
- पारिमाव्य तत्० ( ५० ) जमानत, जामिनी, प्रति-भूष्य, माध्यस्थ्य ।
- पारिभाषिक तत्० ( ५० ) साङ्केतिक शब्द, शिल्प-विद्या आदि की कल्पित कथा ।
- परिमाण्डल्य तत्० ( ५० ) परिमाणु का परिमाण, प्रति-चूचन परिमाण, यह परिमाणु जिससे छोटा दूसरा परिमाणु न है ।
- परिपद् तत्० ( ५० ) समासद, समास्य सभ्य । ( ५० ) परिपत् सम्बन्धी, समा सम्बन्धी ।

- पारी दे० ( स्त्री० ) घारी, पाला, अयसर, क्रय, एक
- पारीण तत्० ( ५० ) पारगमन-कर्ता, पारगामी ।
- पारुष्य तत्० ( ५० ) परनिन्दा, परद्रोह, पारि-श्रमिय भाषण, चार प्रकार के वाकिक श्रेयः के अन्तर्गत पाप विशेष । कठोरता, पदपत्र, दुर्बल, कठोर वचन ।
- पार्थ तत्० ( ५० ) धृया का पुत्र, अर्जुन, गौतम पाण्डव ।
- पार्थक्य तत्० ( ५० ) पृथक्ता, पृथक् होना निश्चय, प्रभेद ।
- पार्थिव तत्० ( ५० ) राजा, नपति, महोपात । ( ५० ) पृथिवी सम्बन्धी, पृथिवी का विकार, पृथिवी से उत्पन्न, मृचमय ।
- पार्थण्य तत्० ( ५० ) पर्व पर किया जाने वाला श्राद्ध उत्सव, अमावस्या आदि के दिन कर्तव्य श्राद्ध पर्व कृत्य ।
- पार्वती तत्० ( स्त्री० ) सौराष्ट्र मूर्त्तिका, मुचताला मिट्टी, धात्री कन्य, आमन्त्री, आचना, एक प्रकार का पत्थर, दुर्गा, भगवती, महादेव की की, अपने पिता दक्ष के पत्र में बिना निमन्त्रण के सती उपस्थित हुई, परन्तु वहाँ पिता के द्वारा की गयी पति की निन्दा से वह नहीं सकी, अतएव वहीं, यज्ञकुण्ड में झूठ का इन्होंने अपने प्राण दिये । तदनन्तर पर्वतराज हिमालय के दर में, मेनका के गर्भ में ये उत्पन्न हुई । य पर्वतराज का कन्या थी । इस कारण इनका पार्वती नाम हुआ । शिव से विवाह करने के लिये इन्होंने कठिन तपस्या की थी ।
- पार्श्व तत्० ( ५० ) कन्या के जीव का भाग, पार्श्व पाद, निकट, समीप ।—वर्ती ( ५० ) पार्श्व सहचर, पाद रहने वाला ।—भाग ( ५० ) हाथ का समीप का भाग, पसली ।—शूल ( ५० ) शूलरोग विशेष, पाजर का शूल ।
- पाल तत्० ( ५० ) पालक, रक्षक, ज्ञान-कर्ता, स्वनाम-एयात वस्तु, जो नाश पर टाँपी जाती है, निवृत्त सहादे नायें चलती हैं । लड़क, छोटा लड़क । शाय पाल में रख कर पाल पकाना ।

- पालक तत्त्वं (५०) रसक, पोषक, शामन-कर्ता, चरक-रसक । ( दे० ) भाजी, शाक विशेष, पालक का भाग ।—ता (स्त्री०) दवापुत्रा, रसकता, रसा ।
- पालकी दे० (स्त्री०) गिरिका, बेसी, मनुष्य वाद्यमान विशेष ।
- पालक्य तत्त्वं (५०) पालक का भाग ।
- पालन तत्त्वं (५०) [ पाल + घनट् ] भरण पोषण, प्रतिपालन, रक्षण, सहाकार, सुरण, निर्वह ।
- पालना तत्त्वं (क्रि०) पालन करना, रक्षण करना, पोषना, निवाहना ।—(५०) द्विपत्नीता, भूजन ।
- पालनीय तत्त्वं (गु०) पालने योग्य, रक्षण करने योग्य, पालन करने के उपयुक्त ।
- पाला दे० (५०) रचित, पोसा हुआ, नीहार, हिम, तुषार, धार, पारी, वारी, वर्षा, क्रम निरूपण, काम निरूपण ।
- पालागन दे० (५०) समिधादन, प्रणाम, पौव डूना, प्रणाम करना ।
- पलाश तत्त्वं (गु०) पलाश वृक्ष विभिन्न, पलाश वृक्ष सम्बन्धी, हरित वर्ण, हरे रङ्ग का ।
- पालि तत्त्वं (स्त्री०) भाषा विशेष । यीहों के समय को हिन्दुस्तानी भाषा यह भाषा संस्कृत से गिरी थीर भागधी खादि प्राकृत भाषाओं से बड़ी हुई थीर को भाषा है । यीह धर्म के समय इसी भाषा में लिखे गये हैं ।
- पालिक दे० (गु०) पोषक, रसक, पालक ।
- पालित तत्त्वं (गु०) रचित, स्थापित, पोषित, रसा किया हुआ ।
- पाली तत्त्वं (स्त्री०) पांडक, श्रेणि, कान, प्रयंछा, कथित भोजन, चलद्वार विशेष । कान की वाली, मूँछ वाली स्त्री, प्राना भाग, मेषु, उम्बङ्ग, कोह देग, प्रस्य परिमाण ।
- पाले दे० (५०) अधीन, वय में, अधिकार में अधीनता में ।—पड़ना (वा०) अधीन होना, वश होना । यथा—  
“मान करकं तस कालं हयासे ।  
परैउं कठिनं रायणं के पाले ॥”  
—रामायण ।
- पाय दे० (५०) चतुर्थीय, चौथाई भाग, चौथ, एक सेर का चौथाई, चार तोला ।
- पायक तत्त्वं (५०) अग्नि, घनल, चांग, पन्दि । (गु०) पवित्र, पवित्र करने वाला, परिष्कारक, पवित्रकारी, व्रतकारी ।
- पायडा दे० (५०) पाँवडा ।
- पायन तत्त्वं (गु०) पवित्र, पवित्रकारक, स्वच्छ, शुद्ध करने वाला । जल, अग्नि, गोबर, कुशा, गङ्गा, सूर्य, सूर्य दर्शन खादि पायन करने वाले हैं ।
- पायना दे० (५०) पाना, प्राप्त होना, मिलना, प्राप्य, पाने योग्य, खादाय धन, बाकी ।
- पायला दे० (५०) चौथा भाग, चतुर्थीय, चार खाना, चयमे का चौथा भाग, चौथरी ।
- पायस दे० (५०) वर्षा जल, प्रवृष्ट फल, वर्षा काल, चरसात ।
- पाश तत्त्वं (गु०) रज्जु, रस्सी, गुन, कौसी, पन्दा, चक्र विशेष ।
- पाशक तत्त्वं (गु०) पासा, पासा खेलना, लूचा खेलना ।
- पाशा दे० (५०) चष, लूचा, चौपड़, कर्ण भूषण विशेष ।
- पाशित तत्त्वं (गु०) पाशयुक्त, बद्ध, बन्धा हुआ ।
- पाशी तत्त्वं (गु०) पाशधर, रज्जु विशिष्ट, वहन ।
- पाशुपत तत्त्वं (गु०) पशुपति मन्त्र के उपनाम, शैव, शैव सम्प्रदायी ।
- पाशुपतास्त्र तत्त्वं (गु०) शूल विशेष । अर्जुन का अस्त्र, इसी अस्त्र को अर्जुन ने तपस्या द्वारा महादेव से पाया था ।
- पाश्चात्य तत्त्वं (गु०) पश्चात्जात, पश्चात् उत्पन्न, पश्चिम देशों, पश्चिम के घासों, पश्चिम देशोद्भव ।
- पापाण तत्त्वं (गु०) शिला, पत्थर, पाथर ।—द्वारुण (गु०) टांकी, डेनी, पत्थर काटने का अस्त्र ।
- पास दे० (५०) समीप, निकट ।
- पासा दे० स्त्रनाम प्रसिद्ध क्रोडोपयोगी वस्तु, पाशक ।
- पासी दे० (गु०) जाति विशेष, ठ्याध ।

- पाहन दे० ( पु० ) पापाण, पत्थर, पाघर ।—छुमि ( पु० ) एक प्रकार का कीड़ा, पत्थर का कीड़ा, यह पत्थर ही में अपने रहने का घर बनाता है ।
- पाहर दे० ( पु० ) प्रहरी, चौकीदार, पहचपा, चौकी देने वाला ।
- पाही दे० ( स्त्री० ) दूसरे गाँव में खेती करना, दूसरे गाँव से सम्बन्ध रखना ।
- पाहुन दे० ( पु० ) पाहुना, अतिथि ।
- पाहूँ दे० ( पु० ) व्यक्ति, जन, सर्वसाधारण ।
- पिऊ दे० ( पु० ) पति, स्वामी, प्रियतम, भर्ता, प्यारा ।
- पिक तत्० ( पु० ) परभत, कोकिल, कोइल ।—घयनी ( स्त्री० ) मिठभाषिणी स्त्री, कोकिल के समान बोलने वाली स्त्री ।—घैनी ( स्त्री० ) पिक घयनी, मधुर भाषिणी ।
- पिकदान दे० ( पु० ) निह्वायन पात्र, शूकने का पात्र, जगालदान ।
- पिघलना दे० ( क्रि० ) टघलना, द्रव होना, पतला होना, पानी होना ।
- पिघलाना दे० ( क्रि० ) टघलाना, गलाना, द्रव कराना, पतला करना ।
- पिघलाव दे० ( पु० ) टघलाव ।
- पिङ्ग तत्० ( पु० ) पिङ्गल वर्ण विशिष्ट, कपिल, पीत वर्ण ।
- पिङ्गल तत्० ( पु० ) नील पीत मिश्रित वर्ण, कपिश रङ्ग । लडार, कपिश, पिङ्गल । पीतल, हरताल । ( पु० ) नील पीत वर्ण विशिष्ट, नील पीत, निधि विशेष, कपि, वानर, अग्नि, मुनि विशेष, नकुल, स्याधर, विष विशेष एक सम्भवतः का नाम, पिङ्गलाचार्य कृत छन्दो ग्रन्थ विशेष ।
- पिङ्गला तत्० ( स्त्री० ) विदेह देश में रहने वाली एक वेश्या का नाम, कर्णिका, नाडी विशेष जो दहिनी नाक से निकलती है, पत्ति विशेष, राजा भर्तृहरि की पत्नी का नाम, वामन नाम दक्षिण दिग्गज की हथिनी का नाम ।
- पिङ्गूर दे० ( पु० ) हिपडोला, झूजन, पालना ।
- पिचकना दे० ( क्रि० ) दक्षना, निचुड़ना, सिमिटना ।

- पिचकाना दे० ( क्रि० ) दक्षाना, निचोड़ना ।
- पिचकारी दे० ( स्त्री० ) पत्रका, दमकना, रङ्ग का आदि दूर फेंकने के लिये यन्त्र विशेष ।
- पिचण्ड तत्० ( पु० ) पशु का अङ्ग, पिट, उदर, मूत्र ।
- पिचण्डिल तत्० ( पु० ) मुन्दिल, नेद वाला ।
- पिचपिचा दे० ( पु० ) पिलपिला, सड़ा हुआ, तथा हुआ ।
- पिचु तत्० ( पु० ) कार्यास, कयास, वृक्ष विशेष, पुष विशेष, एक असुर का नाम, शैरव, शस्य विशेष, कर्प परिमाण ।
- पिचुका दे० ( पु० ) पिचकारी, पञ्चका ।
- पिचुमन्द तत्० ( पु० ) निम्ब वृक्ष, नीम का पेड़ ।
- पिश्चट दे० ( पु० ) शौच की जलन ।
- पिच्छ तत्० ( पु० ) मधुरपुच्छ मोरपङ्क, शिखर, पाङ्गुल, पूंछ ।
- पिच्छजन दे० ( पु० ) पिच्छना, खसकना, गिरना, पड़ना ।
- पिछलना दे० ( क्रि० ) फिसलना, गिरना, पड़ना, पैर रपटने से गिर जाना ।
- पिछलाई दे० ( स्त्री० ) हाकिन, भूतिन, चुड़ैत ।
- पिछला दे० ( पु० ) पीछे का, अगन्तर का, पश्चाद् ।
- पिछवाड़ा दे० ( पु० ) पश्चाद्भाग, पीछे का भाग, मकान का पिछला हिस्सा ।
- पिछाड़ी दे० ( स्त्री० ) एक प्रकार की रस्सी, जिसे चोड़ों का पिछला पैर बाँधा जाता है । ( अ० ) पीछे, पश्चात्, पृथ भाग ।
- पिछान दे० ( स्त्री० ) परिचय, पहचान, जान पहचान ।
- पिछाने दे० ( पु० ) परिचित, जाने हुए, पहचाने तथा ।
- पिछूत दे० ( अ० ) पीछे, पश्चात्, पीछे का भाग । ( पु० ) मकान का पिछवाड़ा ।
- पिछेल दे० ( पु० ) पिछवाड़ा, घर का पिछला भाग ।
- पिछौरा दे० ( पु० ) दोहर, दुपट्टा, चद्दर, उत्तरीय, ऊपर ओढ़ने का वस्त्र ।
- पिछीरी दे० ( स्त्री० ) दोहर, दुपट्टा, पतली चादर ।
- पिञ्जन तत्० ( पु० ) रुई चुनने की धनुही ।

पञ्जर तत्त्वं ( पु० ) अरय विशेष, पीत रक्त वर्ण, रक्त पीत मिश्रित वर्ण, पिञ्जरा, जिसमें पक्षेक रखे जति हैं। नागकेशर पुष्प, पक्षियों के रखने का घर, शरीर का अस्थि सङ्ग्रह।

पञ्जरा दे० ( पु० ) यज्ञर, पक्षि रखने का घर, जो लकड़ी या मोहरे के तारों से बनता है, पिञ्जड़ा।

पञ्जल तत्त्वं ( पु० ) कुश पत्र, हरिताल, अतिशय विषाक्तुन सेना, तीतर पत्ती, भूषण विशेष, अङ्गद, बालुवन्द, त्रिजायट।

पञ्जिका तत्त्वं ( स्त्री० ) रुई का गज्जा।

पिञ्जियारा दे० ( पु० ) पिञ्जारा, रुई धुनने वाला, पीजने वाला।

पिञ्जूल तत्त्वं ( पु० ) चाती, यतिका, दगा, दीप की घन्टी, मशाल।

पिञ्जूष तत्त्वं ( पु० ) कर्णमल, कान का मल, चूँट, टेट।

पिट तत्त्वं ( पु० ) पेटी, पिटारा, सन्दूक, पिटारी, नरकुण, नरकट।

पिटक तत्त्वं ( पु० ) पेलादि रचित पात्र विशेष, पिटारा, पिटारी।

पिटना दे० ( स्त्री० ) मार खाना। ( पु० ) मुद्गर, मुँगरा, गदा, पीटने की लकड़ी, बण्डा।

पिटारा दे० ( पु० ) जपड़े चादि रखने का बरत, मञ्जूषा, टाकरा।

पिटारी दे० ( स्त्री० ) छोटो पिटारी, जपड़े की पेटी।

पिण्ड तत्त्वं ( पु० ) घाटे की बनी गोल वस्तु विशेष, देह का एक देश, गृह का एक देश, शरीर, देह, पितरों के उद्देश से दिया हुआ दान, गोल, मण्डल, वतुलाकार, गन्धद्रव्य विशेष, जया पुष्प, आजीवन, जोषिका, आहु से बचा हुए द्रव्य से बना भक्त का गोला जो पितरों को दिया जाता है।

—छुटाना ( वा० ) बचाना, भार उतारना, घपना दायित्व हटाना, पोछा छुटाना, उद्धार पाना।—फला ( स्त्री० ) मुन्नी विशेष, बटुमुन्नी, तितलौकी।

पिण्डली दे० ( स्त्री० ) किल्ली, पिण्डरी, रोग विशेष, नसें का चकड़ना।

पिण्डा दे० ( पु० ) पितरों को उद्देश करके दिया हुआ घन, दुकड़ा, भैतफल, फस्तूरी विशेष।

पिण्डरा दे० ( पु० ) लुटेरा, ठग, इकैत, एक जाति विशेष, जिसका लूटना लसोटना काम है, डाकुणों का दल। चपणक, वैद, संन्यासी, गोप, महिषी रचक, चरवाहा, द्रुम विशेष।

पिण्डालू दे० ( स्त्री० ) फल विशेष, खोपड़ी की जड़।

पिण्डत तत्त्वं ( पु० ) राशि कृत, एकवित्त, रज्जुत किया हुआ, मिलित, जड़ित, गुणित।

पिण्डो तत्त्वं ( स्त्री० ) दिखड़ी, तगर, सौषा, साक, खजूर विशेष, ज्ञान निरूपण करने का उपग्रास, वेदा, विलिखी, सटार्, गिय का लिङ्ग, देवता की मूर्ति।—मुस्ता ( स्त्री० ) नांगरमेया।

पिण्डुक तत्त्वं ( पु० ) पक्षि विशेष, पृच्छ, कपूतर की जात का एक पक्षेक।

पिण्डोल दे० ( पु० ) खड़िया मिट्टी, छुई।

पिण्याक तत्त्वं ( पु० ) पीना, खनी, तिल चादि से तेल निकाल लेने पर जो उमका भाग बचता है।

पितर दे० ( पु० ) पितृ पितामह, पूर्व पुरुष, पूर्वज, पुरखा।

पितरार्ई दे० ( स्त्री० ) पितर सम्बन्धी, कुटुम्ब, पीतल का मुर्वा, जड़।

पितरी तत्त्वं ( पु० ) माता पिता, मा बाप, यह शब्द संस्कृत है, पितृशब्द के प्रथमा द्विवचन का यह रूप है।

पितरीला दे० ( पु० ) पितृ पूजन करने का पात्र, पात्र विशेष, जिसमें पितरों की पूजा करने की सामग्री रखी जाती है।

पितराना दे० ( स्त्री० ) पीतल के बर्तन में रखने के कारण दही चादि का बिगड़ जाना, पीतल का मुर्वा लग जाना।

पिता तत्त्वं ( पु० ) बाप, जनक, तात।—मह तत्त्वं

पीछे दे० (श्र०) परवात्, अनन्तर, परे ।—डालना (या०) भूल जाना, भुना देना, धर रखना, हरा देना, दूर कर देना ।—पडना (या०) दिक-दिकाना, सताना, किसी काम के लिये सतत कहना ।—लगना (या०) पीछे पडना, दृष्टि रखना, सर्वदा दुःख देना, सतत दुःख देने का चेष्टा करना ।

पीजाना दे० (क्रि०) पी लेना, हूसन, क्रोध रोकना ।

पीटना दे० (क्रि०) मारना, फूटना ।

पीठ दे० (पु०) पृष्ठ, पिछाडी, पीछे, आसन, पीठा ।

—के पीछे डालना (या०) बचाना, रक्षा करना, त्राण करना ।—ठोकना (या०) हिम्मत ब्रौंधना, साहस देना, अभय देना ।—देना (या०) भागना, भाग जाना, सुकरना, हताश होकर किसी काम से हाथ हटा लेना । हटना, टलना ।—पर हाथ फेरना (या०) प्रसन्नता प्रकाश करना, उत्साह बढाना, सहायता देना धीरता देना, ढाँढस बंधाना ।—फेरना (या०) सम्मुख होना, प्रस्तुत होना, उद्यत होना, किसी काम को करने लगना ।

—लगना (या०) पटक जाना, पछाड खाना, कुत्रती में हार जाना, पीठ पर घाव होना ।

पीठा दे० (पु०) भोजन विशेष ।

पीठियाडोक दे० (या०) शठपधधान, सतत, एक के बाद दूसरा ।

पीठी दे० (स्त्री०) घोषा उरद की दाल ।

पीठीता दे० (पु०) पत्रों का पृष्ठ, पीठ ।

पीड दे० (स्त्री०) दुःख वेदन, बय्या, चीडा, दर्द, वेदना ।

पीडक तत्० (पु०) दुःखदायी, दुःखदायक, क्लेश-दायक ।

पीडना दे० (क्रि०) दुःख देना, पीडा देना, क्लेश देना ।

पीडा तत्० (स्त्री०) ब्यापा, दुःख, वेदना, बापा ।—फर (पु०) पीडक, क्लेशकर, दुःखदायी ।

पीडित तत्० (पु०) दुःखित, दुःखी ।

पीड्यमान तत्० (पु०) पीडायुक्त, पीडा विधिष्ठ ।

पीडा दे० (पु०) पटरा, मोटा, मधिया, पटा, काहाब्या ।  
—घन्ध (पु०) मङ्गलाचार ।

पीठी दे० (स्त्री०) वश परम्परा, पुढयानुक्रम ।

पति तत्० (पु०) वर्ष विशेष, एक प्रकार का पत्र हलदिया रङ्ग । (पु०) पीतवर्षयुक्त पीत पीला ।

पीतम दे० (पु०) प्रियतम, प्रिय धव, स्यामी ।

पतरस तत्० (पु०) हरिद्रा, हलदी ।

पीतल दे० (पु०) मिश्रित धातु विशेष ।

पीतला दे० (पु०) पीतल निर्मित, पीतल का बरत, पीतल का ।

पीताम्बर तत्० (पु०) [ पीत + अम्बर ] श्रीकृष्ण, विष्णु । (पु०) पीतवर्ण वस्त्रयुक्त ।

पीत तत्० (पु०) पीवर, स्तूत, मौसल, मोटा, तुन्दिल, तौंदेला ।

पीनक दे० (स्त्री०) शफीम के नशे की कोक, शफीम के नशे से उँचाई आना ।

पीनना दे० (क्रि०) तुनना, रुचा घटेना ।

पीनस दे० (पु०) नासिका का एक रोग विशेष पालकी ।—घारा (पु०) जिसकी नाक में पीनस का रोग हो ।

पीना दे० (क्रि०) पान करना, जल पीना, सिक्कित सङ्कुचित होना ।

पीपल दे० (पु०) अश्वत्थ का वृक्ष, विष्णु का पेड़

पीपला दे० (पु०) तलवार की नोक ।

पीपलामूल दे० (पु०) शोषधि विशेष ।

पीपा दे० (पु०) काह या सोह निर्मित गोलकार पात्र विशेष, मद्यपात्र, मद्य रखने का पात्र ।

पीप दे० (स्त्री०) मल विशेष, दूध, फोडे का मल ।

पीपियाना दे० (क्रि०) पकना, पीप बहना, गगन गलना ।

पीयूष तत्० (पु०) अमृत, सुधा, अमी, दूध ।

पीर दे० (स्त्री०) दुःख, वेदना, पीडा, पीडा, शय

पीरा दे० (स्त्री०) पीडा, पीर ।

पीरार्ह दे० (स्त्री०) डोल बजाने वाला ।

पीला दे० (गु०) पीतवर्ण, पीतवर्ण का, पीले रङ्ग का ।

पीलाई दे० (स्त्री०) पीतत्व, पीला रङ्ग, पीला-वन ।

पीलाम दे० (पु०) देशमी यक्ष विशेष ।

पीली दे० (स्त्री०) मोहर, सुवर्ण मुद्रा, सोने की मोहर ।

पीलु तत्० (पु०) वृक्ष विशेष, जिसके पत्ते हाथी खाते हैं ।

पीवकड़ दे० (पु०) मद्यप, उन्मत्त, विधेया ।

पीवर तत्० (गु०) स्त्रूल, पीन, मोटा ।

पीसना दे० (क्रि०) पिमान करना, ब्रुकना, ब्रुर्ण करना ।

पीहर दे० (पु०) नैहर, मैका, स्त्री के पिता का घर, माइक, नरहर ।

पीडु दे० (पु०) पिम्बु, कृमि विशेष ।

पुं तत्० (पु०) पुरुष, पुमान, नर, पुरुष वाचक शब्द ।

पुंलिङ्ग तत्० (पु०) पुरुष चिह्न, पुरुषत्व ।

पुंशक्ति तत्० (स्त्री०) पुरुषार्थ, पुरुषत्व, पुरुष का सामर्थ्य ।

पुंश्रली तत्० (स्त्री०) पशुरिया, द्रवभित्तिरिणी, वेरया, कुण्डा ।

पुंसवन तत्० (पु०) गर्भ संस्कार विशेष, स्त्रियों के करने का एक व्रत ।

पुंस्त्व तत्० (पु०) पुरुषार्थ, पुरुषत्व ।

पुंकार दे० (स्त्री०) हाँक, गुहार, हाँक, हाँक, दुःख निवेदन ।

पुंकारमा दे० (क्रि०) गुहराना, हाँक मारना, दौकना, आह्वान करना ।

पुंकराज दे० (पु०) मणि विशेष, एक रत्न का नाम, खराग मणि, गोमेद ।

पुङ्ग तत्० (पु०) राशि, जेणि, समूह, दल, देर ।

पुङ्गव तत्० श्रेष्ठ, बड़ा, माननीय, उत्तम, यह शब्द जिसके अन्त में आता है, उसीकी श्रेष्ठता बतलाता है । यथा—राजपुङ्गव, ब्राह्मणपुङ्गव आदि ।

पुचकार दे० (पु०) चात्स्वन वाक्य, दौंस देना, यश करना, चिगड़े हुए बैल आदि का चात्स्वन वाक्य से यश में करना ।

पुचारा दे० (पु०) चूना पोतने की कूची जिससे भीत में चूना पोता जाता है ।

पुच्छ तत्० (पु०) लाड्यूल, पूँछ, हुम, पछादाग ।

पुच्छल तत्० (गु०) पूँछ वाला, पुच्छ विग्रिष्ट, पुच्छ-युक्त ।—तारा (स्त्री०) ध्रुवकेतु, अशुभ सूचक तारा ।

पुच्छवैया दे० (पु०) पृच्छक, पूछने वाला, अनुसन्धान-कारी ।

पुजना दे० (क्रि०) पूरा होना, पूर्ण होना, नून न रहना, पूजित होना, प्रतिष्ठा पाना ।

पुजाना दे० (क्रि०) पूजा कराना, पूजा पाना, भराना, पूर्ण कराना ।

पुजापा दे० (पु०) पूजा के उपकरण, पूजा की सामग्री ।

पुजारी दे० (गु०) पूजा करने वाला, पूरक, शर्चक ।

पुञ्ज तत्० (पु०) देर, राशि, समूह, जड़ पदार्थों का समूह ।

पुट तत्० (पु०) युगल, युग, आच्छादन, पचादि रचित पुष्पाधार, मध्य, अन्वन्तार, ब्रुर्ण, पेषण, धरत्रयुं, घोड़े का पैर, चोपधि पकाने का पात्र विशेष, दोना, मिलाय, मिलना, पद्म, कमल ।

पुटक तत्० (पु०) दोना, पत्र निर्मित पात्र, पद्म, कमल ।

पुटकनी तत्० (स्त्री०) पद्मिनी, पद्मलता, पद्मपुष्प देय, पद्म समूह ।

पुटित तत्० (गु०) पुक्त, आच्छादित, चापृत, चास्वत प्रणय से युक्त मन्त्र ।

पुटी तत्० (स्त्री०) आच्छादन विशेष, कौपीन, पत्रादि रचित पात्र, दोना ।



पुष्टा दे० ( पु० ) पशु आदि का पञ्चाङ्गाग, फटि के ऊपर का भाग ।

पुष्टा दे० ( पु० ) बड़ो पुडिया, गट्टा, पुलन्दा ।

पुडिया दे० ( खो० ) कागज की छोटी गौंठ जिसमें दवा आदि बाँधी जाती है ।

पुडो दे० ( खो० ) खाल, देल का चमड़ा, चर्म ।

पुण्डरीक तत्० ( पु० ) शुक्ल पद्म, श्वेत कमल, कमल मात्र, श्वेतच्छत्र, आषप विशेष, अग्निकोण का दिग्गज, कोपकार विशेष ।

पुण्डरीकाक्ष तत्० ( पु० ) [ पुण्डरीक + अक्ष ] श्री-कृष्ण, कमल के समान जिसको आँखें हों ।

पुण्ड्र तत्० ( पु० ) इन्द्र विशेष, वैद्य, ऊँच, दैत्य विशेष, बलिराज का चरित्र पुत्र । अन्ध महर्षि दीर्घतमा के औरस से बलिराज की महारानी सुदेश्या के गर्भ से पैल पुत्र उत्पन्न हुए थे, उनमें पुण्ड्र एक है । इनके नाम पर इनका अधिकृत राज्य भी उसी नाम से परिचित होता है ।

पुण्य तत्० ( पु० ) शुभ ऋद्ध, धर्म, सुकृत, योग्य कर्म, उत्तम कर्म, पावन, पवित्र ।—कर्म ( पु० ) पवित्र कर्म, धर्म कर्म ।—कृत ( पु० ) पुण्य-कर्ता, धार्मिक, सुकृती ।—सन्ध ( पु० ) सम्पत्ति ।—जन ( पु० ) सज्जन, राक्षस, यज्ञ ।—जनेश्वर ( पु० ) कुवेर, यक्षराज ।—पत्तन ( पु० ) एक नगर का नाम, पूना ।—भूमि ( खो० ) आर्वावर्त देश, हिमालय और विन्ध्यावल के मध्य का स्थान, पुण्यस्थान, तीर्थस्थान ।—चान् ( पु० ) पुण्य-युक्त, सुकृती, धार्मिक ।—शील ( पु० ) पुण्य-शाली, धार्मिक, पवित्र ।—श्लोक ( पु० ) विष्णु, बुधधिर, नल राजा ।

पुण्याई दे० ( पु० ) पुण्यवाह, धार्मिक, सुकृती । ( खो० ) धर्म, सुकृत, धार्मिकता । ;

पुण्यात्मा तत्० ( पु० ) [ पुण्य + आत्मा ] पुण्य स्वभाव, पुण्यवाचारी, धर्मशील, धर्माचारी, धर्मो, धार्मिक ।

पुण्याह तत्० ( पु० ) पुण्यजनक दिवस, पवित्र दिन, सरकारी मासगुजारी, वसूल करने का पहला

दिन ।—वाचन ( पु० ) दैव कर्मों में मन्त्रिशास्त्र के पहले मङ्गल के लिये पुण्याह शब्द का त्रवार उच्चारण ।

पुतला दे० ( पु० ) मूर्ति, काष्ठ तृण आदि निर्मित मूर्ति ।

पुतली दे० ( खो० ) आँख का तारा, काहादि निर्मित छोटी प्रतिमा ।

पुताई दे० ( खो० ) पेताने का काम या मजूरी ।

पुत्तलिका तत्० ( खो० ) पुतली, क्रीडा साधन विशेष ।

पुत्तिका तत्० ( खो० ) पुतली, काष्ठ निर्मित कृषि पुत्तलिका, कोट विशेष, बुद्धमूर्ति ।

पुत्र तत्० ( पु० ) सुत, अपत्य, सन्तान, बेटा, पुत्रान्नरक से रक्षा करने वाला ।—जीवो ( पु० ) विशेष, पुत्र जीवक वृक्ष ।

पुत्रार्थी तत्० ( पु० ) [ पुत्र + अर्थी ] सन्तानार्थी पुत्रेच्छु, पुत्र प्राप्ति को अभिलाषा रखने वाला ।

पुत्रिका तत्० ( खो० ) कन्या, दुहिता, तनया, पुत्र के समान रखी हुई कन्या, पुत्तलिका, पुत्रार्थी—पुत्र ( पु० ) दैहिक, दोहता, पुत्री का नौण पुत्र, दत्तक लिया हुआ कन्यापुत्र ।

पुत्रिणी तत्० ( खो० ) पुत्रवती, सन्ताना श्री, सखानी ।

पुत्री तत्० ( पु० ) पुत्रवान्, पुत्रपुत्र । ( खो० ) दुहि कन्या, तनया ।

पुत्रेष्टि तत्० ( पु० ) सन्तानार्थ यज्ञ, सन्तान का उपायभूत यज्ञ ।

पुदिना दे० ( पु० ) सुगन्ध शाक विशेष । पुद्गल तत्० ( पु० ) आत्मा, देह, शरीर, जैनिमत से चैतन्य विशिष्ट, पदार्थ विशेष । ( सुन्दराकार, रूपवादि विशिष्ट द्रव्य ।

पुन. तत्० ( अ० ) द्वितीयवार, पुनर्वार, द्वार भेद, अवधारण, अधिकार, फिर, उनि, वृत्ति ।—पुनः ( अ० ) वार वार, फिर फिर, पुनः अवसक्त ।—पुना ( खो० ) नदी विशेष, जे

के पास है।—संस्कार (पु०) द्वितीयवार, उप-  
नयनादि संस्कार ।

पुनरपि तत्० (पु०) द्वितीयवार, पुनर्धार ।

पुनरागमन तत्० (पु०) द्वितीयवार, आगमन, सौटना,  
सौट घाना, फिर घाना ।

पुनरावृत्ति तत्० (स्त्री०) फिर आवृत्ति, पुनः पाठ ।

पुनराय दे० (पु०) दूसरे वार, पुनर्धार, पुनरव ।

पुनरक्ति तत्० (स्त्री०) पुनः कथन, कही बात को  
फिर कहना, काव्य का एक शृंग ।

पुनरुत्थान तत्० (पु०) पुनः उठना, द्वितीय वार  
उठना ।

पुनर्जन्म तत्० (पु०) द्वितीयवार उत्पत्ति, दूसरा  
जन्म, पुनः उद्भव ।

पुनर्नवा तत्० (स्त्री०) शक विशेष ।

पुनर्भय तत्० (पु०) नख, नह । (पु०) पुनर्जन्म, पुन-  
र्धार उत्पत्ति ।

पुनर्भू तत्० (स्त्री०) द्विरुद्गा, दो वार ध्याही स्त्री ।

पुनर्वसु तत्० (पु०) सातवाँ नक्षत्र, गन्धर्व, मुनिभेद ।

पुनर्विवाह तत्० (पु०) प्रथम ऋतु के समय का  
संस्कार विशेष, गर्भोधान संस्कार, द्वितीयवार  
विवाह, दूसरा विवाह ।

पुनर्याना दे० (क्रि०) पानादर करना, शपथान करना,  
शपथिष्ठा करना ।

पुनश्च तत्० (पु०) पुनर्धार, पुनरपि, द्वितीयवार,  
फिर भी, और भी ।

पुनि दे० (पु०) केर, पुनः, बहुरि, द्वितीयवार, फिर ।

—पुनि (अ०) वार वार, पुनः पुनः, बारम्बार ।  
वधाः—

“पुनि पुनि लाया, दरस दिवाया ।”

पुनीत तत्० (पु०) पवित्र, शुद्ध, निर्मल, स्वच्छ ।

पुनीता दे० (क्रि०) गाली देना, पानादर करना, शप-  
थान करना ।

पुत्रानां तत्० (पु०) पुत्र्य वृत्त विशेष, पाटेल द्रुम ।

पुमान तत्० (पु०) मनुष्य, जातीय पुरुष, मानव ।

पुर तत्० (पु०) घर, गेह, गृह, मकान, नगर, ग्राम  
इन्द्रादियुक्त स्थान, घट्ट ग्राम जिममें धाज़ार

आदि हों, एक राक्षस का नाम ।

पुरइन दे० (स्त्री०) कोहरा, कुमुदिनी, कुमादिनी,  
नलिनी ।

पुरउय दे० (क्रि०) पूर्ण करेंगे, पूरा करेंगे ।

पुरजन तत्० (पु०) पुरवामी, पुर के मनुष्य ।

पुरञ्जन तत्० (पु०) जीव, राजा विशेष ।

पुरञ्जय तत्० (पु०) एक सूर्यवंशीय राजा, बहुत  
पुराने समय में देवाह्वर युद्ध में देवता दैत्यों से  
हार कर भगवान् के शरणायत्न हुए, और उनकी  
आज्ञा से महाराज पुरञ्जय के निकट उन लोगों ने  
प्रार्थना की, उन्होंने इन्द्र को वृषरूप धारण करने  
का आदेश दिया, यद्यपि इन्द्र इसे स्वीकार करना  
नहीं चाहते थे परन्तु अन्त में देवताओं के अनु-  
रोध से इन्द्र को स्वीकार करना पड़ा, वृषरूपधारी  
इन्द्र पर चढ़ कर महाराज पुरञ्जय ने युद्ध में दैत्यों  
को हार दिया । सभी ने राजा पुरञ्जय ककुत्स्थ कहे  
जाते हैं । और उनके वंश की काकुत्स्थ नाम से  
प्रसिद्धि हुई । इन्हींके वंश में भगवान् रामचन्द्र  
के रूप में प्रकट हुए थे ।

पुरश्चर तत्० (पु०) यज्ञ, बाहुमूल, स्कन्ध, कन्धा ।

पुरष्ट तत्० (पु०) सुवर्ण, काञ्चन, स्वर्ण, हेम, सोना ।

पुरनियां दे० (पु०) पाचीन, हूडों, वृद्ध, एक नगर  
का नाम, जो प्राचीन यजुदेश में और सम्प्रति  
विहार में है ।

पुरन्दर तत्० (पु०) इन्द्र, महेंद्र, देवराज इन्द्र का  
नामान्तर । इन्द्र यक्षों के नगर का नाश करते  
हैं इस कारण उनका नाम पुरन्दर पड़ा है ।

पुरेचहु दे० (क्रि०) पूरा करो, पूर्ण करो, भर दो,  
पूजा दो ।

पुरवासी तत्० (पु०) [पुर + वस् + गिच्] गृहवासी,  
घोरजन, नगर में रहने वाला ।

पुरवी दे० (स्त्री०) रागिनी विशेष ।

पुरश्चरण तत्० (पु०) [पुर + चर + णच्] मन्त्र  
आदि को चेतन करना, नियम पूर्वक मन्वन्तर्प,  
अनुष्ठान करण, विधि सहित भगवत् पूजा ।

**पुरस्कार तत् ० (पु०)** [पुरस् + कृ + घञ्] पारितो-  
पिक, आदार पूर्वक दान, साधुवाद, उत्तम कर्म का  
यदला, धन्यवाद, पूजा ।

**पुरस्कृत तत् ० (गु०)** [पुरस् + कृ + क ] अतिश्रुत,  
अप्रकृत, पारितोपिक, दत्त, पूजित, धन्य-  
वादिता ।

**पुरस्तात् तत् ० (अ०)** पूर्वदिक्, प्रथम काल, अतीत  
काल, प्रथम, पहले, आगे, पूर्व, पूर्व में ।

**पुरा तत् ० (अ०)** प्राचीन, पुराना, पुराने समय में,  
चिरन्तन, अतीत, भूत, चिरातीत, निकट, सन्न-  
हित । (दे०) गँव, पुरवा, बस्ती ।—कृत (गु०)  
प्रारब्ध, कर्म, पूर्वकाल कृत, पहले जन्म में किया  
हुआ, भाग्य, अदृष्ट ।

**पुराण तत् ० (पु०)** व्यासादि मुनि प्रणीत ग्रन्थ विशेष,  
अष्टादश पुराण, पुरातन इतिहास, पुराण उस विद्या  
को कहते हैं जिसमें प्राचीन इतिहास के सिप  
धर्म के तत्व निरूपण किये गये हैं । पुराणों में  
पाँच प्रकार के विषय लिखे जाते हैं । यथा:—  
सर्ग, प्रतिसर्ग, वंश, मन्वन्तर, और वंशानुचरित  
ये ही पाँच विषय पुराणों के वर्णनीय हैं । सर्ग—  
आदि सृष्टि की उत्पत्ति क्रम, प्रतिसर्ग  
—प्रलय के अन्तर सृष्टि का क्रम, वंश—  
देवता दानव और राजाओं की वंशावली, मन्व-  
न्तर—मनुष्यों का राज्यकाल और राज्यव्यवस्था,  
वंशानुचरित—मनुष्यों की वंशावली ।—पुरुष (पु०)  
विष्णु, नारायण, भगवान् ।—चेत्ता (पु०) पुरा-  
ण, पुराणादि शास्त्रज्ञाना, पौराणिक ।

**पुरातन तत् ० (गु०)** प्राचीन, पूर्व कालीन, बहु-  
कालीन, चिरन्तन, पुराना, अगले समय का,  
पहले का ।—कथा (खी०) इतिहास, प्राचीन  
वृत्तान्त ।

**पुराना दे० (गु०)** प्राचीन, पुरातन, पहले का, पहले  
समय का । (क्रि०) पूरा करना, भरना, पूर्ण करना,  
भर देना ।

**पुरारि तत् ० (पु०)** महादेव, शिव, शम्भु, त्रिपुर दाह  
के अनन्तर शिव का नाम त्रिपुरारि या पुरारि

पदा है । हिरण्याक्ष के तीन पुत्रों के नगरो के  
त्रिपुर या पुर संघा है । उसके नशाने के अक्ष  
महादेव का नाम पुरारि है ।

**पुरी तत् ० (खी०)** नगर, गाँव, पुर, पुरवा, गाँव,  
जगदीशपुरी, जगन्नाथ क्षेत्र ।

**पुरीतत् तत् ० (पु०)** अन्न, आँत, नाबी, एक नाई  
का नाम, निद्रा के समय मन जिसमें रहता है ।

**पुरीप तत् ० (पु०)** विद्या, मल, गूह ।

**पुरु तत् ० (पु०)** देवलोक, राजा विशेष, ययाति राजा  
का कनिष्ठ पुत्र और नहुष का पौत्र, ययाति की  
देवयानी और शर्मिष्ठा दो बहनों थीं । देवयानी  
शुक्राचार्य की कन्या थी और शर्मिष्ठा दैत्यास  
वृषपर्वा की । शर्मिष्ठा के गर्भ से तीन पुत्र उत्पन्न  
हुए थे जिनमें पुरु सब से कनिष्ठ थे । शुक्राचार्य  
के शाप से ययाति जराग्रस्त हो गये थे, उन्होंने  
अपना वारुण्य अपने पुत्रों में से किसी को देना  
चाहा परन्तु किसी ने पिता की बुढ़ाई लेने  
स्वीकार नहीं की । अन्त में उन्होंने पुरु को  
अपनी बुढ़ाई देनी चाही, पुरु ने पिता की आज्ञा  
को आदर के साथ ग्रहण किया । ययाति ने पुरु को  
ही अपने राज्य का अधिकारी बनाया ।

(२) हस्तिनापुर के चन्द्रवंशी राजा, प्रसिद्ध विक्रान्त  
असकजेंडर के भारत-आक्रमण के समय इन्होंने  
यितस्ता नदी के पास उसे रोका था, यद्यपि उस  
युद्ध में पुरु हार गये थे और असकजेंडर जीत  
गया था, तथापि उसने पुरु की धीरता से अत्युत्  
होकर इनका राज्य इन्हें लौटा दिया था ।

**पुरुकुत्स तत् ० (पु०)** मान्धाता के पुत्र, ये राजा  
शशिविन्दु की कन्या इन्द्रमती के गर्भ से उत्पन्न  
हुए थे । इनके बड़े भाई का नाम भुवकुन्द था ।  
महर्षि के शाप से पुरुकुत्स की स्त्री नदी हो गई  
थी । महर्षि सौमर्षि के साथ इनकी पाँच बहनें  
व्याही गई थी । नर्मदा नदी के उत्तर तीर के देश  
इनके राज्य में थे । नर्मदा के गर्भ से पुरुकुत्स को  
एक पुत्र उत्पन्न हुआ था जिसका नाम असद्रष्टु  
था । राजा पुरुकुत्स ने नर्मदा की प्रार्थना से याताल  
के अनेक गन्धर्वों का विनाश किया था ।

रुखा दे० ( पु० ) पूर्वपुरुष, पिता पितामह आदि ।  
रुखी दे० ( पु० ) पूर्वपुरुष, पिता पितामह- आदि,  
बापदादे ।

पुरुराज तत्० ( पु० ) बुध का पुत्र और चन्द्रमा का  
पैत्र, बृहस्पति की पत्नी तारा को चन्द्रमा हर ले  
आये थे, तारा ही से चन्द्रमा को एक पुत्र हुआ  
या जिसका नाम बुध था । राजपुत्री इला के साथ  
बुध का विवाह हुआ था । इला के गर्भ से बुध  
के पुत्र पुरुखा हुए थे । उर्वशी इन्द्र के शपथ से  
मर्त्यलोक में पुरुखा की स्त्री के रूप में उत्पन्न  
हुई । शपथी प्रतिज्ञा पूरी न करने के कारण उर्वशी  
ने पुरुखा को छोड़ दिया । उर्वशी के विरह से  
शरीर होकर पुरुखा नारों तरफ घूमते किये,  
धना में एक दिन कुरुक्षेत्र नामक स्थान में पुरु-  
खा ने उर्वशी को देख पाया । राजा ने उर्वशी को  
शपथें घर चलने के लिये कहा । उर्वशी बोलीं,  
" मैं आपने गर्भवती हुई हूँ । वर्ष के शतान्तर कई  
सन्तान उत्पन्न होने वाले हैं । मैं आपके पुत्रों को  
आपका शौचने आऊँगी, उषी समय आपके घर  
एक रात रहूँगी, उर्वशी के मात पुत्र हुए । उनको  
लेकर उर्वशी राजा को शौचने आई और उमी  
समय यह एक रात रही भी थी । प्रयाग नगरी  
पुरुखा की राजधानी थी, यह नगरी गङ्गा के  
किनारे स्थापित की गई थी । इस कारण उसका नाम  
प्रतिष्ठान था । पुरुखा को गन्धर्वों से एक शक्ति  
पूर्व स्थान मिला था । उसी शक्ति से पुरुखा ने  
अनेक यज्ञ किये और यज्ञफल से गन्धर्वलोक में  
प्राप्त हुए ।

पुरुष तत्० ( पु० ) पुमान्, नर, जीव, जीवात्मा ।  
—कार ( पु० ) पुरुष का कर्म, चेष्टा, पौष्ट्य, शौर्य ।  
—कुञ्जर ( पु० ) पुरुषच्छेद, यह शब्द भी पुरुष  
शब्द के समान है । जिस संज्ञा वाचक शब्दों  
के अन्त में यह शब्द आता है उनकी प्रकृता  
बोधन करता है । यथा—नरकुञ्जर, सचियकुञ्जर ।  
—त्व ( पु० ) पुरुषभाव, पुंसत्व, साहस, कृतिमय ।  
—त्वहीन ( पु० ) पुंसत्व रहित, नपुंसक, हिजड़ा,  
खोजा ।—सिंह ( पु० ) पुरुषसिंह, पुरुषच्छेद,  
उत्तम पुरुष ।

पुरुषाधम तत्० ( पु० ) [ पुरुष + अधम ] निकृष्ट  
मनुष्य, नीच, पातर मनुष्य ।

पुरुषार्थ तत्० ( पु० ) पुरुष का प्रयोजन, पुरुष का  
उद्देश्य—धर्म अर्थ काम और मोक्ष इनकी पुं-  
पार्थ संज्ञा है ।

पुरुषोत्तम तत्० ( पु० ) नारायण, विष्णु, भगवान्,  
श्रीकृष्ण । यज्ञभाचार्यजो के मत में गैलोक विहारी  
नित्य अनिर्वचनीय कृष्ण ।

पुरुहुत तत्० ( पु० ) पुरन्दर, देवराज, इन्द्र ।

पुरैत दे० ( स्त्री० ) कमलधेन, कमलपत्र ।

पुरोचन तत्० ( पु० ) दुर्योधन का मित्र और सेनक  
दुर्योधन की आज्ञा से इसने वारणास्य नगर में  
पाण्डवों का विनाश करने की इच्छा से लाक्षा-  
गृह बनाया था । सिद्धर के सङ्केत से पाण्डवों  
को पुरोचन की दुष्टता मान्यम हो गई । भीमसेन  
ने पुरोचन के घर में और उनके रहने के लिये जो  
लाक्षागृह बना था उसमें आग लगा कर स्वर्ध  
निजल गये । पुरोचन परिवार के साथ यहाँ  
जल गया ।

पुरोडास तत्० ( पु० ) यज्ञीय हवि विशेष, जय के  
घाटे को बनी हुई एक प्रकार की रोटी, हवन का  
अवरोप ।

पुरोध्या तत्० ( पु० ) पुरोहित, शक्तिवक्, याज्ञक, यज्ञ  
कराने वाला ।

पुरोवर्ती तत्० ( पु० ) अग्रसर, अग्रगामी ।

पुरोहित तत्० ( पु० ) शक्तिवक्, पुरोधा, याज्ञक, धर्म  
कर्म कराने वाला, ब्राह्मण, उपाध्याय ।

पुरोहितानी दे० ( स्त्री० ) पुरोहित की स्त्री, पुरोहिनी  
करने वाली स्त्री ।

पुर्यां दे० ( पु० ) प्राचीन, पुरातन, बुद्धा, बृह ।

पुर्वक दे० ( पु० ) छल, कपट, माहम, बढ़ाया,  
उत्साह ।

पुर्यां दे० ( स्त्री० ) पूर्व की हवा ।

पुर्वी दे० ( स्त्री० ) पुर्व, प्रय की हवा ।

पूर्वांना दे० ( स्त्री० ) मरदाना, पूर्ण करना ।

पूर्व्या दे० (स्त्री०) पुष्याई, पूर्व की हया ।  
 पुर्सा दे० (पु०) पुन्य का परिणाम, पुन्य के बराबर,  
 चार हाथ का नाप ।  
 पुल दे० (पु०) सेतु, बाँध, बन्ध ।  
 पुलक तत्० (पु०) रोमाञ्च, रोमाह्वेद, शरीर के  
 अन्तर और बाहर तर्पणव्य विकार, प्रस्तर विशेष,  
 मणि का दोष विशेष, गन्धर्व विशेष, हरताल ।  
 पुलकित तत्० (पु०) मजात पुलक, हर्षित, आह्ला-  
 दित, रोमाञ्चपुत्र ।  
 पुलस्ति तत्० (पु०) सप्तऋषियों के अन्तर्गत एक  
 ऋषि, ब्रह्मा के मानस पुत्र ।  
 पुलस्त्य तत्० (पु०) मुनि विशेष, सप्तऋषियों के  
 अन्तर्गत ऋषि विशेष । पुलस्ति ऋषि, ये ब्रह्मा के  
 मानस पुत्र थे, इनकी गणना प्रजापतियों में है ।  
 इनके पुल का नाम विश्रवा था ।  
 पुलट तत्० (पु०) पुलस्त्य के समान ये भी ब्रह्मा के  
 मानस पुत्र और सप्तऋषियों के अन्तर्गत हैं ।  
 इनकी स्त्री का नाम गति था, गति के गर्भ से कर्म  
 श्रेष्ठ वरीमातृ और सहिष्णु नामक तीन पुल  
 पुलह के हुए थे । कोई पुलह की स्त्री का नाम  
 चमा बताते हैं और उनके गर्भ से कर्हम अर्धरीज  
 और सहिष्णु नामक तीन पुत्रों का होना मानते  
 हैं ।  
 पुलपुला दे० (पु०) गला हुआ, सड़ा हुआ, पिल-  
 पिला ।  
 पुलपुलाना दे० (स्त्री०) भीत होना, डरना, कपना ।  
 पुलपुलाहट दे० (स्त्री०) भय, डर ।  
 पुलहाना दे० (स्त्री०) मनाना, क्षुण्य करना, प्रसन्न  
 करना ।  
 पुलाक तत्० (पु०) तुच्छ धान्य, अस्यहीन धान्य,  
 अल्पता ।  
 पुलाव दे० (पु०) मौसोदन, मौस के साथ बना हुआ  
 भात ।  
 पुलिन तत्० (पु०) तट, तीर, किनारा, जल से  
 निकला हुआ भाग, द्वीप ।  
 पुलिन्द तत्० (पु०) म्लेच्छ जाति विशेष, भील,  
 शबर ।

पुलिन्दा दे० (पु०) गठरी, गाँठ, फोटीरी ।  
 पुलोमजा तत्० (स्त्री०) इन्द्राणी, शची, रत्न के  
 स्त्री का नाम, पुलोम नामक दानव की कन्या, ये  
 इन्द्र को व्याही गयी थी ।  
 पुलोमा तत्० (स्त्री०) महर्षि भृगु की पत्नी को  
 चघवन की माता, दैत्यराज वैशवानर की दे  
 कन्या थी ।  
 पुवाल दे० (पु०) पयाल, पयाल, धान की दईरी ।  
 पुष्कर तत्० (पु०) हस्ति गुरहाय, वायामात्र पुत्र,  
 आकाश, जल, पृथ्वी, कमल, कुष्ठ रोग की शोषि,  
 काष्ठ, शर, चाण, द्वेष विशेष, युद्ध, अश्लेष,  
 तनवार को म्यान, रोग विशेष, नाग विशेष,  
 मार्स पत्नी, वरुण पुत्र, पर्वत विशेष, तीर्थ विशेष  
 जो अजमेर के पास है । एक राजा का नाम ।  
 निपथ देश के राजा नल का छोटा भाई । स्वर्णि  
 कलि की सहायता से जूए में राजा नल को हरा कर  
 उन्हें राज्यच्युत कर दिया था और स्वयं निपथ  
 देश के राजा बन गये थे । जब कलि ने नल को  
 छोड़ दिया तब नल पुनः अपने राज्य के अधिकारी  
 हुए थे ।  
 पुष्पकरिणी तत्० (स्त्री०) सौधतु के परिमाण का  
 चौकोना जलाधार, जलाशय, तालाब ।  
 पुष्कल तत्० (पु०) घास चतुष्टयात्मक मित्र । (पु०)  
 अधिक, बहुत, देर, श्रेष्ठ, उत्तम ।  
 पुष्ट तत्० (पु०) प्रतिपालित, मांसल, स्तूत, हठ पुष्ट,  
 मोटा ताजा ।  
 पुष्ट दे० (स्त्री०) श्लोष विशेष, पुष्टकर श्लोषि ।  
 पुष्टि तत्० (स्त्री०) मुटाई, पोषण, पालन, शोध्य  
 मातृकामर्गत देवता विशेष ।—कर (पु०) बल  
 बर्हुक, पुष्टई ।—दा (स्त्री०) शरवगन्धा वृक्ष, पुष्टि-  
 दात्री, स्थौल्यकारिणी ।  
 पुष्प तत्० (पु०) कुसुम, प्रभूज, फूल, स्त्री का रज,  
 विकार, कुबेर का रथ, चतु रोग विशेष, कुली  
 रोग ।—करण्डकी (पु०) उन्नतिनी नगरी का  
 एक भाग, जो शिव का आग कहा जाता है ।  
 —चाप (पु०) कामदेव, मदन ।—रस (पु०)

पुष्प का मधु, मकरन्द ।—रेणु ( पु० ) परतग, धूलि, पुष्परणु ।—विमान ( पु० ) देवताओं का विमान, कुवेर का विमान ।

पुष्पदन्त तत्० ( पु० ) शिव का अनुचर त्रिशेप, यह अनुचर एक समय शिव और पार्वती की बातें सुनना था, इससे पार्वती बहुत क्रुद्ध हुई । उनके शाप से मर्त्यलोक में कौशाम्बी नगरी में एक ब्राह्मण के यहाँ पुष्पदन्त उत्पन्न हुए थे । इस ब्राह्मण का नाम सोमदत्त था । सोमदत्त ने अपने पुत्र का नाम कात्यायन रखवि रखा था ।

( २ ) एक प्रधान गन्धर्व, ये पार्वती की सहचरी जया के स्वामी थे । इन पर किसी कारण से शिव जी क्रुद्ध हुए थे, जिससे इनकी आकाश में चलने की शक्ति नष्ट हो गयी, पुनः प्रार्थना करने पर शिवजी प्रसन्न हुए और गन्धर्व पुष्पदन्त जी गयी शक्ति फिर मिल गयी । पुष्पदन्त के बनाये शिव स्तोत्र का नाम महिम्न स्तोत्र है ।

( ३ ) अष्ट दिगर्जों में का एक दिगर्ज । उत्तर और पश्चिम दिशा के अधिपति वायु इस हाथी पर चढ़ कर उन दिशाओं की रक्षा करता है ।

पुष्पाञ्जलि तत्० ( स्त्री० ) पुष्प पूर्ण अञ्जलि ।

पुष्पित तत्० ( पु० ) विकसित, प्रकुल ।

पुष्य तत्० ( पु० ) एक नक्षत्र का नाम, आठवाँ नक्षत्र ।

पुस्तक तत्० ( स्त्री० ) ग्रन्थ, पोथी, ( यह शब्द हिन्दी साहित्य में "पोथी" अथवा "किताब" का अर्थ-याचो होने के कारण खोलिङ्ग समझा जाता है । )

पुहप दे० ( पु० ) पुष्प, कुसुम, प्रधून ।

पुहमि दे० ( स्त्री० ) पृषिनी, पृथ्वी, धरती ।

पुश्रा दे० ( पु० ) पञ्चाश विशेष ।

पुंगी दे० ( स्त्री० ) वंशी, बांसुरी, मुरली ।

पुँछ दे० ( स्त्री० ) पुच्छ, लाङ्गुल ।

पूँछना दे० ( क्रि० ) पौँछना, झाड़ना, साफ़ करना, ब्रुछना, प्रश्न करना, जिज्ञासा करना ।

पूँकार दे० ( पु० ) बड़ी पूँठ वाला, अशुद्धाट, पूँछ वाला ।

पूँजी दे० ( स्त्री० ) मूल धन, सम्पत्ति ।

पूग तत्० ( पु० ) वृन्द, समूह, राशि ।

पूगना दे० ( क्रि० ) पहुँचना, पास जाना, प्राप्त होना ।

पूगीफल तत्० ( पु० ) सुपारी, कसैली ।

पूछ दे० ( स्त्री० ) आदर, सम्मान, श्रद्धेयण, प्रश्न ।

पूछना दे० ( क्रि० ) जिज्ञासा करना, अनुसन्धान करना, टोह लगाना ।

पूछी दे० ( स्त्री० ) महलियों की पूँछ ।

पूजक तत्० ( पु० ) पुजारी, देवलय, श्रवक, मन्दिरों में बैठन लेकर पूजा करने वाला ।

पूजन तत्० ( पु० ) पूजा, श्रवण, आराधन ।

पूजना दे० ( क्रि० ) श्रवण करना, आराधन करना, ध्यान करना ।

पूजनीय तत्० ( पु० ) पूजनार्ह, पूजन के योग्य, पूजन करने के उपयुक्त ।

पूजा तत्० ( स्त्री० ) श्रद्धा, आराधना, आदर, सम्मान ।

पूज्य तत्० ( पु० ) पूजनीय, पूजने योग्य ।

पूठ दे० ( पु० ) पुढा, पशु के बूतड़ की ढड़ी ।

पूटा दे० ( पु० ) पुढा, गांता, जिह्व ।

पूड़ा दे० ( पु० ) पकौड़ी, घरा ।

पूणी दे० ( स्त्री० ) रुई की पहल ।

पूत दे० ( पु० ) पुत्र, सन्तान, बेटा, अपत्य ।

पूतना तत्० ( स्त्री० ) दानवी विशेष, इसी दानवी का कंस ने कृष्ण को मारने के लिये माकुल भेजा था ।

यह माया से सुन्दर मूर्ति बन कर नन्द के घर गयी, और कृष्ण को मोर्दा में लेकर विपत्तिगत स्तन उनको पिलाने लगी, श्रीकृष्ण स्तनपान करने लगे ; परन्तु श्रीकृष्ण के स्तनपान करने से दानवी के स्तनों में भयङ्कर पीड़ा होने लगी । उसने अपना भयङ्कर रूप प्रकट किया और श्रीकृष्ण से अपना स्तन छुड़ाने लगी ; परन्तु सुटा नहीं वेदना बढ़ने लगी, दानवी भी घोर गर्जना करती हुई सदा के लिये सा गई । श्रीकृष्ण उसकी देह पर चढ़ कर खोजने लगे ।

पूतनारि तत्० ( पु० ) श्रीकृष्ण, पूतना का वध करने वाले ।

पूतनासूदन तत्० ( पु० ) श्रीकृष्ण, नागवध ।

पूतली तत्० ( स्त्री० ) गुडिया, पुत्तलिका, कपड़े की बनी खेलने के लिये मूर्ति ।

पूतात्मा तत्० (पुं०) [पूत + आत्मा] पवित्र स्वभाव, गुह्य देह, निष्पाप शरीर, कलङ्करहित ।

पूति तत्० (स्त्री०) [पू + ति] पवित्रता, गुह्य, स्वच्छता ।—कार्यक (पुं०) कर्ण रोग विशेष, कान का पकना ।—गन्ध (पुं०) दुर्गन्ध ।

पूती-कृत तत्० (पुं०) पवित्रित, पवित्री-कृत, शोधित, गुह्य किया हुआ, मञ्जित, रक्षित, समवेत ।

पूवेना दे० (पुं०) सुगन्धि साग विशेष ।

पूनशलाई दे० (स्त्री०) शलाका विशेष, जिससे पूनी बनार्ई जाती है ।

पूनिया दे० (स्त्री०) पूर्णिमा, पूर्णमासो, मास का अन्तिम दिन, जिस दिन महीना समाप्त होता है ।

पूनी दे० (स्त्री०) रुई का गारा ।

पूनो दे० (स्त्री०) पूनिया, पूर्णिमा, पूर्णमासी ।

पूप तत्० (पुं०) पूआ, पिण्डक, पक्वान विशेष ।

पूप तत्० (पुं०) ऋण से निकला हुआ गदा अफेद विगडा हुआ पून, दुर्गन्ध रक्त, पीय ।

पूर तत्० (पुं०) जल स्रवह, जल प्रवाह, जल धारा, पाद्य विशेष ।

पूरक तत्० (पुं०) पूरणकर्ता, समापक, समाप्ति करने वाला, प्राणायाम विशेष । वायीं नाक से प्रवास लीचन का नाम पूरक है । गुणन करने का अङ्क, फल विशेष, बीज पूरक, विजोरा नीबू ।

पूरण तत्० (पुं०) [पूर + ण] विण्ड विशेष, पूर्ण करना, भरना, पूरा करना, भर देना ।

पूरना दे० (स्त्री०) विनना, सुनन, बनाना ।

पूरणीय तत्० (पुं०) पूर्ण करने के उपयुक्त, पूरा करने के योग्य ।

पूरुव तद्ग० (पुं०) पूर्व दिशा ।

पूरा दे० (स्त्री०) पूरण, पूर्ण, भरा पूरा, सब, समस्त, सम्पूर्ण ।

पूराई दे० (स्त्री०) अफाई, भराई, पूर्णता ।

पूरिया दे० (स्त्री०) रागिनी विशेष ।

पूरी दे० (स्त्री०) लुचई, सोहारी, पक्वान विशेष ।

पूर्ण तत्० (पुं०) भरा, पूरा, सम्पन्न, गेरा ।—कुल (पुं०) जल पूरित घट, मङ्गल घट, पूर्ण कण ।

—ज्या (स्त्री०) सीधारोदा, सीधी रेखा ।—ला (स्त्री०) मूर्ति, पूरण, भरण ।—पात्र (पुं०) म्पू पूर्ण पात्र, हवन के समय चावल आदि स भर का दान किया जाने वाला पात्र । पात्र विशेष, जिसमें २५६ मुट्टी चावल भरा जाता है ।—भूत (पुं०)

काल विशेष, पहले का समय, बीता समय । जो समय स्वयं देखा गया हो । परन्तु उठे होते बहुत दिन हो गये हों वह पूर्णभूत कहा जाता है ।

—मासी (स्त्री०) पूर्णिमा, शुक्ल पक्ष की पन्द्रहवीं तिथि ।

पूर्णा तत्० (स्त्री०) पञ्चमी, दशमी, पूर्णिमा और समाप्त्या इनकी पूर्ण सदा है ।

पूर्णावतार तत्० (पुं०) भगवान् का अवतार विशेष, भगवान् का योद्धा कलाशौं का प्रकाश । श्रीकृष्ण भगवान् ।

पूर्णाहुति तत्० (स्त्री०) [पूर्ण + आहुति] हवन पूज करने की आहुति, अन्तिम आहुति ।

पूर्णिमा तत्० (स्त्री०) शुक्ल पक्ष की पन्द्रहवीं तिथि, जिस दिन चन्द्रमा की कला पूर्ण होती है ।

पूर्त तत्० (पुं०) छातादि फर्न, परोपकार्यं ताताय कुशौं आदि खुदवाना ।

पूर्ति तत्० (स्त्री०) पूरण, भरण, पालन, पूर्णता, समाप्ति ।

पूर्व तत्० (पुं०) पूरुव दिशा, प्राची दिशा । (पुं०) पहले का, आदि का, आद्य, प्राथमिक ।—गङ्गा (स्त्री०) नदी विशेष, जर्मदा विशेष ।—ज (पुं०) ज्येष्ठ घाता, अग्रज ।—दिन (पुं०) गत दिवस, गया कल का दिन ।—देश (पुं०) प्राची दिशा के देश, मध्य देश ।—पक्ष (पुं०) शुक्ल पक्ष, श्राद्ध का प्रश्न, सिद्धान्त का विकट पक्ष ।—पुरुष (पुं०) पिता वितामह आदि ।—याम (पुं०) प्रथम प्रहर, पहला पहर ।—वत् (पुं०) पहले के समान ।

—वती (पुं०) आगे वाला, अग्रज ।—बाणु (पुं०) पूर्ण का पवन, प्रवैया ।—लिखित (पुं०) पहले का लिखा हुआ ।—राग (पुं०) नायक और

नायिकां को अश्वस्था विगेष । दर्शनं चयणं जन्म परस्परं चतुराग ।

“जो प्रथमदिं देखे सुने, चाहे प्रेम सभाम ।  
दिन मिलाव जो विकलता सो है पूरय राग ॥”  
—रसराज ।

सां तत्० ( श्री० ) पूर्व दिक्, प्राची दिक्, प्रथम ।  
(गु०) पूर्वक, प्रथम जात, पूर्वपुरुष । (दे०) गौव,  
पूरवा, टोला ।—ऽभिमुख (गु०) पूर्व मुख, पूरव  
के सामने ।—ऽभ्यास (गु०) पहले का अभ्यास,  
धामि की धान ।—ऽवधि (गु०) पूर्व कालावधि,  
तिरकाल पर्यन्त ।—ऽवस्था (श्री०) पहले की  
अवस्था, प्रथम अवस्था ।—ऽपाहा (श्री०) सत्ता-  
रंश नक्षत्रों के अन्तर्गत बोलवाँ नक्षत्र ।—ऽह्नि  
(गु०) दिन के भाग का पहला भाग, दिन का  
पहला धाम ।

र्वी दे० (श्री०) रागिनी विगेष ।

र्वीक तत्० (गु०) [पूर्व + उक्त्] प्रथम कथित, पहले  
कहा हुआ ।

ला दे० (गु०) घास की अंठिया, घास की गह्वी ।

एय दे० (गु०) गीय मास, ब्रह्म, धनुर्मास ।

इपण तत्० (गु०) सूर्य, रवि ।

इया तत्० (श्री०) झुजन, चन्द्रकला विगेष, शरीरस्थ  
यायु विगेष, जो दक्षिण कान से निकलता है ।

(गु०) सूर्य, रवि, भास्कर ।

इच्छुक तत्० (गु०) प्रसक्तता, जिज्ञासु, पूछने  
वाला ।

इच्छा तत्० (श्री०) जिज्ञासा, प्रश्न, पूर्वपत् ।

इतना तत्० (श्री०) शैत्य, सेना, फटक, विगेष  
संगायुक्त सेना ।

इत्तु तत्० (श्री०) मित्र, शत्रु, विषहेद, न्याय ।  
—करण (गु०) अज्ञय करना, मित्र करना,  
घाँटना, विभक्त करना ।—क्षेत्र (गु०) एक से  
अनेक वर्ष की खियों में उत्पन्न पुत्र ।

इत्तमात्मता तत्० (श्री०) विवेक, वैराग्य ।

इत्तजन तत्० (गु०) माधारण मनुष्य, सूर्य, नील,  
पापी, प्राकृत ।

पृथाविध तत्० (श्री०) नाना प्रकार, अनेक विध,  
विविध, बहुरूप ।

पृथवी दे० (श्री०) पृथिवी, भूमि, धरती ।

पृथर तत्० (श्री०) कुन्ती, वायुदेवों की माता ।

पृथिवी तत्० (श्री०) भूमि, धरिणी ।—पति (गु०)  
भ्रूपति, राजा, यम, वराह, अश्व नामक शीपथि ।

—पाल (गु०) राजा, भ्रूपति, भूमिदेव ।

—पालक (गु०) राजा, भ्रूपति, दण्डधर ।

पृथु तत्० (गु०) महत्, निपुण, विशाल । (गु०)  
भेतायुग के मनुवंशी पौष्ये राजा, चादि राजा ।

ये वैष्णु राजा के पुत्र थे । इन्होंने अपने बाहुबल से  
पृथिवी के समस्त राजाओं को जीत लिया था ।  
इन्होंने पृथिवी को घराघर-समस्त कर दिया था,  
इस कारण इनका नाम पृथु पड़ा था । इनके राज-  
सुय यज्ञ में चाकर महर्षियों ने इनका राज्यभि-  
वेक किया था । इनके शासनकाल में विना जीते  
ही भूमि से अन्न उत्पन्न होता था । महाप्राण पृथु  
ने अनेक यज्ञ किये थे, और समस्त प्राणियों को  
अभिलषित द्रव्य प्रदान करके संस्तुष्ट किया था ।

इन्होंने अश्वमेध यज्ञ करने के समय पृथिवी की  
समस्त वस्तुओं की सोने की प्रतिमा बनवा कर  
प्राणियों को दिया था । उन्होंने इई हजार सुवर्ण  
छत्र और मणिरत्न भूयित सुवर्णमय पृथिवी बनवा  
कर प्राणियों को दान दी थी । इनकी उत्पत्ति  
इस प्रकार है । अत्रियंशी अह्न नामक प्रजापति ने  
धर्मराज की कन्या मुनिद्या के गर्भ में वैष्णु नामक  
एक पुत्र उत्पन्न किया था । वैष्णु महादुराचारी  
और क्रुमर्गी राजा था । उसकी समझ ने संसार में  
उसके अतिरिक्त और कोई पुत्र के योग्य न था,  
अतएव उसने याग यज्ञ चादि करना बन्द कर  
दिया । वैष्णु के अत्याचार ने प्रजा दुःखित होगयी,  
तब मरीचि चादि ऋषियों ने वैष्णु को चितावनो  
दी, परन्तु उसने इन बातों पर कुछ भी ध्यान नहीं  
दिया, तब महर्षियों का क्रोध और बढ़ गया,  
उन्होंने वैष्णु का निग्रह करना ठान लिया । महर्षि  
मिल कर वैष्णु के उद को मथने लगे, मथने से एक  
काला मनुष्य उत्पन्न हुआ । जो निष्कृ-जाति



का आदि पुरुष है । पुनः ऋषियों ने वेणु का दहिना हाथ मथना प्रारम्भ किया, उससे पृथु की उत्पत्ति हुई ।

पृथुक तत् ( पु० ) [पृथु + क] चितड़ा । ( पु० ) बालक, शिशु, कुमार ।

पृथुरोमा तत् ( पु० ) [पृथु + रोमत्] मङ्गली, मत्स्य, मोन । ( पु० ) वृहल्लोमयुक्त, रोमोंदार ।

पृथुल तत् ( पु० ) महत्, बड़ा, अति विस्तृत ।

पृथुशिवा तत् ( पु० ) पञ्च विशेष, स्थाना वृत्त ।

पृथुदक तत् ( पु० ) [पृथु + उदक] तीर्थ विशेष ।

पृथुदर तत् ( पु० ) [पृथु + उदर] मेघ, भेंड़ । ( पु० ) वृहत् उदर युक्त, बड़ा पेट वाला ।

पृथ्वी तत् ( स्त्री० ) पृथिवी, धरती धरित्री ।—पति ( पु० ) राजा, नरपति ।—पाल ( पु० ) राजा, भूपति ।

पृथ्वीका तत् ( स्त्री० ) यही पलायकी, छोटी इला-  
रधी, कृष्ण जीरक, कर्कोजी ।

पृथ्वीराज तत् ( पु० ) भारत का अन्तिम हिन्दू राजा । सन् ११९२ ई० में महम्मद ग़ोरी पृथ्वी-  
राज को जीत कर और क़ैद कर ग़ज़नी ले गया ।  
वहाँ ने जाकार उसने पृथ्वीराज की आँखें फोड़  
वाली । अन्त में चन्द कवि के कौशल से महाराज  
पृथ्वीराज ने महम्मद ग़ोरी का बध किया और  
स्वयं उन्होंने आत्महत्या कर ली । (देखो जयचन्द)

पृथुत् तत् ( पु० ) विन्दु, कण, श्वेत विन्दु युक्त मृग,  
राजा विशेष ।

पृथुक तत् ( पु० ) बाण, शर ।

पृथुश्च तत् ( पु० ) [पृथु + चश्च] वायु, पवन,  
यत्नास, राजा विशेष ।

पृथोदर तत् ( पु० ) [पृथ + उदर] अर्धोदर, छोटे  
पेट वाला ।

पृथु तत् ( पु० ) गरीर के पीछे का भाग, पीठ ।

—प्रस्थि ( पु० ) कुम्भ, कुण्ड ।—ता ( स्त्री० )

पक्षात्, पृष्ठ देश, पीठ की ओर ।—चंश ( पु० )

पृष्ठास्थि, पीठ की हड्डी, मेरुदण्ड ।—प्रण ( पु० )

पृष्ठ देश में स्कोटक विशेष, पिरकी ।

पृष्ठास्थि तत् ( स्त्री० ) [पृष्ठ + अस्थि] पीठ  
हड्डी ।

पैई दे० ( स्त्री० ) पिठारी, मञ्जुषा, पेटी ।

पैंग दे० ( स्त्री० ) झूला का हिलाना, पति विशेष ।

पैठ दे० ( स्त्री० ) हाट, यज़ार, मरडी ।

पैदा दे० ( पु० ) तला, पैदी, नीचे का भाग, सबी  
भाग ।

पेखना दे० ( स्त्री० ) प्रेक्षण, देखना, निरखना, दर्श  
करना । स्वाँग बनाना, खेल करना, झोड़ा करना ।

पेखनिया दे० ( पु० ) स्वाँग रखने वाला, गुरुद्वारा,  
देखने वाला, दर्शक ।

पेखवैया दे० ( पु० ) देखने वाला, देखवैया, प्रेक्षक ।

पेखित दे० ( पु० ) प्रेषित, भेजा हुआ ।

पेच दे० ( पु० ) घुमाव, मरोट, कील विशेष, कौटा ।

पेचक तत् उल्लूक, उल्लू ।

पेचा दे० ( पु० ) उल्लू ।

पेट दे० ( पु० ) उदर, जठर ।—आना ( स्त्री० ) पेट  
चलना, दस्त आना, अधिक भाड़े फिरना, दस्त  
की बीमारी ।—की दुख देना ( स्त्री० ) पूँजी

मरना, पेट भर भ्रम न घाना ।—का पानी न  
हिलाना ( स्त्री० ) किसी बात को दिवाना, प्रकाश  
करने का समय आने पर भी प्रकाशित नहीं करना,  
हिलाना, झुलना नहीं, स्थिर रहना ।—की भाग

( स्त्री० ) बुधा, भूल की पीडा, सन्तान का दुःख ।

—की भाग बुझाना ( स्त्री० ) घाना, भोजन  
करना ।—की बातें ( स्त्री० ) गुप्त बातें, द्वेषी बातें ।

—गड़बड़ाना ( स्त्री० ) पेट में दर्द होना, पेट की  
पीडा ।—गिरना ( स्त्री० ) गर्भपात होना, गर्भ का

गिर जाना, गर्भ नष्ट होना ।—जलना ( स्त्री० )  
झूला रहना, बुधित होना ।—दिखाना ( स्त्री० )

अपनी अश्रुता अनांसा, दरिद्रता प्रकाशित करना ।

—पालना ( स्त्री० ) किसी प्रकार निर्वाह करना,  
स्वार्थ साधना, दुःख ने दिन बिताना ।—पीठ

एक होना ( स्त्री० ) दुर्बल होना, निर्बल होना ।

—पीछन ( स्त्री० ) मंत्र में छोटा लड़का, अन्तिम  
गर्भ की सन्तान ।—पोसू ( पु० ) पेटार्थ, पेट,

खाल, पेट-वालने खाला ।—फूलना ( वा० ) बहुत  
हँसना, हँसते हँसते पेट में बल पड़ जाता ।  
—घड़ाना ( वा० ) लीम करना, दूसरे का धन  
पचाना ।—घाँघना ( वा० ) कम पचना ।—भर  
( वा० ) जो भर, बचका भर ।—भरना ( वा० )  
घसाना, तृप्त होना, मुल करना, तृप्त करना, मुल  
देना ।—मारना ( वा० ) खात्मघात करना, स्वयं  
मार कर मर जाना, खात्महत्या करना ।—में  
पैडना ( वा० ) चन्तरङ्ग बनना, चायम्त मित्र  
बनना, भेद सैना, मोतर की बातें जानना ।—में  
लेना ( वा० ) सहना, भेजना ।—रहना ( वा० )  
गर्म रहना, गर्भवती होना ।—लग जाना ( वा० )  
धूलों मरना, भूले रहना, पेट भर चात्र न मितना ।  
—लग रहना ( वा० ) चुपित होना, भूले रहना ।  
से होना ( वा० ) गर्भिणी होना, पेट रहना, गर्भ  
रहना ।—डड़बड़ाना ( वा० ) पेट की बोमारो  
होना ।

पेटा दे० ( पु० ) टोकरा, विटारी, विटारा ।

पेटारा दे० ( पु० ) विटारा, टोकरा ।

पेटार्थी, पेटार्थ्य दे० ( पु० ) खाल, पेट ।

पेटिया दे० ( पु० ) प्रति दिन का भोजन, सीधा, एक  
सन्ध्या खाने के योग्य सीधा ।

पेटो दे० ( स्त्री० ) कमरबन्द, कमरकस, पेट का  
बन्धन, विटारी, सन्दूक, छोटा विटारा ।

पेटू दे० ( पु० ) पेटार्थी ।

पेटौखा दे० ( पु० ) रोग विशेष, अतिमार, घाँव  
गिरना, दिकदिकाना, श्याकुलता, उद्वेग, उद्विग्नता ।

पेटा दे० ( पु० ) कौहड़ा, कुम्हार ।

पेटू दे० ( पु० ) वृष, ह्रस्व, तनु, द्रुम ।

पेट्टा दे० ( पु० ) मिठाई विशेष, एक मिठाई का नाम ।

पेट्टी दे० ( स्त्री० ) छोटा पेट्टा, सुपारी, नील आदि की  
कटी हुई चाँठी ।

पेट्टू दे० ( पु० ) नामो के नीचे का भाग ।

पेमा तद्दे० ( पु० ) प्रेम, स्नेह, प्रीति ।

पेमी तद्दे० ( पु० ) प्रेमी, प्रीतिपात्र, प्रिय ।

पेय तद्दे० ( पु० ) पान योग्य, पान करने के उपयुक्त ।

पेस दे० ( पु० ) पति विशेष, विशालती सुर्गा ।

पेलना दे० ( क्रि० ) टेनना, ठसना, ठौठना, चुसेड़ना ।  
तेप निकालना ।

पेलम दे० ( पु० ) अयराध, दोष ।

पेलू दे० ( पु० ) दकेर, चुसेड़ू ।

पेघड़ी दे० ( स्त्री० ) पीला रङ्ग, पिघड़ ।

पेघसी दे० ( स्त्री० ) पीपूष, अमृत, सुधा, खाद्य विशेष,  
जो जठे दूध से बनता है, हाल की उपायो गौ का  
पहला दूध ।

पेशाय दे० ( पु० ) सूत्र, सूत, प्रश्नाय ।

पेशी तद्दे० ( स्त्री० ) अण्ड, माँगपेशी, सुपहकलिका,  
नदी विशेष, पिशाचो विशेष, रातसी विशेष,  
अधिकेय, प्यान ।

पेपक तद्दे० ( पु० ) मर्दनकारी, पीसने वाला ।

पेपण तद्दे० ( पु० ) [ पिष् + षणच् ] मर्दन, पीसना,  
पूर्ण करना, बाँटना ।

पेपणी तद्दे० ( स्त्री० ) पेपण पत्र, गिलावट, सिस ।

पेपणीय तद्दे० ( पु० ) पेपण योग्य, पीसने योग्य ।

पे दे० ( च० ) पर, परन्तु ।

पेंचना दे० ( क्रि० ) पछोड़ना, फटकना, घताना ।

पेंचा दे० ( पु० ) उधार, बदला, घतटा ।

पेंजनो दे० ( स्त्री० ) भ्रूषण विशेष, पैर का गहना, एक  
आभूषण जिसे लड़के पहनते हैं ।

पेंड दे० ( स्त्री० ) फाल, डेग, चलने के समय दोनों पैर  
के बीच की भूमि ।

पेंड़ा दे० ( पु० ) मार्ग, घाट, गैम ।

पेंताना दे० ( क्रि० ) पैर की चोर, पदात्त, पापत्त ।

पेंतालीस दे० ( पु० ) संपत्ता विशेष, सत्तीस और  
पाँच, ४५ पाँच अधिक चासीस ।

पेंतीस दे० ( पु० ) संपत्ता विशेष, तीस और पाँच, ३५ ।

पेंसठ दे० ( पु० ) संपत्ता विशेष, साठ और पाँच, ६५ ।

पेंकड़ा दे० ( पु० ) बेड़ी, सँकर, रिकाय ।

पेंकी दे० ( स्त्री० ) दुक्के का माड़ा दिवैया ।

पेंगू दे० ( पु० ) ब्रह्मदेश का प्रान्त विशेष ।

पेंज दे० ( पु० ) धन, प्रमिदा, होड़ ।

पैठ दे० (पौ०) हुपड़ी का खोजा, पहुँच, हुपड़ी की प्रतिलिपि, हुपड़ी के खोने पर जो लिखी जाती है। पहुँच प्रवेश।

पैठना दे० (क्रि०) प्रवेश करना, घुसना, भीतर जाना।

पैठालना दे० (क्रि०) प्रवेश कराना, घुसाना, पैमार कराना।

पैड दे० (पु०) पदाङ्क, पदचिन्ह, पैरों का चिन्ह।

पैडा दे० (पु०) कँचो खडाक, जो बरसात के दिनों में काम में लायी जाती है।

पैडी दे० (स्त्री०) सीडी, नोवान, निघेनी।

पैतरा दे० (पु०) चलने की रीति, गति विशेष, कुरती या लकड़ी खेनने के समय की चाल।

पैतला दे० (पु०) उपला, छिडला, उत्तान।

पैतुक तत्त्वं (पु०) पितृधन, पिता का धन, सपौती, माफूसी।

पैदल दे० (पु०) पैरों से चलने वाला, पदाति, सिपाही।

पैन दे० (पु०) छोटी नहर, नाली, खेतों में पानी से जाने के लिये छोटी नहर।

पैना दे० (पु०) निशित, तीक्ष्ण, तेज, अद्भुत शक्ति।

पैनाना दे० (क्रि०) तीक्ष्ण करना, तेज कराना, धार दिलवाना।

पैनाला दे० (पु०) पनारा, मोटे।

पैया दे० (पु०) पहिया, चक्र, निस्सार धान्य।

पैयान तत्त्वं (पु०) प्रस्थान प्रस्थिति, बिदा, यात्रा।

पैर दे० (पु०) पाँव पद, चरण।

पैरना दे० (क्रि०) पैरना, तिरना, तरण करना।

पैराई दे० (स्त्री०) पैरना, पैरने की रीति।

पैराऊ दे० (पु०) पैरने वाला, अच्छी तरह पैरना जानने वाला।

पैराव दे० (पु०) पैरने के योग्य जल, अधिक जल, दुषाव।

पैरी दे० (स्त्री०) पाँव का एक प्रकार का गहना।

पैला दे० (पु०) काष्ठ का पात्र विशेष, जिससे अन्न आदि मापा जाता है। मापपात्र।

पैशाच तत्त्वं (पु०) षाट प्रकार के विवाह क क्रम गंत एक विवाह। (पु०) पैशाच सम्पन्न पैशाच का।

पैशून्य तत्त्वं (पु०) विग्रुनता, खलता, परनिन्दा, का अहित चिन्तन।

पैसा दे० (पु०) ताँबे का सिक्का, डेबुषा, धन, रूप, रोकड़, सम्पदा।—उडाना (वा०) बहुत धन करना, अधिक व्यय करना, बुराना खर्च।

—खाना (वा०) विश्रामघात करके खा नाना

—डुयोना (वा०) धन गँवाना, धन बर्बाद करना।—डुयना (वा०) धन का मारा नाना, धन का नाश होना।

पैसे लगाना दे० (वा०) धन लगाना, धन खर्च करना।

पैसेवाला दे० (पु०) धनवान, धनी।

पैसा से दरवार बाँधना दे० (वा०) पूँस दान किसी दरवार में प्रवेश करना, पूँस देना।

पैसार दे० (पु०) प्रवेश, पैठ।

पैहे दे० (क्रि०) पासगा, प्राप्त करेगा।

पोआ दे० (पु०) सौँव का बच्चा, दूध पीने वाला बच्चा, छोटा लडका।

पोआना दे० (क्रि०) चमाना, तपाना, रोटी खेच करके देना।

पोईस दे० (पु०) खलगहेर, दूर, यह शब्द नीच जातिपों को सावधान करने के लिये—जिससे वे लुप्ट नहीं बोलना जाता है।—अथवा वे ही बोलते जाते हैं जिससे लोग हट जाँय।

पोकना दे० (क्रि०) छेना, दस्त देना।

पोका दे० (पु०) कोट, कृमि।

पोगा दे० (पु०) प्लं, डीला पोर। (पु०) हँडा, शून्य।

पोगी दे० (स्त्री०) जली, छूँड़ी, खोलकी, झुर्की छो।

पोछना दे० (पु०) भाङन साफ करण।

पोखना दे० (क्रि०) भाङना, साफ करना, खरक करना।

पोटा दे० (पु०) नासिका मल, नेटा, बिनक।

पोखर दे० (पु०) .ताभाव, सरोवर, तडाग ।  
 पोखर दे० (पु०) गौठ, गठरी, मेंट ।  
 पोखला दे० (पु०) बड़ी गठरी, गहर, गढ़ा ।  
 पोखली दे० (खी०) गठरी, शहर विशेष ।  
 पोटा दे० (पु०) गंदा, पलक, पत्ती का भाग ।  
 पोटा दे० (पु०) पुट, बलवाह, प्रौढ़, साहसी, उम्दाही ।  
 पोटाई दे० (खी०) जड़ाई, पुष्टता, बलवन्ता ।  
 पोत तत्० (पु०) क्षिप्रु, शावक, यस्त, बघा, तरणी, नौका, समुद्रयान, जहाज, दस वर्ष का हाथी ।  
 पोतक तत्० (पु०) घालक, बघा ।  
 पोतड़ा दे० (पु०) बच्चे का विश्रौता ।  
 पोतड़ी दे० (खी०) खेरो, किङ्की, हल ।  
 पोतना दे० (क्रि०) नीयना, मिट्टी या जूने से दोघाल पोतना । (पु०) पोतने का वज्र या कुँची, जिससे पोतते हैं, पोता ।  
 पोता दे० (पु०) पौत्र, पुत्र का पुत्र, पुत्र का लड़का, पुतना ।  
 पोती दे० (खी०) पुत्र की कन्या, पौत्री, बेटे की कन्या ।  
 पोधा दे० (पु०) बड़ी पोमी, ग्रन्थ ।  
 पोधी दे० (खी०) ग्रन्थ, पुस्तक ।  
 पोदना दे० (पु०) पत्ति विशेष ।  
 पोना दे० (क्रि०) गुंघना, गौघना, गूहना, पिरौना ।  
 पोपनी दे० (खी०) बाधा विशेष, एक बाजा का नाम ।  
 पोपली दे० (पु०) अशंत, दलरहित, विन दांत का ।  
 पोपन्वा दे० (पु०) रङ्गीन वस्त्र, एक प्रकार का रंगा हुआ कपड़ा ।  
 पोप दे० (खी०) लता विशेष जो बरसात में उरफर होती है, शाक विशेष ।  
 पोप दे० (पु०) गौठ, ग्रन्थि, बॉस की गौठ, दो गौठों के बीच का भाग ।  
 पोपी दे० (खी०) छोटी गौठ ।  
 पोला दे० (पु०) लूहा, गून्स, रीता, रिक, पाली, नरम, कोमल ।  
 पोली दे० (खी०) अमारी, अनाड़ी, धूर्ख, अहानी ।  
 पोपक तत्० (पु०) [पुप + णक्] पालक, पालनकर्ता, भरणकारी, सहायता देने वाला ।

पोषण तत्० (पु०) [पुप + भणट्] प्रतिपालन, रक्षण, भरण ।  
 पोषणीय तत्० (पु०) पोष्य, पोषने योग्य, पोषण करने के उपयुक्त ।  
 पोषयित्तु तत्० (पु०) कोकिल, भर्ता, पति, स्वामी ।  
 पोषा तत्० (पु०) पोषक, पालयिता, पालन करने वाला ।  
 पोष्य तत्० (पु०) पाल्य, पोषणीय, पालन करने योग्य ।—पुत्र (पु०) दत्तक पुत्र, पालन पोषण के द्वारा बनाया हुआ पुत्र ।—वर्ग (पु०) भरण्य पालनीय, वृद्ध पिता माता आदि । परिजन वर्ग ।  
 पोसना दे० (क्रि०) पालना, पोषण करना, रखा करना ।  
 पोस्ता दे० (पु०) अज़ीम का वृक्ष, दाने का पेड़ ।  
 पोह दे० (पु०) प्रातःकाल, भोर, तड़का, विहान, सबेरा ।  
 पोहना दे० (क्रि०) रोटी बनाना, गूँघना ।  
 पौ दे० (खी०) जल सत्र, चौबड़ के पाने का एका ।  
 पौगण्ड तत्० (पु०) अथव्या विशेष, पौत्र वर्ष से सोलह वर्ष की अवस्था तक ।  
 पौड़ा दे० (पु०) ईक्षु विशेष, ऊल, पौड़ा ।  
 पौड़ना दे० (क्रि०) मोना, शयन करना, लेटना ।  
 पौण्डरीक दे० (पु०) पुण्डरीक सम्बन्धी, कमल का ।  
 पौण्ड्र तत्० (पु०) देय विशेष, चन्देल देय, भीममेन के शत्रु का नाम, ईक्षु विशेष, पौड़ा, ऊल ।  
 पौण्ड्रक तत्० (पु०) जाति विशेष, ईक्षु विशेष । पुण्ड्र देश का एक राजा, पौण्ड्रक वामुदेव नाम से इनको प्रसिद्धि है । अरावन्ध के ये बड़े मित्र थे । इनके पिता का नाम वसुदेव था । वसुदेव की दो बियाँ थीं, सुतनु और नाचाडी, सुतनु के गर्भ से पौरुण्ड्रक और नाचाडी के गर्भ से कविन उत्पन्न हुए थे, कविन संभारत्यागी होकर योगी हो गये । अपना वामुदेव नाम रख कर पौरुण्ड्रक राज्य करते थे । वामुदेव श्रीकृष्ण द्वाराका ही से रमकी दिखाई मुना करते थे । श्रीकृष्ण का वामुदेव कहा जाना पौरुण्ड्रक से महा नहीं जाना था । पौरुण्ड्रक

कहा करता था मैं शङ्खवक्र गदाधारी हूँ, मेरे पास भी शार्ङ्गधनु और शर तथा तूणीर हैं। मेरे जैसी क्षमता किम में है, इसी प्रकार यह अपनी उद्वहता प्रकाशित किया करता था। यह और भी कहता था कि यामुदेव इस नाम को खाल के छोकरे ने ले लिया है। श्रीकृष्ण को सुधारने के लिये उसने द्वारिका पर आक्रमण किया था। अनेक यादव इसकी सेना के द्वारा मारे गये। अन्त में श्रीकृष्ण और पोषडक के साथ युद्ध हुआ, अब पोषडक को अजली यामुदेव का पता लग गया, इसी युद्ध में वह मारा गया।

पौत्तलिक दे० ( गु० ) अन्धविश्वासी, अदेयुक निहान्त को मानने वाला, बिना विचारे किसी मनुष्य की यातों पर विराम करने वाला।

पौत्र तत्० ( पु० ) पोता, पुत्र का पुत्र।

पौत्री तत्० ( स्त्री० ) पोती, पुत्र की कन्या।

पौधा दे० ( पु० ) वृक्ष का अंकुर, छोटा वृक्ष।

पौन दे० ( स्त्री० ) तीन चौपाईं, चार भाग का तीन हिस्सा।

पौना दे० ( पु० ) भ्रान्त, लोहे का एक घर्तन जिससे नेव तथा पकोड़ी आदि छानी जाती हैं।

पौने दे० ( गु० ) एक चौपाईं कम।

पौर तत्० ( गु० ) नगर सम्बन्धी, द्वार, कियाह, फाटक।

पौरव तत्० ( पु० ) पुरु वंशमत्त राजा विशेष, दुष्यन्ता।

पौरस्य तत्० ( गु० ) प्रथम, आद्य, पूर्व का, पूर्वोप, पूर्व दिशा सम्बन्धी।

पौराणिक तत्० ( पु० ) पुराण शास्त्रवेत्ता, पुराण मतावलम्बी।

पौरिया दे० ( पु० ) द्वारपाल, द्वारपालक, डेवडीदार, दरवान।

पौरौ दे० ( स्त्री० ) पौर, डेवडी, द्वार।

पौरुष तत्० ( पु० ) पुरुषत्व, पुरुष का कर्म, पुरुष की शक्ति, पुरुष का परिमाण।

पौरुषेय तत्० ( गु० ) पुरुष निर्मित, पुरुष का बनाया हुआ।

पौरौहित्य तत्० ( पु० ) उपोहित का कर्म।

पौरुमासी तत्० ( स्त्री० ) पूर्णिमा, पूर्णमासी, वृन्दवन की अष्टावक्रा देवी।

पौरौक्षिक तत्० ( गु० ) पूर्वाह्न की क्रिया, पूर्वाह्न सम्बन्धी।

पौलस्त्य तत्० ( पु० ) कुत्रेत्, रावण, कुम्भक, विभीषण।

पौलिया दे० ( स्त्री० ) पीरिया, छोटी लडाकूँ।

पौली दे० ( स्त्री० ) पीरी, लडाकूँ।

पौलोमी तत्० ( स्त्री० ) पुलोमजा, पुलोम नामक दानव की कन्या, इन्द्राणी, शची।

पौचा दे० ( पु० ) चौथा भाग, पाव भर।

पौष तत्० ( पु० ) पूष, शैवादि द्वादश प्रदीपों के अन्तर्गत दशम मास।

पौष्टिक तत्० ( पु० ) पुष्टि बर्द्धक कम।

पौसरा दे० ( पु० ) पी, प्याक, प्रपा, पानी पिलाने का स्थान।

पौह दे० ( पु० ) जलशाला, जल सत्र।

प्याना दे० ( क्रि० ) पिलाना, पान कराना।

प्यार दे० ( पु० ) प्रेमी, प्रीति, स्नेह।

प्यारा दे० ( गु० ) प्रेमी, प्रिय, स्नेही, प्रियतम।  
—जानना ( या० ) चादर करना, सम्मान करना, प्रेम जानना।

प्यारी दे० ( स्त्री० ) प्रिया, पियारी, प्रियतमा।

प्याचना दे० ( क्रि० ) प्याना, पिलाना, पान कराना।

प्यास दे० ( स्त्री० ) तृषा, विषादा, तृष्णा।—बुझाना ( या० ) पानी पीना, प्यास दूर करने के लिये कैलाह पानी पी लेना।—लगाना ( या० ) विषादा लगाना, तृषा मान्न होना।

प्यासा तत्० ( गु० ) विषादित, तृषावन्त, तृष्णा-न्यत।

प्यासे मारना दे० ( या० ) अधिक प्यास लगाना, विषादित होना।

प्र तत्० ( उपसर्ग ) प्रारम्भ, उत्कर्ष, सर्वतोभाष्य, प्राथम्य, आद्य, पयानि, उत्पत्ति, व्यवहार।

कट तत्० (गु०) [ प्र + कट + घञ् ] स्पष्ट, प्रकटित, प्रकाशित, उभक्त ।  
 कटन तत्० (गु०) [ प्र + कट + घनट् ] प्रकाशन, उभक्तिकरण, प्रकाश करना, उभक्त करना ।  
 कटित तत्० (गु०) प्रकाशित, उभक्त, स्पष्ट ।  
 कटप तत्० (गु०) कौवन, कँपकँपाहट, घरघरी ।  
 कटपन तत्० (गु०) घायु, नरक विशेष ।  
 कर तत्० (गु०) कैने हुए कुसुम खादि, समूह, दल, गिरोह ।  
 करण तत्० (गु०) [ प्र + कृ + घनट् ] प्रस्ताव, अभिनय करने की रीति, रूपक भेद, ग्रन्थ मन्थि, ग्रन्थ विश्लेष, निरूपणार्थ एक विषय की समाप्ति । एकार्यवाचक सूत्रों का समूह, प्रसङ्ग, काण्ड, अध्याय ।  
 करी तत्० (खी०) नाट्यङ्ग चरपर भूमि, नाटक लेखने को बेदी ।  
 कर्य तत्० (गु०) [ प्र + कृ + घञ् ] उत्तमता, उत्कर्ष, श्रेष्ठता, प्रशस्त ।  
 काण्ड तत्० (गु०) वृहत्, अंतियय, विशाल । (गु०) वृक्ष स्वरूप, वृक्ष का वह स्थान जहाँ से गांजा निकलता है ।  
 काम तत्० (गु०) [ प्र + काम + घञ् ] यथेच्छित, यथेष्ट, इच्छा प्रयत्न, इच्छापूर्ति, मनमाना, मन भर, पूरा ।  
 कार तत्० (गु०) [ प्र + कृ + घञ् ] भेद, सादृश, विशेष, रीति, दङ्ग, रीति भौति ।  
 कारान्तर तत्० (गु०) [ प्रकार + अन्तर ] अन्वय विध; अन्वय प्रकार, दूसरी रीति ।  
 कारा तत्० (गु०) [ प्र + काश् + घञ् ] उभक्त, विकाश, उदय, दीप्ति, प्रकट, स्पष्ट, प्रतिदि, उभक्ति, उद्योग, चमकीला, दीप्तिमान ।  
 कारांक तत्० (गु०) प्रकाशकर्ता, दीप्तिकारक, प्रकाश करने वाला, उजाला करने वाला ।  
 काराने तत्० (गु०) [ प्र + काश् + घनट् ] प्रचार करण, उभक्तिकरण, फैलाना, उभक्त करना, प्रसिद्ध करना ।

प्रकाशित तत्० (गु०) [ प्र + काश् + क्त ] प्रकाश; विशिष्ट, अविकृत, प्रकटित, उदित, उभक्तिसूत, प्रसिद्ध, उदित ।  
 प्रकाश्य तत्० (गु०) प्रकाशनीय, प्रकटनीय, प्रकाश करने योग्य, प्रकाश करने के उपयुक्त ।  
 प्रकीर्ण तत्० (गु०) [ प्र + कृ + क्त ] विशिष्ट, विस्तृत, अनेक प्रकार से मिश्रित । (गु०) प्रन्वद्विच्छेद, अध्याय, काण्ड, चामर ।  
 प्रकीर्तन तत्० (गु०) [ प्र + कृ + घनट् ] प्रस्तावन, वर्णन, कथन ।  
 प्रकीर्तित तत्० (गु०) कथित, भाषित, उक्त, उवाहृत, वर्णित, निरूपित ।  
 प्रकुपित तत्० (गु०) क्रोधान्वित, क्रोधित, क्रोध युक्त, क्रुद्ध ।  
 प्रकृत तत्० (गु०) प्रकरण प्राप्त, प्रकर्ष से किया हुआ, उत्तमता से किया हुआ, अविकृत, यथार्थ, मत्प, वास्तविक ।  
 प्रकृतार्थ तत्० (गु०) [ प्रकृत + अर्थ ] न्याय अर्थ, उचित अर्थ, उचित व्यवहार, यथार्थ, उपयुक्त ।  
 प्रकृति तत्० (खी०) [ प्र + कृ + क्त ] स्वभाष, धर्म, चरित्र, धैर्य, उत्पत्ति स्थान, उद्भव क्षेत्र, चिह्न, चङ्ग, स्वामी, समाप्त्य, सुदृत्, कोप, राष्ट्र, राज्य, दुर्ग, क्लिप्ता, सुरदासी, समूह, शक्ति, परमात्मा, पशुभूत, दक्षीण अक्षर के पाद वाला छन्द विशेष, माता, धातु, प्रत्यय के पहले का भाग, सत्य, रज और तम इन त्रिगुणों की साम्यावस्था, प्रधान, माया, शक्ति, चैतन्य, भगवाद् की माया नाम की शक्ति ।—सिद्ध (गु०) स्वभाव जात, स्वभाव सिद्ध, स्वाभाविक ।  
 प्रकृष्ट तत्० (गु०) [ प्र + कृ + क्त ] उत्तम, श्रेष्ठ, प्रशस्त, सुख, उत्कृष्ट, प्रधान ।  
 प्रकीर्ण तत्० (गु०) कोठे के नीचे का धर, हाथ का पहुँचा, कलाई से केहुनी तक, कलाई और केहुनी के बीच का भाग ।  
 प्रकम तत्० (गु०) क्रम, व्यवसर, उद्योग, धारम्भ, अनुष्ठान ।

प्रक्रान्त तत्० (गु०) [ प्र + क्रम् + क्त ] आरब्ध, अनुष्ठित ।

प्रक्रिया तत्० (स्त्री०) राजाशौं का चामर ध्वजन और ह्व धारणादि व्यापार, देवचेष्टा, देवकर्म, रीति, प्रकार, विधि ।

प्रक्लिन्न तत्० (गु०) तम, तुम, अत्यन्त स्वेद युक्त ।

प्रक्षालन तत्० (गु०) पखारना, धोना, साफ़ करना, शुद्ध करना ।

प्रक्षेप तत्० (गु०) फेंकना, त्यागना, त्याग करना, छोड़ना ।

प्रखर तत्० (गु०) तीखा, तीक्ष्ण, निशित । (गु०) घोड़े की जीन, चारजामा ।

प्रखरौशु तत्० (गु०) तीक्ष्ण किरण, तीव्र किरण ।

प्रख्यात तत्० (गु०) प्रसिद्ध, विख्यात, यशस्वी, कीर्तिमाह ।

प्रख्याति तत्० (स्त्री०) प्रकृत कीर्ति, विख्याति, प्रसिद्धि, सुयश ।

प्रगट तद्गु० (गु०) प्रकट, व्यक्त, प्रसिद्ध, प्रकाश, साक्षात् प्रत्यक्ष ।

प्रगटना दे० (क्रि०) व्यक्त होना, प्रसिद्ध होना, प्रकाश होना ।

प्रगल्भ तत्० (गु०) प्रत्युत्पन्नमति, प्रतिभान्वित, दाम्भिक, व्यापक, बृह, दीठ ।—ता (स्त्री०) प्रागल्भ्य, दाम्भिकता, दिट्टाई ।

प्रगाढ तत्० (गु०) दृढ, कठोर, अधिक, अतिशय, बहुल, कृच्छ्र, कट ।

प्रगुण तत्० (गु०) सरल, कजु, उदार । (गु०) उत्तम स्वभाव ।

प्रग्रह तत्० (गु०) हुला सूज, हुलारञ्जु, तराजू की बेारी, पशु बाँधने की बेारी, लगाम, पगहा, बन्दी, स्तुतिपाठक ।

प्रग्राह तत्० (गु०) बाँधने की बेारी, रस्सी ।

प्रघटी दे० (स्त्री०) कुलिया, मोना आदि धातुओं के गलाने का पात्र, घरिया ।

प्रघाय तत्० (गु०) पृथण, अतिन्द, द्वार के एक का बराबरा ।

प्रघण्ड तत्० (गु०) दुर्बल, दुर्दृष्ट, अल्प, तम, तीक्ष्ण, प्रतापी ।—मूर्ति (स्त्री०) प्रताप का शरीर, भयानक आकार ।

प्रचलन तत्० (गु०) प्रचार, प्रसार, प्रसिद्ध, व्यापकता, फैलाव, विस्तृत ।

प्रचलित तत्० (गु०) प्रसिद्ध, व्यापक, सर्वत्र प्रकीर्ण सर्वत्र व्यवहृत, जिसका व्यवहार सब स्थान होता हो ।

प्रचार तत्० (गु०) [ प्र + चर + घञ् ] प्रकाश, व्यक्त प्रचलन, विस्तार, व्यापकता ।

प्रचारक तत्० (गु०) प्रकाशक, व्यक्तकारक, प्रसिद्धकर्ता, फैलाने वाला ।

प्रचारण तत्० (गु०) व्यक्त करण, प्रकाश करण, स्पष्ट करण, चराना ।

प्रचारना दे० (क्रि०) व्यक्त करना, प्रसिद्ध करना, फैलाना, चलाना, चराना ।

प्रचारित तत्० (गु०) विस्तारित, फैलाया हुआ, बढाया हुआ ।

प्रचुर तत्० (गु०) धूरि, अधिक, बहुत, यथेष्ट ।—ता (स्त्री०) बाहुल्य, आधिक्य, अधिकता, अधिहार ।  
—त्व (गु०) यथेष्टता, बाहुल्य, आधिष्य ।—पुरुष (गु०) चार, तम्कर ।

प्रचेतसी तत्० (स्त्री०) प्रवेता मुनि की कन्या ।

प्रचेता तत्० (गु०) वरुण, मुनि विशेष, प्रकृतित्त, प्रशस्त चित्त, प्राचीन चर्हराज के पुत्र, प्रजापति विशेष, ब्रह्मा का पुत्र, लोक पितामह ब्रह्मा ने अपने शरीर से वेद वेदाङ्गवित् पुत्रों की सृष्टि की उनके नाम ये हैं:—अत्रि, पुलस्त्य, पुलह, मरीचि, भगु, अङ्गिरा, अशु, अश्विह, वेदु, कवित्त, आशुरी, कवि, भंजु, शङ्ख, पञ्चशिख और प्रचेता ।

प्रचोदित तत्० (गु०) प्रेरित, नियोजित, समनाउं मति प्राप्त, जाने की अनुमति प्राप्त, सम्पन्न कथित ।

च्युत तत्० (गु०) पतित, चरित, गिरा हुआ, स्खलित, पदस्रष्ट ।

च्छद तत्० (गु०) [ प्र + छद् + अल् ] आच्छादन, उत्तरीय वस्त्र, चदर ।—पट (गु०) उत्तरीयवस्त्र, विहारी ।

च्छन्न तत्० (गु०) आच्छन्न, आच्छादित, गुप्त ।

च्छर्दिका तत्० (स्त्री०) रोगविशेष, उद्गार, वमन, वमि रोग विशेष ।

च्छादन तत्० (गु०) उत्तरीय वस्त्र, प्रावरण, गुप्त होने का वस्त्र, बुरका, पिछौरी, चोड़नी, चादर ।

प्रज्व तत्० (गु०) प्रकृष्टवेग, अतिशय वेग ।

प्रजरण तत्० (गु०) ज्वलन, जलन ।

प्रजरित तत्० (गु०) ज्वलित, जलाया हुआ, भस्म ।

प्रजल्प तत्० (गु०) वाक्यविशेष, कहानी, किस्सा ।

प्रजा तत्० (स्त्री०) सन्तान, मन्तति, यशवती मनुष्य, अधिकारस्थित मनुष्य, रैयत ।

प्रजागर तत्० (गु०) अतिशय जागरण, अत्यन्त चिन्ता ।

प्रजापति तत्० (गु०) ब्रह्मा, दत्त, करयप आदि महर्षि, महीपाल, राजा, जामाता, दिवाकर, बन्धि, तप्या, दस प्रजापति, पिता, स्वनामस्वयात् फोट-विशेष ।

प्रजावती तत्० (स्त्री०) धातृजाया, ज्येष्ठ धातृपत्नी, पुत्रवती स्त्री ।

प्रजाहित तत्० (गु०) प्रजा का उपकार, प्रजा का गुप्त ।

प्रजेश्वर तत्० (गु०) राजा, महीपाल, भूपाल ।

प्रज्ञ तत्० (गु०) चिन्त, अभिज्ञ, पविहत, प्रवीण ।

प्रज्ञप्ति तत्० (स्त्री०) निवेदन, विज्ञापन, सङ्केत ।

प्रज्ञा तत्० (स्त्री०) बुद्धि, मति, धी ।—चक्षु (गु०) भूतरात्र । (गु०) बुद्धिमाद्, ज्ञानी, ज्ञान दृष्टि के द्वारा देखने वाला, चक्षुष्य ।

प्रज्वलित तत्० (गु०) अतिशय ज्वलन विशिष्ट, ज्वलन्त ।

प्रजाधिकारी राज्य तत्० (गु०) प्रजा-सत्ताक-राज्य शासन, जहाँ का राज्य प्रजा की व्यवस्था के अनुसार चलता हो ।

प्रडीन तत्० (गु०) पत्नी की गति विशेष, प्रथम उद्भवन, तिर्यग्गमन ।

प्रए तत्० (गु०) पन, प्रतिज्ञा, कौशल, करार, पुराण, पुरातन, बहुकालीन ।

प्रएत तत्० (गु०) [ प्र + नम् + क्त ] प्रणति विशिष्ट, कृत प्रणाम, चरणों में गिरा हुआ, नय, विनत ।  
—पाल (गु०) शरणागतरक्षक, दीनपालक ।

प्रणति तत्० (स्त्री०) [ प्र + नम् + क्त ] प्रणाम, प्रणिपात, नम्रता ।

प्रणय तत्० (गु०) [ प्र + नी + अल् ] प्रेम, प्रीति, अनुराग, अनुरक्ति, विचरम्भ, निर्वाण ।

प्रणयन तत्० (गु०) [ प्र + नी + अन्ट् ] रचन, प्रस्तुतकरण, निर्माण, संस्कारकरण, रचन, ग्रंथन ।

प्रणयिनी तत्० (स्त्री०) प्रेमास्पदा वनिता, प्रिया, भार्या, अद्भुता, स्त्री ।

प्रणयी तत्० (गु०) प्रेमी, अनुरागी, अनुरक्त ।

प्रणय तत्० (गु०) शौंकार, मन्त्रवेष्ट ।

प्रणयी दे० (क्रि०) प्रणाम करता हूँ, नम्र होता हूँ ।

प्रणाम तत्० (गु०) [ प्र + नम् + चञ् ] प्रणति, प्रणिपात, अत्यन्त भक्ति और श्रद्धा के सहित नमस्कार ।

प्रणामी तत्० (गु०) नमस्कारी, देवताओं के प्रणाम के लिये दी जाने वाली दक्षिणा ।

प्रणाली तत्० (स्त्री०) धारा, रीति, प्रकार, जन्म निकलने का मार्ग, परम्परा, पनाला, नदीया ।

प्रणाश तत्० (गु०) अन्ध, नाश, उन्मत्त ।

प्रणिधान तत्० (गु०) मनोयोग, अथगति, ध्यान, प्रयत्न, प्रवेशन ।

प्रणिधि तत्० (गु०) चर, दूत, प्राचीना, अथधान ।

प्रणिपात तत्० (गु०) प्रणति, प्रणाम, नमस्कार ।

प्रणिहित तत्० (गु०) रक्षित, न्यायित, मनोयोग कृत, समाहित ।

प्रणीत तत्० (गु०) संस्कृत अग्नि, यज्ञ मन्त्र द्वारा प्रज्वलित अग्नि ।



प्रणोदित तत् ० (गु०) प्रेरित ।

प्रतप्त तत् ० (गु०) उताप, प्रभावधान् ।

प्रतप्तान तत् ० (गु०) विस्तार, चौड़ा, वायु रोग विशेष ।

प्रताप तत् ० (गु०) प्रभाव, तेज, प्रखरता, शूरता ।

प्रतापसिंह (गु०) मेवाड़ के प्रसिद्ध स्वदेशियक सन्यासी महाराणा चित्तौर के अधिपति महाराणा जयसिंह के पुत्र । इन्होंने धर्मरत्ना के लिये जो कष्ट सहें हैं उससे इनका नाम इतिहास में प्रसिद्ध है । राजस्थान के समस्त राजा मुगलसम्राट् के अधीन हो गये । स्वार्थ के यश होकर धर्म की अवहेला कर समस्त राजाओं ने अपनी स्वाधीनता बेच दी थी, परन्तु महाराणा ने अनेक कष्ट सह कर, अपनी स्वाधीनता की रक्षा की थी । एक समय अम्बर के राजकुमार मानसिंह ( अक्षर पुत्र सलेम का साभा ) दिल्ली जाने के समय प्रताप की राजधानी कमलमीर गये । प्रताप ने उनके स्वागत के लिये बड़ी तैयारियाँ की, भोजन के समय प्रताप का पुत्र अमरसिंह वहाँ पड़ा था । मानसिंह प्रताप के न आने का कारण बार बार अमरसिंह से पूछने लगे । अन्त में प्रताप यहाँ उपस्थित हुए और बोले कि " जो राजपूत कुलाङ्कार अपनी बहिन बेटियों मुसलमानों को ध्याएता है और तुर्कों के साथ नित्य भोजन करता है, उसके साथ सूर्य-यंशी राणा भोजन नहीं कर सकता ।" इस बात से मान का क्रोध बर गया । मान दिल्ली पहुँच कर अनेक हलवल फैला कर प्रताप को कष्ट पहुँचाने लगा । अन्त में उसने अम्बर से कह कर प्रताप पर चढ़ाई करा दी । परन्तु उस चढ़ाई से प्रताप डरने वाले नहीं थे । मुट्ठी भर राजपूतों को लेकर महाराणा ने मुसलमानी सेना का सामना किया, इसी प्रकार वे यादज्जोवन लड़ते रहे, परन्तु स्वाधीनता उन्होंने नहीं बेची । इन्हींके धर्मरत्ना के कारण भारत ने " हिन्दुओं के सूर्य " की उपाधि दी थी । आज तक इनके यंशज भी उमी गौरवास्य उपाधि से भूषित किये जाते हैं । धर्मरत्ना के कारण वे अमर हैं ।

प्रतापवान् तत् ० (गु०) तेजस्यां, तेजधारी, ऐक्यवान्, प्रभावशाली ।

प्रतापी तत् ० (गु०) प्रतापवान्, तेजस्वी तेजपू, ऐश्वर्यवान्, प्रभावशाली ।

प्रतारक तत् ० (गु०) बञ्चक, ठग, धूर्त, रान, शत्रु ।

प्रतारण तत् ० (गु०) बञ्चना, ठगई, धूर्तता, शठता ।

प्रतारणा तत् ० (खं०) प्रयत्नता, मिथ्या, छन, ठगई, धूर्तता ।

प्रतारित तत् ० (गु०) प्रयत्नित, छलित, मिथ्या कथित, ठगा हुआ ।

प्रति तत् ० (उपसर्ग) प्रतिनिधि, मुख्य, मद्दय, सत्य, चिन्त, एक एक, सब, समस्त, भाग, अंग, प्रतिदान, स्तोत्र, अल्प, निष्ठय, प्रशस्ति, विरोध समाधि, अभिमुक्ता, अभिमुक्त, स्वभाव ।

प्रतिकार तत् ० (गु०) उपाय, निवारण, योधन उपशम, उपकार ।

प्रतिकूल तत् ० (गु०) अनुकूल, विपक्ष, प्रतीप, विरुद्ध —ता (खी०) विपक्षता, प्रतिपक्षता, विरोध ।

प्रतिक्रिया तत् ० (खी०) प्रतिकार, प्रतिविधान उपाय, निवारण ।

प्रतिक्षण तत् ० (गु०) क्षण क्षण, पलपल, प्रतिपल ।

प्रतिग्रह तत् ० (गु०) स्वीकार, ग्रहण, दान लेना द्राष्टण का विधिग्रहण, ग्रह विशेष, द्राष्टण प्रयोजन ।

प्रतिग्रहण तत् ० (गु०) आदान, ग्रहण, स्वीकार दान लेना, यददा लेना, एक वस्तु के बदले दूसरी वस्तु लेना ।

प्रतिघात तत् ० (गु०) मारण, आघात, मार यदने की मार ।

प्रतिच्छिपीयुं तत् ० (गु०) प्रतिकार करने का दृष्टि यदला चुकाने की दृष्टि रखने वाला ।

प्रतिचिन्तन तत् ० (गु०) चिन्तन का पुनः चिन्तन प्रतिच्छाया तत् ० (खी०) प्रतिचिम्ब, प्रतिप्रतिप्रति, प्रतिभा ।

प्रतिष्ठां दे० (गु०) प्रतिविम्ब, छाया ।

प्रतिज्ञा तत्त्वं ( स्त्री० ) कर्तव्यज्ञान, साध्य निर्देश, अङ्गीकार, शपथ, दिव्य, नियम, प्रण, पण ।—पत्र ( ५० ) नियम लिपि, अङ्गीकार लिपि, स्वीकार पत्र ।

प्रतिज्ञात तत्त्वं ( ५० ) अङ्गीकृत, स्वीकृत, कर्तव्य रूप से स्वयम् कहा हुआ ।

प्रतिज्ञान तत्त्वं ( ५० ) अङ्गीकार, प्रतिज्ञा, स्वीकार, पण ।

प्रतिदर्शन तत्त्वं ( ५० ) दर्शानांतर दर्शन, फिर फिर देखना, पुनः पुनः दर्शन ।

प्रतिदान तत्त्वं ( ५० ) दान के बदले का दान, विनिमय, बदला, रखे हुए द्रव्य का लौटाना ।

प्रतिदिन तत्त्वं ( ५० ) प्रत्यह, अहरह, दिन दिन, नित्य ।

प्रतिद्वय तत्त्वं ( ५० ) पुनर्दोतव्य, लौटाने योग्य, फेर देने योग्य ।

प्रतिध्वनि तत्त्वं ( स्त्री० ) प्रतिशब्द, शब्द का शब्द ।

प्रतिनिधि तत्त्वं ( ५० ) प्रतिमा, मुख्य के समान, मुख्य स्वरूप, प्रधान के स्थानापन्न, प्रतिज्ञे ।

प्रतिनिवर्त्तन तत्त्वं ( ५० ) पुन्यावर्त्तन, लौटाना, फेरना ।

प्रतिपक्ष तत्त्वं ( ५० ) बैरी, अरि, शत्रु, रिपु ।

प्रतिपत्र तत्त्वं ( स्त्री० ) तिथि विशेष, चन्द्रमा की पहली कला का क्रियाकाल, शुक्ल और कृष्ण पक्ष की पहली तिथि ।

प्रतिपत्ति तत्त्वं ( स्त्री० ) सुखाति, सम्मान, सम्भ्रम, गौरव, पूज्यता, पदप्राप्ति, प्रबोध, निष्पत्ति, दान, प्रतिष्ठा ।

प्रतिपत्र तत्त्वं ( ५० ) अवगत, अङ्गीकृत, विक्रान्त सम्मान प्राप्त, प्रस्तुत, प्रतिष्ठित, माननीय, मान्य ।

प्रतिपादक तत्त्वं ( ५० ) प्रतिपत्तिजनक, बोधक, ज्ञापक, संस्थापक, प्रकाशक ।

प्रतिपादन तत्त्वं ( ५० ) बोधन, ज्ञापन, कथन, दान, प्रतिपत्ति ।

प्रतिपाद्य तत्त्वं ( ५० ) बोधनीय, ज्ञापनीय, कथनीय ।

प्रतिपालक तत्त्वं ( ५० ) पालनकर्ता, रक्षक, पोषणकर्ता ।

प्रतिपालन तत्त्वं ( ५० ) पालन, रक्षण, पोषण, पोसना ।

प्रतिपालना दे० ( क्रि० ) पोसना, पालना, राखना, रखा करना ।

प्रतिपाल्य तत्त्वं ( ५० ) प्रतिपालनीय, रक्षणीय, पोषणीय, पोषणीय, पोष्य ।

प्रतिपुरुष तत्त्वं ( ५० ) प्रतिनिधि, प्रत्येक मनुष्य ।

प्रतिप्रसव तत्त्वं ( ५० ) निषेध की हुई यन्त्र का पुनः विधान, एक बार रोक कर पुनः आज़ा देना ।

प्रतिफल तत्त्वं ( ५० ) मुख्यफल, समुचित फल, कर्म के अनुसार फल, जैसा कर्म वैसा फल । कृतप्रतिकार ।

प्रतिफलित तत्त्वं ( ५० ) प्रतिविम्बित, प्रतिच्छाया प्राप्त ।

प्रतिबन्ध तत्त्वं ( ५० ) कार्य प्रतिबन्धक, प्रतिश्लम्भ, विग्रह, बाधा, रुकावट ।

प्रतिबन्धक तत्त्वं ( ५० ) प्रतिरोधक, बाधक, निवारक, अवाचातकारक निवारणकर्ता, रोकने वाला ।

प्रतिभट तत्त्वं ( ५० ) शत्रु, शैरी, दूल के प्रति दूल ।

प्रतिभा तत्त्वं ( स्त्री० ) बुद्धि, ज्ञान, प्रत्युत्पन्नमतिव्य, होमि, पूज्यता ।

प्रतिभाग तत्त्वं ( ५० ) प्रत्येक अंश, राज्य के हिस्से ।

प्रतिभू तत्त्वं ( ५० ) विचारवाद्, ज़ामिनदार, मनी-तिवा ।

प्रतिम तत्त्वं ( ५० ) मुख्य, सदृश, समान ।

प्रतिमा तत्त्वं ( स्त्री० ) प्रतिवृत्ति, वृत्ति के समान, प्रतिकृति, प्रतिच्छाया, प्रतिरूप, चित्र ।

प्रतिमान तत्त्वं ( ५० ) प्रतिविम्ब, प्रतिव्छाया, दार्ढ्य के मस्तक का एक भाग ।

प्रतिमार्ग तत्त्वं ( ५० ) प्रतिपथ, मार्ग मार्ग, प्रत्येक मार्ग ।

प्रतिमास तत्त्वं ( ५० ) मास मास, प्रत्येक मास ।

प्रतिमूर दे० ( ५० ) प्रतिविम्ब, परछाही, छाया ।

प्रतिभूति तत्त्वं ( स्त्री० ) आकार, छवि, प्रतिमा, प्रतिकृति, वृत्ति के समान वृत्ति ।

प्रतियत्न तत् ( ५० ) लिप्सा, वाञ्छा, वन्दी, निग्रह करने का प्रयत्न, गुणान्तर का ग्रहण, संस्कार, संशोधन, ग्रहण, प्रतिग्रह ।

प्रतियोग तत् ( ५० ) विरोध, विवाद, प्रतिपक्षता ।

प्रतियोगी तत् ( ५० ) विरोधी, प्रतिपक्ष, विरुद्ध पक्ष ।—ता ( स्त्री० ) विपक्षता, शत्रुता, विरोध, विवाद, प्रतिस्पर्धा, चढ़ा उतरी । ( ५० ) तुल्याकार व्यक्ति, समान आकार का मनुष्य ।

प्रतिरात्र तत् ( ५० ) प्रतिरात्रि, प्रत्येक रात ।

प्रतिरूप तत् ( ५० ) प्रतिमा, प्रतिभूर्ति, आकृति । ( ५० ) समान, सदृश, तुल्य, बराबर ।

प्रतिरोध तत् ( ५० ) निरस्कार, सत्प्रतिपक्ष, निषेध, रोक, रुकावट ।

प्रतिरोधक तत् ( ५० ) चोर, तस्कर, अपहरक ।

प्रतिलिपि तत् अनुकूपलिपि, समान लेख, नकल ।

प्रतिलोम तत् ( ५० ) याम, विलोम, व्यतिक्रम, विपरीत क्रम ।—ज ( ५० ) प्रतिलोम जात, उत्तम वर्ष की स्त्री में अधम वर्ष के पुत्र से उत्पन्न ।

प्रतिवचन तत् ( ५० ) उत्तर प्रत्युत्तर ।

प्रतिवर्ष तत् ( ५० ) प्रत्येक वर्ष, साल सात ।

प्रतिवाच्य तत् ( ५० ) प्रतिवचन, उत्तर प्रत्युत्तर ।

प्रतिवाद तत् ( ५० ) विरोध, विवाद, आपत्ति, प्रतिपक्षी का वचन ।

प्रतिवादी तत् ( ५० ) प्रतिपक्ष, विपक्ष, अग्रामी ।

प्रतिवाधक तत् ( ५० ) निवारक, प्रतिबन्धक, बाधाकारक ।

प्रतिवास तत् ( ५० ) पदोस, निकट वास, समीप स्थिति ।

प्रतिवासर तत् ( ५० ) प्रतिदिन, प्रत्यह, दिन दिन ।

प्रतिवासी तत् आसन गृही, निकटस्थ, प्रतिवेशी पास पास रहने वाले, पदोसी ।

प्रतिविधान तत् ( ५० ) प्रतीकार, प्रतिक्रिया, निवारण, उपाय ।

प्रतिविम्ब तत् ( ५० ) प्रतिच्छाया, प्रतिमा, पूर्ण मूर्ति, अनुकूप ।

प्रतिविम्बित तत् ( ५० ) प्रतिविम्बगत, पूर्ण छाया प्राप्त ।

प्रतिवेश तत् ( ५० ) मकान के सामने का मकान गृह के समीपस्थ गृह, पड़ोस ।—वासी ( ५० ) प्रतिवासी, समीप रहने वाला, पदोसी ।

प्रतिबोध तत् ( ५० ) अनुभव, प्रबोध, ज्ञान प्रकाश, ज्ञान प्राप्ति, जागरण, अनुमान ।

प्रतिशब्द तत् ( ५० ) प्रतिश्रयनि, शब्द का शब्द ।

प्रतिश्याय तत् ( ५० ) रोगविशेष, पीनस रोग ।

प्रतिश्रव तत् ( ५० ) अङ्गीकार, स्वीकार, प्रतिज्ञा, निश्चित कथन ।

प्रतिश्रुत तत् ( ५० ) अङ्गीकृत, स्वीकृत, प्रतिज्ञात ।

प्रतिषिद्ध तत् ( ५० ) प्रतिषेध का विषय, निश्चि, निषेधित, निषेध किया हुआ ।

प्रतिषेध तत् ( ५० ) निषेध, निवारण, वाच्य ।

प्रतिष्ठा तत् ( स्त्री० ) गौरव, पुण्य, सम्मान, पृथिवी, स्थान, यज्ञ समाम्नि, चार अक्षर का छन्द विशेष । संस्कार विशेष, उच्चापन ।—कारक ( ५० ) सम्मानकारक, गौरवकारक ।—सूचक ( ५० ) सम्मान प्रकाशक, आदर प्रकाशित करने वाला ।

प्रतिष्ठान तत् ( ५० ) नगर विशेष, राजा पुत्रवा की राजधानी, हरिवंश में लिखा है कि यह नगर गङ्गा की उत्तर की ओर है । परन्तु कालिदास कहते हैं कि गङ्गा और यमुना के सङ्गम पर यह नगर है, आज कल यह नगर भूषो नाम से प्रसिद्ध है ।

प्रतिष्ठित तत् ( ५० ) प्रतिष्ठापुत्र, गौरवान्वित ।

प्रतिस्पर्धा तत् ( स्त्री० ) ईर्ष्या, मस्तरता, गुप्त ईर्ष्या, स्पर्धा ।

प्रतिहत तत् ( ५० ) प्रतिघात प्राप्त, प्रतिस्पर्धित, रुद्ध, निराश, निराकृत, प्रतिवद्ध, हत ।

प्रतिहार तत् ( ५० ) द्वार, खोदी, देवदी, द्वारपासक, खोदीदार, दरवान ।

तिहिंसा तत्० ( श्री० ) हिंसा का प्रतिरोध, अपकार का बदला ।

तीक तत्० ( पु० ) एक देश, अङ्ग, अथवा, व्याख्या में झीक या वाक्य का उद्भूत एक देश ।

तीकार तत्० ( पु० ) अपकारी के प्रति अपकार, शिर शोधन, धनुसा निर्वाहन, प्रतिफल, परिशोध, बिक्रिस्ता, निवारण का उपाय ।

तीक्षा तत्० ( श्री० ) प्रत्याशा, बाट देखना, बाट जोहना, किसी के जाने के लिये ठहरना ।

तीक्ष्ण तत्० ( पु० ) बाट देखने वाला, राह जोहने वाला, प्रत्याशी ।

तीक्षा तत्० ( पु० ) शुभ, ममान, सद्ग, सुलना, उपमा ।

तीक्ष्णी तत्० ( श्री० ) पश्चिम दिशा, सूर्य के अस्त होने की दिशा ।

तीक्ष्णीन तत्० ( पु० ) पश्चिम दिशा में उत्पन्न, पश्चिम दिशा में स्थित ।

तीक्ष्ण तत्० ( पु० ) ज्ञान, अथगत, हृष्ट, सादर, एवात, प्रसिद्ध ।

तीक्ष्ण तत्० ( श्री० ) ज्ञान, योग, एवाति, प्रसिद्धि, कीर्ति, सादर, हर्ष ।

तीक्ष्ण तत्० ( पु० ) महाराज शान्तसु का पिता । ( पु० ) प्रतिफल, विपरीत, विरोधी ।

तीक्ष्णमान तत्० ( पु० ) ज्ञेय, शोधगम्य, अनुभव, अथगत ।

तीक्ष्ण तत्० ( पु० ) पुरातन, पुराण ।

तीक्ष्ण तत्० ( पु० ) साक्षात्, सम्मुख, सामने, प्रकाश, प्रकट, प्रसिद्ध ।

तीक्ष्ण तत्० ( पु० ) नूतन, नवीन, अभिनव, सुदृ, शोधित ।

तीक्ष्ण तत्० अथवा विशेष, कर्ण नामिका आदि ।

तीक्ष्ण तत्० ( पु० ) म्लेच्छ देश । ( पु० ) सचिक्रेट, प्राक्त भाग ।—पर्वत ( पु० ) पर्वत के समीप का बुद्ध पर्वत ।

तीक्ष्णान तत्० ( पु० ) पद्मात् ज्ञान, पीछे जानना, स्मरण, अनुमान, कारण विशेष में स्मरण होना ।

प्रत्यभियोग तत्० ( पु० ) प्रत्ययराध, अपराधी होकर अपराध करना, अभियुक्त होकर अभियोग करना ।

प्रत्यभिलाप तत्० ( पु० ) पुनरभिलाप ।

प्रत्यय तत्० ( पु० ) विश्राम, निश्चय, ज्ञान, अधीन, शयन, हेतु, छिद्र, आचार, प्रकृति से उत्तर जाने वाली विभक्ति ।

प्रत्यर्थी तत्० ( पु० ) शत्रु, प्रतिवादी, अर्थी का प्रतिपक्ष, मुद्दालेह ।

प्रत्यर्पण तत्० ( पु० ) पुनर्दान, सौटना, फेर देना, प्रतिदान ।

प्रत्यवाय तत्० ( पु० ) पाप, दुःसूट, दोष, अनिष्ट, विघ्न, व्याघात ।

प्रत्यह तत्० ( अ० ) प्रतिदिन, दिन दिन, प्रतिवासर ।

प्रत्याख्यान तत्० ( पु० ) निराकरण, निरसन, खण्डन, अस्वीकार, निन्दन ।

प्रत्यादेश तत्० ( पु० ) निराकरण, खण्डन, भक्त के प्रति द्वेषता का आदेश, उपदेश, वैचवाणी, परामर्श ।

प्रत्याशा तत्० ( श्री० ) आकाङ्क्षा, वाञ्छा, अभिलाषा, विश्वास, भरोसा, प्रतीक्षा, बाट देखना ।—रहित ( पु० ) आशा रहित, धारणा भूय ।

प्रत्याशी तत्० ( पु० ) भरोसा वाला, आकाङ्क्षी, अभिलाषी ।

प्रत्यासन्न तत्० ( पु० ) निकटवर्ती, समीपस्थित ।

प्रत्याहार तत्० ( पु० ) अपने अपने विषयों में इन्द्रियों को हटाना ।

प्रत्युत तत्० ( अ० ) विपरीत, वरञ्च, वर ।

प्रत्युत्पन्न तत्० ( पु० ) उत्पत्ति विशिष्ट, प्रसूत, प्रतिभाषित ।—मति ( पु० ) उपस्थित बुद्धि, सूक्ष्म बुद्धि युक्त, सूक्ष्मदर्शी, प्रतिभाषित ।

प्रत्युपकार तत्० ( पु० ) उपकार के अनन्तर उपकार, प्रतिफल ।

प्रत्युपकारी तत्० ( पु० ) उपकार के बदले उपकार करने वाला ।

प्रत्युप तत्० ( पु० ) प्रभात, प्रातःकाल, सूर्य, वसु-विशेष ।

प्रत्यूह तत्० (५०) विघ्न, बाधा, आपद, अटकाव ।  
 प्रत्येक तत्० ( ४० ) एक एक, प्रति, भिन्न भिन्न, समस्त, मकल ।  
 प्रथम तत्० ( ५० ) श्रेष्ठ, प्रधान, प्राक्, पूर्वतन, पहला, आदिम, अग्रिम ।—स्नाहस्त (५०) अपराधियों का प्रथम दण्ड, प्रथम बार का अपराध ।  
 प्रथमतः तत्० ( ४० ) पहले पहल का, प्रथम, पूर्व ।  
 प्रथमा तत्० ( स्त्री० ) पहली विभक्ति, प्रेमा, बही, प्रधाना ।  
 प्रथमावयव तत्० (५०) प्रथमोपपन्न अङ्ग, आद्य अङ्ग, अष्ट अङ्ग ।  
 प्रथा तत्० ( स्त्री० ) चलन, धारा, रीति, व्यवहार, एवाति, प्रकार ।  
 प्रथित तत्० (५०) एवात, प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध ।  
 प्रद तत्० (५०) प्रकृष्टदाता, दानकर्ता, दानो ।  
 प्रदक्षिण तत्० ( ५० ) देयोद्वैतय से दक्षिणायतं भ्रमण, चतुर्दिक् भ्रमण, चारो ओर भ्रमण ।  
 प्रदत्त तत्० ( ५० ) आदर पूर्वक दान किया हुआ, समर्पित ।  
 प्रदर तत्० (५०) स्त्रियों का रोग विशेष ।  
 प्रदर्शक तत्० (५०) दर्शक, प्रकाशक, दिखानेहारा ।  
 प्रदर्शन तत्० ( ५० ) बँडण, दर्शन, दिखाना ।  
 —स्थान (५०) नुनायगगाह ।  
 प्रदर्शनी तत्० (स्त्री०) उपहार, पारतोपिक, प्रदर्शन का मेला ।  
 प्रदान तत्० (५०) दान, अर्पण, प्रकृष्ट दान, त्याग ।  
 प्रदीप तत्० (५०) दीपक, दीया, दीप ।  
 प्रदीप्त तत्० (५०) उज्ज्वलित, प्रकाशित ।  
 प्रदेश तत्० ( ५० ) एक देश, स्थान, देश का एक भाग, प्रान्त, तर्जनी और अङ्गुष्ठ का परिमाण ।  
 प्रदेशिनी तत्० (स्त्री०) तर्जनी नामक अंगुली ।  
 प्रदोष तत्० (५०) रजिनी मुख, सायङ्काल, सूर्यास्त के पश्चात् दो सुहूर्त काल । रात्रि का पहला बार दण्ड ।—काल ( ५० ) सायङ्काल, सन्ध्या का समय ।  
 प्रद्युम्न तत्० ( ५० ) कन्दर्प, कामदेव, श्रीकृष्ण का पुत्र । ये क्विण्णी के गर्भ में उत्पन्न हुए थे । शिव

के क्रोधरूपी अग्नि में भस्म हाकर के रूप में श्रीकृष्ण के यहाँ उत्पन्न हुए । तब से सातवें दिन श्रीकृष्ण का शत्रु शम्बर कृतिबन्धु से प्रद्युम्न को उठा ले गया । श्रीकृष्ण य वर बन गये तथापि उन्होंने इसके लिये कुछ पुत्र नहीं दिये । दैत्यपति शम्बर की महारानी का नाम यती नाम था । मायावती के पुत्र नहीं था । शम्बर ने प्रद्युम्न को पालन करने के लिये मायावती के हाथ सौंपा था । यही मायावती स्वयं पति थी । प्रद्युम्न को देखते ही मायावती को अपने पूर्व जन्म की यादें स्मरण हो आयीं । मायावती ने पति का पुनर्वत् पालन करना अनुचित मनव धात्री को उनके पालन का भार सौंपा । तब प्रद्युम्न युवा हुए, तब मायावती ने उनको अपना पति बनाना चाहा, वह देख प्रद्युम्न ने कहा कि तुम पुत्र भाय छोड़ कर यह भाय क्यों स्वीकार करना चाहती हो । मायावती ने कहा, "नाश! आप मेरे पुत्र नहीं हैं और न शम्बर ही आपका पिता है । आपके पिता श्रीकृष्ण हैं, शम्बर आप को यहाँ चुरा कर लाया है । मैं आपके रूप पर मोहित हूँ, आप शम्बर का नाश कर मेरा मनो रय पूर्ण कीजिये । यह सुन कर प्रद्युम्न ने शम्बर के साथ युद्ध किया और दैत्यव स्रज से शम्बर को मार वह द्वारका चले गये ।  
 प्रधान तत्० ( ५० ) श्रेष्ठ, आद्य, अग्रिम, मुखा । ( ५० ) प्रशस्त, माया, प्रकृति, परमात्मा, बुद्धि सेनापति, मन्त्री, सचिव आदि ।—ता ( स्त्री० ) श्रेष्ठता, सुदयता, प्रधानता ।—नगर ( ५० ) प्रसिद्ध नगर, बड़ा नगर, जिला ।  
 प्रधी तत्० ( ५० ) प्रकृष्ट बुद्धि युक्त, उत्तम बुद्धि विशिष्ट । (स्त्री०) प्रकृष्ट बुद्धि ।  
 प्रध्यस तत्० (५०) नाश, विनष्टि, क्षय, क्षयण ।  
 प्रनाम तत्० (५०) प्रणाम, नमस्कार, अभिवादन ।  
 प्रनाशी तत्० ( ५० ) विनाशनशील, अनित्य, अविनाश्यायी ।  
 प्रपञ्च तत्० ( ५० ) विपर्याप्त, भ्रम, विस्तार, प्रवृत्त, पुनरावृत्त, जगत्, समार ।

- प्रश्चित तत्० (५०) विस्तृत, धम युक्त, प्रसारित, सञ्चित ।
- पत्र तत्० (५०) शरणागत, आश्रयाकाङ्क्षी, आश्रित ।
- पपा तत्० (स्त्री०) पानीयशाला, पनशाला, प्याज ।
- प्रपात तत्० (५०) निरवलम्ब पर्यंतों का पारध्वं, धरार, किनारा ।
- प्रपितामह तत्० (५०) ब्रह्मा, पितामह के पिता ।
- प्रपितामही तत्० (स्त्री०) प्रपितामह की पत्नी, पितामह की माता ।
- प्रपुत्रा दे० (५०) लता विशेष, पर्यंत नामक पौधा ।
- प्रपौत्र तत्० (५०) पौत्र का पुत्र, पनाती, पोते का बेटा ।
- प्रपौत्री तत्० (स्त्री०) पौत्र की कन्या, पनातिन, पोते की लड़की ।
- प्रफुल्ल तत्० (५०) विक्राय युक्त, उरफुल्ल, विकसित, खिला ।—ता (स्त्री०) हर्ष, आह्लाद, उल्लास, विक्राय, प्रसन्नता ।—वदन (५०) पुमन्त्र वदन, पुमन्त्र मुख, महास वदन ।
- प्रफुल्लित तत्० (५०) प्रफुटित, विकसित, विकश युक्त ।
- प्रबन्ध तत्० (५०) सन्दर्भ, ग्रन्थ, काव्यादि ग्रन्थन, परस्पर अन्वित वाक्य समूह ।—कल्पना (स्त्री०) प्रबन्ध रचना, काव्य रचना ।
- प्रबन्धक तत्० (५०) प्रबन्धकर्ता, प्रबन्ध रचयिता ।
- प्रयत्न तत्० (५०) बलयात्, समर्थ, बली, मत्साही, माहवी ।—ता (स्त्री०) बलात्कार, पारवश्य, परवशता ।
- प्रयात् तत्० (५०) विद्रुम, मणि विशेष, सूँगा ।
- प्रयुक्त तत्० (५०) जागृत, जागता हुआ, सचेत, मायधान, सावहित ।
- प्रयोध तत्० (५०) ज्ञान, सायनेती, सावधानी, निद्रा त्याग, नींद में जागना ।
- प्रयोधन तत्० (५०) जागरण, जगाना, चिंताना, चिन्तावनी देना, सावधान करना ।
- प्रमञ्जन तत्० (५०) अनिल, चाय, पवन ।—जाया (५०) हनुमान ।—सुत (५०) हनुमाद्, भीम ।
- प्रभद्र तत्० (५०) वृक्ष विशेष, निम्ब वृक्ष ।
- प्रभव तत्० (५०) उत्पत्ति, जन्म, जन्म हेतु, जन्म कारण, जहाँ से जन्म होता है, म्यान ।
- प्रभा तत्० (स्त्री०) दीप्ति, आसोक, पुष्पा, तेज, कुबेर की पुरी, गोपी विशेष ।—कर (५०) रवि, दिनकर, अग्नि, चन्द्र समुद्र, अर्क वृक्ष, अक्षयन का पेड़ ।—कीट (५०) दायीत, जुगत् ।
- प्रभात तत्० (५०) प्रातःकाल, प्रतप ।
- प्रभाव तत्० (५०) कोप और दण्ड का तेज, शक्ति, माहात्म्य, गौरव, शान्ति ।
- प्रभाषती तत्० (स्त्री०) पाताल गङ्गा, त्रयोदशाक्षर छन्द, ब्रह्मताय दैत्य की कन्या, जिसके अकृष्ण ने हरण किया था ।
- प्रभास तत्० (५०) तीर्थ विशेष, सोमतीर्थ, जैन-गणाधिप विशेष ।
- प्रभिन्न तत्० (५०) मत्तहस्ती, मत वाला हाथी ।
- प्रभु तत्० (५०) स्वामी, मालिक, पालक, गर्भ, नायक, नेता ।—ता (स्त्री०) प्रधानता, आधिपत्य, कर्तृत्व ।—भक्त (५०) स्वामी का अनुरागी, कुम्भुर ।
- प्रभूत तत्० (५०) पूरु, पथेट, अधिक, अतिगव ।
- प्रभृति तत्० (५०) तदादि, गणशोधक, इत्यादि, गौरव ।
- प्रभेद तत्० (५०) भिन्नता, विशेष, वैलक्षण्य ।
- प्रमथ तत्० (५०) शिग के गण ।
- प्रमथाधिप तत्० (५०) शिग, महादेव, यम्बु ।
- प्रमद तत्० (५०) हर्ष ।—कानन (५०) रम्यवन, राजाओं के अन्तःपुर के योग्य उपवन ।—घन (५०) राजा के अन्तःपुरोचित वन ।
- प्रमदा तत्० (स्त्री०) उलमा स्त्री, रमणीया नारी, सुलवणा स्त्री ।
- प्रमा तत्० (स्त्री०) पथार्थ ज्ञान, प्रमिति, प्रमाण, धम रहित ज्ञान ।
- प्रमाण तत्० (५०) सर्वदा, शाश्व, निर्द्वय, दृष्टान्त, उदाहरण, भाषी, ज्ञेय प्रमृति, प्रतिपत्ति, माननीय, सावधानी, निष्प ।—पत्र (५०) निर्द्वय, पत्र, दृष्टान्त लिपि ।

प्रमातामह तत्० (५०) मातामह के पिता, परनाम,  
नाना के पिता ।

प्रमातामही तत्० (स्त्री०) प्रमातामह की स्त्री, माता-  
मह की जननी, परनानी ।

प्रमाथ तत्० (५०) प्रमथन, धन द्वारा हरण, विलो-  
डन, निकालना ।

प्रमाथी तत्० (५०) पीहनकर्ता, मारणकर्ता, प्रमथन-  
शील, देह और इन्द्रिय को दुःख पहुँचाने वाला ।

प्रमाद तत्० (५०) अनवधानता, असावधानी, धम,  
भूल ।

प्रमादी तत्० ( ५० ) प्रमाद विशिष्ट, अनवधानता-  
युक्त, असन्नक, भ्रान्त स्वभाव ।

प्रमित तत्० ( ५० ) ज्ञात, सिद्धित, अवगत, प्रमाण  
सिद्ध ।

प्रमिति तत्० (स्त्री०) प्रमा, यथार्थ ज्ञान, सत्य बोध,  
यथार्थ बोध ।

प्रमीला तत्० तम्ब्रा, तन्त्री ।

प्रमुख तत्० (५०) प्रधान, श्रेष्ठ, प्रथम, मान्य, मान-  
नीय ।

प्रमुदित तत्० हृष्ट, आह्लादित, आनन्दित ।

प्रमेय तत्० ( ५० ) उपपाद्य प्रतिपादन करने के  
योग्य, प्रमाण साध्य, प्रमाण से सिद्ध किया जाने  
वाला ।

प्रमेह तत्० (५०) रोग विशेष, मेह रोग, मूत्र टोप,  
बहुपुत्रता ।

प्रमोचन तत्० (५०) मोक्षण, त्याग, उत्तरण ।

प्रमोद तत्० (५०) हर्ष, आह्लाद, उल्लास ।

प्रयत्न तत्० ( ५० ) पथिव, वृत्त, युद्ध, नियमित,  
तत्पर ।

प्रयत्न तत्० ( ५० ) प्रकृष्ट, यत्न, अध्ययनाय, चेष्टा,  
आदर ।

प्रयाग तत्० (५०) तीर्थ विशेष, तीर्थराज, प्सिद्ध  
तीर्थ, जहाँ गङ्गा यमुना और युग सरस्वती का  
सङ्गम है । यहाँ ब्रह्माजी ने अश्वमेध यज्ञ किये थे ।

प्रयाण तत्० (५०) गमन, प्रस्थान, निर्माण, यात्रा ।

प्रयास तत्० (५०) प्रयत्न, अम, ल्लेश, आयास, चेष्टा ।

प्रयुक्त तत्० (५०) प्रकर्ष युक्त, प्रकृष्ट समाधि,  
प्रकृष्ट सयोग युक्त, संयमी, संयम विशिष्ट ।

प्रयोग तत्० (५०) प्रयुक्ति, अनुष्ठान व्यवहार, वि-  
श्रयण, उदाहरण ।

प्रयोगक तत्० (५०) प्रयोगकर्ता, नियोजक, निष्का-  
कारी, प्रवर्तक, प्रेरक ।

प्रयोजन तत्० (५०) कार्य, हेतु, निमित्त, अभिप्राय,  
उद्देश्य ।

प्रयोज्य तत्० (५०) जिसका प्रयोग किया जा सके ।  
भृत्य, प्रेक्ष्य, मूल धन ।

प्ररोचना तत्० (स्त्री०) प्रवर्तना, प्रवर्तनार्थ रोचक रूपा ।

प्ररोह तत्० (५०) अंकुर, बीजोद्भेद ।

प्रलपित तत्० (५०) कथित, उक्त, मिथ्या उच्चारि-  
त ।

प्रलम्ब तत्० ( ५० ) दैत्य विशेष, दनु का पुत्र, एक  
समय श्रीकृष्ण बलराम और गोप बालक खेल रहे  
थे, यहाँ यह गोप का वेध धर कर गया था । श्री-  
कृष्ण पुलम्बामुर को अभिसन्धि समझ कर गोप  
बालकों से मझ युद्ध करने लगे । इस युद्ध में यही  
होड रखा गया था कि जो हार जायगा वह  
जीतने वाले को कन्धे पर बैठा कर पुमावेगा,  
पुलम्बामुर बलराम के साम युद्ध में हार कर उनके  
अपने कन्धे पर बैठाकर ले चला । कुछ दूर ले जाकर  
बलराम का बध करना ही पुलम्बामुर चाहता था । यह  
समझ कर बलराम इतने भारी हो गये कि पुलम्ब-  
मुर उनको टो नहीं सका । अन्त में पुलम्ब अपनी  
मूर्ति धारण कर उनकी ओर लपका, परन्तु बहुत  
शीघ्र ही बाहु युद्ध में बलराम ने उसे मार डाला ।

प्रलय तत्० ( ५० ) कल्पान्त, लय, सङ्गम, विलय,  
सूच्छा, नष्ट चेष्टता ।—कर्ता ( ५० ) लयकारक,  
विनाशक, महादेव ।

प्रलाप तत्० (५०) अनर्थक वचन, उन्मत्तों के समान  
असङ्गत वचन ।

प्रलेप तत्० ( ५० ) प्रकृष्ट लेपन, शोध आदि का  
लेपन ।

प्रलोभ तत्० ( ५० ) स्पृहा, लालसा, वाञ्छा, अभि-  
लाषा ।

लोभन तत्० (५०) लोभ, लुभाय, लासव ।  
 लज्जना तत्० (खी०) पुनारणा, ठगाई ।  
 लषण तत्० (गु०) लक्ष, चिन्त, कुफा हुआ, नवा  
 हुआ, नोकी भूमि ।  
 लपर तत्० (गु०) सन्तान, वंश, श्रेष्ठ, प्रधान ।  
 लपत तत्० (गु०) धारम्भ, लगा, निपुण, तन्पर ।  
 लपतक तत्० (गु०) प्रेरक, प्रयोजक, उत्साहदाता,  
 सहायक, उदामे वाला ।  
 लपतेन तत्० (गु०) प्रेरण, प्रवृत्ति, आजापन,  
 प्रेषण ।  
 लपति त तत्० (गु०) आजापित, प्रेरित, लगाया  
 हुआ ।  
 लपपण तत्० (गु०) एक पर्वत का नाम, यह पर्वत  
 दक्षिण दिशा में किष्किन्धापुरी के पास है । यन-  
 याम के समय वर्षा ऋतु में राम और लक्ष्मण इसी  
 पर्वत पर रहे थे ।  
 लपवाद तत्० (गु०) पुनार, चर्चा, निन्दावाद, किंव-  
 दन्ती, बढ़ती खबर ।  
 लपवास तत्० (गु०) विदेश, अन्यदेश, परदेश, भिन्न  
 देश, देशान्तर, देशांतर, देशान्तरवास ।  
 लपवासन तत्० (गु०) देशान्तर भेजना ।  
 लपवासी तत्० (गु०) विदेशी, अन्य देश वासी, देशा-  
 न्तर में रहने वाला ।  
 लपवाह तत्० (गु०) नदी की धारा, स्रोत, बहाव ।  
 लपवाहक तत्० (गु०) गाड़ीवान, गाड़ी हाँकने  
 वाला ।  
 लपवाहिका तत्० (खी०) रोग विधेय, चतिसार ।  
 लपविष्ट तत्० (गु०) निविष्ट, चुसा हुआ ।  
 लपवीण तत्० (गु०) निपुण, कुशल, दण, चतुर, बुद्धि-  
 माय, धयाना ।—ता (खी०) निपुणता, दक्षता,  
 चतुराई ।  
 लपवृत्त तत्० (गु०) उद्यत, तन्पर, प्रविष्ट, लगा  
 हुआ ।  
 लपवृत्ति तत्० (खी०) कार्य में लगने की इच्छा, पत्र,  
 उपाय, इच्छा ।

प्रवेश तत्० (गु०) पैठ, पहुँच ।  
 प्रवेशक तत्० (गु०) प्रवेशकर्ता, प्रवेशकारी, पैठने  
 वाला ।  
 प्रशंसनीय तत्० (गु०) सद्गुण विविष्ट, कीर्तिमाय,  
 यशस्वी, प्रतिहाया ।  
 प्रशंसा तत्० (खी०) रक्षाघा, प्रतिहा, वर्षना, गुण  
 कथन, स्तोत्र, स्तुति ।  
 प्रशम तत्० (गु०) यमता, उपशम, शान्ति, विराम,  
 निवारण ।  
 प्रशमन तत्० (गु०) मारण, वध, शमता, प्रशान्ति,  
 विरति, निवारण ।  
 प्रशस्त तत्० (गु०) सुन्दर, स्वच्छ, विस्तृत, परितर  
 युक्त, प्रशंसनीय, श्रुति श्रेष्ठ, श्रुति उत्तम ।  
 प्रशस्ति तत्० (खी०) उत्तमता, गुण स्तुति, श्रुति-  
 नन्दन ।  
 प्रशान्त तत्० (गु०) शान्त्यन्त समताशाली, श्रुति-  
 धीर ।  
 प्रशन तत्० (गु०) जिज्ञासा, प्रश्नना, पृच्छा ।  
 प्रश्रय तत्० (गु०) प्रणय, स्नेह, स्वर्द्धा, प्रणयता ।  
 प्रश्रित तत्० (गु०) प्रणयी, विनीत, स्नेहान्वित,  
 एक हाथ में आने पोथ्य द्रव्य ।  
 प्रलथ तत्० (गु०) शिथिल शयक ।  
 प्रश्वाम तत्० (गु०) नासिका से वायु का निकलना,  
 दीर्घ निश्वास ।  
 प्रष्टा तत्० (गु०) प्ररनकर्ता, प्रश्नक, जिज्ञासु ।  
 प्रष्ट तत्० (गु०) अग्रगामी, श्रेष्ठ, प्रधान, सुप्र,  
 अगुषा ।  
 प्रसक्त तत्० (गु०) प्रसङ्ग विविष्ट, श्रुतियय अगुरक,  
 अगुरागी, प्राप्त, उपस्थित ।  
 प्रसङ्ग तत्० (गु०) सङ्गति विधेय, प्रसक्ति, प्रत्याय,  
 मैयुन, सङ्गन्ध, उद्देश्य, उपलक्ष, अयमर ।  
 प्रसन्न तत्० (गु०) मनुष्ट, दयान्वित, निर्मल, स्वच्छ,  
 प्रसन्न ।—चित्त (गु०) मनुष्ट चित्त, दयायु, अयु-



- ग्राहक ।—ता (स्त्री०) सन्तोष, प्रसाद, प्रफुल्लता, निर्मलता, स्वच्छता ।
- प्रसव तत्० (पु०) गर्भ मोचन, अल्पजन्म, फल, कुसुम, फूल ।—गृह (पु०) सुतिका गृह, शीरि ।
- प्रसर तत्० (पु०) प्रकृष्ट रूप से सञ्चार, विस्तार, प्रणय, वेग, समूह ।
- प्रसरण तत्० (पु०) सेना आदि का चारों तरफ फैलाव ।
- प्रसाद तत्० (पु०) प्रसन्नता, नैर्मल्य, अनुग्रह, काठ्य का गुण विशेष, स्वास्थ्य, सुस्थता, देव निवेदित द्रव्य, नैवेद्य, गुरु की लूठन ।
- प्रसादन तत्० (पु०) प्रसन्नता कारण, सेवन, मनाना, प्रसन्न करना ।
- प्रसादी तत्० (पु०) प्रसन्नता युक्त, कृपा विशिष्ट, देव निवेदित अन्न ।
- प्रसाधन तत्० (पु०) निष्पादन, सम्पादन, वेद्य रचना ।
- प्रसाधनी तत्० (स्त्री०) कङ्कतिका, कैंगही ।
- प्रसाधिका तत्० (स्त्री०) वेश कारिणी, वेश रचना करने वाली, शृङ्गार करने वाली ।
- प्रसार तत्० (पु०) प्रसरण, विस्तार, फैलाव प्रकरण ।
- प्रसारण तत्० (पु०) विस्तार करण, पधारना, विद्याना, पञ्चविध कर्म के अन्तर्गत एक प्रकार का कर्म ।
- प्रसारित तत्० (पु०) विस्तारित, विस्तृत, फैलाया हुआ ।
- प्रसिद्ध तत्० (पु०) एवात, नामलब्ध प्रतिष्ठित, प्रचलित, भ्रूषित ।
- प्रसिद्धि तत्० (स्त्री०) एवाति, प्रचार, भ्रूषा, प्रसिद्धार ।
- प्रसू तत्० (स्त्री०) माता, जननी, अम्बा ।
- प्रसूत तत्० (पु०) उत्पन्न, जात ।
- प्रसूता तत्० (स्त्री०) जातापत्या, प्रसवकारिणी, जिसने बच्चे उत्पन्न किये हैं ।

- प्रसूति तत्० (स्त्री०) प्रसव, उद्भव, उत्पत्ति, जन्ममाना, दक्ष की पत्नी और सती की माता नाम, दक्ष यज्ञ का विनाश करके जब महादेवनेत्र को मार डाला था, तब इन्हींकी प्रार्थना से महादेव ने दक्ष को पुनः जीवित किया था ।
- प्रसून तत्० (पु०) पुष्प, फूल, कुसुम ।
- प्रस्तर तत्० (पु०) पाषाण, पत्थर, पथर, पित्त उपात, पल्लवादि रचित शय्या ।—मय (पु०) पाषाणमय, पथरीला ।
- प्रस्ताव तत्० (पु०) अवसर, प्रसङ्ग स्तुति, पुण्य, प्रकरण, वृत्तान्त, कथा, कथानुष्ठान ।
- प्रस्तावना तत्० (स्त्री०) आरम्भ, वाक्यानुष्ठान भूमिका, अद्यतरणिका, मुख्य वक्तव्य के पहले का वक्तव्य ।
- प्रस्ताधिक तत्० (पु०) समयानुसार, यथासमय ।
- प्रस्ताचित तत्० (पु०) कथित, उल्लिखित, कृत, विचारित, कर्तव्य रूप से निर्धारित ।
- प्रस्तार तत्० (पु०) शर्तों की बनावट शय्या, शर्तों के भेद जानने वाले सङ्केत विशेष ।
- प्रस्तुत तत्० (पु०) प्रकरण प्राप्त, प्राकरणिक, प्राङ्गिक, निष्पन्न, प्रकृत, स्तुति युक्त, उपस्थित, प्रतिपन्न, उद्यत ।
- प्रस्थ तत्० (पु०) प्रकृत स्थिति विशिष्ट । (पु०) परिमाण विशेष, तौल, एक सेर, पर्वत का एक देश, पर्वत की समतल भूमि ।
- प्रस्थान तत्० (पु०) गमन, यात्रा, प्रयाण, निर्माण ।
- प्रस्थापन तत्० (पु०) प्रेरण, प्रेषण, पठाना, भेजना ।
- प्रस्थापित तत्० (पु०) प्रेषित, प्रेरित, अति सुन्दर रूप से स्थापित ।
- प्रस्फुटित तत्० (पु०) प्रफुल्लित, प्रकाशित, विकसित ।
- प्रस्रवण तत्० (पु०) उत्तम रूप से बहना, पर्वत का निर्धार, एक पर्वत का नाम ।

शिव तत्त्वं ( ५० ) सूत्र, सूत ।  
 शिवे तत्त्वं ( ५० ) अतिशय धर्म, अधिक पसीना ।  
 शहर तत्त्वं ( ५० ) दिन के आठ भाग का एक भाग,  
 चार घड़ी ।  
 शहरी तत्त्वं ( ५० ) यामिक, पहरुधा, पहरेदार,  
 चौकीदार ।  
 शर्प तत्त्वं ( ५० ) अतिशय आह्लाद, अत्यन्त हर्ष ।  
 शर्पिणी तत्त्वं ( स्त्री० ) त्रयोदशाक्षर इन्द्र विशेष ।  
 शसन तत्त्वं ( ५० ) परिहास, उपहास, चात्सेप, रूपक  
 विशेष, नाटक का एक भेद ।  
 शस्त तत्त्वं ( ५० ) विस्तरण अष्टगुण वाला हाथ,  
 चापट, चावड़, तबड़ा, रावण के एक सेनापति का  
 नाम ।  
 शार तत्त्वं ( ५० ) आघात, मारण ।  
 शारी तत्त्वं ( ५० ) मारणकर्ता, मारने वाला ।  
 शक्ति तत्त्वं ( ५० ) चिन्म, निरस्त, प्रेषित, प्रेरित ।  
 शृष्ट तत्त्वं ( ५० ) सन्गुष्ट, उल्लसित, आनन्दित ।  
 —मना ( ५० ) सन्गुष्ट चित्त ।  
 श्लिका तत्त्वं ( स्त्री० ) दुर्घि च प्रप्र, कूटार्थ भाषित,  
 दुन्द वाक्य, परेली ।  
 श्लाद तत्त्वं ( ५० ) दैत्यपति हिरण्यकशिपु का पुत्र ।  
 ये परम विष्णु भक्त थे, बाल्यावस्था ही में उनकी  
 विष्णुभक्ति प्रकाशित हो गयी थी । दैत्यराज ने  
 अपने पुरोहितपण्ड और अमरक को प्रह्लाद को पढ़ाने  
 के लिये नियुक्त किया था । प्रह्लाद की विष्णुभक्ति  
 देख कर जेचारे ब्राह्मण रोजी जाने के भय से  
 काँपने लगे । अपनी बचाव करने के लिये उन  
 लोगों ने हिरण्यकशिपु से कह दिया कि राजपुत्र  
 नास्तिक हो गया । हिरण्यकशिपु ने प्रह्लाद को बहुत  
 समझाया परन्तु कुछ फल नहीं हुआ । हिरण्यकशिपु  
 ने प्रह्लाद को कुपुत्र समझ कर उसे मार डालने के  
 लिये अनेक प्रयत्न किये परन्तु प्रह्लाद नहीं मरे ।  
 एक दिन प्रह्लाद अपने पिता के सामने भगवान् का  
 गुण कीर्तन करने लगे । प्रह्लाद ने कहा परमेश्वर  
 क्यावक हैं, उनकी प्रभा चारों ओर फैली हुई है ।  
 हिरण्यकशिपु ने कहा तो इस खम्भे में तेरा ईश्वर  
 क्यों नहीं है, प्रह्लाद ने खम्भे की ओर देख कर

भगवान् को प्रणाम किया । परन्तु हिरण्यकशिपु  
 खम्भे में भगवान् को नहीं देख सका था, अतएव  
 उसने खम्भे पर पदाघात किया । बस, यह खम्भा  
 बीच में फट गया वहीं से नृसिंह रूपधारी भग-  
 वान् प्रकट हुए और उन्होंने दैत्यकुल का नाश कर  
 दिया । देव पितर आदि सभी वहाँ उपस्थित  
 हुए और उन लोगों ने भगवान् की स्तुति की,  
 परन्तु नृसिंह का क्रोध शान्त नहीं हुआ । अन्त  
 में प्रह्लाद उनकी स्तुति करने लगा, भगवान् ने  
 कहा, प्रह्लाद मैं तुम पर बहुत प्रसन्न हूँ । तुम घर  
 माँगो, प्रह्लाद ने कहा कि महाराज, आप मुझे घर  
 का नालच न दिवावे, हम कामाक्षक हैं, अतएव  
 हमको घर न चाहिये, यदि आप घर देना चाहते  
 हो हों तो यही घर दीजिये कि मेरे हृदय में कभी  
 वासना उत्पन्न न हो । भगवान् ने वही घर दिया ।  
 पुनः भगवान् के कहने से प्रह्लाद ने दूसरा घर यह  
 माँगा कि मेरे पिता का अपराध क्षमा हो भगवान्  
 ने “ एवमस्तु ” कह कर पितृ-शोक-कातर प्रह्लाद  
 को आश्वामित किया ।

शकू तत्त्वं ( अ० ) पुर्ष, आगे, पहले, प्रथम, आद्य,  
 आदि, आरम्भ ।—तन ( ५० ) पुराना, प्राचीन,  
 पहला ।—काल ( ५० ) पूर्वकाल, प्राचीन समय ।  
 शकाम्य तत्त्वं ( ५० ) शिव के अष्टविध शैशवों के  
 अन्तर्गत शैशव्य विशेष, यथेष्टता, प्रचुरता, स्वेच्छा-  
 सुखर ।  
 शकार तत्त्वं ( ५० ) इंटों की बनी दीवार, चार  
 दीवारी, कोट की भीत, नगर के चारों ओर की  
 दीवार ।  
 शकृत तत्त्वं ( ५० ) प्रकृत सम्बन्धी, नीच, अधम,  
 अत्यन्त, भाषा विशेष, वास्तविक, यस्तुतः ।  
 स्वाभाविक ।—उच्च ( ५० ) यर्षा शरत् और अस्त-  
 अस्तु में क्रम से वातपित्त और कफ से उत्पन्न उच्चर ।  
 —प्रलय ( ५० ) प्रलय विशेष, प्रकृति का नाश,  
 महाप्रलय ।—भाषा ( स्त्री० ) भाषा विशेष, संस्कृत  
 का एक भेद ।—शत्रु ( ५० ) एक देश पर अपनी  
 अपना अधिकार चाहने वाले राजा । स्वाभाविक  
 शत्रु ।

प्राखर्यं तत्० ( पु० ) प्रखरत्व, तीव्रता ।  
 प्रागभाव तत्० ( पु० ) संसर्गाभाय विशेष, विनाश  
 भावत्व, सम्भावना. किसी वस्तु के उत्पन्न होने के  
 पहले का अभाव ।  
 प्रागल्भ्य तत्० ( पु० ) प्रगल्भता, अहङ्कार, अभि-  
 मान, दर्प, गर्व, घमण्ड, ठपापकता, औदृत्य,  
 छियों का स्वाभाविक भाव ।  
 प्राधूर्तिक तत्० ( पु० ) पाहुन, अतिथि, अभ्यागत ।  
 प्राची तत्० ( स्त्री० ) पूर्व दिशा, सूर्योदय दिक्, पूर्व  
 दिक् ।  
 प्राचीन तत्० ( पु० ) पूर्व देश का उत्पन्न, पूर्व दिशा  
 का उत्पन्न, पूर्वकाल का उत्पन्न, पुरातन, पूर्वका-  
 लीन, बृद्ध ।—गाथा ( स्त्री० ) प्राचीन कथा, पुरातन  
 इतिहास ।—ता ( स्त्री० ) पूर्वकालीनता, प्राचीनत्व,  
 पुरातनत्व, बृद्धावस्था ।—चर्हि ( पु० ) राजा विशेष ।  
 प्राचीर तत्० ( पु० ) बाहर का कौट, प्राकार, चार  
 दिवारी ।  
 प्राचुर्य तत्० ( पु० ) प्रचुरता, अधिकता, बाहुल्य,  
 बहुत्व ।  
 प्राच्य तत्० ( पु० ) शरावती नदी के पूर्व दक्षिणदेश ।  
 ( पु० ) पूर्वदेशीय, पूर्वदेश-उत्पन्न ।  
 प्राजापत्य तत्० ( पु० ) द्वादश दिन का व्रत, रोहिणी  
 नक्षत्र, प्रयाग, विवाह विशेष, पाग विशेष ।  
 प्राज्ञ तत्० ( पु० ) पण्डित, बुद्धिमान्, अभिच, विद्व,  
 दत्त, निपुण ।  
 प्राज्य तत्० ( पु० ) प्रचुर, यशस्व, बहु, अधिक ।  
 प्राञ्जल तत्० ( पु० ) सरल, अञ्जु, सीधा ।  
 प्राञ्जलि तत्० ( स्त्री० ) संयुक्त फलद्वय, अञ्जलिपुट ।  
 प्राङ्घवाक तत्० ( पु० ) व्यवहार द्रष्टा, विचारक,  
 न्यायकर्ता ।  
 प्राण तत्० ( पु० ) हृदयस्य वायु, जीव, अनिल, वायु,  
 निरवास, प्रज्ञा, प्रजापति, स्वनाम एवात धमिक्  
 द्रव्य ।—त्याग ( पु० ) जीवन विसर्जन, जीवन  
 त्याग, मृत्यु, मरण ।—दण्ड ( पु० ) धध दण्ड,  
 प्राण नाशक दण्ड ।—दाता ( पु० ) जीवन दाता,  
 प्राण रक्षक ।—नाथ ( पु० ) स्वामी, नाथ, पति,

प्रभु ।—पशु ( पु० ) प्राणत्याग, प्राण त्याग  
 प्रतिज्ञा, अत्यन्त आयास ।—प्रतिष्ठा ( स्त्री० )  
 प्रतिभा आदि-में देवत्वकरण, जीव संस्कार ।  
 —प्रिय ( पु० ) प्रियतम, प्राण तुल्य प्रिय ।—प्र  
 कोप ( पु० ) कर्मेन्द्रिय सहित प्राण पशुक ।—प्र  
 ( पु० ) प्राण तुल्य, प्राण सदृश ।—समा ( स्त्री० )  
 जाया, भार्या, पत्नी ।  
 प्राणान्त तत्० ( पु० ) प्राणावसान, प्राण गेद, मार,  
 मृत्यु ।  
 प्राणायाम तत्० ( पु० ) योगाङ्ग विशेष, व्यास विशेष,  
 रेचक, पूरक और कुम्भक नामक प्राणों के दमन  
 करने का उपाय ।  
 प्राणी तत्० ( पु० ) प्राण विशिष्ट, मनुष्य आदि सब  
 तन जीव, शरीरी, देही, जीवधारी ।  
 प्राणेश तत्० ( पु० ) पति, स्वामी, प्राणों का ईश्वर ।  
 प्रातः तत्० ( स्त्री० ) प्रभात, विहान, सूर्योदय के समय  
 का तीन सुहूर्त काल ।—कर्म ( पु० ) प्रातःकाल  
 किया जाने वाला कर्म ।—काल ( पु० ) सूर्योदय  
 के अनन्तर छ दण्ड काल ।—क्रिया ( स्त्री० )  
 प्रातःकाल का कर्तव्य कर्म ।—सन्ध्या ( स्त्री० )  
 प्रातःकाल की सन्ध्या, प्रातःकाल की जाने  
 वाली वैदिक मन्त्रोपासना ।  
 प्रातराश तत्० ( पु० ) प्रातःकालीन भोजन, प्रातर्भो-  
 जन, जलपान, जलखाया ।  
 प्रातिकूल्य तत्० ( पु० ) वैपरीत्य, विषट्कारण, विप-  
 क्षता, यक्षता ।  
 प्रादुर्भाव तत्० ( पु० ) आविर्भाव, उदय, प्रकाश,  
 महिमा ।  
 प्रादेश तत्० ( पु० ) तर्जनी सहित विस्तृत अक्षुब्ध,  
 वितस्ति, धिता ।  
 प्राधा तत्० ( स्त्री० ) पूजापति महर्षि करण्य की  
 भार्या, गन्धर्व और अचररा इन्हींके गर्भ से  
 उत्पन्न हुए हैं ।  
 प्राधान्य तत्० ( पु० ) प्रधानता, प्रधानत्व, अहंता  
 मुख्यता ।  
 प्रान्त तत्० ( पु० ) अन्त भाग, शेप, सीमा, कण ।

न्तर तत्० (पु०) दूर गून्य पय, दुर्गम पय, छाया  
जल आदि रहित स्थान, उजाड़ स्थान, वीरान,  
जङ्गल ।  
प्रापक तत्० (पु०) प्रापणकर्ता, पहुँचाने वाला ।  
प्रापण तत्० (पु०) प्राप्ति, पावना, पहुँचाना,  
मिलना ।  
प्राप्त तत्० (पु०) लब्ध, प्राप्त, मिलित, प्रस्था-  
पित ।—काल (पु०) निर्दिष्ट काल, उपयुक्त  
समय ।  
प्राप्ति तत्० (स्त्री०) पाना, लाभ, अधिगम, उपाजन,  
धनादि वृद्धि ।  
प्राप्य तत्० (पु०) प्राप्तव्य, प्राप्तणीय ।  
प्रामाणिक तत्० (पु०) अति मान्य सिद्धान्त, पदार्थ,  
सत्य ।  
प्रामाण्य तत्० (पु०) ग्राह्यत्व, ग्रहण करने योग्य,  
प्रमाण सिद्ध ।  
प्रायः तत्० (अ०) बाहुल्य, बहुधा, कभी कभी, लग-  
भग, करीब ।  
प्रायश्चित तत्० (पु०) पापनाशन कर्म, पापक्षय  
करने वाले कर्म ।  
प्रारब्ध तत्० (पु०) पूर्वास्तुष्टि कर्म, अदृष्ट, प्राक्तन-  
कर्म, पूर्व कर्म, भाग्य ।  
प्रारम्भ तत्० (पु०) उत्तम रूप से, प्रारम्भ, उपक्रम,  
अनुष्ठान ।  
प्रार्थना तत्० (स्त्री०) याज्ञा, निवेदन, रीति से  
मौगना ।  
प्रार्थित तत्० (पु०) याचित, निवेदित, विन्न पित,  
वाञ्छित, जाँचा, माँगा ।  
प्रालम्ब तत्० (स्त्री०) ललाट, भाग्य, अदृष्ट ।  
प्रावृत्त तत्० (पु०) घूँघट, ओढ़नी ।  
प्रासाद तत्० (पु०) मन्दिर, मकान, देवता चीर  
राजाओं के रहने का भवन ।  
प्रिय तत्० (पु०) हृद्य, स्नेह-पात्र, प्रियतम, प्रेमी,  
प्रणयी ।—तम (पु०) अत्यन्त प्रिय, पति ।—घादी  
(पु०) मिष्टभाषी, प्रशंसक, स्तुतिकर्ता ।  
प्रिया तत्० (स्त्री०) प्रेमास्पदा नारी, प्रियतमा,  
प्रणयिनी ।

प्रीत तत्० (पु०) पृष्ट, वस्तुष्ट, प्रेम पात्र, प्रिय ।  
प्रीति तत्० (स्त्री०) प्रेम, स्नेह, प्यार, प्रणय ।  
प्रीङ्गन तत्० (पु०) हिंङोला, डोला ।  
प्रीत तत्० (पु०) भूत, पिशाच, योनि विशेष, मृतक ।  
—कर्म (पु०) अस्त्येष्टि क्रिया, आहु ।—नदी  
(स्त्री०) वैतरणी नदी ।  
प्रीतनी दे० (स्त्री०) भूतनि, डाँकनी, डायन, वृङ्गल ।  
प्रीम तत्० (पु०) स्नेह, प्रियता, हार्द, प्रणय, प्रीति ।  
—भक्ति (स्त्री०) स्नेहयुक्त भगवत्स्नेहा, भगवाह  
में एकान्त प्रीति ।  
प्रीमास्पद तत्० (पु०) स्नेह भाजन, प्रणयी, प्रणय-  
भाजन ।  
प्रीमी तत्० (पु०) प्रेमयुक्त, स्नेहयुक्त, स्नेह भाजन ।  
प्रीयसी तत्० (स्त्री०) प्रियतमा नारी, दयिता, कान्ता,  
वल्लभा, प्रिया ।  
प्रीरक तत्० (पु०) प्रेरणकर्ता, प्रेषक, पठाने वाला,  
भेजने वाला ।  
प्रीरण तत्० (पु०) प्रेषण, पठाना, भेजना ।  
प्रीरणा तत्० (स्त्री०) विधि, चाहा, चादेश्य ।  
प्रीरित तत्० (पु०) प्रेषित, निवेदित, पठाना,  
भेजा हुआ, नियुक्त किया गया ।  
प्रीष्ट तत्० (पु०) अतिशय प्रिय, अत्यन्त स्नेह पात्र,  
अत्यन्त वरलभ ।  
प्रीप्य तत्० (पु०) प्रेरणीय, दान, भक्ष्य, भेषक, आन्ना-  
नुवर्ती, चाहा पालक ।  
प्रीक्त तत्० (पु०) कथित, उत्तम प्रकार से कथित ।  
प्रीत्साह तत्० (पु०) अतिशय उत्साह, चाप्यधिक,  
उद्योग ।  
प्रीपित तत्० (पु०) प्रवासगत, विदेशस्थ, परदेशी ।  
—पतिका (स्त्री०) विदेशस्थ पतिका, नायिका  
विशेष, यथा—  
जाको चिय परदेश में बिरह विकल तिय होय ।  
पुपितपतिका नायिका ताहि कहत सब कोय ॥  
—रसुराग ।  
प्रीहित दे० (पु०) पुरोहित ।

प्रीठ तत्० (गु०) प्रवृद्ध प्रगल्भ, निपुण, सौख्यनायक्या के वाद की अवस्था, विद्याहित ।

प्रीठा तत्० (स्त्री०) तीस वर्ष से पचास वर्ष तक की स्त्री, नायिका विशेष । यथा:—

निज प्रति मेरति केलि की, सकल कलानि प्रवीन ।  
ताषो प्रीठा कहत हैं जे कविता रसलोन ॥

—रसराज ।

प्रीठि तत्० (स्त्री०) सामर्थ्य, उत्साह, प्रगल्भता, उद्यम, उद्योग, अव्यवसाय ।—वाद (गु०) प्रभुता के महित विवाद ।

पुत्र तत्० (गु०) मेघ, वानर, चाखान, उखलन, भुमि, जलकाक पानी कौसी, मैना नाथ, तरणि ।

पुत्रङ्गम तत्० (गु०) घानर, कवि ।

पुत्रवन तत्० (गु०) जलमय, हृद्य ।

पुत्रीहा तत्० (स्त्री०) रोग विशेष, पित्रही, तन तिप्पी ।

प्लुत तत्० (गु०) खर विशेष, अतिशय दीर्घ स्त्र

प्लुति तत्० (स्त्री०) कूटना, फाँटना, उखलना ।

## फ

फ यह उपजून का वाइसवों अक्षर है, इसका उच्चारण स्थान श्रोष्ठ है इस कारण इस वर्ण की श्रोष्ठ्य सज्ञा है ।

फाँटना दे० (क्रि०) फसना, अटकना, उलझना, ठकना ।

फाँदलाना दे० (क्रि०) मुलायाना, मुलाया देना, फुल लाना ।

फदा दे० (गु०) पायु, फाँसी, फसही, उलझन, अटकन ।

फँसना दे० (क्रि०) उलझना, अटकना, बझना, फन्दे में फँसना ।

फँसाव दे० (गु०) उलझाव, अटकाव ।

फँसियारा दे० (गु०) बटवार, बटमार, टग, जल्लाद ।

फकडी दे० (स्त्री०) घनादर, अपमान, तिरस्कार ।

फकिया दे० (स्त्री०) फौक, खण्ड, टुकड़ा, अंग, भाग ।

फकोडिया दे० (गु०) बतझड़, बकबकिया, बकयादी, गप्पी ।

फकोडियात दे० (स्त्री०) बे सिर पैर की बात, अनर्थक बात, बिना प्रयोजन की कथा ।

फरू तत्० (गु०) दुराचार, दुराचारी मन्दगति, रिगन ।

फकड दे० (गु०) उच्छृङ्खल, हुड्ड, बखेडिया, भागडानु, लडाकू ।

फका दे० (गु०) पट्टा, पतना, पानीधा, पूर्णव वितरडा ।

फकिका तत्० (स्त्री०) अस्वद्वयहार, फेक मुलाया, पूर्णपक्ष, मिथ्या न्याय सम्बन्धे ध्यात्वा

फकी दे० (स्त्री०) फाँकी, दया की मात्रा ।

फगुनहट दे० (स्त्री०) फागुन की हवा ।

फगुचा दे० (गु०) होली, होली का उपवहार ।

फङ्गा दे० (गु०) कबल, घाघ, फकाव ।

फङ्गा दे० (गु०) कोट, फोडा पतङ्ग ।

फट दे० (गु०) प्रकाश प्राप्त, विकसित, फूला हुआ प्रफुल्लित । (अ०) फटकार, तिरस्कार, अनाद मन्शास्त्र ।

फटक तत्० (गु०) सहाटिक, प्रस्तर विशेष ।

फटकन दे० (स्त्री०) पछोरन, अन्नकण ।

फटकना दे० (क्रि०) पछोरना, अन्न से निकालना ।

फटकिरी दे० (स्त्री०) फिटकिरी, छार विशेष ।

फटकी दे० (स्त्री०) एक प्रकार का जाल विनये पकड़े जाते हैं, अथाध का बड़ा पिंजरा ।

फटना दे० (क्रि०) फूटना, टुकड़े होना, तटक दो खण्ड होना ।

फटफटाना दे० (क्रि०) ठयाकुन होना, हाथ धुनना, विषय होने के कारण उखलना फूटना

फटा दे० (गु०) सछिद्र, फाँकदार, दरफा हुआ ।

फाक दे० (घ०) शीघ्र, गुरत, गुरन्त, उसी समय,  
 तत्त्वज्ञान ।  
 फाका दे० (घ०) धडाका, बन्दूक बादि का शब्द ।  
 फाजाना दे० (झि०) घसग होना, घुसक होना ।  
 फाख दे० (घ०) बिलगाव, भिन्नता, भेद ।  
 फाटिक तह० (घ०) स्फटिक, झिल्लीरी पत्थर ।  
 फाड़ दे० (खी०) धूल स्थान, जुवा घर ।  
 फाड़क दे० (खी०) स्फुरण, धरधर, मन्दगति, प्रथ-  
 मजन ।  
 फाड़कना दे० (झि०) स्फुरण होना, फुरफुराना, वायु  
 के कारण धड़ों का दंभव कम्पन, फाकना ।  
 फाड़की दे० (खी०) झोट, प्रथधान, धनार, धाड़ ।  
 फाड़फाड़ना दे० (झि०) तनफना, छटपटाना ।  
 फाड़फाड़िया दे० (घ०) भृष्ट, डीठ, प्रगल्भ, रकबादी ।  
 फाड़ाना दे० (झि०) चिरवाना, निराना, फड़वाना ।  
 फाड़िजा दे० (खी०) झिझी, भींगुर, एक प्रकार  
 का कीट ।  
 फाड़िया दे० (घ०) पैकार, चिमाँती, खरीद कर बेचने  
 वाला, ठगपारी ।  
 फण तह० (घ०) माँव का चौड़ा मसलक, फणा, फन ।  
 —धर (घ०) नाग, सर्प, साँव ।  
 फणिम्भक तह० (घ०) छोटा पत्ता, गुलमीदल ।  
 फणिपति तह० (घ०) सर्वराज, शेष, अनन्त,  
 वासुकी ।  
 फणी तह० (घ०) सर्प, साँव, नाग ।  
 फणीन्द्र तह० (घ०) सर्वराज, फणिपति, वासुकि,  
 अनन्त ।  
 फणफदाना दे० (झि०) उबलना, बनवलाना, छोटे  
 छोटे दाने पड़ना ।  
 फनगा दे० (घ०) श्रवणफाड़ा, टिहरी, कीट विशेष ।  
 फनफनाना दे० (झि०) फुफकारना, फुफकार होइना,  
 उन्नेजित होना ।  
 फफसा दे० (घ०) फूला हुआ, फीका, फोफना ।  
 फफुन्दी दे० (खी०) सड़ी हुई गुमसाहट ।  
 फफोला दे० (घ०) छाला, स्फोट, स्फोटक, फुफका,  
 फामका ।

फफोले फूटना दे० (वा०) मानसिक दुःख, मन-की  
 चिन्ता, आधिमानसी शय्या ।  
 फफोले दिल के फाड़ना दे० (वा०) मन की चाह  
 पूरी करना, गुम्मार निकालना, इच्छा पूर्ण  
 करना ।  
 फय दे० (खी०) शोभा, भनेाहरता, रमणीयता  
 रम्यता ।  
 फयफना दे० (झि०) पनपना, डाल निकलना,  
 शाखा फूटना ।  
 फयता दे० (घ०) योग्य, सजना, ठीक, सुहाना ।  
 फयती कहना दे० (वा०) घटती हुई बातें कहना,  
 घुटकुला कहना, हँसी करना, सुहल करना, किसी  
 की शोभा को दूखना ।  
 फयन दे० (खी०) शोभा, गृह्णार, सजावट, सजान ।  
 फयना दे० (झि०) मोहना, शोभना, शोभा देना या  
 पाना ।  
 फयीला दे० (घ०) सजीला, शोभायमान, रम्य,  
 रमणीय ।  
 फर दे० (घ०) फल ।  
 फरकना दे० (झि०) फड़कना, कौपना, स्फुरण  
 होना, फुरफुराना ।  
 फरचा दे० (घ०) परिष्कार, निष्पत्ति, मैचों का  
 फटना ।  
 फरचाना दे० (झि०) आना देना, चुकाना ।  
 फरछा दे० निर्मल, स्वच्छ, गुदु ।  
 फरछाना दे० (झि०) स्वच्छ करना, निर्मल करना,  
 शोधना, मलना ।  
 फरफन्द दे० (घ०) छल, कपट, धोखा, सुदृता ।  
 फरफन्दिया दे० (घ०) छली, कपटी, धोखेवाज़ ।  
 फरस दे० (घ०) झिझाना ।  
 फरसा दे० (घ०) फायड़ा, कुपहाड़ी ।  
 फरहरा दे० (घ०) श्रजा, पताका, केतु ।  
 फरहरी दे० (खी०) भपड़ी का कपड़ा । (घ०) शप-  
 सुला ।  
 फरिया दे० (खी०) सहंगा, सारी, ओढ़नी ।

फरी दे० (स्त्री०) ढाल, फलक ।  
 फरुहा दे० (पु०) फायड़ा, अस्त्र विशेष, जिससे मिट्टी  
 बटोरी जाती है ।  
 फर्राटा दे० (पु०) पौंस का टुकड़ा, शब्द विशेष ।  
 फर्रांना दे० (स्त्री०) हिलना, उड़ना, फहराना ।  
 फल तत्० (पु०) शस्य, लाभ, फलक, चर्म ढाल,  
 इष्टसिद्धि, अभिप्राय, कर्म जन्म शुभ या अशुभ  
 फल, अनिष्ट इष्ट ।—जनक (पु०) फलद, सफल ।  
 —द (पु०) फलदाता, फलदायक ।—दाता (पु०)  
 फल देने वाला, फल प्रद ।—मूल (पु०) फल  
 और मूल ।  
 फलक तत्० (पु०) चर्म, ढाल, अस्थि खण्ड, नाग-  
 केशर, काष्ठ पदक, पटरा, त्वा ।  
 फलना दे० (क्रि०) सफल होना, फल लगना,  
 करना ।  
 फलसुम्भीचल दे० (पु०) एक प्रकार का खेल ।  
 फलवान् तत्० (पु०) सफल, सार्थक, फलपुष्क ।  
 फला दे० (पु०) युक्त अक्षर, सारे स्वर, आणादि का  
 अग्रभाग, अक्षरों की धार ।  
 फलाङ्ग दे० (पु०) प्लुत गति, लौक, सहन, फलास ।  
 फलान दे० (पु०) अशुभ ।  
 फलाफल तत्० (पु०) लाभालाभ, हिताहित ।  
 फलास दे० (पु०) डेग, फलाङ्ग ।  
 फलाहार तत्० (पु०) फल भोजन, अन्नातिरिक्त  
 भोजन ।  
 फलित तत्० (पु०) फल विशिष्ट, सफल, ज्योतिष  
 विशेष ।  
 फलितार्थ तत्० (पु०) [फलित + अर्थ] सिद्ध अर्थ,  
 तात्पर्यार्थ, सिद्धान्त ।  
 फलियाँ दे० (स्त्री०) छीमी, फली ।  
 फली तत्० (पु०) फल युक्त, फलवान्, सफल, फल  
 विशिष्ट, छीमी, फलियाँ ।  
 फलूवा दे० (पु०) गठीला, भासर ।  
 फलोदय तत्० (पु०) [ फल + उदय ] लाभ, प्राप्ति,  
 मनोरथ सिद्धि, आनन्द ।

फलोत्तमा तत्० (स्त्री०) द्रावि वृक्ष, मुक्का ।  
 फल्गु तत्० (पु०) अक्षर, निरर्थक, मुक्क । (पु०)  
 गया की एक नदी का नाम । इसी नदी के तीरे  
 पर गया शहर बसा है ।  
 फसकड़ दे० (पु०) पैर फैला कर बैठना ।  
 फसकना दे० (क्रि०) फटना, फूटना, दरहना, भा  
 फना, ढीला होना, शिथिल पड़ना ।  
 फसफाना दे० (क्रि०) फाड़ना, दरफाना, शीघ्र  
 करना, शिथिल करना ।  
 फसना दे० (क्रि०) बकना, रुकना, उलकना ।  
 फसफसा दे० (पु०) निरर्थक, थिलथिला ।  
 फसाना दे० (क्रि०) उलकाना, बकाना, शीघ्र  
 करना, बश में करना ।  
 फहराना दे० (क्रि०) धरना उठाना, फराना ।  
 फाँक दे० (स्त्री०) फल आदि का टुकड़ा, शीघ्र,  
 विभाग, हिस्सा, भाग ।  
 फाँकना दे० (क्रि०) फट्टा मारना, लाना, बसाना ।  
 फाँकी दे० (स्त्री०) धूर्तपक्ष, न्याय की व्याप्य,  
 शास्त्रीय प्रश्नों का विचार, फकिरा, दया की माता  
 तूर्ण ।  
 फाँद दे० (पु०) फन्दा, फाँसी, पाय, फसदी ।  
 फाँदना दे० (क्रि०) फूटना, उल्लाना, प्लुताना  
 लौचन ।  
 फाँदा दे० (पु०) फन्दा, फाँसी, फसदी ।  
 फाँदी दे० (स्त्री०) भार, पेड़ों का बोका ।  
 फाँपना दे० (क्रि०) फूलना, सूजना, सूजन होना ।  
 फाँपा दे० (पु०) फूला, सूजा ।  
 फाँफड़ दे० (पु०) व्यवधान, अवकाश, अन्तर, श्वेत  
 पुँट, छिद्र ।  
 फाँस दे० (पु०) सूख काँटा, सीक ।  
 फाँसना दे० (क्रि०) रोकना, बाँधना, अटकना  
 उलकाना, बकाना, पकड़ना, जाल में बकाना ।  
 फाँसा दे० (पु०) फाँदा, फन्दा, फसदी ।  
 फाँसी दे० (स्त्री०) दण्ड विशेष, प्राण दण्ड,  
 प्रकार की रस्ती जिससे गला दबा कर आद

मार हाते जाते हैं।—दौना (क्रि०) मार डालना, मार खाना, मारना, मारना।—पड़ना (घा०)

मार जाना, प्राण दण्ड से दण्डित होना, मारना पर चढ़ाया जाना।—लंगाना (घा०) मला घोट कर मरना, फाँसी लगा कर मरना, आत्म-हत्या करना।

फाम दे० (पु०) राग विशेष, होर्षा का गाना, होली का खेल, होली में रङ्ग आदि डालना।—खेलना (घा०) होली का त्योहार मनाना, रङ्ग डालना।

फामगुन दे० (पु०) फामगुन मास, ब्राह्मणों महीना।

फामक दे० (पु०) द्वार, दरवाजा, बाहर का दरवाजा।

फामना दे० (क्रि०) फूटना, टूटना, बिगड़ना, चुकसान।

फामजाऊ दे० (पु०) काटने वाला, कटहरा, कटखना।

फामखाना दे० (क्रि०) काटना, काट खाना, मताना, मोथ करना।

फामना दे० (क्रि०) चीरना, फोड़ना, तोड़ना।

फामा दे० (पु०) चीरा हुआ, फटा, टूटा।

फाम तह० (पु०) हलोगकरण, एक प्रकार की लोहे की फील जो हल के आगे लगाई जाती है, जिससे जमीन खोदी जाती है। गिब, धलराम। फामास यन्त्र विशेष, नमविध शय्य के अंतर्गत अथय शय्य। सुवारी का टुक।

फामसा दे० (पु०) फल विशेष।

फामगुन तह० (पु०) वर्ष का ब्राह्मणों मास, अजुन, पार्थ।

फाम दे० (पु०) फलवा, वस्तु खरीदने के बाद जो बिना दाम लिया जाता है।

फामड़ा दे० (पु०) कुदार, कुटारी, फामा।

फामड़ो दे० (खी०) छोटा कुदार, कुदारी।

फामा दे० (पु०) रुई का छोटा गोता, जिसमें सुगन्ध द्रव्य अन्त आदि लगा रहता है। यही, मनहम की यही।

फिकारना दे० (क्रि०) चिर नङ्गा करना, चिर वंचना।

फिकर दे० (खी०) चिन्ता, उपाय, कल्पना।

फिट दे० (पु०) फिटकार, हुक्कार, तिरस्कार, अपमान।

फिटकरी दे० (खी०) चार विशेष।

फिटकार दे० (पु०) धिक्कार, तिरस्कार, माली, शाय, मराप।

फिटकारना दे० (क्रि०) धिक्कारना, तिरस्कार करना, शाय देना, मरापना।

फिटाना दे० (क्रि०) फेंटना, मिलाना, फिनाना।

फिर दे० (घ०) चोर, पुनः, अन्तर।

फिरकी दे० (खी०) एक खेलने की वस्तु।

फिर जाना दे० (क्रि०) लौटना, लौट जाना, पलटना, मुड़ जाना, पराजय होना।

फिरत दे० (पु०) फिर हुआ, लौटाया हुआ, लौटाया गया, फेरा हुआ।

फिरता दे० (पु०) रमता, चलता, घूमता।

फिरना दे० (क्रि०) घूमना, घूमण करना, पर्यटन करना, रमना, लौटना, पलटना, रमना, मुड़ना।

फिराना दे० (क्रि०) घुमाना, लौटाना, पलटाना, मोड़ना।

फिराव दे० (पु०) घुमाव, फेरवटन, पलटाव।

फिरनी दे० (खी०) खेलने की एक वस्तु।

फिहरी दे० (खी०) पिपहरी, घुटना।

फिसफिसाना दे० (क्रि०) डरना, भौत होना, भागा घोषा करना।

फिसलना दे० (क्रि०) खसकना, गिरना, खिसकना, पलटना।

फिसलाहा दे० (पु०) विछलाहा, विचिह्न, जहाँ की भूमि बहुत विकनी हो।

फिसलाहट दे० (खी०) चिकनाहट, विचिह्न।

फौचना दे० (क्रि०) धोना, धोती धोना, फाड़े धोना।

फौका दे० (पु०) नीरम, खाद रहित, कमठ, मीठा।



फुँकार दे० (पु०) फुककार, मुहुर्ष आदि का शब्द ।

फुकना दे० (क्रि०) जलना, बुझना । (पु०) शैली ।

फुकनी दे० (स्त्री०) आग फूँकने के लिये धाँस की या धातु विशेष की बेगी ।

फुठ दे० (पु०) अलग, भिन्न, अयुग्म, एकाकी, अकेला ।

फुटकर दे० (पु०) भिन्न भिन्न, अलग अलग, पृथक् पृथक् ।

फुटकी दे० (स्त्री०) छिटकी, अयुग्म, असहाय, अकेला, एकाकी ।

फुड़िया दे० (स्त्री०) फुँसी, छोटा घाव ।

फुत्कार दे० (पु०) दुत्कार, निरस्कार ।

फुदकना दे० (क्रि०) फुदकना, उड़लना ।

फुदकी दे० (स्त्री०) पत्ति विशेष ।

फुनगी दे० (स्त्री०) कली, कोंपल, मञ्जरी, कोमल पत्ते ।

फुनङ्ग दे० (स्त्री०) शिखर, चोटी, ऊपर की भूमि, ऊपर का भाग ।

फुनसी दे० (स्त्री०) मुहासा, फुड़िया, छोटे छोटे घाव ।

फुन्दना दे० (पु०) भव्वा, भालर, गुच्छा, स्तम्भ ।

फुफ्फा दे० (पु०) बुधा के पति, फुफ्फु की स्वामी, फूफा ।

फुफकी दे० (स्त्री०) पिता की बहिन, फूमा, बुधा ।

फुककार दे० (पु०) फुत्कार, फूँ फूँ का शब्द, फुँकार ।

फुफेरा दे० (पु०) फूफा के सम्बन्धी ।

फुर दे० (पु०) सत्य, यथार्थ, ठीक, परीक्षित, सच्चा, प्रमाणित ।

फुरफुराना दे० (क्रि०) फौपना, हिलना ।

फुरफुरी दे० (स्त्री०) धरपरी, कम्प, कम्पन ।

फुरहारी दे० (स्त्री०) कपकपी, सिद्धन ।

फुर्त दे० (पु०) शीघ्रकारी, बेगी, जमी, प्रजयी, वेगवाह ।

फुर्ती दे० (स्त्री०) शीघ्रकारित्व, शीघ्रता, बख्

फुर्तीला दे० (पु०) बेगी, वेगवाह, शीघ्रकारी, हँ करने वाला ।

फुलका दे० (पु०) फूला हुआ, हलका । (पु०) फकोला, पतली रोटी ।

फुलकारना दे० (क्रि०) फुककारना, फुलाना, फ उठाना ।

फुलकारी दे० (पु०) एक प्रकार का कपड़ा, जिसे सुई के काम बने रहते हैं, नैनू कपड़ा ।

फुलकी दे० (स्त्री०) हलकी रोटी, पतली रोटी ।

फुलमड़ी दे० (स्त्री०) एक प्रकार की धातवाड़ी ।

फुलवाड़ी दे० (स्त्री०) पुष्पोद्यान, पुष्पवाटिका ।

फुलहथा दे० (पु०) लाठी की मार ।

फुलाना दे० (क्रि०) सुजाना, मोटा करना, फुला देना ।

फुलासा दे० (पु०) लहने चम्पे ।

फुलेल दे० (पु०) सुगन्धित तेल ।

फुलौरी दे० (स्त्री०) पकौड़ी, बड़ी ।

फुली दे० (स्त्री०) धाँस का एक रोग ।

फुसफुसाना दे० (क्रि०) छिप कर बातें करना, कान कानी करना, गुप्त बातें करना ।

फुसलाना दे० (क्रि०) मुलावा देना, कौतना, धोना देना ।

फुसाहिन्दा दे० (पु०) चिनौना, घुणास्पद ।

फुस्का दे० (पु०) दुर्बल, शक्तिहीन, दीना ।

फूमा दे० (स्त्री०) फुफकी, पिता की बहिन ।

फूँक दे० (स्त्री०) खास, सौँस, दम, प्राण—देना (वा०) आग लगाना, मन्त्र से भाड़ना ।—फूँक कर पाँव धरना (वा०) सावधानी से काम करना सोच विचार कर चलना ।

फूँकना दे० (क्रि०) आग सुलगाना, बजाना ।

फूँकारना दे० (क्रि०) फनफनाना, फुककारना, फी का निश्वास ।

फूँही दे० (स्त्री०) भीँसी, छोटी छोटी हूँद ।

फूना दे० (क्रि०) मुँह से हवा निकालना, आग  
धुनगाना ।

फू दे० (स्त्री०) फल विशेष, ककड़ी, पकी हुई  
ककड़ी, विरोध, परस्पर द्वेष, अनमेल, अव्यमति,  
अलगाय, बिलगाय ।—फूना (वा०) विरोध  
होना, द्वेष बढ़ना, विरोध उत्पन्न होना ।—फूट  
कर रोना (वा०) सूख रोना, बड़े क्रोध से रोना ।  
—रहना (वा०) द्वेष बढ़ना, अलग होना ।  
—होना (वा०) अनवनाय, बिलगाय ।

फूटन दे० (स्त्री०) अनवनाय, विरोध, द्वेष ।

फूटना दे० (क्रि०) टूटना, नष्ट होना, अलगना,  
टुकड़े टुकड़े होना ।

फूटला दे० (गु०) टूटा हुआ, फूटा, नष्ट भट्ट, भग्न ।

फूटा दे० (गु०) भग्न, लक्षित, टूटा ।

फूटी दे० (स्त्री०) विरोध, भेद, त्रिगाड़, टूटी हुई,  
भग्न ।—सहै पर काजल न सहै (वा०) समय पर  
सामान्य कष्ट न सह कर पीछे अधिक कष्ट उठाना,  
छोटे कष्ट से बचने के लिये बड़े कष्ट में फँसना ।

फूफा दे० (गु०) फूफा के पत्ति, पिता के भगिनी-  
पति ।

फूल दे० (गु०) पुष्प, कुसुम ।—कौवी (स्त्री०) एक  
प्रकार का साग ।

फूलना दे० (क्रि०) खिलना, घुनना, हुलसना, आन-  
न्दित होना ।

फूलाव दे० (गु०) घुनना, शोथ, कुलाहल ।

फूली दे० (स्त्री०) शौथ का रोग ।

फूस दे० (गु०) तुण, चास, सूजी चास ।—में चिन-  
गारी डालना (वा०) भगड़ा उठाना, भगड़ा  
टपटा करना ।

फूसड़ा दे० (गु०) गूदड़, कथड़ा, धक्की, पुराने  
वस्त्र ।

फूसी दे० (स्त्री०) चोकर, धूसी ।

फूहड़ दे० (गु०) शिशित, धनहीनता ।

फूहड़ा दे० (गु०) कुम्हिल, वादरे, कुत्रका ।

फूहा दे० (गु०) रुई का काहा जिसे दूध में भिगो  
कर बच्चों का पिलाते हैं ।

फूहार, फूरी दे० (स्त्री०) भींसी, छोटी छोटी हूँद ।  
फेंक दे० (स्त्री०) प्रक्षेप, निक्षेप, त्याग ।

फेंकना दे० (क्रि०) प्रक्षेपण करना, त्यागना, दूर  
करना, निकाल देना, अलग कर देना, छोड़े को  
सरपट दौड़ना । जड़ पदार्थों ही के त्याग के अर्थ  
में इसका प्रयोग होता है ।

फेंक देना दे० (वा०) दूर गिरा देना ।

फेंकाय दे० (गु०) फेंक, त्याग । (गु०) त्यागने  
वाग्य, फेंकने वाग्य ।

फेंकैत दे० (गु०) फेंकने वाला ।

फेंट दे० (स्त्री०) कमरबन्द, कटि बन्धन, पटुका ।  
—बाँधना (वा०) उद्यत होना, तैयार होना,  
प्रस्तुत होना, ठानना, कमर बाँधना, कुचल्ली ।

फेंटना दे० (क्रि०) मिलाना, बसना आदि का  
सानना ।

फेंटा दे० (गु०) सुरेठा, साफा, मुड़बन्धा, छोटी एक  
प्रकार की पगड़ी ।

फेंटी दे० (स्त्री०) चाँटी, लछाँ ।

फेण तड़० (गु०) भाँग, गादमल ।

फेन तल० (गु०) भाग, समुद्र कफ, जलमल ।—घाही  
(गु०) जल, रस, समुद्र, दूध ।

फेनाना दे० (क्रि०) भाग खाना, भागना, फेन उठना,  
खाना होना, धकित होना ।

फेनी दे० (स्त्री०) एकवान् विशेष, एक प्रकार की  
मिठाई ।

फेनुस दे० (गु०) अमृत, सुधा, पीपुष, नव ममृत,  
गी और भँस का दूध ।

फेफड़ी दे० (स्त्री०) चलने की शक्ति, आगमन का  
परासमर्थ ।

फेर दे० (घ०) पुनः, पुनि, बहुदि, बारबार । (गु०)  
पुमाय, चौकापन, वक्रता, चक्र, पनटाव, बदनी,  
बुरे दिन, आमाय, कठिनता ।—खाना (वा०)  
चक्कर खाना, भटकना, कष्ट उठाना, दुःख सहना,  
—देना (वा०) लौटा देना, वसटा देना, पीछा

दे देना, प्रत्यर्पण करना।—पडाना (या०) मार्ग की दूरी होना, चक्कर पडना, घुमाव पडना।  
 —फार (या०) छल, रूपट, धोखा, इधर उधर।  
 फेरना दे० (क्रि०) लौटाना, घुमाना, हटाना।  
 फेरा दे० (पु०) घुमाव, प्रदक्षिण।  
 फेराफेरी दे० (स्त्री०) झलटा पलटा, परस्पर अर्पण।  
 फेरी दे० (स्त्री०) प्रदक्षिण, भिन्ना माँगना, भिन्ना के लिये चक्कर लगाना।—घाला (पु०) विसाँती, पैकार, गली गली घूम कर बेचने वाला।  
 फेर तत्० (पु०) सियार, गृहाण, मीदड।  
 फैलना दे० (क्रि०) पसरना, बिधरना, बिखरना, विस्तृत होना, व्याप्त होना, चारों ओर फैल जाना।  
 फैलाना दे० (क्रि०) विझाना, पनारना विस्तार युक्त करना, चौडाना, प्रचार करना, प्रकाश करना।  
 फैलात दे० (पु०) प्रकाश, प्रचार, पटाराव, विद्याव।  
 फेक दे० (पु०) गोखला, बोला, भीतर से घून्य, घोया। (स्त्री०) बाण का एक भाग जिधर से चल लगया जाता है।

फोफी दे० (स्त्री०) मली, हूडी, मलिका, एक प्रकार का बाजा, पोली, खाण्णी।

फोहार दे० (स्त्री०) फुहार, फूही, मीनी।

फोक दे० (पु०) तरबट, सीठी, निहार वस्तु (पु०) खोखला, गुदड, फटा वस्तु, बाण का भाग।

फोकट दे० (पु०) हूँडा, कद्दाल, दरिद्र। (पु०) सेंट का, विना दाम का, विना परिश्रम का।

फोकड दे० (पु०) खूद, गुदरा, तलबट।

फोडना दे० (क्रि०) तोड़ना, भंग करना, नष्ट करना, काटना, चोरना, टुकड़े टुकड़े करना।

फोडा दे० (पु०) स्फोटक, विस्फोटक, चाव, फुडा घुण, पिरकी।

फोला दे० (पु०) फफोला, छाला, शर्हों में दाना पडना, फुस्का।

फोस्का दे० (पु०) फफोला, फोला, फुलका, भवका छाला।

फौज दे० (स्त्री०) सेना, सैन्य, सैनिक, सेना।

फौत दे० (स्त्री०) मृत्यु, मरण, निधन।

फौरन दे० (अ०) गुरन्त, शीघ्र, सद्य।

## व

व यह व्यञ्जन का तेरहसवाँ वर्ण है, यह श्रोत्रव्य वर्ण है क्योंकि इसका उच्चारणस्थान श्रोत्र है।

व तत्० (पु०) वरुण ममुद्र सागर, जल।

वैकाई दे० (स्त्री०) वक्रता, टेढ़ापन, तिरछापन।

वैश्यादी दे० (स्त्री०) शोषधि विशेष, गर्भनाशक शोषधि।

वैटवाना दे० (क्रि०) विभाग कराना, बँटाना, हिस्सा लगाना।

वैटवैया दे० (पु०) बाँटने वाला, विभाजक, विभाजकर्ता।

वैटाना दे० (क्रि०) भाग करना, हिस्सा करना, भाग

रागाना, हिस्सा बाँटना।

वडी दे० (स्त्री०) परिधेय, वल विशेष, चाण्डाल।

वँडीहा दे० (पु०) वसवडर, चक्रशात, धन्वड।

वस्त्र दे० (पु०) लता, सतिका बेल।

वक तत्० (पु०) पत्नि विशेष, बगला।—वक लगाना (या०) धाखण्ड करना, दम्भ कर मतलब साधने के लिये धार्मिक बनना।

[ असुर विशेष, श्रीकृष्ण के हाथ से यह मर गया है। श्रीकृष्ण गोप बालकों के साथ गाय के लिये बना गये थे, यहाँ प्यासी गायों के

पिलाने के लिये वे एक तालाब पर गये उमी संभव  
-वक्रवधारी अमुर श्रीकृष्ण को निगल गया ।  
-बनलार श्रीकृष्ण के तेज से हतयित होकर उसने  
श्रीकृष्ण को उगल दिया । श्रीकृष्ण ने उमकी चौंभ  
पकड़ कर उसे मार डाला ।

वक्र दे० (खी०) वक्रवाद, वक्रवक्र, निरर्थक, बहुवाद,  
-वक्रवक्राहट, गुलमपोड़ा, उवर्ष की धारें ।—भक  
(वा०) वक्रवक्र, वक्रवाद ।—भक करना (वा०)  
भगड़ा टंटा करना, वक्रवाद करना, वृथा बचना ।  
—वक्र करना (वा०) बोल चाल करना, मन माने  
-वकते रहना ।—लगाना (वा०) गुलमपोड़ा  
करना, चिन्नाना, गोर मचाना ।

वक्रची दे० (खी०) ओषधि-विशेष ।  
वक्रना दे० (क्रि०) भकमान, वक्रवाद करना ।  
वक्रना दे० (पु०) मज, छागं, छागल ।  
वक्ररी दे० (खी०) छेरी, झागी, अजा ।  
वक्रला दे० (पु०) छिलका, छाल, त्यक्, त्यना ।  
वक्रवाद दे० (पु०) वक्रवक्र, वक्रवक्र ।  
वक्रवादी दे० (पु०) वक्रवक्रिया, तप्यी, गपोड़िया,  
वृथावादी ।

वक्रवास दे० (पु०) वक्रवाद, वाचालता, सुवरापन ।  
वक्रवाहा दे० (पु०) वक्रवाहिया, वक्री, वाचाल,  
वक्रवादी, वक्रवाद करने वाला ।  
वक्रसा दे० (पु०) समेट, मिलान, बन्धेजी ।  
वक्रसा दे० (पु०) चपरास का काँटा ।  
वक्रसा दे० (पु०) वक्रसा, समेट, बन्धेजी ।  
वक्रासुर-तत्त्वं (पु०) वक्रनाम अमुर (देखो वक्र) ।  
वक्रिया दे० (खी०) छेरी, चाकू, चकू । (पु०) वक्र-  
वादी, वक्र ।

वक्री तत्त्वं (खी०) पत्थिणी विशेष, वक्र की स्त्री,  
वृत्तना नामक राक्षसी ।  
वक्रैट्ट दे० (पु०) मुँज, काँस का वक्रला ।  
वक्रोटना दे० (क्रि०) मोचना, लसोटना, नखाघात,  
करना, नखवत करना ।

वक्रम दे० (पु०) रहने का काष्ठ विशेष ।  
वक्रल तत्त्वं (पु०) वक्रल, वक्रला, छिलका, त्यक्,  
त्यवा ।

वक्री दे० (पु०) गप्पी, वक्रवादी, वाचाल ।  
वक्रदन्त तत्त्वं (पु०) अमुर विशेष, शिशुपाल के भाई  
का नाम ।

वखरी दे० (खी०) मकान, गृह, घर, कुटी, भोपड़ी ।  
वखान तत्त्वं (पु०) ठ्याखान, वर्णन, स्तुति, स्तोत्र,  
प्रशंसा ।—करना (वा०) स्तुति करना, स्तव  
करना ।  
वखानना दे० (क्रि०) प्रशंसा करना, स्तुति करना,  
वर्णन करना ।

वखार दे० (पु०) भण्डार, खाद, भूमि, खोद कर  
बनाया हुआ खाद, जिसमें अन्न रखा जाता है ।  
टाँका ।

वखारी दे० (खी०) अन्न रखने का भण्डार, टाँका,  
खाद ।

वखिया दे० (पु०) एक प्रकार की सिलाई ।  
वखेड़ा दे० (पु०) भगड़ा, भंभट, टंटा, लड़ाई ।  
—चुकाना (वा०) भगड़ा, चुकाना, भगड़ा  
मिटाना ।—मचाना (वा०) भगड़ा करना, टंटा  
करना ।

वखेड़िया दे० (पु०) भगड़ापू, लड़का ।  
वखेरना दे० (क्रि०) विकीर्ण करना, विलिप्त करना,  
-फैलाना, छोटना ।

वखोर दे० (पु०) अगकुन, अपशकुन, अगुम वृत्तक  
विन्द ।

वखोरना दे० (क्रि०) टोकना, पुखना, दिक्दिकाना ।  
वखोरा दे० (पु०) कन्धा, रुकन्ध ।

वग दे० (पु०) वक्र, वगला ।—चाल (खी०) वगले  
की सी चाल, वक्रगति ।—छूट (खी०) सरपट  
धावा, दौड़ ।—छूट दौड़ना (वा०) सरपट  
दौड़ना, बिना रोक दौड़ना ।

वगड़ दे० (पु०) एक प्रकार का चौंवल, चौंवल ।

एक भेद ।

धगड़ा दे० (५०) दुःख, छल, कपट, धोखा ।

धगड़िया दे० (५०) छली, छलिया, कपटो, धूर्त ।

धगदना दे० (क्रि०) धिगड़ना, झूलना, पुराय होना ।

धगदाना दे० (क्रि०) झुलाना, धिगड़ना, डँवाडोगा करना ।

धगपाती दे० (स्त्री०) कच, काँच ।

धगला दे० (५०) धक, धकपत्ती ।—भगत (५०) कपटो, पाछपत्ती, धूर्त ।—मारो पखना हाथ (धा०) धर्य का परिग्रम करना, गरीब को मारना निष्फल है ।

धगहंस दे० (५०) हंस विशेष ।

धगारना दे० (क्रि०) छिटकाना, फैलाना, बिखेरना, फँक देना, पसारना ।

धगिया दे० (५०) फुलवाड़ी, पुष्पवाटिका, बगोचा, उपवन ।

धगीचा दे० (५०) उद्यान, फुलवाड़ी, पुष्पवाटिका ।

धगुला दे० (५०) यशहट, चक्रवाक, अन्धड़ ।

धघनहा दे० (५०) सुगन्ध द्रव्य विशेष, एक वृक्ष की जड़ ।

धघना दे० (५०) बाघ का नख, बाघ का दाँत ।

धघार दे० (५०) छैंकना, छैंक मसाला ।

धघारना दे० (क्रि०) छैंकना, छैंक डालना, मसाला डालना ।

धघी दे० (स्त्री०) डँस, मधुमक्खी, पगुओं की मक्खी ।

धघेल दे० (५०) राजपूतों की एक जाति ।—ध्वण्ड (५०) प्रदेश विशेष, जहाँ घघेल चत्री रहते हैं, रीयों का प्रदेश ।

धघेला दे० (५०) डँसक, बाघ का यज्ञा, घघेल, चत्रिय ।

धङ्ग दे० (५०) धातु विशेष, रस विशेष, रँग की मरम ।

धङ्गरी दे० (स्त्री०) अलङ्कार विशेष, हाथ में पहनने का गहना, जिसे चियौं हाथ में पहनती हैं ।

धङ्गला दे० (५०) खरौल घर, धारादरी, हवादार नये दङ्ग का मकान ।

धङ्गसेन तत्० (५०) अगस्त्य का वृक्ष ।

धङ्गा तत्० (५०) बाँस की जड़ का पौ। (५०)

नासमक, अन्नमिन्न, घूर्ण, निर्बुद्धि, वैवकूय धाः— तीरधराज प्रयाग नदी पुनि गङ्गा ।

राम मनुज कचरे गठ धङ्गा ॥

—रामायण ।

धङ्गाल दे० (५०) देश विशेष, जो गया जो से पूर्व है, गौड़देश ।

धङ्गालिन दे० (स्त्री०) धङ्गाल देश की स्त्री ।

धङ्गाली दे० (५०) धङ्गाल देश का घासी, धङ्गाली ।

धङ्गी दे० (स्त्री०) मीरा, लट्टू, किर्की, खेन की एक वस्तु ।

धञ्च दे० (५०) धचन, धक्क, झोली। (स्त्री०) जोषण विशेष, एक वृक्ष की जड़ ।

धञ्चकाना दे० (५०) छोटटा, धञ्चों के लिये, धञ्चों के उपयुक्त । (५०) मधिया, भगतिष्ण ।

धञ्चकानी दे० (स्त्री०) नीची, लोढ़ी, छोटी ।

धञ्चत दे० (स्त्री०) शेष, धविगिष्ट, धवशेष, धकिष्ण, धाक्षी ।

धञ्चती दे० (स्त्री०) शेष, धवशिष्ट ।

धञ्चन तत्० (५०) धान, धक्क, कथन, कैम, करार, पण, डौड़ ।—चूक (५०) धविरवाली ।

—छोड़ना (धा०) नकारना, धचन से मुडना, धष्ट प्रतिष्ठ होना ।—तोड़ना (धा०) कही धु

धात से मुडना, धचन छोड़ना ।—दत्त (५०) मने

तर, सगाई किया हुआ ।—देना (धा०) पण करना प्रतिज्ञा करना ।—निभाना (धा०) प्रतिज्ञा पालन

करना, कही धात को पूरा करना, अपनी धात ध

पक्का रहना ।—धन्ध करना (धा०) धव

लेना, प्रतिज्ञा कराना ।—धन्ध होना (धा०)

धचन देना, प्रतिज्ञा करना, अपनी धातों में ध

जाना ।—मानना (धा०) धात पालना, धात मानना, कही हुई धात मानना ।—लेना (धा०) प्रतिज्ञा करना, धचन धट्ट करना, धारना (धा०) कही धात को पूरा न करना, अपनी धात ध धात को स्वीकार कर लेना, बिना जाने किसी धात के लिये प्रतिज्ञा करना ।

वना दे० (क्रि०) रखा पाना, रोप रहना, चयशिष्ट रहना, बचा रहना ।  
 वचन दे० (पु०) बाल्य, लड़काई, लड़कपन, बालपन ।  
 वचना दे० (क्रि०) रखा करना, उठार करना, छिपाना, रोप रखना, रोप बचा रखना ।  
 वचास दे० (पु०) रचा, उठार, रजघाली, पत्र, सहायता ।  
 वचा दे० (पु०) लड़का, छोटा लड़का ।  
 वच्छनाम दे० (पु०) औषध विशेष, एक विष का नाम ।  
 वच्छल तद्० (पु०) वत्सल, प्रेमी, कृपालु, दयालु ।  
 वच्छासुर तद्० (पु०) वत्सासुर, एक असुर का नाम जिसे कंस ने कृष्णचन्द्र को मारने के लिये भेजा था ।  
 वच्छा, वच्छू, दे० (पु०) वत्स, गौ का बच्चा, गौ का छोटा बच्चा ।  
 वक्षिया दे० (पु०) गौ की यात्री ।  
 वछेरा दे० (पु०) घोड़े का बच्चा ।  
 वजना दे० (क्रि०) गन्द होना, धाले से गन्द निकलना, मस्तर शब्द निकलना । (पु०) भगड़ा, टंटा ।  
 वजनी दे० (स्त्री०) लड़ाई, भगड़ा, बाजा, बजने की चीज़, जिससे मस्तर शब्द निकले ।  
 वजन्त्री दे० (पु०) बजाने वाला, वाद्यकर नृत्य करने वाले के साथी, समन्त्री ।  
 वजयजाना दे० (क्रि०) उबलना, पत्रना, उफनना, सड़ना, गलना ।  
 वजरबट्ट दे० (पु०) फल विशेष, सुनते हैं इस फल के प्रताप से बच्चों पर घुरी दृष्टि नहीं लगती ।  
 वजरङ्ग दे० (पु०) महावीर, हनुमान जी का एक नाम ।  
 वजरङ्गी दे० (पु०) एक प्रकार का तिलक, महावीरो तिलक ।  
 वजरा दे० (पु०) एक प्रकार की नाय, जो धार रहती है ।

वजाक दे० (पु०) सर्प विशेष ।  
 वजाज दे० (पु०) कपड़ा बेचने वाला, कपड़े का दुकानदार ।  
 वजाना दे० (क्रि०) बाजा बजाना, धाले से स्वर के साथ शब्द निकालना ।  
 वजा लाना दे० (वा०) पूरा करना, पालन करना, निभाना ।  
 वम्बना दे० (क्रि०) पसना, उलभना, लगना, बंधना, बंध जाना ।  
 वम्बाना दे० (क्रि०) फसाना, फन्दे में डालना, पकड़ना, अधीन करना ।  
 वट तत्० (पु०) वृक्ष विशेष, वरगद का वृक्ष, यह वृक्ष वनस्पति कहा जाता है ।  
 वटई दे० (स्त्री०) घटेर पत्ती, जरी का काम बनाने की विद्या ।  
 वटखरा दे० (पु०) बाँट, तोलने की वस्तु ।  
 वटना दे० (क्रि०) बल देना, चेंटना, रस्सी बनाना ।  
 वटमार दे० (पु०) ठग, डाँकू, दकैत, धूर्त ।  
 वटमारी दे० (स्त्री०) ठगई, धूर्तता, दकैती ।  
 वटरी दे० (स्त्री०) छोटी कटोरी, पिघाली ।  
 वटलोही दे० (स्त्री०) बटुषा, पत्तीली, भाग या दाल छुटाने का पात्र ।  
 वटपार दे० (पु०) मार्ग का कर लेने वाला; ठग, बटमार ।  
 वटघारा दे० (पु०) भाग, भंश, हिस्सा, बाँट ।  
 वटई दे० (स्त्री०) रस्सी बटना, रस्सी बनाना, रस्सी बनाने की मजूरी ।  
 वटाऊ दे० (पु०) पथिक, यात्री, बटोही ।  
 वटिया दे० (स्त्री०) वटखरा, बाँट, तोलने की वस्तु ।  
 वटुष्मा दे० (पु०) शैली, कोली, बटलोही ।  
 वटुक तत्० (पु०) श्रेय विशेष, ब्रह्मपारी, विद्याध्ययनार्थ ब्रह्मचारी ।  
 वटेर दे० (स्त्री०) पत्ती विशेष ।  
 वटोर दे० (पु०) जामात, जमाव, सपुत्र, भौंड ।  
 वटोरना दे० (क्रि०) एकत्रित करना, एकठा करना, मरोटना ।

बटोही दे० ( पु० ) बधिक, पान्थ, यागी, बटाक ।  
 बट्टा दे० ( पु० ) खाद, फिरता नोट गिन्ना आदि  
 बदलान का मूल्य, डिडरा द्विविधा, दर्पण ।  
 बड दे० ( पु० ) बट, बरगद, वृक्ष विशेष ।  
 बडना दे० ( क्रि० ) पैठना, चुसना, भीतर जाना ।  
 बडबड दे० ( पु० ) बक बक, व्यर्थ प्रलाप, निधप्रयो-  
 जन बातें ।  
 बडबडाना दे० ( क्रि० ) बक बक करना, प्रलाप  
 बकना ।  
 बडबडिया दे० ( पु० ) बकबादी, बक्की, गप्पी ।  
 बडवानल दे० ( पु० ) समुद्र के भीतर की आग ।  
 बडहल दे० ( पु० ) पल विशेष, एक फा का नाम ।  
 बडा दे० ( पु० ) महान, प्रधान, विशाल, सुख्य,  
 वृत्ता ।  
 बडाई दे० ( स्त्री० ) महत्त्व, उच्चता, प्रशंसा, विशालता ।  
 बडाना दे० ( क्रि० ) अचेत की दया में बकना, सोते  
 सोते बकना, प्रलाप बकना ।  
 बडापा दे० ( पु० ) महत्त्व, बडाई, उच्चता ।  
 बडी दे० ( स्त्री० ) भक्त विशेष, खाने की एक वस्तु,  
 जो उरद या मूँग की बनाई जाती है ।  
 बडूँखा दे० ( पु० ) ऊष, ईल, इचु ।  
 बडे मियां दे० ( पु० ) वृद्ध, बूढा, निर्मुह्य वृद्ध ।  
 बडई दे० ( पु० ) सुतार, लकड़ी के काम बनाने वाली  
 एक जाति ।  
 बडती दे० ( स्त्री० ) अधिकता, वृद्धि नाम, प्राप्ति ।  
 बडन दे० ( स्त्री० ) सुतारिन, सुतार की स्त्री ।  
 बडना दे० ( क्रि० ) अधिक होना, वृद्धि होना, प्राप्ति  
 होना, अधिकता होना ।  
 बडनी दे० ( स्त्री० ) भाडू सुहारी ।  
 बडाना दे० ( क्रि० ) अधिकाना, वृद्धि करना, सम्भ-  
 क्तना ।  
 बडा लाना दे० ( या० ) सम्मुख करना, आगे लाना,  
 प्रत्यक्ष करना ।  
 बडाव दे० ( पु० ) बढती चढाव, उमडाव ।  
 बडावा दे० ( पु० ) उमकावा, उमडाव ।

बडिया दे० ( पु० ) उत्तम, रमणीय, महंगा, दुर्लभ ।  
 बडेला दे० ( पु० ) बन्ध सुकर वन का सुंभर ।  
 बडोतर दे० ( पु० ) बशाज, भूद कपड़े का भाग  
 लाभ ।  
 बडन्त दे० ( स्त्री० ) वृद्धि बढती, उपज, नाम ।  
 बणिन्ह तत्० ( पु० ) जाति विशेष, बनिया, बगधारे,  
 महाजन, सौदागर ।—पथ ( पु० ) हाट, बजार ।  
 बणिज दे० ( पु० ) वाणिज्य, नेनदेन, बगधारे,  
 सौदागरी ।  
 बणिया दे० ( पु० ) बणिक्, वैश्य जाति ।  
 बण्डेरी दे० ( स्त्री० ) छप्पर का शिखर, छ्पर का  
 सब से ऊपरी भाग ।  
 बत दे० ( पु० ) कीट विशेष, ज्ञात, कौल, फार ।  
 —चढाव ( पु० ) भगडा, जातों बातों में शिखता ।  
 —घना ( पु० ) धातूनी, वात बनाने वाला ।  
 बतक दे० ( पु० ) पची विशेष, रत पची का एक  
 भेद विशेष ।  
 बतकहा दे० ( पु० ) धातूनी, गप्पी, धाचान, बक  
 यादी ।  
 बतकहाव दे० ( पु० ) वाता याती कहा सुनी ।  
 बतकड दे० ( पु० ) बकबादी, प्रहवृद्धिया ।  
 बतराना दे० ( क्रि० ) अतिमाना, वातचीत करना,  
 सम्भाषण करना, सलाप करना ।  
 बतलाना दे० ( क्रि० ) सम्भाना, बुझाना, दिपाना  
 सिखाना, मद्धेत करना ।  
 बता दे० ( पु० ) रपाव लम्बी गिला, जैम की  
 फराठी या खपाँची ।  
 बताना दे० ( क्रि० ) बतलाना, सिखाव, सम्भाना,  
 बुझाना ।  
 बतास दे० ( पु० ) वात, पवन, आयु ।  
 बतासा दे० ( पु० ) मिठाई विशेष ।  
 बतियाई दे० ( स्त्री० ) वातचीत यामी, कथन ।  
 बतियाना दे० ( क्रि० ) बात करना, बतराना सम्भ-  
 षण करना, सलाप करना ।  
 बत्नी दे० ( पु० ) बक्की, यानाल ।

चतुर्थी दे० ( श्री० ) भौंडित, भौंडपना, भौंडों का काम ।  
 तीरी दे० ( श्री० ) घाय, फुड़िया, जो बालों के टूटने से होती है, बलतोड़ ।  
 यती दे० ( श्री० ) घातो, यतीता, यती, दीपक, दीया, बौस की छड़, लाख की खड़ी, मोमयत्ती, घाय में भरने की यत्ती, एक प्रकार की योग क्रिया ।—खट्टाना ( वा० ) घाय में यत्ती डालना ।  
 —जलाना ( वा० ) दीपक जलाना, दीया घारना ।  
 यतीस दे० ( गु० ) तीस खौर दो, ३२, दो अधिक तीस ।  
 यतीसा दे० ( गु० ) एक ओषधि का नाम जो छोड़े चादि को दी जाती है ।  
 यतीसी दे० ( श्री० ) दन्तवर्किक, दन्त स्रुह दातों की कुनार । ( गु० ) यतीस वस्तुओं का समुदाय ।  
 —दिखाना ( वा० ) दाँत दिखाना, हँसना, चिरीरी करना ।  
 यतीसा दे० ( गु० ) चाँवल का भेद ।  
 यधुआ दे० ( गु० ) शाक विशेष ।  
 यद दे० ( श्री० ) राग विशेष, घाघी, घाघी उठना ।  
 यदना दे० ( क्रि० ) नियत करना, निश्चित करना, मानना, दाँव लगाना ।  
 यदर तत्० ( गु० ) फल विशेष, बेर या सेव, तोड़ा, हजार रुपये की बैली, यिनीला, कपाम का बीज ।  
 यदरि तत्० ( गु० ) फल विशेष, बेर का फल ।  
 यदरिकाश्रम तत्० ( गु० ) तीर्थ विशेष, उत्तरीय तीर्थ, जहाँ नर नारायण तपस्या करते थे ।  
 यदल दे० ( गु० ) प्रतीकार, निवारण ।  
 यदलना दे० ( क्रि० ) पलटाना, परिवर्तन करना, उलटा करना, शून्यता करण, एक वस्तु दे कर, दूसरी वस्तु लेना ।  
 यदला दे० ( गु० ) परिवर्तन, पलटा ।  
 यदलाई दे० ( श्री० ) पललाई, मुड़वाई मुनवाई ।  
 यदलाना दे० ( क्रि० ) पलटा करना, बदल देना, पुरानी वस्तु को देख नयी वस्तु लेना ।

यदली दे० ( श्री० ) मेघ, यादल, स्यान परिवर्तन, स्यान का परिवर्तन, एक स्यान को छोड़ कर दूसरे स्यान पर जाना ।  
 यदा दे० ( गु० ) भविष्य, भविष्य, भाषण, चट्ट, शानहार, भाषी ।  
 यदायदी दे० ( श्री० ) ईर्ष्या, स्वर्हो, हिंस, दिखा-देखी ।  
 यदि तत्० ( घ० ) कृष्ण पक्ष ।  
 यदी दे० ( अ० ) कृष्ण पक्ष ।  
 यदल दे० ( गु० ) मेघ, यदली, यादल, घटा ।  
 यद तत्० ( गु० ) बँधा, बँधा हुआ ।  
 यद्री दे० ( श्री० ) भूषण विशेष, कण्ठभूषण ।  
 यध तत्० ( गु० ) हनन, मारण, हत्या, हिंसा ।  
 यधना दे० ( क्रि० ) मारना, मार डालना, हनना, हत्या करना । ( गु० ) टोटीदार सोटा, गड्ढा, मुसलमानों का जल पाल, मिट्टी का ढोटा ।  
 यधस्थान तद्० ( गु० ) बध्य स्यान, प्राणियों के मारे जाने का स्थान, वह स्थान जहाँ चरवाधियों को फौसी दी जाती है ।  
 यधार्ई दे० ( श्री० ) हर्षोत्सव, शानन्धोत्सव, मङ्गलाचार, पुनोत्सव चादि माङ्गलिक समय में जो शान्धय लोग मनाते हैं ।  
 यधवा दे० ( गु० ) माङ्गलिक उपहार, मङ्गलाचार, मङ्गलोत्सव ।  
 यधिक तत्० ( गु० ) हत्यारी, बधाध, बदेनिया ।  
 यधिया दे० ( गु० ) पुरुषत्व हीन किया हुआ पशु, आहा ।—करना ( वा० ) अपह्न निकालना, घाहा करना ।  
 यधिर तत्० ( गु० ) यहरा, कर्णेन्द्रिय रहित ।  
 यधू तत्० ( श्री० ) बहू, पतोहू, लहके की श्री, भार्या, श्री, पत्नी ।  
 यधूटी तत्० ( श्री० ) युवती श्री, पुत्रवधू, छोटी बहू ।  
 यध्य तत्० ( गु० ) बधार्ह, शीर्षच्छेद, बध के योग्य, प्राणदण्डार्ह ।—भूमि ( श्री० ) बधस्थान ।  
 यनजर दे० ( गु० ) परती भूमि, ऊसर भूमि, खण्डहर ।



वनजारा दे० ( पु० ) ठयापारी, बनिया, सीदागर, ठयापारी की एक जाति, पहले समय में ये लोग बेचने की चीजों को बैल पर लाद कर इस प्रान्त से उस प्रान्त तक जाते थे, और अपनी चीजें यहाँ बेच कर वहाँ से दूसरी चीजें ले जाते थे। इनकी उस समय "मार्घवाह" या "सौदागर" सजा थी।

वनजारी दे० ( स्त्री० ) वनजारे की स्त्री, वनजारे की यस्तु, तम्बू।

वनठनके दे० ( वा० ) सज धज कर, गृह्णार कर।

वनत दे० ( स्त्री० ) एक प्रकार का गोटा, जो गोटे से ही बनाई जाती है, बनना, तैयार होना, सिद्ध होना, प्रस्तुत होना।

वनतराई दे० ( स्त्री० ) पौधा विशेष।

वनना दे० ( कि० ) तैयार होना, खाँग सजना, प्रेम होना।

वनपडना दे० ( वा० ) सुधारना, निभना, निबहना।

वनमानुष तद्दे० ( पु० ) एक प्रकार का पशु, जिसकी बहुत सी बातें मनुष्यों से मिलती हैं।

वनमाला तद्दे० ( स्त्री० ) बनमाला, वह माला जिसे भगवान् धारण करते हैं, गले से घेर तक लटकने वाली माला, तुलसी कुन्दमन्दार पारिजात और कमरा इन पुष्पों की बनी माला।

वनमाली तद्दे० ( पु० ) बनमाली, श्रीकृष्ण।

वनरा दे० ( पु० ) बृलह, वर।

वनरी दे० ( स्त्री० ) दुलहिन, विवाहिता या ब्याही जाने वाली कन्या।

वनवाई दे० ( स्त्री० ) बनाने का काम, बनाने की मजूरी।

वनवैया दे० ( पु० ) बनाने वाला, कर्ता, रचयिता, निर्माता।

वनसी दे० ( स्त्री० ) मङ्गली पकहन का साधन, काँट।

यना दे० ( पु० ) दुलहा, वनरा, वर।

यनात दे० ( पु० ) एक प्रकार का छनी कपडा, जो चाड़े के काम का होता है।

यनाना दे० ( कि० ) रचना, प्रस्तुत करना, तैयार कर ठीक करना, दीवार आदि का बनाना, सजा सुधारना, जोड़ना, सन्धान करना, सजाना, करना, मिलाना। पकाना, उत्पन्न करना, बनाना, पूरा करना, पूर्ण करना, नीचाँदा बनाना।

यनायुग तद्दे० ( पु० ) यनायुग, घोडा, बल बर घोडा।

यनाघट दे० ( पु० ) यनाघट, सिंगार, सजावट, मिलाप, मित्रता।

यनाघट दे० ( स्त्री० ) रचना, निर्माण, डीलहै, आकार, सङ्गठन।

यनाघटी दे० ( स्त्री० ) काश्चनिक, बनायी हुई कल्पना प्रसूत।

यनिज दे० ( पु० ) वाणिज्य, ठयापार, लेनदेन, आदान प्रदान।

यनिया दे० ( पु० ) बणिक्, ठयापारी, सौदागर।

यनियायन दे० ( स्त्री० ) बणिक् स्त्री, बनिये की स्त्री।

यनी दे० ( स्त्री० ) दुलहिन, नई बहू।

यनेटी दे० ( स्त्री० ) एक प्रकार की लाल, जिसके दोनों ओर गोल लट्टू लगे रहते हैं, कपडा को कोई मशाल लगा देते हैं, और उस लकड़ी के चुमाते हैं।

यनैनी दे० ( स्त्री० ) बनयायन, बणिक् स्त्री, बनिये की स्त्री।

यनैला दे० ( पु० ) बन्य, बनयायी, जङ्गली।

यनैश्रिया दे० ( स्त्री० ) कपासी रङ्ग, कपास के समान रङ्ग।

यन्दनवार दे० ( पु० ) सेहरा, मौर, तोरण।

यन्दर दे० ( पु० ) बानर, फयि, मकई, जहाँ उहने का स्थान।—की सी आँख बदल

( वा० ) शीघ्र क्रोध करना, बहुत जल्दी रिझाना—की तरह नचाना ( वा० ) अपने अधीन बहुत फट देना, बहुत कडे कडे काम कराना

—बना जाने अदरक का स्वाद ( वा० ) निर्गुण की परीक्षा नहीं कर सकता, श्रवण योग्य

पुर्णों का आदर करना, नहीं जानता ।—सत  
( पु० ) असाध्य पाय, कठिन कोड़ा ।  
बन्दरी दे० ( स्त्री० ) जड़ विशेष, एक प्रकार की छोट ।  
बन्दी तह० ( पु० ) पयोगायक, स्तुतिकर्ता, भाट,  
चारण, क़ैदी, बन्धुचा । भूषण विशेष, जिसे छिवाँ  
मस्तक पर लगाती हैं ।—गृह ( पु० ) जेलखाना,  
कारागार ।—जन ( पु० ) भाट, चारण, वृण  
व्यथान करने वाले ।  
बन्दीही दे० ( स्त्री० ) दासी, परिचारिका, मेधिका,  
बेटी ।  
बन्दोल दे० ( पु० ) भृत्यपुत्र, दास का लड़का ।  
बन्ध तत्० ( पु० ) बंधना, गाँठ, ग्रन्थि ।—में पड़ना  
( वा० ) फन्दे में फसना, आकृत में पड़ना, क़ैद  
होना, जेल में पड़ना ।  
बन्धक तत्० ( पु० ) ग्राही, धरोहर, निक्षेप, न्याय,  
गिराँ ।—दाता ( पु० ) ऋणदाता, देहनदार ।—धारी  
( पु० ) गिराँ रखने वाला, न्यासधारी ।—पत्र  
( पु० ) देहननामा ।  
बन्धन तत्० ( पु० ) बंधना, गाँठ, क़ैद, गिरह  
लगाना, क़ैद करना ।  
बन्धना दे० ( क्रि० ) बन्ध होना, अटकना, बन्धाना,  
जोड़ा जाना ।  
बन्धाई दे० ( स्त्री० ) बंधने का काम, बंधना, बंधने  
की मजूरी ।  
बन्धान दे० ( स्त्री० ) नियत, निश्चित वृत्ति, नियत  
वृत्ति, जिनो बात का निश्चय ।  
बन्धानी दे० ( पु० ) पत्थर डोने वाला, अमल का  
सेवक, बफ़ीमन्त्री ।  
बन्धु तह० ( पु० ) मित्र, सुहृद, प्रेमी, सम्बन्धी ।  
बन्धुमा दे० ( पु० ) बन्धन, बंधा हुआ, क़ैदी,  
बन्दी ।  
बन्धुर तह० ( पु० ) चढ़ाव, उतराव । ( पु० ) हंस,  
विहङ्ग ।  
बन्धुल तत्० ( पु० ) अश्वतो पुत्र, वैश्या पुत्र, भद्रभा ।  
बन्धेज दे० ( पु० ) बन्धान, निष्ठापन, काम खूब,  
निश्चय ।

बन्ध्या तत्० ( स्त्री० ) बाँक स्त्री, अशुभ्रधती स्त्री ।  
यन्ना दे० ( क्रि० ) बनना, तैयार होना, सुधरना,  
सभारना ।  
यन्हा दे० ( पु० ) दोना, टुटका, यन्त्र मन्त्र ।  
यपंश दे० ( पु० ) बाप का अंश; यपौती, वैतृक धन ।  
यपुरा दे० ( पु० ) रङ्ग, अनाय, अचहाय, दीन, कंगाल ।  
यपौती दे० ( स्त्री० ) यपंश, बाप का द्रव्य ।  
यफारा दे० ( पु० ) बाप, बाफ, भाफ, गरम जल या  
द्रव का धुँवा ।—लेना ( वा० ) बाक शरीर में  
लगने देना, बाधवसान ।  
यसुआ दे० ( पु० ) लड़का, पुत्र, प्रिय पुत्र, पुनारा  
लड़का ।  
यसूर, यबूल ( पु० ) बर्बुर, वृक्ष विशेष, एक कटीसे  
वृक्ष का नाम ।  
यवैसिया दे० ( पु० ) प्रलापी, प्रलाप करने वाला,  
गध्पी, गयोडिया ।  
यवेसी दे० ( स्त्री० ) रोग विशेष, अर्थ रोग, बवालीर ।  
यव्यो दे० ( स्त्री० ) जूमा, मीठी, चुन्वा, चुन्वन ।  
यम दे० ( स्त्री० ) सेता, लोत, चार हाथ का माप ।  
यमकना दे० ( क्रि० ) उभरना, ऊपर उठना, भूजना,  
फूलना ।  
यम्या दे० ( पु० ) कूप, सेता, श्रोत ।  
यया दे० ( पु० ) पत्नी विशेष, एक पत्नी का नाम, यह  
पत्नी सील बहुत जल्दी मान लेता है ।  
ययार दे० ( पु० ) वायु, पवन, बतास ।  
ययाना दे० ( पु० ) वस्तु का विक्रय, कुछ अग्रिम  
द्रव्य ।  
ययाला दे० ( पु० ) वादी, वातुल, वात निश्चिद ।  
ययालीस दे० ( पु० ) मंश्या विशेष, चालीस चौर  
दो, ४२ ।  
ययासी दे० ( पु० ) अस्ती चौर दो, दो अर्धक  
अस्ती, ८२ ।  
यर तह० ( पु० ) बर, बरदान, आशिष, आशोर्षादि,  
इष्ट प्रार्थि, मनोरथसिद्धि, पति, स्वामी, दूतह ।  
यरखना दे० ( क्रि० ) वृष्टि होना, वर्षा होना, पानी  
घरसना ।

घरगढ़ दे० (पु०) बट, बड़ का पेड़ ।  
 घरगा दे० ( पु० ) कड़ी, तड़क, धरन, लम्बी सीधी लकड़ी जो कड़ी आदि बनाने के काम में आती है ।  
 घरजना दे० ( क्रि० ) बर्जन करना, निषेध करना, धारण करना, मना करना ।  
 घरटा तद्० ( स्त्री० ) हंसी, राजहंसी, घरे ।  
 घरत तद्० ( पु० ) घत, उपास, उपवास, चमड़े की रस्सी ।  
 घरतन दे० ( पु० ) घर्तन, घाघन, पात्र, भाएह ।  
 घरतना दे० ( क्रि० ) काम में लाना, उपयोग में लाना, व्यवहार करना ।  
 घरतनी दे० ( स्त्री० ) अलरीटी, वर्षमासा ।  
 घरताना दे० ( क्रि० ) भाग लगाना, विभाग करना, बाँटना ।  
 घरदैत दे० ( पु० ) भाट, दर्सीधी, आशीर्वादक, आशीर्वाद देने वाला ।  
 घरघ दे० ( पु० ) बैल, वृषभ ।  
 घरघना दे० ( क्रि० ) बढ़ाना, पालन करना, गो का गर्भ धारण ।  
 घरघाना दे० ( क्रि० ) गो का गर्भ धारण करना ।  
 घरन तद्० ( पु० ) वर्ष, रङ्ग, आक्षर, लिखावट । ( श्र० ) शक्ति, प्रस्तुत ।  
 घरना दे० ( क्रि० ) बरण करना, स्वीकार करना, बीठना, घराना, अपने अभिमत को स्वीकार करना । तथाह करना, पति का वरण करना ।  
 घरघस दे० ( पु० ) प्रबल, यत्नाकार, प्रयत्नता, लघर-दस्ती ।  
 घरघ दे० ( पु० ) पत्नी विशेष ।  
 घरघट दे० ( पु० ) रोग विशेष, पिलही, एक प्रकार का सर्प ।  
 घरभलिया दे० ( पु० ) बहुद्विधा, स्वाँग रचने वाला ।  
 घरराना दे० ( क्रि० ) प्रलाप बकना, स्वप्न में बड़-बड़ाना ।  
 घरघ्या दे० ( पु० ) पञ्च छन्द का नाम, फौंटा जिससे मछली मारी जाती है, रागिनी विशेष, कहते हैं उस

रागिनी की मधुरता पर सर्व और हरिण प्रेरित हो जाते हैं ।  
 घरस तद्० ( पु० ) वर्ष, सम्पत्त, संवत्सर, एक वर्ष के वस्तु जो अक्षय से बनायी जाती है । - तद् ( पु० ) जन्म दिन के उपलक्ष्य का उद्भव, श्रावण गिरह ।  
 घरसना दे० ( क्रि० ) पानी पड़ना, वृष्टि होना ।  
 घरसवान दे० ( पु० ) धार्मिक, सांख्यिक, ब्रह्म ।  
 घरसीड़ी दे० ( स्त्री० ) धार्मिक कर, भाड़ा, धार्मिक वृत्ति ।  
 घरहा दे० ( पु० ) मोचर भूमि, पशुओं के घने भूमि, पुरघट का रस्सा, खेत में पानी से जाने मार्ग ।  
 घरा दे० ( पु० ) पकीड़ा, बटा ।  
 घरात दे० ( स्त्री० ) विवाह की यात्रा, बराया, या के साधियों का गमन ।  
 घराती दे० ( पु० ) घरात के जाने वाले ।  
 घराना दे० ( क्रि० ) घृण्ण रहना, अलग रहना, पक्ष हेज करना ।  
 घरारा दे० ( पु० ) रस्सा, चमोटी ।  
 घराघ दे० ( पु० ) संयम, रोक, परहेज ।  
 घराह तद्० ( पु० ) सूकर, सूअर, विष्णु का तीवरा चयतार ।  
 घरियाई दे० ( स्त्री० ) बलात्कार बड़ाई, जोरावरी, ज्वरदस्ता हठ ।  
 घरियार दे० ( पु० ) बलवान, प्रयत्न, बलशाली, प्रभाव, याह, समर्थ ।  
 घरियारा दे० ( पु० ) बलवान, पौधा विशेष ।  
 घरी दे० ( स्त्री० ) कली, छूने की कली, बड़ी, पकीड़ी ।  
 घरुण तद्० ( पु० ) बरुण, जल के अधिपति देवता, पश्चिम दिशा के अधिपति, दिक्पाल ।  
 घरुणालय तद्० ( पु० ) [ बरुण + आलय ] समुद्र, सागर, बरुण के रहने का स्थान ।  
 घरुणी दे० ( स्त्री० ) पपनी, चाँस पर के बाल ।  
 घरेज दे० ( पु० ) पनवाड़ी, पान का खेत ।  
 घरेडन दे० ( स्त्री० ) धोपिन, रजकी ।

घरैठा दे० ( पु० ) धोबी, रजक, कपड़ा धोने वाली एक जाति ।

घरैठा दे० ( स्त्री० ) बिरनी, हाड़ा, एक प्रकार का पद्म-दार कीट ।

घरै दे० ( पु० ) तम्बोली, बारी, पान वाला ।

घरैन दे० ( स्त्री० ) तम्बोलिन, बारिन, पनेरिन ।

घरैठा हें० ( पु० ) धोबी, डेवड़ी, उषार आदि का दरठल ।

घरौठा दे० ( पु० ) रजक, धोबी, बरौठा, डेवड़ी ।

बर्झा, बर्छी दे० ( पु० ) शख विशेष, येल, भाला ।

बर्छल दे० ( पु० ) बर्छे वाला, बर्छाधारी, भाजैत ।

बर्त दे० ( पु० ) काम, अभ्यास, साधन ।

बर्तन दे० ( पु० ) बरतन, दासन, भाँड़, पात्र ।

बर्तना दे० ( क्रि० ) काम में लाना, उपयोग करना, व्यवहार करना ।

बर्मा दे० ( पु० ) अख विशेष, बड़ई का शख विशेष, जिससे लकड़ियों में छेद किया जाता है । उत्रिय जाति सूचक, यथा—विजयसिंह बर्मा ।

बर्माना दे० ( क्रि० ) छेदना, वेधना, चीपना ।

बर्माहट दे० ( स्त्री० ) प्रलाप, बकवाद, बड़बड़ ।

बर्वे दे० ( पु० ) माया के एक छन्द का नाम ।

बर्वे तत्० ( पु० ) संवत्सर, बारह महीना ।

बर्षात दे० ( स्त्री० ) वर्षाकाल, वर्षा का समय ।

बर्षी दे० ( स्त्री० ) वर्ष दिन के बाद का कृत्य, वार्षिक याह ।

बर्ह तत्० मोरपद्म, मयूर पुच्छ, मोर के पांख ।

बर्ही तत्० ( पु० ) मयूर, मोर, किकी, गिलखड़ी ।

बल तत्० ( पु० ) सामर्थ्य, शक्ति, ताकत, बलदेव, बट, बँटन ।

बलकना दे० ( क्रि० ) उभरना, उठकना, खोलना, खपनी बड़ाई थाप करना ।

बलशा दे० ( क्रि० ) सिलकना, दुनकना, रोना, विलाप करना ।

बलताड़ दे० ( पु० ) वृक्ष विशेष ।

बलतोड़ दे० ( पु० ) घाय, फुड़िया, घान के टूटने में जो फुड़िया होती है ।

बलद दे० ( पु० ) बरध, वृषभ, बैल ।

बलदाऊ दे० ( पु० ) बलराम, श्रीकृष्ण के बड़े भाई ।

बलदी दे० ( पु० ) लदे हुए बैल ।

बलना दे० ( क्रि० ) जलना, धधकना, दहना, दग्ध होना ।

बलयकरा दे० ( पु० ) अकारण मारा जाने वाला, बलिदान के लिये निर्द्विष्ट बकरा ।

बलयलाना दे० ( क्रि० ) उबलना, कामाहुर होना । ऊँट को बोली ।

बलयीर दे० ( पु० ) बलदेव, श्रीकृष्ण, रामचन्द्र ।

बलमद्र तत्० ( पु० ) बलदेव, बलराम ।

बलम, बलमा दे० ( पु० ) वज्रम, स्वामी, प्रियतम ।

बलराम तत्० ( पु० ) यमुदेव के पुत्र, ये उनकी स्त्री रोहिणी के गर्भ से उत्पन्न हुए थे । देवकी के सातवें गर्भ के समय कंस ने रक्तक निपुक्त किये थे, परन्तु माया ने उस गर्भ को खींच कर रोहिणी के गर्भ में स्थापित कर दिया । रक्तको का तो ये यारों मासूम नहीं हुईं, अतः उन लोगों ने कंस से कहा कि गर्भ नष्ट हो गया । एक गर्भ आकर्षण करके दूसरी जगह रखा गया इस कारण रोहिणी के पुत्र का नाम सङ्कर्षण पड़ा । बलराम ने गदायुद्ध में मगध के राजा जरासन्ध को हरा दिया था, परन्तु मारा नहीं था । दुर्योधन की कन्या सभमणा के स्वयम्बर के समय कौरवों ने श्रीकृष्ण पुत्र साम्ब को बकड़ कर कैंद कर लिया था । यह गुन कर बलराम यहाँ पहुँचे, परन्तु दुर्योधन किसी प्रकार साम्ब को छोड़ना नहीं चाहता था । यह देख कर बलराम ने कौरवपुरी को गङ्गा में फेंक देने के लिये उन नगरी के दीवार में हल लगाया, हलितनापुर घूमने लगा, यह देख कर दुर्योधन साम्ब और सभमणा के महित उनकी सेना में उपस्थित हुआ, साम्ब को समर्पण कर उनसे गदा युद्ध मोलने की उनसे प्रार्थना की । महावीर बलराम ने, भावहीर वन में एक मुझे के आघात से प्रलम्बायुत को मार गिराया था । उन्होंने गर्भ छोड़ी अनुकायुत को भी वहाँ पर फेंक कर मार डाला था ।

बलचन्त दे० ( पु० ) बलवान्, समर्थ, सहाक ।

बलही दे० ( स्त्री० ) चाँटी, चटिया, भार, बोझ, तागा, लम्बी और पतली लकड़ी ।

बलहीन तत्० ( पु० ) निर्बल, बल शून्य, दुर्बल ।

बलाई दे० ( पु० ) आशीर्वाद, असीस, बाहरी, दूर के, उदासिन ।—लेना ( या० ) दुःख में सहायता पहुँचाना, अन्य के दुःख हटाने की इच्छा ।

बलात्कार तत्० ( पु० ) बरबस, हठात्, ज़बरदस्ती ।

बलि तत्० ( पु० ) नैवेद्य, देवता का भोग, अश, पूजा, राजा विशेष, दानधपति, ये विरोधा के पुत्र और प्रह्लाद के पौत्र थे । बलि के सौ पुत्र थे, उनमें याण सय से बड़ा था । पराक्रमी दानधपति बलि को दमन करने के लिये भगवान् ने बामन अथवातार ग्रहण किया था । बलि ने एक अश्वमेध यज्ञ किया था, उस यज्ञ की समाप्ति के समय भगवान् वामन रूप धर करके वहाँ उपस्थित हुए । वामन रूपी विष्णु ने बलि की अनेक प्रकार से प्रशंसा करके उससे तीन पैर भूमि माँगी । दैत्य-गुरु शुक्राचार्य ने भगवान् को पहचान लिया था, अतएव बलि को उन्होंने दान देने से रोका, परन्तु बलि ने उनकी बातों पर कुछ भी ध्यान नहीं दिया । बलि ने प्रतिज्ञाभ्रष्ट होना उचित नहीं समझा । बलि ने वामन की यथाविधि पूजा की, और तीन पैर भूमि उनके सङ्कल्प कर दी । अथ वामन ने अपना रूप इतना विशाल बनाया कि लोगों के आश्चर्य की सीमा न रही । उन्होंने दो पैरों ही में स्वर्ग और मर्त्यलोक नाप डाला, तीसरे पैर के लिये स्थान नहीं बचा । इनके मायावी समझ कर बलि के अनुचरों ने इन्हीं अस्त्र शस्त्र ले कर मारना चाहा, परन्तु वे शीघ्र ही विष्णु के अनुचरों द्वारा हटा दिये गये । बलि ने भी अपने अनुचरों को युद्ध करने से रोका । अनन्तर विष्णु ने तीसरा पैर रखने के लिये बलि से स्थान माँगा, बलि ने अपना सिर ही स्थान बताया । वामन का तीसरा पैर जत्र बलि के सिर पर रखा गया, तब दानधपति भगवान् की स्तुति करने लगे । उसी समय विष्णु के अनन्य भक्त और बलि के पितामह प्रह्लाद वहाँ उपस्थित हुए । उनकी

प्रार्थना से भगवान् ने बलि का श्मशान कटवा दिया । भगवान् ने प्रह्लाद से कहा कि "बलि ने बहुत त्याग करके अपनी सत्ता का पालन किया है, अतएव मैं इनके देवताओं का भी दुर्लभ पद दूँगा । सायंकि मन्वन्तर में वे इन्द्र होंगे । जब तक वह मन्वन्तर नहीं आता, तब तक सुतल में जाकर इन्हें रहना पड़ेगा, मैं सर्वदा कौमादकी गदा लेकर वहाँ उपस्थित रहूँगा, और इनकी रक्षा करूँगा ।" भगवान् विष्णु की आज्ञा से बलि सुतल नामक पाताल में रहने लगे ।

बलिदान तत्० ( पु० ) देवभोग, देवता के लिए नैवेद्य ।

बलित तत्० ( पु० ) सकुचित, सिमटा ।

बलिपुष्ट तत्० ( पु० ) काक, कौआ, काग ।

बलिरसा तत्० ( स्त्री० ) उपजायु विशेष, गन्धज ।

बलिसङ्ग तत्० ( पु० ) अक्रुश, चाबुक, कोटा, धातों का समूह ।

बलिष्ठ तत्० ( पु० ) बलशाली, बलवान्, समर्थ ।

बलिहारी दे० ( स्त्री० ) निष्ठावर, बधाई ।—ज्ञाना ( या० ) निष्ठावर होना, बल ज्ञाना, बलजन जाना ।

बली तत्० ( पु० ) बलवान्, ममर्थ, पराक्रमी, पराक्रमशाली ।—बर्ह ( पु० ) सख, साइ, गर्भव, वृषभ ।—मुख(पु०) बानर, कपि, मर्कट, बन्दर ।

बलीयान् तत्० ( पु० ) बली, बलशाली, बलवान् पराक्रमी, अत्यन्त पराक्रमी, अधिक बलवान् ।

बलुचा दे० ( पु० ) रेतौषा, बालुकामय ।

बलूरना दे० ( स्त्री० ) नीचना, खसोटना, खसोत्त, सुरचना ।

बलूला दे० ( पु० ) बुलबुला, बुलका, बुदबुदा ।

बल्लेडी दे० ( स्त्री० ) मर्कटा, मगरा, खचरा ।

बल्लम दे० ( पु० ) भाला, सेल, बर्झा, नेजा, अश्व विशेष ।

बल्ली दे० ( स्त्री० ) डहडा, बल्ला, नाक खेने के लिये डहडा ।

बल्लर दे० ( पु० ) अन्धध, धगुला, बरहीहा ।

वर्षाई दे० ( स्त्री० ) वैर तले का घाव, विषादिका, शीत मे वैर का फटना ।

वर्षासीर दे० ( पुं० ) रोग विशेष, अर्श रोग ।

वस दे० काष्ठ, अधिकार, चल । ( गु० ) अधीन ।

—करना ( वा० ) आधीन करना, घर में करना, चुप करना, ठहरना ।

वसन्त तद्द० ( पुं० ) वसन्त, वस, कपड़ा, लूगा ।

वसना दे० ( स्त्री० ) वसना, रहना, भरना, ठहरना, पास करना ।

वसनी दे० ( स्त्री० ) पैली, भोली ।

वसन्त तद्द० ( पुं० ) वसन्त, एक ऋतु का नाम, जो प्रधान ऋतु समझी जाती है । फाल्गुन और चैत ये दोनों महाने वसन्त ऋतु में हैं, कोई कोई चैत और शैवाल को ही वसन्त ऋतु मानते हैं ।

—फूलना ( वा० ) सरसों का फूलना ।—के घर की भी खबर है ( वा० ) कुछ जान भी है, कुछ जानते भी हो ।

वसन्ती तद्द० ( पुं० ) पीला रङ्ग । ( गु० ) पीले रङ्ग का ।

वसराणा दे० ( स्त्री० ) पूरा करना, समाप्त करना ।

वसना दे० ( स्त्री० ) टिकाना, तस्ती कराना, नये गाँव भरना, बस्ती बनाना ।

वसूला दे० ( पुं० ) बड़ई का एक अक्ष विशेष, जिससे लकड़ी काटते हैं ।

वसूली दे० ( स्त्री० ) पथरियों का अक्ष, ईंट छाटने का अक्ष ।

वसैंधा दे० ( गु० ) सड़ा, उबसा, दुर्गन्ध ।

वसैरा दे० ( पुं० ) धौंता, घोंमला, पक्षियों के रहने का स्थान ।

वसोवास दे० ( पुं० ) स्थिति, स्थान, पास ।

वस्ती दे० ( स्त्री० ) ग्राम, गाँव, बड़ावा, पुरवा, पूरा ।

वस्त्रा दे० ( पुं० ) स्थिति, वसन, वसना, बैठन, लपेटना ।

वहकना दे० ( स्त्री० ) निराश होना, धोखा मानना, भटकना, भूलना, लक्ष्यव्युत होना, उद्देश्य भ्रष्ट होना ।

वहकाना दे० ( स्त्री० ) मुलाना, निराश करना, धोखा देना ।

वहङ्गी दे० ( स्त्री० ) काँचरी, चौक दोने के लिये एक यन्त्र, जिसमें दोनों ओर सिकहर लटकाने जाते हैं ।

वहजाना दे० ( स्त्री० ) वहना, विगाड़ना, खराब होना ।

वहत्तर दे० ( गु० ) सत्तर और दो, दो अधिक सत्तर ।

वहना दे० ( स्त्री० ) भगिनी, वहिन ।

वहना दे० ( स्त्री० ) चलना; पानी का चलना, हवा का चलना ।

वहनेऊ दे० ( पुं० ) वहनोई, भगिनीपति, वहिन का पति ।

वहनेली दे० ( स्त्री० ) वहिन ।

वहनोई दे० ( पुं० ) वहनेऊ, वहिन का पति, भगिनीपति ।

वहर दे० ( स्त्री० ) नावों की भीड़, नौका समूह ।

वहरा दे० ( गु० ) अधिर, न सुनने वाला ।

वहरिया दे० ( पुं० ) अशुद्ध वर्तन, अपवित्र वासन, ( गु० ) बाहर का, अपूर्य, अतिथि, पाहुन ।

वहरी दे० ( स्त्री० ) यची विशेष, याज यची ।

वहल दे० ( स्त्री० ) गाड़ी, बैलगाड़ी, रथ, एक प्रकार की बैलगाड़ी जो पुराने समय में चलती थी ।

वहलना दे० ( स्त्री० ) प्रसन्न होना, भूलना, खेचना, यहकना ।

वहलाना दे० ( स्त्री० ) खिलाना, प्रसन्न करना, मनोरञ्जन करना, मन बहलाव करना, मुलाना, फिराना ।

वहलिया दे० ( पुं० ) गाड़ीघान, गाड़ी हाँकने वाला ।

वहली दे० ( स्त्री० ) छोटा बटन, चढ़ने की गाड़ी, रथ, बैलगाड़ी ।

वहानेना दे० ( स्त्री० ) तोड़ना, उजाड़ना, बिगाड़ना, खराब करना, फैकना ।

वहाना दे० ( स्त्री० ) भसोना, बसाना, बहा देना ।

वहा फिरना दे० ( वा० ) भटकने फिरना, घिना काम के दीड़ने फिरना ।

वहाघ दे० ( पुं० ) बाढ़, चढ़ाव, नदी की धार, भागे का जाना ।

बाजू दे० (पु०) भूषण विशेष, अद्भुत, भुजबन्द ।

—चन्द (पु०) बाजू, भूषण विशेष ।

बाट दे० (पु०) पन्थ, मार्ग, राह, रास्ता, डगर ।

—काटना (घा०) मार्ग तै करना, रास्ता चलना ।

बाटिका दे० (स्त्री०) फुलयाड़ी, उपयन, बगीचा, बाग ।

बाटी दे० (स्त्री०) घर, गृह, वासस्थान, एक प्रकार की मोटी रोटी, खनाम उपात रोटी ।

बाड़ दे० (स्त्री०) धार, तलवार आदि की तीक्ष्णता, पंक्ति, वींति, फतार, बेड़ा, धाव ।—उड़ाना

(घा०) एक हाथ बन्दूक चलाना ।—भाड़ना (घा०)

एक हाथ बन्दूक दागना ।—दिलवाना (घा०)

धार तेज करवाना, शान चढ़ाना, तीक्ष्ण कराना ।

—बाधना (घा०) काँटे आदि से कुञ्ज स्थान की

परिधि घनाना, बाधा बनाना ।—खनना (घा०)

तोखा करना, शान चढ़ाना ।—ही जय खेत

खाय तो खखाली कौन करे (लो० उ०) रचक

ही मचक का काम करे तो रचा की क्या, प्राशा,

जिससे हानि होना असम्भव है यदि उसीसे हानि

पहुँचे तो फिर भरोसा किस पर किया जाय ।

बाड़च तह० (पु०) ब्राह्मण, घोड़े का समूह ।

बांडवानल तह० (पु०) [बाड़व + बनल] समुद्र का अग्नि, समुद्र की आग ।

बाड़ा दे० (पु०) हाता, घेरा ।

बाडिया दे० (पु०) शान चढ़ाने वाला, छुरी या तलवार आदि को तोखा करने वाला ।

बाड़ी दे० (स्त्री०) उपयन, बाग, बगीचा, बाग में का घर ।

बाढ़ दे० (स्त्री०) अधिकता, अधिकार्द्र, बढ़ती, परि-  
वृद्ध, नदी में अधिक जल का आना ।

बाढ़ना दे० (क्रि०) घटना, उमड़ना, उफनाना ।

बाण तह० (पु०) अस्त्र विशेष, शर, बलिराज का ल्येह पुत्र, मूँज की बनी हुई रस्सी, सटपा विशेष,

पाँच की संख्या ।—बाणा (स्त्री०) नदी विशेष,

सोमेश्वर नामक पर्वत से निकली हुई नदी, जो है किसी कारण से रावण ने सोमेश्वर पर्वत का वाण मारा था, जिससे उस पर्वत के दो खख ह गये और उनके सन्धि स्थान से एक नदी निकल जिसका नाम बाणगङ्गा पड़ा ।

—भट्ट (पु०) संस्कृत के एक कवि और ग्रन्थकार, गद्यकाव्य की रचना में वे सर्वश्रेष्ठ हैं

हर्षचरित और कादम्बरी नामक दो गद्य-काव्य उनके बनाये हैं और चरितकाशतक नामक

पद्य-काव्य भी है । पार्वती परिणय नामक

छोटी नाटिका भी इनके नाम से मिली है । पर

इस विषय में विद्वानों की सम्मति भिन्न प्रकार

की है । ये कवि कान्यकुब्ज देशाधिपति राजा हर्ष

वर्द्धन के सम्भोषणपिहित थे । हर्षवर्द्धन का समय इति

गताब्दी निश्चित हुआ है, अतएव उनके समा

पिहित का भी वही समय मानना पड़ेगा ।

—लिङ्ग (पु०) नर्मदा नदी में उत्पन्न शिवलिङ्ग

विशेष ।

बाण्डिय तह० (पु०) वैश्य वृत्ति विशेष, अण्डिकार्य व्यवसाय, टपापार, लेन देन ।

बाणी तह० (स्त्री०) सचन, छोली, उक्ति, भाषण, सरस्वती ।

बाण्डा दे० (पु०) निराश्रय, निःसहाय, लंबा, सुचचा, धूचा ।

बात दे० (स्त्री०) बोलवाल, कथा, कथन, सम्भाषण, बोलने का विषय, प्रश्न, जिज्ञासा, कारण, निदान

(पु०) रोग विशेष, गठिया बाई ।—उठाना (घा०)

धात्रा का उल्लङ्घन करना, बात न मानना, बर्बा

करना ।—करना (घा०) धोलना, बतियाना, बात-

चीत करना ।—काटना (घा०) बात को अशुद्ध

प्रमाणित करना ।—बात का बतकरुड बताना

(घा०) छोटी बात को बड़ी बताना, सामान्य बात

पर हुज्जत करना ।—की बात में (घा०) अभी,

तुरन्त, शीघ्र, फटपट ।—गढ़ना (घा०) बात

बनाना, फुसलाने की इच्छा से मिथ्या प्रवृत्ति

करना ।—खाना (घा०) बोलते बोलते चुप हो

रहना, धीरे धीरे धोना, ठहर ठहर कर बातें करना।—चलाना (वा०) किसी की चर्चा करना, बोलने का प्रारम्भ करना।—चीत (वा०) परस्पर भाषण, चापस में उक्ति प्रत्युक्ति।—टालना (वा०) चाचा भङ्ग करना, प्रस्तुत बात का उचार न देना।—पर बात याद आती है (वा०) यह बात कहने की मेरी रूखा नहीं थी, परन्तु प्रसङ्ग या पङ्क्ति से कहता हूँ जहाँ देना अभिप्राय बतलाना होगा है वहाँ यह बात कही जाती है।—पीजाना (वा०) कट्टक को भी छद्म लेना।—फेंकना (वा०) ठट्ठा करना, किसी की बात की खबरेना करना।—फेरना (वा०) कहते कहते बात बदल देना, शकस्मात् न कहने योग्य निकली हुई बात को छिपा लेना अथवा उसका अर्थ बदल देना।—यट्टाना (वा०) अगुआ टंटा करना, छोटी बात के लिये लड़ना, किसी बात को बड़ा कर कहना।—यनाना (वा०) स्वार्थ साधने के लिये झूठी बातें कहना।—यिगाड़ना (वा०) बने हुए कार्य को नष्ट कर देना।—मानना (वा०) कहना मानना, चाहा मानना।—रखना (वा०) प्रतिष्ठा प्राप्त करना, कही बात को पूरा करना।—रहना (वा०) प्रतिष्ठा का रह जाना, मान रह जाना।—लगाना (वा०) दुःख की बात उधर करना, निन्दा करना, अगुआ लगाना।

बातें करना दे० (वा०) बतियाना, सम्भाषण करना।—बनाना दे० (वा०) झूठी बातें कहना; अपना अपराध छिपाने के लिये झूठ बोलना।—मारना दे० (वा०) अपनी बोरता बताना; डींग हौंकना।—सुनना दे० (वा०) ध्यान से बात सुनना, कट्टक सहना, अधिष्ठेय बचन सहना।—सुनाना दे० (वा०) अधिष्ठेय करना, निन्दा करना, कही कही बातें कहना।—में उड़ाना दे० (वा०) किसी की प्रार्थना पर ध्यान न देना, किसी के काम की बातों पर हँसी करना।—में धर लेना दे० निरुत्तर (वा०) करना, उक्ति प्रत्युक्ति में चुप करा देना।—में लपेटना दे० (वा०) बिना प्रयोजन किसी

को रोकना, पहले बात से बड़ी बड़ी बाधाएँ दे कर पीछे धोखा देना।

वाती दे० (छा०) बच्ची, दिया में जलाई जाने वाली वाती, बर्ती, पलीता।

वातूनिया दे० (गु०) वाचाल, अधिक बातें करने वाला, बहुरहिया।

वातूनी दे० (गु०) बातें बनाने वाला, अधिक धोखे वाला, गप्पी, बकबादी, वाचाल।

यादल दे० (गु०) मेघ, घटा, बहल।

यादला दे० (गु०) लुप्पा, एक प्रकार का सार, जो सेना और रूपे का बनता है।

यादुर दे० (गु०) चमगादड़।

याध तल० (गु०) रोक, रुकावट, नियारण। (दे०) रस्सी, जिससे खाट बिनो जाती है।

याधक तल० (गु०) प्रतिबन्धक, विघ्न, बाधन, रोकने वाला।

याधा तल० (छा०) पीड़ा, दुःख (कृष्ण, मानसिक दुःख, प्रकृति सम्बन्धी पीड़ा)।

याधित तल० (गु०) प्रतिबन्धित, रोक हुआ।—करना (वा०) अनुगत करना, आगारी बनाना।

याध्य तल० (गु०) बाधनीय, रोकने योग्य, प्रतिबद्ध करने के उपयुक्त यथोचित, बेवश।

वान दे० (छा०) स्वभाव, प्रकृति, बाल, रीति, व्यवहार। यथा—“गुलसी यह मन तजत नहीं, सुदचिनियों की वान” (गु०) बाण, शर, खाद होने की रस्सी।

वानगी दे० (छा०) खादय, झुगान, नमूना।

वानवे दे० (गु०) संपन्न विशेष, मन्थे और दो, २२।

वाना दे० (गु०) स्वभाव, प्रकृति, व्यवहार, परिच्छद, येष विन्यास, येष धारण, भरनी, जिस गुण से कपड़े की चीड़ाई मरी जाती है। प्रतिष्ठा, विस्तार अथ विशेष। (जि०) खुलना, कटना, पहना, द्विविधा होना, दो भाग होना।



शानी दे० (स्त्री०) कपड़े बुनने का मूल, शानी, शोली ।  
 —शोनी दे० (स्त्री०) बिनाबट, बिनाबार्द, जुनाबट ।  
 शानूवा दे० (पु०) जल पत्ती विशेष ।  
 शानूसा, शानूसी दे० (पु०) एक प्रकार के कपड़े का नाम ।  
 शानैत दे० (पु०) निर्माता, रचयिता, बनाने वाला, बाण धारण करने वाला, धनुर्धर ।  
 शान्धव तत्त्वं (पु०) भार्द बन्धु, कुटुम्ब, परिवार सम्बन्धी, नतैत, नातेदार ।  
 शाप दे० (पु०) पिता, जनक ।—फरना (शो०) शप के समान आदर करना, आह्वानपूर्ती होना, बरा होना ।—रे शाप (शो०) आश्चर्य-भय-क्षोभक ।  
 —मारोका शैर (शो०) अतिशय विरोध, बहाभारी विरोध ।—न मारी पीवडी घेटा तीरन्दाज़ (शो० उ०) अयोग्य पिता के पुत्र का घमपट्टी होना । जिसका शप अयोग्य हो और यह भी स्वयं अयोग्य हो और यह शपना बखान करे तब यह लोकोक्ति कही जाती है ।  
 शापड़ा दे० (पु०) दीन, असहाय, दरिद्र, कंगाल ।  
 शापरी दे० (पु०) शपड़ा, दीन, दुखिया, असमर्थ, असहाय ।  
 शाप तद्द० (पु०) शप, शफार, गरम जल आदि का धँसा ।  
 शायनी दे० (स्त्री०) सर्प का शिल, सर्पों के रहने का स्थान ।  
 शायर दे० (पु०) मिठाई विशेष ।  
 शाय दे० (पु०) शप, दादा, बूढा, शायु, संन्यासी, इस शब्द का प्रयोग बड़े माननीय के अर्थ में किया जाता है ।—जी (पु०) योगी, संन्यासी, शायु आदि ।  
 शायू दे० (पु०) शालक, पुत्र, टाकुर, जमींदार, बङ्गाली किरानी, आशकल यह पुरुष मात्र के लिये प्रयुक्त होता है ।  
 शाय दे० (स्त्री०) एक प्रकार की मछली का नाम । (पु०) शाय, उलटा, शी, सुन्दर ।—(पु०) महादेव, कामदेव ।

शायाम तत्त्वं (स्त्री०) शी, पट्टी, भायाँ ।  
 शायम्हन तद्द० (पु०) ब्राह्मण ।  
 शायम्हनी दे० (स्त्री०) एक पौधे का नाम, जो दश के काम में आता है । अज्ञानहारी, कङ्किया, ब्राह्मणी, फीट विशेष, छिपकली, विसतुरवा ।  
 शायन दे० (पु०) उपहार, बैना, डाली, किसी उत्सव विशेष के उपलक्ष में मित्रों के घर को भेजा जाता है ।  
 शायव तद्द० (पु०) शायव्य कोण, शायु कोण, पश्चिम उत्तर का कोना । (पु०) शान्य, दूसरा, मित्र ।  
 शायव्य तत्त्वं (पु०) शायु कोण ।  
 शायों दे० (पु०) शायान, शायी शोर, उलटा, शाय, शङ्ग से दूसरा शङ्ग ।—शाय पूजना (शो०) शाय-विद्ये के धेयों में शायना, दाम्भिकों पर विश्वास करना ।  
 शायो दे० (स्त्री०) फैलाया, पसार, विस्तारित ।  
 शार दे० (स्त्री०) विलम्ब, समय, दिन, बेला, शरद, देरी, देरी ।—लगाना (शो०) विलम्ब करना, देरी लगाना ।  
 शारण तद्द० (पु०) शारण, रुकावट, शटकाय, शायी, करी, गज ।  
 शारन दे० (पु०) शारण, रोक, रुकावट ।  
 शारना दे० (स्त्री०) विलगाना, शरण शरण करना निषेध करना, रोकना, रुकावट डालना ।  
 शारनारी तद्द० (स्त्री०) शारनारी, शेरवा, गणिका, शारानना, पशुतिया ।  
 शारम्बार दे० (शु०) शार शार, प्रतिक्षण, हर घड़ी, प्रति पल ।  
 शारह दे० (पु०) सद्य विशेष, दस और दो, दो अधिक दश, १२ ।—शरुते (स्त्री०) ह्यादय ब्राह्मणों का उपजनों के साथ मिलान ।—शरुट (पु०) भय, शरु, शरु, शरु ।—शरुट होना (पु०) शरुट होना ।

पारासरी दे० (श्री०) अक्षरों का मिलान, पारह-  
लड़ी ।

पारासिंगा दे० (पु०) कन्दसार, मृग विशेष, यह  
जङ्गलो जन्तु है, हिरनो से बड़ा होता है और  
इसके सींगों से सींड़ा निकलते हैं ।

पाराह तद्० ( पु० ) पराह, मुकर, सुधर ।

पाराहीवर दे० (पु०) श्लेषधि विशेष, नेत्र वाला ।

पारी दे० (श्री०) बाड़ी, बगीचा, भरोखा, बिन ब्याही  
कन्या, क्वारीकन्या, घोसरी, पाला । (पु०) जाति  
विशेष, पतरी बनाने वाला, मसाल दिखाने वाला,  
कान और नाक में पहनने का गहना ।—दार  
(पु०) नियत समय का नीकर ।

पाहणी तद्० (श्री०) मंदिर, मद्य, षरुण देयता की  
दिया, पश्चिम दिशा, शतभिषा नक्षत्र ।

पारु दे० (श्री०) दाक, शोरा, गन्धक और कोयले  
से बनी हुई वस्तु, जो गरमी पाने ही भक से उड़  
जाती है ।

पारे दे० (पु०) घड़े, लड़के, बालक ।

पाल तद्० (पु०) लड़का, बालक, बच्चा, केय, शिरो-  
रुह । (पु०) ना समक, अज्ञान, भ्रूल ।—गोपाल  
(पा०) बाल, बच्चे, लड़के वाला ।—ग्रह (पु०)  
बालकों के कष्टदायक ग्रह, उपग्रह, भूतना आदि ।  
—याँधी कौड़ी मारना (पा०) निशाना लगाना ।

—पाल बच गये (पा०) विलकुल बच जाना,  
आक्रमण से रक्षा पाना ।—पाल चैरी होना  
(पा०) सब से विरोध होना ।—पाल गजमाती  
पिरोना (पा०) मूय गृह्णार करना, मूय सजाना  
—बच्चे (पा०) लड़के बाने, पुत्र पौत्र आदि ।  
—याँका न होना (पा०) किसी प्रकार की हानि  
न होना, कुछ भी न बिगड़ना ।

पालक तद्० (पु०) लड़का, छोकरा, श्रोटा, शोटा ।  
—पन (पु०) बाल्य, लड़कई, बाल्यन ।

पालका दे० (पु०) योगी या संन्यासियों का चेला ।

पालकड़ दे० (श्री०) श्लेषधि विशेष, सुगन्ध  
वाला ।

पालतोड़ दे० (पु०) घाव, कुन्मी, बाल टूटने में जो  
घाव होता है ।

पालना दे० (क्रि०) मुलगाना, जलाना, दीपक आदि  
का जलाना ।

पालभोग दे० (पु०) प्रातःकाल का नैवेद्य, प्रातःकाल  
जो भगवान् को नैवेद्य लगाया जाता है ।

पालम दे० (पु०) प्रियतम, पति, प्यारा ।

पालमखीरा दे० (पु०) एक तरह की ककड़ी, खीरा  
विशेष ।

पालराँड दे० (श्री०) बालरपडा, बालविधवा ।

पाललीला तद्० (श्री०) लड़कपन का खेल, बाल  
चरित्र ।

पालवरस तद्० (पु०) कपूतर, बालकों पर कृपा,  
बालकों पर दयालु ।

पालसुख तद्० (पु०) वान्यकाल का मुँज, बालकपन  
का मुँज ।

पाला तद्० (श्री०) छोटी चण्ड्या की लड़की, कुम्ह,  
कानों में पहनने का गहना ।—चाँद (पु०)  
द्वितीया का चन्द्रमा, द्वैज का चन्दा ।—पन  
(पु०) बालकपन, लड़कई ।—मोला (पा०)  
सोचा सादा, छल कपट रहित ।

शालि तद्० (पु०) बानरराज, इनकी राजधानी का  
नाम किष्किन्धा था । मेरु पर्वत पर वेगध्यान  
मग्न ब्रह्मा के नेत्रों से शकस्मात् शरीर टपक पड़े,  
उससे एक सुन्दर बानरी उत्पन्न हुई । उसी बानरी  
के गर्भ से देवराज इन्द्र और सूर्य के शीरसे से  
सुग्रीव और शालि उत्पन्न हुए थे । ब्रह्मा की आज्ञा  
से शालि ने किष्किन्धा में अपना राज्य स्थापन  
किया । शालि की स्त्री का नाम ताता और सुग्रीव  
की स्त्री का नाम रुमा था ।

किसी मायावी दैत्य का बध करने के लिये ब्रह्म  
मन्त्र शालि पाताल गया था, उसके जाने में ब्रह्मन्व  
द्वेष सुग्रीव ने उसकी मृग्यु निम्निय कर को और  
तदनुसार उन्होंने यह सन्वाद प्रचारित किया कि  
मन्त्रियों ने सुग्रीव को राजा बनाया, राज्यासन

शानी दे० (स्त्री०) कपड़े बुनने का मूल, वाणी, योली ।  
 —योनी दे० (स्त्री०) बिनाघट, बिनवाई, चुनाघट ।  
 यानूया दे० (पु०) जल पत्ती विशेष ।  
 यानूसा, यानूसी दे० (पु०) एक प्रकार के कपड़े का नाम ।  
 यानैत दे० (पु०) निर्माता, रचयिता, बनाने वाला, काम धारण करने वाला, धनुर्धर ।  
 यान्धव तत्० (पु०) भाई बन्धु, कुटुम्ब, परिवार सम्बन्धी, नतैत, नातेदार ।  
 याप दे० (पु०) पिता, जनक ।—फरना (वा०) याप के समान आदर करना, आचानुवर्ती होना, यश होना ।—दे याप (वा०) आश्चर्य-भय-द्योतक ।  
 —मारो का चैर (वा०) अतिशय विरोध, बड़ा भारी विरोध ।—न मारो पीवडी बेटा तीरन्दाज (ला० उ०) अयोग्य पिता के पुत्र का घमण्डो होना । जिसका बाप अयोग्य हो और वह भी स्वयं अयोग्य हो और वह अपना यमान करे तब यह लोकोक्ति कही जाती है ।  
 यापड़ा दे० (पु०) दीन, असहाय, दरिद्र, कंगाल ।  
 यापरो दे० (पु०) बापड़ा, दीन, दुखिया, असमर्थ, असहाय ।  
 याफ तद्० (पु०) बाध्य, बफारा, गरम जल आदि का धुआँ ।  
 याघनी दे० (स्त्री०) सर्प का बिल, सर्पों के रहने का स्थान ।  
 यावर दे० (पु०) मिठाई विशेष ।  
 यावा दे० (पु०) बापू, दादा, बूढ़ा, साधु, संन्यासी, इस शब्द का प्रयोग बड़े माननीय के अर्थ में किया जाता है ।—जी (पु०) योगी, संन्यासी, साधु आदि ।  
 यावू दे० (पु०) बालक, पुत्र, ठाफुर, ज़मींदार, यज़्जाली किरानी, आजकल यह पुरुष मात्र के लिये प्रयुक्त होता है ।  
 याम दे० (स्त्री०) एक प्रकार की मछली का नाम । (पु०) बाया, उलटा, स्त्री, सुन्दर ।—(पु०) महादेव, कामदेव ।

यामा तत्० (स्त्री०) स्त्री, पत्नी, भार्या ।  
 याम्हन तद्० (पु०) ब्राह्मण ।  
 याम्हनी दे० (स्त्री०) एक पीछे का नाम, जो दश के काम में आता है । अङ्गनहारी, कठिना ब्राह्मणी, कीट विशेष, छिपकली, बिसहुरा ।  
 यायन दे० (पु०) उपहार, बैना, हात्ती, किसी वस्तु विशेष के उपलक्ष में मित्रों के घर को भेजा जाता है ।  
 यायव तद्० (पु०) वायव्य कोण, वायु कोण, पश्चिम उत्तर का कोना । (पु०) अन्य, दूसरा, भिन्न ।  
 वायव्य तत्० (पु०) वायु कोण ।  
 वायां दे० (पु०) वामाङ्ग, बायी ओर, उलटा, बाया, अङ्ग से दूसरा अङ्ग ।—पाँव पूजना (वा०) राक्षसों के घोड़े में आना, दाम्बिकों पर विश्वास करना ।  
 वायो दे० (क्रि०) कैलाया, पसारा, विस्तारित ।  
 वार दे० (स्त्री०) विलम्ब, समय, दिन, बेला, अवध, देरी, देरी ।—लगाना (वा०) विलम्ब करना, देरी लगाना ।  
 वारण तद्० (पु०) वारण, रुकावट, घटकाव, हापी, कटी, गज ।  
 वारन दे० (पु०) वारण, रोक, रुकावट ।  
 वारना दे० (क्रि०) विलगाना, अलग अलग करना निषेध करना, रोकना, रुकावट डालना ।  
 वारनारी तद्० (स्त्री०) वारनारी, वेरवा, पत्तिका, वाराङ्गना, चतुरिया ।  
 वारन्यार दे० (पु०) वार वार, प्रतिक्षण, हर घंटी, प्रति पल ।  
 वारह दे० (पु०) संख्या विशेष, दस और दो, दो अधिक दश, १२ ।—खड़ी (स्त्री०) द्वादश भाजाओं का अष्टमूर्तियों के साथ मिलान ।—बाँट (पु०) मय, शोक, श्लानि, दीनता आदि ।—बाँट होना (वा०) उलटना, विगड़ना, खराब होना, सन्तान नाश होना ।  
 वारहवरी दे० वारह दरवाजों का मकान, हवादार मकान, बङ्गला ।

बारासरी दे० (खी०) चारों का मिलान, चारह-  
पड़ी ।

बारासिंगा दे० (पु०) कन्दसार, मृग विशेष, यह  
जङ्गलों जन्तु है, हिरनो से बड़ा होता है और  
रसके घीगों से घीड़ा निकलते हैं ।

बाराह तद्दे० ( पु० ) बराह, सूकर, सूधर ।

बाराहीचिर दे० (पु०) शोषधि विशेष, नेत्र बाला ।

बारी दे० (खी०) बाड़ी, बगीचा, भरोसा, बिन व्याही  
कन्या, बवारीकन्या, घोसरी, बाला । (पु०) जाति  
विशेष, पतली बनाने वाला, मसाल दिखाने वाला,  
कान और नाक में पहनने का गहना ।—दार  
(पु०) नियत समय का नीकर ।

बारुयी तद्दे० (खी०) मंदिरा, मद्य, वरुण देवता की  
दिया, पश्चिम दिशा, शतभिषा नक्षत्र ।

बारुद दे० (खी०) दाक, शोरा, गन्धक और कोयले  
से बनी हुई वस्तु, जो गरमी पाते ही मक से उड़  
जाती है ।

बारे दे० (पु०) बचे, लड़के, बालक ।

बाल तद्दे० (पु०) लड़का, बालक, बच्चा, केय, शिरो-  
रुह । (पु०) ना समक, अज्ञान, मूर्ख ।—गोपाल  
(बा०) बाल बच्चे, लड़के वाले ।—ग्रह (पु०)  
बालकों के कष्टदायक ग्रह, उपग्रह, पूतना आदि ।  
—बाँधी कौड़ी मारना (बा०) निशाना लगाना ।  
—बाल बच गये (बा०) बिलकुल बच जाना,  
आक्रमण से रचा पाना ।—बाल वैरी होना  
(बा०) सब से विरोध होना ।—बाल गजमेती  
पिरोना (बा०) सूय शूद्रा करना, सूय सजाना  
—बच्चे (बा०) लड़के वाले, पुत्र पौत्र आदि ।  
—बाँका न होना (बा०) किसी प्रकार की हानि  
न होना, कुछ भी न बिगड़ना ।

बालक तद्दे० (पु०) लड़का, छोकरा, छोट्टा, बेटा ।

—पन (पु०) दाएव, लड़काई, बालपन ।

बालका दे० (पु०) बानी या संन्यासियों का खेला ।

बालखंड दे० (खी०) शोषधि विशेष, सुगन्ध  
बाला ।

बालतोड़ दे० (पु०) घाव, फुन्सी, बाल टूटने से जो  
घाव होता है ।

बालना दे० (खी०) सुलगाना, जलाना, दीपक आदि  
का जलाना ।

बालभोग दे० (पु०) प्रातःकाल का नैवेद्य, प्रातःकाल  
जो भगवान् को नैवेद्य लगाया जाता है ।

बालम दे० (पु०) म्रियतम, पति, प्यारा ।

बालमखीरा दे०(पु०) एक तरह की ककड़ी, खीरा  
विशेष ।

बालरौंड दे० (खी०) बालरपड़ा, बालविधवा ।

बाललीला तद्दे० (खी०) लड़कपन का खेल, बाल  
चरित्र ।

बालघरत तद्दे० (पु०) कहुतर, बालकों पर कृपा,  
बालकों पर दयालु ।

बालसुख तद्दे० (पु०) बाल्यकाल का सुख, बालकपन  
का सुख ।

बाला तद्दे० (खी०) छोटी अश्वस्था की लड़की, फुरद,  
कानों में पहनने का गहना ।—बाँद (पु०)  
द्वितीया का चन्द्रमा, द्वैज का चन्द्रा ।—पन  
(पु०) बालकपन, लड़काई ।—मेला (बा०)  
सोचा सादा, बल केपट रहित ।

बालि तद्दे० (पु०) बानरराज, इनकी राजधानी का  
नाम किष्किन्धा था । मेरु पर्वत पर योगध्यान  
भग्न ब्रह्मा के नेत्रों से अक्षरमातृ शौच टपक पड़े,  
उससे एक सुन्दर बानरी उत्पन्न हुई । उसी बानरी  
के गर्भ से देवराज इन्द्र और सूर्य के शौच से  
सुग्रीव और बालि उत्पन्न हुए थे । ब्रह्मा की आज्ञा  
से बालि ने किष्किन्धा में अपना राज्य स्थापन  
किया । बालि को श्री का नाम तारा और सुग्रीव  
को श्री जी का नाम रुमा था ।

किसी मायावी दैत्य का बध करने के लिये एक  
समय बालि पातान गया था, उसके बाने में बिसन्ध  
देल सुग्रीव ने उसकी मृत्यु निश्चित कर सी और  
तदनुसार उन्होंने यह सन्वाद पचारित किया कि  
मन्त्रियों ने सुग्रीव के राजा बनाया, राज्यसन्ध

पर बैठ कर सुग्रीव बालि की स्त्री तारा को रख कर राजसुख भोगने लगे । कुछ दिनों के बाद पानाल से बालि अपनी राजधानी में लौट आया सुग्रीव के आचरणों में दु खित होकर बालि सुग्रीव को मारने के लिये वेष्टा करने लगा । प्राण बचाने के लिये सुग्रीव वहाँ से भाग गये, बालि ने अपनी स्त्री और सुग्रीव की स्त्री को भी रख लिया, अन्त में बालि रामचन्द्र की सहायता से मारा गया ।—कुमार (५०) अङ्गद ।

बालिश तत्० (गु०) मूर्ख, अज्ञ, नासमझ ।

बाली दे० (स्त्री०) लडकी, कन्या, कुण्डल ।

बालुका तत्० (स्त्री०) रेत, बालू, कङ्कुर ।—मय (५०) रेतोला, किरकिरा ।

बालू दे० (स्त्री०) बालुका, रेत ।—चर (५०) गौजे का एक भेद ।—चरी (स्त्री०) रोगी वष विशेष ।—शाही (स्त्री०) एक मिठाई का नाम ।

बाल्य तत्० (५०) लडकपन, लडफाई ।

बाव दे० (५०) बावु, पवन, बहार ।—गोला (५०) रोग विशेष, घेठ की पीडा, शूल ।—घाँघना (५०) चिरौरी करना फल घाँघना ।—घहना (५०) हवा चलना, किसी प्रकार का विचार फैलना ।—के घोडे पर सवार होना (५०) अभिमान करना, घमण्ड में आ कर किसी को कुछ न समझना ।—घतास (५०) दैवी आपद, भूत बाधा ।—शूल (५०) बायगोला ।

बावध दे० (५०) ब्राह्मण ।

बावभक दे० (गु०) गण्डी, प्रकवादी, बरबडिया, घाचाल ।

बावडी दे० (स्त्री०) बावली, तडाग, छोटा तलाव ।

बावना दे० (गु०) ठिगन, बयना, खर्च ।

बाबला दे० (गु०) विचित्र, उन्मत्त, पागल, सिडी ।

बाबली दे० (स्त्री०) बावली, तडाग, ताताव ।

बाब्य तत्० (५०) नेत्र जल, शौंघ, वाष्प, भाफ ।

बास दे० (गु०) स्थान, वासस्थान, रहने का स्थान, डेरा, बसेरा । (स्त्री०) महक, सुगन्ध, गन्ध ।

बासन दे० (गु०) बरतन, भाँडा, पात्र ।

बासना दे० (स्त्री०) इच्छा, अभिलाषा, मनोरथ । (क्रि०) मुग्धित करना, बासना, महकाना, शल देना ।

बासा दे० (गु०) स्थान, रहने का स्थान, डेरा ।

बासी तद्० (गु०) बासी, निवामी, रहने वाला, निवास करने वाला ।

बासी दे० (गु०) पर्युपित शस्त्र, भाफ निकला शस्त्र, दुर्गन्ध युक्त ।—चचे न कुत्ता खाय (५०) विरोध का कारण नहीं रहना, ऐसी कोई बात ही नहीं, जिससे भगडा हो ।—फूलों बास नहीं परदेसी बालम आस नहीं (५०) दूसरों के अपनी बातों में लाभ की आशा नहीं, समय पर किसी काम को न कर, समय बीतने पर उस की सिद्धि की आशा निरर्थक है ।

बाहक तत्० (गु०) [ बह + गृह ] होने वाला, भाव पहुँचाने वाला, मञ्जूर ।

बाहन तत्० (गु०) [ बह + अन्त ] अन्तवारी, घोड़ा गाडी आदि ।

बाहना दे० (क्रि०) अन्न चलाना, फेंकना, धोबना, त्यागना, भेंस गौ आदि का गर्भधारण करना ।

बाहर दे० (अ०) अन्यत्र, दूसरा स्थान, परदेश अन्य देश ।—के रा जाँय, घर के गीत गावें (५०) जिसका नियमित अधिकार है उसे तो कुछ नहीं बलाई और सब ले लें । हकदार को न मिलना और दूसरे को लाभ होना ।

बाहु तत्० (गु०) बाँह, मुजा ।—ज (५०) बाहु से उत्पन्न, दूसरा वर्ण, चत्रिय ।—युद्ध (गु०) मरल युद्ध पहलवानों की लडाईं कुरती ।

बाहुल्य तत्० (गु०) बहुलता, आधिक्य, अधिकारी । “बाहुल्यता” शब्द विलक्षण अर्थ है । ती भी इसका प्रयोग किया जाता है ।

बिजून तद्० (गु०) उज्ज्वल, तरकारी, भाजो ।

बिक तद्० (गु०) बक, हुण्डार, भेडिया ।

बिकट तद्० (गु०) भयङ्कर, भयानक, डरावना, कठिन, कठोर ।

विक्राना दे० (क्रि०) विक्री होना, बेचा जाना, समाप्त होना, उठना ।

विकराल तद्द० (गु०) डरावना, भयङ्कर, भयानक, विकट, कठोर ।

विकल तद्द० (गु०) व्याकुल, उद्धिग्न, बेचैन ।

विकसना दे० (क्रि०) खिलना, विकसित होना । फूलना, प्रस्फुटित होना, प्रसन्न होना, सुखकाना ।

विकसित तद्द० (गु०) खिना हुआ, फूला हुआ, प्रफुल्ल, हर्षित, प्रसन्न ।

विकाऊ दे० (गु०) विक्रीय वस्तु, सँची जाने वाली वस्तु, जो चीज़ बेची जाय ।

विक्राना दे० (क्रि०) विक्रि जाना, खप जाना, उठाना ।

विकाश दे० (स्त्री०) विक्री, खपत, उठाव ।

विकाश तद्द० (गु०) उमक, प्रकाश, ध्यानन्द, हर्ष, विक्राय ।

विक्री दे० (गु०) खेल के सामग्री, किसी खेल के एक पक्ष वाले घापक्ष में विक्री कहे जाते हैं ।

विक्री दे० (स्त्री०) विक्रीय, विक्राय, खपत ।

विक्राना दे० (क्रि०) फैलना, पसरना, क्रुद्ध होना, तितर वितर होना, क्रोध करना, क्रुद्ध होना ।

विक्राना दे० (क्रि०) उत्राव होना, नष्ट होना, खन-पनाय होना, क्रोध करना, विरोधी होना ।

विक्राना दे० (स्त्री०) छूट, गड़वाई ।

विक्राना दे० (क्रि०) विकसना, विकसित होना, खिलना, फूलना ।

विक्राना दे० (गु०) बीचा, बीस बिस्वा ।

विक्राना दे० (गु०) विरोधी, तोड़, भङ्ग, सदाई, भगदा, हानि, क्षति ।

विक्राना दे० (क्रि०) विरोध करना, तोड़ना, क्षति पहुँचाना ।

विगोई दे० (स्त्री०) मुलाया, छुपाव, छिपाव ।

विघन तद्द० (गु०) विघ्न, रुकावट, बाधा, अड-चन ।

विच दे० (घ०) बीच, अन्तर, व्यवधान ।

विचक्राना दे० (क्रि०) निराश होना, भागना, ताड़ जाना, सावधान होना, समझ लेना ।

विचक्राना दे० (गु०) मध्यमा, अँगुलि ।

विचक्राना दे० (क्रि०) निराश करना, भागाना, सावधान कर देना ।

विचलना दे० (क्रि०) विचलित होना, किसलना, विद्यलना, खसकना, स्थलित होना ।

विचली दे० (स्त्री०) बीचवाली, मध्यस्था ।

विचलई दे० (गु०) मध्यस्थ, विचयान, विचलई ।

विचार तद्द० (गु०) ध्यान, निर्णय ।

विचारना दे० (क्रि०) ध्यान करना, सोचना, निर्णय करना, मसकना, सूझना, जाँचना ।

विचारित तद्द० (गु०) सोचा हुआ, निष्पत्त किया हुआ ।

विचारी तद्द० (गु०) विचारक, विचारकर्ता, निर्णय कर्ता ।

विचाली दे० (स्त्री०) पुचाल, एक प्रकार की चटाई जो पुचाल या बाँस के डंडों से बनाई जाती है ।

विचौनिया दे० (गु०) मध्यस्थ, तिसरैत, विच-वाई ।

विच्छू दे० (गु०) जन्तु विशेष, वृद्धिक, जिसका डङ्ग विपेला होता है ।

विच्छना दे० (क्रि०) फैलना, पसरना, विस्तृत होना ।

विच्छुरना दे० (क्रि०) विपुक्त होना, वियोग होना, अलग अलग होना ।

विच्छुराहट दे० (स्त्री०) वियोग, वृथकता, भिन्नता ।

विच्छलना दे० (क्रि०) विलगना, वृथक् होना, अलग होना, पैर किसलना, रपटना ।

विक्रधाना दे० ( क्रि० ) फैलाना, पसराना, विधाना ।

विक्राता दे० ( पु० ) बिलुआ, भ्रूषण विशेष ।

विक्राना दे० ( क्रि० ) फैलाना, पसराना ।

विक्रुडना दे० ( क्रि० ) विवेग होना, पृथक् पृथक् होना, अलग होना, अलगना ।

विद्युना दे० ( पु० ) अस्त्र विशेष, कटार विशेष एक गहने का नाम जो पैरों में पहना जाता है ।

विडोडना दे० ( क्रि० ) अलगना, विवेग कराना, भिन्न कराना ।

विडोह दे० ( पु० ) विवेग, जुटाई, भिन्नता, भेद ।

विडौना दे० ( पु० ) विस्तरा, शय्या ।

विजना दे० ( पु० ) व्यजन, पक्ष ।

विजली दे० ( स्त्री० ) विद्युत्, दामिनी, चपला, बादलों की टङ्कर से उत्पन्न अग्नि ।

विजया तद्० ( स्त्री० ) भङ्ग, भङ्ग की पत्नी ।

विजान दे० ( पु० ) अजान, सुख, अज्ञान ।

विजायठ दे० ( पु० ) एक आभूषण का नाम जो बाँह में पहना जाता है ।

विजारा दे० ( पु० ) सौँद, वृषभ, बैल ।

विजाला दे० ( पु० ) यीनयुक्त, यीज सहित ।

विजोग तद्० ( पु० ) विवेग, बिह्वहन, विवेग ।

विज्जु तद्० ( स्त्री० ) विद्युत् ।

विभक्तना दे० ( क्रि० ) चमकना, चौकना, डरना, भय करना ।

विभक्ताना दे० ( क्रि० ) चमकाना, चौकाना, डराना ।

विट दे० ( पु० ) विष्टा, मल, घोट ।—चर ( पु० ) शूकर, गौरव का सूक्ष्म ।

विटना दे० ( क्रि० ) विधुरना, छिटकना, अलगना, छिटक जाना ।

विटप तद्० ( पु० ) वृक्ष की शाखा, नये पत्तय ।

विटाना दे० ( क्रि० ) छिटकाना, विधराना, गिराना, पसराना ।

विटीरा दे० ( पु० ) गुबरीटी, गोईठा, उपरी ।

विटाना दे० ( क्रि० ) विटाना, ठहराना, रोकना ।

विडकन दे० ( पु० ) पत्नी विशेष, घटेर आदि पत्नी, यथा—

‘विडकन घनचूरे, भक्षिके दासजीदे’

—रामचन्द्रिका ।

विडरना दे० ( क्रि० ) भागना, भाग जाना, डरना, डर जाना ।

विडार तद्० ( पु० ) बनखिलाव, विहास ।

विडारना दे० ( क्रि० ) भगाना, डराना ।

विडारी दे० ( स्त्री० ) भगाई, भृगुह ।

विडौजा तद्० ( पु० ) इन्द्र, पाकरासन, देवराज ।

वितरण तद्० ( पु० ) त्याग, दान, बाँटना ।

वितरना दे० ( क्रि० ) देना, दे देना, बिना मुश्य दे डारना ।

विताना दे० ( क्रि० ) गठाना, काटना, व्यतीत करना ।

वितीत तद्० ( पु० ) व्यतीत, गत, बीता हुआ ।

वित्त तद्० ( पु० ) धन, द्रव्य ।

वित्ता दे० ( पु० ) वितस्ति, बिलाँद ।

वित्तिया दे० ( पु० ) बचना, ठिगना ।

विथकना दे० ( क्रि० ) आश्चर्यित होना, अचम्भे में आना, पडा रहना, जहाँ का तहाँ रह जाना आगे नहीं बडना ।

विथरना दे० ( क्रि० ) छिटकना, बिखरना, बिखर जाना ।

विथा तद्० ( स्त्री० ) बयथा, पीडा, दुःख, भाषति, मानसी बयथा ।

विथुरना दे० ( क्रि० ) विधरना, फैल जाना, उधर होना ।

विदरना दे० ( क्रि० ) विहरना, फटना, चिरना ।

विद्री दे० ( स्त्री० ) विदर देवी, दस्ता ।

विदा दे० ( स्त्री० ) विदाई, भेजना, छुटी, जाने की आशा ।—करना ( या० ) भेजना, जाने की आशु-मति देना ।

विदारना दे० ( क्रि० ) विदारण करना, फाड़ना, चीरना ।

विटाहना दे० ( क्रि० ) जोते हुए खेत में हँगा चलाया, हँगाना, खेत के ढोंके फोड कर बराबर करना ।

विवोरना दे० (क्रि०) विद्रूप करना; विराना।  
 य तद्० (श्री०) विधि, रीति, व्यवहार।  
 यना दे० (पु०) प्रज्ञा, प्रजापति, विधाता, (क्रि०)  
 मिदना, देदना।  
 यषा तद्० (श्री०) रांड, बेवा, जिस स्त्री का पति  
 मर गया है।  
 यावट दे० (श्री०) घाल, छेद।  
 य दे० (श्री०) बिना, रहित, छोड़ कर, अतिरिक्त।  
 —भाये तरना (या०) असमय हो जाना, बिना  
 अत्रसर मरना, बे मौत मरना।—रोये लड़का  
 दूध नहीं पाता ( या० ) बिना प्रयत्न के कुछ भी  
 नहीं मिलता, अमीष्ट प्राप्ति के लिये कुछ भी प्रयत्न  
 करना आवश्यक है।—भय प्रीति नहीं ( या० )  
 बिना पराक्रम दिखाये प्रभाव नहीं जमता, प्रभाव  
 विस्तार के लिये अपनी प्रमुता दिखाने चाहिये।  
 —मांगें दे दूध थरावर मांगे दे सो पानी  
 ( श्री० उ० ) बिना मांगे मिलना उत्तम है। जो  
 स्वयं गुम्हारा कल्याण करना चाहता है, उसी पर  
 परीक्षा रखो, गुम्हारे कहने से जो गुम्हारा कल्याण  
 करेगा उससे अधिक लाभ नहीं।  
 यती दे० (श्री०) विनय, विरौरी, प्रार्थना।  
 यना दे० (क्रि०) बटोरना, एकत्रित करना।  
 यवाना दे० ( क्रि० ) बटोरना, एकत्रित करना,  
 कपड़े आदि का चुनना।  
 यवाई दे० (श्री०) विनये का काम, विनये की  
 तबूरी।  
 यसना दे० ( क्रि० ) नष्ट होना, विगड़ना, खराब  
 होना।  
 य तद्० (श्री०) रहित, अतिरिक्त, विन।  
 यई दे० (श्री०) बिनाबट, विनये का काम।  
 यस तद्० (पु०) नाश, संहार, विध्वंस।  
 यना दे० ( क्रि० ) विनय करना, शर्चना, पूजा  
 करना, ध्यान करना, पुजना, भजना, छोटना।  
 याला दे० (पु०) कपास का बीज।  
 यी दे० (श्री०) बिन्दु, गून्थ,।

यिन्धना दे० (क्रि०) डकन, डङ्ग मारना, डङ्गियाना।  
 यिसा दे० ( क्रि० ) जाली काटना, कपड़े में बेल छूटे  
 निकालना।  
 यिपत दे० (श्री०) चापत्ति, दुःख, झगड़।  
 यिपता दे० ( श्री० ) दुःख, कष्ट, झगड़, चापत्ति।  
 यथा—  
 “ एक बुलाये चौदह चायें,  
 निज निज यिपता रोयें चुनायें।  
 धूखे मरें भरे नहीं पैट,  
 क्यों सजि सज्जन नहीं प्रेमुपट ॥ ”  
 —भारतेन्दु।  
 यिपरना दे० (क्रि०) धाकमण करना, धावा करना,  
 चढ़ाई करना।  
 यिफरना दे० ( क्रि० ) चिढ़ना, घृष्ट होना, ढोठ  
 होना।  
 यिकी दे० (पु०) घृहस्पतिधार, गुहधार।  
 यिया दे० (पु०) बीज, गुठली।  
 यियारी दे० (श्री०) रात्रि भोजन, व्याणू।  
 यियाह दे० (पु०) वियाह, व्याह।  
 यिरकत तद्० ( पु० ) विरक्त, योगी, चांग का  
 घासना गून्थ, इच्छा रहित।  
 यिरचन दे० (पु०) शेर का घाटा।  
 यिरद तद्० (पु०) यश, यवाति, प्रसिद्धि, युकीति।  
 यिरमना दे० (क्रि०) विराम करना, विश्राम करना,  
 ठहरना, बिलम्ब करना, विसम्ब लगाना।  
 यिरमाना दे० (क्रि०) ठहराना, रोकना, बिलमाना।  
 यिरला दे० (पु०) कोई, कोई, अत्रुटा, अर्ध, अर्ध-  
 लनीय, अर्धत।  
 यिरघा दे० (पु०) छलड़ा, पीघा, छोटा वृक्ष।  
 यिरसना दे० (क्रि०) रहना, टिकना, ठहरना।  
 यिरह दे० (पु०) वियोग, विछोह, बिछुड़न।  
 यिरहनी दे० ( श्री० ) विरहिणी, वियोगिनी, अपने  
 पति से जिस स्त्री का वियोग हो गया है।  
 यिरहा दे० (पु०) वियोग, विछोह, अहीर का गीत।  
 यिरहिया दे० (पु०) विरहिणा, विरही।



विरही तद्द० (५०) बियोगी ।  
 विराजना दे० (क्रि०) शोभना, सुन्दर मानूम होना,  
 सुख भोग करना, सुख पूर्वक रहना ।  
 विराना दे० (क्रि०) चिढाना । (गु०) अन्वदीय, अन्व  
 सम्बन्धी, दूसरे का ।  
 विराम तद्द० (५०) विधाम, वाक्य की समाप्ति,  
 वाक्य समाप्ति सूचक चिन्ह ।  
 विरिया दे० (स्त्री०) अक्सर, समय, बारी, पाशा ।  
 विरोग दे० (५०) विरह, बियोग ।  
 विरोगन दे० (स्त्री०) बियोगिनी, विरहिनी ।  
 विर्नी दे० (स्त्री०) बर्ष, हड्डा ।  
 विल तद्द० (५०) छिद्र, बूँदें आदि जन्तुओं के रहने  
 का स्थान, मॉद, बॉमी, सेंध ।  
 विलफना दे० (क्रि०) सिसकना, रोना ।  
 विलखना दे० (क्रि०) देखना, निरखना, उदास  
 होना ।  
 विलग दे० (गु०) अलग, भिन्न, जुदा, न्यारा ।  
 —मानना ( वा० ) भेद मानना, जुदाई मानना,  
 विरोध करना ।  
 विलगना दे० (क्रि०) भिन्न भिन्न होना, पृथक्  
 पृथक् होना, फटना, छटना ।  
 विलगाव दे० (५०) भिन्नता, भेद, विद्वराहट ।  
 विलगाहि दे० (क्रि०) अलग होते हैं, पृथक् पृथक्  
 होते हैं ।  
 विलङ्गना दे० (क्रि०) चढना, आरोग्य करना ।  
 विलचना दे० (क्रि०) छॉटना, चुनना, बाछना,  
 विलगना ।  
 विलटना दे० (क्रि०) विगडना, नष्ट होना, स्तब्ध  
 होना, धर्म भ्रष्ट होना ।  
 विलनी दे० (स्त्री०) घूम करीब विशेष, जो चॉखों के  
 सामने घूमा करती है, चॉख पर की फुडिया ।  
 विलम्ब दे० (स्त्री०) निपटारा, निर्णय ।  
 विलविलाना दे० (क्रि०) विलाप करना, कूकना,  
 ब्याकुल होना, तडपना, तडफडाना ।  
 विललाना दे० (क्रि०) विलाप करना, रोना ।

विलहा दे० (५०) भेद, ब्रह्म, बेचमक ।  
 विलसना दे० ( क्रि० ) शोभित होना, आनन्द  
 होना, सुख भोगना, सुख भोग करना ।  
 विलस्त दे० (५०) विलास, विलास, विलासि ।  
 विलहुरा दे० (५०) पनबट्टा, पान रखने का डब्बा ।  
 विलहुरी दे० (स्त्री०) छोटा पनबट्टा, पान रखने का  
 छोटा डब्बा ।  
 विलाई दे० (स्त्री०) बिल्ली, मार्जार, फट्टकूठ, लाहा  
 या पीतल की बनी एक वस्तु जिसमें फट्टकू के  
 लच्छे काटते हैं । कियाड़ी की बिलकनी, जिसमें  
 कियाड़ी बन्द करते हैं ।  
 विलाना दे० ( क्रि० ) नष्ट होना, ध्वस्त होना, मिट  
 जाना ।  
 विलान्द दे० (स्त्री०) विलस्त, विलसित, विलास ।  
 विलापना दे० ( क्रि० ) रोना, विलफना, दुःख  
 करना ।  
 विलार दे० (५०) मार्जार, विलास, विलास ।  
 विलासल दे० (स्त्री०) रागिनी विशेष, एक रागिनी  
 का नाम ।  
 विलोना, विलोचना दे० ( क्रि० ) मथना, महना,  
 दही से मक्खन निकालना, दही मथना ।  
 विल्ला दे० (५०) विडाल, विलास ।  
 विल्ली दे० (स्त्री०) विलास, विडाल ।—भी लडती  
 है तो मुँह पर पजा धर लेती है (लो० उ०)  
 दूसरे से सामना करने के पहले अपनी रक्षा का  
 उपाय कर लेना चाहिये। अपनी रक्षा का प्रबन्ध  
 करके दूसरों से भिडना चाहिये।—के माग चॉका  
 दूटा (लो० उ०) भाग्य से मनोरथ पूर्ण हो गया।  
 सयोग वश काम हो गया ।  
 विल्लोपरा दे० (५०) गोह, गोधा ।  
 विसन तद्द० (५०) अक्सर, बुराई, दोष, बुरा  
 अभ्यास ।  
 विसनी तद्द० (५०) अक्सर, बुराई, लम्बट ।  
 विसविसाना दे० (क्रि०) खडना, बजबजाना ।  
 विसर दे० (५०) भूल, भूक, विस्मरण ।

बिसरना दे० (क्रि०) भूलना, विस्मरण होना, भट-  
काना ।

बिसराना दे० (क्रि०) भुलाना, यहकाना, विस्मरण  
कराना ।

बिसात दे० (स्त्री०) पूँजी, मूलधन ।

बिसाती दे० (पु०) केरी दासा, पैकार ।

बिसोध दे० (पु०) दुर्गन्ध, कुपास ।

बिसाना दे० (क्रि०) मोल लेना, खरीदना, कीमना,  
क्रय करना ।

बिसारना दे० (क्रि०) भुलाना, बिसराना ।

बिसाह दे० (स्त्री०) मोल की हुई वस्तु, खरीदी  
वस्तु ।

बिसाहना दे० (क्रि०) मोल लेना, खरीदना ।

बिसुरना दे० (क्रि०) बिसाव करना, बिसपना, धीरे  
धीरे लेना ।

बिस्तुई दे० (स्त्री०) छिपकली, पत्नी ।

बिहन दे० (पु०) बीया जो खेत में बोने के लिये रखा  
जाता है ।

बिहनौर दे० (स्त्री०) बीज बोने की ब्यारी ।

बिहरना दे० (क्रि०) बिहार करना, खानन्द करना,  
धूमना, ठहरना ।

बिहरी दे० (स्त्री०) चन्दा, सहायता, सहायताार्थ,  
निवमित धन ।

बिहरना दे० (क्रि०) बीच से छटना, टूटना, क्षाती  
छटना ।

बिहसना दे० (क्रि०) मुसकाना, हसना, स्मित  
करना ।

बिहान दे० (पु०) प्रातःकाल, भोर, दिनसार ।

बिहाला दे० (क्रि०) झड़ना, त्यागना, निर्वाह करना,  
काल काटना ।

बीड़ा दे० (पु०) गेंडुरी, गेंडुरी, जो मूल का बनता  
है और जिस पर अरा हुआ घड़ा रखा जाता है ।

बीधना दे० (क्रि०) भेदना, भेदना, भेदन करना,  
बेधना ।

बीयर दे० (पु०) बिल, छिद्र, छेद, माँद, चाँप चादि  
के रहने का स्थान ।

बीघा दे० (पु०) विस्वा, विगहा, बीघ विस्वे का एक  
बीघा होता है, भूमि का नाप ।

बीच दे० (पु०) मध्य, माँक, माँद, अन्तर, भीतर ।  
(पु०) विद्वेष, विरोध ।—पड़ना (वा०) अन्तर  
पड़ना, विरोध होना, कलह होना ।—विस्वाव  
करना (वा०) विरोध शान्त करना, झगडा निप-  
टाना, निर्णय करना, द्वेष दूर कर देना ।—में  
पड़ना (वा०) मध्यस्थ होना, किसी धान को  
निपटाने का भार लेना ।

बीचो बीच दे० (वा०) मध्य में, ठीक बीच में ।

बीछा दे० (पु०) बिच्छू, वृद्धि ।

बीजक दे० (पु०) वस्तुओं की सूची, पत्तान, वस्तुओं  
की इयत्ता बताने वाली केहरिस्त ।

बीजना दे० (पु०) पट्टा, ब्यजन, तालबुन, कीर  
विशेष ।

बीजार दे० (पु०) अधिकांश बीज वाला, बीजमय,  
बीजैला ।

बीजी दे० (स्त्री०) कन्ठ विशेष, नकुल, नेत्रभा ।

बीम्बना दे० (क्रि०) घोड़ना, रेतना, टेलना,  
रेतना ।

बीट दे० (स्त्री०) बिट, मत, विष्टा, पछियों की  
विष्टा ।

बीटना दे० (क्रि०) छतकना, उपराना, ठलना, पिय-  
रना ।

बीटा दे० (पु०) गेंडुरी, बीघा, जिसका मिर पर रखा  
कर अरा हुआ घड़ा पनिहारी से जाता है ।

बीड़ा दे० (पु०) बीटिका, पान की बीड़ी, लता हुआ  
पान, एक प्रकार का घृत जो तलवार की घृत में  
बाँधा जाता है ।—उटाना (वा०) किसी काम  
को बिट्ट करने के लिये प्रतिष्ठा करना । पहले यह  
प्रथा थी कि जब किसी राजकुल में कोई बड़ा  
काम या पहला घा, तब राज्य के लोग बुलाये

जाते थे और उनके बीच तलवार या और कोई वस्तु रख दी जाती थी । उनमें जो अपने को शक्तिमान् समझता या यह उस वस्तु को उठा लेता था । इसका अर्थ यह होता था कि इसने काम पूरा करने की प्रतिज्ञा की ।—डाखना (घा०) किसी काम को पूरा करने के लिये लोगों से कहना ।

बीणा तत्० (खी०) बीणा, धीन बाजा ।

बीतना दे० (क्रि०) ध्वंसीत होना, पूरा होना, समाप्त होना, गुजरना ।

बीन दे० (खी०) बीणा, वाद्य विशेष ।

बीनना दे० (क्रि०) बुनना, बनाना, निर्माण करना ।

बीवी दे० (खी०) बी, मेहराब, मेहरिया, मेम, चाँग्रज की बी ।

बीमा दे० (पु०) बीमियम, दुष्टी, यह एक प्रकार की राजकीय व्यवस्था है । डाक के द्वारा भेजी जाने वाली वस्तु के टूटने फूटने की जिम्मेदारी लेने के लिये जो डाक विभाग को कुछ नियमित द्रव्य देकर इसकी व्यवस्था करनी पड़ती है उसे बीमा कहते हैं । इसके अतिरिक्त बीमे का व्यापार भी होता है । व्यवसाय जीवन बीमा आदि का व्यापार करते हैं । बड़े बड़े नगरों में मकान आदि का भी बीमा कराया जाता है । बीमा की अवधि में यदि मकान जल लाग तो बीमें वालों को मकान का दाम देना पड़ता है ।

बीर तद्० (पु०) उखाही, शूर, अश्वत्थार्थ, भार्द, भैया, कान का गहना ।—बहुटी (खी०) कीट विशेष, यह लाल रङ्ग का होता है और बरसात में ही यह पैदा होता है ।

बीरा दे० (पु०) भार्द, भैया, बीडा, पान की लिप्पी ।

बीरी दे० (खी०) बीड़ा, बीरा, पान की खीली ।

बीसा दे० (पु०) बीस नख वाला कुत्ता, कुत्ते दो प्रकार के होते हैं, चठरहा, और बीसा, बीसा कुत्ते बड़े भयानक और विपैस होते हैं । उनका जाटा बुधा आदमी भाग्य ही से बचता है ।

बीसी दे० (खी०) बाघ भावने का नाप ।

बुन्दा दे० (पु०) बिन्दी, बिन्दु, गून्थ, गौनाहा टीका ।

बुँदिया दे० (खी०) एक प्रकार की मिठाई का नाम ।

बुन्देला दे० (पु०) बुन्देलखण्ड का राजपूत, बुन्देला खण्ड का रहने वाला ।

बुकटा, बुकटा दे० (पु०) मुट्टी भर, भरमुट्टी, मुट्टे परिमित ।

बुकनी दे० (खी०) बूण, बूरा, बफूफ, बूरा ।

बुकलाना दे० (क्रि०) बकना, स्वयं बकते रहना, बक बकाना ।

बुफा दे० (पु०) बुकटा, मुट्टी भर, बुटकी, एक प्रकार का लाल रङ्ग ।

बुफ़ी दे० (खी०) काँधे पर का बख, वह कपडा जो काँधे पर रखता जाता है ।

बुजना दे० (पु०) खियों के पहनने का कपडा, जिसे अमुट्टि की दशा में खियों पहनती हैं, महान का कपडा ।

बुजहरा दे० (पु०) पात्र विशेष, जिसमें पार्टी र्म किया जाता है ।

बुकना दे० (क्रि०) पुसाना, गुल होना, ठप्पा होना ।

बुकाना दे० (क्रि०) बुतवा देना, गुल कड़ा देना, प्रत्यर्पण करना, आग ठप्पी करना, दिमा बुकाना ।

बुडाना दे० (क्रि०) बुडाना, जलमग्न करना, बोरना ।

बुड्डा दे० (पु०) बूढ, बूडा । (पु०) प्राचीन, पुराना, जीर्ण, शीर्ण ।

बुढभस दे० (पु०) अपने को बुया समझने वाला बूडा, जवान को चारा चलने वाला बूडा ।

—लगना (घा०) बुढाई में जवानों का काम करना ।

बुढवा दे० (पु०) बूढ, बूडा, डोकरा ।

बुढ़ापा दे० (पु०) बुढ़ार्इ, बुढ़ायस्या—विगडुना ।  
(या०) बुढ़ायस्या में कष्ट सहना, बुढ़ार्इ में कलङ्क लगना ।

बुढ़िया दे० (बी०) बुढ़ायी, बूढ़ी ।

बुढ़ा दे० (पु०) कर्ण भूषण विशेष, कान के एक गहने का नाम ।

बुढ़ दे० (पु०) लुभा खेतने की एक वस्तु, जिस पर पैसे केंका जाता है ।

बुढ़ाना दे० (क्रि०) बुकाना, युक्त जाना, गुप्त होना ।

बुढ़ा दे० (पु०) ठगहार, छल, कपट, धूर्तता, धोखा ।—बुढ़ना (या०) ठगना, खनना, धोखा देना ।

बुढ़ु तद्द० (पु०) बुलकुत्ता, पानी का बुलका, बहूला ।

बुढ़ुदाना दे० (क्रि०) धीरे धीरे बोलना, मन माना कुछ बकते रहना ।

बुढ़ु तद्द० (पु०) भगवान् का अवतार विशेष । (पु०) सर्वज्ञ, सुगत, विदित, ज्ञाता, कपिलवस्तु के राजा बुढ़ुदेव का पुत्र । इनका दूसरा नाम था गीताम । बुढ़ु ने जिस धर्म का संसार में प्रचार किया वह भी बुढ़ु के नाम से प्रसिद्ध है । समस्त भूमण्डल में बौद्ध धर्म का प्रचार है, यहाँ तक कि संसार का तीसरा भाग बौद्ध धर्मावलम्बी है । तिब्बत चीन और जापान में भी बौद्ध धर्म फैला हुआ है ।

बौद्धमत में बारह इन्द्रियाँ मानी जाती हैं । पाँच कर्मेन्द्रिय और पाँच ज्ञानेन्द्रिय तथा मन और बुद्धि नामक दो अवेन्द्रिय । शरीर द्वादश इन्द्रियों का आश्रय है इसी कारण बौद्धमत में शरीर की द्वादशाश्रय संज्ञा है । सेवा ही इस शरीर का प्रधान कर्म है, इनके देवता सुगत हैं । इनके मत में प्राण्य और अनुमान दो ही प्रमाण हैं, सुतरां शब्द प्रमाण रूप वेद का इनके यहाँ आदर नहीं है जगत् चणमंगुर है । बौद्ध कहते हैं प्रति चण जगत् का परिवर्तन हो रहा है, अतएव जगत् के कोई पदार्थ स्थायी नहीं है । परिवर्तन होना ही इस जगत् का लक्षण और स्वरूप है । सांख्य और बौद्ध ही अनेक बातों में एकता है । दोनों कहते हैं कि

दुःख का कारण जन्म, जन्म का कारण कर्म, कर्म का कारण प्रवृत्ति और प्रवृत्ति का कारण अज्ञान है । इससे यह स्पष्ट ही सिद्ध होता है सांख्य दर्शन ही बौद्ध धर्म का मूल है । बौद्धों के मत में चार भेद हैं, माध्यमिक, योगाचार, शैवान्तिक और वैशेषिक । माध्यमिक बौद्धों के मत में जगत् स्वप्न दृष्ट पदार्थ के समान मिथ्या है, समस्त शून्य है । योगाचारों के मत में सभी बाह्य वस्तु अस्तित्व है, केवल विज्ञानरूप आत्मा ही सत्य है । शैवान्तिक बौद्ध बाह्यवस्तु को सत्य और अनुमान सिद्ध मानते हैं वैशेषिक बौद्धों के मत में समस्त पदार्थ प्रत्यक्ष सिद्ध है । बौद्धों के मत में सब पदार्थ जगत् स्थायी हैं । ऐसी स्थिर वासना का नाम मार्ग सत्य है और यही मोक्ष है ।

बुद्धि तद्द० (बी०) [बुध् + चि] मनीषा, धी, चिपण, ज्ञान का कारण, विवेक शक्ति ।—मान् (पु०) मनीषी, समझदार, विवेकी ।—हीन (पु०) सुर्ष, नासमझ, अज्ञान ।

बुद्धीन्द्रिय तद्द० (पु०) बुद्धि और इन्द्रिय, इन्द्रिय सहित बुद्धि ।

बुध तद्द० [ बुध + क्त ] परिहृत, विद्वाद्, अभिज्ञ, चतुर्थप्रद, सौम्य, सूर्य वंशी एक राजा का नाम ।  
—जन (पु०) परिहृतजन, अभिज्ञ, बुद्धिमान् ।  
—वार (पु०) बुध का दिन, चौथा दिन ।

बुधान तद्द० (पु०) गुरु, परिहृत, अध्यापक, प्रदाता की भवा ।

बुध्या दे० (क्रि०) बिनना, जाली निकालना, कपड़े में धूल छूटे निकालना ।

बुधुक्षा तद्द० (बी०) भोजन की इच्छा, भोजन-भिलाष ।

बुधुक्षित तद्द० (पु०) भूषा, सुधित, पैद, पैठाइ ।

बुरा दे० (पु०) जराब, दुष्ट, नीच, अधम, निकम्मा ।  
—कहना (या०) निन्दा करना, कलङ्कित करना, दुर्गम फैलाना ।—बोतना (या०) अगुम चाहना, किसी को बुराई चाहना, बिराड़ चाहना ।—बैठा,

खोटा पैसा काम आता है ( वा० ) किसी प्रकार की भी वस्तु समय पर काम आती है ।  
 —मानना ( वा० ) अपमान होना, अपमान सम-  
 भता, द्वेष मानना ।—लगाना ( वा० ) कष्ट होना,  
 अशुचित माहूम होना ।  
 धुराई दे० ( स्त्री० ) दुष्टता, नीचता, अधमता खोटा-  
 पन, धुरापन ।—परकमर धौधना ( वा० ) अशुभ  
 करने का उद्यत होना, कष्ट पहुँचाने की चेष्टा  
 करना ।  
 धुलधुला दे० ( पु० ) शुद्धयुदा, पानी का शुद्धयुद,  
 धुला ।  
 धुलाफ दे० ( पु० ) नाक में पहनने का एक गहना ।  
 धुलाना दे० ( क्रि० ) पुकारना, हाँक मारना, आह्वान  
 करना ।  
 धुलाहट दे० ( स्त्री० ) आह्वान, पुकार, डाकन ।  
 धुल्ला दे० ( पु० ) शुद्धयुदा, धुलधुला ।  
 धुहनी दे० ( स्त्री० ) पहली बिक्री, बयाना ।  
 धुहरी दे० ( स्त्री० ) सूँजे जौ ।  
 धुहारन दे० ( स्त्री० ) भाडन, कूहा, कर्कट ।  
 धुहारना दे० ( क्रि० ) भाडना, धुहारी लगाना, साफ  
 करना ।  
 धुहारी दे० ( स्त्री० ) भाडू, बडनी, बडनि ।  
 धूमा दे० ( स्त्री० ) बहिन, भगिनी, पिता की बहिन,  
 पूरू, पूथा ।  
 धूँ दे० ( अ० ) भय सूचक, डराने का शब्द ।  
 धूँद दे० ( स्त्री० ) बिन्दु, जलकण, जलबिन्दु, छींटा,  
 टपका ।  
 धूँदा दे० ( पु० ) बड़ी धूँद ।—धाँदी ( वा० ) यानी  
 बरसना, धीरे धीरे पानी पबना, भीँसी गिरना ।  
 धूँदी दे० ( स्त्री० ) वृष्टि, वर्षा की धूँद, एक प्रकार  
 की मिठाई ।  
 धूकना दे० ( क्रि० ) पीसना, कूटना, धूर्ण करना,  
 धूरन करना ।  
 धूका दे० ( पु० ) धूर्ण, धुकीनी, सफूक ।

धूचा दे० ( पु० ) कनकटा, कर्णहीन, जिसके कान  
 न हों, या कट गये हों ।  
 धूक दे० ( स्त्री० ) समझ, बुद्धि, ज्ञान ।  
 धूकना दे० ( क्रि० ) समझना, हृदयद्वम करना, जानना,  
 सोचना ।  
 धूकाई दे० ( स्त्री० ) शिक्षा, सीख, परिचय, बुकावट ।  
 धूट दे० ( पु० ) अन्न विशेष चणक, चना ।  
 धूटा दे० ( पु० ) बेल, कपड़े में धूत का या तार का  
 बना काम ।  
 धूटी दे० ( स्त्री० ) छोटा धूटा, वनस्पति, बड़ी धूरी,  
 धूरि शौषध ।  
 धूडना दे० ( क्रि० ) डूबना, मग्न होना, जल में  
 डूबना ।  
 धूडिया दे० ( पु० ) डूबने वाला, जल में गिरी वस्तु  
 को डूब कर निकालने वाला, पनडूबा, गोताखोर ।  
 धूडी दे० ( स्त्री० ) भाले की नौक, बर्छों की धार,  
 भाले का फल ।  
 धूडा ( पु० ) धूट, धूडा । ( पु० ) पुराना, प्राचीन,  
 अधिक दिन का, अधिक समय का ।—धाग ( वा० )  
 बहुत बूदा, छटा, चालाक ।  
 धूता दे० ( पु० ) शक्ति, सामर्थ्य, बल ।  
 धूधू दे० ( स्त्री० ) बहिन, भगिनी, छोटी बहिन, धुहारी  
 बहिन ।  
 धूर दे० ( स्त्री० ) धूसी, झिलका, केराई, धक का  
 कण ।—के लड्डू ( वा० ) एक प्रकार की मिठाई  
 का नाम ।—के लड्डू जो खाय सो भी पक्ष-  
 ताय न खाय सो भी पक्षताय ( लो० द० ) जिस  
 काम के करने से कुछ विशेष फल न हो, वैसे काम  
 जो देखने से अच्छे माहूम पड़ें पर उनका फल  
 कुछ नहीं ।  
 धूरा दे० ( पु० ) साफ की हुई खाँब, लकड़ी का धूरा,  
 धारा से लकड़ी चीरते समय जो बारीक धूरा  
 निकलता है ।  
 धे दे० ( अ० ) धड़े, धरे, दे, नीबू सम्बन्धन ।

बेट दे० (५०) किसी बख का मुठ, हथकड़ा, दस्ता ।  
 बेड़ा दे० (५०) तिरछा, बाँका, बक, टेडा ।  
 बेधना दे० (क्रि०) बिधना, चुभाना, गाड़ना ।  
 बेगार दे० (५०) बिना मजूरी का काम, बल पुर्वक किसी से काम लेना और मजूरी न देना या पौड़ी मजूरी देना ।—पकड़ना (वा०) जबरदस्ती बिना मजूरी के काम कराने के लिये पकड़ना, जबरदस्ती किसी को काम करने के लिये बाध्य करना ।  
 बेगारी दे० (स्त्री०) बेगारी का काम, सेंट मेंट का काम ।  
 बेङ्ग दे० (५०) मेढक, मेक, दादुर ।  
 बेचना दे० (क्रि०) बिक्री करना, मोल लेकर देना, दाम लेकर देना, बदला बदला करना, बदलौघस करना ।  
 बेचू दे० (५०) बेचने वाला ।  
 बेड़ दे० (५०) जन्म विशेष, नकुल, नेकना ।  
 बेझा दे० (५०) लच्य, निशाना, ताक, चिन्ह ।  
 बेठवा दे० (५०) लड़का, पुत्र, बेटा ।  
 बेठा दे० (५०) पुत्र, लड़का, छोकरा, छोटा ।  
 बेठिया, बेठी दे० (स्त्री०) पुत्री, तनया, दुहिता, लड़की ।  
 बेठन तत्० (५०) बेठन, लपेटन, खोल, पाच्छादन, दाकन ।  
 बेड़ दे० (५०) घेरा, बाड़ा, मेंड़ ।  
 बेड़ा दे० (५०) घनई, बीघड़ा, झाड़ ।—पार लगाना (वा०) दुःख से उद्धार करना, दुःख दूर करना ।—पार होना (वा०) सब दुःखों से छूटना, मनोरथ सफल होना ।  
 बेड़िया दे० जाति विशेष ।  
 बेड़ी दे० (स्त्री०) बन्धन सूत्र, पैकड़ी, पात्र विशेष, ओ सीबने के काम में आता है ।  
 बेड़ना दे० (क्रि०) घेरना, बाड़ा बाँधना ।  
 बेड़ा दे० (५०) कठघरा, कठरा ।  
 बेण, बेणु तद्० (५०) वंशी, बाँसुरी, सुरली ।  
 बेत तद्० (स्त्री०) वेत्र, एक प्रकार की लकड़ी जो बचीली होती है । यथा—

‘फूले, फरे न येत यदपि मुधा बरसहि’ जलद,  
 मूरख हृदय न चेत ओ गुह भिगहि विरसु सम ।’  
 —रामायण ।

बेध तद्० (५०) मसत युक्त योग विशेष, क्षिप्र, छेद, साल ।  
 बेघड़क दे० (५०) निर्भय, भय भूय, निहड, निधड़क ।  
 बेधना दे० (क्रि०) छेदना, गौसना, जोड़ना, भेदना, गड़ाना, चुभाना ।  
 बेन तद्० (स्त्री०) बेणु, बाँसुरी, वंगी ।  
 बेना दे० (५०) पहा, बाँस का बना हुआ पहा ।  
 बेनी तद्० (स्त्री०) बेणी, चौटी, लूड़ा, कियाड़ में लगाया जाने वाला एक फाट ।  
 बेमातं तद्० (स्त्री०) त्रिमाता, सौतेली माता ।  
 बेर दे० (५०) एक वृक्ष और उसके फल का नाम, बदरी वृक्ष, बदरी फल । (स्त्री०) बार, सबसर, बिलम्ब बेला ।—बैर (श०) बार बार, अनेक बार, अनेक समय, बारम्बार ।—भयानक (५०) भयानक रात्रि, प्रलय की रात, मृत्यु की रात ।  
 बेरी दे० (स्त्री०) बैर के भाड़े, बदरी वन, बैर कंठी ।  
 बेल दे० (५०) छूटा, सूत या तार से बनाया हुआ कपड़े पर का काम, एक वृक्ष और उसके फल का नाम । (स्त्री०) लता ।  
 बेलन दे० (५०) खनाम प्रसिद्ध वस्तु विशेष, जिमसे रोटी पोई जाती है ।  
 बेलना दे० (क्रि०) फैलाना, बढ़ाना, रोटी पोना ।  
 बेलनी दे० (स्त्री०) टहनी, शाला, लता ।  
 बेल छूटा दे० (५०) चित्रकारी का काम, चूई का काम ।  
 बेला दे० (५०) पुण्य विशेष, एक मुगन्धित पुत्र और उसके पेड़ का नाम मोती या फूल, कटोरा, बाद्य विशेष, यह बाजा चाकार में मारङ्गी के समान होता है ।  
 बेलि दे० (स्त्री०) लता, पौधा ओ स्वर्ण लङ्गा न हो सके ।  
 बेलू दे० (५०) लुङ्कन, लुङ्काय ।  
 बेला दे० (५०) उदासीन, स्थान, निराश, हताय ।

वैचरवार दे० (श०) स्पष्ट रूप से, साफ़ साफ़, खोल के, प्रकाश भाय से, क्रमशः, यथा क्रम ।  
 वैचहर दे० (पु०) षण, उहार, धार, कर्ज, लेनदेन ।  
 वैचहरिया दे० ऋणदाता, कर्ज देने वाला, उत्तमर्ण, महाजन ।  
 वैचहार तद्० (पु०) व्यवहार, चाल चलन, रीति, प्रथा ।  
 वैवान दे० (पु०) विमान, मृतक की अरथी ।  
 वैसन दे० (पु०) चने का घाटा ।  
 वैसनौटी दे० (खी०) बैसन की रोटी ।  
 वैसर दे० (पु०) नयुनी, नाक का एक गहना ।  
 वैसरा दे० (पु०) पत्नी विशेष, बाज सिकरा ।  
 वैसुरा दे० (पु०) अमेल, बेताला, कुशाग्र्य ।  
 वैस्वा तद्० (खी०) बैरया, पयुरिया, नर्तकी, गणिका, नगर नाटी ।  
 वैह तद्० (पु०) वैध, शिद्र, साल, छेद ।  
 वैहड़ दे० (गु०) लँडहर, ऊँची नीची भूमि ।  
 वैंगन दे० (पु०) तरकारी विशेष, बैंगन, भँटा, वृन्ताक ।  
 वैंगनी दे० (पु०) रङ्ग विशेष, बैंगन के समान रङ्ग । (गु०) वैंगनी रङ्ग में रङ्गा हुआ ।  
 वैँटा दे० (पु०) वैँट, कुएहाडी की सूँठ, हथकटा ।  
 वैँदा दे० (पु०) बूँदा, टिकुली, टीका, गोलाकार टीका ।  
 वैँदी दे० (खी०) विन्दु, विन्दी, टिकुली ।  
 वैकाल दे० (पु०) तीसरा पहर, अपराह्न ।  
 वैगन दे० (पु०) बैंगन, भपटा, वृन्ताक ।  
 वैजन्ती माल तद्० (खी०) पञ्चरङ्गी माला, भगवान् की माला, नीलम, मोती, माणिक, सुखराम और होरा इन रत्नों से बनी माला, वैजन्ती माल का लक्षण नीचे लिखे दोहे से स्पष्ट है—  
 “वाँकी खीपी सूकरी करी दरी मठ शाल,  
 पट्ट पट्ट मुक्ता पोहिये सेा वैजन्ती माल ।”  
 वैठक दे० (खी०) वैठका, बैठने का स्थान या रीति, आसन ।  
 वैठना दे० (क्रि०) आसन मारना, आसन मार के बैठना, उपविष्ट होना, उपवेशन करना, दीवार आदि का गिर जाना, बिना काम के होना ।

वैठवा दे० (गु०) वैठा हुआ, चपटा, चिपटा ।  
 वैठाना दे० (क्रि०) बैठलना, बैठने का कहना स्थापन करना, ठूटी हड्डी को बैठाना, बैठने का आज्ञा देना ।  
 वैतरणी तद्० (खी०) नदी विशेष, प्रेत नदी, यद्धार की नदी ।  
 वैतरा दे० (पु०) एक प्रकार की सोंठ, मूला चट्टा ।  
 वैद तद्० (पु०) वैद्य, वैद्यकी करने वाला, चिकित्सक, औषध करने वाला ।  
 वैदक तद्० (पु०) वैद्यक, चिकित्सा करने वाला शास्त्र, वह शास्त्र जिसमें रोग परीक्षा और चिकित्सा की विधि लिखी है ।  
 वैन दे० (खी०) वचन, बोली, कथन, बात, शब्द, उक्ति ।  
 वैना दे० (पु०) विरोधपूर्ण विशेष, एक प्रकार का धूषण जो माघे में पहना जाता है । उपहार, पाहुण ।  
 वैपार तद्० (पु०) व्यापार, वाणिज्य, व्यवसाय ।  
 वैपारी दे० (पु०) महाजन, बणिक, सौदागर, व्यवसायी ।  
 वैमात्र तद्० (पु०) वैमात्रेय, सौतेला भाई ।  
 वैया दे० (पु०) पत्नी विशेष ।  
 वैयान दे० (पु०) प्रसव, जन्म, उत्पत्ति ।  
 वैयाना दे० (क्रि०) जन्माना, उत्पन्न कराना, प्रसव कराना ।  
 वैयाला दे० (गु०) वायु विशिष्ट, वायु वाला, वादी ।  
 वैर तद्० (पु०) वैर, द्वेष, विद्वेष, शत्रुता, विरोध ।  
 —पडना (या०) द्वेष होना, विरोध करना ।  
 —लेना (या०) वैर का बदला चुकाना, प्रतिशोध करना ।  
 वैरख दे० (पु०) भ्रष्टा, उज्जा, पताका ।  
 वैरागा दे० (पु०) वैरागो का पेश ।  
 वैल दे० (पु०) वरध, वरद, धूम, धनहवाह ।  
 वैस तद्० (खी०) वपस, अवस्था, उमर । (पु०) तीसरा वर्ष, बनिया, राजपूतों की एक जाति, वैसवारा मान्न के रहने वाले ।

सिनन्द तद् ( ५० ) वैश्वानर, अग्नि, धाम ।  
 सिन्न तद् ( ५० ) शिवाय माघ, दुगरा महीना ।  
 सिन्नी दे० ( स्त्री० ) चक्षु विशेष ।  
 सिन्नु दे० ( ५० ) चाणो, चक्षुकी, चक्षुकी ।  
 सोमाई दे० ( स्त्री० ) जेत बोने का काम, बीज वपन ।  
 सोमाना दे० ( क्रि० ) छोटना, जेत बोना, जेत में  
 बीजा छिटकाना ।  
 सोमारा दे० ( ५० ) जेत बोने का समय, सुकाल ।  
 सोरिया दे० छोटो टोकरा ।  
 सोर दे० ( ५० ) बोट, बहा, बटुल ।  
 सोक दे० ( स्त्री० ) बकरे का शब्द, बकरे की बोलो ।  
 सोकरा दे० ( ५० ) छाग, बकरा, धन ।  
 सोकरी दे० ( स्त्री० ) छेरी, छौंती, बकरी, धना ।  
 सोक दे० ( ५० ) जल मनु विशेष, जलद, कुम्भीर,  
 मगर ।  
 सोचा दे० ( ५० ) पालकी का भेद, एक प्रकार की  
 पालकी ।  
 सोभ दे० ( ५० ) भाद, लादी, बोभना ।—सिर पर  
 होता ( या० ) किसी प्रकार का कठिन काम  
 का जाना ।  
 सोभना दे० ( स्त्री० ) भरना, लादना, उठवाना ।  
 सोभल दे० ( ५० ) भारी, वजनदार, वजनी ।  
 सोटी दे० ( स्त्री० ) माँस के छोटे छोटे टुकड़े ।—घोटी  
 फड़कना ( या० ) बहुत चालाक होना, फरेब  
 करना, फरफन्द करना ।  
 सोडना दे० ( क्रि० ) बुझाना, बुझाना, मग्न करना ।  
 सोद दे० ( ५० ) बकरा, छाग, धन, छागल ।  
 सोदली दे० ( स्त्री० ) भोली, गोगली ।  
 सोदा दे० ( ५० ) निर्बल, अशक्त, निर्जीव, असमर्थ,  
 नाममक, सुष्य ।  
 सोदा तद् ( ५० ) सुवपत्र, बुद्धिमान्, समझदार ।  
 सोध तद् ( ५० ) ज्ञान, समझ, बुद्धि, विवेक, मति ।  
 सोधक तद् ( ५० ) बोधनकर्ता, बाचक, शिक्षक,  
 बताने वाला ।

सोधन तद् ( ५० ) [ युध् + धनट् ] ज्ञान, बोध,  
 विवेक, समझाना ।  
 सोधना दे० ( क्रि० ) समझाना, बताना, बतलाना,  
 फुलाना, सुलाना ।  
 सोधनीय तद् ( ५० ) बोधन करने योग्य, बोधनाई,  
 बोधन के उपयुक्त ।  
 सोना दे० ( क्रि० ) जेत बोना, बीज डालना, जेत में  
 बीज छोटना ।  
 सोनी दे० ( स्त्री० ) बोधनाई, जेत बोने का काम, बोने  
 का समय ।  
 सोचा दे० ( ५० ) माल, सम्पत्ति, गठरी, गाँठ ।  
 सोर दे० ( ५० ) पैत्रेव का पूँधर ।  
 सोरा दे० ( ५० ) गोन, टाट का पैला, बड़ा पैला ।  
 सोरिया दे० ( ५० ) चटार्द, पाटी, बोरा, बड़ा  
 पैला, टाट ।  
 सोरो दे० ( ५० ) इन्द्रधनुष, एक प्रकार का चाँवल ।  
 सोल दे० ( ५० ) धाव्य शब्द, गीत का शब्द, बात ।  
 सोलचाल दे० ( स्त्री० ) बातचीत, सम्भाषण, कथन,  
 सम्वाद ।  
 सोलता दे० ( ५० ) सोलने की शक्ति । ( ५० ) बोलने  
 वाला प्राणी, जीव ।  
 सोलना दे० ( क्रि० ) बात करना, कहना, कथन  
 करना, सम्भाषण करना ।  
 सोलवाला दे० ( ५० ) प्रताप, धारणीयार्द विशेष ।  
 सोली दे० ( स्त्री० ) धानी, भाया, जाल ।—ठोली  
 सुनना ( या० ) ताना उहना ।  
 सोई दे० ( ५० ) खेल, रत्ता, संवर ।  
 सोईना दे० ( क्रि० ) छिपटना, भवराना, बसवाना,  
 चकराना ।  
 सोईयाना दे० ( क्रि० ) बवपर के साथ प्रेमना,  
 चक्रर खाना, प्रेमना ।  
 सोछार दे० ( ५० ) जल सहित वायु का झोंका ।  
 सोख तद् ( ५० ) बुद्ध मतावस्थी, बुद्ध मत के  
 अनुयायी ।  
 सोना दे० ( ५० ) दामन, डिगना, खर्ब ।



वीरहा दे० ( पु० ) उन्मत्त, सिद्धी, पागल, बायला ।

वीराना दे० ( क्रि० ) उन्मत्त होना, सिद्धाना; पागल होना ।

वीरापन दे० ( पु० ) पागलपन, उन्मत्तता ।

वीराहा दे० ( पु० ) बायला, पागल, उन्मत्त ।

वीला दे० ( पु० ) घोसला, मुर्ला, दन्तहीन ।

वीहा दे० ( पु० ) पयरीला, कङ्करीला ।

वीहाई दे० ( स्त्री० ) उपदंश, रोगिणी स्त्री ।

व्यान दे० ( पु० ) विघ्नाना, पशुओं का प्रसव ।

व्याना दे० ( क्रि० ) घियाना, उत्पन्न करना, प्रसव करना ।

व्याह दे० ( पु० ) विवाह, परिणय ।

व्याहता दे० ( स्त्री० ) विवाहिता, परिणीता, व्याही हुई ।

व्याहना दे० ( क्रि० ) विवाह करना, परिणय करना ।

व्याहा दे० ( पु० ) व्याहा हुआ, विवाहित ।

व्यौंगा दे० ( पु० ) एक चक्र विशेष, जिससे चमड़ा छीला जाता है ।

व्यौंत दे० ( पु० ) गदन, बोल, छाट, काट, कपड़े की काट ।

व्यौतना दे० ( क्रि० ) पहिरन धनाने के लिये कपड़े काटना, कतरना ।

व्योपार तद्० ( पु० ) व्यापार, वाणिज्य, लेनदेन, व्यवसाय, सौदागरी ।

व्योपारी तद्० ( पु० ) महाजन, सौदागर, व्यापारी ।

व्योमासुर तद्० ( पु० ) एक राक्षस का नाम, यह कंस का मन्त्री था ।

व्योरा दे० ( पु० ) समाचार, वृत्तान्त ।

व्योहार तद्० ( पु० ) व्यवहार, व्यापार ।

व्रज तद्० ( पु० ) गोकुल नामक गाँव, गोष्ठ ।

—वाला ( स्त्री० ) व्रज की स्त्री, गोपी । —भाषा ( स्त्री० ) व्रज की बोली ।

व्रह्म तद्० ( पु० ) वेद, तप, तपस्या, विराट्, विरह्ये-गर्भ, ईश्वर, जगत्कर्ता । —कुण्ड ( पु० ) ब्रह्मा का बनाया सरोवर विशेष, तीर्थ विशेष । —घाती

( पु० ) ब्राह्मण मारने वाला, ब्रह्महत्याकारी ।

—चर्य ( पु० ) आद्यम विशेष, प्रथम आद्य वेदाध्ययन करने का समय, व्रत विशेष । —चापो

( पु० ) प्रथमाश्रमी, पञ्चोपवीत के धननर निवृत्त पूर्वक गुरुकुल में वेदाभ्यास करने वाला । —इ

( पु० ) ब्रह्मज्ञानी, चातमत्तवच, वेदव, वेदवि ।

—ज्ञान ( पु० ) परमात्म विषयक ज्ञान । —इय

( पु० ) वेद बोधित कर्म । —तत्व ( पु० ) चातम

तत्व, ब्रह्मधर्म, ब्रह्मस्वरूप, ब्रह्मज्ञान । —तीर्थ

( पु० ) पुष्करमूल । —भोजन ( पु० ) ब्राह्मणों के

खिराना । —पुरी ( स्त्री० ) सुमेरु पर्यंत पर ब्रह्म

की पुरी । —भूति ( स्त्री० ) वेदाधिकार, ब्रह्म

शेखर्य, ब्रह्मतेज, ब्राह्मण का धर्म । —यज्ञ ( पु० )

वेद पाठ । —योग ( पु० ) परमेश्वर प्रार्थना,

भक्ति, उपासना । —रक्ष ( पु० ) मस्तक का मज्ज-

स्थान । —राक्षस ( पु० ) भूत विशेष, योनि

विशेष । —रात्रि ( स्त्री० ) ब्रह्मा की रात, जिसमें

१००० युग होते हैं, मनुष्यों के २१६००००००

वर्ष बीत जाते हैं, यह रात्रि, जिसमें श्रीकृष्ण ने

रास क्रीडा की थी । —लोक ( पु० ) ऊर्ध्वलोक

विशेष, ब्रह्मा का निवास स्थान । —वादी ( पु० )

वेदान्ती, ब्रह्मज्ञानी । —श्रव ( पु० ) वेद । —सूत्र

( पु० ) पञ्चोपवीत, जनेऊ, वेदान्त सूत्र । —हस्ता

( स्त्री० ) ब्राह्मण की हत्या ।

ब्रह्मर्षि तद्० ( पु० ) वेद मन्त्र ब्रह्म, ब्राह्मण, ऋषि ।

—देश ( पु० ) आर्यावर्त, कुण्डलेश ।

ब्रह्मा दे० ( पु० ) देव विशेष, बङ्गाल को पूर्व का देव, विधाता, ईश्वर ।

ब्रह्माण्ड तद्० ( पु० ) जगत्, ससार ।

ब्रह्मण तद्० ( पु० ) पहला वर्ष, विप्र ।

ब्रह्मणी तद्० ( स्त्री० ) विप्रपत्नी, ब्राह्मण की स्त्री ।

ब्रह्मण्य तद्० ( पु० ) ब्राह्मण का धर्म, ब्राह्मणों की सभा, सातवाँ ग्रह ।

ब्रह्म दे० ( पु० ) अक्षरमा, आद्यर्ष्य, ब्राह्मणों की सभा ।

—मुहूर्त ( पु० ) सूर्योदय के पहले की चार घड़ी ।

भ

व्यञ्जन का चौबीसवाँ वर्ण, जोष्ठ स्थान से उच्चारण होने के कारण इसे षोष्ठ्य वर्ण कहते हैं।

भत् ० (५०) अश्विनी आदि सप्ताहर २० नक्षत्र, ग्रह, राशि, भ्रमर, भ्रान्ति, गुलाघार्य।

भटमास २० (५०) अन्न विशेष।

भोतरना २० (क्रि०) काटना, काटगाना, कुत्ते का काटना, काड़ खाना।

भर २० (५०) भौर, आघत, चक्र।—कली (खी०) गलाही, बेरी।

भरा २० (५०) भर, पट्टपद।

भेरी २० (खी०) भ्रमरी, तिथिरी।

भकसी २० (खी०) अन्धेरा घर, गुफा, खोह।

भकुषा २० (गु०) निर्मुक्ति, लपट, सूर्य, भौद्र।

भकुवाना २० (क्रि०) अकककाना, भुनाना, वस्तु-सूद होना।

भकौसना २० (क्रि०) खाना, ठूँस ठूँस कर खाना।

भक २० (गु०) [भञ् + फ] सेवक, तर्कर, अनुगत, भात छोड़न।—कार (५०) पाचक, रसेश्या-दार।—घटसल (५०) भक्तों पर दया करने वाला।

भक्ताई २० (खी०) भक्ति करना, परमेश्वरानुगत।

भक्ति २० (खी०) [भञ् + क्रि] परमात्मा में परम अनुगत, सेवा, अद्भुत अनुक्ति, अघणं, कीर्तन, अर्चन, बन्दन, स्मरण, निवेदन, सत्य, दास्य और सेवन ये भक्ति के नौ भेद हैं।—घन्त (५०) भक्त, पूजक, सेवक।

भक्त २० (५०) भक्त, भोजनीय पदार्थ, खाने योग्य वस्तु।

भक्तक २० (५०) [भक् + णञ्] खाने वाला, खादक।

भक्षण २० (५०) [भक् + भण्ट] भोजन, खाहार, भोजन करने की वस्तु।

भक्षणाय २० (गु०) [भञ् + णीय] भोजनाह, भोजन योग्य, भोजन करने के उपयुक्त।

भक्तित २० (गु०) [भक् + त] खाना हुआ, खादित।

भक्ष्य २० (गु०) [भक् + य] भक्षणीय, खाने योग्य, भोजनार्थ, भोजन के उपयुक्त।

भग २० (५०) खीचिन्द, योगि, धीर्य, इच्छा, ज्ञान, धैर्य, कीर्ति, माहात्म्य, विश्वर्य, यज्ञ, धर्म, मोक्ष, यश, सौभाग्य।

भगण २० नक्षत्र-समूह, नक्षत्र मण्डल, गण विशेष, अक्षर वृत्त पद्य में तीन तीन अक्षर के एक एक गण होते हैं, भगण में आदि का अक्षर गुण होता है। राघव, माधव, नागर आदि।

भगत २० (गु०) भक्त, भक्ति करने वाला, नर्तक, कथक, नचनिया।—खेलना (घा०) स्वर्ग रचना, रूप उतारना।

भगतन २० (खी०) वैश्या, पंथरिया, नर्तकी।

भगताई २० (खी०) भगतपन, भक्त का कर्म, भक्ति।

भगतिया २० (५०) भयिया, कथिक, ज्ञानि विशेष, कथक।

भगदत्त २० (५०) प्रागज्यातिपुर, वत्समान आसाम के राजा का नाम, यह नरकाज का ज्येष्ठ पुत्र था। युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ के समय इसने अर्जुन से ८ दिनों तक युद्ध किया था। युद्ध में हार कर यह युधिष्ठिर के अधीन हो गया था, महाभारत के युद्ध में दुर्योधन की ओर से इसने बड़ा भयङ्कर युद्ध किया था। द्रोणाचार्य के सेनापतित्व में यह अर्जुन से लड़ता रहा और उनकी हाथ से मारा गया। इसने अर्जुन को मारने के लिये शिष्यवास का प्रयोग किया था, परन्तु श्रीकृष्ण ने उस अस्त्र को अपने छाती से रोक लिया इससे उसका अस्त्र व्यर्थ गया।

भगन्दर २० (५०) रोग विशेष, एक रोग का नाम, गुदा के आस पास का नसूर।

भगल २० (गु०) उल, कपट, धोखा।

भगलिया २० (गु०) खमी, कपटी, ठग।

भगवत् २० (गु०) भागवत्, भगवत् भक्त, भागवत्, परमेश्वर, नारायण।

भगवन्त २० (गु०) ईश्वर, परमेश्वर।

भगवाँ दे० (५०) गेरुआ कपडा, कापाय वस्त्र ।  
 भगवान् तत्० (५०) पट्ट ऐरवर्ग युक्त, नारायण ।  
 भगवाना दे० (क्रि०) हटाना, हकाना, खेदना, खदे-  
 वना, हुरहुताना ।  
 भगिनी तत्० (स्त्री०) बहिन, बहन, दीदी ।  
 भगीरथ तत्० (५०) सूर्यवंशीय दिलीपराज के पुत्र  
 और अंशुमान के पौत्र । राजा दिलीप भगीरथ  
 को राज्य देकर तपस्या करने के लिये हिमालय  
 चले गये, वहाँ बहुत दिनों तक तपस्या करने के  
 पश्चात् उन्होंने शरीर त्याग किया । राज्य पा कर  
 भगीरथ सोचने लगे कि किस प्रकार स्वर्ग से गङ्गा  
 लायी जा सकती है । भगीरथ प्रजाहितैषी  
 धर्मात्मा राजा थे, तथापि उनके कोई पुत्र नहीं  
 था । वे मन्त्रियों को राज्य सौंप कर गङ्गा को  
 लाने के लिये निकले । हिमालय के गोकर्ण तीर्थ  
 पर ऊर्ध्वबाहु हो कर वे तपस्या करने लगे ।  
 उनकी तपस्या से सन्तुष्ट हो कर वर देने के लिये  
 ब्रह्मा जी घाये, उनसे दो वर देने के लिये भगीरथ  
 ने प्रार्थना की । ( १ ) कपिल के शाप से मत्स्य  
 हमारे साठ हजार प्रपितामह गङ्गा जल से पवित्र  
 हो कर स्वर्गवासी हों । ( २ ) हमारा वशलोप न  
 हो । ब्रह्मा जी ने प्रथम वर प्रार्थना के उत्तर में  
 कहा तुम्हारा मनोरथ पूर्ण होगा, परन्तु गङ्गा के  
 गिरने का वेग पृथिवी सहन नहीं कर सकती,  
 अतएव तुम महादेव की आराधना करो, वे यदि  
 गङ्गा को धारण करना स्वीकार करेंगे तब तुम्हारा  
 मनोरथ पूर्ण होगा । दूसरे वर के लिये उन्होंने  
 कहा तुम्हारे वंश की रक्षा होगी, भगीरथ ने महा-  
 देव की आराधना की, महादेव प्रसन्न हो कर  
 गङ्गा का वेग धारण करने के लिये प्रसन्न हुए ।  
 महादेव के मस्तक पर बड़े वेग से गङ्गा का प्रवाह  
 गिरने लगा, गङ्गा ने चाहा कि अपने तीव्र वेग से  
 महादेव को पाताल में लिये लसी जाँय । गङ्गा  
 का यह अग्निप्राय समझ कर महादेव ने गङ्गा को  
 अपनी जटा ही में रोक रखा । एक वर्ष तक गङ्गा  
 वहीं घूमती रही । पुनः भगीरथ के स्मृति करने  
 पर महादेव ने गङ्गा को अपनी जटा से बाहर

निकाल दिया । गङ्गा की सात धारायें निकलीं,  
 जिनमें सात पूर्ण की और सात अधिम की को  
 र्थीं । सातवाँ प्रवाह भगीरथ के साथ साथ था,  
 भगीरथ पैदल धारा के साथ नहीं चल सकते थे,  
 इस कारण उन्हें एक रथे मिला । भगीरथ के साथ  
 चलने वाली गङ्गा की धारा का नाम भागे  
 रथी है ।

भगेल दे० (स्त्री०) पराजय, हार । ( ५० ) भगेला  
 भागने वाला ।

भगोड़ दे० (५०) भागने वाला, भगेल, भगीया ।

भगुल दे० (५०) भगोड़, दूत, हरकारा ।

भगू दे० (५०) भगोडा, डरपीक, बुलदिल ।

भङ्ग तत्० ( ५० ) पराजित, कुटित, धूर्णित, टूटा  
 हुआ, नष्ट घट ।

भङ्गांश तत्० (५०) टूटा भाग, टूटा हुआ हिस्सा,  
 खण्डित भाग ।

भङ्गांश तत्० (५०) निराशा, हताश, जिसकी आशा  
 भङ्ग हुई हो, हतमनोरथ ।

भङ्ग तत्० ( ५० ) भेद, खपहन, टूटा, तरङ्ग, उर्मि,  
 लहर, पराजय, रोग विशेष, कौटिल्य, कुटिलता,  
 भय, रचना, बेज बूटे काटना । (स्त्री०) एक प्रकार  
 की पत्ती, नशीली पत्ती ।

भङ्गन दे० ( स्त्री० ) मेहतारानी, हलालखोरिन, भागे  
 की स्त्री ।

भङ्गना दे० (स्त्री०) एक प्रकार की मछली का नाम ।

भङ्गा दे० (५०) भांग, पति विशेष ।

भङ्गी दे० (५०) जाति विशेष ।

भङ्गार दे० (५०) भङ्गा, भङ्गाडा, जड़ी विशेष ।

भङ्गरन दे० (स्त्री०) भाग बेचने वाली स्त्री ।

भङ्गेरा दे० (५०) भाग बेचने वाला ।

भच्चक दे० ( ५० ) चबड़ा, अचमित, विस्मित,  
 आश्चर्यित ।

भच्चकना दे० (क्रि०) अचमित, या विस्मित होना ।

भच्चक तत्० (५०) नवच मयहल, राशि चक्र ।

भच्छन तत्० ( ५० ) मच्छन, बाहार, भोजन,  
 वेचनार ।

भक्तहि दे० ( क्रि० ) खाते हैं, भोजन करते हैं, जेवते हैं।

भजई दे० ( प्र० ) भजन करे, सेपै, स्मरण करे, ध्यान करे।

भजन तद्० ( पु० ) स्मरण, कीर्तन, ध्यान, निरन्तर रटन, जप, गान।

भजना दे० ( क्रि० ) ध्यान करना, ध्याना, जपना, स्मरण करना, भागना।

भजनीक दे० ( पु० ) चर्चक, पूजक, भजनकर्ता, भजन करने वाला।

भजहि दे० ( क्रि० ) भजते हैं, गुमिरते हैं, स्मरण करते हैं।

भजहु दे० ( क्रि० ) भजे, भजन करो, स्मरण करो, गुमिरो।

भजि दे० ( प्र० ) भजन करके, स्मरण करके, भजके, रटके।

भजि जाना दे० ( क्रि० ) भागना, चम्पत होना, हटना, झुकना, छिपना।

भजिय दे० ( क्रि० ) स्मरण कीजिये, गुमिरिये, भागिये, भागना चाहिये, हट जाइये, हटना चाहिये।

भजी दे० ( क्रि० ) गुमिरन करो, स्मरण। ( खी० ) दौड़ो, पराई, भागी।

भजे दे० ( क्रि० ) भजन करने से, स्मरण करने से।

भजक तद्० ( पु० ) भजनकर्ता, भजकारी; तोड़ने वाला, चोटन करने वाला।

भजन तद्० ( पु० ) तोड़न, भांगना, नष्ट करना, नाश करना।—हार ( पु० ) तोड़ने वाला, हटाने वाला, नाश करने वाला।

भजाना दे० ( क्रि० ) भुताना, बदलवाना, गुजाना।

भञ्जित तद्० ( पु० ) चर्चित, प्रथित, तोड़ा हुआ।

भट्ट तद्० ( पु० ) [भट्ट + षट्] चैत्य, योगुहा, बाहिनी, धीर, सद्भाका, निशाचर, वर्षसङ्कर जाति विशेष।

भट्टई दे० ( खी० ) गुणगान, वपान, स्तुति, निध्या। प्रशंसा भांटों का काम, भांटों का उपयहार।

भट्टकना दे० ( क्रि० ) बदकना, भूलना, भ्रम में पड़ना, भ्रान्त होना।

भट्टकाना दे० ( क्रि० ) भुताना, भुलावा देना, भ्रम में डालना, हराना।

भट्टकीला दे० ( पु० ) भयपुष्प, डरायना, भट्टका का स्थान।

भट्टपड़ना दे० ( क्रि० ) चभाग होना।

भट्टभेरे दे० ( पु० ) घात प्रतिघात, धक्कनधक्का, धक्का पुकी।

भट्टिन्न तद्० ( पु० ) शूली पकू मांसदि, दग्ध मांस, जलाया मांस, कबाब।

भट्टियारा दे० ( पु० ) एक जाति विशेष, सुसम्मानों का खाना एकाने वाली और सराय में सुसाफ़िरी को ठहराने वाली जाति, संस्कृत में इसे धड़कार कहते हैं।

भट्ट दे० ( खी० ) वधि, प्रणयिनी, प्रिया। यथा—  
“देखि के भट्ट को मैं कद्र हूँ रसै गिवनाय  
ओढ़े पोत पद्म से घटा पै धाज ठाड़ी है।”

भट्ट तद्० ( पु० ) जाति विशेष, भाट, भीमौषादि शाख-वेत्ता, दक्षिणी ब्राह्मणों का एक शाखपद।—नारायण ( पु० ) संस्कृत के एक प्रसिद्ध कवि। इनका बनाया चैणोसंहार नामक एक नाटक है। राजा चादिशूर के समय में मध्य देश से जै पर्व ब्राह्मण बह्माल गये थे, उनमें भट्ट नारायण भी हैं। हाठ राजेन्द्रलाल निर ब्रह्मोदय चादि शूर का ही नामान्तर धीरसेन बतलाते हैं। धीरसेन का समय १८वीं सदी निश्चित हुआ है। भट्ट नारायण का बनाया प्रयोगरत्न नामक दूररा ग्रन्थ है। भट्ट नारायण के पिता का नाम भट्ट महेश्वर था।—लोहिलट

( पु० ) काश्मीर निवासी संस्कृत कवि, काठय प्रकाशकार ने अपने रत्ननिष्कषण में इनका मत उद्धृत किया है। राजानक सव्यक ने भी अपने अलङ्कारसर्वस्व में इनका मत उद्धृत किया है। ऐसी दया में यह तो कहा ही नहीं जा सकता कि इनका कोई भी ग्रन्थ नहीं था। परन्तु उस ग्रन्थ का पता नहीं है। काठयप्रकाशकार मम्मट भट्ट से ये प्राचीन हैं इसमें सन्देह नहीं। ती. भी ११वीं सदी के पहले के थे नहीं हो सकते। यह विद्वानों की सम्मति है। इनके ठीक समय का निर्णय करना विद्वानों ने असम्भव माना है।

भट्टार तत्० (५०) सूर्य, रवि । (५०) पूज्य, पूजनीय, मान्य ।

भट्टारक तत्० ( ५० ) नाटकेक्ति में राजा को कहते हैं । देव, सूर्य, तपोधन ।—पार (५०) रविवार, शतवार ।

भट्टाचार्य तत्० ( ५० ) ब्रह्मलिपि का शास्त्र, विद्या सम्बन्धी उपाधि ।

भट्टकल्लट तत्० ( ५० ) काश्मीरी पण्डित, इनके गुफ का नाम बसु गुप्त था, बसु गुप्त के रचित ग्रन्थ का नाम स्पन्दकारिका है । उसकी स्पन्द सर्वस्व नाम की टीका भट्टकल्लट ने बनायी है । ये काश्मीर के राजा अथन्ति धर्मा के समकालीन थे । राजतरङ्गिणी के अनुसार इनका समय ८वीं सदी मान्य होता है । प्रसिद्ध आलङ्कारिक सुकुल इनके पुत्र थे । ये शैव थे ।

भट्टोत्पल तत्० (५०) प्रसिद्धयोजितियेता, बराहमिहिर के ग्रन्थों की इन्होंने टीका लिखी है । केवल बराह मिहिर कृत पञ्चसिद्धान्तिका की टीका इनकी बनायी नहीं मिलती, इसका जो कारण है । प्राचीन ज्योतिषियों ने इन्हें भट्टोत्पल लिखा है । परन्तु ये अपने को केवल उत्पल ही लिखा करते थे । वृहत्सातक की टीका में इन्होंने अपना समय ८८८ शाके अर्थात् ९६६ ई० लिखा है ।

भट्टोद्भट तत्० (५०) काश्मीरी पण्डित, ये काश्मीर के राजा जयापीड के सभासद थे । महाराज जयापीड का राज्यकाल स० ७७९ से लेकर ८१२ ई० तक था । अतएव उनके सभासद का भी ८वीं सदी का प्रारम्भ ही समय माना जा सकता है । आलङ्कारसारसंग्रह नामक ग्रन्थ इन्होंने बनाया है । जिसकी टीका प्रतीहारैन्द्रराज ने रची । कुमार सम्भव नामक एक काव्य भी इन्होंने रचा था, परन्तु उसका इस समय पता नहीं । कुट्टनी मत-कर्ता दामोदर गुप्त यामन आदि पण्डित इनके समय के हैं । व्याकरण आलङ्कार में ये अत्यन्त निपुण पण्डित थे । काव्य प्रकाश के टीकाकारों ने इन्हें कहीं कहीं उद्भट, कहीं उद्भट भट्ट और किसी

स्थान में उद्भटाचार्य भी लिखा है । बल्लू सारसंग्रह और कुमारसम्भव काव्य इन दो पुस्तकों को छेड़ कर अन्य पुस्तकों का पता नहीं मिलता ।

भट्टो दे० (खो०) भाड, पजावा, बड़ा बूल्हा ।

भठाना दे० (क्रि०) तोपना, गाडना, बिगाना ।

भठियाना दे० (क्रि०) नदी की धार पर बहना, धार में बहना ।

भठियारा दे० ( ५० ) जाति विशेष, सराय का स्वामी ।

भठियारिन दे० ( खो० ) भठियारे की खो, सराय की बेरवा ।

भठियाल दे० (५०) बहाव, घटाव, प्रवाह ।

भड़ दे० (५०) बड़ी नाव ।

भटक दे० ( खो० ) चमक, झलक, शोभा, धवराइद, झकक, चौक ।

भडकना दे० (क्रि०) चमकना, चौकना, झिककना ।

भडकाना दे० ( क्रि० ) चमकाना, चौकाना, झिककाना, बिजकाना, घपडवाना ।

भडकी दे० (खो०) चुडकी, डरपाव, भभकी ।

भडकीता दे० (५०) घटकीला, चमकीला, सजीला ।

भडकेल दे० (५०) जङ्गली, अनपरदा ।

भडकु दे० (५०) सरस, सीधा, चकपटी निरुत्थन ।

भडभडिया दे० (५०) निरुत्पट, निरखल, डोलखल साफ साफ धोलने वाला ।

भडभूजा दे० (५०) फाड़, भूजा भूजने वाला ।

भडरिया दे० (५०) खली, टोनहा, जाति विशेष, जो हाथ देखने का काम करते हैं । तीर्थों में यात्रियों को दर्शन कराने वाले ब्राह्मण विशेष, शनिचरा ब्राह्मण जो निषिद्धदान लेते हैं ।

भडसाई दे० (खी) भाड, भट्टो, बडा बूल्हा, भड-धुंके का बूल्हा ।

भडिहार्ड दे० (खी) चोरी, दगा, भोषा, कपट, सल, ठगहार्ड । भडिहापन, यथा "सै दशशीश खान की नाई इत उत चिते चला भडिहार्ड ।"

मंडुवा दे० (पु०) वेरयापुत्र, वेरया. के साथ रहने वाला, कुटना ।

मंडिहा दे० (पु०) चटोर, चाटने वाला, चोर, चोरी करके खाने वाला ।

मंडिहार्द दे० (स्त्री) कुटनाई, कुटनापन ।

मंडूत दे० (पु०) भाड़े के मकान में रहने वाला. भाड़ा देने वाला, किरायेदार ।

मंडन तत्त्० (पु०) [ मण् + नत् ] फयन, पठन, पढ़ना ।

मण्डिन तत्त्० (पु०) कथित, उक्त, पठित, पढ़ा हुआ ।

मण्टा दे० (पु०) भांटा, बैंगन, घुन्ताक ।

मण्ड (पु०) शब्द, दुस्चरित्र, नीच, चरित्र, निर्लज्ज, भंडई करने वाला ।

मण्डन तत्त्० (पु०) प्रतारण, छलन, छपना, टगना ।

मण्डा दे० (पु०) पात्र, बर्तन, बड़े बड़े बर्तन, मटकी, मटका ।

मण्डार तत्त्० (पु०) कोठा बंधार ।

मण्डारा दे० (पु०) साधुओं का भोज, साधुओं की केवनार ।

मण्डारी दे० (पु०) भण्डार का अध्यक्ष, भण्डार की देख रक्ष करने वाला, रसोदया, रोकड़िया ।

मण्डोरिया दे० (पु०) मंडरिया ।

मण्डेला दे० (पु०) भांड, मंडुवा ।

मण्डौवा दे० (पु०) निन्दा, फकड़ ।

मतार तद्दे० (पु०) भार्ता, पति, स्वामी ।

मतीजा दे० (पु०) भ्रातृव्य, भाई का पुत्र ।

मतीजी दे० (स्त्री) भाई की पुत्री ।

भत्ता दे० (पु०) भक्त, भक्त, भाता ।

भद दे० (स्त्री०) धरणा, पढ़ाका, किसी वस्तु के गिरने का शब्द ।

भद दे० (पु०) वृक्ष के फल गिरने या पैर का शब्द ।

भदभदाना दे० (स्त्री०) भदभद शब्द करना ।

भदभदाहट दे० (स्त्री०) :

भदाक दे० (पु०) धड़ाक पड़ाक, भदाक शब्द के साथ गिरना, छिटा गिरना जिससे भदाक शब्द है ।

भदेशल (पु०) बेदौल, कुदर्र ।

भद्दा दे० (पु०) निर्धंध, चतानी, अशोध, सूख, भौंड, बेदौल, भदेशल ।

भद्र तत्त्० (पु०) मङ्गल, कल्याण, सुख, मोघा, करण विशेष, विधि करण शिव, खज्जन पत्नी, हस्तिका जाति विशेष.—द्वीना (वा) मूंडन कराना, हिन्दुओं की एक प्रथा, जब कोई मरता है तब मुंडन किया जाता है ।—काली ( स्त्री० ) दुर्गा महामाया, काली ।—श्री ( स्त्री० ) चन्दन, केसर, कुसुम, मङ्गल, शोभा, श्री ।

भद्रक तत्त्० (पु०) भद्र पुस्तक, देयदाक वृक्ष । (पु०) मनोरं, देय, विशेष ।

भद्रा तत्त्० ( स्त्री० ) ध्यात पता विशेष, रातना, नील वृक्ष, ध्योम नदी, तिथि विशेष, द्वितीया, पञ्चमी, द्वादशी ।

भद्राक्ष तत्त्० (पु०) कृत्रिम द्रवाच ।

भद्रिका तत्त्० (स्त्री०) दया विशेष, कल्याण ।

भद्री दे० (पु०) दकौतिया, मानुद्रिक शालवेता ।

भनक दे० (पु०) शब्द, ध्वनि, चाहट ।

भयकना दे० (क्रि०) उकलना, झुट्ट होना, जल उठना, तड़पना ।

भयकाना दे० (क्रि०) झुट्ट कराना, जलाना, तड़पाना ।

भयका दे० (पु०) पात्र विशेष, जिससे पकं निकालते हैं ।

भयकी दे० ( स्त्री० ) भडकी, धमकी, पुइकी ।

भयमड दे० (पु०) दर, रीला, घटका, घटपवस्था ।

भयवला दे० (पु०) मोटा, स्वल्प, मोदेल, तुन्दिल ।

भयफना दे० (क्रि०) गिरना, टपकना, उभजनना, फफाना, खलपताना ।

भयर दे० (पु०) गटका, दर, रीला, चबड़ाहट, उड़ग, क्याकुलता ।

भट्टार तत्० (५०) सूर्य, रवि । (५०) पूज्य, पूजनीय, मान्य ।

भट्टारक तत्० ( ५० ) नाटकेति में राजा को कहते हैं । देव, सूर्य, तपोधन ।—घार (५०) रविवार, शतवार ।

भट्टाचार्य तत्० ( ५० ) बङ्गालियों का आस्पद, विद्या सम्बन्धी उपाधि ।

भट्टकल्लट तत्० ( ५० ) काश्मीरी पण्डित, इनके गुफ का नाम बसु गुप्त था, बसु गुप्त के रचित ग्रन्थ का नाम स्पन्दकारिका है । उसकी स्पन्द सर्वस्व नाम की टीका भट्टकल्लट ने बनायी है । ये काश्मीर के राजा अयन्ति वर्मा के समकालीन थे । राजतरङ्गिणी के अनुसार इनका समय ९वीं सदी मान्य होता है । प्रसिद्ध आलङ्कारिक मुकुण्ड इनके पुत्र थे । ये शैव थे ।

भट्टोत्पल तत्० (५०) प्रसिद्धज्योतिर्विज्ञा, वराहमिहिर के ग्रन्थों की इन्होंने टीका लिखी है । केवल वराह मिहिर कृत पञ्चसिद्धान्तिका की टीका इनकी बनायी नहीं मिलती, इसका दो कारण है । प्राचीन ज्योतिषियों ने इन्हें भट्टोत्पल लिखा है । परन्तु ये अपने को केवल उत्पल ही लिखा करते थे । बृहज्जातक की टीका में इन्होंने अपना समय ८८८ शके अर्थात् ९६६ ई० लिखा है ।

भट्टोद्भट तत्० (५०) काश्मीरी पण्डित, ये काश्मीर के राजा जयापीड के सभासद थे । महाराज जयापीड का राज्यकाल स० ७७९ से लेकर ८१२ ई० तक था । अतएव उनके सभासद का भी ८वीं सदी का प्रारम्भ ही समय माना जा सकता है । अलङ्कारसारसंग्रह नामक ग्रन्थ इन्होंने बनाया है । जिसकी टीका प्रतीहारन्द्रराज ने रची । कुमार सम्भव नामक एक काव्य भी इन्होंने रचा था परन्तु उसका इस समय पता नहीं । कुट्टनी मतकर्ता दामोदर गुप्त धामन आदि पण्डित इनके समय के हैं । व्याकरण अलङ्कार में ये अत्यन्त निपुण पण्डित थे । काव्य प्रकाश के टीकाकारों ने इन्हें यहीं कही उद्भट, कहीं उद्भट भट्ट और किसी

स्थान में उद्भटाचार्य भी लिखा है । अलङ्कारसारसंग्रह और कुमारसम्भव काव्य इन दो पुस्तकों को होठ कर अन्य पुस्तकों का बना नहीं मिलता ।

भट्टी दे० (खो०) भाड, पजावा, बड़ा बूछा ।

भठाना दे० (क्रि०) तोपना, गाढना, छिपाना ।

भठियाना दे० (क्रि०) नदी की धार पर बहना, धार में बहना ।

भठियारा दे० ( ५० ) जाति विशेष, सराय का स्वामी ।

भठियारिन दे० ( खी० ) भठियारे की स्त्री, सराय की सेविका ।

भठियाल दे० (५०) बहाव, घटाव, प्रवाह ।

भड दे० (५०) बड़ी नाव ।

भडक दे० ( खी० ) चमक, भलक, शोभा, चबराहट, भलक, चौक ।

भडकना दे० (क्रि०) चमकना, चौकना, किफ करना ।

भडकाना दे० ( क्रि० ) गमकाना, चौकाना, किफ कातना, शिकाना, चयङ्गयाना ।

भडकी दे० (खी०) चुडकी, हरपाव, भमकी ।

भडकीटा दे० (५०) घटकोला, चमकोला, सजीला ।

भडकेल दे० (५०) जङ्गली, शनपरचा ।

भडङ्ग दे० (५०) सरल, सीध, अन्वपटी निरुद्ध ।

भडभडिया दे० (५०) निरूपट, निरक्षल, बोलक साफ साफ बोलने वाला ।

भडभूजा दे० (५०) पाङ्क, भूजा भूजने वाला ।

भडरिया दे० (५०) छनी, टोनहा, जाति विशेष, जो हाथ देखने का काम करते हैं । तीर्थों में यात्रियों को दर्शन कराने वाले ब्राह्मण विशेष, शनिचरा ब्राह्मण जो निषिद्धदान लेते हैं ।

भडसाई दे० (खी) भाड, भट्टी, बड़ा बूछा, भड्डूके का बूछा ।

भडिहाई दे० (खी) चोरी, दगा, धोखा, कपट, छल उपहास । भडिहापन, यथा गृहे दशशीश रवान की नाई इत उत चित चला भडिहाई ।

रिपाना दे० (क्रि०) दाम पाना, दाम वसूल होना ।  
 ररपूर दे० (गु०) पूर्ण, चापल्य पूर्ण, चतिसयं पूर्ण,  
 भरभराना दे० (क्रि०) छोटना, झिड़कना, धुनना, धुनना ।  
 भरभरौ दे० (खी०) धुनाव, धुनाव, धुनन ।  
 भरभ तद् दे० (गु०) धम, धान्ति, संशय, सन्देह, भेद, रहस्य, ताव ।—धुलना (घा०) भेद धुल जाना, रहस्य प्रकाश होना ।—खोल देना (घा०) सन्देह मिटाना, धम दूर करना ।—घापीना (घा०) प्रतिष्ठा खोना, पय में धरवा लगाना, कीर्ति में घटा लगाना ।—निकल जाना (घा०) सन्देह दूर होना, संशय मिटना, भेद चुनना ।  
 भरभाना दे० (क्रि०) उगना, वसुन करना, धलना ।  
 भरभाला दे० (गु०) संशयो, सन्देहो, भरभ वाला ।  
 भरभाना दे० (क्रि०) पूर्ण कराना, पूरा करवाना, पूरवाना ।  
 भरा दे० (गु०) पूरा, पूर्ण, सुहासुह ।  
 भराना दे० (क्रि०) पूराना, पूर्ण कराना, भराना, भरवाना ।  
 भरभट दे० (खी०) पूर्ति, पूर्णता, भर्ती ।  
 भरी दे० (खी०) तोला, बारहमासा, तोल विशेष ।  
 भरोठा दे० (गु०) वोका, भार, भोट ।  
 भरोसा दे० (गु०) चाया, विश्वास, प्रतीति, प्रत्यय ।  
 भर्त तद् दे० (गु०) शिव, महादेव, प्रज्ञा, शक्ति, तेज प्रकाश, क्षेमि ।  
 भर्त तद् दे० (गु०) धूलना, धुनना, दग्ध करना, जलाना ।  
 भर्त तद् दे० (गु०) पति, स्वामी, भर्तार । (गु०) पानने वाला, रक्षक, प्रतिपालक । (दे०) एक प्रकार की तरकारो, भौंटा, चातु, चादि को धून कर जे बनाना जाता है ।

भर्तिया दे० (गु०) जाति विशेष, ठठेरा, कसेरा ।  
 भर्ती दे० (खी०) समानि, भरभट, पूर्णता, पूर्ति ।  
 भरर्तना तद् दे० (खी०) तिरस्कार, निन्दा, कुत्सर्त, गहो, धपवाद ।  
 भरर्सक तद् दे० (गु०) तिरस्कार, निन्दक ।  
 भरर्हरि तद् दे० (गु०) विक्रमादित्य राजा के भाई, इनके बनाने तीन शतक गृहकार, धैर्य शीर नीति प्रसिद्ध हैं, कहते हैं अपनी खी की दुश्चिन्ता से दुःखो होकर ये घर छोड़ कर बनवाही हो गये थे । वाक्यप्रदीप नामक एक व्याकरण विद्यान का चतुर्थ ग्रन्थ भरर्हरि के नाम से प्रसिद्ध है । इसका निरूपण करना कठिन है कि वाक्यप्रदीपकर्ता ये ही भरर्हरि हैं या अन्य । इनका भी यही ईर्षी सदी ही समय मानना उचित है ।  
 (२) इनका बनाया भट्टी नामक काव्य प्रसिद्ध है । भट्टी काव्य संस्कृत साहित्य का एक रत्न है । इनके पाठ करने वाले इनके व्याकरण के असाधारण ज्ञान से सुपरिचित हैं । इस ग्रन्थ के प्रत्येक श्लोक यहाँ तक कि पदों में भी प्रयोग सुवासता देखी जाती है ।  
 भल दे० (गु०) भला, उत्तम, श्रेष्ठ, मनोहर, रमणीय ।  
 भलफा दे० (गु०) भूषण विशेष, सेने की टिकती ।  
 भलमनसात दे० (गु०) महा पुत्रपत्न, उत्तम पुत्र का आधार, मनुष्यपत्न, पुत्रपत्न ।  
 भलमनसी दे० (खी०) सुगीलता, सुदुग्ध ।  
 भला (गु०) उत्तम, शीलवान, रक्षक, श्रेष्ठ, सुदुग्धो ।  
 —कर भला हो सौदा कर भला हो (मे० उ०) जीवा करोगे पैसा पाओगे, कर्मगुहार ही फल होता है ।—सादमी (वा०) अक्षर सादमी, श्रेष्ठ पुत्र ।—मानना (वा०) उत्तम समझना, पहचान मानना ।—चङ्गा (गु०) नीरोग, मोठा, स्वस्थ ।  
 भलाई दे० (खी०) चक्षुषण, कुशलधम, कल्याण, मङ्गल, लेना (वा०) चाशोर्षद लेना, भोजी करना,



भरराना दे० ( क्रि० ) सुकना, फूटना, छटकना, गटकना होना ।

भररूका दे० ( पु० ) सुन्दर, मनोहर, सफ़, स्पष्ट ।

भररूत तद्० ( श्री ) विभूति, भस्म, छार ।

भय तद्० ( पु० ) डर, भोति, गड्ढा, चास ।—खाना ( वा ) डरना, चास करना ।—कारक ( गु० ) डराने वाला, भय देने वाला, भयानक, भयङ्कर ।

भयङ्कर तद्० ( गु० ) भयानक, डरौना, भयकारक ।

भयचक दे० ( पु० ) भयातुर, भयभीत, डरा हुआ ।

भयभीततद्० ( गु० ) डरा हुआ, घबराया हुआ, भयातुर ।

भयहूँ दे० ( श्री० ) छोटै भाई की श्री ।

भयातुर तद्० ( गु० ) भयचक, डरपोक, भयभीत, भयविह्वल ।

भयानक तद्० ( गु० ) डराकना, भयङ्कर, भयप्रद ।

भयापह तद्० ( पु० ) भयनाशक, भय दूर करने वाला ।

भयापा दे० ( पु० ) घन्धुतक, भाईपना, घपनापत ।

भयावना दे० ( गु० ) डपावना, भयङ्कर, भयानक ।

भयावह तद्० ( गु० ) भयदायक, भयानक, भयङ्कर ।

भयावहि दे० ( क्रि० ) डराते हैं, गड्ढित करते हैं, चास देते हैं ।

भर दे० ( गु० ) पूरा, पूर्ण, सुहायुँ ह, रफ जाति । ( क्रि० ) पूर्ण करो, पालन करो ।

भरऊँ दे० ( क्रि० ) भरता हूँ, पूरा करता हूँ, पूर्ण करता हूँ; श्च सुकाता हूँ; देता हूँ; दान करता हूँ ।

भरका दे० ( पु० ) सुभाया हुआ पूना, पूने की कली ।

भरकाना दे० ( क्रि० ) सुकाना, पूना सुकाना ।

भरण तद्० ( पु० ) भरना, पूरना, पालना, पोषण करना, रखा, बचाव ।

भरणी तद्० ( श्री० ) एक नक्षत्र का नाम, दूसरा नक्षत्र ।

भरणीय तद्० ( गु० ) पोषण, जापन पोषण, पालन

भरत तद्० ( पु० ) अयोध्याधिपति दशरथ का पुत्र वे महाराणी कैकेयी के गर्भ से सम्भूत थे । वे भरत राजा दुष्यन्त के शकुन्तला के गर्भ से उत्पन्न पुत्र, इन्होंने ही इस देश का नाम भारतवर्ष रखा है । नाट्यशास्त्र प्रणेता अर्षि विश्वेश, इनके समय का ठीक पता अभी तक भी पुरातत्त्वशास्त्रियों को नहीं लगा है, तथापि वे साहस पूर्वक कहते हैं कि ये ईसा के पूर्व ६ वीं सदी के पूर्व के नहीं हो सकते । अस्तु जो कुछ ही परन्तु वे बहुत से पुराने हैं, कालिदास के भी पूर्ववर्ती हैं, भाष के नाटकों के श्लोकों में भी इनकी प्राचीनता सिद्ध होती है ।

भरतपुत्रक तद्० ( पु० ) नट, विदूषक, मोंड, वृद्धपिया, धाजोगर ।

भरताम्रज तद्० ( पु० ) श्रीरामचन्द्र ।

भरद्वाज तद्० ( पु० ) विद्ययात प्राचीन अर्षि, इत्य की पत्नी ममता के गर्भ और बृहस्पति के सौच से ये उत्पन्न हुए थे, भरद्वाज ने इनका भरण किया था और ये दो के द्वारा उत्पन्न हुए थे इस कारण इनका नाम भरद्वाज पड़ा । इनका दुवरा नाम वितथ है । एक समय गङ्गास्नान के समय भृताची नामक अक्षरा को देखकर इनका रेतपात हुआ यह रेत एक झील में रखा गया, उससे एक पुत्र उत्पन्न हुआ । यही पुत्र विद्ययात प्रोधाचार्य थे । प्राणियों का दुःख दूर करने के निचे देवताओं के अनुरोध से इन्होंने स्वर्ग में जाकर इन्द्र से आयुर्वेद का अध्ययन किया । इन्द्र से समय आयुर्वेद का अध्ययन करके ये मर्त्यलोक लौट आये, और आयुर्वेद की शिक्षा इन्होंने महर्षियों को दी । उनसे शिक्षा पाकर महर्षियों ने आयुर्वेद का प्रचार किया ।

भरन दे० ( पु० ) पूरन, पूर्ति, तोषण, तक ।

भरना दे० ( क्रि० ) पूरा करना, अण सुकाना, बन्दूक में गोली भरना, सहना, पाना, दुःख पाना, दुःख सहना ।

भरनी दे० ( श्री० ) बाना पूरना ।

भरवाना दे० (क्रि०) दाम पाना, दाम पचाना  
होना ।

भरपुर दे० (गु०) पूर्ण, चाप्यम्न पूर्ण, चतिग्रय पूर्ण,

भरभराना दे० (क्रि०) छोटना, छिड़कना, चुनना,  
चूना ।

भरभरती दे० (खी०) चूनाम, फूलाव, फूलाव ।

भरभर तद्० (गु०) भ्रम, धान्नि, संशय, सन्देह, भेद,  
रहस्य, तथ्य ।—गुलना (घा०) भेद चुन जाना,  
रहस्य प्रकाश होना ।—खोल देना (घा०) सन्देह  
मिटाना, भ्रम दूर करना ।—गर्धाना (घा०)  
प्रतिष्ठा छोना, यय में धरना लगाना, कीर्ति में  
बढ़ा लगाना ।—निकल जाना (घा०) सन्देह  
दूर होना, संशय मिटना, भेद चुनना ।

भरभराना दे० (क्रि०) ठगना, धगुन करना, धनना ।

भरभराला दे० (गु०) संशयो, सन्देही, भरभर  
वाला ।

भरवाना दे० (क्रि०) पूर्ण कराना, पूरा करवाना,  
पूरवाना ।

भरवा दे० (गु०) पूरा, पूर्ण, सुहायुह ।

भरवाना दे० (क्रि०) पूराना, पूर्ण कराना, भरवाना,  
भरवाना ।

भरवाष्ट दे० (खी०) पूर्ति, पूर्णता, भरती ।

भरती दे० (खी०) तोला, भारहमासा, सौल विशेष ।

भरौठा दे० (गु०) बोका, भार, मोटा ।

भरौसा दे० (गु०) चाया, विरवाच, प्रतीति,  
प्रत्यय ।

भर्य तद्० (गु०) गिव, महादेव, ब्रह्मा, ज्योति, तेज  
प्रकाश, दीप्ति ।

भरजन तद्० (गु०) भ्रजना, भ्रनना, दग्ध करना,  
जलाना ।

भरती तद्० (गु०) पति, स्वामी, भरती । (गु०)  
पाकने वाला, रचक, प्रतिपालक । (दे०) एक प्रकार  
की तरकारो, भौंटा, चाटू, चादि का भून कर  
जेत बनाना जाता है ।

भरतिया दे० (गु०) भाति विशेष, ठठेर, कठेर ।

भरती दे० (खी०) समामि, भरवाष्ट, पूर्णता,  
पूर्ति ।

भरत्सना तद्० (खी०) तिरस्कार, निन्दा, कुस्वा,  
गर्हा; चपवाह ।

भरत्सक तद्० (गु०) तिरस्कार, निन्दक ।

भरतु हरि तद्० (गु०) विक्रमादित्य राजा के भाई,  
इनके वनाये तीन शतक युद्धार, वैराग्य और नीति  
प्रसिद्ध है, कहते हैं अपनी खी की दुस्खिबता से  
दुःखो होकर ये घर छोड़ कर वनवासी हो गये  
थे । वाक्यप्रदीप नामक एक व्याकरण विज्ञान का  
अग्रगण्य ग्रन्थ भरतुहरि के नाम से प्रसिद्ध है । इसका  
निष्पन्न करना कठिन है कि वाक्यप्रदीपकर्ता ये ही  
भरतुहरि हैं या अन्य । इनका भी यही इर्षो उदी  
ही समय मानना उचित है ।

(२) इनका बनाया भट्टी नामक काव्य प्रसिद्ध है ।  
भट्टी काव्य संस्कृत साहित्य का एक रत्न है ।  
इनके पाठ करने वाले इनके व्याकरण के असाधारण  
ज्ञान से सुपरिचित हैं । इस ग्रन्थ के प्रत्येक  
श्लोक यहाँ तक कि पदों में भी प्रयोग सुशुद्धता  
देखी जाती है ।

भर दे० (गु०) भला, उत्तम, चष्ट, मनोहर, रम-  
णीय ।

भरलका दे० (गु०) भूषण विशेष, सोने की टिकली ।

भरलमनसात दे० (गु०) महा पुरुषत्व, उत्तम पुरुष  
का आधार, मनुष्यत्व, पुरुषत्व ।

भरलमनसी दे० (खी०) सुशीलता, सद्गुण ।

भरला (गु०) उत्तम, शीतयान, बचका, चष्ट, सद्गुणी ।

—फर भला हो सौदा फर नका हो (ति० उ०)  
जैसा करोगे वैसा पाओगे, कर्मनुसार ही फल  
होता है ।—चादमी (घा०) चरवा चादमी, चष्ट  
पुरुष ।—मानना (घा०) उत्तम समझना, ब्रह्मदान  
मानना ।—चढ़ा (गु०) नीरोग, मोटा, स्वस्थ ।

भरला दे० (खी०) चरवापन, कुपलभम, कल्याण,  
मङ्गल, सेना (घा०) चाधीर्वाद सेना, तिकी करना,

ग्रहदान करना ।— रहना (वा०) सुपथ रहना,  
कीर्ति रहना ।

भल्ल तत्० (पु०) भाला, धरछी, बछी ।

भल्लूक तत् (पु०) रोछ, भाछू ।

भव (पु०) सवार, जगत्, जन्म, प्राप्ति, शिव,  
महादेव ।

भवदीय तत्० (पु०) पुत्रमह सम्बन्धी, सुन्दारा,  
त्वदीय ।

भवन तत्० (पु०) घर, गृह, स्थान, वास, वास-  
स्थान ।

भवभूति तत् (पु०) सस्कृत के प्रसिद्ध नाटककार,  
इन्होंने उत्तररामचरित, धीरचरित और मालती-  
माधव नामक तीन नाटक रचनाये थे । भवभूति खट्वीय  
८वीं सदी के प्रारम्भ में उत्पन्न हुए थे । पद्मपुर  
नामक गौय इनका जन्मस्थान है । इनके पिता का  
नाम नीलकण्ठ था और पितामह का नाम सुपाल  
भट्ट था । इनकी माता जगुर्ण्य रोज में उत्पन्न  
हुई थीं । इस कारण यह जतकर्णों नाम से प्रसिद्ध  
हैं । शब्द प्रयोग की कुशलता और भावकी  
उत्कृष्टता के विचार से भवभूति का स्थान सस्कृत  
साहित्य में बहुत ऊँचा है । इन तीन ग्रन्थों के  
अतिरिक्त भवभूति का दूसरा भी कोई ग्रन्थ शय्य  
होगा । क्योंकि सद्यः ग्रन्थों में भवभूति के नाम से  
जो श्लोक देखे जाते हैं वे उनके प्रसिद्ध ग्रन्थों में  
नहीं हैं । राजायशोवर्म की समा के ये परिहृत  
थे । इनकी रचना कणरास प्रधान है ।

भघाद्रश तत्० (पु०) चापके तुल्य, चापके समान,  
चापके योग्य ।

भवानी तत्० (स्त्री०) पार्वती, शिव की स्त्री, दुर्गा,  
काली ।

भघार्णव तत्० (पु०) भव, अणव, सवार सागर,  
सवार रूपी समुद्र, भीषण समुद्र ।

भघितव्यता तद् (स्त्री०) होनहार, भावी, भाग्य,  
कपाल, यथा:—

ऐसो है भघितव्यता हैजो उपजे बुद्धि, ।

होनहार हृदय वसै विवर जात सब बुद्धि ।”

भघिष्यु तत्० (पु०) होने वाला, होनहार, भागे  
भघिष्य तत्० (पु०) होनहार, होने वाला, भवि  
व्यता ।

भघिष्यत् तत्० (पु०) आगामीकाल विशेष, आ  
मी काल ।—घका (पु०) भघिष्यत् काल की व  
जानने वाला, भविष्यवेत्ता, होनहार जानने वा  
भाविषेत्ता ।

भवैया दे० (पु०) कश्यप, नर्तक, नाचने वाला ।

भव्य तत्० (पु०) सत्य, योग्य, भावी, उज्ज्वल, सुन्द

भस दे० (पु०) भस्म, राख, विध्वंसि ।

भसकना दे० (क्रि०) गिरना, पड़ना ।

भसना दे० (क्रि०) तरना, तैरना, बहना, उतरना ।

भसभसा दे० (पु०) पिलपिला, चलघला ।

भस्ताना दे० (क्रि०) बहाना, चलाना, बिराना ।

भस्त्रा तत्० (स्त्री०) चमड़े की धौंकनी, भावी ।

भस्म तत्० (स्त्री०) राख, चार, भस्म, —साध  
(पु०) शय्येय भस्म, समस्त जला ।

भस्मक तत्० (पु०) रोग विशेष, जिस रोग में लोग  
घटुत खाते भी हैं परन्तु दुर्बल होते जाते हैं ।

भहराना दे० (क्रि०) काँपना, डगना, डगमगाना,  
गिरना पड़ना ।

भाँग दे० (पु०) छूटी, विजया, भङ्ग ।

भाँज दे० चँठ, बल, अकब पेच ।

भाँजना दे० (क्रि०) चँटना बल देना, किराना,  
हिलाना, तोड़ना ।

भाँजा दे० (पु०) भगिनेय, बहिन का बेटा ।

भाँजी दे० (स्त्री०) बहिन की बेटो ।

भाँटा दे० भरटा यन्त्रक, बँगन ।

भाँडे दे० (पु०) बहुवचिया, तिलञ्ज, एक तरह का  
तमाशा करने वाला, हरटा ।

भाँडना दे० (क्रि०) बिगाड़ना, गाली देना ।

भाँडा दे० (पु०) मृत्तिका का बड़ा पात्र, मट्टना ।

भाण्डोर तत्० (पु०) वृक्ष विशेष, अज्ञेय का वृक्ष ।

भाँडैती दे० (स्त्री०) स्वाँग, बहुवच्यपना ।

भाति दे० (स्त्री०) डोल, दण्ड, रीति, प्रकार ।  
 भाति भाति दे० (वा०) तरह तरह का, नाना प्रकार का ।  
 भावर दे० (स्त्री०) पुनाव, भावरी, सातवार पुमना, परिक्रमा, द्रव्य और दुबहिन का वेदी की परिक्रमा ।  
 भाई (पु०) भ्राता, सहोदर ।—चारा (पु०) भाई का सम्बन्ध, भयान,—बन्धु (पु०) भाई-बन्धु, बिरादरी ।  
 भाकसी (स्त्री०) चन्द्रकूप, कैदियों के रहने का घर, खोटा घर ।  
 भाक तत्० (पु०) कुत्रिम, गौण, पिछलग्नु ।  
 भाखना दे० (क्रि०) खोलना, कहना, कथन करना, भाषण करना ।  
 भाखी दे० (स्त्री०) माया, घोसी; घात ।  
 भाग तत्० (पु०) चाँस, हिस्सा, बाँटा, विभाग (तद्०) भाग्य, प्रारब्ध—खुलना (वा०) भाग्यवाद् होना, प्रारब्ध का खण्ड होना, सुख मिलना,—जागना (वा०) धनी होना, अच्छा भाग होना—प्राही (पु०) भागी, हिस्सेदार ।—भरोसा (वा०) धीरता, धीरज, धैर्य, दाढ़ ।  
 भागद दे० (स्त्री०) पलायन, भगल, देशत्याग ।  
 भागना दे० (क्रि०) पलाना, भाग जाना, पलाना, दौड़ना, भागना करना ।  
 भागखलना दे० (वा०) निकल चलना, भाग जाना, चला जाना ।  
 भागजाना दे० (वा०) चला जाना चम्पत होना ।  
 भागधेय दे० (पु०) भाग्य, प्रारब्ध, सुभकर्म, उत्तम कर्म ।  
 भागनिकलना दे० (वा०) छिप कर भागना, जान बचा कर भाग जाना, भाग चलना ।  
 भागमान दे० (पु०) भाग्यवान्, प्रारब्ध ।  
 भागमानी दे० (स्त्री०) सुभाग, धोभाग्य, उत्तम कर्म ।  
 भागवत तत्० (पु०) भगवान का भक्त । (पु०) अष्टादश पुराणान्तर्गत पुराण विशेष ।

भागहार तत्० (पु०) भागनियम, चाँस की रीति, भाजक (पु०) भागहर्ता, चाँसहारी, भाग का अधिकारी ।  
 भागामाग दे० (पु०) चलाचली, प्रस्थान की हल चल, भागद ।  
 भागिनेय तत्० (पु०) भाँजा, भगिनी पुत्र, पहिन का बेटा ।  
 भागी दे० (पु०) चाकी, हिस्सेदार, घँटेत, चाँसी ।  
 भागीरथी तत्० (स्त्री०) [ भागीरथ + रथ ] गङ्गा, सुप्रुनी, सुतनदी ।  
 भाग्य तत्० (पु०) प्राक्तन सुभासुभ कर्म, दैव, भागधेय, भवितव्यता, चट्ट, प्रारब्ध ।  
 भाग्यवन्त तत्० (पु०) धनी, धनिक, शुभ चट्ट वाला ।  
 भाग्यवान् तत्० (पु०) भाग्यवन्त, चट्टवान, सुखकर्मों ।  
 भाग्यहीन तत्० (पु०) अभागी, हतभाग्य, मन्दभाग्य, दरिद्र, दुःखी ।  
 भाजन तत्० (पु०) पात्र, योग्य, आडक परिवाराण । (दे०) बालन, बरतन ।  
 भाजना दे० (क्रि०) मुँजना, मुनना, तलना, भाजना ।  
 भाजर दे० (स्त्री०) भगोड़, भगील, पलायन, भाजत ।  
 भाजी दे० (स्त्री०) भाग, तरकारी ।  
 भाज्य दे० (पु०) भागाई, भाजनीय, चाँस करने योग्य, चट्टहार्य, जिनका चट्टों से विभाग किया जाय ।  
 भाट दे० (पु०) चारण, स्तुति गायक, बन्दी, बरदेत, एक जाति विशेष, जिनका काम घस्य प्रयत्न करना है ।  
 भाटन दे० (स्त्री०) भाट की स्त्री ।  
 भाठा दे० (पु०) चपुद्र का उत्तार ।  
 भाठियाल दे० (पु०) भठियाल, उतार, गिराव ।  
 भाठी दे० (स्त्री०) धौकनी, भाँती ।

भाइ दे० (प्र०) झरहा, भट्टी, वह झरहा जहाँ अन्न भूने जाते हैं ।

भाडा दे० (प्र०) किराया, गुरुक, महसूल, चर खादि का कर ।

भाएड तह० (प्र०) बर्तन, वासन ।

भाएडना दे० (क्रि०) गाली देना, धिगाडना ।

भात दे० (प्र०) भात, भक्त, षोदन ।

भाता दे० (प्र०) सोहायना, सुन्दर, मनभावन ।

भाथा दे० (प्र०) तूष, तरकस ।

भाद्रो दे० (प्र०) भाद्रमास, भादया, भाद्रपद ।

भादों दे० (प्र०) वर्ष का छठवाँ महीना, जिस महीने में भाद्रपद नक्षत्र में चन्द्रमा पूर्ण हो ।—की भरन (या०) अधिक वृद्धि, ऊढ, ऊढी ।

भान तह० (प्र०) चान, स्मरण, घोष, सुधि, चेत ।

भाना दे० (क्रि०) अच्छा लगना, सुहायना मालूम होना, सोहायना, मन भावन होना ।

भानमती दे० (स्त्री०) नटिनी, जाति विशेष की जियाँ, जो इन्द्रजाल विद्या में निपुण होती हैं ।

भानु तह० (प्र०) सूर्य, रवि, सूर्य की किरण ।—ज (प्र०) अरियनीकुमारद्वय, शनैश्चर, यमराज, राजा कर्ण ।—जा (स्त्री०) यमुना, जमुना नदी ।

भानुमती तह० (स्त्री०) कहते हैं प्रसिद्ध कवि कालिदास की स्त्री का नाम भानुमती था, वे भोजराज की कन्या थी, वे इन्द्रजालिक विद्या में निपुण थी । भोजराज के वशज इस विद्या में अति निपुण थे, और वे इस विद्या से अपना मनोरञ्जन किया करते थे, इसी कारण इन्द्रजाल विद्या का दूसरा नाम भोजराजी हो गया है । भानुमती के नाम के अनुसार इस विद्या का नाम भानुमती का पेल पढ गया है ।

भाफ़ दे० (प्र०) वाष्प, बफ़ारा, धुआँ, धूम ।

भाफ़ना दे० (क्रि०) घटकलना, घटकल लगाना, झूगना, अनुमान से किसी का पता लगाना ।

भामो दे० (स्त्री०) मौजार्द, बड़े भाई की स्त्री ।

भामिन दे० (स्त्री०) मोधी, मोध करने वाला ।

भामिनी तह० (स्त्री०) कोपान्विता स्त्री, कोप युक्त नारी, स्त्री ।—विलोस (प्र०) जगन्नाथ परिवर राज कृत काठय का एक ग्रन्थ ।

भार तह० (प्र०) गुरुत्व, बोधा, काम सम्पादन करने का अधिकार, आठ हजार तैत्ति परिमित यस्तु ।

भारत तह० (प्र०) ग्रन्थ विशेष, महाभारत, भरत पुत्र, नट, अग्नि ।—वर्ष (प्र०) जम्बू द्वीप के नव वर्ष के अन्तर्गत वर्ष विशेष, हिन्दुस्तान । वर्षीय (प्र०) भारतवर्षवासी, भारत वर्ष में रहने वाला ।

भारती तह० (स्त्री०) वाक्य, वचन, बोली, सस्वती, पत्नी विशेष, भारद्वाजी, काठय की एक कृति ।

भारतीय तह० (प्र०) महाभारत उक्त, महामारत कथित, महाभारत सम्बन्धी, भारतवर्षीय, भारत वर्ष सम्बन्धीय ।

भारद्वाज तह० (प्र०) श्रेणाचार्य्य मुनि विशेष, धगस्त्य मुनि, मङ्गलग्रह ।

भारवाहक तह० (प्र०) मोटिया, कहार, भार देने वाला, भारवहनकर्ता ।

भारवि तह० (प्र०) संस्कृत के प्रसिद्ध कवि, इनका बनाया हुआ किरातार्जुनीय नामक प्रसिद्ध काव्य है । ये कालिदास के समकालीन माने जाते हैं । इसके प्रमाण में एक शिला लेख दिया जाता है जो ६३४ ई० में लिखा गया था उस शिला में खुदे हुए पद्य से यह बात सिद्ध होती है । बनुना का अनुमान है कि ये चौथी सदी में उत्पन्न हुए थे ।

भारा दे० (प्र०) बोझ, मोट, भार ।

भारी दे० (प्र०) गुरु, गरवा, बहा, महंगा, मोटा ।

भार्या तह० (स्त्री०) स्त्री, पत्नी, जाया ।

भार्यातिक्रम तह० (प्र०) स्त्रीत्याग, स्त्रीत्याग, पर स्त्री गमन ।

भास्कर तत्० (पु०) ललाट, मस्तक। (दे०) माने की नोक।

भास्करा दे० (पु०) बर्झा, चक्र विशेष, मौं।

भास्कर दे० (पु०) रोह, भस्कर।

भास्करित दे० (पु०) बर्झा, चक्राने वाला।

भास्कर तत्० (पु०) अभिप्राय, चेष्टा, मानस विकार, सत्ता, स्वभाव जन्म, क्रिया, लीला, पदार्थ, विभूति, धारण, योगि, उपदेश, संसार, नयग्रहों की द्वादश चेष्टा।

भास्कर दे० (स्त्री०) दोनहार, भवितव्यता, भविष्य।

भास्कर तत्० (पु०) भाव, मनोविकार। (गु०) विन्ताकारक, मोचने वाला, सत्ताधर।

भास्कर दे० (स्त्री०) भौताई, बड़े भाई की स्त्री, मामी।

भास्कर तत्० (गु०) भावज्ञाता, मर्मज्ञाता, मर्मज्ञ, रहस्यवेत्ता।

भास्करा दे० (गु०) प्रिय, चाहोता, अभिलाषित, इच्छित, रह, प्रिय, मनाहर।

भास्करा तत्० (क्रि०) विन्ता, ध्यान, पर्यालोचना।

भास्कराचक्र दे० (पु०) संज्ञा शब्द विशेष, जो कि चक्र का धर्म गुण बतलाता है।

भास्कर दे० (स्त्री०) छोटे भाई की स्त्री।

भास्करान्तर तत्० (गु०) प्रकारान्तर, अन्य अभिप्राय, भिन्न अभिप्राय, दूसरे प्रकार।

भास्कार्य तत्० (गु०) अभिप्राय, साहचर्य।

भास्कार्य तत्० (गु०) भावुक, चिन्ताशील, अभिप्रायज्ञ।

भास्करित तत्० (गु०) चिन्तित, विचारित, सोचा हुआ, विचारा हुआ।

भास्की तत्० (गु०) भविष्यत्काल, आगामी, उत्तर काल, दोनहार, भवितव्य।

भास्कर तत्० (पु०) मङ्गल, कल्याण, कुशल, धर्म।

भास्कर दे० (स्त्री०) लेखे, विचार में, मन में।

भास्कर तत्० (गु०) भवितव्य, भवनीय, चिन्तनीय, भावी।

भास्करा तत्० (स्त्री०) वाक्य, कथा, पद्य, श्लोका; भाग्देवता, वाणी।

भास्करित तत्० (गु०) कथित, उक्त। (पु०) पद्य, श्लोका, भाषा।

भास्की तत्० (गु०) बादी, यक्षा, कथक, कहने वाला।

भास्कर तत्० (पु०) टीका, टिप्पणी, सूत्रार्थ, सूत्रविषय-ग्रन्थ, सूत्रार्थ का विषय रूप से वर्णन करने वाला ग्रन्थ, विस्तृत टीका।—कार (पु०) महा-भाष्यकर्ता, मुनि विशेष, पतञ्जलि। (गु०) भाष्य-कर्ता, भाष्य बनाने वाला।

भास्करा दे० (क्रि०) विदित होना, मान्य होना, ज्ञात होना, प्रकट होना, प्रकाशित होना।

भास्करान्त तत्० (पु०) सूर्य, चन्द्र, पत्नी विशेष, भौर की चाटी, नखर। (गु०) मनोहर, सुहावना, रमणीय।

भास्कर तत्० (गु०) दीप्तिशील, दीप्तिमान।

भास्कर तत्० (पु०) सूर्य, चन्द्र, रवि।

भास्कराचार्य तत्० (पु०) प्रसिद्ध ज्योतिषित् और गणितज्ञ, इनके पिता का नाम महेश आचार्य या महेश दैवज्ञ था। ये दक्षिण देश के उदा नामक पर्यन्त के समीपवर्ती विजिह्वविज नामक गाँव में १०३६ शके १११४ ई० में उत्पन्न हुए थे। इन्होंने ३६ वर्ष की आयुस्था में अपने विषयात् विद्वान्ति शिरोमणि नामक ग्रन्थ की रचना की। इस ग्रन्थ के चार खण्ड हैं, १ लीलावती या घटीगणित, २ बीजगणित, ३ ब्रह्मगणित आध्याय, ४ गोलाध्याय। अन्तिम दोनों ग्रन्थ ज्योतिष के ग्रन्थ हैं। इनके पुत्र का नाम लक्ष्मीधर और कन्या का नाम लीलावती था। कहते हैं कि इन्होंने अपने प्रिय कन्या के नाम से अपने ग्रन्थ का पहला भाग बनाया था।

भास्करानन्द स्वामी तत्० (पु०) प्रसिद्ध संन्यासी, इनका जन्म १८३३ ई० के आश्विन शुक्ल तृतीया के कानपुर जिले के त्रैलोक्यपुर गाँव में हुआ था। ये बड़े प्रसिद्ध हो गये हैं। इन्होंने १८०९ ई० में अपनी लीला संवरण की।

भास्करानन्द स्वामी तत्० (पु०) प्रसिद्ध संन्यासी, इनका जन्म १८३३ ई० के आश्विन शुक्ल तृतीया के कानपुर जिले के त्रैलोक्यपुर गाँव में हुआ था। ये बड़े प्रसिद्ध हो गये हैं। इन्होंने १८०९ ई० में अपनी लीला संवरण की।

भास्वर तत्० (गु०) दीप्तिपुष्क, तेजस्वी, प्रतापी, स्वच्छ, उज्ज्वल ।

भिक्षा तत्० (स्त्री०) भिक्षण, याचन, चाह, चाहना, माँगना, याचना, याचना, सेवा, नौकरी ।—जीवी (गु०) याचित वस्तु द्वारा जीने वाला, भिक्षुक, भिखारी ।—टन (पु०) [भिक्षा + अटन] भिक्षार्थ गमन, भिक्षा के लिये जाना, भीख माँगने के लिये घूमना ।

भिक्षु तत्० (पु०) चतुर्थाश्रमी, संन्यासी, परिव्राजक, बौद्ध संन्यासी, याचक, भिखारी ।

भिक्षुक तत्० (पु०) भिक्षोपजीवी, भीख से जीने वाला, याचक, अर्थी, भीष माँगने वाला, भिखारी ।

भिक्षरी दे० (गु०) क्षोभता, शून्य, रिक्त ।

भिक्षारी दे० (पु०) याचक, माँगता, भीख माँगने वाला, भिक्षुक ।

भिगाना दे० (क्रि०) धार्य करना, छोड़ा करना, सजल करना ।

भिजाना दे० (क्रि०) धार्य करना, छोड़ा करना, भिगाना ।

भिटनी दे० (स्त्री०) बौंठा, भिठना, भँटी ।

भिडना दे० (क्रि०) भिखना, घटना, घट जाना, लहना, मुटभेड होना, सामना सामनी करना ।

भिडाना दे० (क्रि०) लडाना, लडाई लगाना, झगडा कराना, झगडा लगा देना ।

भिक्षु दे० (स्त्री०) तरकारी विशेष ।

भित्ति तत्० (स्त्री०) दीवार, भीति, जड, मूल ।

भिनकना दे० (क्रि०) भिनभिन शब्द करना, मक्खियों का बैठना ।

भिनभिनाना दे० (क्रि०) घृणा करना, शय्यन्त घृणा करना ।

भिक्ष तत्० (गु०) [भिद् + क्त] भेद विशिष्ट, विदारित, भूयस्क, भिन्न, अन्य, अतिरिक्त, चरा रोग विशेष, अतीत ।—गुणन (पु०) चङ्क विशेष, नून चङ्क की वृद्धि करना ।

भिजाना दे० (क्रि०) चिर में चङ्क, चिर-घूमना, चिर ठनकना ।

भिन्नार्थक तत्० (गु०) अन्य तात्पर्य, अन्य अर्थ, दूसरा अर्थ ।

भिन्सार दे० (पु०) विधान, प्रातः काल, सवेरा ।

भिलाघा दे० (पु०) क्षोपधि विशेष ।

भिलीजो दे० (स्त्री०) भिलाघे का बीज ।

भिल्ल तत्० (पु०) इन्धेच्छ जाति विशेष, नूनी जाति, भील ।

भियरू तत्० (पु०) वैद्य, चिकित्सक ।

भी तत्० (स्त्री०) भय, डर, डर, घायक । (दे०) वाश्य समुच्चायक ।

भीष दे० (स्त्री०) भिक्षा, याचना, माँगना ।

भीगना दे० (क्रि०) भीला होना, छोड़ा होना, भीजना ।

भीचना दे० (क्रि०) निचोड़ना, दधाना ।

भीजना दे० (क्रि०) भीजना, भीगना ।

भीजा दे० (गु०) भीगा, भीला, छोड़ा ।

भीटा दे० (पु०) खरहर, गिरी हुई भीत, डराना घर, कँची ज़मीन ।

भीड दे० (स्त्री०) समुदाय, सङ्घ, जमा, डुफ, फट, घायक ।

भीडा दे० (गु०) सङ्कीर्ण, सकुचित, सङ्केत ।

भीत दे० (स्त्री०) दीवार, भित्ति । (गु०) डरा हुआ, भय प्राप्त ।

भीतर दे० (पु०) अन्तर, बीच, मध्य, में ।

भीतरिया दे० (पु०) भीतर रहने वाला, रक्षी बनाने वाला ।

भीति तत्० (स्त्री०) भय, डर, डर, डर ।

भीम तत्० (गु०) भैरव, भीषण, भयङ्कर, भयानक, भयजनक । (पु०) राजा युधिष्ठिर का छोटा भाई, द्वितीय पारश्व । पाण्डु का सेवर्ज पुत्र, कुन्ती के गर्भ से और वायु के औरस से ये उत्पन्न हुए थे ।

भीम और दुर्वोधन दोनों बराबर उमर के थे । वे दोनों एक ही दिन उत्पन्न हुए थे । भीम बड़े बलवान् थे । दुर्वोधन आदि कोई इनकी बराबरी नहीं कर सकता था । इस कारण दुर्वोधन सदा

इतने डार रजता या और भीम के मारने का उद्योग किया करता था। एक दिन भीम को विप चिन्ता कर दुर्योधन ने जल में, जँकवा दिया, भीम बहते बहते नागलोक पहुँचे और वहाँ इनकी रक्षा हुई। नागलोक से आ कर भीम ने दुर्योधन का पाप पुच्छिष्टि से कहा। अन्व पाण्डवों के साथ भीम को भी पाण्डवालय नगर के साहाय्य में जला देने की चेष्टा दुर्योधन ने की थी। दुर्योधन की चालाकी समझ कर भीम साहाय्य में आग लगने के पहले ही कुन्ती और भाइयों के साथ निकल गये। द्रुपद राज्य में जात्रे के पहले ही दिडिम्ब नामक राक्षस को मार कर भीम ने उसकी बहिन दिडिम्बा को बचाया। दिडिम्बा के गर्भ से भीम के एक पुत्र हुआ था जिसका नाम चटोक्कच हुआ था। द्रौपदी को प्राप्ति के पश्चात् पुच्छिष्टि ने इन्द्र-प्रस्थ नगर में आ कर राजसूय यज्ञ करना प्रारम्भ किया। कृष्ण और अर्जुन के साथे मगध राज्य में जा कर भीम ने जरासन्ध को मार डाला था। कपट रूप में पुच्छिष्टि को धरा कर दुर्योधन ने द्रौपदी का अपमान किया था। सभा के बीच में ही भीम ने प्रतिज्ञा की थी कि इसका बदला चुकाने के लिये मैं भाइयों के साथ दुर्योधन को मार डालूँगा। और दुःशासन के हृदय का रुधिर पीऊँगा, तथा दुर्योधन का जहा तोड़ डालूँगा। कुन्ती के पुत्र में भीम ने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की थी। पाण्डवों के महाप्रस्थान के समय द्रौपदी, सहदेव, नकुल और अर्जुन के पतन के अनन्तर भीमसेन ने भूमि में गिर कर प्राण त्याग किया था। पुच्छिष्टि ने उस समय कहा था। तुम द्रुपदों को न दे कर स्वयं खा जाते थे और अपने सामने द्रुपद को बलशाली नहीं समझते थे, इसी कारण तुम्हें यहाँ गिरना पड़ा है।

**भीमसेनी दे० ( खी० )** सुगन्धे द्रवर विशेष, एक प्रकार का कपूर।

**भीरु तल्० ( पु० )** भयभील, डरने वाला।

**भील दे० ( पु० )** एक पहाड़ी जाति का नाम, मलेच्छ जाति विशेष।

**भीमण तल्० ( पु० )** भयङ्कर, भयानक, भय, घोर, भयजनक, भयावह। ( पु० ) सेहुँड पृष्ठ, भट-कटैया, बाज पत्ती।

**भीमा तल्० ( खी० )** साव, भय, भयङ्करता।

**भीष्म तल्० ( पु० )** भयानक, भयङ्कर। ( पु० ) गाङ्गेय, शान्तनु राजा का पुत्र, ये गङ्गा के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। इन्होंने पिता की सुख साधना पूर्ण करने के लिये जीवन पर्यन्त ब्रह्मचर्य रहने और राज्य न लेने की प्रतिज्ञा की थी।

**भीष्मक तल्० ( पु० )** विदर्भ राज्य के राजा, श्रीकृष्ण की पटरानी रुक्मिणी इन्हीं की पुत्री थीं।

**भीष्म पञ्चक तल्० ( पु० )** व्रत विशेष, कार्तिक शुक्ल एकादशी से पूर्णिमा तक।

**भुमाल दे० ( पु० )** भूपाल, राजा, नरपति।

**भुक्त तल्० ( पु० )** भवित, खादित, खा चुका, भोगा गया।—भोगी ( पु० ) एतः भोग कर्ता, विशेष रूप से अनुभूत।

**भुगतना दे० ( कि० )** भोगना, सहना, कर्मों का फल भोगना, कष्ट उठाना, कष्ट सहना।

**भुगताना दे० ( कि० )** भोगवाना, दण्ड देना, भोग करवाना, सहाना, सहवाना, पूरा कर देना, बाकी बच्ये दे देना।

**भुगा दे० ( पु० )** बाँधा, भोला, भोंड।

**भुग्न तल्० ( पु० )** कुटिल, बक, कुचड़ा, टेंडा, तिरछा।

**भुच दे० ( पु० )** चनपड़, चनपड़, भूज, चजान, अनभिन्न।

**भुज तल्० ( पु० )** सुजा, बाह।

**भुजङ्ग, भुजङ्गम तल्० ( पु० )** सर्प, सर्प, बहि।

**भुजवन्द दे० ( पु० )** बाजुवन्द, चन्द्र, विजापट।

**भुजा तल्० ( खी० )** बाँह, सुत्र, बाहु।

**भुजिया दे० ( पु० )** भूजा हुआ, उसना हुआ।

**भुटा दे० ( पु० )** बाल, मकई की फली, जनहार।

**भुएडली दे० ( खी० )** कीट विशेष, एक कीट का नाम।

**भुतना दे० ( पु० )** भोक्क, छोटा घृत, प्रेत, पिशाच।



भुतहा दे० (गु०) कुहडा, भुत के समान ।  
 भुनना दे० (क्रि०) भूजना, भर्जन करना, सेंकना ।  
 भुरभुरा दे० (गु०) चुकनी, सूखी चुकनी ।  
 भुरभुराना दे० (क्रि०) छीटना, छिडकना, फैलाना ।  
 भुलसाना दे० (क्रि०) जलना, भुलसाना ।  
 भुलाना दे० (क्रि०) भुलवाना, फुसलाना, घोषा देना, छलना करना, प्रतारण करना ।  
 भुलावा देना दे० (वा०) भुलाना, भुलवाना, फुसलाना ।  
 भुन तत्० (पु०) स्वर्ग, आकाश, अम्बर, पृथिवी, भूमण्डल ।  
 भुनङ्ग तद्० (पु०) भुनङ्ग, सौंघ, सर्प ।  
 भुवन तत्० (पु०) जगत्, लोक, प्राणी, जीव ।  
 भुस दे० (स्त्री०) गुप, बोकर, द्विलका, चनाज के ढपठल का छूरा ।  
 भुसेरा दे० (पु०) भूसा रखने का स्थान, यह घर जिसमें भूसा रखा जाता है ।  
 भू तत्० (स्त्री०) भूमि, धरती, पृथ्वी ।  
 भूडोल दे० (पु०) भूवाल, भूकम्प ।  
 भूजा दे० (पु०) मडभूजा, कादू ।  
 भूकना दे० (क्रि०) भौ भौ करना, कुत्ते का शब्द, भौकना ।  
 भूकम्प तत्० (पु०) भूवाल, भूडोल ।  
 भूप दे० (स्त्री०) भोजन करने की इच्छा, भवाने वा अभिलाष, सुधा, चाहादेच्छा, सुसुजा ।  
 भूखा दे० (गु०) दुसुचित, सुधातुर ।  
 भूगर्भ तत्० (गु०) भूमिका मध्य, भूमेवा अन्वन्तर ।  
 भूगोल तत्० (पु०) भुवन कोष, मही मण्डल, पृथ्वी की आकृति के विवरण करने वाला शास्त्र ।  
 भूचक्र तत्० (पु०) विपुव रेखा, मध्य रेखा, भूमण्डल ।  
 भूचर तत्० (पु०) स्थलचर, मनुष्य आदि ।  
 भूड दे० (स्त्री०) वायुकामय भूमि, देतीली भूमि,।

भूडल दे० (पु०) अन्नक, अन्नरत्न ।  
 भुण्डपैरा दे० (पु०) अशकुन, अशकुन ।  
 भूत तत्० (पु०) काल विशेष अतीत काल केवि विशेष, पिशाच आदि । अधोमुख वा ऊर्ध्व मुख पिशाच । रुद्रानुवर, बालग्रह, कृष्ण चतुर्दश ।  
 भूतल तत्० (पु०) पृथिवी तल, धरती, भूमि भूमण्डल ।  
 भूतात्मा तत्० (पु०) देह, ब्रह्मा, परमेष्ठी, मित्र, सुहृ, विष्णु ।  
 भूति तत्० (स्त्री०) ऐश्वर्य, धन, महादेव के अशिम आदि आठ प्रकार के ऐश्वर्य, शिव का भस्म, हाथी का गृह्णार, सम्पत्ति, जाति, शक्ति नामक श्रीयध ।  
 भूतेश तत्० शिव, महादेव ।  
 भूदार तत्० (पु०) गूकार, सूअर, बराह, भूमि विदारणकारी ।  
 भूदेव तत्० (पु०) ब्राह्मण, द्विज, विप्र, भृशुर ।  
 भूधर तत्० (पु०) पर्यंत, गिरि, शैल, भूमि धारणकर्ता, यन्त्र विशेष ।  
 भूप तत्० (पु०) नृपति, राजा, भूवाल, महीपाल ।  
 भूपाल तत्० (पु०) राजा, नृपति, महीपाल ।  
 भूमल दे० (स्त्री०) अङ्गार, अङ्गारा, गरम राख ।  
 भूमा तत्० (पु०) महत्त्व, पूर्णता, विगद् पुष्प, महिमापुष्प ।  
 भूमि तत्० (स्त्री०) भू, पृथिवी, धरती ।—कम्प (पु०) भूकम्प, भूवाल ।—जा (स्त्री०) सोता, जानकी ।—पाल (पु०) महीपति, भूवाल, राजा ।  
 भूमिका तत्० (स्त्री०) आभास, रचना, प्रस्तावना, उपक्रम, देशान्तर परिग्रह, अन्य रूप धारण, छद्म, वेद्य, ग्रन्थों की पूर्ण पीठिका, कथा मुत्र, बिल की अवस्था विशेष ।  
 भूमिया तत्० (पु०) भूमि का देवता, उस भूमि का वासी ।  
 भूयः तत्० (अ०) पुन, फिर, बार बार ।

भूयोभूयः तत् ( ५० ) धार धार, फिर फिर,  
पुनः पुनः ।

भूर दे० ( श्री० ) दक्षिणा, दान ।

भूरसी दे० ( श्री० ) दक्षिणा विशेष, उत्पन्न आदि में  
ओ रूप बिना सङ्कल्प के ब्राह्मणों को दिया जाता है

भूरा दे० ( पु० ) वर्ष विशेष, पिङ्गल वर्ष, कपिल,  
कपिल । ( पु० ) पिङ्गल वर्ष का, कपिल ।

भूरि तत् ( ५० ) प्रसुर, यष्ट, अधिक, डेर, बहु ।

—प्रेमा ( पु० ) चक्रवाक पक्षी, चक्रवा । —लाभ  
( पु० ) बहुत प्राप्ति, अधिक लाभ ।

भूरिश्रवा तत् ( पु० ) कीर्तिमातृ, अतिशय यश-  
स्वी ।—( पु० ) चन्द्रवंशी राजा शोमदत्त का पुत्र,  
महाभारत युद्ध में वे क्षौरियों की ओर से युद्ध करते  
थे । पहले अर्जुन ने इनके बाहु काट डाले थे,  
उसी समय सात्यकी ने तनूपा से इनका शिर  
काट डाला था ।

भूरुह तत् ( पु० ) वृक्ष, पेड़, छत्र, गाछ ।

भूर्जपत्र तत् ( पु० ) एक वृक्ष की छाल ।

भूल दे० ( श्री० ) ब्रूक, विस्मृति, अज्ञान से अचरार्थ,  
भुटि ।

भूलना दे० ( क्रि० ) विस्मरण होना, विचरना, भ्रूकना ।

भूला विसरा दे० ( वा० ) भटका, भ्रूला, मार्गभ्रष्ट,  
रास्ता भ्रूला हुआ ।

भूला भटका दे० ( वा० ) विषय-वर्तिता, रास्ताभ्रूलने  
से भटकता हुआ ।

भूलोक दे० ( पु० ) मर्त्यलोक, भूगुलोक, मनुष्यलोक ।

भूपक तत् ( पु० ) भूषण कारक, अलङ्कारक, अलङ्कार  
करने वाला, गूढ़ार करने वाला ।

भूपण ( तत् ) ( पु० ) [ भूष् + णन्ट ] आभरण,  
अलङ्कार, हिन्दी के एक प्रसिद्ध कवि, धीर रस के  
एक प्रसिद्ध कवि ।

भूपित तत् ( पु० ) अलङ्कृत, शोभित, गूढ़ारित ।

भूसा दे० ( पु० ) भुव, भुप ।

भूसी दे० ( श्री० ) चोकर, पक्षीरन ।

भूसुर तत् ( पु० ) भूदेव, ब्राह्मण ।

भूकुटी तत् ( श्री० ) भूमङ्ग, गुणभङ्ग, त्योरी, भी,  
भीह ।

भूगु तत् ( पु० ) भार्गव, गुणावाय, पर्वत को  
करारा, प्रयात, अनाठ, मुनि विशेष, विषयात् मुनिं,

पहले के समय में महादेव धारणी मुनि-धर कर एक  
यज्ञ करते थे, इस यज्ञ में देव कन्या और देवान्-

नार्य उपस्थित थीं । देवान्कन्याओं को देख कर ब्रह्मा  
का वीर्यपात हुआ, उसको अपनी किरणों से उठा

कर भूय ने अग्नि में डाल दिया, उससे भूगु  
अङ्गिरा और कवि ये तीन उत्पन्न हुए । इनको

देख कर महादेव ने कहा कि ये हमारे यज्ञ में  
उत्पन्न हुए हैं इस कारण ये हमारे पुत्र हैं । अग्नि ने

कहा कि जब ये मेरे द्वारा उत्पन्न हुए हैं तब ये  
हमारे के पुत्र नहीं हो सकते । ब्रह्मा ने कहा कि

इनकी उत्पत्ति मेरे वीर्य से हुई है अतः इनका  
पिता मैं ही हूँ । इसी प्रकार तीनों आपस में

विवाद करने लगे । तब देवताओं ने निर्णय कर  
दिया । एक एक पुत्र तीनों देवताओं को दे दिये

गये । भूगु महादेव को अङ्गिरा अग्नि को और  
कवि ब्रह्मा के भाग में पड़े ।

भूङ्ग तत् ( पु० ) अमर, अलि, पटपद, भँवर ।

भूङ्गराज तत् ( पु० ) पौषा विशेष, भेगरिया ।

भूङ्गी तत् ( श्री० ) कीट विशेष; भीरी, लखोरी  
( पु० ) शिवनाथ विशेष ।

भूति तत् ( श्री० ) घेतन, मजुरी, कमाई, महोना,  
मासिक या दैनिक घेतन ।—भुक ( पु० ) घेतन  
घाही, घैतनिक ।

भूत्य तत् ( पु० ) परिचारक, सेवक, दास, किङ्कर,  
सेला, नौकर, टहलुवा ।

भूट तत् ( पु० ) भुंजा हुआ, भुना हुआ, जल संयोग  
के बिना पकाया ।

भूड दे० ( पु० ) भेद, रहस्य, स्वभाव; मर्म ।

भूंगा दे० ( पु० ) टंडा, तिरछा, बाँका, बहुत टंडा ।

भूँट दे० ( श्री० ) मिलाप, साक्षात्कार, दर्शन, उप-  
हार ।

भूँटना दे० ( क्रि० ) भूँट करना, मिलाप करना, साक्षा-  
त्कार करना ।

भूंक तत् ( पु० ) जन्तु विशेष, मण्डूक, बेंग, मैदक,  
दादुर ।

भेख दे० (पु०) चाकृति, आकार, वेप, परिच्छद ।  
 भेजना दे० (क्रि०) प्रस्थापित करना, पठाना, पहुँचाना,  
 दूसरी जगह जाने की आज्ञा देना ।  
 भेजा दे० (पु०) सूदा, भीतरीछार, पठाया हुआ,  
 पठाया ।  
 भेट दे० (स्त्री०) दर्शन, भेंट,, साक्षात्कार, सौगात,  
 उपहार ।  
 भेटना (क्रि०) भेंट करना, भेंट देना, मिलना, मुला-  
 कात करना ।  
 भेटी भेटू दे० (स्त्री०) बोटा, बंठा, फल आदि के ऊपर  
 की बंठी ।  
 भेड़ दे० (पु०) मेड़ा, भेप ।  
 भेड़िया दे० (पु०) हिंस्र जन्तु विशेष, हुँडार ।  
 —धसान (या०) देखा देखी करना, किसी कारण  
 न रहने पर भी केवल दूसरे करते हैं इसलिये स्वयं  
 भी करना भेड़िया धसान कहा जाता है ।  
 भेड़ी दे० (स्त्री०) मेड़ी, भेपी, गाढर ।  
 भेद तत्० (पु०) भिन्नता, दूसरे के अधिकार से हटा  
 कर अपने अधिकार में करना, शत्रुओं के यश  
 करने योग्य चार उपायों के अन्तर्गत तीसरा उपाय,  
 विदारण, विवेचन, विवेक, छिपी बात, गुप्त समा-  
 चार, विच्छेद, प्रयुक्ता ।  
 भेदक तत्० (पु०) विदारक, मित्रता तोड़ने वाला,  
 विरोधक श्रेयधि, फोड़ने वाला ।  
 भेदकिया दे० (पु०) भेदी, खोजी, पता लगाने वाला,  
 गुप्तचर ।  
 भेदी दे० (पु०) भेदक, चर, भीतरी बात जानने वाला,  
 ममज्ञ ।  
 भेदू दे० (पु०) भेदी, भेद रखने वाला, मर्म जानने  
 वाला ।  
 भेध तत्० (पु०) भेदनीय, भेद के योग्य ।  
 भेना दे० (स्त्री०) बहिन, भगिनी ।  
 भर दे० (स्त्री०) भेरी, वाद्य विशेष ।  
 भेरी तत्० ( स्त्री० ) वाद्य यन्त्र विशेष, वृहत् बक्रा,  
 पटह, दुन्दुभि, नगरा ।  
 भेसा दे० (पु०) पीछा विशेष, मिलावा ।

भेली दे० (स्त्री०) गुड़ का लड्डू ।  
 भेघ दे० ( पु० ) स्वभाव, प्रकृति, भेद, मर्म, मीलों  
 यत्तों ।  
 भेप तत्० ( पु० ) वेद्य, रूप, आकार, चाकृति, पूर्व  
 पुरुषों का वासस्थान ।  
 भेपज तत्० (पु०) श्रेयधि, दवा ।  
 भेंस दे० (स्त्री०) स्वनाम प्रसिद्धि पशु विशेष, महिला ।  
 भेंसा दे० (पु०) महिला ।  
 भैंसिया दाद दे० (पु०) रोग विशेष, द्रुद्र रोग ।  
 भैंचक दे० (अ०) आश्चर्यित, अचम्बित ।  
 भैमी तत्० (स्त्री०) माघ शुक्ल एकादशी, राजा भीम  
 की पुत्री, दमयन्ती, नल की स्त्री ।  
 भैया दे० (पु०) भाई, भ्राता, बड़ा भाई ।  
 भैयापा दे० (पु०) भायारो, बन्धुत्व, भाई चारा ।  
 भैरव तत्० (पु०) शङ्कर, महादेव, देव विशेष, भया  
 नक रस नद विशेष, राग विशेष, एक राग का  
 नाम, शिवजी के गण का अधिपति । (पु०) भय-  
 नक, भयङ्कर, भीषण, कराल ।  
 भैरवी तत्० ( स्त्री० ) श्वश्रुतिन, श्वश्रुत चाग्रम में  
 गई स्त्री, रागिनी विशेष, भैरव राग की स्त्री ।  
 —चक्र (पु०) वामाचारियों का मद्यपानार्थ चक्र  
 विशेष ।  
 भैरों तद्० (पु०) भैरव ।  
 भैहुं दे० (स्त्री०) चतुर्ज बध्न, छोटे भाई की स्त्री ।  
 भोंकडा दे० (पु०) बड़ा, मोटा, बूझ, विशाल ।  
 भोंकना दे० ( क्रि० ) हूलना, ठोंकना, पुमाना, मी  
 भी करना ।  
 भोंकस दे० (पु०) शोभा, धृतहा, टोन्हा ।  
 भोंघरा दे० ( पु० ) तलघरा, तल कोठा, नीचे का  
 घर ।  
 भोंड़ा दे० (पु०) कुडील, कुत्सित रूप वाला ।  
 भोंधरा दे० ( पु० ) भोपर, भोधा, कुत्सित, बिना  
 धार का ।  
 भोंदू दे० ( पु० ) झरुं, बेवकूफ, सीधा, भोला, अन-  
 जान, अन्भिन्न ।

भोग दे० ( पु० ) नरसिंघा, सीमा, एक प्रकार का बाजा ।

भोग दे० ( जो० ) कहार, धोमर ।

भोगस दे० ( पु० ) मन्त्र यन्त्र करने वाला, चोखा, टोन्हा ।

भोगा तत्० ( पु० ) भोग करने वाला, भोगी, साज, अधिक खर्चिया ।

भोग तत्० ( पु० ) सुख दुःख का अनुभव, श्री खादि का उपभोग, छाँव का शरीर, पालन, भोजन, तिस्कार, अपमान ।—राग ( पु० ) देवता का सेवन पूजन ।

भोगना दे० ( क्रि० ) सुख दुःख उठाना, कर्म का कल भोगना, सुख दुःख महना ।

भोगा दे० ( पु० ) छल, कपट, धोखा ।

भोगी तत्० ( पु० ) विलासी, खेरखरकाइ, ध्यसनी, दुराचारी, श्वानन्दी, सुली, प्रारब्धी ।

भोग्य तत्० ( पु० ) भोगने योग्य, सुख दुःख, कर्म कल ।

भोज दे० ( पु० ) उद्यानार, बाहार ।

भोजदेव तत्० ( पु० ) राजा विद्येय, ये भालदा के धन्तरान धारा नगरी के राजा थे । ये ११वीं राष्ट्रीय यताब्दी में उत्पन्न हुए थे । ये केवल राजा ही नहीं थे, किन्तु संस्कृत साहित्य का ज्ञान इनका अगाध था । सरस्वती कपटाभरण भोज चन्द्र खादि इनके ग्रन्थों का संस्कृतियों में बड़ा खादर है । स्मृति शास्त्र के भी ये बड़े भारी पण्डित थे । इन्होंने मनु संहिता की एक टीका बनाई थी । इन्होंने के समय में भारत में संस्कृत विद्या का बड़ा प्रचार था । संस्कृत के अधिकांश साहित्य ग्रन्थ इन्होंने आचित कवियों के द्वाराये हैं ।

भोजन तत्० ( पु० ) खाहार, खाना ।

भोजपत्र तत्० ( पु० ) भ्रमपुत्र, वृष की छाल ।

भोज्य दे० ( पु० ) भोजन योग्य, खाने के योग्य ।

भोजल दे० ( पु० ) चक्रक, उपधातु विशेष ।

भोजता दे० ( पु० ) भोजर, कुचिठल, दुराधार ।

भोगा दे० ( पु० ) मन्त्र यन्त्र करने वाला, चोखा ।

भोगीरा दे० ( पु० ) मणि विद्येय, विद्रुम, प्रवाल, मूंगा ।

भोग दे० ( श्री० ) प्रातःकाल, सबेर, बिहान ।

भोगला दे० ( पु० ) क्षलहीन, निष्कपट ।

भोग दे० ( श्री० ) धुकुटो, धू ।

भोगना दे० ( क्रि० ) हँ हँ करना, भूखना, विना प्रयोजन बक बक करना, कुत्ते के समान शब्द करना ।

भोगाल दे० ( पु० ) भूबोल, भूकम्प, भूमिकम्प, भूचाल ।

भोग दे० ( पु० ) भंवर, चावर्त, घुमाव, पानी का चक्कर ।

भोग दे० ( पु० ) धमर, धनि, पट्टपद, मधुप ।

भोगियां दे० ( क्रि० ) घूमना, फिरना, चक्कर काटना, घनर की गति से घसाना ।

भोगी दे० ( श्री० ) चावर्त, घोड़े का एक दोप खीर गुण । गले के नीचे की खीर मिला घोड़े के बाएँ जिरे रहते हैं वह घोड़ा चच्छा समझा जाता है । परन्तु वही बाएँ का चावर्त यदि किसी दूसरे स्थान पर रहता है तो वह दोप समझा जाता है । यदि वह मनुष्य के मस्तक पर बाएँ की खीर हो तो खीरुता योग समझा जाता है ।

भोगना दे० ( क्रि० ) हँ हँ करना, भोगना ।

भोग दे० ( पु० ) भय, डर, शक्का, घास ।

भोगक दे० ( श्री० ) चक्रमाह, चदसा, अधानक ।

भोजार् दे० ( श्री० ) भागी, बड़े भाई की श्री ।

भोगिक तत्० ( पु० ) भूत सम्बन्धी, भूत का, अनुभूत ।

भोगा दे० ( क्रि० ) घूमना करना, फिरना, घूमना ।

भोगास दे० ( पु० ) हाथी बाँधने का सूँटा ।

भोगियार दे० ( पु० ) मङ्गलवार ।

भोग तत्० ( श्री० ) खर्च, नाश ।

भोग तत्० ( पु० ) चन्देह, संग्रह ।

भोग तत्० ( पु० ) पर्यटन, घूमना, भँवर फिरना ।

भोग तत्० ( पु० ) भौत, धनि, मधुप ।

भ्रष्ट तत्० (गु०) पतित, अधमी, गिरा, अधःपतित, स्थानच्युत ।  
 भ्राता तत्० (पु०) भाई, सहोदर, बन्धु ।  
 भ्रान्ति तत्० (स्त्री०) भूल, भ्रम, सशय, सन्देह ।  
 भ्रामक तत्० (पु०) रोग विशेष, झुझाँ रोग, मिर्गी ।  
 (गु०) सन्देह उत्पन्न करने वाला ।

भ्रू तत्० (स्त्री०) भौं, भृकुटी, भृकुटी ।  
 भ्रूण तत्० (पु०) गर्भ, गर्भस्य दासक ।—हस्त (स्त्री०) गर्भपात ।  
 भ्रूमङ्गल तत्० (पु०) त्वोरी चढाना, पुढकी, बाँध यदलना, कटाच, सस्पृह, निरीक्षण ।

म

म व्यञ्जन का पचीसवाँ वर्ष, इसका उच्चारण स्थान श्रोत्र होने से यह श्रोत्र्य वर्ष कहा जाता है ।  
 म तत्० (पु०) ब्रह्मा, शिव, चन्द्रमा, विष्णु, यम, समय, विष ।  
 मफडा दे० (पु०) कीट विशेष, जाल का कीड़ा ।  
 मफड़ाना दे० (स्त्री०) टेढा चलना, जी खुराना, जी छिपाना ।  
 मफड़ी दे० (स्त्री०) कीट विशेष, छोटा मफड़ा ।  
 मकर तत्० (पु०) जल जन्तु विशेष, दशम राशि, कामदेव की ध्वजा का चिन्ह, कुबेर का धन विशेष । (दे०) छल, कपट, धोखा ।—ध्वज (पु०) कामदेव, रस सिन्दूर विशेष, चन्द्रोदयरस ।  
 मकरन्द तत्० (पु०) पराग, पुष्प रस, पुष्पासव, मधु ।  
 मकराक्ष तत्० (पु०) राक्षस विशेष, यह रावण के सेनापति खर राक्षस का पुत्र था । यह भी रावण का सेनापति था । इसको रामचन्द्रजी ने मारा था ।  
 मकराना तत्० (पु०) एक स्थान का नाम, जहाँ श्वेत पत्थर निकलता है । यह स्थान मारवाड़ में है ।  
 मकरोना दे० (स्त्री०) भिगाना, गीला करना, सौदा करना, धात्रु करना ।  
 मकुट दे० (पु०) मुकुट, मौर, चिरपेच, किरीट ।  
 मकोडा दे० (पु०) चीटा, चीउँटा, पीपडाँ ।  
 मकोय दे० (पु०) एक वृक्ष और उसका फल ।  
 मङ्गल दे० (पु०) नैत्र, नयनीत, माखन ।  
 मङ्गी दे० (स्त्री०) मच्छी, मन्जिका, माखी ।

मख तत्० (पु०) यज्ञ, वायु, याग ।  
 मखन दे० (पु०) माखन, मखन, नैत्र ।  
 मखना दे० (पु०) हाथी विशेष, छोटा हाथी ।  
 मखनिया दे० (पु०) माखन बेचने वाला ।  
 मखाना दे० (स्त्री०) फल विशेष ।  
 मखी दे० (स्त्री०) मक्खी, मन्जिका ।  
 मग तत्० (पु०) मार्ग, ङगर, बाट, राह, पैदा ।  
 मगन दे० (गु०) ध्यानन्वित, हर्षित, प्रफुल्ल ।—त (स्त्री०) हर्ष, प्रसन्नता ।  
 मगर तत्० (पु०) मकर, मगर, मच्छ, ग्राह, जल जन्तु विशेष ।  
 मगरा दे० (गु०) डीठ, निर्लम्ब, पृष्ठ, घमरही बहङ्गारी ।  
 मगराई दे० (स्त्री०) डिठारई, भृष्टता, मचत्ताहट ।  
 मगरापन दे० (पु०) मचलाई, भृष्टता, घमरह ।  
 मगरेला दे० (पु०) गोज विशेष ।  
 मगसिर तत्० (पु०) मार्ग शीर्ष, अगहन महीना ।  
 मगहैया दे० (पु०) मगध देशवासी ।  
 मगुरी दे० (स्त्री०) मत्स्य विशेष ।  
 मग्न तत्० (गु०) मगन, प्रसन्न, मुदित ।  
 मघन दे० (पु०) महक, सुवास, सुगन्ध, उत्तम गन्ध ।  
 मघवा तत्० (पु०) इन्द्र, देवराज, सुरपति, देवताओं के अधिपति ।  
 मघा तत्० (पु०) नक्षत्र विशेष, दशवाँ नक्षत्र ।  
 मङ्गा दे० (पु०) माला, जप करने की माला, सुमिरनी ।  
 मङ्गता दे० (पु०) मिथुन, मिथारी, कगाण, दरिद्र

मङ्गली दे० ( स्त्री० ) उषारः ।  
 मङ्गुरा दे० ( पु० ) बपटेती, खांद का मिर, पत्रटा, मङ्गुवा ।  
 मङ्गुल तत्० ( पु० ) अभिप्रेत, अर्थ की विधि, कल्याण, शुभ, अम, कुशल, ग्रह विशेष, तृतीय-ग्रह ।—धार ( पु० ) भीमधार, मङ्गल का दिन, तीसरे ग्रह का दिन ।—समाचार ( पु० ) सच्चा संवाद, सुसम्बाद ।  
 मङ्गलाचरण तत्० ( पु० ) मङ्गल के लिये अनुष्ठान, मङ्गल कृत्य, ग्रन्थ के आदि में इष्टदेव की बन्दना ।  
 मङ्गलाचार तत्० ( पु० ) मङ्गल उक्तय ।  
 मङ्गलामुक्ती तत्० ( पु० ) गंधिया, गाने वाली, मङ्गल मनाने वाली, रचनी ।  
 मङ्गली दे० ( पु० ) मङ्गल करने वाला, मङ्गलकारी, कल्याणदायक । जिसकी कुचदली में जन्म, चतुर्थ सप्तम, अष्टम और द्वादश स्थान में मङ्गल पड़ा हो, यह योग यदि पुरुष में पड़ा हो तो खीहन्ता योग कहा जाता है, और स्त्री में पड़ा हो तो पुरुषहन्ता ।  
 मङ्गवाना दे० ( कि० ) मङ्गवाना, पाम लाने के लिये कहना ।  
 मङ्गसिर तद्० ( पु० ) मार्गशीर्ष; अगहन का महीना ।  
 मङ्गाना दे० ( कि० ) मङ्गवाना, मंगा भेजना ।  
 मङ्गूला दे० ( पु० ) छोटा अङ्गुल, पूँदना ।  
 मङ्गुतर दे० ( स्त्री० ) वचनदत्त, माङ्गु ।  
 मङ्गक दे० ( स्त्री० ) गौँट की पीड़ा, धीरे धीरे दर्द ।  
 मङ्गकना दे० ( कि० ) हथिया होना, चर्चाना, पीड़ा होना ।  
 मङ्गकाना दे० ( कि० ) मटकाना, मणकाना, धौल बनाना ।  
 मङ्गना दे० ( कि० ) रचना, उठना, होना, सम्पादन करना, किया जाना ।  
 मङ्गमच दे० ( अ० ) चरचर, मरमर, अत्रि विशेष, मचमच शब्द ।  
 मङ्गमचाना दे० ( कि० ) मचमच करना, हिलाना, कपाना, जिससे मचमच शब्द हो ।

मचलना दे० ( कि० ) मटकना, घमपट करना, अभिमान करना, अहङ्कार करना, हठ करना, दुराग्रह करना ।  
 मचलपन दे० ( पु० ) मचलाहट, अभिमान, अहङ्कार, हठ ।  
 मचला दे० ( पु० ) हठी, हठीना, अहङ्कार, अभिमान घमपट ।  
 मचलाना दे० ( कि० ) हठ करना, दुराग्रह करना, बहाना करना ।  
 मचलाहा दे० ( पु० ) हठीला, टीठ, पृष्ठ, घमपटी ।  
 मचाना दे० ( कि० ) करना, होने देना, उठाना, प्रारम्भ करना ।  
 मचामच दे० ( अ० ) अटपट, लदासद, चबोपच ।  
 मचिया दे० ( स्त्री० ) पीठा, चौकी, छोटी पाट, मोटा ।  
 मचोड़ना दे० ( कि० ) निचोड़ना, पेंठना, गारना ।  
 मच्छ तद्० ( पु० ) मछली, मत्स्य, मीन ।  
 मच्छुर दे० ( पु० ) मशक, मस, माछड़ ।  
 मच्छी दे० ( स्त्री० ) चुमा, चुन्वा, मीठी, मीठिया ।  
 मच्छन्द दे० ( पु० ) चुहा । ( पु० ) सूख, अनभिद्ध, बड़ी सूँछ वाला ।  
 मच्छली दे० ( स्त्री० ) मत्स्य, मच्छ, मीन ।  
 मछुमा दे० ( पु० ) धीवर, कौत्रत, मछली, पकड़ने वाला ।  
 मजीठ दे० ( पु० ) रङ्ग विशेष, लाल रङ्ग ।  
 मजीत दे० ( पु० ) पुराना, सस्ता, निकम्मा ।  
 मजीरा दे० ( पु० ) वाद्य विशेष, भाँक ।  
 मजूर दे० ( पु० ) सेवक, परिचारक, भूय, कामकारी, दास, दैनिक ब्रतन पर काम करने वाला, कारखाने में काम करने वाला ।  
 मज्जन तत्० ( पु० ) स्नान, नहान, धो धो कर नहान ।  
 मज्जा तत्० ( पु० ) शैटक के सप्त धातु के चत्वारस धातु विशेष, चर्मी, हड्डी के भीतर का मांस ।  
 मङ्गला दे० ( पु० ) माध्यमिक, बीच का, मध्य का, मध्यम, मझोला, न बड़ा न छोटा, मध्यम कद का ।

मभार दे० ( पु० ) मध्य, मौक, बीच, घनार ।  
 मझेली दे० ( खी० ) मभोली, बहेली ।  
 मभोला दे० ( गु० ) बीचला, मध्य का, मध्यम ।  
 मभोली दे० ( खी० ) एक प्रकार की छोटी गाड़ी ।  
 मञ्च तत्० ( पु० ) गरगज, डौंजा, मवान, उद्यासन,  
 खाट, सिंहासन ।  
 मञ्चा दे० ( पु० ) खाट, चौकी, सिंहासन ।  
 मञ्जन तत्० ( पु० ) मार्जन, माना, दाँत धोने का  
 द्रव्य, घूर्ण विधेय ।  
 मञ्जना दे० ( क्रि० ) उजला होना, फरछाना, साफ़  
 करना ।  
 मञ्जरी तत्० ( खी० ) बीर, मुकुल, कली, कोड़ी ।  
 मञ्जार तद्० ( पु० ) बिलास, बिड़ाल, बिल्ला ।  
 मञ्जौरा दे० ( पु० ) भौंक, मञ्जौरा ।  
 मञ्जु, मञ्जुल तत्० ( पु० ) सुन्दर, मनोहर, रम-  
 णीय, मनोच, अभीष्टित. इष्ट ।  
 मञ्जूपा तत्० ( खी० ) पेठारी, पिठारी, सन्दूकची,  
 छोटा सन्दूक, संस्कृत व्याकरण के एक ग्रन्थ का  
 नाम ।  
 मटक दे० ( खी० ) चोंचला, भावली, नखरा, हाव-  
 भाव ।  
 मटकन, मटकना दे० ( क्रि० ) औंछ घुमाना, औंछ  
 चमकाना, दुबराना, दुर्बल होना, भौंकना, ताकना ।  
 ( पु० ) पुरवा, मिट्टी का छोटा बरतन, बधना ।  
 मटकाना दे० ( क्रि० ) औंछ घुमाना, औंछ चम-  
 काना, कटाक्ष करना ।  
 मटकी दे० ( खी० ) मिट्टी का चढ़ा, मटकना, गगरी,  
 घूसनी, भूपकी ।  
 मटकोठा दे० ( पु० ) मिट्टी का बना घर ।  
 मटर दे० ( पु० ) कलाई विधेय, एक अन्न का नाम,  
 कबिली ।  
 मटरा दे० ( पु० ) एक प्रकार का देशमी वस्त्र, यड़ा  
 मटर ।  
 मटरी दे० ( खी० ) छोटा मटर, छीमी ।  
 मटियाना दे० ( क्रि० ) माटी लगाना, माटी घुपड़ना,  
 घटना, छून धौंचना ।

मटियारा दे० ( पु० ) झुताक खेत, जो खेत जो  
 जाता है ।  
 मटियाव दे० ( पु० ) उपेवा, उदासीनता प्रद  
 धानाकानी, सहन ।  
 मट्टी दे० ( खी० ) माटी, मृत्तिका, मिट्टी, निच  
 शरीर ।—करना ( वा० ) नाश करना, बिगाड़  
 खराब करना ।—खाना ( वा० ) मौस का  
 दुःख पहुँचाना, पीड़ा देना ।—डालना ( वा  
 तोपना, गाड़ना, भगड़ा मिटाना, दोष छिपा  
 —देना ( वा० ) गाड़ना, तोपना, छिपाना, मि  
 का छिद्र प्रकाशित नहीं होने देना ।—पर लड़ना  
 ( वा० ) भूमि के लिये भगड़ना, टर्पे लड़ना, शेठो  
 सी बात के लिये लड़ना ।—में मिलना ( वा० )  
 बेकार होना, खराब होना, नष्ट होना, बरबाद  
 देना ।—होना ( वा० ) निरर्थक होना, सत्वाना  
 होना, विना काम का होना, बेकार होना ।  
 मट्टा दे० ( पु० ) छौंछ, मट्टी, तक्र ।  
 मठ तत्० ( पु० ) छात्रावास, छात्रों के रहने का स्थान,  
 संन्यासी साधुओं का घर, पाठशाला, देवागार ।  
 मठड़ी दे० ( खी० ) मठरी, एक प्रकार की मिठाई  
 का नाम ।  
 मठा दे० ( पु० ) मट्टा, मही, घोल, चक्र । ( पु० )  
 ढीला, थियिल, आलसी ।  
 मठेर दे० ( पु० ) मटका, भौंड, मटकना ।  
 मडियाना दे० ( क्रि० ) छिपकाना, जमाना ।  
 मडुआ दे० ( पु० ) एक अन्न का नाम ।  
 मडोड़ दे० ( पु० ) बंठ, बल, पेंच, पेट का एक रोग ।  
 मडोड़ना दे० ( क्रि० ) बंठना, बल देना ।  
 मडोड़ा दे० ( पु० ) बंठन, मरोरा, घोघा, शूल की  
 बीमारी ।  
 मडन दे० ( खी० ) धावरण, अस्तर, टाकन, खोल ।  
 मडना दे० ( क्रि० ) तोपना, धावरण करना, छिपा  
 देना, कपड़ा चढाना ।  
 मट्टी दे० ( खी० ) फुटी, भौंपड़ी, मपट्ट ।  
 मडैया दे० ( खी० ) छोटा छपर, बहुत छोटी  
 भोपड़ी ।

मणि तल्ल ( पु० ) पत्थर विशेष, सुरक्षा आदि रत्न,  
नग ।—कर्मिका ( स्त्री० ) कार्या के एक तीर्थ का  
नाम ।—कार ( पु० ) मलियुक्त अलङ्कार आदि  
बनाने वाला जौहरी, न्याय के विन्तामणि नामक  
ग्रन्थ का कर्ता ।—श्रीध ( पु० ) धनाधिपति कुबेर  
के पुत्र का नाम ।—पूर ( पु० ) यदुचक्र के अन्तर्गत  
नाभि चक्र स्थित तीसरा चक्र ।—मण्डप ( पु० )  
रत्नमय गृह ।—मय ( पु० ) मणि द्वारा निर्मित,  
प्रभूत रत्न युक्त ।—माला ( स्त्री० ) मणिमय हार,  
मणि की माला, दन्तवत विशेष, लक्ष्मी, दीप्ति ।

मणियान्न तल्ल ( पु० ) कुबेर के एक कर्मचारी का  
नाम, एक बार इसने अज्ञान से महर्षि ऋषभ्य के  
शिर पर हूक दिया । महर्षि ने मनुष्य द्वारा मारें  
जाने का इसको श्राप दिया । अन्धमादन पर्यंत  
पर जब वे रहता था उसी समय सुवर्ण कमल लेने  
को भीमसेन वहाँ गये और उन्हींके हाथ से यह  
मारा गया ।

मणियाँ दे० ( स्त्री० ) माला का दाना ।

मणियार दे० ( पु० ) झूड़ी वाला, झूड़ी बनाने और  
बेकने वाला ।

पड तल्ल ( पु० ) मॉड़, कुस, पीच ।

पडन तल्ल ( पु० ) भूषण, अलङ्कार, गहना, सजने  
की वस्तु ।

पडप तल्ल ( पु० ) जन विश्रामगृह, तृणादि निर्मित  
देवगृह, मड़वा, ब्याह के लिये बनाया मृण गृह ।

पडल तल्ल ( पु० ) चन्द्र भूष के बाहर की परिधि,  
परिवेश, मोक्ष, चक्र, संघात, सङ्घ, सैनिकों की  
स्थिति विशेष, व्याघ्रभक्ष नामक गन्ध द्रव्य, कुङ्कुम  
मगरी का प्रधान नगर, जनपद, जिला, मुखा ।

डलाकार तल्ल ( पु० ) गोलाकार, अर्तुलाकार ।

डलाचीश तल्ल ( पु० ) मण्यलेखर, मरुत्ताध्यक्ष ।

डलाना दे० ( कि० ) घूमना, फिरना, चक्कर काट  
कर घूमना ।

डलिया दे० ( पु० ) कपोल विशेष ।

डली तल्ल ( स्त्री० ) मसूह, लमा, जया, रूप ।

मण्डवा दे० ( पु० ) मण्डप, कुड्ड, घेरा, बैठक, तृण  
निर्मित देवगृह ।

मण्डवी दे० ( स्त्री० ) मल्ल विशेष ।

मण्डा दे० ( पु० ) पेड़ा, दूध की मिठाई ।

मण्डित तल्ल ( पु० ) भूषित, अलङ्कृत, वेष्टित,  
जड़ित, शोभित, युद्धारित ।

मण्डियाना दे० ( कि० ) लेई लगाना, कल्प करना,  
कल्प चढ़ाना ।

मण्डी दे० ( स्त्री० ) हाट, बजार, घण आदि विकने  
का स्थान, गोलागड्ड ।

मण्डूक तल्ल ( पु० ) भेक, बॅग, मेढक, मुनि विशेष ।

मत तल्ल ( पु० ) अभिप्राय, सिद्धान्त, शाश्वत, रीति,  
धर्म, धर्म, धर्म वा शास्त्र का मन्तव्य, विचार,  
पन्थ, धर्म पन्थ ।—मतान्तर ( पु० ) अनेक मत ।

—विरोधी ( पु० ) धर्म विरोधी, अधर्म ।—अध  
लम्बी ( पु० ) मताध्वप, धर्माध्वपयी ।

मतङ्ग तल्ल ( पु० ) हाथी, हस्ति, गज, करी, अष्टमूक  
पर्यंत चासी एक मुनि, धानर-राज बालि ने जय  
दुन्दुभि नामक असुर को मार कर फेंका तब उसके  
शरीर के कंधर का छोटा मतङ्ग मुनि के शरीर पर  
पड़ा । इससे क्रुद्ध होकर मुनि ने बालि को श्राप  
दिया कि अष्टमूक पर्यंत पर अग्नि से बालि की  
मृत्यु होगी । तभी से वह अष्टमूक पर्यंत पर नहीं  
जाता था । इसीसे जय सुग्रीव किष्किन्धा से  
निकाले गये तब बालि के मय से इसी पर्यंत  
पर रहना सुग्रीव ने उत्तम समझा था ।

मतना दे० ( पु० ) ऊल का एक भेद ।

मतमेद तल्ल ( पु० ) अभिप्राय, विरुद्ध सिद्धान्त ।

मतराना दे० ( कि० ) मनाना, समझाना, बुझाना,  
जगाना ।

मतलाना दे० ( कि० ) जी चिनाना, जी प्रपना, जी  
प्रचलाना ।

मतवाला दे० ( पु० ) उन्मत्त, माता, मदमाता,  
अहङ्कार ।

मतहीन तल्ल ( पु० ) मतिहीन, निर्बुद्धि, बुद्धिहीन ।

मता दे० ( पु० ) उपदेश, परामर्श, विचार, सम्मति,  
सहाह ।



मति तत्० (स्त्री०) बुद्धि, मेधा, मनीषा, धी ।—भ्रम (५०) भ्रल. बुद्धि विपर्यय ।—मान ( ५० ) चतुर, बुद्धिमान्, विज्ञ ।

मत्त तत्० (यु०) उन्मत्त, मतवाला, पागल ।

मत्सर तत्० ( ५० ) द्वेष, डाह, दूषरे की बढती न सहना ।

मत्स्य तत्० ( ५० ) जल जन्तु विशेष, माछ, मछली, मीन, पुराण विशेष, भगवात् का प्रथम अवतार, विराट् देश ।—शन्धा ( स्त्री० ) मच्छोदरी, क्पास की माता ।

मथन तद्० ( ५० ) विलोचन, लोहन ।

मथना दे० ( स्त्री० ) महना, घिलोना, धी निकासना ।

मथनिया दे० ( स्त्री० ) मन्थन दण्ड, दधि मथने का दण्ड ।

मथनी दे० ( स्त्री० ) महानी, मथनिया ।

मथा द० ( ५० ) माथा, मस्तक, कपाल, सिर ।

मथानी दे० ( स्त्री० ) दूधहाड़ी, मटकी, दही महने की हड्डिया ।

मथित तत्० ( ५० ) मथा हुआ, घिलोया हुआ ।

मथुरा तत्० ( स्त्री० ) नगर विशेष, सप्तपुरियों के अन्तर्गत पुरी विशेष, श्रीकृष्ण का जन्म स्थान, हिन्दुओं का प्रसिद्ध तीर्थ ।

मथुरिया तत्० ( ५० ) माथुर, चौबे ब्राह्मण, मगुरा के वासी ।

मथौर दे० ( ५० ) चन्दा विहरी, चिट्ठा ।

मथौरा दे० ( ५० ) मूरजमुखी छाता ।

मद तद्० ( ५० ) गर्भ, मद्य, मत्तता, मोह, मादक वस्तु ।—माता ( ५० ) मतवाला, उन्मत्त, घह-झार ।

मदन तत्० ( ५० ) कामदेव, वसन्त ऋतु, धतूरे का वृक्ष, धतूर का पेड़ ।—गोपाल ( ५० ) श्रीकृष्ण की मूर्ति विशेष ।—घाण ( ५० ) कामदेव का घाण, एक फूल का नाम ।

मदार दे० ( ५० ) चर्क वृक्ष, अकथन का पेड़ ।

मदारी दे० ( ५० ) बाजीगर, बन्त्रजाली, सौंप वाला, नटघर ।

मदिक दे० ( ५० ) चमिमानी, अहङ्कारी, घमरवी ।  
मदिरा तत्० ( स्त्री० ) सुरा, दाह, मद्य, आसव ।

मदगु तत्० ( ५० ) अन्न विशेष, सुँग ।

मदगुर दे० ( ५० ) मत्स्य विशेष, एक प्रकार की मछली ।

मद्य तत्० ( ५० ) सुरा, मदिरा, मद, दाह ।—प ( ५० ) मद्यपी, शराबी, मद्य पीने वाला ।

मधमाता दे० ( ५० ) मतवाला, पागल, उन्मत्त ।

मधु तत्० ( ५० ) मद्य, मदिरा, पुष्पराज, शहद, चैत्र महीना ।—कर ( ५० ) झर, मौरा ।—कोष ( ५० ) शहद का छाता ।—प ( ५० ) मँथरा, झर, अलि ।—पर्क ( ५० ) दधि युक्त मधु, दही शीत शहद । घोड़योपचार पूजा का लठवाँ उपचार ।—मास ( ५० ) चैत्र, चैत का महीना ।

मधुपर्श दे० ( ५० ) पक्का फल, रसयुक्त फल,

मधुमाखी ( स्त्री० ) शहद की मक्खी ।

मधुमात दे० ( ५० ) रागिणी विशेष ।

मधुर तत्० ( ५० ) मीठा ।

मधुमल तत्० ( ५० ) मीम ।

मधुरी दे० ( स्त्री० ) मोटी, रसीली ।

मधुकारी तद्० ( स्त्री० ) ब्रह्मचारियों की मिला ।

मध्य तत्० ( ५० ) अन्तराग, बीच, मोंक, मकार ।

—भाग ( ५० ) मध्यस्थान, बीच का बीच ।—दिवस ( ५० ) मध्याह्न, दोपहर ।—देश ( ५० ) मध्य का देश, बीच का देश ।—लोक ( ५० ) मत्स्य लोक, मत्स्यलोक, पृथिवी ।—घर्ती ( स्त्री० ) नक्षत्र, विचवई ।—रूप ( ५० ) बीचवाला, सापी, निर्णय कर्ता ।—स्थल ( ५० ) कटि, कमर, कटिवाय ।

मध्यम तत्० ( ५० ) स्वर विशेष, राग विशेष, उष्णति विशेष, मध्य देश, ग्रहों की सामयिक सहा, मध्य में उत्पन्न ।—पाण्डव ( ५० ) अर्जुन, धनञ्जय, सत्रयसाधी ।

मध्यमा तत्० ( स्त्री० ) दृष्टरज्ज्वा नारी, बहूति विशेष, नायिका विशेष यथा :— दोहा ।—

“प्रिय सौं हित तैं हित करैं अनहित कीन मान ।

ताहि मध्यमा कहत हैं कवि मति राम सुजान ॥

व्याहृत तत् (५०) दिनका मध्य, दोपहर ।  
 तत् (५०) मन, चित्त, हृदय । (२०)  
 परिमाण विशेष, चासीस घेर की तौल ।—फा  
 दे० (५०) जयमाला, मणिपर्वी, गले की हड्डी ।  
 —कामना - तद् (५०) अभिलाष, इच्छा,  
 मनोरथ ।  
 नगडा दे० (५०) बली, पराक्रमी, बलवाला, बल  
 वान, समर्थ ।  
 नगडा दे० (५०) कूप का जगह चीतरा ।  
 नगडा दे० (५०) चटपटा, शूर, उत्साही, साहसी,  
 वीर ।  
 नन दे० (५०) मनोती, स्वीकार, मानन ।  
 नन तत् (५०) चिन्तन, स्मरण, ध्यान, जानी हुई  
 बात का स्मरण करना ।  
 ननभावन दे० (५०) सुन्दर, सुहायना, मनोहर ।  
 ननमय तत् (५०) मन्मथ, कामदेव, मदन ।  
 ननमोहन तत् (५०) मन भावन, मनोहर, सुन्दर,  
 मनोत्र ।  
 ननमौज दे० (५०) उच्चदुलता, यथेच्छाचारिता,  
 चपमान, चमपट ।  
 ननस्ता दे० (५०) इच्छा, अभिलाष, मनोरथ ।  
 ननसिज तत् (५०) कामदेव, कन्दर्प, चमक ।  
 ननसेर दे० (५०) मानुष, मनुष्य, मानव ।  
 ननस्ताप तत् (५०) मनःकष्ट, मानसिक दुःख, मन  
 की पीडा ।  
 ननहरण तद् (५०) चित्तचोर, मनोहर ।  
 ननहारी तद् (५०) मनोहारी, मन को हरण करने  
 वाला, चित्तचोर ।  
 नन दे० (५०) मानो, उपमाबोधक, उपमेयालङ्कार  
 बोधक, सादृश्यार्थक, समानता बोधक ।  
 ननाना दे० (क्रि०) प्रसादन, करना, प्रसन्न करना,  
 मनोती करना ।  
 ननार्थ तद् (५०) विचारार्थ ।  
 ननहार दे० (५०) पूडिहार, पूडि वाला ।  
 ननहारो दे० (क्रि०) मनोहारे की स्त्री ।

मनु तत् (५०) ब्रह्मा का पुत्र और मनुष्यों का प्रादि  
 पुरुष । प्रत्येक कल्प में चौदह मनुष्यों का प्रादिर्भाव  
 होता है । इनके नाम ये हैं । स्वायम्भुव, स्वरो-  
 चिय, उत्तम, तामस, रैवत, चाक्षुष, धैवस्वयु, साय-  
 षि, दक्षवाषि, ब्रह्मसावर्षि, धर्मसावर्षि, रुद्रवा-  
 षि, देवसावर्षि, और इन्द्रसावर्षि । इस समय  
 सप्तम मनु का प्राधिकार चलता है । ८म से १४  
 शब्द के तक मनुष्यों के प्राधिकार पीछे जायेंगे ।  
 मन्स्य पुराण में मनुष्यों के नाम इनसे भिन्न लिखे  
 गये हैं ।  
 मनुज तत् (५०) मनुष्य, मनु की वस्तुत, मन्द,  
 मनसेधु ।  
 मनुष्य तत् (५०) नर, मानव, मन्स्य, मनुज ।—स्य  
 (५०) मनुष्य का धर्म, मनुष्यपन ।  
 मनुहार दे० (क्रि०) सुन्दरी, मोहनी । (५०) आदर,  
 सत्कार ।  
 मनुवा दे० (५०) मन, वितार ।  
 मनौ, मानौ दे० (५०) सादृश्यार्थक, समानार्थक ।  
 मनोइ तत् (५०) सुन्दर, मनोहर, रमणीय, मनमा-  
 यन ।  
 मनोनीत तत् (५०) चाहीता, रचित, अभिनिधित ।  
 मनोयोग तत् (५०) चपधान, ध्यान ।  
 मनोरथ तत् (५०) इच्छा, कामना, वाचना, चमि-  
 लाप ।  
 मनोरम तत् (५०) मनोत्र, मनोहर, सुपट, सुन्दर ।  
 मनोरमा तत् (५०) सरस्वती नदी की एक धारा,  
 हैदरपति कास्थीय की महाराणी । परपुराम  
 के साथ कास्थीय का यह चाराम - होने के समय  
 ही इन्होंने अपने पति का पराजय निश्चित कर के  
 योगावलम्बन से अपने प्राण छोड़ दिये ।  
 मनोलील्य तत् (५०) मन की चतुर्कला, महर,  
 तरङ्ग, मानसिकभाव ।  
 मनोहर तत् (५०) सुन्दर, मनोत्र, सुपट ।  
 मनोती दे० (क्रि०) जामिनी, विचर ।  
 मन्त्र तत् (५०) मन्त्रय, पुक्ति, परामय, पु-  
 उपदेग ।

सन्त्रया तत्० (श्री०) एकान्त में कर्तव्य का अर्थधारण,  
 बुद्धि, परामर्श, सलाह, सम्मति ।  
 शन्ती तत्० (शु०) सम्मतिदाता, परामर्शदाता ।  
 मन्थन तत् (शु०) विलोडन, मघन, महना ।  
 मन्थनी दे० (श्री०) मन्थानी, महानी ।  
 मन्द तत्० (शु०) अपकृष्ट, अधम, सुख, स्वेच्छाचार,  
 अतीत्य, धल्प, धल्पण, घोड़ा, शिथिल ।—ता  
 (श्री०) सुखता, शिथिलता, सुराई, धल्पता ।  
 —गामी (शु०) शनैःगमन कर्ता ।—मन्द (शु०)  
 धीरे धीरे ।  
 मन्दर तत्० (शु०) मघनपर्वत, मन्दरपर्वत, पारि-  
 जात वृक्ष, द्वार विशेष ।  
 मन्दा तत्० (श्री०) संक्रान्ति विशेष, कम दाम में  
 पस्तु बेचने का समय, मूंड, धल्प, धीरा, कोमल,  
 नय ।  
 मन्दाकिनी तत्० (श्री०) स्वर्गगङ्गा, स्वर्णनदी,  
 संक्रान्ति विशेष ।  
 मन्दाक्रान्ता तत्० (श्री०) हृन्द विशेष ।  
 मन्दाग्नि तत्० (शु०) एक द्वारा चठराग्नि का निस्तेज  
 होना, अधीर्यता ।  
 मन्दार तत्० (शु०) स्वर्गीय पौध वृक्षों के धनर्गत  
 वृक्ष, विशेष ।  
 मन्दिर तत्० (शु०) भवन, गृह, देवालय, देवगृह ।  
 मन्दिरा दे० (शु०) मन्दीरा, भौम्ह, भाव ।  
 मन्त्र दे० (श्री०) मन्ती, मनन, स्वीकार ।  
 मन्वन्तर तत्० (शु०) एक मनु का राज्य काल, एक  
 मनु का समय ।  
 मपना दे० (क्रि०) मापना, नापना, परिमाण करना,  
 तोलना ।  
 मम तत्० (शु०) मेरा, हमारा ।  
 ममता तत्० (श्री०) मोह, माया, स्नेह, प्रेम ।  
 ममिया ससुर दे० (शु०) पति का मामा ।  
 ममियासास दे० (श्री०) पति की मामी ।  
 ममेरा दे० (शु०) मामा के सम्बन्ध का, मामा सम्ब-  
 धीय ।

ममोडा दे० (शु०) मझौरा, मझौरा, दूँद ।  
 मय तत्० (शु०) दैत्य विशेष ।—कल (शु०) क  
 विशेष ।  
 मयङ्क दे० (शु०) चन्द्रमा, चाँद ।  
 मयन दे० (शु०) कामदेव, मन्मथ, मदन ।  
 मयना दे० (श्री०) पति विशेष, सारिका ।  
 मया तद् दे० (श्री०) माया, ममता, मोह ।  
 मयी दे० (श्री०) सरावन, हँगा, एक प्रकार की मोटी  
 लकड़ी, जिससे खेत बराबर किया जाता है ।  
 मयूख तत्० (शु०) रासी, किरण, तेज, दीप्ति, क्वीलि,  
 प्रकाश ।  
 मयूर तत्० (शु०) पति विशेष, यिक्की, केकी ।  
 मरक दे० (शु०) संक्रामक रोग, महामारी ।  
 मरकचा दे० (शु०) बरौडी, खजरा ।  
 मरकत तत्० (शु०) मणि विशेष, हरे रङ्ग का मणि,  
 पत्ता ।  
 मरकहा दे० (शु०) मरकहा, मारने वाला, सुमर ।  
 मरखपना दे० (क्रि०) विनष्ट होना, कया रोष  
 होना, मर जाना, मर मिटना ।  
 मरखाहा दे० (शु०) मारने वाला, हुरचेने वाला ।  
 मरगजी दे० (शु०) मुत्काया हुआ, मुक्ति, यह शब्द  
 सतधर में प्रयुक्त हुआ है ।  
 मरघट (शु०) रमशान, सुदीघाट, सुदी जलाने का  
 स्थान, शवदाह स्थान ।  
 मरजाना दे० (क्रि०) मरना, मरण होना, प्राण  
 वियोग होना ।  
 मरजिया पनहुया; नदी कूप आदि में डूब कर वस्तु  
 निकालने वाला, मोती निकालने वाला ।  
 मरख तत्० (शु०) मरु, मरण, प्राण वियोग, मौत ।  
 मरना दे० (क्रि०) प्राण छूटना, मरजाना, मरु  
 होना ।  
 मरपच दे० (शु०) सड़ा, गला, गन्दा, गला ।  
 मरपचना दे० (क्रि०) प्रतिशय परिश्रम करना, मरना  
 बहुत दुःख सहना ।  
 मरभूखा दे० (शु०) उपाह, दिन खाया, खाक, पैदा ।  
 मरम तद् दे० (शु०) मरम, आशय, रहस्य, तन्त्र ।

मर्मराना दे० (क्रि०) मर्मर शब्द करना, चर-  
वराना, मचमचाना ।

मर्मराना दे० (क्रि०) मर्मर डालना, धाँचा देकर  
हत्या कराना, अनुमति देकर हत्या कराना ।

मर्मरैया दे० (गु०) मर्मरहार, मर्मरसाक्ष, मर्मरप्राय ।

मर्मराल तत्० (गु०) पक्षी विशेष, हंस, राजहंस, मेघ ।

मर्मरिच तत्० (स्त्री०) छोटा गोलाकार, कटु द्रव्य  
विशेष, गोल मर्मरिच, काली मिर्च ।

मर्मरियल दे० (गु०) दुर्घल, दुबला, पीतला, निर्बल ।

मर्मरी दे० (स्त्री०) मृत्यु रोग, संक्रामक रोग, मर्मरक,  
महामारी ।

मर्मरिचिका तत्० (स्त्री०) मृग वृष्णा, सूर्य की किरणों  
में जल प्रत्यय ।

मर्मरिचि तत्० (स्त्री०) किरण, राशी, छत्ररेणु को  
परिमाण । (गु०) मर्मर के पुत्र, मुनि विशेष, ये  
समर्थियों में एक है—माला (स्त्री०) सूर्य  
आदि का किरण समूह, दीर्घ समुदाय ।—माली  
(गु०) सूर्य, चन्द्र ।

मर्मर तत्० (गु०) निर्जल देय, जल रहित देय विशेष,  
मारवाड़ ।

मर्मरमा दे० (गु०) चुप भेद, एक पीछे जानाम, जिस  
के पक्षे सुगन्धित होते हैं ।

मर्मरु तत्० (गु०) वायु, जन पश्चात् वायु ।—पुत्र्य  
(गु०) आकाश, गगन, अन्तरिक्ष ।—पुत्र (गु०)  
भीमसेन, हनुमान ।—सख (गु०) देवराज, चन्द्र,  
अग्नि, अनेक, वायुमण ।

मर्मरूमि तत्० (स्त्री०) निर्जल देय, वृक्ष मर्मर  
तृणादि मूल्य भूमि या देश, शुष्क देश ।

मर्मरोड़ दे० (स्त्री०) मर्मरोड़, चैत, बल, चैत की दृढ़ ।

मर्मरोड़ी दे० (स्त्री०) मर्मरोड़ी, चैतन ।

मर्मरोह दे० (गु०) कोह, स्नेह, प्रेम, ज्यार, दुलार ।

मर्मरौत तत्० (गु०) बानर, कपि, कीरा ।

मर्मरौटी तत्० (स्त्री०) बानरी ।

मर्मर्य तत्० (गु०) मरण धर्मा, मनुष्य, मर्मर, मानव,  
मनुज ।—लोक (गु०) मनुष्य लोक, मर्मरों का  
लोक, मृत्यु लोक, भूमण्डल ।

मर्मरुफ तत्० (गु०) चर्चार् नामक पौधा । (गु०)  
मर्मरुन करने वालों, मर्मरने वालों, मीचने वाला ।

मर्मरुन तत्० (गु०) गात्र मर्मरुन, भङ्ग चप्पी, मर्मरन,  
रागड़न ।

मर्मरुल तत्० (गु०) वाद्य विशेष ।

मर्मरुत तत्० (गु०) पूर्यित, मला हुआ ।

मर्मरुनिया दे० (गु०) नीकर, सेवक, शरीर में तेल  
लगाने की नीकरी करने वाला ।

मर्मरु तत्० (गु०) मर्मर, रहस्य, भेद, अज्ञान, प्राय,  
आशय, अन्धि स्थान, जीवन स्थान ।—रु (गु०)  
मर्मरवेत्ता, रहस्य, तात्पर्य ज्ञाता ।—चैत्ता  
(गु०) मर्मरु, तात्पर्य ज्ञाता ।

मर्मरु तत्० (गु०) शब्द विशेष, ध्वनि विशेष, मृगे  
पक्ष का शब्द ।

मर्मरुदा तत्० (स्त्री०) मात्र, पत्र, प्रतिष्ठा, सीमा,  
टेक ।

मर्मरुदिक दे० (गु०) मानी, चादरी, सम्मानी ।

मर्मरुण तत्० (गु०) तितित्वा, चमा, सहना, धारिता ।

मर्मरु-तत्० (गु०) मेल, विष्टा, पाप, क्रिष्ट, वाग, पिष्ट  
कफ आदि ।—मर्मरु (गु०) वृक्ष विशेष, एक प्रकार  
का कपड़ा ।—मास (गु०) अधिमास, अधिक  
मास, लौट, पुष्पोत्तम महीना ।

मर्मरुकना दे० (क्रि०) मर्मरुकना, कहर के समान  
चलना, नष्ट से चलना, मटक कर चलना ।

मर्मरुड़ी दे० (गु०) जाति विशेष, जो नान बनाने का  
काम करती है ।

मर्मरुत दे० (गु०) मर्मरुत, पिष्टा, विष्टापट ।

मर्मरुन दे० (गु०) दलन, रागड़न, मर्मरुन ।

मर्मरुना दे० (क्रि०) मर्मरुना, चमना, रागड़ना, मर्मरुन  
करना, रागड़ कर साफ करना ।

मर्मरुया दे० (गु०) मर्मरु, कृडा, मेल ।

मर्मरुमेट दे० (गु०) उजाड़, वायानाथ, नास,  
विध्वंस ।

मर्मरुशिशि तत्० (स्त्री०) मर्मरु को शिशि ।

मलय तत्० (५०) पर्वत विशेष, दक्षिणावर्त, चन्द्र-  
नाद्रि, देश विशेष, उपद्वीप विशेष ।—ज (५०)

श्रीखण्ड, चन्दन ।—पवन (५०) सुगन्ध वायु ।

मलया दे० (स्त्री०) पदमाक, त्रिवृत्ता लता-विशेष ।

—गिरि (५०) चन्दन का रङ्ग ।

मलयाई दे० (स्त्री०) मलने की मञ्जरी ।

मल्लार्ई दे० (स्त्री०) सांड़ी, दूध का सार ।

मल्लाना दे० (क्रि०) मलवाना, मर्दन कराना,

चिसाना ।

मल्लार दे० (स्त्री०) रागिनी विशेष ।

मलिन तत्० (५०) मैला, धुँधला, अस्वच्छ, साफ

नहीं, उदास, मलयुक्त यस्तु, मल दूषित, कृष्णवर्ण,

निष्प नैमित्तिक क्रिया त्यागी, पाप प्रस्त ।—ता

(स्त्री०) मालिन्य, विरसता, अग्रफुल्लता ।—मुख

(५०) क्रूर, पक्ष, म्लान, बदन । (५०) प्रेत;

भूत ।

मलिनी तत्० (स्त्री०) रजस्वला स्त्री, वायुमती

नारी ।

मलिम्लुच तत्० (५०) मलमास, अधिकमास, अग्नि,

तस्कर, चोर, पवन वायु, हवा ।

मलिया दे० (स्त्री०) कौंघ या लकड़ी का बना होता

पात्र विशेष, जिसमें लगाने का तेल रखा जाता

है ।

मलीन तत्० (५०) मलिन, अशुन्दर, अस्वच्छ ।

मलेपत्र दे० (५०) दस वर्ष से ऊपर का घोड़ा ।

मलेछ तत्० (५०) म्लेच्छ, मैसी जात वाले, असभ्य,

जङ्गली, वर्धर, संस्कृत से अतिरिक्त भाषा बोलने

वाला, अर्धवृत्त, यह जाति जिसमें वायुवर्ष

व्यवस्था न हो ।

मल्ल तत्० (५०) बलवाद्, बाहुयोद्धा, पहलवान,

कुरती लड़ने वाला ।—युद्ध (५०) कुस्ती, पह-

लवानों की लड़ाई ।

मल्लार तत्० (५०) राग विशेष, दूसरा राग, छः

रागों में का दूसरा राग ।

मल्लारी तत्० (स्त्री०) रागिनी विशेष, वसन्त ऋतु  
की रागिनी ।

मल्लिक तत्० (५०) हंस विशेष, युद्ध हंस । (२०)

उपाधि विशेष, गाने वालों की एक जाति ।

मल्लिका तत्० (स्त्री०) पुष्प विशेष, बेना का पुष्प

पात्र विशेष, मृत्तिका पात्र, दोना ।

मल्लूर तत्० (५०) मालूर, वृक्ष विशेष, देव

विष ।

मवास दे० (५०) शरण, आश्रय, भरोसा, भाव ।

मशक तत्० (५०) मच्छर, मच्छर, मसा, डोंग ।

मशहरी दे० (स्त्री०) मवेहरी, खटवा वरण, एक प्रकार

का बना हुआ कपड़ा, जो मशीं से बचने के लिये

लगाया जाता है ।

मष्ट दे० (अ०) चुप, मौन, नीरव, निःशब्द, स्थिरता,

—मारना (वा०) चुप रहना, मौन रहना ।

मसक दे० (स्त्री०) पुर, पुरवट, चमड़े का जूत-

न पात्र ।

मसकना दे० (क्रि०) फटना, टूटना, मोड़ा फट

जाना, दरकना, दरक जाना ।

मसकाना दे० (क्रि०) फाड़ना, तोड़ना, मसकाना,

दरकाना, चीरना ।

मसविर्दे दे० (स्त्री०) मसा, मौस वृद्धि ।

मसमसाना दे० (क्रि०) पिसापसाना, पिते पिताना,

भीतर ही जलते रहना ।

मसखना दे० (क्रि०) कुचलना, मीजना ।

मसा दे० (५०) मसविर्दे, रङ्गा ।

मसान तत्० (५०) श्मशान, मरघट, मरघटा ।

मसानिया दे० (५०) डोम, कुमार । (५०) श्मशान

वासी, श्मशान पर रहने वाला ।

मसिधानी तत्० (स्त्री०) मसिपात्र, दवात ।

मसी तत्० (स्त्री०) स्याही, सियाही, कासी ।

मसीना दे० (स्त्री०) अक्षी, मीसी ।

मसूडा दे० (५०) दाँतों के ऊपर का मौस ।

मसूर दे० (५०) अन्न विशेष, मञ्जरी ।

मसूरिया दे० (बी०) गोटी, चितला, वेवक, माता ।

मसे दे० (बी०) सूँछ, रमघ ।

मसोसना (क्रि०) मरोड़ना, निघोड़ना, धीरे धीरे हट होना ।

मस्तक तत्० (पु०) माथा, छिर, कपाल ।

मस्तूल दे० (पु०) नाव का डबड़ा, जिस पर पाल ताना जाता है । यह शब्द पोर्तुगाली भाषा के 'मस्तो' या 'मस्तरो' शब्द से निकला है ।

मस्याधार तत्० (पु०) मसीपात्र, दवात ।

मस्ता दे० (पु०) बड़ा, मसा, मसै वृद्धि ।

महंगा दे० (पु०) महर्घ, बहुत मूल्य, अधिक दाम का, बड़े माल का ।

महंगी दे० (बी०) काल, दुर्भिक्ष, दुःसमय ।

महक दे० (बी०) सुगन्ध, सुवास, गन्ध ।

महकना दे० (क्रि०) बसाना, गन्ध छानना, सुवास छानना ।

महकाना दे० (क्रि०) सुँछाना, धावना, धास देना ।

महकीला दे० (पु०) सुगन्धित, सुवासित, सुगन्ध (युक्त) ।

महत तत्० (पु०) श्रेष्ठ, बड़ा, मान्य, माननीय, पूज्य, श्रेष्ठ ।

महतापी दे० (बी०) माता, अमनी, माँ, चम्पा ।

महतो दे० (पु०) जाति विशेष, कीहरी, चौधरी, जाति का प्रतिष्ठित ।

महत्ष तत्० (पु०) बड़ापन, श्रेष्ठता, उच्चता, प्रतिष्ठा, मान, मर्यादा ।

महना दे० (क्रि०) मयना, विलोना, विलोडन करना ।

महन्त तत्० (पु०) मठाधीश, गुहार चपवा साधुओं का प्रधान, जमींदार साधु, गद्दीधर ।

महन्तार्ह तत्० (बी०) महन्त का काम, महन्त की रीति ।

महर दे० (पु०) प्रधान, सुवर, नेता ।

महरा दे० (पु०) कदार, धीमर, मोर्द, काम करने

वाली जाति ।

महरी दे० (बी०) महरा की स्त्री ।

महरीक तत्० (पु०) लोक विशेष, धुलीक, बोदि सप्रसोक के चत्तर्गत चौथा लोक ।

महर्षि तत्० (पु०) [महा + ऋषि] मन्त्रद्रष्टा ऋषि, श्रेष्ठ ऋषि ।

महा तत्० (पु०) बड़ा, उत्तम, श्रेष्ठ, महान ।—उन्नत (पु०) कदम्ब वृक्ष, कदम का पेड़ ।—कन्द (पु०) लहसुन ।—काम (पु०) शिव का द्वारपाल, नन्दीश्वर, हाथी (पु०) मोटा शरीर वाला, भारी ।

—काल (पु०) विष्णुस्वरूप भ्रमण समय, शिव की मूर्ति विशेष, प्रथमगण विशेष ।—काली (बी०) दुर्गा, महाकाल की पत्नी ।—कुम्भी (बी०) कामफल ।—कोट्ट (पु०) चतुश्चक्र, अत्यन्त कुट्ट रोगक्रान्त ।—छाल (पु०) समुद्र की खाड़ी ।—घोर (पु०) नरक विशेष, काकड़ा-सिंघी, श्राप्यन्त भयानक, बहुत डरने वाला ।

—जन (पु०) साहुकार, सेठ । (पु०) श्रेष्ठ उत्तम ।—जनी (बी०) महाजन का काम, कौठी वाली, लेन देन का काम, व्यवहार ।—जम्बू (पु०) नामुन, पल विशेष ।—तम (पु०) माहात्म्य, उप-

कारिता, उपयोगिता, प्रसिद्ध, बड़ाई, चतुश्चक्र-कार, अत्यन्त श्रेष्ठ ।—तल (पु०) पद्म तल, पाताल ।—तीर्थ (पु०) उत्तम तीर्थ, उपवतीर्थ, उत्तम क्षेत्र, पुण्य स्थान ।—तेजा (पु०) प्रतापी, तेजस्वी, नवत्री, भाग्यवान ।—निद्रा (बी०) मरण, मृत्यु, अधिक निद्रा, चेत नौद ।—निशा (बी०) चाँचीरात, निशीथ ।—नुमाच (पु०) [महा + अनुभव] महाशय, प्रसन्न हृदय, विशाल हृदय ।

—पदाक (पु०) शर्प विशेष, निधि विशेष ।—पातक (पु०) पाप विशेष, महाहत्या, घुरावान, गुरु श्री गमन आदि से उत्पन्न पाप ।—पातकी (पु०) महापापी, चधर्मी, पतित ।—पुष्ट (पु०) श्रेष्ठ पुष्ट, उत्तम पुष्ट, सुजन, सुजन ।—प्रभु (पु०) परमात्मा, परमेश्वर, चैतन्य देव, यज्ञमा चार्य ।—प्रलय (पु०) त्रिलोक का नाश, विरव का ध्वंस, कल्याण, ब्रह्मा की साधु की समाप्ति ।

—ठनकना ( या० ) अनिष्ट की आशाद्धा करना, भीत होना, डरना ।—रगडना ( या० ) बिनती करना, चिरौरी करना, नयता पूर्वक प्रार्थना करना ।

माथी लैना दे० ( वा० ) समान बनाना, एक समान बनाना ।

माधुर तत्० ( पु० ) ब्राह्मण विशेष, मयुरा के घासी ब्राह्मण ।

माथे पर चढाना दे० ( वा० ) आदर करना, अतिशय आदर करना, आवश्यकता से अधिक मानना ।

मादक तत्० ( पु० ) उन्मादकारी, द्रव्य, नशीली वस्तु ।—ता ( स्त्री० ) नशा, अमल, मत्तता ।

माद्री तत्० ( स्त्री० ) राजा पाण्डु की रानी, और मद्र देश के राजा की रानी । इसके गर्भ से अरिपुत्रो-कुमार के शोरस से मकुल और सहदेव उत्पन्न हुए थे । पाण्डु के मरने के अनन्तर ये भी पति के साथ मर गयीं ।

माधव तत्० ( पु० ) विष्णु का नामान्तर माँ लक्ष्मी को कहते हैं, उनके पति होने के कारण विष्णु का नाम माधव है । बसन्त ऋतु, वैशाख का महीना, किरातार्जुनीय महाकाव्य का विद्यमान टीकाकार ।

माधवाचार्य तत्० ( पु० ) वेदों के भाष्यकर्ता सायणाचार्य क बड़े भाई, ख्रिष्टीय १४वीं सदी में दक्षिण की हुन्नमन्ना नदी के तीरस्थ पम्पा नगरी में इनका जन्म हुआ था । इनके पिता का नाम सायण और माता का नाम श्रीमती था । ये विजयनगर के राजा बुक्कनराय के कुलपुत्र और प्रधान मन्त्री थे । इन्होंने भारतीयों के पास सत्यास प्रहण किया था । १३३३ ई० में ये गृह्णीरी मठ के अध्यापक बनाये गये । ८० वर्ष की अवस्था में इनको मृत्यु हुई थी । इन्होंने पराशर संहिता का एक भाष्य लिखा है, उसीमें अपनी परिचय भी दिया है ।

माधवी तत्० ( स्त्री० ) लता विशेष, बसन्ती लता ।  
माधुर्य तत्० ( पु० ) मधुरता, मीठापन, मिठास ।

माधवी तत्० ( स्त्री० ) मदिरा विशेष, महुए का पत्तों  
मान तत्० ( पु० ) प्रतिष्ठा, आदर, सम्मान, पण, कीर्ति, अभिमान, अहङ्कार ।

मानता दे० ( पु० ) पण, प्रतिष्ठा, मानत ।  
मानना दे० ( क्रि० ) पण रखना, आदर करना, सम्मान करना, प्रेम करना ।

माननीय तत्० ( पु० ) मान्य, अहं प्रुष्य, शायर ।  
मानव तत्० ( पु० ) मनुष्य, दनुज ।  
मानस तत्० ( पु० ) मन, हृदय, मनसा ।  
मान सम्मान दे० ( पु० ) आदर, प्रतिष्ठा ।

मानसिंह दे० ( पु० ) अम्बर के राजा भगवानदास का प्रतीका, इनके पिता का नाम जगत्सिंह था । भगवानदास ने इनको अपना दत्तक पुत्र बनाया था । भगवानदास के मरने के बाद मानसिंह अम्बर के राजा हुए । भगवानदास की बहिन सखाट अकबर से श्याही गयी थी और मानसिंह ने अपनी बहिन का श्याह सलाम से किया था । सखाट के साथ वैवाहिक सम्बन्ध होने के कारण इनको राज्य का उष पद मिला था, इन्होंने पठानों के हाथ से बङ्गदेश को छीन कर मुगल सखाट के अधीन किया । मुगल पर भी इन्होंने मुगल सखाट की विजय पताका फहराई थी, परन्तु रणस्थल में महाराणा प्रताप से मिल कर इन्होंने अपने स्वरूप का ज्ञान हो गया था ।

मानहू दे० ( च० ) मानो, समान, सदृश । ( क्रि० ) मानो, जानो, समझो ।

मानिक जोड़ दे० ( पु० ) पत्नी विशेष ।

मानिनी तत्० ( स्त्री० ) मानवती, अभिमानवती स्त्री ।  
मानी तत्० ( पु० ) अभिमानो, अहङ्कारो ।

मानुष तत्० ( पु० ) मनुष्य, मानव ।

मानुष्य तत्० ( पु० ) मनुष्यत्व, पीठ्य ।

मानो दे० ( च० ) हय, यथा, उपमायैक । ( क्रि० ) जानो, समझो, बुझो । ( पु० ) बिहारी, बिलाव ।

मान्य तत्० ( पु० ) पूजनीय, प्रुष्य, माननीय ।  
माप दे० ( पु० ) परिमाण, माप ।

शपना दे० (क्रि०) परिमाण करना, नापना, तोलना ।  
 ना नाप दे० (पु०) मापना पित्त ।  
 मामा दे० (पु०) मातुल, मा-का भाई ।  
 मामी दे० (स्त्री०) मामा की स्त्री, मामा की पत्नी ।  
 —पीता (वा०) पचपात करना, पच-खींचना ।  
 मामू दे० (पु०) मामा, मातुल, मर्प विशेष ।  
 माया तत्त्वं (स्त्री०) कृपा, मोह, दया, कृपा, अतु-  
 कम्पा, प्रेम, स्नेह, छान, करुण, धोखा, सम्पत्ति,  
 धर्म, योग माया, इन्द्रजाल विद्या ।—कृत (पु०)  
 संसार, इन्द्रजाली । (पु०) माया से निर्मित,  
 माया द्वारा कृतोद्युष्टा ।—पति (पु०) पर-  
 मात्मा, विष्णु, भगवाद् ।  
 मायावी तत्त्वं (पु०) छत्ती, कपटी, राक्षस विशेष ।  
 मायिक तत्त्वं (पु०) केन्द्रजालिक, नट, नजर बन्द  
 करके तमासा करने वाला ।  
 मार तत्त्वं (पु०) कान्धेय, मन्मथ, मदन । (स्त्री०)  
 ममार, लड़ाई ।—कुटाई (स्त्री०) मारना,  
 कुटना, धुनना ।—केश (पु०) मारक छद्म, लग्न से  
 दूधरे कीर तातके घर का खामी ।—खाना (वा०)  
 पिटाजा, पिटना ।—गिराना (वा०) पछाड़ना,  
 पटक देना ।—पड़ना (वा०) मारखाना, पिटाना ।  
 —पीट (स्त्री०) मारामारी, लड़ाई, भिड़ाई ।  
 —मारना (वा०) अवघात करना, आत्महत्या  
 करना ।—लाना (वा०) हट लाना ।—लेना  
 (वा०) मारना, जीतना ।—हटाना (वा०) जीत  
 लेना, मारना और हटाना, मार कर हटा देना ।  
 मारग तत्त्वं (पु०) मार्ग, पथ, बाट, डगर, धर्ममार्ग,  
 धर्मपट्टिका ।  
 मारना दे० पीटना, खिगाड़ना, पथ करना ।  
 मारान्तक तत्त्वं (पु०) हिंसक, हिंज ।  
 मारा पड़ना दे० (वा०) मारा जाना, बड़ी हानि  
 होना ।  
 मारामारा फिरना दे० (वा०) बिना काम-रुद्धे  
 उभर फिरना, डौवादील होना, कहीं आमत  
 न मिलना ।

मारी तत्त्वं (स्त्री०) मृत्यु, मौत, मृत्युदायक रोग ।  
 मारीच तत्त्वं (पु०) राक्षस-विशेष, ताड़का राक्षसी  
 का बेटा ।  
 मारुत् तत्त्वं (पु०) हवा, वायु, बयार, पवन ।  
 —सुत (पु०) हनुमान, भीमसेन ।  
 मारुतात्मज तत्त्वं (पु०) वायु पुत्र, हनुमान ।  
 मारू दे० (पु०) घुट्ट वाद्या, लड़ाई का वाजा, एक  
 प्रकार का गाना, जो लड़ाई में गाना जाता है ।  
 मारे दे० (पु०) करण, निमित्त, से । यथा—धूप  
 के मारे धवाकुल है, मारे भीड़ के मार्ग नहीं  
 भ्रुकता है ।  
 मार्ग तत्त्वं (पु०) सड़क, बाट, राह, रास्ता, पथ ।  
 मार्गशीर्ष तत्त्वं (पु०) चगहन, मगधिर ।  
 मार्जन तत्त्वं (पु०) परिष्कार करण, जोधन ।  
 मार्जार तत्त्वं (पु०) बिल्ली, मिलाव, मंजार ।  
 माल दे० (पु०) मन्त्र, पट्टा, पहलवान ।  
 मालती तत्त्वं (स्त्री०) पुष्प विशेष ।  
 मालपूचा दे० (पु०) पकवान विशेष ।  
 माला तत्त्वं (स्त्री०) पुष्पहार, रत्न या सोने का  
 हार ।—कार (पु०) माली, चाणवान, माला  
 बनाने वाला ।—दीपक (पु०) चणालङ्कार  
 विशेष ।  
 मालिन दे० (स्त्री०) मालाजार की स्त्री ।  
 मालिन्य तत्त्वं (पु०) मलिनता, मैलापन ।  
 माली दे० (पु०) पुष्प व्यवसायी, मालाकार ।  
 माल्य तत्त्वं (पु०) माला, पुष्प की माला ।  
 मावस दे० (पु०) अमावस, अमावस्या ।  
 माघा दे० (पु०) शपठे की पिलाई, खोखा,  
 खोटा हुआ दूध ।  
 माप तत्त्वं (पु०) खल विशेष, उरद ।  
 माघा दे० (पु०) मान विशेष, पजन, घोठ रसी की  
 तेल ।  
 मास तत्त्वं (पु०) महीना, तीस दिन ।—का चार  
 (पु०) महीने का अन्तिम दिन ।  
 मासात्र तत्त्वं (पु०) मास का पिठना दिन, मास  
 की समाप्ति ।



मिङ्गनी दे० (स्त्री०) बकरी आदि की नेंही ।  
 मिचकारना दे० (क्रि०) निचोड़ना, गालना, खंगालना, अघासना ।  
 मिचना दे० (क्रि०) बन्द करना, झूँटना, झाँखें बन्द करना ।  
 मिचराना दे० (क्रि०) धीरे धीरे खाना, अनिच्छा से खाना, अरुचि पूर्वक भोजन ।  
 मिचलाना दे० (क्रि०) झाँख झूँटना, भौंचना, बन्द करना ।  
 मिटना दे० ( क्रि० ) बिगड़ना, बनी हुई बात का बिगाड़ना, लिखे अक्षरों का बिगड़ना ।  
 मिटाना दे० (क्रि०) बिगड़ना, नष्ट करना ।  
 मिटिया दे० ( स्त्री० ) मट्टी का बर्तन, घड़ा, गगरी, पैला ।  
 मिट्टी दे० ( स्त्री० ) मट्टी, मृत्तिका, माटी ।  
 मिट्टी दे० (स्त्री०) चुम्बा, चूमा, चुम्बन ।  
 मिठरी दे० (स्त्री०) मठरी, पकवान विशेष ।  
 मिठाई दे० ( स्त्री० ) मिष्ठान्न, मोरीनी, मिठास, मधुरता ।  
 मिठास दे० (स्त्री०) मधुरता, मिष्ठता, मिठाई ।  
 मित तत्० (गु०) परिमित, नया हुआ नौला हुआ ।  
 —प्रद ( गु० ) परिमितदाता, हिसाब से देने वाला । —व्ययी ( गु० ) परिमित व्ययी, अल्प व्यय करने वाला, धाय के अनुसार व्यय करने वाला ।  
 मिताक्षरा तत्० ( स्त्री० ) स्मृति के एक ग्रन्थ का नाम । प्रसिद्ध याज्ञवल्क्ये स्मृति की टीका ।  
 मिति तद्० (स्त्री०) मान, परिमाण, अन्न, भर्पाद ।  
 मित्ती दे० (स्त्री०) तिमि, दिन, ब र, बासर ।  
 मित्र तत्० ( पु० ) बन्धु, मखा, सुहृद्, मोत, शत्रु से अन्ध, हिट्ट, स्नेही, प्रेमी ।—ता (स्त्री०) बन्धुता, मण्य, परस्पर प्रीति ।—द्रोही ( गु० ) मित्र का द्रोही, खल, दुष्ट, बैरी ।—लाभ (गु०) सुहृत्प्राप्ति, बन्धुलाभ ।—वर्ग सुहृद्गण ।  
 मित्राई तद्० (स्त्री०) मित्रता, बन्धुता ।

मिध तत्० (घ०) परस्पर, अन्योन्य, आपस में ।  
 मिथिला तत्० (स्त्री०) नगरी विशेष, जनकराज्य के पुरी ।—पति (गु०) मिथिला का राजा, जनक ।  
 मिथिलेश तत्० ( पु० ) [ मिथिला + ईश ] राजा जनक ।—कुमारी (गु०) जानकी, सीता ।  
 मिथुन तत्० (गु०) जोड़ा, युग्म, खे पुत्र का जोड़ा, द्वन्द्व, युगल, तीसरी राशि ।  
 मिथ्या तत्० ( स्त्री० ) असत्य, झूठ, धयधार् ।  
 —चार ( गु० ) [ मिथ्या + आचार ] कपटाचार, दाम्भिक ।—दृष्टि (स्त्री०) कर्मफलापवादक ज्ञान, नास्तिकता, असत्य दर्शन ।—घादी (गु०) असत्य वादी, झूठा ।—मियोग (गु०) [ मिथ्या + अभियोग ] असत्य दोषारोपण, मिथ्यावाद झूठी लडाई ।  
 मिनती दे० ( स्त्री० ) बिनती, प्रार्थना, निवेदन, चित्तौरी ।  
 मिनियाना दे० ( क्रि० ) माँ माँ शब्द करना, बकरी का शब्द करना ।  
 मिमियाहट दे० (स्त्री०) बकरी आदि का शब्द ।  
 मिरगी दे० (स्त्री०) घूर्णा, रोग विशेष, अपस्मार ।  
 मिर्च दे० (स्त्री०) मरिच, गोल मरिच ।  
 मिर्चा दे० (स्त्री०) मिर्चाई, लाल मिर्च ।  
 मिर्दङ्ग तद्० (गु०) मृदङ्ग, वाद्य विशेष, हस्तवाद्य, एक प्रकार का ढोल ।  
 मिर्दहा दे० (गु०) ग्रामयासी, चर्दली ।  
 मिलन दे० (गु०) मेज, मिलाप, साक्षात्कार, संयोग, दर्शन, मेट ।—सार (गु०) मेली, मिलाप ।  
 मिलना दे० ( क्रि० ) प्राप्त होना, लाभ, भेंटना, मिलना, मेल करना, जुड़ना, पाना, बराबर होना ।  
 —जुलना ( घा० ) मदा मिला रहना, शुद्ध भाव से मिलना, दिल खोल कर मिलना ।—हिलना (घा०) एकत्रित रहना, एक साथ रहना ।  
 मिले जुले रहना दे० (घा०) मेल मिलाप से रहना प्रेम पूर्वक रहना ।  
 मिलाप दे० (गु०) मेल, प्रेम, मित्रता, मित्राई ।

मिलापी दे० (गु०) मिलनसारी, मेलो, सञ्जन, मित्र ।

मिलाव दे० (गु०) मिलौनी, मेल, वनाव, मित्रता ।

मिलित तत्० (गु०) एकत्रित, मिश्रित, मिला हुआ ।

मिश्र तत्० (गु०) वैद्य, ब्राह्मणों की पदवी, प्रतिष्ठित मनुष्य, पूज्य, माननीय । (गु०) संयुक्त, मिश्रित । (गु०) देश विशेष ।—केशी (खी०) बेरया, एक स्वर्गबेरया ।

मिश्रित तत्० (गु०) मिलित, मिला हुआ, घाल मेल ।—भाषा (खी०) मिलो हुई भाषा, खिचड़ी भाषा, अगुदु भाषा ।

मिश्री दे० (गु०) स्वनाम प्रसिद्ध मिठाई ।  
मिष तत्० (गु०) ब्याज, छद्म, कैतव्य, कपट, बहाना ।

मिष्ट तत्० (गु०) मोटा, मधुर ।  
मिष्टान्न तत्० (गु०) मिठाई, पकवान, शीरीनी ।  
मिसना दे० (क्रि०) पीसना, घूर्ण करना, मलना ।  
मिस्सी दे० (खी०) मोची, मुकमजून ।

मिहदो दे० (खी०) मेंहदी, वृक्ष विशेष, इसके पत्तों से खियाँ हाथ पैर रङ्गती हैं ।

मिहना दे० (गु०) ताना, बोली, ठठोली ।—मारना (या०) ताना मारना, ठठोली करना ।

मिहरा दे० (गु०) खी के समान रहने वाला पुरुष, नारी छपी पुरुष, मेहरा ।

मिहराक दे० (खी०) महिला, नार, तिरिया, तोय ।

मिहरी दे० (खी०) मिहरिया, खी, भार्या, पत्नी ।

मिहाना दे० (क्रि०) गीला होना, मींगना, सीढ़ना ।

मिहिका तत्० नोहार, कुहरा, हिम ।

मिहिर तत्० (गु०) रवि, दिवाकर, घूर्ण ।

मींगी दे० (खी०) पीज, छूटा, मार, मज्जा, मेद ।

मीच दे० (खी०) मीत, मृग्यु, मरण, निधन । यथा—  
“चिन्तनीय द्वै यस्तु है सदा जगत के बीच,  
ईश्वर के पदपद्म युग और चापनी मीच ।”  
मीचना दे० (क्रि०) मूँदना, टाँकना, मिचना, मरना ।

मीजना दे० (क्रि०) मलना, मसलना, रगड़ना, रगड़ कर रस निकालना ।

मीजू दे० (गु०) मधुर, कलाई विशेष ।

मीठा दे० (गु०) मधुर, धीमा, विष विशेष ।

मीठिया दे० (खी०) मीठी, जूमा, चुम्बा, मच्छी ।

मीठी दे० (खी०) मच्छी, मीठिया, जूमा ।

मीत दे० (गु०) मित्र, सुजन, सनेही, मीना ।

मीतन दे० (गु०) गनामी, एक नाम वाला, सखी, सनेही ।

मीन तत्० (गु०) मछली, मत्स्य ।—केतन (गु०) कामदेव, मदन, मन्मथ ।

मीना दे० (गु०) जङ्गली जाति विशेष, इस जाति के लोग राजपुताने में रहते हैं और चोरी चकैतो करते हैं । यथा—

निन्दहिं चाप सरहहिं मोना,  
धिग जीवन रघुबीर विहोना ।  
—रामायण ।

मीमांसक तत्० (गु०) मीमांसा शास्त्रवेत्ता, विद्वान्त-कारी, निष्पत्तिकारो, निर्णय कर्ता ।

मीमांसा तत्० (खी०) विचार, निष्पत्ति, विद्वान्त, निर्णय, दर्शन शास्त्र विशेष, पूर्व-मीमांसा और उत्तर मीमांसा इस दर्शन के ये दो भेद हैं । पूर्व मीमांसा में कर्मकाण्ड की परस्पर विरुद्ध बातों का निर्णय किया गया है । उत्तर मीमांसा में उपनिषद् के वाक्यों का विचार किया गया है । उत्तर मीमांसा का दूसरा नाम वेदान्त दर्शन है, पूर्व मीमांसा के आचार्य जैमिनि और उत्तर मीमांसा के आचार्य व्यास हैं ।

मीमांसित तत्० (गु०) विचारित, निर्णीत, विद्वान्तित ।

मीमीयाना दे० (क्रि०) में में करना, मिमियाना ।

मीसना दे० (क्रि०) मलना, सुरेजना, मूँदना करना ।

मुँह दे० (गु०) मुख, बदन, ज्ञान ।—अंधेरा (या०) सन्ध्या का समय या प्रातःकाल, भुलफुलाना-हट, अंधेरा, जब मुँह न दीखे ।—अपना स्ना

ले के रह जाना ( वा० ) निराश होना, हताश होना, कुछ कर न सकना ।—आना ( वा० ) रोग विशेष, मुँह फूलना, मुँह में आते पडना ।  
 —उतर जाना ( वा० ) उदास होना, दुखी होना, क्रुध पाना ।—करना ( वा० ) सामना करना, मिलाना, बराबरी करना, साथ देना, फौड़ा चीरना, आक्रमण करना, धावा करना, टुट पडना, देखना, चलना, जाना ।—का फूँहड ( वा० ) गाली बकने वाला, मनमाना बोलने वाला ।  
 —काला ( वा० ) कलङ्क, अपराध, दोष ।—काला करना ( वा० ) कलङ्क लगाना, अपराध लगाना, अपमान करना ।—के कौवे उड जाना ( वा० ) उदास होना, व्याकुल होना, चिन्तित होना ।  
 —खोलना ( वा० ) गाली देना, मामला करना, जवाब देना उत्तर करना ।—चढाना ( वा० ) क्रोध करना, मेम करना, प्रेम करना, मामने होना ।—चलाना ( वा० ) काटना, खाना, इधर की यात उधर करना, चुगली करना ।—चौर ( वा० ) लज्जाबु, लज्जाशील, डरपोक, अपराधी ।  
 —चौरी ( वा० ) लाज, भय, छिपकर ।—छिपाना ( वा० ) छिपना, छुकना, लज्जा से छिपना ।  
 —उठाना ( वा० ) मुँह पर मारना, लज्जित करना, निरुत्तर करना, झूठा साबित करना ।  
 —डालना ( वा० ) मँगना, याचना, याचन करना, किसी विषय में भाग लेना ।—ताफना ( वा० ) चकित होना, विस्मित होना, माँचका जाना ।—तोडना ( वा० ) दबा देना, पराजय कर देना, हराना, दुख देना ।—तो देखे ( वा० ) समीपता बताना, अपनी शक्ति न जान कर बड़े काम को करने वालों का इस वाक्य से मायधान किया जाता है ।—थुथाना ( वा० ) मुँह बनाना ।  
 —दिखाई ( खी० ) बच्चे या नयी बहुओं को मुँह देखकर कुछ देना ।—देख कर बात करना ( वा० ) लुशामद करना, किसी को प्रसन्न करने के लिये उसके मन के योग्य बातें करना । देखना, सहायता मँगना, आवा की प्रतीक्षा करना आदि करना ।—देख रहना ( वा० ) आश्चर्य होना, किसी के कारण क्रोध दबा लेना ।—देखे की

प्रीति ( वा० ) वाहरी प्रेम, दिखावटी प्रेम ।—पर गर्म होना ( वा० ) सामने क्रोध करना ।—पर लाना ( वा० ) कहना ।—पर हवाई उडना ( वा० ) मुँह की रगत उड जाना, निष्प्रभ बनना, फिट्ट पडना ।—पसारना ( वा० ) अधिक मँगना ।  
 —फेरना ( वा० ) अपमान होना, रुक जाना ।  
 —फैलाना ( वा० ) अधिक चाहना, ज्वर मँगना, अधिक लोभ दिखाना ।—बन्द करना ( वा० ) बोलने न देना, निरुत्तर करना ।—गुना ( वा० ) त्वोरी चढाना, अपमान होना ।—वना ( वा० ) मुँह खोलना, मुँह फाडना गम्दाई होना ।  
 —विगडना ( वा० ) अपमान होना, क्रोध राना, घुटा मानना ।—विगाडना ( वा० ) त्वोरी चढाना क्रोध करना, अपमानित करना, तङ्क कर देना दुख देना ।—बोला ( वा० ) किया हुआ, बनाया हुआ, शब्द में धनाया हुआ ।—मरी ( वा० ) रिश्तत, पूत्र, उत्तकेश ।—मँगा ( वा० ) अभीष्टत, चाहा हुआ, अपनी इच्छा के अनुसार ।  
 —मारना ( वा० ) चुप रहना, उदास होना, चिन्तित होना ।—मे पानी आना ( वा० ) अधिक चाह, अतिशय लोभ, नासब ।—मोडना ( वा० ) फिर जाना, छोड देना, चला जाना ।  
 —लगना ( वा० ) हित मिल जाना, अधिक प्रेम होना, अधिक मित्रता होना ।—लगाना ( वा० ) आदर करना, प्रेम करना, बहुत बातना ।—ले के रह जाना ( वा० ) लज्जा जाना, लज्जित होना ।  
 —सुकडना ( वा० ) मुँह का रङ्ग बदलना, मुँह उतरना ।—से फूल भडना ( वा० ) आशोर्षद देना ।

मुकरना दे० ( कि० ) नकारना, टोडना, अस्वीकार करना, न मानना ।

मुकुरी दे० ( खी० ) एक प्रकार का छन्द और एक द्वार । किसी बात को कह कर पुन उधर छिपाना की इच्छा में उलटना । यथा—  
 बानिज चित चट्टुं दिशि डोले,  
 चातक र्यां पुनि पिय पिय जोले ।  
 प्रलय होय, आये नहि गेह ।  
 क्यों सगि मज्जन ना सगि नेह ॥

मुकुट तत्त्वं ( ५० ) किराट, मकुट, हुडा, गिर चेंप, शेरता ।  
 मुकुट तत्त्वं ( ५० ) दपंच, चादरं, गीशा, चारना ।  
 मुकुल तत्त्वं ( ५० ) कलि, कलिका, यौट ।  
 मुकुलित तत्त्वं ( ५० ) गुकुताया हुषा, अर्ध स्फुटित, पोडा गिभा ।  
 मुकुल दे० ( ५० ) नकेन, ऊँट का भयना ।  
 मुक्ता दे० ( ५० ) सुखा, सुष्टिका, पूवा ।  
 मुक्त तत्त्वं ( ५० ) पाषा, हुडा, त्वात, मुक्ति प्राप्त, मोक्ष प्राप्त, पन्थ रहित ।—हस्त ( ५० ) वडाव्य, दाया, दानमौल ।  
 मुक्ता तत्त्वं ( ५० ) मय विशेष, मोती, मौक्तिक ।  
 —कान्ताप ( ५० ) मुक्ताहार, मोती की माला ।  
 —फल ( ५० ) मुक्ता, मोती, मौक्तिक ।  
 —घली ( ५० ) मुक्ताहार, मोती की माला ।  
 —मणि ( ५० ) मोती, मौक्तिक ।  
 मुक्ति तत्त्वं ( ५० ) दुःख की चरयना निवृत्ति, निव्य गुण की प्राप्ति, किञ्चन्य, निर्वाण, धर्म, निर्धर्म, मुक्ति, मोक्ष, चरण्य, पतित्राण, मोचन, मुक्ति ।  
 —दाता ( ५० ) मुक्ति देने वाला, चद्गुर, ज्ञान, चद्गुरक, उद्धारकर्ता ।  
 मुण्ड तत्त्वं ( ५० ) वदन, मुँह, मुण्ड । ( ५० ) प्रधान, मुण्ड, मेता ।—दूषक ( ५० ) मुण्ड विगाहने वाला, मुण्ड दुर्गन्ध करने वाला, विपाज ।—मण्डन ( ५० ) तिलक वृक्ष ।  
 मुण्डा दे० ( ५० ) मुण्ड, वदन, मुँह ।  
 मुण्डर तत्त्वं ( ५० ) चप्रियवादी, दुर्मुण्ड, बकवादी, बद्दप्रिया ।—ता ( ५० ) चप्रियवादित्व ।  
 मुण्डगुडि तत्त्वं ( ५० ) अक्षुभोपम, मुख प्रहापन, दग्धपावन ।  
 मुण्डस्य तत्त्वं ( ५० ) मौक्तिक, मुख स्थित, कपटाव, त्रिहारा ।  
 मुण्डापेक्षा तत्त्वं ( ५० ) अशुभोप, पक्षपात ।  
 मुण्डावलोचन तत्त्वं मुण्डदर्शन, मुण्ड देखना ।  
 मुण्डामुखी दे० ( ५० ) नामना नामनी, मुँहासुँही, मुख परम्परा द्वारा ।

मुखिया दे० ( ५० ) सुख, प्रधान, पक्षता ।  
 मुख्य तत्त्वं ( ५० ) प्रथम कल्प, यत्र चोदि में शाखोक्त प्रथम कल्प । ( ५० ) चोह, प्रधान, मुखिया, चागेवान ।  
 मुग्दर दे० ( ५० ) मोगरी, मोगरा, मुँगरी ।  
 मुग्धर तत्त्वं ( ५० ) सुन्दर, मनोहर, मनोज, सुर्ण ।  
 मुग्धा तत्त्वं ( ५० ) कन्या कुमारी, नायिका विशेष, स्वकीया नायिका का एक भेद । यथा—  
 “अभिनव यौवन चागवन, जाके तन में होय,  
 गाजी मुग्धा कहत है कवि कोविद सब कोय ।”  
 —रमराज ।  
 मुग्धा दे० ( ५० ) मौम का टुकड़ा ।  
 मुजरा दे० ( ५० ) प्रणाम, दण्डवत, सधिनय भेट ।  
 मुञ्ज तत्त्वं ( ५० ) तृण विशेष, राजा विशेष, भोज-राज के चचा ।  
 मुटाय दे० ( ५० ) मुटार्द, स्थूलता ।  
 मुट्टी तद्दे० ( ५० ) मुष्टिका, मुठ, बकोट, बकटा ।  
 मुट्टिया दे० ( ५० ) हाथ भर, मुट्टी भर ।  
 मुडना दे० ( ५० ) टेड़ा होना, खलखाना, रटन पड़ना ।  
 मुट्टियाना दे० ( ५० ) मुडना, फिरना, घूमना ।  
 मुड्ड दे० ( ५० ) प्रधान, मुखिया, वडा ।  
 मुण्ड तत्त्वं ( ५० ) मुँह, कपाल, गिर, मस्तक ।  
 मुण्डक तत्त्वं ( ५० ) नापित, नाक, चौकार ।  
 मुण्डना दे० ( ५० ) बाल बनाना, मुँडना ।  
 मुण्डला दे० ( ५० ) मुँहा, मुष्टित, मुड्डा हुषा ।  
 मुण्डवाना दे० ( ५० ) मुण्डन कराना, मुष्टित कराना, मुण्डला बनाना ।  
 मुण्डा दे० ( ५० ) पत्रक का गिर, चन्दला ।  
 मुण्डाम्ना दे० ( ५० ) मुँहा, चाफा, मुड्डवर्णा ।  
 मुण्डित तत्त्वं ( ५० ) मुँहा हुषा, मुण्डका ।  
 मुण्डिया दे० ( ५० ) गिर, कपाल, मस्तक । ( ५० ) मन्वासी, मुण्डे गिर का ।  
 मुण्डी दे० ( ५० ) एक शोधधि का नाम ।  
 मुण्ड ( ५० ) चन्वासी, पति, मुष्टित गिर ।

मुण्डेर दे० (पु०) परछती, मेड़, दीवार ।

मुण्डेरी दे० (स्त्री०) छोटी भीत, दीव ।

मुतना दे० (पु०) ळट मुतवा ।

मुतास दे० (पु०) मूतने की रच्छा, मुताई ।

मुद तत्० (पु०) आनन्द, हर्ष, आहाद ।

मुदित तत्० (पु०) हर्षित, आहादित, हर्षित,  
निहाल ।

मुद्ग तत्० (पु०) सूँग, फलाई विशेष ।

मुद्गर तत्० (पु०) मेगरी, मुगर ।

मुद्रा तत्० (पु०) छापा, छद्दा, चङ्क, सिक्का, रुपया,  
मेहर ।

मुद्राङ्कित तत्० (पु०) चन्त्रित, छापा गया,  
चङ्कित ।

मुद्रित तत्० (पु०) चङ्कित, चङ्कित, छापा  
हुआ, मुहर दिया हुआ ।

मुनका दे० (पु०) मेवा विशेष, एक प्रकार की  
दाख ।

मुनमुन दे० (पु०) प्यार से बुलाने के अर्थ में इसका  
प्रयोग होता है ।

मुनमुनाना दे० (क्रि०) मुनमुन करना, बिल्ली के  
बुलाना, धीरे धीरे कुछ बोलना ।

मुनि तत्० (पु०) योगी, तपस्वी, वेदज्ञ महात्मा ।

मुनिया दे० (स्त्री०) पत्नी विशेष, लाल चिट्ठिया ।

मुनीश तत्० (पु०) अधीश, मुनि प्रधान, मुनि-  
राज ।

मुँदना दे० (क्रि०) घन्द करना, तोपना, टापना ।

मुन्द्रा दे० (पु०) कड़ा, भौंठूठा, भौंठूठी ।

मुसाखी दे० (स्त्री०) मधुमक्षिका, मैमाखी, मधु-  
माखी ।

मुमानी दे० (स्त्री०) मामी, माहुली ।

मुमूर्षु तत्० (पु०) मरनहार, मरणासन्न, मृतप्राय ।

मुरई दे० (स्त्री०) मूली, एक प्रकार की जड़ ।

मुरकना दे० (क्रि०) चँटना, बल पढ़ना, हड्डी का  
हडना ।

मुरकी दे० (स्त्री०) कान का भूषण विशेष, कान में  
पहनने का गहना ।

मुरचक्र दे० (पु०) बाना विशेष ।

मुरभाना दे० (क्रि०) चूलना, चूल जाना, उदाह  
होना, निष्प्रय होना ।

मुरण्डा करना दे० (वा०) जकड़ना, बाँधना ।

मुरसुरा दे० (पु०) चर्मण विशेष, एक प्रकार का  
चबेना ।

मुरला दे० (पु०) घोपला, पक्षि विशेष, मेर,  
मयूर ।

मुरली तत्० (स्त्री०) बंती, बाँसुरी ।

मुरहा दे० (पु०) नटखट, सुझी, चँठा, मयूर, मेर ।

मुराई दे० (स्त्री०) जाति विशेष, कुँजवा, कौरवी,  
शाक तरकारी आदि का उपाहार करने वाली  
जाति ।

मुरेला दे० (पु०) मेर का बच्चा, छोटा मेर ।

मुरा दे० (पु०) पटाका, छहन्द्र ।

मुलतानी दे० (स्त्री०) एक प्रकार की रागिनी,  
मृतिका विशेष ।

मुलहट्टी दे० (स्त्री०) ओपधि विशेष, सुरठी ।

मुलाई दे० (स्त्री०) चाँकाव, निरल, दर, भाव ।

मुलाना दे० (क्रि०) चाँकना, ठहराना, निरखना ।

मुशके दे० (पु०) बाहु, भुजा ।

मुष्क तत्० (पु०) चपट, अष्टकोश, कस्तूरी ।

मुष्टामुष्टी तद्० (स्त्री०) मुष्टी, मुष्टि, मुक्कामुक्की,  
घुस्सा घुस्सी ।

मुष्टि तत्० (स्त्री०) मुष्टी, मुठी, सूका ।

मुसकाना दे० (क्रि०) हँसना, स्मित करना, ईर्ष्य  
हास्य करना ।

मुसकुराई दे० (स्त्री०) मन्दस्मित, मुसकुराहट ।

मुसकुराना दे० (क्रि०) मुसकाना, हसना, मन्दस्मित  
करना ।

मुसल तद्० (पु०) मूषल, डपड़े के समान, एक प्रकार  
की लकड़ी जिससे चावल आदि चन्न कूटे जाते  
हैं ।

मुसलम न दे० (५०) एक जाति विशेष, मुहम्मद के  
मतावलम्बी ।  
मुसली तद्द० (५०) बलभद्र, बलराम, श्रीकृष्णचन्द्र  
के बड़े भाई, सूयिका, बूढो, सुहिया ।  
मुसला दे० (क्रि०) छोटी करवाना, लुटवाना ।  
मुस्ता तत्त्० (स्त्री०) मूल विशेष, मोषा ।  
मुहरा दे० (५०) हरावल, भगाड़ी ।  
मुहरी दे० (स्त्री०) कोय, चन्द्रक का मुँह ।  
मुहासा दे० (५०) कोड़ा, कुन्वी, मुँह पर के कोड़े ।  
मुहुमुह दे० (अ०) बारबार, पुनःपुनः भ्रूयः अनेक  
बार ।  
मुहूर्त तत्त्० (५०) समय विशेष, दो घड़ी समय, दो  
दण्ड काल, किसी काम करने का निर्धारित उत्तम  
समय, दिन रात का तीसरा भाग, ५८ मिनट ।  
मूमा दे० (५०) मरा, मृत, निर्जीव ।  
मूंग दे० (स्त्री०) एक प्रकार का मूत्र विशेष, मूँग,  
एक प्रकार का पत्त, जिसकी दास बनती है ।  
मूंगा दे० (५०) विद्रुम, प्रवाल, एक प्रकार का  
रत्न ।  
मूंगिया दे० (५०) रङ्ग विशेष, मूंगा का रङ्ग, मूंगे  
के समान रङ्ग ।  
मूँह दे० (स्त्री०) उमरु, मोँछ, ओठ पर के बाल ।  
मूँज दे० (स्त्री०) दाव, मूण विशेष, एक प्रकार का  
मूण, जिसके छिलके की रस्ती बनाई जाती है ।  
मूँड दे० (५०) मुख, मस्तक, सिर, कपाल ।  
—फिकारना (वा०) सिर नङ्गा करना ।  
मूँडना दे० (क्रि०) ठगना, बाल मूडना, बाल  
कतरना, सिर घुटवाना, फुसलाना, धोखा  
देना ।  
मूँडला दे० (५०) मुण्डा, मुण्डिया, मुण्डिन, मुँडा  
हुआ ।  
मूँडा दे० (५०) मोड़ा, बैठने की चौकी ।  
मूँदना दे० (क्रि०) बन्द करना, तोपना, ठीकना,  
धिपाना, रोकना ।

मूँदरी दे० (स्त्री०) मुद्रिका, धन्ना, अँगूठी ।  
मूँह दे० (५०) मुख, बदन, मुखड़ा ।  
मूँहा दे० (५०) मुख का रोग ।  
मूक तत्त्० (५०) गूंगा, चनबोन, चाकू शक्ति  
हीन ।  
मूका दे० (५०) चूँसा, मुक्का, मुठी, कतौला ।  
मूकी दे० (स्त्री०) मुक्की, पूसा, धक्का ।  
मूखा दे० (५०) पछंती, होठार, मुँहेर, मेंह ।  
मूगरी दे० (स्त्री०) कपड़े पीटने का मोगर, मूंगरी ।  
मूचकाना दे० (क्रि०) मोह चढ़ाना, रँठना, बलदेना ।  
मूचना दे० (५०) चिमटी, चिमटा, लोहे का एक  
प्रकार का चक्र, जिससे बाल मोचते हैं ।  
मूख दे० (स्त्री०) मुख, रमयु, मोँछ ।  
मूलाकड़ा दे० (५०) यड़ी मूँछ ।  
मूँल दे० (५०) बड़ी मुँछों वाला ।  
मूठ दे० (५०) बेंट, हाथ, हाथ भर ।  
मूठा दे० (५०) भरपूँट, बेंट, कड़ा ।  
मूठी दे० (स्त्री०) मुठि, मुक्का, मुका, पूसा ।  
मूठ तत्त्० (५०) मुख, चतानी, चनपड़, चनभिज  
।—ता (स्त्री०) मुखता, चतानता ।  
मूत दे० (५०) मूत्र, लघुमूत्र, पेशाब ।  
मूतना दे० (क्रि०) लघुमूत्र करना, पेशाब करना ।  
मूत्र तत्त्० (५०) प्रस्ताय, मूत्र, पेट का निकला हुआ  
जल।—शुल्छ (५०) मूत्र रोग, मूत्र रोध रोग ।  
चरमरी रोग।—शोष (५०) प्रमेह, मूत्रगत दोष ।  
—निरोध (५०) मूत्र प्रतिबन्धक रोग विशेष,  
मूत्रकृच्छ्र रोग ।  
मूना दे० (क्रि०) मरना, मृत होना ।  
मूनू दे० (५०) नपु, घोड़ा, चण्ड, जिजिबु ।  
मूरन तद्द० (स्त्री०) मूर्ति, इजि, चाकूति, प्रतिमा ।  
मूख तत्त्० (५०) मुँह, चतान, चतान, चनभिज  
।—ता (स्त्री०) चतानता, मुडता ।  
मूर्च्छना तत्त्० (क्रि०) नीत का चन्द्र विशेष ।

सूखा तत्० (स्त्री०) सम्मोह, क्रमन, मोह, अज्ञानता, बेहोशी।—गत (गु०) सूखाप्राप्त, मोहित, अज्ञान।

सूच्छित तत्० (गु०) सूखा प्राप्त, मोहित, अज्ञान, मूढ, मूर्ख।

सूर्ति तत्० (स्त्री०) प्रतिमा, आकार, पुतली, तबखीर।  
—पूजक (पु०) देव पूजक, चतुर्वर्ण के मनुष्य।  
—मन्त (गु०) आकार वन्त, शरीरधारी।

सूर्ज तत्० (गु०) घाल, केश।

सूर्जन्य तत्० (पु०) सूर्जा स्थान से उच्चारित होने वाले वर्ण अ, ट ठ ड ट ष, र प, ये वर्ण सूर्जन्य हैं।

सूर्जा तत्० (पु०) मस्तक, तालु से ऊपर का भाग।

सूल तत्० (पु०) जड़, वंश, कुल, पूँजी, पुस्तक का मूल भाग।—कारिका (स्त्री०) मूल ग्रन्थार्थ प्रकाशक पद्य, मूल धन की वृद्धि विशेष।—धन (पु०) मूल द्रव्य, असल पूँजी।—भूत जड़।

सूलक तत्० (पु०) मूली, मूर्ख।

सूल्य तत्० (पु०) मूल्य, मोल, भाव, निरख, दर, दाम।

सूप तत्० (पु०) बूहा, मूसा, मूषिक।

सूपण तत्० (पु०) हरण, चोरी करण, चोरी करना।

सूपा तत्० (पु०) मूस।

सूसना दे० (क्रि०) चरना, चोरी करना, मूटना, छेड़ना।

सूसरा दे० (पु०) बूहा, मूल, गण।

सूसला दे० (पु०) जड़, मूल।

सूसा दे० (पु०) बूहा, इन्दुर।

सृग तत्० (गु०) हरिण, मृगा, कुण्ड।—खाला (पु०) मृगचर्म, अजिन।—तृष्णा (स्त्री०) ध्रुव में जल ज्ञान, द्रव्य, तृष्णा, वृषा नेत्र।—नयनी (स्त्री०) बड़ी आँख वाली, मुन्दरी स्त्री।—नाभि (स्त्री०) कस्तूरी, मृगमद।—पति (पु०) पशुओं का राजा, सिंह, मृगेन्द्र।—मद् (पु०) कस्तूरी।—राज (पु०) मृगपति, पशुओं का राजा।—लोचनी (स्त्री०) मृगनयनी, बड़ी आँख वाली, मृग के समान आँखें वाली।—शिरा (पु०) एक प्रसन्न का नाम।

सृगया तत्० (स्त्री०) शिकार, आघेट, घरे।

सृगी तत्० (स्त्री०) हरिणी, रोग विशेष।

सृगेन्द्र तत्० (पु०) (सृग + इन्द्र) सिंह, मृगात्त मृगपति।

सृग्य तत्० (गु०) अन्वेषणीय, दर्शनीय, अनुसन्धान करने योग्य।

सृजा तत्० (स्त्री०) मार्जन, शुद्धकरण, पान, फरखाना।

सृड तत्० (पु०) शिव, महादेव, गम्धु।

सृणाल तत्० (पु०) कमल नाम कमल की जड़।

सृत तत्० (गु०) सुधा, मरा हुआ, मुर्दा।

सृतक तत्० (पु०) शव, लीय, मुर्दा।

सृत्तिका तत्० (स्त्री०) मट्टी, मिट्टी, माटी।

सृत्यु तत्० (स्त्री०) मोत मरण, निधन।

सृत्युञ्जय तत्० (पु०) शिव का एक नाम।

सृदङ्ग तत्० (पु०) वायु विशेष, भेरी।

सृट्ट तत्० (पु०) नरम कोमल।

सृषा तत्० (अ०) फूटा, मिथ्या, असत्य।

सृगनी दे० (स्त्री०) मृगनी, खेड़ी, लीय।

सृडक दे० (पु०) दाहुर, भेक, मण्डक।

सृड दे० (पु०) मेढ, कुए का सृड, गैड।

सृडियाना (क्रि०) घिसना, बटीरना घिसना।

सृड दे० (गु०) सृड, मेघ, गाढर।

सृड दे० (पु०) मेघ, वृष्टि, वर्षा, घटा, फड, फडी।

सृड दे० (स्त्री०) पोधा विशेष, मिहदी।

सृड दे० (पु०) कोग, सूटा, मेघ।

सृडला तत्० (स्त्री०) सुद्र चटिका, करनी, मृग खाल से बना हुआ यज्ञोपवीत।

सृडली दे० (स्त्री०) टाट, पट्टी।

सृड तत्० (पु०) मेघ, वादल रागविशेष।—इन्द्र

(पु०) रावण का छत्र विशेष।—नाद (पु०) मेघ

का शब्द, मेघ के समान शब्द, रावण के पुत्र का

नाम। देवराज इन्द्र को पराजित करने के कारण

इसका नाम इन्द्रजित पडा था। मृगा के पुत्र

इन्द्रम राम लहमण के दो प्रारूहण थे, परन्तु

यन्त में यह लहमण के हाथों मारा गया।

—पति (५०) रन्द्र, देवराज ।—चरण (५०) मेघ के रङ्ग के समान ।—माला (खी०) मेघ, सप्रह, मेघों की माला ।  
 मेघाध्वा तत्० (५०) मेघपथ, चन्द्ररिषि, आकाश ।  
 मेघागम तत्० (५०) वर्षाकाल, वर्षा का समय ।  
 मेघना दे० (क्रि०) धी हासना, नाचना, खराब करना ।  
 मेघ दे० (खी०) बाँध, घाला, मँड़ ।  
 मेघी दे० (खी०) एक साग का नाम, एक प्रकार की मत्स्य जो झींके के काम में आता है ।  
 मेघ दे० (५०) मन्ना, घसा, चर्वी, मोटाई, मौस की थड़ जाना ।  
 मेदिनी तत्० (खी०) धरिणी, धरित्री, भूमि, अथवा में प्रतिदु शीपथ विशेष ।  
 मेघुर तत्० (५०) अतिशय हिनग, अत्यन्त चिकुन शीतल ।  
 मेघ तत्० (५०) अगु, याम, यत्र, अध्वर ।  
 मेघा तत्० (खी०) बुद्धि विशेष, धारणाश्रती, बुद्धि, मनीषा ।—विधि (५०) ये मनुस्मृति के विषयात् टीकाकार हैं इनके पिता का नाम वीर शिव स्वामी भट्ट था ।—वती (खी०) बुद्धिमती, मेघा विधिष्ठा, महाश्वेतिष्मती ज्ञाता ।  
 मेघावी तत्० (५०) मेघायुक्त, स्मरण शक्ति विधिष्ठ, मतिमान । (५०) पशित, अभिन्न ।  
 मेघि तत्० (५०) खलिहान में पशुओं की बाँधने के लिये ऊँचा गाड़ा हुआ काष्ठ ।  
 मेघना दे० (५०) मकरी का यज्ञ ।  
 मेघ तत्० (५०) पर्यत विशेष, सुमेरुपर्यत, जयमाला का सर्वप्रधान मनिया ।—सुण्ड (५०) पीठ के बीच की हड्डी ।  
 मेघ तत्० (५०) संयोग, मिलाप, मँड़ ।  
 मेघना दे० (क्रि०) झेलना, छोड़ना, रखना, सुवेड़ना ।

मेला दे० (५०) भीड़, रीला, सप्रह, सयुदाय, देव-दर्यन पर्व विशेष, या तमाशा देखने के लिये बहुत लोगों का एकत्रित होना ।—डेली (वा०) भीड़ भाड़ ।

मेली तत्० (५०) मित्र, मिलापी, परिचित, जाना हुआ (खी०) रख दी, छोड़ दी, घर दी ।

मेघ दे० (५०) जालि विशेष ।

मेघाती दे० (५०) मेघात वासी, मेघात का रहने वाला ।

मेघ तत्० (५०) मेघराशि, पहली राशि, मेघ ।

मेह तत्० (५०) मेघ, घटा, रोग विशेष, सूत्र रोग ।

मेहतर दे० (५०) बूढ़ा, भङ्गी, छोटी जात ।

मेहतरानी दे० (खी०) भङ्गी की स्त्री ।

मेहना दे० (५०) ठठेली, खिन्नी, ताना ।

मेहन्हा दे० (५०) ठठेलिया, हँसड़ा ।

मेका दे० (५०) नहिहर, पीहर, खियों का पितृवृह ।

मेत्री तत्० (खी०) मित्रता, प्रभुता, प्रेम, स्नेह ।

मेथुन तत्० (५०) खींसर्ग, सुस्त, रतिक्षिप्य, चङ्गम, प्रचङ्ग ।

मेनफल दे० (५०) शीपथ विशेष ।

मेना दे० (खी०) एक पक्षी का नाम, यारिका, पाँवती की माता, मेना ।

मेनाक तत्० (५०) पर्यत विशेष, हिमालय पर्यत का पुत्र ।

मेमा दे० (खी०) विद्याता, शीतली माता ।

मेया दे० (खी०) महतारी, माता, अम्हा ।

मैल दे० (खी०) मल, मुर्वा ।

मैला दे० (५०) गंदला, गन्दा, अगुह, अघवित्र, मलिन ।

मैहिका दे० (५०) महिच, मैसा ।

मै दे० (सर्व) मुक्त ।

मैक्ष तत्० (५०) मुक्ति, परमानन्द प्राप्ति, कर्म बन्धन का नाश, सुदकाय, सुदकार ।

मैकना दे० (क्रि०) छोड़ना, झेलना, धरना, रखना ।

मैखा दे० (५०) भरतीय, जंगला, गुवाच ।



मोगरा दे० ( पु० ) मुगरा, मुद्गर, पुष्प विशेष ।  
 मोगरी दे० ( श्री० ) मुद्गर, छोटा मुगरा ।  
 मोघ त्० ( पु० ) प्राचीर, दीवार, ( गु० ) निरर्थक,  
 हीन, वृथा, व्यर्थ ।  
 मोच दे० ( पु० ) लचक ।—न त्० ( पु० ) उद्धार,  
 उद्धारण, चपहरण ।—ना दे० ( पु० ) विमला,  
 सिवदा ।—रस त्० ( पु० ) गोंद विशेष, नेमल  
 वृक्ष का गोंद ।—श्रावी त्० ( पु० ) सेमल का  
 वृक्ष ।  
 मोचा त्० ( पु० ) कदली वृक्ष, केले का गाम ।  
 मोची दे० ( पु० ) चमार, चर्मकार, कृता बनाने वाली  
 जाति ।  
 मोँछ दे० ( श्री० ) मूछ, मुँह पर का बाल ।  
 मोट दे० ( पु० ) गठरी, बोक, भार ।  
 मोटकी दे० ( श्री० ) कुदारी, मोटी खी ।  
 मोटा दे० ( गु० ) स्थूल, गुन्दैल ।  
 मोटापा दे० ( पु० ) स्थूलता, मोटाई ।  
 मोटिया दे० ( पु० ) कुली, भारवाहक, मोटरी बोने  
 वाला ।  
 मोठ दे० ( पु० ) मोट, गठरी, बोक ।  
 मोड दे० ( पु० ) बौक, फेर, घुमाव, बल, रेंठन ।  
 मोडना दे० ( क्रि० ) घुमाना, फेरना, घुमाना ।  
 मोडा दे० ( पु० ) मुड़ा हुआ, घेरागी, चन्वामी, छापु ।  
 मोतिया दे० ( पु० ) पुष्प विशेष, बेला का फूल ।  
 —चिन्द्र ( पु० ) रोग विशेष, शौच का एक रोग ।  
 मोती त्० ( श्री० ) मुक्ता, मौक्तिक, रत्न विशेष,  
 स्वनाम प्रसिद्धां समुद्रोप रत्न ।—की ली चाय  
 उतारना ( वा० ) अप्रतिष्ठा होना, अपमान होना,  
 निरस्कार होना, अन्याय होना ।—कूट कर  
 भरने ( वा० ) प्रकाशमान होना, प्रकाशित होना ।  
 —पियोने ( वा० ) माला धुँयना, सपुरता के  
 साथ बोलना, या लिखना ।—चूर ( पु० ) एक  
 प्रकार की मिठाई का नाम ।  
 मोयरा दे० ( पु० ) घोड़े का रोग विशेष, हड्डी रोग ।

मोथा दे० ( पु० ) मुक्ता, एक वैधे की जड़, नाम  
 मोथा ।  
 मोद त्० ( पु० ) आनन्द, हर्ष, प्रसन्नता, आनन्द ।  
 मोदक त्० ( पु० ) लड्डू । ( गु० ) हर्षदाता, हर्ष  
 कारक ।  
 मोदी दे० ( पु० ) व्यापारी, बनिया, महानत ।  
 मोधू दे० ( पु० ) सीधा, भोला, निरर्थक, व्यर्थ  
 रहित ।  
 मोनी दे० ( श्री० ) धणि, मोक, धन्न खादि का धर  
 भाग ।  
 मोम दे० ( पु० ) मधुमल ।  
 मोमिया दे० ( पु० ) शोयधि विशेष ।  
 मोर त्० ( पु० ) मूत्र, पक्षि विशेष, शिपी, केसी ।  
 —चङ्ग ( पु० ) मुरचङ्ग, बाघ विशेष ।—छल  
 ( पु० ) चमार एक प्रकार का चवर ।—पट्टी ( श्री० )  
 एक प्रकार की नाव ।—मुकुट ( पु० ) मोर पट्ट  
 का बना मुकुट ।  
 मोरी दे० ( श्री० ) पनाला, नाला, मकान का जल  
 निकलने का मार्ग ।  
 मोल दे० ( पु० ) भाव, दाम, मूल्य, किसी वस्तु का  
 दाम ।—ठहराना ( वा० ) दाम लगाना, मूल्य  
 थाँकना, निरर्थक ठहराना, दाम ठहराना ।—तोल  
 ( वा० ) भाव, कीमत, दर ।—घटाना ( वा० ) दाम  
 बढ़ाना, भाव घटाना ।—लेना ( वा० ) खरीदना,  
 विगाहना ।  
 मोपक त्० ( पु० ) ठग, लुटेरा, धूर्त, चोर,  
 तस्कर ।  
 मोसना दे० ( क्रि० ) घुमाना, ठगना, घुटना ।  
 मोह त्० ( पु० ) मूर्च्छा, अज्ञानता, अविद्या, व्याध,  
 माया, अधिक प्रेम, तामसिक प्रेम ।—में झाला  
 ( वा० ) प्रिय के मिलने से प्रचेत होना ।  
 मोहन त्० ( गु० ) मोहने वाला, जिसको देखने से  
 चापही चाय मोह उत्पन्न हो, मोहना, वश करना ।  
 ( पु० ) शोकल का नाम ।—भोग ( पु० ) भोजन  
 विशेष, हलुया, सीरा ।—माला ( श्री० ) माला  
 विशेष, सेने और सूँगे के दानों से बनी माला ।

मोहना दे० (क्रि०) घब करना, मन हरना; अधीन करना ।

मोहनी दे० (स्त्री०) भुजावने, मोहित करने वाली, घब करने वाली, सुन्दरी, सुभावनी ।

मोहाना दे० (पु०) मुहाना, सहस्रस्थान, सेना ।

मोहित तत्० (पु०) सुखित, भवेत्, मुग्ध, मोह प्राप्त ।

मोहिनी तत्० (स्त्री०) सुन्दरी, सुवती, रूपवती, वैश्या ।

मो दे० (पु०) मधु, गहर ।

मौक्तिक तत्० (पु०) मोती, मुक्ता ।

मौञ्जी तत्० (स्त्री०) सुव्रज्ज निर्मित मेखला, सूँके की कंधनी ।—बन्धन (पु०) मुञ्ज मेखला बन्धन, उपनयन, पद्योपवीत संस्कार ।

मौड़ दे० (पु०) मुकुट, मौर, मिहरा, विरपेंच, किरिट ।

मौन तत्० (पु०) शब्द प्रयोग शून्यता, अभिप्राय, चकयन, सूक्ष्मभाव, चुपचाप ।—मृत (पु०) न बोलने का नियम, अभिप्राय, चुपचाप रहना ।

मौना दे० (पु०) लटका, उभिया, डगरा ।

मौनी तत्० (पु०) मौनव्रती, मौनयुक्त, नीरव, सूक्ष्म-स्मृत्, मौन विशिष्ट ।

मौमास्त्री दे० (स्त्री०) मधुमक्षिका ।

मौर दे० (पु०) मञ्जरी, फूल, बीर, कली, मुकुट, किरिट ।

मौराना दे० (क्रि०) खिलना, स्फुटित होना, विकसित होना ।

मौर्ख्य तत्० (पु०) मूर्खता, जड़ता, धनमिहता ।

मौर्वी तत्० (स्त्री०) धनुष का गुण, रोदा, विला ।

मौलना दे० (क्रि०) बुरी में पुण्य लगाना, मञ्जुरि होना ।

मौलसरी दे० (स्त्री०) एक वृष और उसका पुण्य, वकुल, वकुल पुण्य ।

मौलाना दे० (पु०) मुसलमानों का धर्मगुरु ।

मौलि तत्० (स्त्री०) बूड़ा, चोटी, किरीट, मुकुट, संयत केय, बन्धी हुई चोटी ।

मौलिक तत्० (पु०) मूल सम्बन्धी, जड़ का, लड़की वस्तु । (पु०) कुलीन, मित्र, चकुलीन ।

मौली दे० (स्त्री०) नारा, मुकुट, मस्तक ।

मौसा दे० (पु०) मौसी का पति, मौ की साहब का पति ।

मौसी दे० (स्त्री०) माता की भगिनी, मातृश्वसा ।

मौसेरा दे० (पु०) मौसा के सम्बन्ध का ।

मौहूर्तिक तत्० (पु०) ज्योतिर्वेत्ता, दैवज्ञ, गणक ।

म्रदिमा तत्० (स्त्री०) (संस्कृत में पुञ्जिङ्ग) मृदुता, कोमलता, नयता, नरमारी ।

म्रदीयान तत्० (पु०) क्षतियुक्त मृदु, क्षयन्त कोमल ।

म्रियमाथ तत्० (पु०) मृतकण्ठ, पथपथ, मृत गुण्य, मृतप्राय ।

म्लान तत्० (पु०) मलिन, मुष्क, विरस, विषादयुक्त, खेदित ।—ता (स्त्री०) म्लानभाव, खेद, विषाद, विषयता, घबराहट ।—मुख (पु०) उदास, मलिन मुख, विषादयुक्त ।—घदन (पु०) विषययुक्त, उदासीन मुख ।

म्लानि तत्० (स्त्री०) कान्तिक्षय, विषाद, खेद, मुष्कता, मलिनता ।

म्लिष्ट तत्० (पु०) चस्पष्ट वाक्य, चतुष्क वचन, अस्पष्ट स्वर ।

म्लेच्छ तत्० (पु०) चन्त्यज जाति, किरात, शूद्र, चुपापराय, चपभाषण, अमुह कथन ।

य

य तत्० (पु०) भाव, यश, कीर्ति, योग, धान, समन-कर्ता ।

य चन्त्यस्य प्रकार, हलका-हलकीसवीं वर्ष, यस्का उचकारण स्थान ताडु है इस कारण इसका ताडण कहते हैं ।

( १० )

यज्ञत् तत् ( ५० ) घट के दाहिनी ओर का मौख  
खण्ड, उदररोग, मीठा, तापतिलनी, पिलही  
रोग ।

यज्ञ तत् ( ५० ) देवयानि विशेष, कुक्षर के अनुचर ।

यज्ञमा तत् ( ५० ) रोग विशेष, चर्मी रोग ।

यजन तत् ( ५० ) याग करण, पूजन, यज्ञ ।

यजमान तत् ( ५० ) यज्ञकर्ता, यज्ञानुष्ठान में दीक्षित,  
व्रती ।

यज्ञ तत् ( ५० ) वेद विशेष, यज्ञवेद ।

यज्ञवेद तत् ( ५० ) स्वनाम प्रविष्ट वेद ।

यज्ञवेदी तत् ( ५० ) यज्ञवेदवेत्ता, यज्ञवेदाध्यापक,  
यज्ञवेद के अनुवाद कर्म करने वाला ।

यज्ञ तत् ( ५० ) याग, अष्टर, मज्ज क्रतु ।—कुण्ड

( ५० ) यज्ञ करने के लिये चौकोना बना हुआ गर्त ।

—पुरुष ( ५० ) विष्णु, पुरुषोत्तम, नारायण ।

—वेदी ( श्री० ) यज्ञ के लिये साफ़ की हुई भूमि ।

—भाजन ( ५० ) यज्ञार्थ पात्र, यज्ञ के वर्तन ।

—भूमि ( श्री० ) यागस्थान, यज्ञस्थल, यज्ञशाला ।

सूत्र ( ५० ) यज्ञोपवीत, जनेऊ ।

यज्ञोपवीत तत् ( ५० ) यज्ञसूत्र, ब्रह्मसूत्र ।

यज्ञा तत् ( ५० ) वेद विधि पूर्वक, यागकर्ता, यज्ञ-  
मान, याज्ञिक ।

यतन तद् ( ५० ) यत्न, उपाय, चेष्टा, उद्योग ।

यति तत् ( ५० ) जितेन्द्रिय, संन्यासी, परित्याजक ।

—चन्द्रायण ( ५० ) व्रत विशेष ।

यतनी तद् ( श्री० ) यत्न करने वाला उद्योगी, परि-  
श्रमी ।

यत्किञ्चित् तत् ( श्री० ) थोड़ा बहुत, जो कुछ ।

यत्न तत् ( ५० ) यत्न, उपाय, उद्योग, चेष्टा ।

यत्नी तत् ( ५० ) यत्न करने वाला, श्रेणी, अनु-  
सन्धानी ।

यत्न तत् ( श्री० ) जहाँ, जिस स्थान पर, जिस स्थान-  
में ।—तत्र ( श्री० ) जहाँ, तहाँ ।

यथा तत् ( श्री० ) जैसा, उथा, जिस प्रकार, जिस  
रीति ।—कथञ्चित् ( श्री० ) जिस किसी प्रकार

से, बड़े कुछ से, बड़े परिचय से । फाल ( ५० )

यथा समय, उपयुक्त समय, उचित काल, समया-  
नुसार ।—क्रम ( ५० ) क्रमानुस्य, धातुपूर्विक

क्रमश ।—तथा ( श्री० ) जैसा, तैसा, ज्यों, त्यों ।

—योग्य ( ५० ) यथोचित, जैसा उचित ।—यं

( ५० ) [ यथा + यर्ष ] ठीक, सत्य, उचित, यत्

( श्री० ) विधिपूर्वक यथा योग्य, व्यवस्था के अनुसार,

रीति के अनुसार । विधि ( ५० ) यथायाग,

विधि के अनुसार ।—शक्ति ( श्री० ) जैसा सामान्य

नुसार ।—शास्त्र ( ५० ) शास्त्रानुसार, शास्त्रानुसृत ।

—सम्भव ( ५० ) जैसा होने योग्य, जहाँ तक हो

सके ।—साध्य ( ५० ) साध्यानुसार, यथा शक्ति ।

—स्थित ( ५० ) सत्य, यथार्थ, निश्चित ।

यथेच्छा तद् ( श्री० ) यथेच्छ, इच्छानुसार, जैसा  
मनोरथ ।

यथेष्ट तत् ( ५० ) इच्छानुसार, यथेच्छ, इच्छानुस्य,  
प्रसुर, अधिक ।

यथोक्त तत् ( ५० ) पूर्वकथित, पूर्वउक्त, पहले  
कथित ।

यथोचित तत् ( ५० ) यथा योग्य, जैसा उपयुक्त,  
उत्तम मत ।

यद्वधि तत् ( श्री० ) जैसा है, जिस काल में, जब  
-तक ।

यदा तत् ( श्री० ) जब, जिस काल में ।

यदि तत् ( श्री० ) पश्चान्तर, सम्भावनार्थ, यद्यपि ।

यद्यपि तत् ( श्री० ) जो भी, यद्यपि ।

यदा तदा तत् ( श्री० ) वंसा, वैसा, मला, गुण,  
अनिश्चित, अनियमित ।

यन्त्र तत् ( ५० ) कल, बाद्य, देवताओं का अधिहास,  
पात्र विशेष, निमन्त्रण, युक्ति पूर्वक शिल्प आदि

कर्म करने के लिये पदार्थ विशेष, अग्नि यन्त्र, दाह  
यन्त्र आदि ।

यन्त्रय तत् ( श्री० ) पोडा, दुःख क्लेश ।—दायक  
( ५० ) क्लेशदायक, दुःखदायक ।

यन्त्रित तत् ( ५० ) नियमित, रोका हुआ, बंधा  
हुआ ।

यन्त्री तत् ( ५० ) योद्धा, यन्त्र विशेष ।

यम तत्त्वं ( ५० ) यमराज, काल, अन्तक, सूर्यपुत्र ।  
 —स्वसा ( श्री० ) यमुना ।  
 यमक तत्त्वं ( ५० ) शब्दाजकार विरोध, इस यमकार  
 के उदाहरण में एकही शब्द की दो दो तीन तीन  
 बार आवृत्ति होती है यथा ।  
 "मिष चरप किरि किरि अहाँ सेई अउर वृन्द,  
 आवत हैं मेा यमक कदि. यरगत वृद्धि विलन्द"  
 शिवराज भूषण  
 यमदूत तत्त्वं ( ५० ) यमराज का गण, यम का  
 सन्देशा, मृत्यु का लक्षण ।  
 यमघाट तत्त्वं ( ५० ) कटार, अस्त्रविशेष ।  
 यमन तत्त्वं ( ५० ) यवन, मुसलमान राग विरोध ।  
 यमल तत्त्वं ( ५० ) जोड़ा, युग्म, दो ।  
 यमलाजुन तत्त्वं ( ५० ) वृच विरोध, कहते हैं कुपेर  
 के दोनों लड़के वेरवाओं के साथ गङ्गा में नङ्गे  
 स्नान करते थे । भाग्यशश नारद वहाँ था पहुँचे,  
 उन्हेने इस अनीति को देख कर कुपेर के बेटों को  
 शाप दिया कि तुम दोनों वृच हो जाओ, नारद के  
 शाप से वे तो वृच हो ही गये । पुनः भगवान्  
 कृष्ण ने इनको नारदजी के शाप से उबार ।  
 यमलकैला तत्त्वं ( ५० ) शिवरा, पत्नी, कैला ।  
 यम तत्त्वं ( ५० ) अस्त्र विशेष, जी । —घार ( ५० )  
 लवण विशेष, शोरा ।  
 यमन तत्त्वं ( ५० ) यमन, सुखसंमान ।  
 यम तत्त्वं ( ५० ) कीर्ति, उपाधि, प्रसिद्धि, नाम, नाम-  
 वती ।  
 यमस्वो तत्त्वं ( ५० ) कीर्तिमान्, सुदंशत, मन्त्र-  
 प्रतिष्ठ ।  
 यमोद्गा तत्त्वं ( श्री० ) मन्दपत्रो, श्रीकृष्ण की माता ।  
 यि ययिका तत्त्वं ( श्री० ) लाठी, लकड़ी, लड़ी ।  
 यम दे० ( सर्व० ) निष्पन्न सावकसर्व नाम ।  
 यम दे० ( य० ) रघर इस तीर, इस स्थान पर । का  
 यहीं ( यो० ) लोक, इसी स्थान ।  
 यम तत्त्वं ( ५० ) यम, अउर, होम, हवन ।  
 यमक तत्त्वं ( ५० ) लाचक, मिलक, मँगला ।

याचना दे० ( कि० ) मोक्ष माँगना, याचना, चाहना ।  
 याजक तत्त्वं ( ५० ) याज्ञिक, अतिथक, पुरोहित ।  
 याजन तत्त्वं ( ५० ) याजक का कर्म, पठकराना ।  
 याज्ञिक तत्त्वं ( ५० ) पठ करने वाला ।  
 यातना तत्त्वं ( श्री० ) पीड़ा, दुःख, तीव्र, वेदना,  
 अधिक कष्ट ।  
 यातायात तत्त्वं ( ५० ) आवागमन, गमनागमन ।  
 यात्री तत्त्वं ( श्री० ) तीरथ, कूच, प्रस्थान ।  
 यात्री तत्त्वं ( ५० ) परदेशी, तीर्थ करीवा, मुसाफिर ।  
 यथार्थिक तत्त्वं ( ५० ) वास्तविक, ठीक, सत्य ।  
 यथाथ्य्य तत्त्वं ( ५० ) सत्यता, सचाई, यथार्थता ।  
 यान तत्त्वं ( ५० ) अस्त्रवारी, वाहन ।  
 यापन तत्त्वं ( ५० ) निर्याह, कालक्षेप, समय बिताना,  
 काल काटना ।  
 याव्य दे० ( ५० ) टाँगन, टट्ट ।  
 यावक तत्त्वं ( ५० ) महावर, लाल रङ्ग, लाल ।  
 यामिनी तत्त्वं ( श्री० ) रात, रात्रि, निशा, रजनी ।  
 याचर्जीवन तत्त्वं ( ५० ) पाषदायुः जीवन, पर्यन्त ।  
 याचत् तत्त्वं ( य० ) लत्र तक, अथ लग, अबतारी ।  
 युक्त तत्त्वं ( ५० ) विधिष्ट, सहित, समेत ( ५० )  
 उचित, योग्य, यथार्थ ।  
 युक्ति तत्त्वं ( श्री० ) मिलना, मिल, योग्यता, प्रयोगता,  
 अनुपाई, चतुरता, हथौटी, विवेचना ।  
 युग तत्त्वं ( ५० ) युग, जोड़ा, सर्व्व सेना आदि चार  
 युग, वृद्धि नामक चोपथ, चार हाथ, रघ हल आदि  
 का ऋद्ध विशेष, शुभार शुभौ । —धर्म ( ५० ) कालका  
 धर्म, काल माहात्म्य । —यत् ( य० ) एकदा एक  
 कालीन, एक समय ।  
 युगल तत्त्वं ( ५० ) दो, युग, युग, जोड़ा । —यत्र  
 ( ५० ) सहयोगारोपण का मन्त्र, दो देवता का  
 मन्त्र ।  
 युगान्त तत्त्वं ( ५० ) प्रलय, युगोप, युग का अन्त-  
 खान ।  
 युग्म तत्त्वं ( ५० ) दो, जोड़ा, युग, द्वय । —यत्र ( ५० )  
 एक काश्चन वृच । —पर्य्य ( ५० ) कैवलावच,  
 पर्य्यवर्ण वृच ।

युज्यमान तत्० (गु०) युक्त होने के उपयुक्त, मिलने  
वाण्य ।

युज्जान तत्० (पु०) पूत, साक्षि, विप्र, ध्यान के  
द्वारा सब बातों को जानने वाला योगी ।

युन तत्० (गु०) मिलित, अपृथग्भूत, एकत्र, विशिष्ट,  
जडित, (पु०) हस्तचतुष्टयः, चार हाथ ।

युद्ध तत्० (पु०) लड़ाई, संग्राम, समर, विवाद ।  
—निदेश (पु०) युद्ध की, आज्ञा, युद्ध का निदेश ।

युधिष्ठिर तत्० (पु०) पाण्डुपुत्र, अज्ञात शत्रु, प्रथम  
पाण्डव ।

युवक तत्० (पु०) तरुण, जवान, नवीन, युवा ।

युवती तत्० (स्त्री०) वैधनयती, तरुणी, युवायस्या  
की स्त्री ।

युवराज तत्० (पु०) राजा का बड़ा लड़का, राज्य  
का उत्तराधिकारी ।

युवा तत्० (पु०) जवान, तरुण, वैधन ययस्या  
वाला ।

यूँ दे० (घ०) ऐसा, इस प्रकार, ।

यूका तत्० (स्त्री०) कुँ, चिह्न ।

यूय तत्० (पु०) सनातनीय सपूह, वृन्द ।—नाथ  
(पु०) यज्ञे हे हाथियो के मध्य में श्रेष्ठ हाथी ।  
—प (पु०) सेनापति, दल का प्रधान ।—भ्रष्ट  
(पु०) हस्ति सपूह से निकला हुआ हस्ति ।

यूच तत्० (पु०) पत्रस्तम्भ, पत्रभा ।

यूप तत्० बूस, परेह, पट्ट ।

योग तत्० (पु०) सामादि चतुर्विध उपाय, सङ्गी  
युक्ति, चित्त निरोध, विषयान्तर से मन की निर्धृति  
मेह, संयोग ।

योगिनी तत्० (स्त्री०) भूतिनी, विद्याचिनी, हाकिमी ।

योगी तत्० (पु०) योगसाधक, तपस्वी ।

योगेश्वर तत्० (पु०) सिद्ध, तपस्वी, योगी ।

योग्य तत्० (पु०) उपयुक्त, उचित, यथार्थ ।—ता  
(स्त्री०) निपुणता ।

योजन तत्० (पु०) चार कोस का परिमाण ।

योजना तत्० (स्त्री०) विन्यास, 'मिमांसा, योग्य का  
योग्य के साथ विन्यास करना ।

योद्धा तत्० (पु०) घुर, घोर, लड़ने वाला, वैदिक,  
शिवादी ।

योधन तत्० (पु०) युद्ध, लड़ाई, संग्राम ।

योधापन दे० (पु०) घोरता, शूरता ।

योनि तत्० (स्त्री०) श्रीचिन्ह, भग, उत्पत्ति,  
स्थान ।

योपित् तत्० (स्त्री०) नारी, स्त्री, अमला, बाला ।

योँ दे० (घ०) हम प्रकार, ऐसा, इस रीति ।

यौतिक तत्० (पु०) योगतिथि, अङ्क, विद्या, गणित ।

यौतुक तत्० (पु०) दहेजा, दायजा ।

यौवन तत्० (पु०) जवानो, तरुणार्द, वैधनयस्या ।

र

र—यह उपशुन का सत्तादसवौं वर्ष है । इसका  
उच्चारण स्थान मुहूर्त है । इससे यह अक्षर मुहूर्त का  
जाता है ।

र तत्० (पु०) अग्नि, तीक्ष्ण, कामाग्नि ।

रई दे० (स्त्री०) मधनी, बिलोनी ।

रंहर दे० (पु०) जल निकालने का यन्त्र ।

रंस तत्० (स्त्री०) रश्मि, किरण, दीप्ति ।

रक्त तत्० (पु०) रुधिर, लोह, शोणित, कुंकुम,  
केसर । (गु०) रक्त वर्ष, —लास ।—कोट (पु०)

रक्त कुष्ठ, कुष्ठ रोग विशेष ।—रुन (पु०) कोष

वृत् ।—चन्द्रन (पु०) लाल चन्द्रन, देवी चन्द्रन ।

—चूर्ण विन्दूर ।—पा (स्त्री०) जोक, जलौका ।

—पात (पु०) हत्या, रुधिरपात, लोह का  
गिरना ।—पित्त (पु०) रक्तस्राव रोग ।—बीज

(पु०) एक राक्षस का नाम, यह राक्षस,  
निगुम्भ का सेनापति था । यह दुर्गा के हाथ से

मारा गया ।

रक्तक तत्० (पु०) रक्षा करने वाला, पालने वाला,  
पालक, उद्धारकर्ता, स्वामी, प्रभु ।

रक्षण तत्० रक्षा, पालन, पोषण ।

रक्षक तत्त्वं ( ५० ) राक्षस, निगावर, मत्कर्म द्वेषी, नीच ।  
 रक्षा तत्त्वं ( ५० ) बचाव, बचाना, रक्षायारी करना, राख, महसू ।—पेलायः ( ५० ) [ रक्षा + पयसक ] द्वारपाल, श्रेयसोदार, तिवाही, दरवान ।  
 रक्षित तत्त्वं ( ५० ) रक्षा हुआ, रखा किया गया ।  
 रक्षक सोदना दे० ( क्रि० ) धरना, रखना, धौपना, चर्पण करना ।  
 रक्ष देना दे० ( क्रि० ) धरना, रखना, टिकाना, स्थापित करना ।  
 रक्षना दे० ( क्रि० ) रखागना, धौपना, रेंतना ।  
 रक्षयाना दे० ( क्रि० ) धराना, धौपाना, चर्पित करना ।  
 रक्षयाना दे० ( ५० ) रक्षक, रखा करने वाला, गढ़-रिया, सखावाह ।  
 रक्षयाली दे० ( स्त्री० ) रक्षा, रखाई, रखरदारी ।  
 रक्षिया दे० ( ५० ) रक्षा, बचाव, रक्षायारी, रखाई ।  
 रक्षो दे० ( स्त्री० ) रक्षा का कर ।  
 रक्षैया दे० ( ५० ) रक्षक, रक्षयारा, रक्षा करने वाला ।  
 रक्ष दे० ( स्त्री० ) शिरा, नाड़ी, नस ।  
 रग दे० ( स्त्री० ) सहर्षण, चिवाय ।  
 रगड़ना दे० ( क्रि० ) घोटना, मसना, चिसना ।  
 रगड़ा दे० ( ५० ) झगड़ा, चिसाव, बसाफकार से लड़ाई ।—भगड़ा ( वा० ) लड़ाई, रङ्गा, धपेड़ा, फसाद ।  
 रगेदना दे० ( क्रि० ) छोड़ना, मगाना, पीछा करना ।  
 रङ्ग दे० ( ५० ) कङ्काल, दरिद्र, कृपण ।  
 रघु तत्त्वं ( ५० ) एक सूर्यवंशी राजा । राजा दिलीप का पुत्र । इन्हींके वंश में श्रीरामचन्द्र ने अवतार लिया था ।—नन्दन ( ५० ) श्रीरामचन्द्र ।—नाथ ( ५० ) श्रीराम ।—राज ( ५० ) श्रीराम, श्रीवै के एक राजा ।—वंश ( ५० ) रघुवंश, काठ्य विरोध, कालिदास का बनाया एक काठ्य ।—घर ( ५० ) रघु-चंद्र श्रीरामचन्द्र, रघुनाथ ।

रङ्ग तत्त्वं ( ५० ) वर्ण, डोल, रीति, दङ्ग ।—उड़ जाना ( वा० ) रङ्ग बदल जाना, रङ्ग फीका पड़ना ।  
 —उतर जाना ( वा० ) पीला होना, रङ्ग फीका पड़ना, सोच में होना, कुटना, कल्पना ।—फरना ( वा० ) खुशी करना, झिलमलना, समय का आनन्द में डिताना ।—चढ़ना ( वा० ) नये में चूर होना ।  
 —देखना ( वा० ) परिणाम देखना, निरूपित देखना ।—घ रङ्ग ( ५० ) अनेक रङ्ग का, चित्र विचित्र, भौति भौति ।—विगाड़ना ( वा० ) किसी की दशा बिगड़ना, रङ्ग उतरना ।—भङ्ग ( ५० ) आनन्द में बिगाड़ होना, आनन्द में खेद ।  
 —महल ( ५० ) आनन्द करने का महल, विश्वास करने का महल ।—मारना ( वा० ) जेल कीतना ।—रलिया ( स्त्री० ) आनन्द, हर्ष, हुलास, भोग विश्वास ।—रस ( ५० ) आनन्द, हर्ष ।—रातना ( ५० ) शक्ति चिन्तित, मित्रता ।  
 —रावा ( वा० ) रंगा हुआ, प्रसन्न, आनन्द ।—रूप ( ५० ) आकार प्रकार, रङ्ग दङ्ग, समक दमक ।—लगाना ( वा० ) रङ्गना, चपना आधिकार जमाना, प्रभाव विस्तार करना ।—भूमि ( स्त्री० ) नाट्यशास्त्र, नाटक खेलने का स्थान ।  
 रङ्गना दे० ( क्रि० ) रङ्ग करना, रङ्ग चढ़ाना ।  
 रङ्गवाई दे० ( स्त्री० ) रङ्गने का काम, रङ्गने की मजदूरी ।  
 रङ्गवैया दे० ( ५० ) रङ्गनेहार, रङ्गकार, रङ्ग करने वाला ।  
 रङ्गाई दे० ( स्त्री० ) रङ्गने का पैसा, रङ्गवाई ।  
 रङ्गाना दे० ( क्रि० ) रङ्गवाना, रङ्ग करना ।  
 रङ्गावट दे० ( स्त्री० ) रङ्गाई, रङ्गाई देना ।  
 रङ्गी, रङ्गीला दे० ( ५० ) रसीला, रसिक, मीठी; शैली, चमकीला ।  
 रक्षक तत्त्वं ( ५० ) रचना करने वाला, निर्माता । ( ५० ) षोड़ा, स्वल्प, सजावट, सजने वाला, सजैया ।  
 रचना तत्त्वं ( स्त्री० ) बनावट, निर्माण, निर्मित, सजैया, सजाने वाला ।

रचाना दे० (क्रि०) बनाना, बनयाना, मिरजाना ।  
 रज तत्० (स्त्री०) धूलि, पराग, रेत ।  
 रजक तत्० ( पु० ) धोषो, कपडे धोने वाला ।  
 रजत तत्० ( पु० ) चाँदी, रुपा, रौप्य, दुर्बर्ण ।  
 —द्युति (यु०) गौरव वर्ण, श्वेत वर्ण ।  
 रजन तत्० ( पु० ) राग उत्पादन रङ्गना, रङ्ग  
 घटाना ।  
 रजनि, रजनी तत्० (स्त्री०) राशि, रात, यामिनी ।  
 —कर (पु०) चन्द्रमा, चन्द्र ।—चर (पु०) राक्षस,  
 अमुर, निशाचर, भूत ।—जल (पु०) तुषार,  
 शीश, नीहार कुहार, कुहेसा ।—मुख (पु०)  
 प्रदोष, सन्ध्या काल ।  
 रजघाडा दे० (पु०) राज्य, राजसभूह, राजपूताना ।  
 रजखला तत्० (स्त्री०) अतुमती स्त्री ।  
 रजाई दे० (स्त्री०) राजत्व, शेरवर्ण भोग, शीतकाल  
 में घोड़ने का कपड़ा विशेष ।  
 राजाय दे० (पु०) घाघा, अनुग्रामन ।  
 राजायसु दे० (पु०) राजाज्ञा, राजा का आदेश ।  
 राजोगुण तत्० (पु०) प्रकृति के विविध गुणों में का  
 एक गुण ।  
 राजोवती तत्० (स्त्री०) रजखला, अतुमती ।  
 रउडु तत्० (स्त्री०) धुत, रस्सो, डोरे, जेवरी ।  
 रजक तत्० ( पु० ) चित्रकार, रङ्गसाज, रङ्ग करने  
 वाला ।  
 रञ्जन तत्० (पु०) रङ्गावट, चित्रकारी ।  
 रटन दे० ( पु० ) घोषना, रटना, एक बात को कई  
 बार कहना ।  
 रटना दे० ( क्रि० ) बराबर झोलते रहना, कई बार  
 धोलना, दोहराना, तिहराना ।  
 रण तत्० (पु०) युद्ध, लड़ाई, सग्राम, समर ।—भूमि  
 (स्त्री०) समर भूमि, युद्ध भूमि, रणक्षेत्र, रणक्षेत ।  
 —घास (पु०) महल, रानियो के रहने का  
 स्थान ।  
 रणित तत्० (पु०) शब्दिक, वनता हुआ ।  
 रण्डा तत्० (स्त्री०) राख, विधवा, बिना पति  
 की स्त्री ।

रण्डापा दे० (पु०) वैधव्य, विधवापत ।  
 रण्डिया दे० (स्त्री०) राख, विधवा स्त्री ।  
 रण्डी दे० (स्त्री०) बेरया, पत्निरिया, दुःखाचारिणी ।  
 रण्डुवा दे० (पु०) बिना स्त्री का, निरस्त्री ।  
 रत तत्० (पु०) मैथुन, कामकेलि, स्त्री प्रसङ्ग । (पु०)  
 चासक, लयलीन ।—जगा (पु०) राधि, जागण,  
 जाहट ।—तालिन् (पु०) अध्यापक, उस्ताद,  
 कामुक, भण्डुभा, परस्त्रोगामी ।—ताली (स्त्री०)  
 कुटनी, पुंसली ।  
 रतन तद्० (पु०) रत्न, हीरा आदि रत्न ।  
 रतनार दे० (पु०) लाल वर्ण का, लाल रङ्ग का ।  
 रतनिया दे० (पु०) एक प्रकार का चावल ।  
 रतवाही दे० (स्त्री०) सुरतैन, रत्नी हुई स्त्री । (ब०)  
 रात ही रात, रातोंरात ।  
 रताना दे० (क्रि०) कामागुट होना ।  
 रतालू दे० (पु०) शालू विशेष, एक प्रकार का मूल ।  
 रति दे० (स्त्री०) प्रीति, प्रेम, क्रीडा, स्त्री-सङ्ग, काम-  
 देव की स्त्री ।—पति (पु०) कामदेव, कन्दर्प,  
 चन्द्र ।  
 रतीचमकना दे० ( या० ) बढना, फलना, फुलना,  
 भाग्यवान होना ।  
 रतीघन्त दे० (पु०) भाग्यवाह, प्रारम्भो ।  
 रतींधा दे० (पु०) एक रोग विशेष, जिस रोग से  
 रात को नहीं सुक पडता ।  
 रतींधी दे० (स्त्री०) रोग विशेष, रतींधा ।  
 रत्ती दे० (स्त्री०) तेल विशेष, आठ यव का तेल ।  
 रत्न तत्० (पु०) मणि, हरिक, जवाहिर, बहुमूल्य  
 पत्थर ।—कन्दल (पु०) सुँगा प्रदास, विद्रुम ।  
 —गर्म (पु०) समुद्र, सागर । (स्त्री०) पृथिवी,  
 भूमि, धरती ।—जटित (पु०) रत्न अक्षित, रत्न  
 भूषित, जिसमें रत्न जडे हों ।—जीत (पु०) एक  
 प्रकार का चौधा, चाँद, की चौध ।—माला  
 (स्त्री०) रत्नों की बनी माला, मोती की माला ।  
 —सातु (पु०) देवालय, देवलोका, सुमेरु पर्वत ।

—सिंहासन (पु०) राजसिंहासन, रथों से जुड़ा हुआ सिंहासन ।—(खी०) मेदिनी, पृथिवी ।  
 रखाकर तत्त्वं (पु०) महादेधि, सागर, समुद्र ।  
 रखावली तत्त्वं (खी०) रथों की माला, रथ भंगि, रथ माटिका का नाम, जिसे राता योद्धर्ष ने बनाया था ।  
 रथ तत्त्वं (पु०) गाड़ी, बहन ।—फार (पु०) रथ बनाने वाला, बड़े वर्षसंख्यक जाति विशेष, माहिष्य जाति के पुष्ट से करण जाति की कन्या में उत्पन्न सन्तान का रथकार कहते हैं ।—सार्भक (पु०) गिरिका, पालकी ।—गुप्ति (खी०) रथ का परदा, ओहार ।—घान (पु०) सारथी, रथवाह, रथ हाँकने वाला ।—याहक (पु०) सारथी, रथवान, यन्त्रा ।  
 रथाङ्ग तत्त्वं (पु०) [ रथ + अङ्ग ] पहिया, चक्र, चक्रा ।  
 रथी तत्त्वं (पु०) सवार, रथ पर चलने वाला, रथ का स्वामी ।  
 रथ्या तत्त्वं (खी०) गली, मार्ग, राह, बाट, इगार ।  
 रथ्य, रथ्यन तत्त्वं (पु०) दांत, दान, दन्त ।—रथ्यव (पु०) चोठ, चपट, चोट ।  
 रथ्या दे० (पु०) भीत की परत ।  
 रथी दे० (खी०) निकम्मा, पुराना कामग्न ।  
 रथ्य तत्त्वं (पु०) रथ, युद्ध, संग्राम, समर ।—भद्र (पु०) छावनी, शिविर ।—घन (पु०) महावन, भयानक वन ।—घास (पु०) रानियों के रहने का स्थान ।  
 रन्तिदेव तत्त्वं (पु०) चन्द्रवंशी राजा विशेष ।  
 रन्थना दे० (खी०) चक्रों, पुराना, मिला जाना ।  
 रन्थ तत्त्वं (पु०) छिद्र, छेद, बिल ।  
 रन्थ दे० (खी०) जिसकन, जिसकन, पतन ।  
 रन्थना दे० (खी०) जिसकन, गिरना, खिसकना ।  
 रन्थपाना दे० (खी०) वेग से दौड़ना, बलपूर्वक दौड़ना, वेग पूर्वक चलना ।  
 रन्थ दे० (पु०) चम्गाव, धान, स्वभाव ।

रपटाना दे० (खी०) दौड़ाना, भगाना, कुदाना ।  
 रथ्य दे० (खी०) चम, चकाई, चकावट, दौड़ भुप ।  
 रथ्यना दे० (खी०) दौड़ भुप करना, भटकना, घकना, चम करना ।  
 रथ्य दे० (पु०) शान्त, चक्रा ।  
 रथ्यी दे० (खी०) खींदी, रथ्य खीटा हुआ द्रव्य ।  
 रथ्येरा दे० (पु०) गुताम, किङ्कर, नौर, सेयक, भूय, चक्र ।  
 रथ्य तत्त्वं (पु०) [ रथ + अन्त ] बिल विनोद, क्रीडा, खेल, विहार, साधियों के साथ क्रीडा ।  
 रथ्यी तत्त्वं (खी०) मनोहारिणी स्त्री, सुन्दरी, स्त्री, ललना, महिला ।  
 रथ्यीक तत्त्वं (पु०) मन्भावन, मनोहर, सुन्दर ।  
 रथ्यीय तत्त्वं (पु०) मनोहर, सुन्दर, सुपहो ।  
 रथ्य दे० (पु०) खेल, क्रीडा, कौमुक, विहार ।  
 रथ्य दे० (खी०) रमण करना, खेलना, कुदना ।  
 रथ्य तत्त्वं (पु०) ज्योतिष, शास्त्रका, अङ्ग विशेष, ग्रन्थ शास्त्र ।  
 रथ्य तत्त्वं (खी०) लक्ष्मी, विष्णुपत्नी ।  
 रथ्य (पु०) विष्णु ।  
 रथ्य दे० (खी०) खिलाना, फुलवाना, बहाना ।  
 रथ्य तत्त्वं (खी०) स्वर्गाङ्गना विशेष, पक, चम्परा का नाम, केला, कदली ।  
 रथ्य तत्त्वं (खी०) रात्रि, सुन्दरी, मनोहारिणी, पद्मिनी ।  
 रथ्य तत्त्वं (पु०) वेग, प्रवाह, धारा ।  
 रथ्य दे० (खी०) मिलना, पिसना, मिश्रण, साक्षात्कार करना ।  
 रथ्य दे० (खी०) मिश्रण, मीवन ।  
 रथ्य तत्त्वं (पु०) कम्बल, पशुमीने का कम्बल ।  
 रथ्य तत्त्वं (पु०) शब्द, अत्रि, नाद, निनाद, आहट ।  
 रथ्य दे० (पु०) रनघाव का शेषक ।  
 रथ्य दे० (पु०) छोटे छोटे कण, बूट, धूल, बाल ।  
 रथ्य तत्त्वं (पु०) सूर्य, मातृवह, दिवाकर ।—तनया



(श्री०) यमुना नदी ।—नन्दिनी ( श्री० ) यमुना नदी ।—पुत्र ( पु० ) कर्ण, सुग्रीव, यमराज, शनै-  
स्वर ।—मणि ( पु० ) सूर्यकान्तमणि, सूर्य का  
मणि ।—मण्डल ( पु० ) सूर्यमण्डल, सूर्यलोक ।  
—चार आदित्यवार, चतवार ।

रशना तत्० (श्री०) जीम, जिह्वा ।

रश्मि तत्० ( श्री० ) किरण, तेज, कान्ति, मण्डल,  
रास, घोड़े की बागदोर ।

रस तत्० ( पु० ) स्वाद, सवाद, अक, सार, निष्कर्ष,  
पट्ट रस, भोजन के रस, गुङ्गार हास्य आदि नव  
रस, पारा, मेल, मिलाप, मसम, शोषधियों का  
मसम ।—रस ( अ० ) धीरे, धीरे ।—ज्ञ ( पु० )  
रसिक, रसज्ञाता, रस समझने वाला ।—ज्ञा  
(श्री०) जीम, रसना ।—राज ( पु० ) पारा धातु ।

रसन तत्० ( पु० ) स्वाद, चीखना ।

रसना तत्० (श्री०) रसज्ञा, जीम, जिह्वा ।

रसमस्ता दे० ( गु० ) भीजा, भीगा, चाहुँ, छोदा ।

रसमस्ताना दे० ( क्रि० ) भींगना, चात्र होना, पंसी-  
जना ।

रसरदा दे० ( पु० ) डोरी, मोटी रस्सी जिससे पानी  
खींचा जाता है ।

रसघत दे० (श्री०) रसौत, अञ्जन विशेष ।

रसघटी तत्० ( श्री० ) रसीली, रसयुक्ता, मधुर,  
मोटा, सुग्रीवा ।

रसा तत्० (श्री०) पृथिवी, भूमि, धरती, धरणी ।

रसाञ्जन तत्० ( पु० ) काजल, सुर्मा ।

रसातल तत्० ( पु० ) पृथिवी तल, अधोलोक विशेष,  
सातवाँ लोक, वलिराज का लोक ।

रसाना दे० ( क्रि० ) जोड़ना, मिलाना, संयुक्त ।  
करना ।

रसायन तत्० ( पु० ) श्रीमिया, रस विशेष, प्राण  
बचाने वाले रस ।—विद्या (श्री०) रस सम्बन्धी  
विद्या, जिसमें धातुओं का मिलाना प्रयुक्त करना  
आदि बातें सिखी हैं ।

रसाल तत्० ( पु० ) आम, आम्य ।

रसिक तत्० ( पु० ) रसज्ञ, रसज्ञाता, रसीला, रसिक  
लम्पट, दुराचारी, गुप्ता ।

रसिकार्थ तद्ग० (श्री०) रसिकता ।

रसिया दे० ( पु० ) रसिक, रसज्ञ, लम्पट, आसक्त ।

रसियाना दे० ( क्रि० ) गीला होना, भींगना ।

रसीव दे० (श्री०) पहुँच, पत्र, संवादपत्र ।

रसीला दे० ( गु० ) रसयुक्त, रसपूर्ण, रस विविध ।

रसन दे० (श्री०) लहसुन, कन्द विशेष ।

रसे दे० ( अ० ) धीरे धीरे, हैले हैले, शनैः शनैः ।

रसोद्भवा दे० ( पु० ) रिकिया, पावक, पकाने वाला ।

रसोई दे० (श्री०) पाक, भोजन ।

रसौत दे० ( पु० ) अञ्जन विशेष, रसवत ।

रस्सा दे० ( पु० ) डोरी, जेवरी ।

रस्सी दे० ( स्त्री० ) डोरी, रस्ती ।

रहकल दे० (श्री०) छोटी तोप, हुपक ।

रहकला दे० ( पु० ) छकड़ा, गाड़ा, सामान होने  
वाली गाड़ी ।

रहचोला दे० ( पु० ) लड्डो पत्तो, चापडूही, ग्रीठी  
वातें ।

रहजाना दे० ( धा० ) घाट जोहना, ठहरना, सक्तीय  
करना ।

रहट दे० ( स्त्री० ) गराती, चर्खी, पानी निकालने की  
फल ।

रहटा दे० ( स्त्री० ) चर्खी, गराती ।

रहड़ दे० ( पु० ) सगड़, छकड़ा ।

रहत दे० ( पु० ) टिकाव, टहराव, स्थिति, वास ।

रहते दे० ( अ० ) सामने, आँख के सामने ।

रहन दे० ( स्त्री० ) चलन, रीति, व्यवहार, भौति ।

रहना दे० ( क्रि० ) टिकना, ठहरना, बसना ।

रहमार दे० ( पु० ) बटमार, चोटा, चोर, लसकर, डाँड ।

रहला दे० ( पु० ) बगल, बना, बूट, बौद्ध ।

रहवा दे० ( पु० ) चेला, लौंडा, दास, मृत्य, नौकर ।

रहवाई दे० ( स्त्री० ) घर का भाड़ा, घर में रहने का  
किराया ।

राहस्यैया दे० ( पु० ) बाघी, निवासी; उहरने वाला, रहने वाला ।  
 राहस्य तद्० ( पु० ) ठंडोलपन; हसीया, हसोत्पन्न ।  
 राहस्यना दे० ( क्रि० ) हुलसना, प्रसन्न होना, धान-  
 न्द्रित होना, हर्षित होना ।  
 राहस्य तत्० ( पु० ) एकान्त निजंन, निपुत्र, गोपनीय,  
 गुप्त ।  
 राहास दे० ( स्त्री० ) स्थिति, पाष, टिकाव ।  
 राहास दे० ( पु० ) रहने, स्थिति, टिकाव ।  
 राहित तत्० ( पु० ) यजित, हीन, मून्ध, विना ।  
 राई दे० ( स्त्री० ) सर्पय, सर्पों, रत्निका, ( पु० ) राजा,  
 प्रधान, स्वामी, यह राजा के अर्थ में संज्ञा शब्दों  
 के पीछे आता है । घमा—रघुपार, यदुराई ।  
 राईया दे० ( स्त्री० ) कृषिका, सर्पय, मर्षों, तैरी ।  
 राइ दे० ( पु० ) राजा ।  
 राजत तद्० ( पु० ) राजपुत्र, मान्य, ठाकुर, चहीरों  
 की उपाधि ।  
 राण दे० ( पु० ) राजा, राण्य, राजपुत्र, राजपूत ।  
 —रायान ( पु० ) राज राज, महाराज, राजों में  
 प्रधान ।  
 रायता दे० ( पु० ) व्यवृत्त विशेष ।  
 रायकांश दे० ( पु० ) माला, बर्षी ।  
 रांगरांगा दे० ( पु० ) धातु विशेष, खीसा ।  
 रांजन दे० ( पु० ) प्रिय, प्रियतम; सज्जन एक प्रसिद्ध  
 प्रणवी, राजपूतानि में इशका स्वींग रचते हैं ।  
 रांभरा दे० ( पु० ) जिमीना वाला ।  
 रांभा दे० ( पु० ) प्यारा, प्रिय, प्रियतम, स्नेही,  
 प्रेमी ।  
 रांड दे० ( स्त्री० ) रंघा, विषयां, संपत्तिका, विना  
 पति की स्त्री ।—का रांड ( पा० ) विषया पुत्र,  
 विगहा हुआ लड़का ।  
 रांडा ( पु० ) बौक, बण्ड्या, विना पत का, चफला ।  
 रांवीनी दे० ( स्त्री० ) गाय विशेष, एक राग का  
 नाम ।

राइ पड़ोस दे० ( पु० ) चड़ोस पड़ोस ।  
 रांधना दे० ( क्रि० ) रींधना, पकाना, सींजना, उबा-  
 नना, रचोई बनाना ।  
 रांपी दे० ( स्त्री० ) लुपों, पाष काटने का चक्र,  
 कण्ठी ।  
 रांमना दे० ( क्रि० ) गाय का शब्द, बकना ।  
 राफा तत्० ( स्त्री० ) पूर्णिमा, पूर्णमासी, पूर्णों ।  
 —पति ( पु० ) चन्द्र, चन्द्रमा ।  
 राख दे० ( स्त्री० ) भस्म, भस्त्र ।  
 राखना दे० ( क्रि० ) रखना, धरना, ठहराना, रखा  
 पूर्वक ठहराना ।  
 राखी दे० ( स्त्री० ) लहर, गण्डा, रखापुत्र, रेशम या  
 सूत का बना हुआ गण्डा, जो सावन की पूर्णिमा  
 के हाथ में बांधी जाती है ।  
 राग तत्० ( पु० ) रङ्ग, साल, क्रोध, असुराग, प्रेम,  
 स्नेह, गान का सुर, शैरव, महाद, मेघ, श्री,  
 सारङ्ग, हियबोल, वसन्त और दीपक ये छः राग  
 हैं ।—रङ्गाना ( पा० ) धानन्द, हीना, धानन्द  
 मनाना ।—रङ्गा ( पा० ) गाना, बजाना ।  
 रागना दे० ( क्रि० ) गीत गाना, गाना प्रारम्भ  
 करना ।  
 रागिणी तत्० ( स्त्री० ) गान भेद, तान, रागिनी  
 छत्तीस हैं । शैरव चादि छः रागों में प्रत्येक राग  
 की छः छः रागिणी होती हैं ।  
 रागी तत्० ( पु० ) गायक, गान निपुण, प्रिय  
 क्रोधी ।  
 राघव तत्० ( पु० ) रघुनाथ, श्रीरामचन्द्र, रघुराज,  
 रघुवंश के राजा ।  
 राचना दे० ( क्रि० ) प्रेम विषय होना, मिलना,  
 लगना, लीन होना ।  
 राछ दे० ( पु० ) शिल्पियों के चक्र, बड़ई चादि कारी-  
 गरों के औजार ।  
 राज तद्० ( पु० ) राज्य, राजा का अधिकार, कारी-  
 गर, संगतरास, बवई ।—कन्या ( स्त्री० ) राजा  
 की बेटे, राजकुमारी, राजकुंवरी ।—कर ( पु० )

राजस्य, राजकर, लगान, राजा को दिया जाने वाला धन, यह शंश।—**कीय** (गु०) राजा का, राजसम्बन्धी, राजावत, सरकारी, बादशाही।—**कीय महासभा** ( स्त्री० ) राजा का दरबार, शाही दरबार।—**कुटुम्ब** ( पु० ) राजपराना, राजवंश, राजकुल।—**कुमार** ( पु० ) राजपुत्र, राजा का वह पुत्र जो राजा का अधिकारी हो।—**कृत्य** ( पु० ) राजकाम, राजा का काम।—**कीश** ( पु० ) राजा का खजाना, राजा का वह खजाना जो प्रजा के लाभ के लिये लगा रहता है, जिसके रुपये प्रजा की भलाई के लिये लगाये जाते हैं।—**गादी** ( स्त्री० ) राजासन, राजा का घासन, सिंहासन, राजगद्दी।—**त्व** ( पु० ) राजा का अधिकार, राजा का काम, प्रभुता।—**द्वार** ( पु० ) राजा के महल का द्वार, बड़ा द्वार, पुर्द्वार, नगर का फाटक।—**वृण्ड** ( पु० ) राजा की शक्ति विशेष, शासन सम्बन्धी बल, राजा का दिया हुआ दण्ड।—**द्रोही** ( पु० ) राज्य का श्रेष्ठ करने वाला, राजा का अगुभवन्तिक।—**धर** ( पु० ) अमात्य, मन्त्री, सचिव।—**धानी** ( स्त्री० ) राजनगर, राजा का मुख्य नगर, जहाँ राजा रहते हैं।—**नीति** ( स्त्री० ) राजा के शासन करने की रीति, ग्रन्थ विशेष।—**पत्नी** ( स्त्री० ) राजा की स्त्रियाँ।—**पुत्र** ( पु० ) राजकुमार, राजपुत्र, सचिव।—**भोग** ( पु० ) बड़ा भोग, दोगहर का बड़ा भोग, मध्याह्न काल का नैवेद्य।—**मन्दिर** ( पु० ) राजभवन, राजा का महल।—**मार्ग** ( पु० ) रात्रपथ, सबक।—**राणी** ( स्त्री० ) महारानी, राजा की रानी।—**रोग** ( पु० ) सय रोग, बड़े रोग जो बड़े नहीं होते।—**शासन** ( पु० ) राजा का दण्ड।—**स्य** ( पु० ) यह विशेष, राजा के करने का यह।—**हंस** ( पु० ) पक्षी विशेष।

**राजना दे०** ( क्रि० ) चमकना, गीमना, शोभित होना, विराजना।

**राजस तत्०** ( पु० ) रजोगुण, यहद्वार, गर्भ।  
**राजस्व तत्०** ( पु० ) राजकर, राजधन, राजा को दिया जाने वाला धन, मातंगुजारी।

**राजा तत्०** ( पु० ) नृपति, भूपति, भूमिपति, सुपाल।

**राजाहा तत्०** ( स्त्री० ) राजा की चाचा, राजा चादेश।

**राजी तत्०** ( स्त्री० ) रंजि, रंजित, रंजित, राजेश्वर तत्० ( पु० ) [ राजा + श्वर ] महाराजाधों के मालिक, महीपति।

**राज्ञी तत्०** ( स्त्री० ) महारानी, महिषी, राजपत्नी।

**राज्य तत्०** ( पु० ) राज, देय, राष्ट्र राजा का अधिकृत देश, राजा का अधिकार स्थित देश।

**राठी दे०** ( पु० ) ब्राह्मण विशेष, राठ देशी ब्राह्मण।

**राणा दे०** ( पु० ) राजपूत, क्षत्रिय विशेष, राजा।

**राणी दे०** ( स्त्री० ) राज्ञी, राजपत्नी, रानी।

**रात तद्०** ( स्त्री० ) रात्रि, रजनी, निशा, रैन।

**रातना दे०** ( क्रि० ) रत्नना, रत्न देना, साल रत्न में रत्नना।

**राता तद्०** ( पु० ) रत्न, साल, साल रत्न में रत्ना हुआ।

**रातींधिया दे०** ( पु० ) रात्र्यन्ध, रात का अन्ध, अन्धता।

**रात्रि तत्०** ( स्त्री० ) रात निशा, रैन।—**सर** ( पु० ) रास, निशाचर, भूत, रासस।

**राव दे०** ( पु० ) पीर, पीप, बिगड़ा फूल।

**राधा तत्०** ( स्त्री० ) श्रीकृष्ण की स्त्री, गोपी, वृषभान की पुत्री।—**कान्ता** ( पु० ) श्रीकृष्ण।

**कुण्ड** ( पु० ) गोवर्द्धन पर्वत के पास का एक कुण्ड जिसे श्रीकृष्ण ने स्नानापाया था।—**बहुभ** ( पु० ) श्रीकृष्ण।

**राधिका तत्०** ( स्त्री० ) राधा नाम की गोपी।

**राव दे०** ( स्त्री० ) गुठ का रस, सीरा, लोधा।

**रावडी दे०** ( स्त्री० ) रवडी, बर्बडी।

**राम तत्०** ( पु० ) परशुराम, भगवान् का अवतार। ये नामदक्षि ऋषि के पुत्र थे, और उन्होंने ब्रह्मिष्ठ नाम के ऋषियों का नाश किया था रामचन्द्र यह भी भगवान् ही के अवतार थे। राजा दशरथ के यह

ने प्रकट हुए थे । बलराम, श्रीकृष्ण के चचेरे भाई ।  
 —कहानी ( श्री० ) बड़ी कहानी, दुःख पूर्ण  
 कथा ।—राम ( श्री० ) प्रणाम, उलाम, पूजा  
 बोधक ।—कली ( श्री० ) रागिणी विशेष, एक  
 रागिणी का नाम ।—गिरि ( पु० ) पर्वत विशेष,  
 विश्वरूप पर्वत, यह बुन्देलखण्ड में है ।—जनी  
 ( श्री० ) नौवीं, वेरिया, पत्तिया ।—तरोई ( श्री० )  
 एक तारकारों का नाम, भिखड़ी ।—दूत ( पु० )  
 रामचन्द्र का दूत, हनुमान ।—दोहाई ( पु० )  
 राम की शपथ, राम की मौगन्द ।—रस ( पु० )  
 जलज, दून, निमक ।—शरः ( पु० ) तरकट, मृग  
 विशेष ।

रामा तत्त्वं ( श्री० ) गारी, सुन्दरी श्री ।  
 रामानन्दी दे० ( पु० ) शैलानी, माधु, रामानन्द के  
 अनुयायी ।

रामानुज तत्त्वं ( पु० ) विशिष्टाद्वैत सिद्धान्त के प्रचा-  
 रकों में से सर्वप्रमुख थे । इन्होंने भारतवर्ष में  
 जैतियों और मायावादियों का प्रभाव हटाने के  
 लिये प्रायःपण से प्रयत्न किया था और अपने  
 प्रयत्न में सफल भी हुए थे । स्मृति-काल तत्त्वं में  
 इनके प्रकट होने का समय आशुष १०४६ वर्षीय  
 ११२० ई० बतलाया गया है । परन्तु कोई कोई  
 इनका जन्म १००२ ई० में मानते हैं । इन्होंने  
 विशिष्टाद्वैत सिद्धान्त के अनेक ग्रन्थ भी लिखे हैं ।

रामायण तत्त्वं ( पु० ) रामकथा, एक ग्रन्थ विशेष,  
 जिसके कर्ता गोस्वामी तुलसीदासजी हैं ।

रामावत दे० ( पु० ) माधु विशेष, रामानन्दी माधु ।  
 राय दे० ( पु० ) अत्रियों की उपाधि ।

रायता दे० ( पु० ) रायता, व्यवहृत विशेष ।  
 रायमानिया दे० ( पु० ) चावल विशेष, एक प्रकार  
 का चावल ।

रार दे० ( पु० ) कगड़ा, विद्याद, विरोध, विद्वेष,  
 कलह ।  
 राल दे० ( पु० ) धुना, कराल, एक प्रकार का मोँद,  
 जो धूप में टाकी जाती है ।

राय दे० ( पु० ) राय, राई, राजकुमार अत्रियों की  
 उपाधि ।—चाय ( पु० ) राय रङ्ग, भोग मिलाव ।  
 रायटी दे० ( श्री० ) तम्बू, फनात ।

रायण तत्त्वं ( पु० ) दयानन, लङ्का का अधिपति ।  
 रायत दे० ( पु० ) कीर, बहादुर, चूमा, चावल ।  
 रायरा, रायरो ( सर्व ) तुझारा ।

राशि तत्त्वं ( श्री० ) धाने चादि का देर, मैय, मृय  
 चादि बारह राशि, गणित का एक अङ्ग विशेष ।  
 —चक्र ( पु० ) राशि चक्र, नक्षत्र मण्डल, द्वादश  
 भाग ।

राष्ट्र तत्त्वं ( पु० ) बसा हुआ देश, शासित देश, देश  
 शासन प्रणाली ।

रास तत्त्वं ( पु० ) क्रीड़ा, खेल, वयान, एक प्रकार का  
 नाच, छोटे छोटे लड़के और लड़कियाँ पहनेः चापस  
 में एक दूसरे का हाथ पकड़ कर नाचते थे । जीवा  
 धान कल श्रीकृष्ण लीला होती है ।

रासन तत्त्वं ( पु० ) रसना से उत्पन्न ज्ञान, जीम का  
 स्वाद ।

रासम तत्त्वं ( पु० ) गर्दा, गर्दम ।

रासी दे० ( पु० ) मध्यम ।

राहना दे० चाँही में दाँत बनाना ।

राहु तत्त्वं ( पु० ) आठवाँ ग्रह, दैत्य विशेष, केतु का  
 सिर, कहते हैं यही चन्द्रमा और सूर्य को ग्रस्त  
 है ।—रास ( पु० ) ग्रहण, चन्द्रमा और सूर्य का  
 ग्रहण ।

रिक्त तत्त्वं ( पु० ) खोखला, शून्य, रीता ।

रिचा तत्त्वं ( श्री० ) शक, वेद का मन्त्र विशेष ।

रिभवीया दे० ( पु० ) रिक्तने वाला, विह्वनेवाला,  
 प्रसन्न करने वाला ।

रिक्ताना दे० ( कि० ) प्रसन्न करना, मनाना, सताना,  
 पोड़ा देना, दुःख देना ।

रिताना दे० ( कि० ) रिक्त करना, छुँटा करना, शून्य  
 करना ।

रितु तत्त्वं ( श्री० ) ऋतु, समय ।—राजि ( पु० )  
 बसन्त ।

- रिद्धि तद्द० (स्त्री०) बद्धि, सम्पत्ति, यदती ।
- रिपु तद्द० (पु०) शत्रु, वैरी, द्वेषी, विरोधी ।—ता (स्त्री०) शत्रुता, द्वेष, विरोध ।
- रिपुञ्जय तद्द० (पु०) अति यलवाद्, शत्रुजयी ।
- रिस दे० (स्त्री०) क्रोध, कोप, विचियारहट, अग्र सन्नता ।
- रिसना दे० (क्रि०) क्रोध करना, विचियाना, भ्राना, टपकना, छूना, गिरना ।
- रिसहा दे० (स्त्री०) क्रोधी, कोपी ।
- रिसाना दे० (क्रि०) क्रोध युक्त होना, क्रोध करना ।
- री दे० (अ०) अरी, नीच सम्बोधन ।
- रींगना दे० (क्रि०) चलना, फिरना, चिठना, विचियाना ।
- रींधना दे० (क्रि०) पकाना, सुराना, उखिनना ।
- रीछ तद्द० भासु, ब्रह्म, भल्लुक ।
- रीभ दे० (स्त्री०) चाह, इच्छा, प्यार, अभिलाष, लीला, कोटुक ।
- रीभना दे० (क्रि०) प्रसन्न होना, प्रीति करना ।
- रीढ दे० (स्त्री०) पीठ के बीच की हड्डी ।
- रीता दे० (पु०) मून्व, खाली, हूँछा, रिक्त ।
- रीति तद्द० (स्त्री०) चाल, चलन, प्रकार, व्यवहार ।
- रीरियाना दे० (क्रि०) विचियाना विचियाना, रेरकरना ।
- रोस दे० (स्त्री०) क्रोध, कोप ।
- रुक तद्द० (पु०) रोग, उदार, दाता, दीप्ति, प्रकाश, उत्रियाहट ।
- रुकना दे० (क्रि०) अटकना, बन्द होना, प्रतिहत होना, विरत होना ।
- रुकैया दे० (पु०) रोकने वाला, प्रतिबन्धक, छेँक, रुकावट ।
- रुकाव दे० (पु०) छेँक बाधा, प्रतिबन्धक, रोक, अटकाव ।
- रुक्य तद्द० (पु०) सुवण, स्वर्ण, हिरण्य, राजा भीष्मक का बड़ा बेटा, यह रुक्मिणी का भाई था और श्रीकृष्ण का साला ।
- रुक्मिणी तद्द० (स्त्री०) कुण्डिनपुर के राजा भीष्मक की पुत्री, जिसे श्रीकृष्ण ने ब्याहा था ।
- रुधा तद्द० (पु०) रुखा, कठोर, स्नेह रहित, अविषयण ।
- रुख दे० (पु०) सम्मुख, सामना, आमना आमना सम्मति, अनुमति ।
- रुखाई दे० (स्त्री०) कठोरता, कड़ाई, रुधता ।
- रुग्ण तद्द० (पु०) रोगी, टेढा, बाँका, निरुछा ।
- रुच तद्द० (स्त्री०) रुचि, इच्छा, अभिलाष, मनोरथ ।
- रुचक तद्द० (पु०) आग्रहण विशेष माला, प्राकृत्य द्रव्य, मञ्जीखार ।
- रुचना दे० (क्रि०) अच्छा लगना, मनोरथ, मान्य होना, माना ।
- रुचि तद्द० (स्त्री०) इच्छा, अभिलाष ।
- रुच्य तद्द० (पु०) सुन्दर, मनोरथ, रुचिकर ।
- रुजा तद्द० (पु०) रोग, बीमारी ।
- रुपह तद्द० (पु०) घड, बिना शिर का देह, कवच्य ।
- रुदन तद्द० (पु०) रोना, रोदन, रुलाई, अश्रु पात करना, आँसू बहाना, विलाप ।
- रुद्ध तद्द० (पु०) रुका हुआ, छेँका हुआ, अटका हुआ, यथा हुआ ।
- रुद्र तद्द० (पु०) शिव, महादेव, रुद्र एकादश बड़े जाते हैं ।
- रुद्राकीर्ण तद्द० (पु०) रुद्र + आक्रोह, श्मशान, रुद्र का विनोद स्थान ।
- रुद्राक्ष तद्द० (पु०) वृक्ष विशेष, जिसके दाने की माला शैव और संन्यासी लाग पहनते हैं ।
- रुद्राणी तद्द० (स्त्री०) शिवा, भवानी, पार्वती, उमा ।
- रुधिर तद्द० (पु०) रक्त, शोणित, खून ।
- रुपना दे० (क्रि०) ठटना, अडना, धमना ।
- रुपया दे० (पु०) मुद्रा, चाँदी का सिक्का ।
- रुपहरा दे० (पु०) रुपा का बना हुआ, रुपा सम्बन्धी ।
- रुपैया दे० (पु०) रुपया, मुद्रा, सिक्का ।

लाना दे० (क्रि०) लोहे से पीसना, घूरकरना, घूरना करना, घूरना ।

लाना दे० (क्रि०) दुग देना, दुकाना, पीड़ा, पहुँचाना ।

लाना (क्रि०) रिसाना, रुष्ट होना, भद्रसख होना, कोपना, क्रोध करना ।

लण तत्० (गु०) मुहु, कुपित ।

लं दे० (स्त्री०) लंघा, कपाम, घूस ।

लंघा दे० (पु०) लंघ का व्यापारी, रूप का ।

लंगटा दे० (पु०) रोम, रोवों, लोम, शरीर पर के बाल ।

लंघट दे० (स्त्री०) मैल, मल, मलिनता ।

लंघना दे० (क्रि०) रोकना, रुकावट डालना, रोकना, रूगोरना ।

लस दे० (पु०) वृक्ष, पेड़, तप, तपहर ।

लसइ दे० (पु०) योगी विशेष ।

लसड़ा दे० (पु०) छोटा पेड़, गिरवा, पैधा ।

लसा दे० (पु०) रुच, कठिन, कठोर, सूखा ।

लसाई दे० (स्त्री०) कठोरता, कठिनता, रुखापन ।

लसानो दे० (स्त्री०) शख विशेष, खैनी, काँटी ।

लसो दे० (स्त्री०) चिखुरी, गिलहरी ।

लस दे० (पु०) कोट विशेष ।

लसा दे० (गु०) रोग से पीड़ित, रगन ।

लसना दे० (क्रि०) भद्रसख होना, लसना, भगइना ।

लसइना ।

लसो दे० (गु०) भगइना, अक्षयस्थित चित्त ।

लस तत्० (पु०) उत्पन्न, प्रसिद्ध ।

लसि तत्० (स्त्री०) उत्पत्ति, प्रसिद्धि, शब्दार्थ विशेष, प्रकृति प्रत्ययगत अन्य अर्थ होने पर भी, अन्वयार्थ वाचक शब्द लसि कहे जाते हैं ।

रूप तत्० (पु०) आकार, भाकृति सुन्दरता :

—जस्त (पु०) राँगा ।—निधान (पु०) अति-

ग्य सुन्दर ।—रस (पु०) रूप का मत्स ।—राशि

(पु०) सुन्दरता का समूह, अतिगण सुन्दर ।—घती

(स्त्री०) रूपवाली, सुक्या, सुन्दरी ।—घान (गु०)

सुन्दर, सुक्य, सुपड़ ।—हला (पु०) रूप का

बना, रूपवाला ।

रूपा तद्० (गु०) रजत, चाँदी, रवेत, धातु विशेष ।

रूमटी दे० (स्त्री०) चोल घुमाव, मिथ, कपान, बहाना ।

रूमाल दे० (पु०) चाँगीडा, छोटा चाँगीडा ।

रूसना दे० (क्रि०) छटना, कुपित होना, मुहु होना ।

रूसी दे० (स्त्री०) सिर का मैल, चाँद ।

रे दे० (स्त्री०) नीच सम्बोधन ।

रेक दे० (पु०) गदई की बोली ।

रेंकना दे० (क्रि०) गधा का बोलना ।

रेंगना दे० (क्रि०) चलना, फिरना, धीरे धीरे चलना ।

रेंट दे० (स्त्री०) रहट, पानी निकलने का कन, चरामी ।

रेंटा दे० (पु०) पोंटा, नेटा, नासिका का मल ।

रेंड, रेंडी दे० (स्त्री०) परपट का वृक्ष, रेंड का पेड़ ।

रेंदी दे० (स्त्री०) एक प्रकार का खरबूजा, छोटा खरबूजा ।

रेख तद्० (स्त्री०) रेखा, लकीर, चिन्ह, बिन्दु समूह, जिसकी मोटाई न हो, किन्तु केवल सम्भार ही वह रेखा कही जाती है । भाग्य, प्रारब्ध ।

रेखा तत्० (स्त्री०) लकीर, चिन्ह, लताट, कपाल, भाग्य, प्रारब्ध ।

रेखारी दे० (स्त्री०) हलकी रेखा, चिन्ह ।

रेगु तत्० (स्त्री०) रेगु, धूली, माटी की पुकनी, रज ।

रैता तत्० (पु०) चीर्य, गुक्र, धातु, शरीरस्थ सम धातुओं के अन्तर्गत मुख्य धातु ।

रैतना दे० (क्रि०) काटना, चर को तेज करना, रेता काटना जिससे धीरे धीरे छटे ।

रैतल दे० (पु०) किरकिरा, रैतीला, ककरेल ।

रैता दे० (पु०) बाण्ड, रेगु, रेत ।

रैतारै दे० (स्त्री०) रैतने की मजूरी ।

रेतियाना दे० (क्रि०) रेतना, चिकनाना, तेज करना ।

रेती दे० (स्त्री०) बाहू, रेत, किरकिरा, सोहन ।

रेतीला दे० (पु०) रेतपुत्र, रेतसहित, बसुधा, किरकिरा, कैंकरैण ।

रेतुभा दे० (पु०) रेतने वाला, रेतने का काम करने वाला ।

रेफ तत्० (पु०) रकार, र अक्षर, उपशून का, सत्ता-इसवाँ अक्षर, र, ।

रेलना दे० (क्रि०) रेलना, धक्का देना, दकेलना ।

रेलपेल दे० (स्त्री०) अधिकता, अधिकार्द, बहुतायत ।

रेला दे० (पु०) बाढ़, नदी की वृद्धि, पशुओं की श्रेणी, दकेल, धक्का ।

रेयड़ी दे० (स्त्री०) एक प्रकार की मिठार्द।—को फेर में पड़ना (वा०) फन्दे में फँसना, कठिनता में पड़ना ।

रेयती तत्० (स्त्री०) नक्षत्र विशेष, सत्ताईसवाँ नक्षत्र, एक राजकन्या, जो बलराम को ब्याही गई थी ।

रेवा तत्० (स्त्री०) नदी विशेष, नर्मदा नदी ।

रेह दे० (स्त्री०) सज्जी, मिट्टी का एक प्रकार का खार विशेष, जो कपड़े साफ करने के काम में आती है ।

रेहड़ दे० (पु०) एक प्रकार की गाड़ी, सहड़ ।

रेहला दे० (पु०) चना, चणक, घूट ।

रेह पेह दे० (स्त्री०) अधिकता, अधिकार्द ।

रेन दे० (स्त्री०) रात्रि, रात, निया, रजनी ।

रेयत तत्० (पु०) पर्यत विशेष, जो द्वारका के पास है जो आजकल गिरनार के नाम से प्रसिद्ध है । महादेव, चौदह मनुष्यों में का एक मनु, रेयती का पिता ।

रोसा दे० (पु०) रोम, रूंगटा, लोम ।

रोसाई दे० (स्त्री०) रोना, विलाप, रोदन, हाहाकार ।

रोसाना दे० (क्रि०) रुलाना, दुःख देना, पीड़ा पहुँचाना, कष्ट देना ।

रोसास दे० (पु०) रुसाई, रोसास, रोने की रुकावट ।

रोए दे० (स्त्री०) रोषा रूंगटा, लोम ।

रोंगटी दे० (स्त्री०) भगड़ा, ठगविद्या, धूर्तता ।

रोंट दे० (स्त्री०) छल, बसुना, प्रतारण, बहाना, ब्यापार, मिया ।

रोंटना दे० (क्रि०) सुकरना, नकारना, छल करने बहाना करना, धोल घुमाव करना ।

रोंटिया दे० (पु०) विश्वासघातक, छपी, कपट प्रपञ्ची ।

रोंपना दे० (क्रि०) लगाना, गाड़ना, वृक्ष का लगाना, एक स्थान से उखाड़ कर दूसरी जगह बोना ।

रोंवा दे० (पु०) रोम, रोंवा, रूंगटा ।

रोक दे० (स्त्री०) बटक, छेक, रुकावट, बटकाव ।

रोकड़ दे० (स्त्री०) नगद, नकदी, इदिया पैसा ।

रोकड़िया दे० (पु०) कोठारी, भण्डारी, खन्नाइपया पैसा रखने वाला ।

रोकन दे० (स्त्री०) बाड़, प्रोट, बाधा, ब्याधा प्रतिबन्ध ।

रोकना दे० (क्रि०) घेरना, चमकड़ करना, बटका घेरा डालना, बन्द करना, धामना ।

रोकू दे० (पु०) रोकने वाला, बाधक, प्रति बन्ध बाधाकर्ता, ब्याधातकर्ता ।

रोग तत्० (पु०) व्याधि, पीड़ा, दुःख, शरीर अमुद्यत।—प्रस्त (पु०) रोगी, रोग पीडित, व्याधिग्रस्त ।

रोगिया तद्० (पु०) रोगी, रोगग्रस्त ।

रोगी तत्० (पु०) रोगिया, रोगग्रस्त, रोगी अमुद्य ।

रोचक तत्० (पु०) इविकारक, चोचक, माचन ।

रोचना तत्० (स्त्री०) मोतोचन, हरदी, पीला कुकुम ।

रोचिष्य तत्० (पु०) दोषिशील, प्रकाशमान, शील, रुचने योग्य ।

रोज दे० (पु०) दिन, दिवस, विलाप, रोदन ।  
 रोज दे० (पु०) नीलगाय, मृग विशेष ।  
 रोट दे० (पु०) एक प्रकार की मोटी रोटी, जो प्रायः  
 अनुमानों के निवेद्य के निधे बनाई जाती है ।  
 रोटा दे० (पु०) रोट, मोटी रोटी ।  
 रोटी दे० (स्त्री०) हजनाम प्रतिदु भोजनो वस्तु,  
 पुनका ।  
 रोड़ा दे० (पु०) बड़ा कट्टर, रूढ़ पत्थर आदि के  
 टुकड़े ।  
 रोदन तह० (पु०) रुदन, रुलाई, रोना, चञ्चुयात,  
 आँसू बहना ।  
 रोप तह० (पु०) तट, तीर, किनारा, करारा, नदी  
 का तट, रोऊ, फकावट, चटकाप ।  
 रोपन तह० (पु०) रोकाय, भटकाय, प्रतिबन्ध ।  
 रोना दे० (क्रि०) रोदन करना, आँसू बहाना, उम-  
 डवाना ।  
 रोपण तह० (पु०) स्थापन, पेड़ लगाना, पयन ।  
 रोपना दे० (क्रि०) मृत्त आदि का लगाना, रोपण  
 करना ।  
 रोसा तह० (पु०) रोपणकर्ता, रोपने वाला, लगाने  
 वाला, पेड़ या धान आदि का रोपण करने  
 वाला ।  
 रोम तह० (पु०) लोम, बाल, केश, रौंदा ।—कूप  
 (पु०) रोम का छिद्र, रौंदा के निकलने का  
 स्थान ।—पाट (पु०) रोम का बना धस्त्र, दुगाला,  
 कन्धल ।—हर्षण (पु०) भयानक, भयङ्कर,  
 कठिन कार्य ।  
 रोमक तह० (पु०) देश विशेष, कम देग । (पु०)  
 रोम देश के वासी, रूमो ।

रोमन्ध तह० (पु०) प्युराना, प्युरी करना, चबार्ई  
 हुई वस्तु का पुना चवाना ।  
 रोमाञ्ज तह० (पु०) रौंदा का खड़ा होना, सिह-  
 रना, भर या हर्ष से रोमों का उठ जाना,  
 पुलक ।  
 रोमाञ्जित तह० (पु०) हर्ष या भय से शरीर के रोमों  
 का खड़ा होना, पुलकित ।  
 रोमावली (स्त्री०) रोम श्रेणि, रोमों की संक्षिप्त  
 नामि के पास से निकलती है ।  
 रोम दे० (स्त्री०) हुल्लड़, धूमधाम, भीड़भाड़ ।  
 रोरोकर दे० (च०) बहुत कष्ट, अविशेष बनेग से ।  
 रोतना दे० (क्रि०) बराबर करना, चिकना करना,  
 चिकनाना ।  
 रोली दे० (स्त्री०) कुंजुम, एक प्रकार का रङ्ग, चायु  
 जिसका तिलक लगाते हैं ।  
 रोप तह० (पु०) क्रोध, कोप, रोष, अप्रमत्तता ।  
 रोहिणी तह० (स्त्री०) नक्षत्र विशेष, 'शैया' नक्षत्र,  
 बलराम को माता ।  
 रोहित, रोहू तह० (पु०) एक प्रकार की महुली ।  
 रौंदना दे० (क्रि०) कुचलना, पीसना, रूई करना,  
 घूर्ण करना ।  
 रौंधना दे० (क्रि०) रोकना, बन्द करना, कुचलना ।  
 रौद्र तह० (पु०) भयानक, भयङ्कर । (पु०) रस  
 विशेष ।  
 रौर दे० (पु०) रौला, कीर्ति, प्रसिद्धि ।  
 रौरव तह० (पु०) त्रक, विशेष, अति कष्टदायक  
 त्रक ।  
 रौला दे० (पु०) धूमधाम, बखेड़ा, हाहल्ला ।

ल

ल यह उपपन्न का चतुर्दशवर्षी अक्षर है, दन्त से यह  
 उच्चारित होता है इसी से इसे दन्त्य कहते हैं ।  
 ल-तह० (पु०) हन्त्र, मन्त्र, फाट, दीप्ति, प्रकाश ।  
 लकड़ा दे० (पु०) फाट, फाट, लकड़ी, कुन्दा ।—हारा

(पु०) लकड़ी खीरने वाला, चाराकग, लकड़ी  
 बेचने वाला ।  
 लकड़ा दे० (पु०) लकड़, बड़ा कुन्दा, लकड़ी के छोटे  
 घाटे ।



लकडी दे० (स्त्री०) काठ, रन्धन, काष्ठ, जलावन, जलाने की लकडी, छडी, डहा ।

लकीर दे० ( स्त्री ) रेखा, धारी, चिन्ह, पक्ति, पॉत ।

लकुट दे० (पु०) लगुट, छडी, लाठी, यष्टि ।

लक्ष तत्० (पु०) सषया विशेष, पांख, सी हजार, ब्याज, बहाना, कैतव, कपट, अपदेश ।

लक्षक तत्० (पु०) दर्शक, दिखाने वाला, वताने वाला ।

लक्षण तत्० (पु०) चिन्ह, पहचान, स्थभाव प्रकार, रीति, भाँति ।

लक्षित तत्० (पु०) जाना हुआ, विदित ज्ञान, परिचित ।

लक्षणा तत्० (स्त्री०) शब्द की शक्ति विशेष, शब्दार्थ से सम्बन्ध रखने वाले, वस्त्वन्तर का बोधक, अध्याहार, सारसी, सारस पक्षी की स्त्री ।

लक्ष्मण तत्० (पु०) श्रीरामचन्द्र का छोटा भाई, महाराज दशरथ की छोटी रानी सुमित्रा का पुत्र ।

लक्ष्मणा तत्० (स्त्री०) श्रीकृष्ण की पटरानियों में से एक पटरानी, यह मद्रदेश के राजा की कन्या थी । ( २ ) दुर्योधन की कन्या, श्रीकृष्ण के पुत्र साम्ब ने इसे हर कर ठपाहा था ।

लक्ष्मी तत्० (स्त्री०) विष्णुप्रिया, इन्दिरा, कमला, लोकमाता, हरिवल्लभा । समुद्र से निकले हुए चौदह रत्नों के अन्तर्गत रत्न विशेष, शैश्वर्य, धन, सम्पत्ति, सम्पदा ।—कान्त,—माथ—पति (पु०) विष्णु, नारायण, रामनाथ, रमापति, भगवान्, रमेश ।

लक्ष्म तत्० (पु०) चिन्ह, अङ्क ।

लक्ष्य तत्० (पु०) निशाना, उद्देश्य ।

लक्षणा दे० (स्त्री०) पहचानना, चीन्हना, ताडना, जानना, देखना, भाषना ।

लक्षपति तत्० (पु०) लक्षपति, धनी, धनवान्, लक्षाधीश ।

लखनया दे० ( पु० ) शौच विशेष युक्त शौचधि ।

लखलखाना दे० (स्त्री०) हाँकना ।

लखलूट दे० ( पु० ) उड़ाऊ, अपत्यपी, लूटा, खर्चोला ।

लखा दे० (पु०) लखे, लखित, देया, दृष्ट, दात, जाना ।

लखाऊ दे० (पु०) लखने योग्य, जानने योग्य, प्रभु बने लायक ।

लखिया दे० (पु०) लखनहार, ताडनहार, सबक जानने वाला, समझने वाला ।

लखेरा दे० (पु०) जाति विशेष, साह का काम करने वाली जाति, लहेरा, लाफ चढ़ैया ।

लखीरा दे० (पु०) साह से बना हुआ, लासी ।

लग दे० (अ०) तक, पर्यन्त, अधधि, लौ, साथ, सङ्ग ।  
—चलना (वा०) साथ साथ चलना, पास जाना ।

—भग (अ०) आस पास, निकट, प्राय, करीब, अन्दाजन ।

लगड दे० (पु०) पत्ती विशेष, बाज ।

लगना दे० (स्त्री०) सोहना, शोभना, वृत्त आदि का नद जमना ।

लगातार दे० (अ०) बराबर, क्रमशः, बारी बारी, पाला से, एक के बाद एक ।

लगान दे० (पु०) उतार, टिकाव, ठिकाना, मात गुजारी, किराया भाडा कर ।

लगाना दे० (स्त्री०) रोपना, शोना, बपन करना, मिलाना, घटाना ।

लगाव दे० (पु०) मेल, मिलाव, सम्बन्ध ।

लगि दे० (अ०) तक, लग, अधधि, पर्यन्त, सीमा ।

लगुड तत्० (पु०) लाठी, मोटा डहा, यष्टि, लाठी, छडी ।

लगुहा दे० (पु०) मनाहर, सुन्दर, मनभावन ।

लगुआ दे० (पु०) यार, जार, लगा हुआ, उपपत्ति ।

लगगा दे० (पु०) प्रेम, प्यार, प्रीति, नाव खेने के लिये बड़ा घोंस ।—न खाना (वा०) अगाध, सर्व-श्रेष्ठ होना ।

लक्ष्मी दे० ( स्त्री० ) दोटा लगना, धाँस की छोटी भाठी ।

लक्ष्म तत्० ( पु० ) मेघ आदि रागियों के उदय होने के समय सुहृत्, समय । ( पु० ) लगा हुआ, सटा हुआ, मिला हुआ ।

लक्ष्मक तत्० ( पु० ) प्रतिभू, जामिन ।

लक्ष्मिना तत्० ( स्त्री० ) ( संस्कृत में पुत्रिङ्ग ) लघुना, बुढाई, छोटापन, लाचय, योगियों की घाठ विहियों में की एक विधि ।

लक्ष्मिण तत्० ( पु० ) छोटा, नीच, लघु ।

लघु तत्० ( पु० ) छोटा, हलका, खर्य, इत्यवर्ग, योघ्न, नीच, नीचा, एक मात्रिक स्वर ।—काय ( पु० ) बकरा, छाग । ( पु० ) छोटा गरीर वाला ।—ता ( स्त्री० ) छोटापन, बुढाई, नीचता, निचाई ।—हस्त ( पु० ) छोटा हाथ ।—शङ्का ( स्त्री० ) मूत्र त्याग, प्रमाद्य ।

लघ्वी तत्० ( स्त्री० ) छोटी, घति छोटी ।

लङ्ग दे० ( पु० ) कमर, कटि, गरीर का मध्यभाग ।

लङ्गा तत्० ( स्त्री० ) राजभाषिण रावण की राजधानी । लङ्गा पहले कुबेर के अधिकार में थी, परन्तु रावण ने बलपूर्वक उनसे छीन कर उसे अपनी राजधानी बनाई ।—पति ( पु० ) रावण, विभीषण, लङ्गा का राजा ।

लङ्गड़ दे० ( पु० ) बिना पैर का, पैर रहित, चरणहीन ।

लङ्गूर दे० ( पु० ) लोहे का बना हुआ भारी काँटा जिससे नाथ रोकी जाती है ।

लङ्गुरी दे० ( स्त्री० ) घामो, घरिया ।

लङ्गूचा दे० ( पु० ) खाने की एक वस्तु ।

लङ्गूर दे० ( पु० ) बानर विशेष, बड़ी पूँछ वाला बन्दर, घोर, जंगुषा बन्दर, इसकी पूँछ लम्बी और मुथ काला होता है ।

लङ्गोरट दे० ( पु० ) लङ्गोटा, कोवीन, पहलवानों की एक प्रकार की धोती, कछनी, कटघनी ।—बन्द ( पु० ) अनव्याहता, ब्रह्मचारी, कलमन्थ ।

लङ्गोटिया दे० ( पु० ) समवयवी, समवयस्क, धामापन का साथी ।

लङ्गुन तत्० ( पु० ) [ लघि + भनट् ] लघिना, पार उतारना, पार होना, उपवास, उपास करना ।

लङ्गुना दे० ( स्त्री० ) उडलना, बूढना, पार उतारना, फाँटना ।

लङ्गक दे० ( स्त्री० ) नवन, लचीला, मुकाय ।

लङ्गकना दे० ( स्त्री० ) नवना, मुकना, लचना ।

लङ्गका दे० ( पु० ) धक्का, भोंक, एक प्रकार की नाव, मत्स्य विशेष ।

लङ्गकाना दे० ( स्त्री० ) भोंकना, मुकाना, नवाना, हिलाना, हुलाना ।

लङ्गना दे० ( स्त्री० ) टेढ़ा होना, नवना, मुकना, तिरछा होना ।

लङ्गलङ्गाना दे० ( स्त्री० ) लचलच होना, नवना ।

लङ्गूर दे० ( पु० ) घनाड़ी, अजाम, अयोध, मूड, मूख ।

लङ्गाना दे० ( स्त्री० ) टेढ़ा करना, नवाना, मुकाना ।

लङ्गुन तत्० ( स्त्री० ) लचण, स्वभाव, चिन्ह, आकार, वाकृति के विशेष चिन्ह ।

लङ्गुना दे० ( पु० ) सतक, गुच्छा, रीने चूत की धाँटी ।

लज्जलजा दे० ( पु० ) चिपचिपा गोंददार, लमलसा ।

लज्जलजाना दे० ( स्त्री० ) चिपचिपाना, लमलसाना, मदन, नरमान, नरम होना ।

लज्जवाना दे० ( स्त्री० ) लज्जित करना, चङ्कोच करना, लजाना ।

लज्जालु या लज्जालु तत्० ( पु० ) लज्जवान, चङ्कोची, लजाने वाला ।

लज्जियाना दे० ( स्त्री० ) लजाना, लज्जा करना ।

लज्जीला दे० ( पु० ) लज्जयन्त, चङ्कोची ।

लज्जा तत्० ( स्त्री० ) छोड़ा, अपा, धान, चङ्कोच, शीत ।—रहित ( पु० ) निर्लज्ज ।—शील ( पु० ) लज्जालु, लज्जीला ।

लज्जित तत् (गु०) लज्जायुक्त, राजीला, शीघ्रित ।  
 लट दे० (स्त्री०) लट्टरी, केश सिर का बाल ।  
 यथा —  
 ताही समय लट एक छटकि कपोलन पर ।  
 मानो राहु चन्द्रमा को चायुक चलायो है ॥  
 लटक दे० (स्त्री०) दङ्ग, रीति, भाँति, प्रकार ।  
 लटकन दे० (गु०) आभूषण विशेष, भुमका, एक  
 वृक्ष का फल, जिससे कपड़े रंगे जाते हैं ।  
 लटकना दे० (क्रि०) झूलना, टँगना, हिलना, पीछे  
 रहना ।  
 लटका दे० (गु०) गुन, जन्त, मन्तर, दुटका, टोना,  
 भाङ फूँथ ।  
 लटकाना दे० (क्रि०) हिलना, झूलना, टँगना ।  
 लटकाव दे० (गु०) टँगवा, हिलाव, झुकाव, झुनाव ।  
 लटपट दे० (गु०) मिला, सटा, चिपटा ।  
 लटपटा दे० (गु०) चञ्चल, खिलाड, गटपट ।  
 लटपटाना दे० (क्रि०) लडखडाना, थिचलित होना,  
 डिगना ।  
 लटा दे० (गु०) दुर्बल, निर्बल, असक्त, असमर्थ ।  
 लटाइ दे० (स्त्री०) परेती, चर्चों, जिसमें डोरा रख  
 कर गुड़ो उड़ाई जाती है ।  
 लटपटा दे० (गु०) दुबला पतला, अत्यन्त निर्बल,  
 अतिशय असमर्थ, अटाला ।  
 लटूरिया दे० (गु०) लट, जटा, चोटी, बच्चों की  
 छोटी जटा ।  
 लट्ट दे० (गु०) भौंरा, भ्रमर, एक प्रकार का खिलीना,  
 जिसे लटके नचाते हैं ।—टोना (घा०) मोहित  
 होना, आसक्त, किसी के प्रेम में फँसना ।  
 लठ लाठी दे० (स्त्री०) लठयाजी, लाठी की लड़ाई ।  
 लठ दे० (गु०) लाठी, सेटा, डबहा ।  
 लठियाना दे० (क्रि०) लाठी मारना, लाठी से  
 मारना, लाठी से पीट देना ।  
 लट्टर दे० (गु०) शिथिल, टोला, ठण्डा, धीमा,  
 आलस ।

लड दे० (स्त्री०) लरी, पॉति, पक्ति, रात, मेत,  
 आदि की माला का परत ।  
 लडकपन दे० (गु०) लडकार्ड, बालपन, लडकारः ।  
 लडकमुद्धि दे० (स्त्री०) चिलथिएलापन, चुनचुनाहट ।  
 लडका दे० (गु०) बालक, छोरा, झोकरा, तियु  
 छोरा ।—वाला (घा०) बच्चा बच्ची, लड  
 लकी ।  
 लडकार्ड दे० (स्त्री०) बालपन, शिशुता, लडकपन ।  
 लडकी दे० (स्त्री०) झोकरा, बेटी, तनया, कन्या,  
 कुमारा ।  
 लडखडाना दे० (क्रि०) डगमगाना, डिगना, स्थिर  
 नहीं ठहर सकता ।  
 लडना दे० (क्रि०) लडाई करना, सग्राम करना,  
 युद्ध करना, बखेडा करना ।  
 लडखडाना दे० (क्रि०) लडखडाना, तीतलाना,  
 अस्पष्ट उच्चारण करना ।  
 लडयावला दे० (गु०) भङ्गी, पागल ।  
 लडाई दे० (स्त्री०) युद्ध, सग्राम, सङ्घर्ष ।—करना  
 (घा०) लडना, भगडना, बखेडा करना ।  
 लडाक, लडाका दे० (गु०) भगडावु विवादी, लडने  
 वाला ।  
 लडाना दे० (क्रि०) लडना, लडाई करना, भगडा  
 लगाना लुभाना ।  
 लडियाना दे० (क्रि०) घूँथना पिरौना, लडवाना,  
 पोहना ।  
 लडी दे० (स्त्री०) पॉति, पक्ति ।  
 लड्ड दे० (गु०) मोदक, मिठाई, मोतीचूर आदि ।  
 लडा, लडिया दे० (गु०) लडका, भार दोने वाली  
 गाड़ी ।  
 लण्ट दे० (गु०) निर्बोध, अबोध, गंशर भँद  
 बोदला ।  
 लण्डुरा दे० (गु०) अनाय, असहाय, एकाकी,  
 र यण्डा ।  
 लत दे० (स्त्री०) बान, अभ्यास बान, सुरीबान ।

लतरी दे० (खी०) पुरानी, जुती ।

लता मत्० (खी०) बेल, बरली, बरली, उस पीछे का कहते हैं जिसकी सम्बन्धी तो बहुत हो, परन्तु वह बिना आशय के नहीं न रह सके ।

लताइ दे० (खी०) ग्लानि, अपवाद, निरस्कार, पेटे की जात ।

लताइना दे० (क्रि०) हुक्म करना, निरस्कार करना, अपवाद करना, लथेइना, लान मारना ।

लतिका मत्० (खी०) कामलता, बरली बरली ।

लतिया दे० (पु०) जुरी चाल का, कुचाली, दुराचारी ।

लतियाना दे० (क्रि०) लान मे मारना ।

लत्ता दे० (पु०) फटा पुराना कपड़ा, चीयड़ा, चिर-कुट ।

लत्ती दे० (खी०) लता, घास, लट्टू नवाने की डोर ।

लथइना दे० (क्रि०) लद, फद होना, कीचड़ मे भोगना ।

लथेइना दे० (क्रि०) पश्चाइना, लथेइना ।

लदना दे० (क्रि०) बोझिल होना, भार बोझाना ।

लदाना दे० (क्रि०) बोझाना, लदना, भरना, भार रखना ।

लदाव दे० (पु०) मोट, बोझ, भार ।

लप दे० (खी०) भप, गीम, जण्डी, मुट्टी भर, हथेली, पसर, पसा ।

लपक दे० (खी०) चटक, भड़क, चमक, शोभा, प्रकाश, दीप्ति ।

लपकना दे० (क्रि०) चमकना, लटकना, धागे चढ़ना ।

लपका दे० (पु०) भपट, लपकमण, फुर्ती, शीघ्रता, लपका ।

के लिये

लपची दे० (खी०) मद्धली ।

लपभप दे० (पु०) फुर्तीला, चञ्चल, सतर्क, गाव-धान ।

लपट दे० (खी०) शी, सुगन्ध, महक ।

लपटना दे० (क्रि०) सटना, मिलना, लगना ।

लपटा दे० (पु०) जूनी चिरोय, लगाव, सम्बन्ध ।

लपटी, लपसी दे० (खी०) हथुपा ।

लपाटिया दे० (पु०) झूठा, मिथ्या वादी, लवार ।

लपाटी दे० (खी०) मिथ्या, झूठपुठ ।

लपानफ दे० (पु०) दुबला, पतला, खीण, भीना, सूक्ष्म ।

लपेट दे० ( खी० ) बैठन, बैठन, दहन ।—लपेट (खी०) घोलघुमाव, टाल मद्धन, बहाना ।

लपेटन दे० (पु०) बैठन, लपेटने का कपड़ा ।

लपेटना दे० (क्रि०) बैठन लगाना, बांधना, बैठ-नियाना ।

लपेटघा दे० (पु०) बँटुवा, घुमाव, घुमावट ।

लप्पा दे० (पु०) पट्टा, गोटा, किनारी ।

लयइखन्दा दे० (पु०) नटपट, धपेल, उलू चञ्चल ।

लयइ चट्टाई दे० (खी०) सूखी चूँचो, गिरी हुई चूँचो ।

लयइसयइ दे० (पु०) बकभक, झूठसाँच, इपर उधर की बातें ।

लयड़ा दे० (पु०) झूठा, असत्यवादी, धनर्थक वादी ।

लयनी दे० ( खी० ) लड़ी घुसाने का चड़ा या झण्डा ।

लयरघट्टा दे० (पु०) नरुचड़ा, छोटी बात में क्रोध करने वाला ।

लयत्तव दे० (पु०) जण्डी, शीघ्रता, लप, पयरी ।

लयलया दे० (पु०) विविधिया, लसदार ।

लयलोस दे० (खी०) चापलूसी, लघोपनी, लुगामद ।

लयार दे० (पु०) झूठा, गप्पी ।

लयो दे० (खी०) खीनी की चासनी ।

लयवादा दे० (पु०) रई भरा जामा, बड़ा चट्टा, लठ, मोटा रोटा ।

लघ्व तत्० ( गु० ) [ लभ + क ] प्राप्त, उपासित ।  
 —घर्ण ( पु० ) परिहृत, विलक्षण, विद्वान् ।  
 लघ्वि तत्० ( स्त्री० ) [ लभ् + क्ति ] प्राप्ति, लाभ,  
 हाथ लगना, हाथ में पाना ।  
 लभ्य तत्० ( गु० ) [ लभ् + य ] प्राप्य, प्राप्ति के योग्य ।  
 लभकाना तद्० ( पु० ) सम्पत्कर्ण, शयक, सत्ता,  
 खरहा ।  
 लम्बुड दे० ( स्त्री० ) पयस्कला, लम्बा ।  
 लम्पट तत्० ( पु० ) दुराचारी, दुष्कृत, भूटा, असम्पद-  
 धादी ।  
 लम्बर दे० ( स्त्री० ) लोमड़ी, पुकटी, बनेला जन्तु  
 विशेष ।  
 लम्बा दे० ( पु० ) ऊँचा, बड़ा, दीर्घ ।—करना ( या० )  
 कैलाना, बढाना, पसारना ।  
 लम्बाई, लम्बान दे० ( स्त्री० ) ऊँचाई, दीर्घता ।  
 लम्बाना दे० ( क्रि० ) लम्बा करना, बढाना, दीर्घ  
 करना, कैलाना, पसारना ।  
 लम्बित तत्० ( गु० ) लटकाया हुआ, टंगा हुआ,  
 लटका हुआ ।  
 लम्बिया दे० ( स्त्री० ) उल्लूख फूद, खेग, मोड़ा,  
 कलोल ।  
 लम्बी साँस भरना दे० ( या० ) रोना, विलपना,  
 विलाप करना ।  
 लम्बोदर तत्० ( पु० ) गणेश, गणनायक, विनायक,  
 गन्धानन ।  
 लम्भा दे० ( पु० ) लम्काना, खरहा, शयक, सत्ता ।  
 लय तत्० ( पु० ) प्रलय, नाश, अर्थ, त्रिनाश, ताल,  
 स्वर, लीन, मग्न, लयलीन ।  
 लर्छा दे० ( पु० ) लच्छा, झौंटी, फँटी ।  
 ललक दे० ( स्त्री० ) मन की चार, इच्छा, अभिभाव,  
 उरनेल, सहर, तरङ्ग ।  
 ललकना दे० ( क्रि० ) लपकना, चटना, धावा करना,  
 आक्रमण करना, उत्सुक होना, उत्कण्ठित होना ।  
 ललकाना दे० ( क्रि० ) लोभ देना, मोहित करना,  
 उत्कण्ठित करना, लढाना, भण्डाना ।

ललकार दे० ( पु० ) हाँक, पुकार, डाँक, बग़ाज,  
 मोत्साहन वाक्य ।  
 ललगण्डा दे० ( पु० ) यानर, कवि मर्कट ।  
 ललचाना दे० ( क्रि० ) तरसाना, चुमाना, सहजाना ।  
 ललन तत्० ( पु० ) कुतूहल, कौतुक, खेल, क्रीडा ।  
 ललना तत्० ( स्त्री० ) महिला, नारी, स्त्री, कामकला,  
 प्रवीणा स्त्री ।  
 लला दे० ( पु० ) बालक, लड़का, छोटा, छोकरा । ( पु० )  
 म्रिय, दुसारा, एकलौता, अतिशय म्रिय ।  
 ललाट तत्० ( पु० ) मस्तक, सिर, कपाल, भाग  
 प्रारब्ध ।  
 ललाम तत्० ( गु० ) सुन्दर, मनोहर, अहे उच्च,  
 भूषण ।  
 ललित तत्० ( गु० ) सुन्दर, मनोहर, मनोज्ञ, मन  
 भावन, सुहावना, चञ्चल ।  
 ललिता तत्० ( स्त्री० ) एक गोपी का नाम ।  
 ललियाना दे० ( क्रि० ) फुसलाना, बहलाना, बय में  
 करना, परवाना, अपने में मिलाना ।  
 लली दे० ( स्त्री० ) बालिका, छोकरे, लडकी ।  
 लल्लोपत्तो दे० ( पु० ) चापडूसी, पुगामद, भुताय,  
 फुसलाय ।  
 लय तत्० ( पु० ) लय, निमेष, पल, मित्रगणित का  
 एक भाग, रामचन्द्र का बड़ा बेटा । ( पु० ) लय,  
 अरप, घोड़ा, चरून, कम ।  
 लयक तत्० ( पु० ) करवैया, करने वाला ।  
 लयङ्ग तत्० ( पु० ) वृच विशेष का फूल ।  
 लघण तत्० ( पु० ) नोन, निमक ।—समुद्र ( पु० )  
 खारा समुद्र ।  
 लघणाम्न तत्० ( पु० ) खारा पानी, खारा समुद्र,  
 सागर ।  
 लघन तद्० ( पु० ) कटनी, कटाई ।  
 लघा दे० ( पु० ) पत्नी विशेष, बटेर पत्नी ।  
 लघाक तत्० ( पु० ) हँसवा, दराती, खेत काटने का  
 यज्ञ ।

लशटम्पशर्ट दे० ( ख० ) उलटापुलटा, किमी प्रकार,  
किमी भाँति ।

लशुन तल्० ( पु० ) लहसुन, कन्द विशेष ।

लस दे० ( पु० ) चिपचिपाहट, गोंद, तरी, सार ।

लसकना दे० ( क्रि० ) चिपचिपा होना, सटना,  
समना, घटना, गीला होना ।

लसना दे० ( क्रि० ) शोभित होना, शोभा पाना,  
बोहना, समना ।

लसलसा दे० ( पु० ) चिपचिपा, लसदार, गोंदिला ।

लसित तल्० ( पु० ) शोभित, विराजित, ललित,  
प्रत्यक्ष, धार्मिकों के सामने ।

लसियाना दे० ( क्रि० ) लस लस होना, चिपकना,  
चिपचिप होना ।

लसोड़ा दे० ( पु० ) एक वृक्ष विशेष, और उसका फल,  
यह फल लसदार होता है ।

लस्सी दे० ( स्त्री० ) भक्ष्य विशेष दूध और पानी मिला  
हुआ भोजन ।

लहंगा दे० ( पु० ) चौपरा, कटिया, जियों के पहनने  
का एक प्रकार का कपड़ा ।

लहक दे० ( स्त्री० ) चमक, झलक, उजाला, प्रकाश ।

लहकना दे० ( क्रि० ) चमकना, बलना, उजाला होना,  
प्रकाशित होना, जलना ।

लहकाना दे० ( क्रि० ) बहकाना, गहगहाना, धाम  
जलाना, धालना ।

लहकारना दे० ( क्रि० ) चुमकारना, शब्द से धादर  
करना, दिखावटी धादर करना ।

लहकौवर दे० ( स्त्री० ) चमक, दीप्ति, प्रकाश, शोभा ।

लहकौला दे० ( पु० ) चमकौला, जगमगा, प्रकाश-  
शील ।

लहकौवर दे० ( पु० ) धियाइ की एक तीति, घर की  
दही चीनी मिलाना ।

लहना दे० ( क्रि० ) लगना, ठहरना, पाना, पाना,  
( पु० ) कूज, चण, देन ।

लहथर दे० ( पु० ) मोड़, ताना, घुमाना ।

लहर तद्० ( स्त्री० ) लहरी, तरङ्ग, गङ्गा या नदियों  
का हिलोरा, रङ्ग रङ्गने की एक प्रक्रिया, चिप चढ़ने  
का धर, हिलोरा ।

लहरना दे० ( क्रि० ) तरङ्ग उठना, हिलकरा मारना,  
जलन होना, जलने लगना, धाम लगना ।

लहरवहर दे० ( स्त्री० ) सौभाग्य, सम्पत्ति, धन ।

लहराना दे० ( क्रि० ) ललचना, बढ़ना, लहर मारना,  
तरङ्ग उठना ।

लहरिया दे० ( पु० ) वध विशेष, डोरिया, एक रीति  
से रङ्गा हुआ कपड़ा ।

लहरी दे० ( स्त्री० ) मन मौजी, उबड़कूल, झोछा,  
मन माना काम करने वाला ।

लहलहा दे० ( पु० ) विकसित, प्रफुल्ल, फूला हुआ ।

लहलहाना दे० ( क्रि० ) छिपना, फूलना, विकसना,  
विकसित होना ।

लहलोट दे० ( पु० ) जे उधार लेके न दे ।

लहसुन दे० ( पु० ) लशुन, कन्द विशेष ।

लहसनिया दे० ( पु० ) होरे का एक भेद, एक प्रकार  
का हीरा ।

लहासी दे० ( स्त्री० ) रस्वा, बुर्ज, लहास ।

लह दे० ( पु० ) रुधिर, रक्त, लोह, शोणित ।—लुहान  
( धा० ) रुधिर पूर्ण, लोह से भरा हुआ ।

लहई दे० ( स्त्री० ) लावा का लहड़, चबैना, भूँजा  
घर ।

लाक दे० ( पु० ) कटि, कमर, लङ्का, भूसा, सामा,  
भूसी ।

लाघना दे० ( क्रि० ) उतरना, पार होना, पार जाना,  
कूदना, बाँदना ।

लाप दे० ( पु० ) फलाम, कूद, उछल, कुपारच ।

लासा तल्० ( स्त्री० ) लास, महावर, महावर का रङ्ग,  
लाह ।

लाक्षणिक तल्० ( पु० ) लक्षण युक्त, लक्षण वृत्ति से  
कथित धर्म ।

लाख दे० ( पु० ) संख्या विशेष, लख, सौ हजार को  
संख्या, लाह, लाधा, जन्तु, लाही ।

लाखी दे० ( स्त्री० ) नाही का रङ्ग ।

लाग दे० ( पु० ) द्वेष, विरोध, वैर, शत्रुता, विद्वेष ।  
 लागत दे० ( स्त्री० ) मोल, दाम, मूल्य ।  
 लागना दे० ( क्रि० ) भिडना, विरोध करना, लप-  
 टाना, लगना ।  
 लागी दे० ( स्त्री० ) स्नेह, छोह, प्रेम, प्यार । ( पु० )  
 द्वेष शत्रु, विरोधी ।  
 लागू दे० ( पु० ) चलने वाला, विद्वलग्य, अनुयायी,  
 अनुगत ।  
 लाघव तत्० ( पु० ) लघुता, ओछाई, बुद्धता, नीचता,  
 छुटाई, नीरोगता, सुस्थता ।  
 लाङ्गल तत्० ( पु० ) हल, जिममे खेत जोता और  
 घोड़ा जाता है ।  
 लाङ्गूल तत्० ( पु० ) पूँछ, लाज, पशुओं का अङ्ग  
 विशेष ।  
 लाज तद्० ( स्त्री० ) लज्जा, सङ्कोच, श्रीढा, लषा ।  
 लाजा तत्० ( पु० ) लाषा, खोला, खोई धान का  
 लाषा ।  
 लाजाघर्त तत्० ( पु० ) मणि विशेष, राषटी ।  
 लाङ्कन तत्० ( पु० ) चिन्ह, अपराध, कलङ्क, दाग,  
 धब्बा ।  
 लाङ्कना तत्० ( स्त्री० ) निन्दा, तिरस्कार, अपमान,  
 बुराई ।  
 लाङ्कित तत्० ( पु० ) तिरस्कृत, निन्दित, अप-  
 मानित ।  
 लाभा दे० ( पु० ) लष, भँस आदि के ठपाने के समय  
 जो मल विशेष गिरता है ।  
 लाट तत्० ( पु० ) देश विशेष, खम्भा, स्तम्भ । ( पु० )  
 प्राचीन, पुराना, जीर्ण ।  
 लाटी तत्० ( स्त्री० ) काठ की एक रीति का नाम,  
 लाट देश की स्त्री । ( दे० ) फेफडी ।  
 लाठ दे० ( पु० ) मोटा खम्भा, मोटा और लम्बा  
 खम्भा, कोरू का लाठा ।  
 लाठी दे० ( स्त्री० ) लाठी, लकडी, गोजी, सोटा ।  
 लाड दे० ( पु० ) छोह, प्यार, दुलार ।—लडाना  
 ( या० ) प्रेम करना, दुलार करना, दुलार से  
 खिलाना ।

लाडला दे० ( पु० ) प्यारा, दुलारा, प्रिय ।  
 लाइ दे० ( पु० ) लड्डू, मोदक ।  
 लात दे० ( स्त्री० ) पदाघात, पैर की मार ।  
 लाभ दे० ( पु० ) प्राप्ति, नष्ठा, पाना, मिलना, मुँद ।  
 लाद दे० ( स्त्री० ) बोझ, भार, घन्तबी, हृदय ।  
 लादना दे० ( क्रि० ) भरना, बोझना, भार मरना ।  
 लादिया दे० ( पु० ) लादने वाला ।  
 लादी दे० ( स्त्री० ) गठरी, गदरे पर का बोझ ।  
 लादू दे० ( पु० ) लादने योग्य, लादने के उष्युक्त ।  
 लाना दे० ( क्रि० ) ले आना, पास ले आना ।  
 लाफना दे० ( क्रि० ) फूटना, फाँदना, हाँफना ।  
 लार दे० ( स्त्री० ) राल शूक ।  
 लाल दे० ( पु० ) दुलारा, दुलदुषा, प्रिय, प्यारा ।  
 ( पु० ) लाल रङ्ग का रक्त वर्ण ।—बुभङ्गुड ( पु० )  
 उहुत बडा सुर्ष, जो स्वयं सुर्ष हो, परन्तु अपने  
 को अधिक मुट्टिमान् समझे ।  
 लालच दे० ( पु० ) लोभ, लृष्णा, चाह, रच्चा,  
 अभिलाष ।  
 लालची दे० ( पु० ) लोभी, स्वार्थी ।  
 लालडी दे० ( स्त्री० ) मानिक चुन्नी ।  
 लालन दे० ( पु० ) पालन करना, प्रेम पूर्यक पालना  
 पोषना, पोषण करना ।  
 लालना दे० ( क्रि० ) पालना, प्यार से खिलाना ।  
 लालसा तत्० ( स्त्री० ) इच्छा, मनोरथ, अभिलाष  
 मनोरथ ।  
 लाला दे० ( पु० ) कायस्थ, नाति विशेष, पटवारी ।  
 लालाटिक तत्० ( पु० ) ललाट देख कर शुभाशुभ  
 कहने वाला, परभाग्योपजीवी, भाग्यधीन,  
 प्रारब्धाधीन, भाग्य का भरोसा रखने वाला ।  
 लालित्य तत्० ( पु० ) मनोहरता, रमणीयता,  
 सुन्दरता ।  
 लाव दे० ( पु० ) रस्सी, लहाव ।  
 लाघण्य तत्० ( पु० ) सुन्दरता, शरीर की स्वामाधिक  
 प्रभा निम्नसे सुन्दरता उत्पन्न होती है ।

लावलाघ दे० ( पु० ) लाम, चाह, चमिताय, मृणा ।  
 लावलाघ दे० ( पु० ) लाम, प्रामि, धटती, वृद्धि ।  
 लावा दे० ( पु० ) खोल, खोई ।  
 लावू दे० ( खी० ) लौका, फट्टू ।  
 लासा दे० ( पु० ) घेय, गौद ।  
 लाह तद्० ( पु० ) लाम, प्रामि, सोमकुयल, मङ्गल, प्राय, लाही ।  
 लाहा तद्० ( पु० ) लाम, प्रामि, लडिध ।  
 लाही दे० ( खी० ) लाख, लाचा, सोरी, मधप, ससों, महीन कपडा ।  
 लिखतद्० दे० ( पु० ) लेख, निघम पत्र, चिट्ठी ।  
 लिखना दे० ( क्रि० ) लिखर बनाना, लिखाई करना ।  
 लिखनी दे० ( खी० ) कनम, लिखने का माधन, लेखनी ।  
 लिखत दे० ( पु० ) प्रारब्ध, भाग्य, कथान, सलाट, निष्ठा हुआ ।  
 लिखा दे० ( पु० ) प्रारब्ध, होनहार, भवितव्य ।  
 लिखाई दे० ( खी० ) लिखना, लिखने का काम, लिखना ।  
 लिखावट दे० ( खी० ) लेख, चत्तरी की बनावट ।  
 लिखित तद्० ( पु० ) लिखा हुआ ।  
 लिखू तद्० ( पु० ) पुरुषेन्द्रिय, पुरुष चिन्ह, चिन्ह, लक्षण, शरीर विशेष, कारण शरीर, श्रियजी की पिपडी ।  
 लिमडी दे० ( खी० ) हल, पोतड़ी ।  
 लिटाना दे० ( क्रि० ) मुलाना, पढ़ाना, मुला देना ।  
 लिटो दे० ( खी० ) मरोटी रोटी, धाटी ।  
 लिथड़ना दे० ( क्रि० ) मयाड़ना, अपमानित करना, निरस्कार करना ।  
 लिथड़ना दे० ( क्रि० ) पहाड़ना, लथाड़ना ।  
 लिपटना दे० ( क्रि० ) चिपकना, सटना, सिट-पिटाना ।  
 लिपटाना दे० ( क्रि० ) सटाना, मिड़ाना, मुफकाना ।

लिपटाव दे० ( पु० ) चिपटाव, सटाव, मिलान ।  
 लिपड़ी दे० ( खी० ) पुरानी पगड़ी ।  
 लिपधाना दे० ( क्रि० ) पुतधाना, पुताना, चौका दिखाना, पोतन चलवाना ।  
 लिपाई दे० ( खी० ) लीपने का काम ।  
 लिपि तद्० ( खी० ) लेप, लेख, हस्ताक्षर, हस्तलेख ।  
 — फर ( पु० ) लेखन, लिखने वाला ।  
 लिप्त तद्० ( पु० ) लिपा हुआ, लिपा पोता ।  
 लिपलिया दे० ( पु० ) समलता, चिपचिपा, लव-लवा ।  
 लिठ्या दे० ( पु० ) चपत, चमेटा, धौल, धप्या ।  
 लिम दे० ( खी० ) कलङ्क, दोय, अपराध, टौसा, चिन्ह, लक्षण ।  
 लिये दे० ( खी० ) वास्ते, निमित्त, तदर्थ, हेतु, हेतुर्थ ।  
 लिलाना दे० ( क्रि० ) चाहना, इच्छा करना, लल-चाना, लोभ करना, लृषणा करना ।  
 लिधाना दे० ( क्रि० ) बुलवाना, आह्वान करना ।  
 लिधालाना दे० ( वा० ) साथ बुला लाना, साथ ले कर आना ।  
 लिहाड़ा दे० ( पु० ) तुच्छ, नीच, अधम, कदाचार, दुराचारी, तुच्छ ।  
 लीक दे० ( खी० ) रेखा, चिन्ह, पगडरही ।  
 लीख तद्० ( खी० ) सिर के बालों की छोटी बूँ ।  
 लीचड़ दे० ( पु० ) कृपण, कञ्जूस, अर्धपिशाच, धन-दास ।  
 लीची दे० ( खी० ) फल विशेष, एक वृक्ष और उसके फल का नाम ।  
 लीमी दे० ( खी० ) गाद, मल, तलछट ।  
 लीतरा दे० ( पु० ) पुराना कूता, दूटा कूता ।  
 लीद दे० ( खी० ) घोड़े की चिह्न ।  
 लीन तद्० ( पु० ) तन्मय, तन्पर, चासफ, डूबा हुआ, मग्न ।  
 लीथड़ दे० ( पु० ) कीचड़, पांक, पड़ ।  
 लीम दे० ( पु० ) सन्धि, मेल, मिलाप, शान्ति, विरोध की शान्ति ।



लीमू दे० (पु०) नीमू, निबुधा ।  
 लीर दे० (खी०) निट, चिपटा, कतरन ।  
 लील तद्० (पु०) नील । (गु०) नोला, नील रङ्ग ।  
 लीलना दे० (क्रि०) निगलना, घोटना, गलाघःकरण,  
 गले के भीतर करना ।  
 लीला तत्० (खी०) क्रीडा, बिहार, खेल, जौगुक,  
 अनुकरण ।  
 लीलावती तत्० (खी०) खिलासवती स्त्री, खिलास  
 युक्ता स्त्री । प्रसिद्ध ज्योतिर्वेत्ता भास्कराचार्य की  
 कन्या, कहते हैं भास्कराचार्य का प्रसिद्ध पाटी गणित  
 इन्हीके नाम पर रचा गया है । जगह जगह पर  
 उस ग्रन्थ में भास्कराचार्य ने लीलावती का नाम  
 उल्लेख किया है । जिससे मालूम होता है कि उस  
 ग्रन्थ की श्रौंखी उनकी कन्या लीलावती ही थी ।  
 लुक दे० (पु०) आकाश से गिरने वाली, तारा, सूर ।  
 लुकना दे० (क्रि०) छिपना, गुप्त होना ।  
 लुकन्द्रा दे० (पु०) दुराचारी, दुष्ट, दुष्कृत, लुच्चा,  
 लम्पट ।  
 लुकाना दे० (क्रि०) छिपाना, ढाँकना, लुकवाना,  
 गुप्त करना ।  
 लुगाई दे० (खी०) नारी, स्त्री ।  
 लुच दे० (गु०) निरा, केवल, नङ्गा, उधाडा ।  
 लुचई दे० (खी०) धूरी, सोहारी, लुचपन दुष्टता ।  
 लुचपन दे० (पु०) दुष्टता, दुष्टचिन्त्रता ।  
 लुचरा दे० (पु०) मकडा, कीट विशेष ।  
 लुचा दे० (पु०) कुकर्म, चन्दायी, दुष्ट, दुराचारी ।  
 लुजा दे० (गु०) हस्त रहित, हाथ से हीन, बूला ।  
 लुटना दे० (क्रि०) छुट जाना, अपहृत होना, छिन  
 जाना, धन हरण होना ।  
 लुटवैया दे० (पु०) छूटने वाला, ठग, घटपार, धूर्त ।  
 लुटाना दे० (क्रि०) गधाना, खोना, उठाना, दे  
 देना, बाँट देना ।  
 लुटिया दे० (खी०) छोटा लोटा, फारी ।  
 लुटेरा, लुटेरु दे० (पु०) छूट करने वाला, छुटवैया ।  
 लुटस दे० (पु०) विगाड, नाश, ध्वंस, छूटखोटा ।

लुडका दे० (पु०) कान का एक प्रकार का गहना ।  
 लुडखना दे० (क्रि०) डुलना, डुलफना, उसकाना ।  
 लुडखुडी दे० (खी०) डुलन, लुडकन ।  
 लुडकना दे० (क्रि०) गिरना, गिर जाना, दस्तकाना,  
 दनमनाना ।  
 लुडाना दे० (क्रि०) अगोरना, लोहना, गिराना, वृक्ष  
 से फूल आदि को अलग करना ।  
 लुडिया दे० (पु०) मोटा, घटा, जिससे मसाना  
 आदि पीसा जाता है ।  
 लुडियाना दे० (क्रि०) कपडे सीना, टाँका दिये कपडे  
 को पुस्तता सीना ।  
 लुण्डा दे० (गु०) बपहा, पुच्छहीन, बिन पूँछ का ।  
 लुतरा दे० (गु०) बडबडिया, दकथादी, गप्पी, भूटा  
 असत्यवादी, निन्दक, निन्दा करने वाला ।  
 लुपरी दे० (खी०) एक प्रकार का भोग, लपसी ।  
 लुपलुप दे० (क्रि०) पशु आदि के खाने का शब्द विशेष ।  
 लुप्त तत्० (गु०) नष्ट, विध्वस्त, शौंखों की घोटा,  
 अदर्यन ।  
 लुबदी दे० (खी०) नेव आदि के लिये पीसी हुई  
 दवा, शोधधि पिपड ।  
 लुब्ध तत्० (गु०) [ लम् + क्त ] लोभी, सतृष्ण,  
 तृष्णायुक्त, स्वार्थी ।  
 लुब्धक तत्० (पु०) ठपाध, बहेलिया, सिकारी ।  
 लुभाना दे० (क्रि०) ललचाना, लोभ देना, लोभ  
 दिखाना ।  
 लुहण्डा दे० (पु०) मोहे का हथरा ।  
 लुहरा दे० (पु०) लहुरा, छोटा, कनिष्ठ ।  
 लुहाङ्गी दे० (खी०) लोहे से मदी हुई साठी ।  
 लुहान दे० (गु०) लहू भरा, रक्त पूर्ण, रक्तमय ।  
 लुहार दे० (पु०) जाति विशेष, लोहा का काम  
 करने वालो जाति, लोहकार ।  
 लू दे० (खी०) उष्ण वायु, गरम बत्तास ।  
 लूभाट दे० (पु०) जली लकडी, अथजली, अर्धदग्ध ।  
 लूक दे० (खी०) हवा, गरम वायु, धू ।

- लुकट दे० (पु०) लुघाट, घघणना ।  
 लुकटी दे० (स्त्री०) लोमड़ी ।  
 लुकना दे० (क्रि०) लू लगना, लू से बनना, दग्ध होना, झिपना, लुकना ।  
 लुकवाही दे० (पु०) घगवाही, होनी के दिन एक प्रकार का लूण निर्मित द्रव्य, त्रिषंभं घाग वाजते हैं ।  
 लुका दे० (स्त्री०) गलती लकड़ी, चिनगारी, लपट, घाग की लपट ।  
 लूख दे० (स्त्री०) घाग, लूक, लखला ।  
 लूट दे० (स्त्री०) घोरी, चपहरण, चपहार, डकैती, बाँका ।  
 लूटना दे० (क्रि०) चपहरण करना, ठगना, बाँका मारना ।  
 लूता लू० (स्त्री०) मकड़ा, एक प्रकार का क्रीड़ा जो जाना बनाता है । संस्कृत में जिसे लूण नाम घर्णात् देशम का क्रीड़ा कहते हैं ।  
 लून दे० (पु०) नोन, लवण, निमक ।  
 लूनिया दे० (पु०) जाति विशेष, बुनियाँ की एक जाति ।  
 लूनी दे० (स्त्री०) म. छन, मलन, नैत्र, नवनीत ।  
 लूला दे० (पु०) लुल्ला, टूटा, बिना हाथ का, हस्त-रहित ।  
 लूह दे० (स्त्री०) लू, लूक ।  
 लू दे० (घ०) लूक, ललक, चपधि, पर्यन्त ।  
 लूँ दे० (स्त्री०) लूँड़ी लूँड़ी, एक प्रकार का भोजन ।  
 लूँड़ी दे० (स्त्री०) मींगनी, बकरे आदि की बीट ।  
 लूँडा दे० (पु०) घनतःघार लून्य फल, बँधा फल, फोयला फल, गेहई, भेंड़ आदि का फुल ।  
 लेख लू० (पु०) लिखन, लिखित, लिखतङ्ग प्रबन्ध, रचना, लिखावट ।  
 लेखक लू० (पु०) लिखने वाला, लिखने का काम करने वाला, लिपिकार, प्रबन्धकर्ता ।  
 लेखकी दे० (स्त्री०) लिखारी, लेखक का काम ।  
 लेखन लू० (पु०) लिपि, लिखार, लिखावट ।

- लेखनी लू० (स्त्री०) लिखती, लिखने का साधन, फलम ।  
 लेखा दे० (पु०) गिनती, गणित, हिसाब ।  
 लेख्य लू० (पु०) चिट्ठी पत्री, लिखने योग्य, चित्र, तस्वीर ।  
 ले जाना दे० (क्रि०) ले भागना, डठा ले, जाना, दूसरे स्थान पर रखना ।  
 लेट दे० (पु०) गच, प्रकान आदि को पकड़ा बनाने के लिये लूना घुरपी आदि का बना लेप ।  
 लेटना दे० (क्रि०) होना, शयन करना, घाराम करना, विश्राम करना ।  
 लेनदेन दे० (पु०) व्यवहार, व्यापार ।  
 लेना दे० (क्रि०) ग्रहण करना, चपने अधिकार में करना, पकड़ना ।  
 लेप लू० (पु०) पोतने की वस्तु, प्रण आदि पर लगाने की द्रवा, मलहम ।  
 ले पड़ना दे० (क्रि०) सङ्ग सीना, ले जाना, नाश करना, बिगाड़ना ।  
 लेपना दे० (क्रि०) पोतना, लेप लगाना ।  
 ले पालक दे० (पु०) धर्मपुत्र, पाला हुआ पुत्र, पोसा हुआ बेटा, पोष्यपुत्र ।  
 ले पालना दे० (क्रि०) बेटा के समान पालना, पोसना ।  
 ले भरना दे० (घा०) कलङ्क लगाना, दोषी करना, अपने साथ नष्ट करना, स्वर्ण खराब होना दूसरों को भी खराब करना ।  
 ले रखना दे० (क्रि०) मञ्जुष्य करना, संग्रह करना, बटोरना, एकत्रित करना ।  
 ले रहना दे० (क्रि०) सङ्ग रखना, साथी बनाना, चपने अधिकार में कर लेना ।  
 लेक, लेकमा दे० (पु०) बच्छा, बखड़ा, बच्छ ।  
 लेला दे० (पु०) भेंड़ का बच्चा, मैमना, छोटी भेंड़ ।  
 लेलूट दे० (पु०) लहलूट, ले कर न देने वाला ।  
 ले लेना दे० (क्रि०) छीनना, छीन लेना, लूटना, लूनाटना ।

लेख दे० (स्त्री०) भीत की पपड़ी, छाप ।  
 लेखा दे० (पु०) ग्राहक, लेने वाला ।—देई (स्त्री०)  
 लेनदेन, व्यवहार, व्यापार ।  
 लेखार दे० (पु०) गीली मिट्टी, भीत पर छाप लगाने  
 की मिट्टी, लेप, लेवा ।  
 लेखास दे० (पु०) गच, लेट ।  
 लेखैया दे० (पु०) लेने वाला, लेवा, ग्राहक ।  
 लेश तत्० (पु०) अल्प, लघु, छोटा, स्वरूप, अत्यल्प,  
 लय, मात्रा ।  
 लेसना दे० (क्रि०) लीपना, पोतना, बालना,  
 जलाना, सुलगाना ।  
 लेसालेस दे० (पु०) लिपाई, चारों ओर लीपने का  
 काम होना ।  
 लेहन तत्० (पु०) चाटन, अथलेहन, पतली वस्तु का  
 भोजन ।  
 लेहना दे० (पु०) चारा, चास, पाला ।  
 लेह्य तत्० (पु०) लेहन करने योग्य, अथलेह्य, अथलेहन  
 करने की वस्तु, चाटने योग्य ।  
 लैस दे० (पु०) लैयार, प्रस्तुत, बनाबनाया, सिद्ध,  
 (पु०) तक्का ।  
 लाई दे० (स्त्री०) कम्मल, ऊन की बनी ओढ़ने की  
 वस्तु ।  
 लौं दे० (अ०) तक, वर्धन्त, अथधि ।  
 लौंदा दे० (पु०) पिपडा, मिट्टी आदि का पिपडा,  
 देला, धौंदा ।  
 लोक तत्० (पु०) लोग, जन, मनुष्य, भुवन, द्वीप,  
 मनुष्यों का वासस्थान ।—पाल (पु०) राजा,  
 दिक्पाल ।  
 लोकना दे० (क्रि०) ऊपर से गिरती हुई वस्तु की  
 बीच ही में पकड़ लेना । पकड़ना, गोखना, हुलना ।  
 लोकरा दे० (पु०) चीथरा, फटा कपड़ा ।  
 लोखर दे० (पु०) हथियार, लोहे के पात्र ।  
 लोग तद्० (पु०) लोक, मनुष्य जन ।  
 लोगाई दे० (स्त्री०) लुगाई अंगे, नारी, मेहरारू ।

लोचन तत्० (पु०) आँसू, नयन, नेत्र, चक्षु ।  
 लोटन दे० (स्त्री०) छपटन, नेत्र, नयन, चक्षु, आँसू,  
 पटकन, मखलिया ।—कचूतर (पु०) कपोत विशेष,  
 कचूतर की एक जाति ।  
 लोटना दे० (क्रि०) तहफना, छटपटाना, पटकना  
 पटकन खाना ।  
 लोटपोट दे० (पु०) तलफन, पटकन ।  
 लोट्टा दे० (पु०) जल पात्र विशेष ।  
 लोदा दे० (पु०) बड़ा ।  
 लोथ दे० (पु०) मृतक, मृतक शरीर, मुर्दा, शव ।  
 लोथरा दे० (पु०) मर्म का पिपडा, बोटी ।  
 लोथा दे० (पु०) बोरा, बैला ।  
 लोथी दे० (स्त्री०) गठीली लाठी, लठ्ठ ।  
 लोदी दे० (पु०) पटानों की जाति विशेष, र  
 जाति के लोग भी कुछ दिनों तक भारत के राज  
 रत चुके हैं ।  
 लोधिया दे० (पु०) जाति विशेष, किसान, कुर्मों ।  
 लोन दे० (पु०) लून, लून, लयण ।  
 लोना दे० (पु०) ल्वारा लयण युक्त । (पु०) फ  
 विशेष ।  
 लोनार दे० (पु०) ल्वारी भूमि, रार, चार भूमि ।  
 लोप तत्० (पु०) अदृश्य, अदर्शन, नाश, विध्व  
 अगोचर, गुप्त ।  
 लोपडी दे० (स्त्री०) लौंदा, लेप विशेष ।  
 लोथान दे० (पु०) सुगन्धयुक्त द्रव्य विशेष, जो धूप  
 जलाया जाता है ।  
 लोधिया दे० (पु०) एक तरकारी जिमका न  
 सेम है ।  
 लोभ तत्० (पु०) लृष्णा, लालच, इच्छा, ईप्सा ।  
 लोभना दे० (क्रि०) मोहित होना, चाहना, ल  
 चना ।  
 लोभी तत्० (पु०) लालची, लोभुप, लुब्ध ।  
 लोम तत्० (पु०) रोम, रोंधों, रूँगटा ।  
 लोमड़ी (स्त्री०) लोखरिया, लुकरा, जन्तु विशेष ।

लोचन दे० (पु०) लोचन, नयन, नेत्र ।  
 लोर दे० (पु०) बाँसु, घासु, नयन जल ।  
 लोल तत्० (पु०) चञ्चल, लालची ।  
 लोलक तत्० (पु०) कान वा एक गहना विशेष ।  
 लोलुप तत्० (पु०) आस्यन्त लोभी, लालची, लुब्ध ।  
 लोष्ट तत्० (पु०) देवा, मिट्टी, मृत्तिका ।  
 लोह तद्० (पु०) धातु विशेष, लोह धातु ।—चून (पु०) लोहे का धूल, रेत ।—बड़ा (पु०) लोहे का पात्र, लोहे का बर्तन ।—सार (पु०) लोहे का मसम, कान्तिसार ।  
 लोहा तद्० (स्त्री०) धातु विशेष, लोह, लोहा ।  
 लोहान दे० (पु०) रुधिरपूर्णा, लुहान, रक्तमय, लोह से लद फद ।  
 लोहार दे० (पु०) लोकार, लोहे का काम करने वाला ।  
 लोहित तत्० (पु०) रक्त, लाल, कुवम्भा ।  
 लोहिया दे० (पु०) लोहे का, लोहमय ।  
 लोही दे० (स्त्री०) कयल, प्रास, नेवला, रोह ।  
 लोहू दे० (पु०) रुधिर, शोणित, रक्त ।

लौं दे० (अ०) लौं, तफ, तलक, चपधि, पर्यन्त, सीमा ।  
 लौंग तद्० (पु०) लवङ्ग, लवंग, पुष्प विशेष ।  
 लौंडा दे० (पु०) छोकड़ा, क्षीरा, घामक, चाफा, नाचने वाला सड़का ।  
 लौंडिया दे० (पु०) छोकड़िया, लौंडी, दापी, चाकरानो ।  
 लौकना दे० (क्रि०) चमकना, चिजुनी चमकना ।  
 लौका दे० (पु०) विजली, विद्युत्, दन्त्र धनुष ।  
 लौकिक तत्० (पु०) मौनारिक, इस लोक का, इस लोक में होने वाला ।  
 लौकी दे० (स्त्री०) पर्यन्ती, छोटा लौका, कड़हू ।  
 लौटना दे० (क्रि०) पलटना, फिरना, घूमना, घूम जाना, लौट जाना ।  
 लौटाना दे० (क्रि०) फिराना, घुमाना, पलटाना ।  
 लौना दे० (क्रि०) लवन करना, भाटना, कटनो कराना ।  
 लौन्द दे० (पु०) मलमास, चधिमास, चधिक मास ।  
 लौह तत्० (पु०) धातु विशेष, लोह, लोहा ।  
 लपारी दे० (स्त्री०) भेड़िया, हुपदारी ।

व

वह द्यञ्जन का, उन्तीनयाँ वर्ण है, इसका उच्चारण स्थान दन्त और श्रोत्र है इस कारण इसे दन्त्योष्ठ्य कहते हैं ।  
 वंश तत्० (पु०) घन्तान, घन्तति, कुल, परिवार, कुटुम्ब ।  
 वंशावली तत्० (स्त्री०) वंश परम्परा, कुल, पीढ़ी, पुरव, पुत्र ।  
 वंशी तत्० (स्त्री०) वाद्य विशेष, बाँस का बना हुआ बाजा, सुरसी, बाँसुरी ।  
 वक तत्० (पु०) पक्षी विशेष, बगुला, झीझुपची ।  
 वक्षुल तत्० (पु०) वृक्ष विशेष, मौलवरी का पेड़ ।  
 वका तत्० (पु०) बोलने वाला, कहने वाला, व्याख्याता, व्याख्यान दाता ।  
 वक्तृता तत्० (स्त्री०) कथन, व्याख्यान, उपदेश, अभिप्राय, प्रकाशन ।

वक्र तत्० (पु०) टेड़ा, बाँका, तिरछा, कुटिल ।  
 वक्रोक्ति तत्० (स्त्री०) टेढ़ी बात, लड्डू यथन, तागा मारना, बलद्वार विशेष, यथा—  
 "जहँ इमेकै काकुवेँ, धरथ नयावे धीर ।  
 वक्रउकति तातेँ कहत भुवन कवि निरधोर ॥  
 उदाहरण—  
 कवि मुहीम धामे कते हज़रत मन सब धैर ।  
 सिव सर जामेँ गंगजुरि एहँ कवि के हैम ॥  
 —गिरराज भूषण ।  
 वक्षःस्थल तत्० (पु०) छाता, हृदय, उरस्थान, कनेजा, सीता ।  
 वक्षोज तत्० (पु०) उरोज, स्तन, कुन, चूँती, छाती ।

घट्ट तत्० (गु०) वक्र, तिरछा, टेडा, चौका, कुटिया ।  
 घट्टिल तत्० (गु०) टेडा मेडा ।  
 घट्ट तत्० (गु०) धातु विशेष, राँगा का भस्म, देश विशेष, बह्नाल ।  
 घच तत्० (गु०) षोषधि विशेष, वाक्य, वचन ।  
 घचन तत्० (गु०) उक्ति, कथन, वाक्य ।—अ्यक्ति (खी०) बात की सफाई ।  
 घजु तत्० (गु०) देवराज इन्द्र का अश्व विशेष, विजली, विद्युत्, हीरक, हीरा, श्रीकृष्ण का प्रपौत्र और अनिरुद्ध का पौत्र ।—दन्त (गु०) सूकर, सूअर ।—दन्ती (खी०) पौधा विशेष ।—नाभा (गु०) मुमैरु पर्वत पर रहने वाला एक अशुर, महाका के वर से यह सकल देवताओं का अयध्व था और वज्रपुर नामक एक नगर भी इसे मिला था । तब मे मुमैरु पर्वत छोड़ कर ये उसी नगर में रहने लगा था । कुछ दिनों के बाद यह वर के अभिमान से समस्त लोक को भीड़न करने लगा और स्वर्ग छोड़ने के लिये इच्छने इन्द्र को भी कह-याया । इन्द्र बृहस्पति के आदेश के अनुसार वज्र-नाभ को बाध लेकर करवप मुनि के पास गये । और वहाँ इन्होंने सभी बातें कह कर महामुनि करवप की सम्मति माँगी । करवप ने कहा, वत्स वज्रनाभ, मैं इस समय एक यज्ञ करने के उद्योग में हूँ इसकी ममाग्नि होने पर जो उचित होगा वह मैं कहूँगा, तब तक वज्रपुर में हो गुन रहे ।  
 घज्राघात तत्० (गु०) घज्रपात, वज्र से मारना ।  
 घञ्जक तत्० (गु०) ठग, ठगने वाला, धूर्त, प्रतारक, शृगाल, चिवाल ।—ता (खी०) धूर्तता, ठगई ।  
 घञ्जना तत्० (खी०) प्रतारणा, धूर्तता, ठगई ।  
 घञ्जित तत्० (गु०) प्रतारित, ठगा हुआ ।  
 घट तत्० (गु०) वृक्ष विशेष, घट का पेड़, बरगद ।  
 घटर तत्० (गु०) मुर्ग, मुर्गा, चौर, पगडी, आसन, चटाई ।  
 घटिका, घटी तत्० (खी०) दवा की गोली, गोली, यदी ।

घट्ट तत्० (गु०) विद्यार्थी, बालक, ब्रह्मचारी, विद्याध्ययन करने वाला, बालक, ब्राह्मण कुमार ।  
 घट्टक तत्० (गु०) बालक, यदु, शैरव विशेष ।  
 घड तत्० (गु०) बरगद, घर, घट वृक्ष ।  
 घडिश तत्० (गु०) वनसी, मछला पकड़ने का यन्त्र ।  
 घण्टक तत्० (गु०) बाँटने वाला, विभाग करने वाला, विभाजक, अलगगी वाला, वृषकर्ता ।  
 घत् तत्० (ख०) समान, सद्गुण, उपमा, हुष्य, यथा-ब्राह्मणवत्, पण्डितवत् ।  
 घत्स तत्० (गु०) शिशु, बच्चा, बछड़ा ।—तर (गु०) अतिशय छोटा, अत्यन्त छोटा बच्चा ।  
 घत्सर तत्० (गु०) वर्ष, साल, संवत्, बारह महीनों का काल ।  
 घत्सरीय तत्० (गु०) घत्सर सम्बन्धी, वर्ष का, वार्षिक ।  
 घत्सल तत्० (गु०) पुत्र प्रेमी, स्नेही, छोटी, दयावाद् ।  
 घत्सासुर तत्० (गु०) कष का अशुर, अशुर विशेष, यही श्रीकृष्ण को मारने के लिये कष के द्वारा गोकुल भेजा गया था । श्रीकृष्ण को मारने की इच्छा से यह गोकुल में वत्स रूप धारण करके घूमता था । यह जान कर श्रीकृष्ण ने इसे मार डाला ।  
 घदन तत्० (गु०) भास्य, मुख, मुँह ।  
 घदान्य तत्० (गु०) दाता, दानशील ।  
 घधू तत्० (खी०) खी, भार्या, दारा, स्तुषा, पुत्र-यधु ।  
 घन तत्० (गु०) जल, नीर, अरवय, अङ्गन, कान्तार, विपिन, वृक्षों का समूह, जो वृक्ष स्वयं उत्पन्न हुए हों ।—चर (गु०) जङ्गली, वनीया, वन्य, वन में रहने वाला ।—ज (गु०) कमल, जलज, नोख ।—पाँजुल (गु०) ठपाध, बहेलिया ।—माला (खी०) गुलसी, कुन्द, मन्दार पारिजात और कमल इनके धनी लम्बी माला, पैर तक लटकने वाली माला—स्पति (गु०) वृक्ष विशेष, जिन वृक्षों में विना फूल के ही फल लगें, वे वनस्पति हैं ।

धनिता तत्० (खी०) भार्या, स्त्री, प्रियतमा, ध्याती ।  
 धनेला दे० (गु०) धन्य, धनवासी, धनधर, धनधारी ।  
 धन्दन तत्० ( पु० ) प्रणाम, अभिषादन ।—चरित  
 (गु०) प्रशंसा योग्य, माननीय गुण ।  
 धन्दना तत्० ( खी० ) स्तुति, नमस्कार, प्रणाम,  
 नियत नमस्कार ।  
 धन्दनीय तत्० ( गु० ) धन्दन करने योग्य, प्रणाम  
 करने लायक ।  
 धन्दा दे० (गु०) चाकाय लता, पृष्ठों पर से निकला  
 हुआ वृक्ष विशेष ।  
 धन्दि तत्० (गु०) प्रशमित, नमस्कार किया हुआ,  
 श्रिक्रम लोग प्रणाम करें ।  
 धन्दी तत्० (गु०) भाट, दशौधी, स्तुति-कर्ता, स्तुति  
 करने वाला, यँधा हुआ, कैद किया गया, कैदी ।  
 —जन भाट खादि स्तुतिकारी ।  
 धन्य तत्० (गु०) धनीना, जङ्गली, धनधर ।  
 धपन तत्० (गु०) घोना, धीजानेपण, मुषहन, देश-  
 कर्तन, बाल मुड़ाना ।  
 धपनी तत्० (खी०) नापित शान्ता, हजामों का  
 चट्टा ।  
 धपुः तत्० (गु०) गरौर, देह, काय ।  
 धपमा तत्० (गु०) धपनकर्ता, धीज बोने वाला, मुंडन  
 कर्ता ।  
 धप तत्० (गु०) प्राचीर, खावा, दीवार, भीत, चार  
 दीवारी ।  
 धधु तत्० (गु०) यादव विशेष, यदुवंश के जाश होने  
 पर श्री कृष्ण की आज्ञा से ये यादवों की खियों  
 की रक्षा के लिये जाने थे परन्तु रास्ते ही में  
 दम्पुओं ने इन्हें मार डाला ।  
 धधुधाहन तत्० (गु०) धधुन का पुत्र ये मलिपुर  
 की राजकन्या चित्राङ्गदा के गर्भ से उत्पन्न हुए  
 थे । नाना के मरने के बाद ये मलिपुर के राजा  
 हुए थे ।  
 धधन तत्० (गु०) उद्यन्त, धान्ति, उगटी, कुँ ।  
 धधनी तत्० (खी०) जलीका, जोक ।  
 धधस तत्० (खी०) धधस्या, धायु, धायुष्य, उमर ।

धयस्य तत्० (गु०) धानिग, धयःप्राप्त, धवस्या  
 वाला ।  
 धयस्य तत्० (गु०) समान धयस्या वाला, सखा,  
 मित्र ।  
 धर तत्० (गु०) धाशीय, धाशीवाँद, शुभ विन्तन,  
 शुभासुध्यान, मनोरथ सिद्धि । (गु०) श्रेष्ठ, उत्तम,  
 अच्छा, प्रधान ।—द (गु०) धमोष्ट दाता ।  
 धरण तत्० (गु०) घेहन, लपेटना, चुनना, घीनना,  
 धाहान करना, निमन्त्रण देना ।  
 धरणा तत्० (खी०) एक नदी का नाम, जो काशी  
 के उत्तरी भाग से बहती हुई गङ्गा में जा  
 मिली है ।  
 धररा तत्० (खी०) हंसी, हंसिनी ।  
 धर रहना दे० (धा०) जमी होना, जयवन्त होना ।  
 धर सचि तत्० (गु०) ध्याकरण का धार्तिककार,  
 सोमदेय भट्ट कृत कथासहितनागर में लिखा हुआ  
 है कि ये सोमदेय नामक ब्राह्मण के पुत्र थे । इन्होंने  
 ने पाणिनि के मूर्तों पर धार्तिक बनाये थे । कुछ  
 लोगों का कहना है कि ये उज्जयिनी के राजा  
 विक्रमादित्य के नवरत्नों में से एक रत्न थे ।  
 प्राकृत प्रकाश नामक एक प्राकृत भाषा का ध्याक-  
 रण इन्होंने बनाया था ।  
 धरस दे० (गु०) धरनी, बीनी, हड्डा ।  
 धरसिंहीनी तत्० (खी०) उत्तमा स्त्री, गुणवती और  
 रूपवती स्त्री ।  
 धरह दे० (गु०) पत्ता, पत्र ।  
 धरा तत्० (खी०) धकुची, धौधधि विशेष ।  
 धराक तत्० (गु०) बेवार ।  
 धराटक तत्० (गु०) कौड़ी, कपहिका ।  
 धराह तत्० (गु०) भारत के एक प्रसिद्ध ज्योतिषी,  
 इनके पुत्र मिहिर विक्रमादित्य की उभा के धराह  
 मिहिर नाम से प्रसिद्ध हो कर नवरत्नों में से थे ।  
 भगवान का धरतार विशेष ।  
 धरिष्ट तत्० (गु०) श्रेष्ठ, उत्तम, प्रधान ।  
 धरु दे० (ध०) यदि, धगर, पदान्तर ।

घरुण तत्० (पु०) वृक्ष विशेष, जल का देवता, जल का अधिपति देव । ये पश्चिम दिशा के दिक्पाल हैं । अद्रिति के गर्भ और कश्यप के औरम से इनकी उत्पत्ति हुई थी । श्रीमद्भागवत में लिखा है कि भृगु और वाष्पमीकि इनके पुत्र थे । इनकी चर्षिणी नामक स्त्री के गर्भ से ये दोनों पुत्र उत्पन्न हुए थे । बहुत दिनों से इस देवता की पूजा आर्यों में प्रचलित है । ऋग्वेद में इस देवता का पराक्रमशाली और विमानाचारी कह कर वर्णन किया गया है । इनके प्रधान अस्त्र का नाम पाश है इसी कारण इनको पाशी भी कहते हैं ।

घरुथ तद्० (पु०) समूह, दल, गिरोह, ग्रथ ।

घरुथी तद्० (स्त्री०) सेना, चमू फौज ।

घरुथ तत्० (पु०) रथ ओहारे के कपडा, समूह, भूषण, चक्रपथ ।

घरुथिनी तत्० (स्त्री०) सेना, पृतया, अनीकिनी, फौज ।

घरे दे० (पु०) इस पार, इधर, समीप, समूह ।

घरेची दे० (स्त्री०) वृक्ष विशेष, अङ्गुल वृक्ष ।

घरेपी दे० (स्त्री०) भूषण विशेष, एक गहना का नाम ।

घरोरू तत्० (स्त्री०) गन्धनवती, श्रेष्ठ जहुँ वाली ।

घरोरूक दे० (पु०) अलगन्ध, ओषधि विशेष ।

घर्ग तत्० (पु०) समान जाति का समूह, समान का समूह, गुण जाति और क्रिया इनसे समान वालों का समूह । एक स्थान से उच्चारण होने वाले अक्षर, गणित विशेष, एक अङ्क को उसीमें घात करने से जो गुणनफल होता है ।—द्वेष (पु०) जिस क्षेत्र की चारो भुजा समान और चारों कोण भी समान हों ।—मूल (पु०) यह अङ्क जिसका वर्ग किया गया हो । यथा—४—का वर्ग करने से १६ होता है, १६ का वर्गमूल ४ हुआ ।

घर्गीय तत्० (पु०) वर्ग का, समूह का ।

घर्जन तत्० (पु०) निषेध, त्याग, परिहार ।

घर्जित तत्० (पु०) रोका हुआ, छोटा हुआ, बर्जा, निश्चिह्न ।

घर्षा तत्० (पु०) रङ्ग, राग, ब्राह्मण आदि चार वर्ग, अक्षर माला ।—माला (स्त्री०) ककहरा, अक्षर माला ।—सङ्कर (पु०) विभिन्न जाति के माता पिताओं से उत्पन्न, दोगला ।

घर्षक तत्० (पु०) प्रशंसक, स्तुति कर्ता । (पु०) रङ्ग, चित्रों में भरा जाने वाला रङ्ग ।

घर्षण तत्० (पु०) रञ्जन, गुण कथन, बखान ।

घर्षणा तत्० (स्त्री०) घर्षण, स्तव, स्तुति । (स्त्री०) बखान करना, स्तव करना, बखानना ।

घर्षात्मक तत्० (पु०) [घर्ष + आत्मक] अक्षर सम्बन्धी, अक्षरात्मक ।

घर्षाश्रम तत्० (पु०) [घर्ष + आश्रम] ब्राह्मण आदि वर्ण और ब्रह्मचर्य आदि आश्रम ।

घर्षिका तत्० (स्त्री०) रङ्ग भरने की लेखनी ।

घर्षित तत्० (पु०) प्रशंसित, स्तुत ।

घर्तन तत्० (पु०) जोविका, वृत्ति, जीवनीपाय ।

घर्तमान तत्० (पु०) काल विशेष, जो समय बीत रहा हो । किसी किसी को प्रारम्भ करके जब तक उसकी समाप्ति न हो तब तक का काल घर्तमान है ।

घर्ता दे० (स्त्री०) काठ की कृमि, जिससे पटे या लिखा जाता है ।

घर्ताव दे० (पु०) व्यवहार, आचरण, आचार, रीति ।

घर्ति तत्० (स्त्री०) वाती, दीपक में जलने वाली बत्ती, आँवों में सुरमा लगाने की सलाई, तयत-जून शलाकिका ।

घर्तिका तत्० (स्त्री०) पत्नी विशेष, अटेर पत्नी, यात्री, घर्ति ।

घर्तुल तत्० (पु०) गोलकार, गोल वस्तु, गण्डन ।

घर्तम तत्० (पु०) अष्टवा, पथ, राह, रास्ता, मार्ग ।

घर्दन तत्० (पु०) वृद्धि, बढ़ती, बढ़ना, उत्पत्ति, उद्भव, अन्वुदय ।

घर्दमान तत्० (पु०) श्रीमान्, भाग्यवान्, उत्पत्ति-शील ।

घर्दा दे० (पु०) वैभ, वृषभ, वधिया वैभ ।

वर्द्धित तत्० (गु०) उन्नत, बढ़ा हुआ ।  
 वर्म तत्० (पु०) कवच, शरीर चाण, लोहे का धर, जिसे योद्धा लोग युद्ध के समय धारण करते थे ।  
 वर्मा तत्० (पु०) सत्रियों का उपपद, अस्त्र विशेष, बढ़ई का धर ।  
 वर्ध तत्० (गु०) श्रेष्ठ, उत्तम, प्रवर, धर, शिरोमणि, यह त्रिस संज्ञा शब्द के धर्म में आता है उसकी श्रेष्ठता बतलाता है ।  
 वर्ला दे० (पु०) नदी का दम पार, दम पार का घाट ।  
 वर्धर तत्० (पु०) असभ्य, जहूनी ।  
 वर्ष तत्० (पु०) वृष्टि, वर्षा, साल, संवत्, बारह महीने का समय, पृथिवी का खरह विशेष ।  
 वर्षण तत्० (पु०) वृष्टि, बरसना, पानी पड़ना ।  
 वर्षा तत्० (स्त्री०) वर्षा काल, प्रावृत् काल । वृष्टि, पानी बरसना ।—काल तद्० (पु०) प्रावृत्, बरसात ।  
 वर्षाशन तत्० (पु०) [ वर्ष + अशन ] एक वर्ष का भोजन, वर्ष भर की जीविका ।  
 वर्ही तत्० (पु०) मोर, मयूर ।  
 वल तत्० (पु०) वेना, चमू ।  
 वलकल तत्० (पु०) वकल, झाल, लक, वकला, वृक्षों की छाल ।  
 वलमी तत्० (स्त्री०) बराबरा ।  
 वलम तत्० (पु०) कडूण, कड़ा, हाथ में पहनने का कपड़ा ।  
 वला तत्० (स्त्री०) वेना, लक्ष्मी, धरणी, श्रोत्रिय विशेष, बरियार ।  
 वलाका तत्० (स्त्री०) वगला, बक, बकपंक्ति, बक समूह ।  
 वलाहक तत्० (पु०) मेघ, घटा, बादल ।  
 वलि तत्० (पु०) गुंजोपहार, पूजा की सामग्री, पगु का नैवेद्य, पाताल का राजा ।  
 वलकल तत्० (पु०) छाल, छिलका, बकला, वृक्ष लक ।

वल्लु तत्० (गु०) मनोहर, सुन्दर ।  
 वल्मीक तत्० (पु०) दीमक, विम्बोट ।  
 वल्लुकी तत्० (स्त्री०) सीमा, तम्बूरा, वाद्य विशेष ।  
 वल्लुम तत्० (पु०) प्रिय, प्रियतम, स्वामी, प्रभु, प्रसिद्ध वल्लभ सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य, ये दक्षिणी ब्राह्मण थे, इनके पिता का नाम महादेव भट्ट था । इनके अनुयायी इनको साक्षात् विष्णु भगवान् का अवतार मानते हैं । सम्भवतः ११२५ ई० में इनका जन्म हुआ था ।  
 वल्लुमा तत्० (स्त्री०) प्रिया, प्रियतमा, चापला प्रिया स्त्री ।  
 वल्लव तत्० (पु०) अहीर, नाप, रवाया ।  
 वल्लो तत्० (स्त्री०) लता, धरती ।  
 वश तत्० (पु०) अधीन, अधिभूत, अधिकार युक्त, अधिकार, प्रभुत्व ।  
 वशिष्ठ तत्० (पु०) महर्षि विशेष, ये ब्रह्मा के मानस पुत्रों में से थे, सप्तर्षियों में से एक अन्यतम थे भी हैं । कर्दम प्रजापति की कन्या अश्वत्थि इनकी स्त्री हैं । इनके एक ही पुत्रों को राक्षस भायापक्ष अयोध्या के राजा कर्माघपाद ने धरा डाला था । महर्षि विश्वामित्र इनके दशभाषिक शत्रु थे । सूर्यवंशियों के ये पुरोहित थे ।  
 वशीकरण तत्० (पु०) अधीन करने की प्रक्रिया, तन्त्र या मन्त्र विशेष, जिससे वशीकरण होता है ।  
 वशीभूत तत्० (पु०) अधीनभूत, हिला, परचा ।  
 वश्य तत्० (पु०) वशीभूत, अधीनी भूत, परचा ।  
 वपत् तत्० (अ०) इससे देवताओं की हवि दी जाती है ।  
 वसति तत्० (स्त्री०) वास, वासस्थान, पुर, नगर, गाँव, ग्राम ।  
 वसन तत्० (पु०) धर, कपड़ा ।  
 वसन्त तत्० (पु०) अतुरात्र, जागुन शीत वेग महीना, किलो के मत से चैत और वैशाख वसन्त ऋतु है । राग विशेष, शीतला, येनक, मोटी ।  
 वसूत (पु०) कालिल, धाम वृक्ष ।  
 वसा तत्० (स्त्री०) मक्का, चर्बी ।



वसीठ दे० ( पु० ) दूत, हरकारा, सन्देशारक ।

वसीठी दे० ( स्त्री० ) दूतता, दूत का काम ।

वसु तत्० ( पु० ) गण देवता विशेष, वसु नामक आठ देवता प्रसिद्ध हैं । यथा—धर भुव, सोम, विठपद, अनल, अग्नि, प्रत्नूप, और प्रभास ।

( २ ) चेदि देश के राजा, इनका जन्म पुरुवश में हुआ था । इन्द्र के अनुग्रह से उन्हें चेदि देश का राज्य मिला था । कुछ दिनों के बाद अछ शख छोड़ कर वसु तपस्या करने लगे, इनकी तपस्या से इन्द्र को बड़ा भय हुआ, इन्द्र इनके समीप आये, प्रेम पूर्णक इन्द्र राज्यशासन करने के लिये इनसे अनुरोध करने लगे । इन्होंने इन्द्र की बातें मान लीं, और तदनुसार तपस्या छोड़ कर ये राज्यशासन करने लगे । इनके साथ इन्द्र की बड़ी मित्रता हो गई थी, ये मर्त्यलोक से भी इन्द्र की मित्रता निभा सकते थे । इन्द्र ने आकाशगामी एक विमान इन्हें दिया था, इसी विमान पर चढ़कर ये कभी कभी आकाश में घूमते थे । अतएव इनका दूसरा नाम उपरिचर प्रसिद्धि हुआ था ।  
—देव ( पु० ) श्रीकृष्णचन्द्र के पिता ।—धा ( स्त्री० ) धरणी, पृथ्वी, पृथिवी ।—मती ( स्त्री० ) वसुधा ।

वसुधरा तत्० ( स्त्री० ) पृथ्वी, वसुधा ।

वस्तव्य तत्० ( पु० ) वास योग्य, ठहरन योग्य, बसने के उपयुक्त ।

वस्तु तत्० ( स्त्री० ) ( संस्कृत में नपुंसक ) पदार्थ, द्रव्य, सामग्री ।

वस्त्र तत्० ( पु० ) वसन, कपडा ।

वह दे० ( सर्व० ) अन्य पुरुष विशेष ।

वहला दे० ( पु० ) धावा, लडाई, आक्रमण ।

वहाँ दे० उस स्थान पर ।

वन्दि तत्० ( पु० ) आग, अग्नि, अन्नल ।

वा तत्० ( अ० ) विकल्प, पक्षान्तर, अथवा ।

वांशी तद्० ( स्त्री० ) मुरली, यशी ।

वाक्, वाक्य ( पु० ) भाषा, बोली, वचन ।—चातुरी ( स्त्री० ) वचनपद्धता ।—दैव ( पु० ) आत्मा, स-

स्वती ।—पति ( पु० ) बृहस्पति, देवगुरु ।—यु ( पु० ) जवानो भगवा ।

वाकुची दे० ( स्त्री० ) बकुची, खोपध विशेष ।

वाक्यार्थ तत्० ( पु० ) [ वाक्य + अर्थ ] वाक्य का अर्थ, शब्द बोध ।

वाङ्माल तत्० ( पु० ) प्रपञ्च, वाङ् मसूह ।

वाग्दत्त तत्० ( पु० ) वचनदत्त, वचन से दिया, एक प्रकार का विवाह ।

वागुरा, वागुरी तत्० भृगवन्धन, पशु पँसने का जाल, फन्दा, यथा—

मात चरण सिरनाय, चने मुरत शङ्कित हिये ।  
वागुरि विषम तोराय, मनेभाग भृग मागवस ॥  
—रामायण ।

वाच तत्० ( पु० ) वचन, वाक्, वाक्य, भाषा बोली ।

वाचक तत्० ( पु० ) शब्द, अर्थबोधक, अर्थबोधन करने वाला, बौचने वाला, पुराणवक्ता, कथक ।

वाचनिक तत्० ( पु० ) वचन कथित, वचन सम्बन्धी ।

वाचा तद्० ( पु० ) वाक्, वचन, वच ।

वाचाल तत्० ( पु० ) बक्की, गप्पी, बकवादी, गपे-डियर, सुखर ।

वाच्य तत्० ( पु० ) वक्तव्य, बोलने योग्य । ( पु० ) बोध्य, अर्थ, शब्दार्थ ।

वाङ्मिड दे० ( अ० ) वाहजी, धन्य, प्रियवाक्य ।

वाज दे० ( पु० ) पक्ष विशेष ।

वाजपेय तत्० ( पु० ) यज्ञ विशेष ।

वाजी तत्० ( पु० ) घोडा, अश्व ।

वाङ्मत्ता तत्० ( स्त्री० ) आकाशा, मनोरम, स्पृहा ।

वाङ्मिड तत्० ( पु० ) आकाशित, इच्छित, अभि-लापित ।

वाट दे० ( पु० ) मार्ग, पथ, अडवा, राह, बगर ।

वाटिका तत्० ( स्त्री० ) फुलवादी बगीचा, आराम ।

घारी दे० ( स्त्री० ) घर, मकान, गृह ।

वाङ् दे० ( पु० ) स्थान, बाट, सान ।

बाह्यो दे० (खो०) बाँगन, उपवन, उद्यान, बगीचा ।  
 बाण तत्० (पु०) तोर, गर, पट्ट, कापड़ ।  
 बाणो तत्० (खो०) बाण, बोलो, शब्द, ध्वनि ।  
 बाह तत्० (पु०) बायु, पवन, हवा, रोग विशेष,  
 गठिया, दाह ।—शूल (पु०) शूल विशेष ।  
 बातुल तत्० (पु०) बात रोगी, उन्मत्त, यायुग्रस्त ।  
 बात्सल्य तत्० (पु०) कल्या, अनुकम्पा, स्नेह ।  
 बाद तत्० (पु०) विवाद, बाहूकनह, शास्त्रार्थ, सम्भा-  
 रण, आलाप ।  
 बादानुवाद तत्० (पु०) उत्तर प्रत्युत्तर, भगड़ा,  
 रूपह ।  
 बादो तत्० (पु०) विरोधी, मुहूर्त, प्रथम अधिभाग  
 करने वाला ।  
 बाध तत्० (पु०) बाधा, बाध पन्न ।—कर (पु०)  
 बाधकर्ता, ब्रह्मघ्नी, ब्रजाने वाला ।  
 बाधप्रस्य तत्० (पु०) तोसरा बाधम ।  
 बाधर तत्० (पु०) जधि, बन्दर, मकड़, बाँदर ।  
 बापी तत्० (खो०) तडाग, बायलो, तरोवर ।  
 बाप तत्० (पु०) बाप । (पु०) विरोधी, गनु,  
 अगुमन्त्रिक, अहितकारी ।  
 बाभन तत्० (पु०) बीना, पर्व, इन्द्रबाकार  
 वाला ।  
 बाभा तत्० (खो०) नारी, खो, बापित् ।—चार  
 (पु०) कैल मन्त्रदाय, शाकमत का एक मेद, गव्य-  
 मर्म सेवन बादि ही जिनका धर्म है ।  
 बायु तत्० (पु०) पवन, हवा, बलाय, हवा ।  
 —श्रुत (पु०) उन्मत्त, यायुग ।  
 बार दे० (पु०) ठोकर, आक्रमण, धाव, वार, पाला,  
 धारी ।  
 बारक तत्० (पु०) निवारणकर्ता, निषेधक, रुक-  
 धैय, बाधक ।  
 बारण्य तत्० (पु०) अटकाव, रुकाव, रुकावट,  
 बाधा, विघ्न, हस्ति, हामी ।

बारन दे० (पु०) प्रथम, मँट चढ़ाना, न्याहावर  
 करना, धमि ।  
 बरा दे० (पु०) समार्द, बचाई, बचाव, निहाय ।  
 बारि तत्० (पु०) तन, नीर, घणू, पानी, अम्बु ।  
 —बर (पु०) जलजन्तु, जलतर ।—ज (पु०)  
 कमल, पद्म ।—द (पु०) मेघ, जलद, तायद, धटा,  
 घन ।—धि (पु०) समुद्र, सागर ।  
 बारणी तत्० (खो०) मदिरा, बराय, पश्चिम दिगा,  
 पच्छिम ।  
 बारो तत्० (खो०) वृत्तान्त, बात, ममाचार ।  
 बारिक तत्० (पु०) भुवों की टीका, सूत्र में कहे  
 नहीं अपक्षा दो बार कहे विषयों का विचार जिस  
 ग्रन्थ में हो ।  
 बार्यक्य तत्० (पु०) वृहायस्या, बुढ़ापा, बुढ़ौती ।  
 बारिक तत्० (पु०) सर्व में हेतुवाला, मानवत्वरिक ।  
 ब्यल तत्० (पु०) पलटा, बदला ।  
 बालखिल्य तत्० (पु०) अँगुष्ठ प्रमाण शरीर जाने  
 साठ इन्जर महर्षियों का समूह । इन्हीकी तपस्या  
 ने गङ्गा उत्पन्न हुए हैं । एक समय महर्षि करयप  
 ने पुत्र की इच्छा ने यज्ञ प्रारम्भ किया था ।  
 उन्होंने उस यज्ञ में लकड़ों से आग्ने की निचे इन्द्र  
 और बालखिल्य को नियुक्त किया था । समस्त  
 ब्रह्मविषयों का समूह यड़े कष्ट से एक लपटा से धा  
 रहा था, क्योंकि ये बहुत ही छोटे और दुर्बल थे ।  
 रातने में जलपूर्ण एक गोप्यद में वे डूब रहे थे,  
 बलाभिमानो पुरन्दर पक्ष देल कर उपहास पूर्वक  
 उनकी डाक कर चले गये । इससे उनकी बड़ा कष्ट  
 हुआ, और इस इन्द्र ने अधिक बलवाली इन्द्र की  
 यज्ञ द्वारा वे प्रार्थना करने लगे । तब इन्द्र के  
 प्रार्थना करने पर महर्षि करयप ने कहा, देखो, इन-  
 की ब्रह्मा ने इन्द्र बनाया है और तुम दूसरे इन्द्र  
 की प्रार्थना करते हो हमने ब्रह्मा के नियम का  
 तिरस्कार होगा और हम तुम्हारी भी प्रार्थना  
 निरकरन नहीं करना चाहते हैं, अतएव तुम्हारा  
 प्रार्थित इन्द्र पतगेन्द्र हो, बालखिल्यों ने करयप के  
 प्रस्ताव को स्वीकृत किया ।

वालमीकि तत्० (५०) विष्णुपात रामायण क कर्ता मुनि । ये ऋषोऽध्यापिपति रामचन्द्र के समय में थे । परशु रामचन्द्र से ये ऋषस्या में बहुत बड़े थे । ऋषोऽध्या के दक्षिण ओर गङ्गा बहती है, गङ्गा के दक्षिण की ओर का वास आनायों की बस्ती थी, वह प्रदेश जङ्गल था । उमी जङ्गल के बीच से तमसा नदी प्रवाहित हुई है, इसी नदी के तीर पर महर्षि वालमीकि का आश्रम है । उसी आश्रम में इन्होंने अपने मुउन विष्णुपात काव्य की रचना की है । ये ही भारत के आदि कवि हैं । कोई कहते हैं कि ऋषोऽध्या ने मथुरा जाने के मार्ग में वालमीकि का आश्रम है अतएव नयणामुर का बध करने के लिये जाते हुए शत्रुघ्न वालमीकि के आश्रम में ठहरे थे । इनके हाकू होने की कथा आर्य रामायण में नहीं है ।

वायदूक तत्० (५०) यक्षा, विष्णुपात यक्षा, अत्यन्त बेलने वाला ।

वास तत्० (५०) स्थान, रहने का स्थान, गन्ध, महक ।

वासन्ती तत्० (स्त्री०) लता विशेष, माधवी लता ।

वासर तत्० (५०) दिन, दिवस, दिवा, बार, तिथि ।

वाहित तत्० (५०) सुगन्धित ।

वासी तत्० (५०) बसिया, रहने वाला, निवासी, वाशिन्दा । (५०) ठण्डा धन्न, भाफ निकना धन्न, कल का बना हुआ धन्न ।

वास्तव तत्० (५०) यथार्थ, निष्प, ठीक, सत्य ।

वास्व तद्० (५०) वाय, भाफ ।

वाहिनी तत्० (स्त्री०) सेना, चपू, ।

वाहा तत्० (५०) बाहर, बाहरी, बाहर का ।

वि तत्० (उप०) विवेक, विशेष, निश्चय, ईश्व, घोडा, गुह, अथलम्यन ज्ञान, गति, आशस्य, पालन ।

विकट तत्० (५०) भयानक, भयङ्कर, क्रूर ।

विकल तत्० (५०) विह्वल, उद्धिग्न, अवाकुल, अधूरा, असम्पूर्ण ।

विकराल तत्० (५०) अतिशय भयानक, घोर भयङ्कर, डरावना, भयप्रद, भयजनक ।

विकल्प तत्० (३०) सन्देह, संशय, श्रान्ति, अश्रान्तिप्रचय ।

विकार तत्० (५०) विकृति, परिवर्तन, परिवृत्ति, उलटफेर, बदलाव ।

विकाल तत्० (५०) गोधूँली, मन्धा, साय झाल ।

विकशन तत्० (५०) प्रकाश, प्रफुल्लता, विलसना ।

विकाश तत्० (५०) प्रकाश, उद्भेद, शक्ति ।  
—सिद्धान्त (५०) एक प्रकार का दर्शन सिद्धान्त ।

विद्वृत तत्० (५०) विरूप, अस्यञ्च, मलीन । (५०) चृषा ।

विकृति तत्० (स्त्री०) विकार, अन्वया भाव, परिवर्तन, बदलाव ।

विक्रम तत्० (५०) पराक्रम, बल, शक्ति, सामर्थ्य, शूरता, वीरता, प्रभुता, वीर्य ।

विक्रमादित्य तत्० (५०) [ विक्रम + आदित्य ] उज्जयिन्ती ऋ विष्णुपात विद्या प्रमी राण, ये स्वयं परिहृत थे, और परिहृतों को बहुत धन दे कर उनकी विद्या का आदर करते थे । इनके समय में सर्वोत्तम नो परिहृत थे जो नवरत्न कहे जाते थे । परिहृतों के नाम हैं कालिदास, बरकचि, अमरसिंह धन्वन्तरि, जयणक, शैताल भट्ट, चटकधर, शकु और वराहमिहिर । बहुताँ के मत में ई० सत् के ५६ वर्ष पहले विक्रम का समय माना गया है । इनकी विश्वासनीय जीवनी कोई नहीं मिलती ।

विक्रमी तत्० (५०) यत्मान, बली, पराक्रमशाली, वीर ।

विक्रय तत्० (५०) विक्री, बेचना, माल खपना ।

विक्रयी, विक्रीता तत्० (५०) बेचने वाला, विक्री करने वाला ।

विज्ञेय तत्त्वं ( पु० ) व्याघात, बाधा, व्याकुलता, जंजना, दूर करना, छोड़ना, त्यागना ।

विख्यात तत्त्वं ( गु० ) प्रसिद्ध, एयातिप्राप्त, कीर्तिमान, यशस्वी ।

विख्याति तत्त्वं ( श्री० ) कीर्ति, यश, प्रसिद्धि ।

विगत तत्त्वं ( गु० ) गया हुआ, घीसा हुआ, ध्वंसीत ।  
—श्रम ( गु० ) श्रम रहित, बिना शकावट का ।

विगति तत्त्वं ( श्री० ) विरोध, बिगाड़, खराबों ।

विग्रहण तत्त्वं ( पु० ) तिरस्कार, निन्दन, निन्दा करना ।

विगुण तत्त्वं ( गु० ) गुण हीन, विगत गुण, बिना गुण का ।

विगोपे दं ( गु० ) द्विपे हुए, गुप्त, छुका ।

विग्रह तत्त्वं ( पु० ) विरोध, लड़ाई, युद्ध, संग्राम, मङ्गल, द्वेष, शरीर, देह, अङ्ग ।

विघटन तत्त्वं ( पु० ) अलगव, पृथक्कार, विवेक, अलग अलग होना, छिलना, फूलना ।

विघात तत्त्वं ( पु० ) विघ्न, अड़चन, रुकावट, बाधा, व्याघात, अटक, नाश, अन्ध, बिगाड़ ।

विघातक तत्त्वं ( पु० ) बाधक, नाशक, घातक ।

विघ्न तत्त्वं ( पु० ) बाधा, अटक, रुकावट ।

विचक्षण तत्त्वं ( पु० ) चतुर, प्रवीण, निपुण, बुद्धिमान् ।

विचरण तत्त्वं ( पु० ) भ्रमण, घूमना ।

विचल तत्त्वं ( पु० ) अचल, अस्थिर, अधीर ।

विचलना दे० ( श्री० ) विचलित होना, अधीर होना, मुकरना ।

विचार तत्त्वं ( पु० ) ध्यान, सोच, अनुमान, तर्क-निर्णय, मानसिक, अभिप्राय ।

विचारित तत्त्वं ( गु० ) निर्णीत, व्यवस्थापित ।

विचित्र तत्त्वं ( गु० ) रङ्ग बरङ्गा, अनेक रङ्ग का, अद्भुत ।

विचित्रवीर्य तत्त्वं ( पु० ) महाराज शान्तनु का पुत्र, काशिराज की कन्या अम्बालिका और अम्बिका रतको ब्याही गई थीं । अम्बालिका के गर्भ से पाण्डु और अम्बिका के गर्भ से धृतराष्ट्र उत्पन्न हुए थे ।

विच्छेद तत्त्वं ( पु० ) विवेक, पार्श्व, भेद, अन्तर ।

विजन तत्त्वं ( गु० ) निजंन, जनरहित, जनशून्य, धीरान ।

विनय तत्त्वं ( पु० ) जय, जीत ।

विजया तत्त्वं ( श्री० ) भाँग, छूटी, तिमि विशेष, कुशर गुक्का एकादशी, दुर्गा ।

विजाति तत्त्वं ( श्री० ) अस्य जाति, भिन्न जाति, दूसरी जाति ।

विज तत्त्वं ( पु० ) परिहृत, चतुर, प्रवीण, अभिन्न, ज्ञाता, बुद्धिमान्, विद्वाद् ।—ता ( श्री० ) परिहृताई, बुद्धिमान्, प्रवीणता, चतुरता ।

विज्ञान तत्त्वं ( पु० ) ज्ञिष्व और शास्त्र सम्बन्धी ज्ञान, संगणितिक ज्ञान ।

विज्ञापन तत्त्वं ( पु० ) जनाना, जताना, प्रार्थना, निवेदन, विनती ।—पत्र ( पु० ) प्रार्थना पत्र, निवेदन-पत्र ।

विटप तत्त्वं ( पु० ) वृष, पेड़, रुख, यथाः—  
गुरुकुयोगी उषां उरगारी ।  
मोह विटप नहिं सकल उभारी ॥

—रामायण ।

विडम्बना तत्त्वं ( श्री० ) दुलदायक, दुःख, तिरस्कार, अपमान, अनुकरण ।

विडम्बित तत्त्वं ( गु० ) अपमानित, निन्दित, तिरस्कृत ।

विडाल तत्त्वं ( पु० ) बिस्ली, माकौर, विमार ।

वितण्डा तत्त्वं ( श्री० ) मिथ्यावाद, वाक्प्रपञ्च, शास्त्रार्थ में दूरे का पल लपटन करने की रीति ।

वितरण तत्त्वं ( पु० ) दान, त्याग, बाँटना, पार होना ।

वितर्क तत्त्वं (५०) अनुमान, विचार, तर्क ।  
 वितर्क तत्त्वं (५०) पातास विधेय ।  
 वितस्ति तत्त्वं (स्त्री०) विलास, विलास ।  
 वितान तत्त्वं (५०) चाँदनी, चंदवा ।  
 वितृष्ण तत्त्वं (५०) तृष्णाहीन, निरुतृह, विराग,  
 वृष ।  
 वित्त तत्त्वं (५०) धन, संरय्यं, विभव ।  
 विथकना तत्त्वं (क्रि०) अथूरा पडा रहना, वन्व्या  
 रेना ।  
 विदग्ध तत्त्वं (५०) चतुर, प्रवीण, अनुभवी ।  
 विदा दे० (५०) जाने की अनुमति ।  
 विदाई दे० (स्त्री०) भेंट, सीमात ।  
 विदारण तत्त्वं (५०) फाड़न, चीरन, छेदन ।  
 विद्रिक तत्त्वं (स्त्री०) विद्रिशा, उपद्रिशा ।  
 विदित तत्त्वं (५०) ज्ञात, जाना हुआ, झूका, झुका ।  
 विद्रिशा तत्त्वं (स्त्री०) नगरी विधेय ।  
 विदीर्ण तत्त्वं (५०) चीपड, फाडा, चीरा ।  
 विदुर तत्त्वं (५०) कृष्ण द्वैपायन व्राम के औरस में  
 और विचित्र यौर्य की स्त्री अम्बिका की परिवारि-  
 का के गर्भ में ये उत्पन्न हुए थे । ये अन्धराज  
 धृतराष्ट्र के मन्त्री थे, परन्तु पाण्डवों का अधिक  
 पक्ष करते थे । ये न्यायपरायण और सत्यवादी थे ।  
 जिस समय दुर्योधन आदि दारणावत नगर में  
 पाण्डवों को भेज कर जनुगृह में उन लोगों को मारने  
 का विचार करते थे उस समय विदुर की ही कृपा  
 से पाण्डवों को रखा हुई थी । पाण्डवों के विवाह  
 के पश्चात् धृतराष्ट्र की आज्ञा से ये पाण्डवालराज्य में  
 गये थे, और वहाँ से पाण्डवों को निवा लाये थे ।  
 महाभारत युद्ध के समाप्त होने पर जब युधिष्ठिर  
 राजा हुए थे, तब १५ वर्ष तक विदुर उनके  
 साथ हस्तिनापुर में रहे थे । तदनन्तर धृतराष्ट्र के  
 माय धन गये और वहाँ इन्द्रजिनि योगवल से शरीर  
 छोड दिया । कहते हैं वे पूर्वजन्म में यम थे ।  
 परन्तु अग्निपारुष्य के शाप से शूद्र योनि में  
 उत्पन्न हुए थे ।

विदुला तत्त्वं ( स्त्री० ) श्रीवीरराज महिषी, ये श्री  
 महिला और श्रीरचना स्त्री थीं । इनके पति  
 मृत्यु के बाद सिन्धुराज ने इनके राज्य पर शास-  
 मण किया । प्रबल शत्रु के आक्रमण से इनका प-  
 सञ्जय पहले डर गया था । परन्तु पुनः माता  
 उत्साह वाक्यों से उत्तेजित होकर प्रबल श-  
 सिन्धुराज का उसने सामना किया और उन्हें ह-  
 कर अपने पिता का राज्य लिया ।

विदुपक तत्त्वं (५०) मसखरा, राजा, के साथ  
 वाला मुसाहब ।

विदेश तत्त्वं (५०) अन्य देश, भिन्न देश, अपने  
 से दूसरा देश ।

विदेशी तत्त्वं (५०) परदेशी, प्रवासी ।

विदेह तत्त्वं (५०) जनक मियिला का राजा ।

विद्यमान तत्त्वं (५०) वर्तमान, जोवित, सि-  
 सन्नित्त, उपस्थित ।

विद्या तत्त्वं (स्त्री०) ज्ञान, शास्त्र ज्ञान, पद्यार्थ ज्ञान  
 —धर (५०) देवयोगि विशेष ( ५० ) पवि-  
 —र्थी (५०) [विद्या + भर्ग्य] ब्राह्म, रि-  
 पडो वाला, पड़ेया ।—लय ( ५० ) [विद्य-  
 खानय] पाठशाला, पढ़ने का स्थान ।—  
 (५०) पण्डित, विद्वान् ।

विद्युत (स्त्री०) चपला, तडित, बिजुगी ।

विद्रुम तत्त्वं (५०) सूँगा, प्रवाल, रत्न विधेय ।

विद्रोह तत्त्वं (५०) विरोध, विद्रोह, वैर ।

विद्रोही तत्त्वं (५०) वैरो, शत्रु, अहित, श-  
 कारक ।

विद्वान् तत्त्वं (५०) विद्यावान्, पण्डित, पडा ।

विद्वेष तत्त्वं (५०) वैर, विरोध ।

विध तत्त्वं (स्त्री०) विधि, रीति, प्रकार, ढव, री-  
 विधवा तत्त्वं (स्त्री०) रपडा, रँड, पतिहीना

विधातव्य तत्त्वं (५०) विधेय, करने योग्य ।

विधाता तत्त्वं ( ५० ) ब्रह्मा, सृष्टिकर्ता,  
 कारक ।

विधान तत्त्वं ( पु० ) विधि, रीति, शास्त्रीकरीति,  
उपाय ।

विधायक तत्त्वं ( पु० ) विधान करने वाला, निर्णय  
करने वाला, मिहान्त करने वाला ।

विधि तत्त्वं ( श्री० ) ( संस्कृत में पुलिङ्ग ) उपवस्था,  
विधान, उपाय, उद्योग ।—यत् ( च० ) विधि  
पूर्वक, यथा योग्य ।

विधि तत्त्वं ( पु० ) गङ्गा, यन्त्र ।

विधिस्तु तत्त्वं ( पु० ) राहु ।

विधुर तत्त्वं ( पु० ) विक्रमता, कष्ट, कृष्टता, वैकल्प ।

विधुत तत्त्वं ( पु० ) कम्पित, कंपाया हुआ, हिलाया  
गया ।

विधेय तत्त्वं ( पु० ) विनय ग्राह्य, मानहार ।

विध्यंस तत्त्वं ( पु० ) नाश ।

विध्यंस्त तत्त्वं ( पु० ) नष्ट, विनष्ट ।

विद्यत तत्त्वं ( पु० ) नक्ष, प्रथम, देहा, मुक्ता ।

विद्यता तत्त्वं ( श्री० ) गच्छ की माता, महर्षि  
करपय की स्त्री ।

विद्यति ( ती ) तत्त्वं ( श्री० ) नयता, निवेदन, अनुनय,  
विनय ।

विनय तत्त्वं ( पु० ) विनतो, सिद्धता, सिद्धाचार,  
नयता ।

विनष्ट तत्त्वं ( पु० ) विगडा, विनाश प्राप्त ।

विनष्टर तत्त्वं ( पु० ) भंगुर, नाशी, नाश होने  
वाला ।

विना तत्त्वं ( च० ) छोड़कर, रहित, अतिरिक्त,  
भिन्न ।

विनायक तत्त्वं ( पु० ) गणेश, गजानन ।

विनाश तत्त्वं ( पु० ) अर्थ, नाश, संहार, मरण ।

विनाशित तत्त्वं ( पु० ) विध्वस्त, नष्ट, नष्ट किया  
हुआ ।

विनात तत्त्वं ( पु० ) पतन, विपद, अधःपात,  
विपाद ।

विनाय तत्त्वं ( पु० ) सेनदेन, बदला बदला,  
परिवर्तन ।

विनीत तत्त्वं ( पु० ) विनयी, नय, युगील ।

विनीतात्मा तत्त्वं ( पु० ) नय, युगील ।

विनेता तत्त्वं ( पु० ) शामक, शिथल, राता ।

विनोद तत्त्वं ( पु० ) कौमुक, खेल, हँसी, उद्या ।

विन्दु तत्त्वं ( पु० ) दूँद, अनुस्वार, गून्ध, कणा,  
कणिका ।

विन्ध्य तत्त्वं ( पु० ) पर्वत विन्ध्य ।—वासिनी  
( श्री० ) दुर्गा देवी, चण्डभुजा ।

विन्ध्याचल तत्त्वं ( पु० ) एक नगर का नाम,  
जहाँ विन्ध्यवासिनी देवी हैं ।

विद्य तत्त्वं ( पु० ) प्राप्त, ज्ञान, विदित ।

विन्यस्त तत्त्वं ( पु० ) स्थापित, यथाक्रम भूत, क्रम में  
रखा हुआ ।

विन्यास्त तत्त्वं ( पु० ) स्थापन, रचना, रखना ।

विपत्त तत्त्वं ( पु० ) गत्र, बैरो, द्वेषी ।

विपत्ति तत्त्वं ( श्री० ) आपद, विपदा, दुःख, दुर्गति ।

विपथ तत्त्वं ( पु० ) कुपय, कुमार्ग ।

विपद् तत्त्वं ( पु० ) आपदा, दुर्दशा, दुःख ।

विपरीत तत्त्वं ( पु० ) उलटा, वाम, विरोधी, शत्रु ।

विपर्यय तत्त्वं ( पु० ) विरोध, उलटा, हथर उधर,  
अस्त व्यस्त ।

विपर्यास तत्त्वं ( पु० ) विपरीत, विपर्यय ।

विपल तत्त्वं ( पु० ) लण, एक पलका घाठवाँ भाग ।

विपक्षित तत्त्वं ( पु० ) विद्वान्, दोषज्ञ, बुद्धिमान् ।

विप्राक तत्त्वं परिणाम, फल, कर्म भोग सिद्धि ।

विपिन तत्त्वं ( पु० ) अरण्य, जङ्गल, वन ।

विपुल तत्त्वं ( पु० ) प्रसुत, अधिक, बहुत, गम्भीर,  
बड़ा, विस्तृत ।

विप्र तत्त्वं ( पु० ) ब्राह्मण, द्विज, चोत्रिय ब्राह्मण,  
वेदज्ञ ब्राह्मण ।

विप्रलब्ध तत्त्वं ( पु० ) अज्ञान, प्रतारित, धोखा  
लाया हुआ ।

विभूष तत्त्वं ( पु० ) उपद्रव, हलचल ।

विफल तत्० (गु०) निष्फल, फल रहित, निरर्थक, बृथा, अकार्य ।

विभक्त तत्० (गु०) बटा हुआ पृथक् पृथक्, अलग अलग ।

विभक्ति तत्० (स्त्री०) अग्र, बाँट, टुकड़ा, प्रत्यय, कारकों के निन्द ।

विभव तत्० (गु०) सम्पत्ति, धन ऐश्वर्य, एक सम्बत्सर का नाम ।

विभाग तत्० (गु०) भाग, अंश, टुकड़ा, बाँट ।

विभाजक तत्० (गु०) अंशकर्ता, विभाजकर्ता, पृथक् करने वाला ।

विभाजित तत्० (गु०) अगित, अग्र किया हुआ, बाँटा हुआ ।

विभावना तत्० (स्त्री०) अर्थालङ्कार विशेष यथा—  
भयो काज विन हेनहूँ वरने ई जिहि ठैर ।  
तहँ विभावना होति है भापत कवि सिरमौर ॥  
उदाहरण ।

माहि तनै शिवराज की, सहज देख यह ऐन ।

अनरीकी दारिद हरे, अनखीकी अरिसेन ॥

—शिवराजभूषण ।

विभीषण तत्० (गु०) भयानक, भयङ्कर, विकराल, डरोना । (गु०) पङ्कापति, रावण का छोटा भाई जिसे रावण की मार कर रामचन्द्र ने लङ्का की राजगद्दी पर बैठाया था ।

विभीषिका तत्० (स्त्री०) भयप्रदर्शन, भय दिखाना, डर यताना ।

विभु तत्० (गु०) स्वामी, प्रभु, व्यापक ।

विभूति तत्० (स्त्री०) ऐश्वर्य, धन, मत्स्य, राज्य ।

विभूषण तत्० (गु०) अलङ्कार, गहना, शोभा ।

विभेद तत्० (गु०) विच्छेद, भिन्नता, पृथक्ता ।  
—क (गु०) विभाजक, विच्छेदक ।

विभ्रम तत्० (गु०) छिद्यो की स्वाभाविक चेष्टा विशेष, सम्भेद कटाक्ष, चक्षराहट, प्रियागमन से चक्षरा जाना ।

विमर्श, विमर्शन तत्० (गु०) विचार, अनुध्यान, परामर्श ।

विमल तत्० (गु०) मल रहित, निर्मल, स्वच्छ, साफ, सुधरा ।

विमाता तत्० (स्त्री०) दूसरी माता, धीतिकी मा ।

विमान तत्० (गु०) रथ, गाड़ी, देवयान विशेष, जे थाफान पय से चलता है । लोक विशेष, परिग्रह मार्ग ।

विमुक्त तत्० (गु०) छूटा हुआ, बन्धन रहित ।

वियुक्ति तत्० (स्त्री०) मोक्ष, छुटकारा उद्धार, मुक्ति ।

विमुख तत्० (गु०) विरोधी, पराङ्मुख, फिरा हुआ ।

विमूढ़ तत्० (गु०) अज्ञानी, अनभिन्न, अतिशय मूर्ख ।

विमोचन तत्० (गु०) [वि + मुच् + चनट्] मोचन, मुक्त करना, त्यागना ।

विम्वय तत्० (गु०) मच्छल, प्रतिविम्ब, छाया, प्रति, तस्योर, फल विशेष, कुन्दन का फल ।

विम्बिस्तार तत्० (गु०) मगह के प्राचीन राजा, जे युद्धदेव के समकालीन थे, और उन्हींसे रत्नोंके शैल धर्म की दोहा ग्रहण की थी । इनके पुत्र का नाम अजातशत्रु था ।

विम्बुक तद्० (गु०) लाल, भूका ।

वियोग तत्० (गु०) विच्छेद, विछोह, विछुडना, विरह ।

वियोगी तत्० (गु०) विरही ।

विरक्त तत्० (गु०) वैरागी, वासना शून्य, बीतराग, ससार विरागी ।

विरचित तत्० (गु०) बनाया हुआ, निर्मित, रचित रचा हुआ ।

विरञ्जि तत्० (गु०) ब्रह्मा, प्रजापति, विधाता ।

विरज तत्० (गु०) मोघरहित, अहङ्कार शून्य निरभिमान ।

विरत तत्० (गु०) निवृत्त, छोड़ा हुआ, विरक्त जिसेने छोड़ दिया है ।

विरति तत्० (स्त्री०) वैराग्य, त्याग, निस्पृहता ।

विराट् तत्० ( पु० ) बलान्, प्रशंसा, गुणगान ।  
 विरहित दे० ( पु० ) गुणगान करने वाला, भाट,  
 चारण, बन्दी ।  
 विरज तत्० ( पु० ) अनुपम, अनूठा, अनोखा ।  
 विरस तत्० ( पु० ) रस हीन, नीरस, निस्वादु, बिना  
 स्वाद का ।  
 विरह तत्० ( पु० ) वियोग, विद्वेह, बिछड़न ।  
 विराग तत्० ( पु० ) विरक्ति, संसार में आसक्ति का  
 त्याग, समता त्याग ।  
 विराज तत्० ( पु० ) अश्वि आदि पुरुष, विष्णु का  
 स्मृत रूप ।—मान ( पु० ) शोभायमान, सोहता  
 हुआ ।  
 विरज तत्० ( पु० ) रोग रहित, नीरोग ।  
 विराट् तत्० ( पु० ) चतुर्हशुभ्रन रूप परमात्मा की  
 प्रति । ( पु० ) विशाल, विस्तार, विकराल । ( पु० )  
 मत्स्य देश के राजा । इन्हींके यहाँ पाण्डवों ने  
 एक वर्ष छिप कर बिताया था । ये चतुस्र वेरवर्ष  
 सम्पन्न तथा यत्कियाली राजा थे । इनका बाला  
 सेनापति या और यह अत्यन्त बलवान् था ।  
 त्रिगर्भ देश के राजा सुशर्मा को पराजित कर  
 उसने उनके राज्य पर अपना अधिकार जमा  
 लिया था । सुशर्मा राज्यस्रष्ट होकर हस्तिनापुर  
 में दुर्योधन के यहाँ रहते थे । एक रात को भीम-  
 सेन ने मत्स्यपुत्र करके कीचक को मार डाला था  
 कीचक के मारे जाने की बात चारों ओर फैल गई ।  
 यह सुयोग समक कर सुशर्मा ने कौरवों की सहा-  
 यता से विराट् की दक्षिण गौशाला पर आक्रम-  
 ण किया । विराट् भी युद्ध करने के लिये गये,  
 परन्तु सुशर्मा ने इनकी सेना को हरा कर इन्हें  
 कैद कर लिया । अनन्तर युधिष्ठिर की आज्ञा से  
 भीमसेन ने विराट् की रक्षा को । कुछ दिनों के  
 बाद अगणित सेना और भीम कर्ण आदि सेना-  
 पतियों के साथ दुर्योधन ने विराट् की उत्तरे  
 गौशाला पर आवा किया । धर्जुन ने समस्त कु-  
 सेना के अङ्ग्रे लुड़ा दिये और गौशाला की रक्षा की ।  
 अज्ञानता की समाप्ति होने पर पाण्डवों का

विराट् से परिचय हुआ । विराट् ने अपनी कन्या  
 उत्तरा को धर्जुन के पुत्र अभिमन्यु से दिया दी ।  
 कुलदेव के युद्ध में विराट् पाण्डवों की ओर लड़ते  
 रहे, युद्ध के पन्द्रहवें दिन इनको द्रोण ने मार  
 डाला ।  
 विराध तत्० ( पु० ) राक्षस विशेष, वनवास के  
 समय यह राक्षस राम के द्वारा मारा गया ।  
 विराम तत्० ( पु० ) निवृत्ति, विघ्नान्, शान्ति,  
 विद्वान्ति, धन, अथयान, समाप्ति ।  
 विरुद्ध तत्० ( पु० ) विपरीति, वाम, शत्रु ।—ता  
 ( स्त्री० ) भगड़ा, गहुता, अहिताचरण, विपरीता-  
 चरण ।  
 विरूप तत्० ( पु० ) कुत्स, भौंडा ।  
 विरेक तत्० ( पु० ) रोग विशेष, अतीसार,  
 चेटोका ।  
 विरेचक तत्० ( पु० ) सारक, निकलने वाला, दस्ता-  
 यर औषध ।  
 विरेचन तत्० ( पु० ) मल निस्सारण, लुलाव ।  
 विरोध तत्० ( पु० ) द्वेष, शत्रुता, लड़ाई भगड़ा ।  
 —क ( पु० ) विवादी, घेरी, शत्रु ।  
 विरोधी तत्० ( पु० ) शत्रु, रिपु, शैरी ।  
 विल तत्० ( पु० ) विल, छिद्र, छेद, मॉद, गर्त ।  
 विलक्षण तत्० ( पु० ) अद्भुत, आश्चर्यमय, अनूप,  
 उत्तम, श्रेष्ठ, भना ।  
 विलगावना दे० ( वा० ) अलग करना, पृथक् करना,  
 भिन्न करना, अलगाना ।  
 विलपना दे० ( कि० ) रोना, विप्लाना, दुःख करने,  
 रोदन करना ।  
 विलपत दे० ( कि० ) रोते हुए, रोदन करते हुए ।  
 विलज्ज तत्० ( पु० ) निर्लज्ज, लज्जा रहित ।  
 विलम्ब तत्० ( पु० ) देर, अधिक समय ।  
 विलम्बना दे० ( वा० ) देर लगाना, अधिक समय  
 लगाना ।  
 विलय तत्० ( पु० ) नाश, नाश का नाश, प्रलय ।



विलाप तत्० ( पु० ) रोना, विलापना, विद्वान्, दुःख करना ।

विलास तत्० ( पु० ) खेल, क्रीडा, कौमुक, भोग, सुख, आनन्द ।

विलासी तत्० ( पु० ) भोगी, आनन्दी ।

विलीन तत्० ( पु० ) नष्ट, क्षुद्र ।

विलुप्त तत्० ( पु० ) चट्ट, नष्ट, गुप्त, नष्ट ।

विलोकन तत्० ( पु० ) दृष्टि, ताक, दर्शन, नेत्र, नयन, देखना ।

विलोकना दे० ( क्रि० ) देखना, ताकना, दर्शन करना ।

विलोचन तत्० ( पु० ) नेत्र, नयन, आँख, चक्षु ।

विलोप तत्० ( पु० ) चदर्यन, माय, ध्यस ।

विलोम तत्० ( पु० ) विपरीत, उलटा, चक्रम, नीचे से ऊपर ।

विलुघ तत्० ( पु० ) बेल का वृक्ष ।

विघर तत्० ( पु० ) छिद्र, खेद, बिल ।

विघरण तत्० ( पु० ) टीका, व्याख्या, विस्तृत व्याख्या, गुण कथन ।

विघर्ण तत्० ( पु० ) फिट्ट, सज्जित, पश्चात्ताप युक्त ।

विचश तत्० ( पु० ) चषस, पराधीन, अस्थिर ।

विचख तत्० ( पु० ) खल रहित, नग्न, नङ्गा ।

विचाद् तत्० ( पु० ) याद, काक् कलह, शास्त्रार्थ, भ्रगडा, कलह ।

विचादी तत्० ( पु० ) विधादकारक, वादी, मुद्दई ।

विचाह तत्० ( पु० ) व्याह, परिणय, पाणिग्रहण ।

विचाहित तत्० ( पु० ) व्याहा हुआ, कृतपरिणय, व्याहता ।

विचाहिता तत्० ( स्त्री० ) व्याही हुई, परिणीता ।

विविक तत्० ( पु० ) वृत्त, पवित्र एकान्त, निर्जन ।

विवृत्ति तत्० ( स्त्री० ) व्याख्या टीका, विवरण ।

विविध तत्० ( पु० ) नाना प्रकार, भौति भौति, अनेक प्रकार का ।

विवेक तत्० ( पु० ) विचार, निर्णयात्मिका, बुद्धि ।

विवेकी तत्० ( पु० ) न्यायकर्ता, विचारक, निष्पन्नकर्ता ।

विवेचक तत्० ( पु० ) निर्णयकर्ता, विचारकर्ता ।

विवेचना तत्० ( स्त्री० ) विचार, सत्य असत्य का ज्ञान ।

विशद तत्० ( पु० ) विस्तृत, विस्तारयुक्त, विष्टाल ।

विशाखदत्त तत्० ( पु० ) सस्त्रुन के एक नैतिक कवि, गुदा-राक्षस नामक नाटक इन्होंने बनाया है । संस्कृत-साहित्य में इस ग्रन्थ का बड़ा आदर है । मिस्टर तैलङ्ग कहते हैं कि इस ग्रन्थ का रचना काल ईसा की ७वीं सदी है ।

विशाखा तत्० ( पु० ) सोलहवाँ नक्षत्र ।

विशाल तत्० ( पु० ) विस्तृत, बड़ा, चौड़ा पृष्ठ ।

विशिष्ट तत्० ( पु० ) बाण, शर, तीर । ( पु० ) शिवा रहित, विना चोटी का ।

विशिष्ट तत्० ( पु० ) संयुक्त, जुटा, मिला ।

विशुद्ध तत्० ( पु० ) बहुत पवित्र, निर्मल, उज्वल, विमल ।

विशेष तत्० ( पु० ) प्रकार, भेद, आति, अधिक, मुख्य, प्रधान, खास ।—ण ( पु० ) गुण वाचक । जिस शब्द से विशेष्य मुख्य गुण आदि का बोध होता है ।—त् ( स्त्री० ) विशेष रूप से, अधिकता से खास कर ।—ता ( स्त्री० ) भेद भिन्नता, पृथकता, अधिकता, प्रधानता मुख्यता ।

विशेषोक्ति तत्० ( स्त्री० ) अलङ्कार विशेष ।

विशेष्य तत्० ( पु० ) प्रधान, मुख्य, दृश्य ।

विशोक तत्० ( पु० ) शोकरहित, विगन शोक ।

विश्रम्भ तत्० ( पु० ) विश्रवास, प्रत्यय, निश्चय ।

विश्रन्त तत्० ( पु० ) शक्ति, शका हुआ बैठा हुआ ।  
—घाट ( पु० ) यमुना जी के एक घाट का नाम, यह मथुरा में है ।

विश्राम तत्० ( पु० ) सुख, शकावट टूट करना, विराम करना ।

विश्लेष तत्० ( पु० ) विवेक विरह, विच्छेद, भेद, अलगवाय ।

विश्व तत्त्वं (५०) जगत्, संसार, देव-विशेष, इनके  
 अर्थ में विपद और बलि दी जाती है।—कर्मा  
 (५०) परमात्मा, शिल्पी विशेष।—नाथ ( ५० )  
 जगत् स्वामी, काशी के प्रधान देव, परमेश्वर।  
 विश्वम्भर तत्त्वं (५०) जगत् का पालनकर्ता, संसार-  
 रक्षक, विश्वेश्वर।  
 विश्वसनीय तत्त्वं ( ५० ) विरवास योग्य, विश्वास  
 का पात्र।  
 विश्वसित तत्त्वं ( ५० ) विश्वस्त, जिसका विश्वास  
 किया गया हो।  
 विश्वस्त तत्त्वं (५०) जातप्रत्यय, प्रतीति योग्य।  
 विश्वामित्र तत्त्वं (५०) [ विश्व + मित्र ] विषयात्,  
 महर्षि, ये रामवंश में उत्पन्न हुए थे। परन्तु  
 उन्होंने कठिन तपस्या और साधनों से महर्षि पद  
 पाया था।  
 विश्वास तत्त्वं ( ५० ) प्रत्यय, प्रतीति, धारणा,  
 भरोसा।—घातक ( ५० ) कपटी, धोखेवाज़,  
 ठग, धूर्त।—पात्र विश्वसनीय, विश्वास योग्य।  
 विश्व तत्त्वं ( ५० ) गरल, फागलूट, हवाहल, जहर,  
 माहुर।—घर (५०) सर्प, सौंप, मुकड़।  
 विश्वरूप तत्त्वं (५०) उदास, दुःखी।  
 विश्वम तत्त्वं ( ५० ) अयुग्म, अनमेल, असमान,  
 अतुल्य, बराबर नहीं, कठिन, कठोर, भयङ्कर।  
 —उच्चर (५०) उच्चर विशेष, एक प्रकार का ज्वर।  
 —ता ( श्री० ) कठिनता, कठोरता।—धातु  
 (५०) कामदेव, मदन, कन्दर्प।  
 विश्वेय तत्त्वं ( ५० ) यदार्थ, वस्तु, इन्द्रियार्थ-वस्तु,  
 भोग विलास, लिये, निमित्त, अर्थ, देय।  
 विश्वेयी तत्त्वं (५०) विलासी, भोगी, संसारी।  
 विश्वेयि तत्त्वं (५०) जाङ्गलिक, सपेरा, कालवैलिया,  
 सौंप का विश्व उतारने वाला।  
 विश्वेय तत्त्वं (५०) विश्व नाशक, विश्वघ्न।  
 विश्वेय तत्त्वं (५०) वींग, झूठ, हाथी का दाँत।  
 विश्वेय तत्त्वं (५०) शोक, दुःख कुंठ, वेद।

विषय, विषयतत्त्वं (५०) पृथिवी की मध्यरेखा,  
 मध्यरेखा।—रेखा ( श्री० ) धरती के बीच की  
 रेखा, मध्यरेखा, भूमध्यरेखा।  
 विष्टर तत्त्वं ( ५० ) चासन, कुच का चासन, वृद्ध  
 विशेष।  
 विष्टि तत्त्वं (श्री०) भद्रा, अशुभ समय।  
 विष्टा तत्त्वं (श्री०) मल, पुरीष, घृ।  
 विष्टु तत्त्वं (५०) परमेश्वर, परमात्मा, सृष्टिपालक,  
 देव विशेष।—पद (५०) आकाश, वैकुण्ठ।  
 —पदी (श्री०) गङ्गा, संक्रान्ति विशेष।  
 विसर्ग तत्त्वं (५०) स्वर के पीछे के दो चिन्तु (ः)।  
 विसर्जन तत्त्वं (५०) त्याग, छोड़ना, त्याग देना।  
 विसृचिका तत्त्वं (श्री०) रोग विशेष, महामारी,  
 डेङ्गा, कालरा।  
 विस्तार तत्त्वं ( ५० ) अधिक, विस्तृत, बड़ा हुआ,  
 विस्तारयुक्त।  
 विस्तार (५०) फैलाव, चौड़ाई, विद्यालया।  
 विस्तारित तत्त्वं (५०) फैलाया हुआ, बड़ाया हुआ।  
 विस्तीर्ण तत्त्वं ( ५० ) बड़ा, विस्तारयुक्त, फैला  
 हुआ, चौड़ा।  
 विस्तृत तत्त्वं (५०) विस्तीर्ण, विद्याल, बड़ा।  
 विस्फोट तत्त्वं ( ५० ) फोड़ा, घाघ, फुन्सी।—फ  
 (५०) शीतला, चैचक, तोही, गार्ड।  
 विस्मय तत्त्वं (५०) अचरन, अचम्भा, आश्चर्य।  
 विस्मरण तत्त्वं ( ५० ) भूलना, विस्मरना, विस्मित  
 होना।  
 विस्मित तत्त्वं ( ५० ) विस्मययुक्त, अचम्भित,  
 आश्चर्य।  
 विस्मृति तत्त्वं (श्री०) विस्मरण, भूल, विस्मरना।  
 विस्वाद तत्त्वं (५०) स्वादहीन, स्वादरहित।  
 विहङ्ग, विहङ्गम तत्त्वं (५०) पक्षी, पक्षी।  
 विहरण तत्त्वं ( ५० ) धमण, पर्यटन, घूमना, रास।  
 विहार तत्त्वं (५०) झोड़ा, खेल, लड़ने लड़कियों का  
 चापल में हाथ पकड़ कर घूमना।

उपासना स्थान, शीत मन्दिर, भारत का प्रान्त विशेष ।  
 विहित तत्० ( गु० ) कथित, उक्त, उचित, कर्तव्य, निर्णयित ।  
 विहीन तत्० ( गु० ) विना, रहित, शून्य ।  
 विह्वल तत्० ( गु० ) व्याकुल, घबराया हुआ, चञ्चल, उद्विग्न ।  
 वीक्षण तत्० ( पु० ) दर्शन, देखना, विलोकन ।  
 वीक्षित तत्० ( गु० ) दृष्ट, विलोकित ।  
 वीचि तत्० ( स्त्री० ) लहर, तरङ्ग ।  
 वीज तत्० ( पु० ) वीर्य, शरीरान्तर्गत सप्त धातुओं में से मुख्य धातु, शुक्र, मूल कारण, बीजा ।  
 —गणित ( पु० ) गणित का ग्रन्थ विशेष, अष्टयज्ञ गणित ।  
 वीणा तत्० ( स्त्री० ) याना विशेष, जिसे नारद और सरस्वती आदि बजाते हैं ।  
 वीत तत्० ( गु० ) अयोग्य, गत, उपतीत, समाप्त, बीता हुआ ।—दृष्ट्य ( पु० ) दृष्ट राज्य के अधिपति । इन्होंने वाराणसी के राजा दिवोदास को जीत कर काशी को अपने अधिकार में कर लिया था उसी, परन्तु दिवोदास के पुत्र ने इन्हें जीत कर अपनी राजधानी लौटा ली थी । वीतह्वय ने प्राण धराने की दृष्ट्या से भरद्वाज मुनि के आश्रम में आश्रय लिया ।  
 वीधि तत्० ( स्त्री० ) गली, गैल, प्रतीकी ।  
 वीप्सा तत्० ( स्त्री० ) अधिकता, व्यापकता ।  
 वीर तत्० ( पु० ) बलवान्, योद्धा, काठ्य का रस ।  
 —प्रसू ( स्त्री० ) वीर जननी, वीर माता ।—ता ( स्त्री० ) शूरता, वीरत्व ।—भद्र ( पु० ) महादेव का प्रिय अशुभर, इन्होंने दक्ष यज्ञ का नाश किया था । पति की निन्दा न सह कर सभी का प्राणत्याग करने का संवाद जब महादेव ने सुना तब क्रोध से अधीर हो कर उन्होंने अपनी जटा भूमि पर पटक दी, उसीसे वीरभद्र उत्पन्न हुआ था ।

वीर्य तत्० ( पु० ) वीर्य, बल, शक्ति ।—वृक्ष ( पु० ) पराक्रमी, बलवान्, बलशाली ।  
 वृक्ष तत्० ( पु० ) मेडिया द्वारा अग्नि विशेष भीम के अठराग्निका नाम ।  
 वृषोदर तत्० ( पु० ) [ वृक्ष + उदर ] जिसके उदर में वृक्ष नामक अग्नि थी । भीम, भीमसेन ।  
 वृक्षात्त ( पु० ) पेड़, रुख, तह, तहशर, तरहर ।  
 वृत्त तत्० ( पु० ) घेरा, मण्डल, मण्डलाकार, गोल ।  
 वृत्तान्त तत्० ( पु० ) बात, समाचार, हाल, बातें ।  
 वृत्ति तत्० ( स्त्री० ) लीचिका, जीवतोषाय, उपश्रया ।  
 वृत्रासुर तत् ( पु० ) [ वृत्र + असुर ] राक्षस विशेष, जिसको इन्द्र ने मारा था ।  
 वृषा तत्० ( स्त्री० ) अन्तर्धक, निष्प्रयोजन ।  
 वृद्ध तत्० ( पु० ) प्रदा । पुराना, प्राचीन, जीर्ण ।  
 वृद्धा तत्० ( स्त्री० ) बुढ़िया, बुढ़ी ।  
 वृद्धि तत्० ( स्त्री० ) साम, बढ़ती, उन्नति ।  
 वृन्द तत्० ( पु० ) समूह, प्राणियों का दल, हृष, जया ।  
 वृन्दारक तत्० ( पु० ) देवता, अमर, देव ।  
 वृन्दावन तत्० ( पु० ) मथुरा के पास का एक वन जहाँ कृष्ण रहते थे ।  
 वृश्चिक तत्० ( पु० ) धीरे, आठवीं राशि ।  
 वृष तत्० बैल वृषभ, वर्ध, धर्म ।—केतु ( पु० ) शिव, महादेव ।  
 वृषण तत्० ( पु० ) अष्टकोश, फोता, अशर ।  
 वृषभ तत्० ( पु० ) बैल, वर्धा, वृष ।  
 वृषल तत्० ( पु० ) जाति विशेष, गुर्र जानि । चन्द्र-गुप्त राजा ।  
 वृषाकपि तत्० ( पु० ) धर्म को न कमाने वाला, महादेव, विष्णु ।  
 वृषोत्सर्ग तत्० ( पु० ) आहुत का अङ्ग विशेष, सौंदाग कर शोडना ।  
 वृष्टि तत्० ( स्त्री० ) वर्षा, मँह, मेघ, आरिष, बरसात ।

वृहत् तत्० (गु०) बड़ा, विशाल, विस्तृत ।  
 वेप तत्० (पु०) शीघ्रता, रय, प्रवाह, धारा ।  
 वेणी तत्० शीघ्रगामी, वेग वाला ।  
 वेणी तत्० (स्त्री०) वेदी, नदियों का मङ्गल ।  
 वेणु तत्० (पु०) बौम ।  
 वेतन तत् (पु०) मासिक आय, महीना की मङ्गली ।  
 वेताल तत्० (पु०) भूत विशेष, प्रेत ।  
 वेत्ता तत्० (पु०) जानने वाला, ज्ञाता, वेदी ।  
 वेध तत्० (पु०) घँत का वृक्ष, छड़ी, धातुक ।  
 वेद तत्० (पु०) हिन्दुओं का धर्म ग्रन्थ, वेद चार हैं, यजु, साम, ऋक् और अथर्व । ज्ञान, उपासना और कर्म भेद में इनके तीन काण्ड हैं ।—यर्म (पु०) ब्रह्मा, ब्राह्मण ।  
 वेदना तत्० (स्त्री०) पीड़ा, दुःख, यातना, क्रोध ।  
 वेदाङ्ग तत्० (पु०) वेद के अङ्ग, वेद ज्ञान प्राप्त करने के उपयोगी शास्त्र । गित्ता, कल्प, व्याकरण, ज्योतिष, ह्यन्द और निहक ये छः वेदाङ्ग हैं ।  
 वेदान्त तत्० (पु०) वेद का भाग विशेष, उपनिषद्, उपनिषद् का विचार करने वाला दर्शन ।  
 वेदिका तत्० (स्त्री०) वेदी, होम करने का चौतरा ।  
 वेदी तत्० (स्त्री०) वेदिका, स्वरिहल, हवन स्थान ।  
 वेला तत्० (स्त्री०) समय, काल ।  
 वेश तत्० (पु०) आकर, परिच्छद, घनावट, योभा ।  
 वेशर दे० (पु०) भ्रमण विशेष, नाक का गहना ।  
 वेत्या तत्० (स्त्री०) पशुधिया, गणिका, बार खी, थाराङ्गना ।  
 वेन तत्० (पु०) बैठन, लपेटन ।  
 वेत्ता दे० (स्त्री०) खीलना, उधेड़ना, काड़ना, काटना ।  
 वेत्ता दे० (पु०) अपराध, दोषहर के बाद का समय, चौथा पहर ।  
 वेष्ट तत्० (पु०) लोक विशेष, विष्णु का धाम ।

वैखानस तत्० (पु०) यमी विशेष, वानप्रस्थाधमी, ऋद्धि मिश्रक ।  
 वैतरणी तत्० (स्त्री०) नरक की एक नदी का नाम ।  
 वैदिक तत्० (पु०) वेदपाठी, वेद पढ़नेवाला । (गु०) वेदोक्त, वेद कथित, वेद में कही बातें, जो बात वेद में लिखी हो या उससे विरुद्ध न हो ।  
 वैदेही तत्० (स्त्री०) जानकी, सोता ।  
 वैद्य तत्० (पु०) चिकित्सक, वैद्यकशास्त्रवेत्ता ।  
 - नाथ (पु०) शिव, दिव्योदास, धम्मन्तरि, चैत्रनाथ, त्रिनका मन्दिर भाइखण्ड में है ।  
 वैद्यक तत्० (पु०) चिकित्सा शास्त्र, चातुर्वेद ।  
 वैनतीय तत्० (पु०) गरुड़, पक्षिराज, विनतापुत्र ।  
 वैमय तत्० (पु०) संशय, सम्पत्ति, धन, सम्पदा ।  
 वैमनस्य तत्० (पु०) भोती द्वेष, मनमुटाव ।  
 वैयाकरण तत्० (पु०) व्याकरण पढ़ने वाला या उसका ज्ञाता । इसके अर्थ में व्याकरणो शब्द का प्रयोग करना अशुद्ध है ।  
 वैर तत्० (पु०) द्वेष, शत्रुता, विरोध ।  
 वैरागी तत्० (पु०) विरक्त, वीतराग, संसारत्यागी, निस्पृह ।  
 वैराग्य तत्० (पु०) विषय त्याग, विषय उदासीनता, निस्पृहता ।  
 वैरी तत्० (पु०) शत्रु, रिपु, विरोधी, अरि, द्वेषी ।  
 वैशाख तत्० (पु०) महीना का नाम, जिस महीने में विशाखा नक्षत्र में चन्द्रम पूर्ण हो ।  
 वैश्य तत्० (पु०) वर्ण विशेष, तीसरा वर्ण बनिवा, महाजन आदि ।  
 वैष्णव तत्० (पु०) विष्णुभक्त, विष्णु के उपासक, विष्णु उपासक सम्प्रदाय ।  
 वैसा दे० (सर्ग) उसके समान, उसके चेता, उसके रूप ।  
 वैसे दे० (गु०) बिना मूष्य, सँतमेंत ।  
 वील दे० (पु०) गौड़, गुग्गुल, धूप विशेष ।  
 व्यक्त तत्० (गु०) स्पष्ट, प्रकाशित, दर्शन योग्य ।

- व्यक्ति तत्० (स्त्री०) एक मनुष्य, एकाकी, एक वस्तु, जन, मनुष्य ।
- व्यग्र तत्० (गु०) व्याकुल, उद्विग्न, विकल ।
- व्यङ्ग तत्० (गु०) अङ्गहीन, विकलाङ्ग ।
- व्यजन तत् (पु०) पढ़ा, बेना, बेनिया ।
- व्यञ्जक तत्० (पु०) प्रकाशक, भावबोधक, शब्द, जिनसे अर्थ प्रकाशित होते हैं ।
- व्यञ्जन तत्० (पु०) तरकारी, साग, वर्ष, शर, खरहीन वर्ष, क से ह तक वर्ष ।
- व्यञ्जना तत्० (स्त्री०) शब्द शक्ति, जिससे अर्थों का बोध होता है ।
- व्यतिक्रम तत्० (पु०) डौकना, लाहुना, विलोम, विपर्यय ।
- व्यतिरिक्त तत्० (गु०) अन्य, भिन्न ।
- व्यतिरेक तत्० (पु०) भेद, अलग, भिन्नता ।
- व्यतीत तत्० (गु०) गत, बीता, गया बीता ।
- व्यतीपात तत्० (पु०) योग विशेष, सतरहवों योग ।
- व्यत्यय तत्० (पु०) अतिक्रम, लङ्घन, डाकना ।
- व्यथा तत्० (स्त्री०) पीडा, दुःख, वेदना, क्लेश, कष्ट ।
- व्यथित तत्० (गु०) पीडित, दुःखित, क्लेश ग्रस्त, कष्ट पतित ।
- व्ययदेश तत् (पु०) यद्दाना, व्याज, कैतव ।
- व्यभिचार तत्० (पु०) परस्त्री वा परपुरुष सहम, निन्दित कर्म, न्याय का एक दोष ।
- व्यभिचारिणी तत्० (स्त्री०) दुष्टा स्त्री, कुलटा, नष्ट चरित्रा ।
- व्यभिचारी तत्० (पु०) लम्पट, कुमार्गी ।
- व्यय तत्० (पु०) खर्च, लागत, छय, नाश ।
- व्यर्थ तत्० (गु०) मृषा, निरर्थक, निकम्मा, बिना काम का, निष्फल ।
- व्यचकलन तत्० (पु०) गणित विशेष, घटाना, घाकी निकालना ।
- व्यचच्छेद तत्० (पु०) भेद, भिन्नता, अलगाव, पृथक्ता ।
- व्यवधान तत्० (पु०) अन्तर, दूरी, दो पदार्थों के बीच का अन्तर ।
- व्यवसाय तत्० (पु०) व्यवहार, लेनदेन, उद्योग, रोजगार ।
- व्यवस्था तत्० (स्त्री०) उपाय, प्रक्रिया, रीति, धर्म निर्णय ।
- व्यवस्थित तत्० (गु०) अचल अटल, निश्चित ।
- व्यवहार तत्० (पु०) उद्यम, धन्या, काम, रोजगार ।
- व्यवहरिया दे० (पु०) व्यवहार करने वाला, महाजन, शूणदाता ।
- व्यवहित तत्० (गु०) व्यवधान प्राप्त, अन्तर, अन्तरालयुक्त ।
- व्यसन तत्० (पु०) आसक्ति, आभ्यास, छोटी आदत ।
- व्यस्त तत्० (गु०) व्याकुल, उद्विग्न ।
- व्याकरण तत्० (पु०) शास्त्र विशेष, भाषा का नियमित करने वाला शास्त्र, शब्द शास्त्र ।
- व्याकुल तत्० (गु०) चबड़ाया हुआ, उद्विग्न, व्यथ, हस्त ।
- व्यारया तत्० (स्त्री०) धर्षन, टीका, विवृति ।
- व्याख्यान तत्० (पु०) उपदेश, यकृता ।
- व्याघात तत्० (पु०) बाघ, फकावट, रोक, अटकाव ।
- व्याघ्र तत्० (पु०) बाघ, शेर, नाहर, चीता ।
- व्याज तत्० (पु०) यद्दाना, मिय, छल, कपट, कैतव (दे०) सुद, लाभ ।
- व्याज दे० (पु०) व्याज के लिये जो ऋण दिया जाता है । सुद पाने के लिये ऋण ।
- व्याध तत्० (पु०) अहेरिया, शिकारी, बहेलिया ।
- व्याधि तत्० (स्त्री०) व्यापारी, रोग, पीडा, दुःख, क्लेश ।
- व्यान तत्० (पु०) प्र ण विशेष ।
- व्यापक तत्० विघ्न, सर्वत्र, विस्तृत ।—ता (स्त्री०) विभुता, कैलाष ।
- व्यापना दे० (क्रि०) कैलना, सर्वत्र पार जाना ।
- व्यापार तत्० (पु०) रोजगार, कामधन्य व्यवसाय ।

व्यापी तत्त्वं (५०) व्यापक, विष्णु, सर्वगत ।  
 व्याप्त तत्त्वं (५०) विस्तृत, फैला हुआ ।  
 व्याप्ति तत्त्वं (श्री०) विस्तार, फैलाव, व्याप मात्र ने  
 बहुमान का कारण ।  
 व्यामोह तत्त्वं (५०) पद्मनाभ, अनुशय, पीडा,  
 दुःख ।  
 व्यायाम तत्त्वं (५०) कसरत, शारीरिक श्रम ।  
 व्याल तत्त्वं (५०) सौंघ, भय, अहि, भुजङ्ग ।  
 व्यास तत्त्वं (५०) महर्षि विशेष, पुराणकर्ता, पुराण-  
 कथक ।  
 व्याहृति तत्त्वं (श्री०) वैदिक मन्त्र विशेष, जिससे  
 प्राणायाम किया जाता है ।  
 व्युत्क्रम तत्त्वं (५०) उलटा पलटा, क्रमरहित ।

व्युत्पत्ति तत्त्वं (श्री०) शास्त्रीय ज्ञान में अग्निविद्ये,  
 बोध ।  
 व्युत्पन्न तत्त्वं (५०) शास्त्र में प्रचीन ।  
 व्यूह तत्त्वं (५०) सेना की रचना विशेष, समूह,  
 राशि ।  
 ज्योम तत्त्वं (५०) आकाश, गगन, अन्तरिक्ष ।  
 —याम (५०) विमान ।  
 प्रण तत्त्वं (५०) घाव, पीडा, फुंसो, छत ।  
 प्रत तत्त्वं (५०) पुण्य तिथि का उपवास, अनुष्ठान ।  
 प्रात तत्त्वं (५०) समूह, घूँघ, दल ।  
 प्रात्य तत्त्वं (५०) पतित, सस्कारहीन ।  
 प्रीडा तत्त्वं (श्री०) लज्जा, शत्रु ।  
 प्रीहि तत्त्वं (श्री०) धान्य विशेष, छोटे छोटे धान ।

श

श—व्यञ्जन का तीसरा वर्ण, इसका उच्चारण स्वान  
 तासु होने के कारण इसे तालव्य कहते हैं ।  
 श तत्त्वं (५०) कन्याण, मङ्गल ।  
 शंयु तत्त्वं (५०) प्रसन्न, हर्षित, आनन्दित ।  
 शंघ तत्त्वं (५०) मुकुतो, पुण्यात्मा, धर्मो ।  
 शंशूर तत्त्वं (५०) जल, शङ्ख, मायाकी राजस विशेष ।  
 शंशूल विद्या का यह एक आचार्य हो गया है ।  
 शतपथ इस विद्या का दूसरा नाम शौंशरी भी  
 पड़ा है ।  
 शंसा तत्त्वं (श्री०) चाहना, चाह, अभिलाष, उत्सु-  
 कता, उत्कट अभिलाष ।  
 शंसित तत्त्वं (५०) उत्क, कथित, प्रोक्त, निश्चित,  
 स्तुत ।  
 शंस्य तत्त्वं (५०) स्तुत्य, प्रशंसनीय, प्रशंसा के योग्य ।  
 शंक तत्त्वं (५०) द्वेष विशेष, एक जाति विशेष,  
 जिसका विजय राजा विक्रमादित्य ने किया था ।  
 राजा शालिवाहन का चलाया संवत् ।  
 शंकट तत्त्वं (५०) रथ, गाड़ो, बैलगाड़ी, लकड़ा ।  
 शंकटासुर तत्त्वं (५०) दानव विशेष, कंस ने श्री-  
 कृष्ण को मारने के लिये इसको भेजा था । इसने

शंकट का छप धारण करके श्रीकृष्ण को मारने का  
 उद्योग किया था परन्तु स्वयं मारा गया ।  
 शकाब्द तत्त्वं (५०) शालिवाहन प्रथम त, संवत् ।  
 शकारि तत्त्वं (५०) राजाशा विक्रमादित्य ।  
 शकून तत्त्वं (५०) शगुन, शुभ सुख चिन्ह, मङ्गल-  
 गान, पक्षी विशेष ।  
 शकुनी तत्त्वं (५०) गान्धार राजा सुयल का पुत्र,  
 चौर दुर्वेधन का मामा ।  
 शकुन्तला तत्त्वं (श्री०) विद्यात चौरवर्धशी राजा  
 दुष्यन्त की महारानी, महर्षि विश्वामित्र के  
 चौरस चौर मेनका नामक अंधरा के गर्भ से ये  
 उत्पन्न हुई थी, महर्षि कश्यप ने इसे पाला पोसा  
 था । ग्रन्थ विशेष, विद्यात कवि कालिदास  
 निर्मित एक नाटक ।  
 शक तत्त्वं (५०) समर्थ, शक्तिमान्, कठीर, बलवान्,  
 दृढ, पुष्ट ।  
 शक्ति तत्त्वं (श्री०) बल, पुरुषार्थ, सामर्थ्य, पराक्रम,  
 शस्त्र विशेष, माला, बर्हो, इन्द्राणी, वैष्णवी आदि  
 श्राद्धः शक्तिर्वा । शक्ति का ज्येष्ठ पुत्र ।—मान्  
 (५०) पुरुषार्थो, पराक्रमो ।

शक्य तत्० ( पु० ) सम्पादन होने योग्य, सिद्ध होने के उपयुक्त ।

शङ्कर तत्० ( पु० ) शिव, शम्भु, महादेव । ( गु० ) गुप्त कर, कल्याणकर मङ्गलप्रद ।

शङ्करा तत्० ( स्त्री० ) रागिणी विशेष ।

शङ्का तत्० ( स्त्री० ) त्रास, डर, भय ।

शङ्कित तत्० ( गु० ) डरा हुआ, भयभीत, डरपोकना ।

शङ्कु तत्० ( पु० ) कीला, खूँटा, बर्छी ।

शङ्ख तत्० ( पु० ) स्वनाम प्रसिद्ध वाद्य विशेष ।

शङ्खिनी तत्० ( स्त्री० ) एक प्रकार की स्त्री ।

शठ तत्० ( पु० ) धूर्त, ठग, कपटी, वञ्चक ।—ता ( स्त्री० ) धूर्तता, ठगई ।

शण्य तत्० ( पु० ) शन, पाठ, तृण विशेष, जिसके झाल की रस्सी बनायी जाती है ।

शण्ड तत्० ( पु० ) बैल, सौंड ।

शत तत्० ( पु० ) सौ सख्या, १०० ।—शः शसख्यात, शैकडों ।

शतभि तत्० ( स्त्री० ) नक्षत्र का नाम, चौबीसवाँ नक्षत्र ।

शतभूली तत्० ( स्त्री० ) जता विशेष ।

शत्रु तत्० ( पु० ) द्वेषी, शैरी, रिपु, शरि ।—ता ( स्त्री० ) दुष्टता, रिपुता ।

शनि तत्० ( पु० ) सप्तम ग्रह, सूर्य पुत्र, धनीश्वर ।  
—चार ( पु० ) सातवाँ दिन ।

शनैः शनैः तत्० ( ष० ) हौले हौले, धीरे धीरे ।

शनैश्चर तत्० ( पु० ) शनिग्रह ।

शपथ तत्० ( पु० ) सौगन्ध, सौंह, किरिया ।

शप्पा तत्० ( पु० ) चाँद, चन्द्रमा, बोका, भार ।

शब्द तत्० ( पु० ) श्रुति, निनाद, बोली ।

शम तत्० ( पु० ) शान्ति, निग्रह, इन्द्रिय वशीकार ।

शमन तत्० ( पु० ) यम, यमराज, शान्ति ।

शमी तत्० ( स्त्री० ) वृक्ष विशेष, अग्नि गर्भ वृक्ष ।

शम्बुक तत्० ( पु० ) छीप, घोंघा, शूद्र नपस्वी ।

शयन तत्० ( पु० ) नींद निद्रा, पलंग ।

शय्या तत्० ( स्त्री० ) सेज, पलंग बिछौना, खाट ।

शर तत्० ( पु० ) बाण, तीर, सरकखा, शक्य विशेष ।

शरट तत्० ( पु० ) कुकलास, गिरगिट ।

शरण तत्० ( पु० ) रक्षा उद्धार, घर, मकान ।

शरणागत तत्० ( गु० ) आश्रित, शरणार्थी रक्षा के लिये आगत ।

शरव्य तत्० ( गु० ) शरण के योग्य, शरणदाता ।

शरद तत्० ( स्त्री० ) एक ऋतु, कुशाँद और कार्तिक महीना ।

शरार्टा दे० ( पु० ) शब्द विशेष, धडाके का शब्द ।

शरावीर दे० ( गु० ) सना हुआ, भीगा हुआ, चात्र, नराशेर ।

शराघ तत्० ( पु० ) पुरवा, सकेरा, मिट्टी का पात्र विशेष, मदिरा ।

शरासन तत्० ( पु० ) धनुष, धनुषा ।

शरीर तत्० ( पु० ) काय, देह, शङ्क, गात्र ।

शरीरी तत्० ( पु० ) शरीरधारी पुरुष ।

शर्करा तत्० ( स्त्री० ) चीनी, खीर ।

शर्म्मा तत्० ( पु० ) ब्राह्मणों का उपपद ।

शर्वरी तत्० ( स्त्री० ) रात्रि, रजनी, रात, निर्शा, दामिनी ।

शलभ तत्० ( पु० ) कीट, पतङ्ग, कीडा, मकोडा ।

शलाका तत्० ( स्त्री० ) सलाई, कूँचो, लूली ।

शलीता दे० ( पु० ) बैला, बेरा ।

शलुका दे० ( स्त्री० ) पहिरन विशेष, एक प्रकार के पहनने के कपड़े का नाम ।

शल्य तत्० ( पु० ) बाण, शाल मद्रदेश के राजा, ये युधिष्ठिर के मामा थे । महाभारत युद्ध में ये कर्ण के सारथी बन थे ।

शय तत्० ( पु० ) प्राण होने शरीर, मुर्दा ।

शवर तत्० ( पु० ) जङ्गली जाति विशेष, भीम, पुलिन्द ।

शशक तत्० ( पु० ) ससा, खरहा, खरगोश ।

शशि तत्० ( पु० ) चन्द्रमा; विशु, शशि ।

शस्त्र तत्त्वं (५०) शस्त्र, हथियार ।  
 शस्त्र तत्त्वं (५०) धान्य, धाने, शस्त्र के पीछे ।  
 शक तत्त्वं (५०) साग, भाजी ।  
 शाकल तद्गुण (५०) हवन सामग्री, होम की वस्तु ।  
 शाकल तत्त्वं (५०) शक्ति का उपासक सम्प्रदाय विशेष ।  
 शाशा तत्त्वं (खी०) डाल, टहनी ।—मृग (५०)  
 शानर, कीश ।  
 शारंगी तत्त्वं (५०) वृक्ष, कृष्ण, पेड़, तड ।  
 शारिका तत्त्वं (खी०) साड़ी, छिपों के पहनने का  
 कपड़ा ।  
 शास्त्र तत्त्वं (५०) शठता, ठगई, धूर्तता ।  
 शाप तत्त्वं (५०) एक प्रकार का पत्थर जिस पर  
 हथियार तेज किये जाते हैं ।  
 शान्त तत्त्वं (५०) स्थिर, अचरुद्ध, अचञ्चल ।  
 शान्ति तत्त्वं (खी०) गम, स्थिरता, चैन, ठपटाई ।  
 शाप तत्त्वं (५०) सराप, धिक्कार, अशुभ विन्तन ।  
 शापी लगाना दे० (घा०) तेज करना, धार चढ़ाना ।  
 शापूक तद्गुण (५०) शम्पूक, घोंघा, सीप ।  
 शापूरी तत्त्वं (खी०) माया, इन्द्रजाल विद्या ।  
 शास्त्र तत्त्वं (५०) शिवोपासक, शैव ।  
 शास्त्र तत्त्वं (५०) विशिष्ट, तीर, वाण ।  
 शास्त्र दे० (५०) कवि ।  
 शास्त्र तत्त्वं (५०) पक्षि विशेष, वाघ, व्याघ्र ।  
 शास्त्र तत्त्वं (५०) कौंटा, कील, मन्थ्य विशेष, वृक्ष  
 विशेष, पर्वत विशेष ।—ग्राम (५०) भगवत्  
 प्रति विशेष ।  
 शास्त्र तत्त्वं (खी०) गृह, मकान, आलय ।  
 शास्त्र तत्त्वं (५०) धान, चावल ।  
 शास्त्रिणी तत्त्वं (खी०) वृक्ष विशेष, सेमल का वृक्ष ।  
 शास्त्र तत्त्वं (५०) मन्त्र शास्त्र विशेष, एक पशु का  
 नाम ।  
 शासन तत्त्वं (५०) पालन, चपलाधका दण्ड ।—पत्र  
 (५०) डुकुम नामा ।  
 शासनोप तत्त्वं (५०) शासन करने योग्य, दण्डनीय ।  
 शास्त्र तत्त्वं (५०) त्रिकला शासन किया जाय ।

शास्त्रि तत्त्वं (५०) शासन, सीख, शिक्षा, राजाज्ञा ।  
 शास्त्र तत्त्वं (५०) नहीं जाने हुए ज्ञान को बताने वाले  
 शास्त्र, विद्या ।—ज्ञ (५०) शास्त्र जानने वाला ।  
 शास्त्रार्थ तत्त्वं (५०) शास्त्र सम्बन्धी विशद, शास्त्र  
 चर्चा ।  
 शास्त्री तत्त्वं (५०) शास्त्रज्ञ, शास्त्र वेत्ता ।  
 शास्त्रीय तत्त्वं (५०) शास्त्र सम्बन्धी, शास्त्र सम्मत ।  
 शिक्क तत्त्वं (५०) सिकहर, सीका ।  
 शिक्क तत्त्वं (५०) सिलाने वाला, चप्यापक, विद्या  
 दाता ।  
 शिक्का तत्त्वं (खी०) सीख, सिखाई, उपदेश ।—पत्र  
 (५०) वसीयत नामा ।  
 शिक्कित तत्त्वं (५०) सीखा हुआ सिलाया गया,  
 निगुण, अभिन्न ।  
 शिखर तत्त्वं (५०) शिखा, चोटी, गूढ़ पर्वत के  
 ऊपर का भाग ।  
 शिखा तत्त्वं (खी०) चोटी, हिन्दू लोग सिर के बीच  
 में कुछ बाल रखे होते हैं जो उनकी धार्मिक  
 शक्ति में उपयोगी समझी जाती है । यवाना, अग्नि  
 की उभाला ।  
 शिखी तत्त्वं (५०) शिखा विशिष्ट, शिखायुक्त । (५०)  
 मेर, मयूर, अग्नि, एक पेड़ का नाम ।  
 शिखिल तत्त्वं (५०) ढोला, आलसी, मन्द, धीमा,  
 चट्ट ।—ता (खी०) आलस्य, दीलायन ।  
 शिख तत्त्वं (५०) गिर, मस्तक, भाग, कपाल, कपार ।  
 —धरा (५०) जिम्मेदार ।  
 शिरा तत्त्वं (५०) नाड़ी, नम, धमनी ।  
 शिरोमखि तत्त्वं (५०) गहना विशेष, सिर का एक  
 आभूषण । (५०) उत्तम, अष्ट, शक से बड़ा, सर्वोत्तम ।  
 शिरोरुह तत्त्वं (५०) वाण, केश ।  
 शिला तत्त्वं (खी०) सिल, चट्टान, पत्थर ।—जित  
 शिला रस, शैवज, पर्वतों से उत्पन्न होने वाला  
 द्रव्य विशेष, जो दवा के काम में आता है ।



शिल्प तत्त्वं ( पु० ) काणकार्य, कारीगरी, चित्र, व्यवसाय, गुन, हुनर ।—कार ( पु० ) शिल्पी, चित्रकार, चितेरा, कारीगर ।—शाला ( स्त्री० ) कारखाना ।

शिव तत्त्वं ( पु० ) महादेव, महेश, महल, गुम, कल्याण ।—पुरी ( स्त्री० ) काशी, वाराणसी ।—रात्री ( स्त्री० ) व्रत विशेष ।—सेनानी ( पु० ) कार्तिकेय ।

शिवा तत्त्वं ( स्त्री० ) पार्यतो, दुर्गा, उमा ।

शिवालय तत्त्वं ( पु० ) शिव मन्दिर, शिव का स्थान ।

शिवाल्ला तत्त्वं ( पु० ) शिवालय, शिवमन्दिर ।

शिवि तत्त्वं ( पु० ) राजा उशीनर का पुत्र, ये राजा ययाति के दौहित्र थे ।

शिविका तत्त्वं ( स्त्री० ) पालकी, होली ।

शिविर तत्त्वं ( पु० ) छावना, पढाय, सेना सन्निवेश सेना के रहने का स्थान ।

शिशिर तत्त्वं ( पु० ) ऋतु विशेष, जाड़ा, पाला, हिम, सर्दी, माघ, और फागुन इन दो महीनों को शिशिर ऋतु कहते हैं ।

शिशु तत्त्वं ( पु० ) बालक, बाल, बच्चा ।—पाल ( पु० ) चेदि देश का राजा, यह चेदिराज दमघोष का पुत्र था । यह श्रीकृष्ण की बुद्धा का राठका था इसके छोटे भाई का नाम दन्तवक्र था । शिशु-पाल की मत्ता सुभमा को यह मानस ले गया था कि शिशुपाल को श्रीकृष्ण मारेगे । इसलिये उन्होंने श्रीकृष्ण को शिशुपाल के एकसाँ अघराध बना करने के लिये प्रयत्न किया था । युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में उसने श्रीकृष्ण को बड़ी गालियाँ दीं, उसके मौ अघराध पूरे होने के बाद श्रीकृष्ण ने उसे मार डाला ।

शिष्ट तत्त्वं ( पु० ) सदाचारी, प्रतिष्ठित, भलामानस ।—ता ( स्त्री० ) सदाचार, भलमनस ।

शिष्टई दे० ( स्त्री० ) निवृत्ता, निमन्त्रण, आदर, सम्मान, शिष्टाचार ।

शिव्य तत्त्वं ( पु० ) छात्र, विद्यार्थी, चेला ।

शीकर तत्त्वं ( पु० ) कण, जराकण, फुहार, फुही ।

शीघ्र तत्त्वं ( पु० ) त्वरित, तूर्ण, द्रुत, तुरन्त, जल्दी ।—गामी ( पु० ) वेगवाद्, वेगी, जल्दी चलने वाला ।—ता ( स्त्री० ) जल्दी, वेग, उतावली ।

शीत तत्त्वं ( पु० ) ठण्डा, मर्द, शीतल, थामसी ( पु० ) जाड़ा, मर्दी, हिम, पाला ।—काल ( पु० ) हेनक ऋतु, जाड़े का दिन ।—उच्चर ( पु० ) जाड़ा, जईया ज्वर ।

शीतल तत्त्वं ( पु० ) ठण्डा, सर्द ।—ता ( स्त्री० ) शीत गुण, ठण्डापन ।

शीतलाई तत्त्वं ( स्त्री० ) शीतलता, ठण्डाई, ठण्डापन ।

शीतला तत्त्वं ( स्त्री० ) देवी विशेष माता, वेधक ।

शीतांशु तत्त्वं ( पु० ) चन्द्रमा, चन्द्र, सुधांशु ।

शीताङ्ग तत्त्वं ( पु० ) एक रोग विशेष, जिस रोग में आधा शरीर शून्य हो जाता है ।—शर्दाङ्ग, शर्दा-घात ।

शीतार्त तत्त्वं ( पु० ) शीतपीडित ।

शीर्ष तत्त्वं ( पु० ) जोर, पुराना, प्राचीन, पुराना होने से गला हुआ, विलकुल निकम्मा ।

शीर्ष तत्त्वं ( पु० ) शीघ्र, सिर, माथा, मस्तक, उत माद्ग ।

शील तत्त्वं ( पु० ) जृति, वान, उत्तम स्वभाव लज्जा, सम्मान करने वाला स्वभाव ।—वान ( पु० ) सुशील, मिलन सार, सम्मान करने वाला ।

शीशम तत्त्वं ( पु० ) एक वृक्ष और उसकी लकड़ी ।

शुक तत्त्वं ( पु० ) पत्नी विशेष, ताता, भूगा, भूगा ।—देव ( पु० ) वेद विभागकर्ता महर्षि कृष्ण द्वैपायन के पुत्र, इनका उपनयन महादेव ने किया था देवराज इन्द्र ने इनको कामण्डलु और देवालय देकर सम्मानित किया था । शुकदेव ब्रह्मचर्य पूर्वक पिता के निकट मोक्षधर्म का अध्ययन करते थे दोडे दिनों के बाद पिता के उपदेश से मोक्षधर्म अपना सन्देह मिटाने के लिये त्रिगिलाधिप जनक राज के पास गये । मोक्षधर्म की शिक्षा पूरी करने हिमालय प्रदेश में वे छयासायम में रहने लगे वहाँ बहुत दिनों तक शिव्य मण्डल का उपदेश देने रहे ।

शक्ति तत्त्वं (स्त्री०) शोष, शोचा ।

शुक्र तत्त्वं (पु०) ग्रह विशेष, छठवाँ ग्रह, उशना, मारुत, कवि, अपि विशेष, दैत्य गुरु, प्राग, अग्नि, तीर्थ, बल, मामर्घ्य ।—चार (पु०) छठवाँ दिन ।

शुक्राचार्य तत्त्वं (पु०) दैत्यगुरु ये महर्षि भृगु के पुत्र थे । इनके एक कन्या चीर देा पुत्र थे, कन्या का देव-पानी चीर पुत्रों का नाम पण्ड तथा अमर्क था । देवगुरु बृहस्पति के पुत्र कन ने इन्हींने मृतमञ्जीवनी विद्या सीखी थी ।

शुक्र तत्त्वं (पु०) रवेत वर्ष, उजला, पैला, सफेद ।  
—पक्ष (पु०) सुदि, जिस पक्ष में चन्द्रमा घटता है ।

शुक्ति तत्त्वं (पु०) रवेत, रवेतवर्ष, युक्त, पवित्र, युद्ध, निर्मल, पूज, स्वच्छ ।

शुष्ठी तत्त्वं (स्त्री०) शोषण विशेष, शोष्ठ, पुष्पा दुष्पा अदरक ।

शुषड तत्त्वं (पु०) सुँड, हाथी का कर ।

शुद्ध तत्त्वं (पु०) पवित्र, साफ, स्वच्छ, निर्मल, निर्दोष, दोष रहित ।—ता (स्त्री०) पवित्रता, निर्दोषता, स्वच्छता ।

शुद्धितत्त्वं (स्त्री०) पवित्रता, गोधन, मफाई, गुविता ।—पत्र (पु०) मफाई नामा ।

शुद्धीदन तत्त्वं (पु०) कविल यस्तु के राजा, तथा जगत्प्रसिद्ध बुधुदेव के पिता ।

शुनःशोफ तत्त्वं (पु०) महर्षि अचीक का मफला पुत्र, महाराज अम्बतीय के यज्ञ में ये बलि देने के लिये लाये गये थे । कृपापत्रवा शोकर महर्षि-विरचामिल ने इनको अग्नि को स्तुति सिखाई था । इनकी स्तुति ने अग्निदेव प्रमत्त हुए चीर, ये भी यज्ञाग्नि में अक्षत शरीर निकले । तदनन्तर विरचामित्र ने ही इनको अपना पोष्य पुत्र बना रखा ।

शुभ तत्त्वं (पु०) मङ्गल, कल्याण, अच्छा, भना ।

—ग (पु०) सुन्दर, मनोह, प्रियपति, चिपों के मनोमग ।—गता (स्त्री०) सुन्दरता, मनोहरता ।

—चिन्तक (पु०) हितचिन्तक, हितकारी ।

—लज (पु०) उत्तम सुहृत्, कल्याणकारी समय, मङ्गलमय अवसर ।

शुभङ्कर तत्त्वं (पु०) मङ्गलकारी, कृपाल, कल्याण-प्रद ।

शुभाकाङ्क्षी तत्त्वं (पु०) शुभ चाहने वाला, हित-चिन्तक ।

शुम्भ तत्त्वं (पु०) दानवराज, इनके छोटे भाई का नाम निशुम्भ था । चपडो के हाथों ये मारे गये ।

शुभ्र तत्त्वं (पु०) स्वच्छ, विशद, रवेत ।

शुल्क तत्त्वं (पु०) किराया, भाड़ा, जुद्धो, फीस ।

शुश्रूषक तत्त्वं (पु०) सेवा करने वाला, सेवक, भृत्य, नौकर ।

शुश्रूषा तत्त्वं (स्त्री०) धूतने की दृष्टा, सेवा, टहल ।

शुश्रेण तत्त्वं (पु०) वानरराज इनकी कन्या तारा वाली को दयाही थी । इन्होंने शक्ति हत लक्ष्मण का शोषशोषनार किया था ।

शुष्क तत्त्वं (पु०) [ शुष् + क ] सूखा, नीरस, कठोर ।

शुद्धदा दे० (पु०) विलासी, सुख, लम्पट, डैला ।

शुकर तत्त्वं (पु०) सूकर, बरहा ।—खेत (पु०) सूकरखेत, तीर्थ विशेष ।

शुद्ध तत्त्वं (पु०) चौथा वर्ष ।

शुभ्य तत्त्वं (पु०) रिक, रीता, जन शून्य, अशमपूर्ण, अशमस्त ।—घारी (पु०) वैदु विशेष, नास्तिक ।

शूर तत्त्वं (पु०) वीर उत्साही, यत्नवान् ।—ता (स्त्री०) वीरता, उत्साह ।—सेन (पु०) मयुरा के एक राजा का नाम ।

शूरण तत्त्वं (पु०) जिमीकन्द, तोलमूल विशेष ।

शूर्प तत्त्वं (पु०) सूय, झाड़, चिरकी का बना एक पात्र जिससे सूय पड़ोता जाता है ।—नेखा (स्त्री०) रावण की बहिन जिसकी नाक लक्ष्मण ने काटी थी ।

शूल तत्त्वं (पु०) अक्ष विशेष, लोहे का एक प्रकार का काँटा ।

शुगल तत्त्वं (पु०) नियाल, गीदड़ ।

शुद्धला तत्त्वं (स्त्री०) मौकन, निकरी ।

शुद्धलित तत्० (गु०) सौकन क ममान नया हुआ,  
एक दूसरे से लगाया हुआ ।

शुद्ध तत्० (गु०) सीमा, विषाण ।—वेर (गु०) नगर  
विशेष, आदा, अदरव ।

शुद्धार तत्० (गु०) मजाशर, शोभा, शोभा के लिये  
शरीर का परिष्कार और भूषण आदि पहनना ।  
रस विशेष, प्रथम रस, शुद्धार रस में रति भ्यायी  
भाव हे नायक और नायिका आलम्बन हैं ।

शुद्धी तत्० (गु०) सीमा वाला, शुद्धि/विशुद्धि । (गु०)  
अपि विशेष, ये सोमश कवि के श्लोके थे । इन्होंने  
राजा परीक्षित का सौंप काटन का श्राव दिया  
था ।

शुधर तत्० (गु०) फूलों की माला जो मुकुट पर  
धारण की जाती है । भूषण विशेष । हिन्दी के  
एक कवि का नाम । सिर, मस्तक, कपाल ।

शोरा तत्० (गु०) बर्बा, भाला, अस्त्र विशेष ।

शोप तत्० (गु०) अशुशु, बचा हुआ, अन्त, सीमा ।  
(गु०) सर्प, सौंप, नाग ।—शायी (गु०) विष्णु,  
नारायण ।

शोपायस्या तत्० (श्री०) वृद्धायस्या, अन्त की दशा ।

शोय तत्० (गु०) शीतलता, ठण्डा, जाड़ा ।

शोथित्य तत्० (गु०) शिथिलता, अ लक्ष्य, ढोलाई ।

शैल तत्० (गु०) पहाड़, पर्वत ।—राज (गु०) हिमा-  
लय, हिमाचल ।

शैलाट तत्० (गु०) [ शैल + अट ] सिंह, किरात,  
भिन्न, भील ।

शैव तत्० (गु०) शिवभक्त, शिवोपासक, एक सम्प्र-  
दाय विशेष ।

शैवाल तत्० (गु०) मेघान, जलमल, जम्बाल, सियार ।

शैव्या तत्० (श्री०) महाराज हरिश्चन्द्र की रानी,  
महर्षि विश्वामित्र ने हरिश्चन्द्र की धर्मशुद्धि,  
आत्मत्याग कष्ट सहिष्णुता आदि की परीक्षा के  
लिये इन्हें बड़ा कष्ट पहुँचाया था । उस समय  
महाराजो शैव्या एक ब्राह्मण के हाथ बिकी थी ।  
ऐसे कष्ट के समय उनका पुत्र सौंप के काटने से  
मर गया । मृतपुत्र का शय शमयान में रक्ष कर

शैव्या रो रही थी, इसी समयान में राजा हरि-  
श्चन्द्र शोभा का काम करते थे । विश्वामित्र रत्न  
पर प्रसन्न हुए, मृतपुत्र पुनः जीवित हुआ और  
उन लोगों को उनका राज्य मिल गया ।

शोक तत्० (गु०) शोक, चिन्ता, दुःख, खेद, परवा-  
साय, पड़ताथा ।

शोकाकुल तत्० (गु०) शोकयुक्त, शोक पीड़ित ।

शोकार्त तत्० (गु०) शोकाकुल, शोकयुक्त ।

शोकापह तत्० (गु०) शोकनाशक, दुःख नाशक ।

शोण तत्० (गु०) अतसी, रक्त, लालवर्ण, नद विशेष ।

शाणित तत्० (गु०) लोह, इधिर, रक्त ।

शोध तत्० (गु०) सृजन, फूलन, फुलाय, फूलना ।

शोध तत्० (गु०) खोज, अनुसन्धान, शुद्धि, अण  
परिष्कार ।

शोधन तत्० (गु०) स्वच्छ करना, निर्मली करना,  
पथित करण ।

शोधनी तत्० (श्री०) सम्मार्जनी, कूबा, बुहारी,  
बदनी ।

शोभन तत्० (गु०) अष्ट, उत्तम, अच्छा, भला ।

शोभा तत्० (श्री०) कान्ति, टामि, सुन्दरता, क्षयि,  
मनोहरता ।—यमान (गु०) सुन्दर, मनोहर ।

शोभित तत्० (गु०) विभूषित, शोभायमान, अल-  
ङ्कृत, सजा हुआ ।

शोपक तत्० (गु०) शोषण करन वाला, रसाय  
कषक, रस खींचन वाला, सूखन वाला ।

शोषण तत्० (गु०) शोषना, सूखना, सुखाय ।

शौच तत्० (गु०) शुचिता, पवित्रता, सुन्दरता,  
स्नान, स्वच्छता ।

शौण्डिक तत्० (गु०) कनधार, शराय बेबने वाला ।

शौनक तत्० (गु०) एक तपोवन सम्पन्न कवि,  
इन्होंने नैमिषारण्य में द्वादश वर्ष में समाप्त होने  
वाले एक यज्ञ का अनुष्ठान किया था ।

शौर्य तत्० (गु०) शूरता, सामर्थ्य, शक्ति ।

श्मशान तत्० (पु०) सुदर्शाघट, मरुतट ।  
 श्मश्रु तत्० (पु०) सूँघ, मोह ।  
 श्याम तत्० (पु०) काला, कृष्णवर्ण ।  
 श्यामल तत्० (पु०) कृष्णवर्ण विशिष्ट, काला ।  
 श्यामा तत्० (स्त्री०) पुषती, वैठन मध्या स्त्री,  
 गोलह वर्ष की स्त्री, पत्ति विशेष ।  
 श्यामक तत्० (पु०) सार्वी, धान्य विशेष ।  
 श्यालक तत्० (पु०) साना, स्त्री का भाई, पत्नी  
 साना ।  
 श्येन तत्० (पु०) पत्ति विशेष, यज्ञ पत्नी ।  
 श्रद्धा तत्० (स्त्री०) चादर पूर्वक प्रेम, सम्मान, गुह  
 पिता चादि माननीय व्यक्ति विषयक प्रेम ।—लु  
 (पु०) श्रद्धायुक्त, श्रद्धावान ।  
 श्रम तत्० (पु०) परिश्रम, मिहनत, उद्योग ।—जीवी  
 (पु०) कुली, मजूर, किसान ।  
 श्रमित तद्० (पु०) श्रान्त, थका हुआ, थका मँदा ।  
 श्रमी तत्० (पु०) परिश्रम करने वाला, उद्योगी,  
 उत्साह पूर्वक प्रयत्न करने वाला ।  
 श्रवण तत्० (पु०) कान, कर्ण, कर्णेन्द्रिय ।  
 श्रवणा तत्० (स्त्री०) नक्षत्र विशेष, एक नक्षत्र का  
 नाम, शार्दूल नक्षत्र ।  
 श्राद्ध तत्० (पु०) श्रद्धा पूर्वक किया हुआ कर्म,  
 पितरों की तृप्ति के लिये तर्पण विष्ट दातादि ।  
 श्रान्त तत्० (पु०) श्रमित, थका हुआ, थकित ।  
 श्रान्ति तत्० (स्त्री०) श्रम, थकावट, परिश्रम जन्य  
 थकावट, गरीर की शिथिलता ।  
 श्रावण तत्० (पु०) मास विशेष, पौवर्षी महीना ।  
 श्रावणी तत्० (स्त्री०) श्रावण की पूर्णिमा, उपाकर्म,  
 श्रावण की पूर्णिमा को किये जाने वाले कर्म ।  
 श्री तत्० (स्त्री०) सम्पत्ति, धन, शैशव्य,  
 कामिनी, सुति, हृदि, ज्ञान, इन्द्रिया,  
 —खण्ड (पु०)  
 देवी की पूजा ।  
 " नारायण (पु०)

नारायण, विष्णु भगवान ।—फल (पु०) विश्व-  
 फल, नारियल, नारिकेल ।—मत् (पु०) धनधान,  
 धनी, सखीपात्र ।—युक्त (पु०) धनी, कीर्तिमाद्,  
 यशस्वी ।—युत् (पु०) भाग्यवान् सखीपात्र, धनी ।  
 —हर्ष (पु०) महाराज चादिपूर ने जो कान्यकुब्ज  
 से पाँच ब्राह्मण युववाये से उनमें एक श्रीहर्ष भी  
 थे । इन्हींके वंशज सुश्रीवाध्याय कहे जाते थे ।  
 इनका समय १००० ई० सन् अनुमान किया  
 जाता है । इनके पिता का नाम श्रीहरि था ।  
 नैषधीय चरित नामक काठ्य इन्होंने रचनाया है ।  
 जो संस्कृत साहित्य का चमकता हुआ एक रत्न है ।  
 इसके अतिरिक्त गौड़ोर्वीशकुवप्रशस्ति, अर्णव  
 प्रथम काठ्य नयसाहसार्कचरित खखन खखलाद्य  
 चादि, बहुत ग्रन्थ इन्होंने रचनाये हैं । परन्तु इनमें  
 खखनखखलाद्य के अतिरिक्त दूसरे ग्रन्थ उप-  
 लब्ध नहीं होते । ये विद्या बुद्धि में अनुमनीय थे ।  
 इन्होंने नैषधीयचरित में अपनी जिस श्रद्धुत  
 कविप्रणक्ति का परिचय दिया है वह अनेकोंने  
 है ।

श्रुत तत्० (पु०) सुना हुआ, कर्णगत, कर्णग्राम,  
 कर्णगोचर ।—कीर्ति (स्त्री०) शत्रुघ्न की स्त्री,  
 यह कुशाश्वज जनक की कन्या थी, इसके दो पुत्र  
 थे, एक का नाम सुबहु खोर दूसरे का नाम शम्भु-  
 चाती था ।

श्रुति तत्० (स्त्री०) कान, कर्ण, वेद ।  
 श्रुणो तत्० (स्त्री०) पंक्ति, पौत, लकीर, कुतार ।  
 श्रेयः तत्० (पु०) महल, कल्याण, सुभ ।  
 श्रेष्ठ तत्० (पु०) प्रधान, बड़ा, माननीय ।  
 श्रोतव्य तत्० (पु०) श्रवणीय, सुनने योग्य, अच्छे  
 उपदेश ।  
 श्रोता तत्० (पु०) सुनने वाला, सुनैया ।  
 श्रोत्र तत्० (पु०) कान, कर्ण, श्रवणेन्द्रिय, श्रवण ।  
 (पु०) वेद, वेदपाठी ।  
 (स्त्री०) स्तुति, प्रशंसा, बलान ।  
 ) प्रशंसनीय, वर्णनीय, जलापा

श्लेष तत्० (५०) आलिङ्गन, संयोग, अलङ्कार विशेष, इसके सम्बन्ध और अभङ्ग दो भेद होते हैं। यथा - एक वचन में होत नहि बहु अर्थन को जान। श्लेष कहत हैं ताहि को भूषन सकल सुजान ॥

—शिवराज भुभण ।

श्लेश्मा तत्० (५०) कफ, खण्डार, शरीर सम्बन्धी, त्रिविध तत्त्वों में का एक तत्व ।

श्लोक तत्० (५०) कीर्ति, यश, कीर्तिगान, पद्य, छन्द, छन्द विशेष, अनुष्टुप वृत्त ।

श्वसुर तत्० (५०) पति पत्नी के पिता, पति का पिता, पत्नी का पिता ।

श्वश्रू तत्० (स्त्री०) सास, पति पत्नी की माता, य शुर की स्त्री ।

श्वान तत्० (५०) कुत्ता, कूकुर ।

श्वस तत्० (५०) प्राण, दम, प्राणवायु सौम ।

श्वन्न तत्० (५०) रोग विशेष, श्वेत कुष्ठ, सफेद कोढ़ ।

श्वेत तत्० (५०) शुक्ल, शुक्लवर्ण, धवल ।—द्वीप (५०) वैकुण्ठ द्वीप विशेष, एक देश का नाम, इसी द्वीप में नर नारायण तपस्या करते थे। महर्षि कपिल का भी तपस्या स्थान यही है ।

श्वेतिक तत्० (५०) क्षपि विशेष, ये महर्षि उद्गातक के पुत्र थे ।

## प

प वृक्ष का इकतीसवाँ वर्ण, यह वर्ण सूर्यन्य है। क्योंकि इसका उच्चारण स्थान सूर्या है ।

पट् तत्० (५०) संघा विधेय, छ, इ ।—ऊर्मि (स्त्री०) छः प्रकार की तरङ्गें वे ये हैं—प्राण और मन की भ्रूण, व्याध, शोक तथा मोह और शरीर सम्बन्धी जरा तथा मृत्यु ये ही पटुर्मिया हैं। इसी बात को एक संस्कृत परिहत कहता है, यथा—

बुध्वाच पिपासाच प्राणस्य मनसः स्मृतौ ।

शोकमोहा शरीरस्य जलामृतपृथग्भय ॥

—कर्म (५०) छ प्रकार के कर्म, जो ब्राह्मणों के कर्तव्य हैं यथा—अध्ययन, आध्यापन यजन, याजन दान और प्रतिग्रह ।—कोण (५०) छकोना छ कोण का खेत आदि ।—पद (५०) भ्रमर, भौरा ।—प्रयोग (५०) तन्त्र सम्बन्ध छ प्रयोग, शान्ति, शशीकरण, स्तम्भन, विद्वेषण, उच्चाटन और मारण ।—रस भोजन (५०) पद रसयुक्त भोजन ।—वदन (५०) कार्तिकेय, देवसेनापति ।—वर्ग (५०) काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और

मासर ।—शास्त्र (५०) पददर्शन, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा, वेदान्त, सायण और पातञ्जल ।

पडङ्ग तत्० (५०) [ पट् + ङङ् ] वेद के छ ङङ्ग, शिखा, कर्प, व्याकरण, ज्योति छन्द, निरुक्त, हाथ रीर आदि शरीर के ङङ्ग ।

पडङ्गि तत्० (५०) भ्रमर, भौरा ।

पड्विधि तत्० (५०) छ प्रकार, छ भाँति ।

पण्ड तत्० (५०) साह, बौल, सपह ।

पण्ड तत्० (५०) नपुंसक, द्वित्रया ।

पष्टि तत्० (५०) सदया विशेष, इ० ।

पष्ट तत्० (५०) छठवा, व को पूर्ण करने वाली संख्या ।—री (स्त्री०) तिथि विशेष ।

पोडश तत्० (५०) सोलह, १६ ।—दान (५०) दान विशेष ।—भुजा (स्त्री०) दुर्गा, देवी ।—सस्कार (५०) कर्म विशेष, सोलह प्रकार के सस्कार ।

## स

स वृक्ष का बत्तीसवाँ वर्ण, इसका उच्चारण स्थान दन्त है, अतएव यह वर्ण दन्त्य है ।

स तद्० (स्त्री०) सम साथ, सङ्ग, सदित ।

सत्रक तत्० (५०) सञ्चार, एक स्थान पूर्वक अन्यत्र

- गमन, जाना, गमन. एक वस्तु का गुण, दूसरी वस्तु पर जाना ।
- संक्रान्त तत्० (गु०) सम्बन्धी, विषयक ।
- संक्रान्ति-तत्० (स्त्री०) सूर्य का एक राशि पर से दूसरी राशि पर जाना ।
- संक्षिप्त तत्० (गु०) [सं + क्षिप् + क्त] न्यून, अल्प, छोड़ा, घटाया, कम किया हुआ ।
- संक्षेप तत्० (पु०) [सं + क्षिप् + घञ] न्यूनता, अल्पता, सारभाग ।
- संख्या तद्० (स्त्री०) गणना, गिनती, संख्या, सङ्कलन ।
- संगत तद्० (स्त्री०) सङ्गति, साथ, मित्रता, मित्रत्व का धर्ममन्दिर ।
- संग्रह तद्० (पु०) संग्रह, एकत्रीकरण, सञ्चय, बटोरना ।
- संग्राम तद्० (पु०) संग्राम, युद्ध, समर, रण ।
- संचना दे० (क्रि०) सञ्चय करना, संग्रह करना, एकत्रित करना, बटोरना ।
- संज्ञा तद्० (स्त्री०) नाम, आख्या, अभिधान, नामधेय, युद्धि, चेतनता, गायत्री, सूर्य की श्री और विरवकर्मा की स्त्री ।
- संजीवन दे० (क्रि०) संयोजन करना, संयुक्त करना ।
- संन्यासी तद्० (पु०) चतुर्थाश्रमी, योगी, यती ।
- संपत् तद्० (स्त्री०) सम्पद्, धन, वैभव, विभव ।
- संभलना दे० (क्रि०) सहायता पाकर बचना, संभलना, पकड़ना, बचना, उबरना, उठार पाना ।
- संभालना दे० (क्रि०) सहायता देकर बचाना, सहाय देना, उबारना, बचाना ।
- संयम तद्० (पु०) नेम, नियम, व्रत, इन्द्रिय निग्रह, इन्द्रियों का अपने वश में करना ।
- संयमी तद्० (पु०) मुनि, योगी, यती, यमी, जिसने योग किया द्वारा अपने इन्द्रियों को वश कर लिया है ।
- संयुक्त तद्० (गु०) सम्बन्धयुक्त, मिला हुआ, घटा हुआ ।
- संयुक्ता दे० (स्त्री०) पृथ्वीराज की रानी चौर कर्त्रीज के राजा जयचन्द्र की कन्या । इनका ११७० ई० में जन्म हुआ था । ११८० ई० में पृथ्वीराज ने इनको व्याहा चोर ११६९ ई० में मुहम्मद गोरी के साथ युद्ध में पृथ्वीराज के पराजित चौर यज्ञ के हाथ बन्दी होने पर संयुक्ता ने देह त्याग किया था । इन्होंने युद्ध में जाने के लिये व्रतग्न अपने पति को युद्ध सामग्री से सजाया था ।
- संयुग तत्० (पु०) युद्ध, संग्राम, समर, लड़ाई ।
- संयुत तत्० (गु०) संयोग प्राप्त, मिलित, मिला हुआ ।
- संयोग तत्० (पु०) नेम, मिलाप, सम्बन्ध विशेष, ध्याप्ति की प्राप्ति ।
- संयोजित तत्० (गु०) मिलाया गया, कृत संयोग ।
- संरम्भ तद्० (पु०) कोप, क्रोध, मानसिक आवेग, आक्रोश ।
- संराधन तद्० (पु०) सेवा करना, सय प्रकार की सेवा करना, चिन्तन करना ।
- संराय तद्० (पु०) ध्वनि, शब्द, पक्षियों का शब्द ।
- संलग्न तद्० (पु०) संयुक्त, योग प्राप्त, मिला हुआ, घटित ।
- संलाप तद्० (पु०) सम्भाषण, बालाप, परस्पर कहना ।
- संवत् तद्० (पु०) संवत्सर, वर्ष, धरत, हायन, मत् ।—सर (पु०) वर्ष, संवत्, वरत ।
- संवरण तद्० (पु०) आचरण, आच्छादन, ढोका ।
- संवरना दे० (क्रि०) सजना, शोभित होना ।
- संवाद तद्० (पु०) सन्देश, चर्चा ।
- संवारना दे० (क्रि०) सजाना, गूढ़ार करना ।
- संशय तद्० (पु०) सन्देह, भय, निम्ना ।
- संशयापन्न तद्० (गु०) सन्देहयुक्त, सन्देही, शान्त, धम पूर्ण ।
- संशोधन तद्० (पु०) परिष्करण, मार्जन, सँगठि

संशक्त तत्० (गु०) मिला, समोप, आसक्त ।  
 ससगर तत्० (गु०) उपजाऊ, निवजाऊ ।  
 ससर्ग तत्० (गु०) सम्बन्ध, सगत, मैत्री ।  
 ससर्गी तत्० (गु०) सम्बन्धी, मेल ।  
 संसार तत्० (गु०) जगत्, जग, गमनागमन स्यात् ।  
 संसारी तत्० (गु०) ससार का, लौकिक, सवार  
 सम्बन्धी ।  
 सस्कार तत्० (गु०) मलीनता, निराकरण, दोष  
 हटाना, मज दूर करना, शोधन करना, सफाई,  
 शुद्धता ।  
 सस्कृत तत्० (गु०) सस्कारित, सस्कार किया हुआ,  
 परिष्कृत । (गु०) देवभाषा, हिन्दुस्तान की पुरानी  
 राष्ट्र भाषा ।  
 संस्थान तत्० (गु०) विन्यास, बनायट, बनाने का  
 ढङ्ग, रूप, सङ्गठन ।  
 संस्पर्श तत्० (गु०) स्पर्श, छूना ।  
 संहत तत्० (गु०) मिटा हुआ, मिलित, टोस, बरि-  
 यार, दूट ।  
 संहति तत्० (स्त्री०) सपूट, देर, योक, अधिकता ।  
 सहार तत्० (गु०) नाश, विनाश, प्रलय, नरक  
 विशेष एक श्रेय का नाम ।  
 सहारना दे० (क्रि०) नाश करना, नाशना, मार  
 डालना ।  
 सहिता तत्० (स्त्री०) ग्रन्थ विशेष ।  
 सकत तद्गु० (स्त्री०) शक्ति, बल, सामर्थ्य, कडा,  
 कठोर ।  
 सकना दे० (क्रि०) समर्थ होना, उपयुक्त होना,  
 उठाना ।  
 सकरा दे० (गु०) सकेत, सङ्कीर्ण, छोटा, तद्गु० ।  
 सकराना दे० (क्रि०) सङ्कीर्ण करना, सकेत करना,  
 छोटा बनाना ।  
 सकर्मक तत्० (गु०) जिस क्रिया के कर्म हो, कर्म  
 युक्त क्रिया, जैसे पोना, खाना, देखना ।  
 सकल तत्० (गु०) समस्त, मय, सम्पूर्ण ।

सकाना दे० (क्रि०) शक्ति होना, डरना, भय करना,  
 त्रास पाना ।  
 सकाम तत्० (गु०) कामना सहित किया गया कर्म,  
 अपने अभीष्ट की सिद्धि के लिये कृतकर्म । (गु०)  
 कामना सहित, सफल, फलवात् ।  
 सकारना दे० (क्रि०) स्वीकार करना ।  
 सकारे दे० (घ०) प्रात काल, प्रभात, सबेरे, प्रात काल,  
 यथा:—  
 सजन सकारे जाँयगे नयन रहेंगे तोय ।  
 विधिना ऐसी रैन कर भोर कभी न होय ॥  
 सकाल तत्० (गु०) प्रात काल, प्रभात, सबेरा ।  
 सकुच दे० (स्त्री०) साज, सङ्कोच, डर, भय, त्रास ।  
 सकुचना दे० (क्रि०) सङ्कोच करना, सजाना, डरना,  
 भय करना ।  
 सकृत् तत्० (घ०) एक बार ।  
 सकेत तद्गु० (गु०) सकरा, छोटा, सङ्कीर्ण, सकुचित,  
 थरूप ।  
 सकेतना दे० (क्रि०) सकेत करना, छोटा करना,  
 समेटना, एकत्र करना ।  
 सकोलना दे० (क्रि०) समेटना, बटोरना, तहियाना,  
 तह डालना ।  
 सकोला दे० (गु०) एक प्रकार का लोहा ।  
 सकोच तद्गु० (गु०) सङ्कोच, सहम ।  
 सकोडनों दे० (क्रि०) सकोच करना, मकेलना  
 घटोरना ।  
 सकोरा दे० (गु०) कटोरा, मरवा, मिट्टी का छोटा  
 बर्तन ।  
 सकोरी दे० (स्त्री०) थाली, परई, मिट्टी की परई ।  
 सखा तत्० (गु०) मित्र, बन्धु, साथी, सङ्गी ।  
 सखी तत्० (स्त्री०) सहेली, सङ्गिनी, ययस्या, बानी  
 सख्य तत्० (गु०) मित्रता, बन्धुत्व ।  
 सगड तद्गु० (गु०) शकट, रथ, छकड़ा, गाड़ी, रथ  
 प्रकार की गाड़ी जिसे चादमी खींचते हैं ।

संगपहता दे० ( पु० ) एक प्रकार की दाल, जिसमें माग दात कर बनाते हैं ।

सगा दे० ( पु० ) आत्मी, स्वजन, सम्बन्धी, अपनैत, नतैत ।

सगाई दे० ( स्त्री० ) सम्बन्ध, नाता, सम्बन्ध ठीक करना ।

सगुण तत्० ( पु० ) गुण सहित, गुण विग्रिष्ट, गुण-युक्त ।

सगोती तद्० ( पु० ) सगोत्री, एक कुन का, भाई बन्धु । ( पु० ) मांख का बना भोजन ।

सगोत्र तत्० ( पु० ) एक गोत्र, समान गोत्र, सगोती ।

सघन तत्० ( पु० ) घना, सान्द्र, निविड़, मिला हुआ, लूय सटा हुआ ।

सङ्कर तत्० ( पु० ) विपत्ति, दुःख, कष्ट, श्राव्य ।

सङ्कर तत्० ( पु० ) वषसङ्कर, दोगला, दो जाति के माता पिता से उत्पन्न । ( पु० ) मिला हुआ ।

सङ्कर्षण तत्० ( पु० ) बलदेव, श्रीकृष्ण के बड़े भाई, ये देवकी के गर्भ से निकाल कर रोहिणी के गर्भ में बाधे गये थे, श्रातएव इनका नाम सङ्कर्षण हुआ था ।

सङ्कल तत्० ( पु० ) राधि, देर ।

सङ्कलन तत्० ( पु० ) जोड़, जोड़तो ।

सङ्कल्प तत्० ( पु० ) मानसिक कर्म, इच्छा, वाद, अभिलाष ।—प्रमथ ( पु० ) सङ्कल्प से उत्पन्न, सङ्कल्प योनी, सङ्कल्पज ।

सङ्कल्पना दे० ( स्त्री० ) दान देना, नियम करना, किसी काम के लिये प्रतिज्ञा करना ।

सङ्कीर्ण तत्० ( पु० ) घन, ( मघन ) निविड़, संकरा, संकेत ।—ता ( स्त्री० ) केताही, तङ्गी ।

सङ्कीर्तन तत्० ( पु० ) गुणगान, बखान, भजन ।

सङ्कुचित तत्० ( पु० ) सकुचा, सुरका, लज्जित ।

सङ्कुल तत्० ( पु० ) जोड़, बहुत मनुष्यों का एकत्रित होना ।

सङ्केत तत्० ( पु० ) केन, इगारा, इङ्गित ।

सङ्कीच तत्० ( पु० ) साज, लजा, सिमट, सहम ।

सङ्क-तत्० ( पु० ) साथ, संयोग, मेल, साथ ।

सङ्कत तत्० ( पु० ) संगम, मिला हुआ, यथा योग्य, उचित, साथी, मेली, मिला ।

सङ्कति तत्० ( स्त्री० ) मेल, साथ, सङ्ग, मैत्री, दोस्ती ।

सङ्कम तत्० ( पु० ) भेंट, प्रेमपूर्वक मिलन, नदियों का साथ-में मिलन ।

सङ्कर तत्० ( पु० ) पुद्ग, संग्राम, लड़ाई, समर ।

सङ्कमी दे० ( स्त्री० ) संडाही, संडही ।

सङ्की तत्० ( पु० ) साथी, सङ्ग वाला, दोस्त, मित्र ।

सङ्कीत तत्० ( पु० ) गाना, गाने की विद्या ।

सङ्कोपन तत्० ( पु० ) छिपाव, गोपन, दफाय, लुकाव ।

सङ्क-तत्० ( पु० ) समूह, भुरद ।

सञ्च दे० ( पु० ) सत्य, सांच, ही, ठीक ।—मुच ( पु० ) ठीक ठीक, विष्कुल सत्य, निःसन्देह सत्य ।

सञ्चराञ्चर तत्० ( पु० ) समस्त जगत्, जीव जड़, जन्तु आदि ।

सञ्चाई दे० ( स्त्री० ) सत्यता, सचापट ।

सञ्चिष तत्० ( पु० ) मन्त्री, अमात्य, दीवान, मलाह-कार, मलाह देने वाला ।

सञ्चेत तत्० ( पु० ) चौकम, चौकला; साधवान ।—न ( पु० ) ज्ञानवाद्, बुद्धिपुष्क, जीव, प्राणी ।

सञ्चेष्ट तत्० ( पु० ) चेष्टा युक्त, उद्योगी, यत्नशील, यत्नी ।

सञ्चीरी दे० ( स्त्री० ) सवार, सत्यता, सजावट ।

सञ्चा दे० ( पु० ) सत्य, सत्यवादी, ठीक, पथार्थ, उत्तम ।

सञ्चिदानन्द तत्० ( पु० ) परब्रह्म, परमात्मा, परमे-स्वर ।

सञ्ज दे० ( स्त्री० ) होश, बध, सिङ्गार, शोभा—धञ्ज ( पा० ) शोभा, वेधरचना, बनावट, तैयारी ।

सञ्जग दे० ( पु० ) साधवान, सत्त्वम ।

सञ्जन दे० ( पु० ) प्रिय, प्रियतम, पति ।



सजना दे० ( क्रि० ) सोहना, शोभना । ( पु० ) पति, प्रियतम ।

सजल तत्० ( गु० ) जल पूर्ण, जल सहित ।

सजला दे० ( पु० ) चार भाइयो में तीसरा, मझले से छोटा । ( गु० ) जल पूर्ण, जल से भरी हुई ।

सजाई दे० ( स्त्री० ) बनावटी, निर्मित, बनाव निर्माण, रचना ।

सजाना दे० ( क्रि० ) बनाना, बनवाना, गृहकार करना ।

सजाव दे० ( पु० ) झलझार, बनाव ।

सजीला दे० ( गु० ) सुदृढ, सुन्दर, आकारवान् ।

सजीव तत्० ( गु० ) जीता, जीवसहित, जीवयुक्त, प्राणी ।

सजीवनी तत्० ( स्त्री० ) जड़ी विशेष, प्राण देने वाली मूरि ।

सज्जन तत्० ( पु० ) कुलवन्त, साधु, उत्तम स्वभाव वाला ।

सज्जा दे० ( स्त्री० ) वेश, कपड, भेलम ।

सज्जी दे० ( स्त्री० ) खारी मिट्टी, जिससे कपड़े गटने खादि साफ़ किये जाते हैं ।

सञ्चय तत्० ( पु० ) सग्रह, देर, इकट्ठा, एकत्रित ।

सञ्चार तत्० ( पु० ) भ्रमण, पर्यटन ।

सञ्चारक तत्० ( पु० ) नायक, संक्रमण, भ्रमण कराने वाला ।

सञ्चारिका तत्० ( स्त्री० ) दूती, सन्देश हरण करने वाली ।

सञ्चित तत्० ( गु० ) सञ्चय किया हुआ, एकत्रित, घटोटा हुआ, संगृहीत, रखा ।

सञ्चय तत्० ( पु० ) ये अन्धराज श्रृतराष्ट्र के सचिव थे । बगलदेश के आसीर्याद से प्राप्त दिठयचक्षुषों से महाभारत का पट्ट देख कर उनका वर्णन श्रृतराष्ट्र को ये सुनाया करते थे । महाभारत युद्ध के समाप्त होने पर युधिष्ठिर के राज्य में श्रृतराष्ट्र के साथ ये हस्तिनापुर में रहते थे और उन्हीं के साथ वन भी गये थे । कुछ दिनों के बाद उस वन में वन-

डाहा लग गया । श्रृतराष्ट्र गान्धारी और कुन्ती ने तो जल कर प्राण त्याग दिये । परन्तु सञ्चय ने भाग कर अपने प्राण की रक्षा की । इसके बाद हिमालय प्रदेश में जा कर उन्होंने अपना समय बिताया था ।

सझान तत्० ( पु० ) जान सहित, जानी, जानवाह ।

सटक दे० ( स्त्री० ) नरचा, नगी, हुक्के की नली ।

सटकना दे० ( क्रि० ) भगना, भाग जाना, छिपना ।

सटकाई दे० ( स्त्री० ) छिपना, छुकाव, उतार चढ़ाव ।

सटकाना दे० ( क्रि० ) छिपाना, सङ्कोच करना, छिपाना ।

सटना दे० ( क्रि० ) मिलना, मिलित होना, जुड़ना, चिपकना ।

सटपटाना दे० ( क्रि० ) विस्मित होना, अचम्भित होना ।

सटल दे० ( स्त्री० ) प्रलाप, बड़बड़, बकबक ।

सटाना दे० ( क्रि० ) चिपकाना, जोड़ना, मिलाना, मेल करना ।

सटासट दे० ( स्त्री० ) तर ऊपर, एक पर एक, लगा तार, मिहामिह ।

सठिया दे० ( स्त्री० ) चौंस को पतली छड़ी, लपटी लकड़ी, लठिया, आभूषण विशेष, एक प्रकार की छड़ी ।

सटीक तत्० ( गु० ) टीका के सहित, व्याख्या के सहित ।

सटायट्टा दे० ( पु० ) सराफेरी, बदला बदला, रथ उधर ।

सठियाना दे० ( क्रि० ) बूढा होना, बुढाई से दुर्बल और निर्बुद्धि होना ।

सढोड़ा दे० ( पु० ) गुहार, एक प्रकार का लहङ्गा ।

सडक दे० ( स्त्री० ) चौड़ा मार्ग ।

सडन दे० ( स्त्री० ) दुर्गन्ध, दुर्गन्धित ।

सडना दे० ( क्रि० ) चबसना, गलना, सब जाना ।

सड़ाव दे० ( गु० ) सड़ा हुआ, गला हुआ, दुर्गन्ध युक्त ।

सङ्गाना दे० (क्रि०) गलाना ।  
 सण्डसी दे० (स्त्री०) गहवा, सखसी ।  
 सण्डा दे० (पुं०) पोडा, मोटा, दृष्टपुष्ट ।  
 सण्डास दे० (पुं०) पाखाना, ज़ाकूर ।  
 सत दे० (पुं०) सार, निष्कर्ष, सार भाग, सूदा, सत्य ।  
 —मासा (पुं०) गर्भ के सातवें मास में किया जाने वाला संस्कार विशेष ।  
 सतराना दे० (क्रि०) स्त्रीधिन होना, अपसन्न होना ।  
 सतकं तत्० (पुं०) सावधान, सचेत ।  
 सतलड़ी दे० (स्त्री०) सात लड़की माला ।  
 सतवन्त दे० (पुं०) मत्स्यवादी, सदा ।  
 सताना दे० (क्रि०) पीड़ा देना, कष्ट देना, डेड़ना ।  
 सती तत्० (स्त्री०) पारवती, दच प्रजापति की कन्या, इनका विवाह महादेव से किया गया था । पतिव्रता, साध्वी ।  
 सतीर्थ तत्० (पुं०) सतीर्थ, साधो, साय के पढ़ने वाले ।  
 सतीला दे० (पुं०) सत्तावाद्, समर्थ, सामर्थ्यवाद्, पराक्रमी ।  
 सतीवाङ्ग दे० (पुं०) सती का स्थान, पति का अनुगमन करने वाली स्त्रियों का समयान ।  
 सतुमा दे० (पुं०) सकृ, संकू, साहू, धुँके हुए अन्न का दूध ।  
 सत्कर्म तत्० (पुं०) अच्छा काम, उत्तम काम, पुण्यजनक काम ।  
 सत्कार तत्० (पुं०) सम्मान, आदर, आगत स्वागत ।  
 सत्किया तत्० (स्त्री०) सत्कर्म, उत्तम कर्म, आदर, सम्मान ।  
 सत्तम तत्० (पुं०) भक्ति उत्तम, प्रतिशय अष्ट, यह शब्द भक्ति या गुणवाचक शब्दों के अन्त में आता है और उसकी प्रधानता बतलाता है ।  
 सत्ता तत्० (स्त्री०) बल, पराक्रम, विद्यमानता, अस्तित्व ।  
 सत्तु दे० (पुं०) सत्तुमा ।

सत्वगुण तत्० (पुं०) प्रकृति का एक गुण विशेष, त्रिगुणों में का एक गुण । यह तत्पु, प्रकाशक और दृष्ट है ।  
 सत्वता तत्० (स्त्री०) पराक्रम, बल, पवित्रता, युद्धता ।  
 सत्य तत्० (पुं०) सच्चा, यथार्थ, टीक, निश्चय, मिथ्या नहीं ।—ता (स्त्री०) सचाई, सच्चापन ।  
 —युग (पुं०) कृतयुग, प्रथम युग ।—लोक (पुं०) प्रहलोक, ऊपर का मातृलोक ।—घटी (स्त्री०) महर्षि कृष्णद्वैपायन व्यास की माता और वसु-राज की कन्या ।—वादी (पुं०) सत्यवाक्ता, सदा, सच बोलने वाला, यथार्थ वाक्ता ।—धान् (पुं०) शासन देश का राजा द्युमत्सेन का पुत्र, इनकी माता का नाम शैलया था । द्युमाग्यवश राजा द्युमत्सेन अन्धे हो गये, तथा मन्त्रियों के बह्यन्त्र से राज्यच्युत हो कर पत्नी और शिशुपुत्र को ले कर वन में चले गये । एक समय उन्नी वन में मद्रदेश के राजा अपनी कन्या सावित्री के साथ आये । मातृपितृभक्त सत्यवान के पुणों पर सावित्री मोहित हो गयी और उन्हीं को अपना पति बनाया । सत्यवाक् अरुणायु से, उनकी श्रायु बुरी हुई, परन्तु पतिपरायणा सावित्री ने अपने पतिव्रत्य दल से यमराज को प्रसन्न कर उनसे वर ग्रहण किये । उन्हीं वरों के प्रभाव से सत्यवाक् भी जीवित हो गये । और राजा द्युम-त्सेन की भी गयी हुई धाँसे लौट आयाँ तथा राज्य भी मिल गया ।—मत (पुं०) सत्य-वादी, प्रधानतः सत्य को उपास्य मानने वाला ।  
 —सन्ध (पुं०) सत्यप्रतिष्ठ, अपनी प्रतिष्ठा सत्य करने वाला ।

सत्यानाश तत्० (पुं०) नाश, विनाश, बरबाद ।  
 —करना (पुं०) नाश करना, विनष्ट करना, ध्वस्त करना, बरबाद करना ।—शाना (पुं०) नष्ट होना, विगड़ना, उखाव होना ।  
 सत्यानृत तत्० (पुं०) [ सत्य + अनृत ] धार्मिक, उपाहार ।

सत्वर तत्० ( गु० ) जलद, शीघ्र, उतावला, गुरन्त, भटपट ।  
 सत्सङ्ग तत्० ( गु० ) सज्जन सङ्ग, उत्तम मनुष्यों की सङ्गति ।  
 सधशब्द दे० ( गु० ) रण में मरे हुएों की लोम ।  
 सधिया दे० ( गु० ) अन्न चैद्य ।  
 सद्वन तत्० ( गु० ) गृह, घर, मकान, मन्दिर, वास-स्थान ।  
 सदय तत्० ( गु० ) दयायुक्त, मृदुल, कोमल अन्त-करण वाला । दयासु, कृपासु, कारुणिक ।  
 सदसत् तत्० ( गु० ) सत्यासत्य, सन झूठ ।  
 सदस्य तत्० ( गु० ) समासद, पञ्च ।  
 सदा तत्० ( अ० ) सर्वदा नित्य, सतत, हर हमेश ।  
 —घरत ( पु० ) अमायालय, वह स्थान जहाँ भूखों को अन्न दान दिया जाता है ।  
 सदृश तत्० ( गु० ) समान, मुख्य, सम, न्याय ।  
 सद्वेश तत्० ( अ० ) समोप, निष्कट, पास ।  
 सदोष तत्० ( गु० ) दोष सहित, दोषी, अपराधी ।  
 सद्वृत्ति तत्० ( अ० ) निस्तार, त्राण, मुक्ति, उत्तम गति ।  
 सद्वन्ध तत्० ( अ० ) सुगन्ध, उत्तम गन्ध ।  
 सद्वक्ता तत्० ( पु० ) उत्तम वक्ता, शैली के साथ बोलने वाला, उत्तम व्याख्याता ।  
 सद्विचिचक तत्० ( गु० ) विचार, निर्णयकर्ता, उत्तम निर्णयक ।  
 सधना दे० ( क्रि० ) धनना, होना, उठना, हिलना, परिचय होना ।  
 सधवा तत्० ( अ० ) सुहागिन, सुभगा, पति वाली स्त्री, जिसका पति जीवित हो ।  
 सधाना दे० ( क्रि० ) साधन कराना, अभ्यास कराना, परिषय कराना, सिखाना, बनाना ।  
 सन दे० ( पु० ) पैधा विशेष, एक प्रकार का पाठ ।  
 सनत्कुमार तत्० ( पु० ) ब्रह्मच, महातपा, महर्षि, वे ब्रह्मा क मानव पुत्र थे ।

सनना दे० ( क्रि० ) गर्भिणी होना, गर्भ धारण करना, गूँधना ।  
 सनातन तत्० ( पु० ) ब्रह्मा का मानव पुत्र, वे महा तपस्वी हैं, कहते हैं कि वे सर्वदा वाक्य रूप में रहते हैं ।  
 सनाथ तत्० ( गु० ) नाथ सहित, जिसके मानिक और सहायक हो ।  
 सनिया दे० ( पु० ) वस्त्र विशेष, टसर का बना वस्त्र ।  
 सनीचरा दे० ( गु० ) अभागा, अभागी, अथरशी ।  
 सनेह तत्० ( पु० ) प्यार, प्रीति, प्रेम मोह, छाह, दुलार ।  
 सन्त तत्० ( पु० ) साधु, सज्जन, उत्तम मनुष्य, धर्म धार्मिक ।  
 सन्तति तत्० ( अ० ) सन्तान, अपत्य, लड़के बाले ।  
 सन्तस तत्० ( गु० ) दु खित, तपा हुआ, यका हुआ, अन्त, पीड़ित ।  
 सन्तरण तत्० ( पु० ) पैराय, तिराय, हिलाय ।  
 सन्ता दे० ( गु० ) विगडा, नष्ट भट ।  
 सन्तान तत्० ( पु० ) वंश, सन्तति, लड़के बाल, आज कल यह शब्द स्त्री लिङ्ग माना जाता है । हिन्दी क कोशकार तो इस शब्द को पुल्लिङ्ग ही मानते हैं और व्यवकरण में भी इस बात का कोई समाधान नहीं है । औलाद अर्थवाची उर्दू शब्द होने के कारण इने लोम स्त्री लिङ्ग में व्यवहृत करते हैं ।  
 सन्ताप तत्० ( पु० ) शोक पीडा, मानसिक व्यथा ।  
 सन्ती दे० ( पु० ) बदला, बदले में, परिवर्तन में प्रति निधि ।  
 सन्तुष्ट तत्० ( गु० ) तृप्त, प्रसन्न ।  
 सन्तुष्टि तत्० ( अ० ) सन्तोष, तृप्ति, प्रसन्नता, आत्मसुख ।  
 सन्तोष तत्० ( पु० ) आनन्द, हर्ष, तृप्ति, मनस्तोष ।  
 सन्तोषी तत्० ( गु० ) सन्तोष रखने वाले ।  
 सन्धा दे० ( पु० ) पाठ, अध्ययन, अध्याय ।  
 सन्दर्भ तत्० ( पु० ) रचना, प्रबन्ध ।

सम्दर्शन तत् ( ५० ) साक्षात्कार, प्रत्यक्ष, देखाव ।

सन्निग्रह तत् ( ५० ) सन्देहयुक्त, संशयान्वित, भ्रमयुक्त ।

सन्देह तत् ( ५० ) समाचार, वृत्तान्त, संदेश ।

सन्देही तत् ( ५० ) द्रम, घर, सन्देह हाटक, ठा-  
कारा ।

सन्देह तत् ( ५० ) संशय, यद्वा, भ्रम, दुविधा,  
अनिश्चित ज्ञान ।

सन्धान तत् ( ५० ) अन्वेषण, हूँ इना, खोज, यत्ना  
नगाना ।

सन्धाना दे० ( ५० ) आचार ।

सन्धि तत् ( ७० ) मेल, विरोध, हराकर मित्रता  
स्थापन, कतिपय नियमों पर मित्रता स्थापन  
काना । दो पदार्थों के मिलने का स्थान, संयोग,  
दरार, द्वेद, छल, प्रपञ्च, स्वार्थसिद्धि के उपाय ।

सन्ध्या तत् ( ७० ) सायंकाल, दिन और रात्रि  
का सन्धि समय, सन्ध्या के समय की जाने  
वाली उपासना, सन्ध्यावासन ।

सन्नद्ध तत् ( ५० ) उद्यत, तैयार, प्रस्तुत, तत्पर ।

सन्नदा दे० ( ५० ) शब्द विशेष, जो पानी बरसने  
या वायु के चलने से होता है । नीरव, शब्दा-  
भाव ।

सन्नाह तत् ( ५० ) कवच, वस्त्रतर ।

सन्निकट तत् ( ५० ) निकट, पास, सन्निकटान,  
समीप ।

सन्निकर्ष तत् ( ५० ) सन्निकटान, समीप ।

सन्नधि तत् ( ७० ) पास पास, निकट ।

सन्निपात तत् ( ५० ) रोग विशेष, त्रिदोश से उत्पन्न  
रोग ।

सन्निहित तत् ( ५० ) निकट, समीप, पास ।

सन्मान तत् ( ५० ) सम्मान, आदर, सत्कार, मर्पा-  
दासुमार-प्रतिष्ठा ।

सन्मुख तत् ( ५० ) सामना, पुरान्विति, आगे,  
मात्साह, प्रत्यक्ष ।

संन्यास तत् ( ५० ) संवार, विराग, घासनात्याग,  
चतुर्थ आश्रम ।

संन्यासी तत् ( ५० ) संन्यासी, चतुर्थाश्रमी, योगी,  
यती ।

सपन्न तत् ( ५० ) सहायक, सहायता देने वाला,  
सहकारी, साथी । ( ५० ) पत्नी, पत्नी ।

सपदि तत् ( ५० ) गुरुत, शीघ्र, तत्पर, उसी समय  
उसी क्षण, तत्काल ।

सपना तत् ( ५० ) स्वप्न निद्रा के समय विचार में  
आयो हुई बातें ।

सपिण्ड तत् ( ५० ) बान्धव, मात पुरुष के अन्तर्गत  
बान्धव, जिनके जन्म और मरण में आश्रीच  
लगता है ।

सपुत्र तत् ( ५० ) सुपुत्र, मूलत, अच्छा लड़का, आशा-  
कारी बेटा ।

सपोला दे० ( ५० ) चाँव का बूझ ।

सप्त तत् ( ५० ) संख्या विशेष, ७ ।—चत्वारिंशत्  
( ५० ) संख्या विशेष, सात अधिक चालीस, ४७,  
—सौ ( ७० ) सातवीं तिथि ।—दश ( ५० ) सप्त-  
रह, १७ ।—सिं ( ५० ) [ सप्त + अपि ] कश्यप,  
अत्रि, भरद्वाज, विश्वामित्र, गौतम, जमदग्नि और  
अश्वि ये सप्तसिं कहे जाते हैं ।—सागर ( ५० )  
सात मयूत्र, वे ये हैं लवण, दधु, दधि, सीर,  
मधु, महिरा, घृत ।

सप्ताह तत् ( ५० ) सात दिन, अठवारा ।

सप्तति तत् ( ५० ) प्रेम सहित, प्रेम पूर्वक, प्रीति  
के, प्रेम से ।

सप्तम तत् ( ५० ) प्रेम पूर्वक ।

सफरी तत् ( ७० ) प्रत्यक्ष विशेष, एक प्रकार की  
मछली ।

सफल तत् ( ५० ) फलवाह, सार्थक, सिद्धि, फल-  
दायक, फल देने वाला ।

सय तत् ( सर्व० ) सर्व, समस्त, सारा, सम्पूर्ण, पूरा,  
सबकुछ ।

सवल तत्० ( गु० ) बलवान्, प्रौढ, बली, बल-  
शाली ।

सवेर दे० ( अ० ) प्रातःकाल, प्रभात, तड़का, भोर ।

सवेरा दे० ( पु० ) विहान, भोर ।

सजोतर दे० ( अ० ) सर्वथा, सब स्थान में, सब  
द्वार ।

सभय तत्० ( गु० ) भययुक्त, भय सहित, डरा हुआ,  
भीत ।

सभा तत्० ( स्त्री० ) मण्डली, समाज, पञ्चायत,  
उत्सव ।—पति ( पु० ) सभा सञ्चालक, सभा का  
मुखिया, सरपञ्च ।—सद ( पु० ) सभा में बैठने  
वाला, सभा में उपस्थित रहने वाला ।

सधिक तत्० ( पु० ) जुष्ठा खोलन वाला, नाल वाला,  
जुष्ठा का प्रधान ।

समीत तत्० ( गु० ) डरा हुआ, सभय, भयभीत ।

सम्य तत्० ( पु० ) समासद, सभा के योग्य, नाग-  
रिक, भद्र ।

सम तत्० ( अ० ) तुल्य, बराबर, समान, सद्गुण ।

समक्ष तत्० ( अ० ) समीप, सम्मुख, प्रत्यक्ष, सामने ।

समगम तत्० ( गु० ) बराबर, तुल्य ।

समग्र तत्० ( गु० ) समस्त, सारा, सम्पूर्ण ।

समज्या तत्० ( स्त्री० ) सभा, कीर्ति, यश ।

समझ दे० ( स्त्री० ) बुद्धि, धारणा, विचार विश्वास ।

—दार ( गु० ) बुद्धिमान्, विचारवान् ।

समझना दे० ( क्रि० ) छूकना, जानना, धारण  
करना ।

समझाना दे० ( क्रि० ) बतलाना, सिखाना ।

समझावा दे० ( पु० ) सिखावन, समझोती, बुझा-  
वट ।

समझस तत्० ( गु० ) योग्य, उचित ।

समता तत्० ( स्त्री० ) तुल्यता, समानता, बराबरी ।

समदर्शी तत्० ( गु० ) समान दृष्टि, अपचपाती, पञ्-  
पात नहीं करने वाला ।

समधिने दे० ( स्त्री० ) बेटा या बेटो की साथ ।

समधियाना दे० ( पु० ) समधी का स्थान, समधी  
का घराना ।

समधी दे० ( पु० ) पति और पत्नी के पिता चाचा  
में समधी होते हैं । लड़का लड़की के ससुर ।

समन्तात तत्० ( अ० ) चारों ओर, सब तरफ से ।

समन्वय तत्० ( पु० ) लक्षण का लक्ष्य में घटाना,  
मेल, परस्पर, अनुगतता ।

समन्वीत तत्० ( गु० ) समन्वय किया हुआ ।

समवल तत्० ( गु० ) तुल्य बल, समान बल वाला ।

समभाव तत्० ( पु० ) समानता बुद्धि, समता, साम्य,  
तुल्यता ।

समय तत्० ( पु० ) काल, अवसर, बेला ।

समर तत्० ( पु० ) सग्राम, युद्ध, लड़ाई ।

समर्थ तत्० ( गु० ) शक्तिमान्, योग्य, शक्ति-  
शाली ।

समर्थन तत्० ( पु० ) प्रमाण कारण, दृढ़ करण ।

समर्पण तत्० ( पु० ) सौंपना, त्याग, अर्पण, दान ।

समल तत्० ( गु० ) मलयुक्त, मत्त सहित, मलिन,  
मैला ।

समवाय तत्० ( पु० ) भीड़, समूह, समुदाय, नैवा-  
यिका के मत से सम्बन्ध विशेष, उपादान कारण  
और कार्य का सम्बन्ध, यथा—पुत और  
कपडे का ।

समसूत्रपात्र तत्० ( पु० ) डोरी से मापना, जल  
याहना, जल का पता लगाना ।

समस्त तत्० ( गु० ) सब, सारा, सकल, सम्पूर्ण ।

समस्या तत्० ( स्त्री० ) सङ्केत, किसी छन्द का एक  
अन्तिम पाद ।—पूर्ति ( स्त्री० ) किसी छन्द के  
अन्तिम पाद को लेकर उसीके अनुसर रत्नाके  
यनाना ।

समा दे० ( पु० ) समय, काल, अवसर, ताल और  
लय विशेष ।—ई ( स्त्री० ) कैलाप, चौड़ाई ।—कुल  
( गु० ) व्याप, घिरा हुआ । दुःखी, परियान ।

—गम ( पु० ) आगमन, आना, चलाई, मिलाप,

सम्पापम।—चार (५०) अग्नेय, संध्या, कुशम, मङ्गल।—ज (५०) सभा, मण्डली, जातीय संस्था, सङ्घ, समुदाय।—जो (५०) यज्ञस्थी, तथालची, समासद।—धान (५०) उत्तर, यज्ञ का समाधान।—धि (५०) ध्यान, योग की क्रिया विशेष, रवके दो भेद होते हैं: सातियाय, और निरतिगय सातियाय समाधि में ध्याता और ध्येय का बोध रहता है, परन्तु निरतिगय समाधि में वेदान्तियों का अन्तिम अनुभव ही वर्तमान रह जाता है।—देना (या०) मृत साधु संन्यासियों का अन्तिम संस्कार।

समान तत्त्वं (५०) बराबर, तुल्य, एक प्रकार।

—ता (श्री०) गुण्यता, बराबरी।

समाना दे० (क्रि०) पुसना, पीठना, प्रविष्ट होना।

समायन तत्त्वं (५०) समाप्त होना, समाप्ति, सङ्घटता।

समाप्त तत्त्वं (५०) पूरा, हो चुका, सिद्ध।

समाप्ति तत्त्वं (श्री०) अन्त, समायन, सम्पूर्णता, नाश।

समारोह तत्त्वं (५०) जमाव, जमावड़ा, भीड़।

समालो दे० (श्री०) फूलों का गुच्छा, पुष्पस्तवक।

समाथ दे० (५०) समावेश, टीर, स्थान।

समावेश तत्त्वं (५०) वैसार, द्वार, मिलाव, प्रवेश।

समास तत्त्वं (५०) संक्षेप, अभाकरण को एक प्रक्रिया, दो तीन पदों के मेल करने की रीति को समास कहते हैं। समास छः हैं। तत्पुरुष, कर्मधारय, द्विगु, बहुव्रीह, अव्ययीभाव, द्वन्द्व।

समाहित तत्त्वं (५०) समाधिस्थ, स्थिरीकृत, साधन, दत्तोत्तर, उत्तर दिया हुआ, एक रसायनकार विशेष।

समिधि तत्त्वं (श्री०) इन्धन, लकड़ी, जलाने की लकड़ी, होम की लकड़ी।

समीकरण तत्त्वं (५०) बराबर करना, समतल बनाना, योजनानिज का एक गणित, जिसमें दो राशियाँ बराबर की जाती हैं।

समीचीन तत्त्वं (५०) सत्यज्ञ, सचार्थ, सच्चा, उत्तम।

समीप तत्त्वं (५०) पास, निकट, नगीच।

समीपी दे० (५०) पड़ोसी, आत्मीय, स्वजन।

समीर तत्त्वं (५०) वायु, हवा, पवन, प्रकम्पन।

समीहा तत्त्वं (श्री०) चेष्टा, इच्छा, अभिलाष।

समुचित तत्त्वं (५०) योग्य, यथार्थ, उचित, उपयुक्त।

समुच्चय तत्त्वं (५०) समुदाय, एकत्रित, ठेठ, राशि, सङ्ग्रह, संग्रह।

समुदाय तत्त्वं (५०) सङ्घ, समान जाति के लोगों का जमावडा।

समुद्र तत्त्वं (५०) सागर, समुद्र, जननिधि, उदधि, पयोधि।

समुचा दे० (५०) सारा, पूरा, समस्त, आद्यन्त सहित।

समूह तत्त्वं (५०) दल, दूध, जया, समुदाय।

समृद्धि तत्त्वं (श्री०) ऐश्वर्य, विभन्न, धन, सम्पत्ति, बढ़ती।

समेष्ट दे० (श्री०) सङ्कोचन, सिमटन।

समेष्टना दे० (क्रि०) मिकोड़ना, बटोरना, सङ्कोच, करना।

समेत तत्त्वं (५०) सहित, युक्त।

समोना दे० (५०) कुनकुना जल, गरम जल में ठण्डा जल मिला कर ठण्डा किया हुआ जल।

सम्पत्ति तत्त्वं (श्री०) समृद्धि, धन, सम्पदा, सुभाग।

सम्पदा तत्त्वं (श्री०) ऐश्वर्य, धन, विभव।

सम्पन्न तत्त्वं (५०) परिपूर्ण, धनाढ्य, पूरा, सिद्ध।

सम्पर्क तत्त्वं (५०) सम्बन्ध, मिलाव, संयोग, संस्रय।

सम्पाति तत्त्वं (५०) अरुण के पुस और जटापु के उभेष्ट क्षाता, ये दोनों भाई सूर्य को जीतने के लिये उनकी और दौड़े। सूर्य के प्रखर तेज से अटापु का पङ्क-भस्म होने लगा तब सम्पाति ने उसे

अपन पद्व द्वारा ढौप लिया । छोटे भाई की रक्षा करने से सम्पानि स्वयं दग्धप्राय होगये । ये अचेत होकर विन्ध्य पर्वत पर गिर पड़े । चेत होने पर निशाकर मुनि के उपदेश से उन्होंने उठीं पर्वत पर रहना स्थिर किया । सीता की खोज करने वालों को सीता का पता बताने में उनके पद्व पुन जम गये ।

सम्पादक तत्० (पु०) कर्ता, सम्पादयिता, सम्पादन करने वाला, पूरा करने वाला, पूर्ण करने वाला ।

सम्पादन तत्० (पु०) निरूपण, कथन समाप्ति करना, निष्पादन, सङ्गठन, प्राप्ति लाभ, निर्माण ।

सम्पुट तत्० (पु०) डब्बा, डियिया ।—फ (पु०) पिटाटा, पेटी ।

सम्पूर्ण तत्० (पु०) समस्त, परिपूर्ण ।

सम्प्रति तत्० (अ०) अधुना, इदानी, इस समय, अब ।

सम्प्रदान तत्० (पु०) दान, कारक विशेष, चतुर्थी कारक ।

सम्प्रदाय तत्० (पु०) परम्परा का धर्म ।

सम्य-ध तत्० (पु०) मयुक्त, नाता, लगाव ।

सम्बन्धी तत्० (पु०) सम्बन्ध रखने वाला, ताते-दार, नतैत ।

सम्बोधन तत्० (पु०) समुखी करण, कारक विशेष, पहला कारक विशेष ।

सम्मलना दे० (क्रि०) धम्मना, सुधरना, सावधान होना, सावचेत हा जाना ।

सम्भव तत्० (पु०) योग्यता, होने के योग्य, हान-हार, भवितव्य, सम्भावना ।

सम्भालना दे० (क्रि०) प्रबन्ध करना, सुधारना, चौभना ।

सम्भाषना तत्० (स्त्री०) बुविधा, सन्देश, अनि-ष्टय ।

सम्भाषण तत्० (पु०) बातचीत आलाप बोल-याल ।

सम्भोग तत्० (पु०) स्त्री प्रसङ्ग, मैथुन ।

सम्भोजन तत्० (पु०) भोज, भक्षण ।

सम्भ्रम तत्० (पु०) आदर, सम्मान, चषाहट, मय, डर, ब्राभ ।

सम्मत तत्० (पु०) अनुमत, स्वीकृत, ईमित, अभिमत ।

सम्मति तत्० (स्त्री०) इच्छा, स्वीकार ।—पत्र (पु०) राजीनामा ।

सम्मार्जनी तत्० ( स्त्री० ) बढनी, काहू, कूँधी, युहारी ।

सम्पक् तत्० (अ०) अच्छी भाँति स, योग्यता से, ठीक ठीक भलीभाँति ।

सम्राट तत्० (पु०) अधिराजा, चक्रवर्ती, राजा ।

सयान दे० (पु०) ययस्क, यय प्राप्त, अधिक उमर का, अधिक अवस्था वाला ।

सयाना दे० (पु०) चहुद्र, प्रवीण, निपुण, दक्ष ।

सर तत्० (पु०) सरोवर, तालाब, तडाग ।—कण्ठा (पु०) गुण विशेष नरकट ।

सरकना दे० (क्रि०) हटना, दूर जाना, राम कना ।

सरकाना दे० (क्रि०) हटाना, भगाना, खस-काना ।

सरगुण तद्० (पु०) सगुण, गुण सहित, गुण विशिष्ट ।

सरधा तत्० (स्त्री०) मधुमक्षिका, मधुमात्री गहद की मखली ।

सरदा दे० (पु०) खजना विशेष, एक प्रकार का खर्बजा ।

सरन तद्० (पु०) शरण, रक्षक ।

सरना दे० (क्रि०) चलना, हटना, जाना ।

सरपट दे० (पु०) बड़े वेग से दौडना, खूब जोर से दौडना ।—फेंकना ( वा० ) घोड़े की लगाम ढीली करके दौडाना ।

सरपट दे० (पु०) तृण विशेष, पतला सेंटा, कपडा ।

सरल तत्० (पु०) उदार, सच्चा, ईमानदार, निष्क-पट, छलशून्य, साधा । ( पु० ) एक प्रकार के पेड़ का नाम इसे सरों भी कहते हैं ।

सरवर तद् (पु०) तालाव, तड़ाग, भीम, पाखरा ।

सर तद् (पु०) भालाव, सरोवर, तड़ाग ।

सरस तद् (पु०) रघु बाला, रघु युक्त, रसोना ।

सरसराना दे० (क्रि०) रंगता, किरना, चलना ।

सरसराई दे० (श्री०) अधिकार, बहुतायत, उममता ।

सरसिज तद् (पु०) कमल, पद्म, कंचल ।

सरसीकृद् तद् (पु०) कमल, पद्म ।

सरसों दे० (पु०) सर्प, राई, तोरी ।

सरस्वती तद् (श्री०) नदी विशेष, वाणी, भारती,

वाग् देवता, वाक् की अधिष्ठात्री देवी, वागीरवरी,

धारदा ।

सरा दे० (पु०) शराम, डकना, दपना ।

सरारं दे० (श्री०) कोटा सरा, डकनी ।

सराप तद् (पु०) शाय, अशुभ घटना, शय ।

सरापना दे० (क्रि०) शाय देना, गलियाना, गासी

देना ।

सरायक तद् (पु०) जैती, जैन धर्म, जैन धर्मो गृहस्थ ।

सरावन दे० (पु०) हेंगा, जमीन बराबर करने की

तकड़ी ।

सराह दे० (पु०) बखान, बड़ाई, स्तुति, प्रशंसा ।

सराहना दे० (क्रि०) बड़ाई करना, प्रशंसा करना ।

बखान करना ।

सरणिम तद् (पु०) स्वर के चारोड, चवरोह करने

के उर्ष, स्वर ।

सरित् तद् (श्री०) नदी, निम्नग, स्रोता ।—पति

(पु०) समुद्र, सागर ।—सुत (पु०) गङ्गापुत्र,

पौत्र ।

सरिस, सरिसा तद् (पु०) मद्दूय, समान, बरा-

बर, तुल्य ।

सरी दे० (श्री०) बिना फल का सर ।

सरीखा तद् (पु०) समान, तुल्य, बराबर ।

सरीसृप तद् (पु०) जन्तु विशेष, शरट, गिरगिट,

सौर, विकट ।

सरूप तद् (पु०) बराबर, समान रूपवाला,

साकारवाह । (दे०) स्वरूप, प्रकृति, साकार,

साकार धरि ।

सरेखा तद् (श्री०) रलेवा नक्षत्र विशेष, नक्षो नक्षत्र ।

सरेया दे० (पु०) सवसती वस्तु विशेष, जिससे प्रायः

तकड़ी जोड़ी जाती है ।

सरोज तद् (पु०) कमल, पद्म, पद्मज ।—मध्य

(पु०) ब्रह्मा, प्रजापति, विधाता ।

सरोता दे० (पु०) पख विशेष, सुपारी काटने का

पख ।

सरोरुद् तद् (पु०) सरसिज, कमल, कंचल, पद्म ।

सरोरुच तद् (पु०) तालाव, तड़ाग, सरवर,

भीम ।

सरोप तद् (पु०) झुडु, क्रोध युक्त ।

सरोही दे० (श्री०) खूब विशेष, एक प्रकार की

तलवार ।

सरी करं दे० (श्री०) धम करना, दख पेलना, बैठक

करना ।

सरी तद् (पु०) सृष्टि, उत्पत्ति, अच्चाय, अन्नप्रमाण ।

सर्प तद् (पु०) सर्प, अहि, भुवङ्गम, मुङ्ग ।—राज

(पु०) सर्पों का राजा, शेष, वासुकी ।

सर्व (सर्व) तद् (पु०) सब, समस्त, सम्पूर्ण, सारा:

सकल ।—स (पु०) सब जगह जाने वाला, सर्व

व्यापी, सब स्थानों में फैलने वाला ।—सत् (पु०)

सर्वग, सर्वत्र व्याप्त, सर्वव्यापी ।—स, (पु०)

सर्ववैता, परमात्मा, परमेस्वर, एक वेदान्ती

परिग्रह का नाम, जिन्होंने "संसेव-गारीक" नाम

वेदान्त का ग्रन्थ रचनाया है ।—तो भद्र (पु०)

यज्ञ को प्रधान वेदी, जिस पर प्रधान देवता की

स्थापना की जाती है ।—स्र (पु०) सब जगह,

चारों ओर ।—था (पु०) सब प्रकार, सब भाँति ।

—दमन (पु०) राजा दुष्यन्त का पुत्र ।—दा

सदा, हमेशा ।—नाम (पु०) कुछ 'स्र' जिसका

प्रयोग ग्रन्थ शब्दों के भी शब्दों में किया जा

सके ।—नाश (पु०) सत्यानाश, विगाड़ ।—भूत

(पु०) चरावर, विश्व ।—मङ्गला (श्री०) चण्डिका,

पार्वती, दुर्गा ।—मय (पु०) सर्वस्वच्छ, सर्वत्र

व्याप्त ।—स्य (पु०) जमा, पूँजी, मूल धन ।

सर्वस तद् (पु०) सर्वस्व, जमा, धन, समस्त धन ।



सर्वाङ्ग तत्० ( ५० ) : [सर्व + अङ्ग] - समस्त शरीर; सम्पूर्ण अङ्ग।  
 सर्वोपरि तत्० ( ५० ) सब से बड़ा, सर्वश्रेष्ठ।  
 सर्प तत्० ( ५० ) सर्पों, तोरी।  
 सलकी दे० ( श्री० ) कमल की लड़।  
 सलज्ज तत्० ( ५० ) सलज्जा युक्त, सलज्जा सहित; सलज्जा।  
 सलना दे० ( कि० ) विधना, सुभना, गड़ना।  
 सलभ तत्० ( ५० ) शलभ, पतङ्ग, टिड्डी; दीपक पर गिरने वाला, कीड़ा।  
 सलसलाना दे० ( कि० ) सरसराना; खुजलाना; पानी से खूब भीगना, दीवाल आदि में खूब पानी घुस जाना।  
 सलाई ( श्री० ) शलाका, लोहे या किसी धातु की पतला तार, घुमा लगाने की सलाई।  
 सलित्ता दे० ( श्री० ) नदी, सरित, सिन्धु।  
 सलिल तत्० ( ५० ) जल; पानी, अप, नीर।  
 सलोनो दे० ( ५० ) श्रावण की पूर्णिमा; राखी पूर्ण।  
 सलूप तत्० ( ५० ) स्वल्प, अल्प, थोड़ा; बहुत थोड़ा।  
 सलोन दे० ( ५० ) लोम, संहित, चलवण, नमकीन।  
 सलाना दे० ( ५० ) खारा, चार, नमकीन।  
 सलानी दे० ( ५० ) रोचक, रुचिकर, स्वादिष्ट।  
 सल्लम दे० ( ५० ) एक प्रकार का कपड़ा।  
 सल्लु दे० ( ५० ) चूना सीमे का चोम।  
 सल्लो दे० ( श्री० ) थोदली श्री, भोली।  
 सलण तत्० ( ५० ) समान वर्ष, एक जाति वाला, एक समान।  
 सचा दे० ( ५० ) चतुर्थीय प्रप्रिकता के साथ, १३।  
 सचाई दे० ( ५० ) राजपुत्रों की पदवी, जेपुर के राजाओं की पदवी, एक और उच्चकी चौथाई, सचा।  
 सचांग दे० ( ५० ) स्वाङ्ग, भङ्गी, नकल।  
 सचाचना दे० ( कि० ) जीवना, अनुबन्धान करना, पता लगाना, ढूँढना।

सवाद तद्० ( ५० ) स्वाद, मजा।  
 सवाया ( ५० ) सवाई, सवा।  
 सवार तद्० ( ५० ) आख वा घोड़ा सवार, युवता।  
 सवारी दे० ( श्री० ) पान, वाहन।  
 सवैया दे० ( ५० ) सवाई नामने या तालने की वस्तु।  
 सविता तत्० ( ५० ) सूर्य, रवि।  
 सव्य तत्० ( ५० ) बार्वा, वाम, विरुद्ध, समद।  
 -साची ( ५० ) अर्जुन, तीवरा पापदव।  
 सशङ्क तत्० ( ५० ) शङ्का युक्त, शत्रु युक्त, समर, भीती।  
 ससा दे० ( ५० ) शक, जामोश, खरहा।  
 ससुर तद्० ( ५० ) ससुर, पत्निया पती का पिता।  
 सस्ता दे० ( ५० ) स्वल्पमूल्य, थोड़े दाम, मित्रने वाली वस्तु।  
 सह तत्० ( ५० ) साथ, सहित, सङ्ग, समेत। -कार ( ५० ) ग्राम, श्रावण, सहायता। -शामिनी ( श्री० ) श्री, भार्या, पतिव्रता श्री। -चर ( ५० ) चायी, सङ्गी। -चरी ( श्री० ) सली, सहेली, व्यवसाय, घाली। -ज ( ५० ) माई, सहोदर भाई।  
 -देव ( ५० ) राजा पारु का सेनान पुत्र, माप्री के गर्भ और अश्विनी कुमार के और से ये उत्पन्न हुए थे। द्रौपदी के गर्भ में अतनेन नामक इनका एक पुत्र उत्पन्न हुआ था। युधिष्ठिर के राजवृष वर्ष में दक्षिण देश के राजाओं से कर लेने के लिये ये गये थे। अज्ञातवास के समय विराट राजा के यहाँ तन्त्रीवाल नाम धारण करके ये गोरक्षा करते थे। यहाँ प्रस्थान के समय इन्होंने सुमेरु विलस पर गिर कर प्राण त्यागा।  
 (२) अरासन्ध का पुत्र; सहाभागत के युद्ध में ये कौरवों की ओर से लड़ते थे और अभिमन्यु के हाथ से मारे गये। -सरण ( ५० ) साथ, भागी, सती, होना। -योगी ( ५० ) एक व्यवसाय करने वाले; साथी, सङ्गी। -राना ( कि० ) सरभराना, कपना। -रावन ( श्री० ) गुद गुदी, डूँ, डूँ। -लाना ( कि० ) गुदगुदाना, सुहृत्पाना। -वास ( ५० ) एक स्थिति, पड़ोस। -वासी ( ५० ) पड़ोसी, साथ रहने वाला।

सहन दे० (पु०) कपडा विशेष । (तत्०) चमा, सहि-  
 ष्युता ।—हार (पु०) सहने वाला, सहन करने  
 वाला ।  
 सहना दे० (क्रि०) सहन करना, भोगना, भेलना,  
 उठाना, पाना, भुगतना, सन्तोष करना ।  
 सहनार् दे० (स्त्री०) सदा विशेष ।  
 सहसा तत्० (च०) अकस्मात्, अट पट, अकापट,  
 अतर्कित, बिना दिवारे ।  
 सहस्र तत्० (गु०) संख्या विशेष, दस सौ, १००० ।  
 —नयन (पु०) देवराज, इन्द्र ।—चाहु (पु०) कार्त-  
 वीर्य इसको परशुराम जी ने मारा था ।  
 सहस्र तत्० (गु०) सहस्र ।  
 सहस्राब्दी तत्० (पु०) सहस्राब्द, इन्द्र, देवताओं के  
 राजा ।  
 सहस्रानन तत्० (पु०) सहस्रानन, शेषनाग, जिनके  
 हजार मुख हैं ।  
 सहाई तत्० (स्त्री०) सहाय, सहायता, सहायता  
 कारक ।  
 सहाज दे० (गु०) सहनीय, सहन करने योग्य, सहा ।  
 सहानुभूति तत्० (स्त्री०) अनुवेदना, समवेदना, दुःख  
 सुख में भागी होना ।  
 सहाय तत्० (पु०) सहाय, मदद ।—क (पु०)  
 महारा देने वाला, मदद करने वाला ।—ता  
 (स्त्री०) सहाय, सहाय ।  
 सहारा दे० (पु०) सहायता, योगदान ।  
 सहित तत्० (गु०) साथ, सङ्ग, समेत, एकत्र ।  
 सहिराना दे० (क्रि०) सहाराना, झुनसाना ।  
 सहिष्णु तत्० (गु०) सहन करने वाला ।  
 सही दे० (च०) शुद्ध, निष्पक्ष बोधक शब्द ।  
 सहजना दे० (क्रि०) सौजन्य, सम्मानना ।  
 सहेली दे० (स्त्री०) सखी, व्यवस्था, साथी, साथ रहने  
 वाली ।  
 सहावर तत्० (पु०) सहज, संग, एक भक्ति का  
 शब्द ।  
 सहोदरी दे० (स्त्री०) सौतर ।  
 सहा तत्० (गु०) सहने योग्य, सहाय ।

सा दे० (च०) सादृश्य बोधक, सम्यार्थक, सादृश्यां ।  
 साज दे० (पु०) सोपने हारा, शिष्ट ।  
 साँजगी दे० (स्त्री०) साँगी, गाड़ी का भण्डार ।  
 साँर दे० (पु०) स्वामी, प्रभु, भगवान् ।  
 साँक तद्० (स्त्री०) गङ्गा, भय, कारा, रवास का  
 रोग ।  
 साँकर, साँकरी दे० (स्त्री०) गृहला, सिकरी ।  
 साँकल दे० (स्त्री०) सिकरी, भ्रूषण विशेष, जो गने  
 में पहना जाता है ।  
 साँख दे० (पु०) पुत, सेत, वृच विशेष, सखुषा का  
 वृच ।  
 साँग दे० (स्त्री०) बह्नी, सेत, भाला, एक प्रकार का  
 वृच ।  
 साँगी दे० (स्त्री०) गाड़ी में का भण्डार ।  
 साँगूस दे० (पु०) एक प्रकार की मछली ।  
 साँघर दे० (पु०) पुनर्विवाहिता का पुत्र, पहले  
 पति का लड़का ।  
 साँच दे० (गु०) सत्य, सच्चा, ठीक, उचित, संपूर्ण, ।  
 साँचा दे० (स्त्री०) चड़िया, गहना या बर्तन ढालने  
 की यस्तु ।  
 साँक दे० (स्त्री०) सन्ध्या, सायङ्काल ।  
 साँभा, साँभी दे० (स्त्री०) पुतली का खेल ।  
 साँटा दे० (पु०) कोड़ा, कशा, पैना ।  
 साँठ दे० (गु०) संयोग, सम्बन्ध, गुट ।  
 साँठना दे० (क्रि०) सटाना, लगाना, जोड़ना ।  
 साँड़ दे० (पु०) पथर, दैन चिकनियों, पैत ।  
 साँड़नी दे० (स्त्री०) कूटनी ।  
 साँड़ा दे० (पु०) एक प्रकार का जन्तु ।  
 साँति दे० (च०) सन्तो, संदना, साँतिर ।  
 साँप दे० (पु०) सर्प, भुजग, भुजङ्ग, वरुण, चदि ।  
 साँमर दे० (पु०) लवण, एक प्रकार का मूल,  
 एक नगर विशेष, जहाँ साँमर निमक उत्पन्न  
 होता है ।  
 साँयला तद्० (गु०) संयामन, कृष्ण वर्ण का, काला  
 रङ्ग ।  
 साँधा दे० (पु०) अन्न विशेष ।

साँस तद्द० ( ५० ) श्वास, प्राण, नाक से आने जाने वाला वायु ।

साँसना दे० ( क्रि० ) डाँटना, ताड़ना, धमकाना, मुधारने के लिये दृष्ट देना ।

साँसा दे० ( पु० ) संशय, सन्देह, कष्ट, भटकाव ।

साँसारिक तद्द० ( गु० ) संसार सम्बन्धी, संसार का, संसार में उत्पन्न होने वाला ।

साकार तद्द० ( गु० ) आकार सहित, आकृति विशिष्ट ।

साक्षात् तद्द० ( अ० ) प्रत्यक्ष, सामने, आँखों के आगे, प्रत्यक्ष, प्रकट ।

साक्षी तद्द० ( गु० ) गवाह, साखी ।

साख तद्द० ( स्त्री० ) शाखा, आश्रित, अधीन, साखी ।

साखी तद्द० ( गु० ) साक्षी, गवाह ।

साग तद्द० ( पु० ) शाक, भाजी, तरकारी ।

सागर तद्द० ( पु० ) समुद्र, उदधि, पयोधि, अर्णव ।

सागू दे० ( पु० ) काष्ठ विशेष ।

साङ्ख्य तद्द० ( पु० ) कपिल मुनि प्रणीत शास्त्र विशेष, दर्शन शास्त्र ।

साङ्ग तद्द० ( गु० ) साङ्ग सहित, समाप्त, पूर्ण ।

साज दे० ( पु० ) सामग्री, सजाने का सामान ।

साजन दे० ( पु० ) सज्जन, प्रिय, प्रियतम ।

साजना दे० ( क्रि० ) पहिनना, बनाना, सजावट करना ।

साझा दे० ( पु० ) भाग, हिस्सा, अंश, किसी काम में अनेक मनुष्यों का भाग ।

साझी दे० ( पु० ) साथी, भागी, हिस्सादार, अंशक ।

साठी दे० ( स्त्री० ) एक प्रकार का चावल, यह चावल साठ दिनों ही में पक कर तैयार हो जाता है इसी से इसका नाम साठी पड़ा है ।

साडी दे० ( स्त्री० ) साटिका, स्त्रियों के पहनने का कपड़ा ।

साडू दे० ( पु० ) पत्नी का बहनोई ।

साढे दे० ( गु० ) साहु, चाधा के साथ, चाधा सहित ।

सात तद्द० ( गु० ) संख्या विशेष, सात, ७ ।— पाँच

करना ( वा० ) कसमस करना, इधर उधर जाना, संशयित होना, सन्देहान्वित होना ।

सात्विक तद्द० ( गु० ) सत्व गुण युक्त, सत्व गुण विशिष्ट, साधु, सरल, सज्जन ।

साथ दे० ( अ० ) सङ्ग, सहित, समेत ।— देना ( वा० ) सहायता देना, सहाारा पहुँचाना ।—वाला ( पु० ) साथी, सङ्गी ।

साथरी दे० ( स्त्री० ) पत्तों का बिलौना, चटाई, तृण निर्मित शय्या ।

साथिन दे० ( स्त्री० ) सहेली, सखी ।

साथी दे० ( पु० ) सङ्गी, मेली, मित्र, बन्धु, साथ का पढ़ने वाला, सुहृत् ।

सादर तद्द० ( गु० ) आदर सहित, सम्मान पूर्वक ।

सादृश्य तद्द० ( पु० ) समानता, तुल्यता, बराबरी ।

साध दे० ( स्त्री० ) इच्छा, चाह, अभिलाष ।

साधक तद्द० ( पु० ) साधन करने वाला, धार्मिक, अनुष्ठान कर्ता, अभ्यासकारी, तपस्वी ।

साधन तद्द० ( पु० ) उपाय, यत्न, उद्योग, वेद्य, अभ्यास, अनुष्ठान, व्याकरण के कारणकारक का दूसरा नाम ।

साधना तद्द० ( स्त्री० ) साधन, अनुष्ठान, तपस्या, सिद्ध करने का उपाय । ( क्रि० ) सिद्ध करना, अभ्यास करना, बान डालना, साधन करना ।

साधनीय तद्द० ( गु० ) साधन करने योग्य, उत्तम कर्म, जिसका साधन करना उपयोगी हो ।

साधारण तद्द० ( गु० ) सामान्य, सहज, सरल, आम, जन समाज ।— धर्म ( पु० ) वह धर्म जिसके पालन का अधिकार सभी को है । दे दे ई— अहिंसा, सत्य, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय नियंत्रण, दम, उमा, आज्ञा और दान ।

साधित तद्द० ( गु० ) साधा गया, किया गया, सिद्ध, निष्पादित, पूर्ण किया हुआ ।

साधु तद्द० ( पु० ) सज्जन, परोपकारी व्यक्ति, एक सम्प्रदाय के मनुष्य ।

साध्य तद्द० ( गु० ) साधनीय, साधन करने योग्य ।

सत्त्व तद्गुण ( श्री० ) विज्ञान, त्रिषु पर-सत्त्व-नेत्र  
क्रिये जाते हैं।—सुकाना ( पा० ) रथारे से बात  
करना, इच्छित करना ।

सामी दे० ( श्री० ) पशु भोजन विशेष, भूषा में पानी  
पत्तो आदि बाल कर जो बनाई जातो है ।

सात्वत तद्गुण ( पु० ) डाइस देना, धीरज धैर्याना,  
समझाना, सुकाना ।

साक्षा दे० ( क्रि० ) मिलाना, सूँघना, मोंड़ना ।

सापराध तद्गुण ( गु० ) अपराध विविध, अपराधयुक्त,  
अपराधी, दोषी, कलहनी, सद्योप ।

साफल्य तद्गुण ( पु० ) सफलता, फल विधि ।

सावर दे० ( पु० ) पशु विशेष, मारहसिंघा ।

सावृत दे० ( गु० ) अक्षत, बिना दूटा फूटा, समुचा,  
समस्त ।

साम तद्गुण ( पु० ) वेद विशेष, मीसरा वेद, गाथी  
जाने वाली चरचा । ( दे० ) संध्या, सांक, सुसज  
के सुँह पर का लोहा ।

सामग्री तद्गुण ( श्री० ) सामान, चीज़, यष्टु, उपक-  
रण, अस्त्रवाह ।

सामन्त तद्गुण ( पु० ) अधीनीभूत राजा, माण्डलिक  
राजा ।

सामयिक तद्गुण ( गु० ) कालोचित, समय के अनुकूल ।

सामर दे० ( पु० ) लवण विशेष, नीन ।

सामर्थ्य तद्गुण ( पु० ) शक्ति, बल, पराक्रम, योग्यता ।

सामर्थ्यो तद्गुण ( गु० ) समर्थ, बलवाह, पराक्रमी,  
शक्तिमाह ।

सामर्थ्य तद्गुण ( पु० ) शक्ति, योग्यता, पराक्रम,  
बल ।

सामा दे० ( पु० ) सामान, सामग्री, भोजन सामग्री,  
बहुविध भोजन, जमाव, मण्डली की शोभा ।

सामाजिक तद्गुण ( गु० ) समासद, सभ्य, समाज  
सम्बन्धी, समाज विषयक ।

सामाख्य तद्गुण ( पु० ) साधारण, मध्यम स्थिति का,  
समनसार ।

सामान्या तद्गुण ( श्री० ) गणिका, देवियां, व्यवस्था-  
रिणी, नायिका विशेष ।

सामी दे० ( श्री० ) धाम, सामने; चाने, प्रत्यक्ष ।

सामीप्य तद्गुण ( गु० ) समीपता, निकटता; अदूरी,  
घनिष्ठता ।

सामुद्रिक तद्गुण ( पु० ) विद्या विशेष, जिसमें हस्त-  
रेखा आदि का विचार किया जाता है ।

साम्भृता दे० ( पु० ) साधान्, सामने का भाग, सामे,  
प्रत्यक्ष ।

सायङ्काल तद्गुण ( पु० ) संध्याकाल, दिन और रात्रि  
का संधिकाल, सांक ।

सार तद्गुण ( पु० ) छाद, लोहा, हीरा, धनु का  
उत्तम भाग ।

सारङ्ग तद्गुण ( पु० ) राग विशेष, मेरु, मयूर; सर्प,  
मेघ, बादल, हरिण, जल, पानी, एक देश का नाम,  
बातक, पथीहा, हाथी, राजहंस, सिंह, कौबल,  
कौकिल, कामदेव, रङ्ग विशेष, वर्षा, धनुष, समर,  
मधुमत्तिका । ( श्री० ) मधु की मक्खनी, कबुर कमल,  
धामरण, सुवर्ण, सुवप, दत्त, योग्य, राजि, दीपक,  
श्री, शंख, वस्त्र ।

सारङ्गी दे० ( श्री० ) वाद्य विशेष ।

सारथी तद्गुण ( पु० ) रहवाह, रथ चलाने वाला, गाथी,  
हाँकने वाला ।

सारना दे० ( क्रि० ) सरकाना, हटाना, दूर करना ।

सारस तद्गुण ( पु० ) दक्षिण विशेष, एक पक्षी का  
नाम ।

सार दे० ( गु० ) सम्पूर्ण, समस्त, समुचा ।

सारथ्य तद्गुण ( गु० ) [ सार + थ्य ] सुव्यवस्था,  
प्रधान धर्म ।

सारिका तद्गुण ( श्री० ) मोता, मैना, पक्षी विशेष ।

सारी दे० ( श्री० ) सारी, खियों के पहनने  
योग्य कपड़ा ।

सार्धक तद्गुण ( गु० ) धर्म सहित, धर्म युक्त, सकल ।

साधर्मिक तद्गुण ( गु० ) राजा, महाराजा, सज्जनों,  
राजा ।

साल तद्द० (पु०) साल, एक प्रकार की लकड़ी, वृक्ष विशेष ।

सालन दे० (पु०) बना हुआ मान, मास की तरकारी छेदन, भेदन, वेधन ।

सालना दे० (क्रि०) भेदना, चुभना, गड़ना ।

सालसा दे० (पु०) शीघ्र विशेष, खींचा हुआ थक ।

साला तद्द० (पु०) श्यामक, पत्नी का भाई ।

साली तद्द० (स्त्री०) श्याली, माले की बहिन, स्त्री की बहिन ।

सालू, सालूर दे० (पु०) एकलङ्ग, छून, साल रङ्ग का कपड़ा विशेष ।

सालोतरी तद्द० (पु०) शलिहोत्र, घोड़े का वैद्यक ।

सावक तद्द० (पु०) शायक, शिशु, बच्चा, लड़का, बालक ।

सावकरण तद्द० (पु०) श्यामकर्ण, एक प्रकार का उत्तम घोड़ा ।

सावकाश तद्द० (पु०) शयकाश, शयसर, फुरसत, छुट्टी ।

सावज दे० (पु०) बनैला पशु, अहेर में मिला पशु ।

सावधान तद्द० (पु०) सतर्क, चौकस, सावचेत, कार्यों में जागृत ।—ता (स्त्री०) सतर्कता ।

सावधानी तद्द० (स्त्री०) सावधानता, चौकसी, सावचेती ।

सावन तद्द० (पु०) श्रावण, एक महीने का नाम ।—हरे न भादों सूखे (वा०) सदा एक समान ।

सावन्त तद्द० (पु०) सामन्त, मौरवर्लीक राजा, अधिराज, करद राजा, चक्रवर्ती के अधिकार-युक्त राजा ।

सास, सासु तद्द० (स्त्री०) श्वशुर, श्वशुर की स्त्री, स्त्री या पति की माता ।

साह दे० (पु०) बनिया, महाजन, (रोजगारी) सेठ ।

साहस तद्द० (पु०) उद्योग, उल्हाह, सीरता, कार्य-त्परता, कार्यों में अनिश्चय मनोयोग ।

साहमी तद्द० (पु०) उद्योगी, उल्हाही, साहसयुक्त, निर्भीक, निहट ।

साहाय्य तद्द० (पु०) सहायता, उपकार, सहाय ।

साहित्य तद्द० (पु०) उपकरण, सामान, मामूली, विद्या विशेष, काव्य अलङ्कार आदि ।

साही दे० (स्त्री०) जन्तु विशेष, जिसके शरीर में काँटे होते हैं ।

साहूकार दे० (पु०) महाजन, सेन देन करने वाला, कारदार करन वाला, सैदागरी, वाणिज्य ।

साहूकारी दे० (स्त्री०) महाजनी, सेनदेन, कारबार, सैदागरी, वाणिज्य ।

सिंह तद्द० (पु०) मृगेन्द्र, केसरि, मृगराज ।—द्वार (पु०) फाटक, राजा के महल का बड़ा द्वार ।—नाद (पु०) गम्भीर ध्वनि, सिंह का शब्द ।

सिंहनी दे० (स्त्री०) सिंही, सिंह की स्त्री ।

सिंहलद्वीप तद्द० (पु०) द्वीप, विशेष, लङ्का द्वीप, इसे सीसोन भी कहते हैं ।

सिंहासन तद्द० (पु०) राजासन, राजगद्दी, विचार का आसन ।

सिंहिका तद्द० (स्त्री०) राक्षसी विशेष, राहु की माता ।

सिकता तद्द० (स्त्री०) घाघू, रेत, बालुका ।

सिकरी, सिकली दे० (स्त्री०) साकल, श्राद्धवर्ण विशेष ।

सिख दे० (पु०) जाति विशेष, नानक पन्थ के अनुयायी ।

सिखनावट दे० (स्त्री०) शिखा, सीख ।

सिखर तद्द० (पु०) शिखर, पर्वतशृङ्ग, पहाड़ की चोटी, ऊँचे मकानों का ऊपरी भाग ।

सिखरन तद्द० (पु०) शिखरिणी, दही में दूध, चीनी और मसाले आदि—हाल करके बनाया, जामा है ।

सिखलाना दे० (क्रि०) पठाना, सिखाना, शिक्षा देना, बताना ।

सिक्कार दे० (खी०) सिक्का, सिक्कावट, पड़ाई ।  
 सिक्खाना दे० (क्रि०) बतलाना, सिखलाना ।  
 सिक्खारी दे० (गु०) समग्र, समस्त, सम्पूर्ण, भारतीय ।  
 सिक्का दे० (गु०) रणसिंगा, छुरही, वाद्य विशेष ।  
 सिक्कार तद्गु० (गु०) गृहकार, जोभी, संज्ञावट ।  
 सिक्कारना दे० (पु०) संज्ञाना, शोभा बनाना, संज्ञा-  
 वट करना ।  
 सिक्कारिया दे० (पु०) गृहकार करने वाला, पुजारी,  
 पूजा करने वाला, पूजक ।  
 सिक्कारी दे० (खी०) पशुओं का आभूषण विशेष,  
 जो उनके सींगों पर लगाया जाता है ।  
 सिक्खाना दे० (क्रि०) पकाना, रींथना, उयालना,  
 दुःख देना ।  
 सिद्ध दे० (खी०) उन्मत्तता, पागलपन ।  
 सिद्धा दे० (पु०) बावला, उन्मत्त, बौद्धाह, पागल ।  
 सित तद्गु० (गु०) धवल, श्वेत, शुक्ल, धोला ।  
 सितरी दे० (खी०) स्वेद, पचीना, झूद ।  
 सिद्ध तद्गु० (पु०) देवयानि विशेष, देवता का एक  
 भेद । योग की आठ सिद्धियाँ निम्न प्राप्त हैं ।  
 समल (गु०) पूरा, समान, पका, तैयार, बना  
 हुआ, साधित किया हुआ । (पु०) साधु, योगी,  
 तपस्वी ।  
 सिद्धान्त तद्गु० (पु०) दृढ़ निश्चय, वादि और प्रति-  
 वादि द्वारा, युक्ति तर्क से सिद्ध किया हुआ  
 धर्म ।  
 सिद्धान्ती तद्गु० (पु०) भीमसक, विचारक ।  
 सिधारना दे० (क्रि०) जाना, चला जाना, उठना,  
 स्थान त्याग करना ।  
 सिनक दे० (खी०) पोंटा, नेटा, नासिको मस, किंकि,  
 जो नाकों से निकलता है ।  
 सिनकना दे० (क्रि०) नाक साफ करना, छींकना ।  
 सिन्दूर तद्गु० (पु०) उपधातु विशेष, जिसका भस्म  
 दवा के काम में आता है । सिरों का तोहारा  
 चिन्ह ।

सिन्धु तद्गु० (गु०) समुद्र, चागर, पयोधि, एक नद  
 का नाम, जिसका दूसरा नाम घटक । नान  
 विशेष, सिन्धप्रदेश, एक रागिणी का नाम ।  
 सिन्धुर तद्गु० (पु०) हाथी, हस्ति, करी, गज ।  
 —गामिनी (खी०) सुन्दर जाति वाली स्त्री,  
 जिसकी गति गज के समान हो ।  
 सिप्र तद्गु० (पु०) निदाघ, जल, पचीना, स्वेद,  
 कणिका ।  
 सिप्रा तद्गु० (खी०) नदी विशेष, जो उज्जैन के  
 पास है ।  
 सिपाह दे० (पु०) सिपाही, घोड़ा, लड़ने वाला,  
 तिलङ्गा ।  
 सिमितना दे० (क्रि०) सिक्कना, बद्धना, संकुचित  
 होना ।  
 सिमाना तद्गु० (पु०) सीमा, मँड़, अक्षि, सीवाना ।  
 सियाना दे० (गु०) प्रयोण, चगुर, निपुण, अभिज्ञ,  
 दक्ष ।  
 सियार तद्गु० (पु०) युवाव, गीदड़ ।  
 सिर तद्गु० (पु०) मस्तक, माथा, कपाल ।—उठना  
 (वा०) स्वामी का विद्रोह करना, सिर में पीड़ा  
 होना ।—करना (वा०) प्रारम्भ करना ।—फाटना  
 (वा०) प्रसिद्ध होना, नामी होना, उद्यत होना,  
 प्रसृत होना ।  
 सिरका दे० (पु०) आक्षय विशेष ।  
 सिरकी दे० (खी०) सरकरहे की छावनी ।  
 सिरखप दे० (गु०) मनचला, प्रणी, चपनी टेक पर  
 घटक ।  
 सिरखपी दे० (खी०) दादस, जोड़िम ।  
 सिरचढ़ा दे० (गु०) चमकती, चढ़कारी ।  
 सिरजना दे० (क्रि०) रचना, उल्लेख करना,  
 बनाना ।  
 सिर फोड़ियल दे० (खी०) भगड़ा, लड़ाई ।  
 सिरसिंगा दे० (गु०) भगुङ्गा, दहा करने वाला ।  
 सिरहाना दे० (पु०) सिर की चोर ।  
 सिरा दे० (गु०) रग, नल ।

सिरात दे० (क्रि०) ठपडा, सीतल, सीत।  
 सिराना दे० (क्रि०) बन पड़ना, होना, ठपडा करना।  
 सिलपट दे० (गु०) चौपट, उजाड़, बराबर, सम-तल।  
 सिलयष्टा दे० (पु०) सिल लोड़ा।  
 सिलघाना दे० (क्रि०) सिधाना, सिलाना, सिनाई करना।  
 सिललाई दे० (स्त्री०) सीने का काम, सीने की मजूरी।  
 सिलाना दे० (क्रि०) ध्याताना, कपड़े बनवाना।  
 सिली दे० (स्त्री०) पथरी, सिल, शान।  
 सिवाना दे० (पु०) सीमा, क्षेप, चवधि।  
 सिसकना दे० (क्रि०) रोना, धीरे धीरे रोना।  
 सिसकी दे० (स्त्री०) कूक, मुटकी।  
 सिहरना दे० (क्रि०) कपना, कम्पित होना, थर थराना।  
 सिहरा दे० (पु०) मुकुट, मैद, किरिट।  
 सिहराऊ दे० (गु०) जड़ाव, जड़वन।  
 सिहराना दे० (क्रि०) धाकना, धान्त होना, धक जाना।  
 सींक दे० (स्त्री०) तृण, घास, नरकट।  
 सींका दे० (पु०) रेखा, लकीर, धारी।  
 सींकिया दे० (गु०) धारीवाल, डपहीदार।  
 सींग तद्० (पु०) शूद्र, विषाण, पशुओं के सींग।  
 सींगड़ा दे० (पु०) सींग का बना हुआ पात्र, जिसमें याद दखा जाता है।  
 सींगा दे० (पु०) नरसिंगा, तुपही, बाघ विशेष।  
 सींगी दे० (स्त्री०) तुमड़ी, सींग, मछली।  
 सींचना दे० (क्रि०) सीचना, पाटना, पानी देना।  
 सींचाई दे० (स्त्री०) पानी देने का काम, पानी से पाने का काम।  
 सींची दे० (स्त्री०) सींचने का समय।

सीख तद्० (स्त्री०) शिवा, पाठ, उपदेश, शिक्षा-पठ।  
 सीखना दे० (क्रि०) शिक्षा ग्रहण, अध्यास करना, पढ़ना।  
 सीचना दे० (क्रि०) परीक्षा, सिंचाई करना।  
 सीजना दे० (क्रि०) पसीजना, रिमना, निखरना, निकलना।  
 सीटी दे० (स्त्री०) मुँह से बजाया हुआ यन्त्र।  
 सीठना दे० (क्रि०) ब्याह का गीत।  
 सीठा दे० (गु०) रसहीन, फीका, बसार, नीच।  
 सीठी दे० (स्त्री०) धूद, छानन, निकम्मा भाग।  
 सीढ़ी दे० (स्त्री०) घोषान, पैड़ी, चारोह, निवेनी।  
 सीतला तद्० (स्त्री०) शीतला, माता, गोटी, चेतक।  
 सीता तद्० (स्त्री०) जानकी, वैदेही, मिथिला के राजा जनक की कन्या, श्रीरामचन्द्र की पत्नी, हनुमान का फल।—पति (पु०) रामचन्द्र।—फल (पु०) फल विशेष, शरीफ।  
 सीधा दे० (गु०) सोफा, चवक, निरक्षण, युद्ध, सच्चा, कोरा चक्र।  
 सीना दे० (क्रि०) सिलवाई करना, तागना, टोकना, तुपना।  
 सीपी दे० (स्त्री०) चोंचा, शहू।  
 सीमा तद्० (स्त्री०) हद्द, सिवाना, चवधि, डौड़।  
 —चिवादः (पु०) श्रुतारह प्रकार के न्याय के अन्तर्गत एक न्याय।  
 सीय दे० (स्त्री०) सीता, जानकी, वैदेही।  
 सीरा दे० (पु०) भोजन विशेष, मोहन भाग।  
 सीला दे० (गु०) मीला, भोगी हुआ, शीतल।  
 सीवन दे० (पु०) सिलवाई, जोड़, मेल।  
 सीस तद्० (पु०) शीश, सिर, मस्तक, कपाल।  
 सीसक, सीसा तद्० (पु०) धातु विशेष, स्वनाम प्रसिद्ध, धातु, काच।

सु तत् ० (उप०) उत्तमता बोधक ।  
 सु घाना दे० (क्रि०) महकाना, युवायना ।  
 सुकचाना दे० ( क्रि० ) संकुचित होना, सिमटना, बरना, भयपाना, संकुचाना ।  
 सुकटा दे० (गु०) दुर्घल, दुबला, पतला ।  
 सुकटी दे० (श्री०) भूषी महली ।  
 सुकड़ना दे० (क्रि०) सिमटना, संकुचित होना ।  
 सुकर तत् ० (गु०) श्लथ परिचय से करने योग्य ।  
 सुकाल तत् ० ( गु० ) सुचमत्, अच्छी कृपु, उत्तम समय ।  
 सुकुमार तत् ० (गु०) मनोहर, सुन्दर, कोमल ।  
 सुकृत तत् ० (गु०) पुण्य, उत्तम कर्म ।  
 सुकृती तत् ० (गु०) पुण्यवत्, पुण्यवान, धर्मिणा, धर्मिण्ड ।  
 सुख तत् ० (गु०) चाराम, कृप, यान्ति, इन्द्रियों की तृप्ति ।—चैन (या०) विद्याय, भवकाय, श्रवण ।  
 —तल (पु०) कृते का तला ।—द (गु०) सुखदायक, चानन्ददायक ।—दास (गु०) एक जाति का धान ।—लाना (क्रि०) सुखाना, मूला करना ।  
 सुखाला दे० (गु०) सहज, सुख से, चानन्द से ।  
 सुखित तत् ० (गु०) सुखी, सुख प्राप्त, चानन्दित ।  
 सुखिया दे० (गु०) सुखी, सुखित, सुखयुत, चानन्दो, विलासी ।  
 सुखी तत् ० (गु०) सुख करने वाला ।  
 सुख्याति तत् ० (श्री०) कीर्ति, यश, प्रसिद्धि, नाम, नामवरी, प्रतिष्ठा, मर्पादा ।  
 सुगति तत् ० (श्री०) उत्तम गति, अच्छी श्रवणा ।  
 सुगन्ध तत् ० ( श्री० ) अच्छी गाम, महक, शोभन, गन्ध ।  
 सुगन्धी तत् ० ( गु० ) सुगन्ध, महक, यास, अच्छी वास ।  
 सुगम तत् ० (गु०) सहज, सरल, सुकर, श्लथ परिचय से करने योग्य ।—ता (श्री०) सरलता ।  
 सुग्रीव तत् ० (गु०) चातरराज, बालि का छोटा भाई ।

सुघड़ दे० (गु०) सुन्दर, मनोहर, सुहौल ।  
 सुच दे० (गु०) निर्मल, स्वच्छ, मलरहित ।  
 सुचरित तत् ० (गु०) उत्तम चरित्र वाला, सदान्वारी, धर्मात्मा ।  
 सुचकना दे० ( क्रि० ) विस्मित होना, अचम्भित होना, आश्चर्य में होना ।  
 सुचित्त तत् ० (गु०) सुगम, निश्चिन्ता, चिन्ता भूत्य, सावधान ।  
 सुचितार्ई दे० (श्री०) सावधानी, सुचितता ।  
 सुचेत तद् ० (गु०) सावधान, चौकस, सतर्क ।  
 सुजन तत् ० (गु०) शायुजन, भगवान्, सदान्वारी, परोपकारी ।—ता (श्री०) मायुता, परोपकारिता, भलमनसी ।  
 सुजान तद् ० (गु०) ज्ञानवाद्, ज्ञाता, चमिष्ठ, प्रवीण, दक्ष ।  
 सुजाना दे० (क्रि०) फुलाना, यड़ाना, मोटवाना ।  
 सुभाना दे० (क्रि०) दिखाना, बताना, स्मरण करना, समझाना ।  
 सुटुकन दे० (श्री०) लट्ट, बड़ी, लाठी, लडिया ।  
 सुटकना दे० ( क्रि० ) संकुचित होना, निगलना, हूटना ।  
 सुटि दे० (गु०) सुन्दर, मनोहर, उत्तम ।  
 सुडकी दे० (श्री०) गृही को डोरी छोड़ना ।  
 सुडप दे० (श्री०) कथन, यास, कौर ।  
 सुडपना दे० (क्रि०) निगलना, चाटना, घुसना ।  
 सुडुकना दे० (क्रि०) सुटुकना, घुसना, चाटना ।  
 सुडौल दे० (गु०) सुन्दर, शोभन, सुन्दर आकार वाला, सुघड ।  
 सुत तत् ० (पु०) पुत्र, बेटा, लड़का, आत्मन, तन ।  
 सुतरा दे० (पु०) बलम, कड़ा, वाला, चापुषण दि विशेष ।  
 सुतरी दे० (श्री०) मूल की बनी रस्ती ।  
 सुता तत् ० ( श्री० ) कन्या, तनया, इहिता, पुत्री, लड़की, बेटा ।



**सुतार दे० (पु०)** बटई, खातो, जाति विशेष, जिनका सक्की का काम करना व्यवसाय है, अच्छा समय, सुयोग्य, अनुकूल समय ।

**सुथन या सूथन दे० (पु०)** पायजामा, पैर में पहनने का कपड़ा ।

**सुथरा दे० (गु०)** साफ, स्वच्छ, अच्छा, अनूठा ।  
—साही (पु०) नानक साही साधु ।

**सुदर्शन तत्० (पु०)** विष्णु के चक्र का नाम, पुष्प (गु०) सुदृष्टि, जो देखने में मनोहर हो ।

**सुदामा तत्० (पु०)** एक दरिद्र ब्राह्मण, श्रीकृष्ण का पढ़ने के समय का साथी, श्रीकृष्ण ने उसे बहुत धन देकर धनी बनाया था ।

**सुदि तत्० (शु०)** शुद्ध पत्र, उजाला पाल ।

**सुदिन तत्० (पु०)** अच्छे दिन, भला अवसर, सौभाग्य ।

**सुदृढ़ तत्० (पु०)** कठोर, सुदृढ़, घटल ।

**सुदूर्य तत्० (गु०)** उत्तम, दर्शनीय, दिखने योग्य, मनोह, मनभावन ।

**सुध दे० (स्त्री०)** स्मरण, चेत, ज्ञान, चिन्ता।—सुध समझ, चेत, ज्ञान, शूक ।—लेना (धा०) समोचार पूँछना, याद करना, स्मरण करना ।

**सुधरना दे० (क्रि०)** धनना, सम्हाल जाना, बँन जाना ।

**सुधा तत्० (स्त्री०)** अमृत, पीशुप, अमी, भून, कसई, मकान पोतने का रवेत, द्रव्य विशेष ।  
—कर (पु०) चन्द्रमा ।

**सुधा दे० (शु०)** महिग, समेत, युक्त ।

**सुधारना दे० (क्रि०)** बनाना, सवारना, सजाना ।

**सुधी तत्० (पु०)** बुद्धिमान्, अनुभवी, परिहृत, विज्ञ ।

**सुन तद्० (गु०)** शून्य, रिक्त, रीता।—कातर (पु०) उर्वविशेष ।—घहरी (स्त्री०) रोग विशेष, कुट रोग का पूर्वरूप ।—सर (पु०) एक प्रकार का गहना ।—सान (धा०) एकात्म, उजाड़, वीरान ।  
—हरा (गु०) नेने का ।

**सुनाना दे० (क्रि०)** श्रवण करना, निवेदन करना, जनाना ।

**सुनार दे० (पु०)** जाति विशेष, जो गहने बनाता है, स्वर्णकार ।

**सुनारी दे० (स्त्री०)** सुनार का काम, सुनार की विद्या ।

**सुन्दर तत्० (गु०)** सुकल्प, रूपवान, मनोहर ।—ता (स्त्री०) मनेहरता, सुकृपता ।

**सुन्दरी तत्० (स्त्री०)** रूपवती, सुकृपा ।

**सन्धाघर दे० (स्त्री०)** गन्ध विशेष, मिट्टी की गन्ध, सुवास ।

**सुपथ तत्०** उत्तम मार्ग, अच्छा रास्ता, सुमार्ग, सुपन्थ ।

**सुपात्र तत्० (गु०)** योग्य, उत्तम पात्र, सज्जन, उत्तम जन ।

**सुपारी दे० (स्त्री०)** पूँगी फल, प्रसिद्ध फल विशेष ।

**सुपास दे० (पु०)** सुविधा, सुभीता ।

**सुपुत्र तत्० (पु०)** अच्छा लड़का, सत्पुत्र ।

**सुप्त तत्० (गु०)** निद्रित, सोया हुआ ।

**सुफल तत्० (गु०)** उत्तम फल, लाभदायक, लाभकारी, सफल ।

**सुबुद्धि तत्० (स्त्री०)** उत्तम बुद्धि, प्रवीणता ।

**सुभग तत्० (पु०)** सुन्दरपति, धीरा, प्रिय ।

**सुभगा तत्० (स्त्री०)** सौभाग्यवती, सुधवा ।

**सुभट तत्० (पु०)** उत्तम घोड़ा, वीर, शूर, लडाँका सिवाही ।

**सुभाव तद्० (पु०)** स्वभाव, अच्छा स्वभाव ।

**सुमीता दे० (स्त्री०)** अवसर, अवकाश, सुविधा ।

**सुमङ्गल तत्० (पु०)** शुभ, कल्याण, कुशल ।

**सुमति तत्० (स्त्री०)** सुबुद्धि, भगमनशी, अच्छी बुद्धि ।

**सुमन तत्० (पु०)** फूल, पुष्प, कुसुम ।

**सुमन्त तत्० (पु०)** राजा दशरथ को पत्निय, कार्त्वी, सुमरन दे० (पु०) स्मरण, याद, भजन ।

**सुमरना दे० (क्रि०)** स्मरण करना, जपना, नाम लेना, भजन करना ।

सुमिरनी दे० (खी०) छोटी माता, स्मरण करने के लिये २७ दानों की बनी माता ।

सुमित्रा तत्० (खी०) राजा : दशरथ की छोटी पटरानी, लक्ष्मण और शत्रुघ्न की माता ।

सुमेरु तत्० (गु०) पर्यंत विशेष, उत्तर ध्रुव, केन्द्र, मध्य स्थान, माता की बड़ी मनिया ।

सुम्बा दे० (खी०) तैप या बन्दूक की टसनी, मात्र ।

सुयश तत्० (गु०) सुप्रसंगि, कीर्ति, यश ।

सुर तत्० (गु०) देवता, देव, अमर, सूर्य ।—गुरु (गु०) बृहस्पति ।—मिलाना (वा०) बार्मों का सुर मिलाना ।

सुरङ्ग तत्० (खी०) संध, जमीन के भीतर का मार्ग ।

सुरत दे० (खी०) गुण, पाद, चेत, स्मृति, (तत्०)

(गु०) मेघन, क्षीप्रवह ।—तक (गु०) देववृक्ष, कल्प वृक्ष ।

सुरती दे० (खी०) तन्वाङ्क, तमाङ्क, पैनी ।

सुरतीला दे० (गु०) स्मरणकर्ता, मायधान, सुचेत ।

सुरभि तत्० (गु०) सुगन्ध ।

सुरमा दे० (गु०) अन्न विशेष ।

सुरस तत्० (गु०) रस-पुष्क, उत्तम रसवाना ।

सुर सुरना दे० (क्रि०) सरसराना, रेंगना ।

सुरसुरी दे० (खी०) गुद गुदी, विहान, धार धारट ।

सुरा तत्० (खी०) मद्य, मदिरा, चांसव, शराव ।

सुरूप तत्० (गु०) सुन्दर, सुन्द, सुदीप्त ।

सुरेतिन दे० (खी०) अविवाहिता भार्या, रएती ।

सुलंगना दे० (क्रि०) लहकना, लहराना, जलना, पुं चा निकलना ।

सुलगाना दे० (क्रि०) बालना, लहकाना, जलाना ।

सुलभना दे० (क्रि०) सुघटना, खुलना ।

सुलभाना दे० (क्रि०) उकेलना, सुघटाना, खोलना ।

सुलभ तत्० (गु०) सहज, सुगम, आसान, सहज ।

—ता (खी०) सुगमता ।

सुलाना दे० (क्रि०) गयन काना, पैड़ाना ।

सुवचन तत्० (गु०) विद्यद वचन, प्रिय वाणी ।

सुवर्ण तत्० (गु०) सुनाति, अच्छा, उत्तम, श्रेष्ठ, सुन्दर, (गु०) सेना, काञ्चन ।

सुघारा तत्० (गु०) सुगन्ध ।

सुवीया दे० (गु०) सेने वाला ।

सुशील तत्० (गु०) उत्तम स्वभाव वाला ।

सुपुसि तत्० (खी०) अवस्था विशेष, योगियों की ध्यानावस्था ।

सुसकारना दे० (क्रि०) पुचकारना, फनकारना, फुकियाना ।

सुसताना दे० (क्रि०) विश्राम करने, बकायट उतारना ।

सुस्त दे० (गु०) गिघित, दोना, निर्यात, दुबला ।

सुस्य तत्० (गु०) नीरोग, अच्छा, भला, चला ।

सुहराना दे० (क्रि०) घनोटना, भूमि में लोटाना ।

सुहाग तद्० (गु०) सौभाग्य, सधवापन ।

सुहागिन दे० (खी०) सधवा स्त्री, जिसका पति धर्म-मान हो ।

हागा दे० (गु०) टहान, चार विशेष ।

सुहाता दे० (गु०) अभीष्टित, बट, चाहीता, मन-भावन ।

सुहाना दे० (क्रि०) अच्छा मानू म होना ।

सुहावना दे० (क्रि०) रुचना, अच्छा लगना ।

सुहृद तत्० (गु०) मित्र, बन्धु, हितचिन्तक, दिह ।

सुम्ना दे० (गु०) तेजा, सुग्गा, बड़ी सुई ।

सुई दे० (खी०) कपड़े सीने की सलाई, सुची ।

सुधना दे० (क्रि०) महकना, धास लेना ।

सुधनी दे० (खी०) हुलास, नास, सुधने, को तमाकू ।

सूर दे० (खी०) सुग्गी, मीन, अवाकू, नीरवाना ।

सूण्ड तद्० (खी०) गुद, हाथी का कर ।

सूण्डी दे० (गु०) जाति विशेष, जो मद्य बेचने वालों का काम करते हैं, कलाम, कलवार ।

सूतना दे० ( क्रि० ) तोड़ना, बटोरना, एकत्रित करना ।

सूँस दे० ( पु० ) जल जन्तु विशेष ।

सूकी दे० ( स्त्री० ) रुपये का चोया हिस्सा, चौबछरी ।

सूक्ष्म तत्० ( पु० ) पतला, छोटा, बारीक ।—ता ( स्त्री० ) पतलापन, छोटापन ।—दर्शी ( पु० ) चतुर, गुणो, प्रवीण ।

सूखछुडी दे० ( स्त्री० ) रोग विशेष, चयी रोग ।

सूखना दे० ( क्रि० ) नीरस होना, रस निकल जाना । विखुलना, बिगड़ना, पराय होना, कुम्हलाना ।

सूखा दे० ( पु० ) नीरस, रसहीन, शुष्क, गला, सड़ा, ( पु० ) शकास, महँगी ।

सूचक तत्० ( पु० ) बोधक, ज्ञापक, यताने वाला, जतलाने वाला ।

सूचना तत्० ( स्त्री० ) जनाना, चेतायनी, विज्ञापन । —पत्र ( पु० ) नोटिस, विज्ञापन ।

सूचित तत्० ( पु० ) जताया गया, विज्ञापन दिया हुआ ।

सूचीपत्र तत्० ( पु० ) बोधपत्रिका, बोधनपत्र, जनाने वाला पत्र, बीजक ।

सूज दे० ( स्त्री० ) फूल, फुलाव, सेज, फूलन ।

सूजना दे० ( क्रि० ) फूलना ।

सूजी दे० ( स्त्री० ) मोटा घाटा, दर दर घाटा ।

सूझ दे० ( स्त्री० ) दृष्टि, दशन, निरख, परख बुद्धि ।

सूझना दे० ( क्रि० ) माझूम होना दीख पडना, दृष्टि गत होना ।

सूत तद्० ( पु० ) सूत्र, तागा, धागा, डोरा, ( तत्० ) सारथी, रथवाह, एक पौराणिक ध्यास ये नैमिषारण्य में रहते थे और महाभारत आदि की कथा सुनाते थे । इनकी बलदेव ने मार डाला था ।

सूतक तत्० ( पु० ) शगौच, जनन और भरण की शयुद्धि ।

सूतना दे० ( क्रि० ) सोना, निद्रा जाना ।

सूतल या सुतल तत्० ( पु० ) पाताल विशेष ।

सूतली दे० ( स्त्री० ) सन की रस्सी, डोरी ।

सूतिका तत्० ( स्त्री० ) प्रसूती स्त्री, ठपथी स्त्री ।

सूती दे० ( पु० ) सूत का धना, सूती ।

सूत्र तत्० ( पु० ) सूत, धागा, तागा, डोरा, रानि, ठपथ्या, प्रथन्ध ध्याकरण के सूत्र ।—धार ( पु० ) नाटकाचार्य, नाटकका प्रथन्ध ।

सूथन दे० ( पु० ) पायजामा, सुण ।

सूधा दे० ( पु० ) भोला सज्जन, निष्कपट ।

सूना दे० ( पु० ) शून्य, उजाड़, रीता, खाली ।

सून तत्० ( पु० ) पुत्र, श्यामज, तनय, बेटा, शत्रुज, छोटा भाई रवि, सूर्य ।

सूप तद्० ( पु० ) सूर्य, शनाज पछोरने का एक वर्तन जो मिरकी का बनता है । ( तत्० ) दाल ।—कार ( पु० ) रनेईया, पाचक ।

सूम दे० ( पु० ) कृपण, कञ्जूस, मक्खी बूस ।

सूर सूर्य, रवि, ( दे० ) शन्धा, बिन चौख का, वीर, बहादुर ।—दास ( पु० ) एक कवि का नाम, ये शन्धे थे, इनका बनाया ग्रन्थ सूरसागर है । हिन्दी के कवियों में इनका आसन ऊँचा है ।

—मलार ( पु० ) एक रागिणी का नाम ।

सूरज तद्० सूर्य—गहन ( पु० ) सूर्यग्रहण —मुखी ( पु० ) एक फूल के पौदे का नाम ।

सूरन तद्० ( पु० ) शूरण, कन्द विशेष ।

सूरमा दे० ( पु० ) वीर, शूर ।—पन ( पु० ) वीरता, बहादुरी ।

सूरा दे० ( पु० ) शूर, वीर, घोड़ा, यथा:—

सूरा रण में जाय के लोहा करो निगड्ड ।

ना मोहि चढे रडापरी ना तोहि चढे कलड्ड ॥

सूर्य तत्० ( पु० ) रवि ।—चशी ( पु० ) राजपूतों की एक जाति ।

सूर्योदय तत्० ( पु० ) प्रातःकाल प्रभात ।

सूल तद्० ( पु० ) सूल, रोग विशेष, बाधगोला, दशा, हाल, श्रवस्था ।

सूली तद्० ( स्त्री० ) एक प्रकार का काँटा, प्राचीनकाल में जिस पर चढा कर अपराधी को प्राण दण्ड दिया जाता था ।

सूली दे० (खी०) एक प्रकार का कपड़ा ।  
 सूक्ष्म दे० (गु०) छोड़ा गरम, कुन कुना ।  
 सूहा दे० (गु०) लाल, लाल रङ्ग, अखटा, रक्त, एक प्रकार का रङ्ग ।  
 सुष्ठितत्त्वं (खी०) उत्पत्ति, जन्म, उद्भव, संसार की रचना ।  
 से दे० (घ०) अर्थादान बोधक, माय, सङ्ग ।  
 सेकना दे० (क्रि०) गरमाना, गरम करना, उष्ण करना ।  
 सेत दे० (घ०) बिना दाम, बिना मूल्य, बेदाम का —मैत (घ०) यों ही बिना दाम का ।  
 सेध दे० (गु०) छेद, चोरी करने के लिये दीवार में किया हुआ छेद ।  
 सेधा दे० (गु०) नमक, लाहोरी निमक ।  
 सेधिया दे० (गु०) भेड़िहर, गड़रिया, गवालियर महाराज की अन्न ।  
 सेधी दे० (गु०) खजूर का रस ।  
 सेचन तत्त्वं (गु०) छिड़काव, सींचना ।  
 सेज दे० (गु०) शय्या, शयन, पगलू, विहीना, विन्तर ।  
 सेठ तत्त्वं (गु०) अष्ट, साहूकार, महाजन, कोठी धाल ।  
 सेत तत्त्वं (गु०) धवल, सफेद, खेत, शुद्ध, यथा—  
 सेत सेत सय ही भलो सेतो मलो न केय ।  
 नारि रमे ना रिपु हरे, हेतो क्लेश विशेष—  
 सेतना दे० (क्रि०) झुगाना, संशुष्य करना ।  
 सेतु तत्त्वं (गु०) बौध, पुल, वृत्त विशेष ।—घन्ध (गु०) तीर्थ विशेष, जिसे राम ने खनाया ।  
 सेना तत्त्वं (खी०) फटक दल, कैत्र, लखर ।—पति (खी०) सेनानी, सेना का अध्यक्ष ।  
 सेनानी तत्त्वं (गु०) सेनापति, स्कन्द, कार्तिक्य, कार्तिक स्वामी ।  
 सेम दे० (गु०) तरकारी विशेष ।  
 सेमल दे० (गु०) वृक्ष विशेष, सेमर का पेड़ ।

सेर दे० (गु०) प्रच्य, परिमाण, विशेष, सेलह छटाक का परिमाण ।  
 सेराना दे० (क्रि०) ठपटा करना, निराना ।  
 सेलखड़ी दे० (खी०) सफेद मिट्टी, जिसे लड़के लिखते हैं ।  
 सेला दे० (गु०) साफा, जरी का सुह्रन्था, धर्ती, भाला, एक प्रकार का वाद्य ।  
 सेव दे० (गु०) फल विशेष, एक प्रकार का फल ।  
 सेवक तत्त्वं (गु०) भृत्य, नौकर, चाकर ।  
 सेवकाई तत्त्वं (खी०) नौकरी, चाकरी, सेवा ।  
 सेवड़ा दे० (गु०) जैन भिक्षुक, नमकीन पकवान ।  
 सेवती दे० (खी०) एक फूल का नाम ।  
 सेवना दे० (क्रि०) सेवा करना, पालना पोसना, अण्डा पोसना ।  
 सेवा तत्त्वं (खी०) नौकरी, चाकरी, टहल ।  
 सेहथना दे० (क्रि०) चवर, बुलाना, चवर हौकना ।  
 सेकड़ा दे० (गु०) शतक, शतकड़ा, मौसंध्या से परिमित ।  
 सेन दे० (खी०) मटकी, चाँस या अन्न का दशारा ।  
 सेना सेनी दे० (घ०) दशारे से बात करना ।  
 सेन्धव तत्त्वं (गु०) सव्य विशेष, साहीरी नीन, घोड़ा, अरव ।  
 सेन्य तत्त्वं (गु०) सेना, फटज ।  
 सेसांभ दे० (घ०) मन्थ्या का प्रारम्भ, मन्थ्या के प्रारम्भ में ।  
 सेहरन दे० (गु०) समारं, अटाय, स्थान ।  
 सेभर दे० (गु०) वृत्तिका गृह, जिस घर में प्रियं जन्मते हैं ।  
 सेभ्रा दे० (गु०) साग विशेष ।  
 सेई दे० (घ०) वही ।  
 सेों दे० (घ०) से, साय, प्रमथाया में अर्थादान का चिन्ह, रायप ।

सूतना दे० ( क्रि० ) तोहना, घटोरना, एकत्रित करना ।

सूँस दे० ( पु० ) जल जन्तु विशेष ।

सूकी दे० ( स्त्री० ) रुपये का चौथा हिस्सा, चौथली ।

सूक्ष्म तत्त्वं ( पु० ) पतला, छोटा, धारीक ।—ता ( स्त्री० ) पतलापन, छोटापन ।—दर्शी ( पु० ) चतुर, गुणो, प्रवीण ।

सूखछुडी दे० ( स्त्री० ) रोग विशेष, जयों रोग ।

सूखना दे० ( क्रि० ) नीरस होना, रस निकल जाना ।  
बिमुखना, खिगडना, खराब होना, कुम्हलाना ।

सूखा दे० ( पु० ) नीरस, रसहीन, शुष्क, गला, सड़ा, ( पु० ) अकाल, महीनी ।

सूचक तत्त्वं ( पु० ) बोधक, ज्ञापक, यताने वाला, जतलाने वाला ।

सूचना तत्त्वं ( स्त्री० ) जनाना, चेतावनी, विज्ञापन ।  
—पत्र ( पु० ) नोटिस, विज्ञापन ।

सूचित तत्त्वं ( पु० ) जताया गया, विज्ञापन दिया हुआ ।

सूचीपत्र तत्त्वं ( पु० ) बोधपत्रिका, बोधनपत्र, जनाने वाला पत्र, बीजक ।

सूज दे० ( स्त्री० ) फूल, फुलाव, मेज, फूलन ।

सूजना दे० ( क्रि० ) फूलना ।

सूजी दे० ( स्त्री० ) मोटा आटा, दर दर आटा ।

सूक्ष्म दे० ( स्त्री० ) दृष्टि, दशन, निरख, परख बुद्धि ।

सूक्ष्मना दे० ( क्रि० ) माफूम होना दीख पडना, दृष्टि-गत होना ।

सूत तद्द० ( पु० ) सूत्र, तागा, धागा, डोरा, ( तत्त्वं ) सारथी, रथवाह, एक पौराणिक कथास ये नैमिषारण्य में रहते थे और महाभारत आदि की कथा सुनाते थे । इनको वलदेव ने मार डाला था ।

सूतक तत्त्वं ( पु० ) अशौच, जनन और मरण की अशुद्धि ।

सूतना दे० ( क्रि० ) सेना, निद्रा जाना ।

सूतल या सुतल तत्त्वं ( पु० ) पाताल विशेष ।

सूतली दे० ( स्त्री० ) सन की रस्वी, डोरी ।

सूतिका तत्त्वं ( स्त्री० ) प्रसूती स्त्री, ठगयी स्त्री ।

सूती दे० ( पु० ) सूत का धना, सूती ।

सूत्र तत्त्वं ( पु० ) सूत्र, धागा, तागा, डोरा, रीति, व्यवस्था, प्रबन्ध कथाकरण के सूत्र ।—धार ( पु० ) नाटकाचार्य, नाटक का प्रबन्ध ।

सूथन दे० ( पु० ) पाषजामा, मुषा ।

सूधा दे० ( पु० ) भोला सक्कन, निरकपट ।

सूना दे० ( पु० ) शून्य, उजाड़, रोता, खाली ।

सून तत्त्वं ( पु० ) पुत्र, श्यामज, मनय, बेटा, अनुज, छोटा भाई, रवि, सूर्य ।

सूप तद्द० ( पु० ) शूर्प, अनाज पछोरने का एक वर्तन जो सिरकी का बनता है । ( तत्त्वं ) दाल ।—कार ( पु० ) रसोईया, पाचक ।

सूम दे० ( पु० ) कृपण, कञ्जूस, मक्ली चूस ।

सूर सूर्य, रवि, ( दे० ) अन्धा, बिन आँस का, धीर, बहादुर ।—दास ( पु० ) एक कवि का नाम, ये अन्धे थे, इनका बनाया ग्रन्थ सूरसागर है । हिन्दी के कवियों में इनका आसन ऊँचा है ।

—मलार ( पु० ) एक रागिणी का नाम ।

सूरज तद्द० सूर्य—गहन ( पु० ) सूर्यग्रहण —मुक्ती ( पु० ) एक फूल के पौदे का नाम ।

सूरन तद्द० ( पु० ) शूरण, कन्द विशेष ।

सूरमा दे० ( पु० ) धीर, शूर ।—पत ( पु० ) वीरता, बहादुरी ।

सूरा दे० ( पु० ) शूर, वीर, योद्धा, ययाः—

सूरा रण में जाय के लोहा फरो निरङ्क ।

ना मोहि चढे रडापरी ना तोहि चढे कलङ्क ॥

सूर्य तद्द० ( पु० ) रवि ।—वशी ( पु० ) राजपूतों की एक जाति ।

सूर्योदय तत्त्वं ( पु० ) प्रातःकाल, प्रभात ।

सूल तद्द० ( पु० ) मूल, रोग विशेष, बाधोगला, दशा, हाल, अवस्था ।

सूली तद्द० ( स्त्री० ) एक प्रकार का काँटा, प्राचीनकाल में जिस पर चढ़ा कर अपराधी को प्राण दण्ड दिया जाता था ।

सूती दे० (खी०) एक प्रकार का फल।  
 सुसुम दे० (गु०) घोड़ा गरम, फुल कुना।  
 सूहा दे० (गु०) भाग, भास रङ्ग, चमटा, रक्त, एक प्रकार का रङ्ग।  
 सुहित्त० (खी०) उत्पत्ति, जन्म, उद्भव, संसार की रचना।  
 सू दे० (घ०) अणुदान बंधक, माय, मङ्ग।  
 सूकना दे० (क्रि०) गरमाना, गरम करना, उष्ण करना।  
 सूत दे० (घ०) बिना दाम, बिना मूल्य, बेदाम का—सूत (घ०) यों ही बिना दाम का।  
 सूध दे० (पु०) छेद, चोरी करने के लिये दोषार में किया हुआ छेद।  
 सूधा दे० (पु०) नमक, लाहारी तिमर।  
 सूधिया दे० (पु०) भेड़हर, गड़रिया, गवालियर महाराज की छद्म।  
 सूधी दे० (पु०) लज्जुर का रस।  
 सूचन तत्त्वं (पु०) छिड़काव, सूचना।  
 सूत्र दे० (पु०) शय्या, शयन, पलङ्ग, बिहीना, चिन्तन।  
 सूठ तत्त्वं (पु०) अष्ट, माहकार, महाजन, फोटी घाल।  
 सूत तत्त्वं (गु०) धवल, सफेद, रवेत, मुक्त, यथा—  
 सूत सूत सब ही भवेत् सूती भलो न केव।  
 नारि रमे ना रिपु रुदे, हेतौ क्रुम विधेयं  
 सूतना दे० (क्रि०) लुगाना, संशुष्य करना।  
 सूतु तत्त्वं (पु०) माँस, पुन, वृक्ष विशेष—घन्ध (पु०) तीर्थ विशेष, जिसे राम ने चनाया।  
 सूना तत्त्वं (खी०) कटक दण, फाज, लखर—पति (खी०) सेनानी, सेना का अध्यक्ष।  
 सेनानी तत्त्वं (पु०) सेनापति, स्कन्द, कार्तिकेय, कार्तिक स्वामी।  
 सेम दे० (पु०) तरकारी विशेष।  
 सेमल दे० (पु०) वृक्ष विशेष, सेमर का पेड़।

सेर दे० (पु०) प्रत्य, परिमाण, विशेष, मोलहें खटाक का परिमाण।  
 सेराना दे० (क्रि०) ठपडा करना, सिराना।  
 सेलखड़ी दे० (खी०) सकिद मिट्टी, जिससे लड़के लिपते हैं।  
 सेला दे० (पु०) चाफा, जरी का मुँहबन्धा, चर्खी, भाला, एक प्रकार का वाद्य।  
 सेध दे० (पु०) फल विशेष, एक प्रकार का फल।  
 सेधक तत्त्वं (पु०) मृत्य, नौकर, चाकर।  
 सेधकाई तत्त्वं (खी०) नौकरी, चाकरी, सेवा।  
 सेधडा दे० (पु०) जैन भिक्षु, नमकोन पकवान।  
 सेवती दे० (खी०) एक फूल का नाम।  
 सेवना दे० (क्रि०) सेवा करना, पालना पोसना, चण्डा पोसना।  
 सेवा तत्त्वं (खी०) नौकरी, चाकरी, टहल।  
 सेहधना दे० (क्रि०) चयन, चुनाना, चयन हाँकना।  
 सेकड़ा दे० (गु०) शतक, शतकड़ा, मौसमिया से परिमित।  
 सेन दे० (खी०) मटकी, चाँच या चङ्गुल का दगारा।  
 सेना सेनी दे० (घा०) दरारे से बात करना।  
 सेन्धघ तत्त्वं (पु०) लवण विशेष, लाहारी नीन, घोड़ा, अरथ।  
 सेन्य तत्त्वं (पु०) सेना, कटक।  
 सेसांभ दे० (घ०) सन्ध्या का प्रारम्भ, सन्ध्या के प्रारम्भ में।  
 सेहरन दे० (पु०) सम्राट, चटाव, स्थान।  
 सेअर दे० (पु०) घृतिका गृह, जिस घर में खियाँ जनती हैं।  
 सेआमा दे० (पु०) घाग विशेष।  
 सेाई दे० (खी०) वही।  
 सेा दे० (घ०) से, माँस, प्रथमाषा में अणुदान का चिन्ह, शय्य।

सोंटा दे० (पु०) क्षेपटी मोटी लठी, डण्डा ।  
 सोंठ तद्० (पु०) गुण्डित, मूत्रा अदरख ।  
 सोंठुराय दे० (पु०) कंजूस, कृपण ।  
 सोंधना दे० (क्रि०) मट्टी से कपडा मलना,  
 दूध के बर्तन को गरम करना ।  
 सोंधा दे० (गु०) सुगन्ध द्रव्य विशेष ।  
 सोंह दे० (स्त्री०) सौगन्ध, शपथ ।  
 सोंही दे० (गु०) सामने, चागे, प्रत्यक्ष ।  
 सोखना दे० (क्रि०) शोषण करना, सूसना, धूमन  
 करना ।  
 सोग दे० (पु०) दुःख, चिन्ता, शोक, शोक ।  
 सोच दे० (पु०) शोक, दुःख, चिन्ता ।  
 सोझा दे० (गु०) सीधा, सामने, सदा ।  
 सोत तत्० (पु०) धारा, प्रवाह, श्रोत ।  
 सोदर तत्० (पु०) सहोदर, एक माँ के लड़के ।  
 सोध तद्० (स्त्री०) खोज, आन्वेषण, पता ।  
 सोधना दे० (क्रि०) शोधन करना ।  
 सोन तद्० (पु०) शोण, एक नद का नाम ।—हरा  
 (गु०) सोने का, सोने का बना ।  
 सोना तद्० (गु०) सुवर्ण, काञ्चन, हिरण्य ।—माखी  
 (स्त्री०) श्रौषध विशेष ।  
 सोनिया दे० (पु०) सेनार, सुवर्णकार, सेना  
 शोधक ।  
 सोपान तत्० (पु०) सीढी, निम्नो ।  
 सोभना दे० (क्रि०) सजना, सोहना, अच्छा दिखाई  
 देना ।  
 सोम तत्० (पु०) चन्द्र, चन्द्रमा, विधु, इन्द्र, लता  
 विशेष, जो पहले के महर्षियों की दृष्टि से बड़े  
 षादर की यस्तु थी ।—चारें (पु०) चन्द्रवार,  
 दूसरा दिन ।  
 सोरठ दे० (पु०) एक रागिनी का नाम ।  
 सोरठा दे० (पु०) छन्द विशेष । इसके पहले और  
 तीसरे पाद में ११ दूसरे और चौथे पाद में १३  
 मात्राएँ होती हैं । दोहा को उलट कर पढ़ने से यह  
 छन्द हो जाता है ।

सोह दे० (स्त्री०) शोभा, सजावट ।  
 सोहना दे० (क्रि०) शोभना, अच्छा मामूम होना,  
 सजना ।  
 सौ दे० (गु०) दग दहाई, सख्या विशेष, शत,  
 १०० ।  
 सौगन्ध दे० (पु०) सोंह, शपथ ।  
 सौपना दे० (क्रि०) समर्पण करना, धरना, रखना ।  
 सौफ दे० (स्त्री०) श्रौषध विशेष ।  
 सौरा दे० (पु०) कालख, काजल, भूल ।  
 सौगन्ध दे० (पु०) शपथ, किरिया, ज्ञान ।  
 सौच तद्० (पु०) शौच, शुद्धता, गुद्धि ।  
 सौजन्य तत्० (पु०) सुजनता, साधुता, साधुपन ।  
 सौते, सौतिन दे० (स्त्री०) सपत्नी ।  
 सौतेला दे० (गु०) सौत से जन्मा ।  
 सौन्दर्य तत्० (पु०) सुन्दरता, मनोहरता ।  
 सौभाग्य तत्० (पु०) भागवानी, अच्छा भाग्य ।  
 सौर तत्० (गु०) सूर्य सम्बन्धी ।  
 सौरभ तत्० (पु०) सुगन्ध, सुवास ।  
 स्कन्ध तत्० (पु०) कौंध, कन्धा, पेड़ का धड़, जहाँ  
 से शाखा निकलती है ।  
 स्खलन तत्० (पु०) पतन, गिरन, गिरना ।  
 स्खलित तत्० (गु०) गिरा, पतित । (पु०) अगुद्धि ।  
 स्तन तत्० (पु०) दूँची, पयोधर, घन ।  
 स्तब्ध तत्० (पु०) कुण्ठित, हल्ला बजका, रुका  
 हुआ ।  
 स्तम्भ तत्० (पु०) खम्भा, रुकाव, अटकाव, धम्भा ।  
 स्तम्भन तत्० (पु०) रुकाव, अटकाव, तन्त्र विशेष  
 कामशास्त्र की क्रिया विशेष ।  
 स्तव तत्० (पु०) स्तुति, प्रशंसा, बखान, गुण-  
 गान ।  
 स्तावक तत्० (पु०) गुच्छा, फूलों का गुच्छा ।  
 स्तावक तत्० (पु०) स्तुतिकर्ता, भाट, वाण,  
 मन्दी ।  
 स्तिमित तत्० (गु०) स्तब्ध, स्थिर, अचञ्चल ।  
 स्तुति तत्० (स्त्री०) बखान, स्तव ।

स्त्रुत्य तत्त्वं (गु०) स्त्रुति योग्य, स्तवनीय, वज्रान के योग्य ।  
 स्त्री तत्त्वं (गु०) स्तव, स्त्रुति ।  
 स्त्री तत्त्वं (स्त्री०) माती, लुगारं, वनिता ।—घन (गु०) द्रायन, दहेज, दहेज में खी के मिला दान ।  
 स्त्रीण तत्त्वं (गु०) स्त्री वना, स्त्री के अधीन ।  
 स्त्रीगत तत्त्वं (गु०) यका, क्षिपा, रोक ।  
 स्त्रीपति तत्त्वं (गु०) मित्रवी, बर्द्ध ।  
 स्त्रुत तत्त्वं (गु०) भूमि, धुली भूमि ।  
 स्त्रुत्य तत्त्वं (गु०) दूठा वृत्, शिव, महादेव ।  
 स्त्रुत तत्त्वं (गु०) डैर, टाय, ठिकाना, घर ।  
 स्त्रुतपन्न तत्त्वं (गु०) प्रतिनिधि, एक के स्थान पर काम करने वाला ।  
 स्त्रुत तत्त्वं (गु०) रखना, धरना, बैठाना ।  
 स्त्रुतपना तत्त्वं (स्त्री०) प्रतिष्ठा, श्रुति, देव आदि को स्त्रुतपना करना ।  
 स्त्रुतपित तत्त्वं (गु०) प्रतिष्ठा किया हुआ, रखा गया ।  
 स्त्रुती तत्त्वं (स्त्री०) पाकघात्र, हाँडी बर्द्ध, बट-सोही, पत्तीनी ।  
 स्त्रुत तत्त्वं (गु०) चक्कन, नहीं चलने वाला ।  
 स्त्रुति तत्त्वं (स्त्री०) स्थान, ठिकाना, टहराव ।  
 स्त्रुत तत्त्वं (गु०) भवल, घटन ।  
 स्त्रुत तत्त्वं (गु०) मोटा, पीवर, तोंदिल ।  
 स्त्रुत तत्त्वं (गु०) स्थिरता, भवलता ।  
 स्त्रुत तत्त्वं (गु०) स्त्रुतता, मोटापन ।  
 स्त्रुतक तत्त्वं (गु०) ब्रह्मचर्य प्रन समाप्त करके गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने वाला ।  
 स्त्रुत तत्त्वं (गु०) नहाना, नहान, चपगाहन ।  
 स्त्रुत तत्त्वं (गु०) स्नेह, प्रेम विक्रानदं, विक्रानाहट ।  
 स्त्रुत तत्त्वं (गु०) कम्प, चञ्चलता ।  
 स्त्रुत तत्त्वं (स्त्री०) हिंस, डाह, जलन, दूसरे की उन्नति देख दुःख पाना ।

स्पर्श तत्त्वं (गु०) हुना, सुहावट ।  
 स्पर्श तत्त्वं (गु०) माक, प्रकाश, सहज, शक्ति ।  
 स्पर्शा तत्त्वं (स्त्री०) इच्छा, अभिलाष, चाह ।  
 स्पर्शक तत्त्वं (गु०) विज्ञान परमा, स्वच्छ पाषाण विशेष ।  
 स्पर्शक तत्त्वं (गु०) विना, फूलाहुषा, प्रकट, प्रकाश ।  
 स्पर्शक तत्त्वं (गु०) प्रकाशन, श्रितन, फूटना ।  
 स्पर्शक तत्त्वं (स्त्री०) धक्कन फुलन, फरकना ।  
 स्पर्शक तत्त्वं (गु०) फोडा, फुंसी, धाव ।  
 स्पर्शक तत्त्वं (गु०) कामदेव, मदन, मन्मथ ।—हर (गु०) महादेव, शिव ।  
 स्पर्शक तत्त्वं (गु०) सुध, नेत्र, स्मृति, याद ।  
 स्पर्शक तत्त्वं स्पर्शक करने वाला, बोधक ।  
 स्पर्शक तत्त्वं (गु०) घोडा हँसना, मुठफाना ।  
 स्पर्शक तत्त्वं (स्त्री०) स्पर्शक, याद, धर्मशास्त्र, मनु-स्मृति, याज्ञवल्क्य आदि ।  
 स्पर्शक दे० (गु०) निपुणता, बुद्धिमत्ता, चतुरता ।  
 स्पर्शक दे० (गु०) शिवान, चतुर ।  
 स्पर्शक दे० (गु०) शृंगार, गीदक, शिवार ।  
 स्पर्शक तत्त्वं (गु०) सेत, धारा, प्रवाह, मोता ।  
 स्पर्शक तत्त्वं (स्त्री०) चपना, चाम्पार, नित्र धन ।—  
 स्वकीय तत्त्वं (गु०) चपना, अपने सम्बन्ध का ।  
 स्वकीया तत्त्वं (स्त्री०) नायिका विशेष ।  
 स्वच्छ तत्त्वं (गु०) निर्मल, शुद्ध, उज्वल ।—ता (स्त्री०) निर्मलता, स्वच्छता, सफाई ।  
 स्वच्छ तत्त्वं (गु०) स्वच्छानुसार बर्तने वाला, यज्ञेच्छाकारी, स्वाधीन, मनमोक्षी ।—ता (स्त्री०) स्वतन्त्रता, स्वाधीनता ।  
 स्वजन तत्त्वं (गु०) वस्तु, मित्र ।  
 स्वतः तत्त्वं (गु०) चपने ने, स्वाभाविक, स्वभाव से ।  
 स्वतन्त्र तत्त्वं (गु०) स्वाधीन चपने वश ।—ता (स्त्री०) स्वाधीनता ।  
 स्वधर्म तत्त्वं (गु०) चपना धर्म ।  
 स्वधा तत्त्वं (गु०) वितरों को; पिण्ड दान करने का शब्द । (स्त्री०) चपने की स्त्री का नाम ।



स्वप्न तत्० (पु०) शयन, निद्रा, नींद, सपना, निद्रा के विचार ।

स्वभाव तत्० (पु०) प्रकृति, देव, यान ।

स्वयम् तत्० (अ०) आप, निज, आत्मा, खुद ।—भू (पु०) स्वयम् उत्पन्न होने वाला, प्रज्ञा, गिय, कामदेव ।—घर (पु०) स्वेच्छानुसार वरण, एक प्रकार का विद्याह, जो पहले समय में प्रचलित था । कन्या निमन्त्रित विद्याहार्थियों से अपनी स्वेच्छानुसार अपना पति वरण कर लेती थी ।

स्वर तत्० (पु०) शब्द, अक्षर आदि सोलह वर्ण, ७३नि, नाद स्वर्ग, आकाश ।

स्वरित तत्० (पु०) उच्चारण विशेष । अधिक उच्च-स्वर ।

स्वरूप तत्० (पु०) अपना रूप, समान रूप, शोभा, सुन्दरता ।

स्वर्ग तत्० (पु०) देवलोका, इन्द्रलोक, अन्तरिक्ष ।  
—पताली (खी०) सँवाताना ।

स्वर्गीय तत्० (गु०) स्वर्ग का, स्वर्ग सम्बन्धी ।

स्वल्प तत्० (गु०) थोड़ा, न्यून ।

स्वस्ति तत्० (अ०) कल्याण, मङ्गल, भलाई ।

—वाचन (पु०) कल्याणार्थ वैदिक मन्त्रों का पाठ ।—वाचक (पु०) मङ्गल पाठ का ।

स्वांग दे० (पु०) अनुकरण, नकल, भँडैती ।

स्वागत तत्० (पु०) अतिथि महकार, आदर, सम्मान ।

स्वाति तत्० (खी०) नक्षत्र विशेष, चन्द्रमा की स्त्री ।

स्वाद तत्० (पु०) स्वाद, रस ।—युक्त (गु०) स्वादयुक्त, स्वादु ।

स्वादु तत्० (गु०) स्वादयुक्त ।

स्वाभाविक तत्० (गु०) स्वभाव विदु, स्वभाव से उत्पन्न ।

स्वामी तत्० (पु०) मालिक, प्रभु, राजक ।

स्वार्थ तत्० (पु०) अपना अर्थ, अभिलाष ।— (गु०) स्वार्थ युक्त ।

स्वास् तद्० (पु०) स्वास्, प्राण वायु ।

स्वीकार तत्० (पु०) स्वीकार, मानना ।

स्वेच्छा तत्० (स्त्री०) अभिलाष स्वाधीनता ।

स्वेद तत्० (पु०) पसीना, धर्मजल ।—ज (पु०) स्वेद से उत्पन्न कोट ।

स्वैरण तत्० (पु०) स्वेच्छानुसार वर्तने वाला, सम्पद, दुराचारी ।

स्वैरी तत्० (स्त्री०) स्वेच्छाचारिणी, स्वमिषा रिणी ।

## ह

ह हल्वर्ण का तैत्तिसर्वो अक्षर, कण्ठस्थान से उच्चारण होने के कारण इसको कण्ठ्य कहते हैं ।

हाँकाना दे० (क्रि०) हाँकना, निकालना, धैल आदि को चलाना ।

हङ्कार तत्० (पु०) धैल आदि का शब्द, टँभना ।

हङ्कारना दे० (क्रि०) हाँकने वाला ।

हस तत्० (पु०) मराल घड़ी, आत्म, जीव ।—क (पु०) स्वर्ण कटक, विष्टिया, यिष्टुषा ।

हँसना दे० (क्रि०) हँसी करना, मुस्कराना ।

हँसा दे० (पु०) हँसी, हास्य, मुस्कराहट)।

हँसाई दे० (खी०) हँसी, ठठोसी ।

हँसिया, हसु मा दे० (पु०) दाँत, दातनी, खेत काटने का अक्ष ।

हँसोड दे० (गु०) ठठोल, हँसमुद्र ।

हकयकाना दे० (क्रि०) चपटाना, आकुल होना, उद्भिन्न होना ।

हकला दे० (गु०) तुतला, लडबडा ।

हकलाना दे० (क्रि०) हकारना, तुतलाना, ठहर ठहर कर बोलना ।

हकारना दे० (क्रि०) खदेहना, दौडाना, भगाना ।

हकावका दे० (गु०) चवड़ाया, क्याकुल, उद्विग्न ।  
हगना दे० (क्रि०) भाड़ा फिरना, अङ्गल जाना,  
दिया जाना ।  
हगनेटी दे० (गु०) हगने की भूमि, भाड़े फिरने की  
भूमि ।  
हगास दे० (स्त्री०) हगने की रस्सा ।  
हचका, हचकोला दे० भक्षा, धाघात, भौंक ।  
हचरमचर दे० (गु०) विवाद, चागा पीछा, घट-  
कना, मोच विचार ।  
हटकना दे० (क्रि०) रुकना, घटकना, पागल होना ।  
हटना दे० (क्रि०) पीछे फिरना, अलग होना, मुहना,  
मुकना ।  
हटवा दे० (गु०) तीलने वाला, चया ।  
हटाना दे० (क्रि०) टाल देना, दूर कर देना ।  
हटिया, हट्ट दे० (स्त्री०) हाट, याज़ार ।  
हटाकट्टा दे० (गु०) बलवायु, पृष्ठ, बलगाली, स्वस्थ ।  
हठ तत्० (गु०) मगराई, मचलाई, अड, जिह् ।  
—धर्मी (गु०) जिह्वा, हठीला ।  
हठात् तत्० (गु०) अकस्मात्, सहसा ।  
हठी, हठीला तत्० (गु०) चिढ़चिड़ा, मगरा, क्रोधी ।  
हड़ दे० (स्त्री०) - फल विशेष, काठ की बेड़ी ।  
—गीला (गु०) पत्ती विशेष, जो चौब फुट ऊँचा  
होता है ।—फूटन (गु०) हड़ की पीड़ा ।  
—वड़ाना (क्रि०) घबड़ाना, क्याकुल होना ।  
—बड़िया (गु०) बेगी, ज-हदवान ।—बड़ी  
(स्त्री०) गीमता ।—हड़ाना (गु०) परचराना,  
कंपाना ।—हड़ाहट (स्त्री०) हड़हड़ गूध ।  
हड़ी दे० (स्त्री०) हाड़, चस्त्रि ।—ला (गु०) हाड़  
वाला, दूढ़, मजबूत ।  
हण्डा दे० (गु०) बड़ा पात्र ।  
हण्डाना दे० (क्रि०) देश निकाला देना, घुमाना ।  
हण्डिका दे० (स्त्री०) हॉडी, मिट्टी का बर्तन ।  
हत् दे० (गु०) दुस्कार, तिरस्कार ।  
हतना, हनना दे० (क्रि०) मारना, मार डालना ।  
हत्या तत्० (स्त्री०) अथ, घात, मार, हिंसा ।  
हत्यारा दे० (गु०) मारने वाला; बर्षिक ।

हय दे० (गु०) हाथ, हस्त, कर ।—कंडी (स्त्री०)  
हाथ बेड़ी, लोहे की बेड़ी जिससे चपरायियों के  
हाथ जकड़ दिये जाते हैं ।—कण्डा (गु०) टेव,  
दब, रीति, भाँति ।—चपुमा (गु०) भाग, बाँट,  
हिस्सा ।—छुट (गु०) मारने वाला, पीटनेवाला ।  
—झोला (गु०) एक प्रकार की डोली ।—नाल  
(स्त्री०) हाथी पर की तोप ।—फेर (गु०) उधार,  
अण, कर्जा ।—रस (गु०) भगड़ा, सड़ाई, घुम्बा-  
चाटी, विचार, हाथ का मैयुन ।—लेया (गु०)  
हयजोर, उचकूपन, चोरी की यान ।  
हथिनी दे० (स्त्री०) हस्तिनी, हाथी की स्त्री, करिणी ।  
हथल, हथवास दे० (गु०) हथकड़ा ।  
हथा दे० (गु०) हथकड़ा, बँट, खोदनी, एक प्रकार  
की वस्तु, जिससे पानी पँकते हैं ।  
हथिया दे० (गु०) नवत्र विशेष, नैरहयाँ नवत्र ।  
हथियाना दे० (क्रि०) पकड़ना, ग्रहण करना, अधि-  
कार में रखना ।  
हथियार दे० (गु०) अस्त्र, कंककांटा, धीज़ार ।  
हथी दे० (स्त्री०) घोड़ा मगने का मयु ।  
हथेली दे० (स्त्री०) हस्ततल, हाथ के बीच का स्थान ।  
हथौटी दे० (स्त्री०) चतुर्द, निपुणता, विनाघट,  
चनने की निपुणता ।  
हथौड़ा दे० (गु०) घन, बड़ा मारतल ।  
हथौड़ी दे० (स्त्री०) छोटा हथौड़ा ।  
हदियाना दे० (क्रि०) चवड़ाना; क्याकुल होना,  
भीत होना ।  
हनन तत्० (गु०) मारने, बध ।  
हनना दे० (क्रि०) बध करना, मार डालना ।  
हनुमान तत्० (गु०) सुग्रीव की सेना का प्रधान  
यानर ।  
हन्ता तत्० (गु०) हला, बधक, हिंसक, बध करने  
वाला, मारने वाला ।  
हय तत्० (गु०)

हर तत्० ( पु० ) शिव, महादेव, गणित में भाजक  
शङ्क का हर कहते हैं ।—गिरी ( पु० ) कैलास ।

—गुणी ( पु० ) गुणवान्, अनेक गुणों का दाता ।

हरिण तत्० ( पु० ) छीनना, यथास्कार से ले लेना,  
छूट, चोरी, ढाँका ।

हरता तद्० ( पु० ) हर्ता, हरण करने वाला, छुट्टीवा,  
चोर, ठग ।

हरना दे० ( क्रि० ) छूटना, छीनना, बरबस लेना ।

हरनौटा दे० ( पु० ) हरिण का बच्चा, मृग शायक ।

हरमुष्टा दे० ( पु० ) हृष्टाफृष्ट, बलयाश्, बली ।

हरा दे० ( पु० ) हरित्, हरित् वर्ण, सञ्ज ।

हराना दे० ( क्रि० ) यकाना, जीतना, पराजय करना ।

हराचल दे० ( स्त्री० ) मुहाना, सेना का आगे का  
भाग ।

हरि तत्० ( पु० ) विष्णु, इन्द्र, सौंप, मेरुक, सिंह,  
घोड़ा, सूर्य, चन्द्रमा, मृगा, तोता, यानर, यम-  
राज, पवन ।—अरे ( पु० ) हरा हरा ।—चन्दन  
( पु० ) देवपृष्ठ, गौरीचन, सफेद चन्दन, श्योतस्ना ।

—अन्द्र ( पु० ) सूर्यवंशी राजा, सत्य और दान  
धर्म के पालन में ये प्रसिद्ध हैं ।—जन ( पु० )  
विष्णु का भक्त, विष्णु का अनन्य भक्त ।—तोल  
( पु० ) चातु विशेष, जो पीले रङ्ग का होता है ।

—तालिका ( स्त्री० ) व्रत विशेष, चित्रों का एक  
व्रत, भादों सुदी तीज का व्रत ।—द्वार ( पु० ) एक  
तीर्थ और नगर का नाम ।—पैड़ी ( स्त्री० ) विष्णु  
घाट ।—प्रिया ( स्त्री० ) तुलसी, विष्णु पत्नी ।

—यल ( पु० ) हरा कथुर ।—यान ( पु० ) गह्व ।

—याली ( स्त्री० ) सञ्जी, उपामता ।—घाहन  
( पु० ) गह्व ।

हरिण तत्० ( पु० ) मृगा, मृग, कुरङ्ग ।

हरिणी तत्० ( स्त्री० ) मृगी, मृग की स्त्री ।

हरित् तत्० ( पु० ) हरा, सञ्ज, ययाम, घोड़ा, शय्य ।

हरिद्रा तत्० ( स्त्री० ) हलदी ।

हरीना दे० ( पु० ) भगोदा, हरा ।

हरीघा दे० ( पु० ) एक प्रकार का सोता ।

हरीटी दे० ( स्त्री० ) बही, घेंट, लठिया ।

हर्ष तत्० ( पु० ) आनन्द, सुख, कान्यकुब्ज के राजा  
का नाम ।

हर्षना दे० ( क्रि० ) हर्षित होना, फूलना, खिलना ।

हर्षित तत्० ( पु० ) आनन्दित, आह्लादित, सुखित ।

हल तत्० ( पु० ) हर, जिससे खेत जोतते हैं ।

—काना ( क्रि० ) धक्का देना, पहारा देना, उष-  
काना ।—कोरना ( क्रि० ) बटोरना, हलोरना,  
समेटना ।—चल ( पु० ) खलबडी, हडबडी, घूम,  
भीड़भाड़, डर, हुल्लाह ।—चलमचाना ( क्रि० )

हुल्लाह करना, गुल करना ।—दियो ( पु० ) एक  
प्रकार का शिव, पीलिया रोग, जिसमें शरीर पीला  
हो जाता है ।—घर ( पु० ) बलराम ।

हलदी दे० ( स्त्री० ) हरिद्रा ।

हलपना दे० ( क्रि० ) तड़फडाना, ध्याकुल होना,  
उद्विग्न होना ।

हलफल दे० ( स्त्री० ) शिष्टाचार, हडबडी ।

हलरा दे० ( पु० ) तपड़, हेर, लहर ।—घना ( क्रि० )  
बहावना, चिनोदन करना ।

हलवाहा तद्० ( पु० ) हल जोतने वाला, हल चलाने  
वाला ।

हलवाही दे० ( स्त्री० ) हलवाह की मजूरी, जीतार  
लेत ।

हलहलाहट दे० ( स्त्री० ) खर खादि से कर्पना,  
धरघराहट ।

हलहलिया तद्० ( पु० ) विष, हलाहल ।

हलहली दे० ( स्त्री० ) रोग, व्याधि, बूडी ।

हलाई दे० ( स्त्री० ) जागाई, खेत की बुवाई ।

हलाहल तत्० ( पु० ) विष, महाविष ।

हलिया दे० ( पु० ) बेलों का समूह ।

हलियाना दे० ( क्रि० ) जो मेघलाना, जो प्रबला,  
उषकाई जाना ।

हलोरना दे० ( क्रि० ) पछोड़ना, सफ़ करनी,  
बटोरना ।

हलोरा दे० ( पु० ) तपड़, लहर ।

हला दे० ( पु० ) भीड़, कोलाहल, रौला, हुल्लाह ।

हवन तत्० ( पु० ) होम, चाहुति, यज्ञि में मन्त्रपूर्वक,  
हविष्य दान ।  
हवि, हविष्य तत्० ( पु० ) हवन की सामग्री ।  
हव्य तत्० ( पु० ) नैवेद्य, देवता को दानि या भेंट ।  
हस्त तत्० ( पु० ) हाथ, कर, नखत्र ।—गत ( गु० )  
हाथ में धारया ।  
हस्तिनी तत्० ( स्त्री० ) करिणी, हथिनी ।  
हस्ती तत्० ( पु० ) हाथी ।  
हस्ती दे० ( स्त्री० ) भस्त्रे में पहनने का एक गहना,  
जिसे औरतें पहनती हैं ।  
हा गद्० ( ष० ) दुःख शोधक ।  
हाँ दे० धङ्गीकार, स्वीकार ।  
हाँक दे० ( स्त्री० ) पुकार, बुलाहट, आह्वान ।  
—मारना ( वा० ) बुलाना ।  
हाँकना दे० ( क्रि० ) पुकारना, बोल आदि को भी  
बुलाना ।  
हाँकर तत्० ( पु० ) जल जन्तु विशेष ।  
हाँडी दे० ( स्त्री० ) हथेली, मिट्टी का बर्तन ।  
हाँफना दे० ( क्रि० ) जोर से साँस लेना ।  
हाँसी दे० ( स्त्री० ) हँसी, हास्य, ठट्ठा ।  
हाँट तद्० ( पु० ) बाज़ार, पेट, वट्ट ।  
हाँटक तत्० ( पु० ) सुवर्ण, सेना ।  
हाँड़ दे० ( पु० ) हड्डी, पत्थि ।  
हाँथ दे० ( पु० ) हस्त, कर ।  
हाँथा दे० ( पु० ) हाथ, अधिकार, पानी फेंकने का  
यन्त्र ।  
हाँथी दे० ( पु० ) हस्ति, कर्त, मज, नाग ।—दाँत  
( पु० ) हाथी का दाँत ।  
हाँथवान दे० ( पु० ) महायत ।  
हाँनि तत्० ( स्त्री० ) चाटा, घड़ी, टोटा, चुकमान ।  
हाँथ दे० ( ष० ) दुःख शोधक ।—मारना ( वा० ) दुःख  
करना ।  
हाँथन तत्० ( पु० ) वर्ष, सन्वत्सर ।  
हाँर तत्० ( पु० ) माला, मोती या फूलों की माला ।  
हाँरना दे० ( क्रि० ) पराजित होना, हार जाना ।

हाव तत्० ( पु० ) नखरा, चोंचला, भाव, हाथमाके ।  
हास्य तत्० ( पु० ) हँसी, कौमुक, विनोद ।  
हाहा, दे० ( ष० ) हाथ हाथ, हा । ( पु० ) गन्धर्व  
विशेष ।  
हाहाकार तत्० ( पु० ) हाथ हाथ का शब्द ।  
हाँडोला दे० ( पु० ) पलना, झूला ।  
हाँसक तत्० ( पु० ) अधिक, व्याध, हाथारा, मारने  
वाला ।  
हाँसा तत्० ( स्त्री० ) मारण, बध, घात ।  
हाँगु तत्० ( पु० ) हाँग, गन्ध द्रव्य ।  
हाँचकना दे० ( क्रि० ) चागा पीछा करना, रुकना,  
अटकना ।  
हाँचकाना दे० ( क्रि० ) धक्का देना, हिलाना ।  
हाँचकियाना दे० ( क्रि० ) सन्देह में पड़ना, संशयित  
होना ।  
हाँचकी दे० ( स्त्री० ) हिल्ला, गले से जो हिच् शब्द  
निकलता है ।  
हाँजड़ा दे० ( पु० ) नपुंसक, क्लीव, नामद ।  
हाँत तत्० ( पु० ) उपकार, भलाई ।—कारी ( पु० )  
उपकारी ।  
हाँतीपी तत्० ( गु० ) हितकारक, हित करने वाला ।  
हाँनहिनाना दे० ( क्रि० ) छोड़े का शब्द ।  
हाँन्दी दे० ( स्त्री० ) हिन्द की भाषा ।  
हाँन्दू दे० ( पु० ) हिन्दुस्तान के वासी, वैदिक मत  
का मानने वाला ।  
हाँम तत्० ( पु० ) याता, गुणार, घोष ।  
हाँमालय तत्० ( पु० ) पर्वत विशेष, हिमालयी,  
—हिमालयी ।  
हाँया दे० ( पु० ) हृदय ।  
हाँयाव दे० ( पु० ) वस्त्राह, साहस ।  
हाँरण्यकशिपु तत्० ( पु० ) दैत्यपति, भद्राव का  
पिता ।  
हाँरद तद्० ( पु० ) हिया, हृदय ।  
हाँलामिला दे० ( गु० ) मिला जुना, सम्बन्ध युक्त ।  
हाँलसा दे० ( स्त्री० ) मछली विशेष ।  
हाँसक् दे० ( स्त्री० ) देजादेयी, स्पर्धा, हिमं ।

हींग दे० ( पु० ) गन्ध द्रव्य, खनाम प्रसिद्ध गन्ध द्रव्य ।

हींसना दे० (क्रि०) दिनहिनाना, चाहना ।

हीक दे० (स्त्री०) उवकाई, मतलाई, मचलाई ।

हीन तत्० ( गु० ) नून, अधम, छोटा ।—जाति (पु०) अधम जाति ।

हीर तत्० (पु०) वज्र, हीरा, मणि विशेष ।

हीरा दे० होरा, मणि विशेष ।—भन (पु०) एक प्रकार का तोता ।—घली (स्त्री०) योगी की स्त्री ।

हुङ्कार तत्० ( पु० ) गर्जन, डरावना शब्द, भयङ्कर ध्वनि ।

हुङ्का दे० (पु०) धर्मल, झूरना ।

हुडदका दे० (पु०) डकैत, गुण्डा, उपद्रवी ।

हुण्डा दे० (स्त्री०) रुपये की चिट्ठी ।

हुण्डार दे० (पु०) भेड़िया, हिंसक जन्तु विशेष ।

हुलकारना दे० (क्रि०) दुःकारना, खदेड़ना, भगाना ।

हुलसना दे० (क्रि०) आनन्दित होना, हर्षित होना ।

हुलास दे० (पु०) आनन्द, हर्ष, सुख, आह्लाद, मजा, मूँ घने की तमाकू ।

हुल्लोड दे० (पु०) रोला, भगड़ा, टपटा ।

हुँण तत्० हुँण देश के वासी, कठोर मनुष्य ।

हुलना दे० (क्रि०) खेलना, धक्का देना, दकेलना ।

हृदय तत्० ( पु० ) अन्तःकरण, मन, चित्त, छाती, हिया ।

हृष्ट तत्० ( गु० ) आनन्दित, प्रसन्न, हर्षित ।—पुष्ट (पु०) बलवाद्, बली ।

हूँ तत्० (पु०) सम्बोधन सूचक ।

हूंगा दे० (पु०) एक प्रकार की मोटी लकड़ी, जिससे जेत बराबर किया जाता है ।

हेठ दे० (पु०) नीचे, अधः, तले ।—(गु०) आसानी, डरपोकना ।

हेतु तत्० (पु०) कारण, निमित्त, निदान ।

हेम तत्० (पु०) सुवर्ण, सेना, हिरण्य ।—माली (पु०) कुर्म, रवि ।

हेमन्त तत्० (पु०) षष्ठ विशेष, जाड़े की ऋतु ।

हेय तत्० (गु०) त्याग्य, छोड़ने योग्य ।

हेरना दे० (गु०) डूटना ।

हेरम्ब तत्० (पु०) गणेश, गजानन, विनायक ।

हेलना दे० (क्रि०) पार होना, तैरना ।

हेला दे० (स्त्री०) षषडा, अनादर, वाद्य विशेष ।—मारना (वा०) पुकारना ।

होंकना दे० (क्रि०) होंकना, ऊँची साँस लेना ।

होठ दे० (पु०) शोष्ठ, ओठ, बाधर ।

होड़ दे० (पु०) यात्री, शत, ठहराय, निपम, समय ।—लगाना (वा०) यात्री लगाना ।

होत दे० (स्त्री०) यश, शक्ति, सामर्थ्य ।

होना तत्० (पु०) हवन कर्ता ।

होना दे० (क्रि०) रहना, विद्यमान, वर्तमान ।

होनाहार दे० (गु०) भवितव्य, भविष्य, भावी, होने वाला, तीव्र बुद्धि ।

होग तत्० (पु०) हवन, वेद मन्त्र प्रत्येक अग्नि में आहुति देना ।—कुण्ड (पु०) हवन करने का रूप ।

होला दे० (पु०) एक प्रकार की नाच, भूजा घना, हूट ।

होली तत्० (स्त्री०) यय विशेष, फागुन के महीने में यह होता है ।

होँस दे० (स्त्री०) इच्छा, चाह, अभिलाष ।

होँका दे० (पु०) लोभ, जालच, लिप्सा, अभिलाष ।

होँले दे० (पु०) धीरे धीरे, शनैः शनैः ।

होवा दे० (पु०) बालकों को डराने के लिये एक कल्पित भूत ।

हृद तत्० (पु०) यज्ञ अलास्य, भोल ।

हुस्व तत्० (पु०) मात्रा विशेष, एक मात्रिक स्वर, लघु ध्वनि ।

हास तत्० (पु०) घाटा, टोटा, मुकसान ।

हाद तत्० (पु०) आनन्द, हर्ष, सुख ।



हींग दे० ( पु० ) गन्ध द्रव्य, स्वनाम प्रसिद्ध गन्ध द्रव्य ।

हीसना दे० ( क्रि० ) हिनहिनाना, चाहना ।

हीक दे० ( स्त्री० ) उबकाई, मतलाह, मचलाई ।

हीन तत्० ( पु० ) न्यून, अधम, छोटा ।—जाति ( पु० ) अधम जाति ।

हीर तत्० ( पु० ) यत्र हीरा, मणि विशेष ।

हीरा दे० हीरा, मणि विशेष ।—मन ( पु० ) एक प्रकार का तोता ।—घली ( स्त्री० ) योगी की स्त्री ।

हुङ्कार तत्० ( पु० ) गर्जन, डरायना शब्द, भयङ्कर ध्वनि ।

हुडका दे० ( पु० ) घाँस, झूरना ।

हुडदहा दे० ( पु० ) दकैत, गुण्डा, उपद्रवी ।

हुण्डो दे० ( स्त्री० ) रुपये की चिट्ठी ।

हुण्डारे दे० ( पु० ) भेडिया, हिमक जन्तु विशेष ।

हुलकारना दे० ( क्रि० ) दुस्कारना, खदबना, भगाना ।

हुलसना दे० ( क्रि० ) आनन्दित हाना, हर्षित हाना ।

हुलास दे० ( पु० ) आनन्द, हर्ष, सुख, आह्लाद, नचा, झूँघने की तमाकू ।

हुल्लड दे० ( पु० ) रोला, भगडा, टपटा ।

हुण तत्० हुण देश के वासी, कठोर मनुष्य ।

हुलना दे० ( क्रि० ) पेलना, धक्का देना, दबेलना ।

हृदय तत्० ( पु० ) अन्त करण, मन, चित्त, छातो, हिया ।

हृष्ट तत्० ( पु० ) आनन्दित, प्रसन्न, हर्षित ।—पुष्ट ( पु० ) चलवान् घली ।

हूँ तत्० ( अ० ) सम्बोधन सूचक ।

हूँगा दे० ( पु० ) एक प्रकार की मोटी लकड़ी, जिससे छेत बराबर किया जाता है ।

हूँठ दे० ( पु० ) नीचे, अध, तले ।—( पु० ) आगसी, हटपोंका ।

हेतु तत्० ( पु० ) कारण, निमित्त, निदान ।

हेम तत्० ( पु० ) सुवर्ण, सोना, हिरण्य ।—माली ( पु० ) भूष, रवि ।

हेमन्त तत्० ( पु० ) ऋतु विशेष, जाड़े का ऋतु ।

हेय तत्० ( पु० ) त्याज्य, छोड़ने योग्य ।

हेरना दे० ( पु० ) हूँटना ।

हेरम्ब तत्० ( पु० ) गणेश, गजानन, विनायक ।

हेलना दे० ( क्रि० ) पार होना, तैरना ।

हेला दे० ( स्त्री० ) अघडा, अनादर, वाद्य विशेष । —मारना ( वा० ) युकारना ।

होकना दे० ( क्रि० ) हौकना, जँचो खीम लेना ।

होठ दे० ( पु० ) ओष्ठ, ओठ, अधर ।

होड दे० ( पु० ) बानी, शर्त, ठहराय, नियम, समय । —लगाना ( वा० ) बानी लगाना ।

होत दे० ( स्त्री० ) बरा, शक्ति, सामर्थ्य ।

होना तत्० ( पु० ) हवन कर्ता ।

होना दे० ( क्रि० ) रहना, विद्यमान, यतमान ।

होनाहार दे० ( पु० ) भवितव्य, भविष्य, भावी, होने वाला, तीव्र बुद्धि ।

होम तत्० ( पु० ) हवन, वेद मन्त्र पूर्वक अग्नि में आहुति देना ।—कुण्ड ( पु० ) हवन करने का कुण्ड ।

होला दे० ( पु० ) एक प्रकार की नाच, झूँजा चना, झूँट ।

होली तत्० ( स्त्री० ) पर्य विशेष, फागुन के महीने में यह होता है ।

होँस दे० ( स्त्री० ) इच्छा, चाह, अभिलाष ।

होँका दे० ( पुं० ) लोभ, लाम्ब, लिप्ता, अभिलाष ।

होँले दे० ( अ० ) धीरे धीरे शनैः शनैः ।

होँवा दे० ( पु० ) बालकों को डराने के लिये एक कल्पित भ्रम ।

हृद तत्० ( पु० ) बडा जलाशय, झील ।

ह्रस्व तत्० ( पु० ) मात्रा विशेष, एक मात्रिक स्वर, लघु वर्ण ।

ह्रास तत्० ( पु० ) घाटा, टोटा, नुकसान ।

ह्राद तत्० ( पु० ) आनन्द, हर्ष, सुख ।

